कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वार्षिकशुल्क 15) वर्ष 14, अंक 6, 27 माघ सम्वत् 2037, तदनुसार 8 फरवरी 1981 का अंक दयानन्दाब्द 156

सभी आर्य समाजें 9 फरवरी को बसन्त पंचमी का पर्व धूम-धाम से मनाएं

९ फरवरी को बसन्त पंचमी (माघ शुद्धि पंचमी) का पर्व है। सभी आर्य समाजें व शिक्षण संस्थाएं इस पवित्र व प्रसिद्ध पर्व को अवश्य मनाएं। आर्य पर्व पद्धति में इस पर्व के सम्बन्ध में जो लेख तथा पद्धति दी गई है उसे पाठकों की जानकारी के लिए नीचे दिया जाता है। जो निम्न प्रकार है —

बसन्त-पञ्चमी, माघ शुद्धि पञ्चमी

कूलन में केलिन में कछारन में कुञ्जन में।
क्यारिन में कलिन कलीन किलकन्त है।
कहै पदमाकर परागन में पौनहू में
पानन में पीक में पलाशन पगन्त है॥
द्वार में दिशान में दुनी में देश-देश में
देखौ दीप दीपन में दीपत दिगन्त है।
वीथिन में ब्रज में नवेलिन में वेलिन में,
बनन में बागन में बगरो बसन्त है।
(कवि पदमाकर)

है ऋतुराज का आगमन, जल-थल में छवि छाई है।
प्रकृति देवी नवल रंग में रंगमञ्च पर आई है॥
विरस द्रुमों ने नवल दलों से निज शृंगार बनाया है।
मानों श्री वसन्त स्वागत हित रुचिर वितान बनाया है॥
कुसुम भार का हार पहनकर मतवाले से झूम रहे।
कभी-कभी वे अनुरागवश अवनि चरण को चूम रहे हैं॥
सरल रसाल सास में मञ्जुल पीतमञ्जरी आई है।
सरसों सुमन पीत भूतल में पीताम्बर छवि छाई है॥
चित्र विचित्र वेश भूषा में चिन्तित मन हो जाता है।
नीरस हृदयों में सहसा ही प्रेम बीज आ जाता है॥
श्री ऋतुराज राज की लक्ष्मी नये ढंग से आती है।
'श्री हरि' विश्व रंगशाला में नये रंग दिखलाती है।
(कविशिरोमणि श्रीहरि)

शीत के आतंक का अपसार हो चला है, जराजीर्ण खल्वाट यष्टिधारी शिशिर का बहिष्कार करते हुये सरस बसन्त ने वन और उपवन में ही नहीं, किन्तु वसुधा भर में सर्वत्र अपने आगमन की घोषणा करदी है। सारी प्रकृति ने बसन्ती बाना पहन लिया है। खेतों में सरसों फूल रही है। जहां तक दृष्टि दौड़ाइये, मानो पीतता सरिता की तरंगावली नेत्रों का आतिथ्य करती है वनों में टेसू (पलाश पुष्पों) की सर्वत्र व्यापिनी रक्ताभा दर्शनीय है, उपवन गेंदे और गुलदाऊदी की पुष्पावली के पीत-परिधान धारण किये हुये हैं नगर और ग्राम में बाल-बच्चे बसन्ती वस्त्रों से सजे हैं। मन्द सुगन्ध मलय-समीर सर्वत्र बह रहा है। ऋतुराज बसन्त के इस उदार अवसर पर इतने पुष्प खिलते हैं कि वायुदेव को उनकी गन्ध के भार से मन्द गति से सरकना पड़ता है। इस समय उपवनों में चारों ओर पुष्पों ही पुष्पों की शोभा नयनों को आनन्द देती है जिधर देखिए उधर ही रंग बिरंगे फूल खिल रहे हैं कहीं गुलाब अपनी बहार दिखा रहा है तो कहीं गुले अब्बास के पचरंग फूल आंखों को लुभा रहे हैं कहीं सूर्यप्रिया सूर्यमुखी सूर्य को निहार रही है कहीं श्वेत कुंद की कलियां दांत दिखलाकर हंस रही हैं गुलेलाला अपने गुलाबी पुष्पों के ओठों से मुस्करा रहा है कमल अपने पुष्प नेत्रों से प्रकृति सौन्दर्य को निहार रहा है। आम पुष्पों (बौरों) की छटा ही कुछ निराली है। उन पर भौरों की गूंज और शाखाओं पर बैठी कोयल की कूक उसकी शोभा को द्विगुणित कर देती है। आम के बौरों में कुछ मदमाती सुगन्ध होती है कि वह मन को बलात् अपनी ओर खींचकर मोद से भर देती है। आयुर्वेद के सिद्धान्तानुसार इस ऋतु में स्थावरों (वनस्पतियों) में नवीन रस का सञ्चार ऊपर की ओर को होता है। जंगमों के शरीरों में भी नवीन रुधिर का प्रादुर्भाव होता है जो उनमें उमंग और उल्लास को बढ़ाता है। बसन्त ऋतु तो चैत्र और वैशाख में होती है। मधुमाधवी बसन्त स्यात् यह वचन इसका पोषक प्रमाण है। किन्तु प्रकृति देवी का यह सारा समारोह ऋतुराज बसन्त के लिए ४० दिन पूर्व से ही प्रारम्भ हो जाता है। जब प्रकृति देवी ही सर्वतोभावेन ऋतुनायक के स्वागत में तन्मय है तो उसी के पञ्चभूतों से बना हुआ रसिक शिरोमणि मनुष्य रसवन्त वसन्त के शुभागमन से किस प्रकार बहिर्मुख रह सकता है। फिर वनोपवन विहारी भारतवासी तो प्राकृतिक शोभा निरीक्षण तथा प्रकृति के स्वर में स्वर मिलाने में प्राचीन काल से प्रवीण रहे हैं। वे इस अवसर पर आनन्दानुभव से कैसे वंचित रह सकते थे। प्राचीन भारतीयों ने इस उदार ऋतु का आनन्द मनाने के लिए बसन्त पंचमी के पर्व की रचना की।

यह समय ही कुछ ऐसा मादप्रद और मादक होता है कि वायुमण्डल मद और मोद से भर जाता है, दिशाएं कलकण्ठा कोकिला आदि विविध विहंगमों के मधुर आलाप से प्रतिध्वनित हो उठती है। क्या पशु क्या पक्षी और क्या मनुज सबका हृदय आह्लाद से उद्वलित होने लगता है मनों में नयी नयी उमंगें उठने लगती हैं। भारत के अन्नदाता किसान अपने अहर्निश के परिश्रम को आसन्न साषाढी (साढी) सस्य के रूप में सफल देखकर फूले अंग नहीं समाते। उनके गेहूं और जौ के खेतों की नवाविर्भूत बालों से युक्त लहलहाती हरियाली उनकी आंखों को तरावट और चित्त को अपूर्व आनन्द देती है कृषि के सब कार्य इस समय समाप्त हो जाते हैं। अतः कृषि प्रधान भारत को इस समय आमोद प्रमोद और राग रंग की सूझती है। माघ सुदि बसन्त पंचमी के दिन से उसका प्रारम्भ होता

(शेष पृष्ठ ६ पर)

कठोपनिषद्—नचिकेता की अमर कहानी (द्वितीय भाग)

यमाचार्य द्वारा आत्मा-परमात्मा का वर्णन

(लेखक—डा. सत्यव्रत सिद्धांतालंकार)

(गतांक से आगे)

पंचम वल्ली

हमारा शरीर ग्यारह द्वारों वाला एक नगर है—पुरम एकादश द्वारम्। नगर में आने-जाने के अनेक मार्ग होते हैं। शरीर रूपी नगर में विहार करने के, हे नचिकेता, ग्यारह मार्ग हैं। वे मार्ग हैं—दो आंख, दो कान, दो नासिका, एक मुख, एक तालु, एक नाभि, एक मल त्यागने का मार्ग, एक मूत्र त्यागने का मार्ग। इन ११ मार्गों वाले शरीर रूपी नगर में हमारा सारा कारोबार चलता है। परन्तु अगर इस नगर में कोई न रहता हो तो नगर किस काम का? नगर नगर में नहीं रहता, इस नगर में हम रहते हैं, नगर हमारे रहने के लिए हैं, हम न रहें तो नगर निरर्थक हो जाता है। यह नगर है अवक्रचित, अज आत्मा का—अजस्य अवक्रचेतसः इस कथन में आचार्य यम ने दो बातें कहीं। एक तो शरीर एक नगर के समान है, दूसरी यह कि इसका मालिक अज तथा अवक्रचित है। शरीर एक नगर के समान कैसे हैं? नगर में हजारों लाखों लोग रहते हैं, शरीर की रचना में लाखों नहीं करोड़ों कोष्ठक है जो नगर के भिन्न भिन्न निवासियों की तरह स्वतन्त्र जीवन व्यतीत करते हैं। इन सबके एक साथ मिलकर रहने से ही इस शरीर रूपी नगर का समाज बसता है। नगर की व्यवस्था करने के लिए म्युनिसिपैलिटियां बनीं होती है, उसी प्रकार शरीर रूपी नगर की व्यवस्था मस्तिष्क द्वारा होती है। इस नगर की सफाई के लिए त्वचा से पसीना, गुदा द्वार से मल, मूत्राशय से मूत्र बाहर निकलता रहता है। इस नगर का मालिक अज तथा अवक्रचित आत्मा है। यह अज क्यों हैं? अज का अर्थ है—अजन्मा। अगर इसका मालिक अजन्मा न हो तो वह भी नगर का ही एक अंग हो जाए—नगर जन्मता है, इसका मालिक जन्मता नहीं अजन्मा है, अज है। जन्मने वाला जन्मने वाले का मालिक नहीं हो सकता, अगर हो तो उसका मालिक कौन है? इसी को कहा है—संघात परार्थत्वात्—जो अवयवों से बना है वह निरवयव के लिए ही होता है, जो जन्मा है वह अजन्मे के लिए होता है—यह सृष्टि का नियम है। शरीर रूपी नगर का मालिक जो अज है वह अवक्रचित भी है—अवक्रचित अर्थात सरल स्वभाव, उसमें टेढा मेढ़ापन नहीं है, टेढ़ा-मेढ़ापन चित्त इस प्रकरण में मन का गुण है। वक्र—अर्थात् टेढ़ा, दुष्ट शरारती, जो सीधे रास्ते न चले। मन दो रास्तो में से किसी एक रास्ते से चल सकता है—सरल सीधा उचित या ठीक विषम. टेढ़ा, अनुचित या गलत। भगवान ने हमें सीधे रास्ते से चलने को भेजा हैं। उल्टे रास्ते से चलने को नहीं, परन्तु मनुष्य अवक्र-गति के स्थान में वक्र गति से चलने लगता है, जब वह अवक्रचित होने का रास्ता अपनाता है, तब उसे कोई कष्ट नहीं होता—अवक्रचित अनुष्ठाय न शोचति, तब वह जन्म मरण के बन्धन से मुक्त होकर दुख से छूट जाता है—विमुक्तश्च विमुच्यते। हे नचिकेता, जिस शरीरस्थ आत्मा के विषय में तूने पूछा था, वह इस प्रकार का है— एतत् वै तत्।१।

यह जीवात्मा 'हंस' है, वसु है, 'होता' है अतिथि है. हन्स जिस प्रकार शुद्ध पवित्र धवल है वैसे हन्स रूप जीव शुद्ध ब्रह्म में निवास करता है—हन्स शुचिषद्, 'वसु' जैसे अन्तरिक्ष में निवास करते हैं वैसे वसु रूप जीव हृदय रूपी अन्तरिक्ष में निवास करता है—वसु अन्तरिक्षसदे, होता जैसे यज्ञ की वेदी के सामने बैठकर अग्निहोत्र करता है, वैसे होतृ-रूप जीव तीनों नाचिकेत अग्नियों को अपने भीतर प्रदीप्त करता है—'होता वेदिषद्' 'अतिथि' जैसे दुरोण को गृहस्थी के घर को—अपना मानकर नही बैठ जाता, अतिथि रूप में रहता हैं और कुछ दिन बाद चल देता है वैसे अतिथि रूप जीव इस नर-देह को सदा के लिए अपना समझ कर नहीं बैठे रहता जीवन में आगे-आगे विकास का प्रयत्न करता है—अतिथिः दुरोणसद्। जो जीवात्मा अपने को 'हन्स' वसु, 'होता' और 'अतिथि' समझकर जीवन बिताता है, वह उत्तरोत्तर विकास करता जाता है। वह 'नर देह' से जीवन यात्रा प्रारंभ करता है—'नृषद्' नर से अच्छे देह में पहुंचता है—'वरसद्' इस प्रकार क्रमिक विकास के मार्ग पर चलता हुआ वह-देह से 'ऋतु-देह' में वास करता है—ऋतुसद् अर्थात् सत्य उसके जीवन का आदर्श हो जाता है, उसके बाद सत्य से भी उत्कृष्ट जीवन बिताने लगता है, इतना उत्कृष्ट इतना ऊंचा जितना यह व्योम अर्थात् आकाश है—'व्योमसद्'। संसार के प्राणी जल में उत्पन्न होते हैं—अब्जा: पृथिवी पर उत्पन्न होते हैं—'गोजा', पहाड़ों पर उत्पन्न होते हैं='अद्रिजाः'। ये सब उस सत्य स्वरूप परब्रह्म की व्यवस्था से ही जन्म धारण करते हैं—'ऋतजाः।' वह ऋतु, भगवान की वह व्यवस्था, उसके ये नियम महान् हैं, व्यापक हैं—'ऋत बृहत' यमाचार्य कहते है कि पृथिवी, जल पर्वत, आकाश ऊंचे-नीचे, यहां वहां—सब जगह उसी पर ब्रह्म के अखण्ड नियम काम कर रहे हैं, उन्हीं नियमों के अनुसार जीवन ढालने से मानव का क्रमिक विकास सम्भव है।

यमाचार्य ने हन्स के साथ शुचिषद वसु के साथ अन्तरिक्षसद, होता के साथ वेदिषद् तथा अतिथि के साथ दुरोणसत् का जो जोड़ा बनाया है, वह अत्यन्त अर्थपूर्ण है क्योंकि हंस का शुभता से, वसु का अन्तरिक्ष से, होता का यज्ञ वेदी से और अतिथि का निवास से विशेष सम्बन्ध है।

जीवन की यात्रा का क्रम 'हंस' 'वसु' 'होता' तथा 'अतिथि'—इस प्रकार है। हंस प्रतिनिधि है सरलता का, शुद्धता का, शुचिता—इसीलिए इसे शुचिषद् कहा। यह जीवन की प्रथम अवस्था को. ब्रह्मचर्य आश्रम को सूचित करता है जब बालक हंस की तरह, सरल शुद्ध शुचि होता है—इसे यमाचार्य ने नृषद कहा है—यह वह अवस्था हैं जिस में मनुष्य नर बनने की स्थिति में है। हंस के बाद जीवन यात्रा का दूसरा पड़ाव वसु कहलाता है, वसु का अर्थ हैं—बसना बसाना। पच्चीस वर्ष के ब्रह्मचारी को भी वसु कहा जाता है। बसना या बसाना गृहस्थाश्रम को सूचित करता है। इसे वसु इसलिए कहा है क्योंकि वसु का लक्ष्य स्वयं बसना ही नहीं, दूसरों को बसाना भी है-वसुः कस्मात् वसति वासयते वा'-बसता है और बसाता है, स्वार्थ मे ही नहीं रहता, परार्थ भी करता है। जीवन यात्रा में तीसरी अवस्था को यमाचार्य ने होता कहा है। इस अवस्था में मनुष्य का आदर्श अपने जीवन को समाज के लिए होम देना है-जीवन का यज्ञमय हो जाना है, यह जीवन का वानप्रस्थ आश्रम है जब वह संसार की निकटता से देखकर उसे छोड़ने के रास्ते पर चल पड़ता है। अन्त में जीवन का यह यात्री चौथी अवस्था में आता है जिसे अतिथि अवस्था कहा है, इस अवस्था में आकर वह संसार में अतिथि की तरह विचरने लगता है। अतिथि का अर्थ है जिसकी कोई तिथि न हो वह अपने को संसार में मेहमान समझने लगता है, यह संन्यास आश्रम को सूचित करता है, यमाचार्य ने जीवन के इन चार आश्रमों को क्रमशः नर-देह, वर-देह, ऋत-देह तथा व्योम देह का नाम दिया है। ब्रह्मचर्याश्रम नर-देह है, इसलिए नर-देह है क्योंकि इससे नीचे की दशा तो पशु की दशा है, इसके नीचे पशु देह है। ब्रह्मचर्याश्रम पूरा करने के बाद गृहस्थाश्रम को वर-देह कहा है क्योंकि नर-देह से यह अगला कदम है। वानप्रस्थाश्रम को ऋत-देह कहा है। ऋत का अर्थ है-'निरपेक्ष सत्य'। इस अवस्था में वह समझ जाता है कि संसार के विषय 'ऋत' नहीं, ब्रह्म ही ऋत है, निरपेक्ष सत्य हैं। संन्यासाश्रम को व्योम देह कहा है। इस आश्रम में वह व्योम अर्थात् अन्तरिक्ष के समान ऊंचा और अपने पास कुछ न रखने वाला हो जाता है। इस प्रकार जो व्यक्ति आत्मा को रथी-रथ का मालिक और शरीर को रथ के समान समझ कर और जीवन को चारों आश्रमों की यात्रा मानकर इस यात्रा को निभाता है वह ज्ञानात्मा से महानात्मा महानात्मा से शान्तात्मा हो जाता है। उसी में तीनों नाचिकेता-अग्नियां प्रदीप्त होती हैं और वही ज्ञानी मनुष्य ब्रह्म यज्ञ के वास्तविक अर्थ को समझता है।२।

आत्मा को अंगुष्ठमात्र कहा है। वही आत्मा शरीर के भीतर मध्य भाग में आसीन है। मध्य भाग के ऊपर प्राण-वायु है जिसे आत्मा ऊपर की तरफ उठाता है, 'ऊर्ध्वं प्राण उन्नयति' मध्य भाग के नीचे अपान वायु है जिसे आत्मा नीचे की तरफ फैंकता है—'अपानं प्रत्यग् अस्यति। प्राण और अपान के बीच में-शरीर के मध्य भाग में-यह छोटा सा, वामन, अंगुष्ठमात्र आत्मा बैठा हैं-'मध्ये वामनमासीनं' जिसे सब इन्द्रियां नमस्कार करती हैं-विश्वेदेवा उपासते'। वामन का अर्थ सुन्दर भी है। मनुष्य का जीवन प्राण शक्ति तथा अपान शक्ति से बन्धा हुआ हैं। प्राण शक्ति का अर्थ है-जीवनी शक्ति की संचय शक्ति (Anabolic process) अपान शक्ति का अर्थ है जीवनी शक्ति की अपचय शक्ति (Ketabolic process) शरीर में दो शक्तियों के माध्यम से-संचय-अपचय से, जीवनी शक्ति बनी रहती है, सभी इन्द्रियों में यह प्रक्रिया चलती है। इस का संचालन यह अंगुष्ठमात्र पुरुष-वामन ही करता है।३।

(क्रमशः)

सम्पादकीय—

क्या देश में बढ़ती हुई महंगाई रुक सकती है ?

यह प्रश्न आज प्रत्येक बुद्धिजीवी के सामने आकर खड़ा हो गया है कि क्या इस भारत देश में यह बढ़ती हुई महगाई रोकी जा सकती है। मैं जब १८ वर्ष का था तब मैं सर्विस में आया था और मुझे स्वयं तब से अपने लिए खाने पीने ओढने पहनने के लिए साधन जुटाने पड़े थे। तब से लेकर आज तक के इन २० वर्षों मे मैंने देखा है कि जिस वस्तु की एक बार कीमत बढ़ी है वह फिर घटी नही मेरी आयु इस समय लगभग ३८ वर्ष है और मैं देख रहा हू कि इन २० वर्षों मे हर वस्तु के मूल्य द्विगुण चौगुण हो गए हैं। और अगर यही रफ्तार रही तो आने वाले २० वर्षों में महगाई कहा से कहा पहुच जाएगी इसका अनुमान नही लगाया जा सकता। चाहे वह खाद्य पदार्थ हैं चाहे वह प्रतिदिन प्रयोग मे आने वाली वस्तुए हैं चाहे वस्त्र आदि अन्य जीवनोपयोगी वस्तुए सभी के मूल्य जो इस वर्ष हैं वह अगले वर्ष इससे सवाए या ड्योढ़े हो जाएगे। यह रफ्तार अगर निरन्तर इसी प्रकार चलती रही तो विचार करें धन हीन मानव की क्या दशा होगी।

महगाई इस कदर बढ़ रही है कि व्यापारियो के गोदाम मे पड़े पड़े हजारो के माल के लाखो बनते जा रहे हैं। जो धनी हैं वह धनी होता जा रहा है और जो निर्धन हैं वह और निर्धन होता जा रहा है।

अगर यह महगाई न रुकी और सरकार ने इसे रोकने का अगर कोई प्रयत्न न किया तो एक समय आएगा धनी और निर्धन मे भयंकर युद्ध होगा और जिससे समाज नष्ट और भ्रष्ट हो जाएगा। ऐसी स्थिति पैदा हो जाएगी जिसे कोई सरकार भी सम्भाल न सकेगी। महगाई को रोकना जहा सरकार का दायित्व है वहा प्रत्येक बन्धु का भी कर्त्तव्य बनता है कि वह महगाई के रोकने मे सहयोग दे।

यह बढ़ती हुई महगाई रुक सकती है अगर प्रत्येक बन्धु व भारत सरकार मिलकर इसके लिए प्रयत्न करें। न अकेली सरकार इसे रोकने मे समर्थ हो सकती है और न ही अकेली प्रजा। दोनो के सहयोग से ही इस पर काबू पाया जा सकता है।

यह प्रश्न प्रत्येक बुद्धिजीवी से उत्तर मागता है जिसपर आज के वातावरण को देखते हुए प्रत्येक बुद्धिजीवी को विचार करना चाहिए अगर इस धन की दौड़ के युग में हम ऐसे ही दौड़ते चले गए तो आगे जाकर एक ऐसे सागर मे डूब जायेंगे जहा से निकलना या वापिस आना कठिन होगा। विचारशील लोग इस प्रश्न पर अवश्य विचार करें। यह आज के वातावरण की माग है।

आर्य मर्यादा के ग्राहकों की सेवा में

आर्य मर्यादा के ग्राहको की सेवा मे प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क समय पर भेजकर अपनी उदारता का परिचय दें। उन सभी ग्राहको को पत्र लिखे जा रहे हैं जिनका शुल्क समाप्त है। अगर ग्राहक महानुभाव अपना शुल्क प्रति वर्ष समय पर भेज दें तो जहा आर्य मर्यादा का उनका लाभ रहना है वहा ग्राहको को भी एक वर्ष का शुल्क भेजने मे कोई कठिनाई नहीं आती। परन्तु जब ग्राहक महानुभाव समय पर शुल्क न भेजें और दो या तीन वर्ष का शुल्क इकट्ठा बन जाए तो फिर उनके लिए भी कठिनाई होती है। इसलिए मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि पत्र मिलते ही अपना शुल्क सभा कार्यालय मे मनिआर्डर द्वारा समय पर भेज कर आर्य हिन्दी पत्रिका के संवर्धन मे अपना सहयोग प्रदान करें और दूसरो को भी आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाकर सभा को सहयोग देते हुए इस पत्रिका की सहायता करें।

हकीकतराय का पिता से प्रश्न—

क्या मुसलमान होने पर मौत नहीं आएगी ?

यह प्रश्न धर्म के दीवाने महान बलिदानी वीर बालक हकीकतराय ने अपने पिता श्री भागमल से पूछा था। जब मुसलमान चण्डाल चौकड़ी ने यह निर्णय दे दिया कि क्योंकि हकीकतराय ने इस्लाम की तौहीन की है इसलिए इसे मौत की सजा दी जाए। लाहौर के नवाब ने मुल्ला मौलवियो से सलाह की कि इस छोटे बालक को मौत की सजा के स्थान पर क्या और कोई सजा नही दी सकती? मुल्लाओ की ओर से विकल्प आया काजी ने घोषणा की कि अगर हकीकत मुसलमान बन जाए तो मौत से बच सकता है। लाहौर का नवाब मासूम हकीकत को बचाना तो चाहता था परन्तु काजी और मुल्लाओ के फैसले के विरुद्ध जाना नही चाहता था। इसलिए उसने स्वयं भी हकीकत से आग्रह किया कि अगर तू मुसलमान हो जाए तो शाही दरबार मे तुम्हे इज्जत मिलेगी धन दौलत मिलेगी। ऊचा रुतबा मिलेगा।

इसके उत्तर मे हकीकतराय ने कहा था बस यही कुछ मिलेगा न इससे अधिक तो कुछ नही। मुस्करा कर कहने लगा इस धन व इज्जत के लिए मैं अपना धर्म नही छोड़ सकता ईमान नही बेच सकता। यह चीज तो यहा ही रहने वाली हैं धर्म तो साथ चलता है इसलिए जो परलोक मे भी साथ देने वाला है मैं उसे नही छोड़ सकता।

अन्त मे पिता भागमल जी ने भी हकीकतराय को मुसलमान बन जाने के लिए कहा समझाते हुये कहने लगे बेटा अगर तू मुसलमान बन जाएगा तो जीता तो रहेगा। हम अपनी आखो से तुम्हे देख तो लिया करेगे।

वाह रे बालक हकीकत जिस मौत की बात सोच कर पिता भी बेटे को मजबूर कर रहा हो कि बेटा मुसलमान हो जा कम से कम मौत तो नही आएगी। उस मौत को देखकर यह वीर बालक मुस्कराता है अपने पिता के प्रस्ताव को ठुकराता हुआ पिता जी से पूछता है पिता जी क्या मुसलमान होने पर मौत नही आएगी? क्या फिर कभी भी मेरी मौत नही होगी? पिता का उत्तर था बेटा मौत तो फिर भी एक दिन अवश्य होगी। इससे तो कोई बच नही सकता। तब हकीकत ने कहा जब मौत ने आना ही है तो पिता जी धर्म छोड़ने मे क्या लाभ? मैं धन दौलत इज्जत और जिन्दगी के लिए अपने धर्म को नही बेच सकता। मैं अपने धर्म पर अटल हू और अटल रहूगा।

इस वीर बालक को अपने धर्म मे कितनी दृढ़ आस्था थी। धर्म जीवन से प्यारा था और उसे धर्म से नवाब आदि तो क्या स्वयं उसका अपना पिता भागमल भी नही डिगा सका वाह रे हकीकत यह एक तूने ही ऐसी मिसाल है।

भारत जननी को यह गौरव प्राप्त हैं कि उसकी गोद मे एक से एक बढ़कर लाल खेले हैं और जिन्होने अपने देश जाति समाज और धर्म के लिए हसते २ अपना बलिदान दे दिया। मौत उनके लिए एक मामूली चीज रही है बड़े से बड़ा प्रलोभन भी उन्हे उनके मार्ग से न हटा सका।

इतिहास की यह एक सच्ची घटना आज उन लोगो पर अट्टहास कर रही है जो थोड़े से धन के लोभ मे आकर दो दो कौड़ी के लिए अपना ईमान बेच रहे हैं। थोड़े से धन के लालच मे आकर जो अपने धर्म को छोड़कर आज मुसलमान बन जाते हैं या ईसाई बन जाते हैं। ओ विधर्मी बनने वाले भारतीयो काश तुम्हे हकीकत के बलिदान की याद आ जाए और धर्म को दो दो कौड़ी मे बेचने से बच सको।

बसन्त पचमी जहा एक प्रसिद्ध पर्व है वहा बलिदानी हकीकत राय का बलिदान दिवस भी है। इस दिन इस वीर बालक ने अपना बलिदान देकर शाहजहा के तख्ते ताज को भी हिला दिया था। इस घटना से शाहजहा घबरा उठा। उसे पता था हिंदुओ मे इस घटना से जागृति आ गई है और अब हिन्दू भड़क उठेंगे जिससे एक बहुत बड़ा खतरा पैदा हो जाएगा। वस्तुतः मे उस समय हिन्दू जाग उठा था वही जागृति आगे चलकर मुसलमानो के शासन के अन्त के कारण मे एक कड़ी बनी।

वीर हकीकत राय का बलिदान आज भी प्रेरणा देने वाला है। हम बसन्त पचमी के पर्व को मनाते हुए उस महान बलिदानी वीर बालक से बलिदान की प्रेरणा लेकर जीवन के रहस्य को समझें और विधर्मी होने वालो को प्रेरणा देकर विधर्मी होने से बचावें।

धर्मदेव नाथ

लाला लाजपतराय के जीवन पर एक प्रसिद्ध नाटक—

शेरे पंजाब लाला लाजपतराय

ले०—श्री जी० एल० खोसला

(गताक से आगे)

(सीधा खड होकर दाय हाथ की दूसरी अगुली ऊची उठाकर) कि योग्य भारतीय विद्यार्थी सरकारी नौकरी का स्वीकार न कर और इसी तरह विदेशी शासन को मजबूत न बनाय (और ऊची आवाज से) हमारा कर्त्तव्य यह है कि अपने धार्मिक समाज सुधार शिक्षा सम्बन्धी मामल मे हमे अग्रजो के साथ किसी भी प्रकार का सम्बन्ध नही रखना चाहिए अर्थात किसी प्रकार की सहायता उनसे नही लेनी चाहिए।

कोई दरवाजा खटखटाता है और लाजपत राय उसी समय कागज और कलम को तकिए के नीचे रखकर दरवाजा खोलता है गरुदत्त अन्दर आता है—
आता है वर्षा की ऋतु है पर गरुदत्त ने गरम कोट पहना हुआ है। (हाथ जोड के) नमस्ते लाजपत जी दरवाजा अन्दर से बन्द क्यो किया हुआ था। (हाथ मिलाते हुए)

लाजपत—बस यू ही।

गुरुदत्त—वसे तो नही कुछ बात तो जरूर है। क्यो? कहा जाने की तय री है?

लाजपत— कही भी नही। मैं तो अभी फरुखाबाद मेरठ और अजमेर का का दौरा करके आया हू।

गुरुदत्त—दौरा समाप्त हो गया है या नही?

लाजपत—बडा सफल रहा है।

गरुदत्त इसी खुशी म तूने कोट नहीं उतारा। मेरा चेला बन गया है। गर्मियो मे गम कपड और सर्दियो मे ठण्ड कपड पहनने से इसान शैतान पर पूरा काबू पा लेता है।

लाजपत शैतान कौन है।

गुरुदत्त वह जा रजाई के अन्दर है। (लाजपत अपनी भल अनुभव करके कोट उतारता है।

लाजपत यह बात नही मैं भूल गया था।

गरुदत्त तम्ह लेने क लिए मैंने स्टेशन पर जाना था पर साईदास को साथ लेने चला गया।

लाजपत—कितना चन्दा इकट्ठा हुआ गरुदत्त जी?

गुरुदत्त—दो सौ रुपए से ऊपर। तेर जमा ज दू ता हर किसी के पास नही है। पिछल रविवार ग्वाल मण्डी मे चन्दे की उगराही पाच सौ से ऊपर चली गई थी।

लाजपत—नही चार सौ सत्तर रुपए थी

गुरुदत्त—तू आगरे गया था?

लाजपत—हा गया था

गुरुदत्त—ताज महल तो नही देखा होगा।

लाजपत— नही।

गुरुदत्त— मुझ तेरे से यही उम्मीद थी।

लाजपत—यह बात नही है मेरी ताजमहल देखने की बडी इच्छा थी परन्तु हम आगरे मे एक दिन ही ठहरे वहा समय कहा था और ताजमहल को देखने का आनन्द तो रात के समय ही आता है।

गुरुदत्त बहुत सारे लोगो को यह गलत फहमी है। इसलिए वे ताज महल को दिन के समय मे देखने की कोशिश नही करते है।

लाजपत —वकालत का नतीजा निकलने के बाद मेरा दिल्ली और आगरे की सैर करने को जाने का इरादा है मेरे साथ चलेगा?

गुरुदत्त—मैं तेरे साथ चलूगा। वकालत का नतीजा निकलने वाला ही है

लाजपत —आप मुझे समय हैं — गुरुदत्त जी? किसी दसवी क्लास के लडके की टियूशन तो दिलाओ।

गुरुदत्त—लाजपत? आगे भी तो एक टियूशन करता है।

लाजपत एक टियशन के साथ गुजारा नही चलता मुझ आठ रुपए महीना मुन्शी जी भेज देते हैं। तीन रुपए मुझ वजीफा मिलता है और दो रुपए टियूशन के कुल तेरह रुपए हो गए।

गुरुदत्त—तीन रुपए तो गवर्नमैंट कालिज की फीस देता है दो रुपए कानन कालिज की दो रुपए होस्टल का किराया।

लाजपत —ढाई तीन रुपया महीना रोटी का खर्चा हो जाता है। दस रुपए हो गए एक रुपए महीना आर्य समाज का चन्दा देता हू। बाकी दो रुपए बचे जिस स कपडा लत्ता भी सिलाना पडता है और पुस्तकें भी खरीदनी पडती हैं।

गुरुदत्त—कानून की किताबें भी बहुत कीमती हैं।

लाजपत—मैंने कभी कोई नई पुस्तक नहीं खरीदी। कुछ पुरानी पुस्तकें खरीदकर कुछ लायब्रेरी से मांगकर काम चला रहा हू।

गुरुदत्त—पर लाजपत तूने बडी गलती की है कि एफ ए के साथ वकालत की पढ़ाई भी शुरू कर दी है। उधर आर्य समाज के काम के लिए भी तुझे समय देना पडता है।

लाजपत—समाज का काम तो मेरे लिए इस तरह है जैसे मछली के लिए पानी आर्य समाज मेरा जीवन है। कानून की पढाई भी जरूरी है क्योकि प्रजा की भलाई करने के लिए रोटी का स्वतन्त्र होना चाहिए। मैंने यह पक्का निश्चय कर लिया है। कि मैं नौकरी नहा करूगा वकालत मे आदमी अच्छा पैसा कमा सकता है और मुख्तारी भी कर सकता है।

गुरुदत्त—मुख्तारी की सीढ़ी के पहले डडे पर तू चढ ही चुका है मुख्तारी की परीक्षा पास करके।

लाजपत—गुरुदत्त जी मुख्तारी तो और वकालत मे बडा अन्तर है। यह दोनो एक दूसरे से उल्टे हैं। खुद मुख्तारी मे प्रतिष्ठा ता निश्चय होती है मुख्तारी में गुलामी और अपमान होत है। मैंने थोडी देर मुख्तारी भी की है वह भी जगरांव जैसी जगह मे जो न गाव था और न ही शहर था काम के लिए दर दर भटकना पडता था अफसरो की खुशामद करनी पडती थी। कचहरी मे तो उनके चपरासियो के आगे हीनता और खुशामद करनी पडती है। क्योकि कचहरी का तो छोटे से छोटा चाहे वह अमलदार हो या चपरासी हो अपने को लाटे का समझता है। जब जिस समय मुविक्कल (वादी प्रतिवादी) से चपरासी रिश्वत मागता है। तो कार्य कर्ता अपनी आखे दूसरी तरफ फेर लेते हैं।

गुरुदत्त—क्योंकि उनका भी हिस्सा उसमे होता है। जो मौजिजों और मजिस्ट्रेटो के जेबो मे पहुच जाती हैं।

लाजपत—रिश्वत के बिना हमारी कचहरियो में परचा सुनने की सुविधा मजिस्ट्रेट की मेज तक नहीं हो सकती। मुझ जब जब रिश्वत देनी पड़ी है चाहे वह दो आने की रकम हो मेरी आत्मा को बडा दुख होता है। मैं सोचता हू कि वकालत के पैसे से क्या मैं प्रतिष्ठा के साथ रोटी कमा सकूगा? या फिर इन कुरीतियो को दूर करने क लिए सहायता दे सकूगा।

गुरुदत्त मैं तेरा मतलब समझ गया हू।

लाजपत हां! मुझे एक टयूशन और मिल जाए तो दो तीन रुपये और मिल जाएगे। अब मैं अपने घर से आठ रुपये के स्थान पर छ रुपये मगवाया करूगा मुन्शी जी का वेतन बहुत कम है और उन पर बड भारी परिवार का बोझ है।

गुरुदत्त-कल लाला साईदास के पास जगरांव से एक आदमी आया था और कहता था कि मुन्शी राधा कृष्ण बड योग्य व्यक्ति हैं। उनको पढने लिखने का बड़ा शौक है वे दिन रात फारसी उर्दू की पुस्तकें पढते रहते हैं परन्तु हिन्दू धर्म और आर्य समाज के साथ इनको कोई प्रेम नहीं।

लाजपत-यह ठीक है मुन्शी जी को अन्धविश्वास और खोखले रसम रिवाजों से तो बडी घृणा है और इस्लाम व कुरान शरीफ मे उनको बडा विश्वास है यहा तक की एक समय वह था कि वे दिन मे पाच वारी नमाज पढते थे और रोजे भी रखते थे मैंने भी उनके साथ रखे थे।

गुरुदत्त फिर तो बहुत दिन हो गए होगे।

लाजपत नहीं भाई मैं भूखा नहीं हू।

गुरुदत्त शाम को रोजा खोलने के समय तर माल मिलता है न मैं भी जब घर मे होता हू तो माता जी के साथ एकादशी का व्रत जरूर रखता हू और सायकाल व्रत समाप्ति के समय भरपेट मिठाई खाता हू।

(दोनो हसते है)

लाजपत—यदि मेरी माता जी अपने धर्म की पक्की न होती तो आज मैं मुसलमान होता।

गुरुदत्त—वह किस प्रकार?

लाजपत जब मैं कुछ महीनो का था तो मुन्शी राधा कृष्ण ने मुसलमान बनने का फैसला कर लिया जब यह बात मेरी माता गुलाबदेवी को पता लगी तब वह अपनी छाती से मुझ रखकर मस्जिद के ऊपर खड़ी होकर मेरे पिता जी का रास्ता रोक कर खडी हो गयी और मेरी कसम देकर मेरे पिता जी को उनके विचारों से रोका।

गुरुदत्त—इस चमत्कार के बीच तेरा क्या हिस्सा था?

लाजपत उस समय मैं घबराया और रोना चीखना शुरू कर दिया।

(दोनो हस पडे)

गुरुदत्त वह आदमी भी जगरांव से लाला साईदास के पास आया था वह कह रहा था कि मुन्शी राधा कृष्ण कट्टर थे और माता गुलाब देवी बहुत कोमल हृदय की कोमल और श्रद्धाशील थी।

मेरी माता सिख घराने की है जब मैं नाना जी के घर जाता था तो उनके घर में ग्रन्थ साहिब का पाठ करवाते और सवेरे शाम गुरु वाणी का पाठ हुआ करता था अपने घर मे माता जी के पास बैठ कर उनके मुख से मैं जप जी साहिब का पाठ सुनता था वह बड़ा सुन्दर पाठ करती थी। (क्रमशः)

महाभारतीय इतिहास की वह ज्वलन्त घटना : कुछ बोलते तथ्य

(श्री महावीर 'नीर' विद्यालंकार गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार)

भारतीय पुरातात्विक सर्वेक्षण के भू. पू. महानिदेशक श्री प्रो. ब्रजवासी लाल का कथन है कि रामायण और महाभारत कोई काल्पनिक इतिहास नही है किन्तु उसके मूल में सत्यता है भले ही उसमें बाद मे कवि कल्पना की उड़ान और सवर्धन के कारण बढ़ चढ़कर बातें लिखी गई हो। श्री लाल ने महाभारत काल की सत्यता जानने के लिए हस्तिनापुर, इन्द्रप्रस्थ, बरनावा, कुरुक्षेत्र, मथुरा, पानीपत आदि का उत्खनन और सर्वेक्षण करके उपरोक्त विचार अभिव्यक्त किए हैं। इसमें कोई शक नही की मूल रूप मे घटना में सत्य है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी अपने ग्रन्थ सत्यार्थप्रकाश में महाभारत की श्लोक सख्या मे निरतर वृद्धि की चर्चा की है। स्वामी जी के विचार पठनीय और मननीय है।

हम भी यहा महाभारत की अन्त साक्षी के आधार पर उस तथ्य का निरूपण करेंगे जो हमारे हृदयों से अन्ध-श्रद्धा की जड़तावश धाव भी उखड़ना नही है। महाभारत की विशिष्ट घटना है। "द्रोपदी का भरी सभा मे अपमान" कौरव वश के विनाश में इस घटना का महान् महत्व है। न जूआ (द्यूत) होता और न यह घृणित कार्य होता। पर जब काल की गति कुटिल हो जाती है जब विनाश होता है। 'विनाश काले विपरीत बुद्धि।" ज्ञानी मानी शूरवीर परस्पर कट-कट कर मर गए। वेद के ज्ञाता होने पर भी युधिष्ठिर ने जुआ खेला, वेद कहता है—अक्षैर्मा दिव्य कृषिमित कृषस्व। किन्तु धर्म और सत्य के ज्ञाता युधिष्ठिर ने जुआ खेला। कहते हैं शकुनि की चालाकी से हार गए। क्यो जी? स्वय हारने पर अन्यो को दाव पर लगाने का क्या अधिकार था? और।

द्रोपदी का भरी सभा मे अपमान हुआ उसे कटुवचन कहे गए, दुशासन ने उसके केश राशि पकड़ कर जबरदस्ती सभा में लाकर घोर अपमान किया। किन्तु द्रोपदी विदुषी थी, उसने स्पष्ट रूप से सभासदो से पूछा कि "महाराज युधिष्ठिर जी अपने आप हार जाने के बाद यदि मुझे दाव पर लगाकर हारा है तो मैं कैसे हार कर दासी भाव को प्राप्त हो गयी।" इस बात को सुनकर बड़े बूढ़े लोग मूह लटका कर या फेर कर बैठे रह गए, वहा सभा के मध्य विदुर जी ने समयोचित सत्यवाणी का प्रयोग कर द्रोपदी के सभा में लाए जाने और उसके अपमान को महान् दुष्कृत्य धर्महीन कृत्य बताकर कौरवो के विनाश की आशका अभिव्यक्त की। समस्त दुष्ट मण्डली की निंदा की। वे कहते हैं—

> नहि दासीत्वमापन्ना कृष्णा
> भवितुमर्हति।
> अनिशेन हि राज्ञैषा पणेन्यस्तेति
> मे मति ॥ सभा पर्व ६६-८

तदनन्तर विकर्ण ने भरी सभा मे जो साहस का परिचय दिया वह इतिहास की महान् घटना है। विकर्ण ने सब सभा सदो से प्रश्न किए तो किसी ने उसे उत्तर न दिया तब विकर्ण बोला—

> "साधारणी च सर्वेषा
> पाण्डवानामनिन्दिता।
> जितेन पूर्वं चानेन पाण्डवेन
> कृत पण ॥
> इय च कीर्तिता कृष्णा
> सौबलेन पणार्थिना।
> एतत् सर्व विचार्याह मन्ये
> न विजितामिमाम् ॥

जब यह बात विकर्ण ने कही तो सभा में हगामा खड़ा हो गया। महाभारत मे पढ़िए—"एतच्छ्रुत्वा महान् नाद सभ्यानामुदतिष्ठत।

तदन्तर विदुर जी ने कहा—

> "द्रोपदी प्रश्नमुक्त्वैव
> रोरवीति ह्यनाथवत्।
> न च विब्रूत त प्रश्न
> सभ्या धर्मोऽत्र पीड्यते ॥

साथ ही विकर्ण की बात को पुष्ट करते हुए विदुर जी कहते हैं—

> विकर्णेन यथा प्रज्ञमुक्त
> प्रश्नो नराधिप।
> भवन्तोऽपि हि त प्रश्न
> विब्रुवन्तु यथामति ॥

इस प्रकार विकर्ण तथा विदुर जी ने द्रोपदी के सभा मध्य लाए जाने का विरोध किया। उसके प्रश्न का समर्थन किया, एव अन्य सभासदो को भी उकसाया, तब दुष्ट मण्डली का विरोध होने लगा, भरी सभा मे भयकर विस्फोट होता देख। यथा—

> "त वै शब्द विदुरस्तत्त्व वेदी
> शुश्राव घोर सुबलात्मजा च।
> भीष्मो द्रोणो गौतमश्चापि विद्वान
> स्वस्ति स्वस्तीत्यपि चैवाहुरुच्चै ॥
> ततो गान्धारी विदुरश्चापि विद्वा-
> सामुत्पात घोरमालक्ष्य राज्ञे।
> निवेदयामासतुरार्तवित् तदानतो
> राजा वाक्यमिद बभाषे ॥

पाठक! इन श्लोको मे स्पष्ट रूप से दुष्ट मण्डली के विरोध मे एक क्रांति का उद्घोष है निर्दोष द्रोपदी के अपमान का क्या पाण्डव हितैषी प्रजा चुप चाप सह सकती थी, (बुद्धिमानो को यहा विचार करना चाहिए) तदनन्तर धृतराष्ट्र की आखे खुली, वे बोले—

> हतोऽसि दुर्योधन मन्द बुद्धे यस्त्व
> सभाया कुरुपुङ्गवानाम्।
> स्त्रिय समाभाषसि दुर्विनीत विशे-
> षतो द्रौपदी धर्मपत्नीम ॥

महाराज धृतराष्ट्र ने महान विपद आयी समझ द्रोपदी को रनिवास मे भेजा एव पाडवो को दास भाव से मुक्त कर दिया यहा आकर एक अध्याय समाप्त हो जाता है, परन्तु प्रत्येक बात मे अलौकिकता का पुट देने वालो ने प्रक्षप की यह भरमार की है कि पुनश्च पूरा अध्याय द्रोपदी के चीर हरण का जोड़कर श्री कृष्ण जी को उसका वस्त्र बढाते चित्रित कर दिया जबकि चीर हरण जैसी घटना कुछ जमती नही क्योकि नारी को किसी सभा के मध्य खड़ा कर देना ही उसका घोर अपमान है, द्रोपदी स्वय कहती है—

> 'धर्म्या स्त्रिय सभा पूर्वं न
> नयन्तीति न श्रुतम्।
> स नष्ट कौरवेयेषु पूर्वो
> धर्म सनातन ॥

हा! दुष्ट मण्डली उसका महान अपमान सभा मध्य कर सकती थी, यदि विदुर और विकर्ण मण्डली ने घोर विरोध न किया होता, उनके विरोध करने का ही यह फल हुआ कि सभा मे कौरव पक्ष के वीर भी इनके साथ हो गए, इस दुष्ट आचरण के विरोध मे आवाज बुलन्द कर दी।

इसी प्रकार उद्योग पर्व मे कुन्ती भी श्री कृष्ण को सन्देश देते हुए चीर हरण की बात कही नहीं कहती बल्कि वह सबत्र ही द्रोपदी के अपमान और दुशासन तथा दुर्योधन द्वारा कहे गए कटुव्यग्य वचनो की बात ही कहती है कुन्ती को सबसे अधिक दुख इसी बात का है कि—

> 'न राज्य हरण दुख द्यूत
> चापि पराजय।
> प्रव्राजन सुतानां वा न मे
> तद् दुख कारणम् ॥
> यत्र सा बृहती श्यामा
> सभाया रुदती तदा।
> अश्रौषीत परुषा वाचस्तन्मे
> दुखतर महत् ॥
> स्त्री धर्मिणी वरारोहा
> क्षत्र धर्मरता सदा।
> नाध्यगच्छत् तदा नाथ
> कृष्णानाथवती सती ॥

वह कहती है। श्री कृष्ण मुझे राज्य के छिन जाने का इतना दुख नही है, जुए मे हारने और वनवास होने का भी मेरे मन में उतना महान दुख नही है परन्तु भरी सभा मे मेरी सुन्दरी युवती पुत्रवधु द्रोपदी ने रोते हुए जो दुर्योधन के कटुवचन सुने थे वही मेरे लिए महान दुख का कारण बन गए है तथा क्षत्रिय धर्म मे तत्पर रहने वाली मेरी सर्वाङ्ग सुन्दरी सती साध्वी बहू कृष्णा सब प्रकार सनाथ होकर उस दिन कौरव सभा मे अनाथ थी अपमान सह रही थी। उसका कोई रक्षक नही था।

इसी प्रकार कृष्ण महाराज जिस समय सधि के लिए हस्तिनापुर जाते है तो द्रोपदी जो उन्हे वचन कहती है वे अन्तर्ज्वाला का धधकता रूप ही है वह कहती है कि दुशासन ने जो भरी सभा मे उसे बाल खीचकर अपमानित किया था उससे वह अब तक जल रही है। मेरे उस अपमान को मत भूलना।

अर्जुन भी कृष्ण जी से कहते है कि पाप बुद्धि दुशासन ने जैसे द्रोपदी को सभा मे खीचा था उस अपमान को कैसे भुलाया जा सकता हैं।

प्रकारान्तर मे हम यहा महा कवि भास के दूत वाक्यम नाटक के भी कुछ उदाहरण दे रहे हैं यथा—'द्रोपदी केशधर्षणमत्र लिखितम तथा एष दुशासनो द्रोपदी केश हस्ते गृहीतवान इनसे ज्ञात होता है कि उस समय चीर हरण की मान्यता नही थी अपितु दुशासन द्वारा द्रोपदी के केश पकड कर सभा मध्य लाकर उसे अपमानित करने की घटना का ही महत्व था। (विद्वानो द्वारा इस विषय मे गवेषणा आवश्यक है) भास ने महाभारत से सामग्री लेकर अनेक नाटक लिखे हैं।

इन उपरोक्त उदाहरणो मे चीरहरण की कही बात नही आई। जिसका अपमान होता है और जिसके किसी प्रिय का अपमान होता है वह उसके अपमान का बदला लेने के लिए सदैव उत्सुक और उद्यत रहा करता है।

धृतराष्ट्र के यह पूछे जाने पर हु सजय पाण्डवो को युद्ध के लिए कौन उत्तेजित करता रहता है तब सजय कहता है—

> धृष्ट द्युम्न सदैवैतान
> सदीपयति भारत।
> युध्यध्वमिति मा भैष्ट
> युद्धाद भरत सत्तमा ॥

प्रश्न होता है धृष्टद्युम्न ही क्यो उकसाता है? अन्य और क्यो नही? स्पष्ट है भरी सभा मे कौरवो ने जो उस की बहिन का अपमान किया था। स्मरण करें गुरु दक्षिणा के समय द्रोणाचार्य ने भी धृष्टद्युम्न के पिता 'द्रुपद' का अपमान किया था।

(क्रमश)

टंकारा का ऋषि मेला

प्रति वर्ष की भान्ति शिवरात्रि पर्व पर महर्षि दयानन्द जी की जन्म भूमि टकारा में २ ३ ४ मार्च १९८१ को ऋषि मेला लग रहा है। इस अवसर पर भारत भर के आर्य समाजी आर्य नेता आर्य विद्वान और आर्य बन्धु प्रति वर्ष वहां पहुचते हैं इस वर्ष भी हजारो की सख्या मे वहा आर्य बन्धु पहुच रहे हैं।

उत्तर भारत के आर्य परिवारों को टंकारा ले जाने के लिए टकारा सहायक समिति आर्य समाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली-१ ने बसो का प्रबन्ध किया है बसें २८-२ ८१ को सांय चार बजे आर्य समाज मन्दिर नई दिल्ली से चलेगी और १० ३ ८१ को रात्रि तक देहली वापिस आ जायेंगी। यात्री जयपर अजमेर उदयपुर अहमदाबाद पोरबन्दर सोमनाथ मन्दिर द्वारका ओखा' नाथ द्वारा मन्दिर आदि देख सकेंगे।

इस यात्रा का व्यय ३१५ रुपये प्रति यात्री बैंक ड्राफ्ट टकारा सहायक समिति के नाम का खास बनवाकर श्री मन्त्री टकारा सहायक समिति आर्य समाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली के पते पर रजिस्ट्री द्वारा भेजकर अपनी सीटें रिजर्व करा लें।

पूरे विवरण के लिए सहायक समिति दिल्ली को ऊपर लिखे पते पर पत्र लिख कर आप पूरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

श्री के. नरेन्द्रजी की धर्मपत्नी का निधन

श्री वीरेन्द्र जी के छोटे भाई श्री के नरेन्द्र जी सम्पादक दैनिक प्रताप और वीर अर्जुन दिल्ली की धर्म पत्नी श्रीमती कमला जी का देहावसान ३० १ ८१ को दिल्ली मे हो गया। श्रीमती कमला जी कुछ समय से कैंसर की बीमारी से पीड़ित थी। उनकी आयु अभी केवल ५८ वर्ष थी। उनको स्वस्थ करने के लिए बड़े बड़े डाक्टरो ने प्रयत्न किया परन्तु वह असफल रहे।

इस शोकजनक समाचार को सुनते ही सभा कार्यालय मे शोक सभा की गई जिसमे दिवगतात्मा की सदगति के लिए और परिवार के शेष सभी बन्धुओं के धैर्य के लिए प्रभु से प्रार्थना की गई।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

है। भारत के ऐश्वर्य शिखर पर आरूढ़ था और विलास सम्पन्नता के समय पौराणिक काल मे इस अवसर पर मदन महोत्सव मनाया जाता था संस्कृत साहित्यज्ञ जानते हैं कि भारतवासी सदा से कविता के वातावरण में विहार करते रहे हैं और कविता प्रतिक्षण कल्पना के वाहन पर विचरती रहती है इसलिए शायद ही कोई भाव बचा हो जिसका काल्पनिक चित्र भारतीय कवियो ने रचा हो।

आर्य पुरुषो को उचित है कि वे कामदाहक महापुरुषों के उत्तम उदाहरण को सदा अपने सामने रखते हुए मर्यादातिक्रमणकारी कामादि विकारो का किसी ऋतु मे भी अपने पास तक न फटकने दें और ऋतुराज वसन्त की शोभा को शुद्ध भाव से निरखते हुए और परम प्रभु की रम्य रचना का गुणानुवाद करते हुए वसन्त पचमी के ऋतूत्सव को पवित्र रूप मे मनाकर उसका आनन्द उठावें। वसन्तोत्सव पर भारत मे संगीत का विशेष समारोह होता है किन्तु जनता मे शृंगारिक गानो का ही अधिक प्रचार है। संगीत से बढ़कर मन और आत्मा का आह्लादक दूसरा पदार्थ नही है। सद्भावसमन्वित संगीत से आत्मा का अतीव उत्कर्ष होता है। आर्य समाज ने भक्तिभाव भरे गानों का प्रचार तो किया है किन्तु उसके गाने प्राय संगीत विद्या के विरुद्ध बेसुरे और काव्यरस से शून्य पाए जाते हैं। आर्य महाशयो को इस दोष का परिमार्जन शीघ्र करना चाहिए। वसन्त आदि उत्सव संगीत और काव्यकला की उन्नति के लिए उपयुक्त और उत्तम अवसर हो सकते हैं। इन पर्वों पर आर्य जनता मे कवितामय सुन्दर संगीत की परिपाटी प्रचलित करनी चाहिए। संगीत का सुधार भी सुधारक शिरोमणि आर्य समाज से ही सम्भव है।

जिला आर्य सभा भटिण्डा के समाचार

२० १-८१ दिन मगलवार को आर्य समाज भटिण्डा की ओर से स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का जन्म दिन श्री रोशनलाल जी की प्रधानता मे मनाया गया जिसमें आर्य वानप्रस्थ आश्रम के स्त्री पुरुषो एव आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल ने पूरा २ भाग लिया। श्री ओम्प्रकाश जी आर्य श्री प० स्वरूपसिंह जी एव आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल की छात्राओ ने श्री स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज के जीवन पर व्याख्यान देकर श्रद्धाजलिया अर्पित की। छात्राओ को आर्य समाज की ओर से स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का जीवन चरित्र और सत्यार्थी पुस्तकें ईनाम मे दी गई।

आर्य समाज बुढलाडा तथा बरेटा मण्डी को जागृत करने के लिए श्री ओम प्रकाश जी आर्य कार्यकर्त्ता प्रधान एव श्रीमती कमला जी भाटिया मन्त्री जिला आर्य सभा भटिण्डा तथा आर्य समाज मानसा से दस सभासद वहा १८ १ ८१ को गए। बुढलाडा की आर्य समाज का प्रत्येक कार्य यथा पूर्व सत्सग आदि शुरू हो गए।

— ओमप्रकाश आर्य

प्रवेश सूचना

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टकारा मे पिछले वर्ष से बोधोत्सव से पहले विद्यार्थी प्रविष्ट किए जाते हैं तदनुसार इस वर्ष भी २५ फरवरी १९८१ तक आने वाले प्रार्थना पत्रों के आधार पर नये विद्यार्थी लिए जाएंगे।

प्रवेश के लिए अभिलषित प्रत्याशी स्वास्थ्य तथा कम से कम दसवीं श्रेणी उत्तीर्ण शिक्षा आवश्यक है विद्यालय में केवल उत्तम उपदेशक व्याख्याता तथा पुरोहित बनाने के लिए शिक्षा दी जाती है। मुख्यतया ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ तथा अन्य शास्त्रो का अध्यापन होता है।

कोई भी सरकारी अथवा सरकार मान्य परीक्षा नही दिलाई जाती अन्य ब्यौरे के सम्बन्ध मे पत्र व्यवहार द्वारा जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

बिना पूर्व स्वीकृति के कोई सज्जन आने का कष्ट न करें विद्यार्थियों के भोजन आवास वस्त्रादि की सब सुविधाएं ट्रस्ट की ओर से दी जाती है।

—सत्यदेव विद्यालंकार आचार्य
अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय टकारा जि० राजकोट
(गुजरात)

★ पद्धति ★

गृह्यकृत्य प्रात सामान्य पक्ष पद्धति मे प्रदर्शित प्रकारानुसार गृह के परिमार्जन (शोधन-लेपनादि) के पश्चात स्वदेशीय पीताम्बर (पीतपट) परिधानपूर्वक सपरिवार सामान्य होम करके वसन्तवर्णनात्मक निम्नलिखित मन्त्रो से केसर मिश्रित (वा उसके अभाव मे हरिद्रामिश्रित) हलवे के स्थालीपाक से पाच अधिक आहुतिया दी जाए।

(१) वसन्तेन ऋतुना देवा वसवस्त्रिवृता स्तुता। रथन्तरेण तेजसा हविरिन्द्रे वयो दधु। यजुर्वेद अध्याय २१ मन्त्र २३।

(२) मधुश्च माधवश्च वासन्तिकावृतू अग्नेरन्त श्लेषोऽसि कल्पेतां द्यावापृथिवी कल्पन्तामाप ओषधय कल्पन्ता मग्नय पृथङ्मम ज्यैष्ठ्याय सव्रता। ये अग्नय समनसोऽन्तरा द्यावा पृथिवी इमे वासन्तिकावृतू अभिकल्पमाना इन्द्रमिव देवा अभिसंविशन्तु तया देवतयाङ्गिरस्वद् ध्रुवे सीदतम्। स्वाहा।

यजु० अध्याय १३। मन्त्र २५।

(३) मधु वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धव। माध्वीर्न सन्त्वोषधी। स्वाहा

(४) मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव रज। मधु द्यौरस्तु न पिता। स्वाहा।

(५) ओ३म मधुमान् नो वनस्पति मधुमां२ऽअस्तु सूर्य। माध्वीर्गावो भवन्तु न। स्वाहा।

यजु० अध्याय १३ मन्त्र २७ २९।

और उपयुक्त केसरयुक्त हलवे का ही हुतशेष यज्ञ में समागत सज्जन प्रसाद रूप से भोजन करें तथा ऋतुराज के वर्णन परक किसी कविता का मधुर गान किया जाए

सामाजिक कृत्य— स्वसुभीते के अनुसार अपराह्न में सब समूह रूप से सम्मिलित होकर उपवन वा कुसुमोद्यान मे भ्रमण करें और वहीं सभा करके वसन्तवर्णनपरक कविता पाठ और कीर्तन का आनन्द उठाएं।

इसी अवसर पर बालकों की क्रीडाओं के प्रदर्शन और फलों के उपयोग का स्वसुभीते के अनुसार आयोजन किया जाए तो अत्युत्तम है उससे वसन्तोत्सव की उत्कर्ष-वृद्धि हो सकती है।

—

आर्य मर्यादा के ग्राहक स्वय बनो और दूसरो को बनाओ
आर्य समाज के सदस्य स्वय बनो और दूसरो को बनाओ
हिन्दी भाषा—स्वय भी पढ़ो और दूसरों को भी पढ़ाओ

जनगणना और आर्य समाज

लेखक—श्री दत्तात्रेय बाव्ले, अजमेर

ओ३म्

इस बार देश भर मे जनगणना का अन्तिम और फरवरी १९८१ के प्रथम सप्ताह से प्रारम्भ हो रहा है। इसमें अन्य सूचनाओ के साथ परिवार के मुखिया और व्यक्तियो के धर्म भाषा और जाति सम्बन्धी जानकारी भी एकत्रित की जाएगी। आर्य समाज की दृष्टि से इस जनगणना में इन आकडो का बडा महत्व है, यह कहने की आवश्यकता नही है, प्रजातन्त्र मे सख्या को वैसे भी बडा महत्व है उसी के आधार पर सरकार की धार्मिक सामाजिक आदि अनेक नीतिया निर्धारित होती हैं।

सार्वदेशिक सभा का आदेश

गत जनगणनाओ के समान इस बार भी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने अपने २१ सितम्बर १९८० के सर्व सम्मत निश्चय द्वारा सब आर्य समाजो आर्य प्रतिनिधि सभाओ शिक्षण सस्थाओ और आर्य स्त्री, पुरुषो को यह आदेश दिया है कि प्रत्येक आर्य नर नारी अपनी जाति आर्य और धर्म वैदिक और भाषा हिन्दी लिखायें। सगठन और अनुशासन की दृष्टि से इस आदेश का पालन जरूरी है ही किन्तु सिद्धान्त और ऋषि दयानन्द के स्पष्ट आदेशो के आधार पर अपने को आर्य लिखाना प्रत्येक आर्य समाजी का नैतिक कर्त्तव्य भी है। सन् १८८१ की जनगणना के समय स्वयं ऋषि दयानन्द ने अपने एक परिपत्र द्वारा यह आदेश दिया था कि सब आर्य अपनी जाति आर्य जाति 'आर्य' तथा धर्म वैदिक धर्म ही लिखायें। देखिए कपूर ट्रस्ट द्वारा प्रकाशित ऋषि दयानन्द का पत्र व्यवहार पत्र संख्या २०६। इसी आदेश के अनुसार १८८१ से अभी तक की सारी जनगणनाओ में आर्यों ने अपने को आर्य ही लिखाया है।

हिन्दू आर्य विवाद

यह स्मरण रखने योग्य बात है कि जब हिन्दू और आर्य शब्दो के सम्बन्ध मे विवाद था। तब भी आर्यों ने विरोध और बहिष्कार की चिन्ता किए बिना अपने को सब जनगणनाओ मे आर्य ही लिखाया है, अब तो यह विवाद समाप्त प्राय होकर नमस्ते के समान आर्य शब्द भी लोकप्रिय हो गया है। इस पर भी यदि हम अपने को आर्य लिखाने मे किसी प्रकार का सकोच करते है तो यह केवल हमारी अपनी कायरता और कमजोरी का प्रमाण समझा जाएगा।

आर्य लिखाने से हम हिन्दू समुदाय से अलग या भिन्न समझे जाएगे यह आशका भी अब नही रही। जैसा सार्वदेशिक सभा ने अपने आदेश मे स्पष्ट कर दिया है कि आर्यों की पृथक गणना होने पर भी उनको हिन्दुओं से अलग नही समझा जायेगा, और उनकी गिनती हिन्दुओ की सख्या के योग में ही की जाएगी। यह स्पष्टीकरण भारत सरकार के जनगणना विभाग से अधिकृत सूचना प्राप्त करने के बाद किया गया है। सन १९७१ को भारत की जनगणना की रिपोर्ट के भाग २(सी) के पृष्ठ १०० से ११६ तक मे दिए गए धर्म सम्बन्धी आकडो से भी इस बात की पुष्टि होती है कि आर्य समाजी अथवा वैदिक धर्म इनम स कुछ भी लिखाने पर इन सबकी गणना हिन्दुओ के मुख्य शीर्षक के अन्तर्गत ही की गयी हैं।

हिन्दुओ की एकता और सगठन

हिन्दू एकता की दृष्टि से भी यदि सनातनी और पौराणिक धर्म से भिन्न होने के कारण हम अपने को आर्य लिखाते है तो उसके कारण जैन, बौद्ध और सिक्खो को भी ऐसा करने की प्रेरणा दी जा सकती है उनके धर्म ग्रन्थो मे और प्राचीन साहित्य मे उन्हे भी आर्य कहा गया है। किन्तु वर्तमान मे हिन्दू का गलत अर्थ केवल हिन्दू धर्म किए जाने के कारण वे अपने को हिन्दुओ से पृथक होने का प्रयत्न करते हैं आर्य शब्द वैसे भी श्रेष्ठ तथा स्वाभिमान का वाचक है यही हम सबका असली व प्राचीन नाम भी है। इसलिए सब आर्य लिखाकर भी अपने भिन्न धर्मों के अन्तर्गत गिने जा सकते है।

सावधानी की आवश्यकता

आगामी जनगणना में धर्म जाति आदि की सूचना परिवार के मुखिया या उसके घर मे उपस्थित व्यक्ति से ली जाएगी इसलिए हमे उन्हे अभी से सावधान कर देना चाहिए की वे धर्म के उत्तर मे आर्य आर्य समाजो तथा वैदिक धर्म ही बताए। केवल आर्य लिखाने से भी धर्म वैदिक ही समझा जाएगा। चाहे जाति के उत्तर मे हम और कुछ भी लिखा दे यद्यपि आर्यों को जाति के कालम में भी आर्य ही लिखाना चाहिए। इसी प्रकार आर्य या वैदिक के साथ हिन्दू लिखाने की भी आवश्यकता नही हैं बल्कि दोनो लिखानेसे यह खतरा है कि गणक केवल हिन्दू ही लिखें और आर्य लिखना छोड दे या भूल जायें। गिनती करने वाले हिन्दू या आर्य इनमें से एक ही लिख सकते है दोनो नही। इस प्रकार केवल आर्य लिखाने से तो आर्यों मे गिनती अपने आप हो जाएगी किन्तु दोनो लिखाने से तो आर्यों मे गिनती न किए जाने की आशका रहेगी। सार्वदेशिक सभा तथा ऋषि दयानन्द के आदेश के अनुसार जनगणना मे आर्य ही लिखाने के सम्बन्ध में अभी से आवश्यक सूचना छपवाकर प्रत्येक घर में बाटनी चाहिए तथा सभाओ और प्रभातफेरी और व्यक्तिगत सम्पर्क द्वारा प्रचार करना चाहिए यह कार्य स्थानीय प्रान्तीय व सार्वदेशिक स्तर पर नियमित और सगठित रूप स होना चाहिए। ऐसा न करने से आर्यों की सख्या वास्तविकता स कम प्रकट होगी परिणाम स्वरूप यह आर्य समाज की निर्बलता और प्रभाव हीनता का द्योतक बनेगा और धीरे धीरे आर्य और आर्य समाजियो का नाम तक मिट जाएगा। इसलिए आर्य समाज की शक्ति और प्रभाव का सही चित्रण करने के लिए भी आर्यो की अधिक से अधिक सख्या होना आवश्यक हैं।

बच्चो का सांस्कृतिक व मनोरंजक कार्यक्रम

आर्य समाज मन्दिर वाई ब्लाक सरोजिनी नगर नई दिल्ली मे ८ २ ८१ को आयोजित किया जा रहा है। प्रात १० से १२ बजे तक जिसमे पाचवी से बारहवी श्रेणी तक के बच्चे भाग ले सकेंगे। प्रत्येक वक्ता बच्चे को ४ मिनट का समय दिया जाएगा। बच्चे धर्मवीर हकीकतराय के बलिदान सम्बन्धी गायन कविता एव भाषण आदि का कार्यक्रम प्रस्तुत कर सकेंगे। तीनो विषयो मे प्रथम द्वितीय तथा तृतीय आने वाले बच्चो को पारितोषिक तथा अन्य सभी वक्ता बच्चो को भी उत्साहित करने के लिए श्रीयुत उत्तमचन्द जी चोपड़ा मालिक कैपिटल सरजीकल कम्पनी दरियागज नई दिल्ली २ अपनी स्वर्गीया धर्म पत्नी श्रीमती पुरुषोत्तम देवी जी की पुण्य स्मृति मे अपने कर कमलो से पारितोषिक वितरण करेंगे।

—मन्त्री

टकारा मे ऋषि मेला

हर वर्ष की भान्ति इस वर्ष भी महर्षि दयानन्द जन्म स्थान टकारा मे शिवरात्रि पर ऋषि मेला मनाया जा रहा है। टकारा महर्षि दयानन्द का जन्म स्थान है। इसलिए मेरी भारत भर की आर्य जनता से प्रार्थना है कि वहा चलने की अभी न तैयारी कर लें ये ऋषि मेला शिवरात्रि पर तीन दिन रहेगा, जिसमे आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान सन्यासी वहा पहुचेंगे और ऋषि दयानन्द को अपनी श्रद्धाजलि अर्पित करेंगे।

—रामनाथ सहगल मन्त्री ट्रस्ट

पुनः कार्य पर

निरन्तर तीन सप्ताह तक अस्वस्थ रहने के पश्चात मैंने २७ १ ८१ से कार्यालय मे आना प्रारम्भ कर दिया है। स्वास्थ्य धीरे धीरे सुधर रहा है। आशा है शीघ्र पूर्ववत कार्य करने के योग्य हो जाऊगा। शारीरिक निर्बलता के कारण अभी अधिक भाग दौड करना मेरे लिए कठिन है।

— ओम्प्रकाश आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष

चण्डीगढ वेद गोष्ठी मे डा भारतीय जी का स्वागत

दिनाक २० १ ८१ को पौष पूर्णिमा पर १८ सै० मे श्री सुखराम जी बुधवाल के यह निवास स्थान पर विश्व वेद परिषद चडीगढ की वेद गोष्ठी के आयोजन मे डा० भवानीलाल भारतीय का सब आर्य समाजो की ओर से स्वागत करते हुए श्री आशुराम जी आर्य मन्त्रि परिषद ने कहा कि हमारा सौभाग्य है कि पजाब विश्वविद्यालय महर्षि दयानन्द विद्या पीठ के अध्यक्ष होकर आप पधारे हैं। आपने गत ४० वर्षो मे वेद धर्म के प्रचार लेखन और गम्भीर अध्यापन मे समय लगाते हुए जहा हजारो लेख पत्र पत्रिकाओ मे लिखे हैं वहा २ दजन पुस्तक भी वेद महर्षि दयानन्द आर्य समाज और स्वामी विवेकानन्द आदि पर लिखी हैं जिनसे अनेको पुरस्कार आपको प्राप्त हुए हैं।

आभार प्रकट

मेरी पूजनीय माता श्रीमती भगवन्ती देवी के आकस्मिक निधन पर अनेक मित्रो शुभचिन्तको आर्य समाजो व सस्थाओ ने इस महान् दुख मे अपनी सम्वेदना प्रकट करते हुये पत्र लिखकर हमे सबल प्रदान किया है। सबको अलग अलग पत्र भेजना सभव न देखकर इस पत्र के माध्यम से मैं सभी शुभचिन्तको का हार्दिक आभार प्रकट करता हू।

— सोमनाथ मरवाहा
सीनियर एडवोकेट,
कोषाध्यक्ष सार्वदेशिक सभा
दिल्ली

वर की आवश्यकता

ब्राह्मण परिवार की एक सुशील एम० ए० पास कद ५ फुट ३ इच सर्विस मे लगी हुई कन्या के लिए सुयोग्य सुशिक्षित [illegible] वर की आवश्यकता है इच्छुक महानुभाव पूर्ण विवरण सहित निम्नलिखित पते पर पत्र व्यवहार करें।

—श्री मनोहरलाल आर्य
मन्त्री आर्य समाज तलवाडा
टाऊनशिप (होशियारपुर)

...में पारिवारिक सत्संग

चौधरी ...राज जी बोहरा हस्पताल रोड लुधियाना के घर पर एक प्रभावशाली पारिवारिक सत्संग हुआ। यज्ञ के पश्चात् श्री कृपाराम जी आर्य, श्री राम प्यारे लाल आर्य के भक्तिरस से सने भजन हुए और श्री ओमपाल जी शास्त्री का बहुत प्रभावशाली उपदेश हुआ, चौ० देसराज जी ने श्री आशानन्द जी आर्य की प्रेरणा से आर्य समाज हबीब गंज के लिए सीलिंग पंखा और बिस्तरा दिया, पिंगलवाड़ा अमृतसर को एक सौ रुपया तथा अन्य आर्य समाजो को भी दान दिया। उपस्थिति बहुत अच्छी थी, सारा कार्यक्रम बड़ा प्रभावशाली रहा।

—

कन्या गुरुकुल हाथरस

कन्या गुरुकुल की हीरक जयन्ती ६फरवरी से ११ फरवरी १९८१ को हो रही है उसकी तैयारि ा पूर्ण उत्साह से की जा रही हैं। अनेक विद्वान् सन्यासियो,

...आर ...र सम्मोपदेशकों के ...आ चुकी है। माई-मौरिशस से भी कुछ ...से ... कार्य किया जा रहा है ... कोष के लिए पांच पा... ...अब तक दस महानुभाव ... चुके हैं आर्य समाज ... ने पांच हजार एक सौ ... दिये हैं।

—

जिला आर्य सभा सगरूर के समाचार

दिनाक ९-११ ८० को आर्य समाज तपा मे अन्तरंग सभा की बैठक हुई जिस मे श्री हरबसलाल जी गोयल को २३-११-८० का सम्मानित करने का निर्णय किया गया।

दिनाक २३-११-८० को श्रीलाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज, बरनाला मे जिला आर्य सभा की ओर से श्री हरबसलाल जी गोयल तपा को सम्मानित किया गया।

दिनाक १४-१२-८० को जिला आर्य सभा की साधारण सभा की बैठक आर्य समाज मालेरकोटला में सम्पन्न हुई जिस में २० सदस्यो ने भाग लिया।

आर्य समाज हण्डियाया बाजार, बरनाला की तदर्थ समिति ... के पत्र पर विचार करते हु... गया कि बरनाला की ... भूतपूर्व प्रधान श्री निहालच... आर्य समाज का अधिक ... कारण उनके विरुद्ध कानूनी कार्यवाही करने से पूर्व उन्हें नैतिक दृष्टि से अनुशासन पालन करने की प्रेरणा देनी चाहिए तदर्थ निम्नलिखित तीन सदस्यो की उपसमिति नियुक्त करने का निर्णय किया गया—

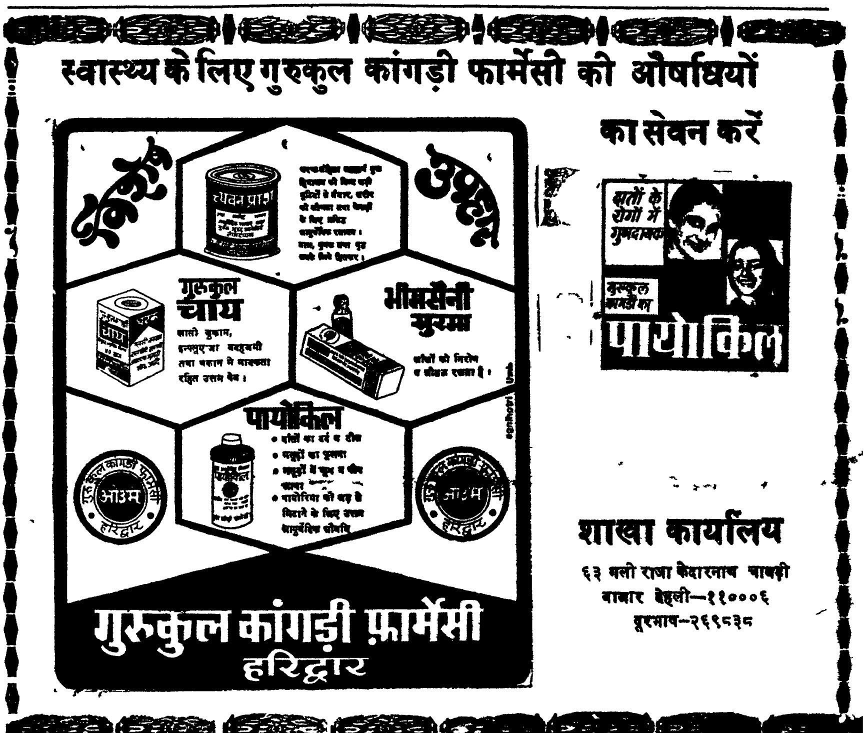
१ डा० सन्तराम जी पुरी,
२ श्री शिवराम जी महाजन सगरूर
३ प्रो० देवदत्त जी भट्टी मालेरकोटला,

उपरोक्त समिति की असफलता की स्थिति मे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब को लिखा जाएगा।

दुखियों के सहारे ... जी चले गए

आर्य समाज ... अमृतसर के युवा कोषाध्यक्ष श्री राजेश कुमार वर्मा के पूज्य पिता श्री डा० ... वर्मा पिछले दिनों अचानक हार्ट फेल हो जाने से स्वर्गवास हो गए। उनके स्वर्गवास ...की खबर सुनकर सारे इलाके में हाहाकार मच गई, नमककोट का सारा बाजार पूरी तरह से बन्द हो गया। हजारों की संख्या में रोते हुए लोग उनके अन्तिम दर्शनों को आने लगे, उस समय का दुख भरा दृश्य देखा नहीं जाता था, कोई कहता इलाके का पिता चला गया, कोई कहता गरीबों का बादशाह चला गया, कोई कहता दुखियो का सहारा चला गया। सारे इलाके के बाल युवक और वृद्ध उनसे अत्यन्त प्यार करते थे।

—...



श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वार्षिकशुल्क 15) वर्ष 14, अंक 7 4 फाल्गुन सम्वत् 2037, तदनुसार 15 फरवरी 1981 का अंक दयानन्दाब्द 156

राष्ट्रवादी और धर्मावलम्बी हिन्दी प्रेमियों से सविनय निवेदन

१ यदि आप अपने धर्म अपनी संस्कृति और अपनी परम्पराओं की रक्षा करना चाहते हैं ?

२ यदि आप देश की एकता और संगठन की सुरक्षा करना चाहते हैं।

३ यदि आप चाहते हैं कि आप और आपके बच्चे वेद गीता उपनिषद पुराण रामायण महाभारत आदि पढ सकें ?

४ यदि आप चाहते हैं कि आपके बच्चे देश के दूसरे बच्चों के साथ बात कर सकें ?

५ यदि आप नहीं चाहते कि देश का दूसरा बटवारा हो ?

६ यदि आप सम्मानपूर्वक जीना चाहते हैं।

७ यदि आप सारे राष्ट्र को एकता की एक लडी मे पिराया हुआ देखना चाहते हैं।

८ यदि आप चाहते हैं कि पंजाब से बाहिर भी आपकी सुनवाई हो ?

९ यदि आप चाहते हैं कि आपका भविष्य उज्ज्वल हो।

१० यदि आप प्रांत प्रान्त के भगडे समाप्त करना चाहते हैं।

११ यदि आप भारत को विश्व अग्रणी बनाना चाहते हैं।

इस सब के लिए आप राष्ट्र भाषा हिन्दी को अपनाओ। हिन्दी इस देश की राष्ट्र भाषा है हिन्दी हमारे धर्म की भाषा है। हिन्दी हमारे प्रयोग की भाषा है। हिन्दी हमारे साहित्य की भाषा है। हिन्दी गुरुओं और सन्तों की भाषा है।

इसलिए आप

★ धना चैकों एवं हर प्रकार के व्यवहारिक पत्रों पर हिन्दी मे हस्ताक्षर करें।

● निमन्त्रण पत्र हिन्दी मे छपवाए।

※ तारें हिन्दी में प्रेषित करें।

★ विज्ञापन हिन्दी मे छपवाए।

★ हिन्दी के समाचार पत्र-पत्रिकाओं को प्रमुखता दें।

★ सूची पत्र मूल्य पुस्तिका दिन पत्र इत्यादि हिन्दी मे छपवा कर वितरित करें।

+ अपनी दुकान कार्यालय व्यवसाय एवं अन्य प्रतिष्ठानों के नाम हिन्दी मे दें।

+ व्यक्तिगत एवं दुकानो प्रतिष्ठानों के नाम पटट हिन्दी मे लिखवाए।

+ रसीदें चालान तथा बीजक इत्यादि हिन्दी मे छपवाए।

× बैंक रेलवे तार विभाग तथा बीमा कम्पनियों से इत्यादि हिन्दी मे पत्र व्यवहार करें।

× व्यापार सम्बन्धी एवं अन्य बधाई कार्ड हिन्दी मे भेजें।

× दूरभाष निर्देशिका (टेलीफोन डायरेक्टरी) जहां हिन्दी मे उपलब्ध हो हिन्दी मे ही लें।

+ आयकर बिक्रीकर विवरणी एवं अन्य सम्बन्धित पत्र हिन्दी में भरें।

निवेदक

—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गुरुदत्त भवन चौक कृष्णपुरा जालन्धर

वेदसुधा

पार्थिव और दिव्य दोनों ऐश्वर्य हमें प्राप्त हों

ले०—डा० रामनाथ वेदालंकार जी नैनीताल

※

एन्दो पार्थिवं रयिं दिव्यं पवस्व धारया।
अस्मे वसूनि धारय सोम दिव्यानि पार्थिवा॥
ऋ० ९ ६३ ३०

अर्थ—(इन्दो) हे ऐश्वर्य वर्धक परमेश्वर आप (धारया) धारा रूप मे (पार्थिवं) पार्थिव (दिव्यं) और दिव्य (रयिम्) ऐश्वर्य को (आपवस्व) हमारी ओर प्रवाहित कीजिए। (सोम) हे रसमय प्रभो (अस्मे) हमसे (दिव्यानि) दिव्य (पार्थिवा) और पार्थिव (वसूनि) ऐश्वर्यों को (धारय) स्थिर कर दीजिए।

हे परमेश्वर आप इन्दु और सोम नाम से स्मरण किये जाते हैं। आपका नाम इन्दु इस कारण है क्योंकि आप ऐश्वर्यशाली तथा ऐश्वर्यवर्धक हैं (इदि परमैश्वर्ये उन्दी क्लेदने) सोम वल्ली के समान रसागार और रस प्रदायक होने से आप सोम कहाते हैं। आप से हमारी प्रार्थना है कि आप हमारी ओर भी अपने ऐश्वर्य तथा दिव्य रस को प्रवाहित कीजिए।

हम आपसे दोनों प्रकार के ऐश्वर्यों की याचना करते हैं पार्थिव और दिव्य। पार्थिव ऐश्वर्यों मे धन धान्य पत्र पशु घी वस्त्र उत्तम गृह भूमि खेत बाग बगीचे आदि की सम्पत्ति आ जाती है जिसके लिए वेदों मे स्थान स्थान पर प्रार्थनाए की गई हैं। यथा—

★ वयं स्याम पतयो रयीणाम। ऋग १० १२१ १०
हम ऐश्वर्यों के राजा बन जाए।

❖ वयं भगवन्त स्याम। ऋग० ७ ४१ ५
हम ऐश्वर्यवान हों

★ गोजिद भूयासमश्वजिद धनञ्जयो हिरण्यजित। अथर्व ७ ५० ८
गो अश्व धन धान्य सुवर्ण सब ऐश्वर्य मैं प्राप्त कर लूं।

※ आ वयं प्याशिषीमहि गोभिरश्वैः प्रजया पशुभिर्गृहैर्धनेन।
अथर्व० ७ ८१ ५

★ गो घोड सन्तान पशु घर धन धान्य से हम फलें फूलें।

वेद मे गृह समृद्धि का चित्रांकन करते हुए कहा गया है कि—

(शेष पृष्ठ ६ पर)

कठोपनिषद्—नचिकेता की अमर कहानी (द्वितीय भाग)

यमाचार्य द्वारा आत्मा-परमात्मा का वर्णन

(लेखक—डा सत्यव्रतजी सिद्धान्तालंकार)

(गतांक से आगे)

शरीर मे स्थित यह देही जीवात्मा जब शरीर मे से सरकने लगता है अस्य विस समानस्य शरीरस्थस्य देहिन और शरीर का विमोचन कर देता है देहात विमुच्य मानस्य तब यहा क्या शेष रह जाता है किमत्र परिशिष्यते । हे नचिकेता यही वह आत्मा है जिसके विषय मे तने पूछा था एतत वै तत (४)

जब शरीर मे से जीवात्मा निकल जाता है तब यह शरीर मटटी हो जाता है प्राण अपान भी कछ नही कर सकते इसलिए हे नाचिकेता त यह समझ ले कि यह मरण धर्मा शरीर न प्राण से न प्राणन न अपान से जीता है न अपानेन जीवति । तो फिर किससे जीता है ? प्राण अपान से जो इतर है भिन्न है उस आत्मा मे जीता है इतरण त जीवति । उस आत्मा पर ही ये दोनो प्राण तथा अपान आश्रित हैं टिके हुए हैं यस्मिन एतौ उपाश्रितौ (५

हे गौतमवंशीय नचिकेता वह गुह्य सनातन ब्रह्म गुह्यब्रह्म सनातम तथा मृत्यु के बाद आत्मा की क्या गति होती है यथा च मरण प्राप्य आत्मा भवति इस बात के विषय मे अब तझ बतलाऊ गा हन्त त इद प्रवक्ष्यामि (६)

मृत्यु के उपरान्त जिनका जैसा कर्म होता है यथा कर्म तथा जिन का जैसा ज्ञान होता है यथा श्रुतम उसके अनुसार देहधारी जीव नया शरीर धारण करने के लिए शरीरत्वाय देहिन भिन्न भिन्न योनियो को प्राप्त होते हैं योनि अन्य प्रपद्यन्ते और कितने ही स्थाणुभाव को प्राप्त होते हैं स्थाणु अन्ये अनु सयन्ति (७)

आत्मा का मृत्यु के उपरान्त क्या होता है यह बतला कर यमाचार्य परमात्मा ब्रह्म के विषय मे कहते है जब सारी सष्टि प्रलय काल मे सो जाती है तब भी जो जागता रहता है य एष सुप्तेषु जागर्ति और जो वस्तु जसी होनी चाहिए उस का वैसा ही निर्माण करता रहता है कामं कामं निर्मिमाण वही शुद्ध स्वरूप तदेव शुक्रम वही ब्रह्म 'तदेव ब्रह्म वही अमृत तदेव अमृत कहा जाता है उच्यते । उसी मे चराचर जगत के सब लोक टिके हुए हैं तस्मिन लोका श्रिता सर्वे उससे कोई बढ चढ कर नही है तत उ नात्येति कश्चन । हे नचिकेता यही है वह परमेश्वर जिसके विषय मे तूने पूछा था एतत वै तत ।

य एष सुप्तेषु जागर्ति जो सोते हुए भी जागता रहता है यमाचार्य का यह वाक्य महत्वपूर्ण है । शरीर सो जाता है परन्तु उसके भीतर कोई तत्व है जो जागरूक रहता है ।प्रकृति सो जाती है परन्तु उसके भीतर भी कोई तत्व है जो नही सोता । यह जो शरीर के सो जाने पर भी जागरूक है यह जो सृष्टि के प्रलय मे विलीन न हो जाने पर भी विलीन नही होता हे नचिकेता यही तो शरीर मे आत्मा है सष्टि मे परमात्मा है । उपनिषदों मे शरीर की चार अवस्थाओ तथा चेतना के चार स्थानो का वर्णन है । जो शरीर मे है वही सष्टि मे है। ये चार हैं जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तथा तुरीय । शरीर या सष्टि की जब जाग्रत अवस्था होती है तब चेतना का जाग्रत स्थान होता है । शरीर की जाग्रत अवस्था क्या है ? हम चलते फिरते है खाते हैं काम काज करते है यह शरीर जाग्रत अवस्था है शरीर की इस अवस्था मे शरीर की चेतना का स्थान अग प्रत्यग मे है जिनसे हम काम लेते हैं । चेतना का वहा स्थान न हो तो हिलना जुलना दौडना घमना न हो सके उस समय चेतना हमारे अगो मे जाग रही होती है सृष्टि मे चेतना का जाग्रत स्थान वह है जिसमे ससार का कारोबार चलता है जब सष्टि का कारोबार चल रहा है तब सष्टि की जाग्रत अवस्था होती है और चेतना का जाग्रत स्थान होता है तब चेतना सष्टि के भिन्न भिन्न रूपो मे आ बैठती है हिमालय पर्वत गहन गभीर समुद्र आकाश मे देदीप्यमान सूर्य चन्द्र तारे इन सब में चेतना प्रत्यक्ष जाग रही होती है । इनका जो वैभव हमे दीखता है वह चेतना का आवरण है शरीर तथा सष्टि के जाग्रत की तरह इनका स्वप्न भी होता है ये सो भी जाते हैं जिसमे चेतना जागती रहती है । शरीर की स्वप्नावस्था मे चेतना का स्वप्न स्थान हुआ है जब हम शरीर से तो सो जाते हैं परन्तु स्वप्न मे शरीर के सब काम करते हैं स्वप्न का आवरण इतना प्रबल होता है कि स्वप्न देखने वाले को कभी भ्रम नहीं होता कि यह स्वप्न है । स्वप्न में अगर कभी भ्रम हो जाए कि यह भ्रम है मैं स्वप्न तो नही ले रहा तो स्वप्न देखने वाला अपने को कहता है कि मेरे जानते-बूझते यह सब हो रहा है यह भ्रम कैसे हो सकता है स्वप्न में आदमी उठता है और कहता जाता है कितना कमाल हो गया स्वप्न देखता हुआ कहता है मैं जाग रहा हू कोई है जो सोते मे जागता है । सृष्टि की स्वप्नावस्था तब होती है जब प्रकृति कार्य रूप मे न रहकर कारण रूप मे होती है हिमालय समुद्र सूर्य चन्द्र तारे—ये सब कार्य रूप हैं जब ये इस प्रकार स्थूल रूप मे नही थे सूक्ष्म रूप में थ जब इनका किसी व्यक्ति के सामने सिर्फ ब्लयू प्रिंट था ये बने नहीं थे परन्तु सूक्ष्म मे बने थे तब सृष्टि स्वप्नावस्था मे थी परन्तु तब सष्टि मे विद्यमान चेतन का स्वप्न स्थान था । तब सष्टि सो रही थी चेतना जाग रही थी । उस समय सष्टि कार्य रूप में न हो कर कारण रूप मे थी—ऐसा कारण रूप जिसमे घट पट आदि स्थूल आकार मिट जाते हैं परन्तु सूक्ष्म रूप मे उनकी सम्भावना बनी रहती है । जिसके ध्यान मे सूक्ष्म प्रकृति से स्थूल विकार बन सकने की सम्भावना मौजूद रहती है वही सष्टि के सो जाने प्रलय मे विलीन हो जाने पर भी स्वप्न स्थान मे बैठा जागता रहता है । जाग्रत तथा स्वप्न के बाद शरीर की सुषुप्तावस्था होती है । जाग्रत म चेतना ने अंग प्रत्यग मे अपना स्थान बना लिया था स्वप्न मे चेतना अन्दर को मुड जाती है स्वप्न मे अपना स्थान बना लेती है सुषुप्ति में जाग्रत को छोड देती है स्वप्न को छोड देती है और भीतर चली जाती है । जब चेतना जाग्रत को खो देती है स्वप्न को खो देती है तब भी जागने से हट कर स्वप्न से हट कर मिट नही जाती बनी रहती है क्योकि सुषुप्ति से लौट कर सोने वाला कहता है—बडा आनन्द आया । सुषुप्ति से लौट आने पर आनन्द का स्मरण करने वाला सुषुप्ति म सो नही गया था भरपूर जाग रहा था अखड आनन्द के सोते म गोते लगा रहा था । उस समय उसका जाग्रत मे सबध टूट गया था स्वप्न में सम्बध टूट गया था वह अपनेपन मे आ रहा था—उसी आनन्द को तो सुषुप्ति से लौट कर यह स्मरण करता है इसलिए स्मरण करता है क्योकि उस समय यह सोते हुए शरीर से विलग हो गया था । सारा दुख तो शरीर का था शरीर के दुख का यह अपने ऊपर ओढ फिरता था । विलयगता आत्मा स्वरूप मे मग्न था दुख भूला—उसी का यह स्मरण कर रहा । उस समय सोते हुए भी यह जाग रहा था । सृष्टि की सुषुप्तावस्था वह है जब प्रकृति साम्यावस्था में आ जाती है, सूक्ष्म आकारी—ब्लयू प्रिंट—की अवस्था में आ जाती है । उस साम्य अवस्था जिसके सहारे टिकी रहती है, प्रकृति का जो अधिष्ठाता है—चैतन्य—वह सुषुप्त-स्थान में विराजमान होता है, यह उसका आवरण है । सृष्टि की सुषुप्तावस्था चेतना का आवरण स्थान न हो तो सृष्टि टिक नहीं सकती—न जाग्रत में न स्वप्न मे न सुषुप्ति में । ससार में जो कुछ टिका हुआ है चैतन्य के सहारे टिका हुआ है कोई जागने वाला है तभी सब कुछ चल रहा है ।

जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति के बाद तुरीय है—तुरीय अर्थात चतुर्थ अवस्था या स्थान । शरीर तथा सृष्टि की तुरीय अवस्था या चेतना का तुरीय स्थान वह है जिसमें न जाग्रत रहता है न स्वप्न रहता है न सुषुप्ति रहती है जब शरीर की तथा सृष्टि की चेतना इन तीनो को छोड कर अपने शुद्ध चैतन्य रूप में आ जाती है उस समय चेतना शरीर से पृथक प्रकृति से पृथक अपने आप मे प्रतिष्ठित हो जाता है । जब चेतना की अनुभूति शरीर से पृथक स्वरूप मे प्रतीत होने लगता है तब उस जाग्रतरूप चेतना को उपनिषत्कार आत्म कहते हैं उसे ही स्वरूप अवस्थानम कहा है जब चेतना की अनुभूति प्रकृति से सृष्टि से पृथक स्वरूप में प्रतीत होने लगती है तब उस जागरूक चेतना को उपनिषत्कार में परमात्मा कहा है उसे ही क्लेश कर्म विपाकाशयै अपरामृष्ट पुरुष विशेष ईश्वर कहा है तब शरीर तथा सृष्टि को अनुप्रमाणित करने वाला चैतन्य गुण तुरीय-स्थान मे मिलता है हे नचिकेता इसी को जान लेना आत्मा तथा परमात्मा का दर्शन है ।

शरीर में चेतना के ये रूप हम प्रति दिन अपने जीवन में देखते हैं । उन्हें देख कर सष्टि मे भी ये रूप हैं—ऐसी प्रतीति का यमाचार्य ने नचिकेता को अनुभव कराया ।८।

हे नचिकेता आत्मा की शरीर से तथा परमात्मा की सृष्टि मे पृथक स्वतन्त्र सत्ता है जो जाग्रत स्वप्न सुषुप्ति तीनो अवस्थाओं में विचरण करता हुआ भी इन तीनो से अलग चेतन शक्ति है जिसका तुरीय म बोध होता है वह ठीक ऐसे है जैसे अग्नि एक होती हुई भी अग्नि यथा एक ससार के भिन्न भिन्न पदार्थों मे प्रविष्ट होती हुई भी भुवन प्रविष्ट उन पदार्थों का रूप धारण कर लेता है 'रूप रूप प्रतिरूपो बभूव इसी प्रकार यह परमात्मा एक होता हुआ भी सब भूतों पदार्थों के अन्दर मौजूद रहता है एक तथा सर्वभूतान्तरात्मा उन पदार्थों की भांति रूप धारण कर लेता है और क्योंकि वह चेतना सर्वव्यापक है ससार के अणु अणु में मौजूद है इसलिए उन पदार्थों के बाहर भी वर्तमान रहती है रूप रूप प्रतिरूप बहिश्च ।९। (क्रमश:)

महाभारतीय इतिहास की वह ज्वलन्त घटना : कुछ बोलते तथ्य

(श्री महावीर 'नीर' विद्यालंकार गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार)

ॐ

(गतांक से आगे)

स्मरण करें—गुरु दक्षिणा के समय द्रोणाचार्य ने भी धृष्टद्युम्न के पिता द्रुपद का अपमान किया था। इन्हीं सब अपमानों का बदला लेने के लिए।

एक स्थान पर स्वयं धृष्टद्युम्न संजय से कहते हैं—"संजय तुम कौरवों से कहना कि युधिष्ठिर को उनका राज्य दे दो और अर्जुन आदि पाण्डवों से क्षमा मांग लो। यथा—

"राज्यं ददध्व धर्मराज्यस्य तूर्णं।
याचध्वं वै पाण्डव लोक वीरम् ॥

प्रश्न है? क्यों राज्य दे दो? क्यों क्षमा मांग लो? क्योंकि तुमने धर्मराज का राज्य लेकर और उसकी भार्या का अपमान करके यथा---'धर्म राज्यस्य भार्या स पर्व ६९-१० महान् अनर्थ किया है एवं अर्जुन जैसे लोक प्रसिद्ध वीर पाण्डवों का अपमान करके एव पाण्डवों भार्यास्स. पर्व ६९-४१) पाण्डवों द्वारा रक्षणीय द्रोपदी का घोर अपमान करके महान् अनर्थ के बीज बो दिए हैं, इसलिए राज्य देकर व क्षमा मांगकर कीर्ति प्राप्त करो।

इसी सन्दर्भ में हम यह भी तथ्य महाभारत की अन्तः साक्षी के आधार रखना चाहेंगे कि जुआ खेला गया और द्रोपदी को अपमानित किया गया उस समय श्री कृष्ण जी महाराज द्वारिकापुरी से दूर एवं हस्तिनापुर से भी अति दूर थे। उद्योग पर्व के निम्न श्लोक को पढिए और सुनिए---

"ऋणमेतत् प्रवृद्ध मे
हृदयान्नापसर्पति।
यद् गोविन्देति चुक्रोश कृष्णा
माम् दूरवासिनम् ॥

अर्थात् जिस समय कौरव सभा में द्रोपदी का अपमान हो रहा था, मैं हस्तिनापुर से बहुत दूर था, उस समय कृष्णा ने आर्तभाव से 'गोविन्द' कहकर, जो मुझे पुकारा था, उसका मेरे ऊपर बहुत बड़ा ऋण बढ़ता ही जा रहा है। मेरे हृदय से दूर नहीं होता। अपराधी कौरवों का संहार किए बिना उसका भार दूर नहीं होगा।

विचारिए। जब किसी पर कष्ट आता है, किसी का अपमान होता है। तब वह अपने अजीज को, अपने प्यारे को वीर क्षत्रिय को पुकारा ही करता है। क्योंकि कृष्णा (वासुदेवस्य सखी स. पर्व ६९-१०) वासुदेव की सखी थी। फिर वह समस्त सभासदों को नपुंसक समझ क्यों न यह कहती कि यदि यहां कृष्ण होते तो तुम मेरा अपमान न करते। वास्तव में यदि कृष्ण जी वहां होते या पहुंच गए होते तो महाभारत वहीं हो गया होता। श्री कृष्ण उस समय के महान् धर्मज्ञ, महान् पराक्रमी महान् राजनीतिज्ञ, कूटनीतिज्ञ और राष्ट्रीय नेता माने जाते थे।

दुःख तो इस बात का है बड़े बड़े विद्वान् भी लोक प्रवाह मे बहकर वैसा ही लिख देते हैं यथा---"महाभारत में लिखा है कि द्रोपदी के पातिव्रत धर्म के प्रताप से तथा श्री कृष्ण चन्द्र जी की कृपा से द्रोपदी का चीर इतना बढ़ा कि दुशासन चीर खींचता खींचता थक गया परन्तु द्रोपदी नंगी न हुई। इसमे ऐतिहासिक भाग इतना ही मालूम होता है कि श्री कृष्ण ने द्रोपदी की रक्षा की।" (प्रो० रामदेव जी कृत भारत वर्ष का इतिहास भाग ४ पृ० ३७२)।

कथा, वे सिर पैर की है। श्री कृष्ण जी ने चीर बढ़ाकर रक्षा की तो अप्राकृतिक कृत्य में वे भी मिल गए। अस्तु।

अब आप महाभारत के वन पर्व का एक उदाहरण देखिए। जिस समय पांडव वनवासी हो जाते हैं तब श्री कृष्ण जी उनका कुशल मंगल पूछने वहा दल-बल सहित पहुचे। बातें होने लगी। बातो ही बातों मे श्री कृष्ण जी ने बड़े कष्ट से कहा---

"एवम् निहत्य समरे सौभ
शाल्व निपात्य च।
आनर्तान् पुनरागम्य सुहृदां
प्रीतिमावहम् ॥ व० प० ४०
तदेतत् कारण राजन् यदह
नागसाहृवयम्।
नागमं परिक्षीरघ्न न हि जीवेत्
सुयोधन ॥ व० प० ४१
मय्यागते अवश्यं वीर द्यूतं न
भविष्यति तथा।
अथाहं कि करिष्यामि शैल्वक्षेमुरि-
बोधकम् ॥ व० प० ४२

अर्थात्! राजन्! क्योंकि मैं सौभ और शाल्व को युद्ध में परास्त करने के निमित्त हस्तिनापुर से दूर था। इसीलिए द्यूत सभा में उपस्थित न हो सका। यदि मैं वहा पहुच पाता तो दुर्योधन जीवित नहीं रह सकता था। अथवा मेरे वहा पहुचने पर जुआ होता ही नही, किन्तु राजन जल पर से पुल टूटे हुए के समान अब मुझे बताओ, मैं आपका क्या प्रिय करूं गा।

पाठक! यह एक श्लोक ही 'चीर-हरण' की वैधता को चुनौती देकर उसे अवैध घोषित कर उसकी मान्यता के भ्रम को खण्डित कर देता है, वास्तव में उस घटना को हमें सत्य परिप्रेक्ष्य में लेकर देखना चाहिए ' विदुर और विकर्ण मण्डली के साहसिक एवं ऐतिहासिक वचनों का यहा महान् महत्व है, द्रोपदी को घोर अपमानित करने के लिए दुर्योधन की आज्ञा से दुःशासन के बढ़ते कदम और दुस्कृत्य करने को उद्यत हाथ विकर्ण मण्डली के विस्मित एवं प्रजा विरोध एव उत्पात के कारण वही रुक गए. समस्त सभासद् धृतराष्ट्र और गांधारी एक अनहोनी घटना को महा भारतीय इतिहास मे जुडने से बचा गए।

वास्तव में महाभारत के विशाल-कलेवर के मध्य में — तथ्य बिन्दु टके हुए हैं जो अनायास ही अपनी आभा से हमारा ध्यान आकृष्ट कर लेते है, सगत बात को ग्रहण करने और असगत बात को त्यागने के लिए विद्वानों को सदैव उद्यत रहना चाहिए तभी उपनिषद् की यह ऋचा सार्थक होगी----"असतो मा सद् गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्माऽमृत गमय। बृहदारण्यक। अ० १-३ बा०-मं० २८ ॥

--

गुरुकुल कांगड़ी में गणतन्त्र समारोह

२६ जनवरी की प्रभात वेला में सूर्य की आनन्ददायिनी खिलती धूप में मान्य कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा जी ने विद्यालय के क्रीडाङ्गन में 'राष्ट्रीय ध्वज का आरोहण किया, विद्यालय विभाग एवं विश्वविद्यालय के एन० सी० सी० केडिट्स (छात्रों) ने झण्डे को सलामी दी, मान्य कुलपति जी ने परेड का निरीक्षण किया। तदनन्तर विद्यालय विभाग की ओर से बड़ा ही मनमोहक रंगारंग कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया, ब्रह्मचारियों ने संस्कृत में कव्वाली (कवितावली) तथा अनेक देशभक्ति एव वीर रस से पूर्ण गीतो से समस्त जनसमूह को सम्मोहित कर लिया, कार्यक्रम का संयोजन विद्यालय के तरुण अध्यापक श्री प्रेमचन्द जी शास्त्री ने किया। प्रो० चन्द्रशेखर त्रिवेदी जी एव विद्यालय अधिष्ठाता प० चन्द्रकेतु जी के संरक्षण में ब्रह्मचारियो ने सस्वर श्लोक पाठ किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि गुरुकुल के भू० पू० कुलपति एव इतिहासज्ञ डा० सत्यकेतु जी विद्यालंकार ने गणतन्त्र दिवस का महत्व बताते हुए गुरुकुल कांगड़ी के छात्रों द्वारा स्वतन्त्रता आन्दोलन मे जीवन आहुत करने वाले ब्र० सर्वमित्र की चर्चा की एव गुरुकुल की भावी उन्नति की ओर इंगित किया, विद्यालय के छात्रों एव विश्वविद्यालय के एन० सी० सी० केडिट्स का नेतृत्व क्रमशः उनके कमाण्डरों श्री रणजीतसिंह जी पी० टी० आई० एव प्रो० वीरेन्द्र अरोड़ा जी ने किया। इस पुण्य अवसर पर अनेक महानुभावों ने उद्बोधक भाषण दिए। अन्त में विद्यालय की ओर से समस्त दर्शकों एव छात्रों को मिष्ठान वितरित किया गया, जयघोषों के पश्चात् ३१वें गणतन्त्र की कार्यवाही समाप्त हुई।

—

छुटमलपुर में मानव सेवाश्रम का उद्घाटन

बसन्त पचमी के पर्व पर ९ २ ८१ को छुटमलपुर (जिला सहारनपुर) मे एक मानव सेवा आश्रम का उद्घाटन श्री स्वामी भजनानन्द ने किया।

यह आश्रम दीन-दुखियो की सेवा के लिए बनाया गया। श्री श्रीरामजी पथिक एक उत्साही कार्यकर्त्ता हैं जिनके हृदय मे दीन-दुखियो की सेवा के लिए बडी तडप है। ऐसा ही एक आश्रम उन्होने सहारनपुर मे भी खोला था जो एक बहुत बडा रूप धारण कर गया है और अब छुटमल के श्री डा० खजानचन्द धीगरा, डा० त्रिलोकचन्द महेश्वरी श्री नानकचन्द पहुजा के सहयोग से मानव सेवा आश्रम की स्थापना कर दी है। समारोह बडा प्रभावशाली रहा, छुटमलपुर के अतिरिक्त बाहिर से भी सैकड़ो लोगो ने इस समारोह मे भाग लिया।

—

आर्य मर्यादा के ग्राहक स्वयं बनों और दूसरों को बनाओ, आर्य समाज के सदस्य स्वयं बनो और दूसरों को बनाओ, हिन्दी भाषा—स्वयं भी पढ़ो और दूसरों को भी पढ़ाओ :

आर्य समाज गोविन्दगढ़ में वसन्त पचमी पर्व

आर्य समाज गोविन्दगढ़ मे वसन्त पचमी पर्व बड़ी धूमधाम से मनाया गया। सैकड़ो आर्य बन्धुओं ने इसमे भाग लिया कई उच्चकोटि के विद्वानों ने अपने विचार बसन्त पचमी पर्व के उपलक्ष मे तथा वीर बालक हकीकतराय के सम्बन्ध मे रखें। स्त्री समाज गोविन्दगढ की मन्त्राणी कृष्णा कोछड़ तथा दूसरी बहनो ने इसे सफल बनाने मे पूरा २ सहयोग दिया महिलाए पीत वस्त्र धारण करके आई तथा पीले हलवे का प्रसाद यज्ञ समाप्ति पर सभी आए हुए बन्धुओ को दिया गया।

—

आर्य वानप्रस्थाश्रम गुरुकुल भटिण्डा के लिए दान

१ श्री आतीराम जी शर्मा अहमद गढ वाले (गाय खरीदने के लिए) एक हजार रुपये।

नरञ्जन सिह जी सिलीगुडी रुपये।

३ श्री त्रिभुवन जी शास्त्री मानसा मण्डी वाले १०१ रुपये।

४ श्री पृथ्वीराज जी जालन्धर ५० रुपये।

५ श्री सुन्दरलाल जी सराफ भटिण्डा ने गुरुकुल के सभी विद्यार्थियो को नये कपड़े सिलाकर दिए।

६ श्री धर्मपाल जी सिगला भटिण्डा ने आर्य वानप्रस्थ आश्रम को दस नई रजाईया दान दी।

—

भीखी ग्राम (भटिण्डा) मे आर्य समाज के लिए भूमि दान मे प्राप्त

श्री ओम्प्रकाश जी आर्य ने सूचना दी है कि श्रीमती द्रोपदी देवी धर्म पत्नी श्री रोशनलाल जी मन्त्री आर्य समाज भटिण्डा ने अपने पिता श्री लालसिह जी मित्तल से प्राप्त भीखी ग्राम (भटिंडा) की चारो स्थानो की भिन्न २ भूमि आर्य समाज ... दी। जिला आर्य सभा भटिंडा ने दानी का धन्यवाद किया।

हिसार ... शताब्दी समारोह ... रम्भ

हरियाणा प्र... सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी समारोह जो हिसार नगर में २७ से २९ मार्च तक आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा के तत्वावधान मे मनाया जा रहा है की तैयारी आरम्भ हो गई है

आर्य समाज के त्यागी तपस्वी संयासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की प्रेरणा पर गुरुकुल आर्य नगर (हरियाणा) के संचालक वीतराग सन्यासी स्वामी देवानन्द जी सरस्वती न शताब्दी समारोह पर आयोजित चारो वेदो के महायज्ञ के लिए जोकि ८ मार्च रविवार से आरम्भ होगा के लिए ५ हजार रुपये तथा ५ मन घी का दान दिया है।

गत मास हिसार के आर्य समाज के कार्यकर्ताओ की एक बैठक आर्य समाज मन्दिर हिसार में सम्पन्न हुई, इस बैठक मे एक स्थानीय उपसमिति का गठन किया गया दयानन्द कालेज हिसार के प्रिंसिपल श्री नारायणदास जी ग्रोवर को समारोह की तैयारी करने के लिए संयोजक मनोनीत किया गया है। प्रान्तीय स्तर की समिति का गठन शीघ्र ही आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की अन्तरंग सभा मे होगा तथा समारोह का विस्तृत कार्यक्रम तैयार किया जाएगा। हरियाणा प्रदेश के सभी आर्य समाजों तथा गुरुकुलो के अधिकारियो से निवेदन है कि वे अपने उत्सवो की तिथिया २७ से २९ मार्च की रखें ताकि इस समारोह में सभी आर्य समाजें आसानी से भाग ले सकें।

—केदारसिंह आर्य

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा ... आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वार्षिक शुल्क 15) वर्ष 14 अंक 8 11 फाल्गुन सम्वत् 2037, तदनुसार 22 फरवरी 1981 का अंक दयानन्दाब्द 156

महर्षि दयानन्द ने कहा था-

'यद्यपि मैं आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हू तथापि जैसे इस देश के मत मतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथा तथ्य प्रकाश करता हू। वैसे ही दूसरे देशस्थ वा मतवालों के साथ भी वर्तता हू जैसा स्वदेश वालो के साथ मनुष्यो उन्नति के विषय में वर्तता हू वैसा विदेशियों के साथ भी तथा सब सज्जनो को भी वर्तना योग्य है। क्योंकि मैं भी जो किसी एक का पक्षपाती होता तो जैसे आज कल के स्वमत की स्तुति मण्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा हानि और बन्द करने में तत्पर होते हैं वैसे मैं भी होता परन्तु ऐसी बातें मनुष्यपन से बाहिर हैं। क्योंकि जैसे पशु बलवान होकर निर्बलो को दुःख देते और मार भी डालते हैं जब मनुष्य शरीर पाके वैसा ही कर्म करते हैं तो वे मनुष्य स्वभाव युक्त नही किन्तु पशुवत है और जो बलवान होकर निर्बलो की रक्षा करता है वही मनुष्य कहाता है और जो स्वार्थ वश होकर पर हानि मात्र करता है वह जानो पशुओं का बडा भाई है।

महर्षि दयानन्द जी महाराज ने यह शब्द सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका मे लिखे हैं। जो लोग महर्षि को मत मतान्तरो का विरोधी समझते हैं वह भूल में हैं। महर्षि उस व्यक्ति को अच्छा नही समझते थे जो दूसरे मत की निन्दा करता है और अपने मत की प्रशंसा करता है। दूसरो के मत की निन्दा करने की बातो को महर्षि मनुष्यपन से बाहिर की बात कहते हैं। जो स्वार्थ वश होकर पर हानि करता है महर्षि उसे निरा पशु ही नही समझते बल्कि पशुओं का बडा भाई मानते हैं।

इसलिए महर्षि जी ने सत्यार्थ प्रकाश मे जो कुछ भी लिखा है वह निष्पक्ष होकर लिखा है निःस्वार्थी होकर लिखा है उन्होने किसी भी मत से पक्षपात नही किया। बल्कि दूध का दूध पानी का पानी करके रखा है। महर्षि की दृष्टि में सारे ससार के मनुष्य एक ही हैं। वह किन्ही को श्रेष्ठ और किन्ही को निकृष्ट नहीं समझते। ऋषिवर के सार्वभौम विचार थे। वह लिखते हैं —

संसार का उपकार करना इस समाज का मुख्य उद्देश्य है। ऋषिवर सारे संसार को अपना समझते थे। इससे उनका कितना विशाल हृदय प्रकट होता है। वह आर्यावर्त देश में उत्पन्न होने पर भी केवल आर्यावर्त का ही उपकार करना नहीं चाहते बल्कि सारे संसार का [illegible] चाहते हैं और ऐसा ही अपने अनुयायियों को उपदेश देते [illegible] है। [illegible] विशालता है। [illegible]

हमारी आयु बढ़े।

ये चिद्धि मृत्यु बन्धव आदित्या मनव स्मसि।
प्र सू न आयुर्जीवसे तिरेतन। ऋग ८ १८ २२

अर्थ (आदित्या) हे आदित्यो (ये चिद् हि) जो भी हम (मनव) मनुष्य (मृत्युबन्धव स्मसि) मृत्युओ के शिकार हो गए हैं (न) उन हम लोगो की (आयु) आयु को (सु जीवस) उत्कृष्ट जीवन के लिए (प्र तिरेतन) बढ़ाओ।

जो उत्पन्न हुआ है उसे एक दिन मरना अवश्य है यह ईश्वरीय नियम है। कवि ने कहा है कि जन्म लेते ही बालक को मृत्यु पहले गोद मे लेती है माता बाद में

क्रोडीकरोति प्रथम यदा जातमनित्यता।
धात्रीव जननी पश्चात तदा शोकस्य क क्रम।

परन्तु पूर्ण आयु जीवो और जीवितों की तरह जीवो इसके लिए मनुष्य को अवश्य प्रयत्नशील होना चाहिए। विधाता ने प्रत्येक जीव की आयु पहले से निश्चित की हुई है उससे पहले उसे कोई मार नही सकता और उसके बाद उसे कोई जिन्दा नही रख सकता यह विचार धारा वैदिक नही है। वेदो मे स्थान स्थान पर आयु को बढाने की प्रेरणाए मिलती हैं।

—प्र नार्यायु प्रतर नवीय ऋग १० ५९ १
हमारी आयु उत्तरोत्तर बढ़े नित्य नवीन होती चले।
—आयुष्मत्तरं प्रतर जीवसे न। अथर्व ६ ४१ ३
सुखी जीवन के लिए हमारी आयु का अधिकाधिक बढाओ।
द्राघीय आयु प्रतर ते दधामि। अथर्व ८ २ २
मैं तेरी आयु दीर्घतर करता हू।

प्रस्तुत मन्त्र में आयु बढाने के लिए आदित्यो से प्रार्थना की गई है। आदित्य अधिदैवत प्रक्रिया मे मित्र वरुण अर्यमा भग आदि विविध सूर्यों का नाम है। प्रत्येक मास का सूर्य किन्हीं नवीन गुणो और शक्तियो से युक्त होता है। इस दृष्टि से बारह आदित्य होते हैं और उनका नाम भी पृथक पृथक होता है। प्रत्येक मास की आदित्य किरणो का सेवन करके हम प्राप्त रोगो से मुक्त और अप्राप्त रोगो से दूर रह सकते हैं। सूर्य प्राण का स्रोत है प्राण प्रजानामुदयत्येष सूर्य। वह अपनी प्राणमय रश्मियो से न केवल शारीरिक रोगो को किन्तु मानसिक रोगो को भी हरता है। शारीरिक और मानसिक रोग ही मनुष्य की आयु को क्षीण करने वाले हैं। उन्हें दूर करके सूर्य ही दीर्घायुष्य प्रदान करता है।

परन्तु मृत्यु केवल प्राणवियोग का ही नाम नही है। जीवन मे मनुष्य की सैंकडो मृत्युए होती हैं—ये मृत्यव एकशतम् (अथर्व ८ २ २७)। ज्यो ही मनुष्य किसी आदर्श से च्युत होता है पथभ्रष्ट होता है त्यो ही उसकी नैतिक मृत्यु हो जाती है। मनुष्य मननशील और विवेकयुक्त होने के कारण मनु कहलाता है। परन्तु जब वह अपने मनुष्यत्व का अपनी सदविचारशीलता को अपने सदविवेक को छोडकर काम, क्रोध, लोभ मोह मद मत्सर आदि व्याधियो से ग्रस्त हो

(शेष पृष्ठ ६ पर)

कठोपनिषद्—नचिकेता की अमर कहानी (द्वितीय भाग)

यमाचार्य द्वारा आत्मा-परमात्मा का वर्णन

(लेखक—डा सत्यव्रत जी सिद्धान्तालंकार)

(गताक से आगे)

हे नचिकेता अग्नि की तरह वायु भी जैसे एक होती हुई—वायु यथा एक ससार के भिन्न-भिन्न पदार्थों मे प्रविष्ट होती हुई—भुवन प्रविष्ट उन पदार्थों का रूप धारण कर लेती है—रूप रूप प्रति रूपो बभूव इसी प्रकार वह परमात्मा एक होता हुआ भी सब भूतो-पदार्थों के अन्दर मौजूद रहता है एक तथा सर्वभूतान्तरात्मा उन पदार्थों का मानो रूप धारण कर लेता है और क्योकि वह चेतना सर्व व्यापक है ससार के अणु-अणु मे मौजूद है इसलिए उन पदार्थों के बाहर भी वर्तमान रहती हैं-रूप रूप प्रतिरूपो बहिश्च ।१०।

हे नचिकेता, सूर्य जैसे सब लोको का प्रकाशक है उनकी मानो आख है-'सूर्यो यथा सर्वलोकस्य चक्षु परन्तु हमारी आखो के दोषो में वह लिप्त नही होता न लिप्यते चाक्षुषै बाह्य दोषै इसी प्रकार परमात्मा एक होता हुआ भी सब भूत पदार्थों तथा प्राणियों-के भीतर मौजूद रहता हुआ भी एक तथा सर्व-भूतान्तरात्मा उनके दु खो से लिप्त नही होता-न लिप्यते लोकदु खेन क्योकि वह उनके भीतर मौजूद होता हुआ भी बाहर है—बाह्य ।११।

हे नचिकेता सब भूतों-पदार्थों तथा प्राणियो-को वश मे रखने वाली चेतन-शक्ति एक है एको वशी वही सब भूतो के भीतर बैठी है—सर्वभूतान्तरात्मा अन्दर बैठी वह उनके नाना रूपो का भीतर से निर्माण कर रही है—रूप रूप बहुधा य करोति । जीवात्मा के भीतर भी वह परमात्म शक्ति बैठी है, वह शरीरस्थ ही नही, आत्मस्थ भी है। उस शरीरस्थ तथा आत्मस्थ परमात्म शक्ति को जो धीर पुरुष देख लेते हैं, 'त आत्मस्थ ये अनुपश्यन्ति धीरा उन्हीं का शाश्वत-निरन्तर-सुख प्राप्त होता है, तेषा सुख शाश्वत' दूसरो को नही न इतरेषाम् ।१२।

हे नचिकेता, सृष्टि को दो भागो में देखा जा सकता है-निर्जीव तथा सजीव। निर्जीव में पृथिवी द्यौ तथा अन्तरिक्ष हैं, सजीव में प्राणी हैं। पृथिवी पर अग्नि, द्यौ मे वायु, अन्तरिक्ष में सूर्य-ये तीन निर्जीव सृष्टि के प्रतिनिधि है, इन तीनों मे परमात्मा बैठा हुआ इनको वश मे रख रहा है, 'वशी है, प्राणियों मे जीवात्मा है, उसमे भी वही भगवान् विद्यमान है, इनके भीतर ही नही, बाहर भी वही विद्यमान है, वही इनके नाना रूपो का निर्माण करता है ' भौतिक जगत् अग्नि, वायु सूर्य तथा आध्यात्मिक-जगत्-जीवात्मा, इन सब मे वही है भौतिक-जगत मे नानात्व-रूप रूप-वही करता है, आध्यात्मिक जगत् मे वही जीवात्मा मे स्थित है-आत्मस्थ है। इनके भीतर भी वही, इनके बाहर भी वही।

नित्यो मे वही एकमात्र नित्य है-'नित्य नित्यानाम्' चेतनो मे वही एकमात्र चेतन है चेतन चेतनानाम् अनेको मे वही एकमात्र एक है एको बहूनाम्, हमारी कामनाओ को वही एक पूर्ण करने वाला है यो विदधाति कामान् । उस आत्मा मे स्थित भगवान् को जो धीर पुरुष देख पाते हैं-त आत्मस्थ ये अनुपश्यन्ति धीरा उन्हे शाश्वत निरन्तर-शान्ति प्राप्त होती है-तेषाम् शान्ति शाश्वती, दूसरो को नही-यमाचार्य ने परमात्मा के सम्बन्ध मे नचिकेता को जो कुछ कहा—परमात्मा को सर्वज्ञ जानकर जिस प्रकार शान्ति प्राप्त होती है-यह सब सुनकर वह मन ही-मन सोचने लगा-हे आचार्य, आप अब तक कहते रहे-एतत् वै तत्-परमात्मा ऐसा है जिसके विषय में मैंने पूछा था। ठीक है, वह ऐसा है-तत् एतत् इस प्रकार परमात्म ज्ञानी उसे मानते हैं-'इति मन्यन्ते वह ऐसा होता हुआ भी अनिर्वचनीय है-'अनिर्देश्यम्, उसे जानकर परम सुख प्राप्त होता है—परम सुखम्' परन्तु मेरे भीतर प्रश्न उठ रहा है कि मैं उसे कैसे जानू—कथ नु तद् विजानीयाम् । नचिकेता के मन की शका है-क्या वह प्रकाशित होता है-'किमु भाति' या अनुभव मे आता है 'विभाति वा'

प्रकाशित होने तथा अनुभव में आने में भेद है। प्रकाशित होने में दूसरे की अपेक्षा है, अनुभव में आने में दूसरे की अपेक्षा नहीं है। रात्रि के समय सब भवन में बैठे हैं, बिजली की रोशनी हो रही है। सब भवन में जो बैठे हैं उन्हें बिजली की रोशनी प्रकाशित कर रही है [illegible] रहा था वह अन्धेरे में विलीन हो जाता है, परन्तु उसके प्रति अनुभव बना रहता है। अनुभव मे बाहर के प्रकाशक की जरूरत नहीं रहती, अनुभव स्वत प्रकाश है। नचिकेता के मन में शका है कि परमात्मा को कैसे जानू । क्या मन्दिर में जाऊ, मस्जिद मे जाऊ, गिरजे में जाऊं वहा परमात्मा के दर्शन मिलेंगे या उसका दर्शन आत्मानुभूति की तरह अपने भीतर खोजू ?

यमाचार्य कहते हैं, नहीं, उसे खोजने के लिए बाहर के प्रकाश की जरूरत नहीं है, वहा न सूरज की रोशनी की जरूरत है, न चांद, न तारो, न विद्युत की रोशनी काम देती है— न तत्र सूर्यो भाति, न चन्द्रतारक, नेमा विद्युतो भाति, वह इन रोशनियो का विषय नही है, आग की तो बात ही क्या है-'कुतोऽयमग्नि इन सब मे प्रकाश तो उसी से आता है, इनसे उसको नही देखा जाता. उससे इन को देखा जाता है—उसके प्रकाश को लेकर ये प्रकाशमान है—'तमेव भान्त मनुभाति सर्व उसका प्रकाश सूर्य, चन्द्र तारे विद्युत अग्नि को प्रकाशमान् कर रहा है—तस्य भासा सर्व इद विभाति—उसकी ज्योति न हो, तो न सूर्य मे ज्योति रहेगी, न चांद मे, न तारो में, न विद्युत में न अग्नि मे। इसलिए बाहर के प्रकाश से वह नहीं जाना जाता, भीतर के प्रकाश से—अन्तरात्मा के अनुभव से ही उसे जान पाते हैं जैसे बत्ती के बुझ जाने पर भी हमे अपना प्रतीतिजन्य ज्ञान बना रहता है, इसलिए, हे नचिकेता, तू परमात्मा के ज्ञान के लिए बाहर के प्रकाशक साधनों पर आश्रित न रह कर भीतर की ज्योति से उसके दर्शन कर वह बाहर के साधनो का विषय नहीं, अनुभूति का विषय है।

(१५)

★षष्ठी वल्ली★

नचिकेता सोचता है कि सृष्टि में परमात्मा नहीं दीखता न अनुभव में आता है—फिर परमात्मा की बात ध्यान में नहीं बैठती। यमाचार्य कहते हैं—नहीं दीखता, नही अनुभव में आता क्योंकि ससार तो है ही उल्टा। संसार तो ऐसे बना है कि जो दीखता है वह गलत है, जो नहीं दीखता वह सही है—सब कुछ उल्टा है। नदी के पास पेड खड़ा है, तो वह ऊपर दीखती है, नीचे में मुख देखे तो दाया बायीं तरफ और बायां दायीं तरफ दीखता है प्रतिबिम्ब सदा उल्टा होता है। ससार का भी तो आख में प्रतिबिम्ब पडता है। ससार में प्राकृतिक पदार्थ दीखते हैं, परमात्मा नहीं दीखता, प्राकृतिक सत्य प्रतीत होती है, परमात्मा असत्य प्रतीत होता है। असलीयत उल्टी है। प्राकृतिक पदार्थ असत्य है, परमात्मा सत्य है। यह संसार [illegible] 'अश्वत्थ'—वृक्ष के समान है जिसकी जड़ ऊपर है, [illegible] 'अश्वत्थ' [illegible] क्योंकि श्व है, [illegible] 'श्व' अर्थात् नहीं [illegible] अर्थात् कल—जो कल तक स्थिर नहीं रहता वह 'अश्वत्थ' है। इसके अतिरिक्त यह ससार उल्टे वृक्ष के समान है—वृक्ष की जड़, उसका मूल नीचे होता है, शाखाए ऊपर होती है, परन्तु भगवान् तथा प्रकृति से बना यह संसार रूपी वृक्ष उल्टा है। भगवान् इस ससार-वृक्ष का मूल है, उसे ऊपर समझ लो, प्रकृति का ससार वृक्ष की शाखाए हैं उन्हें नीचे समझ लो, तो सत्य का स्वरूप निखर आता है। हम प्रकृति तथा भगवान् को साधारण वृक्ष की तरह समझे बैठे हैं जिसकी जड़ नीचे और शाखाए ऊपर हैं। परन्तु ससार की असलीयत तो इससे उल्टी है। इस अद्भुत वृक्ष की जड ऊपर है इसकी शाखाए नीचे हैं—भगवान् ससार रूपी वृक्ष का मूल हैं, प्रकृति अपने फैलाव के साथ इस वृक्ष की टहनिया हैं। ब्रह्मांड मे जो है वही तो पिंड में है। पिंड मे सिर जो सारे शरीर का नियंत्रण करता है वह ऊपर है, हाथ-पैर जो इस शरीर रूपी वृक्ष की शाखाए हैं वे नीचे हैं। अश्वत्थ वृक्ष को उल्टा खड़ा कर लो तो ससार रहस्य समझ आ जाएगा—जड़ें इसकी प्रमाण हैं इसका जीवन हैं, भगवान भी सृष्टि का मूल है, उसका जीवन है।

सृष्टि का मूल तत्व भगवान है, परमेश्वर है, वह ही शुक्रम है, वही ब्रह्म है, वही अमृत है—तदेव शुक्र तद् ब्रह्म, तदेवामृत उच्यते । चराचर जगत् के सब लोक लोकान्तर उसी के सहारे टिके हुए हैं उसी पर उनका अस्तित्व आश्रित है—तस्मिन् लोका श्रिता सर्वे उसको कोई पार नहीं कर सकता, वही बेअन्त है, उसके आगे कुछ नहीं है—तदु उ नात्येति कश्चन । हे नचिकेता, वही परमेश्वर है जिसके विषय में तूने पूछा था—'एतद् वै तत्

(१)

यह जो भी सम्पूर्ण जगत् है—यद् 'इद किञ्च जगत् सर्व'—यह निकला अर्थात् निकला है—अव्यक्त से व्यक्त होकर प्राण में गति करता है—प्राण एजति निसृतम् । प्राण ही तो मनुष्य का जीवन है, जो शरीर तथा जगत् को जीवन प्रदान करता है, यह प्राण शक्ति स्वय गति नहीं करती, इसे भी कोई गति देता है, गति देने वाले के भय से प्राण-शक्ति गति करती रहती है, प्राण शक्ति गतिमान रहती है तो जगत् भी गतिमान रहता है ' जगत् को [illegible] इसलिए है क्योंकि वह [illegible] को भी नहीं [illegible], [illegible] बनी रहती है। यह ऐसे ही है [illegible] सामने वज्र लेकर खड़ा हो

शेष पृष्ठ ५ पर

सम्पादकीय—

क्या आर्य समाज इस चुनौती को स्वीकार करेगा ?

आज सारे देश में जो कुछ हो रहा है उसे देखकर कई बार यह चिन्ता होने लगती है कि हमारे देश में हिन्दुओं का अस्तित्व भी रह सकेगा या नहीं। धर्म-निरपेक्षता के नाम पर अल्पसंख्यकों को वह कुछ दिया जा रहा है जो अन्त में जाकर इस देश के संगठन को छिन्न-भिन्न कर देगा। हम वर्तमान परिस्थितियों पर गम्भीरतापूर्वक विचार करें तो पता चलेगा कि सन् १९४७ से पहले हमारा इतिहास जो रूप धारण कर रहा था वही अब फिर नये सिरे से दोहराया जा रहा है। उस समय साम्प्रदायिक मुसलमानों को कांग्रेस ने इतना अधिक सिर पर चढ़ा लिया था कि उन्होंने अन्त में देश का विभाजन कराकर ही दम लिया। उस समय हम जब यह कहा करते थे कि इन साम्प्रदायिक तत्वों की अनुचित मांगों को स्वीकार न किया जाए, तो हमें ही साम्प्रदायिक कहकर हमारा ही मुंह बन्द करने का प्रयत्न किया जाता था। आज फिर हम अपने देश में वही कुछ देख रहे हैं। पिछले कुछ मास में जो कुछ उत्तर प्रदेश में हुआ है उसकी अवहेलना नहीं की जा सकती। सरकार भी कई बार कह चुकी है कि बाहिर से रुपया आता है कुछ मुस्लिम संस्थायें और कुछ ईसाई संस्थाएं उसके द्वारा अपना प्रचार करती हैं। मुसलमानों की सन्तुष्टि के लिए सरकार ने बिहार और उत्तर प्रदेश में उर्दू को प्रोत्साहन देना आरम्भ कर दिया है, अब यह भी सुना गया है कि सरकार की यह योजना भी विचाराधीन है कि जो सुविधाएं इस समय हिन्दू हरिजनों को मिली हुई हैं वह उन हरिजनों को भी दी जाएं, जो हिन्दू धर्म को छोड़कर ईसाई या मुसलमान बन जाते हैं। यदि ऐसा हुआ तो हिन्दू हरिजनों के लिए ईसाई या मुसलमान बनना आसान हो जाएगा। बाहिर से जो रुपया आ रहा है उसके द्वारा ईसाई और मुसलमान दोनों हिन्दू हरिजनों को अपना धर्म छोड़ने के लिए तैयार कर सकेंगे।

यह तो चित्र का एक पक्ष हुआ, दूसरा पक्ष यह है कि हिन्दी को एक राष्ट्र भाषा होने के नाते जो महत्व प्राप्त था वह भी समाप्त किया जा रहा है, एक तरफ तो हिन्दी के स्थान पर अंग्रेजी को प्रोत्साहन दिया जा रहा है और कई प्रान्तों में क्षेत्रीय भाषाओं को अधिक महत्त्व दिया जा रहा है। किसी भी देश की एकता और संगठन की सुरक्षा के लिए उसकी एक भाषा होनी आवश्यक है। इसी विचार से हमारी संविधान सभा ने हिन्दी को राष्ट्र भाषा बनाया था, परन्तु अब उसे पीछे धकेला जा रहा है और दूसरी भाषाओं को उसके सिर पर बैठाया जा रहा है।

पंजाब में स्थिति सबसे अधिक विकट है यहां के अकाली केवल हिन्दी को ही समाप्त करना नहीं चाहते, वह तो अब पंजाब को एक पृथक् राष्ट्र कहते हैं और अपने लिए स्वायत्तता मांगते हैं। वह हिन्दी को किसी भी रूप में सहन करने को तैयार नहीं। इसी के साथ वह पंजाब के हिन्दुओं के विरुद्ध ऐसी बातें करते रहते हैं जिन्हें सहन करना कठिन होता जा रहा है। सन् १९४७ से पहले मुस्लिम लीग ने दो सिद्धान्तों, दो कौमों की बात करके देश का बटवारा कराया था और पाकिस्तान बनवाया था। यही कुछ अब पंजाब के अकाली कर रहे हैं। लेकिन किसी भी राजनैतिक दल को उसकी चिन्ता नहीं है। राजनैतिक दल तो उन्हें प्रोत्साहन देते हैं, प्रत्येक राजनैतिक दल को वोटों की आवश्यकता होती है। उसे इस बात की चिन्ता नहीं होती कि देश का क्या बनेगा? इसलिए वह साम्प्रदायिकता के विरुद्ध कहते तो बहुत कुछ हैं परन्तु स्वयं साम्प्रदायिकता को प्रोत्साहन देते हैं। आज विघटनकारी शक्तियां जितनी प्रबल हैं इससे पहले कभी न हुई थीं। यही हमारे सामने सबसे बड़ी समस्या है।

ऐसी स्थिति में यह प्रश्न उठता है कि आर्य समाज अब क्या करेगा? मेरी यह निश्चित धारणा है कि आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जो देश को बचा सकती है। यह मैं इसलिए कहता हूं कि वह देश के लिए जो कुछ करती है या कर सकती है उसमें निःस्वार्थ भाव होता है। उसने किसी से वोट नहीं मांगने होते, उसने किसी विधानसभा या संसद के लिए अपने उम्मीदवार खड़े नहीं करने, उसके सामने तो केवल एक ही लक्ष्य रहता है कि हमारा देश, धर्म और समाज कैसे बच सकता है। देश और धर्म की रक्षा के लिए आर्य समाज से जब भी कोई बलिदान मांगा गया है उसने दिया है, लेकिन उसके बदले में उसने कुछ मांगा नहीं इसीलिए मैं समझता हूं कि आज भी देश की नैय्या जिस मंझधार में आकर फंस गई है उसमें से उसे केवल आर्य समाज ही निकाल सकता है। इसलिए आर्यसमाज के नेताओं का कर्त्तव्य है कि वह अब इन सारी परिस्थितियों पर विचार करें और फिर सोचें, कि जो कुछ हमारे देश में हो रहा है वह कहां तक ठीक है और इस के रोकने के लिए आर्य समाज को कुछ करना चाहिए या नहीं? यह आर्य समाज के लिए एक चुनौती है क्या वह इसे स्वीकार करेगा?

—वीरेन्द्र

आर्य संग्रहालय तथा पुस्तकालय

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली की ओर से आर्य समाज का विस्तृत इतिहास (सात भागों में) तैयार कराने का जो कार्य हो रहा है, उसे सुचारू रूप से सम्पन्न करने के लिए यह आवश्यक है कि एक ऐसा संग्रहालय तथा पुस्तकालय स्थापित किया जाए, जिसमें वे सब पत्र-पत्रिकाएं, पुस्तकें तथा अन्य सब साहित्य संगृहीत हो, जो गत सवा सदी के लगभग समय में महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा आर्य समाज के सम्बन्ध में प्रकाशित हुआ है। इतिहास विषयक इस आधारसामग्री (Source matcrial) के अतिरिक्त उन सब सन्यासी-महात्माओं विद्वानों, शिक्षाशास्त्रियों, प्रचारकों, आर्य संस्थाओं एवं संगठनों के संस्थापकों, दानियों तथा प्रमुख कार्यकर्त्ताओं के चित्र, पत्रव्यवहार, हस्तलेख तथा विभिन्न स्मृतिचिन्ह भी इस संग्रहालय तथा पुस्तकालय में संगृहीत किए जाएंगे। आर्य के कार्यकलाप तथा प्रचार-प्रसार का अध्ययन करने के लिए यह संग्रहालय अत्यन्त उपयोगी होगा, और देश-विदेश तथा विद्वानों तथा शोधार्थियों को वहां एक ही स्थान पर अपने कार्य के लिए सब सामग्री उपलब्ध हो जाएगी।

यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है, कि इस प्रकार के आर्य संग्रहालय तथा पुस्कालय के लिए गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार के म्यूजियम-भवन को हमें सौंप देने का निर्णय कर लिया गया है। इसमें तीन बड़े-२ कक्ष (halls) और अनेक दीर्घाएं (गैलरी) हैं, जो आर्य संग्रहालय तथा पुस्तकालय के लिए सर्वथा उपयुक्त हैं। साथ में पांच पृथक् कमरे भी हैं, जिनका उपयोग कार्यालय के लिए किया जा सकता है। हमारा विचार है कि गुरुकुल में संग्रहालय के कार्य को तुरन्त प्रारम्भ कर दिया जाए, और मार्च, १९८१ के अन्त तक वहां आर्यसमाज सम्बन्धी इतनी सामग्री एकत्र कर दी जाए कि अप्रैल मास के द्वितीय सप्ताह में वैशाखी के शुभ अवसर पर आर्य संग्रहालय तथा पुस्तकालय का विधिवत् उद्घाटन किया जा सके। मैं इस महत्त्वपूर्ण कार्य में आपसे सक्रिय सहयोग की प्रार्थना करता हूं। जो सामग्री हम एकत्र करना चाहते हैं, वह निम्नलिखित है—

(१) महर्षि दयानन्द सरस्वती के सब प्रकार के उपलब्ध चित्र, उनके विविध स्मृति-चिन्ह (पत्र, हस्तलेख, वस्त्र आदि)।

(२) महर्षि दयानन्द सरस्वती के सहयोगियों (महादेव गोबिन्द रानाडे, महाराजा सज्जन सिंह जी आदि) के चित्र, साहित्य व स्मृति-चिन्ह।

(३) आर्य सन्यासियों, वेद के भाष्यकारों, विद्वानों, शास्त्रार्थ महारथियों, शहीदों; प्रचारकों, संगठन कर्त्ताओं, भजनोपदेशकों, दानियों तथा कर्मठ कार्यकर्त्ताओं के चित्र, जीवनवृत्त, साहित्य तथा स्मृति चिन्ह।

(४) आर्य समाज के सब शिक्षणालयों (डी० ए० वी० कालिजों, गुरुकुलों, आर्य कालिजों, डी० ए० वी० स्कूलों, आर्य स्कूलों, कन्या गुरुकुलों कन्या महाविद्यालयों, संस्कृत पाठशालाओं एवं अन्य संस्थाओं) के संस्थापकों, प्रधान आचार्यों, संचालकों, तथा दानियों के चित्र, जीवनवृत्त, उन द्वारा लिखित पुस्तकें तथा उनके सम्बन्ध में लिखा गया साहित्य और उनके स्मृति चिन्ह।

(५) आर्य समाज के सब शिक्षणालयों की वार्षिक रिपोर्ट, विवरण पुस्तकाएं, भवनों के चित्र तथा उन द्वारा प्रकाशित सम्पूर्ण साहित्य। साथ ही इन शिक्षणालयों के स्नातकों तथा प्राध्यापकों द्वारा विरचित सब ग्रन्थ एवं सम्पादित पत्र-पत्रिकाएं।

(६) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली, परोपकारी सभा, अजमेर, प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभाएं (आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश बिहार आदि) आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा आर्य समाज के अन्य सब संगठनों के सम्बन्ध में पूर्ण विवरण, उनकी रिपोर्ट, उनके चित्र व अन्य सब सामग्री जिससे कि उनके कार्यकलाप का सही परिचय हो सके। साथ ही, इन

(शेष पृष्ठ ४ पर)

लाला लाजपतराय के जीवन पर एक प्रसिद्ध नाटक-किश्त (5)

शेरे पंजाब लाला लाजपतराय

ले०—श्री जी० एस० बोसला

(गताक से आगे)

पात्र परिचय

लालालाजपत राय 	आयु २५ वर्ष
बजीर चन्द
पार्वती 	आयु ५ वर्ष
लाला बन्सी लाल
लाल मुन्ना लाल
डा महकम दास
तीन अन्य पुरुष

दूसरी झांकी

गुलाब देवी (लाजपतराय की माता)
मुन्शी राधा कृष्ण (लाजपत राय के पिता)
लाजपत
लाला बन्सीलाल
डा मोहकम दास
बजीर चन्द

ऐक्ट दूसरा पहली झाकी

हिसार मे लाला लाजपतराय का दफ्तर इसमे एक डैस्क दो दफ्तरी कुर्सियां और पुस्तको के साथ भरी हुई अलमारी है इतवार का दिन है डैस्क के ऊपर कागज कलम कुछ पुस्तकें और एक छोटी सन्दूक है।

लाला लाजपतराय उमर २५ २६ साल डैस्क के पीछे बैठे कागज देख रहे हैं उनका पहरावा सफेद पगडी बन्द बन्द गले का मौडले कालर वाला सूफीआना रंग का कोट सफेद तंग पाजामा और तस्मे वाले काले रग के बूट है।

साथ जमीन पर बाबू बजीर चन्द इनका क्लर्क बैठा है इसके सामने एक बडी सन्दूक है, जिसको ताला लगा हुआ है इसके ऊपर वह लिखने व पढने का काम करता है।

लाजपत राय की पाच साल की लडकी अन्दर आती है और लाला जी के पास आकर खडी हो जाती है लाला जी प्यार के साथ अपना हाथ उसके कन्धे पर रखते हैं।

बजीर चन्द हडडीयो के बारे मे पत्र पढ के सुना दू।

पारवती हडियों के बारे मे पत्र ?

लाजपत हां।

पारवती वो क्यो ?

लाजपत सुनो पारवती तुम्हे समझ आ जाएगी। पढो बजीर चन्द जी

बजीरचन्द बढ़ता है हिन्दुस्तान से हडियो का निकास अब क्योंकि लोगो का ध्यान इस जरूरी मामले की ओर दिलाया गया है मुझे आशा है कि गरीब और अमीर क्या शहरी और क्या गाव वाले इस कहावत को मत कर दिखायेंगे कि गन्दगी मे भी लाल होते हैं।

पारवती-लाल जी वह किस तरह ?

लाजपत बेटा, हड्डियो को सब लोग राख मान्ते हैं। यह एक गन्दी वस्तु है, पर है बहुत लाभप्रद

पारवती गन्दी और लाभप्रद ?

लाजपत सुनो, आगे पढिये बजीर चन्द जी।

बजीर चन्द पढते हुए यह सबको मालूम है कि प्रत्येक वर्ष लाखो मन हड्डिया हिन्दुस्तान से बाहर भेजी जाती हैं पर बहुत कम लोगों को इस बात का अहसास है कि हम अपनी दौलत लुटा रहे हैं, अगर इन हड्डियो को पीस कर जमीन में खाद के रूप में डाला जाए तो अनाज की उपज बढ सकती है।

लाजपत उपज नहीं, पैदावार लिखो अगर सरल शब्द मिले तो मुश्किल क्यों लिखा जाए बढी की जगह गुना कर दो।

बजीरचन्द अगर हड्डियो को पीस कर जमीन मे खाद के रूप में डाल दिया जाए तो अनाज की पैदावार कई-गुना बढ सकती है। एक बार किसान को इस बात का ज्ञान हो जाए तो वह इस अमूल्य सामग्री की रक्षा करने के लिए पूरा जोर लगा देगा। इसलिए मेरा विचार है कि हर कस्बे, हर गाव मे एक सोसाइटी स्थापित की जाए जो किसानों को हड्डियों से बनी हुई खाद के बारे में जानकारी दे, हड्डियो को इकट्ठा करके पीसने का प्रबन्धक करे और हड्डियो को विदेश मे जान से रोके, मैं इस संस्था की हर तरह से मदद करूंगा।

पारवती—लालाजी, अगर आप हड्डियो को इकट्ठा करेंगे तो दादी जी बड़ा गुस्सा करेंगी।

लाजपत—क्यो ?

पारवती—कल आगन मे एक चील एक हडडी फेंक गई थी और दादी जी आज सुबह बडा बोली।

लाजपत—हम अपने घर इन हड्डियो को इकट्ठा थोडा करेंगे हड्डियों को इकट्ठा करने का प्रबन्ध हम शहर से बाहर करेंगे क्योंकि हड्डियों मे से बदबू आती है।

पारवती—गाय की हड्डियों में से भी बदबू आती है ?

लाजपत—हां गाय की जानवर है।

पारवती—फिर गाय की पूजा क्यों करते हैं ? अभी थोड़े दिन हुए दादी जी ने गाय को टीका लगाया था और उसके गले में मोती का पट्टा भी डाला था और पंडित ने हवन किया था।

लाजपत यह सब ढकोसलों के चीज हैं। तुम्हारी दादी ने गाय मनत कर पंडित को दे दी।

पारवती—परन्तु अगर दादी जी को पता चला कि आप गाय की हड्डियों को एकत्र करते हैं तो बड़ा गुस्सा होगी।

बजीरचन्द—बेटी कहती तो ठीक है लालजी आपने तो कभी माता जी की इच्छा के विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की,

(क्रमश.)

(१ पृष्ठ का शेष

समठनो के संस्थापको, सचालको तथा पदाधिकारियो के चित्र, जीवन वृत्त एवं स्मृति-चिन्ह।

(७) भारत तथा विदेशो की सब आर्यसमाजो का विवरण, उनका इतिहास, उनका कार्यकलाप तथा उनके संस्थापको, प्रमुख नेताओ, कार्यकर्ताओं एव दानियो के चित्र, जीवनवृत्त आदि।

(८) यूरोप, अमेरिका, अफ्रीका आदि के विविध देशों मे स्थापित आर्य-समाजो, आर्य प्रतिनिधिसभाओ तथा आर्य संस्थाओ का विवरण। विदेशों में वैदिक धर्म प्रचार करने वाले तथा आर्यसमाजो -एव आर्य संस्थाओं को स्थापित व संचालित करने वाले महानुभावो के चित्र, जीवनवृत्त एव स्मृति चिन्ह।

(९) भारत के स्वाधीनता-संघर्ष मे भाग लेने वाले आर्य नर-नारियो के चित्र तथा उनके जीवनवृत्त।

(१०) विविध वैदिक शोध संस्थाओ साधु आश्रमो, वानप्रस्थ आश्रमो, आर्य अनाथालयों, विधवाश्रमो, नारी निकेतनो और अन्य सब आर्य संस्थाओ का पूर्ण विवरण उनकी वार्षिक रिपोर्ट, उन द्वारा प्रकाशित साहित्य तथा उनके संस्थापकों, सचालको, नेताओ, प्रमुख कार्यकर्ताओं एव दानियो के चित्र, जीवनवृत्त व स्मृति-चिन्ह।

(११) हिन्दी, संस्कृत, अंग्रेजी, उर्दू, गुजराती, बगला आदि भाषाओ में अब तक प्रकाशित सब आर्य पत्र-पत्रिकाओं की फाइलें अथवा उपलब्ध फुटकर अक।

(१२) विश्व की विभिन्न भाषाओं मे अब तक सम्पूर्ण साहित्य जिस का सम्बन्ध महर्षि दयानन्द सरस्वती, आर्यसमाज तथा विभिन्न आर्य नेताओं एव आर्य विद्वानों के साथ है।

(१३) राष्ट्रीय अभिलेखागार नई दिल्ली ब्रिटिश म्यूजियम, लन्दन आदि विविध संग्रहालयो में विद्यमान उन सरकारी रिपोर्टों व रिकार्डों की प्रतिलिपियां जिनका सम्बन्ध महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा आर्यसमाज के साथ है।

(१४) भारत तथा अन्य देशों की पत्र पत्रिकाओं में समय समय पर महर्षि दयानन्द सरस्वती, आर्य समाज तथा उसके नेताओं के सम्बन्ध में जो टिप्पणियां व लेख आदि प्रकाशित होते रहे हैं, उन सबकी प्रतिलिपियां।

(१५) आर्य समाज द्वारा आयोजित सार्वजनिक महत्व के समारोहों व सम्मेलनों (यथा महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्म शताब्दी, आर्य समाज स्थापना शताब्दी, सार्वदेशिक आर्य महा सम्मेलन नैरोबी, लन्दन आदि) के पूरे विवरण, उनके चित्र, उनके अध्यक्षों के चित्र एव परिचय।

(१६) आर्य समाज द्वारा आयोजित सत्याग्रह आन्दोलनों (यथा हैदराबाद सत्याग्रह, हिन्दी सत्याग्रह, गोरक्षा सत्याग्रह आदि) के पूरे विवरण, उनके चित्र तथा उनके सचालको के जीवन वृत्त तथा चित्र।

ऊपर जिस प्रकार की सामग्री का उल्लेख किया गया है, वैसी कुछ सामग्री आर्य स्वाध्याय केन्द्र द्वारा एकत्र की भी जा चुकी है, और हमें विश्वास है कि आपके सक्रिय सहयोग द्वारा एक ऐसे संग्रहालय तथा पुस्तकालय का निर्माण कर सकना सम्भव हो जाएगा, जहां देश विदेश के विद्वान आर्य समाज के सम्बन्ध में सब जानकारी प्राप्त कर सकें और उसके कार्यकलाप तथा मन्तव्यों के विषय में शोध भी कर सकें।

—सत्यकेतु विद्यालंकार निदेशक, आर्य स्वाध्याय केन्द्र

सत्यार्थ प्रकाश का महत्व

लेखक—श्री यशपाल आर्यबन्धु, चन्द्र नगर मुरादाबाद

विगत शताब्दी में पाखण्ड, असत्य और अविद्या के विरुद्ध सर्वतोमुखी क्रांति का सन्देश लेकर क्रांतिदूत दयानन्द भारत-भू में सर्वत्र जागृति का सिंहनाद करता दिखाई देता था। उनके इस सिंहनाद ने शताब्दियों से अज्ञान अन्ध-कार एवम् अकर्मण्यता की गहरी नींद में सोई आर्य हिन्दू जाति को झकझोर कर रख दिया। एक अपूर्व हलचल सी मच गई। प्रभात वेला में जगाने से जैसे कुछ बालक लोग उद्बुद्ध हो जाते हैं एव कुछेक प्रमाद प्रिय बालक जगाने वाले का विरोध कर हठात् सोए रहने का उप-क्रम करते है, ऐसे ही जागृति-प्रिय लोगों ने महर्षि दयानन्द के जागृति-सन्देश को ध्यानपूर्वक सुना-जबकि प्रमाद प्रिय लोगों ने इसका घोर विरोध किया। महर्षि के उपदेशों से उद्बुद्ध लोगों ने (जिनमें मुरादाबाद निवासी राजा जय किशन-दास प्रमुख थे) महर्षि को सुझाव दिया कि भाषणों का प्रभाव प्रायः अस्थायी हुआ करता है एव सभी स्थानों के लोग उसे एक बारगी सुन भी नहीं सकते अतः वे अपने सिद्धांतों एवं मन्तव्यों का प्रति-पादक एक ऐसा ग्रन्थ दें लिख कि जिस के अध्ययन से उनके मन्तव्यों एवं सिद्धांतों का भली प्रकार से बोध हो सके और सब लोग उससे लाभ उठा सकें। इतना ही नहीं इन लोगों ने इस पवित्र कार्य के लिए सभी प्रकार का सहयोग देने का आश्वासन भी दिया। और राजा जयकिशन दास ने सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम संस्करण अपने ही व्यय से प्रकाशित भी करवाया। इस प्रकार यह महान् ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के नाम से प्रकाश में आया।

यह ग्रन्थ उन्नीसवीं शती का एक अत्यन्त ही महत्वपूर्ण ग्रन्थ है। इसका महत्व इसी बात से जाना जा सकता है कि अपने मुद्रण काल में ही यह ग्रन्थ इतनी प्रसिद्धि पा चुका था कि इसकी इतनी मांग थी जिसके कारण महर्षि को इस ग्रन्थ मुद्रण से पूर्व ही केवल एक सौ बीस (१२०) पृष्ठ एक-एक रुपए में बेचने पड़े थे। (देखे महर्षि, दयानन्द के पत्र और विज्ञापन, पृष्ठ २४-२५ तथा हिन्दी भाषा और साहित्य को आर्य समाज की देन, पृष्ठ ७९) दूसरे संस्करण की भी यही दशा हुई। चारण नवलदान ने [illegible] पृष्ठ तक मुद्रित दस] अध्याय [illegible] सिंह के लिए खरीदे थे। [illegible] मुद्रित ग्रन्थ के पढ़ने की उत्सुकता ग्रन्थ की उपयोगिता और महत्व को दर्शाने की मुंह बोलती तस्वीरें हैं।

सत्यार्थ प्रकाश का महत्व इस बात से भी सिद्ध होता है कि धर्म एवं दर्शन के गूढ़ रहस्यों को पहली बार हिन्दी भाषा साहित्य के माध्यम से जन साधारण तक पहुंचाने का सर्व प्रथम सफल अभियान था। अन्यथा इससे पूर्व धर्म एवं दर्शन की अभिव्यक्ति का माध्यम संस्कृत भाषा ही थी। जो जन-साधारण तक अपनी पहुंच प्रायः खो चुकी थी। इस सद्ग्रन्थ का महत्व तब और भी बढ़ जाता है कि जब हमें यह ज्ञात होता है कि इस ग्रन्थ को उस महा-मनीषी ने धर्म के नाम पर लिखे गए बीसियों हजार ग्रन्थों को मन्थकर और उनमें से तीन हजार के लगभग ग्रन्थों की प्रामाणिकता स्वीकार करके लिखा था था तथा उसमे से २९० पुस्तकों के १८८६ प्रमाण दिए हैं। (देखे सत्यार्थ प्रकाश आन्दोलन का इतिहास तथा सत्यार्थ प्रकाश दर्पण, पृष्ठ १२) वस्तुतः यह सद्ग्रन्थ महर्षि दयानन्द सरस्वती का ज्ञानकोष उसकी दार्शनिक अभिव्यक्ति एवं वैचारिक क्रांति का अग्रदूत है। डा. भवानी लाल भारतीय उसकी दार्शनिक "सत्यार्थ प्रकाश की लोकप्रियता तथा विश्व-मानव के लिए उसकी उपयोगिता इसी बात से विदित होता है कि विगत एक शताब्दी में इस ग्रन्थ के सैकड़ों संस्करण प्रकाशित हुए तथा लाखों प्रतियां धर्मतत्व के जिज्ञासु पाठकों के हाथों में पहुची हैं। स्वदेश विदेश की बीसियों भाषाओं में उसके अनुवाद हुए हैं।" (विश्वधर्म कोश सत्यार्थ प्रकाश पृष्ठ २३) वस्तुतः हिन्दी गद्य साहित्य के किसी भी अन्य ग्रन्थ ने इतना कामज नहीं जगाया जितना कि महर्षि की इस अनुपम कृति ने जगाया है। श्रीयुत चन्द्र प्रकाश एम० ए० महर्षि के इस अमर ग्रन्थ का महत्व दर्शाते हुए लिखते है कि—"जिन्हें इतिहास का ज्ञान है। वे जानते है कि इस शताब्दी में अन्ध-विश्वास पाखण्ड एवं कुरीतियों का कूड़ा करकट जितना इस एक ग्रन्थ के अध्ययन से दूर हुआ है उतना विश्व के किसी दूसरे ग्रन्थ से नहीं।" (हम सत्यार्थ प्रकाश क्यों पढ़ें ? पृष्ठ ७) यदि निष्पक्ष भाव से देखा जाए तो रुढ़ियों और अन्ध विश्वासों से बचाने के लिए विश्व-साहित्य की यह एक अनुपम तथा अद्वितीय रचना है। मानवता का पथ प्रदर्शक यह ग्रन्थ असंख्य भूले भटके मानवों को सुपथ दिखा चुका है।

आचार्य पं. रामानन्द जी शास्त्री के अनुसार इस ग्रन्थ का महत्व इस बात से भी आंका जा सकता है कि "स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश को हिन्दी में लिखा तथा उसका नाम आर्य भाषा दिया। इससे भारतीय एकता में ऋषि का अनुराग प्रकट होता है। महा० गांधी जवाहर लाल नेहरू बाल गंगाधर तिलक योगी अरविन्द आदि महापुरुषों ने यावद-जीवन अंग्रेजी साहित्य की सेवा की जब कि सर्वदा राष्ट्रीयता का दम भरते रहे।' एक शती पूर्व का यह अद्भुत ग्रन्थ उस समय लिखा गया था कि जब हिन्दी गद्य अपना स्वरूप ही लिखित नहीं कर पाई थी। यह ग्रन्थ इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि इसमें एक शती पूर्व के हिन्दी ग्रन्थ के दर्शन होते हैं अतः ऐतिहासिक दृष्टि से भी इस ग्रन्थ का अपना विशेष महत्व है। इस ग्रन्थ के साथ हिन्दी के विकास का गौरवपूर्ण इतिहास छिपा है क्योंकि इस ग्रन्थ के अध्ययन के लिए लाखों अहिन्दी भाषी व्यक्तियो ने हिन्दी भाषा सीखी, उत्तरी भारत विशेषकर पंजाब और हरयाणा मे हिन्दी के विकास में इस ग्रन्थ का अपूर्व हाथ है।

इस ग्रन्थ का महत्व इसलिए भी है कि एक इसी ग्रन्थ के स्वाध्याय से संसार के प्रायः सभी प्रमुख मतों एवं उनके मान्य सिद्धांतों का पता चल जाता है। इसी लिए डा० भारतीय इसे 'विश्व धर्म के कोश' की संज्ञा देते है। कहते हैं कि अमेरिका में एक बार एक ऐसे मन्दिर की स्थापना की योजना बनाई गई कि जिसमें संसार के प्राय: सभी प्रमुख मतों एवं धर्मों के प्रमुख प्रमुख सिद्धांतो एव शिक्षाओं का एक ही स्थान पर संग्रह करने की योजना थी। दुर्भाग्य से वह मन्दिर नहीं बन पाया। किन्तु आर्य-समाज के यशस्वी संस्थापक को यह गौरव प्राप्त है कि उसने सत्यार्थ प्रकाश के रूप में एक ऐसे अनुपम मन्दिर का निर्माण किया है कि जिसमें संसार के प्रायः सभी प्रमुख मतों सम्प्रदायों का परिचयात्मक ज्ञान हो जाता है। इस दृष्टि से सत्यार्थ प्रकाश बहुत ही महत्व-पूर्ण ग्रन्थ है।

एक और दृष्टि से भी महर्षि का यह ग्रन्थ अत्यन्त महत्वपूर्ण है। वह यह कि इस ग्रन्थ में सत्यासत्य के निर्णय हेतु अन्य मतमतान्तरों की जो आलोचना की गई है, वह जहां भी पाठकों को सत्या-सत्य के निर्णय करने में सहायक होती है वहां उन मतमतान्तरों के लिए भी बड़ी लाभदायक सिद्ध हुई है। वे लोग सत्यार्थ प्रकाश में की गई आलोचनाओं के अनुरूप अपने सिद्धांतों की नवीन व्याख्याएं करने लग गए हैं एवं यथा सम्भव उन्हें बुद्धि सम्मत एवं तर्कसंगत बनाने का प्रयत्न करने लगे हैं। जैसे आकाशवाणी से उद्घोषित स्टैन्डर्ड टाईम से सब लोग अपनी घड़ियों की सुईयां मिलाते हैं। वैसे ही मतवादी लोग सत्यार्थ प्रकाश में उद्घोषित सत्य से अपने सिद्धांतों को मिलाते है। क्या यह सत्यार्थ प्रकाश का कोई कम महत्व है?

ऐतिहासिक दृष्टि से भी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश अपना विशिष्ट महत्व रखता है। क्योंकि इस ग्रन्थ मे जहां भारत के प्राचीन राजाओं के संक्षिप्त इतिहास का वर्णन मिलता है, वहां महर्षि ने कुछ उन रहस्यों का उद्घाटन किया है कि जो आज तक अप्रकाशित अवस्था में पड़े थे। उदाहरण के लिए 'तिब्बत' में आदि सृष्टि में मानव की उत्पत्ति' तथा आर्यों का यहां का मूल निवासी होना आदि। यही ग्रन्थ श्रीकृष्ण का समुज्ज्वल चरित्र प्रस्तुत करता है। भारत के प्राचीन गौरव को उद्घाटित करने मे इस ग्रन्थ का अपना विशेष स्थान है। स्वराज्य स्वदेशी आदि की भावना को भी सर्वप्रथम इसी ग्रन्थ ने उद्घोषित किया था। दादा भाई नैरोजी ने स्वराज्य शब्द इसी ग्रन्थ से ही लिया था।

सत्यार्थ प्रकाश की गरिमा का वर्णन करते हुए श्रीयुत विद्यानन्द जी सिद्धान्त शास्त्री लिखते हैं—मानव-जीवन का कोई ऐसा पहलू नहीं है जिस पर इस ग्रन्थ में प्रकाश न डाला गया हो। सत्य क्या है? असत्य क्या है? मनुष्योचित कौन से कर्म ग्रहणीय हैं और कौन से त्याज्य है। सब सत्यार्थ प्रकाश में निहित हैं। ये ही कारण है कि जनता इसे श्रद्धा से देखती है और उस पर आचरण करना चाहती है।" (सत्यार्थ प्रकाश दर्पण पृष्ठ ८२) इतना ही नहीं इसके महत्व को दर्शाते हुए वे आगे लिखते हैं कि "इस ग्रन्थ को यदि हम 'सूत्र' कहे तो कोई अतिशयोक्ति न होगी, क्योंकि सूत्र उसे कहते हैं जो बहुत को थोड़े में बतला दे। भिन्न भिन्न समुल्लासों में जो भी विषय है वे सब सूत्र के रूप में ही हैं। जितने भी विषय अर्थात् मूर्तिपूजा, ज्ञान, कर्म, उपासना, राजकार्य, बौद्ध, जैन, ईसाई, मुस्लिम मतादि हैं उन सभी पर सूत्र रूप में ही प्रकाश डाला गया है।" (सत्यार्थ प्रकाश दर्पण, पृष्ठ ८३)

इसी ग्रन्थ के स्वाध्याय से मुन्शी राम महात्मा मुन्शी राम तथा बाद मे स्वामी श्रद्धानन्द बने। इसी ग्रन्थ के स्वाध्याय से नास्तिक गुरुदत्त मुनिवर गुरुदत्त बनें। इसी ग्रन्थके स्वाध्याय से स्वामी सत्यदेव परिव्राजक आर्य सन्यासी बने। इसी ग्रन्थ की रक्षा के लिए सिन्ध की लीगी सर-कार के विरुद्ध सनातन धर्म प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री गोस्वामी गणेश दत्त, मूर्तिपूजा खण्डन की परवाह न करते हुए भी मैदान मे कूद पड़े थे। इसी महान ग्रन्थ

(शेष पृष्ठ ६ पर)

समाज सुधार की अनिवार्यता

ले०—श्री आचार्य भद्रसेन जी साधु आश्रम होशियारपुर

※

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज मे रिश्तेदारी, राजनीति कारोबार धर्म शिक्षा प्राप्ति के कारण व्यक्ति एक दूसरे के सम्पर्क मे आता है जिससे व्यक्ति का सामाजिक व्यवहार सिद्ध होता है। प्रत्येक व्यवहार की पूर्णता सफलता का मूल कोई न कोई व्यवस्था मर्यादा होती है। जहा कुछ नियम सार्वकालिक होते हैं तात्कालिक व्यवस्थायें स्थान समय ऋतु आयु लिंग आदि के कारण सामयिक ही होती है न कि सार्वकालिक। जैसे कि सर्दी गर्मी के कारण वस्त्र भोजन और रहन सहन मे परिवर्तन आना स्वाभाविक ही है जोकि परिणाम मे सुखकारी होता है। इस प्रकार की तात्कालिक व्यवस्थाओ मे समय के साथ सुधार करना आवश्यक हो जाता है।

संस्कृत व्याकरण शास्त्र के अनुसार समझदारो के समूह को समाज कहते हैं अथवा समाज मानव अपनी समझदारी के कारण अपने समूह का सुचारु और व्यवस्थित रूप देने के लिए कुछ मर्यादाए बनाता हैं जैसे कि किसी संस्था को चलाने के लिए कुछ नियम होते हैं। नियमो के पालने से ही संगठन सुचारु रूप से चलता और विकसित होता है। एक समझदार व्यक्ति अपने व्यवहार मे जब कही गड़बड़ देखता है तो अपनी समझदारी से उस गड़बड़ को दूर करने के लिए वह यथापेक्षित परिवर्तन भी करता है। इसी का ही नाम सुधार है।

हम अपने व्यवहार की सिद्धि के लिए वस्त्र भवन बर्तन अन्न आदि नानाविध वस्तुओ का प्रयोग करते हैं। प्रयोग करने पर उनमें समय के साथ अनेक प्रकार के विकार आ जाते हैं। यदि उनके विकारों को दूर नहीं किया जाता तो वे विकार रोग दुःख कष्ट हानि का कारण बन जाते हैं। जैसे कि हम जिन वस्त्रो को पहनते है उनके मैला होने पर उनको धोना बहुत जरूरी हो जाता है। मकानो में समय-समय पर लिपाई पुताई सफाई और मरम्मत आदि कराना अत्यन्त आवश्यक होता है। ऐसे ही समाज की बहुत सारी प्रथाओ में समय के साथ विकार आ जाता है तब वे असामयिक दीखने लगती हैं। जैसे कि काम वस्तुओं पर धूल जम जाती है या चीजों के चारों ओर अनेक प्रकार के घास-फूस झाड़-झंखाड़ उग आते हैं और वे पौष्टिक तत्वों को स्वयं हड़प लेते हैं ऐसे ही सामाजिक प्रथाओं के साथ भी अनेक प्रकार की अनपेक्षित बातें जुड़ जाती हैं। इन अन-पेक्षित बातो मे सुधार करने से ही समाज स्वच्छ और सुखी रह सकता है। ऐसे सुधारो के लिए जो स्वयम उद्यत नही होते उन्हे फिर पछताने के अतिरिक्त कुछ हाथ नहीं लगता। स्वेच्छा से सुधार को स्वीकार करने मे ही गौरव होता है।

कई बार कुछ व्यक्ति कहते हैं कि समाज को जब जिस वस्तु की आवश्यकता होती है समय के साथ वह अपनी आवश्यकता स्वय पूरी कर लेता है। अत समाज सुधार के विचार या आन्दोलन को उभारने की कोई आवश्यकता नही है पर इतिहास साक्षी है कि ऐसी अपेक्षित पूर्ति स्वय नही होती अपितु कुछ व्यक्ति हर कष्ट और विरोध को सहन करके आगे आते हैं और तब जाकर उनके बलिदानो से समाज मे सुधार या परिवर्तन आता है।

इस शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों मे जब कोई विदेश से लौटकर आता था तो उसके विरुद्ध जलूस निकाले जाते थे सभाए होती थी उसका बहिष्कार होता था। इस प्रकार अनेक ढगो से उसके विदेश जाने पर विरोध प्रकट किया जाता था। आज कौन सा ऐसा परिवार है जिसका कोई न कोई निकट सम्बन्धी विदेश नही गया या जाकर नही आया। पर आज कोई किसी प्रकार का विरोध नही करता और न ही अब प्रायश्चित करने कराने की आवश्यकता अनुभव होती है। ऐसा वातावरण तभी बना जब अनेक व्यक्तियो ने आगे आकर इस प्रथा मे सुधार करने का प्रयास किया जिसके परिणाम स्वरूप आज का वातावरण बना है। तभी तो इस समाज-सुधार का आज बिना ननु नच किए स्वीकार कर लिया गया है।

ऐसे ही जब कोई महिला पर्दा नही करती थी तब तूफान खड़ा हो जाता था पर अब यह साधारण बात भी नही समझी जाती। एक वह समय था जब महिलाओ को पढ़ाना तो दूर ऐसा सोचना भी पाप माना जाता था तथा इस धर्म विरुद्ध एव घोर कलियुग की बात समझा जाता था। जिन्होंने जहा-कही जब कोई महिला शिक्षा संस्था चलाने का प्रयास किया या जिन्होंने अपनी लड़कियों को पढ़ने के लिए भेजा उनका हर प्रकार से विरोध बहिष्कार किया गया विचित्र विचित्र फतवे दिए गए पर आज इस सुधार के समर्थको की सफलता का स्पष्ट प्रमाण यह है कि कल तक जो धर्म का नाम लेकर विरोध करते थे आज उन्हीं धर्मों की ओर से कन्या-पाठशालाएं चलाई जा रही है ऐसे ही वृद्ध-विवाह बाल विवाह, मृतक-भोज, छुआ-छूत और जात पात जैसी कुरीतियों को दूर करने वाले समाज सुधारों को लोग खुशी से स्वीकार कर रहे हैं। इस प्रकार के उपयोगी समाज-सुधारों को हमे सहर्ष स्वीकार करना ही चाहिए।

कुछ व्यक्ति यह सोचते और कहते हैं कि ये प्रथायें सुपरीक्षित और परम्परा पर आधारित हैं। इनको हमारे पूर्वजों ने बड़ सोच विचार के बाद चलाया था। अत उनको उसी रूप मे स्वीकार करना चाहिए क्योंकि हम पूर्वजों से अधिक बुद्धिमान नही। ये सुधार तो केवल मेढक कूदमात्र हैं।

किन्तु कई बार प्रथायें सामयिक आवश्यकताओ और स्थितियो को देखकर प्रचलित की जाती हैं। जब वे परिस्थितिया बदल जाती हैं तब उनकी आवश्यकता स्वय समाप्त हो जाती है उसके बाद ऐसी प्रथाओ को चालू रखना अनुपयोगी हो जाता है और इसीलिए ही फिर इधर उधर के बहानो से उनकी व्याख्या करनी पड़ती है जैसे कि पर्दा प्रथा श्राद्ध आदि की। किसी रिवाज को चलाने का मूल उद्देश्य यही होता है कि इसके परिपालन से समाज सुखी विकसित सुरक्षित एव समुन्नत हो। यदि कोई प्रथा अपने मूल उद्देश्य को पूर्ण नही करती और सामाजिक सुख सुविधा के स्थान पर दुःख और हानि का कारण बनती है तो वह अनुपयोगी अहितकर और हानिकारक होने से यथा और तब उसमें सुधार करने मे ही बुद्धिमत्ता है।

यहा विचारणीय बात यह है कि इन प्रथाओ का आज समाज पर क्या प्रभाव हो रहा है? यदि इनका प्रभाव अच्छा नही है तो इनमे सुधार कर लेना ही उचित है सेवासदन उपन्यास मे श्रीयुत प्रेमचन्द जी ने सदन की बारात मे नाच पार्टी ले जाने के तात्कालिक रिवाज के प्रसग मे पद्मसिंह मदनसिंह और बैजनाथ के मध्य ऐसी ही चर्चा में दोनो पक्षों की विचारधारा को प्रस्तुत करते हुये अन्त मे यही परिणाम निकला है कि इसका प्रभाव अच्छा नही अत इसमे सुधार लाना ही चाहिए।

यहा कुछ व्यक्तियो का ऐसा भी विचार है कि ये सुधार सम्बन्धी सारी बातें धर्म के प्रतिकूल हैं अर्थात् धर्म विरुद्ध हैं। पर वास्तविकता तो यह है कि धर्म को मानने वाले सभी व्यक्ति धर्म को सुख रूप या सुख फल वाला मानते हैं न कि दुःख रूप। अत जो दुःखरूप है उस को हटाने में ही धर्म है जैसे कि आज की दहेज प्रथा विवाहों का आधुनिक रूप ये हजारों व्यक्तियो और परिवारो के दुःखो का कारण बने हुए हैं। समाज को दुःखी बनाने वाले इस प्रकार के व्यवहारो को सुधारने मे धर्म का विरोध कैसे कहा जा सकता है?

समाज सुधार का सम्बन्ध विचारो से है जब कोई मनुष्य देश काल परिस्थिति उपयोगिता और उद्देश्य की दृष्टि से विचार करता है तब समाज-सुधार की आवश्यकता उसके सामने आती है, अत समाज-सुधार के लिए सर्वप्रथम विचार-शीलता को उभारना चाहिए जहां किसी दुःखित पीड़ित, शोषित प्रताड़ित की करुणाजनक स्थिति व्यक्ति की विचारशीलता को उजागर करती है वहां विचारशीलता को जागृत करने का एक बड़ा साधन शिक्षा है। इसलिए बदलती परिस्थितियो के अनुसार समाज-सुधार के लिए शिक्षा की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए।

इस सारे विवेचन का सारांश यह है कि जो कुछ भी आज जिस अश में अनुपयोगी हानिकारक सिद्ध हो उसमे सुधार करने के लिए हमे सहर्ष उद्यत रहना चाहिए। मानव समाज के दुःखी को बनाने वाले व्यवहार सामाजिक धार्मिक आदि शब्दो से जुड़ हुए हो सकते हैं वे चाहे कितने भी दृढ़मूल हो गए हों तथापि इस प्रकार की बातों मे सुधार करने से ही समाज का विकास और उत्थान हो सकता है।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जाता है तब उसकी नैतिक आयु क्षीण हो जाती है और जल्दी ही वह नैतिक दृष्टि से मर जाता है। जो चरित्रवान् व्यक्ति हैं व शरीर से मर कर भी नैतिक दृष्टि से अमर हो जाते हैं किन्तु जो चरित्रहीन हैं वे शरीर से जीवित होते हुए भी नैतिक दृष्टि से मृत कहलाते हैं। मन्त्र मे आदित्यो से प्रार्थना की गई है कि वे ऐसी नैतिक मृत्युओ से हमें बचा कर हमारी यश शरीर की आयु को बढ़ायें। अध्यात्म मे मित्र वरुण अर्यमा भग आदि आदित्य परमेश्वर के गुणवाची विभिन्न नाम हैं। मित्र प्रभु से हम सर्व भूतमैत्री का पाठ पढ़ें वरुण प्रभु से हम पाप निवार की शिक्षा लें अर्यमा प्रभु से हम न्यायकारिता का गुण सीखें भग प्रभु से हम सेवा कर्म ग्रहण करें। इस प्रकार वह आदित्य प्रभु हमें विभिन्न सद्गुणो और सच्चरित्रो से भूषित कर हमारी नैतिक आयु को बढ़ा सकता है।

—डा० रामनाथ वेदालंकार

(२ पृष्ठ का शेष)

नहीं कि वज्रपात हुआ नहीं। मानो वज्र पात के महाभय से संसार में गति बनी रहती है—महद्भयं वज्रमुद्यतम्। परमात्मा के नियम उसका विधान वज्र सदृश है। भगवान के नियमों में ढील नहीं होती पूजा प्रार्थना से नियम बदल नहीं जाते उसका विधान वज्र से भी कठोर है। नियम का उल्लंघन किया कि मार पड़ी—यह भय भगवान् के शासन में सर्वत्र व्याप रहा है। उसके राज्य मे सिफारिश नहीं चलती, ढील नहीं होती। नियमों का पालन होगा तो भय नहीं नियमों का उल्लंघन होगा तो रक्षा नहीं—ऐसे शासन की कठोरता को जो जानते हैं—'य एतद् विदुः' वे निर्भय हो जाते हैं अमृत पद को प्राप्त कर लेते हैं—मृत्यु से अतीत, उन्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता, कष्ट तो तब हो जब वे भगवान् के विधान के इधर उधर जाए उसका उल्लंघन करें।

(१)

समाज सुधार की अनिवार्यता

ले०—श्री आचार्य भद्रसेन जी साधु आश्रम, होशियारपुर

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज मे रिश्तेदारी, राजनीति, कारोबार, धर्म, शिक्षा आदि के कारण व्यक्ति एक-दूसरे के सम्पर्क मे आता है, जिससे व्यक्ति का सामाजिक व्यवहार सिद्ध होता है। प्रत्येक व्यवहार की पूर्णता, सफलता का मूल कोई न कोई व्यवस्था, मर्यादा होती है। जहा कुछ नियम सार्वकालिक होते हैं तात्कालिक व्यवस्थायें स्थान, समय, ऋतु, आयु, लिंग आदि के कारण सामयिक ही होती है, न कि सार्वकालिक। जैसे कि सर्दी गर्मी के कारण वस्त्र, भोजन और रहन-सहन मे परिवर्तन आना स्वाभाविक ही है, जोकि परिणाम मे सुखकारी होता है। इस प्रकार की तात्कालिक व्यवस्थाओं में समय के साथ सुधार करना आवश्यक हो जाता है।

संस्कृत व्याकरण-शास्त्र के अनुसार समझदारों के समूह को समाज कहते हैं, अन्यथा समाज मानव अपनी समझदारी के कारण अपने समूह को सुचारु और व्यवस्थित रूप देने के लिए कुछ मर्यादाएं बनाता है, जैसे कि किसी संस्था को चलाने के लिए कुछ नियम होते हैं। नियमो के पालने से ही सगठन सुचारु रूप से चलता और विकसित होता है। एक समझदार व्यक्ति अपने व्यवहार मे जब कही गडबड़ देखता है, तो अपनी समझदारी से उस गड़बड को दूर करने के लिए वह यथापेक्षित परिवर्तन भी करता है। इसी का ही नाम सुधार है।

हम अपने व्यवहार की सिद्धि के लिए वस्त्र, भवन, बर्तन, यन्त्र आदि नानाविध वस्तुओ का प्रयोग करते हैं। प्रयोग करने पर उनमें समय के साथ अनेक प्रकार के विकार आ जाते हैं। यदि उनके विकारो को दूर नही किया जाता, तो वे विकार रोग, दु.ख, कष्ट, हानि का कारण बन जाते हैं। जैसे कि हम जिन वस्त्रो को पहनते है, उनके मैला होने पर उनको धोना बहुत जरूरी हो जाता है। मकानो में समय-समय पर लिपाई, पुताई, सफेदी और मरम्मत आदि कराना अत्यन्त आवश्यक होता है। ऐसे ही समाज की बहुत सारी प्रथाओं मे समय के साथ विकार आ जाता है, तब वे अप्रासंगिक दीखने लगती हैं। जैसे, कि आम वस्तुओं पर धूल जम जाती है या पौधों के चारों ओर अनेक प्रकार के घास-फूस, झाड-झखाड उग आते हैं और वे पौष्टिक तत्वो को स्वयं हड़प लेते हैं, ऐसे ही सामाजिक प्रथाओं के साथ भी अनेक प्रकार की अनपेक्षित बातें जुड़ जाती हैं। इन अनपेक्षित बातो में सुधार करने से ही समाज स्वच्छ और सुखी रह सकता है। ऐसे सुधारो के लिए जो स्वयम् उद्यत नही होते, उन्हे फिर पछताने के अतिरिक्त कुछ हाथ नही लगता। स्वेच्छा से सुधार को स्वीकार करने मे ही गौरव होता है।

कई बार कुछ व्यक्ति कहते हैं कि समाज को जब जिस वस्तु की आवश्यकता होती है, समय के साथ वह अपनी आवश्यकता स्वयं पूरी कर लेता है। अतः समाज-सुधार के विचार या आन्दोलन को उभारने की कोई आवश्यकता नहीं है, पर इतिहास साक्षी है कि ऐसी अपेक्षित पूर्ति स्वय नही होती, अपितु कुछ व्यक्ति हर कष्ट और विरोध को सहन करके आगे आते हैं और तब जाकर उनके बलिदानो से समाज मे सुधार या परिवर्तन आता है।

इस शताब्दी के प्रारम्भिक वर्षों मे जब कोई विदेश से लौटकर आता था, तो उसके विरुद्ध जलूस निकाले जाते थे, सभाए होती थी, उसका बहिष्कार होता था। इस प्रकार अनेक ढगो से उसके विदेश जाने पर विरोध प्रकट किया जाता था। आज कौन-सा ऐसा परिवार है जिसका कोई न कोई निकट सम्बन्धी विदेश नही गया, या होकर नही आया। पर आज कोई किसी प्रकार का विरोध नही करता और न ही अब प्रायश्चित करने कराने की आवश्यकता अनुभव होती है। ऐसा वातावरण तभी बना, जब अनेक व्यक्तियो ने आगे आकर इस प्रथा मे सुधार करने का प्रयास किया, जिसके परिणाम स्वरूप आज का वातावरण बना है। तभी तो इस समाज-सुधार को आज बिना ननु-नच किए स्वीकार कर लिया गया है।

ऐसे ही जब कोई महिला पर्दा नही करती थी, तब तूफान खडा हो जाता था पर अब यह साधारण बात भी नही समझी जाती। एक वह समय था, जब महिलाओ को पढाना तो दूर, ऐसा सोचना भी पाप माना जाता था, तथा इसे धर्म विरुद्ध एव घोर कलियुग की बात समझा जाता था। जिन्होंने जहा-कही जब कोई महिला शिक्षा संस्था चलाने का प्रयास किया या जिन्होने अपनी लडकियों को पढने के लिए भेजा, उनका हर प्रकार से विरोध, बहिष्कार किया गया, विचित्र-विचित्र फतवे दिए गए: पर आज इस सुधार के समर्थको की सफलता का स्पष्ट प्रमाण यह है कि कल तक जो धर्म का नाम लेकर विरोध करते थे, आज उन्हीं धर्मों की ओर से कन्या-पाठशालाएं चलाई जा रही हैं, ऐसे ही वृद्ध-विवाह, बाल-विवाह, मृतक-भोज, छुआ-छूत और जात-पात जैसी कुरीतियों को दूर करने वाले समाज-सुधारों को लोग खुशी से स्वीकार कर रहे हैं। इस प्रकार के उपयोगी समाज-सुधारों को हमें सहर्ष स्वीकार करना ही चाहिए।

कुछ व्यक्ति यह सोचते और कहते हैं कि ये प्रथायें सुपरीक्षित और परम्परा पर आधारित हैं। इनको हमारे पूर्वजो ने बडे सोच-विचार के बाद चलाया था। अत उनको उसी रूप मे स्वीकार करना चाहिए, क्योंकि हम पूर्वजों से अधिक बुद्धिमान नही। ये सुधार तो केवल मेढक कूदमात्र हैं।

किन्तु कई बार प्रथायें सामयिक आवश्यकताओं और स्थितियो को देखकर प्रचलित की जाती हैं। जब वे परिस्थितियां बदल जाती हैं, तब उनकी आवश्यकता स्वय समाप्त हो जाती है। उसके बाद ऐसी प्रथाओ को चालू रखना अनुपयोगी हो जाता है और इसीलिए ही फिर इधर-उधर के बहानो से उनकी व्याख्या करनी पडती है, जैसे कि पर्दा-प्रथा, श्राद्ध आदि की। किसी रिवाज को चलाने का मूल उद्देश्य यही होता है कि इसके परिपालन से समाज सुखी, विकसित, सुरक्षित एव समुन्नत हो। यदि कोई प्रथा अपने मूल उद्देश्य को पूर्ण नहीं करती और सामाजिक सुख-सुविधा के स्थान पर दु ख और हानि का कारण बनती है: तो वह अनुपयोगी, अहितकर और हानिकारक होने से व्यर्थ है और तब उसमे सुधार करने मे ही बुद्धिमत्ता है।

यहा विचारणीय बात यह है कि इन प्रथाओं का आज समाज पर क्या प्रभाव हो रहा है? यदि इनका प्रभाव अच्छा नही है, तो इनमे सुधार कर लेना ही उचित है। 'सेवासदन' उपन्यास मे श्रीयुत प्रेमचन्द जी ने मदन की बारात मे नाच-पार्टी ले जाने के तात्कालिक रिवाज के प्रसग मे पद्मसिंह, मदनसिंह और बैजनाथ के मध्य ऐसी ही चर्चा है, और दोनो पक्षो की विचारधारा को प्रस्तुत करते हुये अन्त में यही परिणाम निकला है कि इसका प्रभाव अच्छा नही, अत इसमे सुधार लाना ही चाहिए।

यहां कुछ व्यक्तियो का ऐसा भी विचार है कि ये सुधार-सम्बन्धी सारी बातें धर्म के प्रतिकूल हैं अर्थात् धर्म विरुद्ध हैं। पर वास्तविकता तो यह है कि धर्म को मानने वाले सभी व्यक्ति धर्म को सुख रूप या सुख-फल वाला मानते हैं, न कि दु.ख रूप। अत. जो दु खरूप है, उस को हटाने में ही धर्म है, जैसे कि आज की दहेज प्रथा, विवाहों का आधुनिक रूप, ये हजारो व्यक्तियों और परिवारो के दुखों का कारण बने हुए हैं। 'समाज को दु.खी बनाने वाले इस प्रकार के व्यवहारों को सुधारने मे धर्म का विरोध कैसे कहा जा सकता है?

समाज-सुधार का सम्बन्ध विचारो से है, जब कोई मनुष्य देश, काल, परिस्थिति उपयोगिता और उद्देश्य की दृष्टि से विचार करता है, तब समाज-सुधार की आवश्यकता उसके सामने आती है, अतः समाज-सुधार के लिए सर्वप्रथम विचार-शीलता को उभारना चाहिए जहां किसी दु.खित, पीड़ित, शोषित, प्रताड़ित की करुणाजनक स्थिति दर्शक की विचारशीलता को उजागर करती है, वहां विचारशीलता को जाग्रत करने का एक बड़ा साधन शिक्षा है। इसलिए बदलती परिस्थितियों के अनुसार समाज-सुधार के लिए शिक्षा की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए।

इस सारे विवेचन का सारांश यह है कि जो कुछ भी आज जिस अंश मे अनुपयोगी, हानिकारक सिद्ध हो, उसमें सुधार करने के लिए हमे सहर्ष उद्यत रहना चाहिए। मानव-समाज के दुःखों को बढाने वाले व्यवहार सामाजिक, धार्मिक, आदि क्षेत्रों से जुड़े हुए हो सकते हैं, वे चाहे कितने भी दृढमूल हो गये हों, तथापि इस प्रकार की बातों मे सुधार करने से ही समाज का विकास और सरक्षण हो सकता है।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जाता है, तब उसकी नैतिक आयु क्षीण हो जाती है और शनै-शनै वह नैतिक दृष्टि से मर जाता है। जो चरित्रवान् व्यक्ति हैं, वे शरीर से मर कर भी नैतिक दृष्टि से अमर हो जाते हैं, किन्तु जो चरित्रहीन हैं, वे शरीर से जीवित होते हुए भी नैतिक दृष्टि से मृत कहलाते हैं। मन्त्र मे आदित्यो से प्रार्थना की गई है कि वे ऐसी नैतिक मृत्युओ से हमें बचा कर हमारी यश शरीर की आयु को बढ़ायें। अध्यात्म मे मित्र, वरुण, अर्यमा, भग आदि आदित्य परमेश्वर के गुणवाची विभिन्न नाम हैं। मित्र प्रभु से हम सर्वभूतमैत्री का पाठ पढ़ें, वरुण प्रभु से हम पाप निवार की शिक्षा लें, अर्यमा प्रभु से हम न्यायकारिता का गुण सीखें, भग प्रभु से हम सेवा कर्म ग्रहण करें। इस प्रकार वह आदित्य प्रभु हमें विभिन्न सद्गुणों और सच्चरित्रों से भूषित कर हमारी नैतिक आयु को बढा सकता है।

—डा० रामनाथ वेदालंकार

(२ पृष्ठ का शेष)

नहीं कि वज्रपात हुआ नहीं। मानो वज्रपात के महाभय से संसार में गति बनी रहती है—'महद्भयं वज्रमुद्यतम'। परमात्मा के नियम, उसका विधान वज्र सदृश है। भगवान के नियमों में ढील नही होती, पूजा-प्रार्थना से नियम बदल नहीं जाते, उसका विधान वज्र से भी कठोर हैं। नियम का उल्लंघन किया कि मार पडी—यह भय भगवान् के शासन में सर्वत्र व्याप रहा है। उसके राज्य मे सिफारिश नहीं चलती, ढील नहीं होती। नियमों का पालन होगा तो भय नही, नियमों का उल्लंघन होगा तो क्षमा नही—ऐसे शासन की कठोरता को जो जानते हैं—'य एतत् विदुः' वे निर्भय हो जाते हैं, अमर पद को प्राप्त कर लेते हैं—'अमृतास्ते भवन्ति', उन्हें किसी प्रकार का कष्ट नहीं होता, कष्ट तो तब हो जब वे भगवान् के विधान के इधर-उधर जाएं उसका उल्लंघन करें। (२)

नए रूप में गुरुकुल करतारपुर निरन्तर उन्नतिकी ओर अग्रसर

ले०—श्री नरेन्द्रकुमार श्री शास्त्री, आचार्य गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर (पंजाब)

किसी भी भाषा का विकास स्थिरता, उच्चता, विस्तार और गाम्भीर्य उसके व्याकरण पर आधारित होता है। संस्कृत भाषा को इन्हीं गुणों के कारण सर्वभाषा की जननी कहा जाता है और इसके सर्वतः पुष्ट व्याकरण ग्रन्थ अष्टाध्यायी को जो मानव मस्तिष्क की सर्वोत्कृष्ट रचना है, संसार का आठवां आश्चर्य माना जाता है। जिसके प्रणेता पाणिनी मुनि का प्रादुर्भाव इसी पंजाब की सर्वगुण सम्पन्न पावन धरती पर हुआ था। सौभाग्य की बात है कि उस संस्कृत साहित्य के सम्पूर्ण वाङ्मय के आधार अथवा सर्वभाषा जननी संस्कृत के प्राण 'अष्टाध्यायी' का पुनरुद्धार करने वाले महर्षि दयानन्द के गुरु महर्षि विरजानन्द सरस्वती का जन्म भी पंजाब के जालन्धर जिले में स्थित करतारपुर नगर में ही हुआ था। उन्हीं व्याकरण के सूर्य की पावन स्मृति में श्री गुरु विरजानन्द स्मारक समिति (ट्रस्ट) के अन्तर्गत भारतीय संस्कृति की मूल संस्कृत प्रचार और प्रसार के क्षेत्र में श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर विगत १० वर्षों से निरन्तर सफलतापूर्वक महान् कार्य कर रहा है। गुरुकुल आश्रम पद्धति पर चलने वाले गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से सम्बन्धित यह विद्यालय पंजाब का एक मात्र शिक्षण संस्थान है।

प्रायः आम जनता की यह निर्मूल धारणा है कि गुरुकुलों में केवल अनाथ बच्चे ही पढ़ने के लिए आते हैं और केवल संस्कृत का अध्ययन कराने के कारण उनका भविष्य भी अन्धकारमय होता है पर हम यह स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि गुरुकुलों में न तो अनाथ बच्चे ही पढ़ते हैं और न ही उनका भविष्य अन्धकारमय होता है अपितु सम्पन्न परिवारों के श्रेष्ठ लोग अपनी सन्तान को उत्तम चरित्रवान्, विद्वान्, देशभक्त तथा भारतीय संस्कृति का पुजारी बनाने के उद्देश्य से गुरुकुलों में पढ़ने के लिए भेजते हैं। उक्त विद्यालय अब गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित हो गया है जिस कारण इस गुरुकुल के छात्रों का भविष्य अन्धकारमय नहीं अपितु सरकारी स्कूलों की अपेक्षा अधिक उज्ज्वल है, जीवन के किसी भी क्षेत्र में इस गुरुकुल का छात्र स्कूल के छात्रों से पीछे नहीं रहता।

अभी एक वर्ष विद्यालय में विद्याधिकारी (मैट्रिक) तक के पाठ्यक्रम के लिए ही छात्र तैयार किए जाते हैं, जो भारत की समस्त राज्य सरकारों, विश्वविद्यालयों तथा अन्य शिक्षा संस्थानों से मैट्रिकुलेशन की मान्यता प्राप्त है, जिसे उत्तीर्ण कर ब्रह्मचारी ११वीं कक्षा में सम्मिलित हो सकता जिसे पंजाब यूनिवर्सिटी ने मैट्रिक के साथ-साथ विशारद के समान भी मान्यता प्रदान की है अर्थात् विद्याधिकारी परीक्षा पास छात्र पंजाब की सीधे शास्त्री परीक्षा में बैठ सकता है। इस प्रकार एक वर्ष ओ० टी० में लगाकर हमारा छात्र सरकारी नियमानुसार १०+२+१ . १३ वर्ष में पूर्णतया अध्यापक बनकर संस्कृत अध्यापन के क्षेत्र में उतर सकता है जबकि अन्य स्कूल के छात्रों या प्राज्ञ, विशारद, शास्त्री के क्रम से पढ़े छात्रों को यह सुविधा उपलब्ध नहीं। मैट्रिक पास छात्रों को शास्त्री के लिए विशारद तथा प्राज्ञ, विशारद वालों को सरकारी सर्विस केलिए मैट्रिक होना आवश्यक है। दूसरी ओर यदि हमारा छात्र स्कूल के छात्रों की तरह दूसरी दिशा में पैर रखना चाहता है तो उसमें भी उसे सरकारी ही नहीं अपितु अध्ययन के दृष्टिकोण से भी कोई दुविधा नहीं है क्योंकि इसका पाठ्यक्रम प्राचीन और नवीन शिक्षा पद्धति के ऐसे सुन्दर समन्वय मे बंधा हुआ है कि इसके द्वारा पढ़े-छात्र की कोई दिशा रुकने का प्रश्न ही पैदा नहीं होता।

स्कूल में पढ़ाये जाने वाले हिन्दी, अंग्रेजी, इतिहास, समाज शास्त्र, भूगोल, अंकगणित, बीजगणित, रेखागणित, विज्ञान (भौतिक, रासायनिक, जीव) के अतिरिक्त धर्म शिक्षा तथा संस्कृत को भी इस पाठ्यक्रम में समुचित स्थान दिया गया है।

इस विद्यालय में पढ़ाई का कोई किसी प्रकार का शुल्क नहीं लिया जाता, अध्यापन के लिए योग्य अनुभवी विद्वान् अध्यापक सेवारत हैं। आवास की निःशुल्क सुन्दर व्यवस्था है। भोजनादि का प्रबन्ध भी गुरुकुल की ही ओर से है। भोजन सात्त्विक, शुद्ध, पौष्टिक तथा सुपथ्य होता है। घी, दूध यथा प्रयत्न गौ का ही प्रयोग में लाते हैं। जिसकी आपूर्ति के लिए गुरुकुल की निजी गौशाला है। जो देवताओं को भी आज के युग में दुर्लभ है। छात्र शारीरिक तथा आत्मिक विकास के लिए प्रतिदिन व्यायाम दोनों समय हवन, सन्ध्या आदि दैनिक कृत्यों में सम्मिलित होते हैं।

इस प्रकार की सुन्दर व्यवस्था वाले विद्यालय में जो सज्जन अपनी सन्तान को सुसंस्कृत आज्ञाकारी, महान् देशभक्त ईश्वर भक्त, पितृभक्त, उच्चकोटि के विद्वान् भारतीय संस्कृति के उपासक देखना चाहता है, निश्चय ही उनके लिए गुरुकुल करतारपुर जैसी शिक्षण संस्था के अतिरिक्त अन्य कोई स्थान नही।

जो महानुभाव गुरुकुल पद्धति पर आस्था रखते हैं देश और जाति के हितचिन्तक हैं संस्कृति और संस्कृत प्रचार और प्रसार चाहते हैं, अपनी सन्तान के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हैं। वे आज ही अपनी सन्तान को महान् बनाने के उद्देश्य से श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय, करतारपुर (जालन्धर) के साथ अपने बच्चे को प्रवेश दिलाने के विषय में पत्र-व्यवहार करे अथवा स्वयं गुरु विरजानन्दजी की भूमिमें (करतारपुर) निरन्तर प्रगति के पथ पर अग्रसर विद्यालय में पधारिए। ध्यान रहे प्रवेश के लिए आपके बच्चे का कम से कम कक्षा ४ व ५ पास होना जरूरी है। अवसर हाथ में है, योजना साथ में है, सोचिए, समझिए, और कीजिए। दीजिए अपने बच्चों को प्रवेश गुरुकुल करतारपुर में। अच्छे काम में देरी कैसी ?

—

(५ पृष्ठ का शेष)

की विचार स्वातन्त्र्य की पुष्टि मे मौलाना हसरत मोहानी तथा जहूर बख्श आदि मुसलमानों ने पादरी अहमद मसीह ने लेख लिखे थे। इसी ग्रन्थ ने क्रांतिवीर बिस्मिल का जीवन बदल डाला था। इसी ग्रन्थ को महामना मालवीय ने अपने हाथों बेच कर इसका प्रचार किया था। इसी ग्रन्थ के प्रचार से मारिशस को आर्यत्व का उच्च स्थान प्रदान किया। तभी मुनिवर गुरुदत्त विद्यार्थी ने कहा था कि—"यदि इस ग्रन्थ का मूल्य एक हजार रुपए भी होता तो भी मैं अपनी सारी सम्पत्ति बेच कर इस ग्रन्थ को खरीदता।' पंडित लेखराम आर्य मुसाफिर के मतानुसार "सत्यार्थ प्रकाश' धार्मिक ज्ञान का भण्डार विद्या सम्बन्धी खोज का कोष वैदिक धर्म का जगी मैगजीन है। जिसने एक बार उसे पूर्णतया समझ कर पढ़ लिया फिर सवाल नहीं कि कभी वैदिक धर्म से दूर हटे। सत्यार्थ प्रकाश स्वामी जी की धार्मिक विजय का स्मृति स्तम्भ है। हम दावे से कहते हैं कि प्रत्येक मनुष्य के मस्तिष्क को सत्यार्थ प्रकाश बहुत सी बातें सिखलाता है। (देखे महर्षि का जीवन चरित्र) क्रांतिवीर विनायक दामोदर सावरकर कामना करते हैं कि "हिन्दू जाति की ठण्डी रगों में उष्ण रक्त का संचार करने वाला यह ग्रन्थ अमर रहे।"

स्वामी सत्य प्रकाश सरस्वती जी के शब्दों मे वस्तुत 'महर्षि दयानन्द सरस्वती का अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश भारत को ही नही, मानव-मात्र को प्रत्येक युग में नयी प्रेरणाएं देता रहेगा। रूढियों और अन्ध विश्वासो से बचाने के लिए यह विश्व साहित्य की अद्वित्तीय रचना है और सद्विचार और मानव कल्याण का पोषक एकमात्र आदर्श ग्रन्थ है। (भूमिका सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ें)

—

बहिन सावित्री देवी आर्य का देहावसान

आर्य महिला समाज शिक्षा निकेतन अम्बाला शहर की दिनांक १७ जनवरी १९८१ को यह साधारणसभामाननीय बहिन सावित्री देवी आर्य (धर्मपत्नी चौ० रामदत्त एडवोकेट) के निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करती है।

आप इस समाज की नेता बहिन थी जिसकी छत्र-छाया में यह समाज पनपी तथा फूली-फली। आप एक आदर्श महिला थी, आपके व्यक्तित्व में अगाढ़ प्रेम प्रतिभा, साहस, निर्भीकता, कर्त्तव्य-परायणता, धर्म प्रियता, सरलता, निष्ठा, ईश्वर विश्वासी, सभ्यता, वैदिक सिद्धान्तों की दृढ़ परोपकार की भावना थी-

हिन्दी आन्दोलन में अग्रणी सदैव रहकर सब प्रकार की कठिनाईयों को मधुर मुस्कान तथा धैर्य के साथ झेलते हुए बन्दीगृह को भी मन्दिर का रूप देकर सभी की प्रेरणा स्रोत बनी रही।

सादा जीवन, उच्च विचार, दृढ़ संकल्प, सेवाभाव उनका उद्देश्य था। स्वाध्यायशील व अग्निहोत्री थी अर्थात् उनका यज्ञमय जीवन था।

जहा उन्होंने समाज की सेवा की वहा उन्होंने अपने सर्व परिवार को भी तन-मन-धन से सेवा करके ऊंचा उठाया।

इनके निधन से आर्य समाज की जो क्षति हुई है, निकट भविष्य मे उसकी पूर्ति होनी असम्भव है, इसमें तनिक भी संदेह नहीं कि वह आर्य समाज की एक स्तम्भ थी। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे तथा उनके परिवार को यह असह्य दुःख सहन करने की शक्ति दे, और हम सब उनके चरण चिन्हों पर चलने का प्रयत्न करें।

—दुःखित हृदय आर्य सदस्याएं

आर्य समाज अलावलपुर में बसन्त पंचमी पर्व मनाया गया

आर्य समाज अलावलपुर (जालन्धर) में बसन्त पंचमी का पर्व बड़े उत्साह से मनाया गया। जिसमें अलावलपुर की शिक्षण संस्थाओं तथा नगर के सभी बहन भाईयों ने भाग लिया। सभी में बड़ा उत्साह था इस अवसर पर बच्चों की भाषण प्रतियोगिता हुई तथा उन्हें पारितोषिक दिए गए।

—कृष्ण शरण गुप्त

आर्य वानप्रस्थाश्रम भटिण्डा को गऊ दान

४ २ ८१ को आर्य माता गुणवती जी ने अपने घर हवन यज्ञ कराया आर्य वानप्रस्थ आश्रम के सभी स्त्री पुरुषों ने भाग लिया माता जी ने आर्य वानप्रस्थ आश्रम भटिण्डा का गाय खरीदने के लिए एक हजार रुपया दान दिया श्री कुलवन्त राय जी, अग्रवाल तथा श्री वजीरचन्द जी ने एक-एक बोरी आटा आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल भटिण्डा को दान किया।

स्वामी भीष्म अभिनन्दन समारोह समिति का गठन

स्वामी भीष्म जी अपनी आयु के १२० वर्ष आप जगत की सेवा में अर्पित कर चुके हैं जिनका आर्य समाज के प्रचार एवं राष्ट्रीय आन्दोलन में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। जिन्होंने अनेकों भजनोपदेशक तैयार किए। क्रान्तिकारी एवं सैद्धान्तिक भजनों की रचना कर महान कार्य किया। श्री भगतसिंह सुखदेव आदि अनेकों क्रान्तिकारियों के सहयोगी रहे।

इस प्रकार के कर्मठ कर्मयोगी का अभिनन्दन करने तथा उनके जीवन चरित्र अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करने का निश्चय किया गया। इस ग्रन्थ का सम्पादन प्रसिद्ध शोध विद्वान् एवं सुलझे हुए लेखक डा० भवानीलाल जी भारतीय ने अपने हाथ में लिया है।

इस महत्त्वपूर्ण कार्य में आर्य समाजें तथा सभी महानुभाव हमें सहयोग दें जिन महानुभावों के पास स्वामी जी सम्बन्धी किसी प्रकार की सामग्री अप्रकाशित चित्र या उनकी पुस्तक आदि हो वह भी हमें भेजने का कष्ट करें, समारोह मार्च १९८१ में आयोजित किया जाएगा।

—वीरराम संयोजक
समारोह समिति
वेद भवन कुरुक्षेत्र

हिसार में श्रद्धाजलि समारोह

११ २ ८१ को दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय हिसार में स्व० स्वामी मुनीश्वरानन्द जी सरस्वती (भू० पू० प्रिंसिपल श्री ज्ञानचन्द जी) का निर्वाण दिवस हिसार की सभी शिक्षण संस्थाओं व आर्य समाजों की ओर से मनाया गया। इस अवसर पर स्वर्गीय स्वामी मुनीश्वरानन्द जी को श्रद्धाजंलियां भेंट की गई। दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय के छात्रों की श्लोकोच्चारण तथा भाषण प्रतियोगिता १० २ ८१ मध्याह्न में प्रिंसिपल साहब के ... ... कराई गई, नगर के आर्य बन्धुओं ने बढ़ चढ़कर इन कार्यक्रमों में भाग लिया।

आर्य मर्यादा के ग्राहक स्वयं बनो और दूसरों को बनाओ, आर्य समाज के सदस्य स्वयं बनो और दूसरों को बनाओ, हिन्दी भाषा—स्वयं भी पढ़ो और दूसरों को भी पढ़ाओ

आर्यमर्यादा में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं



श्री वीरेन्द्र जी ... तथा प्रकाशक द्वारा ... प्रेस ... में मुद्रित होकर ... कार्यालय ... जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वार्षिक शुल्क 15) वर्ष 14, अंक 11 2 चैत्र सम्वत् 2037, तदनुसार 15 मार्च 1981 का अंक दयानन्दाब्द 156

अमति और क्षुधा दूर हों, श्रेष्ठ धन प्राप्त हो

गोभिष्टरेमामतिं दुरेवां यवेन क्षुधं पुरुहूत विश्वाम्।
वयं राजभिः प्रथमा धनान्यस्माकेन वृजनेना जयेम ॥

ऋग् १० ४२ १

अर्थ—हम (गोभि) वेदवाणियों के अध्ययन से अथवा गाय के दूध घी आदि के सेवन से (दुरेवाम् अमतिम) बुरी चाल चलाने वाली अमति को (तरेम) दूर कर दें और (पुरुहूत) हे बहुस्तुत परमात्मन (यवेन) जौ गेहूं चने आदि अन्नों से (विश्वां क्षुधम) समस्त भुखमरी को दूर कर दें। (वयम) हम (राजभि) राज्याधिकारियों के सहयोग से तथा (अस्माकेन वृजनेन) अपने बल से (प्रथमा धनानि) श्रेष्ठ धनों को (जयेम) जीत लेवें अधिगत कर लेवें।

किन्हीं व्यक्तियों में या किसी समाज में जब अमति घर कर लेती है तब उन व्यक्तियों का और उस समाज का पतन होने लगता है। वैदिक अमति शब्द के अन्दर मतिहीनता और कुमति दोनों समाविष्ट हैं। मतिहीनता और कुमति के वश होकर मनुष्य बुरी चाल चलने लगता है दुराचार की ओर उन्मुख हो जाता है। किसी के पास बुद्धि ही नहीं है तो वह अपने आचरण की सही दिशा कैसे निर्धारित कर सकता है? इसी प्रकार यदि किसी के पास बुद्धि है तो पर वह दुर्बुद्धि है तो भी वह सन्मार्ग पर नहीं चल सकता। वेद कहता है कि अमति को हम गौओं के द्वारा दूर कर सकते हैं। गौ शब्द का एक अर्थ है वेदवाणी। वेदवाणियों के अध्ययन से और वेदवाणियों में की गई बुद्धि की प्रार्थनाओं से हम अमति को दूर कर मेधा और प्रज्ञा को प्राप्त कर सकते हैं। गौ शब्द का दूसरा अर्थ गाय या गाय से उत्पन्न पदार्थ घी दूध आदि होता है। अतः बुद्धि को बढ़ाने और दुर्बुद्धि को दूर करने का दूसरा उपाय मन्त्र में यह बताया गया है कि हम गाय के दूध घी आदि का सेवन करें।

दूसरी वस्तु जो हमारे व्यक्तियों को और समाज या राष्ट्र को पीडित कर रही है क्षुधा या भुखमरी है। सहस्रों मनुष्य हमारे देश में पुष्कल अन्न के अभाव में भूखे मर जाते हैं। इस भुखमरी को दूर करने का उपाय है यव को प्रचुर मात्रा में उत्पन्न करना। अथर्ववेद ११ ६ १५ में वनस्पतियों के पांच वर्ग बनाए गए हैं—सोमवर्ग दर्भवर्ग भङ्गवर्ग यववर्ग और सहवर्ग। यव वर्ग में सब अन्न आ जाते हैं जिनमें से कुछ यजुर्वेद १८ १२ में परिगणित किए गए हैं।

व्रीहयश्च मे यवाश्च मे माषाश्च मे तिलाश्च मे
मुद्गाश्च मे खल्वाश्च मे प्रियङ्गवश्च मे।
अणवश्च मे श्यामाकाश्च मे नीवाराश्च मे
गोधूमाश्च मे मसूराश्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् ॥

अर्थात मेरे धान जौ उड़द तिल मूंग चने प्रियंगु अणु श्यामाक नीवार गाय के किनके चावल गेहूं और मसूर कृषियज्ञ के द्वारा प्रचुर मात्रा में उत्पन्न होते रहें।

इस प्रकार प्रचुर मात्रा में अन्न उत्पन्न करके किसी देश की भुखमरी या क्षुधा की समस्या का हल किया जा सकता है।

तीसरी वस्तु है निर्धनता जिस पर हमें विजय पानी है। हमारा लक्ष्य है स्वयं को और अपने राष्ट्र को धनवान बनाना श्रेष्ठ धनों का धनी बनाना। श्रेष्ठवाची प्रथम शब्द मन्त्र में साभिप्राय रखा गया है, क्योंकि वेद इस पर बल देना चाहता है कि हमारे पास पुण्य की कमाई होनी चाहिये पाप की कमाई नहीं। राष्ट्रवासी धनी हों इसके लिये उन्हें स्वयं तो उद्योग करना ही होगा किन्तु उसके साथ राजकीय सहायता की भी आवश्यकता है। इसीलिए मन्त्र में धन प्राप्त करने के लिए राज्याधिकारियों का सहयोग और व्यक्तियों का अपना बल दोनों का उल्लेख किया गया है।

किसी भी समाज और राष्ट्र की उन्नति के लिए मन्त्रोक्त अमति निवारण क्षुधा निवारण धन धान्य की समृद्धि ये सभी बातें अत्यन्त आवश्यक हैं। आज हमारे देश को भी इनकी परम आवश्यकता है

—डा रामनाथ वेदालंकार पन्तनगर (नैनीताल)

आर्य समाज

रचयिता—श्री राधेश्याम आर्य एडवोकेट मुसाफिरखाना सुल्तानपुर

नीव राष्ट्र में पुनर्जागरण
की जिसने है डाली।
जो भारत की बगिया का है
सजग सुकर्मठ माली।
सारी दुनिया ने जिसे
कर्मठता सराही सराहा
राष्ट्र पुरुष ने जिसकी गरिमा
गर्वित हो अवगाहा।
ऋषि दयानन्द द्वारा सम्स्थापित
आन्दोलन है आर्य समाज।
भारत मां की आशाओं का
केन्द्र बिन्दु है आर्य समाज।
जगत कर्म धर्म वेद का
दिया हमें विज्ञान विवेक।
अद्वितीय है इस धरती पर
अपने ढंग का केवल एक
मानवता के सबल सेतु को
का हो गया मह आभषक
स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर
किए निछावर प्राण अनेक
सत्य पथों का रहा प्रदर्शक
गौरव मण्डित आर्य समाज।
भारत मां की आशाओं का
केन्द्र बिन्दु है आर्य समाज ॥
जन जन हो इस वसुंधरा का
सुख सामर्थ्य समृद्धि सम्पन्न।
नहीं रहे अवशेष धरा पर
मानव कोई एक विपन्न।
सत्य मार्ग पर चलें सभी जन
नहीं एक भी पथ प्रतिपन्न।
सदगुणों से पूर्ण हमारा
नवयुग हो अविकल प्रसन्न।
जीवन में नवक्रान्ति मचाने
आया भू पर आर्य समाज।
भारत मां की आशाओं का
केन्द्र बिन्दु है आर्य समाज।

कठोपनिषद्—नचिकेता की अमर कहानी (द्वितीय भाग)

यमाचार्य द्वारा आत्मा-परमात्मा का वर्णन

(लेखक—डा. सत्यव्रतजी सिद्धान्तालंकार)

ॐ

(गतांक से आगे)

मनुष्य का अन्य लक्ष्य शान्ति तथा संतोष है—ये उसे ही मिलते हैं जो अस्ति इति यह मान कर जीवन यात्रा मे पग बढाता है, दूसरे रास्ते पर चलने से शान्ति तथा संतोष न किसी को मिले हैं, न मिल सकते हैं।१२।

प्रभु को पाने का यही रास्ता है कि हम मान कर चलें कि वह है अस्ति इति एव उपलब्ध। वैसे तो दो रास्ते हैं— वह है यह मान कर चलने का एक रास्ता, और तात्विक-विवेचना का अर्थात् युक्ति का दूसरा रास्ता—तत्वभावेन चोभयो परन्तु इन दोनों मे वह है यह मान कर चलने से ही प्रभु को पाना चाहिए क्योंकि वह है यह मान कर चलने वाले का 'अस्ति इति एवं उपलब्धस्य तत्वभाव' वाणी तथा मन से प्रभु का वर्णन उसे तथा सुनने वालों को प्रसन्न करता है—'प्रसीदति'। जिसने अपने अन्तःकरण से प्रभु के अस्तित्व को स्वीकार किया उस की वाणी मे उसके मन मे एक प्रकार का आनन्द प्रसाद भरा होता है जिससे चारों तरफ उसकी वाणी तथा मन से आनन्द की वर्षा होती है। युक्तियों से प्रभु को सिद्ध करना कोरा प्रवचन है क्योंकि युक्ति अनुकूल तथा प्रतिकूल दोनों तरफ प्रहार करती है अपने अन्तःकरण से प्रभु को स्वीकार करते हुए उसका बखान करना एक देखी हुई, प्रत्यक्ष की हुई घटना का वर्णन करने के समान है।१३।

'प्रभु तथा कामनाएं—इन दो में से एक वस्तु हृदय मे रह सकती है। जब तक हृदय कामनाओं से वासनाओं भरा हुआ है तब तक भगवान का उस मे प्रवेश नहीं हो सकता। जब हृदय मे स्थित कामनाएं छूट जाती है—'यदा सर्वे प्रमुच्यन्ते कामा ये अस्य हृदि स्थिता' तब कामनाओं, इच्छाओं वासनाओं के छूट जाने से यह मरणधर्मा मनुष्य अमर हो जाता है।—'अथ मर्त्यो अमृतो भवति' और ब्रह्मानन्द का आस्वादन करता है—'अत्र ब्रह्म समश्नुते'। असल मे आत्मा तो अमर है ही वासनाओं के साथ एकात्म भाव के कारण अपने को मरण धर्मा समझने लगता है, वासनाएं नष्ट हुईं तो अपने स्वरूप में आ जाता है, अमृत हो जाता है और ब्रह्म के साथ हो जाता है।१४।

जब मनुष्य के हृदय मे पड़ी हुई वासनाओं की सब गाठें छिन्न-भिन्न हो जाती है—'यदा सर्वे प्रभिद्यन्ते हृदयस्य इह ग्रन्थयः'—तब यह मरणधर्मा मनुष्य अमर हो जाता है—'अथ मर्त्यो अमृत भवति' इतना ही शास्त्रों का उपदेश है—'एतावत् अनुशासनम्'। अमर होने के लिए और कुछ करने की जरूरत नहीं, वासनाओं को ही नष्ट करना है क्योंकि वासनाओं मे लिप्त हो कर ही यह अमरधर्मा अपने को मरण धर्मा समझने लगता है। अगर यह वासनाओं को मिटा दे, तो यह सत्य हो जाता है।१५।

वासनाएं कैसे मिटती हैं और उनके मिटने पर अमरत्व कैसे प्राप्त होता है? इस प्रश्न का उत्तर देते हुए यमाचार्य नचिकेता को कहते हैं हृदय की १०१ नाड़ियां हैं जिन मे से एक मूर्धा-कपाल को निकल जाती है—'शतं चैका च हृदयस्य नाड्य तासां मूर्धानं अभिनिःसृता एका'। नाड़ी जो मूर्धा को चली जाती है उसे सुषुम्ना कहा जाता है—बाकी सौ नाड़ियां रह जाती हैं। आत्मा उस एक नाड़ी से ऊपर जाता हुआ अमरता को प्राप्त करता है—'तया ऊर्ध्वम् आयन् अमृतत्व एति'। दूसरी जो नाना गति वाली १०० नाड़ियां हैं 'विष्वङ् अन्या' वे आत्मा के शरीर से निकलने पर 'उत्क्रमणे' उसे अन्य नाना योनियों मे ले जाती हैं, अमरता की तरफ नहीं ले जाती।

ये १०१ नाड़ियां कहां हैं-इस सबन्ध मे शंका बनी रहती है। चीर-फाड़ करने पर ये नाड़ियां कहीं नहीं पाई गईं, इससे यह प्रतीत होता है कि ये नाड़ियां उन नाड़ियों की सूचक नहीं हैं जिन्हें आर्टरी तथा वेन कहा जाता है। अनेक अध्यात्म-शास्त्रियों का कथन है कि उपनिषद् मे नाड़ी शब्द का अर्थ 'आर्टरी, तथा 'वेन' न होकर सूक्ष्म-शरीर की अदृश्य नाड़ियों से है जिनका सम्बन्ध षट्-चक्रों से है। इन चक्रों का वर्णन तन्त्र ग्रन्थों मे पाया जाता है। इनमें जो नाड़ी मूर्धा को जाती है उसे सुषुम्ना कहा जाता है। चक्रों मे दो चक्र मुख्य हैं—मूलाधार-चक्र तथा सहस्र चक्र। मूलाधार-चक्र वीर्य-स्थान मे तथा सहस्रार चक्र मस्तिष्क मे है, वीर्य की दो गतियां हैं—या तो मूलाधार से वह बाहर निकल जाता है, या उसकी सुषुम्ना से ऊर्ध्व-गति होकर वह मस्तिष्क को पुष्ट करता है, जो योगी वीर्य को नष्ट नहीं होने देते, उसे ऊर्ध्व-गति द्वारा उस का मस्तिष्क मे संचार करते हैं उन्हें ऊर्ध्व-रेता कहा जाता है, ये ऊर्ध्वरेता लोग अमृतत्व को प्राप्त करते हैं, उनका आत्मा मृत्यु के समय सुषुम्ना के माध्यम से कपाल से निसृत होता है, अन्य जीव-धारियों का आत्मा शेष १०० नाड़ियों से निसृत होता है। सुषुम्ना का मार्ग रीढ की हड्डी के भीतर से बताया गया है

परन्तु १०१ नाड़ियों का वर्णन उपनिषद् मे अन्य स्थानों पर भी पाया जाता है, प्रश्नोपनिषद् (३-६ ७) मे लिखा है कि आत्मा का निवास हृदय मे है। हृदय मे ही ये १०१ नाड़ियां है। इनमे से एक एक से सौ-सौ शाखाएं फूटी हैं, फिर उन सौ-सौ मे से बहत्तर-बहत्तर प्रति शाखाएं फूटी हैं। इस प्रकार प्रति-शाखा नाड़ियां सहस्रों हो जाती हैं। इस वर्णन से प्रतीत होता है कि यह वर्णन 'रक्त संचारिणी संस्थान (Circulatory System) का है जिसके अनुसार आर्टरी तथा वेन शाखा-प्रतिशाखा मे फूटते-फूटते प्रतिशिराओं (bapillaries) मे बट जाती है।

छान्दोग्य (अष्टम् प्रपाठक, छटा खंड) मे भी लिखा है हृदय की जो नाड़ियां हैं वे—'अथ या एता हृदयस्य नाड्य ता'—पीले, सफेद, नीले, लाल वर्ण की हैं। जिस प्रकार सूर्य की किरणें फैलती हैं उसी प्रकार हृदय रूपी सूर्य से मानो ये किरणें शरीर मे फैल रही हैं। यह वर्णन भी रक्त संचारणी-संस्थान का है, परन्तु यहां १०१ का वर्णन नहीं है। बृहदारण्यक (२-१-१९, द्वितीय अध्याय, प्रथम, ब्राह्मण, १९) मे ७२००० नाड़ियों का वर्णन है जिन्हें 'हिता' कहा गया है—ये हृदय से 'पुरीतत' को जाती हैं। इस स्थल पर १०१, अर्थ तथा सुषुम्ना का वर्णन नहीं है: इसी उपनिषद में ४-३-२० में केश के समान 'हिता'—नामक बारीक नाड़ियों का वर्णन है परन्तु यहां भी १०१ या सुषुम्ना का उल्लेख नहीं है। यही बात बृहदारण्यक ४-२-३ तथा ४-४-२ के विषय में कही जा सकती है जहां हृदय की नाड़ियों का उल्लेख है। बृहदारण्य का उल्लेख 'रक्त संचारिणी-संस्थान' का ही वर्णन प्रतीत होता है।१६।

भगवान् को पाने कहीं बाहर नहीं जाना होता, बाहर तो संसार बिखरा पड़ा है, अपने आत्मा के भीतर ही वह 'पुरुष ब्रह्म, छिपा बैठा है, उसे योग दर्शन मे 'पुरुष विशेष' कहा है से पुरुष ईश्वर:, आत्मा के भीतर अन्तरात्मा है, वह 'अंगुष्ठमात्र' है, मानो सिर्फ ब्रह्म का अंगूठा है 'अंगुष्ठमात्र अन्तरात्मा सदा जनानां हृदय 'सन्निविष्ट', प्रत्येक जीव के हृदय मे ही वह सन्निविष्ट है जैसे अंगूठे को पकड़ कर किसी को बाहर खींच लिया जाता है, वैसे हमें भी हमारी हृदय की भीतरी गुफा में बैठे ब्रह्म को खींच कर बाहर ले आये यह हमारे अपने हाथ मे है, 'तं स्वात् शरीरात् प्रवृहेत्, उसे अपने में से बाहर ले आवे जैसे मूंज मे दबी सींक को खींच कर बाहर निकाल लिया जाता है, 'मुंजात् इव इषीकाम्', इसमे जल्दी से काम नहीं होता, धैर्य से, सतत प्रयत्न से यह काम सिद्ध हो जाता है, 'धैर्येण, वह ब्रह्म शुद्ध है वही अमृत है, वह शुक्र है, वही अमृत है, हे नचिकेता, यह समझ ले, 'तं विद्यात शुक्र अमृत तं विद्यात् शुक्र अमृतम्।१७।

यमाचार्य ने नचिकेता को जिस सम्पूर्ण योग-विद्या तथा योग-विधि' का उपदेश दिया— मृत्यु प्रोक्ता नचिकेता अथ लब्ध्वा विद्या एता योग-विधि, च कृत्स्नम्—उसे पाकर उसे ब्रह्म की प्राप्ति हो गई—'ब्रह्मप्राप्त., वह मानसिक विकारों से मुक्त हो गया, उसकी वासनाएं मिट गईं 'विरज' वह समझ गया कि मृत्यु शरीर की होती, आत्मा मरण के बन्धन से मुक्त होता है 'विमृत्यु'. दूसरा भी जो कोई इस अध्यात्म विद्या को जानेगा 'अन्य अपि एव य. विदध्यात्म' वह भी नचिकेता के समान हो जाएगा, 'आत्मेव भवति'।

—

आर्य प्र. नि. सभा पंजाब द्वारा प्रकाशित तथा प्रसारित साहित्य की पुस्तकें

१ सत्यार्थप्रकाश हिन्दी ४—५०
२ सत्यार्थ प्रकाश (उर्दू) १०—००
३ अंग्रेजी २०—००
४ आर्य समाज—अतीत की उपलब्धिया तथा भविष्य के प्रश्न १०—००
लें०—डा० भवानीलाल भारतीय
५ पंजाब का आर्य समाज ले०—प्रि० रामचन्द्र जावेद सभामन्त्री ४—००
६ ग्लिम्पसज फराम सत्यार्थ प्रकाश (अंग्रेजी) ३ ००
ले० डी० एन० वासुदेव जी
७ स्वामी श्रद्धानन्द (अंग्रेजी) ले० श्री के० एन० कपूर जी ५—००
८ स्वामी श्रद्धानन्द उपदेश माला ०—२५
९ पोलीटीकल टैस्टामैन्ट आफ स्वामी श्रद्धानन्द ०—२५
१० जन्म साखी (ले० ज्ञानी पिण्डीदास जी) २—००
११ सिक्ख गुरु अते आर्य सिद्धान्त (पंजाबी) २—५०
ले० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी सरस्वती
१२ आर्य समाज दा दिग्दर्शन (पंजाबी) २—००
(ले० आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद)
१३ वेद और उनका प्रादुर्भाव ५०—०० सैकड़ा
ले० महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज
१४ श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द और उनका दिव्य सन्देश ०—२५
१५ भागवत खण्डनम् ले० स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ०—५०
१६ नीहारिकावाद और उपनिषद् (ले०—पं० चमूपति) ००—२५
१७ वीतराग स्वामी स्वतन्त्रतानन्द ले० श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु १—००
१८ हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी ले० ज्ञानी पिण्डी दास जी ० २५
१९ प्रिंसीपल आफ आर्य समाज अंग्रेजी २—००
ले० श्री पूर्णचन्द जी एडवोकेट
२० मृत्यु और परलोक ले० महात्मा नारायण स्वामी जी २—५०
२१ संस्कार विधि ले० स्वामी दयानन्द जी सरस्वती ४—५०
२२ मेरे सपनों का भारत ले० श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री —५०
२३ आर्य पर्व पद्धति ले० श्री पं० भवानी प्रसाद ५—००
२४ पूजा किस की ले० श्री राम गोपाल शालवाले ०—२५
२५ आर्य समाज ०—३०
२६ सत्य की मंजिल सेवा की राह ले० शादी राम जोशी १०—००
२७ बाल सत्यार्थ प्रकाश ३—००
ले० प्रोफेसर विश्वनाथ विद्यालंकार वेदोपाध्याय गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार
२८ धर्मस्वातन्त्र्य विधेयक क्यो ? ले० रघुनाथ प्रसाद पाठक १—००
२९ माण्डूक्योपनिषद टीका म० नारायण स्वामी ० ३५
३० प्रभु भक्ति स्तोत्र ले० लोकनाथन जी वाचस्पति ०—४०
३१ धर्मवीर पं० लेखराम ले० स्वामी स्वतन्त्रानन्द ०—४०

आर्य मर्यादा के विशेषांक

१ मेरी आत्म कथा के कुछ पृष्ठ ले० आचार्य रामदेव जी १—००
२ स्वतन्त्रानन्द संस्मरणांक १—५०
३ वेद मे पुनरुक्ति दोष नही २—५०
४ यजुर्वेदाध्याय का ३२ वां स्वाध्याय आचार्य रामदेव १ ००
५ अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी १—५०

नोट —ओ३म के झण्डे हवन कुण्ड व ओ३म के बैज भी उपलब्ध हैं।

प्राप्ति स्थान

व्यवस्थापक—चमूपति साहित्य प्रकाशन विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर—४

श्री ठा. कर्मसिंह की सुपुत्री का शुभ विवाह

सभा के पुराने और सुयोग्य कर्मचारी सहायक अकाउंटैंट श्री ठा कर्मसिंह जी की सुपुत्री आयुष्मति प्रतिभा का शुभ विवाह चिरञ्जीव भारत भूषण सुपुत्र श्री मदनमोहन महता देहली निवासी के साथ २०२८१ को बड़े समारोह से सम्पन्न हुआ। सभा के माननीय अधिकारियो सभा प्रधान सर्वश्री वीरेन्द्र जी सभा मन्त्री श्री रामचन्द्र जावेद जी श्री ऋषिपालसिंह जी एडवोकेट श्री चौ० रूपचन्द जी एडवोकेट चंडीगढ़ श्री पं० देवेन्द्रकुमार जी नवांशहर श्री रणवीर जी भाटिया सभा उपमन्त्री लुधियाना श्री प्रिंसपल प्रो० पी० टंडन लुधियाना श्री ओम्प्रकाश पासी लुधियाना श्री गुरदियाल सैनी एम० एल० ने अपनी शुभ कामनाए तथा वर वधु को आशीर्वाद दिया।

सभा कार्यालय के सभी कर्मचारियो ने इस विवाहोत्सव मे भाग लिया तथा युगल जोड़ी के लिए मंगल कामना करते हुए उन्हे आशीर्वाद दिया।

आर्य मुसाफिर को श्रद्धांजलि

स्वर्गीय कंवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर के नाम से कौन परिचित नही है समस्त आर्य जगत उन्हे जानता है अत्यन्त दु ख की बात है कि आज वे हमारे मध्य विद्यमान नही है। दीर्घ कालीन बीमारी के पश्चात वे इस ससार को छोड़ चुके हैं

पाठक महानुभाव जानते है कि वे उत्तर प्रदेश के जिला बुलन्दशहर के अरनिया नामक ग्राम के निवासी थे उन्होने आजीवन आर्य समाज की निस्वार्थ सेवा की वे आर्य समाज के दीवाने कहलाते थे। जो तड़प और लगन उन के हृदय मे ऋषि सन्देश को आर्य जाति के प्रत्येक नर नारी तक पहुचाने की थी वह बिरले ही व्यक्तियो मे देखी गई है उर्दू के एक कवि के शब्दो के अनुसार

अदा करता है यह नियामत खुदा
कुछ खास बन्दो को।
बनाने से भी दुनिया मे कभी
दीवाने बनते हैं।

वैदिक सिद्धांतो और आर्य संस्कृति का उन्हे पूर्ण ज्ञान था। इसके अतिरिक्त उसे जन साधारण तक जिस उत्तम ढंग प्रेम और मिठास से पहुचाने की कला वे जानते थे अन्य इस गुण से वंचित थे उन्हे यह गुण प्रभु की देन था। जहा उन्हे मीठा गला मिला था वहा भाषण करने की भी अदभुत शैली प्राप्त थी उनकी युक्तियो मे श्रोताओ पर जादू का सा प्रभाव पड़ता था यही कारण है कि उन्हे कई जादूगर भी कहा करते थे। जब वे मंच पर बैठ जाते थे तो अपनी आनन्द वर्षा से विरोधियो को भी हंसा देते थे और वे प्रशंसा करने लग जाते थे।

आर्य मुसाफिर मन्डली साधकना

उनका कार्यक्षेत्र पूर्व से पश्चिम तक फैला हुआ था। सुनते है कि उन का बिस्तरा हर समय मोटर गाड़ी पर ही रहता था। अपने नाम के बाद वे आर्य मुसाफिर शब्द लगाया करते थे उन्होने अपनी कार्यकुशलता तथा लग्नशीलता के द्वारा इस शब्द को पूर्ण तौर पर सार्थक सिद्ध किया। बड़ी २ आर्य समाजो मे उन की मांग हुआ करती थी वे वहा अवश्य पहुचा करते थे समाजो के अधिकारी उन्हे सबसे अन्त मे समय देते थे ताकि श्रोतागण अन्त तक बैठे रहे। उनके मधुर गीतो को सुनने के लिए लोग दूर २ से आते थे व घटो उन के प्रोग्राम की प्रतीक्षा करते रहते थे हिमाचल प्रदेश की रियासत मंडी की आर्य समाज मे उस समय भी आते थे जब वे नौजवान ही थे

★सेवा भाव★

आप के अन्दर आर्य समाज की सेवा का भाव कूट २ कर भरा था इसके प्रचार के लिए आपने किसी चीज की परवाह नही की आपने न धन एकत्र किया न अन्य कोई सम्पत्ति ऐसे निस्वार्थ सेवक के चरणो मे नतमस्तक है

★अन्तिम अवस्था★

आप अन्त मे दीर्घकाल तक रोग शय्या पर पड़े रहे। टांग चलने से जवाब दे चुकी थी। परन्तु बोलने की शक्ति वैसी ही थी समाचार पत्रो द्वारा ज्ञात होता रहा कि रुग्णावस्था मे आर्य जगत ने कुछ आर्थिक सहायता भी की जो सराहनीय है फिर भी उनके ऋण से उऋण होना कठिन है आर्य विद्वानो तथा उपदेशको की ऐसी अवस्था के प्रति आर्य समाजो और शिरोमणि सभाओ को गम्भीरता से विचार करना चाहिए।

●ऐसा मेरा नम्र सुझाव है +

अन्त मे ईश्वर से प्रार्थना है कि दिवंगत की पवित्र आत्मा को शान्ति और सद्गति प्रदान हो। इन शब्दो मे यह श्रद्धांजलि अर्पित करता हू

— गोविन्दराम आर्य चोलधरा हि प्र

फिरोजपुर में शहीदों की स्मृति में महायज्ञ

५० वर्ष पूर्व भारत माता के तीन आर्य वीरों ने मातृभूमि की स्वतन्त्रता की वेदी पर बलिदान दिया था। अमर शहीद क्रान्तिकारी देश भक्त स० भगत सिंह, राजगुरु और सुखदेव जी के चरणों में सच्ची श्रद्धांजलि देने हेतु बलिदान अर्द्ध शताब्दी के उपलक्ष में फिरोजपुर छावनी मे एक विशाल महायज्ञ का दिनांक १७ से २३ मार्च १९८१ तक आयोजन किया गया है। जिसमे यजुर्वेद पारायण यज्ञ, ५१.००० महामन्त्र गायत्री की आहुतिया पड़ेंगी इसके अतिरिक्त वेद प्रवचन, योगाभ्यास, शिविर संस्कृत पठन पाठन की सरलतम विधि का प्रतिपादन व शंकासमाधानादि कार्यक्रम होंगे।

जिसमें अध्यक्ष एव ब्रह्मा के पद को आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् महात्मा दयानन्द जी तपोवन देहरादून वाले सुशोभित करेंगे। वैदिक गगन में चमकते सितारे ओजस्वी वक्ता आचार्य नरेश, आर्य इतिहासज्ञ प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु, सुप्रसिद्ध शायर प्रो० उत्तम चन्द शरर जी, बहिन उषा शर्मा सिद्धान्ताचार्य आदि उच्चकोटि के विद्वान् पधार रहे हैं।

यह यज्ञ समारोह डी० ए० वी० वूमैन कालेज फिरोजपुर छावनी रेलवे रोड के प्रांगण मे बड़ी धूम-धाम से हो रहा है। अत. सभी यज्ञ प्रेमी भाई-बहिनो से नम्र निवेदन है कि इस यज्ञ समारोह हमे भाग ले कर पुण्य के भागी बनें।

नोट—मौसम के अनुसार बिस्तरे अवश्य साथ लायें। भोजन निवासादि का प्रबन्ध किया गया है।

बस के द्वारा बाहर से आने वाले सज्जन छावनी के बस अड्डे पर ही उतरें।

—रामचन्द्र आर्य

जिला आर्य सभा कपूरथला का निर्वाचन

जिला आर्य सभा कपूरथला का निर्वाचन वैद्य ओमप्रकाश जी की अध्यक्षता में १५ फरवरी ८१ रविवार को आर्य समाज मन्दिर कपूरथला मे हुआ। जिला की सभी पांच समाजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। जिस में मुझे सर्वसम्मति से प्रधान चुना गया। प्रधान को दूसरे अधिकारी मनोनीत करने के अधिकार देने के अन्तर्गत निम्नलिखित अधिकारी इस प्रकार हैं—

प्रधान—डा० लालचन्द पसरीचा सुलतानपुर।

उप-प्रधान—श्री महाशय बनारसी दास—फगवाड़ा।

२. श्री हरिचन्द—कपूरथला।

मन्त्री—श्री लखपत राय प्रभाकर कपूरथला।

उप मन्त्री- १. श्री धर्मदत्त प्रभाकर फगवाड़ा।

२. श्रीमती मनोरमा देवी सुलतानपुर

कोषाध्यक्ष श्री अमृतलाल फगवाड़ा

स्थाई विशेष आमन्त्रित सदस्य श्री हरि सिंह कपूरथला।

श्री तिलक राज सुलतानपुर,

नोट :- शेष समाजों से विशेष आमन्त्रित सदस्यों की घोषणा बाद में की जाएगी। भवदीय

—लालचन्द पसरीचा

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वार्षिक शुल्क 15) वर्ष 14, अंक 12   9 चैत्र सम्वत् 2037, तदनुसार 22 मार्च 1981 का अंक दयानन्दाब्द 156

इन अमर शहीदों के बलिदान को 23 मार्च को 50 वर्ष हो जाएंगे

भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव का बलिदान दिवस अर्द्ध शती के रूप मे 22, 23 मार्च को धूमधाम से मनाए ।





राजगुरु



सुखदेव

सुखदेव जी के जीवन की झाकी

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम मे देश भक्त क्रातिकारी बलिदानियो का योगदान कभी भुलाया नही जा सकता । अपने उज्ज्वल अतीत को सदा स्मरण रखना और तप-त्याग तथा बलिदान और कर्त्तव्य परायण की भावना को उत्तरोत्तर बढाते जाना राष्ट्र की सुख समृद्धि तथा एकता और संगठन के लिये अत्यावश्यक है ।

भारत मे क्राति की ज्वाला जलाय रखने वाले वीरो का ऐसे सख्त लोगो से पाला पडा था जो हाड और मास तो खाते ही थे इसके अलावा चमडा उधेड कर ढोल मढवाने के लिये भी तैयार रहते थे । एक तरफ तो अत्याचारी ब्रिटिश सरकार और दूसरी तरफ जनता ऐसी थी जो अभी गहरी नीद मे सोई हुई थी । इन्ही दोनो चक्कियो के पाट से होकर केवल वे ही लोग निकल सके जो लोहे के चने चबा सकते थे जिन्हे अपने आदर्शों मे पूरा विश्वास था तथा जो अपना सर्वस्व अपने ध्येय की पूर्ति मे समर्पित कर सकते थे ।

ऐसे नर नाहरो मे वीर बलिदानी सुखदेव का नाम प्रथम पंक्ति मे लिखने योग्य है । सुखदेव का जन्म लुधियाना मे १५ मई १९०७ ई० को ला० रामलाल थापर जी के घर हुआ । इनकी माता का नाम रल्ली देई था । सुखदेव के जन्म के समय ला० रामलाल लायलपुर मे रहते और कारोबार करते थे जहां १९१० ई० मे उन का देहान्त हो गया । सुखदेव का लालन पालन पोषण और शिक्षण इनके ताया श्री चिन्तराम थापर द्वारा हुआ । लाला जी अपने समय के महान देश भक्त वैदिक धर्मी और ऋषि दयानन्द के सच्चे अनुयायी थे । सामाजिक राजनैतिक और धार्मिक क्षेत्र मे सक्रिय रहने वाले ला० चिन्तराम की राष्ट्रीयता की तीव्र भावना ने बालक सुखदेव को अत्यधिक प्रभावित किया । लाला चिन्त राम लुधियाना से लायलपुर जा कर स्थायी रूप से बस गए । वहा उन्हे महता जेमिनी तथा मास्टर गुरदित्तामल जैसे कर्मठ कार्यकर्त्ताओ के साथ मिल कर काम करने का अवसर मिला ।

महर्षि दयानन्द की विचार धारा दोहरा प्रभाव डालती थी एक ओर जहा अन्ध विश्वास रूढियो और पाखण्डो तथा भ्रमो का चकनाचूर कर सत्य का ज्ञान कराती थी वहां दूसरी ओर देश की परतन्त्रता की बेडियो को काट कर उसे स्वतन्त्र स्वाधीन निर्भर और अखण्ड बनाने की प्रबल प्रेरणा देकर तप त्याग तथा संयम का मार्ग अपनाने की ओर अग्रसर करती थी । यही कारण है कि जब सन १९०७ ई० मे सरकार ने नया कालोनी ऐक्ट पास किया तो सरकार के इस अत्याचार और अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने वालो मे प्रमुख व्यक्ति आर्य समाज की विचार धारा के लोग ही थे । ला० लाजपत राय और सरदार अजीत सिंह दोनो ही आर्य समाजी थे इनके पुरुषार्थ से ही लायलपुर मे भारत माता सोसाईटी की स्थापना की गई थी । इस सोसायटी की स्थापना मे सूफी अम्बा प्रसाद जी का भी सहयोग इन्हे प्राप्त था । २३ मार्च १९०७ ई० को लायलपुर मे इस सोसायटी की ओर से आयोजित विशाल सभा मे ला० बांकेदयाल ने

(शेष पृष्ठ ५ पर)

राष्ट्र और बलिदान

लेखक व सम्पादक—श्री प० ओम्प्रकाश जी आर्य

संसार के जितने भी देश दानवी शासनों से स्वतन्त्र हो सके हैं वे निर्भीक शहीदों के बलिदानों के ही द्वारा स्वतन्त्र हुए हैं। राष्ट्र और बलिदान का सम्बन्ध बहुत घनिष्ठ है क्योंकि राष्ट्र स्वतन्त्रता का प्रसाद है और यह प्रसाद कैसा है इसे श्रीयुत सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी के शब्दों मे सुनिए—

The triumphs of liberty are not won in a day Liberty is a gealous Goddess exacting in her worship and claiming from her Votaries prolonged and assiduous devotion

अर्थात—स्वतन्त्रता के विजयनाद एक दिन मे नही प्राप्त किए जाते क्योंकि स्वतन्त्रता की देवी बड़ी कठिनाई से सन्तुष्ट और तृप्त होती है। वे अपने भक्तों की कठोर एवं दीर्घ काल व्यापी तपस्या चाहती है और परीक्षा लेती है।

इस देवी का खप्पर देश भक्तों के शोणित से भरपूर रहे और इसके गले मे नरमुण्डों की माला पड़ी हो तभी यह देवी शोभायमान होती है। ऐसी देवी के प्रसन्न करने मे किसी स्वातन्त्र्य प्रेमी देश को क्या नही देना पड़ता? इस महायज्ञ मे अपना सर्वस्व स्वाहा करने वाले वीरों की नितान्त आवश्यकता रहती है। आज तक संसार का कोई भी ऐसा राष्ट्र नही हुआ जिसने राष्ट्र निर्माण के पहले अपने पुत्र-पुत्रियों और नौनिहालों को तलवार के घाट न उतरवाया हो। ऐसा कोई राष्ट्र नही जिसकी भूमि मे अपने जिगर के टुकड़ों का उष्ण शोणित न बहा हो।

× सर्वस्व त्यागी बलिदानी ही सुधारक एवं सच्चा वीर है

बलिदान राष्ट्र की महिमामयी विभूति है। बलिदान के लिए एक कालान्तर से जलती हुई जलन चाहिए—एक असीम सन्ताप चाहिए—एक अमर आशा चाहिए—एक अटूट आदर्श अनुकरणीय त्याग रोम रोम मे व्याप्त होना चाहिए। देशभक्ति का उन्माद कट मरने की तीव्र पिपासा और अनाचार अत्याचार तथा शोषण की चक्की मे पिसने वालों को बचाने की महत्वकांक्षा चाहिए। क्रान्ति का महामन्त्र जिस के मुंह से निरन्तर निकलता रहे चाहे वह अशान्त अग्निमय हो या शान्तिमय असहयोगी वह बलिदान के खप्पर मे अपना उष्ण रक्त छोड़ सकता है क्योंकि देश का सुधार क्रान्तिमय बलिदान पर ही निर्भर है। बलिदान को प्रस्तुत हुतात्मा वीर ही सच्चा देश सुधारक है। इस विषय में श्री सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी कहते हैं—

There is no intermediate step between reform and revolution for you must enlist yonrselves under the banner of reform, or you must take your place behind the standard of Revolt and Revolution

अर्थात—सुधार और विप्लव के मध्य मे कोई माध्यमिक सीढ़ी नही है। चाहे तुम अपने आपको सुधार के झण्डे के नीचे खड़ा रखो या विद्रोह अथवा क्रान्ति की ध्वजा के पीछे।

जब जब देवी वसुन्धरा पर होने वाली यातना की सीमा नहीं रहती और मानव समाज के जन्मसिद्ध अधिकारों को कुचल दिया जाता है तब तब अन्तरिक्ष से विप्लवी बलिदान की भावना युवकों के हृदय मे पूरे वेग से दहक उठती है।

स्वेच्छा पूर्वक किये गये बलिदान कभी निष्फल नही जाते। संसार के किसी भी देश का इतिहास यह सिद्ध नहीं कर सकता कि देश भक्तों के बलिदान कभी अपना उद्देश्य पूरा न कर सके हों जब जब किसी देश या जाति की घोर दुरवस्था हो जाती है जब दानवों के कुटिल प्रहारों से सत्य और न्याय की ध्वनियां बन्द हो जाती है और धर्म स्वदेश प्रेम तथा मानवता का सर्वथा तिरस्कार होने लगता है तभी बलिदानी वीर आगे आकर बलिदानों की झड़ी लगाया करते हैं फ्रांस इटली, रूस तुर्की, आयरलैंड अमरिका चीन आदि देशों के स्वतन्त्र होने मे वहां के अगणित वीरों को हंसते-हंसते बलिवेदी पर चढ़ना पड़ा उन्होंने मृत्यु का इस प्रसन्नता से आलिंगन किया जैसे कोई अपनी प्रियतमा से मिलता हो उन शहीदों को न कोई भयभीत कर सका और न प्रलोभित ही। यह उन महावीरों के बलिदान का ही परिणाम है कि उनके प्यारे देशवासी स्वतन्त्रता और स्वराज्य का सुख भोग रहे हैं।

★भारत और स्वदेश प्रेम★

भारतीय वीरों के लिए स्वदेश प्रेम और बलिदान कोई अपरिचित वस्तु नहीं है। स्वदेश सेवा यहां ईश्वरोपासना के तुल्य समझी जाती है। धर्म और देश ये दो ही भारतीयों के बलिदान के आधार हेतु हैं। जिस देश ने शिक्षा दिक्षा कर बड़ा किया है। जिसकी छाती का दूध (अन्न-जल) रक्त बनकर धमनियों में दौड़ रहा है, आड़े समय में उसकी संरक्षा पर प्राण चढ़ा देना भारतीय वीर सदा से एक वेद समझते आए हैं। जिस देश मे उपकार का बदला न करना-कृतघ्नता महापाप समझा जाता हो फिर वहां के सुखद समीर मे सांस लेने वाले, शस्य श्यामला भूमि मे विचरने वाले देशवासी स्वदेश भक्त न हों असम्भव है।

भारत के देखते-देखते कितनी ही जातियां इस दुनिया के बाग मे खिल खिलाती हुई आईं और कराल काल का एक भी आघात बर्दाश्त न कर सकने के कारण विलीन हो गईं किन्तु सहस्राब्दियों से जमाने की चोटें झेलने वाला भारत आज भी संसार में किसी से कम नही इसका कारण है—उज्ज्वल राष्ट्रीयता और स्वदेश को स्वर्ग से भी बढ़कर समझने वाला उत्कट देश प्रेम।

★जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसि का★पवित्र गीत प्रत्येक भारतीय शिशु माताओं की लोरियों द्वारा सुनने का अभ्यस्त है।

★स्वराज्य की भावना सर्वोपरि★

मानव जीवन का वास्तविक विकास स्वराज्य पर ही निर्भर है। परन्तु यह तभी सम्भव है जबकि देश मे एक राष्ट्रभाषा हो जबकि देश एक ही आदर्श और सभ्यता का प्रतिपालक हो जबकि देश का बच्चा-बच्चा देश के लिए त्याग और बलिदान करने को तत्पर हो और जब सब देशवासियों को यह प्रतीत हो कि जिस भूमि मे वे रहते हैं, वह भूमि उनकी है और वे उसकी उन्नति या अवनति के उत्तरदाता है।

भारत को राजनीतिक दासता से मुक्त हुए बत्तीस वर्ष हो गए परन्तु देश की आजादी के लिए मर-मिटने वाले अमर शहीदों का न हो कहीं स्मारक बनाया गया न इनके पवित्र प्रेरणादायक और देशभक्ति के भावों से भरपूर जीवन चरित्र ही भारत के बच्चों को पढ़ाने का कोई उपक्रम किया गया। यह सब कुछ प्रमाद वश हुआ या जान बूझकर राष्ट्र के नेता शिक्षक, साहित्यकार और राज्यों के सूत्र संचालक ही इसका उत्तर दे सकते हैं परन्तु उत्तर जो भी हो यह उदासीनता अगणित बलिदानी वीरों की वीर गाथाओं से भारतीय सन्तान को वंचित रखने का पाप तथा कोरी कृतघ्नता ही समझी जाएगी।

●शहीदों के प्रति राष्ट्र का कर्त्तव्य●

शहीदों के प्रति राष्ट्र का कर्त्तव्य दीर्घकालपर्यंत श्री बनारसीदास चतुर्वेदी जी ने शहीद स्मारक उत्था श्री जीवनी में लिखे अपने सम्पादकीय में राष्ट्रोन्मादको को शहीद संग्रहालय बनाने की प्रेरणा करते हैं, प्यारे देश में स्वतन्त्रता की बलिवेदी पर चढ़ने वाले क्रान्तिकारियों के लिये कोई भी शहीद संग्रहालय] कायम नहीं किया गया। महात्मा गान्धी जी के संग्रहालय [कीर्ति] इतनी दूसरी है और वह अपने राष्ट्रीय महत्व का [कार्य] है। संसार के विभिन्न [देशों] में शहीदों के लिए अनेक संग्रहालय है। आयरलैंड ने अपने शहीदों के लिये जो कार्य किया, उसका वृत्तान्त श्रीयुत बनारसीदास (पत्रकार) ने नवम्बर १९३९ के विशाल भारत में लिखा था। उसका सारांश निम्न प्रकार है—

आयरलैंड के राष्ट्रीय वीरों का यह स्मारक आयरलैंड की पार्लियामेंट के विशाल भवन में कायम है। इस अजायब घर मे मुल्क की आजादी की लड़ाई में भाग लेने वाले वीरों और उस युद्ध की घटनाओं की स्मृतियों का एक बहुत प्रभावशाली संग्रह है। इसमें उन वीरों की आदमकद मूर्तियां हैं और वे वर्दियां हैं, जिन्हें पहनकर उन्होंने अपनी लड़ाईयां लड़ीं। उनके हथियार हैं, चिन्ह हैं बैज झण्डे इत्यादि भी हैं। उनकी लिखी पुस्तकें उनके व्याख्यान ऐलान तथा पत्र इत्यादि भी खूब सुरक्षित ढंग से रखे गये हैं। आयरलैंड के स्त्री पुरुष वृद्ध और बच्चे वहां पहुंचकर और उन स्मृति चिन्हों को देखकर राष्ट्रीयता का पाठ पढ़ते हैं। जिस जनरल राजर केसमैंट को अंग्रेजों ने फांसी दी थी उनके जीवन की सम्पूर्ण गाथा आपको यहां देखने को मिलेगी। प्रथम महायुद्ध में उन्होंने जर्मनी की सहायता से एक आयरिश सेना तैयार की थी और जहाज द्वारा वे आ ही रहे थे कि वह जहाज अंग्रेजों के हाथ पड़ गया। केसमैंट को फांसी हुई, पर राष्ट्रीय अजायबघर में वे अब भी जिन्दा हैं। कीर्तिर्यस्य सजीवति

इस अजायबघर में आयरलैंड के प्रसिद्ध शहीद टैरेंस मैकस्विनी का भी चित्र मिलेगा, जिन्होंने ७४ दिन का अनशन करके अपने प्राण दिए थे। जनरल माइकेल कोलिन्स की भी मूर्ति विद्यमान है। हैरी-बोलैंड सुप्रसिद्ध वीर सेनापति डी वलेरा के सैक्रेटरी थे। एक संकट के समय वे अपने जूते के तले में छिपाकर एक पत्र डी वलेरा के लिए ले गये थे। वे मार डाले गये पर उनका जूता अब भी सुरक्षित है। इस संग्रहालय मे आपको वीर बालक केवनबरी का वृत्तान्त मिलेगा, जिसे फांसी दी गई थी। कहीं आपको क्रान्तिकारियों द्वारा प्रकाशित ऐलानों का संग्रह मिलेगा तो कहीं राष्ट्रीय झण्डे कहीं मार्कट जोन्स जेल में भूख-हड़ताल करने वालों की सूचियां पड़ी हैं, तो कहीं आयरिश शहीदों के चित्रों के एलबम हैं, और तो और उन शहीदों द्वारा व्यवहार में लाई जाने वाली चीजों भी संग्रह कर ली गई हैं, यथा उनकी अंगूठियां, प्याले और पैंसिल आदि जगह २ कोठियों मे चित्र कमरा तथा टोपियां रखी हुई हैं।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सम्पादकीय—

भगतसिंह के क्रान्ति वीर देश-भक्त बनने की संक्षिप्त कहानी

क्रान्तिकारियों का मार्ग तप और त्याग का मार्ग था इसके विपरीत गांधीजी के नेतृत्व से पूर्व तथा पश्चात् भी उस समय की कांग्रेस समझौतों और सौदाबाजियों में उलझी रही। नवयुवकों के खून में गर्मी का होना तो स्वाभाविक ही है। यह बात ठीक है कि हिंसा के द्वारा इतनी बड़ी शक्तिशाली हकूमत को जितनी कि अंग्रेज महा प्रभुओं की थी नहीं बदला जा सकता परन्तु उससे भी अधिक यह सच्चाई है कि देश की प्रसुप्त आत्मा बिना बलिदान के कभी जगाई नही जा सकी, और यही बलिदानी वीरों का मुख्योद्देश्य था। इस उद्देश्य की पूर्ति में वे जीवन-भर लगे रहे और अन्ततः अपनी आहुति इस राष्ट्रभूत यज्ञ में डाल गये।

२३ मार्च १९३१ के दिन भारत माता के तीन सपूतों को देश भक्ति के अपराध में फांसी दी गई थी, आर्य मर्यादा के इस अंक मे हमने उन्हीं के सम्बन्ध मे लेख तथा कविता आदि का प्रकाशन उचित समझा है। आज उन कर्मपरायण देश-भक्तों को हमसे जुदा हुये पूरे पच्चास वर्ष व्यतीत हो चुके हैं। भारत की अखण्डता एकता तथा स्वतन्त्रता का जो स्वरूप उनके मस्तिष्क में था उसमे न प्रान्तवाद के लिए कोई स्थान था और न सम्प्रदायवाद के लिए। देश के विभिन्न प्रान्तों में जन्म लेने वाले इन प्रणवीरों ने समूचे देश को एक ईकाई मानकर काम किया। पंजाब, बंगाल, आसाम, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, महाराष्ट्र आदि की संकीर्ण तथा देश को खण्डित करने वाली दुर्बल भावना से वे सदा असम्पृक्त रहे यही कारण है कि सुखदेव और भगतसिंह पंजाब में उत्पन्न होकर मरहटा वीर राजगुरू को साथ लेकर एक साथ फांसी के तख्ते पर झूले थे : तीनों में ही एक दूसरे से पूर्व बलिदान होने की उत्कट भावना थी। इसी अंक में अन्यत्र मरहटा वीर राजगुरु के जीवन की कुछ चमत्कारी नहीं नहीं रोमांचकारी घटनाएं दी हैं जिनको पढ़कर पाठकों को पता चल जाएगा कि यह वीर भारत मां पर कुर्बान होने के लिये सदा कितना उतावला रहता था।

शहीद सुखदेव और भगतसिंह दोनों का जन्म आर्य समाजी परिवार में हुआ था। भगतसिंह के दादा जो पहले सिख पन्थ के अनुयायी थे महर्षि दयानन्द के दर्शन, उनके सदुपदेशो के श्रवण तथा उन उपदेशों पर मनन करने के पश्चात् कहां से कहां जा पहुंचे तथा मतों और पन्थों का स्वरूप वेद का प्रचार करने वाले आर्य समाज की तुलना में क्या है इसे वीर भगतसिंह की भतीजी श्रीमती वीरेन्द्र सिन्धु एम० ए० ने अपनी पुस्तक युग द्रष्टा भगतसिंह और उनके मृत्युंजय पुरखे में निम्न प्रकार वर्णन किया है—वे धर्म की बैलगाड़ी से उतर कर क्रान्ति के रथ पर बैठ गये। रथ क्रान्ति का था, पर उसकी धुरी धर्म की थी। धर्म अपनी लम्बी यात्रा से थक कर गतिहीन हो गया था, पर उसके पास प्रभाव की पूंजी थी। यह पूंजी उसने क्रान्ति को भेंट कर दी। क्रान्ति भी न ठग थी. न कृतघ्न। उसने धर्म को गति दे, उद्बोधन पताका सौंप दी। दोनों एक दूसरे का सहारा थे, प्रगति के पथ पर बढ़ चले। इस धर्म क्रान्ति का नाम था आर्य समाज। पृ० १)

भगतसिंह के दादा सरदार अर्जुनसिंह पर महर्षि का प्रभाव

अपनी पुस्तक में श्रीमती वीरेन्द्र सिन्धु लिखती हैं—सरदार अर्जुनसिंह ने महर्षि दयानन्द के दर्शन किये तो मुग्ध हो गये और उनका भाषण सुना तो नव-जागरण की सामाजिक सेना में भर्ती होकर आर्य समाजी बन गये। वे उन थोड़े से लोगों में थे, जिन्हें स्वयं महर्षि दयानन्द ने दीक्षा दी थी, यज्ञोपवीत अपने हाथ से पहनाया था। यह सरदार अर्जुनसिंह का सांस्कृतिक पुर्नजन्म था। मांस खाना उन्होंने छोड़ दिया, शराब की बोतल नाली में फेंक दी। हवन-कुण्ड उनका साथी हो गया और सन्ध्या-प्रार्थना सहचरी।

वे पहले सिख जाट थे, जिन्होंने बड़े और मंझले बेटे किशनसिंह और अजीतसिंह को साईं दास ऐंग्लो संस्कृत हाई स्कूल जालन्धर में शिक्षा प्राप्त करने भेजा और स्वयं भी रायजादा भगतराम वकील के मुन्शी हो गये। उन्होंने दीक्षा लेकर ही सन्तोष नहीं किया, अपने को इस योग्य भी बनाया कि दूसरों को दीक्षा दे सकें, उन्होंने आर्य समाज के साहित्य का बहुत गहरा अध्ययन किया। सनातन धर्मी पण्डितों के साथ मूर्ति पूजा और श्राद्ध जैसे विषयों पर कई शास्त्रार्थों में वे ही आर्य समाज के प्रमुख प्रवक्ता रहे! वे अपने क्षेत्र के प्रमुख आर्य समाजी नेताओं में गिने जाते थे और हर काम में उनकी सलाह मानी जाती थी। पृ० ३)

सरदार अर्जुन सिंह ने वैदिक धर्म में दीक्षित होने के पश्चात अपने बच्चों को भी उन्हीं संस्कारों में दीक्षित करना प्रारम्भ कर दिया। उनके बड़े पुत्र किशन सिंह भी तथा मंझले अजीत सिंह जी को महात्मा हन्सराज तथा ला० लाजपतराय जैसे धर्म तथा देश की सेवा में निरन्तर रत रहने वाले महान् आत्माओं की संगति प्राप्त रही। अन्ध विश्वासों रूढ़ियों और भ्रमों से बाहर निकलने का सौभाग्य इन्हे आर्य समाज की कृपा से ही प्राप्त हुआ साथ ही देश भक्ति का पाठ भी पढ़ने का अवसर मिल गया।

वीर भगत सिंह का जन्म २८ सितम्बर १९०७ ई० आश्विन शुक्ला त्रयोदशी सम्वत् १९६४ विक्रमी शनिवार प्रातः ९ बजे ग्राम बंगा जिला लायलपुर (अब पाकिस्तान) में हुआ था। इसी दिन इनके चाचा अजीत सिंह के निर्वासन समाप्त होने की सूचना मिली तथा इसी दिन इनके पिता किशन सिंह तथा छोटे चाचा स्वर्ण सिंह जी जेल से रिहा किए गए। इस लिए इस बालक का नाम भागो वाला रखा गया जो बाद म भगत सिंह मे बदल दिया गया।

किशोरावस्था

गाव में प्रायमरी पास कर भगत सिंह अपने माता पिता के पास नवाकोट लाहौर चले गए। उन दिनों सिखों के बालक सिख जाति द्वारा स्थापित और सचालित खालसा स्कूलों में ही पढा करते थे। सबके आग्रह करने पर भी सरदार किशन सिंह ने उन्हे खालसा स्कूल के बजाय डी० ए० वी० स्कूल मे भर्ती किया दादा जी सरदार अर्जुन सिंह का प्रभाव तो इसमे था ही पर खास बात यह थी कि खालसा स्कूलों का प्रबन्ध सरकार परस्त आदमियों के हाथ में था और वहां "गाड सेव दा किंग"—ईश्वर राजा की रक्षा करे—का गीत प्रार्थना मे गाया जाता था। भगत सिंह के जन्म की पीछे क्रांति वीर पुत्र की कामना थी। वे उन्हें राज भक्ति के वातावरण में कैसे रख सकने थे। (युग द्रष्टा भगत सिंह पृ १३२)

पाठक वृन्द। खालसा पन्थ द्वारा खोले गए शिक्षणालयों मे कितना अन्तर था एक की नीव राज भक्ति पर रखी गई थी और दूसरी की स्वदेश भक्ति पर भला जिस बालक के दादा, पिता और दोनो चाचा देश की आजादी के लिये नाना प्रकार के कष्ट झेल रहे थे और देश की आजादी के लिए सर्वस्व अर्पण को सदा तैयार रहते थे उस कुल का बालक राजभक्ति का पाठ पढा कर देश की गुलामी की जंजीरों को दृढ़ बनाने वाले शिक्षणालयों में कैसे भेजा जा सकता था।

भगत सिंह के दादा और पिता दोनो इस दिशा में सजग प्रहरी की तरह फूक-२ कर कदम रख रहे थे और जब उन्होंने देखा कि क्रांति की इस तीव्र ज्वाला को और अधिक तीव्र करना आवश्यक है तो भगत सिंह को डी० ए० वी० स्कूल से सीधा नैशनल कालेज में प्रविष्ट करा दिया। इस कालेज का सचालन पंजाब केसरी ला० लाजपत राय के हाथ में था, आचार्य श्री जुगल किशोर जी और प्राध्यापक स्वनाम धन्य देवता स्वरूप भाई परमानन्द तथा देश की राष्ट्रीय सस्था गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक श्री प जयचन्द्र जी विद्यालंकार थे।

आर्य समाज डी. ए. वी, स्कूल तथा नैशनल कालेज तीनों से ही एक जैसे धार्मिक एवं देश प्रेम के विचार और सस्कार प्राप्त करने वाले वीर भगत सिंह का जीवन देश प्रेम के भावों से भरपूर बन गया। डी. ए. वी. स्कूल में भगतसिंहने संस्कृत भाषा का भी अध्ययन किया और इस भाषा मे अच्छे अंक प्राप्त करते रहे, जैसाकि अपने दादा सरदार अर्जुन सिंह को लिखे उनके निम्नलिखित पत्र से सिद्ध होता है। यह २२ जुलाई १९१८ को लिखा गया था।

ओ३म्

श्रीमान् पूज्य बाबा जी नमस्ते।

अर्ज यह है कि खत आपका मिला। पढ़ कर दिल को खुशी हासिल हुई। इम्तहान की बाबत यह है कि मैंने पहले इस वास्ते नही लिखा था, हमें बताया नही था। अब हमें अंग्रेजी और संस्कृत का बताया है। उसमें मैं पास हू, संस्कृत मे मेरे १५० नम्बरों में से ११० नम्बर हैं। अंग्रेजी मे १५० में से ६८ नम्बर आदि आदि।

आपका ताबेदार

भगत सिंह

पाठकवृन्द! आप पढ़ चुके हैं कि भगतसिंह के दादा सरदार अर्जुनसिंह को यज्ञोपवीत महर्षि दयानन्द जी से लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था। भला जो स्वय सिख होते हुए भी उपवीतधारी बना वह भला अपने बच्चो और पोतों को कैसे इस व्रतबन्ध से अछूता रहने दे सकता था। अपने बच्चों के तो वैदिक सस्कार कराये ही थे। सरदार अर्जुनसिंह ने अपने पोतों के सभी संस्कार वैदिक रीत्यानुसार ही कराये। आज भी कुछ पन्थाई, वीर शिरोमणि भगतसिंह को वैदिक धर्मी परिवार का न मान कर कोरा सिख सिद्ध करने का दुःसाहस करते रहते हैं उन

(शेष पृष्ठ ४ पर)

बलिदानी वीर राजगुरु के जीवन की प्रेरणादायक घटनाएं

ले० श्री ओम्प्रकाश आर्य सभा कार्यालय व्यास

प्रो भगवानदास माहौर ने अपनी पुस्तक यश की धरोहर में राजगुरु जी के सम्बन्ध मे एक लेख लिखा है जिसमें वे लिखते हैं कि इस मरहटा नवयुवक मे बलिदान होने की भावना सब से अधिक थी। एक निर्धन परिवार मे जन्म ले कर क्रान्ति पथ का ये महनीर सेनानी साहस का पुतला था। भगत सिंह को अपना प्रतिद्वन्दी समझता और हर समय उसे यह सन्देह रहता था कि कही शहादत का ताज मुझ से पहले भगतसिंह के सिर पर न रख दिया जाए। जब भी पार्टी मे कोई ऐसी बात चलती जिस मे किसी साथी के शहीद होने की सम्भावना हो तो राजगुरु तड़प उठते और तुरन्त कहते कि यह कार्य तो मैं ही करूंगा। मरना या फासी पर चढ़ना उनके लिए एक खेल था। ऐसा लगता था जैसे उन्होंने मृत्यु से भयभीत होना सीखा ही नही। श्री योगेश चैटर्जी को जेल से छुड़ाने की स्कीम बनी तो राजगुरु आगे और लाजपतराय पर लाठी चलाने वाले अंग्रेज एस पी स्काट को गोली से उड़ाने का निश्चय किया गया तो राजगुरु ने जिद की कि गोली मैं मारूंगा अन्तत यह निर्णय हुआ कि राजगुर भगत सिंह और चन्द्रशेखर आजाद तीनो मिल कर उस नर पिशाच को ठिकाने लगायें चौथे साथी जय गोपाल को कहा गया था कि ज्यू ही स्काट अपन दफ्तर से बाहर निकले वो इशारा कर दे। स्काट के स्थान पर साण्डर्स बाहर निकले। भगतसिंह ने राजगुरु से कहा अरे यह स्काट नहीं हैं परन्तु राजगुरु ने समझा कि भगतसिंह कहते हैं अभी मत मारो इधर आने दो। भला राजगुरु हाथ आए शिकार को कब छोड़ने वाला था उसकी गोली साण्डर्स के सिर के पार हो गई और और वह वहीं ढेर हो गया। राजगुरु ने इस लिए भी गोली चलाने मे जल्दी की कि कही उसके स्थान पर भगतसिंह को इस के वध का श्रेय न मिले। राजगुरु के अन्दर जहा तड़प थी कि भारत माता के शत्रुओं से बदला लेने के लिए उन्हें सब से आगे रहना है वहा उन की इस तड़प को स्पष्ट करने वाली उनके जीवन की एक और घटना भी है कि जब भगत सिह ने पार्लियामेंट पर बम फेंकने का प्रस्ताव रखा और इस काम मे अपने साथ श्री बी के दत्त के नाम का प्रस्ताव किया तो राजगुरु उसी समय श्री चन्द्रशेखर आजाद के पास झासी चले गये और उनको कहा कि भगतसिंह के साथ बी के दत्त के स्थान पर उन्हें भेजा जाए। यद्यपि उनकी यह बात स्वीकार न की गई परन्तु उससे उनकी बलिदान होने की तीव्र लालसा का तो पता चलता है।

राजगुरु के जीवन की एक और अनूठी घटना

राजगुरु का पार्टी नाम रघुनाथ और भगतसिंह का रणजीत था। एक दिन यह चर्चा चल रही थी कि पुलिस क्रान्तिकारियों पर क्या क्या अत्याचार करती है। सभी साथी ताश भी खेल रहे थे और यह चर्चा भी साथ साथ कर रहे थे कि ताश के खेल मे राजगुरु हार गये हार जाने के फलस्वरूप उनको अपने सब क्रान्तिकारी वीरो के लिए खाना बनाना था जब अंगीठी तपा कर खाना पकानेको बैठे तो आपने सण्डासी अंगीठी मे गरम होने के लिए रखदी और जब सण्डासी खूब गरम हो गई तो हसते मुस्कराते अपनी छाती पर तीन जगह उसे लगा दिया। एक बलिदानी वीर ने लपक कर सण्डासी उनके हाथ से छीन ली और हैरानी से पूछा यह क्या कर रहे हो? वीर राजगुरु ने उत्तर दिया कुछ नही केवल यह देख रहा था कि पुलीस के टार्चर करने से घबराऊंगा या नही? राजगुरु के जीवन की इस घटना को पढ़ कर पाठक अनुभव करेंगे कि देश के क्रान्तिकारी किस मिट्टी बने हुए थे और उन मे देश भक्ति की भावना कितनी तीव्र थी।

फासी के तख्ते पर

राजगुरु लाहौर षड्यन्त्र केस में पूना से पकड़े जा कर लाहौर लाये गये अभियोग चला फैसला जेल मे ही सुनाया गया। सब को जेल के कमरे मे बारी बारी बुलाया जाता सर्वप्रथम राजगुरु को ही बुलाया गया। जज ने उन्हें फासी की सजा सुनाई। सजा सुनते ही आपने बड़े जोश से इन्कलाब जिन्दाबाद का जयनाद किया। जज महादय ने पुलीस को आदेश दिया कि उन्हें हथकड़ी डालकर फासी की कोठरी मे ले जाओ परन्तु राजगुरु वह मरहटा वीर-इन्कलाब जिन्दाबाद करता ही रहा पुलिस उस का मुख बन्द करने का यत्न करती परन्तु वह जयनाद करने मे लगा ही रहा। अन्तत पुलीस मारपीट करते करते फासी की कोठरी तक ले गई। श्री विजय कुमार सिन्हा जिन को आजीवन कारावास की सजा इसी केस में सुनाई गई थी लिखते हैं कि अपनी सजा सुनने के पश्चात् जब मैं फासी की कोठरी में राजगुरु जी से मिलने गया तब उन्होने फांसी की सजा की चर्चा तो न की हां पोलीस के साथ हुई हाथापाई मे इन का फाउटनपेन टूट गया था उसके सम्बन्ध में कहा—देखो विजय इन सालों ने मेरा पैन तोड दिया। विजय कुमार सिन्हा लिखते हैं—मैं हैरान था कि यह किस किस्म मुर्दे का इन्सान है इसे फासी की सजा की तो कोई चिन्ता नहीं हा पारकर पेन के टूट जाने का दुख अवश्य है। २ मार्च १९३१ को यह वीर फासी पर चढा दिया गया। पाठक वृन्द ऐसे थे वे वीर देश भक्त जिन्होंने अपने प्राणो की आहुति दे कर हमें स्वतन्त्रता की देवी के दर्शन कराये। आज पूरे पचास वर्ष उन्हे शहीद हुए हो गए परन्तु इन वीर बलिदानियो के प्रति राष्ट्रवासियो में न कोई भक्ति भाव है और न उन के बलिदान दिवस मनाने की तीव्र उमग।

आर्य समाज के कार्यकर्ता आगे आए और इन देश भक्त बलिदानियों के जीवन चरित्र जनसाधारण को सुनाने-पढ़ाने का यत्न करें तभी देश में सच्ची राष्ट्रीय भावना का उदय हो पायगा। किसी और से ऐसी आशा करना दुराशामात्र ही है।

शोक समाचार

श्री महेन्द्र पाल जी वर्मा मैनेजर आर्य होजरी मिल्स लुधियाना के पूज्य पिता मा० बलवन्त राय जी वर्मा का निधन हो गया।

परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगतात्मा को सद्गति और शोक सन्तप्त परिवार को इस असहाय दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

(७ पृष्ठ का शेष)

की साम्प्रदायिक संकीर्णता तो प्रभु की कृपा ही दूर कर सकती है परन्तु यदि सत्य के साथ उन का कुछ भी प्रेम है तो यहा सरदार भगतसिंह जी का अपने पिता सरदार किशनसिंहजी का लिखा एक ऐतिहासिक पत्र देकर हम उनसे विनम्र अनुरोध करना चाहेगे कि वे हठ और दुराग्रह का परित्याग कर वीर बलिदानी के इस पत्र पर विचार करने की कृपा करें।

भगतसिंह की भतीजी वीरेन्द्र सिन्धु अपनी पुस्तक के पृ १४६ पर लिखती हैं —सगाई की निश्चित तिथि से कुछ दिन पहले भगतसिंह घर से लाहौर गए और वहा से जाने कहा फरार हो गए। उनके पिता को अपनी मेज की दराज मे रखा यह पत्र मिला।

पूज्य पिता जी नमस्ते!

मेरी जिन्दगी मकसदे आला यानी आजादी-ए-हिन्द के उसूल के लिए वक्फ हो चुकी है। इसलिए मेरी जिन्दगी में आराम और दुनियावी ख्वाहेशात बायस कशिश नही है।

आपको याद होगा कि जब मैं छोटा था तो बापूजी ने मेरे यज्ञोपवीत के वक्त ऐलान किया था कि मुझे खिदमते-वतन के लिए वक्फ कर दिया गया है। लिहाजा मैं उस वक्त की प्रतिज्ञा पूरी कर रहा हू।

उम्मीद है आप मुझे माफ फरमाएंगे।

आप का ताबेदार

भगतसिंह

(यह १९२३ के उत्तरार्द्ध की बात है)

घर समाज विद्यालय और उसके पश्चात देश भक्त वीरो के सम्पर्क-संसर्ग से भगतसिंह एक महाबलिदानी और उग्र क्रान्तिकारी बनते चले गए और अन्तत अपने जीवन की साध २३ मार्च १९३१ को फासी का फदा स्वय अपने गले मे डाल भारत माता की जयघोष तथा इन्कलाब जिन्दाबाद का नाद निनादित करते हुए देश पर बलिदान हो गए।

पाठक बन्धुओ! किसी ने ठीक लिखा है कि 'क्रान्ति सत्य के प्रकटीकरण का एक भीषण रूप है। ससार के सभी सभ्य राज्यों मे अच्छे से अच्छे जमानों मे भारी से भारी शक्ति के सामने, समय २ पर क्रान्ति बराबर हुई और यद्यपि तत्कालीन सत्ताधारियो ने क्रान्ति के नेताओं को फासी देने, सूली पर चढ़ाने गर्दन काटने, जीता जलाने विष पिलाने, खञ्जर या पिस्तौल की गोली का शिकार बनाने तथा आजन्म कारावास के निर्णय और चरमसीमा के दण्ड दिए हैं परन्तु बाद में इतिहास ने उन्हें मुक्त कण्ठ से धर्मात्मा और निर्दोष माना है।

सुखदेव भगतसिंह राजगुरु भगवतीचरण, रामप्रसाद बिस्मिल, अशफाक उल्लाह खां गेन्दालाल दीक्षित करतारसिंह सराभा व सोहनलाल पाठक, श्री मदनलाल ढींगरा आदि को इनके जीवित रहते देशवासियो ने न समझने का जो जघन्य पाप किया था आज उसका प्रायश्चित करने का समय आ गया है। इस खण्डित देश को पुन खण्डित होने से यदि कोई बचा सकता है तो इन वीरो की उदात्त भावना ही बचा सकती है अत आईये सच्चा नरमेध करने वाले इन बलिदानियो का यशोगान करें तथा इनके चरण चिन्हों पर चलने का सकल्प धारण करें।

— ओम्प्रकाश आर्य

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अपना कोचीला पंजाबी चीरा पगड़ी सम्भाल ओ जट्टा पगड़ी सम्भाल गीत का पाठ याद किया था—मस्तु।

माता का प्रभाव

सुखदेव की माता रल्ली देई घर के सभी बच्चों को राष्ट्र प्रेम और देश भक्ति की कहानियां सुनाया करती थी। इन सब को सुखदेव बड़े मनोयोग से सुना करते और सदा सोचा करते कि मैं भी बड़ा होकर वीर सिपाही और देश भक्त बनूंगा। उनका मन पढ़ने लिखने में खूब लगता था परन्तु खेल कूद में बिल्कुल रुचि न थी। दीवाली के त्योहार पर घर के सभी बच्चों को आतिशबाजी तथा मिष्ठान्न खरीदने के लिए पैसे मिला करते थे। सुखदेव को छोड़ कर शेष सभी महापुरुषों की तस्वीरें खरीदा करते थे परन्तु सुखदेव केवल झांसी की रानी की तस्वीर ही खरीदा करते थे। यह तस्वीर पाकर उनकी छाती तन जाती चेहरा एक अनजाने दर्प से चमकने लगता। माता जी को तस्वीर दिखाकर बड़े उत्साह से कहा करते हैं मां— देख यह झांसी की रानी लक्ष्मीबाई है इसने अंग्रेजों से लोहा लिया था। कितनी बहादुर है यह! पीठ पर बच्चा बन्धा है। एक हाथ में घोड़े की लगाम है और दूसरे हाथ में तलवार।

झांसी की रानी उनके लिये देश भक्ति साहस और शक्ति की प्रतीक थी।

भेदभाव के प्रति विद्रोह

लाला चिन्तराम आर्य समाज की विचार धारा का क्रियात्मिक प्रचार करने वाले कर्मठ व्यक्ति थे मानव मात्र के प्रति उनके हृदय में प्रेम और सहानुभूति का पवित्र भाव था। जन्मगत जाति पाति के भेदभाव को दूर करने में अपने साथियों समेत सदा तत्पर रहते थे उनके इस क्रियात्मिक जीवन का यथेष्ट प्रभाव सुखदेव पर पड़ना स्वाभाविक था। सुखदेव ने मैट्रिक तक शिक्षा सनातन धर्म स्कूल लायलपुर में प्राप्त की थी परन्तु अपने ताया जी के वैदिक विचारों के प्रभाव के कारण उनमें ऊंच नीच और छूत छात की कोई बात न थी। लायलपुर के पास हरचरण सिंह पुरा ग्राम में जाकर सुखदेव ने प्रथम बार वर्ष से हरिजनों को पढ़ाना प्रारम्भ कर दिया।

★ निर्भीक तथा साहसी वीर ★

१५ अप्रैल १९१९ को सारे पंजाब में मार्शल ला० लागू कर दिया गया था। १३ अप्रैल १९१९ को जलियांवाला बाग अमृतसर में निहत्थे भारतीयों को जनरल डायर ने गोलियां चलवाकर भून डाला था उसी के विरोध में व्याप्त जनता के रोष को कम करने तथा जन साधारण को आतंकित करने के लिये अत्याचारी विदेशी सरकार ने मार्शल ला लगाया था। सनातन धर्म स्कूल लायलपुर में एक अंग्रेज फौजी अफसर नियुक्त किया गया। उसने एक निश्चित समय पर परेड करने तथा सलामी लेने की घोषणा कर दी। सुखदेव भी स्कूल का विद्यार्थी था परन्तु इस वीर ने अंग्रेज फौजी को सलाम करने से साफ इन्कार कर दिया। इस पर इनकी काफी मारपीट हुयी परन्तु यह वीरतीय भारत मां का लाडला अपने व्रत पर अडा रहा।

जन सेवा की ओर

सन् १९१८ में लायलपुर में महामारी फैल गयी। सुखदेव के चाचा अचिंतराम ने जन सेवा समिति का गठन करके रोगियों की सेवा प्रारम्भ कर दी। सुखदेव ने भी अपने चाचा जी के देखा देखी २० २५ बच्चों की एक बाल समिति बनाकर जन सेवा का कार्य करना शुरू कर दिया उनको इस बात की रत्ती भर चिन्ता न थी कि महामारी एक भयानक रोग है। सेवा की प्रबल भावना उन में अन्त तक बनी रही।

नैशनल कालेज लाहौर में

सनातन धर्म स्कूल लायलपुर से सन १९२२ में हाई स्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण करने के पश्चात सुखदेव के ताया ला० चिन्त राम इन्हें डी ए वी कालेज लाहौर में प्रविष्ट कराना चाहते थे परन्तु सुखदेव ने ला० लाजपत राय द्वारा संस्थापित नैशनल कालेज लाहौर में पढ़ना ठीक समझा। इस कालेज का एक मात्र उद्देश्य था—भावी पीढ़ी को राष्ट्रीय नेतृत्व के लिये तैयार करना। कालेज के प्राचार्य श्री जुगल किशोर थे और प्राध्यापक थे महान देश भक्त राजनीतिक विद्रोह के कारण काले पानी की सजा काट कर लौटे हुए देवता स्वरूप भाई परमानन्द जी तथा उनके साथ ही इतिहास के प्रामाणिक विद्वान गुरुकुल कांगड़ी के सुयोग्य स्नातक श्री प० जयचन्द्र जी विद्यालंकार। इस कालेज का पाठ्यक्रम ही ऐसा रखा गया था जिसके पढ़ने से छात्रों का मन और मस्तिष्क राष्ट्र की स्वतन्त्रता के प्रति समर्पित हो जाता था। लाला लाजपत राय जी का जीवन अपने आप में ही सभी की प्रेरणा का स्रोत था और प० जयचन्द्र विद्यालंकार सोने पर सुहागे का काम कर रहे थे।

सुखदेव को भगत सिंह जैसा वीर मस्ताना भी इसी कालेज में मिल गया था। दोनों एक ही विचार सरणी में स्नान किया करते और देश की परतन्त्रता की बेड़ियों को काटने के विविध उपायों पर विचार करते रहते।

ला० लाजपत राय ने लाहौर में द्वारकादास पुस्तकालय की नींव भी डाली थी। यह पुस्तकालय नवयुवक देशभक्तों की तीर्थ स्थली बना हुआ था। देशभक्ति की भावना उत्पन्न करने वाली विविध भाषाओं और देशों की पुस्तकें उन्हें पढ़ने को इसी पुस्तकालय में मिला करती।

× देश सेवा का व्रत +

जीवन भर क्रांति का जयनाद करने वाले और देश भक्त वीरों के संगठन को दृढ़ से दृढ़तर बनाने में सदा योगदान देने वाले बन्दी जीवन के प्रसिद्ध लेखक श्री शचीन्द्र नाथ सान्याल प्राय लाहौर आकर श्री प० जयचन्द्र विद्यालंकार के पास ठहरा करते थे। दोनों में घनिष्ट मैत्री थी। श्री सुखदेव तथा भगत सिंह जी ने भी श्री सान्याल के दर्शन प्रो० जयचन्द्र विद्यालंकार के माध्यम से ही किए। श्री सान्याल का व्यक्तित्व बड़ा आकर्षणशील और प्रभावी था। उनकी योग्यता सूझबूझ तथा देश के प्रति उनकी प्रबल भक्ति भावना सभी को अपनी ओर आकृष्ट कर लेती थी। फिर सुखदेव और भगत सिंह तो जन्मजात देशभक्त थे। दोनों का जन्म और सम्पर्क आर्य समाजी घरानों से था जिन की विचार धारा में देश भक्ति कूट २ कर भरी हुई थी। अत दोनों वीर हथेली पर सिर रखकर कार्य क्षेत्र में उतर पड़े।

अब सुखदेव के लिये ऐसी पुस्तकों का पढ़ना अनिवार्य हो गया जिनके अध्ययन से जहां एक ओर देश भक्ति की तीव्र ज्वाला जलती रहे और वहां दूसरी ओर अंग्रेजों के अमानुषिक अत्याचारों का भी पता चल सके। श्री शचीन्द्र नाथ सान्याल की पुस्तक बन्दी जीवन उस युग में ऐसी ही पुस्तक थी। सुखदेव जी ने इस प्रसाद का बड़ी बारीकी से से अध्ययन किया। इसके अतिरिक्त जलियां वाला हत्या काण्ड रौलट कमेटी की रिपोर्ट जनरल डायर की नृशंसता तथा १९१९ में लगाये गए मार्शल ला के सारे हालात का खूब अध्ययन किया।

श्री भगत सिंह के अतिरिक्त लाहौर में ही सुखदेवजी को श्री भगवती चरण जी जैसा एक घनिष्ट देश भक्त साथी मिल गया। तीनों ने मिल कर सन १९२६ में नौजवान भारत सभा का गठन किया था। इस सभा के अध्यक्ष झंग निवासी राम किशन मंत्री भगत सिंह और प्रचार मंत्री भगवती चरण इस सभा का उद्देश्य अपने विचारों को जन सामान्य तक पहुंचा कर उनमें उग्र राष्ट्रीय भावना जागृत करना था श्री केदारनाथ सहगल सैफुद्दीन किचलू कामरेड पिंडी दास लालचन्द फलक और अनेक महानुभावों से इस सभा को सहयोग मिलता रहा। १९२६ तक यह सभा चलती रही परन्तु इसके कार्य से स्वयं कार्यकर्त्ता ही पूरी तरह सन्तुष्ट न थे अत १९२८ के सितम्बर मास में दिल्ली के फिरोज शाह कोटला किले के खण्डहरों में बैठकर नवयुवकों ने एक केन्द्रीय समिति बनाई उसी पार्टी का नाम हिन्दोस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी रखा गया इसके पश्चात् सुखदेव को पंजाब प्रान्त का प्रमुख संगठन कर्त्ता मनोनीत किया गया।

पंजाब केसरी की मृत्यु का बदला +

लाहौर में १९२८ में जब साईमन कमीशन के आने पर उसके विरोध में प्रदर्शन से बौखला कर पुलिस सुपरिटेंडैंट स्काट ने पुलिस को निहत्थे प्रदर्शनकारियों पर लाठी चलाने का आदेश दिया था। डी० एस० पी० सांडर्स इस लाठी वर्षा की अगवानी कर रहा था। उसकी लाठी से ही लाला लाजपत राय को चोट आई थी और वे शहीद हो गये सुखदेव भगत सिंह भगवती चरण तथा श्री चन्द्र शेखर आजाद और दूसरे देश भक्तों ने अपने राष्ट्रीय नेता के अपमान का बदला लेने की प्रतिज्ञा की। यह निश्चय किया गया कि चन्द्र शेखर आजाद राजगुरु और भगत सिंह स्काट को मौत के घाट उतार दें। अब प्रश्न यह उत्पन्न हुआ कि श्री आजाद और राजगुरु को जो उत्तर प्रदेश तथा महाराष्ट्र के रहने वाले थे कहां ठहराया जाए। वीर सुखदेव ने यह दायित्व को अपने ऊपर लिया। अपने एक साथी जयगोपाल को लायलपुर भेजकर अपनी माता जी को लाहौर बुलवा लिया सुखदेव की बहिन विमला भी साथ आ गई। मकान किराया पर ले लिया गया सभी साथी वहीं रहने लगे। स्काट के स्थान पर सांडर्स का वध कर दिया गया। चन्द्रशेखर आजाद और भगत सिंह को लाहौर से बाहर भेजने की योजना भी सुखदेव ने ही बनाई थी। श्री आजाद को अपनी माता तथा बहिन के साथ एक चौबे का भेष बनाकर मथुरा भेज दिया तथा भगत सिंह को एक अंग्रेज का लिबास पहना कर भगवती चरण की धर्मपत्नी दुर्गा भाभी के साथ दिल्ली रवाना करा दिया।

सुखदेव अपने साथियों की हर छोटी से छोटी आवश्यकता का भी पूरा ध्यान रखते थे और कष्ट के समय सबके काम आते थे। देश की सो रही आत्मा को जगाने के लिये किसी बड़े काम को करना आवश्यक हो गया था। इधर आर्थिक संकट ने क्रान्तिकारी वीरों को घेर रखा था परन्तु इन वीरों ने हिम्मत न हारी और प्रत्येक स्थिति का सामना करते रहे लाहौर में षडयन्त्र केस सहारनपुर का बम फैक्ट्री असेम्बली काण्ड लाहौर की बम फैक्टरी सभी में सुखदेव जी प्रमुख रूप से भाग लेते रहे अपने ऐक्शन को सफल बनाने में सहयोग देते रहे अन्त में सुखदेव भगतसिंह और राजगुरु आदि को पकड़ लिया गया दस जुलाई १९२९ ई० को लाहौर षड्यन्त्र का मुकद्दमा चल चुका था। प्रथम मई १९३० को गवर्नर जनरल लार्ड इरविन ने लाहौर षड्यन्त्र केस

शेष पृष्ठ ६ पर)

(२ पृष्ठ का शेष)

श्री चतुर्वेदी जी आगे लिखते हैं—

यदि हमारी सरकार चाहती तो दिल्ली मे एक केन्द्रीय सग्रहालय कायम कर सकती थी पर खेद है कि उसने इस दिशा मे कोई प्रयत्न नही किया और जहा तक हम जानते हैं, प्रा तीय सरकारो ने भी इस पुण्य कार्य की उपेक्षा ही की है। होना तो यह चाहिए था कि स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद तुरन्त ही सरकार इस काय को अपने हाथ म ले लेती। भिन्न भिन्न राज्यो मे कुछ काम शुरू भी हुआ पर बडे भौडे ढग से। बगाल मे डा० बी० सी० राय जिन क्रान्तिकारियो को पच्चीस रुपए की पैंशन देते थे उनसे यह लिखा लेते थे कि वे कभी राजनीति में भाग न लेंगे। (अमर शहीद अशफाक उल्ला खां पृष्ठ ४ से ६)

इसी पुस्तक की भूमिका मे प्रसिद्ध क्रान्तिकारी बाबा पृथ्वीसिंह आजाद लिखते हैं—

आज देश की बागडोर जिन लोगो के हाथ मे है यदि उनके दिल मे शहीदो के लिए थोडा सा भी प्रेम बाकी है तो उन्हे चाहिए कि शहीदो के सस्मरण और जीवन चरित्र प्रतिभाशाली लेखको से लिखवा दें और फिर उन्हे स्कूलो और कालेजो के छात्रो तक पहुचा दें ताकि बच्चों और नौजवानो मे देश-प्रेम एकता और मेल मिलाप की धारणा उत्पन्न हो इसमे सन्देह नहीं कि ऐसी ही पुस्तकें देश की अखण्डता और एकता का कायम रख सकती है,

इन्कलाब जिन्दाबाद की गूज और शहीदों के गीतों और रागो ने एक अनोखा और नया रग भर दिया था जिसे देख कर नवयुवको का हृदय नाच उठता था और जिन्होने शहीदो के स्वर के साथ अपना स्वर मिला लिया था। अगर देश के नेताओ ने उनका साथ दिया होता तो हमारा देश सन् १९४७ ई० से बहुत पहले ही स्वतन्त्र हो गया होता। तब शताब्दियो की परतन्त्रता से हमार अस्वच्छ जीवन की सारी गन्दगी जल कर भस्म हो जाती और हम अपनी वास्तविक शक्ति से परिचित भी हो जाते, किन्तु खेद है कि ऐसा न हो सका।

सरकार के दायित्व पर विस्तार पूर्वक प्रकाश डालने के पश्चात बाबा पृथ्वी सिंह आजाद ने एक सत्योक्ति का स्पष्टत वणन किया है जिस से ज्ञात हो जाता है कि क्रान्तिकारी वीरों की उपेक्षा का मूल कारण उस की दृष्टि मे क्या है। वे लिखते हैं—

राजनीति के क्षेत्र मे जो दल सफल हो जाता है उसी का इतिहास लिखा जाता है और उसी के स्मारक बनाए जाते हैं। क्रान्तिकारियो का इतिहास तो उसी दशा मे लिखा जाता जब वे तलवार की शक्ति से देश के शत्रुओ और काली चमडी वाले उनके साथियो तथा सहायको का समाप्त करने में कामयाब हो जाते।'

महाकवि कालिदास ने कहा था—

प्रति बध्नाति हि श्रेय पूज्य पूजा व्यतिक्रम अर्थात् पूज्यो की पूजा मे बाधा पडने से सारा श्रेय ही नष्ट हो जाता है।

देश की स्वाधीनता की बलिवेदी पर अपने प्राणो को न्योछावर कर देने वाले शहीदो से बढ कर पूज्य भला और कौन हो सकता है? हमें यह न भूलना चाहिए कि बलिदान की आवश्यकता केवल स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए ही नहीं होती बल्कि उसकी सुरक्षा के लिए भी उतनी ही आवश्यकता होती है।

आज हमारे राष्ट्रीय और सामाजिक जीवन में अराजकता की सी स्थिति परिलक्षित होती है। विचार करने पर इस का भी एक मूल कारण यही जान पडता है कि स्वतन्त्रता से पूर्व देश वासियो मे जो त्याग और बलिदान की भावना अपने देश भक्त बलिदानी वीरो के कारण उत्पन्न हुई थी उसका अब प्राय लोप सा हो रहा है। राष्ट्र के कर्णधारो ने जब से यह एकांगी प्रचार प्रारम्भ किया है कि राष्ट्रीय स्वतन्त्रता केवल अहिंसा के बल पर अर्जित की गयी है तब से ही बलिदानियों और उन के बलिदानो की उपेक्षा का भाव उत्पन्न हो कर समूचे देश में मुर्दनी सी छा गई है।

तनिक सोचो तो यदि देश मे बलिदान और बलिदानियो का स्मरण और सम्मान ही न होगा तो देश में रहने वालो मे तप-त्याग-सदाचार और बलिदान की उदात्त भावनाए कैसे उत्पन्न होगी?

आज इन उदात्तभावनाओं के अभाव से ही राष्ट्रीय चारित्र्य का ह्रास हो रहा है और देशमें घातकसकुचित प्रवृत्तिया पनप रही हैं।

तप त्याग और बलिदान की भावना पुन जन मानस में जागृत हो। और सभी देशवासी समूचे देश की अखण्डता और एकता को बनाए रखने में एक दूसरे को सहयोग दे सकें इसी लक्ष्य का सामने रख कर भारत मां के कुछ ऐसे वीर बलिदानियों की चर्चा इस लघु लेख मे की गई है जिन्होंने भारत माता के सकटों दुखो और क्लेशों को दूर करने के लिए अपना सब कुछ उस के अर्पण कर दिया था।

—



ऋषिबोधोत्सव के शुभावसर पर जिला आर्य सभा लुधियाना ने एक विशाल शोभा यात्रा का आयोजन किया जो अति सफल एव सराहनीय रहा इसी अवसर पर लिए गए चित्र में दिखाई दे रहे हैं। सवश्री विमल भाटिया, रणबीर भाटियाजी प्रधान जिला आर्य सभा श्री डा० सत्यभूषण वाणिया मन्त्री जिला आर्य सभा सुधीर भाटिया प्रधान आर्य युवक सभा, राजेन्द्र दीवान सुपुत्र स्व० रामसरन दास जी भू० पू० प्रधान सभा।

जो लोग निस्वार्थ भाव से जाति या धम के लिये अपने प्राण की बलि चढा देते हैं वे धन्य हैं, क्योकि उन्होने अपने लिए कुछ न करके दूसरो के लिये अपने प्राण जोखिम मे डाले हैं। जो लोभी मनुष्य अपने लिए सब कुछ चाहते हैं उन्हें प्राय कुछ नही मिलता पर जो लोग अपने लिये कुछ भी इच्छा न करके दूसरों के लिए प्राण देते हैं उन्हे सारे ससार की ख्याति मिलती है और यह ख्याति समस्त सम्पदा से सर्वोपरि है। धन्य है वह मनुष्य जिसे जाति या धर्म की रक्षा के लिए प्राण देन का अवसर मिलता है। वही वीरात्मा ईश्वर का सब से प्यारा मनुष्य है।

—अज्ञात

(१ पृष्ठ का शेष)

आर्डीनन्स जारी किया। इस अध्यादेश के अनुसार तीन जजो का स्पेशल ट्रिब्यूनल बनाया गया। ८ अक्तूबर १९३० को फैसला सुना दिया गया इसमें सुखदेव, भगत सिंह और राजगुरु को फासी और किशोरीलाल रत्न, महावीर सिंह विजय कुमार सिन्हा शिव वर्मा गया प्रसाद जयदेव कपूर कमलनाथ तिवारी को आजन्म कारावास का दण्ड दिया गया।

२३ मार्च १९३१ वाले दिन तीनो को फासी दे दी गई। फासी के फन्दे को तीनों ने अपने हाथों से गले में डाला मिल कर गीत गाया और वन्दे मातरम का जय घोष करते हुए भारत मा के अर्पण अपना जीवन कर दिया। क्या आज का भारतवासी भी इन हुतात्माओं के बलिदान से उनकी देश भक्ति की लगन से और सबसे बढकर उनकी उदात्त भावनाके किसी प्रकार प्रेरणा लेने को तैयार है या केवल श्रद्धांजलियां ही भेंट करने में अपने कर्तव्य की इति श्री समझ कर चुप हो रहेगा।

भूल सुधार

८ मार्च के अक में वैदार्थ पारिजात लेख में पृष्ठ ४ पर प्रथम कालम पंक्ति १४ में व्याकरणाचार्य शब्द में ण के स्थान पर भूल से म छप गया कृपया पाठक सुधार कर लें। व्याकरणाचार्य ही शब्द है।

प. लेख राम बलिदान दिवस

ता० ८ ३-८१ रविवार को आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना में प लेखराम बलिदान दिवस उत्साह पूर्वकमनाया गया। पंडितजी के जीवन पर भजनों व प्रवचनों द्वारा प्रकाश डालते हुए भाव पूर्ण श्रद्धांजलियां अर्पित की गयी। प० लेख राम का संक्षिप्त सभा से प्रकाशित जीवन चरित्र बिना मूल्य के बांटा गया।

आया होली त्योहार

कविराज—श्री बनवारीलाल 'शादा' दिल्ली

★

आया होली का त्योहार।
दिल के बैर-विरोध मिटायें, मन पर रहे न भार,
कालुस मन की सब धो डालें, उमड़े बहु आनन्द।
जिसकी विमल धार में बिनसे हृदय के सब द्वन्द्व,
सुखी जगत् में मन भी खुश हो, हो सुख का विस्तार।
आया होली का त्योहार।
फूल-फलों से शोभित धरती, सबको हर्षित करती,
मन्द सुगन्ध बसन्त हवाएं खुशिया मन में भरती।
क्यों गमगीन बने बैठे हो, सुखमय है संसार।
आया होली का त्योहार।
नई उमगें नई आशा का, आज करो सचार,
सुख-दु:ख के हम सभी बनकर उन्नति करें अपार
गले मिलें सब सच्चे मन से, सारे बैर बिसार।
आया होली का त्योहार।
एक बने हैं चेहरे जैसे, ऐसे हो दिल एक,
दुश्मनिया सब दूर भगा दें, सीखें ज्ञान विवेक।
एक रहे हैं, एक घूमें, होगा एक विचार
आया होली का त्योहार।
रग प्रेम है मन पिचकारी, बरसाओ है छूट
इसी खुशी का पानी भर लो, है भण्डार अटूट।
सभी दिखाए अब चमकायें यह सूरज सहकार।
आया होली का त्योहार।
भूल न किस से होवे भाई आज भूल को भूल,
खिलो खिलाओ खुशी मनाओ कहते खिलकर फूल।
प्रेम मिलन को सफल बनाओ, अपना करके प्यार।
आया होली का त्योहार।
कड़वाहट के बिना सफल हों, मिलकर सभी सवाल
प्रेम भाव यह इसी तरह का, रखें सारे साल।
उत्साह कोई कभी न लावे, प्यारा हीन विचार।
आया होली का त्योहार।

महाक्रान्ति के महायज्ञ पर मृत्युञ्जय बनकर ललक रे।
अमर पुत वह अमर रहेंगे जब तक नभ में चांद सितारे।

शहीदों की स्मृति में महायज्ञ

समस्त धर्म प्रेमी बन्धुओं को जानकर अपार हर्ष होगा कि फिरोजपुर छावनी में अमर शहीद देशभक्त क्रान्तिकारी भगतसिंह, राजगुरु एवं सुखदेव जी की बलिदान अर्द्धशताब्दी के निमित्त विशाल यज्ञ का दि० १७ से २३ मार्च तक आयोजन किया गया है।

जिसकी अध्यक्षता आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान् महात्मा दयानन्द जी वैदिक तपोवन वाले करेंगे और जिसमें ओजस्वी वक्ता ब० आचार्य नन्दजी, विदुषी श्रीमती उषा शर्मा शास्त्री सि० आचार्या, प्राध्यापक राजेन्द्र जिज्ञासु एवं सुप्रसिद्ध डाक्टर प्रो० उत्तमचन्द शरर जी आदि उच्चकोटि के विद्वान् उपदेशक एवं भजनीक पधार रहे हैं। यह यज्ञ समारोह डी ए वी वामन कालेज फिरोजपुर छावनी के विशाल प्रांगण में ता० १७ से २३ मार्च तक होगा।

प्रतिदिन का कार्यक्रम

प्रात: ४ ३० से ५ बजे तक ईश्वर भजन, ५ से ५-४५ तक योगाभ्यास, ६ से ७-३० तक ध्यान, यज्ञ, वेद-पाठ, व्याख्यान १० से ११-३० तक स्वाध्याय, संस्कृत पठन पाठन। दोपहर व रात्रि—२ ३० से ३-३० बजे तक शंका समाधान ४ से ६-३० तक यज्ञ वेद पाठ व्याख्यान ८ से ८ ३० तक भजन ८ ३० से ९-४५ तक प्रवचन।

इसी प्रकार सात दिन निरन्तर कार्यक्रम चलता रहेगा और सातवें दिन २३ मार्च को प्रात: १० बजे यज्ञ की पूर्णाहुति होगी। अत: सभी यज्ञ प्रेमी भाई-बहिनों से नम्र प्रार्थना है कि अधिक से अधिक संख्या में पधार कर अपनी राष्ट्र-भक्ति व धर्मपरायणता का परिचय देवें।

नोट—बाहर से आने वाले सज्जन जो बस द्वारा आएं, वे फिरोजपुर छावनी के ही अड्डे पर उतरें।

—संयोजक—रामचन्द्र आर्य

भारत में तबलीग के लिए मुसलमानों को कुवैत सरकार द्वारा सहायता

हिन्दू जाति के लिए चुनौती

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री तथा भू पू संसद सदस्य श्री ओ३म प्रकाश त्यागी ने भारत सरकार देशभक्त एवं वैदिक धर्म प्रेमी जनता को चेतावनी देते हुए एक प्रेस वक्तव्य में कहा कि विदेशी राष्ट्र भारत के राजनीतिक ढाचे को अपने अनुकूल बनाने के लिए धर्म सेवा या शिक्षा की आड़ में अपार धनराशि भेज रहे हैं और देश की निर्धन व अपढ़ जनता का लोभ-लालच के बल पर धर्म परिवर्तन कर उन में राष्ट्र विरोधी भावना जाग्रत कर रहे हैं।

श्री त्यागी ने कहा—अब तक अमेरिका इस कार्य में अधिक सक्रिय था और उसे यहां काफी सफलता मिल चुकी है। परन्तु अब मध्य एशिया के मुस्लिम देशों व संगठनों ने भी अमरीकी षड्यन्त्र के महत्त्व को अनुभव करते हुए इस दिशा में सक्रिय होकर समूचे भारत को ही मुस्लिम राष्ट्र बनाने का प्रयत्न चालू कर दिया है श्री त्यागी ने प्रमाण स्वरूप कुवैत में प्रकाशित एक समाचार पत्र अरबटाइम्स ११ जनवरी १९८१ के अंक में प्रकाशित समाचार का हवाला देते हुए कहा कि लन्दन में स्थित मुस्लिम कल्चरल सेंटर की प्रेरणा पर कुवैत सरकार भारत में धर्म परिवर्तन अथवा तबलीग के कार्य के लिए आर्थिक सहायता दे रही है समाचार के अनुसार अब तक ५० हिन्दू परिवारों को मुसलमान बनाकर उन्हें बसाया जा चुका है। नव मुस्लिमों के लिए पच्चास हजार डालर अर्थात् पैंतालीस लाख रुपए की लागत की भूमि पर बसाने का काम चालू है।

उक्त समाचार के हवाले से श्री त्यागी ने कहा कि सैन्टर के डायरेक्टर श्री मोहम्मद अब्दुल खैर बदर्ई ने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि वर्तमान समय भारत में सुनहरी अवसर है कि दुःखी आठ करोड़ हरिजनों को मुसलमान बना कर भारत में मुसलमानों की संख्या २० करोड़ बनाई जा सकती है और इस कार्य की पूर्ति के लिए यूरोपियन इस्लामिक कल्चरल सैण्टर को मैदान में आना चाहिए। श्री खैर का कहना है कि ऐसा अवसर पुन: प्राप्त नहीं होगा। इस कार्य के लिए गुप्त रूप से ऐसे व्यक्ति नियुक्त करने चाहिए जो गुप्त रूप से उपर्युक्त कार्य की पूर्ति की दिशा में भारत का सर्वेक्षण करें और योजना बनाएं।

श्री त्यागी ने कहा कि विदेशी शक्तियां भारत की वर्तमान ढुलमुल व दब्बू धर्म निरपेक्ष नीति का अनुचित लाभ उठाकर भारत के राजनीतिक ढांचे को उलटना चाहते हैं और वैदिक धर्मियों को निगल लेना चाहते है। अब अमरीका और मुस्लिम षड्यन्त्रकारियों में होड़ चल रही है कि कौन यहां अधिक सफलता प्राप्त कर सकता है।

श्री त्यागी ने कहा कि अमेरिका इस दिशा में ५०० करोड़ रुपया प्रति वर्ष मिशनरियों को भेज रहा है जिसके परिणाम स्वरूप नागालैंड मिजोरम मेघालय आदि प्रान्तों में उसके अनुकूल सरकारें बन गई हैं छोटा नागपुर व संथाल परगना को मिलाकर झारखण्ड ईसाई प्रान्त बनाने की बात खड़ी हो चुकी है गोआ, केरल में वहां की सरकारों को बनाने-बिगाड़ने का सन्तुलन भी उसके हाथ आ चुकी है।

श्री त्यागी ने देश की सरकार देश-भक्त जनता और विशेष रूप से हिन्दू जाति को चेतावनी देते हुए कहा कि यदि समय रहते उन्होंने ईसाईयों और मुसलमानों के इन गम्भीर षड्यन्त्रों को विफल न किया तो उन्हें बाद में पछताना पड़ेगा उन्होंने सरकार से भी मांग की कि देश-हित में सरकार विदेशी धन पर अपना नियन्त्रण करें और उसका यहां दुरुपयोग अवांछनीय कार्यों के लिए न होने दें। यदि ऐसा न किया गया तो देश की ६० प्रतिशत जनता जो गरीबी की रेखा से नीचे रह रही है धर्म परिवर्तन पर विवश हो जाएगी और देखते देखते ही देश का राजनीतिक ढांचा भी लड़खड़ा कर उलट जाएगा।

—सच्चिदानन्द शास्त्री

गुरुकुल कांगड़ी स्थापना दिवस समारोह

अनेक वर्षों की टूटी हुई कड़ी को जोड़ते हुए शुभ प्रभात वेला मे प्रभात फेरी एव कुलमाता के जय घोषो के साथ गुरुकुल स्थापना दिवस का कार्यक्रम सोत्साह एव हर्षोल्लास के वातावरण मे प्रारम्भ हुआ।

यज्ञादि के पश्चात विद्यालय प्रागण मे गुरुकुल विश्वविद्यालय के मान्य कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा जी के करकमलो से कुलपताका आरोहण हुआ। पताका गीत के पश्चात् प्रार्थना भवन मे एक सभा का सयोजन हुआ था प्रो सत्यदेव जी वेदालकार दर्शन विभाग के सयोजकत्व मे हुआ। सभा का प्रारम्भ विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा कुल वन्दना के गायन से हुआ। अनेक छात्रों ने कविता पाठ एव भाषण द्वारा गुरुकुल के विषय मे कहा। ब्रह्मचारी हरिशंकर एव प्रदीप कक्षा ७ ने गुरुकुलोद्देश्य-यानि श्लोको का सस्वर पाठ किया। वेद विभाग के श्री राम प्रसाद वेदालकार ने गुरुकुल और डी ए वी, कालेज की शिक्षा का विवेचन किया। प्रो चन्द्र शेखर द्विवेदी मनोविज्ञान विभाग ने अपने भाषण मे मैकाले की शिक्षा पद्धति की न्यूनताओ की चर्चा की गुरुकुल शिक्षा की महत्ता प्रतिपादित की। प्रो वेदप्रकाश जी ने आर्य समाज और गुरुकुल के सम्बन्धों की निकटता पर जोर दिया। डा निगम जी ने कहा कि ऋषियो के मार्ग से ही हमारा जीवन सुखकर हो सकता है। उपह्वरे गिरीणा सङ्गमे च नदीनाम के मन्त्र को पढकर ही स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इस विशाल गुरुकुल रूपी वटवृक्ष की स्थापना की। सभापति के पद से प चन्द्रकेतु जी ने मान्य कुलपति जी का पुष्पाजलि भेंट द्वारा सत्कार किया तथा स्वामी श्रद्धानन्द जी को बालमनोविज्ञान का पारखी बताया। इसी अवसर पर मान्य कुलपति जी ने अपने को ब्रह्मचारियों का कुलपिता ही नही दादा बताते हुए उन को प्रेरित किया कि तुम गुरुकुल के चमकते हुए सितारे हो। तुम ही गुरुकुल के प्रकाश पुञ्ज को दूर दूर तक ले जाओगे। कुलपति जी ने गंगा पार पुण्यभूमि के गुरुकुल के जीर्णोद्धार की की चर्चा की और कहा कि ऋषियो बोधमय पुण्यभूमि मे ही मनाया जायेगा। तदनन्तर गुरुकुल से अंग्रेजी में डा. हरगोपालके सपादकत्व सम्पादित 'वैदिकपथ' का विमोचन मान्य कुलपति जी ने किया हर्षोल्लास एव जयघोषो तथा आह्वान ब्राह्मणो ब्रह्म वर्चसी के वैदिक सगीत के साथ समारोह समाप्त हुआ। इसकी समस्त व्यवस्था विद्यालय के मुख्याध्यापक डा दीनानाथ जी ने की।

डेराबस्सी के समाचार

१ आर्य समाज डेराबस्सी का चुनाव सर्व सम्मति से [illegible] की आर्य प्रतिष्ठाता [illegible] किया गया —प्रधान [illegible] जी, उप प्रधान श्री [illegible] मन्त्री श्री गगा [illegible] श्री श्यामलाल जी [illegible] किशोरी लाल जी प्रबन्धक आर्य विद्या मन्दिर श्री हुकम चन्द जी सहायक प्रबन्धक श्री सुरेश चन्द जी शर्मा एडवोकेट—अधिष्ठाता, श्री [illegible] आर्य पाठशाला [illegible] स्त्री समाज श्रीमती [illegible] श्रीमती सरोज [illegible] जय प्रकाश जी शास्त्री,

२ ऋषिबोधोत्सव श्री [illegible] चौधरी एस डी एम की अध्यक्षता मे मनाया गया जिसमे श्री जय प्रकाश जी शास्त्री श्री हसराज जी, श्री म हुकम चन्द जी तथा स्कूल की कन्याओं ने महर्षि दयानन्द के उपकार बताते हुए उन के बताए मार्ग पर चलने की प्रेरणा दी,

३ नए अतिथि भवन की आधार शिला, ऋषि बोधोत्सव के पवित्र पर्व पर श्री रोशन लाल जी सपुत्र श्री तारा मल जी ने अपनी धर्म पत्नी श्रीमती काकी देवी जी की स्मृति मे अतिथि भवन बनाने की आधारशिला अपने कर कमलों द्वारा रखी—

४ वार्षिक उत्सव—३-४ अप्रैल १९८१ दिन शुक्र शनि रविवार को होना निश्चित हुआ है।



श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वार्षिक शुल्क 15) वर्ष 14, अंक 13 16 चैत्र सम्वत् 2037, तदनुसार 29 मार्च 1981 का अंक दयानन्दाब्द 156

मोही जिला लुधियाना में 29 मार्च को अवश्य पहुंचें

तप, त्याग, विद्या, बल और सहिष्णुता के प्रतीक क्रान्तदर्शी वीर सन्यासी

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी महाराज की पुण्य स्मृति मे विशेष समारोह

स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी की कुछ सस्मरण घटनाए



१, स्वामी जी ने एक बार कहा प्रिय आर्यो पजाब मे दुआबा का इलाका है वहा चोर बहुत रहते थे। रात्रि मे मण्डियो को सामान ले जाने वालो की गाडियो से सामान और बैलों को चुरा लिया करते थे। उनकी चोरी का ढग भी अनोखा था।

जब किसी का बैल चुराना होता तो एक चोर जूवे मे जुत जाता और दूसरे चोर बैल को निकाल लेते कुछ दूर चलकर वह जूवे मे जुता हुआ चोर भी गाडी को छोडकर भाग जाता। ये चोरिया रात्रि मे प्राय गडवालो (गाडीवानो) के सो जाने पर हुआ करती थी।

एक रात को पिता पुत्र गाडी लिये जा रहे थे रास्ते की ठण्डी हवा और शयन का समय होने के कारण उन दोनो को ही नीद आ गई चोरो ने अपने अभ्यस्त ढग से बैल को चुरा लिया। परन्तु इस बार जो चोर जूवे मे जुता था उसके दाढी थी। चोरी के तुरन्त बाद बेटे की आख खुल गई और उसने कहा पिता जी एक बैल चुरा लिया गया है। चलती गाडी देखकर बूढे बाप को सहसा विश्वास नही हुआ और उसने बैलो की ओर देखा।

देखता क्या है! कि एक बैल की जगह एक दाढीवान जुता हुआ है। उसने कहा बेटे घबरा मत दाढी वाले के कधे पर जूवा है कही ठिकाने पर ही लगायगा। इतना सुनना था कि दाढी वाले चोर ने अपने साथी चोरो को पुकारा और बैल को वापिस कर दिया। यह कहकर स्वामी जी ने कहा आर्यो मुझे तुम पर पूर्ण आशा और विश्वास है कि तुम इस वैदिक धर्म के जूवे (दायित्व) को जो तुम्हारे कन्धो पर है वहन करते हुये अपने उद्देश्य को पूरा करोगे। यही मेरा उपदेश वा आदेश और आशीर्वाद है और सुनने वालो के आश्चर्य का ठिकाना न रहा कि उन्होने अपने कथन को पांच मिनट में ही समाप्त करके सभा विसर्जित कर दी आज भी रेवाडी के समीपस्थ आर्यों मे यह वार्ता प्रचलित है कि दाढी वाले के कन्धे पर जूवा है कही ठिकाने ही लगाएगा।

२ देश के बन्टवारे के बाद पूज्य स्वामी जी के आदेश से मौजूदा दयानन्द मठ रोहतक को स्थापित किया गया तो एक रोज रात्रि को गर्मी के मौसम मे बड के पेड के सामने ऊपर बैठे हुये थे भिन्न भिन्न चर्चाए चलनी हो पर बात लडकियो के फैशन की चल पडी लडकियो की दो दो चोटियो की कडी आलोचना की गई तो स्वामी जी महाराज हस कर कहने लगे बाल विना बच्चियो ने दो जगह बाध लिये तो क्या हुआ आपके यहा तो रामायणकाल मे त्रिजटाए भी होनी थी अभी तो एक जटा यूं ही सो है।

३ यूरोप के दूसरे युद्ध मे हिटलर का बडा आतंक था। उधर नेता जी सुभाष चन्द्र बोस ने जापान के साथ मिलकर भारत देश स्वतन्त्र करने के लिये भारत मे अंग्रेजी सेनाओ पर आक्रमण किया उनमे भी भारतीय सैनिक थे और नेता जी की सेना मे भी भारतीय सैनिक थे। भारत की दशा डगमगा हो रही थी स्वामी जी ने हरियाणा का दौरा किया और दिन मे ३२ गावो मे जा कर २७ भाषण दिए। स्वामी जी ने हरियाणा के सैनिको को उनके परिवारो से कहलवाया कि अंग्रेजी सेना के भारतीय सैनिक नेता जी के भारतीय सैनिको पर गोली न चलाए सी० आई० डी० की रिपोर्ट पर स्वामी जी को तत्काल कालडी के उत्सव से गिरफ्तार करके लाहौर के शाही किले मे बन्द कर दिया गया। स्वामी जी अपने आसन पर ही सोते थे। एक दिन उनसे जेलर ने कहा कि आप अपना बिस्तर मगवा लो। उत्तर मिला मुझे बिस्तर की आवश्यकता नही। जेलर के बहुत कहने पर स्वामी जी ने कहा कि महाशय कृष्ण जी से मगवा देवें जेलर ने डर कर कहा यह नही होगा। कल ही पता चल जाएगा कि स्वामी जी यहा जेल मे बन्द हैं। कोई दूसरा नाम बताइए। स्वामी ने कहा कि यदि आप आग्रह ही करते है तो चौ० छोटूराम जी से मगवा लीजिए। जेलर ने कानो को हाथ लगा कर कहा कि स्वामी जी वह पजाब के वजीर है। वहा से हम नही मगवा सकते।

४ अमृतसर खालसा कालेज के प्रिंसिपल ने स्वामी जी से इतिहास सिक्ख मत पर व्याख्यान कराए। पहले दिन के व्याख्यान के पश्चात एक प्रोफेसर ने कुछ शका करनी चाही। प्रिंसिपल ने कहा कि ७ दिन तक स्वामी जी के भाषण सुनें। उसके पश्चात शका का अवसर दिया जाएगा। ७ दिन के बाद किसी ने भी शका नही की सिक्ख इतिहास और मत के स्वामी जी सबसे प्रामाणिक विद्वान माने जाते थे।

५ कांग्रेस आन्दोलन मे जब पजाब के अनेक नेताओ को जेल मे डाल दिया गया तब स्वामी जी ने आन्दोलन सम्भाला और राजनीतिक प्रचार करते हुए जि० मुजफ्फर नगर तक पहुंचे थे। सरदार झण्डासिंह की अदालत मे उन पर मुकद्दमा चला।

७ गांव मे प्रचार के लिए गए उनके साथ दूसरे स्वामी विद्यानन्द सरस्वती थे व्याख्यान का समय हो गया। श्रोता कोई ना पहुंचा। सामने मन्त्री जी पसारी की चीजें बेच रहे थे। स्वामी जी ने खडे होकर व्याख्यान देना आरम्भ किया और स्वामी विद्यानन्द जी अकेले सुनने लगे। स्वामी विद्यानन्द जी बहुत बडे विद्वान थे। मन्त्री जी ने यह देखकर झटपट दुकान बन्द की और दौड आये। अगले दिन से समय से पहले ही सुनने वाले पहुंचने लगे।

—

सन्ध्या कथा—

मनसा परिक्रमा का दूसरा मन्त्र (2)

ले०—श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार, एम० एस० ए० टी० १७५
जाफरा बाजार गोरखपुर

साधक दक्षिणा पथ पर चल रहा है, उसका आदर्श इन्द्र है, ऐश्वर्य के प्राप्त होते ही मादकता आने लगती है। कुटिलता आने लगती है। लक्ष्य दूर हो जाता है, इस मादकता और कुटिलता को दूर करने के लिए ऐश्वर्य पथ के पथिक को अपनी चिकित्सा करनी पड़ती है। उसे औषध का सेवन करना पड़ता है। पथिक भी औषध की झोली लेकर इस यात्रा पर चला है। इस औषध की झोली में क्या है? उत्तर मिला 'तिरश्चि राजी रक्षिता टेढ़ी चाल पर शासन अथवा मर्यादा के अतिक्रमण न करने के भाव को अपनी गाठ मे बाधे लिए जाता हू, यह मर्यादा क्या है? यह तिरछी चाल कौन सी है जिससे बचना है?

ऐश्वर्य के पीछे धर्म होना चाहिए। पहले धर्म का अधिष्ठान होना चाहिए, धर्म की नींव पर ही अर्थ के मन्दिर की इमारत बनानी चाहिए, यदि अर्थ या ऐश्वर्य के साथ धर्म होगा तो वे सुखदायी बनेंगे। अर्थ को धर्म के नियन्त्रण मे रखना होगा धर्म का अर्थ ही है धार यात् धर्म इत्याहु) जो सारे समाज को धारण करता है वह धर्म है। धारण किसका? हमारा हमारी जाति का हमारे देश का, मानव जाति का चराचर जगत् का। इस प्रकार ऐश्वर्य का आधार सारी मानव जाति का कल्याण ही होना चाहिए। यदि ऐश्वर्य के आने पर मादकता घमड और कुटिलता आ गई तो ऐश्वर्य ठीक ऐश्वर्य न होगा?

यदि ऐश्वर्य आने पर हमने गरीबो को दास बनाकर अपने परिवार और मित्रो को ही उन्नत बनाना शुरू किया ऐश्वर्य आने पर ब्राह्मणतरो पर अत्याचार शुरू कर दिए ऐश्वर्य आने पर किसानो को मजदूर बनाकर रात दिन गुलामो की भान्ति उन्हें कष्ट देकर उनके द्वारा पैदा किए हुए मुफ्त के अनाज से अपने कोठे भरकर धनवान बनने वाला जमीदार पापी है। मजदूरो को दस-दस घण्टे तक बैलों की तरह काम करवा कर उन्हें पेट भर भोजन न देने वाला उनके मकान की ठीक व्यवस्था न करने वाला, उनके बाल बच्चो की चिन्ता न रखने वाला कारखानेदार ऐश्वर्य प्राप्त करने के बाद भी पापी है इन सबका ऐश्वर्य पाप पर आश्रित है—अधर्म पर आश्रित है इसी प्रकार किसान पर चाहे उसके यहा अनाज हुआ हो या न हुआ हो, मनमानी ब्याज की दर लगाने वाला, उनके अनाज को जब्त करवाकर उनके घर-बार को नष्ट करवा देने वाला, उनके गाय, बैल को बाधकर ले जाने वाला, बाल-बच्चो को दाने-दाने का मोहताज बना देने वाला, स्वय मौज उड़ाने वाला, इत्यादि हृदयहीन कृपण साहूकार कुटिल है, पापी है, अधर्मी है, ऐश्वर्यमान' मत्सर आदि की टेढ़ी वृत्तियो को उत्पन्न कर देता है। पर जो ऐश्वर्य मार्ग का पथिक झोली मे तिरश्चि राजी रक्षिता' टेढ़ी चाल पर शासन अथवा मर्यादा के अतिक्रमण न करने के भाव को गाठ मे बाध कर चलेगा वह इन सबका भला करेगा। सृष्टि को देखो, बादलो के लिए नदिया सूख गई, कुए तालाब सूख गये, परन्तु उन्हें फिर से भरने के लिए बादल रिक्त हो जाए गे, बादल से मिली हुई सम्पत्ति नदी नालों ने भाग बनाकर दे दी है, उन नदी नालो की वह तपस्या, वह प्राणमय सेवा बादल नहीं भूलता है। वह कृतज्ञता से झुक कर नीचे आता है और सर्वस्व अर्पण करके रिक्त हो जाता है। वे भरी हुई नदिया फिर स प्रेम से सूखकर बादल को भर देती है, ऐसा है यह मर्यादा के अतिक्रमण न करने और टेढ़ी चाल पर शासन करने का अन्योन्याश्रित धर्म। यही है शतहस्त समाहर सहस्र हस्तसंकिर सैकड़ो हाथो से लेना और हजारो हाथो मे देना हमारे हाथ सबके लिए हैं, हमारा हृदय सारे पद दलितो के लिए तड़प रहा है। जो इस प्रकार की बातें कहे जो इस प्रकार के आचरण करे और जिसका ऐसा महान् और प्रशंसनीय ध्येय है वह ही इन्द्र के मार्ग पर चलने वाला है, उसी की झोली में तिरश्चि राजी रक्षिता टेढ़ी चाल पर शासन और मर्यादा के अतिक्रमण न करने का भाव है। उसी मे सज्जनता है, ऋषित्व है, उसी के पास सच्चा धर्म है।

ऐश्वर्य पथ पर चलने वाले पथिक को जब ऐश्वर्य मिलने लगते हैं तो कुटिल मार्ग पर चलने का खतरा उसके सामने आ जाता है। वह इसे सीधे से मुकाबला अपने आत्मबल, आत्मविश्वास और अपने दृढ़ सकल्प से करता है। सचमुच याद रखिए यदि आपके ऐश्वर्य में स धन में से भोले-भाले लोगो के रक्त की दुर्गन्ध आती है, यदि आपके रुपयों में एक भी गन्दा रुपया है, यदि आपके धन में से शोषण की गन्ध आती है, यदि ईर्ष्या और लोभ ने आपके धन एकत्र करने मे किसी प्रकार की भी सहायता पहुचाई है, यदि दूसरो के अधिकारो और सुख सुविधाओं को कुचल कर आपने यह धन सग्रह किया है, यदि आपकी धन सपत्ति पर बेईमानी के दाग हैं, यदि आपके जीवन चरित्र हीनता एव भ्रष्टाचार की दूषित हवा से प्रभावित हैं तो आप अपनी सफलता पर गर्व-मत कीजिए। यह एक कुकर्म है, आप इस पर जितना भी घमड करें, यह अनुचित कार्य है।

याद रखिए आप इन्द्र के उपासक हैं इन्द्र प्रभु ने आपकी रचना बुरे कार्यों के लिए नहीं की। सत्कर्म कीजिए, उन्हीं कर्मों को कीजिए जिनकी सर्वत्र प्रशंसा हो, असत्य प्रसक हों फिर सम्पूर्ण प्रकृति सम्पूर्ण ज्ञान विज्ञान और सम्पूर्ण कानून आपकी सहायता करेगा। याद रखिए सचेत मस्तिष्क, प्रखर निर्णय शक्ति, उत्तम स्वास्थ्य, दृढ सकल्प, व्यवहार कुशलता, कठोर श्रम और उच्चाकांक्षा का जो स्वामी होता है, सफलता की दासी उसी के पीछे पीछे भागती है, उससे दूर नहीं।

जो इन्द्र स्वय अपने प्राणियों के लिए दोनों हाथो से ऐश्वर्य बखेर रहा है और जो अपने सिंहासन से उतरकर प्रजाजनो में रमण कर रहा है उस इन्द्र से वह अहकारी मनुष्य जो उसकी दीन प्रजा से मुख फेरता है क्या मिल पावेगा? रवीन्द्रनाथ टैगोर ने गीतांजलि मे अंग्रेजी मे लिखा है उसका भाव है "अहंकार की वहा पहुच नहीं, जहा दीनातिदीन, नीचातिनीच और नष्ट भ्रष्टो के बीच तू विचरता है। यदि इन्द्र के इस स्वरूप को हम समझ लेंगे तो समाज मे एक ओर गड्ढे और दूसरी ओर ऊंची टेकरियां दिखाई नहीं देंगी। एक ओर बड़े बड़े महल और दूसरी ओर छोटी छोटी झोपड़िया दिखाई नहीं देंगी। एक और आनन्दपूर्ण संगीत तो दूसरी ओर से रुदन की अबकर आर्तनादें सुनाई नहीं देंगी।

पथिक को विषम कठिनाइयों से संघर्ष करना उसका धर्म है। यह कंटकमय है। पग पग पर मार्ग में कोई अवरोध उपस्थित होंगे। परन्तु तुम्हें कहा है ऐसे संघर्ष करोगे? कौन तुम्हारा मार्ग दर्शक होगा, 'पितर इषव.' दूसरों को सफल जीवन करने वाले अनुभवी और वयोवृद्ध पुरुष प्रेरक हैं, जिन्होंने अपनी शक्तियों पर विजय प्राप्त की है। जिन्होंने अपने ऐश्वर्य को दीनों और दुखियों के लिए अर्पण किया है।

जो मानव सत्यवक्ता है, ईमानदार और अपनी सामर्थ्य के अनुसार अधिक से अधिक कार्य करने वाला है। जो मानव कांटो के बदले फूल बिछाने की इच्छा रखता है, जो दूसरों का उपकार करना चाहता है जो अपने जीवन से दूसरो को सुखी व प्रसन्न रखने की इच्छा करता है ऐसे जो हमारे पितर हैं वे ही हमारे दिग्दर्शक यन्त्र की तरह हैं। वे ही हमें सच्चाई और ईमानदारी की दिशा का बोध कराते हैं। यदि हमने इनके मार्ग का अनुसरण नहीं किया तो हमारे लिए सदा खतरा रहेगा और हमारा जीवन रूपी जहाज विषय सागर मे डूब जाएगा। जो अपने चरित्र से भटक जाता है, जो भ्रष्टाचार के फन्दे में फस जाता है, वह महा मूर्ख है। उसका जीवन रूपी जहाज नष्ट हो जाएगा। अत इन पितरो का अनुसरण करो। जब मैं मार्ग भूलता हू तो यही पितर लोग अपनी जीवन ज्योति से मुझे पथ-प्रदर्शन करते हैं। जब मैं सशयाकुल होता हू, जब अन्धकार मेरे पथ को आ घेरता है तब यही वयोवृद्ध विद्वान् अपने अनुभव के आलोक से मुझे मार्ग दिखलाते हैं। श्री नित्यानन्द वेदालंकार के शब्दो में—

मेरे जीवन के आदर्श हे इन्द्र स्वरूप भगवान्। लो मेरा अर्पित करा प्रणाम, अपनी ओर मुझे आकर्षित करते रहना, मेरे रक्षक तथा सहायक टेढ़ी चाल से बचने और मर्यादा के अतिक्रमण न करने के भाव! तुम्हें नमस्कार। मुझे दृढ़ करते रहना, सदा बचाते रहना, अपने अतुल ऐश्वर्य के प्रजा का पालन करने वाले हे अनुभवी बुजुर्गो! तुम्हें मेरा नमस्कार, मुझे प्रेरणा देते रहना, पथ-प्रदर्शन करते रहना।

आर्यसमाज बस्ती गुजां में ऋषि बोधोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज बस्ती गुजां जालन्धर में ऋषिबोधोत्सव बड़े समारोह से सम्पन्न हुआ। इस शुभ अवसर पर श्री प० जगदीश चन्द्र वसु महोपदेशक आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब के प्रभावशाली प्रवचन हुए तथा हितकर बातें के बड़े सुन्दर गीत हुए। जनता पर बहुत प्रभाव रहा। आर्य समाज की ओर से १०० रु वेद प्रचार के लिए सभा को दिए।

सम्पादकीय—

मोही का स्वामी स्वतन्त्रानन्द स्मृति स्मारक

स्व० पूज्य स्वामी श्री स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का आर्य समाज मे जो स्थान है वह किसी से छिपा नही है। वह दयानन्द उपदेशक महाविद्यालय लाहौर के संस्थापक व आचार्य थे। उपदेशक विद्यालय के जितने स्नातक इस समय कार्य क्षेत्र मे हैं उनके सबके प्रेरणा स्रोत आप ही थे। आपने लगभग ५० वर्ष आर्य समाज का सक्रिय कार्य किया। वर्षों सभा के वेद प्रचार विभाग के अधिष्ठाता रहे। पंजाब से निकल कर जब वह भारत भर के सामाजिक कार्य क्षेत्र मे आये तो उन्होंने सार्वदेशिक सभा के कार्यकर्त्ता प्रधान के रूप मे वर्षों सक्रिय कार्य किया। आर्य समाज के प्रसिद्ध हैदराबाद सत्याग्रह के वह फील्ड मार्शल थे। उसकी सफलता का पूर्ण श्रेय उन्हें दिया जाता है। उनका अपना स्वाध्याय बड़ा विस्तृत था। मूल रूप से वह एक प्रचारक थे और उनकी सभी गतिविधियां इसी भावना से प्रेरित लगती हैं। दीनानगर का दयानन्द मठ उन्होंने प्रचारकों के एक केन्द्र रूप मे खड़ा किया था जो उनके बाद भी उनके पथ पर ही अनुगामी है।

वैसे तो उनका कार्य क्षेत्र समूचा भारत था परन्तु सभी क्षेत्रों के लोग उन्हें अपना समझते थे। हरियाणा मे जो उन्होंने काम किया उससे हरियाणा वाले उनके अनन्य भगत हैं। इसके अतिरिक्त प्रायः सभी प्रान्तों मे उनके भगतों की इतनी बड़ी संख्या है कि गिनी नहीं जा सकती। उनके कार्य का भी इस संक्षिप्त से लेख मे वर्णन नहीं किया जा सकता। उनके श्रद्धालुओं ने उनके जीवन पर अनेक पुस्तकें लिखी हैं जिनसे उनकी महानता का पता चलता है।

सन १९७७ मे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से उनके जन्म स्थान मोही (जिला लुधियाना) मे उनकी जन्म शताब्दी मनाई गई थी और उनकी स्मृति मे एक धर्मार्थ औषधालय स्थापित किया गया था। हमारी इच्छा थी कि प्रति वर्ष उनके जन्म स्थान पर उनका स्मृति मेला लगा करे और उनके स्मारक को आर्य समाज मे उनके कार्य के अनुरूप विकास मिले परन्तु प्रयत्न करने पर भी ऐसा नहीं हो सका।

इस वर्ष २९ मार्च को इस संकल्प की पूर्ति हो रही है। मोही मे एक वृहद समारोह का आयोजन किया गया है। तीन दिन पूर्व वहां प्रातः यज्ञ और रात्रि को प० निरञ्जनदेव जी महोपदेशक स्वर्गीय पूज्य स्वामी जी के जीवन पर कथा करेंगे। २९ मार्च को प्रातः ९ बजे यज्ञ आरम्भ होगा और ११.३० बजे उसकी पूर्णाहुति होगी। इसके पश्चात श्रद्धांजलि सम्मेलन आरम्भ होगा जिसकी अध्यक्षता दयानन्द मठ दीनानगर के अध्यक्ष स्वामी सर्वानन्द जी महाराज करेंगे। पंजाब के स्वास्थ्य मन्त्री श्री सरदारी लाल जी कपूर सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी तथा आर्य समाज के अन्य अनेकों विद्वान व नेता उनके चरणों मे श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे। तत्पश्चात स्वास्थ्य मन्त्री श्री सरदारीलाल कपूर जी स्वामी जी महाराज की स्मृति मे बनाए जा रहे धर्मार्थ औषधालय की आधारशिला रखेंगे। इस समय इस औषधालय की स्थिति यह है कि एक मकान स्वर्गीय स्वामी जी के भाई सरदार बलवन्तसिंह जी ने अपनी ओर से औषधालय के लिये दे रखा है। सभा ने पांच छः हजार रुपए की लागत से इस मकान के साथ लगती कुछ भूमि खरीद कर इस औषधालय को दे दी है। एक वैद्य जी भी लगभग तीन वर्ष से निरन्तर इस औषधालय मे काम कर रहे हैं। सभा का लगभग ६००रुपया मासिक व्यय इस पर हो रहा है। लुधियाना की माता बहिन कमला जी आर्य समय समय पर इस औषधालय के लिए धन एकत्रित करती रहती हैं अन्य भी अनेकों बन्धु सहयोग दे रहे हैं। फिर भी इसको और सुन्दर तथा बृहद् रूप देने के लिए पंजाब तथा हरियाणा के सभी आर्य बन्धुओं के सहयोग की आवश्यकता है। मेरी स्वामी जी के प्रति श्रद्धा रखने वाले सभी आर्य बहिन भाईयों से प्रार्थना है कि वह २९ मार्च को दल बल के साथ इस स्मृति समारोह में मोही पहुंच कर स्वतन्त्र और स्वामी जी के जन्म स्थान पर उनके स्मारक की स्थापना मे अपना सक्रिय सहयोग दें।

—रामचन्द्र जावेद
सभा मन्त्री

स्व. स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी का संक्षिप्त परिचय

जन्म पूर्णमाशी पोष मास विक्रमी सम्वत १९३४ तदनुसार ९ जनवरी १८७७ ई०।

जन्मस्थान—मोही जिला लुधियाना।

परिवार—इनके पिता का नाम सरदार भगवान सिंह जी था जो एक सेवामुक्त सैनिक अधिकारी थे जो प्रतिष्ठित जट सिख परिवार मे सम्बन्ध रखते थे इनका अपना नाम केहरसिंह था इनके तीन और भाई थे नौरंगसिंह बलवन्तसिंह और हनुमन्तसिंह जी इनमे केवल श्री बलवन्तसिंह जी जीवित हैं। जो पूज्य स्वामी जी के स्मारक के निर्माण मे सभा को बड़ा सहयोग दे रहे हैं।

प्रारम्भिक शिक्षा—पहले अपने गांव मे प्राप्त की कुछ समय जालन्धर कैंट मे अपने पिता जी के सेवा काल में रहे और वहां एस० डी० विक्टर हाई स्कूल मे शिक्षा प्राप्त की। इसी प्रकार पेशावर के किसी स्कूल मे भी शिक्षा प्राप्त करते रहे और मिडल तक उस काल की स्कूली शिक्षा प्राप्त की

वैराग्य—बचपन मे विवाह हुआ किन्तु उस पत्नी का उनसे मिलने से पूर्व देहान्त हो गया। ननिहाल मे उदासी साधुओं का डेरा था जहां वह प्रायः आते जाते थे। उनका प्रभाव भी वैराग्य का कारण हो सकता है। पिता जी ने सेना मे भर्ती के लिये उनकी नियुक्ति कराई किन्तु वह न केवल घर अपितु अपना देश छोड़ कर विदेश चले गये। तीन वर्ष तक मलाया और ब्रह्मा मे रहे। वापिस आकर फिरोजपुर जिला के परवरनड नाम के ग्राम मे स्वामी परिपूर्णानन्द जी से संन्यास लिया और प्राणपुरी नाम पाया और साधुओं के साथ मिलकर देश भर का भ्रमण करते रहे।

पिता जी का आग्रह—उनके पिता जी सैनिक सेवा मे पदमुक्त होकर बड़ौदा राज्य मे उच्च अधिकारी लग गये थे। उन्होंने अपने गांव के अनेक व्यक्ति वहां नौकर करा दिये थे। एक दिन उनमे से किसी ने प्राणपुरी को नासिक मे पहचान लिया और सरदार भगवानसिंह को जा बताया। उनके आदेश पर उनकी साधु मण्डली को उनके सैनिकों ने घेर लिया और उन्हें पकड़ लिया पिता जी के बहुत कहने सुनने का उन पर कोई प्रभाव न हुआ अन्त मे उन्होंने यह कहकर उन्हें छोड़ दिया कि मैं तुम्हें कर्नल और जनरल बनाना चाहता था किन्तु दुःख की बात है कि तुम साधु बन गये। घर पर सब साधुओं को खाना खिलाया और एक मोटर मे उन सब को डेरे पर छोड़ गये।

आर्य समाज मे—मताला के पण्डित बिशनदास जी पर आर्य समाज का रंग चढ़ चुका था। इसलिये उन्होंने स्वामी जी को भी आर्य समाज का काम करने की प्रेरणा दी।

स्वतन्त्रानन्द नाम कैसे—साधु इनकी स्वतन्त्र प्रकृति के कारण इन्हें स्वतन्त्र स्वामी कहा करते थे जो धीरे धीरे स्वतन्त्रानन्द महाराज के रूप मे बदल गया।

पहला परिचय—आर्य समाज के सिद्धान्तों का पहला परिचय उन्होंने रामा मण्डी भटिण्डा मे पाया वहां आर्य समाज के सब ग्रन्थों का अध्ययन किया और खुतरावां मे एक पाठशाला चलाई वहां से आप लुधियाना आये और यहां उन्होंने वेद प्रचारिणी सभा बनाकर काम किया। यहां पूज्य महाशय कृष्ण जी से उनका परिचय हुआ और वह उन्हें आर्य समाज के उपदेशकों के केन्द्र लाहौर मे ले कर ले गये।

प्रतिनिधि सभा को सहयोग—पूज्य महाशय जी के आग्रह पर आपने सभा की सेवा प्रारम्भ की और समूचे प्रान्त का भ्रमण करके वैदिक धर्म का प्रचार किया।

विदेश मे—सभा की प्रार्थना पर आप १९१४ मे ब्रह्मा मे आर्य समाज के प्रचार के लिए गए इसके पश्चात आप मारिशस मे और सन १९२१ मे पहली बार अफ्रीका गये।

उपदेशक विद्यालय के आचार्य—सन १९२५ मे मथुरा मे ऋषि दयानन्द की जन्म शताब्दी मनाई गई। इस शताब्दी के स्मारक के रूप मे सभा ने लाहौर मे उपदेशक विद्यालय की स्थापना की। जिसके आप पहले आचार्य बनाये गये।

(शेष पृष्ठ ५ पर)

महर्षि दयानन्द वैदिक अनुसंधान पीठ चण्डीगढ़

(ले०—डा भवानीलाल जी भारतीय)

पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ के अन्तर्गत महर्षि दयानन्द वैदिक अनुसंधान पीठ की स्थापना १९७६ ई मे हुई थी। विगत वर्षों मे इस पीठ के तत्वावधान मे विभिन्न शोधार्थियो ने शोध कार्य सम्पन्न कर पी एच डी. की उपाधि प्राप्त की। पीठ के भूतपूर्व अध्यक्ष डा. रामनाथ वेदालंकार ने वेद भाष्यकारो की वेदार्थ प्रक्रियायें वैदिक शब्दार्थ विचार तथा दयानन्द विचार कोश भाग व (महर्षि दयानन्द के शिक्षा राजनीति एव कला कौशल सम्बन्धी विचार शीर्षक तीन ग्रन्थो का प्रणयन किया जिनमे से प्रथम ग्रन्थ विश्वेश्वरानन्द वैदिक शोध सस्थान होशियारपुर द्वारा पंजाब विश्वविद्यालय ओरियन्टल सिरीज के अन्तर्गत प्रकाशित किया गया है। अवशिष्ट दो पुस्तकें शीघ्र ही छपेंगी।

इन पंक्तियो के लेखक ने ८ दिसम्बर १९८० को दयानन्द चेयर के प्रोफेसर एव अध्यक्ष का कार्यभार सभाला। मैंने इस पीठ के तत्वावधान मे लेखन एव शोध कार्य की जो रूपरेखा बनाई है उसका परिचय यहा दिया जा रहा है। आगामी वर्षों मे निम्न ग्रन्थो की रचना पीठ के द्वारा की जाएगी—

१ वैदिक अध्ययन को आर्य समाज की देन—

उपर्युक्त विषय पर एक शोधार्थी को शोध करने के लिए कहा जाएगा। यह सर्वविदित तथ्य है कि महर्षि दयानन्द तथा आर्य समाज ने वेदाध्ययन को एक नवीन आयाम दिया है। जिस युग मे स्वामी दयानन्द ने वैदिक चर्चा का सूत्रपात किया उस समय वेदो के विषय मे सर्वत्र अज्ञान भ्रान्ति तथा मिथ्या धारणाओं का बोलबाला था। भारत मे जिस धर्म परम्परा में वेदो के प्रति निष्ठा सम्मान तथा सर्वोपरि प्रामाणिकता का विचार युगयुगान्तरो से एक पावन धरोहर के रूप मे चला आ रहा था उसी देश मे वेद के स्वरूप उसकी उच्चता तथा उसमें निहित उदात्त शिक्षाओ के सम्बन्ध मे सर्वथा अज्ञान का भाव प्रसारित था। उधर यूरोप के प्राच्य विद्या विशारदो ने वैदिक अध्ययन का नये उत्साह के साथ सूत्रपात तो अवश्य किया परन्तु अपने पूर्व निश्चित आग्रहो अथवा दुराग्रहो के कारण वे निष्कलुष रूप तथा उसकी सार्वभौम एव उदात्त शिक्षाओ को जन साधारण के समक्ष प्रस्तुत करने में असमर्थ रहे। ऐसी स्थिति में यह स्वाभाविक ही था कि वेदो को या तो प्रचलित साम्प्रदायिक मान्यताओ के अनुसार धार्मिक क्रियाकाण्डों मे विनियुक्त किये जाने वाले मन्त्रो का निरर्थक समूह मात्र मान लिया जाता अथवा पश्चिमी वेदाध्यायियो की धारणा के अनुसार उन्हे आदिम मनुष्य जाति की विचारधाराओ मान्यताओ तथा विश्वासो का बालिश प्रस्फुटन मान कर मानव इतिहास को विकासवादी व्याख्या के उपादान रूप मे प्रस्तुत किया जाता।

दोनो ही धारणायें एकागी तथा त्रुटि पूर्ण थी। ऐसी स्थिति मे महर्षि दयानन्द ने वेद को मनुष्य मात्र के लिए अपूर्व मार्गदर्शक तथा उसकी शिक्षाओ को सार्वकालिक सार्वजनीन तथा सार्वभौमिक घोषित करते हुए, उनके आधार पर मनुष्य जाति को अपना सार्वत्रिक हित साधन करने की प्रेरणा दी। उन्होंने न केवल वैदिक चर्चा का पुनरोद्धार ही किया अपितु स्वय वेदो पर भाष्य रचना कर मन्त्रो में निहित अर्थों का वास्तविक अभिप्राय भी स्पष्ट किया। कालान्तर मे महर्षि द्वारा निर्दिष्ट प्रणाली पर ही प आर्यमुनि प शिवशंकर शर्मा काव्यतीर्थ, प तुलसीराम स्वामी प क्षेमकरणदास त्रिवेदी, प जयदेव शर्मा विद्यालकार, प विश्वनाथ विद्यालकार प वैद्यनाथ शास्त्री, प, धर्मदेव विद्यामार्तण्ड, प वीरेन्द्र शास्त्री तथा स्वामी ब्रह्ममुनि आदि आर्य विद्वानों ने विभिन्न वेदो पर अपने भाष्य लिखे।

यथार्थ ज्ञान में कल्प व्याकरण छन्द ज्योतिष, निरुक्त तथा शिक्षा—वेदाङ्गो की जो उपयोगिता है वह निर्विवाद है। आर्य समाज के विद्वानो ने इन वेदाङ्गो पर भी प्रभूत मात्रा मे परिश्रम किया है। वेदाङ्गो से सम्बन्धित प्राचीन वाङ्मय की शोध, प्रकाशन के अतिरिक्त इन पर भाष्य एव व्याख्या लेखन का कार्य भी पर्याप्त हुआ है। सर्वोपरि बात तो यह है कि स्वामी दयानन्द ने वेदाध्ययन की ओर विशेषकर मानव-जाति को प्रेरित किया तथा शताब्दियो के पश्चात् वैदिक ज्ञान की महत्ता तथा उदात्तता की ओर प्रबुद्ध जन समाज का ध्यान आकृष्ट किया।

इस प्रकार आर्य समाज द्वारा किये गए एक शताब्दी से भी अधिक के वैदिक कार्य का लेखा जोखा प्रस्तुत करने तथा उसका आलोचनात्मक विवेचन करने की दृष्टि से इस भावी शोध कार्य का महत्व निर्विवाद है।

२ दयानन्द पीठ के उद्देश्यो एव लक्ष्यो मे महर्षि दयानन्द के जीवन एव व्यक्तित्व का अध्ययन भी एक अनिवार्य अग के रूप मे सम्मिलित किया गया है। यो तो स्वामी जी के विभिन्न जीवन चरित्र विभिन्न भाषायो मे लिखे गए हैं, परन्तु अनुसधान एव नवीन उपलब्ध तथ्यो के आधार पर एक सर्वांगीण जीवन चरित्र की रचना अभी शेष है दयानन्द पीठ के वर्तमान अध्यक्ष ने विगत दो दशाब्दियो से स्वामी जी के जीवन चरित्र विषयक विभिन्न उपादान सामग्री का अनुशीलन, परिशीलन, अन्वेषण तथा तथा विवेचन किया है। इसी के आधार पर एक विवेचनात्मक जीवन चरित्र लिखा जाएगा, जिस मे घटनाओ का स्थूल विवरण मात्र ही न रह कर चरित्रनायक के विचारो एव कार्यों उनकी मन स्थिति एव प्रवृत्ति के सतत प्रवाहमान रूप को स्पष्ट किया जाएगा। चरित्रनायक के आविर्भाव काल की परिस्थितियो का समग्र आकलन करते हुए तत्कालीन जन जीवन तथा राष्ट्र पर पडे हुए उसके प्रभावो की भी विशद समीक्षा की जाएगी। साथ ही विश्व-मानव के रूप में दयानन्द को प्रतिष्ठापित करते हुए उनकी शिक्षाओ का जनमगल विधायक रूप स्पष्ट किया जाएगा।

३ प्राय यह देखा गया है कि महर्षि दयानन्द तथा उनके जीवन एव कृतित्व के विभिन्न पहलुओ पर शोध कार्य करने वाले शोधार्थियो को एतद् विषयक साहित्य की जानकारी कराने का कोई सुगम साधन नही है। कोई ऐसा केन्द्रीय पुस्तकालय भी नहीं है जहा स्वामी दयानन्द द्वारा लिखित सभी ग्रन्थ उनके विभिन्न सस्करण उन के विभिन्न भाषाओ मे हुए अनुवाद स्वामी जी के विभिन्न जीवन चरित्र तथा उनके सम्बन्ध में लिखे गये विवेचनात्मक ग्रन्थ एक साथ उपलब्ध हों। इसी प्रकार आर्य समाज ने विगत एक शताब्दी मे जो उच्चकोटि का साहित्य प्रणीत किया है। उसकी सर्वांगीण सूची भी अभी तक नहीं बनी है दयानन्द पीठ के अन्तर्गत एक ऐसी ही ग्रन्थ सूची तैयार की जा रही है जिसके अन्तर्गत उन सभी प्रकाशित ग्रन्थों का विस्तृत उल्लेख रहेगा जो स्वामी दयानन्द तथा आर्य समाज से सम्बन्धित विभिन्न भाषाओं में लिखे गए है। यथा सम्भव उनके प्रकाशन काल, प्रकाशक सस्था आदि से सम्बन्धित जानकारी भी दी जाएगी। यह विशद ग्रन्थ सूची देश विदेश के उन सभी अनुसधित्सुओ के लिए उपयोगी होगी जो स्वामी दयानन्द तथा आर्य समाज के सम्बन्ध में शोधरत हैं।

४ भारतीय पुनर्जागरण के चार अध्याय—

उन्नीसवीं शताब्दी भारतीय इतिहास मे एक निर्णायक भूमिका अदा करती है। यूरोपीय शक्तियो के आधिपत्य के साथ साथ पश्चिमी ज्ञान विज्ञान के सस्पर्श ने भारतीय मानस को किस प्रकार आलोडित विलोडित किया और जिसके फलस्वरूप पुनर्जागरण की महती शक्तियो का उदय हुआ। उसकी कथा अपने आप मे इतिहास का रोचक अध्याय है। धार्मिक और सास्कृतिक नवोदय की यह रोमाञ्चकारी कथा यद्यपि विभिन्न विद्वानो द्वारा विभिन्न रूपो में कही गई हैं। किन्तु ब्राह्म समाज आर्य समाज थियोसोफिकल सोसाइटी तथा राम कृष्ण मिशन जैसे धर्मान्दोलनों ने भारतीय जन जीवन तथा विचारधाराओ को किस प्रकार आन्दोलित एव प्रभावित किया इसका समग्र विशद एव वैज्ञानिक विवेचन यद्यपि नहीं हो सका है। प्रस्तुत शोध ग्रन्थ के अन्तर्गत पुनर्जागरण के इन प्रमुख आन्दोलनों के आविर्भाव विकास, कार्य तथा उनकी उपलब्धियो की तुलनात्मक समीक्षा प्रस्तुत करते हुए समसामयिक राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय जीवन पर उनके प्रभाव की भी मीमांसा की जाएगी। इस प्रकार भारतीय नव जागरण के अध्ययन को एक नया आयाम उस शोध कार्य के पूरा होने पर मिल सकेगा।

५ पुनर्जागरण एव सुधार आन्दोलनों की दार्शनिक पीठिका—

इस शोध विषय के अन्तर्गत ब्राह्म समाज, आर्य समाज थियोसोफी तथा रामकृष्ण विवेकानन्द मिशन के दार्शनिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया जाएगा।

इनके अतिरिक्त समय समय पर सगोष्ठियों का आयोजन तथा त्रैमासिक बुलेटिन प्रकाशित करने की योजनाओं का भी क्रियान्वित किया जाएगा। सुझाव तथा सम्मतियां भेजने हेतु प्रार्थना है।

वेद प्रचारार्थ 1100) दान

श्री महेन्द्रपाल जी वर्मा मार्फत होजरी मिल्ज लुधियाना ने अपने पूज्य पिता स्व० मा० बसन्तराय जी वर्मा की स्मृति मे २२-३-८१ को सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी को ११००) रुपया वेद प्रचारार्थ भेंट किया। दान निकालते समय उन्होंने सभा के वेद प्रचार विभाग का ध्यान रखा इसके लिये सभा उनका धन्यवाद करती है।

500) वेद प्रचारार्थ प्राप्त

श्री मास्टर अमरचन्द जी सदस्य आर्य समाज पक्का बाग जालन्धर ने अपनी पवित्र कमाई मे से ५००) रुपया सभा के वेद प्रचार विभाग के लिये सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी को सादर भेंट किया, श्री मास्टर जी का हम सभा की ओर से धन्यवाद करते हैं। अगर अन्य बन्धु भी सभा के वेद प्रचार विभाग को इसी प्रकार आर्थिक सहयोग देते रहें तो इस विभाग मे होने वाला घाटा पूरा किया जा सकता है।

—

आर्य समाज नया बांस दिल्ली का उत्सव

आर्य समाज नया बांस दिल्ली का ६०वां वार्षिकोत्सव २८-२९ मार्च को मनाया जा रहा है जिसमें पूज्य अमर स्वामी जी श्री प० रामकिशोर जी वैद्य महोपदेशक तथा अन्य कई विद्वान् पधार रहे हैं।

—

हिसार मे चतुर्वेदपरायण यज्ञ की पूर्णाहुति 29 मार्च को

हिसार में ४ मार्च से चारों वेदो का परायण यज्ञ निरन्तर चल रहा है। जिसकी पूर्णाहुति आर्य समाज हिसार में २९ मार्च को होगी और उसके पश्चात सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी समारोह मनाया जाएगा जिसमे उच्चकोटि के विद्वान् अपने विचार रखेंगे।

आर्य समाज फिल्लौर के समाचार

८-३-८१ से १५-३-८१ तक वेद प्रचार बडी धूम-धाम के साथ किया गया। जिसमे प्रात साढे सात से ९ बजे तक यज्ञ तथा भजन वा उपदेश होता रहा। यज्ञ के ब्रह्मा थे वीतराग सन्यासी स्वामी सुरेन्द्रानन्द जी महाराज। रात्रि साढे आठ से साढे दस बजे तक आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान प० खुशीराम जी शर्मा की आध्यात्मिक कथा होती रही -कथा से पूर्व प० हजारीलाल जी प्रतिनिधि सभा तथा प० बलराज आर्य संगीत रत्न फिल्लौर वालो के भजन होते रहे।

१५-३-८१ को यज्ञ की पूर्णाहुति के पश्चात आर्य जगत के प्रसिद्ध विद्वान अधिष्ठाता वेद प्रचार आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब श्री प० ओमप्रकाश जी का प्रभावशाली व्याख्यान हुआ श्री प्रीतमलाल जी आर्य नगर वालो के भजन हुये।

—ज्ञानचन्द मन्त्री फिल्लौर

दयानन्द मठ जालन्धर की ओर से साहित्य वितरण योजना

आर्य जनता को यह जान कर प्रसन्नता होगी कि वैदिक प्रकाश विभाग दयानन्द मठ उन मोहल्ला जालन्धर के अन्तर्गत घर २ तक आर्य साहित्य पहुचाने की एक योजना बनाई गई है। पाच रुपए प्रतिमास के वैदिक प्रकाशन के स्थाई सदस्य बनाए जा रहे हैं। प्रत्येक सदस्य को प्रतिमास तीन रुपए के मूल्य की कोई उपयोगी पुस्तक डाक से पहुचाई जाएगी। ताकि प्रत्येक घर मे स्वाध्याय के लिए उपयोगी साहित्य पहुचाया जाए। दो रुपया प्रति सदस्य जो प्रकाशन विभाग के पास बचेगा उससे नया साहित्य प्रकाशन का कार्य या पुस्तकालय के उपयोगी साहित्य खरीदा जाएगा।

आर्य बन्धु इस योजना के सदस्य बन लाभ उठावें। मठ मे संस्कृत निशुल्क पढ़ने का प्रबन्ध है सम्पर्क करें।

—आशिर्वाद पाराशर शास्त्री

(३ पृष्ठ का शेष)

आपने दस वर्ष वहा आचार्य के रूप मे काम किया।

वेद प्रचार के अधिष्ठाता-उपदेशक विद्यालय के आचार्य पद के साथ २ आपको वेद प्रचार विभाग का भी अधिष्ठाता बना दिया गया। आपकी देख रेख मे प्रा त भर मे आर्य समाज का प्रचार होने लगा।

दयानन्द मठ दीनानगर की स्थापना आपने सन १९३७ मे दीनानगर मे दयानन्द मठ की स्थापना की जो धीरे धीरे आर्य समाज के सन्यासी महात्माओ की गतिविधियो का केन्द्र बन गया।

दयानन्द मठ रोहतक-स्वामी जी महाराज की प्रेरणा से सन १९४७ मे रोहतक मे भी दयानन्द मठ की स्थापना की गई।

स्वतन्त्रानन्द पुस्तकालय- स्वामी जी महाराज के श्रद्धालुओं ने उनके नाम पर अमृतसर मे एक पुस्तकालय चलाया जो अब तक बडी अच्छी सेवा कर रहा है।

हैदराबाद सत्याग्रह-सन १९३८ मे हैदराबाद म आर्य समाज ने सत्याग्रह किया पूज्य स्वामी जी उसके फील्ड मार्शल थे। सत्याग्रह का सचालन आपने किया और आपके योग्य नेतृत्व के कारण आर्य समाज को सफलता मिली।

लोहारू मे उन पर आक्रमण—सन १९४६ म लोहारू मे आर्य समाज की स्थापना हुई। आप उत्सव पर गये तो आपका जलूस निकाला गया किन्तु नवाब लोहारू के लिये वहा आर्य समाज की स्थापना असहनीय थी जलूस पर आक्रमण हुआ और स्वामी जी बुरी तरह घायल हुए।

सार्वदेशिक सभा को सहयोग स्वामी श्रद्धानन्द जी के पश्चात जिन लोगो ने सार्वदेशिक सभा की उन्नति मे सबसे अधिक सहयोग दिया उनमे महात्मा नारायण स्वामी जी के पश्चात पूज्य स्वामी जी का नाम आता है। आप वर्षों इस सभा के उपप्रधान तथा कार्यकर्ता प्रधान रहे।

परोपकारिणी सभा की सेवा—महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थो के प्रकाशन के लिए परोपकारिणी सभा की स्थापना की थी। आप इस सभा के भी आजीवन माननीय सदस्य रहे और इसकी सेवा करते रहे। आपको एक बार सत्यार्थ प्रकाश के शोध का काम सौपा गया।

शुद्धि सभा के प्रधान-सन १९५१ से जीवन के अन्त तक आप इस सभा के प्रधान रहे।

राष्ट्र सेवा—सन १९३० मे गान्धी जी के डाडी यात्रा दिवस पर आपने पजाब मे इस आन्दोलन का नेतृत्व किया और आपने जेल यात्रा की। सन १९४२ के भारत छोडो आन्दोलन मे आपने भ्रमण करते हुए देश को जागृत किया जिस पर आपको गिरफ्तार कर लिया गया। पहले लाहौर मे तत्पश्चात दीनानगर मे आपको नजर बन्द कर दिया गया।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन के प्रधान—आपकी राष्ट्र भाषा हिन्दी के प्रति जो श्रद्धा थी उसका प्रमाण इस बात से मिलता है कि वह हिन्दी साहित्य सम्मेलन के भी प्रधान बनाये गये।

गोरक्षा आन्दोलन—सन १९५३ मे सार्वदेशिक सभा ने देश भर मे गोहत्या विरोध के लिए आन्दोलन करने का निश्चय किया और इसका नेतृत्व स्वामी जी को सौपा गया।

देहान्त—इस बीच आप बीमार रहने लगे और पता लगा कि आपको कैंसर हो गया है बहुत इलाज किया गया। अन्त बम्बई मे आपरेशन के लिये भेजे गये वहा ३ अप्रैल १९५५ को उनका देहान्त हो गया

आपका साहित्य—आपने निम्नलिखित पुस्तकें लिखी थी—

१ आर्य सिद्धान्त और सिख गुरु। २ वेद की इयत्ता ३ आर्य समाज के महाधन ४ विदेश यात्रा ५ महर्षि का जीवन पजाबी मे देवनागरी लिपि मे ६ सत्यार्थ प्रकाश का पजाबी अनुवाद ७ चिन्गारिया ८ मान मन्दिरा निषेध ९ नैमित्तिक वेद पाठ।

—रामचन्द्र जावेद सभा मन्त्री

मेधावी छात्रा विजय शर्मा

आर्य समाज गोबिन्दगढ जालन्धर के मन्त्री श्री ब्रह्मदत्त जी शर्मा की सुपुत्री कुमारी विजय शर्मा ने पजाब यूनिवर्सिटी चण्डीगढ से एम ए हिन्दी पार्ट २ मे उच्च अक प्राप्त कर प्रथम स्थान प्राप्त किया इस हेतु उनको यूनिवर्सिटी पदक एव २२५ रुपया का नकद पुरस्कार भी दिया गया। कु विजय शर्मा ने अपने परिश्रम से एक आर्य परिवार का नाम ऊचा किया। प्रभु इन्हे इसी प्रकार से सफलता देता रहे।

देश दशा

(ले० कविराज श्री बनवारी लाल शादा नई दिल्ली)

क्या कहू किस से कहू कुछ समझ मे आता नही।
देश की बिगडी दशा पर, चुप रहा जाता नही।
हो गया सब नारी नर अब एक दम स्वतन्त्र है।
इस लिए ही देश का अब बिगडा सारा तन्त्र है।

छल प्रपन्च असत्य का अब देश पर अधिकार है।
सत्य धर्म औ सत्सग का होता नही सत्कार है।
कहता कुछ अब करता कुछ करनी कथनी भेद है।
बन रहा है बगला भगत अब बस हमे यह खेद है।

आचार था परमो धर्म अब मानता कोई नही।
करना धर्म के आचरण अब जानता कोई नही।
उपकार करना कम उत्तम चाहता कोई नही।
पाखण्ड मे फस दुख उठाता त्यागना कोई नही।

पुत्र पत्नी मात पितु मे झगडा अब दिन रात है।
अवगुणो के ताप से ही झुलसा सारा गात है।
पढ कडी आलोचना मत शत्रु हमको मानिये।
बिन पिये कड़वी दवा मत रोग जाता जानिये।

भक्त बन जाओ प्रभु के अब न भटको राह मे।
रात दिन घूमो न अब तुम फम व्यसन की चाह मे।
पढ प्रभु की वेद वाणी वेद पथ पर अब चलो।
करलो ऋषि सम तुम प्रतिज्ञा शादा प्रण से ना टलो।

—

सत्य ज्योति

रचियता—डा पुष्पावती एम ए पी एच डी आचार्या मातृ मन्दिर कन्या गुरुकुल, वाराणसी।

सत्य पथ के राही का काटो मे रोज बसेरा।
निर्मम कर दीप बुझा कर कर देते घोर अन्धेरा॥
अगार बरसते चहु दिशि मरघट मे लगता फेरा।
प्रवचना छलना का हरक्षण होना हेरा फेरा॥
कोमल कर से सहला कर जिनकी जीवन डोर सभाली
तृष्णाकुल जिनके कण्ठो मे भर दी जीवन सुधा प्याली
जिनकी क्षुधा ज्वाला अर्पित कर दी अपनी परसी थाली।
उन्ही कुखियो ने अमृत लेकर भर दी विष की प्याली।

जब अम्बर मे घिर आती बिजलियां विकराली।
जब नृत्य करती सनमुख मृत्यु काली कराली।
प्रलय ज्वालाए बिखरा देती गाढ़ी गाढी लाली।
मुस्कान बिखेरे सतपथ राही हसता दे दे ताली।
बाधाए सखा बन कर नव सरणी सुकर बनाती।
आपदाए प्रकाश बन कर पथ मे किरण नई बरसाती।
विपदाए चैरी बन कर आगन को मान सजाती।
अहा ईश पुजारी का भीषण उल्काए भी सहलाती।

—

सभा के वेद प्रचार विभाग मास मार्च 81 के कार्यक्रम

१—आ० स० हरियाणा (होशियारपुर) २६ २-८१ से ४ ३ ८१ तक श्री पंडित राम नाथ सि० वि०।

२—आ० स० अहमदगढ मंडी १ ३-८१ से ८-३ ८१—श्री प० निरञ्जन देव जी इतिहास केसरी श्री तुलसी देव जी नामनाचार्य।

३—आ० स० रायकोट १० ३ ८१ से १५-३ ८१—श्री प० रामनाथ श्री सि० वि० श्री तुलसी देव जी।

४—आ० स० चमकौर साहिब १७ से २२ मार्च ८१—श्री प० जगदीशचन्द्र वसु जी।

५—आ० स० फिल्लौर ८ से १५ मार्च ८१ तक—श्री हजारी लाल जी भजनोपदेशक।

६—आ० स० बस्ती गुजा जालन्धर १ ३-८१ से ४ ३-८१ तक—श्री जगदीश चन्द्र वसु जी दिनकर भजन मण्डली।

७—आ० स० लेखराम नगर कादिया १-३ ८१ से ६-३ ८१ तक—श्री प० सुभाष चन्द्र शास्त्री श्री हजारी लाल जी साईं दास जी।

८—आ० स० फगवाडा ऋषिबोधोत्सव—श्री जगदीश चन्द्र वसु जी श्री दिनकर भजन मण्डली।

९—आ० स० तलवाडा टाऊन ऋषिबोधोत्सव—श्री प० धर्मदेव जी आर्य।

१०—आ० स० पजौड उत्सव २० से २२ मार्च ८१ तक—श्री प० रामनाथ जी सि० वि० श्री तुलसीदेव जी श्री हजारी लाल जी श्री साईंदास जी।

ओम प्रकाश आर्य
सभा कार्यालयाध्यक्ष

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय की पुण्य भूमि में ऋषिबोधोत्सव पर्व की धूम-धाम

दिनाक ४ ३ ८१ को गगा पार पुण्य भूमि कागडी में जहा पर स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने विश्वविद्यालय की स्थापना की थी उसी पवित्र स्थली पर श्री बलभद्र कुमार हूजा जी की प्रेरणा स्वरूप श्री जितेन्द्र जी सहायक मुख्याधिष्ठाता क सयोजकत्व में सभी शिक्षक एव शिक्षकेतर कर्मचारियों तथा ब्रह्मचारियो ने पहुचकर ग्राम कांगडी के निवासियो के साथ यज्ञ किया और ऋषि बोधोत्सव पर प्रकाश डाला। भाषण शृंखला मे श्री जितेन्द्रजी सहायक मुख्याधिष्ठाता ने स्वामी दयानन्द जी की जीवनी एव अनेक शोधपूर्ण सस्मरण सुनाए। श्री बलभद्र कुमार जी हूजा ने भी स्वामी जी के कर्त्तव्यो एव उनके आदर्शों पर प्रकाश डालते हुये कहा—कि सभी आर्यों को उनका पालन करना चाहिए। आज देश के सामने यही चुनौती है कि गरीबी कैसे दूर हो जनसंख्या कैसे सीमित हो श्री हूजा जी ने सभी युवकों से प्रतिज्ञा करवाई कि स्वामी जी के बताए निर्देशो के अनुसार कोई युवक २५ वर्ष से पूर्व शादी नहीं करेगा। इस अवसर पर विद्या सभा द्वारा प्रकाशित जीवन ज्योति पुस्तक ग्रामीण लोगों मे बांटी गई। इसके बाद स्वामी जी के पूर्व गुरुकुल इमारत जिसे पुण्य भूमि के नाम से पुकारते हैं में खेल कूद हुए और सभी ने सहभोज किया। वनस्पति विभागाध्यक्ष श्री विजय शकर जी ने पुण्य भूमि मे ७०० वृक्ष आरोपण की योजना बनाई।

इस उत्सव मे विश्वविद्यालय के डा जयदेवजी ने यज्ञ कराया तथा अनेक उपाध्यायगण सर्वश्री चन्द्रशेखर जी त्रिवेदी, जे० एस० सैंगर महाशिव भगत, राम प्रसाद ज्ञानचन्द, प्रि सुरेशचन्द्र त्यागी आदि सम्मिलित हुए। श्री कुलपति जी के नेतृत्व मे एव श्री जितेन्द्र जी के सयोजकत्व मे स्वामी जी के द्वारा बनाए हुए कुण्ड में यज्ञ किया गया। यह कार्यक्रम साधना शिविर के रूप में परिवर्तित होकर दिनाक ६ ३ ८१ तक चला। रात्रि को कांगड़ी ग्रामवासी १ ३० बजे तक भजन प्रवचन एव अपने स्वामी जी के सस्मरण सुनाया करते थे। एक सज्जन १०१ वर्ष की आयु के श्री अर्जुनसिंह कांगड़ी निवासी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ जो दिन व्यतीत किए, वह सस्मरण सुनाए तथा श्री कुलपति जी ने एक व्यक्ति की ड्यूटी लगाई ताकि सभी सस्मरण लिपिबद्ध किए जा सकें। आर्य प्र नि, सभा दिल्ली के प्रधान श्री सरदारीलाल जी की विश्वविद्यालय की ओर से बधाई दी गई।

बलिदानी वीर

(रचयिता—श्री गोपालसिंह नेपाली)

★

कहने को सम्राट् बड़ा है और धनी धनवान् है,
सबसे बड़ा वही है जग में जो होता बलिदान है।

१

पाकर जन्म यहां जो रहता, दो दिन तिनके जोड़ कर,
प्राण नहीं तो कल चल देगा, दुनियां से मुख मोड़ कर,
भेंट चढ़ा दे जो तन-मन की, सच्चा उसका ज्ञान है,
सबसे बड़ा वही है जग में जो होता बलिदान है।

२

इस जग में हर चंचल मानव, अपना ही घर भरता है,
जीता है अपनों की खातिर, अपनों पर ही मरता है,
जो औरों के लिए उजड़ता, जग में उसका मान है,
सबसे बड़ा वही है जग में जो होता बलिदान है।

३

बड़ा है वरदान भक्ति का, सुन्दर त्याग तपस्या है,
अपनी धुन पर मर मिट जाना सबसे कठिन समस्या है,
यही समस्या जो हल कर लें, उसका ही जय गान है,
सबसे बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है।

४

मरने की धुन वह मस्ती है, जो ताजों को ठोकर दे,
घनी-अन्धेरी रातों को भी, जो झिलमिल पूनम कर दे,
मन-मन में है आग लगी, तो होठों पर मुस्कान है,
सबसे बड़ा वही है जग में जो होता बलिदान है।

५

जिनको धन प्यारा है जग में वे करते हैं प्रार्थना,
जो चाहें ऐश्वर्य, करें वे मन्दिर-मन्दिर अर्चना,
किन्तु शहीदों को मरना ही धर्म भजन है, ध्यान है।
सबसे बड़ा वही है जग में जो होता बलिदान है।

२

पुण्य सताया जाय जगत् में, पाप सताता जाएगा,
पर बलिदान सदा दुनियां को, राह बताता जाएगा-
यहां शहीद समय का ज्ञानी, पापी जग नादान है,
सबसे बड़ा वही है जग में जो होता बलिदान है,

—

बलिदानी

गाते रहें स्मरण हमको वे, मरण जयी निज जन मानी।
मातृ भूमि की परवशता की, पीर जिन्होंने थी जानी।
उनकी परम्परा अक्षय हो, जो दधीचि से बलिदानी।
वही जाति है, वही ज्योति है, वही पुनीत पवन पानी।

(राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त)

दीप न ढूंढो

यह हिन्द है, हर वक्त, यहां नूर उबलती।
महलों की तरह रोशनी, सड़कों पे मचलती।
कब्रों पे शहीदों की, मगर दीप न ढूंढो।
यह और बात है, यहां माचिस नहीं चलती।

(नेपाली)

पवित्र बलिदान

(रचयिता—श्री शिवदुलारे त्रिपाठी नूतन

स्वत्व के समर में समोद बलिदान होंगे,
रखेंगे न ऋण मातृ भूमि का चुकाएंगे।
सामना करेंगे शक्तिशाली नर-राक्षसों का,
अबल अनाथन पै हाथ न उठाएंगे।
पंच तत्व वाले का प्रभुत्व नहीं मानने को,
छोड़ेंगे न धर्म लाखों चने चबाएंगे।
माथ न नवाएंगे गवाएंगे न गौरव को,
नाथ न कहेंगे और न दास कहलाएंगे।
दमन कुनाली से डरेंगे न करेंगे क्रान्ति,
कैसी भय भ्रान्ति है भरोसा भगवान पर।
मान-अपमान, धन-धाम की न परवाह,
प्राण तक देंगे वीर पूजा के विधान पर.
स्वीय त्याग देखि स्वर्गीय राष्ट्र वीरन को,
प्रफुल्लित होंगी आत्माएं आसमान पर।
मित्र मित्र ही हैं यह दावा है कि शत्रु तक,
बलि बलि जाएंगे हमारे बलिदान पर।

—

कलम आज उनकी जय बोल

रचयिता—श्री रामधारीसिंह दिनकर

जला अस्थियां बारी-बारी,
छिटकायी जिस ने चिनगारी,
जो चढ़ गये पुण्य वेदी पर लिये बिना गरदन का मोल,
कलम, आज उनकी जय बोल!
जो अगणित लघु दीप हमारे,
तूफानों में एक किनारे,
जल-जल कर बुझ गये, किसी दिन मांगा नहीं स्नेह मुंह खोल।
कलम, आज उनकी जय बोल!
पीकर जिनकी लाल शिखाएं,
उगल रही लू-लपट दिशाएं,
जिनके पदाघात से सहमी धरती रही अभी तक डोल।
कलम, आज उनकी जय बोल!
अन्धा चका-चौंध का मारा,
क्या समझे इतिहास बिचारा,
साक्षी हैं उनकी महिमा के सूर्य, चन्द्र, भूगोल, खगोल।
कलम, आज उनकी जय बोल।

(ज्ञान भारती के बलिदान अंक से साभार)

—

चाह नहीं सुरबाला के गहनों में गूंथा जाऊं,
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूं भाग्य पर इठलाऊं.
चाह नहीं प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊं,
चाह नहीं सम्राटों के शव पर, हे हरि डाला जाऊं,
मुझे तोड़ लेना बन माली उस पथ पर तुम देना फेंक,
मातृ भूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जाएं वीर अनेक,

(माखनलाल चतुर्वेदी)

—

आर्य समाज बंगा रोड फगवाड़ा के समाचार

१ सीताष्ठमी पर्व १ मार्च रविवार को बड़े उत्साह पूर्वक प्रो० विमला ग्रोवर प एम० ए० की अध्यक्षता मे मनाया गया। जिसमे सम्पूर्ण कार्यक्रम देवियो द्वारा सम्पन्न हुआ। प० आत्मदेव जी स्नातक (अमृतसर) का विशेष व्याख्यान हुआ।

२ ऋषि बोधोत्सव ४ मार्च बुधवार को बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया। प्रातः प्रभात फेरी द्वारा नगर मे सकीर्तन किया गया। रात्रि ७ ३० से १० ३० बजे तक विशेष कार्यक्रम हुआ जिसमे आचार्य भद्रसेन वेद दर्शनाचार्य तथा प० बलराज जी संगीतज्ञ विशेष रूप से पधारे।

५ से ७ मार्च तक श्री श्यामसिंहजी हिलकर भजन मण्डली द्वारा प्रचार होता रहा।

३ प० लेखराम दिवस ८ मार्च रविवार को प० लेखराम जी का बलिदान दिवस मनाया गया जिसमे श्री वैद्य ओमप्रकाश जी इन्द्र ने अमर शहीद के जीवन पर प्रकाश डाला।

—देवबन्धु चोपड़ा मन्त्री

बरनाला मे शिवरात्रि पर्व

श्री लाल बहादुर शास्त्री आर्य महिला कालेज बरनाला व आर्य समाज बरनाला ने संयुक्त रूप मे कालेज मे शिवरात्रि पर्व मनाया जिसमे यज्ञ के पश्चात वेद मन्त्र गायन प्रतियोगिता तथा सत्यार्थ प्रकाश पर भाषण प्रतियोगिता की गई। निम्नलिखित प्रतियोगियो ने पुरस्कार प्राप्त किये।

—वेद मन्त्र गायन प्रतियोगिता—

१ कुमारी सुधा प्रैप—प्रथम।
२ कु० मनजीत, बी० ए०—द्वितीय।
३ कु० रमा, बी० ए०—द्वितीय।

★भाषण प्रतियोगिता★

१ रेणुका शोरी प्रैप—प्रथम।
२ प्रो० मनीशा „—प्रथम।
३ श्रीमती अमरजीत कौर—द्वितीय।
४ श्री प्रो० रमेश मायर पुस्तकाध्यक्ष—द्वितीय।

—विमला कालड़ा
प्रिंसिपल

सुजानपुर मे शिवरात्रि पर्व

आर्य समाज सुजानपुर मे शिवरात्रि पर्व बड़ी शान से मनाया गया। प्रातः प्रभात फेरी निकाली गई। १० से २ बजे तक उत्सव मनाया गया। प्रधान ज्ञान देई सोनी जी ने बच्चो को उनके प्रोग्राम से खुश होकर १०) पारितोषिक दिया।

पारिवारिक सत्संग

आर्य युवक सभा लुधियाना की ओर से पारिवारिक सत्संगो के द्वारा वेद प्रचार की भव्य योजना बनाई गई है। पहला पारिवारिक सत्संग ता० ८ ३ ८१ दिन रविवार को साय ४ से ६ बजे तक श्री ज्ञानचन्द जी साबुन वाले के घर मे सम्पन्न हुआ। —बलदेवराज आर्य मन्त्री

जौनपुर तथा आजमगढ़ के आर्य समाजी कार्यकर्ता रिहा कर दिए गए

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपमन्त्री श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ने बताया कि विगत ईसुम विशर के जलूस के सिलसिले में जौनपुर एव आजमगढ़ के ९६ आर्य समाजी कार्यकर्ता गिरफ्तार कर लिए गए थे।

इन गिरफ्तारियो के विरोध में जौनपुर तथा आजमगढ़ मे हड़ताल की गई, इस पर ५० व्यक्तियों को रिहा कर दिया गया शेष ४४ कार्यकर्ता जिनमें श्री बाबूराम प्रधान भी थे, इन्हें मीसा मे बन्द कर दिया गया था, इस पर सार्वदेशिक सभा की ओर से उच्च स्तरीय प्रयत्न किए गए।

प्रसन्नता की बात है कि उत्तर प्रदेश सरकार ने श्री बाबूराम जी सहित इन ४४ कार्यकर्ताओ को रिहा कर दिया है। आर्य जनता मे इस समाचार से प्रसन्नता होना स्वाभाविक है।

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वार्षिक मूल्य 15) वर्ष 14, अंक 14, 23 चैत्र सम्वत् 2037, तदनुसार 5 अप्रैल 1981 का अंक दयानन्दाब्द 156

आर्य समाज को स्थापित हुए चैत्र सुदी प्रतिपदा को 106 वर्ष हो जाएंगे

5 अप्रैल रविवार को आर्य समाज स्थापना दिवस तथा नववर्ष सभी आर्य बन्धु धूमधाम से मनाएं

आर्यसमाज के दस नियम

(१) सकल सत्य विद्या, विद्या से जो कुछ जाना जाता है,
आदि मूल सब ही का 'शंकर' एक समझ में आता है।

(२) सर्व-शक्ति सम्पन्न विधाता ब्रह्मा विश्व का करता है।
शुद्ध-सच्चिदानन्द निरामय नित्य निशक न मरता है।
सकल, अनन्त, अनादि, अजन्मा, भौतिक देह न धरता है।
न्यायशील सर्वज्ञ दयानिधि जड़ जीवो का भरता है।
धरो उसी का ध्यान दूसरा कौन मुक्ति का दाता है।
आदि मूल सब ही का 'शंकर' एक समझ मे आता है।१।

(३) जो विद्यानिधि वेदों को तुम प्यारे पढ़ो पढ़ाओगे।
सुनो सुनाओगे तो अपने तीनों ताप नसाओगे।

(४) धारो सत्य असत्य, बिसारो तब चारों फल पाओगे।
झूठ सांच को जांच धर्म के धाम काम कर जाओगे।

(५) तो न रहेगा उनमें जिनका पंच-भूत से नाता है।
आदि मूल सब ही का 'शंकर' एक समझ में आता है।२।

(६) तुम सामाजिक अरु आत्मिक उन्नति अनुदित किया करो।
मान मुख्य उद्देश्य षडंगी का सबको सुख दिया करो।

(७) यथायोग्य बरतो सबसे प्रीतिवारि प्रेमयश किया करो।

(८) आठों याम अविद्या को तज विद्या का रस पिया करो।

(९) सबकी उन्नति में निज उन्नति को नवनिधि नर पाता है।
आदि मूल सब ही का 'शंकर' एक समझ में आता है।३।

(१०) सबके हितकारी नियमों के पालन में परतन्त्र रहो।
नीति रीति सीखो समाज की गुरु लोगों की गैल गहो।
हितकारी नियमों के पालन का आनन्द स्वतन्त्र लहो।
वैदिक मत के सारभूत यों दश नियमों का भव कहो।
श्रीमद्दयानन्द स्वामी के उपदेशों का खाता है।
आदि मूल सब ही का 'शंकर' एक समझ में आता है।४।

(कवि शिरोमणि पं० नाथूराम शर्मा 'शंकर')
('शंकर सरोज' से)

आनन्द सुधासार दया कर पिला गया,
भारत को दयानन्द दुबारा जिला गया।
डाला सुधार वारि बढ़ी बेल मेल की,
देखो समाज फूल फबीले खिला गया।



आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती

नव वर्ष की शुभ कामनाएं

पृथिवी सूर्य का एक चक्र पूर्ण करके, जिस दिन से नया चक्र आरम्भ करती है उसे नव वर्षारम्भ कहते हैं। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार यह चक्र इस बार ४ अप्रैल को पूरा हो रहा है, इसलिए ५ अप्रैल चैत्र सुदी प्रतिपदा रविवार को पृथिवी सूर्य का नया चक्कर आरम्भ कर रही है अर्थात् विक्रमी सम्वत् २०३८ नववर्ष ५ अप्रैल को आरम्भ होगा।

इसलिए नव वर्ष के लिए हम आर्य मर्यादा के सभी ग्राहकों के लिए मंगल-कामना करते हैं। कि सभी इस वर्ष में शारीरिक' आत्मिक तथा सामाजिक उन्नति करते हुये अपने जीवन मे आगे बढ़ें। नव वर्ष की सभी को बधाई हो।

सैद्धान्तिक चर्चा

लोकालोक की अदालत

'वेदार्थ-पारिजात' बनाम दयानन्द वेदभाष्य-'पर्यालोचन'

लेखक—वैदिक गवेषक डा शिवपूजनसिंह कुशवाह एम ए साहित्यालंकार कानपुर

ॐ

(१५ मार्च से आगे)

इस भाष्य में भी प्र माचार्य को क्या समझ म नहीं आता है ? सम्भवत त्रिभनी कृत दयानन्द भाव चित्रावली मे बैल मे भाग (मथन) करने का दोष रोपण किया है

कुतर्काचार्य श्री कालराम शास्त्री ने भी दयानन्द की विद्वता अर्थात दयानन्द कृत यजुर्वेद भाष्य का फोट नामक पस्तिका के पृष्ठ ७ व ८ पर भी भोग शब्द पर आक्षेप किया है। १

इन्हीं के आक्षेपो को देखकर आपका मस्तिष्क भी विकृत हो गया है अन्यथा ०ग्रंथ का आक्षेप क्यो करते ?

दयानन्द की विद्वता का समुचित उत्तर प० जितेन्द्र शर्मा महोपदेशक ने कालराम की कालिमा नामक पस्तिका मे दिया है।

दयानन्द भाव चित्रावली का मुंह तोड युक्ति सप्रमाण उत्तर प० अमित शर्मा आर्योपदेशक ने त्रिभली त्रिधन्नो च्छेदन पुस्तक ३ ३ दिय है। यह आज भी प्राप्य है।

आज तक इन दोनो के प्रत्युत्तर देने मे पौराणिक टोले मे विद्वान समझे जाने वाले महाशयो की नानी मर गई।

❋ भोग शब्द का उत्तर—

भोग के आगे महर्षि दयानन्द जी कृत भाष्य मे हाइफन ( ) देकर उपयोग ल स्पष्ट लिखा हुआ है। अत यहां आक्षेप व्यर्थ हो जाता है

पशुओ से मथन करना तो पौराणिको के ग्रन्थो मे भरा पडा है। महिषी की अश्व से गर्भ धारण—(यजु० २३ १९ पर महीधर भाष्य)

रानी की योनि मे लिंग स्थापन (यजु० २ २० श्री महीधर भाष्य)। श्री प०वामन शिवराम आप्टे— भोग (भुज+घञ्) १ खाना खा पी जाना २ सुखोपयोग आस्वाद स्वामित्व ४ उपयोगित उपदेयता।४

आंग्ल भाषा के कोष म आप्टे जी ने Eating Consuming enjoyment fruition possession utility advantage दिया है। प० तारिणीश झा व्याकरण वेदान्ताचार्य व चतुर्वेदीय प० द्वारका प्रसाद शर्मा

भोग—(पु) (△भुज+घञ्) भक्षण आहार करना स्त्री सभोग। कब्जा अधिकार। उपभोग।५

भोग सुखे स्त्र्यादि (चाहे) शरीरफणयोभत । पालनेऽभ्यवहारे च योषिदादिभृतावपि। इति मेदिनीकोष

भोग सुखे स्त्र्यादिभृत वहेश्च फण काययो।

(अमर कोष तृतीयकाण्ड नानार्थ वर्ग ३ श्लोक ३)

सुख सर्प का फण और उसका शरीर स्त्री आदि का पारिश्रमिक।

अत महर्षि दयानन्द जी ने उपयोग ल लिख दिया है जो उपयुक्त कोषो के अनुसार नितान्त उचित है।

यदि भाग का अर्थ आपके मस्तिष्क के अनुसार खुराफात अर्थ मे है तो मन्दिरो मे शिव विष्णु कृष्ण राधा देवी को भोग लगाने का अर्थ क्या करेंगे।

अब अपने लक्कड दादा भाष्यकारो का भाष्य भी यजु० २१ ६ पर देख ल।

श्री उव्वटाचार्य—अक्षन्तान् भक्षि तवन्त अग्नि प्रभतय तान छागादीन ६

अग्निप्रभृति देवता उन छाग मेढा और बैल को खाते हुए।

श्री महीधराचार्य—अग्न्यादयोमेदस्त मेदोवपामारभ्य तान् छागा नि अक्षन अभक्षयन।७

अग्नि सरस्वती इन्द्र देवता उन बकरा मेढा और बैल की चर्बी से लेकर सारी चिकनाई को खावें इन्द्रादि देवताओ को सुरा व सोम पिलावें।

आपको इन वाममार्गियो का अर्थ अच्छा लगेगा क्योंकि पक्षपात व ईर्ष्या द्वेष क उपनेत्र पहने हुवे हैं।

अक्षन का अर्थ महर्षि दयानन्द जी ने भञ्जीरन —भोग करें—और महीधर जी कहते हैं उपयोग लें भक्षण कर।

कहा उपयोग मे लाना और कहा भक्षण कर लेना ? क्या पशुओं का यही उपयोग करना है ?

यजु० २० ९ पर विचार—

नाभिमचित्त विज्ञान पायुर्मेऽपचि निभसत।

महर्षि दयानन्द जी कृत भाष्य—हे मनुष्या! (मे) मेरी (चित्तम्) स्मरण करने हारी बुद्धि (नाभि) मध्य प्रदेश (विज्ञानम्) विशेष वा अनेक ज्ञान (पायु) मूलेन्द्रिय (मे) मेरी (अपचिति) प्रजाजनक (भसत्) । श्रोणि (आण्डौ) आण्ड के आकार वृषणावयव (आनन्दनन्दौ) उपस्थ के सुख से आनन्दकारक (मे) मेरा (भग) ऐश्वर्य (पस) लिंग और (सौभाग्य) पुत्र पौत्रादि युक्त होवे इसी प्रकार मे (जङ्घाभ्याम्) जंघा और (पद्भ्याम्) पगो के साथ (विशि) प्रजा मे (प्रतिष्ठित) प्रतिष्ठा को प्राप्त (धर्म) पक्षपात रहित धर्म के समान (राजा) राजा (अस्मि) हूं जिससे तुम लोग मेरे अनुकूल रहो।

भावार्थ—जो सब अंगो से शुभ कर्म करता है जो धर्मात्मा होकर प्रजा में सत्कार के योग्य उत्तम प्रतिष्ठित राजा होवे।८

श्री कालूराम शास्त्री ने दयानन्द की विद्वता पृष्ठ ६ मे इस पर लिखा है यजुर्वेद अध्याय २० मन्त्र ९ मे फिर अश्लील लिखा क्या आपके वेदो मे अश्लील के सिवाय और भी कुछ है या नहीं।

इसका उत्तर प० जितेन्द्र शर्मा ने कालूराम की कालिमा पृष्ठ २६ २७ में दिया है। आज तक किसी पौराणिक की लेखनी नहीं उठी। प० कालूराम व प० माधवाचार्य दोनो ही महर्षि दयानन्द जी सरस्वती व आर्य समाज का गाली प्रदान करते २ दिवंगत हो गए पर प्रत्युत्तर न लिख पाए। पुन उन्हीं प्रश्नो को बार २ करके श्री प्रमन्चार्य भी तीसमार खा बनने का प्रयास कर रहे हैं क्या वेदो में सन्तानोत्पत्ति व प्रजननेन्द्रिय तथा प्रजनन प्रक्रिया का वर्णन आ जाने से अश्लील हो गया ? यदि ऐसा हो तो इस विषय के सारे ही विद्या ग्रन्थ त्याज्य हो जाएंगे।

यहां तो वेद ने उपदेश दिया है कि सब अंगो से शुभ कर्म करना चाहिए। क्या प्रजनन प्रक्रिया सन्तानोत्पत्ति अशुभ कर्म है ? सम्भवत इसीलिए श्री कालूराम शास्त्री निस्सन्तान ही रहे। उनके उत्तराधिकारी उनके दो शिष्य श्री कामता प्रसाद दीक्षित व श्री रामनारायण दीक्षित अमरोहा (कानपुर) मे ही हुए। एक तो दिवंगत हो गये पर एक जीवित हैं।

इस मन्त्र मे क्रिया कोई नहीं है। अत प्रत्येक अंग की पुष्टि की प्रार्थना करते हुए क्रिया लगानी होगी। यथा—

मेरी नाभि ज्ञान रूप हो मेरी मूलेन्द्रिय विज्ञान वाली हो मेरी योनि स्त्री प्रजाजनक हो मेरे वृषण आनन्द दायक हों मेरा लिंग सौभाग्य वाला सन्तानोत्पन्न करने मे समर्थ हो तथा व पैर प्रजा मे प्रवेश करने योग्य हों मैं इस प्रकार का प्रतिष्ठित राजा होऊं।

राजा के लिए उसके पुत्रादि [illegible] राजा का उत्तराधिकारी युवराज [illegible] होना चाहिए। राजाओं में प्राय युवराज के लिए ही राजा रहता है। [illegible] वर्तमान जयपुर उदयपुर के [illegible] इन्हीं संकटमय पथ के [illegible] इसलिए प्रजननेन्द्रिय व [illegible] धारण करने के स्थान की रक्षा [illegible] मे बल दिया है। पैर व जंघाओं में भी पुष्टि हो जिससे प्रजाओं में जाकर उनके सुख-दु खादि को जानते रहें।

अत इस पर आक्षेप करना व्यर्थ है, अब अपने लक्कड दादा गुरुओ के भाष्य भी इसी मन्त्र २० ९ पर देख लें।

श्री महीधराचार्य —मे नाभि चित्त ज्ञान रूपमस्तु । पायुर्मे गुदेन्द्रिय विज्ञान ज्ञान जनित संस्काराधारमस्तु। भसत् स्त्री प्रजननमपचिति प्रजा रूपमस्तु यजमान पत्नी विषयमेतत। मे आण्डौ वृषणौ आनन्दनन्दौ स्त्रासमानन्देन सभोग जनित सुखेन तत्सुख भोक्तारौ भवतामित्यर्थ । पस पसतै स्पर्शतिकर्मण इति यास्कोक्ते पसो लिंग भग सौभाग्य चास्तु भग ऐश्वर्य सौभाग्य सम्पत्ति सर्वदा भोगासक्त मस्त्वित्यर्थ । जङ्घाभ्या पद्भ्यां चाहं धर्मोऽस्मि उपलक्षणमेतत सर्वाङ्गैर्धर्म रूपोऽस्मि धर्म रूपत्वाच्च विशि प्रजया राजा प्रतिष्ठितोऽस्मि धर्म प्रतिष्ठितो हि राजा भवति।१०

श्री उव्वटाचार्य पायुगुदप्रदेश अपचिति पूजा।७

(शेष पृष्ठ ८ पर)

१ सन १९२ ई० मे सनातन धर्म पुस्तकालय इटावा से प्रकाशित (प्रथमावृत्ति)।

२ संवत १९७३ श्रावण मे ब्राह्मण प्रेस अलीगढ़ मे मुद्रित व लेखक द्वारा प्रकाशित।

३ सन १९२७ ई० मे प० इन्द्रदत्त शर्मा वैद्योपदेशक सम्भल जि० मुरादाबाद (उ० प्र०) द्वारा प्रकाशित प्रथम संस्करण।

४ संस्कृत हिन्दी कोष पृष्ठ ७५४ (अंग्रेजी कोष का हिन्दी अनुवाद मोती लाल बनारसीदास बंगलोरोड जवाहर नगर दिल्ली द्वारा सन १९६६ ई० मे प्रकाशित।

५ संस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ पृष्ठ ८६८ (सन १९७५ ई० मे पंचम संस्करण प्रयाग।

६ शुक्ल यजुर्वेद संहिता तृतीय खण्ड पृष्ठ ११३८ (सन १९१२ वाराणसी

७ वही पृष्ठ ११३९।

८ यजुर्वेद भाष्यम (द्वितीयो भाग) पृष्ठ ६०८ (संवत २०१७ वि० तृतीयावृत्ति अजमेर)

९ शुक्ल यजुर्वेद संहिता द्वितीय खण्ड पृष्ठ १०४४ १०४५।

१० वही पृष्ठ १०४४।

सम्पादकीय—

मोही का सफल सम्मेलन

हमारा मोही जिला लुधियाना का स्वामी स्वतन्त्रानन्द स्मृति सम्मेलन बहुत सफल रहा। २६ से २८ मार्च तक तीन दिन प्रात यज्ञ होता रहा। प० जगदीश चन्द्र वसु ब्रह्मा थे। रात को श्री प० निरञ्जनदेव जी की स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी के जीवन पर रोचक कथा होती रही। तीनो दिन दोनों अवसरो पर मोही के बहुत से बहिन भाई उपस्थित होते रहे। २३ मार्च को प्रात साढ़ ग्यारह बजे यज्ञ की पूर्णाहुति डाली गई। जिसमें पजाब के स्वास्थ्य मन्त्री श्री सरदारी लाल जी कपूर ने विशेष रूप मे भाग लिया।

यज्ञ के पश्चात् स्वामी सर्वानन्द जी महाराज की अध्यक्षता मे स्मृति सम्मेलन आरम्भ हुआ आचार्य नरेश जी प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु पण्डित निरञ्जनदेव रामा मण्डी वाले श्री ओम्प्रकाश जी वानप्रस्थी सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र और श्री सरदारीलाल जी कपूर स्वास्थ्य मन्त्री ने स्वामी जी के चरणो मे अपनी श्रद्धाजलि अर्पित की। प्रताप के प्रसिद्ध पजाबी कवि श्री जसवन्तराय राय वानप्रस्थी ने और श्री राम प्रकाश जयरथ ने अपनी अपनी कविताए पढी। आर्य हायर सैकेण्डरी स्कूल के लडकों और आर्य गर्ल्ज स्कूल की लडकियो ने अपने अपने मनोहर गीत प्रस्तुत किए। श्री कुशकिस्मतसिंह ने मोही ग्राम का इतिहास तथा परिचय दिया। सरदार बलवन्तसिंह जी ने सबका धन्यवाद किया और औषधालय के लिए पहले दिए हुए मकान के अतिरिक्त एक नया कमरा बना देने की भी घोषणा की उन्होने यह भी बताया कि उनके परिवार ने विदेश से १४ हजार रुपए इस औषधालय के लिए भेजे हैं। सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने सभा की ओर से ग्यारह हजार रुपए देने की घोषणा की। पजाब के स्वास्थ्य मन्त्री श्री सरदारी लाल जी कपूर ने पजाब सरकार की ओर से दस हजार रुपए देने की घोषणा की। इस प्रकार आशा हो गई है कि स्वामी जी जी स्मृति मे बनाये जाने वाले इस औषधालय की कोई रूप रेखा बन जाएगी।

इस सम्मेलन मे लुधियाना से सबसे अधिक बहिन भाई थे। यहा की सब आर्य सस्थाओं के प्राय अधिकारी अध्यापक और बच्चे भी अपनी अपनी बसो द्वारा सम्मिलित हुये। मोगा बरनाला फिरोजपुर ययकोट और जालन्धर के भी बहुत सज्जन थे। इनके अतिरिक्त पजाब की बहुत समाजो के भाई बहिन पहुचे हुए थे।

इस सम्मेलन की सफलता के लिए मैं सभा की ओर से मोही ट्रस्ट के सभी सदस्यों जिला आर्य सभा लुधियाना के सभी सदस्यो विशेष रूप से प्रधान श्री रणवीर जी भाटिया, मन्त्री श्री डा० बागिया वाल बाजार लुधियाना समाज के प्रसिद्ध यज्ञ प्रेमी श्री दशराज बुल्लर, आर्य गर्ल्ज स्कूल आर्य हायर सैकेण्डरी तथा आर्य कालेज के प्रिंसिपल महानुभावो सभा के सभी उपदेशक तथा प्रचारक महानुभावो का हृदय से धन्यवाद करता हू।

पूज्य स्वामी सर्वानन्द जी के शब्दो मे उनके लिये और मेरे लिए मोही की धरती आचार्यजी की जन्म भूमि होने के नाते एक तीर्थ है हमे सन्तोष है कि हमारे स्वर्गीय आचार्य जी की जन्म भूमि के लोगो का यह अनुभव होने लग पड़ा है कि उनके गाव के सन्त का आर्य समाज मे बहुत बडा स्थान था और हर आर्य समाज के लोग उनके प्रति बडे कृतज्ञ हैं।

सरदार बलवन्तसिंह जी की ओर स्वास्थ्य मन्त्री ओर से कुछ आए हुये विशिष्ट अतिथियो के लिए भोजन का प्रबन्ध किया गया था और गाव के भाईयो की ओर से सब अतिथियो के लिए चाय का प्रबन्ध था।

— रामचन्द्र जावेद

सभा मन्त्री

नए वर्ष की नवीनता

आज कल नया वर्ष प्रथम जनवरी को धूमधाम से मनाया जाने लगा है। प्रथम जनवरी १९८१ को कई मित्रो ने अपने मित्रो को बधाई पत्र भेजे। शुभ कामनाए भेजीं बधाईया दी एक बन्धु ने मुझे भी कहा पण्डित जी आज नया वर्ष है हम आपको बधाई देते है और शिकवा किया कि आपने हमे बधाई दी ही नहीं।' मैंने कहा प्रिय बन्धु आज से हमारा नव वर्ष आरम्भ नहीं हुआ। वह आश्चर्य से पूछने लगा यह कैसे हो सकता है? मैंने कहा—भाई आज तो ईसा के मानने वालों का नया वर्ष आरम्भ हुआ है। अमेरिका वालो का नव वर्ष आरम्भ हुआ है। भारत वालो का नहीं। उसने आगे पूछा फिर भारत मे क्यो इस दिन नया वर्ष मनाया जा रहा है। मैंने कहा प्रिय भाई यही तो नए वर्ष की नवीनता है।

आर्य बन्धुओ हम अपनी सस्कृति सभ्यता को बिल्कुल भूल रहे है आज हमे यह भी नही पता कि नव वर्ष कब आरम्भ होता है। इस ऋषि मुनियो के देश के वासी आज अपने ऋषि मुनियो को तो भूल गए हैं परन्तु साथ ही अपने आपका भी भूल रहे है। हमे आज विदेशी ईसामसीह का सन तो याद है परन्तु भारतवासी विक्रम का सम्वत याद नहीं।

वास्तव मे आज हमारे पास अपना कुछ भी नहीं हमारा खान पान रहन सहन सब विदेशी हो गया है। यह अग्रेजो की कुटिल चाल थी कि भारतीय सस्कृति को अग्रेजियत व ईसाईयत का दास बनाया जाए और उनकी चाल सफल हो गई। आज हम अपना सभी कुछ भूल गए।

भारतीयो का नव वर्ष चैत्र सुदी प्रतिपदा से आरम्भ होता है इस दिन पृथिवी सूर्य का एक चक्र पूरा करके दूसरा चक्र आरम्भ करती है। वैज्ञानिक दृष्टि से भी इस दिन का विशेष महत्व है। इसीलिए भारत का व्यापारिक मण्डल अपने कारोबार की नई बहिया आय व्यय की नई पुस्तकें आज तक लगाता आया है और नव सम्वत पर्व के रूप मे जहा तहा मनाया जाता है सभी आर्य बन्धुओ को इसी दिन अपने मित्रो को बधाई सन्देश भेजने चाहिए और प्राचीन काल से जिस दिन नव वर्ष मनाया जाता है उसी दिन नववर्ष मनाना चाहिए न कि नवीन नववर्ष जनवरी से।

इसलिए महर्षि दयानन्द जी महाराज ने इस दिन के महत्व को समझते हुये इसी दिन विक्रमी सम्वत् १९३२ मे (सन १८७५) मे बम्बई मे आर्य समाज की स्थापना की थी। सभी आर्य बन्धु ५ अप्रैल रविवार को आर्य समाज स्थापना दिवस के रूप मे इस दिन को धूमधाम से मनाए। प्रभात फेरिया यज्ञ ध्वजारोहण और सभाए करें प्रीति भोज या जलपान का आयोजन करें अपने घरो पर दीप मालाए करें। प्रत्येक आर्य बहिन भाई अपना दायित्व निभाए ताकि पता चले कि यह आर्यों का विशेष दिन है।

—धर्मदेव आर्य

सम्पादक आर्य मर्यादा के नाम—

एक सुयोग्य विद्वान् का प्रशस्ति पत्र

परम स्नेही बन्धुवर

सादर सप्रेम नमस्ते।

आर्य मर्यादा के २२ ३ ८१ के अक की प्रति मुझे प्राप्त हुई है। मै इस स्नेह सौहार्द के लिए आपका बहुत आभारी हू। इस अक मे छपे लेखो को पढकर मेरे ज्ञान की (या मेरी जानकारी) मे सुखद वृद्धि हुई है। परम आदरणीय स्व० प० जयचन्द्र जी विद्यालकार की याद ताजा हो गई। उनसे मेरा व्यक्तिगत घनिष्ठ परिचय और साहचर्य था उनकी प्रथम पुण्य तिथि पर दैनिक हिन्दुस्तान में उनके सम्बन्ध मे मेरा लिखा एक विशद सस्मरण प्रकाशित किया था। सुखदेव जी के जीवन की झाकी लेख मे श्री लालचन्द फलक के नाम का उल्लेख देखकर उनका कहा एक शेर याद आ गया जो उन्होंने १९१४मे लाहौर मे पधारी अलफ्रेड थियेट्रिकल कम्पनी बम्बई के मालिक कावस जी खटाऊ के आकस्मिक कारुणिक निधन पर कहा था और श्री काशीराम खोसला के देश पत्र मे प्रकाशित हुआ था वह शेर इस प्रकार था—

कल जो उड़ता था फलक पर आज तेरे खाक है।

देख लो अन्जामे हस्ती कितना इबरतनाक है

मैंने इस अक को बहुत सजोकर रख लिया है आपको पुन धन्यवाद।

—रामनाथ पाण्डेय (सुलतानपुर उ० प्र०)

क्या अब आर्य समाज की आवश्यकता नहीं रही

ले०—श्री यशपाल आर्य बन्धु, प्रचार मन्त्री आर्य समाज मुरादाबाद

जिस समय महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज की स्थापना की थी तो उस समय देश घोर अविद्या अन्धकार पापाचार तथा पाखण्ड मे आकण्ठ तक डूबा हुआ था। सर्वत्र निराशा का वातावरण था एव समाज को कुरीतियो, कुनीतियो, कुप्रथाओ तथा रूढियो ने बुरी तरह जकड रखा था। ऐसे समय मे युग की पुकार सुनकर युग द्रष्टा महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जब बुद्धिवादी आन्दोलन आर्यसमाज की नींव रखी तो युग मे एक अपूर्व क्रान्ति का सृजन हो उठा। सर्वत्र एक अपूर्व हलचल सी दिखाई देने लग गई। कही इस आन्दोलन का स्वागत हुआ तो कही विरोध। पर—

हम अकेले ही चले थे जानिबे मंजिल मगर,
लोग साथ आते गये काफिला बनता गया।

और आज यह आन्दोलन अपने जीवन के सौ वर्ष पार कर चुका है। आर्य समाज के संस्थापक ने एक वीर योद्धा तथा कुशल सेनानी की तरह धार्मिक सामाजिक सांस्कृतिक राजनीतिक आदि सभी क्षेत्रो मे एक साथ ही प्रबल संघर्ष छेड दिया। यद्यपि महर्षि ने इस धर्म युद्ध मे कई मोर्चे एक साथ खोल दिए थे तथापि सर्वाधिक सफलता सामाजिक मोर्चे मे ही उपलब्ध हुई। इस मोर्चे पर इस प्रकार की अप्रत्याशित सफलता मिलने का मुख्य कारण यह था कि जब आर्य समाज ने इस क्षेत्र मे सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध युद्ध का बिगुल बजाया था तब अन्य कई सामाजिक तथा राजनीतिक संस्थाओ एवं संगठनो ने भी आर्य समाज की सामाजिक विचार धारा से सहमत होकर उसके समाज सुधार आन्दोलन को स्व-सामर्थ्यानुसार सहयोग किया। उस समय सामाजिक कुरीतियो को सर्वमान्य शत्रु समझा जाने लगा था।

सामूहिक आक्रमण से शत्रु का कमजोर पड जाना स्वाभाविक ही था। यही कारण है कि आर्य समाज को अन्य सभी क्षेत्रो की उपेक्षा सामाजिक क्षेत्र मे शीघ्र विजयश्री प्राप्त हुई और आज हम देखते हैं कि गत कई शताब्दियो से बद्धमूल कुरीतियां या तो सर्वथा उन्मूलित हो चुकी हैं या फिर अपनी अन्तिम सांसें गिन रही है। एक शती पूर्व की सती प्रथा तो अब इतिहास का विषय ही बन चुकी है। यद्यपि उसे पुनर्जीवित करने की कुचेष्टें चली जा रही हैं, बाल विवाह अनमेल विवाह बहु विवाह आदि कुप्रथायें भी प्राय समाप्त हो चुका है। यदि नहीं भी हुई तो भी समाज इन्हे बहुत ही बुरी दृष्टि मे देखता है। जो पौराणिक हिन्दू जाति कभी समुद्र यात्रा को पाप समझती थी, वही अब अपने धर्म प्रचारको तथा मूर्तियो को विदेश भेजने मे अपनी कृतकार्यता समझती है। जो लोग कभी स्त्री शिक्षा के प्रबल विरोधी थे, वही आज उसके प्रबल प्रचारक बन चुके है। यह सब आर्य समाज की सामाजिक क्षेत्र मे सफलताओ के समुज्ज्वल प्रमाण नही तो और क्या हैं? आज स्थिति यह है कि आर्य समाजेतर अन्य संस्थाएं संगठन तथा स्वयं शासन भी इस क्षेत्र मे परस्पर डाह सी ले रहे हैं। आज सामाजिक संगठन अपितु राजनीतिक संगठन भी सर्वथा जागरूक होकर प्रयत्नशील हैं। तात्पर्य यह है कि आज सामाजिक क्षेत्र मे आर्य समाज के कार्यक्रमो को शासन तथा अन्य अनेको संस्थाओ ने अपने कार्यक्रमो का अभिन्न अंग ही बना लिया है। ऐसी स्थिति मे कभी कभी यह आवाज भी सुनाई देने लग जाती है कि जब आर्य समाज के कार्यक्रमो को अन्य संस्थाओ तथा शासन ने अंगीकार कर लिया है और उन्हे पूरा करने के लिए प्रयत्नशील भी हैं, तब आर्य समाज की विद्यमानता का क्या औचित्य है? उसकी क्या आवश्यकता है? अत क्यो न इसे अब भंग कर दिया जाए? ऐसा कहने वाले प्राय यह तर्क दिया करते हैं कि आर्य समाज को भंग कर देने से जन-शक्ति एवं धन का व्यर्थ का दोहरा व्यय भी समाप्त हो जाएगा।

हमें आर्य समाज को भंग कर देने की बात सर्वथा सारहीन एवं बेतुकी-सी लगती है। ऐसा कहने वालो की मन्शा भी शुद्ध प्रतीत नहीं होती। निश्चय ही निहित स्वार्थों एवं राजनीति से प्रेरित होकर ही ऐसी बातें कही जाती है एव कही जा रही हैं। जो लोग ऐसा कहते हैं वे आर्य समाज के उद्देश्यों एव कार्यक्रमों से सर्वथा अनभिज्ञ प्रतीत होते हैं। आर्य समाज केवल एक समाज सुधार आन्दोलन ही नहीं, इसके अतिरिक्त भी कुछ और है। सत्य कहें तो एक विशुद्ध मानवतावादी आन्दोलन है। वह-मानव-धर्म प्रतिपादक महा संघ है। संसार भर को वेद का अनुयायी बनाना इसका पुनीत लक्ष्य है। इसका उद्देश्य केवल सामाजिक सुधारो तक ही सीमित नहीं। सामाजिक सुधार तो इसके कार्यक्रमो का एक अंश-मात्र ही रहा है। उसका मुख्य उद्देश्य तो सत्य सनातन वेद विद्या के प्रसार द्वारा ईश्वर, जीव और प्रकृति के वास्तविक स्वरूप को उपस्थित करना है। दूसरे इसके कार्यक्षेत्र भी किसी देश अथवा जाति विशेष तक ही सीमित नही। इसके सिद्धान्त भी सार्वभौम हैं। आर्य समाज का उद्देश्य आस्तिकता का प्रचार करना तथा ईश्वर के गुण, कर्म स्वभावानुसार उनका प्रतिपादन करना है। इसके छठे नियमानुसार संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है, अर्थात् शारीरिक, आत्मिक और सामाजिक उन्नति करना, इस नियम मे शारीरिक, आत्मिक एवं सामाजिक उन्नति का जो क्रम रखा गया है एवम् उससे संसार का उपकार किस प्रकार सम्भव है। यह एक भिन्न विषय है जो विस्तृत व्याख्या की उपेक्षा रखता है, किन्तु इतना तो निश्चित ही है कि संसार की किसी भी अन्य संस्था का इतना महान् व्यापक तथा दूरगामी उद्देश्य आज तक भी नही बन पाया आगे की परमात्मा जाने।

महान् संस्थाओ के उद्देश्य भी सदा ही महान् हुआ करते हैं, अथवा यूं कहिए कि महान् उद्देश्यो वाली संस्थायें ही सदा महान् भी हुआ करती हैं। यह आर्य समाज के यशस्वी संस्थापक की दूरदर्शिता थी कि उसने इसे ऐसा व्यापक महान् तथा उदात्त उद्देश्य प्रदान किया है कि जिसके रहते कभी भी कोई व्यक्ति यह कहने का साहस नही कर सकता कि अब इस संस्था का उद्देश्य पूर्ण हो चुका है, अत इसे भंग कर दिया जाए। यदि इसकी स्थापना भी तुच्छ एवं अस्थायी उद्देश्य के लिए की गई होती तो उस स्थिति मे उसके उद्देश्य की पूर्ति के पश्चात् इसे भंग कर दिये जाने की बात समझ भी आ सकती थी किन्तु जब इसका उद्देश्य ही अपूर्व रखा होतो फिर इसको भंग कर देने का प्रश्न ही नही उठता, जब 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' कि सम्पूर्ण विश्व को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ मानव बनाना इस संस्था का सर्वोत्तम लक्ष्य हो, तो फिर ऐसा किस प्रकार कहा जा सकता है कि आर्य समाज की अब कोई आवश्यकता नही रही और इसे अब भंग कर देना चाहिए। आर्य समाज वस्तुत मानव निर्माण आन्दोलन का ही दूसरा नाम है, भूतपूर्व उपराष्ट्रपति श्रीयुत् बी० डी० जत्ती जी ठीक ही लिखते है कि— जहा तक मैं आर्य समाज के उद्देश्यों को समझता हू कि स्वामी जी चाहते थे कि मनुष्य-मनुष्य बने, कायरता को छोड़े, अपने अन्दर स्वाभिमान पैदा करे, सामाजिक विषमता के विरुद्ध आवाज उठावे, और अपने जीवन मे सबके प्रति सद्भाव का आचरण रखे। ढोंगबाजी, आदि को त्याग कर संसार का मानव का स्वरूप समझे, इसके अनुसार व्यवहार करें। तो हमे यह देखना है कि इस परिस्थिति मे इन उद्देश्यो के अनुरूप हम क्या कर सकते हैं व हमे क्या करना होगा? आर्य का अर्थ है ईश्वर-पुत्र अर्थात् श्रेष्ठ सदाचारी, धर्मात्मा, सत्यवादी, सत्कारी तथा प्रगतिशील मनुष्य। यह कोई संकुचित कल्पना नही है। आर्य यानी ईश्वर का पितृत्व मानने वाला समस्त मानव जाति का आपस मे भ्रातृत्व तथा एक परिवार का रूपगृहीत है। वेदो मे आर्य शब्द गुण-वाचक है। यह शब्द देश, काल और सीमा की परिधि से बाहर है। जिस व्यक्ति के आचरण में आर्यत्व एव श्रेष्ठता होगी वह विश्व के किसी भाग में जन्मा हो, उसका कोई भी मजहब या भाषा हो, वह कही भी निवास करता हो वह आर्य है। 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' इसका अर्थ यही है कि सारे जगत् को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ मानव बनाओ (आर्य समाज शताब्दी समारोह वाराणसी स्मारिका फरवरी १९७६) यहा महामान्य जत्ती महोदय ने जहा आर्यसमाज के महान् उद्देश्य को स्पष्ट किया है और उसकी व्यापकता की चर्चा की है, वहा इसे अखण्ड रूप से चालू रखने की प्रेरणा भी दे रहे हैं। वे लिखते हैं कि 'आर्य समाज का काम यानि मानव को अपूर्णता से पूर्णता तक पहुचाने का काम हमे अखण्ड रूप से चालू रखना ही होगा। हमारे समाज की, राष्ट्र की उन्नति उसी पर निर्भर है। इस काम के लिए अब परिस्थिति भी अनुकूल है। हमारा अब एक स्वतन्त्र राष्ट्र है और और हमारी सरकार भी इस दिशा मे प्रयत्नशील है। काम इतना विशाल है कि केवल कुछ व्यक्तियो या संस्थाओ के करने से ही हम अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच सकते हैं। इस दिशा में सरकार की ओर से जो प्रयत्न समभाव और समानता के लिए किए जा रहा है, उसमें अगर हम सब सहयोग दें तो निकट भविष्य मे हम अपने उद्देश्य की पूर्ति कर सकेंगे।

हमारी तुच्छ बुद्धि यह समझने मे असमर्थ है कि जब आर्य समाज का सर्वत्र विरोध होता था तब अकेला आर्य समाज अपने मिशन की पूर्ति के लिए संघर्ष करता रहा था और अब जबकि अनेक अनेक संस्थाएं तथा सरकार भी उसके कार्य मे सहयोग करने को उत्सुक है तो आर्य समाज की आवश्यकता क्यो नहीं रही एव इसे भंग कर दिये जाने की

(शेष पृष्ठ ५ पर

आर्यसमाज दीवान हाल दिल्ली का उत्सव सम्पन्न

इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अनुसंधान विभाग के अध्यक्ष आचार्य वैद्यनाथ जी शास्त्री ने ध्वजारोहण करते समय अपने भाषण मे कहा कि कि—ध्वजा, समाज दल या समूह विशेष की भावनाओ, उनके क्रिया कलाप का प्रतीक होता है। मुक्त आकाश मे लहराता हुआ ध्वज हमारे अभिमान को ऊंचा उठाता है। अग्नि शिखा के रंग सा इसका रंग है। यह महर्षि दयानन्द सरस्वती से लेकर आज तक के सभी हुतात्माओके आत्मोत्सर्ग की कहानियां कहता है, ध्वज समाजके सकल्प क्रिया तथा उपलब्धियो का प्रतीक होता है हम इसे उत्तोलित कर सतत जागरूक रहने का प्रण लेते हैं।

आर्य समाज दीवान हाल का त्रि दिवसीय वार्षिकोत्सव प्रात ७-३० बजे सामवेद से हवन यज्ञके द्वारा १३मार्च आरम्भ हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा आर्य समाज के कर्मकाण्डी विद्वान् पंडित राजगुरु शर्मा थे।

देश के सामने विकट समस्या श्री पुरुषार्थी

वर्तमान समस्याओ के परिवेश मे भारत—इस विषय पर सम्मेलन समाज के प्रधान श्री सूर्यदेव जी की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के मन्त्री श्री ओम्प्रकाश पुरुषार्थी ने कहा कि देश के सामने विकट समस्या उपस्थित है। ऐसी परिस्थिति जिसके कारण राष्ट्र का सांस्कृतिक धार्मिक आध्यात्मिक एवं राष्ट्रीय ढांचा ही डगमगा रहा है यदि देश भक्तों ने इधर ध्यान नही दिया तो भारत भले ही आर्थिक उन्नति के शिखर पर पहुंच जाए परन्तु इसकी आत्मा समाप्त हो जाएगी। भारत आर्थिक ढांचे के लिए नहीं अपितु अध्यात्मिक एवं नैतिक मूल्यो के कारण प्रसिद्ध है। आज भौतिकता की आंधी इसके धार्मिक एवं सांस्कृतिक कलेवर पर निरन्तर चोट दे रही है। खेद इस बात का है कि स्वार्थान्ध राजनैतिक नेता एवं पार्टियां कुर्सी के लिए देश की एकता के दाव पर लगा रही हैं ये जातिवाद क्षेत्रवाद एवं संकीर्ण साम्प्रदायिकता को बढावा दे रही हैं। उनके इस आचरण से अराष्ट्रीय तत्वो को बल मिल रहा है। इससे देश की एकता एवं सुरक्षा के लिए खतरा उपस्थित हो गया है।

विदेशी शक्तियां भारत को अपनी मुट्ठी मे करने के लिए अतुल धन सेवा और शिक्षा के नाम पर भारत भेज रहे हैं। लालच और सेवा का सहारा लेकर लोगों का धर्म परिवर्तन कराया जा रहा है। अगर सारा हिन्दू समाज नहीं बचा तो सारा देश नष्ट हो जाएगा।

केवल आर्यसमाज से आशा

प्रो० बलराज मधोक ने कहा कि आज जैसी संकट की घडी देश के सामने कभी नही आयी। लोगो का राजनैतिक दलो पर से विश्वास उठ गया है। राष्ट्रीयता की भावना शिथिल पडती जा रही है। हिन्दुत्व की भावना को जगाये बिना राष्ट्रीय उत्थान असम्भव है देश की किसी भी समस्या का धार्मिक सामाजिक या अध्यात्मिक समाधान हिन्दुत्व की भावना के परिप्रेक्ष्य मे ही होगा) जो संस्था इस विचार को लेकर आगे बढ़ेगी भारत का कल्याण कर सकेगी आर्य समाज आगे बढा था और उसने राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के साथ मिलकर जनसंघ का निर्माण किया था। आज स्थिति बदल गई है राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ मोर्चे से अलग हो गया है तथा भारतीय जनता पार्टी ही स्वयं सेवक दल बन गया है। अब मैदान मे अकेला आर्य समाज बच गया है। यदि आर्य समाज बिखरे हुए हिन्दु तत्वो को मिला कर एक और अराजनैतिक मंच बना सके तो इस निराशा की स्थिति को समाप्त किया जा सकता है मुझे आशा है आर्य समाज इस दिशा मे अग्रसर होकर स्वामी दयानन्द सरस्वती के स्वप्नो का भारत बनाने व उसे बचाने मे समर्थ हो सकेगा।

सामवेदीय यज्ञ की पूर्णाहुति के अवसर पर १५ मार्चयज्ञ वेदी से बोलते हुये आर्य जगत् के वयोवृद्ध विद्वान शास्त्रार्थ महारथी पं० बिहारीलाल शास्त्री ने ये कहा कि यज्ञ मात्र औपचारिकता नही है यह जाति के जीवन का व्यवहारिक स्वरूप है यज्ञ मे विद्वानो का सत्कार सहयोग दान और ग्रहण यही सारे कर्म किये जाते हैं। इन्ही पर समाज टिका होता है जो समाज यज्ञ की भावना के साथ जीवित रहना नही जानता वह विनष्ट हो जाता है।

आर्य समाज के सम्बन्ध में डा. एण्ड्रयू जैक्शन डेविस के उद्गार

मैं एक ऐसी अग्नि देखता हूं जो सर्वव्यापक है वह अप्रमेय प्रेम की अग्नि है जो सर्वविद्वेष को भस्मसात् करने के लिये प्रज्वलित हो रही है और सर्ववस्तुजात को पवित्र बनाने के लिए पिघला रही है। अमरीका के प्रशस्त क्षेत्रो अफ्रीका के बड़े स्थलो एशिया के शाश्वतिक पर्वतो योरुप के विशाल राज्यो और राष्ट्रो मे सर्वनाशक सर्वपावन इस पावक की प्रज्वलित ज्वालाए मुझे दिखाई दे रही है। प्रथम इस अग्नि की ध्वनि निम्नतम स्थानो मे सुनाई देती है मनुष्य उसको अपने सुख और उन्नति के लिए प्रकाशित करता है। क्योकि केवल मनुष्य ही ऐसा पवित्र प्राणी है जो अग्नि को प्रज्वलित करके उसी प्रकार स्थिर रख सकता है जैसाकि केवल वह ही (मनुष्य ही) ध्वनि या शब्दो को जन्म देकर स्थिर रख सकता है। इसलिए मनुष्य ही अपने गृहो मे सबसे प्रथम नारकीय अग्नियो को प्रज्वलित करता है। (द्वेषो को भडकाना है) और वही सर्वप्रथम स्वर्ग से प्रोमीथस की उस अग्नि को प्राप्त करने वाला और बढा रखने वाला है जिससे कि पातालीय (नारकीय) अन्धकारपूर्ण गृह प्रेम से पवित्र और मेधा से प्रकाशित हो सकते हैं।

इस अनन्त अग्नि को जोकि निश्चय रूप से संसार भर के राज्यो साम्राज्यो और शासन सम्बन्धी दोषो का सामना करेगी (पिघला डालेगी) देखकर मैं अतीव हर्षित हो रहा हूं और जाज्वल्यमान उत्साह के साथ जीवन धारण कर रहा हूं सब उच्चतम पर्वत जल उठेंगे। उपत्यका के सारे सुन्दर नगर नष्ट हो जाएंगे। मनोहर गृह और प्रेम लुप्त हृदय पिघल कर एक हो जाएंगे और सूर्य की उज्ज्वल किरणो के सामने ओस के बिन्दुओ के समान पुण्य और पाप सम्मिश्रित एक अन्तर्धान हो जाएंगे।

अनन्त उन्नति की विद्युत से मनुष्य का हृदय विक्षुब्ध है आज केवल उसके स्फुलिंग (चिंगारियां) आकाश की ओर उड रहे हैं। वाग्मियो कवियो और पवित्र पुस्तक प्रणेताओ के मनोभावो के रूप मे उसकी लपकती हुई ज्वालाए यत्र-तत्र दृष्टिगोचर हो रही है। सनातन आर्य धर्म को उसकी आद्य पवित्र अवस्था को प्राप्त करने के लिए आर्य समाज नामक अग्निकुण्ड मे इस अग्नि का आधान हुआ था और वह भारत मे ईश्वर के प्रकाश प्राप्त (लब्ध ज्योति) पूज्य दयानन्द सरस्वती के हृदय मे प्रादुर्भूत और प्रज्वलित हुई थी। ईश्वरीय ज्ञान की यह अग्नि उसमे (दयानन्द से) पौरस्त्य विचारो की भूमि भारत वर्ष को बहुत सी उच्च और उज्ज्वल आत्माओ को प्राप्त हुई यह सर्वनाशक अग्नि सब ओर ऐसी प्रचण्डता से प्रज्वलित थी कि जिसका ध्यान उसके प्रथम प्रकाशक दयानन्द को भी न आया था। हिन्दू और मुसलमान मिलकर इस अग्नि को बुझाने दौड़े और व ईसाई भी जिनकी वेदियो की अग्नियां और पवित्र बत्तियां प्रारम्भ मे भावक (ध्यानी) पूर्व (एशिया) मे ही प्रकाशित हुई थी एशिया के इस नये प्रकाश को बुझाने के प्रयत्न मे हिन्दू मुसलमानो के साथ मिल गये—सम्मिलित हो गये किन्तु यह स्वर्गीय अग्नि बढती और फैलती ही गई।

क्या आर्य समाज के वर्तमान सदस्य उपर्युक्त आशाओ का विचार करके अपने कर्त्तव्य और उत्तरदायित्व का अनुभव करने की कृपा करेंगे? क्या उनको कभी यह भी ध्यान आएगा कि आगे चलकर इतिहास उनके कार्यों की कैसी आलोचना करेगा। 'आत्मदा बलदा परम पिता बल प्रदान करें कि हम दयानन्द के सच्चे अनुयायी सिद्ध हो।

(४ पृष्ठ का शेष)

क्यो नही रही एवं इसे भंग कर दिए जाने की आवाज क्यो उठाई जाती है? आर्य समाज को ऐसे भ्रामक प्रचार से सदा सावधान रहना होगा एवं निहित स्वार्थ सिद्धि मे लगे ऐसे लोगो को मुंह तोड उत्तर देना होगा। साथ ही अपने उद्देश्यो एवं मन्तव्यो के प्रचार एवं प्रसार मे और अधिक स्फूर्ति तथा उत्साह से लग जाना होगा। जो लोग आर्य समाज की आवश्यकता पर सन्देह करते है उनसे सुप्रसिद्ध आर्य विद्वान तथा कवि श्रीयुत डा० सूर्यदेव शर्मा ठीक ही तो पूछते हैं कि—कहता है कौन भूतल पर आवश्यक आर्य समाज नही।

क्या ऋषि का मिशन हुआ पूरा कोई करना वैदिक काज नही।

सत्य तो यह है कि जो कार्य आर्य समाज को करने हैं वे अन्य कोई नही कर सकता। तनिक संसार भर की महान कही जाने वाली संस्था समाज सेवी संस्थाओ को एक दृष्टि से देख तो जाइए और विचारिए कि संसार को आर्य अर्थात श्रेष्ठ बनाने का उच्च उद्देश्य एवं उद्योग किसी अन्य संस्था के पास है? निश्चय ही कही नही मिलेगा। क्या हम यह पूछने की धृष्टता कर सकते हैं कि संसार को श्रेष्ठ बनाने का कार्य पूरा हो चुका है? यदि नही तो फिर ऐसी बेतुकी बातो का क्या प्रयोजन है? हमारा विश्वास है कि जब तक यह संसार है और उस पर निवास करने वाले मनुष्य है तब तक संसार को मानवता का पाठ पढाने के लिए आर्य समाज की आवश्यकता भी बनी ही रहेगी। आर्य समाज की यह चाहना है कि विश्व भर के मानव ऊंच नीच के भेदभाव भुलाकर एक कुटुम्ब की तरह रहें। अत संसार भर के मननशील व्यक्तियो से हमारी प्रार्थना है कि आर्य समाज के मानव निर्माण आन्दोलन को अपना पूरा सहयोग प्रदान कर इसे सफल

शेष पृष्ठ १२ पर)

आर्यसमाज की स्थापना

(ले०—श्री पं. भवानी प्रसाद जी

★

आनन्द सुधासार दयाकर पिला गया।
भारत को दयानन्द दुबारा जिला गया।
डाला सुधार वारि बढी बेल मेल की।
देखो समाज फूल फबीले खिला गया।
(महाकवि शंकरकृत)

विक्रम की १९वीं शताब्दी के वृद्ध भारत में वैदिक धर्म- भारतीय सभ्यता और समाज की अभूतपूर्व कल्पनातीत तथा विलक्षण अवस्था हो गई थी। एक ओर शुद्ध, सनातन, सरल वैदिक धर्म की पवित्र मन्दाकीनी सैकड़ों युगों के असख्य समय मे प्रवाहित रहकर कपोल-कल्पित, नाना नवीन मतो के आडम्बरों से उसी प्रकार कलुषित बन गई थी जिस प्रकार गंगोत्री से चली हुई भागीरथी की पुण्य-सलिला, विशुद्ध धारा विस्तृत विविध मार्गों में भ्रमण करके और मलीन जल-वाली अनेक नदियों से मिलकर गंगा-सागर में गदली और गर्हित हो गई है। सनातन वैदिक धर्म के ज्ञान कर्म और उपासना के तीनों कांडों का स्थान मिथ्या विश्वास, तान्त्रिक जादू टोने और पूजा ने ले लिया था, परम-तत्वविवेचन के स्थान में मिथ्या विश्वास मूलक विविध मतवाद मनुष्यों के विचारो पर अधिकार पा गये थे, मनुष्य वैदिक कर्मकाण्ड के सारभूत पञ्चमहायज्ञो को त्यागकर मारण मोहन, उच्चाटन, वशीकरण की सिद्धि मे अपने अमूल्य समय को बिताने लगे थे। सर्वव्यापक परमपिता की उपासना से विमुख बनकर कपोलकल्पित आधुनिक देवी-देवताओ की पूजा में तत्पर थे। देव-स्थान भंग, चरस आदि मादक द्रव्यो से उन्मत्त, दुराचारी. निरक्षरभट्टाचार्य पुजारियों 'पूजा के शत्रुओं' से भरे रहते थे। जनता आचार्य आदि सच्चे तीर्थों को भूलकर जल-स्थल आदि को ही तीर्थ मान बैठी थी, वैदिक वर्णव्यवस्था बिल्कुल लुप्त हो गई थी, उसके स्थान में जन्म-मात्र के गर्वित, गुण, कर्म से रहित पुरुषा-धाम ब्राह्मणादि वर्णके अभिमानी बन गये थे, ब्रह्मचारी और सन्यासी नाम मात्र को शेष रह गये थे, परन्तु उनका वेश धारण करके लाखों विद्या शून्य अकर्मण्य बकवृत्ति और बिडालवृत्ति बने हुये वञ्चक-जन इस वसुन्धरा के भार को बढ़ा रहे थे और श्रद्धालु प्रजा को दिन-दिहाड़े लूट रहे थे, सच्चे योगियों का स्वरूप तो योग शास्त्र में ही रह गया था किन्तु उन के नाम को लेकर भिक्षा से पापी पेट को भरने वाले जोगियो की एक पृथक जाती (समुदाय) ही बन गई थी। सर्वमान्य आचार्य पदवी मूर्खों का मान उड़ाने वाले अचारजों को मिल गई थी, अन्ततः प्रायः सारे के सारे वैदिक आर्ष प्रयोगों और नामों का यथार्थ स्वरूप और प्रयोजन उलट-पुलट हो गया था। सनातन वैदिक धर्म का कलेवर ही बदल गया था, श्रुतियों का नाम ही सुनाई देता था, उनका स्वरूप लुप्त प्रायः हो गया था, जनता मे यहां तक मूर्खता फैल गई थी कि वे अन्य देवताओं के समान वेदों को भी कोई देह-धारी देवता समझने लगे थे, उनकी मूर्तियों तक की कल्पना हो गई थी, वेदों के प्रमाणों के स्थान में अनेक आधुनिक ग्रन्थ और सम्कृत के श्लोक और वाक्य मात्र तक प्रमाण माने जाने लगे थे, धर्म कुछ रूढ़ियों (रस्म रिवाजों) का ही नाम रह गया था, या यूं कहिए कि सर्वत्र रूढ़ियों का ही राज्य था।

दूसरी ओर योरुप से उठी हुई पाश्चात्य सभ्यता की प्रबल पछुवा आंधी प्राचीन तथा पूर्वीय सभ्यता का सब कुछ उड़ा ले जाकर उसको तितर-बितर कर देने की धमकी दे रही थी, 'यथा राजा तथा प्रजा' की कहावत के अनुसार पराजित भारतीय प्रजा अपने गौराङ्ग प्रभुओं का रहन-सहन और उठने-बैठने तक की नकल करने में अपना गौरव समझती थी, वह उनकी वेश-भूषा, आहार के अनुकरण से ही सन्तुष्ट न थी, प्रत्युत प्रत्येक विषय में उनकी विचार परम्परा का भी पीछा करती थी, सहस्रो ग्रन्थों से सस्थापित और संसिद्ध सत्य भी पाश्चात्य विद्वानों के प्रमाणों के बिना सिद्धान्त नहीं माने जाते थे, भूगोल, खगोल, रसायन तथा पदार्थ विज्ञान आदि सारी विद्याओं तथा संगीत, शिल्प, स्थापत्य, चित्रण आदि समस्त कलाओं के आविष्कर्त्ता भी पाश्चात्य पुरुष ही समझे जाते थे, पाश्चात्य सभ्यता के ही प्रकाश में समस्त विषयों का अवलोकन किया जाता था। उनके ही हेतुवाद वा तर्कशैली से धर्माधर्म की भी परीक्षा की जाती थी, शिखा, सूत्र, आचमन, मार्जन आदि सारे धर्मकृत्य क्यों? और कैसे! की कसौटी पर कसे जाते थे, सारे धर्म कर्मों का निदान वा मूल ऐहिक वा सांसारिक सुख ही माना जाता था।

जहां एक ओर 'अविद्वो वा सविद्वो वा ब्राह्मणो मामकी तनुः' इस नाम मात्र के ब्राह्मणों के वाक्य पर श्रद्धा रखने वाले रूढ़ियों के परम उपासक. पुराने आचार-विचार के लोग किसी भी संस्कृत के ग्रन्थ का वाक्य को प्रत्येक प्रचलित कुप्रथा और मूर्खता का पोषक पुष्ट प्रमाण मानते थे, वहां पाश्चात्य शिक्षा-दीक्षित और पाश्चात्य-कित नवयुवक तर्क रहित वृद्ध वाक्य को भी सुनने के लिए तैयार न थे। परिणामत नवशिक्षित नई पौध के लोग निरीश्वरवादी सन्देहवादी वा भोगवादी बनकर प्राचीन सभ्यता और और सनातन धर्म से बिल्कुल विमुख हो रहे थे। वे अपने पूर्व पुरुषों को वृद्ध मूर्ख (Old fool) कहकर हसते थे।

उच्चजात्यभिमानी हिन्दू लोगों में कुछ तो धन-एकत्र के लोभ से और कुछ पुराण ग्रन्थों की असबद्ध कथाओं तथा हिन्दू रूढ़ियों की कठोरता से उद्विग्न होकर ईसाई आदि विधर्मी बनते जाते थे, नीच कही जाने वाली जातों के जन-उच्चमान्य हिन्दुओं के तिरस्कार, अत्याचार और अमानुषिक व्यवहार से मर्माहत होकर ईसाई पादरियों के प्रभाव मे आकर दिनों-दिन हिन्दू समुदाय का कलेवर क्षीण और ईसाई मत का शरीर पीन बना रहे थे और प्रातः स्मरणीय श्री राम और कृष्ण की निन्दा से निज जिव्हा को अपवित्र करते थे।

दूसरी ओर बहुत से हिन्दू नित्यप्रति मुसलमानों के फन्दे में फंसते थे। देव वाणी वा आर्य भाषा (हिन्दी) का पठन प्रायः पुरोहितों का ही काम रह गया था अन्य व्यवसायी वा कार बारी लोग महा महिमामय मौलवियों की पदचर्या और फारसी भाषा की आराधना को ही अपना अहोभाग्य और गौरववर्धक समझते थे। उस समय जालसाजी की जड़ और सर्पा-कार फारसी लिपि से अनभिज्ञजनों को सभ्यता की परिधि से बाहर समझा जाता था। सर्वगुण आगरी देवनागरी को "हिन्दगी" कहकर निन्दा की जाती थी। मौलवियों के अहर्निश के सहवास से फारसी पढ़े हुए कई पुरुष तो खुल्लम-खुल्ला मुसलमानी मत में दीक्षित हो जाते थे और शेष सारे आचार- विचारों से मुसलमान अवश्य बन जाते थे। इसलिए "फारसी पढ़ा आधा मुसलमान" की कहावत प्रचलित हो गई थी। उन दिनों वैदिक धर्म का विकृत रूप 'हिन्दूमत' ऐसा कच्चा धागा बन रहा था कि उस को जो चाहता था एक झटके से तोड़ सकता था। वह ईसाई वा मुसलमान के छुए-छुए जलमात्र के पान से सदा के लिए मिटा ही जाता था और इसलिए हिन्दूसमुदाय ईसाई मुसलमानों के लिए सुलभ भोजन का स्वादु ग्रास(तर लुकमा) बन रहा था। फलतः गौ और ब्राह्मण के भक्तों के समूह का प्रतिबिम्ब ह्रास हो रहा था।

इस प्रकार नित्य प्रति क्षीण कलेवर आर्य जाति मृत्यु के मुख में जा रही थी। प्राचीन आर्य सभ्यता पग पग पर पराभव पाकर अपने प्राचीन वैभव और महिमा को खो रही थी। जो आर्य जाति और वैदिक धर्म ८०० वर्ष तक के मुसलमानी अत्याचारपूरित शासन और तलवार से नष्ट न हो सका था, वह अब पाश्चात्यों के सम्मोहनास्त्र से महानिद्रा में निमग्न होने को उद्यत था। परन्तु सब सभ्यताओं की आदि जननी आर्यसभ्यता और सब धर्मों के आदि स्रोत वैदिकधर्म को उस प्रकार पशुतुल्य मृत्यु करुणा-वरुणालय परम पिता को अभिमत न थी, इसलिए दयामय ने असीम दया से निज नित्यव्यवस्थानुसार इस धर्म सकट के समय धर्म की रक्षा के लिए दयामूर्ति और आनन्द राशि ऋषि दयानन्द का प्रादुर्भाव भव्य भारत में किया।

ऋषि दयानन्द की उज्वल जीवनी की पुण्य-गाथा एक पृथक् विषय है। यहां उसका वर्णन प्रकरणान्तर होगा। किस प्रकार ऋषि दयानन्द ने सब कुछ त्याग कर, सत्यसंन्यासी बन कर पूर्णतः सत्य विद्याओ के अभ्यास और भारत के कोने-कोने में परिभ्रमण के पश्चात् इस देश की पतित अवस्था का निरीक्षण किया और उससे द्रवीभूत होकर वैदिक धर्म के पुनरुद्धारार्थ और संसार मात्र के परोप-कारार्थ आर्य समाज की स्थापना की, ये बातें भेद के नाम लेवा प्रायः सभी पुरुषों को विदित है। इस समय उसी आर्य समाज की स्थापना का विषय प्रस्तुत है।

ऋषि दयानन्द ने गुरु-गवेषणा और अतुल अन्वेषण के पश्चात् जिस सनातन वैदिक धर्म के सिद्धान्तो की स्थापना की थी उनके लगातार प्रचार के लिए उन्होंने बहुत से श्रद्धालु धार्मिक पुरुषों की सहायता तथा राज्य मान्य राजा श्री पानाचन्द आनन्द जी की आयोजना के अनुसार भारत की प्रसिद्ध समृद्धिशालिनी समुद्रतीरवर्तिनी मुम्बापुरी (बम्बई) गिरगांव में डा. मानिकचन्द जी की वाटिका में चैत्र सुदी १ संवत १९३२ विक्रमीय, १७९७ शालिवाहनशक बुधवार तदनुसार ७ अप्रैल सन् १८७५ ई० को प्रथम आर्य समाज की स्थापना की। उस के २८ नियम सर्वसम्मति से निर्धारित किए गए। इन्हीं नियमों में ऋषि दयानन्द की आत्मा का प्रतिबिम्ब और आर्य समाज का उद्देश्य वर्तमान था। आगे चलकर लाहौर आर्य समाज की स्थापना के समय इन्हीं २८ नियमों को संक्षिप्त करके संप्रति प्रचलित आर्य समाज के निम्नलिखित १० नियमों का रूप दिया गया। बम्बई आर्य समाज के नियमों की संख्या के अधिक होने का यह कारण था कि उसमें आर्य समाज के कार्यनिर्वाहक उपनियम भी सम्मिलित थे, लाहौर में उपनियमों को पृथक् कर के मूलसिद्धान्त रूप नियमों को ही मुख्य रूप नियमों के रूप में प्रकाशित किया गया।

(धर्म पद्धति से आभार)

नया वर्ष क्या कर पाएं

ले० कवि कस्तूर चन्द 'घनसार' कवि कुटीर पीपाड़ शहर (राज०)

नया वर्ष में नई योजना, ठीक बना कर काम करें।
देश सुखी हित बंगलों में न, नेता कभी आराम करें॥

रोके मार-काट बेहूदी, बातें दिन-दिन चलती हैं।
बलात्कार नित गुण्डा गर्दी, बाढ़ देश से बढ़ती है॥
रिश्वत चोरी चली जोर से, सीमा लांघ गई है आज।
मनमौजी नित मौज उड़ाके, करते रहते अकर्म काज।
हर कामों में हरकत करते, छोड़ के काम हराम करें।
नया वर्ष में नई योजना, ठीक बना कर काम करें॥

छाया बादल अधर्म का है, धर्म-ध्यान को भूल गए।
लता सुगन्धी सत्य धर्म की सूखी, बबुल फूल गए॥
ऋतु बसन्त आजादी पनपी, सारङ्ग, पिक मूक डोल रहे।
होता हुआ प्रकाश देश में, निशि-भूप निशि बोल रहे॥
दिनकर चलता रहा बराबर, चाहत उल्लू माम करे।
नया वर्ष में नई योजना, ठीक बना कर काम करे।

रोके शीघ्र अन्याय जो होता, न्याय की कथन कुर्सी है।
इस ऊपर जो बैठे न्यायिक, न्याय से प्रजा हर्षी है।
कब मिलेंगे दण्ड जिन्हों को, देश को देश न जाने।
शासन-अहित से दण्ड मिलता, दस्यु-दुष्ट जब ही माने।
आर्यवर्त्त है देवों का घर, जिसको यह बदनाम करें।
नया वर्ष में नई योजना, ठीक बना कर काम करें।

आर्य-कर्म धर्म सब भूले, पाप-पुण्य सब बिसराया।
केवल माल बटोर रहे हैं, आजादी का फल पाया।
आजादी का रूप बिगाड़ा, पक्ष पात के पिट्ठुओं ने।
चकित सरस मिले हैं उनको, मधुर लगे हैं मिठ्ठुओं ने।
खान-पान रस-रङ्ग रंगरलियां, बैठा आठों याम करें।
नया वर्ष में नई योजना, ठीक बना कर काम करें।

अपना वतन पतन क्यों, करते भारत मा का नाम लजे।
खोखता क्यों, भूल रहे हैं, उत्थान देश का काम लजे।
वतन को वतन नहीं जो जाने, थूक-थूक कहें उस नर को।
कौन हराम देश का घातिक, आग लगाते निज घर को।
"माता भूमि· पुत्रो अह पृथिव्या" भूले काम कुकाम करें।
नया वर्ष में नई योजना, ठीक बना कर काम करें।

देश सपूता बनें देश में, देश को स्वर्ग सजायें।
भारत मां, का प्रिय वही है, वह कभी न दुःख लजायें।
राष्ट्रघाती बिगाड़ रहे हैं, क्यों नहीं उन्हें दबायें।
"घनसार" विचार करें निशिवासर, खल-दल शोर मचायें।
उपद्रव सदा बढ़ाते चलते, उनका काम तमाम करें।
नया वर्ष की नई योजना, ठीक बना कर काम करें।
देश सुखी हित बंगलों में न, नेता कभी आराम करें।

—

आर्यसमाज स्थापना दिवस के लिए विशेष पद्धति

गृहकृत्य—प्रातः सामान्य पर्वपद्धति में पूर्व प्रदर्शित विधानुसार गृह के परिमार्जन, शोधन लेपनादि के पश्चात् नवीन शुद्ध देशी स्वदेशी वस्त्र परिधान पूर्वक सपरिवार सामान्य होम करके निम्नलिखित मन्त्रों से विशेष अधिक आहुतियां देवें—

१. स आनीध्व स पृच्यध्व स वो मनांसि जानताम्।
देवा भाग यथा पूर्वे स जानाना उपासते। अथर्व ६-६४-१

२. स वः पृच्यन्तां तन्व स मनांसि समु व्रता।
स वोऽय ब्रह्मणस्पतिर्भगः सं वो अजीगमत्। अथर्व ६-७४-१

३ ज्यायस्वन्तश्चित्तिनो मा वियौष्ट सराधयन्त. सधुराश्चरन्त.।
अन्यो अन्यस्मै वल्गु वदन्त एत सध्रीचीनान्वः समनसस्कृणोमि।
अथर्व० ३-३०-५

४ समानी प्रपा सह वोऽन्नभागः समाने योक्त्रे सह वो युनज्मि।
सम्यञ्चोऽग्नि सपर्यतारा नाभिमिवाभित। अथर्व० ३ ३०-६

५. सध्रीचीनान्व समनसस्कृणोम्येकश्नुष्टीन्संवननेन सर्वान्।
देवा इवाऽमृतं रक्षमाणा सायप्रात. सौमनसो वो अस्तु।
अथर्व० ३-३०-७

६. सं वो मनांसि स व्रता समाकूतीर्नमामसि।
अमी ये विव्रता· स्थन तान्व. सं नमयामसि। अथर्व०६ ९४-१

७. समानो मन्त्रः समितिः समानी समान मनः सह चित्तमेषाम्।
समान मन्त्रमभि मन्त्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।
अथर्व० १० १९१-४

८ समानि व आकूति. समाना हृदयनि व.।
समानमस्तु वो मनो यथा नः सुसहासति। ऋ० १०-१९१-४

९ तत्सवितुर्वरेण्य भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।
ऋ० ३-६२-१०

१०. दृतेदृ ह्मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम्
मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे।
मित्रस्य चक्षुषा समीक्षा महे। यजु ३६-१८

मध्याह्न में स्वसामर्थ्यानुसार सात्विक और रोचक पाक सम्पन्न करके सपरिवार प्रीतिपूर्वक एकत्र मिलकर भोजन करें तथा अपने आश्रित सेवक आदिको को भी उससे सत्कृत करें।

सामाजिक कृत्य—प्रातः ब्राह्म मुहूर्त में सब आर्य सामाजिक पुरुष मिलकर नगर में संकीर्तन कर जिसमें परमपिता की महिमा और आर्य समाज के गुणों का गान मधुर स्वर मे किया जाए। इस के पश्चात् समाज मन्दिर में वापिस आकर सार्वजनिक होम यज्ञ किया जाए, जिसमें उपर्युक्त विहित तथा शिव सकल्प के समान मन्त्रों से विशेष आहुतियां दी जाए।

अपराह्न वा सायकाल में स्वसुभीते के अनुसार सब आर्य बन्धु जन समाज मन्दिर आदि में एकत्र होकर सभा करें, उसमें आर्य समाज स्थापना दिवस की स्मृति में आर्य समाज की स्थापना के इतिहास, आर्य समाज की उपयोगिता तथा सगठन की महिमा पर निबन्ध पाठ और भाषण किए जाए। इस अवसर पर गत वर्ष के आर्य सामाजिक कार्यों का सिंहावलोकन किया जाए और आगामी वर्ष के लिये भावी कार्यक्रम की पाडुलिपि भी बनाई जाए और अपने समाज में सदस्य वृद्धि का प्रयत्न किया जाए। तदनन्तर मधुर गान वाद्य और शान्ति पाठ के साथ सभा विसर्जित की जाए।

आज के दिन ही आस-पास के ग्रामों आदि में, जहां कहीं सम्भव हो, नूतन आर्य समाज स्थापना का उद्योग भी किया जाए।

—

(५ पृष्ठ का शेष)

बनाए अन्यथा संसार से मानवता सर्वथा तिरोहित हो जाएगी। इसी में सभी की भलाई है। हमे महर्षि दयानन्द के निम्न शब्दो को सदैव याद रखना चाहिए कि—'जो उन्नति करना चाहो, तो आर्यसमाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिए, अन्यथा कुछ हाथ न लगेगा। (सत्यार्थ प्रकाश एकादश समुल्लास) आर्य समाज स्थापना दिवस पर हम प्रतिज्ञा करें कि आर्यसमाज के मानव निर्माण आन्दोलन को स्वयं आदर्श प्रस्तुत कर तथा पूर्ण सहयोग प्रदान कर आगे बढाने मे कोई कसर बाकी न रखें।

—

(२ पृष्ठ का शेष)

श्री महीधर भाष्य का अनुवाद करते हुये पं० ज्वाला प्रसाद मिश्र विद्यावारिधि लिखते हैं–(मे) मेरी (नाभिः) नाभि (चित्तम्) ज्ञान रूप हो (मे) मेरी (पायुः) गुदेन्द्रियं (विज्ञानम्) ज्ञान जनित संस्कार का आधार (भसत्) मेरी स्त्री की योनि (अपचितिः) प्रजाजनन में समर्थ हो, यह यजमान की पत्नी के विषय में है, (मे) मेरे (मुष्कौ) दोनों अण्डकोष (आनन्दनन्दी) आनन्द से समर्थ हों (पसः) मेरी जननेन्द्रिय (भगः) ऐश्वर्य (सौभाग्यम्) सौभाग्य सम्पत्ति हो (जंघाभ्याम्) जंघा द्वारा (पद्भ्याम्) चरणों द्वारा (धर्मः) धर्म रूप हो अर्थात् सब अंगों से धर्म रूप (अस्मि) हूं (विशि) प्रजा में (प्रतिष्ठितः) प्रतिष्ठित (राजा) राजा हूं ।[1]

क्या श्री प्रेमाचार्य को यहां अश्लीलता नहीं दृष्टिगोचर होती है ? क्या श्री प्रेमाचार्य या पौराणिक टोली का कोई बहुवचन ... करें कि गुदा इन्द्रिय ... संस्कार का आधार कैसे ... संस्कार कब होता है ?

गुदा का संस्कार ... होता होकर इसलिए ... आप पौराणिक लोग 'गुदा' ... कराकर खूब धनवान् हो जाएंगे । क्या यही सनातन धर्म है ।

आक्षेपकर्ता को चुल्लू भर पानी में मर जाना चाहिए ।

श्री प्रेमाचार्य की लेखनी में शक्ति हो तो मेरे लेख का उत्तर दें अन्यथा व्यर्थ का आक्षेप बन्द करें ।

१. शुक्ल यजुर्वेद संहिता, मिश्र भाष्य, पूर्वार्द्ध पृष्ठ ८६५ ।

—

★ ब्रह्म सत्ता की महत्ता को विश्व के कण-कण में व्याप्त देखने के लिए अपना मधुमर स्वभाव बना लो ।

प्रवेश सूचना

अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय टंकारा में प्रवेश प्रा... । इस विद्यालय में मुख्यतया ... वर्ष की के बच्चों का तथा वेद शास्त्र ... उपनिषद्, व्याकरण आदि ... होता है ।

इस वर्ष अंग्रेजी तथा ... भाषा के अध्यापन का भी प्रबन्ध किया गया है, ट्रस्ट विद्यार्थियों को भोजन वस्त्र, आदि की सुविधाएं देता है । विद्यार्थियों को गर्म वस्त्र तथा बिस्तर अपना रखना होता है । तथा प्रारम्भ में ५०) रुपये सिक्युरिटी का रखना होता है ।

इस विद्यालय के स्नातक भारत में तथा बाहर भी सफलता पूर्वक कार्य कर रहे हैं ।

आचार्य
अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक विद्यालय टंकारा
(राजकोट) गुजरात

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ ।

कृण्वन्तो — ओ३म् — विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वार्षिक शुल्क 15) वर्ष 14, अंक 15 30 चैत्र सम्वत् 2037, तदनुसार 12 अप्रैल 1981 का अंक दयानन्दाब्द 156

वैशाखी के अवसर पर गुरुकुल कांगडी हरिद्वार में 11-12-13 अप्रैल को विशेष समारोह

पंजाब से अधिक से अधिक आर्य बन्धु गुरुकुल पहुंचें

● दीक्षान्त भाषण सुप्रीम कोर्ट के अवकाश प्राप्त न्यायाधीश श्री हंसराज जी खन्ना देंगे।

★ बृहद् यज्ञ के ब्रह्मा श्री पं. राजगुरु जी शर्मा होंगे।

★ महान् वैज्ञानिक प्रदर्शनी आर्य भट्ट

गुरुकुल कांगडी विश्वविद्यालय हरिद्वार का वार्षिक उत्सव इस बार ११ १२ १३ अप्रैल १९८१ को बडी धूमधाम से मनाया जा रहा है। इस अवसर पर वेद सम्मेलन शिक्षा सम्मेलन आर्य सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है।

विद्यार्थियों का वेदारम्भ संस्कार तथा दीक्षान्त समारोह भी इसी अवसर पर होगा।

गत तीन चार वर्षों मे गुरुकुल की जो क्षति हुई उसकी पूर्ति तो असम्भव है परन्तु गुरुकुल की व्यवस्था जब से सभा के हाथ मे आई है तब से गुरुकुल निरन्तर उन्नति के शिखर पर अग्रसर है। उत्सव का भी इस वर्ष विशेष प्रबन्ध किया जा रहा है। आर्य बन्धुओं को वर्तमान रूप मे गुरुकुल को देखकर बडी प्रसन्नता होगी। प्रातःकाल ६ बजे जिस समय विद्यालय विभाग के विद्यार्थी यज्ञ करते हुए वेद मन्त्रों का पाठ करते हैं। सुनने वाले मन्त्रमुग्ध हो जाते हैं। इस समय विद्यालय विभाग में लगभग अढाई सौ विद्यार्थी पढ रहे हैं।

इस बार गुरुकुल मे जो आर्य भट्ट प्रदर्शनी का आयोजन किया गया है वह देखने योग्य है यह प्रदर्शनी आर्य भट्ट नाम से जो उपग्रह भारत ने छोडा था और जो अन्तरिक्ष में चक्कर लगा रहा है उसके नाम पर रखी गई है।

इस प्रकार इस बार जो गुरुकुल का उत्सव हो रहा है वह बडा प्रभावशाली होगा। गुरुकुल कांगडी आर्यों का एक तीर्थ स्थान है स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने इसे अपने खून पसीने से सींचा था। इसलिए इसे उन्नत करना सभी आर्यों का कर्त्तव्य बनता है। अगर हम अपने अपने कर्त्तव्य को निभाएं और तन मन धन से गुरुकुल को सहयोग दें तो वह महात्मा मुन्शीराम जी (स्वामी श्रद्धानन्द जी) का लगाया पौधा सदा लहलहाता रहेगा। आर्य बन्धु अपने प्यारे गुरुकुल के उत्सव पर अवश्य पहुंचें।

हमारी प्रार्थना है कि इस समारोह मे उत्तर प्रदेश दिल्ली हिमाचल और पंजाब से अधिक से अधिक आर्य बन्धु भाग लेने के लिए गुरुकुल कांगडी मे पधारें और इस आर्य समाज की महान् संस्था को उन्नत करने में सभा को अपना पूरा सहयोग दें।



गुरुकुल कांगडी के संस्थापक महात्मा मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द)

12 अप्रैल को मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्म दिवस मनाए

राम नवमी का पर्व

राम नवमी पर्व अर्थात मर्यादा पुरुषोत्तम राम का जन्म दिन १२ अप्रैल १९८१ रविवार का है। [illegible] गुणों के महान भण्डार थे उनके जीवन को जब हम एक भाई के रूप में एक पुत्र के रूप मे एक पति के रूप में [illegible] के रूप मे देखते हैं तो पता चलता है कि वह कितने महान थे। श्रीराम ने अपने जीवन में सभी मर्यादाओं का विधिवत पालन किया। उनका जीवन महान प्रेरणाप्रद है।

१२ अप्रैल को सभी आर्य बन्धु राम नवमी का पर्व बडी धूम धाम से मनाए।

रामनवमी पर्व चैत्र सुदी 9 सम्वत् 2038 12 अप्रैल 1981 वि.

दिव्य गुणागार मानव—श्रीराम

ले० ● आचार्य दीनानाथ सिद्धान्तालकार ई०, ३७, शास्त्री नगर जयपुर

अरण्य मे एक वृक्ष के नीचे वाल्मीकि मुनि ध्यान मग्न बैठे थे। वृक्ष पर एक क्रौंच प्रसन्न मुद्रा मे क्रीडारत था। इतने मे एक व्याध ने वृक्ष के नीचे से छिपकर एक बाण इस युगल पर छोडा। दोनो में से एक पक्षी बाण विद्ध हो नीचे गिर पडा। जीवन साथी मे से एक के वियोग से अत्यन्त दु खी हो दूसरा पक्षी भी अनायास भूमि पर गिर पडा। यह सारी क्लेश पूर्ण घटना कुछ ही क्षणों मे हो गयी। पर क्रौंच युगल के इस प्रकार भूमि पर गिर जाने से कुछ ध्वनि होना स्वाभाविक ही थी। ध्यानावस्थित मुनिवर वाल्मीकि का चित्त चचल और डावा-डोल हो गया। हृदय मे मर्मान्तिक पीडा और क्लेश तथा दूसरी ओर मृत क्रौंच युगल को देख मुनिवर के अन्त करण मे एक ओर करुणा दूसरी ओर उस पापी शिकारी के प्रति आक्रोश और क्रोध का समुद्र उमडना स्वाभाविक ही था। उसी समय ऋषिवर के मुख से इस व्याध के प्रति भाव के निम्न उद्गार स्वत ही निकल पडे—

मा निषाद प्रतिष्ठात्वमगम
शाश्वती समा ।
यत् क्रौंच मिथुनादेकमवधी
काम मोहितम् ।

हे व्याध! अनन्त काल तक भी तू किसी प्रकार के आदर को प्राप्त न कर, क्योकि तूने क्रीडा रत क्रौंच युगल मे से एक को मार दिया।

★वाल्मीकि नारद सवाद
विश्व विख्यात श्रीराम★

इसी समय नारद मुनि अपने वीणा वादन के साथ उधर से वन मे आ निकले। दोनो नर पुगवो ने एक दूसरे के प्रति अभिवादन नमस्कार आदि किया और कुशल क्षेम पूछा। वाल्मीकि का कुछ उदास और खिन्न मुद्रा मे देख नारद ने जब इसका कारण पूछा, तब वाल्मीकि ने पूर्वोक्त दुखान्त घटना का वर्णन नारद को बताया। साथ मे यह भी कहा कि अब सरस्वती स्वत मेरे हृदय मे प्रस्फुटित हो वाणी पर उपस्थित है। मैं चाहता हू वर्तमान विश्व के मैं किसी ऐसे आदर्श व्यक्ति के जीवन का सागोपाग वर्णन करू जिसके जीवन मे ऐसी ही कोई करुणा-क्लेश भरी हृदय विदारक घटना हुई हो जिसमे जहा और उसे नरोत्तम के समस्त गुणो की वर्णयता पूर्ण मासी के चन्द्रमा की तरह चर्तुदिक आल्हाद, शान्ति और परकातरता का उजाला करे, वहा दूसरी ओर तेजस्वी सूर्य मण्डल की उष्ण रश्मियो की तरह दुर्दान्त पाप पर्वत को सर्वथा चकनाचूर कर देने वाली हो। वाल्मीकि रामायण के अनुसार मुनि के उपर्युक्त प्रश्न के अन्तर्गत आदर्श व्यक्ति मे निम्न १६ गुण होने चाहिए। वह पूछते हैं—

'हे नारद, इस समय ससार मे ऐसा कौन व्यक्ति है जो (१) गुणवान् (२) वीर्यवान् (३) धर्मज्ञ (४) कृतज्ञ (५) दृढव्रती (६) चरित्रवान् (७) सत्यवाक् (८) सर्वभूतो के प्रतिहितवान् (९) विद्वान् (१०) समर्थ (११) अत्यन्त प्रिय दर्शन युक्त (१२) आत्म शक्तिवान् (१३) क्रोध विजयी (१४) द्युतिमान (१५) किसी के प्रति भी ईर्ष्यालु नही (१६) और कभी पाप व अन्याय के प्रति जिसे क्रोध आने पर समस्त लोक भय क्रान्त हो जाए।'

वाल्मीकि मुनि के इस प्रश्न के उत्तर मे नारद ने वर्तमान काल मे उपस्थित ऐसे अनेक गुण युक्त किस अद्वितीय व्यक्ति का वर्णन किया उसके ३२ गुणों का रामायण के अनुसार निम्न स्वरूप है--

जन जगत् मे प्रसिद्ध इस समय इक्ष्वाकु वश उत्पन्न राम ही ऐसा महापुरुष है जो (१) निश्चित आत्मवान् (२) महावीर्य (३) द्युतिमान् (४) धृतिशील (५) सयमी (६) बुद्धिमान् (७) नीतिमान् (८) उत्तम वक्ता (९) गुणवान् (१०) शान्तिवान् (११) सुदृढ अगो वाला (१२) बडी भुजाओ वाला (१३) शखतुल्यग्रीवा युक्त (१४) बडी ठोडी वाला (१५) चौडी छाती वाला १६. दीर्घश्वास युक्त १७. सुगठित शरीर १८ शत्रु नाशक १९ मोटो तक दीर्घ भुजाओ वाला २०, सुदृढ नस नाडी २१ सुन्दर मस्तक २२ विक्रमशील २३, आर्य २४ सब के प्रति समान दृष्टि २ सदा प्रियदर्शी २६ सदा श्रेष्ठ पुरुषो से घिरा हुआ जैसे समुद्र नदियो से घिरा होता है २७ गम्भीरता में समुद्र के सदृश २८. धैर्य मे हिमालय सदृश २९. वीर्य मे विष्णु सदृश ३० चन्द्रमा सदृश प्रिय दर्शन युक्त ३१ क्रोध आने पर कालाग्नि सदृश ३२ क्षमा में पृथिवी सदृश—कौशल्या माता के आनन्द का वर्धक सर्व गुण युक्त ऐसे श्री राम हैं।

★युवराज पद और वनवास—अविचल श्रीराम★

भारत को युग-युगान्तर कालीन सभ्यता सस्कृति के मूल आधार श्री मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम और कर्मयोगी श्री कृष्ण हैं। अगर इन दोनो उच्चतम महापुरुषो के जीवन को भारत के इतिहास मे से बहिष्कृत व इनका अवमूल्यन कर दिया जाए। जैसाकि आज कल कुछ पथभ्रष्ट और पाश्चात्य शिक्षा प्रभावित अपने को बुद्धिजीवी कहने वाले व्यक्ति करने का प्रयास कर रहे हैं तो अध्यात्म-तत्व ऋषि-मुनियो के पावन वैदिक गान की गूज और गगा यमुना, सरस्वती नर्मदा, गोदावरी, कृष्णा इत्यादि समस्त देश मे अनवरत प्रवाहित, सरिताओ की उत्ताल तरगो से आप्लावित शस्य श्यामला भारत भूमि कलुषित रेगिस्तान का रूप, निश्चय ही धारणा कर लेगी। भारत पर कुछ सदियो से, सतत विदेशी आक्रमणो के बावजूद जगल म एक टूटे फूटे अभाव पूर्ण झोपडे से लेकर नगर की उच्चाति उच्च अट्टालिका तक अनेक झझावातो और वात्य चक्रो के आक्रमणो के होते हुए भी जिस एक टिमटिमाते दीपक ने इन्हे सदा, सर्वक्षण, उजागर और जाज्वल्यमान किया हुआ है, वह श्रीराम और श्री कृष्ण की गुणावलि ही है। जरा कल्पना कीजिए, उस अवसर की जब राम को अयोध्या मे घोषणा की गयी कि कल प्रात श्रीराम युवराज पद के सिंहासन पर अभिषिक्त होगे। नगर के समस्त अबाल वृद्ध हर्ष के सागर मे मग्न हो गये। रात-भर नगर मे आमोद-प्रमोद के बहु विध कार्यक्रम होते रहे और जब प्रात सूर्य उदय हुआ अभिषेक की पूर्ण तैयारी हो गई, तब श्रीराम राजकीय वेश भूषा त्याग कर वल्कल वस्त्र धारण कर १४ वर्ष के वनवास जाने को समुद्यत हो गये। उस समय इस दिव्य पुरुष की क्या अन्तर और बहिरग स्थिति थी, वाल्मीकि मुनि के शब्दो मे-

※ आहूतस्य अभिषेकाय विसृष्टस्य वनाय च।

★ न मया लक्षित स्तस्य स्वल्पोऽप्याकार विभ्रम।

(अयोध्या काण्ड)

श्रीराम को जब अभिषेक के लिए बुलाया गया और जब उन्हें वन जाने का आदेश दिया गया-मैंने दोनो अवस्थाओं मे उनके चेहरे पर किचिन्मात्र भी चिन्ता परेशानी व मति विभ्रम नहीं देखा। गहरी छानबीन कर लो समस्त विश्व के इतिहास की पर ऐसी असाधारण और जीवन के प्रति सर्वथा तटस्थ दृष्टि का उदाहरण दुर्लभ ही है।

★भारद्वाज आश्रम में श्रीराम की प्रतिज्ञा★

जीवन सगिनी पतिव्रता सीता ज्येष्ठ भ्राता के प्रति पितृ तुल्य भावना के साथ दृढ व्रत और सयम के मूर्तरूप अनुज लक्ष्मण के साथ दण्डकारण्य मे प्रविष्ट हो, सबसे प्रथम जब श्रीराम ऋषि भारद्वाज के आश्रम में पहुचे और वहा समवेत अनेक ऋषि मुनि व उनके परिवार वृन्द के सम्मुख १४ वर्ष के वनवासकाल के लिए आशीर्वाद मागने गये तब समस्त वर्ग ने एक स्वर से अपने आश्रमों और साधना कुटियो पर निशाचरो और राक्षसो द्वारा अहर्निश किए जा रहे आक्रमणों पवित्र यज्ञ अग्नियो को मास अस्थियो द्वारा भ्रष्ट करने तथा अन्य अनेक प्रकार के गर्हित अत्याचारों का साश्रु नयनो से वर्णन किया। यह सब सुन श्री राम का हृदय पसीज गया अनवरत अश्रु धारा बहने लगी। तापस वर्ग के प्रति पूर्ण विनम्रता और श्रद्धा प्रकट करते हुए श्रीराम ने कहा—मैं आपके चरणो मे एक राज कुमार के रूप मे नही पर एक तुच्छ वनवासी के रूप में उपस्थित हुआ हू। आप सब पूज्य तपस्वी वर्ग की यह करुण कथा सुन मैं अत्यन्त व्यथित हो गया हू। प्रभु को साक्षी कर आप सब वन्दनीय महानुभावो के सम्मुख मैं यह घोषणा करता हू—

● न त्वह कामये राज्य न सौख्य न पुनर्भवम्।

★ कामये त्वह दु ख सन्तप्तानां प्राणिनामार्तिनाशनम्।

मुझे राज्य की इच्छा नही, सुख व पुनर्जन्म की कामना नही। मेरी तो एक ही कामना है, दु ख ग्रस्त प्राणियो के कष्टकानाश करना। नि सन्देह श्रीराम का समूचा जीवन चक्र इसी एक बिन्दु के चारो ओर अनवरत घूमता रहा है।

श्रीराम की विजय का रहस्य, दृढ सकल्प आत्मबल+

विजय दशमी का सहस्रो, लाखों वर्षों से चला आ रहा पर्व आज भी भारतीयो के लिए अत्यन्त प्रेरक एक ही सन्देश लेकर प्रति वर्ष आता है। १४ वर्ष के वनवास काल में श्रीराम को अनेक अप्रत्याशित सकटों और विपदाओंसे जूझना पडा पर उन्होने आत्म विश्वास कभी नही खोया। रावण की बहिन सूर्पणखा का कुत्सित व्यवहार खर, दूषण राक्षसों से युद्ध, स्वर्ण मृग के रूप में छल-कपट, साधुवेश मे रावण द्वारा सीता अपहरण, सीता की चतुर्दिक खोज, हनुमान और

(शेष पृष्ठ ९ पर)

सम्पादकीय—

गुरुकुल कांगड़ी पहुंचो !

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का वार्षिकोत्सव इस बार ११ १२ १३ अप्रैल को हो रहा है। कई वर्षों के बाद इस बार यह उत्सव विधिवत रूप से होगा। विगत तीन चार वर्ष में हमारी यह सस्था किन हालात मे से गुजरी है वह किसी से छिपे नही है। जुलाई १९८० मे तीन-चार वर्ष के सघर्ष के बाद गुरुकुल विश्वविद्यालय का प्रबन्ध फिर हमारे हाथ मे दे दिया गया। चूकि पहले हालात कुछ सुखद न थे अत मुझे यह आशका थी कि कही इस बार का उत्सव ठीक प्रकार से हो सके या न। इस लिए पिछलेदिनो दो दिन मैंने गुरुकुल मे ही गुजारे ताकि सारे प्रबन्धों को स्वय देख सकू। आज मुझ यह कहते हुए असीम हर्ष हो रहा है कि वर्तमान स्थिति मे उत्तमोत्तम जो भी प्रबन्ध हो सकता था वह किया जा रहा है। इसी लिए मैं कह रहा हू कि गुरुकुल कांगड़ी पहुचो।

मुझे यह विश्वास है कि गुरुकुल के वर्तमान रूप को देख कर लोग प्रसन्न होंगे। अब न केवल वहा विधिवत पढाई हो रही है कुछ नए परीक्षण भी किए जा रहे हैं। सब से बड़ा यह कि छोटे बच्चो को देखकर अब कोई यह नही कह सकता कि वह किसी अनाथालय में है। साफ-सुथरे कपड़े पहन कर वह प्रात ६बजे हवन यज्ञ पर बैठ जाते हैं। मैंने इस बार उन्हे वेद मन्त्रो का पाठ करत हुए भी देखा। उन्हें योग आसन भी सिखाए जाते हैं। उसी के साथ उनके लिए खेलो के दूसरे प्रबन्ध भी कर दिए गए हैं। अपने बुजुर्गों के साथ किस तरह मिलना चाहिए और अपने मित्रों सम्बन्धियो तथा बहनो व भाइयो के साथ उन्हें क्या व्यवहार करना चाहिए उन्हे यह भी सिखाया जाता है।

इस समय विद्यालय मे अढाई सौ के लगभग बच्चे हैं और विश्वविद्यालय मे भी अढाई सौ के करीब छात्र हैं।

जो वार्षिकोत्सव ११ अप्रैल को शुरू हो रहा है उसमे कई सम्मेलन होंगे। वेद सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन और आर्य सम्मेलन। लेकिन दो ऐसे समारोह भी होंगे जो विशेष महत्व रखते हैं। एक वह जिसे दीक्षान्त कहते हैं। उस समय वह छात्र अपनी उपाधिया लेते हैं जो अपनी पढाई समाप्त करके जा रहे होते हैं। आचार्य और कुलपति उन्हे उपदेश देते हैं कि अपने जीवन मे उन्हे क्या कुछ करना चाहिए। और वह प्रतिज्ञा करते हैं कि उन्हें जो उपदेश दिया गया है उस पर जरूर अमल करेंगे, दीक्षांत के समय किसी न किसी प्रतिष्ठित और विख्यात व्यक्ति को बुलाया जाता है जो उस समय अपने विचार सबके सामन रखता है। इस बार दीक्षांत भाषण सुप्रीमकोर्ट के अवकाश प्राप्त न्यायाधीश श्री हसराज खन्ना देंगे।

दीक्षांत सस्कार के अतिरिक्त वेदारम्भ सस्कार भी होता है जब कोई न कोई सन्यासी नए बच्चो का आशीर्वाद देते हैं। इस बार जो समारोह हो रहा हैं उसमे विज्ञान की एक प्रदर्शनी की व्यवस्था की गई है। जैसे कि पाठकों को ज्ञात है आर्य भट्ट के नाम से एक उपग्रह अन्तरिक्ष मे चक्कर लगा रहा है यह प्रदर्शनी भी उसी के नाम पर रखी गई है। इसमें कुछ और विश्वविद्यालय भी भाग ले रहे हैं इसलिए मैं यह समझता हू कि यह भी एक रुचिकर प्रदर्शनी होगी।

पहले जब कभी गुरुकुल का वार्षिकोत्सव हुआ करता था तो उसके लिए विशेष पण्डाल बनाया जाता था। इस बार यह उत्सव विश्वविद्यालय भवन मे होगा जहां कम से कम ५ हजार व्यक्तियो के बैठने की व्यवस्था है। इस बार बाहर से कई प्रतिष्ठित व्यक्ति भी आ रहे हैं। भारत सरकार और उत्तर प्रदेश सरकार के कई उच्चाधिकारी भी आ रहे हैं वह देखना चाहते हैं कि अब गुरुकुल की क्या हालत है। भारत सरकार ने तो यह पेशकश भी की है कि अगर यहा वैदिक सिद्धान्तो और पुराने इतिहास पर अनुसन्धान किया जाए तो सरकार उसके लिए रुपया भी देने को तैयार है।

गुरुकुल विश्वविद्यालय के वाचनालय में इस समय एक लाख के लगभग पुस्तकें हैं। जिनमें से कुछ अब दुर्लभ हैं। अत गुरुकुल की वतमान स्थित और उसकी आगे की योजनाओ को देखने के लिए ही भारत सरकार के कुछ प्रतिनिधि आ रहे हैं।

इसलिए मैं चाहता हू कि पजाब से ज्यादा से ज्यादा लोग वहा पहुचे। इस गुरुकुल पर पंजाब का बहुत बडा अधिकार है। उसकी पुरानी इमारतों पर जो पत्थर लगे हुए हैं उनमें कम से कम ८० प्रतिशत पजाबियो के नाम पर हैं। मेरे लिए इस बार एक आश्चर्य की बात भी हुई। मैं जब बाल विद्यालय को देख रहा था तो अकस्मात् मेरी नजर एक कमरे पर जा पड़ी। वह कमरा मेरे पिता जी ने अपने पिता जी की स्मृति में बनवाया हुआ था। मुझे उसका कुछ पता न था। पहली बार मैंने वह कमरा देखा है। लुधियाना के श्री लम्भू राम नैयर ने भी कई कमरे बनवाए थे। कई जगह उन के नाम के पत्थर भी लगे हुए हैं। गुरुकुल की पुरानी भूमि जहा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरुकुल की पहली झोपड़ी बनाई थी एक सौ एक वर्ष का एक वृद्ध वहा रहता है वह बताता है कि स्वामी श्रद्धानन्द ने एक एक ईट जोड़ कर किस प्रकार यह सस्था खड़ी की थी। इस बार हमने उसे भी इस समारोह पर बुलाया है।

दिल्ली से हमारे भाई दो-तीन बसें भर कर वहा जा रहे हैं लुधियाना और जालन्धर से भी कई भाई और बहनें जा रहे हैं। लेकिन मैं तो चाहता हू कि सारे पजाब से ज्यादा से ज्यादा लोग इस बार वहा पहुचे ताकि वह देख सकें कि उनका गुरुकुल किस प्रकार एक नया रूप धारण कर रहा है।

—वीरेन्द्र

सभा की आर्थिक स्थिति

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब एक बहुत बडा सगठन है जिसने कई प्रकार के उत्तरदायित्व अपने ऊपर ले रखे हैं। सबसे पहला काम उसका वेद प्रचार का है। इस विभाग का एक लाख से ऊपर का अपना वार्षिक बजट है इसके आधीन एक दर्जन के करीब उपदेशक और प्रचारक महानुभाव काम कर रहे हैं। सभा के कार्य क्षेत्र की दृष्टि से उनकी सख्या बहुत कम है। किन्तु हम नए व्यक्ति नही रख पा रहे क्योंकि इस विभाग मे पहले ही घाटा चल रहा है। पजाब की चालीस पच्चास समाजें ही उत्सव तथा वेद प्रचार कराती हैं और वही सभा की कुछ सहायता करती हैं। पुरानी मृत और अर्धमृत समाजो का पुनर्जीवित करने तथा नई समाजो की स्थापना पर सभा को अपनी ओर से व्यय करना पड़ता है क्योंकि वे समाजें कुछ नही दे सकती। सभा का दूसरा प्रमुख कार्य लिखित प्रचार का है। उसके आधीन सभा अपना एक साप्ताहिक पत्र आर्य मर्यादा निकाल रही है जो वर्षों के प्रयत्न के बावजूद अपना खर्च निकालने के योग्य नही हो पाया। इसी विभाग के आधीन नये साहित्य के प्रकाशन के लिए सभा को हजारो नही लाखो रुपयो की आवश्यकता है। हम इस समय तक धनाभाव के कारण दूसरो का प्रकाशित साहित्य ही वितरित कर रहे हैं।

सभा का तीसरा प्रमुख कार्य प्रचार केन्द्रो के रूप मे अपने महापुरुषो के स्मारक खड़े करना है। कादियां मे इस वर्ष लेखराम स्मारक की और माही मे स्वामी स्वतन्त्रानन्द स्मारक की स्थापना कर दी है इन दोनों स्मारकों के लिए सभा ने अपनी ओर से ग्यारह-ग्यारह हजार रुपये की राशि दी है। तलवन मे स्वामी श्रद्धानन्द जी का स्मारक अभी बनना है हम पजाब सरकार की सहायता की आशा मे इसे स्थगित करते चले आ रहे हैं। परन्तु बुनियादी तौर पर यह जिम्मेदारी सभा की है। करतारपुर का गुरु विरजानन्द स्मारक भी सभा का है। परन्तु आर्थिक उत्तरदायित्व से बचने के लिए हमने यह जिम्मेदारी स्मारक के ट्रस्ट को इसका सचालन दे रखा है और मुझे प्रसन्नता है कि इस ट्रस्ट के प्रधान सेठ शिवचन्द जी तथा मन्त्री श्री चतुर्भुज जी मित्तल बहुत अच्छा कार्य कर रहे हैं। इसको देखकर मेरा सदा यह सुझाव रहा है कि इन स्मारको के ट्रस्टो पर ही इन के सचालन का उत्तरदायित्व डाला जाए तो अच्छा है।

सभा का चौथा काम विद्यालय सस्थाओ का सचालन है। सभा का लाखो रुपया इन सस्थाओ के रिजर्व फड के रूप मे यूनिवर्सिटियों और शिक्षा विभाग के नाम एफ डी यो के रूप मे जमा पड़ा है, फिर इनके स्वतन्त्र सचालन के लिए सभा को अभी लाखो रुपयो की आवश्यकता है क्योंकि स्टाफ के वेतन मान बढ जाने से यह सभी सस्थाए घाटे पर हैं। स्थानीय समितिया भी इतने बड़ घाटे की पूर्ति मे अपने आपको असमर्थ पा रही हैं। इसी कारण ही कई स्थानो पर इन सस्थाओ के स्टाफ ने बडी समस्याए खड़ी कर रखी हैं।

सभा का पाचवा काम सभा के अपने नये भवन का निर्माण है। जिसके लिए कई लाख रुपये की योजना है किन्तु धनाभाव के कारण सभा अपने जीर्ण शीर्ण भवन के अन्दर काम चला रही है।

सक्षेप मे इन सब कामो के पूरा करने के लिए सभा को लाखो रुपयो की आवश्यकता है। सभा कोई व्यापारिक सगठन तो है नही एक प्रचारक सगठन है और अपनी समाजो की सहायता से चल रहा है। इस बार नवाशहर के अधिवेशन के अवसर पर इन सब समाजो के प्रतिनिधियो ने अपनी २ समाजो की ओर से सभा को विशेष और अधिक से अधिक सहायता भेजने का निश्चय किया था। मेरी समाजो के अधिकारियों और सभा के प्रतिनिधियो से सानुरोध प्रार्थना है कि वे इस ओर शीघ्र ध्यान दें ताकि सभा की योजनाओ को प्रगति मिले।

— रामचन्द्र जावेद सभा मन्त्री

लाला लाजपतराय के जीवन पर एक प्रसिद्ध नाटक—

शेरे पंजाब लाला लाजपतराय

ले०—श्री जी० एस० कोमल

(१५ मार्च से आगे)

लाजपत—माता के पाव छूकर, चरण स्पर्श माता जी,

माता—चिरंजीव रहो, पीठ पर प्यार देती है,

लाजपत—पिता के चरण स्पर्श करते हैं, पिता जी प्रणाम।

मुन्शी—चिरजीव रहो बेटा! कन्धे से पकड़ कर उसको ऊपर उठाता है और आराम कुर्सी पर बैठ जाता है।

लाला लाजपतराय सोफे के बीच में बैठ जाते हैं, इनके एक तरफ लाला जी बन्सीलाल और दूसरी तरफ डाक्टर मुहकमदास तीन-चार व्यक्ति और साथ आए थे, वो बारी-बारी नमस्ते करके चले जाते हैं लाला लाजपतराय गले में से हार उतार करके माता जी को पकड़ा देते हैं।

माता—मुझे दो मैं सम्भाल लूंगी, हारो को लेकर बाहर चली जाती है।

बन्सी—आपकी हिन्दुस्तानी में तकरीर का बड़ा चर्चा हुआ।

लाजपतराय—पहले एक बम्बई के डेलीगेट ने सवाल उठाया कि इंगलिश बिना किसी और भाषा में तकरीर करना कांग्रेस के विधान के विरुद्ध है, मैंने बड़े जोर से जवाब दिया कि कांग्रेस के विधान के विरुद्ध नहीं, मैंने बड़े जोर से जवाब दिया कि कांग्रेस के विधान में कोई ऐसी शर्त नहीं कि प्रत्येक कार्यवाही इंगलिशमें हो, अगर कोई ऐसी शर्त है तो मैं कांग्रेस छोड़ने के लिए तैयार हूं, इस बात से मामला ठण्डा हो गया।

लाला. बन्सीलाल व डाक्टर मुहकमदास प्रशंसा के लहजे में हंसते हैं,

मुन्शी—काका जो मुलक की सनअती तरक्की पर जोर दिया यह बिल्कुल ठीक कदम है,

डा०—सनअत के बारे में क्या सवाल था?

लाजपत—यह भी हिन्दुस्तानी बोलने की तरह एक नया मसला था जिसके लिए कांग्रेस के डैलीगेट तैयार नहीं थे, पर खुले जलसे में तकरीरों करने से पहले कई डैलीगेटों से निजी तौर पर बात की और उन्हें समझाया कि जहां मुलक की आजादी जरूरी है उसके साथ-साथ आर्थिक खुशहाली भी?

बन्सी—हां, मैंने आपके जाने के बाद ट्रिब्यून में आपका पत्र पढ़ा था जिसमें आपने जानवरोंकी हड्डियों के साथ पैदावार बढ़ाने की सलाह दी थी।

लाजपतराय—ये तो खेती बाड़ी का मामला था, परन्तु कांग्रेस के जलसे मे मैंने कारखाने लगाने पर जोर दिया, कपड़े के कारखाने, लोहे के कारखाने, सीमेंट के कारखाने, देखो कितने हजार गज कपड़ा बाहर के मुलकों से आता है जिसके बदले में हमें सोना देना पड़ता है, हमारे देश में फौलाद कम होने के कारण सड़कों पर पक्के पुल नहीं बन सकते, प्रत्येक वर्ष बाढ़ से कितना नुकसान हो जाता है तर्क यह था कि जहां हम स्वतन्त्रता के लिए पूरी कोशिश कर रहे हैं वहां आर्थिक सम्बन्ध में भी दूसरों के अधीन न रहें, आर्थिक प्रधानता व राजनैतिक आजादी दोनों आवश्यक चीजें हैं, विपरीत बातों ने दुनियां के ताकतवर मुलक बरतानियां, अमरीका न केवल स्वतन्त्र ही है, बल्कि सनअत में भी बड़ी तरक्की कर चुके हैं।

बन्सी—इसी भाषण पर आपको कई डैलीगेटों की ओर से बधाई मिली।

लाजपतराय—हां, लाला बन्सीलाल जी मुझे उनकी तरफसे बधाई मिलने पर बेहद खुशी हुई, जो आरम्भ से मेरे खिलाफ थे अपनी विचार धारा को अमली रूप देने के लिए मैंने यह सलाह कांग्रेस के सामने रखी कि सनअत व दस्तकारी को ऊपर उठाने के लिए वार्षिक जलसे में एक नुमायश रखी जाए और यह नुमायश कांग्रेस के जलसे का जरूरी हिस्सा हो।

डा०—खूब लाला लाजपत राय जी, अगले वर्ष मैं भी आपके साथ कांग्रेस के सालाना जलसे पर चलूंगा और सनअत व दस्तकारी की नुमायश देखूंगा।

लाजपतराय—हां, अगले वर्ष पंजाब का डैलीगेशन बड़ा होना चाहिए।

डा०—लाला जी हमें तो हिसार के डैलीगेशन से मतलब है।

लाजपतराय—हिसार पंजाब का हिस्सा नहीं?

डा०—हिस्सा तो जरूर है पर यहां हिसार में हमारा अच्छा साथ बना हुआ है, अब समाज मन्दिर भी तैयार हो गया है, मैं चाहता हूं कि अब आपके साथ मिलकर काम करें।

लाजपतराय—किन्तु डाक्टर साहब मैं तो हिसार छोड़कर लाहौर जाने की सलाह कर रहा हूं।

बन्सी—हैरानी के साथ, नहीं लाजपतराय यह किस तरह हो सकता है, आप हिसार में आर्य समाज को आरम्भ करने वालों में हैं इस संस्था को बढ़ाने में आपने कितनी मेहनत की और कितना समय दिया, अब लगता, इस पौधे को आपके हाथों से पानी व परवरिश की जरूरत है।

लाजपतराय—मैं बहुत सोचकर इस फैसले पर पहुंचा हूं, प्रयाग से हिसार अठारह घण्टे का रेल का सफर था, एक-एक मिनट मेरा इस आन्तरिक बहस पर खर्च हुआ, लाला बन्सीलाल जी तीन बातें हैं पहले बताते समय मुझे कुछ दुःख होता है परन्तु मैं साफ-साफ कहूंगा गुस्सा नहीं करना, ठीक है आर्य समाज मन्दिर भी बन गया है, परन्तु मुझे अफसोस इस बात का है कि मैं अपने मित्रों में समाज के कार्यों के लिए उत्साह नहीं पैदा कर सका, उन्होंने कभी मेरी बात नहीं मोड़ी, दिल खोलकर धन दिया, इसलिए मैं उन का बड़ा धन्यवादी हूं, परन्तु समाज की साप्ताहिक सभा में कई बार मैं अकेला ही होता अथवा मेरा सहायक वजीरचन्द होता?

वजीरचन्द हाथ में पत्र लिए हुए तेजी से प्रवेश करता है।

वजीरचन्द—लाला जी चीफ कोर्ट से पत्र आया है,

लाजपतराय—जरा रुक जाओ वजीरचन्द जी।

वजीरचन्द—परन्तु यह पत्र बड़ा जरूरी मालूम होता है।

लाजपत—वजीरचन्द जी थोड़ी इन्तजार करो, दूसरी बात यह है कि मैं अपने काम का दायरा थोड़ा-बड़ा करने लग गया हूं। आर्य समाज केवल हिन्दुओं की संस्था है जब तक लोगों की भलाई के लिए कार्य करने के लिए कोई और समाज नहीं थी तो मुझे आर्य समाज को अपनी सरगर्मियों के लिए केन्द्र बनाना पड़ा, परन्तु अब जब इण्डियन नेशनल कांग्रेस जो मजहबी पाबन्दियों से आजाद है अपने पांवों पर खड़ी हो रही है, मैं देश की तरक्की व आजादी के लिये कांग्रेस के झंडे के नीचे बेहतर काम कर सकता हूं।

डा०—आप बेशक आर्य समाज को छोड़ कांग्रेस में दाखिल हो जाओ, परन्तु हिसार को मत छोड़ो।

लाजपत—यह बात मुझे तीसरे बिन्दु पर लाती है, पंजाब में इण्डियन नेशनल कांग्रेस को मजबूत बनाने के लिए मैं सूबे के एक कोने में नहीं बैठ सकता, इसलिए यह आवश्यक है कि मैं राजधानी में अपने पैर पक्के करूं।

मुन्शी—लाजपत, लाला बन्सीलाल व डाक्टर मुहकमदास इतनी वफादारी के साथ आपका काम देते आ रहे हैं। यह छोड़कर जरूरी है, म्युनिसिपल कमेटी के [illegible] हैं, सरकारी दफ्तरों में इनकी पूछी जाती है, आपको इनकी बात मान लेनी चाहिए, एक बात और है डिप्टी कमिश्नर साहब ने एक से ज्यादा आदमियों से बात की है कि गवर्नर ने आपको ई० ए० सी० यानि डिप्टी नामजद करने का फैसला किया है।

बन्सी—यह बात तो साहब बहादुर ने मेरे साथ भी की है।

लाजपतराय—मेरे लिए यह कोई नई बात नहीं, डिप्टी बनकर मुझे क्या मिलेगा?

मुन्शी—तुम डिप्टी [illegible] न बैठे रहोगे, एक दिन डिप्टी कमिश्नर बन जाओगे, डिप्टी कमिश्नर की सारे जिले में इज्जत होती है।

डा०—जिले का बादशाह होता है।

लाजपत—पर डाक्टर साहब लोगों के दिलों का बादशाह मेरा लक्ष्य है, जो विदेशी हकूमत का अंग बनकर मिल सकती है पहली बात तो यह है कि मैं सरकारी नौकरी नहीं चाहता क्योंकि व्यक्ति नौकरीके साथ अपनी आत्मा भी बेच देता है, दूसरा मुझे माली लाभ भी नहीं पहुंचेगा, क्योंकि अब भी एक डिप्टी की तनख्वाह से चार गुना कमा रहा हूं, मैं क्यों खुली आमदनी और आजादी को ठुकराऊं।

मुन्शी—सिर्फ इसलिए कि तेरे बूढ़े बाप की बहुत देर से इच्छा थी।

बन्सीलाल व डाक्टर मुहकमदास यह बाप बेटे का झगड़ा समझकर कोई दखल न देकर मुन्शी व लाला लाजपतराय को नमस्ते कहकर चल पड़ते हैं, लाजपतराय दरवाजे तक उन्हें छोड़ने जाते हैं।

लाजपत—गम्भीर होकर! मेरे अन्दर तूफान है, मुन्शी जी, इसे मैं रोक नहीं सकता, समय आ गया है कि मैं अपना मतलब साफ-साफ बता दूं, मैं समझता हूं कि मैं अपने मनोरथ से दूर-दूर जा रहा हूं।

मुन्शी—यह आपकी समझ की कमी है।

लाजपत—मेरे अन्दर शोला भड़क रहा है, उसकी तपस आप तक नहीं पहुंची यह मेरा दोष है क्योंकि मैं आपकी बातों को पूरा करने के लिए अपनी जमीर का गला घोंटता रहा. परन्तु हर एक वस्तु की सीमा होती है, मुन्शी जी मुझे समझने की कोशिश करो, मैं आपके आगे प्रार्थना करता हूं हिसार में मेरा दम घुटता है, मैं यहां से बाहर जाना चाहता हूं, जिस काम को करना मैं अपना कर्त्तव्य समझता हूं उसके निभाने की गुंजायश इस जगह करने में नहीं है चाहे आप लोगों की नजरों में मैं एक कामयाब दुनियादार हूं, पर यह बात मुझे हमेशा अन्दर से खाती है कि मैं अपने अपने निभाने से रुकता हुआ हूं इसीलिए दुनिया की कामयाबी में मेरी मौत है।

(क्रमशः)

औषधालय को 5 का हजार अनुदान

पंजाब के स्वास्थ्य मन्त्री श्री सरदारीलाल कपूर गत दिवस यहां आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना में पधारे। इस अवसर पर उन्होंने समाज के अन्तर्गत चलने वाले नि:शुल्क औषधालय के लिए ५ हजार का अनुदान देने की घोषणा की।

यह औषधालय गत ७ वर्षों से नि:शुल्क चल रहा है। यहां अब तक २ लाख से अधिक रोगियों की चिकित्सा की गई।



श्री सरदारी लाल जी कपूर स्वास्थ्य मन्त्री पंजाब सरकार आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना मे चल रहे फ्री हस्पताल मे रोगियो का रजिस्टर देखते हुए रणवीर भाटिया प्रधान उन्हें रजिस्टर दिखा रहे हैं साथ खड़े हैं। कुलवन्त राये सूद मैनेजर तुलसी दास चैतवानी मदनसैन अयोध्या प्रकाश तथा डा गुलझराय।

गु.कु. करतारपुर में प्रवेश आरम्भ

आपको यह जानकर हर्ष होगा कि श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर जिला जालन्धर (भारत सरकार के यूनिवर्सिटी ग्रांट कमीशन द्वारा मान्यता प्राप्त गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय से सम्बन्धित) मे नये छात्रों का प्रवेश १ मई १९८१ से शुरू है। स्कूल मे पढाये जाने वाले समानस्तर पर गणित अंग्रेजी आदि सभी विषयों के साथ संस्कृत तथा धार्मिक शिक्षा विशेष है। निशुल्क शिक्षा हिन्दी माध्यम योग्य अध्यापकों का प्रबन्ध स्वच्छ वातावरण तथा भोजन दुग्ध घृत आवास आदि की निशुल्क व्यवस्था छात्रो की सुविधायें हैं।

प्रवेश के लिए विद्यार्थी कम से कम ३ या ४ कक्षा पास होना जरूरी है हिन्दी अवश्य जानता हो। अपने बच्चों के उज्ज्वल भविष्य के इच्छुक मिल अथवा पत्र व्यवहार करें ?

स्वर्गीय श्री कु सुखलाल जी का स्मारक

आर्य मुसाफिर जी की अन्त्येष्टि के समय भाषण करते हुए श्री रामगोपाल जी प्रधान सार्वदेशिक सभा ने घोषित किया था कि आर्य मुसाफिर जी का स्मारक इस ग्राम अरनिया (जिला बुलन्द शहर उ० प्र०) में अवश्य बनना चाहिए।

कुंवर सुखलाल जी आर्य मुसाफिर ने लगभग ७० वर्ष आर्य समाज की अमूल्य सेवा कर अद्भुत प्रभाव और अपार यश प्राप्त किया है। धन संग्रह करते तो लाखो रुपया उनके पास होता।

आर्य समाजें तथा आर्य सज्जन कृतघ्न नहीं हैं ऐसा मानकर मैं निवेदन करता हूं कि जो आर्य समाज तथा जो आर्य सज्जन इस आवश्यक कार्य के लिए जितना धन दे सकते हैं वह पत्र द्वारा मुझको शीघ्र सूचित करने की कृपा करें। जिससे स्मारक की रूप रेखा बनाई जा सके।

धन मेरे नाम न भेजें केवल पत्र द्वारा सूचना दें। धन भेजने का पता मैं फिर लिखूंगा।

—अमर स्वामी सरस्वती वेद मन्दिर (झोपड़ी) कविनगर गाजियाबाद

लुधियाना मे श्रद्धांजलि समारोह

आर्य युवक सभा लुधियाना की ओर से इतवार २३ मार्च १९८१ को अमर शहीद भगत सिंह राजगुरु व सुखदेव जी की बलिदान अर्द्ध शताब्दी को श्रद्धांजलि समारोह के रूप में आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार मे मनाया गया। समारोह की अध्यक्षता प्रिंसीपल श्री ओ पी टण्डन आर्य हायर सैकण्डरी स्कूल ने की। इस समय श्री सरदारी लाल जी कपूर स्वास्थ्य मन्त्री पंजाब भी उपस्थित थे। डाक्टर बाल कृष्ण एम ए प्रो वेदव्रत एम ए श्री राजाराम श्री ज्ञान प्रकाश लाला कृपा राम यादवी जी हितकर भजन मण्डली के अतिरिक्त बहुत से दूसरों ने भी अपने ओजस्वी भाषणों एवं गीतों द्वारा राष्ट्र के शहीदों को श्रद्धांजलि भेंट की। आर्य युवकों ने बहुत ही उत्साह दिखाया। अन्त मे अध्यक्षीय भाषण शान्ति पाठ व जयघोषों के साथ यह समारोह अत्यन्त सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

—महेन्द्र प्रताप आर्य

भाषण प्रतियोगिता

आर्य समाज पिम्परी पूना मे हुई भाषण प्रतियोगिता का परिणाम निम्न प्रकार रहा

आर्यसमाज के नियम प्रतियोगिता में प्रथम महेश द्वितीय—रामतुभग तथा दुष्यन्त

स्वामी दयानन्द की जीवनी—प्रथम मदन आर्य द्वितीय रामतुभग अ ग

भजन—प्रथम—महेश द्वितीय प्रिया

सन्ध्या प्रथम—हृदय पटेल द्वितीय महेश पटेल।

ईश्वरस्तुती प्रार्थना—प्रथम महेश द्वितीय रामतुभग

भाषण प्रथम—दढिमे द्वितीय रामतुभग।

भजन—विशेष पुरस्कार—तरोजिनी

श्री कृष्ण आर्य हरिकृष्ण आर्य मुरलीधर सन्दरानी बारूमल अग्रवाल आदि ने उत्सव सफल बनाने मे सहयोग दिया।

—देवदत्त तुगार मन्त्री

(२ पृष्ठ का शेष)

सुग्रीव से साक्षात्कार सशक्त सन्धि सुग्रीव का भोगमय जीवन मे मत भूल जाना और श्रीराम द्वारा प्रताड़ना सैन्य संग्रह समुद्र पर पुल बनाना हनुमान का लंका मे प्रवेश और अशोक वाटिका मे सीता से साक्षात्कार व राम के प्रति सन्देश लंका पर आक्रमण लक्ष्मण का मूर्छित होना हिमालय से हनुमान द्वारा लायी गयी संजीवनी बूटी से लाभ मेघनाथ कुम्भकरण आदि की मृत्यु और अन्त मे राम रावण युद्ध तथा लंका विजय। इस अन्तिम निर्णायक राम रावण युद्ध में श्रीराम मे कितना आध्यात्मिक बल था और प्रबल शत्रु की तुलना मे अत्यन्त स्वल्प साधनो के साथ केवल आत्म बल के और विजय के अटल अविचल संकल्प की भावना उनमे थी महाकवि गोस्वामी तुलसीदास दास के राम चरित मानस म कहे गये जो निम्न शब्दों से प्रकट होती है। रथविहीन श्रीराम ने जब अपने भयंकर शत्रु पर आक्रमण किया तब विभीषण को शंका हुई—

× रावन रथी विरथ रघुबीरा
सुग्रीव विभीषन भयऊ अधीरा।

† अधिक प्रीति मन भा सन्देहा।
बंदिचरन कह सहित सनेहा
नाथ न रथ नहि तनु पदत्राना।
केहि बिधि जितब बीर बलवाना

★ श्रीराम का उत्तर ऐसा रथ जाको

सुनहु सखा कह कृपा निधाना।
जेहि जय होइ सोस्यंदन आना।
सौरज धीरज तेहि रथ चाका।
सत्य शील दृढ ध्वजा पताका।
बल बिबेक दम परहित घोरे।
छमा कृपा समता रजु जोरे।
ईस भजन सारथी सुजाना।
बिरति चर्म संतोष कृपाना।
दान परसु बुधि सक्ति प्रचंडा।
बर बिग्यान कठिन कोदंडा।
अमल अचल मन त्रोन समाना।
सम जम नियम सिलीमुख नाना।
कवच अभेद बिप्र गुरु पूजा।
ये हि सम विजय उपाय न दूजा।
सखा धर्म मय असरथ जाके
जीतन कहं न कतहुं रिपु ताके।
महा अजय संसार रिपु
जाति सकइ सो बीर।
जाके असरथ होइ दृढ़
सुनहु सखा मति धीर।

इसका यह अभिप्राय नहीं कि राम सर्वथा शस्त्र अस्त्र विहीन थे और केवल इस प्रकार के आत्मिक बल के सहारे ही वह रावण का वध कर सके। वस्तुत श्रीराम शस्त्र अस्त्र और सैन्य शक्ति के अतिरिक्त पूर्णत आत्म विश्वास और आध्यात्मिक बल शक्ति सम्पन्न भी थे। निश्चय ही बाह्य बल की तुलना मे आभ्यन्तरिक बल अधिक वरीय होता है केवल शारीरिक बल तो पशु मे भी होता है।

उपनिषद्कार के शब्दों मे—

आत्मना विन्दते वीर्यं विद्यया विन्दतेऽमृतम्
(केन उ०)

अर्थात आत्म शक्ति से बल प्राप्त करता है और आत्म विद्या से अमृत पद प्राप्त करता है।

श्रीराम इस आध्यात्मिक बल के प्रतीक हैं और सदा रहेंगे।

गुरुकुल का भविष्य

ले० श्री प सत्यकेतु जी वद्यालकार

सन १८७२ मे जब महर्षि दयानन्द सरस्वती कलकत्ता मे थे तो उन्होने वहा एक वेद विद्यालय स्थापित करने की योजना बनायी थी। इसके लिए उन्होने प्रयत्न भी किया था पर वे सफल नही हो सके थे। इस पर उन्होने खिन्न हो कर कहा था— सम्पन्न वर्ग के बच्चे तो अग्रेजी और फारसी पढते हैं सस्कृत का फिकर दरिद्रो के बच्चो के लिए रह गया है। जो बात महर्षि ने एक सदी पहले कही थी। वह आज सही है। दूसरो की बात तो जाने दीजिए आर्य समाज मे भी जो सम्पन्न व उच्च स्थिति के परिवार हैं उनके बच्चे भी प्राय ऐसे स्कूलो मे शिक्षा प्राप्त कर रहे है जिनमे अग्रेजी पर जोर दिया जाता है और सस्कृत या वेदशास्त्रो की शिक्षा का स्थान नाम मात्र से भी नही है। आर्य समाज द्वारा बहुत से स्कूल और कालिज स्थापित है पर उन मे सरकारी पाठ्य प्रणाली का ही अनुसरण किया जाता है और अब तो अनेक ऐसे विद्यालय भी आर्य समाज द्वारा खोले जा रहे है, जिन मे अग्रेजी छोटे बच्चो के लिए भी शिक्षा का माध्यम है। बीसवी सदी के शुरू मे गुरुकुलो की इस शिक्षा प्रणाली का आर्य समाज द्वारा सूत्रपात किया गया था। वह अब समाप्त प्राय है। बहुत से गुरुकुलो ने अब हाई स्कूलो व इन्टर कालिजो का रूप प्राप्त कर लिया है। और उनकी कोई अपनी विशेषताए नही रह गई हैं। गुरुकुल कागडी को विश्व विद्यालय की स्थिति प्राप्त हो गई है और वह भी अपने को सरकारी यूनिवर्सिटियो के अनुरूप बनाने मे तत्पर है। जो थोडे से गुरुकुल अभी स्वतन्त्र रूप से विद्यमान हैं वे सम्पन्न एव उच्च वर्ग के परिवारो को आकृष्ट नही करते यद्यपि उनका प्रबन्ध इसी वर्ग के लोगो के हाथ मे है।

प्रश्न यह है कि महर्षि ने जिस शिक्षा प्रणाली का प्रतिपादन किया था और जिसे क्रियान्वित करने के लिए गुरुकुलो की स्थापना की गई थी क्या वर्तमान समय मे उसकी कोई उपयोगिता नहीं है। यह सही है, कि बच्चों का भविष्य सदा माता-पिता के सम्मुख रहता है और वे ऐसे शिक्षणालयों मे ही उन्हे पढाना चाहते हैं जहा से शिक्षा प्राप्त कर वे जीवन सघर्ष मे आगे बढ सकें और समाज मे उच्च स्थान प्राप्त कर सकें। यह सर्वथा उचित भी है। सम्भवत यही कारण है कि महर्षि दयानन्द सरस्वती के कट्टर अनुयायी और भक्त भी आज अपने बच्चो को गुरुकुलो मे न भेज कर अग्रेजी पब्लिक स्कूलों व अन्य शिक्षणालयो मे प्रविष्ट कराते हैं। यह सही है कि आज केवल सस्कृत एव वेद शास्त्र पढ कर कोई व्यक्ति आर्थिक व सामाजिक क्षेत्रों मे यथेष्ठ उन्नति नहीं कर सकता। आधुनिक ज्ञान-विज्ञान को पढना और उसमे समुचित योग्यता प्राप्त करना आज अत्यन्त उपयोगी है और उसी द्वारा जीवन सघर्ष मे सफलता प्राप्त की जा सकती है। पर महर्षि ने जिस शिक्षा प्रणाली का प्रतिपादन किया था उसमे सस्कृत भाषा तथा वेदशास्त्रो के साथ-साथ शिल्प राजनीति चिकित्साशास्त्र, युद्ध विद्या भौतिक विज्ञान आदि सभी ज्ञान विज्ञान को समुचित स्थान है, और इसीलिए गुरुकुल कागडी की जो पाठ्य प्रणाली निर्धारित की गई थी उसमे इतिहास भूगोल अर्थशास्त्र राजनीतिशास्त्र, पाश्चात्य दर्शन रसायन शास्त्र गणित आदि तथा अग्रेजी भाषा की शिक्षा की भी व्यवस्था की थी यद्यपि शिक्षा का माध्यम हिन्दी को रखा गया था। इसी लिए गुरुकुल के स्नातक केवल सस्कृत व वेद शास्त्रों के ही पण्डित नही होते थे अपितु आधुनिक ज्ञान विज्ञान का उन का अध्ययन भी बहुत अच्छा होता था। इसी कारण गुरुकुल के अनेक स्नातक उस समय में भी सरकारी कालेजो और यूनिवर्सिटियो मे इतिहास अर्थशास्त्र सदृश विषयो के प्राध्यापक नियुक्त किए गये जब कि गुरुकुल की विद्यालकार डिग्री को सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त नही थी। जिन स्नातको ने पत्रकार साहित्यकार आदि के रूप म उच्च स्थान प्राप्त किए उनकी सख्या तो बहुत अधिक है स्वतन्त्रता के बाद तो गुरुकुल की डिग्रियो को सरकार द्वारा मान्यता भी प्राप्त हो गई। और अब गुरुकुल कागडी को विश्वविद्यालय की स्थिति भी प्रदान की जा चुकी है। पर इस दशा मे भी गुरुकुल शिक्षा प्रणाली जनता को (आर्य जनता को भी) आकृष्ट नही करती यह आश्चर्य की बात है। यह सम्भव नही है कि गुरुकुलो को इतना आकर्षक बनाया जा सके। कि न केवल साधारण स्थिति के अपितु उच्च वर्ग के लोग भी वहा अपने बच्चों को पढाना गौरव की बात समझें। एक ऐसा समय रह चुका है। जब गुरुकुल मे दाखिले के लिए भारी प्रतियोगिता हुआ करती थी। यदि पच्चीस बच्चे दाखिल किए जाने होते थे, तो सौ सवा सौ बच्चों में छाट कर उन्हे लिया जाता था। क्या यह दशा फिर नही लाई जा सकती।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने शिक्षा

है कि शिक्षा प्राप्त करते समय ब्रह्मचारियो (छात्रो) को तपस्वी होना चाहिए। पर तपस्वी जीवन का अभिप्राय भद्दे पन या जंगलीपन से नहीं। रहन सहन ऐसा सादा एव तपस्वी भी हो सकता है। जो भद्दा न हो जिसका अपना आकर्षण हो, गुरुकुल कांगडी का रहन-सहन भी सादा और तपमय होते हुए भी आकर्षक था। महात्मा गाधी के आश्रमो और रवीन्द्रनाथ टैगोर के शान्तिनिकेतनोका रहन सहन भी इसी ढग से सादा होते हुए भी आकर्षक रहा है। गुरुकुल कांगडी की शिक्षा पद्धति मे कोई कमी नही है। उस मे आधुनिक ज्ञान-विज्ञान तथा अग्रेजी भाषा को समुचित स्थान प्राप्त है। सस्कृत तथा वेद शास्त्रो को महत्वपूर्ण स्थान देना उस की ऐसी विशेषता है जिसके कारण वह आर्य जनता के लिए विशेष रूप से आकर्षण का कारण बन सकता है।

आवश्यकता केवल इस बात की है कि गुरुकुल के छात्रावास भोजन भण्डार चिकित्सालय आदि की समुचित व्यवस्था की जाए, शिक्षक और अधिष्ठाता सुयोग्य व सदाचारी हो, विद्यार्थियों की देख-रेख ठीक ढग से की जाए उनका रहन सहन तथा खान पान सादा होते हुए भी आकर्षक हो। सदा ही उन आदर्शों का भी प्रचार व प्रतिपादन किया जाए जिन्हे दृष्टि मे रखकर महर्षि दयानन्द सरस्वती के शिक्षा सम्बन्धी अपने सिद्धान्तों का निरूपण किया था और जिन्हे क्रियान्वित करने के लिये स्वामी श्रद्धानन्द जी ने गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना की थी।

३ ऐसे शिक्षणालयों की मांग आज बहुत तेजी से बढ रही है जिनमें बच्चों के निवास की समुचित व्यवस्था हो, जिनमें बच्चो की पूरी जिम्मेवारी ले ली जाए. ईसाइयो द्वारा स्थापित ऐसे स्कूलों मे प्रवेश पाना कठिन होता है और गुरुकुलों के लिये विद्यार्थी ही नही मिलते ईसाई धर्म के प्रचार की एक महत्वपूर्ण साधन उनके स्कूल हैं। दौर्भाग्य वश धर्म प्रचार के इस साधन पर आर्य समाज अब पर्याप्त ध्यान नहीं दे रहा है जो गुरुकुल अब दुर्दशाग्रस्त हैं, उनकी संख्या दर्जनो मे है गुरुकुल कांगडी के पास तो इतनी भूमि तथा इतने अच्छे भवन व अन्य साधन हैं कि वहां एक ऐसे आवासीय शिक्षणालय का विकास किया जा सकता है, जो किसी भी पब्लिक स्कूल या क्रिश्चियन स्कूल से कम न हो। पर उसके रहन-सहन तथा शिक्षा मे आकर्षण उत्पन्न करने की आवश्यकता है, ऐसा आकर्षण जो पहले विद्यमान था पर अब नहीं रहा है। मुझे विश्वास है कि आर्यसमाज इस ओर ध्यान देगा जिस से कि गुरुकुल मे शिक्षा दिलाना सम्पन्न एव उच्च स्थिति के आर्य परिवार भी गौरव की बात समझ सकें।

पंजाब के आर्यों को निमन्त्रण 16-17 मई को—

रोहतक पधारिए

मैं पंजाब मे जन्मा, पला और कुछ काम कार्य भी किया अत पजाब से मेरा प्यार स्वाभाविक है। अब हरियाणा के वातावरण मे हू यहा भी आर्य समाज मेरा कार्य क्षेत्र रहा है यहा की आर्यसमाज मेरी गतिविधि का केन्द्र है, अत हरियाणा में आर्य वीर दल के प्रान्तीय सम्मेलन पर अपने पुराने साथियो को निमन्त्रण देने मे मुझ प्रसन्नता भी होती है और गौरव भी। हरियाणा समूचे देश मे आर्य समाज के कार्य के लिए सर्वोत्तम स्थान है। यहा के ग्राम ग्राम मे आर्य समाज के तपस्वियो के द्वारा आर्यसमाज की विचार धारा का अजस्र प्रवाह है। सौभाग्य से यहा नवयुवको में आर्य वीर दल की संस्था भी लोकप्रिय है। आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा इस कार्य मे युवको को प्रोत्साहित करने मे कमी नही रखती इस प्रकार आर्य वीर दल हरियाणा मे विशेष महत्व रखता है।

जहा तक मैंने देखा है दल का विशेष बल हरियाणा के रोहतक नगर मे है वैसे इसकी शाखाए हिसार, गुडगांव फरीदाबाद, करनाल इत्यादि मण्डलो में अच्छी है। परन्तु रोहतक मे जहा आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख्य कार्य स्थल है वहा आर्य वीरो का भी विशेष क्रीडा स्थल है। इसी रोहतक नगरी मे १६ १७ मई को आर्य वीर दल का प्रान्तीय सम्मेलन डा० स्वामी सत्यप्रकाश जी की अध्यक्षता मे हो रहा है।

इससे पूर्व आर्य वीर दल के प्रान्तीय सम्मेलन करनाल, लुधियाना अमृतसर तथा गुडगाव मे हो चुके है। जब पजाब एक था, सभा भी एक थी, और प्रान्तीय सम्मेलन समूचे प्रान्त के आर्यों के आकर्षण का केन्द्र था। आज प्रान्त दो बन गये है सभाए भी पजाब तथा हरियाणा की जुदा जुदा हैं परन्तु क्या आर्य भाई भी जुदा जुदा हो गए, ऐसा तो सम्भव नही क्योकि दोनो को मिलाने की कडी आर्य समाज तो एक ही है। अत सम्मेलन के शुभावसर पर मैं पजाब के आर्यों से आर्य वीर दलो से विनम्र प्रार्थना करता हू कि मित्रो, आओ, हम इस शुभावसर पर एक दूसरे से मिलकर अपने सगठन का परिचय दें और उससे बढ़कर स्वय मिल बैठने का सुख पाए। आर्य वीर दल आर्य समाज का भविष्य है। आर्य युवक फिर स ऋषि के सपनो का साकार करने की प्रतिज्ञा लेने चले हैं उनका उत्साह, उनकी लगन, जोश, निश्चय ही बुजुर्ग आर्यों के हृदय का स्पन्दन कर सकेगा उन्हें अपने बच्चो को आर्य समाज के कार्य के लिए मचलते देख हार्दिक आनन्द मिलेगा अत १६ १७ मई का आर्य भाई बहिन अवश्य रोहतक पधारें। कितना आनन्द आ जाए यदि अमृतसर का आर्य भाई गुडगाव तथा नूह के आर्य भाई से गले मिल पाएगा आइए हम एक बार मिल बैठें और मिल करके चर्चें निश्चय ही अपने आप मे यह भी एक सफलता है।

आर्य वीरो से मेरा निवेदन है कि देश काल की दूरी को दूरी न जानें अपने दल बल के साथ आए यह आर्य वीरो का सम्मेलन है देश के मूर्धन्य आर्य नेता तथा आर्य भाई बहिन अपने पुत्रो को आशीर्वाद देने को पधार रहे हैं आर्य जाति का सगठित रूप भी सम्मुख आ जाएगा मार्ग दर्शन भी होगा ऐसी परिस्थिति मे प्रत्येक आर्य वीर १६ १७ मई को रोहतक पहुचेगा ऐसी मुझ पूरी आशा है—

दल बादल सा मचल पडा
यह दल मतवाला रे।
हम मस्तो मे आन मिले
कोई हिम्मत वाला रे।

—उत्तमचन्द शरर

—

पजौड मे वार्षिक उत्सव

पजौड (जिला होशियारपुर) मे तीन दिन आर्य समाज का उत्सव हुआ आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की ओर से श्री प० रामनाथ जी महोपदेशक श्री प० हजारीलाल जी भजनोपदेशक, श्री प० तुलसीदेव जी सगीताचार्य श्री आचार्य भद्रसेन जी होशियारपुर श्री साईदास जी तबलावादक पधारे मौसम की खराबी के बावजूद उत्सव सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ

—मन्त्री आर्य समाज

—

फतेहगढ चूडिया का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज फतेहगढ चूडिया की ओर से वार्षिक उत्सव १७ ४ ८१ से १९ ४ ८१ तक मनाया जा रहा है। १०-४-८१ से ही रोजाना हवन-यज्ञ तथा रात्रि को वेद कथा आर्य समाज मन्दिर फतेहगढ चूडिया मे हुआ करेगी।

—जयदेव मन्त्री
प्रधान आर्य समाज फतेहगढ
चूडिया गुरदासपुर

—

भक्त मैं तेरा हूं

कस्ते जामिजनानामग्ने को दाश्वध्वर। को ह कस्मिन्नसिश्रित।
त्व जामिजनानामग्ने मित्रो असि प्रिय सखा सखिभ्य ईड्य।

ऋ० १ ७५ ३४

हे प्रकाश स्वरूप प्रभो! मनुष्यो मे तेरा बन्धु कौन है कौन तुम्हारे लिए ब्रह्म यज्ञ द्वारा तुम्हारी उपासना करने वाला है? निश्चय से तू कौन है और ठहरा किसमे है?

हे प्रकाशयुक्त भक्त! मनुष्यो मे तुम मेरे बन्धु हो और तुम्हीं ब्रह्म यज्ञ द्वारा मुझ से मित्रता करने वाले प्यारे हो मैं तुम्हारा सखा हू और मैं अपने सखि भाव रखने वालो के लिए स्तुतियोग्य सहायक हू।

उपासक प्रभु की उपासना करना आरम्भ करता है। उसे प्रभु के दर्शन नही होते। वह निराश सा हो जाता है वह मन ही मन अपने भगवान से कहता है—भगवन! आप मुझ अपने प्यारे दर्शन क्यो नही देते? मेरे उपासना वेदाध्ययन से सन्तुष्ट क्यो नही होते? तुम किसे अपना बन्धु बनाते हो? तुम किसकी उपासना वेदाध्ययन अथवा अध्यापन से प्रसन्न होते हो। किसके हृदय मे तुम्हारा आश्रय स्थान बनना है? जब कभी परमात्मा की झांकी उस उतावले भक्त को मिलती है तो प्रभु उससे कह जाते हैं—भक्त! तुम्ही मेरे बन्धु हो। अपने उपासनादि कर्मो से तुम्ही मुझ प्राप्त कर लेते हो। मै तुम्हारा ही सखा हू और सखाओ के हृदय मे ही मैं सहायक होकर आ बैठता हू। निराश होने की जरूरत नही। चलते चलो जिस राह पर चल रहे हो वह दिन दूर नही जब मुझ तुम प्रतिक्षण देखा करोगे।

मनुष्य को परमात्मा के प्रकाश की प्राप्ति के लिए अपने आप को योग्य बनाना चाहिए। अपने कर्मों की पवित्रता और हृदय की उत्कण्ठ गहरी उत्सुकता से फिर वह तेरा ही तेरा है।

—द्वारकानाथ व सुदेव
फगवाडा

वेद प्रचार विभाग मास अप्रैल 81 में स्वीकृत कार्यक्रम

१ आर्य समाज अहमदगढ १ ४ ८१ से ५ ४ ८१ तक—श्री श्यामसिंह जी हितकर भजन मण्डली।

२ आर्य समाज बस्ती गुजा जालन्धर ३ ४ ८१ से ५-४ ८१ तक—श्री प० निरञ्जनदेव जी इतिहास केसरी श्री तुलसी देव जी।

३ आर्य समाज सै० १९ सी चण्डीगढ ४-४ ८१ से १२ ४ ८१ तक—श्री प जगदीशचन्द्र वसु श्री हजारीलाल जी।

४ आर्य समाज फतहगढ चूडिया १०-४ ८१ से १९ ४ ८१ तक कथा—श्री प सुभाषचन्द्र शास्त्री श्री हितकर भजन मण्डली उत्सव मे श्री प० जगदीशचन्द्र वसु श्री रामनाथ जी यात्री।

२ आर्य समाज रोपड १५ ४ ८१ से २१ ४ ८१ तक-श्री प रामनाथ जी सि० त्रि० श्री तुलसीदेव जी गायनाचार्य।

६ आ स नाभा २१ ४ ८१ से २६ ४ ८१ तक कथा मे—श्री ओम्प्रकाश आर्य श्री हितकर भजन मण्डली (उत्सव मे) श्री प० जगदीशचन्द्र वसु श्री प० सुभाषचन्द्र शास्त्री श्री प० रामनाथ जी सि० वि० श्री तुलसीदेव जी गायनाचार्य श्री रामनाथ जी यात्री भजनोपदेशक।

नाभा समाज के उत्सव मे मान्य सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने २६ ४ ८१ को समय देना स्वीकार कर लिया है।

७ आ समाज सै० २२ चण्डीगढ १८ ४ ८१ से २६ ४ ८१ तक कथा मे—श्री प० निरञ्जनदेव जी इतिहास केसरी श्री हजारीलाल जी श्री साईदास जी तबलावादक (उत्सव मे) श्री ओम्प्रकाश आर्य।

८ आर्य समाज सुलतानपुर लोधी २७ ४ ८१ से ३ ५ ८१ तक कथा मे—श्री श्री प० निरञ्जनदेव जी इतिहास केसरी श्री हितकर भजन मण्डली।

उत्सव मे सम्मिलित होने वाले पूज्य विद्वानो तथा भजनोपदेशको के नाम पुन प्रकाशित किये जाए गे।

—ओम्प्रकाश आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष

वार्षिक चुनाव

रविवार दिनांक २२ मार्च १९८१ को आर्य समाज सैक्टर १६ चण्डीगढ़ का वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुआ जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गये—

प्रधान—श्री प्रो० अशोक शर्मा, वरिष्ठ उपप्रधान—श्री गिरधारीलाल चोपड़ा, उपप्रधान—श्रीमती पुष्पावती, श्री निहालचन्द, श्री ओमप्रकाश विज, मन्त्री—प्रो० सर्वदानन्द आर्य, सहमन्त्री—श्री पूर्णानन्द जी वेदालंकार, श्रीमती आनन्द बाला डल्ल, उपमन्त्री—श्री संजीव भारती, प्रो० सतीशचन्द्र निस्तन्त्र, कोषाध्यक्ष—श्री गुरदासराम भण्डारी, लेखा निरीक्षक—श्री लखपतराय भसीन।

सर्वदानन्द आर्य
मन्त्री

आर्य युवक सभा लुधियाना का चुनाव

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आदेशानुसार २२-२-८१ को आर्य युवक सभा लुधियाना का चुनाव श्री रणवीर जी भाटिया उपमन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब व डाक्टर एस० बी० बांगिया संयोजक आर्य युवक सभा पंजाब की देखरेख में सम्पन्न हुआ। इसकी अध्यक्षता श्री हरबिलास जी गुप्ता (सदस्य आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब) मलोट मण्डी वालों ने की। जिसमें निम्न पदाधिकारी सर्वसम्मति से चुने गये—

प्रधान—श्री सुधीर जी भाटिया, उपप्रधान—श्री प्रो० पी० टण्डन प्रिंसिपल श्री यशपाल आर्य, मन्त्री—श्री राजकुमार मेहता, उपमन्त्री—श्री सुरेन्द्रकुमार टण्डन, कोषाध्यक्ष—श्री अरुणकुमार सूद, उपकोषाध्यक्ष—श्री राकेशकुमार सेठी, प्रचार मन्त्री—श्री धर्मपाल भसीन।

अन्तरंग सदस्य—श्री महेन्द्र प्रताप आर्य, श्री दिनेश कुमार सेठी, श्री सुरेशकुमार चड्ढा, श्री प्रवीण कुमार शर्मा एडवोकेट, श्री राजेन्द्र कुमार, श्री सुरिन्द्रकुमार, श्री युगवीर कृष्ण, श्री वीरेन्द्रकुमार।

—

जगरांओं व रायकोट में प्रचार

आर्य समाज जगरांओं व रायकोट (लुधियाना) में श्री पं० रामनाथ जी सिद्धि वि० व श्री तुलसीदेव जी के भजन तथा उपदेश होते रहे। रायकोट में भगवान धर्मशाला में सात दिन कथा होती रही। वहां के सभी आर्य बन्धुओं ने इसमें भाग लिया।

—

बस्ती गुजां में आर्य समाज स्थापना दिवस

आर्य समाज बस्ती गुजां जालन्धर में ३-४-५ अप्रैल को आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री पं० निरञ्जनदेव तथा सुयोग्य भजनोपदेशक श्री पं० गुरुदत्त जी मायलायार्य के उपदेश तथा भजन होते रहे। वेद प्रचार के लिए १०० रु. सभा को दिया गया। —निर्मल मंत्री

आर्य मर्यादा के ग्राहक स्वयं बनों और दूसरों को बनाओ, आर्य समाज के सदस्य स्वयं बनो और दूसरों को बनाओ, हिन्दी भाषा—स्वयं भी पढ़ो और दूसरों को भी पढ़ाओ :



श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वार्षिक मूल्य 15) वर्ष 14, अंक 17, 14 वैसाख सम्वत् 2038, तदनुसार 26 अप्रैल 1981 का अंक दयानन्दाब्द 156

26 अप्रैल रविवार को मुनिवर पं. गुरुदत्त विद्यार्थी का जन्म दिवस सभी आर्य समाजें धूमधाम से मनाएं



मुनिवर पंडित गुरुदत्त जी विद्यार्थी एम. ए. की जीवन झांकी

जन्म—२६ ४-१८६४ ई० तदानुसार ६ वैसाख स, १९२१ विक्रमी

जन्म नाम – मूला

पिता का नाम—लाला रामकिशन जी

कुल गुरु द्वारा दिया गया नाम—वैरागी यह नाम बारह वर्ष की आयु तक प्रचलित रहा तत्पश्चात् गुरुदत्त नाम रखा गया।

जन्मस्थान—मुलतान नगर जो अब पाकिस्तान मे है।

आरम्भिक शिक्षा १८६९ ई० अर्थात् पांच वर्ष की आयु में अपने पिता ला० रामकिशन जी से। १८७२ ई० में झंग के जिला स्कूल में प्रवेश। मिडल की परीक्षा पास करके मुलतान आ गए। इस समय तक अरबी और फारसी की अच्छी योग्यता प्राप्त कर चुके थे।

[illegible]—१८७४ ई० में अकेले बैठकर गम्भीर चिन्तन करना माता जी के पूछने पर कहा वह देखो माता जी, आकाश में जिसने चांद सूरज और तारा मण्डल बनाए हैं मैं उनकी उपासना और ध्यान करता हू। तुम भी ऐसा किया करो।

मुलतान हाई स्कूल में प्रवेश—१८७८ मे।

मुन्शी कन्हैयालाल अलखधारी की पुस्तकें पढ़कर आप नास्तिकता के प्रवाह मे बहने लगे, परन्तु लाल चेतनानन्द जी और भगत रेमनदास जी की सगति ने इन्हे इस प्रवाह मे बहने से रोक दिया।

आर्य समाज मुलतान के सदस्य बने—२०-६ १८८० ई० यहां पंडित अक्षयानन्द जी से अष्टाध्यायी का पढ़ना प्रारम्भ किया।

लाहौर कालेज मे प्रवेश—जनवरी १८८१ ई०

ब्रह्म समाज की शिक्षा पर आर्य मैगजीन मे लेख १८८२ ई० मे।

एफ. ए. परीक्षा पास की १८८३ में पहला व्याख्यान एफ ए. पढ़ते हुए लाहौर से मुलतान गए वहा कैलाश चन्द्र बोस हैडमास्टर मिशन स्कूल के व्याख्यान के उत्तर मे अंग्रेजी मे दिया। मुलतान मे बाबा निहाल चन्द जी से वेदान्त पर तथा ला सदानन्द जी से ईश्वर की सत्ता पर वादविवाद हुआ।

बी ए परीक्षा पास की—१८८५ ई० मे

एम. ए परीक्षा पास की १८८६ ई. मे श्री स्वामी दयानन्द जी को देखने अजमेर गए सन् १८८३ ई० मे।

गवर्नमेंट कालेज लाहौर के असिस्टेण्ट प्रोफैसर नियुक्त—१८८६ ई०

प्रो० ओमन के स्थान पर साईंस के प्रोफैसर बने—१८८७ ई.

दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल के लिए चन्दा इकट्ठा करना आरम्भ किया, सितम्बर १८८७ ई०,

पिता जी (लाला रामकिशन जी) की मृत्यु (३१-१०-१८८७ ई०।

जालन्धर आर्य समाज के उत्सव पर मोनी जी महाराज से शास्त्रार्थ विषय जगत् सत्य है या मिथ्या-१८८८ ई०।

रोग का प्रारम्भ-जून १८८९ ई०।

मृत्यु—१९ मार्च १८९० ई०।

वैदिक मैगजीन का प्रकाशन प्रारम्भ जून, १८८९ ई० में।

इस जीवन झांकी को परिशिष्ट में तैयार किया है। डिबेटिंग क्लब, रिजैनेरेटर पत्र, 'आर्य' पत्रिका, 'वैदिक' मैगजीन के सम्बन्ध मे पुनः विस्तार से लिखने का प्रयास किया जाएगा।

—

गुरुकुल कांगड़ी मे दीक्षांत समारोह के अवसर पर 13 अप्रैल को

न्यायमूर्ति श्री एच आर, खन्ना द्वारा दिया गया

दीक्षान्त भाषण

माननीय कुलाधिपति महोदय, आदरणीय कुलपति जी प्राध्यापक वर्ग भद्र आर्य पुरुषो महिलाओ और प्यारे नवस्नातको !

गुरुकुल कांगड़ी के दीक्षान्त समारोह मे मुझे भाग लेने का अवसर दिया गया है उसके लिए मैं बहुत आभारी हूँ। गुरुकुल कांगड़ी देश को स्वामी श्रद्धानन्द जी की देन है। स्वामी श्रद्धानन्द जी जिनका पहला नाम मुन्शी राम जी था उन्होंने महर्षि दयानन्द जी की मृत्यु के बाद आर्य समाज का बीड़ा अपने हाथो मे लिया। यह बीड़ा बहुत भारी बीड़ा था। महर्षि दयानन्द भारत वर्ष के उच्च कोटि के समाज सुधारक और धार्मिक नेता थे। महर्षि जी ने हम को एक नई रोशनी दी और हमारे अन्दर सत्य और ज्ञान की जो अनादि और अनन्त है और जिस से वेदो के पृष्ठ भरे हुए हैं उनकी जागृति पैदा की। महर्षि जी ने भारतीय समाज के अन्दर जो त्रुटियां आ गई थी और जो घुन की तरह हमे अन्दर से खा रही थी उनको खत्म करने के लिए भीषण युद्ध चलाया। छुआछूत बाल विवाह विधवाओ के विवाह पर रोक और स्त्रियो की दशा सुधारना कुछ ऐसे विषय थे जिनकी ओर उन्होंने ध्यान दिया। आज के युग मे तो हम लोगो का इन बातो के सुधार का कोई अचम्भा नही लगता। बहुतो को इसमे से पता नही कि उस समय मे महर्षि ने कैसे अकेले जहालत कट्टरपन और पाखण्डबाजी का मुकाबला किया। इसके साथ साथ उन्होने एक चट्टान की भांति खड़े हो कर हिन्दु समाज को सांस्कृतिक आक्रमण से बचाया और उसमे टक्कर लेने की शक्ति प्रदान की। हर देश और धर्म के इतिहास मे कभी कभी ऐसा समय भी आता है जबकि लोग सांस्कृतिक आक्रमण के बहाव मे बह जाते है और अपनी पुरानी और महान परम्पराओ को भूल जाते हैं तथा उनसे जो गर्व और स्वाभिमान लेना चाहिये वह खो बैठते है। ऐसे समय मे राष्ट्रीय विकास की ज्योति धीमी पड़ जाती है। ऐसे समय मे आवश्यकता होती है कि कोई महान विभूति पक्के और दृढ़ निश्चय वाला व्यक्ति जो अपने आदर्शों से प्रेरित हो और कुर्बानी और साहस से भरपूर हो वह सामने आए और देश और जाति के अन्दर नई भावना और जागरण पैदा करे ताकि वे अपनी परम्पराओं को जो भूले बैठे हैं फिर से याद करें और उन की महानता को जान सकें और उनसे प्रेरणा ले सकें। महर्षि दयानन्द उन महान विभूतियो मे से थे। उन्होने उन आंतरिक कुरीतियो और बुराईयों को जो हमारे समाज की शक्ति को खत्म कर रही थी ललकारा। हमे अपने आप को पहचानने की योग्यता दी और हमारे अन्दर की टिमटिमाती हुई और मद्धम ज्योति को फिर से प्रज्वलित किया। उन्होंने हमारी जड़ों को मजबूत किया और हम मे अपने अन्दर अपने भविष्य के सुहानेपन में एक नया विश्वास पैदा किया जिसके फलस्वरूप हिन्दू जाति की रगो मे एक नया खून दौड़ने लगा। महर्षि के उपदेशों से जैसा कि स्वाभाविक ही था एक नयी जागृति देश को स्वतन्त्र कराने के लिए पैदा हुई।

स्वामी श्रद्धानन्द जी का महर्षि दयानन्द जी के उपदेशो से प्रभावित हो कर गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना करना भी एक स्वाभाविक कदम था। महर्षि दयानन्द जी की तरह स्वामी श्रद्धानन्द जी बड़े निश्चयवादी थे धुन के पक्के थे। उन्होंने आर्य समाज की विरोधी शक्तियो का मुकाबला करने के लिये आर्य जनता को एक नया बल दिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने भारत को स्वतन्त्र कराने में भी पूरा भाग लिया। १९१९ मे जब अमृतसर मे कांग्रेस अधिवेशन जलियांवाला बाग के काण्ड के बाद हुआ उसमें स्वामी जी स्वागत समिति के अध्यक्ष थे। स्वामी जी का और महात्मा गांधी का एक दूसरे के निकट आना इन हालात मे कुदरती था।

गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना सन १९०० में हुई। इसको स्थापित करने मे स्वामी जी का उद्देश्य था कि वह एक ऐसी संस्था पैदा करें जहां विद्यार्थी शांति और पवित्र वातावरण मे रहे और वहां पर वैदिक ज्ञान और सांस्कृतिक शिक्षा पर जोर हो और उसके साथ साथ आधुनिक विज्ञान और दूसरे विषयो पर भी पूरा ध्यान दिया जाए ताकि उन के समन्वय से छात्रो का विविध कला सम्पूर्ण व्यक्तित्व बने तथा वह भारत के चरित्रवान और उत्तम नागरिक बन सकें।

जिन छात्रो ने इस दीक्षान्त समारोह मे उपाधि ली है मैं उनको बधाई देता हू और साथ ही उनसे यह भी कहना चाहता हू कि यह न समझें कि इन उपाधियो के प्राप्त करने से उनकी शिक्षा का कोर्स खत्म हो गया है। यह तो एक आरम्भ है उस शिक्षा का जो हमे सारा जीवन सिखनी है और भी कभी २ बड़ी कीमत देकर भी सीखनी है। परन्तु उससे घबराना नही चाहिए जीवन के हर मोड़ पर हमें रोज परीक्षाओ में से निकलना पड़ता मगर उससे हिम्मत नही हारनी चाहिए। जीवन तो एक संघर्ष है और उसमे वह लोग सफल होते हैं जो ठण्डे साहस के साथ मुश्किलो का सामना करते हैं और मुश्किलों को आसान बना देते है। कायदे का पाठा सीधा पढने का तो सभी लाभ उठा सकते हैं बुद्धिमत्ता और पुरुषार्थ तो इसमें है जो भाग्य का पाठ उल्टा पढ़ने से भी लाभ उठा सकें। गुरुकुल और कालिज शिक्षा सब बड़ी शिक्षा को प्राप्त करने का एक साधन बन सकती है, उसकी जगह नहीं ले सकती। गुरुकुल की एक शिक्षा जो हमको अपने साथ सदैव रखनी चाहिए और जो हमेशा हमारे काम आएगी वह है कि हम अपने अन्दर आत्मिक शक्ति और बल पैदा करें, हम साहसी हों, भीरु या डरपोक न बनें। इसी उद्देश्य के लिए आर्य अभिविनय में प्रार्थना मन्त्र है —

तेजोऽसि तेजो मयि धेहि,
वीर्यमसि वीर्यं मयि धेहि,
बलमसि बलं मयि धेहि -
ओजोऽस्योजो मयि धेहि
मन्युरसि मन्युं मयि धेहि
सहोऽसि सहो मयि धेहि

मेरे नवयुवक मित्रो ! हम एक बहुत महान देश के जिसका पुरातन बहुत उज्ज्वल रहा है वासी हैं हम सब को भारत का नागरिक होने पर गर्व हासिल करना चाहिये यह ठीक है कि हमारे अन्दर बहुत से ऐसे नेता लोग है जो उन आदर्शों से गिर गये है, मगर उनके कारण हमे अपने अन्दर से अपने देश पर से अपनी संस्कृति पर से अपनी परम्पराओ पर से अपने उज्ज्वल भविष्य पर से विश्वास नही खो देना चाहिये, पिछले वर्षों मे बहुत सी ऐसी घटनाए हुई है जिनसे हम सबको बहुत दुःख होता है और हमारे मन को आघात पहुचता है, यह भी सच है कि देश के अन्दर जो जटिल समस्याए हमारे सामने आ गई हैं उनकी जिम्मेदारी के लिए हम पिछली पीढी के लोगो को दोषी करार दे सकते है मगर इन बातो मे पड़ने से और कीचड़ उछालने से हमे कोई ठोस लाभ नही मिलेगा क्योंकि हमारे सामने जो इस समय आवश्यक कार्य यह है कि किस तरह भविष्य के लिए हम अपने देश को सुदृढ बनाए आज आवश्यकता है कि आने वाले समय मे देश खूब प्रगति करे ताकि आज के नवयुवक जो भविष्य के असल मालिक एवं स्वामी हैं उसको सुखमय और उज्ज्वल पायें।

आज जिन चीजो की देश को सबसे अधिक आवश्यकता है वे हैं अनुशासन परिश्रम और नैतिक मूल्य। इन तीनों के बिना कोई देश प्रगति नही कर सकता है और नहीं इनके बिना चरित्र निर्माण हो सकता है। सच पूछो तो यह देश की त्रिमूर्ति हैं।

पहले अनुशासन को लीजिये। आज तो ऐसा अनुभव होता है जैसा कि हमारे शब्दकोष से अनुशासन का शब्द किसी ने निकाल लिया हो। विश्वविद्यालयो की दशा देखो। पुराने समय मे गुरु का स्थान बहुत ऊचा होता था और छात्रों के मन में उनका सच्चा सम्मान होता था। आज उसके बदले यह आम विचार है कि विश्वविद्यालयो में अध्यापक बनना अपने नाम और जीवन दोनों को जोखम में डालना है। इसमें भी कोई सन्देह नहीं कि कोई भी अध्यापक अपने छात्रों को अच्छी तरह से शिक्षा नहीं दे सकता और उनकी-उनकी त्रुटियां नहीं बता सकता यदि उसके मन में छात्रों का डर और भय है जहां भय है वहां सच्ची शिक्षा नहीं हो सकती।

विश्वविद्यालयों के अलावा जीवन के बाकी क्षेत्रों में भी अनुशासन का यही हाल है। सरकारी दफ्तरों में देख लीजिए। कितने सरकारी कर्मचारी अपने दफ्तरों में ठीक समय पर आते हैं और कितने दफ्तरों के समय के अनुसार डट कर काम करते हैं? कारखानों और बिजली-घरों को देखो। उत्पादन क्षमता आधो से भी कम हो रही है। हर वर्ष कितने दिन हड़तालो और तालाबन्दियों में चले जाते हैं और कार्य दिवस व्यर्थ जाते हैं? सड़को पर देखो। कितनी यातायात नियमों का पालन करते हैं? विधानसभा और संसद मे देखो-एक बार संसद के अध्यक्ष ने कहा था कि संसद के एक-दो मिनट के लिए देश के कितने हजार रुपए खर्च करने पड़ते हैं। इसके बावजूद विधानसभाओं और संसद में कितनी दफा कार्यवाही रोकनी पड़ती है इस वजह से कि कुछ सदस्य संसद प्रणाली के नियमो का उल्लंघन करते हैं और उनका पालन नहीं करते।

अब परिश्रम की ओर देखो। जहां जापान में एक मनुष्य काम करता था वहां उसकी जगह तीन या चार काम करते हैं और फिर भी काम पूरा नहीं होता और अधूरा रहता है। अगर हमारे देश के सब कारखाने और बिजली घर पूर्ण उत्पादन क्षमता के अनुसार काम करें तो देश इतना समृद्ध और प्रगतिशील हो जाएगा कि सब आश्चर्य चकित रह जायेंगे। जर्मनी और जापान ने द्वितीय महायुद्ध के बाद इतनी प्रगति की है उस का सबसे बड़ा कारण है जर्मन और जापानी लोगो का परिश्रम, हर कर्मचारी दिन मे १० या १२ घण्टे काम करता है। वहां कर्मचारियो के ऊपर किसी की निगाहबानी करने की आवश्यकता नही होती क्योंकि कर्मचारी अपने आप ही स्वधर्म के अनुसार काम करते हैं। हमारे देश के अन्दर सब साधन हैं, खनिज हैं पानी है नदियां हैं पहाड़ हैं, लकड़ी है और अपार जनशक्ति है। सिर्फ कमी है तो इस चीज की कि हम इन सब प्राकृतिक एवं मानवीय साधनों का ठीक तरह से उपयोग नहीं कर सके और उनसे लाभ नही उठा सके। अगर हम किसी तरह से यह कर लें तो हमारी बेकारी की समस्या का अन्त नहीं तो काफी हद तक उसका हल हो जायेगा और भारत संसार के समृद्ध देशो मे गिना जाने लगेगा।

व्यक्तिगत रूप से तो हम छात्रों की बुद्धि और ज्ञान प्राप्त करने की शक्ति जिसको अंग्रेजी में आई. क्यू. कहते हैं, वह किसी देश के नागरिकों से कम नहीं।

(शेष पृष्ठ ९ पर)

सम्पादकीय—

गुरुकुल कांगड़ी का नया रूप

जिन महानुभावों ने ११, १२, १३ अप्रैल को गुरुकुल कांगड़ी का वार्षिक उत्सव देखा है, उसमें उन्हें गुरुकुल कांगड़ी का नया रूप देखने को मिला होगा। मैं इसे नया रूप इसलिए कहता हूं कि पिछले तीन-चार वर्षों से जो परिस्थितियां वहां उत्पन्न हो गई थीं उन्हें देखकर तो कई बार ऐसा प्रतीत होता था कि इस संस्था का उत्सव अब फिर न हो सकेगा, परन्तु गुरुकुल कांगड़ी के अधिकारियों अध्यापकों और कर्मचारियों के सहयोग से एक असम्भव बात भी सम्भव हो गई है। यद्यपि इस बार लगभग चार वर्ष के पश्चात् यह उत्सव हुआ है फिर भी जो उत्साह और सद्भावना का वातावरण इस बार वहां देखने को मिला है उससे न केवल कुलवासियों में अपितु सारी आर्य जनता में एक नई आशा का प्रादुर्भाव हुआ है। कोई भी आर्य समाजी इस बात से इन्कार नहीं कर सकता कि गुरुकुल के साथ आर्य समाज को एक विशेष लगाव है। वह इसलिए कि यह हमारी एक ऐसी संस्था है जिसे यदि उचित ढंग से चलाया जाए तो इसके द्वारा आर्य समाज का बहुत अधिक प्रचार हो सकता है। जिन महानुभावों ने आज से पच्चास साठ वर्ष पहले आर्य समाज के उत्सव देखे होंगे, उन्हें याद होगा कि आर्य समाज के भजनीक गाया करते थे कि—

आएंगे खत अरब से जिनमें लिखा यह होगा।
कि गुरुकुल का ब्रह्मचारी हलचल मचा रहा है।

हम यह जानते हैं कि ऐसी स्थिति अभी पैदा नहीं हुई कि गुरुकुल के ब्रह्मचारी अरब में जाकर वैदिक धर्म का प्रचार कर सकें। परन्तु यह भी एक वास्तविकता है कि गुरुकुल ने कई बहुत बड़े २ विद्वान् पैदा किए हैं जिन पर कि हम गर्व कर सकते हैं। गुरुकुल में कुछ शिथिलता आनी शुरू हुई तो उस समय से जब इसे एक विश्वविद्यालय बनाया गया और सरकार द्वारा प्रतिपादित नियमों के अनुसार इसे चलाना शुरू किया गया। परन्तु जो कुछ हो चुका है वह तो अब हो चुका, अब तो यह जैसा भी है हमने इसे चलाना है। पिछले तीन-चार वर्षों मे कुछ व्यक्तियों ने इसका रूप बिगाड़ने का भरसक प्रयत्न किया था। यही कारण था कि हम कई बार यह सोचा करते थे कि गुरुकुल का उत्सव फिर कभी हो सकेगा या नहीं। जो कुछ पिछले तीन-चार वर्षों मे वहां हुआ है उसके कारण हमारा सिर लज्जा से झुक जाता था और हम किसी को अपना मुंह न दिखा सकते थे, परन्तु अब वह सब अतीत की एक ऐसी कहानी बन गई जिसे हम भूल जाएं तो अच्छा है। अब हमें पीछे की ओर नहीं देखना आगे की ओर ही देखना है। इसी उद्देश्य से गुरुकुल के वार्षिक उत्सव का प्रबन्ध किया गया था।

यह उत्सव अत्यन्त सफल रहा है जितने लोग वहां पहले जाया करते थे उतने तो नहीं गए, सम्भवतः इसलिए कि लोगों को यह आशा न थी कि उत्सव होगा। परन्तु फिर भी बहुत से भाई और बहिनें वहां पहुंच गए और उनके कारण वहां रौनक हो गई। ८ अप्रैल से १२ अप्रैल तक श्री राजगुरु जी शर्मा ने यजुर्वेद पारायण यज्ञ कराया। १३ अप्रैल को दीक्षान्त समारोह हुआ जिसमे अपना भाषण देने के लिए उच्चतम न्यायालय के अवकाश प्राप्त न्यायाधीश श्री हंसराज खन्ना को निमन्त्रित किया गया था। श्री हंसराज खन्ना का सम्बन्ध अमृतसर के एक आर्य समाजी परिवार से है वह स्वयं भी आर्य समाजी हैं, इसलिए वह उस भावना को अच्छी प्रकार समझ सकते थे जिससे प्रेरित होकर हमने उन्हें निमन्त्रण दिया था, उनके अतिरिक्त भारत सरकार के शिक्षा विभाग के सचिव श्री चतुर्वेदी जी पधारे थे। रुड़की विश्वविद्यालय के कुलपति श्री जगदीशनारायण जी आए थे। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले, सार्वदेशिक सभा के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ जी मरवाह, सार्वदेशिक सभा के महामन्त्री श्री ओम्प्रकाश जी त्यागी और उपमन्त्री श्री सच्चिदानन्द जी शास्त्री, श्री स्वामी ओमानन्द जी और श्री स्वामी रामेश्वरानन्द जी आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री सरदारीलाल जी वर्मा और दूसरे कई और महानुभाव भी वहां आए थे। पंजाब से आर्य प्रतिनिधिसभा के उपप्रधान श्री [illegible] जी आशाव, उपमन्त्री श्री रणवीर भाटिया, पुस्तकाध्यक्ष श्री [illegible], शिक्षा परिषद् के प्रस्तोता श्री ऋषिपाल सिंह जी, बहन श्रीमती कमला आर्य और कुमारी विमला छाबड़ा भी गई हुई थीं। आर्य समाज शक्तिनगर अमृतसर के अधिकारी और कई सदस्य भी वहां पहुंचे हुए थे। दीनानगर से प्रि. अश्विनी कुमार जी अपने परिवार सहित गए हुए थे। इनके अतिरिक्त पंजाब और देहली से और भी कई भाई और बहनों ने वहां पहुंच कर गुरुकुल के अधिकारियों का उत्साह बढ़ाया। देहली के आर्य भाई और बहनें एक विशेष बस भर कर वहां लाए थे। गुरुकुल के पुराने स्नातक और नैरोबी के विख्यात उद्योगपति श्री सत्यदेव जी भारद्वाज वेदालंकार अपनी धर्म पत्नी सहित आए थे। श्री रामगोपाल जी के साथ जनसंघ के नेता श्री बलराज जी मधोक भी सम्मिलित हुए थे। और परोपकारिणी सभा के महामन्त्री जी डा. भवानी लाल भारतीय भी तीन दिन वहां रहे। उत्तर प्रदेश के विख्यात आर्य समाजी नेता और आयुर्वेदिक कालेज के प्रिंसिपल श्री सुरेशचन्द्र शास्त्री ने भी सक्रिय भाग लिया, सुप्रसिद्ध इतिहासकार डा. सत्यकेतु जी भी सपत्नीक आए थे।

इस उत्सव में यजुर्वेद पारायण यज्ञ और दीक्षान्त समारोह के अतिरिक्त एक शिक्षा सम्मेलन, एक वेद सम्मेलन और एक आर्य सम्मेलन भी हुआ। गुरुकुल विश्वविद्यालय के साईंस कालेज ने आर्य भट्ट विज्ञान प्रदर्शनी का आयोजन किया था, जिसे देखने के लिए हजारों लोग वहां गए होंगे। गुरुकुल में एक पुरातत्व संग्रहालय भी प्रारम्भ किया गया जिसमे कई पुरानी वह चीजें इकट्ठी की जा रही है जो अब मिलना कठिन हो रही हैं। इसे देखने के लिए भी बहुत लोग गए थे। वहां श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की जीवन कहानी चित्रों मे दी गई है जिसे देखकर बहुत प्रेरणा मिलती है।

इस उत्सव में जो सफलता हुई है उसका श्रेय तो सब कुल वासियों को मिलना चाहिए। परन्तु विशेष रूप से कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा को इसका श्रेय मिलता है उनके साथ उनके सहयोगियो ने जो कुछ किया है उसे भी भुलाया नही जा सकता। मेरे लिए तो सबसे अधिक सन्तोषजनक और हर्ष दायक बात यह थी कि गुरुकुल के सब अध्यापकों ने इस उत्सव को सफल बनाने मे अपना पूरा सहयोग दिया है यदि वह दिनरात एक न कर देते तो उत्सव में हमे वह सफलता प्राप्त न हो सकती थी जो हुई। मैं अपने कर्त्तव्य से वंचित रहूगा यदि मै आर्य प्रतिनिधिसभा दिल्ली, के प्रधान श्री सरदारी लाल जी वर्मा का धन्यवाद न करू जिस लगन और तन्मयता से वह कई दिन गुरुकुल मे बैठे रहे, और हम उत्सव को सफल बनाने के लिए प्रयत्न करते रहे हैं उन की जितनी भी प्रशसा की जाए कम है।

मैं आर्य प्रतिनिधिसभा पजाब के सब सदस्यो को बधाई देना हू कि गुरुकुल की फुलवाडी एक बार फिर खिलने लगी है। इस सस्था के लिए आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का विशेष उत्तरदायित्व है इसे बनाने वाले भी पजाबी ही थे। इसे चलाने वाले भी पजाबी ही रहे हैं। इसलिए इसको सुरक्षित रखने की हमारी विशेष जिम्मेदारी है अब जब कि कई वर्षों के पश्चात् यह सस्था फिर अपने पाव पर खड़ी हो रही है सारे आर्य जगत् के लिए हार्दिक प्रसन्नता का विषय है। परन्तु पजाब के आर्य बन्धुओ, बहनो और भाईयों के लिए तो यह विशेष प्रसन्नता का अवसर है कि जालन्धर से जाकर एक महापुरुष ने अपने तप और त्याग से जो फुलवाड़ी लगाई थी और जिसे मिटाने का बहुत अधिक प्रयत्न किया गया वह अब एक नए रूप में फिर से खिल उठी है।

—वीरेन्द्र

पं. राजगुरु शर्मा विद्यावाचस्पति के ज्येष्ठ भ्राता का देहान्त

आर्य जगत् मे यह समाचार बड़े दु:ख के साथ सुना जाएगा कि आर्य समाज के विद्वान् पुरोहित श्री प राजगुरु शर्मा जी के बड़े भाई श्री प जयशकर शर्मा का पिछले दिनों इन्दौर में देहान्त हो गया। श्री प राजगुरु उन दिनों गुरुकुल कांगड़ी के उत्सव पर गए हुए थे। उनकी अनुपस्थिति मे ही यह दुखद घटना घटी है। श्री जयशकर प. राजगुरु शर्मा के एक बहुत बडा सहारा थे और जब कभी श्री राजगुरु प्रचार के लिए बाहर जाते थे तो श्री जयशकर जी उनके परिवार की देखभाल किया करते थे। श्री राजगुरु की अनुपस्थिति में उनके देहान्त के बाद उनके सैंकड़ों मित्रों ने उनकी अन्त्येष्ठि की। परन्तु श्री राजगुरु उसमे सम्मिलित न हो सके, क्योंकि वह गुरुकुल कांगड़ी के उत्सव मे थे। श्री राजगुरु शर्मा का पता निम्न प्रकार है :—श्री प. राजगुरु शर्मा जी, विद्यावाचस्पति वेदसदन

महू छावनी (म. प्र.)

गुरुकुल कांगड़ी के दीक्षान्त समारोह पर

कुलपति श्री बलभद्र कुमार जी द्वारा सम्बोधन

अर्चनीय सन्यासीगण, माननीय, कुलाधिपति महोदय, आदरणीय न्यायमूर्ति श्री खन्ना, देवियो, सज्जनो साथियो एवं ब्रह्मचारियो।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के इस वार्षिकोत्सव पर सम्मान योग्य श्री एच. आर. खन्ना, अवकाश प्राप्त न्यायधीश सर्वोच्च न्यायालय ने अपने व्यस्त कार्यक्रम के उपरान्त जिस श्रद्धा एवं स्नेह से हमारे निमन्त्रण को स्वीकार किया है और यहां नवस्नातकों को आशीर्वाद देने के लिए पधारे हैं उसके लिए मैं आपकी ओर से एवं गुरुकुल परिवार की ओर से उन्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूं।

न्यायमूर्ति एच० आर० खन्ना अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के स्वामी हैं। प्रारम्भ में आपने अमृतसर में वकालत शुरू की। १९५२ में आप जिला एवं सेशन जज नियुक्त हुये। १९६२ में आप पंजाब उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के पद पर आरूढ़ हुये। १९६९ में आप देहली उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश नियुक्त हुए। तत्पश्चात् १९७१ में आपने उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीश का पद ग्रहण किया। १९७७ में आपने इस पद को स्वेच्छया त्याग दिया। किन्तु भारत सरकार ने आपको कार्यमुक्त नहीं किया। अतः जुलाई १९७९ तक आप भारत के विधि आयोग के अध्यक्ष पद पर कार्य करते रहे। भारत के प्रधान मन्त्री ने आपको भारत सरकार से विधि एवं न्याय मन्त्री पद को स्वीकार करने के लिये आमन्त्रित किया। इस पद को भी आपने थोड़े दिनों में त्याग दिया।

यह कहना अनावश्यक है कि "इदन्नमम्" और 'तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा" की आप प्रत्यक्ष मूर्ति हैं। जब कभी आत्मा की आवाज ने उन्हें बुलाया उन्होंने ऊंचे से ऊंचे पद को ठुकरा देने में जरा भी हिचकिचाहट नहीं की। यहां तक कि भारत के उच्चतम न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के आसन को ग्रहण करने का अवसर भी आपने प्रसन्नता पूर्वक त्याग दिया। आप न केवल इदन्नमम् के जीवन्त प्रतीक हैं अपितु आपने अपने जीवन में स्वामी दयानन्द के प्रिय श्लोक "निन्दन्तु नीति निपुणाः" को भी चरितार्थ किया है। आपने आपत्काल के दौरान हैबस कार्पस के चर्चित मुकद्दमे में अन्य जजों के साथ असहमति प्रकट करते हुये व्यक्ति के अधिकारों की रक्षा हेतु जो निर्भीक आदेश दिया उसका न्याय जगत् में बहुत सम्मान हुआ। न्यूयार्क टाइम्स ने अपने सम्पादकीय में लिखा कि नवीन भारत के पहले १८ वर्षों में स्वतन्त्र और प्रजातन्त्र का बोलबाला रहा। यदि फिर कभी भारत उस गौरव को प्राप्त करता है तो निश्चय ही भारतीय उच्चतम न्यायालय के न्यायमूर्ति श्री एच. आर. खन्ना स्मृति मन्दिर के अधिकारी होंगे।

केशवानन्द भारती के केस में आप द्वारा लिखित इस आशय का निर्णय कि लोकसभा भारत के संविधान के मौलिक ढांचे को नहीं बदल सकती आज देश का सर्व मान्य कानून बन चुका है। निःसन्देह आप भारतीय जनता की स्वतन्त्रता के रक्षक रहे हैं।

दिसम्बर १९७८ में भारत के मुख्य न्यायाधीश ने सर्वोच्च न्यायालय में आपके चित्र का अनावरण किया। आज तक किसी भी जीवित न्यायाधीश को यह सम्मान प्राप्त नहीं हुआ।

प्रत्येक भारतीय को आपके वीर-धीर व्यक्तित्व पर गर्व है। ऐसे ही महान् व्यक्तित्व के तप से आर्य धर्म की शाश्वत मर्यादाओं के पुनर्स्थापन का आन्दोलन सक्रिय हो रहा है। आप जैसे श्रेष्ठ, निर्भीक, धर्मात्मा व्यक्ति को आज अपने बीच में पाकर हम समस्त कुलवासी गौरवान्वित महसूस कर रहे हैं।

मान्य अतिथि-

यह तो आप जानते ही है कि आज से ८० वर्ष पूर्व स्वामी श्रद्धानन्द ने ब्रिटिश शिक्षा पद्धति के विरोध में गुरुकुल में शिक्षा प्रणाली को पुनः स्थापित करने के लिए गुरुकुल की स्थापना की थी। स्वामी दयानन्द की मृत्यु के पश्चात् उनके अनुयायियों ने उनकी यादगार कायम रखने के लिए लाहौर में दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल स्थापित किया जो बाद में कालेज के रूप में परिणित हो गया, परन्तु श्री गुरुदत्त विद्यार्थी एवं स्वामी श्रद्धानन्द ने अनुभव किया कि यह कालेज भी स्वामी दयानन्द द्वारा निर्देशित कार्यक्रम को पूरी तरह नहीं निभा पा रहा। अतः उन्होंने स्वामी दयानन्द के सपनों को साकार रूप देने के लिए गुरुकुल स्थापित करने की योजना बनाई।

गुरुदत्त विद्यार्थी की इहलीला १८८९ में समाप्त हो गई और वे भगवान को प्यारे हो गये। परन्तु स्वामी श्रद्धानन्द ने अभूतपूर्व आत्मविश्वास के साथ अपने अडिग संकल्प को पूरा किया। उन्होंने अपनी सारी सम्पत्ति और शक्ति इसी स्वप्न को पूरा करने में लगा दी और अनेक दानवीरों और सहयोगियों की सहायता के फलस्वरूप गुरुकुल की बुनियादें कायम करने में सफल हुये।

स्वामी श्रद्धानन्द ने जिस प्रकार के गुरुकुल की स्थापना की इसके बारे में सर रेम्जे मैकडानल्ड जो १९१४ में गुरुकुल पधारे थे और बाद में इंग्लैंड के प्रधानमन्त्री बने, अपने संस्मरण में निम्नवत् लिखा है।

"जिस किसी व्यक्ति ने भारत के विद्रोह के बारे में पढ़ा लिखा है वे निश्चय ही गुरुकुल के नाम से सुपरिचित होगा। यहां आर्यों के बच्चों को शिक्षा दी जाती है।"

"मेरी ट्रेन प्रातः ही हरिद्वार पहुंची। यहां गंगा पर्वतों से उतर कर मैदानी इलाके में प्रवेश करती है। जब हम नदी किनारे पहुंचे तो हमें मिट्टी के तेल के कनस्तरों से बन्धी हुई बांसों की एक किश्ती पर बैठा दिया और हमारी यह किश्ती शीघ्र ही मझधार में बहने लगी, अन्त में हम एक रेतीले किनारे पर जा उतरे। वहां से हम पैदल रवाना हुए। दूर हमें ध्वजा स्तम्भ दिखाई दिया जिस पर गुरुकुल की ध्वजा फहरा रही थी। गुरुकुल जाने का पथ पुष्प वाटिकाओं से घिरा हुआ था। गुलाब और चमेली की सुगन्ध सर्वत्र व्याप्त थी। इधर उधर खेल के मैदान थे। प्रवेश द्वार पर ओ३म् का झण्डा फहरा रहा था। लगभग ३०० विद्यार्थी इस समय यहां पढ़ते हैं। महात्मा मुंशी राम उनके पिता हैं और वे उनके पुत्र हैं। वह ४ बजे प्रातः उठते हैं। शारीरिक व्यायाम करते हैं। ठंडे पानी से स्नान करते हैं। फिर सन्ध्या उपासना करते हैं। पीत वस्त्र धारण करते हैं, माता-पिता से मिलने का अवसर उन्हें केवल वार्षिकोत्सव पर प्राप्त होता है। छुट्टियों में बच्चों को यत्र तत्र ले जाया जाता है। महात्मा मुंशी राम कहते हैं कि बच्चों को तप और अनुशासन का अभ्यास कराने के लिए मैं यहां प्रयत्नशील हूं।"

"मेरे कमरे में उन्होंने लाल फूलों के दो पुष्प गुच्छ सजा दिये हैं। खाना खाने के बाद हम स्कूल देखने गये। स्कूल में चारों ओर अनुशासन और प्रसन्नता है बच्चे बड़ी श्रद्धा से अपना पाठ पढ़ रहे हैं, कुछ बच्चे मिट्टी के माडल बना रहे हैं। जैसे ही कक्षायें समाप्त हुई बच्चे भाग कर खेल के मैदान की ओर लपके।"

"शाम को हम जंगल में भ्रमणार्थ गये और जैसे ही रात हुई हम वापिस लौटे। शाम को मैंने उन्हें सामूहिक सन्ध्या हवन में और फिर ध्यान में उपस्थित देखा। तत्पश्चात् रात्रि भोज हुआ और दिन का कार्यक्रम समाप्त हुआ।"

इस प्रकार का था महात्मा मुंशी राम का गुरुकुल। मैंने उपर्युक्त उद्धरण को दोहराने की इस लिए धृष्टता की है कि जब हम पुनः स्वामी श्रद्धानन्द के सपनों का गुरुकुल स्थापित करने के लिए कृत संकल्प हैं यह चित्र हमारे आदर्श को सुस्पष्ट करता है।

विगत कई वर्षों से गुरुकुल पर अनुशासनहीनता, अराजकतावाद और त्रास के बादल छाये रहे हैं। वास्तव में यहां एक प्रकार का देवासुर संग्राम ही होता रहा है। इस स्थिति में गुरुकुलवासियों पर विभिन्न दिशाओं से तरह-तरह के भीषण प्रहार हुए उन्होंने जिस धैर्य और आत्म विश्वास के साथ अनेक कष्ट सहते हुए असुरों का मुकाबला किया वह प्रशंसनीय है। अन्त में सत्य की विजय हुई और असुर पराजित हुये। आज गुरुकुल वासी स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा दर्शाये गये पथ पर अग्रसर हैं, चाहे ही उनके चरणों में वैसी गति और स्फूर्ति न आ सकी हो जिसकी अपेक्षा आप महानुभाव करते रहे हैं।

महोदय,

जिन सज्जनों ने जुलाई १९८० में गुरुकुल की दशा देखी है वे जानते हैं कि उस समय परिसर में कितनी झाड़ झंखाड़ थी सफाई का नामोनिशान नहीं था इस के अतिरिक्त साल भर से स्टाफ को वेतन नहीं मिल पा रहा था। १९७९-८० की परीक्षायें सम्भावित थी। अध्यापक वर्ग एवं शिक्षकेत्तर वर्ग के कई स्थान रिक्त पड़े थे जिसके कारण कार्य संचालन में बाधायें आ रही थी।

गुरुकुल परिसर को साफ करने के लिए यह निर्णय लिया गया कि महीने के अन्तिम शनिवार को श्रमदान के तौर पर सामूहिक सफाई दिवस मनाया जाय। इसका सर्वत्र बड़े उत्साह से स्वागत हुआ। नवम्बर के प्रथम सप्ताह में आयुर्वेद कालेज गुरुकुल कांगड़ी के प्राचार्य डा० सुरेशचन्द्र शास्त्री और राजस्थान के भूतपूर्व स्वास्थ्य और चिकित्सा निदेशक डा० सत्यदेव आर्य के नेतृत्व में धन्वन्तरि सप्ताह मनाया गया। आज आप सब देख रहे हैं कि गुरुकुल परिसर चमकता और खिलता हुआ नजर आ रहा है। यह इसी श्रम तप का फल है।

इसी प्रकार स्टाफ को यथा समय वेतन प्रदान करने की स्थिति में यथेष्ठ सुधार आया है। इसके लिए मैं पूर्व वित्त अधिकारी श्री सरदारी लाल वर्मा और वर्तमान वित्ताधिकारी श्री बी. एम. थापर का आभारी हूं। विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से अब नियमित रूप से अनुदान प्राप्त होने लगा है। परीक्षायें भी सम्पन्न हो चुकी हैं जिनका अन्तिम चरण आज उपाधि प्रदान द्वारा सम्पादित हो रहा है। कतिपय रिक्त स्थानों पर अध्यापकगण की नियुक्ति हो चुकी है। अन्य स्थानों की पूर्ति के लिए हम निरन्तर प्रयत्नशील हैं. विश्वविद्यालय और विद्यालय के पठन-पाठन और कार्य-कौशल में स्वयं अनुभव किया जा रहा है।

क्रमशः

मानवता का पथ प्रदर्शक— महर्षि दयानन्द सरस्वती

लेखक—श्री यशपाल आर्यबंधु आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद

महापुरुषों में अग्रणी युगपुरुष महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती उन महामानवों में से एक थे, जो समय समय पर भूली भटकी मानवता को पथ दर्शाने के लिए आते हैं और उसे सुपथ दर्शा कर चले जाते हैं। वे मानवता के पथ प्रदर्शक ही नहीं, मानवता के आदर्श भी थे। मानवता को सीधी सच्ची वेदप्रतिपादित राह दिखाने वाले आधुनिक युग में वे ही महामानव थे। उनका मानव मात्र के लिए आह्वान था कि "अच्छा तो वेद-मार्ग है, जो पकड़ा जाए तो पकड़ो, नहीं तो सदा गोते खाते रहोगे।" (स. प्र. एकादश समुल्लास) महर्षि दयानन्द के अनुसार सन्यासियों का मुख्य काम "पक्षपात रहित वेद मार्गोपदेश से जगत के कल्याण करने में अहर्निश प्रवृत्त रहना" है। (देखें एकादश समुल्लास) और इस कर्मयोगी सन्यासी ने स्वयं भी यही किया। वे दिन—रात वेद मार्ग का ही उपदेश कर जगत् के कल्याण की बातें सोचा करते थे। और इतना ही नहीं, उनका तो यहां तक कथन है कि "वैदिक धर्म प्रचार का कार्य बहुत बड़ा है। हम जानते हैं कि वह हमारे इस सारे जीवन में पूर्ण न हो सकेगा। परन्तु चाहे दूसरा जन्म धारण करना पड़े, मैं इस महत् कार्य को अवश्य पूर्ण करूंगा।" (श्रीमद्दयानन्द प्रकाश. पृष्ठ ३२६) जिस प्रकार महात्मा कृष्ण धर्म संस्थापन के लिए बार-बार जन्म धारण करने की उच्च भावनाओं से भावित थे वैसे ही योगीराज दयानन्द भी वैदिक धर्म के प्रचार के लिए बार-बार जन्म धारण करने की बात कहते हैं। वे वेदों को ईश्वरीय ज्ञान होने के कारण मानव के अभ्युदय एवं निःश्रेयस की सिद्धि के लिए आवश्यक समझते थे, इसी लिए उन्होंने वैदिक धर्म के प्रचार पर इतना बल दिया। और सत्य तो यह है कि महर्षि ने वेद प्रतिपादित सत्य सनातन धर्म की रक्षा, प्रचार तथा प्रसार के लिए ही आर्य समाज रूपी आंदोलन का प्रवर्त्तन किया था। "वेदोऽखिलो धर्ममूलम्" के अनुसार अखिल वेद धर्म का मूल है। और जैसा कि लाला लाजपतराय का कथन है, कि "धर्म ईश्वरीय ज्ञान के बिना निर्मूल है। धर्म ईश्वरीय शिक्षा के बिना अन्धा और लंगड़ा है। धर्म परमात्मा के ज्ञान के बिना निष्प्राण है।" (देखें आर्यरत्न का महर्षि जीवन विशेषांक पृष्ठ ९९) धर्म का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने एवं उस पर चलने के लिए ही उन्होंने संसार का ध्यान वेदों की ओर दिलाया था। वस्तुतः वह वेदों वाला ऋषि था। उनके अनुसार जिससे अभ्युदय एवं निःश्रेयस की सिद्धि हो वही धर्म है। महर्षि मानव मात्र का अभ्युदय एवं निःश्रेयस चाहते थे। तभी उन्होंने भूली बिसरी वेद—विद्या की ओर संसार का ध्यान आकर्षित किया। वह सच्चा मानव हितैषी था। रूढ़िग्रस्त दुःखी मानवता को ज्ञान देना ही उनके जीवन का लक्ष्य था।

महर्षि दयानन्द के आगमन के समय मानवता का ह्रास अपनी चरम सीमा तक पहुंच चुका था। लोग मानवता के मूल्यों को सर्वथा भूल चुके थे। महर्षि दयानन्द ने मानवता के मूल्यों की ओर ध्यान दिलाया और मानव निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया। महात्मा गांधी ने कहा था कि "जो मानवता के मूल्य को नहीं पहचानता, वह मानव हो ही नहीं सकता।" इतना होते हुए भी मानव के निर्माण की ओर किसी का भी ध्यान नहीं गया था। महर्षि दयानन्द पहले व्यक्ति थे जिन्होंने न केवल मानव निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया अपितु मानव निर्माण की योजना भी प्रस्तुत कर दिखाई। उनके द्वारा मानव निर्माण की जो शतवर्षीय योजना प्रस्तुत की गई थी। उस की सम्पूर्ण कार्य विधि 'संस्कार विधि' नामक ग्रन्थ में विद्यमान है। जिस में वे लिखते हैं कि "जैसे सब पदार्थों को उत्कृष्ट करने की विद्या है, वैसे सन्तान को उत्कृष्ट करने की यही विद्या है।" (गर्भाधान संस्कार) यदि देखा जाए तो मानव जीवन की कोई भी अवस्था संस्कार-शून्य नहीं। गर्भ से ही मनुष्य संस्कारों में पलता है। शैशव से यौवन तक संस्कारों में ही पनपता है और प्रौढ़ावस्था से अन्तिम अवस्था तक इन्हीं में अन्तर्हित रहता है। आधुनिक युग में वैदिक संस्कारों का पुनर्चलन करने वाले वे प्रथम महापुरुष थे। उनकी मान्यता थी कि "संस्कार उसको कहते हैं कि जिस से शरीर, मन और आत्मा उत्तम होवे।" (आर्योद्देश्य रत्नमाला) वस्तुतः मानवता सम्बन्धी सर्वोच्च गुणों को धारण करने के लिए हृदय में जिन प्रेरणाओं, सद्भावनाओं तथा सत्संकल्पों की आवश्यकता पड़ती है, उन्हीं को मानव हृदय में वपन करने का नाम ही संस्कार है। महर्षि ने इनके महत्व को अच्छी तरह समझा और तभी इनका प्रचलन भी किया। मानव निर्माण में संस्कारों का कितना महत्व है इसका इसी बात से पता चल जाता है कि हमारे अधिकांश संस्कार मानव जीवन की प्रारम्भिक अवस्था, जिसे हम निर्माण की अवस्था भी कह सकते हैं, में ही सम्पादित किये जाते हैं और यदि देखा जाए तो मानव-जीवन की प्रारम्भिक अवस्था ही मानव-निर्माण की वास्तविक अवस्था होती है। क्योंकि कच्ची मिट्टी से ही घड़ा बनता है, पक्की से नहीं। ठीक इसी प्रकार शैशवकाल में ही संस्कारों के द्वारा मानव का नवनिर्माण किया जा सकता है, पक्की अवस्था नहीं, पाश्चात्य मनीषी टी. कोमन का कथन है कि "मानव मस्तिष्क की शिक्षा शैशव के पलने से ही प्रारम्भ हो जाती है। शैशवकाल की प्रत्येक घटना एवं शिशु से कहा गया प्रत्येक शब्द उसके चरित्र का निर्माण करता है।" संस्कारों के सम्पादन में मानव-जीवन के विकास की प्रत्येक महत्वपूर्ण अवस्था और जीवन का प्रत्येक मोड़ बालक के लिए दिशासूचक बन जाता है। अतः मानव के सही विकास एवं निर्माण में संस्कारों का अपना विशेष महत्व है। यह श्रेय मानवता के पथ-प्रदर्शक महर्षि दयानन्द को जाता है कि उन्होंने लुप्त प्रायः संस्कारों का पुनः प्रचलन कर मानव निर्माण की अनुपम योजना प्रस्तुत कर दिखाई।

माता निर्माता होती है, किन्तु वह तभी निर्माता है जब वह स्वयं सुशिक्षित होगी। उसे निर्माण की विधि का भी यथार्थ ज्ञान होगा। किन्तु महर्षि के आगमन के पूर्व स्त्रियों की शिक्षा प्रायः वर्जित थी। महर्षि ने इस दुर्दशा को देखा और उसे दूर करने का बीड़ा उठाया और स्त्री जाति के लिए विद्या पढ़ने पढ़ाने की व्यवस्था दी। नेपोलियन ने कहा था कि "Give me good mothers and I shall give you a good nation." अर्थात् मुझे उत्तम माताएं दीजिए, मैं आप को उत्तम जाति दूंगा। महर्षि ने सन्तान के लिए सर्वप्रथम शिक्षक माता को ही माना है। किन्तु वह शिक्षिका तभी है कि जब वह स्वयं भी सुशिक्षित होगी। यही कारण है कि उस महामानव ने स्त्री-शिक्षा पर सर्वाधिक बल दिया है और ऐसा कर उन्होंने मानव-निर्माण की दिशा में उचित पग उठाया।

मानव-निर्माण में शिक्षा का अपना महत्व है। महर्षि दयानन्द लिखते हैं कि "पशु भी सुशिक्षा पाए उत्तम कार्य सिद्ध करते हैं, क्या फिर विद्या की शिक्षा से युक्त मनुष्य लोग उत्तम कार्य सिद्ध नहीं कर सकते?" इतना ही नहीं महर्षि शिक्षा को परम धर्म और पुनीत कर्म बताते हैं। उनका कथन है कि "यही माता-पिता का कर्त्तव्य कर्म, परम धर्म और कीर्ति का काम है जो अपने सन्तानों को तन, मन, धन से विद्या, धर्म सभ्यता और उत्तम शिक्षा युक्त करना।" मानव-निर्माण में शिक्षा के महत्व से इन्कार नहीं किया जा सकता। इसीलिए महर्षि ने इसे राज नियम अथवा जाति नियम द्वारा अनिवार्य करने की व्यवस्था अपने सुप्रसिद्ध ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में दी है। सत्य तो यह है कि अनिवार्य शिक्षा के लिए सर्वप्रथम आवाज इसी महामानव ने ही उठाई थी। आचार को शिक्षा के साथ संयुक्त करना इस महामानव का एक महान् कार्य है। इसके लिए मानवता युगों तक उनकी ऋणी रहेगी। आचार का पाठ पढ़ाने वाले शिक्षक को ही आचार्य की संज्ञा दी गई है। महर्षि दयानन्द के शब्दों में "जो श्रेष्ठ आचार को ग्रहण कराके सब विद्याओं को पढ़ा देवे, उनको आचार्य कहते हैं।" माता के गर्भ में बालक के शरीर का निर्माण होता है जबकि आचार्य के गर्भ में बालक के मन और मस्तिष्क के साथ-साथ उस का चारित्रिक विकास होता है। वस्तुतः चारित्रिक उत्थान ही शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य होता है। स्पेंसर की ऐसी ही मान्यता है। यथा—"Charaeter is the ultimate aim of education."

मानवता का आदर्श

जैसा कि पूर्व भी लिख आए हैं कि महर्षि दयानन्द मानवता के पथ-प्रदर्शक ही नहीं मानवता के आदर्श भी थे। मानवता का जो आदर्श उन्होंने स्थापित किया है, उसका अपना ही कीर्तिमान है। तभी महाकवि निराला ने कहा था कि "महर्षि दयानन्द से बढ़ कर भी मनुष्य होता है, इसका प्रमाण प्राप्त नहीं हो सकता।" (वन्दना के स्वर पृष्ठ १८) वस्तुतः मानवता के जिस ऊंचे से ऊंचे आदर्श की कल्पना की जा सकती सकती है, महर्षि दयानन्द सदैव उससे बढ़ कर ही नजर आते हैं, घटकर नहीं। 'मानव जीवन में शरीर, मन और बुद्धि का जो ऊंचे से ऊंचा मापदण्ड या आदर्श स्थापित किया जा सकता है, ऋषि दयानन्द उससे कभी घटकर नजर नहीं आते, हमेशा बढ़ कर ही नजर आते हैं। उनके जैसा अविप्लुत नैष्ठिक ब्रह्मचर्य और तेजस्वी शरीर सम्पदा और कहां दृष्टिगोचर होगी? उनके जैसा करुणाशील, अपने विषदाताओं को भी बन्धन मुक्त करने वाला क्षमाशील, अपमान करने के लिए अपशब्दों के अलावा कीचड़, ईंट पत्थर तथा अन्य अनेक प्रकार के निकृष्ट हथियार प्रयुक्त करने वालों के प्रति भी दयाशील और उदार मन वाला व्यक्ति और कहां मिलेगा? कहां मिलेगा बुद्धि—वैभव का ऐसा धनी कि विपक्षियों के तर्कजाल को ऐसे समेट कर रख दे जैसे मेघजल को सूर्य का भास्वर प्रकाश और विद्याभिमानी समस्त पण्डितमण्डली को एकाकी ही ऐसे खदेड़ दे जैसे मृग मण्डली को वनराज सिंह? कहां मिलेगा ऐसा योगी? कहां मिलेगा ऐसा वेदों का

(शेष पृष्ठ ९ पर देखें)

राष्ट्रभाषा की ऐसी उपेक्षा क्यों

पंजाब में, जिसने हिन्दी को, पं० सुदर्शन, यशपाल, चन्द्र गुप्त विद्यालंकार, उपेन्द्रनाथ 'अश्क' राजेन्द्र सिंह बेदी आदि जैसे मूर्धन्य साहित्यकार दिये हैं. आज हिन्दी की घोर उपेक्षा हो रही है, यह सभी हिन्दी-प्रेमियों के लिए चिन्ता का विषय है, जैसाकि तथ्यों और घटनाओं से स्पष्ट है, पंजाब में हिन्दी की यह उपेक्षा, संवैधानिक निर्देशों को ताक में रखकर, राजनैतिक उद्देश्यों से की जा रही है, इस सम्बन्ध में पंजाब के प्रख्यात हिन्दी पत्रकार और आर्य समाज के नेता श्री वीरेन्द्र का यह कथन उल्लेखनीय है, 'जब कभी पंजाब के हिन्दीभाषी पंजाब सरकार से यह अनुरोध करते हैं कि राज्य में हिन्दी को भी जीवित रहने दिया जाए, और उसकी उपेक्षा न की जाए, तब सारे अकाली नेता, एक साथ चीखने चिल्लाने लगते हैं, इस चिल्लाहट में उनकी हीन-भावना छिपी है, उन्हें इस बात का डर है कि यदि राष्ट्रभाषा हिन्दी पंजाबी भाषा से अधिक लोकप्रिय हो गयी तो पंजाबी भाषा कमजोर पड़ जाएगी,

पंजाब सरकार हिन्दी की उपेक्षा करके संविधान की धारा २९ (१) का, जिसमे स्पष्ट कहा गया है कि 'प्रत्येक राज्य-सरकार का यह कर्तव्य है कि अल्प-संख्यकों की भाषा और संस्कृति को पूरी सुरक्षा प्रदान करे, 'उल्लंघन तो कर ही रही है, सच्चर फार्मूला का भी निरादर कर रही है, जिसमें यह कहा गया था कि यदि किसी विद्यालय में कम से कम तीस. और किसी कक्षा में कम से कम दस विद्यार्थी पढ़ना चाहेंगे वहां राज्य-सरकार को हिन्दी पढाने की व्यवस्था करनी पड़ेगी, इसके अति-रिक्त, पंजाब सरकार सर्वोच्च न्यायालय के इस महत्वपूर्ण निर्णय की अवहेलना की भी दोषी है, जिसके अनुसार पंजाब के अल्पसंख्यकों की भाषा हिन्दी के लिए, राज्य के चालीस प्रतिशत हिन्दी भाषी विद्यार्थियों को यह छूट होनी चाहिए कि वे अपनी भाषा के माध्यम का चुनाव कर सकें।

लगता है, हिन्दी को पंजाब में अपना न्यायोचित अधिकार प्राप्त करने के लिए संघर्ष और आंदोलनों का सहारा लेने को बाध्य होना पड़ेगा।

बिहारी लाल
बहल फैमिली ट्रस्ट बम्बई

सभा को सहायता के लिए और उसकी निम्न योजनाओं के लिए

अधिक से अधिक धन भेजिए

पंजाब की आर्य समाजों से अपील

१. सभा के वेद प्रचार विभाग के लिए जो आर्य समाज का मुख्य कार्य है।

२. सभा के साहित्य प्रकाशन के लिए जो वर्तमान युग में प्रचारार्थ सबसे प्रभावशाली साधन है।

३. सभा के नये भवन के निर्माण के लिए।

४. सभा की ओर से बनाये जा रहे कादियां के लेखराम स्मारक, मोही के स्वतन्त्रानन्द स्मारक तथा तलवन के श्रद्धानन्द स्मारक के निर्माण के लिए।

५. प्रचारार्थ एक जीप खरीदने के लिए।

६, सभा की शिक्षा संस्थाओं के संचालन तथा संवर्धन के लिए।

वीरेन्द्र,
सभा प्रधान

रामचन्द्र जावेद
सभा मन्त्री

(५ पृष्ट का शेष)

मर्मज्ञ ? पाठक वृन्द! महापुरुषों की सुदीर्घ पंक्ति मे दीपक लेकर तलाश करिए और देखिए कि उन सबमे क्या कोई ऐसा व्यक्ति भी है जो शरीर, मन और बुद्धि के वैभव में ऋषि को मात दे सके ? इससे बढ कर मानव जीवन की पूर्णता की आप क्या कल्पना कर सकते हैं।" (महर्षि जीवन विशेषांक, सार्वदेशिक सप्ताहिक पृष्ठ ५-६ योगी अरविन्द ने कहा था कि "महापुरुषों को यदि पर्वत की चोटियां माना जाए तो दयानन्द सब से ऊंची चोटी हैं।" हमें जैनेन्द्र कुमार की एक उक्ति याद आती है, जो महर्षि दयानन्द पर अक्षरशः उतरती दिखाई देती है। वे लिखते हैं कि "उन्होने बन्धन के मध्य मुक्ति की और मृत्यु के बीच अमरता की साधना की है, ऐसे पुरुष स्वयं जीवन का मापदण्ड बन गए हैं-इनसे हम जीवन की सत्यता को समझा करते हैं।" महर्षि दयानन्द हमारे लिए मानवता के आदर्श प्रतिमान हैं। युग-युग तक उनकी प्रामाणिकता हमें आलोकित करती रहेगी।

(२ पृष्ठ का शेष)

यह इस बात से सिद्ध होता है कि हम भारतीय जब दूसरे देशों के विश्व-विद्यालयों मे जाते हैं तो हम परीक्षाओं में बहुत ऊंचा स्थान लेते हैं। मगर पता नही क्या बात है कि जहां हमें एक दूसरे के साथ मिल कर सामूहिक रूप से काम करना होता है तो वहां पर हम किसी न किसी तरह फिसल जाते हैं और दूसरी बातों मे फंस जाते है।

हम अपनी अर्थव्यवस्था को सुधारने के लिए दर्जनों योजनाएं बनाएं किन्तु उनसे यथोचित फल तो तब ही प्राप्त होगा जब हर व्यक्ति अपना योगदान देगा। हमें इस बात को सदैव याद रखना चाहिए कि हर राष्ट्र की खुशहाल अर्थव्यवस्था के पीछे खून पसीना बहाने की एक रहस्यमय कहानी निहित है, जिसमें निरन्तर कठिन परिश्रम और सुनिश्चित धन का बहुत महत्व रहा है। इनके सिवाय जीवन स्तर को ऊंचा करने का कोई और उपाय नही हो सकता।

तीसरी आवश्यकता है नैतिक मूल्यों की। कोई भी देश ऊंचा नहीं उठ सकता और महान् नही बन सकता जो अपने सामने कुछ सात्विक मर्यादाएं न रखे और उनका पालन न करें। आज आम जनता का राजनैतिक नेताओं में थोड़ों को छोड़ कर, बाकी पर से विश्वास क्यों उठ गया है ? इसका सब से बड़ा कारण यह है कि बहुत से नेता लोग कहते हैं कुछ और, करते है कुछ और।" आज भ्रष्टा-चार बहुत ही बढ़ गया है। भ्रष्टाचार के साथ काले धन का बहुत सम्बन्ध है। दोनों साथ-साथ चलते हैं। पिछले समय में महात्मा गांधी, जवाहर लाल नेहरू और सरदार पटेल के लिए लोगो के हृदय मे इतना अधिक मान था और उन के कथन के अनुसार लोग क्यो चलते थे ? उसका सबसे बडा कारण यह था उन की नैतिक और राजसी आस्था पर सब का अटल विश्वास था आजकल तो कभी कभी कुछ लोगो के व्यवहार से ऐसा लगता है जैसा कि हम नैतिक मूल्यों की चिता जला रहे हैं।

एक और बात, जिसकी तरफ मैं आपका ध्यान दिलाना चाहता हूं, वह है आदर्शवाद की महानता की आव-श्यकता। आदर्शवाद राष्ट्रीय जीवन को ढालने में उतना ही योगदान देता है जितना कि दूसरे तत्व। इसके साथ-साथ आदर्शवाद आन्तरिक शक्ति का सबसे बड़ा सरोवर है। देश के नवयुवक आदर्श-वाद के असल रखवाले होने हैं। हमें देखना यह है कि वह सरोवर सूखने न पाए और वह रखवाले कमजोर न पड़ जाएं।

मैं एक बार फिर उन स्नातकों को जिन्होंने आज उपाधियां प्राप्त की है बधाई देता हूं और प्रार्थना करता हूं कि वह देश के सच्चे नागरिक बनें और अपने जीवन की हर दशा में सफलता पाएं।

धन्यवाद !

श्री शंकरदेवजी विद्यालंकार का देहावसान

आर्य कन्या गुरुकुल पोरबन्दर (गुजरात) के भू. पू. आचार्य श्री शंकरदेव जी विद्यालंकार का २-४-८१ को बम्बई में देहावसान हो गया। आप गुर्जरदेश के बलसाड जिले के मलवाड़ा ग्राम के रहने वाले थे। आप गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक थे आपने वर्षों आर्य कन्या गुरु-कुल पोरबन्दर की सेवा की। ९-१२-८० को इस संस्था ने उनका पुरजोर अभि-नन्दन किया था। वह एक महान् व्यक्ति थे और जीवन में उन्होंने महान् ही कार्य किए है। उन्होने जो गुरुकुल के निर्माण में कार्य किया है वह भुलाया नहीं जा सकेगा। भगवान से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को सद्गति प्रदान करे।

—व्यवस्थापिका (गुरुकुल)

आर्य समाज मोरिण्डा का चुनाव

५ अप्रैल १९८१ को आर्य समाज मोरिण्डा में आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया और अगले वर्ष के लिये निम्न-लिखित चुनाव श्री लाला वृज राम की अध्यक्षता में हुआ। यह चुनाव सर्वसम्मति से हुआ।

प्रधान श्री विद्यासागर जी उप-प्रधान श्री शांति स्वरूप जी मन्त्री श्री सत्य स्वरूप जी कोषाध्यक्ष ला. दीनानाथ जी डा० सत्यस्वरूप जी तथा हरिकिशन जी श्री ओम् प्रकाश महिन्द्र।

आर्य संस्कृति का मूल आधार

—प्रा. श्री आचार्य भद्रसेन जी होशियारपुर

★

(गतांक से आगे)

कर्म के जड़ होने से उनमें कोई भी ऐसी विशेष शक्ति नहीं, जिससे कि वह अपने करने वाले को स्वयं उसका यथा-योग्य फल दे सके। अतः ऐसे कर्मफल प्रदाता को मानने की आवश्यकता होती है, जो प्रत्येक को उसके कर्म के अनुरूप फल दे। कर्म फल देने के लिए कर्म व्यवस्था तथा कर्मों का सम्पूर्ण ज्ञान होना चाहिए, जिससे वह सुचारु रूप से यह कार्य कर सके। यदि वह दूसरे के सहारे इस व्यवस्था को पूर्ण करता है तो वहां उसकी असमर्थता प्रकट होगी, वहां उसके अज्ञान आदि के कारण अनेक दोषों की सम्भावना हो सकती है। अतः इन सब समस्याओं का सुन्दर समाधान ईश्वर को सर्वज्ञ, सर्वव्यापक सर्वशक्तिमान् नित्य, निर्विकार न्यायकारी और सर्वान्तर्यामी आदि गुणयुक्त स्वीकार कर लेने से ही जाता है। ईश्वर जहां हमारे चारों ओर फैले हुए दृश्य अदृश्य संसार को बना कर उसका पालन एवं नियमन करता है वहां समग्र प्राणियों के सम्पूर्ण कर्मों का न्यायमय यथायोग्य फल भी देता है। कर्मफलप्रदता को स्वीकार किए बिना कर्म-व्यवस्था का समाधान कठिन ही नहीं, असम्भव भी है। आए दिन बढ़ता हुआ हर प्रकार का भ्रष्टाचार कर्म-व्यवस्था को स्वीकार करने पर ही घट सकता है क्योंकि भ्रष्टाचार करने का अभिप्राय है कर्मफल-व्यवस्था को स्वीकार न करना।

मानव शुभ कर्म करते हुए ही श्रेष्ठ फल को प्राप्त करता है तथा एक संस्कृत मानव ही शुभ कर्मों में सदा प्रवृत्त होता है। मानव एवं उसके जीवन को सुव्यवस्थित संस्कृत एवं समुन्नत बनाने के लिए षोडश संस्कारों और आश्रम व्यवस्था का जहां आर्य संस्कृति में विशेष उल्लेख है वहां सामाजिक वातावरण के सुनिर्माण के लिए वर्ण व्यवस्था का विशेष स्थान है।

वर्ण व्यवस्था—

सुव्यवस्थित सामाजिक व्यवस्था ही मनुष्य को शुभ कर्म करने या समुन्नत, सुसंस्कृत बनाने में सहायक हो सकती है। सामाजिक व्यवस्था को सुव्यवस्थित बनाने के लिए आर्य संस्कृति में जहां समता बन्धुता, सहिष्णुता, सहानुभूति आदि भावों को स्थान दिया गया है वहां वर्ण व्यवस्था का विशेष महत्त्व है। यह आर्य [illegible] वर्ण व्यव-स्था के सर्वांगीण रूप पर विचार करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि इसमें सामाजिक व्यवस्था के प्रत्येक पहलू को स्थान दिया गया है। जहां सामाजिक व्यवस्था सुख शांति के महान् शत्रु अज्ञान अन्याय और अभाव की निवृत्ति के लिए वर्ण व्यवस्था का मौलिक रूप अत्यन्त उपादेय है (और इससे शिक्षा सुरक्षा अर्थ व्यवस्था एवं कलाओं के विकास को प्रोत्साहन मिलता है) वहां सदाचार के प्रसार के लिए नैतिक दृष्टिकोण को बिल्कुल भुला नहीं दिया गया जिससे समाज की कार्य प्रणाली तथा व्यवस्था ठीक प्रकार से चल सके। यहां यह बात विशेषरूप से सोचने वाली है कि वर्ण व्यवस्था को कहीं हम प्राचीन मोह या भ्रम दोष के रूप में तो नहीं ले रहे। आधुनिक छूआछूत, ऊंच नीच को देख कर कई बार वर्ण व्यवस्था ही इन विषमताओं का कारण होने से अनुपयुक्त या वर्ण व्यवस्था ही दिखाई देती है। परन्तु वर्ण व्यवस्था का यह रुग्ण रूप ही है। रुग्ण अवस्था में प्रत्येक का स्वरूप विकृत हो जाता है। इस में भी कोई सन्देह नहीं है कि किसी समाज के ऊंचे आदर्श भी कई बार कुछ व्यक्तियों के स्वार्थवश विकृत हो जाते हैं जो इस दशा से समाज की रुग्ण दशा का परिचय देते है।

आर्य संस्कृति के समग्र स्वरूप को समझने का सर्वोत्कृष्ट साधन वेद हैं। आर्य संस्कृति के अनुसार वेद स्वतः प्रमाण और अन्य ग्रन्थ परतः प्रमाण हैं। वेद ईश्वरीय ज्ञान होने से नित्य पूर्णसत्य एवं सार्वकालिक सार्वभौमिक तथा सार्वजनसम्मत है। ज्ञान से ही मनुष्य का सारा व्यवहार सिद्ध होता है। ज्ञान से ही किसी के स्वरूप का परिचय तथा उसकी अच्छाई बुराई का ज्ञान होता है। विद्या के बिना मनुष्य पशु के समान है। विद्या ही मानव के विकास का प्रधान साधन है। यही भाव विद्ययाऽमृतमश्नुते (यजु ४० १४) तत्त्वज्ञानानि श्रेयसम आदि वचनों में दर्शाया गया है। विद्या से ही अमरत्व जीवन सत्य तथ्य विकास की प्राप्ति होती है। अतएव विद्या तथा विद्या के ज्ञाता व्यक्ति (ब्राह्मण) को भारतीय समाज में विशेष गौरवमय सम्मानित स्थान दिया गया है। विद्या के परा और अपरा दो भेद हैं। परा अर्थात् ईश्वर आत्मा से सम्बन्धित अध्यात्म ज्ञान और अपरा अर्थात् लोक व्यवहार सम्बन्धी ज्ञान का वाचक है। इस प्रकार आर्य संस्कृति में अध्यात्म और भौतिकता का सुन्दर समन्वय होने से सर्वांगीण जीवन का जहां सुन्दर चित्रण है वहां आर्य संस्कृति का मूल केन्द्र कर्मफल व्यवस्था ही है तथा इसके परिचय का आधार वेद है।

सभा से सम्बन्धित आर्य स्कूलों के प्रबन्धकों की सेवा में

मान्य महोदय,

सादर नमस्ते।

जैसा कि आप जानते ही हैं कि हमारी आर्य शिक्षा संस्थाओं का मुख्य लक्ष्य अपने सम्पर्क मे आने वाले विद्यार्थियों को वैदिक धर्म विषयक शिक्षा देना भी है। इसी दृष्टि से हर वर्ष आपसे आग्रह किया जाता है कि आप अपनी संस्था मे शिक्षा ग्रहण करने वाले समस्त विद्यार्थियों को परिषद् द्वारा स्वीकृत धर्मशिक्षा पुस्तकें भी लगाए। किन्तु इस ओर अभी भी पूरा ध्यान नहीं दिया जा रहा है। कुछ स्कूलों मे केवल परीक्षा देने वाली कक्षाओं को ही उक्त पुस्तकें लगाई जाती हैं और कुछ स्कूल तो केवल परीक्षार्थियों के लिए ही धर्म शिक्षा पुस्तकें मंगवाते हैं। जबकि हमारी हार्दिक इच्छा यह है कि प्रत्येक स्कूल के पहली से लेकर दसवीं ग्यारहवीं कक्षा तक पढ़नेवाले विद्यार्थी के हाथ मे धर्मशिक्षा की पुस्तकें पहुंचाई जाए और उनकी नियमित रूप से दूसरे विषयों की भांति पढ़ाई कराई जाए।

अब जबकि नया सत्र प्रारम्भ हो गया है। आपसे पुनः अनुरोध है कि अपने स्कूल की सभी कक्षाओं के लिए धर्म शिक्षा पुस्तकें सभा कार्यालय से मंगवा कर इनका पठन पाठन प्रारम्भ करायें। आप तुरन्त डाक से विद्यार्थी संख्या व कक्षा संख्या धर्मशिक्षा पुस्तकों के आर्डर मई भेजने की शीघ्र व्यवस्था करें। इस बार धर्मशिक्षा परीक्षायें भी सितम्बर अक्तूबर मास मे होने की आशा है।

—रामचन्द्र जावेद
सभामन्त्री

भगवान से—

रचयिता—आचार्य सीताराम जी पाण्डेय

लिये संदेशा भक्त चला कहने को यों भगवान से
मर रहा इन्सान आज है धरती के शैतान से
हाय! जहां दीनों की दुनिया बेरहमी से लुटती है
दानवता के दमन चक्र से मानवता भी झुकती है
भाई के शोणित मे भाई प्यास बुझाता है
मानव को मानव खाता है नहीं किसी से नाता है।
दिन दहाड़े डाका पड़ता पूछो तुम दिनमान से
लिये संदेशा भक्त चला कहने को यों भगवान से
हर गांव गांव मे आग लगी हर जगह विषमता छाया है
बाजार लगा बेरहमी का हर दिल मे दिखती खाई है
मधुशाला चलती मन्दिर मे अस्मत सड़क पे लुटती है
जग के जालिम लोगों से अब सत्य की सांस घुटती है।
कोई नहीं चारा चलता अब धरती के इंसान से
लिए संदेशा भक्त चला कहने को यों भगवान से।
प्यार नहीं है पिता पुत्र में भाई बहन मे खैर नहीं
मां को नंगा करने वाला दुःशासन कोई गैर नहीं
दानवता की प्रबल चिता आज मानवता को जला रही
धरती पर मानव रक्षा हित कोलाहल है मचा रही
देर नहीं अब रक्षा करो धरती की संतान से
लिये संदेशा भक्त चला कहने को यों भगवान से।

सावधान रहें

जालन्धर एक ब्रह्मचारी सारे समाजो मे घूमता है। जो अपनां नाम ब्रह्मचारी सत्यदेव पुरुषार्थी बताता है, कभी अपना नाम ब्रह्मचारी मदन लाल बताता है। यह हरियाणा पजाब उत्तर प्रदेश दिल्ली की सभी समाजो घूमता है। वह पठानकोट आर्य समाज माडल टाऊन में कुछ दिन रहने पर ६०० (छः सौ रुपया) और रसीदबुक लेकर रात को ही चला गया है। कद पाच फुट है। सिर छूटा हुआ है जल्दी-जल्दी बोलता है सब समाजो को सूचना दी जाती है यहा पर भी वह आवे। आर्यसमाज माडल टाऊन पठानकोट जि गुरदासपुर को सूचना देने की कृपा करें। अर्थात् सब समाजें उससे सावधान रहें।

मुनीषदेव शास्त्री
पुरोहित आर्य समाज माडल टाउन
अमृतसर

रोहतक में आर्यवीर दल का सम्मेलन

प्रांतीय महासम्मेलन १६.१७ मई. १९८१ को समारोह पूर्वक मनाया जा रहा है। देश के शीर्षस्थ विद्वान् इस मे भाग ले रहे हैं आर्य वीरों की रैली दर्शनीय होगी। आर्यवीर दल, आर्य संस्कृति का रक्षक है।

कृपया अपने पुत्रों को इस में प्रविष्ट कराए १६-१७ मई को रोहतक में अपने नेताओं से सन्देश सुनें तथा दल की तन, मन, एव धन द्वारा सहायता करके अपने कर्त्तव्य का पालन करें।

मेरे शोणित की लाली से, कुछ तो लाल धरा होगी।
मेरे वर्तन से परावर्तित, कुछ तो परम्परा होगी।

—उत्तम चन्द 'शरर'
संचालक आर्यवीर दल हरियाणा

आर्यसमाज भटिण्डा के समाचार

१. आर्यसमाज भटिण्डा में आर्य समाज स्थापना दिवस मनाया गया जिस मे सैंकडों आर्य बन्धुओं ने भाग लिया।

२. शोक प्रस्ताव—आर्यसमाज भटिण्डा ने श्रीमती कमला जी भाटिया प्रि. गर्ल्ज हाई स्कूल की माता के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए दिवंगतात्मा की सद्गति के लिए प्रार्थना की।

हरपाल नगर लुधियाना में विशेष समारोह

हर पाल नगर लुधियाना में प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष खुले मैदान में कुलदीप नगर वैलफेयर ऐसोसियेशन की ओर से एक बहुत बड़े यज्ञ का आयोजन किया गया। इस समारोह में नगर के हजारो नर नारियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया इस यज्ञ में पांच यजमान सपत्नीक बैठे हुए थे और यज्ञ का संचालन प्रो. वेद व्रत जी वेदालंकार ने किया। यह यज्ञ [illegible] चलता रहा, एक बजे [illegible] हुई। इस अवसर पर श्री पं० [illegible] जी प्रभाकर श्री प्रो. वेदव्रत जी [illegible] श्री प्रो० वीरेन्द्र प्रताप जी [illegible] होशियारपुर में अपने [illegible] वेद अमृत वर्षा की। सारा कार्यक्रम [illegible] प्रभावशाली रहा भोजन की [illegible] पण्डाल मे ही थी आए हुए नर-नारियों [illegible] भोजन किया और [illegible] बजे समाप्त हुआ। [illegible] यज्ञ और वेद के सम्बन्ध में [illegible] पुस्तकें प्रसाद रूप में आए हुए [illegible] प्रेमियों में बांटी गई।

—[illegible]

आर्य मर्यादा के [illegible] बनों और दूसरों [illegible] आर्य समाज के [illegible] बनो और दूसरों को [illegible] हिन्दी भाषा—स्वयं [illegible] और दूसरों को भी पढ़ाओ

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा [illegible] प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय [illegible] जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वार्षिक शुल्क 15) वर्ष 14, अंक 18, 21 वैसाख सम्वत् 2038, तदनुसार 3 मई 1981 का अंक दयानन्दाब्द 156

चौंकिए मत ! विचार कीजिए

हुए करोड़ो अपने भाई गो-भक्षक मुस्लिम ईसाई।
उन्हे फिर से आर्य बनाओ ! ऐ आर्य वीर गण आओ।

★ भारत में सन् १९४७ मे ७० लाख ईसाई थे। जो अब बढकर २ करोड से अधिक हो गये हैं और अब भी १० करोड वनवासियो व पिछडी जाति के हिन्दुओ में उनका काम जोरो से चालू है। भारत का हर तीसरा रोमन कैथोलिक केरल राज्य मे रहता है। भारत में ७६ ईसाई राष्ट्रों के ३७३२ पादरी हैं तथा विदेशी मुसलमान प्रचारक भी हैं।

★ सयुक्त राष्ट संघ के सर्वेक्षण के अनुसार सन २००० तक भारत की जनसख्या ९० करोड हो जाएगी। जिसमे ४० करोड हिन्दू ३५ करोड मुसलमान व १५ करोड ईसाई होगे यानी हिन्दू अल्पमत हो जाएगा।

★ असम व पूर्वोत्तर भारत के अन्य राज्यों की अनुसूचित जन जातियो की जनसख्या मे १०० मे से ५१ लोग ईसाई बन चुके हैं। मणिपुर के चार जिलो मे ८६ प्रतिशत ईसाई हो चुके हैं। केवल एक जिला बचा है। नागालैंड के दो जिलो मे ६१ प्रतिशत तथा ९६ प्रतिशत ईसाई हैं। मेघालय के तीन जिलो मे ८६ प्रतिशत ईसाई हैं

✵ नागालैंड मेघालय और मिजोरम मे ईसाईयो का बाहुल्य होने के कारण वहा की राज भाषा अग्रेजी और मुख्य धर्म ईसाई घोषित हो चुका है।

✵ भारत को ईसाई धर्म प्रचार के लिए १०७ धर्म प्रान्तो मे बाटा गया है जिनमे से अधिकाश धर्म प्रान्त विदेशी राष्ट्रो के निर्देशन मे कार्य करते हैं।

✵ भारत को ईसाई भिक्षुणियों की सख्या २००० प्रति वर्ष बढ़ रही है। आज उनकी सख्या ४६००० है।

✵ भारत मे विद्यमान २०० ईसाई प्रचारक प्रशिक्षण केन्द्र प्रतिदिन ६ नये मिशनरी तैयार करते हैं।

✵ प्रत्येक १५ दिन मे एक नया ईसाई सस्थान जन्म लेता।

✵ भारत का २६ हजार वर्ग मील क्षेत्र विदशी पादरियो के प्रभाव क्षेत्र मे हैं।

★ आद्य शकराचार्य की जन्म स्थली ईसाई बहुल बन चुकी है।

✵ ईसाई मिशन को लगभग ४०० करोड रुपए प्रतिवर्ष प्रचार के लिए विदेशो से सहायतार्थ आता है।



THE ARYA MARYADA JULLUNDUR

वेद सुधा

अर्जैष्माद्यासनामाद्यभूमानागसो वयम ।

(अद्य) आज (अर्जैष्म) हमने सब तरह (अपनी दुष्प्रवृत्तियो दुर्भावनाओ पर) विजय प्राप्त कर ली है (अद्य असनाम) आज हमको जिस वस्तु की कामना थी वह प्राप्त हो गई । इस तरह अब (वयम) हम (अनागस) निष्पाप (अभूम) हो गए हैं ।

तब से तो मैं दिग्विजयी हूं

ले —श्री सुरेशचन्द्र वेदालंकार

मनुष्य का जीवन एक यात्रा है। इस यात्रा द्वारा मनुष्य संसार को पार करता है। परन्तु जो व्यक्ति यात्रा करते हुये अपने गुप्त खजाने को खो देता है वह अपनी यात्रा म घबरा जाता है। यह गुप्त खजाना धन नहीं है? सुरक्षित चहार दिवारी के भीतर रखी हुई तुम्हारी संपत्ति से भी अधिक निश्चित और सुरक्षित तुम्हारा एक गुप्त खजाना है जो सदा तुम्हारे पास ही रहता है। यह खजाना ही तुम्हारी असली पूंजी है। तुम अपनी प्रत्येक प्रकार की क्षति को चाहे वह सम्पत्ति की हो मित्रता की हो अथवा स्वास्थ्य की ही क्यो न हो इस पूंजी से पूर्ति कर सकते हो।

यह पूंजी है—ईश्वर विश्वास। ईश्वर विश्वास ही वह वस्तु है जो मनुष्य मे साहस की स्थापना करती है।

सारे विश्व मे एक ही तत्व काम कर रहा है एक ही जीवन एक ही सत्य वर्तमान है। हम सब उसी दैवी प्रवाह की ओर जा रहे हैं जो ईश्वर तक जाता है। इस तरह का मनोभाव रखने मे हम एक अलौकिक प्रोत्साहन प्राप्त होता जाता है हममे से मन का भय नष्ट हो जाता है। हम अपनी दुष्प्रवृत्तियो दुर्भावनाओ कमजोरियो और पापो पर विजय प्राप्त कर लेते हैं।

याद रख लो मनुष्य मे जितनी कमजोरियां जितने कष्ट जितनी विपत्तियां और आपदाएं आती हैं उनका कारण यही है कि हम अपने इस सर्वशक्तिमान् अनन्त ऐश्वर्य युक्त परमात्मा से भिन्नता का भाव रखते हैं। यह एक निश्चित सत्य है कि मनुष्य जीवन मे उतनी अधिक सफलता प्राप्त करेगा उतनी अधिक विजय प्राप्त करेगा। जितना वह अपनी आत्मा मे सत्य त्याग दया प्रेम और शक्ति का विकास करेगा और इन सबके मूल ईश्वर के प्रति अपना विश्वास रखेगा और परमात्मा से अपना सम्बन्ध जोड़ेगा।

पुराने यहूदी ग्रन्थो मे एक कहानी है एक ऐसे सेनाध्यक्ष की जो एक लड़ाई मे हार गया था।

हार का समाचार इसके घर पर पहुंचने पर उसकी स्त्री अपने कमरे मे गई। उसने अपने पति के पराजित चेहरे पर भय और आशंका के चिन्ह देखे।

सेनाध्यक्ष अपनी पत्नी को वहीं देखकर बोला, बड़ी बुरी खबर है प्रिये मेरी सेना के पैर उखड़ गये वह हार के निकट है।

स्त्री ने उत्तर दिया यह मैं जानती पर मेरे पास तो इससे भी बुरी खबर है।

इससे भी बुरी सेनाध्यक्ष चिल्लाया इससे भी बुरी क्या हो सकती है?

लेकिन उनकी पत्नी रुकी नहीं कहती हो गई सुना मैंने कि तुम लड़ाई में हार गये, लेकिन बातचीत से तो देख रही हूं कि तुम में ईश्वर विश्वास और साहस भी खो दिया है। अब सोचो कि वह हार बड़ी कि यह? यह खबर ज्यादा बुरी कि वह?

सचमुच मनुष्य जब तक अपने जीवन धन को पहचानता नहीं है उसमे पराजय और कमजोरी की भावना आती है और जब वह अपने जीवन धन को जान लेता है तब वह अपनी दुर्भावनाओं पर विजय प्राप्त कर लेता है। उस समय उसके हृदय म दुर्भावना कायरता और भय के भाव दूर हो जाते हैं और वह साहसपूर्वक बढ़ता जाता है। वह कहता है—

हे विश्वनाथ ! हे विश्वम्भर
पर जब से शरण गही तेरी।
तब से तो मैं दिग्विजयी
तब स संसृति दासी मेरी।
इसलिए कि मेरी इच्छा अब
तेरे इंगित पर अवलम्बित
किसमे है इतनी शक्ति मुझे
जो रक्खे अभिमत से वंचित।
यदि तुम सबके स्वामी मैं भी
स्थावर जगम सब मेरे हैं।
व्यापार प्रकृति के हैं जितने
इंगित पर वे अब मेरे व
निर्भय और निष्कलंक
निर्दोष अपरिच्छिन्न हूं मैं।
जैसे मे तेरे चरण कमल
जिनसे अब तो अभिन्न हूं मैं।
मुझको अब कोई कमी नहीं
है विश्व कोष मेरा ही अब
मुझ मे अब कोई कमी नहीं
हूं पूर्ण तूर्ण मैं भगवान।

—

सचमुच मनुष्य जब तक अपने जीवन धन को पहचानता नही है उसमे पराजय और कमजोरी की भावना आती है और जब वह अपने जीवन धन को जान लेता है तब वह अपनी दुर्भावनाओ पर विजय प्राप्त कर लेता है। उस समय उसके हृदय से दुर्भावना कायरता और भय के भाव दूर हो जाते हैं और वह साहसपूर्वक बढ़ता जाता है।

स्वास्थ्य

सिगरेट में अट्ठारह ज़हर मौजूद

सिगरेट पीने वाले लोग शायद दूसरे लोगो से अधिक चौक पड़ेंगे जब उन्हे पता चलेगा कि एक सिगरेट मे अठारह प्रकार के जहर मौजूद हैं। कुछ जहर सांस लेने वाली नाजुक झिल्ली पर हमला करते है कुछ खून मे मिल जाते हैं और उसके प्रवाह पर असर करते हैं लेकिन दो खतरनाक जहर है जिनका नाम है तार और निकोटीन। निकोटीन का सीधा सम्पर्क कसर से है।

यह जहरीले पदार्थ सांस लेने वाली नालियो मे धुएं के जरिए फफड़ो तक पहुंचते है और वहां पर उन नाजुक धमनियो पर अपना जहरीला प्रभाव कर देते है। यही कारण है कि जो लोग सिगरेट पीने के आदी है उन्हे अक्सर सांस लेने म भारी कठिनाई होती हैं।

वैज्ञानिक दृष्टिकोण से यह प्रमाणित हो गया है कि निकोटीन बहुत प्रभाव वाली जहर है जिसकी गिनती साइनाइड के बाद आती है। बहुत सा निकोटीन तो सिगरेट मे तम्बाकू के जलने से नष्ट हो जाता है लेकिन उसका काफी बड़ा हिस्सा सिगरेट पीने वाले के फफड़ों में जमा हो जाता है जिसे वह नशा समझता है और इसी नशे का शिकार होकर सिगरेट पीने वाला एक के बाद दूसरा पीना आरम्भ कर देता है और वह निकोटीन ही है जो लोगों को तम्बाकू का आदी बना देती है।

सिगरेट पीने वाले लोग इस हकीकत से परिचित नहीं कि सिगरेट का धुआ शरीर में उत्पन्न होने वाली बहुत सी बीमारियो से संघर्ष करने की क्षमता को भी कम कर देता है। बहुत से सर्वेक्षणों से यह पता चला है कि सिगरेट पीने वाले लोग सिगरेट न पीने वाले लोगो के मुकाबले मे पांच से लेकर दस वर्ष तक पहले मर जाते हैं। फिर यह भी साबित हो चुका है कि फफड़े का कैंसर उन्हीं लोगो को होता है जो सिगरेट पीने के आदी हैं। सिगरेट न पीने से आप काफी पैसा बचा सकते हैं लेकिन उससे भी ज्यादा आप अपनी सेहत और जीवन बचा सकते हैं।

हर सिगरेट सिगरेट पीने वाले की जीवन की डोर को थोड़ा सा काट देता है और इसी तरह सारी जिन्दगी में पिये जाने वाले लाखो सिगरेट शरीर के विभिन्न भागों को भारी हानि पहुंचाते हैं।

यह देखने में आया है कि जब लोग सिगरेट पीना बन्द कर देते है तो उनके खून का बहाव सामान्य हो जाता है और यहां तक कि उनका हृदय पहले के मुकाबले मे बेहतर काम करने लगता है लेकिन इसमें भी काफी समय लग जाता है

(शेष पृष्ठ ... पर)

सिगरेट पीने वाले लोग इस हकीकत से परिचित नहीं कि सिगरेट का धुआ शरीर मे उत्पन्न होने वाली बहुत सी बीमारियो से संघर्ष करने की क्षमता को भी कम कर देता है, बहुत से सर्वेक्षण से यह पता चला है कि सिगरेट पीने वाले लोगों के मुकाबले मे पांच से लेकर दस वर्ष तक पहले मर जाते है। फिर यह भी साबित हो चुका है कि फेफड़े का कैंसर उन्हीं लोगो को होता है जो सिगरेट पीने के आदी हैं। सिगरेट न पीने से आप काफी पैसा बचा सकते हैं लेकिन उससे भी ज्यादा आप अपनी सेहत और जीवन बचा सकते हैं।

लाला लाजपतराय के जीवन पर आधारित एक प्रसिद्ध नाटक

शेरे पंजाब लाला लाजपतराय

ले०— श्री बी० एस० खोसला

(१२ अप्रैल से आगे)

मुन्शी—हिसार में लाजपत तुम्हारी वकालत काफी मशहूर है हजार से ऊपर तुम्हारी आमदन है रेलवे रोड वाली कोठी दस हजार मे मिलती है वहा खुली जगह पर जा रहेंगे पाँच बरस के बाद इसका मूल्य दुगना हो जाएगा तुमने डिप्टी की नौकरी नही लेनी तो न सही परन्तु इस बनी बनाई को टाग न मारो।

लाजपत—धन जमा करना मेरे जीवन का लक्ष्य नहीं है ऐश्वर्य की जिन्दगी मुझ कभी पसन्द नही थी हिसार मे जायदाद बनाकर मैं अपने पावो में बेड़िया नही डालना चाहता।

मुन्शी—लाहौर कौन सी पकी-पकाई पर जा बैठना।

लाजपत—मेरी चीफ कोर्ट मे वकालत करने की सनद आने वाली है उसमे ज्यादा देर नहीं लगनी चाहिए उठकर घूमते हुये पता नही क्यो नही पहुंची।

फकीरचन्द—लाला जी चीफ कोर्ट से एक पत्र आया हुआ है।

लाजपत—मेज पर पड़े पत्रो के ढर को फरोलते, कहा है तूने दी क्यो नही?

फकीरचन्द—हाथ वाले पत्र देखते हुये मैंने तो आपको पहुचते ही सूचना दे दी थी पत्र खोलकर पढता है।

लाजपत—अब मैं चीफ कोर्ट में वकालत कर सकता हू रजिस्ट्रार का पत्र भी आ गया है फकीरचन्द जी मेरे कागज मेरी लायब्रेरी को संभालना, बुक कर दो, पहले यह पुस्तकें लाओ़गी फिर— शैली, हाली, इकबाल मुहम्मद हुसैन फिर यह मैजिनी गैरबाल्डी सिकन्दर बाल्टेयर व हरबर्ट व समेसर।

फकीरचन्द—और वकालत की पुस्तकों के बिना मुझ लाहौर मे कौन पूछेगा।

फकीरचन्द—लाला जी मैं?

लाजपतराय मुन्शी से सम्बर जाता है।

लाजपत—माता जी मुझ काट से पत्र आ गया है अब हम लाहौर जायेंगे।

बत्तियों के मध्यम होते ही परदा झट गिर जाता है।

ऐक्ट तीसरा

सन् १९०७ गर्मियों की एक शाम ईंटों व लकड़ी से बना नया बगला जिस के ऊपर छत व बरामदा सड़क से बरामदे में पहुंचने के लिए लकड़ी की सीढ़ी है [illegible] अन्दर आने के लिए एक फाटक है [illegible] के बाहिर एक डिक है जो [illegible] फाटकर बगले के सामने से सड़क जाती है।

बरामदे मे एक मेज दो कुर्सिया एक आराम कुर्सी व एक वजन तोलने की मशीन पड़ी है मेज पर दो मोमबत्तिया खड़ी है बरामदे की पिछली दीवार मे एक दरवाजा व एक खिड़की है।

बरामदे के पीछे रहने के लिए कमरा है जिसमें एक पलग है ऊपर मच्छरदानी लगी हुई है एक कपडो की आलमारी एक पढने की मेज व आराम कुर्सी रखी हुई है।

बाहर सड़क से एक अग्रेज सार्जेंट जिसके हाथ मे एक छोटा बेंत है मच पर आता है इसके पीछे लाला लाजपतराय सैर करते हुए आते हैं इनके पीछे दो सिपाही?

लाला लाजपतराय की आयु ४२ वर्ष है इनका पहनावा वही है जो दूसरे एक्ट मे था इसके अतिरिक्त उनका कोट ढीला है जिसे यह प्रतीत होता है कि लाला जी बहुत कमजोर हो गये हैं।

सार्जेंट ने खाकी वर्दी सोला टोपी कोट नैकटाई व लम्बी पतलून डाली हुई है उसने चमड़े की गोलिया वाली पटी और एक तरफ पिस्तौल व दूसरी तरफ तलवार लटक रही है सिपाहियो की वर्दी छोटे तुरे वाली पगड़ी कमीज निकर चमड़ व पटिटया।

सड़क पर लाला जी को चलते हुए देखकर रुक जाते हैं और बड़ सम्मान से प्रणाम करते हैं उनमे से एक सिक्ख आगे बढ़कर लाला जी के पैर छूता है एक सिपाही उसे दूर घसीटता है और दूसरा उसे कलाई मे पकड़ लेता है।

सार्जेंट—तुम कौन हो?

सिक्ख मैं एक हिन्दुस्तानी हू।

सार्जेंट—हा यह तो हम देख सकता है तुमहारा नाम क्या है?

सिक्ख—करतारसिंह?

सार्जेन्ट उनके उत्तर डायरी में लिखता है।

सार्जेंट—तुम कहा के रहने वाले हो?

सिक्ख—पंजाब का?

सार्जेंट—यह भी कोई करने की बात है?

सिक्ख—फिर तुमने पूछा क्यो?

सार्जेंट—तुम पंजाब के कौन से जिले का रहने वाला है।

सिक्ख—गुजरांवाले का?

सार्जेंट—तुमहारे बाप का नाम क्या है?

सिक्ख—स० अवतारसिंह।

सार्जेंट—वह क्या करता है?

सिक्ख—वह मर चुका है।

सार्जेंट—यह जवाब तो ठीक नही है।

सिक्ख—अपनी अपनी समझ की बात है।

सार्जेंट—क्या?—तुम क्या करता है

सिक्ख—मैं ठकेदार हू।

सार्जेंट—किस तरह का ठकेदार?

सिक्ख पी० डब्ल्यू० डी० का।

सार्जेंट—तुम कैदी का वाकिफ हो?

सिक्ख—मैंने लाला लाजपतराय की महिमा सुनी हुई है इस [illegible] मैं इनको जानता हू

सार्जेंट—तुमने कैदी को हमारी हिरासत से छुड़ाने की कोशिश की है।

सिक्ख—यह गलत है।

सार्जेंट—तुम पास क्यो आया?

सिक्ख—लाला जी को प्रणाम करने के लिये?

सार्जेंट—तुम प्रणाम दूर से भी कर सकता था।

सिक्ख—मैं उनके चरण स्पर्श करना चाहता था क्योकि लाला जी एक सन्त महात्मा हैं मैं जब कभी भी उन्हें मिलूगा चरण स्पर्श करूगा।

सार्जेंट—तुम ऐसा वायदा करते हो कि फिर एसा नही कराेगे।

सिक्ख नही।

सार्जेंट—अपनी डायरी मे से कागज फाड़ कर सिपाही को देता हैं इसको सुपरिटेंडेंट जिला पुलिस के पास ले जाओ।

सिपाही सिक्ख को पकड़ कर ले जाता है लाला जी दूसरे सिपाही व सार्जेंट के बीच चलते हैं अपनी कोठी के फाटक के पास पहुचते हैं एक सिपाही फाटक पर पहरे के लिए रुक जाता है सार्जेंट उधर बरामदे तक लाला जी के साथ आता है।

लाजपत—कल सुबह मैं सैर के लिए नही जाऊगा।

सार्जेंट—क्यो?

लाजपत—क्योकि मेरे देशवासियो की बेइज्जती की जाती है।

सार्जेंट क्योकि वे आपको प्रणाम करते हैं।

लाजपत—मुझ प्रणाम करने से उन का अपमान होता है यह मैं सहन नही कर सकता मुझ अपना स्वास्थ्य देश वासियो की इज्जत से अधिक प्यारा नही क्योकि मैं उनका अपमान सहन नही कर सकता इसलिए अच्छा है अब मैं सैर करने ही न जाऊं।

सार्जेंट—आपका दिन मे तीन बार सैर करने जाना मेरे लिये बड़ी मुसीबत है, आप देखे मुझ वर्दी पहनना पड़ती है तलवार लगाना पडता है दिन मे तीन बार तग होना पडता है, आप प्रात और साय सैर को जाए तो अच्छा होगा।

लाजपत—सार्जेंट मैंने कह दिया कि मैं दिन मे एक बार भी सैर के लिए नहा जाना चाहता।

सार्जेंट—यह सुपरिटेंडेंट जिला पुलिस का हुक्म था उस व्यक्ति को छोड दिया जाएगा।

लाजपत—फिर उसे गिरफ्तार क्यो किया गया?

सार्जेंट—उसने बहुत अकड दिखाई थी।

लाजपत—उस सिक्ख को तुरन्त छोड देना चाहिए था आप सुपरिटेंडेंट पुलिस से कहो कि मुझ मिले।

सार्जेंट—उनके आने का समय हो गया है

सीढियां उतर कर फाटक से बाहर चला जाता है लाला लाजपतराय कुछ देर बरामदे मे इधर उधर चलते फिरते है और देखते हैं उनमे किसी गहरी सोच मे हैं पीछे से पगडी सभाल जटा पगडी सभाल ओये की धुन सुनाई देती है कपड़े उतार कर कमरे के अन्दर रखने के लिए जाते हैं इतने मे एक पजाबी सिर पर लकड़ी का भार उठाए फाटक पर आता है भार को जमीन पर रखता है उसमे दो फूल उठा के सिपाही से बात करता है।

पजाबी—पजाब के महान नेता लाला लाजपत राय यहा रहते हैं

सिपाही—हा

पजाबी—मैं उनको मिलना चाहता हू।

सिपाही—आज्ञा नहा है।

पजाबी—मैं केवल उन्हे यह फूल भेंट चढाना चाहता हू।

लाला लाजपतराय बाहर बरामदे मे आ जाते हैं।

सिपाही—तुम उनसे नहीं मिल सको यहा खड़ होने की आज्ञा नही है तुम यहा से चले जाओ।

पजाबी—सन्त्री जी मै बहुत दूर से आया हू आप सोचिये अगर मैं लालाजी के दर्शन न कर सका तो मुझ कितनी निराशा होगी आप मुझ इस शोक मे बचा सकते हैं।

सिपाही—हृदय के बारे मे हमे कोई आदेश नही है।

पजाबी—अच्छा यह फूल?

सिपाही हमे कैदी के लिये कोई भी वस्तु लेने का आदेश नही है इन फलो को दूर रखो इनके अन्दर तो न कोई बम्ब तो नही छुपाया हुआ।

पजाबी—फूलो को बिखेर कर दिखाता है बहुत निर्दोष हैं ये कमल के फूल।

सिपाही—प्रभावित होकर अच्छा इनको फाटक की ओर इशारा करके यहा रख दो और आप तरन्त चले जाओ

पजाबी फूल फाटक के पास रख देता है अपना वजन उठाने लगता है कि लाला लाजपतराय को नजर पड जाती है हाथ जोड़ कर झुक कर प्रणाम करता है लाला जी जवाब देते हैं और कमरे के अन्दर चले जाते है पजाबी फिर प्रणाम करता है अपना वजन उठाकर जाने की तैयारी करता है और आखो से ओझल हो जाता है। (क्रमश)

आर्य समाज नैरोबी का चुनाव

नैरोबी (डाक से)—विगत १५ मार्च १९८१ को आर्य समाज नैरोबी का वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुआ जिसमे श्री सत्यभूषण भारद्वाज को सर्वसम्मति से आर्य समाज का प्रधान निर्वाचित किया गया। श्री सत्यभूषण भारद्वाज पहले दो वर्ष तक आर्य समाज के मन्त्री रह चुके हैं। जिनके मन्त्रिकाल मे आर्य समाज नैरोबी की हीरक जयन्ती हुई थी जबकि अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन आयोजित किया गया था अन्य पदाधिकारियो के नाम इस प्रकार है—

उपप्रधान—सर्वश्री एस० के० विनायक मन्त्री—श्री देवदत्त शर्मा उपमन्त्री—श्री प्रकाश शर्मा कोषाध्यक्ष—श्री रघुवीरसिंह सनी उपकोषाध्यक्ष—श्री नरेन्द्र कपिला।

आर्य स्त्री समाज नैरोबी के भी विगत १९ मार्च को वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुए जिनमे श्रीमती सावित्री वैद्य को मन्त्रिणी चुना गया। आर्य समाज के ये सभी चुनाव शान्तिपूर्ण वातावरण मे सम्पन्न हुए तथा यहा की समस्त हिन्दू जनता मे आर्य समाज मे एक सुन्दर आदर्श स्थापित कर दिया।

आर्य जगत के समाचार

आर्य समाज होशियारपुर का वार्षिक चुनाव

दिनांक १२-४-८१ को आर्य समाज होशियारपुर का वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न हुआ जिसमे सर्वसम्मति से निम्नलिखित महानुभाव वर्ष १९८१-८२ के लिए पदाधिकारी निर्वाचित किये गये—

प्रधान—चौ० बलवीरसिंह जी जोहरी उपप्रधान—प्रि० ओमप्रकाश जी बग्गा सौतिगर [illegible] बलेश्वरदास जी भण्डारी चौ० जगदीशचन्द जी मरवाह। मन्त्री—चौ० सदाराम जी। उपमन्त्री—श्री हरमदन लाल जी। पुस्तकाध्यक्ष एवं प्रचार मन्त्री—श्री वेदमित्र पुरोहित। कोषाध्यक्ष—श्री हरबंसलाल जी मेहता।

—सदाराम मन्त्री आर्यसमाज होशियारपुर

आर्य युवक सभा फिरोजपुर की गतिविधियां

आर्य युवक सभा फिरोजपुर शहर द्वारा आर्य समाज के स्थापना दिवस पर गत ४ अप्रैल को प्रभात फेरी निकाली गई। जिसमे प्रभु भक्ति एवं महर्षि दयानन्द के भजनो का गायन किया गया। श्री महावीर जी ने जल पान का आयोजन किया।

५ अप्रैल को आर्य समाज रानी का तालाब मे बच्चो की भाषण प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसकी अध्यक्षता जिला आर्य सभा के प्रधान श्री हंसराज मेहता ने की। प्रथम पुरस्कार अनिता भाटिया ने प्राप्त किया। प्रो० जगदीश जी आर्य तथा विनोद मेहता जी ने भजनोपदेश किया।

नालागढ़ मे नामकरण संस्कार सम्पन्न

आर्य समाज नालागढ़ के मन्त्री रामेश्वरलाल जी के पौत्रों का नामकरण संस्कार [illegible] धूमधाम से समारोह सम्पन्न हुआ हकीम मनफूल जी शास्त्री तथा श्री ओम प्रकाश जी महेन्द्र वैदिक मिशनरी रोपड़ दोनों ने संस्कार के महत्त्व पर अपने विचार प्रस्तुत किये तथा बच्चो को आशीर्वाद दिया। नालागढ़ समाज मे एक बृहत यज्ञ का आयोजन जिला सभा रोपड़ की ओर से करने का निश्चय भी किया गया।

—पुरुषोत्तमदास महेन्द्र

१२ अप्रैल को रामनवमी का पर्व भी धूमधाम से मनाया गया। इनमे श्री ओमप्रकाश भाटिया का भी विशेष सहयोग प्राप्त हुआ है।

—मोहनलाल, मन्त्री आर्यसमाज रानी का तालाब फिरोजपुर

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वर्ष 14—अंक 19 28 वैशाख सम्वत् 2038, तदनुसार 10 मई 1981 दयानन्दाब्द 156 । वार्षिक शुल्क 15)

यज्ञ से वर्षा होती है

वैज्ञानिक अन्वेषणों पर आधारित सारगर्भित लेख

अमेरिका के प्रसिद्ध विद्वान एण्डरो जेक्सन डेविस ने हारमोनिकल मैन (Harmonical Man) नामक पुस्तक लिखी है। इस पुस्तक मे पृष्ठ ३१ से १३१ तक मेंह बरसाने का विज्ञान शीर्षक से एक लेख दिया है। इसमें वर्षा के लिए जो सिद्धान्त दिया है वह यज्ञ के सिद्धान्त से मिलता है।

वेद की यज्ञ सम्बन्धी विचार धारा से पाश्चात्य विद्वान भी सहमत दीख पड़ते हैं। डाक्टर हार्टनिंग ने लिखा है कि अफरीका के जंगल में घास फूस के ढेर भारी ढेर के जलाने से वहां भी जहां वर्षा की मात्रा न थी मेंह आ गया। अत मेंह बरसाने के लिए आग का जलाना गुणकारी है।

अत अग्निहोत्र वर्षा में सहायक है। इसके द्वारा होने वाली वर्षा अधिक लाभप्रद है क्योंकि यज्ञ के द्वारा जो मेघ बनते हैं वे दोष एवं दुर्गन्ध रहित होते हैं। सो वृष्टि जल शुद्ध होता है। इस कारण सभी पदार्थों में पवित्रता आ जाती है। ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में महर्षि दयानन्दजी ने इसी बात का समर्थन करते हुए लिखा है कि 'यज्ञ से जो भाप उठता है वह भी वायु और जल को निर्दोष और सुगन्धित करके सब जगत को सुख करता है। आगे ऋषिवर ने विचार अंकित किया है कि शुद्ध अन्न और वायु के द्वारा अन्नादि औषधि भी अत्यन्त शुद्ध होती है। ऐसे प्रतिदिन सुगन्ध के अधिक होने से जगत में नित्य प्रति अधिक २ सुख बढ़ता है। यह फल अग्नि मे होम करने के बिना दूसरे प्रकार से होना असम्भव है। पर आज विश्व में अणु विस्फोट (atomic explosions) के प्रयोग किये जा रहे हैं। इनसे वायु मण्डल दूषित और दुर्गन्ध युक्त हो जाता है। फिर इस प्रकार होने वाली वृष्टि से उत्पन्न वनस्पति भी इन दोषों से पूर्ण होती है। अत यह प्रयोगो की शृंखला इसी प्रकार चलती रही तो भावी सन्तानों के स्वास्थ्य पर इस का बुरा प्रभाव पड़ेगा। इसके विपरीत यज्ञ की सुगन्धि वृष्टि जल को शुद्ध करके मनुष्य के बल बुद्धि रूप लावण्य पर सुखद प्रभाव डालती है।

पर प्रश्न तो यह है कि यज्ञ से वृष्टि किस प्रकार होती है ? इस समस्या का समाधान वैदिक वृष्टि विज्ञान के क्षेत्र मे पर्याप्त अनुसन्धान की भी मांग करता है क्योंकि इस विषय पर कम बड़ खोज का अभी अभाव है। तो भी शास्त्रकारों से यह प्रश्न सम्भवत किसी भी समय मे अछूता नहीं रहा होगा। शतपथ ब्राह्मण मे तो स्पष्ट कहा है कि—

अग्नेर्वै धूमो जायते धूमादभ्रमभ्राद् वृष्टि ।

शतपथ ब्राह्मण ५ ३।

अर्थात्—अग्नि से धूम (Smoke) धूम से बादल और मेघ से वृष्टि होती है।

यह विचार काफी वैज्ञानिक और बुद्धि सगत है क्योंकि यज्ञ धूम मे काफी मात्रा में धूलकण होते हैं। लकड़ी के जलने से भी कार्बन धूल (Carbon dust) बन जाती है। कई अन्य पदार्थ भी अच्छी प्रकार जले बिना वायु में मिल जाते है। इन्ही कणों के चारो ओर पानी जमकर आकाश को मेघाच्छादित कर देती है।

पाश्चात्य वैज्ञानिको ने वर्षा के विषय मे पर्याप्त अनुसन्धान की है। वे धूल को वर्षा मे सहायक मानते हैं। एटकन (Aitken) ने सिद्ध किया है कि वायु में घूमने वाले सभी प्रकार के धूल कण जलयुक्त पवनो के ठण्डा होकर जमने के लिए नाभि (nucleus) का कार्य पूरा करते हैं। यदि वायु में यह धूल न हो तो पवन को ठण्डा करने के लिये तापांक का अधिक कम होना अनिवार्य है। यदि धूल रहित नमी युक्त वायु में से पराबैंगनी किरणें (ultravioletrays या सूर्य की साधारण किरणें भी गुजरने दी जाएं तो इस न्यूनता की कुछ अंश तक पूर्ति हो सकती है। धनात्मिक विद्युत (positive electricity) की अपेक्षा ऋणात्मिक विद्युत (negative electricity) से युक्त धूलि कण पानी के जमाव मे अधिक उपयोगी सिद्ध हुए हैं। वर्षा मे बिजली का भी कुछ लाभ है—इसी प्रकार का भाव निम्नलिखित मन्त्र मे प्रकट किया गया है—

अपामग्निस्तनूभि सविदानो य ओषधि नामधिपा बभूव ।
स न वर्ष वनुता जात वेदा प्राण प्रजाभ्यो अमृत दिवस्परि ॥

अथर्व ४ १५ १०।

अर्थात्—(अपाम्) मेघ में स्थित जलो की (अग्नि) विद्युत (तनूभि) जलो के शरीर भूत मेघों से (सविदान) मिलकर रहती हैं। (य) जोकि (ओषधीनां) वनस्पतियो का (अधिपा) स्वामी पालक (बभूव) है। (स जात वेदा) वह समस्त पदार्थों मे व्यापक अग्नि (न) हमारे लिए (वर्ष) वृष्टि को और (दिवस्परि) आकाश से (अमृत) बरसते अमृत रूपी जल को और (प्रजाभ्य प्राण) पशुओं के लिए प्राण (वनुता) देव। वायु के सघर्ष से मेघो मे बिजली उत्पन्न होती है। वह ऋण (ive) और धन (tive) रूप मे पैदा होकर पुन परस्पर मिलाता है और कड़कती है। उससे जलो मे विशेष प्राण शक्ति और मेघो के जलों की वृद्धि भी होती है। औषधिया अधिक जल पाती और प्रजाए सुखी होती है।

(प० जयदेव जी के अथर्व वेद भाष्य से)

अत वर्षा में बिजली के महत्व से इन्कार करना कठिन है। वास्तव में यज्ञ भी अन्तरिक्ष आकाश मे बिजली भरता है फिर मेघ बनते हैं और वर्षा होती है। अग्निहोत्र के द्वारा धूम्र पैदा होता है जिसमें पर्याप्त मात्रा मे कार्बन धूलिकण प्राप्त रहते हैं। इनमें नमी चूसने की विशेष शक्ति होती है। इन पर जब नमी की एक परत जम जाती है तो और नमी खिचती चली आती है। इस प्रकार मेघ बनाने मे इन कणों का महत्वपूर्ण योग है।

वेद सुधा

इन्धाना सत्वा शत हिमा द्युमन्तं समिधीमहि वयस्वन्तो वयस्कृत सहस्वन्त सहस्कृतम् ।

अग्ने सपत्न दम्भ नमदब्धा सो अदाभ्यम् । चित्रावसो स्वस्ति ते पारमशीय ॥ यजु॰ ३-१८

ऋषि —अवत्सार । देवता-अग्नि ।

शब्दार्थ—हे (अग्ने) सबके प्रेरक उन्नायक और प्रकाशक प्रभो (द्युमन्तम्) स्वयं द्युतिमय तथा दूसरों को दीप्त करने वाले आपको (इन्धाना) दीप्ति की कामना करने वाले हम दीप्ति के लिए प्रयत्न करते हुए (वयस्कृतम्) आयु अन्न और जीवन प्रदान करने वाले आपको (वयस्वन्त) कामना वाले हम आयु अन्न और जीवन इनके लिए प्रयत्न करते हुए (सहस्कृतम्) सहिष्णुता और साहस प्रदान करने वाले आपका (सहस्वन्त) सहिष्णुता तथा साहस की कामना वाले हम, इनको प्राप्त करने का प्रयत्न करते हुए (सपत्नदाम्भनम्) सब प्रकार के बाह्य तथा अभ्यन्तर शत्रुओं का नाश करने वाले (अदाभ्यम) किसी भी प्रकार हिंसित न होने वाले आपको (अदब्धास) अहिंसित होने की कामना वाले हम अहिंसित होने का प्रयत्न करते हुए (शतहिमा) १०० वर्ष तक (समिधीमहि) आपको ध्यान द्वारा अपने अन्दर दीप्त करने का प्रयत्न करते हैं। हे (चित्रावसो) विविध वस्तुओं वाले (न) आपकी कृपा से (स्वस्ति) हमारे लिए सब प्रकार से कल्याण हो। और हम आपकी (पारमशीय) शक्तियों का पार पा सकें। अर्थात् आपको पूर्णतया समझ सकें, तुझे प्राप्त कर सकें।

—प्रार्थना उससे करनी चाहिए, जिसके पास वह चीज हो। परमेश्वर सारे ब्रह्मांड की संपूर्ण वस्तुओं का स्वामी है। इस लिए उससे किसी भी वस्तु की प्रार्थना की जा सकती है।

३—परमेश्वर से जिस वस्तु की प्रार्थना करनी हो, उस वस्तु के रचयिता स्वामी या दाता के रूप में उसका ध्यान करते हुए उससे प्रार्थना करनी चाहिए।

४—आयु अन्न और जीवन का संबंध स्थूल शरीर से है। स्थूल शरीर बिना अन्न के रह नहीं सकता। जब तक स्थूल शरीर रहता है, तब तक ही मनुष्य का जीवन तथा आयु गिनी जाती है। सहिष्णुता तथा तथा साहस का सम्बन्ध मन से है। मन के हारे हार है, मन के जीते जीत। आत्मा अमर होने से अदाम्य है। इसकी सहायता से ही काम, क्रोध आदि का दमन या नियमन किया जा सकता है।

करो, सत्भाव की रक्षा करो। शीघ्र लाभों पर ज्यादा ध्यान मत दो।

शरीर को दीप्त रखने के लिए अन्न का विशेष ध्यान रखो। ... बलदायक तथा पवित्र उपायों से प्राप्त किया हो।

मन को दीप्त करने के लिए सहिष्णुता (दूसरों की कमियों, तथा ज्यादतियों को सहने की क्षमता) तथा साहस (अपने से बड़ों तथा शक्तिशालियों के सम्मुख सत्य प्रकट करने की क्षमता) पर विशेष ध्यान देना चाहिए।

आत्मा को दीप्त करने के लिए काम, क्रोध, मोह ईर्ष्या, द्वेष तथा मद का विशेष नियमन करना चाहिए। ये सब आत्मा के सपत्न हैं, क्योंकि शत्रु की तरह प्रच्छन्न, अदृश्य तथा स्वभावजन्य हैं।

अपना पार पा सकने की क्षमता प्रदान कर

निष्कर्ष —१ जिस चीज की कामना हो, उसे प्राप्त करने के प्रयत्न के बाद ही प्रार्थना करनी चाहिए।

२—प्रार्थना उससे करनी चाहिए जिसके पास वह चीज हो। परमेश्वर सारे ब्रह्माण्ड की संपूर्ण वस्तुओं का स्वामी है। इसलिए उससे किसी भी वस्तु की प्रार्थना की जा सकती है।

पार पाया जा सकता है, उसे समझा जा सकता है, उसका साक्षात्कार किया जा सकता है।

विशेष—इस मन्त्र का ऋषि अवत्सार है जो संकेत करता है कि सार का ध्यान

५—इस मन्त्र मे शरीर मन और आत्मा तीनों के कल्याणपूर्ण अस्तित्व की प्रार्थना है। यदि इन तीनों का कल्याण हो जाएगा तो परमात्मा की शक्तियों का

अर्थ पोषक—आधार—समिधीमहि इन्धाना —इन्धी दीप्तौ। वय अन्न-नाम नि॰ २-७। वय आयु। स्वा॰ द॰ अदब्धास =दमाहकार रहिता। स्वा॰ द॰ पारम्-पारतो स्कर्मसमाप्तौ। अश्नोति व्याप्तिकर्मसु नि॰ २-१९ अदाम्यम्। निघ -अशूङ् व्याप्तौ।

—मनोहर विद्यालंकार

सामाजिक न्याय के नाम पर आरक्षण का संघर्ष

आरक्षण के खिलाफ ऊंची जाति के हिन्दू नौजवानों का कहना है कि इससे अयोग्यता को बढ़ावा मिलता है और 'ऊंची जातियों में भी बड़ी संख्या में जो गरीब लोग हैं उनके प्रति न्याय नहीं होता। उनका सुझाव था कि अगर आरक्षण रखना ही है तो उसका आधार आर्थिक होना चाहिए न कि जाति। हरिजनों आदिवासियों आदि के लिए आरक्षण का फायदा भी उन वर्गों के चन्द सम्पन्न परिवारों को मिलता है।

दूसरी ओर लोगों का कहना है कि आर्थिक आधार पर आरक्षण से हरिजन आदिवासी आदि वास्तव में पिछड़े लोगों का लाभ नहीं मिल सकेगा क्योंकि हमारे देश में जाति भावना बहुत प्रबल है इसलिए सारी आरक्षित सीटें ऊंची जाति के गरीब लोग ले जाएंगे। यह बात बहुत हद तक सही है। हरिजनों तथा अन्य नीची जातियों के प्रति एक प्रकार का अजीब रुख हमारे देश में है। परम्परा से यह चला आ रहा है हालांकि साफ शब्दों में अक्सर ऐसा नहीं कहा जाता कि नीची जातियां प्रकृति से ही हीन हैं। इसलिए लोगों में उनके खिलाफ एक प्रकार का पूर्वाग्रह बना हुआ है। लेकिन राजनैतिक स्वार्थ ने आरक्षण के प्रश्न को बहुत उलझा दिया है। हरिजनों आदिवासियों, अल्पसंख्यकों आदि के थोक वोट प्राप्त करने के उद्देश्य से इन वर्गों को खुश करने की एक होड़ राजनैतिक पार्टियों में लगी हुई है। आरक्षित स्थानों के लिए योग्यता और उम्र की मर्यादाएं घटाई गई हैं। आरक्षण विरोधियों के इस कहने में तथ्य है कि जिन पदों में तकनीकी योग्यता अपेक्षित हैं उदाहरण के लिए डाक्टरी या इन्जीनियरिंग उन पेशों में प्रवेश के लिए योग्यता का आधार घटा देने से जो लोग इन पेशों की सेवाएं लेते हैं उनके लिए हम खतरा पैदा कर देते हैं। क्या राष्ट्रपति या प्रधान मन्त्री, या कोई मुख्य-मन्त्री ऐसे डाक्टर से अपना इलाज कराना चाहेंगे जिसे केवल ३५ प्रतिशत अंकों के आधार पर मैडिकल कालेज में प्रवेश मिला हो। इसी प्रकार रेलवे के ड्राईवरों या विमान चालकों के लिए योग्यता के मानदण्ड घटाना क्या उचित होगा?

लेकिन राजनैतिक स्वार्थ ने आरक्षण के प्रश्न को बहुत उलझा दिया है। हरिजनों, आदिवासियो अल्पसंख्यकों आदि के थोक वोट प्राप्त करने के उद्देश्य से इन वर्गों को खुश करने की एक होड़ राजनैतिक पार्टियों में लगी हुई है।

यह सुझाया गया है कि पिछड़े वर्गों के छात्रों के प्रवेश की योग्यता घटाने के बजाय सरकार को उन छात्रों की योग्यता बढ़ाने के लिए और उनकी आवश्यकता स्तर तक लाने के लिए विशेष कदम उठाने चाहिए। लेकिन शायद हमारे देश के नीति निर्धारण करने वाले नेताओं के मन में भी कहीं न कहीं हरिजनों-आदिवासियों आदि पिछड़े हुए वर्गों की प्रकृतिक हीनता के बारे में विश्वास छिपा हुआ है। हमारे देश की शिक्षा पद्धति भी हरिजनों, आदिवासियों तथा अन्य पिछड़े हुए वर्गों के पिछड़ेपन का एक बड़ा कारण है। कक्षाओं के लिए जो पाठ्य पुस्तकें तैयार होती हैं उनमें इन वर्गों के संस्कारों या रहन-सहन का कोई समावेश नहीं होता, नतीजा यह होता है कि हरिजनों या आदिवासियों के बच्चों के लिए इन पाठों को समझना और उन्हें ग्रहण करना कठिन हो जाता है। आदिवासियों को तो हमारी भाषा भी एक विदेशी भाषा की तरह सीखनी पड़ती है। राजनैतिक नेताओं ने इन बातों पर ध्यान देने के बजाए विद्यालयों में हरिजन तथा आदिवासी आदि छात्रों के प्रवेश के स्तर को नीचा करने का सरल मार्ग अपनाया है।

आरक्षण के हिमायती या विरोधी दोनों ही प्रकार के लोगों में यह भावना भी काफी हद तक पाई जाती है कि आरक्षण की योजना राष्ट्र के पिछड़े हुए लोगों को ऊपर उठाने की उदात्त और न्यायोचित सामाजिक भावना की अपेक्षा पार्टी विशेष या नेता विशेष द्वारा थोपी हुई योजना है। इस भ्रम के बने रहने को कुछ पार्टियों ने भी उत्तेजन दिया है ताकि पिछड़े हुए लोग अपने विकास के लिए अपने पड़ोसी नागरिक या पूरे समाज की ओर देखने के बजाय पार्टी विशेष को अपना उद्धारक मानें। समझ बूझकर यही भावना फैलाई गई है कि कमजोर वर्ग अल्पसंख्यक में है इसलिये उन्हें जनतान्त्रिक तरीके से अर्थात् बहुमत के आधार पर लिए गये निर्णयों से, उनके प्रति न्याय

(शेष पृष्ठ ८ पर)

सम्पादकीय

आर्यसमाज में नवयुवक कैसे आ सकते हैं ?

हम सब की विशेषकर उनकी जो बहुत समय से आर्यसमाज मे कार्य कर रहे हैं यह प्रबल इच्छा रहती है कि नवयुवक अधिक से अधिक संख्या में आर्यसमाज में आएं। कई बार इसके लिए प्रयास भी हुआ है, परन्तु वह सफलता नहीं मिली, जो हम चाहते थे। इसके लिए मै केवल युवकों को ही दोषी नही ठहराता अपितु उन सब व्यक्तियो को जो बहुत देर से आर्य समाज में काम कर रहे हैं दोषी ठहराता हूं। हमे यह मानना पड़ेगा कि हम नवयुवकों को आर्य समाज में आने के लिए वह प्रोत्साहन नहीं देते, जो हमें देना चाहिए। जब किसी आर्यसमाज का चुनाव होता है, तो वहा भी पुराने व्यक्तियों को ही निर्वाचित किया जाता है। मैं इसे भी आवश्यक समझता हू क्योंकि जिन्हें आर्य समाज के विषय मे विशेष जानकारी है यदि वह सब आर्य समाज को छोड़ कर या उदासीन होकर एक तरफ हो जाए, तो फिर भी आर्य समाज की प्रगति रुक जाए। इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि पुराने और नए दोनों का एक समन्वय हो। जहा पुराने आर्यसमाजी नेतृत्व के लिए आर्यसमाज में रहे, वहा नवयुवको को भी प्रोत्साहन मिलना चाहिए और उसका एक ढंग यह भी है कि जब किसी भी आर्य समाज के चुनाव हो तो आधे अधिकारी पुराने निर्वाचित किये जाए और आधे नए। इस प्रकार दोनों एक दूसरे के कन्धे से कन्धा मिलाकर आर्यसमाज को आगे ले जा सकते हैं।

पिछले दिनों मुझे आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना मे जाने का अवसर मिला। मुझे वहां यह जानकर अत्याधिक प्रसन्नता हुई कि बहुत से नवयुवक अब इस समाज में आ गए हैं और सक्रिय रूप में काम कर रहे हैं। सब से अधिक प्रसन्नता मुझे इस बात की हुई कि जो जिला आर्य सभा बनाई गई उनके प्रधान भी एक नवयुवक को ही बनाया गया है। मेरे विचार में उनकी आयु ३० वर्ष से नीचे ही होगी। उनके साथ और भी कई नवयुवक आ गए हैं, जो न केवल आर्य समाज की गतिविधियो मे सक्रिय भाग ले रहे हैं, परन्तु उन क्षेत्रों में भी आर्यसमाज को ले जाने का प्रयत्न कर रहे हैं, जहा इससे पहले वह न पहुंची थी। उनकी एक योजना यह भी है कि यदि उन्हें अनुमति मिल जाए तो लुधियाना जेल में जा कर एक दिन यज्ञ करें और वहा जो कैदी रहते हैं, उन्हे बताए कि वे अपने जीवन को सार्थक कैसे बना सकते हैं। वह इसके लिए अनुमति लेने का प्रयत्न कर रहे हैं। इसके अतिरिक्त वे पारिवारिक सत्संग भी करते हैं और उनके हर इस प्रकार के सत्संग में और युवक भी आते हैं। धीरे-धीरे उनकी संख्या बढ़ती जा रही है।

उनसे बातचीत करते हुए एक नई समस्या भी सामने आई है जिसका मैं आज स्पष्टीकरण करना चाहता हू, ताकि दूसरी आर्य समाजो मे नवयुवको के लिए मार्ग प्रशस्त हो सके। मुझे यह बताया गया है कि आर्य युवक परिषद् के कुछ नवयुवक आर्य युवक सभा के साथ मिलकर काम करने को तैयार हैं, परन्तु किसी कारण से वे अभी आर्य युवक परिषद् को छोड़ने को तैयार नहीं। जैसा कि आर्य जनता को मालूम है आर्य युवक परिषद् इन्द्रवेश और अग्निवेश ने प्रारम्भ की थी। कई स्थानों पर वह अभी चल रही है। जिन नवयुवकों का उनके साथ सम्बन्ध है, वह आर्य समाज में काम तो करना चाहते हैं, परन्तु आर्य युवक परिषद् को अभी छोड़ना नही चाहते। आर्यसमाज लुधियाना के नवयुवकों ने मुझसे यह प्रश्न किया कि यदि वे आर्य युवक परिषद के सदस्यो को अपने साथ ले लें तो इस पर मुझे कोई आपत्ति तो नहीं है। उनका यह कहना था कि इस प्रकार युवक शक्ति बढ़ जायेगी और काम भी अधिक हो सकेगा। जो उत्तर उस समय मैंने दिया वही आज इस लेख मे भी स्पष्ट कर देना चाहता हू ताकि यदि किसी दूसरी समाज में भी यह समस्या हो तो मेरे युवक भाई उसको समझ लें और उसी के आधार पर अपने भावी कार्यक्रम को निश्चित करें।

आर्यसमाज का आधार आज तक उसका अनुशासन रहा है। कोई भी संस्था अनुशासन के बिना नहीं चल सकती। पिछले एक सौ वर्षों मे आर्यसमाज ने जो प्रगति की है और यदि उसका संगठन इतना शक्तिशाली बना है तो इसका कारण यह भी था कि आर्यसमाजमें अनुशासनकी बहुत अधिक रक्षा की गई है। प्रत्येक व्यक्ति को किसी सिद्धान्तके अनुसार चलना पड़ता है। और जो भी निर्णय आर्यसमाज करे उसके अनुसार ही सब लोग चलते है यही कारण है कि आर्यसमाज पर कई तरफ से आक्रमण हुए हैं फिर भी वह आज एक जीती जागती संस्था है। इस लिए अनुशासन के बिना संगठन नही चल सकता और संगठन के बिना कोई संस्था नहीं चल सकती। यही आज तक हमारी सफलता का एक रहस्य रहा है।

जहां तक आर्ययुवक परिषद् का सम्बन्ध है जिसकी बागडोर इन्द्रवेश और अग्निवेश के हाथ मे रही है इन दोनो को सार्वदेशिक सभा आर्यसमाज मे निष्कासित कर चुकी है ऐसी स्थिति मे किसी संस्था का जिसे इन दोनो का समर्थन और आशीर्वाद प्राप्त हो आर्य समाज मे कोई स्थान कैसे दिया जा सकता है। इससे बड़ा अनुशासन का उल्लंघन और क्या हो सकता है कि सार्वदेशिकसभा के किसी निर्णय को एक तरफ रख दिया और उन व्यक्तियो को आर्यसमाज मे प्रतिष्ठा दी जाये, जिन्होने सार्वदेशिकसभा के विरुद्ध मुकद्दमे भी चलाये हो और सार्वदेशिक सभा के संगठन को छिन्नभिन्न करने के लिए उनसे जो कुछ भी हो सका है, उन्होंने किया है। इसलिए जो भी नवयुवक आर्यसमाज में आना चाहते हैं या किसी आर्यसमाजके सदस्य बनना चाहते हैं उनके लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि वे आर्य युवक परिषद से अपना सम्बन्ध तोड़ कर आयें। या वे इन्द्रवेश और अग्निवेश से कहें कि वे सार्वदेशिक सभा के अनुशासन को स्वीकार करें। आज स्थिति यह है कि उन्होंने आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब के विरुद्ध भी मुकद्दमे चला रखे है और सार्वदेशिक सभा के विरुद्ध भी। ऐसी स्थिति में आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब किसी भी अपनी समाज को यह अनुमति कैसे दे सकती है कि वे वह अपने सदस्य ऐसे व्यक्तियों को बनाए जो इन्द्रवेश या अग्निवेश के अधीन चल रहे हैं। यदि कल को यह दोनों महानुभाव अपने मुकद्दमे वापस ले लें और सार्वदेशिक सभा के अनुशासन को स्वीकार करलें तो फिर वह सब आर्यसमाज मे आ सकते हैं। जब तक ऐसा नही होता उस समय तक आर्य युवक परिषद को मान्यता दी जा सकती।

एक और बात भी स्पष्ट कर देना चाहता हू चूंकि मेरी यह प्रबल इच्छा है कि अधिक से अधिक नवयुवक आर्य समाज मे आएं। इसलिए मैं आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना के अधिकारियो से कहूंगा कि वे पंजाब मे ऐसे युवको की जो आर्य-समाज में काम करना चाहते हैं एक स्थान पर इकट्ठा करे वहा अपनी समस्याओ पर विचार करें। और ऐसे सुझाव आर्य प्रतिनिधिसभा को दें जिनके अनुसार अधिक से अधिक युवक आर्य समाज मे आ सकते हों। मैं उन्हे यह विश्वास दिलाता हू कि जहा तक हमारी सभा का सम्बन्ध है वह युवको के लिए सब कुछ करने के लिए तैयार है। इस समय तक कठिनाई केवल यह रही है कि युवको ने बैठकर स्वयं कभी यह नहीं सोचा कि आर्यसमाज में उनका योगदान क्या होना चाहिए ? उन्हें यह शिकायत तो रहती है कि उन्हे प्रोत्साहन नहीं मिलता परन्तु वे कभी यह नही बताते कि वे चाहते क्या हैं ? मैं आज उन्हे सार्वजनिक रूप मे यह निमन्त्रण दे रहा हू कि वे सब मिलकर कोई योजना ऐसी बनाएं जिस पर चलते हुए युवको को अधिक से अधिक संख्या मे आर्य समाज मे लाया जा सकता है। मैं अपनी तरफ से और आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब की तरफ से उन्हें पूरा विश्वास दिलाता हू कि जो भी योजना वे बनाएंगे उसे क्रियान्वित करने का पूरा प्रयत्न किया जाएगा।

एक और सुझाव भी देना चाहता हू जुलाई मे आर्य प्रतिनिधिसभा का वार्षिक अधिवेशन होगा। यह प्रयास होना चाहिए कि इस अधिवेशन मैं अधिक से अधिक नवयुवक प्रतिनिधि भाग लें और वहां उनकी समस्याओ पर और उनकी दी गई योजना पर विचार किया जा सकता है। हम कुछ समय इसी पर लगा देंगे कि युवको को आर्यसमाज में प्रोत्साहन कैसे दिया जाए ? आशा है कि मेरे नवयुवक मित्र जिस जिस आर्यसमाज मे हैं वे मेरे इन विचारो पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे ताकि हम अब जो नया वर्ष प्रारम्भ करने लगे हैं, वह आर्यसमाज के इतिहास के उज्ज्वल भविष्य का सन्देश लेकर आये।

—वीरेन्द्र

अरुणांचल में ईसाई मिशनरियां गहरा घात लगाने की ताक में

देश के अन्य भागों में नये पुराने के बीच की खाई बहुत चौड़ी नजर नहीं आती। परन्तु अरुणांचल में कोपीन या लंगोटी और बेलबाटम का अन्तर बहुत बड़ा है। दपोरीजो और आलोंग के डिप्टीकमिश्नरों ने जब प्रायः एक जैसे विचार व्यक्त करते हुए कहाकि जो युवक पढ़-लिख जाते हैं, वे गांव जाना और मेहनत करना पसन्द नहीं करते। सिर्फ कुर्सी चाहते हैं, तब लंगोटी और पैंट के बीच की दूरी और गहरी नजर आने लगी। इस गहराई से एक नया खतरा भी झांकता नजर आता है।

सूर्य-चन्द्र के वंशज

अरुणांचलीयों का प्राचीन धर्म सूर्य और चन्द्र को आधार मानकर चलता है, जिस प्रकार शेष भारत में सूर्य और चन्द्रमा से जातियों की उत्पत्ति मानी गई उसी प्रकार अरुणाचली भी दोनों (सूर्य) और पोलो (चन्द्र) से अपनी उत्पत्ति मानते हैं, उनका धर्म अब भी 'श्रुति' और 'स्मृति' के स्तर पर है, वह लिखित नही। कुल के बड़े ही उसका कर्मकांड अपनी स्मृति से चलाते है और उनके परवर्त्ती सुन-सुन कर उसे सीखते हैं।

अलिखित धर्म में रहस्य और गोपनीयता का समावेश हो जाता है। नयी पीढ़ी जो पढ़-लिखकर सामने आ रही है। उसमें कुछ ऐसे युवक भी है जो इस धर्म को जानने समझने का प्रयत्न करने के बजाय इसे अपने जातीय पिछड़ेपन से जोड़कर इससे भागने की सोचते हैं। उन की स्थिति उस बछड़े जैसी हो गयी है जो खूटे और रस्से को तोडकर भागना चाहता है।

इस अचल मे ऐसी शक्तिया हैं जिन्होने इन कुछ अधीर अरुणाचली युवको को अपने जाल में फांसने और उन्हें भारतीय मूल मे काटकर अलग कर देन के लिए काम शुरू किया है।

धार्मिक विश्वास की रक्षा

ब्रितानी शासनकाल मे यह क्षेत्र पूरी तरह उपेक्षित रहा। इसे इस क्षेत्र का सौभाग्य ही कहना चाहिए, क्योंकि उपेक्षित रहने से ही यहा के निवासी अपने धर्म और परम्परा की रक्षा कर सके। जबकि पूर्वांचल के कई क्षेत्र अपनी सास्कृतिक ढाल से टूटकर अलग हो गये, आजादी के बाद जब केन्द्र सरकार का ध्यान इस क्षेत्र की ओर गया और निर्माण कार्य शुरू हुआ और जनता का सामना अधीर नयी पीढी से हुआ तब इस प्रदेश में पहली बार यह महसूस किया जाने लगा कि तरक्की करने के साथ-साथ अपने 'रीति-रिवाज' विश्वास आदि की रक्षा करना भी आवश्यक है। १९६९ में तत्कालीन एजेंसी परिषद ने एक प्रस्ताव पास करके सरकार से अनुरोध किया कि प्रदेश के सब गिरिजनों के धार्मिक विश्वास की रक्षा करने और इसे प्रोत्साहित करने के लिए कदम उठाये जाने चाहिए।

पंचायती राज प्रणाली के अन्तर्गत गठित शीर्ष समिति प्रदेश परिषद ने १९७२ में प्रस्ताव पास करके सरकार से अनुरोध किया कि अरुणांचली जनता को किसी विदेशी धर्म में रंगने की कोशिशों पर रोक लगायी जानी चाहिए। विभिन्न गिरिजातियों के लगभग दो हजार प्रतिनिधियों ने ऐसा ही एक प्रस्ताव १९७६ में हुए पासीघाट-सम्मेलन में पारित किया। यही प्रस्ताव अरुणाचल अन्तरिम विधान परिषद ने पारित किया और राज्य में निर्वाचित पहली विधानसभा ने अप्रैल, १९७८ मे प्रस्ताव पास करके १९७९ के प्रस्ताव, १९७६ के पासीघाट प्रस्ताव तथा इसी आशय के अन्य प्रस्तावों पर तत्काल अमल करने की मांग की।

अरुणांचली स्वभाव से बड़े शांतिप्रिय, सीधे-सरल सन्तोषी, धर्मभीरू और कट्टर राष्ट्रवादी हैं, लेकिन आर्थिक दृष्टि से पिछड़े होने के कारण धर्म की ओट में काम करने वाली राष्ट्रविरोधी विदेशी शक्तियां उनमें से कुछ शिक्षित असन्तुष्टों को अपने जाल में फंसाने की कोशिश करती है। १९७८ के अरुणांचल प्रदेश धर्मस्वातन्त्र्य कानून के अधीन अरुणाचल के किसी निवासी को भयलोभ, छल-कपट या किसी अन्य प्रकार के जाल मे फसा कर धर्म परिवर्तन को बाध्य नही किया जा सकता। फिर भी आज अरुणांचल के गिरिजन इस खतरे से चिन्तित हैं। राज्य के कांग्रेस (इ) विधायक श्री ठाकर तेची के अनुसार असम सरकार ने उत्तरी लखीमपुर, हरमती (बन्दर देवा के पास), तेजपुर आदि कई स्थलों पर ईसाई मिशनरियों को को अपने स्कूल और धर्म परिवर्तन केन्द्र चलाने की अनुमति दे रखी है। अरुणांचल के कुछ विधायक भी इस षड्यन्त्र में प्रच्छन्न रूप से साझीदार है। अरुणांचल के भोले भाले परन्तु परिवर्तन के लिए छटपटाते युवकों को फुसला कर असम स्थित केन्द्रों पर ले जाया जाता, और उन का धर्म परिवर्तन करके उन्हें वापस अरुणांचल भेज दिया जाता है। कुछ अरुणांचली युवकों को शिलांग और बम्बई में दीक्षित और प्रशिक्षित करके अरुणाचल भेजा जाता है।

भारत विरोधी प्रचार

विदेशी ईसाई मिशनरी अरुणाचल की जनता तक अपने एजेन्टों की जनता तक, अपने एजेन्टों की मार्फत यह सन्देश पहुंचाते हैं कि हिन्दुस्तान की सरकार तुम्हें गुलाम बनाना चाहती है, वे १९५३ की उस घटना की याद दिलाते हैं जब असम राइफल के बीस जवानों की हत्या की गयी थी, ईसाई मिशनरी गिरीजनों को यह बताते है कि हम और तुम दोनों गोमांस खाते हैं। परन्तु हिन्दू गोमांस नहीं खाता। हम तुम एक है और हिन्दू हम दोनों का दुश्मन है। अरुणाचल यदि ईसाई धर्म स्वीकार कर लेता है तो दुनिया की बड़ी ताकतें उस की रक्षा करेंगी और उसे गुलाम होने से बचायेंगी,

प्रो. हिमेनड़ाफ ने अपने नोट में कहा है कि ईसाई मिशनरियों ने निशी जाति के जिन युवकों का धर्मपरिवर्तन किया उन्हें निशी जाति के पुजारियों को मारने-पीटने को प्रेरित किया गया। इससे समूची निशी जाति के व्यक्ति भड़क उठे। प्रो. हिमेनड़ाफ ने इस पर भी गहरी चिन्ता और असन्तोष व्यक्त किया कि ईसाईमिशनरी अपने प्रचार द्वारा सामाजिक अशान्ति भड़का रहे हैं और गिरिजनों की समूची जीवन शैली को छिन्न-भिन्न कर डालना चाहते हैं।

ईसाई मिशनरियों और उनके एजेंटों के इस प्रचार से बौखलाकर इस प्रचार से चिढ़कर मारपीट पर उतर आती है। नवईसाईयों ने एक-आध स्थान पर अपना चर्च बनाने करने की कोशिश की जिसे जनता के ग्राम बूढ़ों ने रोक दिया। हाल में ही दोईमुख में नवईसा और अरुणाचलीयों में मारपीट हुई।

अरुणाचलीयों के सांस्कृतिक और धार्मिक जीवन के लिए ईसाई मिशनरी जो खतरा पैदा कर रहे हैं उसका पता श्री जवाहर लाल नेहरू तक को था। उन्होंने कहा था कि ईसाई मिशनरी जब भारतीय संस्कृति की निन्दा करते हुए अपने धर्म की श्रेष्ठता सिद्ध करते और धर्म परिवर्तन को बाध्य करते हैं तब वे निश्चय ही टकराव को बढ़ावा देते हैं और "इसी लिए सीमा के क्षेत्रों में सतर्कता बरतने का धार्मिक सहिष्णुता से कोई विरोध नहीं।"

हिमेनड़ाफ का मत

गिरिजनों का धर्म परिवर्तन करने की धुन में ईसाई मिशनरियों ने इस क्षेत्र के लिए जो समस्याएं खड़ी कर दी हैं, उनका उल्लेख करते हुये महान नृवंश शास्त्री प्रो० हिमिनड़ाफ ने अपनी हाल की दौरा-यात्रा के बाद सरकार को दिये गये एक प्रपत्र में कहा कि ऐसा प्रतीत होता है। जिन व्यक्तियों को धर्म परिवर्तन करके ईसाई बनाया गया, उन्हें बेहद असहिष्णु भी बना दिया गया हैं, उन्हें जान-बूझकर सामाजिक और जातीय शान्ति भंग करने को भेजा गया है।

प्रो० हिमेनड़ाफ ने अपने नोट में कहा है कि ईसाई मिशनरियों ने निशि जाति के जिन युवकों का धर्म परिवर्तन किया उन्हें निशी जाति के पुजारियों की मारने-पीटने को प्रेरित किया गया, इससे समूची निशी जाति के व्यक्ति भड़क उठे, प्रो० हिमेनड़ाफ ने इस पर भी गहरी चिन्ता और असन्तोष व्यक्त किया कि ईसाई मिशनरी अपने प्रचार द्वारा सामाजिक अशान्ति भड़का रहे हैं और गिरीजनों की समूची जीवन शैली को छिन्न-भिन्न कर डालना चाहते हैं।

झगड़े

गत जुलाई मास में सिरप जिले में तो फाल में नव-ईसाईयों ने गैर ईसाईयों पर हमला करके दो व्यक्तियों को घायल कर दिया, इसके बाद कानूवाड़ी क्षेत्र के ग्राम बूढ़ों की सभा हुई, इसमें तय किया गया कि जिन व्यक्तियों ने धर्म परिवर्तन करके क्षेत्र में अशान्ति फैलायी है, वे शान्ति के हित में वापस अपना पूर्व धर्म स्वीकार कर ले, ग्राम बूढ़ों ने यह भी कहा कि नवईसाईयों ने जो चर्च कायम किये हैं, उन्हें तोड़ दें, नवईसाईयों की सहमति से झोंपड़ियों में बने ये चर्च हटा दिए गये,

(शेष पृष्ठ ५ पर)

गुरुकुल कांगड़ी के दीक्षान्त-समारोह पर

ही समाप्त मन्दिर में गत सितम्बर में २१ ता० को एक अभूतपूर्व कार्यक्रम सम्पन्न हुआ जब इस इलाके के नामी डाकू भीष्म पाण्डेय ने यज्ञाग्नि के समक्ष नत होकर यज्ञोपवीत ग्रहण किया और गुरुकुल जीवन व्यतीत करने का व्रत लिया। डा० जयदेव ने उसको ... से सुशोभित किया और ... विशेष उन्हें श्री नारायण स्वामी की कर्तव्य दर्पण पुस्तक मार्ग दर्शन के रूप में भेंट की। इसके बाद भीष्म नारायण कैसा जीवन व्यतीत कर रहे हैं इसकी मुझे जानकारी नहीं लेकिन सुनता हूं उन पर विभिन्न दबाव है जैसे कि हरेक व्यक्ति पर होते हैं।

हम जानते हैं कि हमारा मन एक प्रकार का कुरुक्षेत्र है जहाँ सात्विक और तामसिक शक्तियों का निरन्तर युद्ध चलता रहा। तभी तो श्री आनन्द स्वामी कहा करते थे कि गायत्री हम आर्यजनों की मां है। हमें चाहिए कि हम सदा उस का जाप करें एवं उसकी गोद ही में विचरें, विश्राम करें। मेरी परम पिता परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह भीष्म नारायण और उसके साथियों को सुपथ पर चलने की शक्ति प्रदान करें। वह किसी धूर्त के चंगुल में फंस कर पथ-भ्रष्ट न हों

मैंने ऊपर जिक्र किया था कि हम स्वामी श्रद्धानन्द जी के चरण चिन्हों पर चलने का प्रयास कर रहे हैं लेकिन लड़खड़ाते कदमों से मैंने यह पूरी जिम्मेवारी से इस्तेमाल किये हैं। उस लड़खड़ाहट का नमूना है कि अभी गुरुकुल परिवार के बहुत से सदस्य दैनिक अग्निहोत्र में तो छोड़ो आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में भी उपस्थित होना अपना कर्त्तव्य नहीं समझते। वह परम सौभाग्य का दिन होगा जब आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में गुरुकुल वासियों की यथेष्ठ उपस्थिति होगी।

आर्य समाज के उपनियमो में प्रावधान है कि सदस्य अपनी आय का शतांश चन्दे के रूप में दें। गुरुकुल कांगड़ी आर्य समाज के समक्ष इस उपनियम को पूर्णतया पालना करने का प्रस्ताव है। यदि ऐसा हो जाता है तो इस समाज की आर्थिक स्थिति बहुत सुदृढ़ हो जाएगी। यह ट्रैक्ट, पुस्तक समाचार बुलेटिन इत्यादि के प्रसार के कार्यक्रम हाथ में लेकर सक्रिय हो सकती है। स्थायी रूप से पुरोहित इत्यादि की नियुक्ति की जा सकती है। वास्तव में गुरुकुल आर्य समाज का यह परम कर्त्तव्य है कि यह न केवल हरिद्वार और भारत के किन्तु समस्त संसार के अन्धकार आच्छादित स्थलों को ज्योतिर्मय करने हेतु प्रकाश स्तम्भ की भूमिका निभाए।

सहयोगियो,

ऊपर मैंने रैम्जे मैकडानल्ड की गुरुकुल यात्रा का जिक्र किया था। आपने सुना स्वामी श्रद्धानन्द ने उन्हें कहा था कि वह बच्चों को तप और अनुशासन का अभ्यास कराने में प्रयत्नशील है। आइए हम अपने आप से पूछें कि हम स्वयं कहां तक ऐसी जीवन साधना कर रहे हैं। जैसे मैंने कई बार कहा है बच्चे तो वानर समान नकलची होते है। जैसा बड़ों को करता देखते हैं वैसा करते हैं। आइये, हम अन्तर्मुख होकर सोचें कि हम उनके सामने क्या आदर्श और उदाहरण उपस्थित कर रहे हैं? हम स्वयं कहां तक यम नियम का पालन कर रहे हैं? आज देश में विलासिता की बीमारी घर कर रही है। उससे जुड़ी हुई है आलस्य प्रमाद और अनुशासन हीनता की घातक बीमारियां। ऋषि दयानन्द ने नव मानव के निर्माण का जो नुस्खा हमको आज से सौ वर्ष पूर्व

कुलपति श्री बलभद्र कुमारजी द्वारा सम्बोधन

दिया था यदि हम ने उस पर पूर्णतया अमल किया होता तो आज हमारी स्थिति कहीं अत्यधिक उत्तम होती। उनके नुस्खे के मूल मन्त्र हैं, ब्रह्मचर्य, तप और संयम।

निःसन्देह कठोर तप से ही नव-मानव का निर्माण होगा और इस कार्यक्रम में अमलदारी करना आर्य संस्थाओं का काम है। लेकिन क्या मैं यह पूछने की धृष्टता कर सकता हूं कि हमारी आर्य संस्थाओं में कार्यरत कितने गुरुजन ब्रह्मचर्य के तप की आवश्यकता अथवा साधना से भिज्ञ हैं? कभी उनसे पूछिये तो सही कि ब्रह्मचर्य सूक्त कौन से वेद का सूक्त है? उसका आशय क्या है? स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने उसकी क्या व्याख्या की है?

कार्यरत सहयोगियों को तो इनसे परिचित कराएं। इस हेतु यदा कदा संगोष्ठियां करें। शिविर लगाए। स्पष्ट हैं कि इन आदर्शों का सर्वत्र प्रचार करने हेतु हमे संस्कृत और हिन्दी के दायरे से भी बाहर निकलना होगा। और न केवल अन्य देशी और विदेशी भाषाओं के माध्यम को अपनाना होगा किन्तु दूरदर्शन और दूर संचारसे आधुनिक साधनों को भी प्रयोग में लाना होगा। तभी तो हम विश्व को आर्य बना सकते है। लेकिन विश्व को आर्य बनाने का बीड़ा वही तो उठा सकता हैं जो स्वयं असली मायनों में आर्य हो न कि नाम निहाद आर्य समाजी।

आर्य देवियो और सज्जनों,

इस प्रसंग में हमारे कुल सचिव डा० चन्द्रभानु अकिंचन से एक कार्यक्रम शुरू किया था, जो चल नहीं पाया। उसकी ओर भी आपका ध्यान आकृष्ट करना चाहूंगा। दोष उनका नहीं है, दोष है मेरे जैसे अनुशासनहीन विद्यार्थियों का। डा. अकिंचन ने घोषणा की कि वे सप्ताह में तीन दिन प्रसून वाटिका में सरल संस्कृत सुबोध हेतु वयस्कों की कक्षाएं आरम्भ करेंगे। जोश में आकर मैंने अपना नाम तो उनकी श्रेणी में लिखवा दिया, परन्तु नियमित रूप से उपस्थित न हो पाया। ऐसा ही अन्य विद्यार्थियों द्वारा हुआ। डा० अकिंचन की कक्षाएं टूट गई। जैसा मैंने ऊपर कहा है अब वह स्टेज आ गई हैं जब गुरुकुल के अध्यापकों, विशेषकर अंग्रेजी जानने वाले अध्यापकों को संस्कृत और वेद में प्रवेश प्राप्त करने हेतु उद्यमशील होना चाहिए। आप जानते ही है

आज देश में विलासिता की बीमारी घर कर रही है। उससे जुड़ी हुई हैं आलस्य प्रमाद और अनुशासनहीनता की घातक बीमारियां। ऋषि दयानन्द ने नव-मानव के निर्माण का जो नुस्खा हमको आज से सौ वर्ष पूर्व दिया था यदि हमने उस पर पूर्णतया अमल किया होता तो आज हमारी स्थिति कहीं अत्यधिक उत्तम होती।

यह है काम और चुनौती जो आज हमारे वेदज्ञ और संस्कृत विद्वानों के सामने है। उनका धर्म है कि वह इन आदर्शों का न केवल स्वयं पालन करें वरन् इन को जनसाधारण तक पहुंचाएं। सर्वप्रथम कम से कम अपनी ही शिक्षा संस्थाओं में

कि विश्व भर में आज वैदिक साहित्य के प्रति जिज्ञासा उभर रही है, संसार के प्रबुद्ध व्यक्ति भोग की ओर आकृष्ट हो रहे हैं। लेकिन उन तक वैदिक साहित्य पहुंचाने वाले है कौन यही स्वयं घोषित भगवान? यह तो अपनी खुदाई के नशे में मशगूर हैं। यह असली वैदिक संस्कृति का क्या सन्देश देंगे? अतः आज आर्य अध्यापकों के सामने यह चुनौती है। वह द्विभाषी, त्रिभाषी बनें। पहले गुरुकुल से

किस्त—3

ही हो सकती है यहां संस्कृत और अंग्रेजी विद्वान एक ही परिसर मे रहते हैं। वह आचार्य रामदेव, प० लेखराम से प्रेरणा ग्रहण करें। और उनके सदृश एक दूसरे से अन्य भाषाएं सीखकर देश-विदेश में वेद प्रचार के कार्य में समर्पण भाव से आवें।

इसी प्रकार इनका यह भी धर्म है कि वह गुरुकुल में प्रविष्ट ब्रह्मचारियो की संस्कृत और अंग्रेजी भाषाओं में सम्भाषण शक्ति को उजागर करें। पुराने समय में गुरुकुल की यह एक विशिष्टता थी। इसे पुनः प्राप्त करना हमारा परम धर्म है।

(क्रमशः)

अरुणांचल में ईसाई मिशनरियां घात लगाने की ताक में

(४ पृष्ठ का शेष)

इसी क्रम में कुछ अज्ञात व्यक्तियो ने एक शिव मन्दिर को भी तोड़ डाला। प्रदेश की जनता इस बात मे अवश्य चिन्तित है कि ईसाई मिशनरी अरुणांचल को भी मिजोरम और नागालैंड की तरह अशान्त बना देना चाहते हैं।

अरुणाचल की जनता का मत है कि चुनौती का सामना करने का तरीका यही है कि अरुणाचल की सीमा पर देश के भीतरी भागों में राम-कृष्ण मिशन और विवेकानन्द मिशन को स्कूल चलाने के लिए अधिक से अधिक सुविधाएं दी जाएं रामकृष्ण मिशन और विवेकानन्द मिशन वहा कुछ काम कर भी रहे है, वालोंग का रामकृष्ण मिशन स्कूल और ईटानगर का रामकृष्ण मिशन अस्पताल समूचे प्रदेश वासियों का तारा बन गया है।

राज्य के एक विधायक के अनुसार प्रदेश की प्रायः सब जातियो के व्यक्ति खतरे के तात्कालिक और दूरगामी परिणाम को समझते हैं, वे उनको टालने के लिए परस्पर सहयोग करते और युवको को साथ लेकर चलते हैं, परन्तु कई बार प्रदेश के बाहर की शक्तियां खतरे के वास्तविक रूप पर पर्दा डाल कर उसे केन्द्र के सामने एक दूसरे रूप मे पेश करते हैं विवादो को जातीय झगडे का रूप देने की कोशिश की जाती है केन्द्र सरकार के ऐसे निर्देशों से जिनसे यह प्रतीत नही होता कि वे स्थानीय स्थिति को सही समझ और सोच के बाद जारी किए गए हैं, स्थानीय जनता के लिए कठिनाई पैदा हो जाती है, इनसे गेगांग अपाग सरकार को ही परेशानी होती है क्योकि वह स्थानीय जनता के बहुमत की ही प्रतीक नही उसके धार्मिक विश्वास की भी रक्षक है।

लाला लाजपतराय के जीवन पर आधारित एक प्रसिद्ध नाटक

शेरे पंजाब लाला लाजपतराय

ले०— श्री बी० एस० बोसला

(गतांक से आगे)

एक तमिल नौकर हाथ में एक मैना पकड़े हुये फाटक की ओर आता है, स्वाभाविक ही रुक जाता है, सिपाही उसकी तलाशी लेता है, थैले में कुछ हरि सब्जियां हैं, नौकर अन्दर आने लगता है तो उसकी दृष्टि फूलों पर पड़ जाती है, लाला जी उससे फूल लेकर चूमते हैं और फाटक की ओर देखते है, फिर आराम कुर्सी पर बैठ जाते हैं नौकर ६. टाई रखकर उस पर पांच-छ. पुस्तकें व लिखने का सामान रख देता है, लाला जी कुछ पढ़ने की कोशिश करते हैं, फिर कुछ लिखने की, पर काम में उनका मन नहीं लगता, बरामदे में खड़े होकर फाटक की ओर देखते हैं कि महाराष्ट्र वालों का वहीं उनको दिखाई देता है ये लोग प्रणाम करते हैं लाला जी उनको उत्तर देते हैं, कुछ देर फाटक पर खड़े रहते हैं, लालाजी प्रणाम करते ही उनको आने का संकेत करते हैं, परन्तु वे लोग नहीं आते, सार्जेंट फाटक पर आकर अपने बैंत के संकेत से महाराष्ट्रीयों को भगा देता है।

सार्जेंट—तुमें कितनी बार आदेश दिया है कि फाटक के पास लोगों को मत इकट्ठा होने दो।

सिपाही--बहुत बार।

सार्जेंट--फिर यह पंजाबी किस तरह जमा हो गये।

सिपाही -ये पंजाबी नहीं थे।

सार्जेंट--फिर ये कौन थे ?

सिपाही--मैं ब्रह्मी हूं, परन्तु पंजाबियों को अच्छी तरह से पहचानता हूं, क्योंकि ब्रह्मा में काफी पंजाबी हैं।

सार्जेंट--तुमने इनसे पूछा क्यों नहीं, अब हम रिपोर्ट में क्या लिखेगा।

सिपाही--आप लिख सकते हो कि हिन्दुस्तानी थे।

सार्जेंट--ठीक है, मैं सुपरिटेन्डेंट पुलिस को कहूंगा कि हिन्दुस्तानियों का इस सड़क पर आना-जाना बन्द कर दें।

सार्जेंट सीढ़ियों की तरफ जाता है, ऊपर चढ़ने से पहले सिगरेट बुझाता है, बरामदे में आकर देखता है लाला लाजपतराय आराम कुर्सी पर बैठ जाते हैं, लाला जी इसकी तरफ ध्यान नहीं देते क्योंकि चक्कर काटना इसका नियम है, सार्जेंट- सीढ़ियां उतर कर पेंट उतार के सिगरेट पीने लग जाता है, सिपाही अपनी रोंद में लग जाता है, लाला जी एक पुस्तक पढ़ते हैं।

एक मैना की आवाज आती है तो लाला जी उसे बड़े ध्यान से सुनते हैं, मैना का चीखना दर्दनाक है जिस करके लाला जी चिन्तातुर हो जाते हैं।

नौकर पानी का गिलास लेकर आता है।

लाजपत--पानी पिये बिना गिलास मेज पर रख देते हैं, आज यह मैना क्यों चीख रही है।

नौकर--इसका साथी इससे छीन लिया गया है।

लाजपत--किसने छीना है।

नौकर--सार्जेंट ले गया है।

लाजपत--क्यों ?

नौकर--कहता था कि मुझे मैना का गाना बहुत अच्छा लगता है।

लाजपत--बहुती न होवे तो, जोड़े को अलग कर दिया, बेचारी कैसे चीख रही हूं, लाला जी पढ़ने की कोशिश करते हैं, नौकर पानी का गिलास उन्हें देता है, बिल्ली का क्या हाल है।

नौकर--लाऊं।

अन्दर से एक बिल्ली को लाता है।

लाजपत- बिल्ली को प्यार करते हुये मैना और बिल्ली को देखकर मुझे सब दु:ख भूल जाते हैं, मुझे जानवर अच्छे लगते हैं।

नौकर--पहले तो मैंने कभी भी जानवर नहीं रखे, पर जब से आपने मैना और बिल्ली का जोड़ा पालना शुरू किया मुझे जानवरों का स्वाद पड़ गया।

नौकर—परन्तु लाला जी मैं आपके पास हूं, सार्जेंट है, सुपरिंटेंडेंट जेल आपको रोज देखने आता है।

लाजपत—हां, मुझे देखने वालों की कोई कमी नहीं, मैं चाहता हूं कि मुझे देखने वाले कम हों, पर कोई बात करने वाले हों।

नौकर— अब आपके पास पंजाब का सिक्ख रसोईया आ गया है।

सुपरिटेंडेंट जेल आता है, सिपाही सावधान होकर सल्यूट करता है, सुपरिटेंडेंट के पीछे दूसरा सिपाही है जो अपनी जगह फाटक पर खड़ा रहता है, सार्जेंट अपनी पेटी बांधता है और सावधान होकर सल्यूट करता है, सुपरिटेंडेंट आगे पीछे, दोनों सीढ़ियां चढ़ते हैं।

सुपरिटेंडेंट—लाजपतराय को संबोधन करते हुये, अजीतसिंह तुम्हारा स्वास्थ्य है ? बरामदे में पहुंच कर अपनी गलती महसूस करता है, नहीं, नहीं, लाजपत तुम्हारा स्वास्थ्य तो ठीक है, कुर्सी पर बैठ जाता है।

लाजपत—क्या अजीतसिंह भी

लाजपत—हां, जानवर बड़ी जल्दी अकेला रहने लग जाते हैं, व्यक्ति को ही अकेलापन खाता है, मैं कई बार अपने आपको कहता हूं कि भगवान ने मुझे प्रार्थना, अराधना व चिन्तन का मौका दिया है, तू परमात्मा का धन्यवाद कर और अवसर का लाभ उठा, जो व्यवहार तेरे साथ हुआ है वह किसी तरह भी असाधारण नहीं. सत्य के मार्ग पर चलने के लिए कीमत चुकानी पड़ती है फिर यह उदासीनता क्यों ?

लाजपत--मुझे जानवरों का कभी भी इतना चाव नहीं था, सिर्फ नजरबन्दी में अपना मन बहलाने के लिये मैना और बिल्ली के जोड़े को पाला, कितने दु:ख की बात है कि मैना अकेली रह गई।

नौकर--परन्तु धीरे-धीरे अकेला रहने लग जाते हैं।

लाजपत--हां, जानवर बड़ी जल्दी अकेला रहने लग जाते हैं, व्यक्ति को ही अकेलापन खाता है, मैं कई बार अपने आपको कहता हूं कि भगवान ने मुझे प्रार्थना, अराधना व चिन्तन का मौका दिया है, तू परमात्मा का धन्यवाद कर और अवसर का लाभ उठा, जो व्यवहार तेरे साथ हुआ है वह किसी तरह भी असाधारण नहीं, सत्य के मार्ग पर चलने के लिए कीमत चुकानी पड़ती है: फिर यह उदासीनता क्यों ?

मांडले आ गया है ?

सुपरिटेंडेंट—नहीं, मेरे से गलती हो गई।

लाजपत—जब परसों कतील वाली दोनों सड़कें मेरे लिए बन्द कर दी गई तो मैं झट समझ गया कि इस जिले में कोई राजसी कैदी आ गया है जो अजीतसिंह के अलावा कौन हो सकता है

सुपरिटेंडेंट—नहीं, नहीं, अजीतसिंह तो यहां नहीं।

लाजपत—और कोई बात नहीं मेरी सैर के दायरे की बन्दिश का मुझे कोई अफसोस नहीं, मैं कल प्रात: से सैर को बन्द कर रहा हूं।

सार्जेंट—क्यों ?

लाजपत—आपको सार्जेंट ने बता ही दिया होगा, मैं अपने देशवासियों का अपमान सहन नहीं कर सकता।

सुपरिटेंडेंट—हां, मुझे सार्जेंट से रिपोर्ट मिली है, जिला पुलिस ने इस जिले को कई दिन से इस सड़क पर आपका घूमना देखा था, इसलिए आप की आज उसने अपने हुक्म को ... बदल के साथ, (हाथों से संकेत कर) जैसे उसे कोई ठीक शब्द नहीं ... लेकिन आपका बदल हुआ था, ... कि दोनों के बीच इत्तफाक ... पाता ... मैं इत्तफाक बरकरार ...

लाजपत—अगर ... जिला को छोड़ने के लिए तैयार नहीं तो मैं आज से सैर बन्द करने का फैसला पक्का करता हूं,

सुपरिटेंडेंट—लेकिन लाजपतराय, सैर आपके स्वास्थ्य के लिए जरूरी है और मेरा यह कर्त्तव्य है आपकी सेहत कायम रहे।

लाजपत—आप अपने कर्त्तव्य को पूरा करने के लिए क्या कर रहे हो ? मैं मैं राजसी कैदी हूं, मामूली कैदी नहीं, परन्तु मैं देखता हूं कि धीरे-धीरे मेरी सहूलियतें कम हो रही हैं।

सुपरिटेंडेंट—लाजपत यह ठीक नहीं,

लाजपत—मेरी सैर पहले से बहुत छोटी हो गई है, मैं ताजा हवा में घूम सकता था। कतील वाली दोनों सड़कें खुली लम्बी हैं, मुझे अच्छे सांस लेने का स्वाद आता था, बंगले के पश्चिम की ओर दोनों सड़कें तब हैं और दोपहर के बाद वहां धूप तेज होती है, आपने मुझे काली ऐनक लगाने की भी मनाही की हुई है।

सुपरिटेंडेंट—वो सुपरिटेंडेंट जिला पुलिस का आदेश था, जब तक आप इस बंगले की चार दीवारी में हो तब तक आप मेरी निगरानी में हो, परन्तु बाहर सड़कों पर सुपरिटेंडेंट जिला पुलिस का अधिकार है।

लाजपत—मैं यह बात अच्छी तरह जानता हूं, आवाज ऊंची करके, पर यह मेरी समझ से बाहर होगी कि काली ऐनक की मेरी आंखों के लिए आवश्यक है किसी को क्या नुकसान पहुंचाती है।

सुपरिटेंडेंट—लाजपत राय, आप मेरा और मेरे द्वारा ब्रिटिश सरकार का अपमान तो नहीं कर रहे हो।

लाजपत—आप मेरे से इस प्रश्न का क्या उत्तर चाहते हो ? सरकार एक बन्दी का गला घोंट सकती है पर उससे जबरदस्ती अपनी महिमा नहीं करवा सकती। मुझे खुली सैर में चैन मिलता था, जो अधिकार आपने जबरदस्ती मुझ से छीन लिए, आपने मुझे चिट्ठी लिखने की इजाजत दी इससे मेरा मन लगा रहा, वो भी वापिस ले लिया, जब मुझे मेरे देशवासी प्यार से मिलते हैं तो मुझे बड़ा चैन मिलता है क्योंकि आपके सिपाही मेरे देखते ही उनका अपमान करते है, फिर उनके दर्शनों से अलग रहना पसन्द किया मेरे मन पर इन सबका बोझ है और मेरी चिन्ता व बीमारी आने से बढ़ गई है, जबकि आपका कर्त्तव्य है आप मेरे स्वास्थ्य का ध्यान रखें मेरी मानसिक स्थिति दिन प्रतिदिन बिगड़ रही है, पर आप इसलिए कुछ नहीं कर रहे।

(क्रमश:)

आर्य प्र. नि. सभा पंजाब द्वारा प्रकाशित तथा प्रसारित साहित्य की पुस्तकें

१.	सत्यार्थप्रकाश हिन्दी,	४—५०
२.	सत्यार्थ प्रकाश (उर्दू)	१०—००
३.	,, अंग्रेजी	२०—००
४.	आर्य समाज—अतीत की उपलब्धियां तथा भविष्य के प्रश्न ले०—डा० भवानीलाल भारतीय	१०—००
५.	पंजाब का आर्य समाज ले०—प्रि० रामचन्द्र जावेद सभामन्त्री	४—००
६.	बिब्लिकल फराम सत्यार्थ प्रकाश (अंग्रेजी) ले० डी० एन० वासुदेव जी	३-००
७.	स्वामी श्रद्धानन्द (अंग्रेजी) ले० श्री के० एन० कपूर जी	५—००
८.	स्वामी श्रद्धानन्द उपदेश माला	०—२५
९.	पोलीटीकल टैस्टामैंट आफ स्वामी श्रद्धानन्द	०—२५
१०.	जन्म साखी (ले० ज्ञानी पिण्डीदास जी)	२—००
११.	सिक्ख गुरु अते आर्य सिद्धान्त (पंजाबी) ले० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी सरस्वती	२—५०
१२.	आर्य समाज दा दिग्दर्शन (पंजाबी) (ले० आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद)	२—००
१३.	[illegible]र उनका प्रादुर्भाव ले० महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज	५०—०० सैंकड़ा
१४	श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द और उनका दिव्य सन्देश	०—२५
१५.	भागवत खण्डनम् ले० स्वामी दयानन्द जी सरस्वती	०—५०
१६.	नीहारिकावाद और उपनिषद् (ले०—प० चमूपति)	००—२५
१७.	वीतराग स्वामी स्वतन्त्रतानन्द ले० श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु	१—००
१८.	हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी ले० ज्ञानी पिण्डी दास जी	० -२५
१९.	प्रिंसीपल्स आफ आर्य समाज अंग्रेजी ले० श्री पूर्णचन्द जी एडवोकेट	२—००
२०.	मृत्यु और परलोक ले० महात्मा नारायण स्वामी जी	२—५०
२१.	संस्कार विधि ले० स्वामी दयानन्द जी सरस्वती	४—५०
२२.	मेरे सपनों का भारत, ले० श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री	२—५०
२३.	आर्य पर्व पद्धति ले० श्री प० भवानी प्रसाद	५—००
२४.	पूजा किस की ले० श्री राम गोपाल शालवाले	०—२५
२५.	आर्य समाज ,, ,,	०—३०
२६.	सत्य की मंजिल सेवा की राह, ले० शादी राम जोशी	१०—००
२७.	बाल सत्यार्थ प्रकाश ले० प्रोफेसर विश्वनाथ विद्यालंकार वेदोपाध्याय गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार,	३—००
२८.	धर्मस्वातन्त्र्य विधेयक क्यों ? ले० रघुनाथ प्रसाद पाठक	१—००
२९.	माण्डूक्योपनिषद टीका म० नारायण स्वामी	० ३५
३०.	प्रभु भक्ति स्तोत्र ले० लोकनाथन जी वाचस्पति	०—४०
३१.	धर्मवीर प. लेखराम ले० स्वामी स्वतन्त्रानन्द	०—४०

आर्य मर्यादा के विशेषांक

१.	मेरी आत्म कथा के कुछ पृष्ठ ले० आचार्य रामदेव जी	१—००
२.	स्वतन्त्रानन्द संस्मरणांक	१—५०
३.	वेद में पुनरुक्ति दोष नहीं	२—५०
४.	यजुर्वेदाध्याय का ३२ वां स्वाध्याय आचार्य रामदेव	१—००
५.	अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी	१—५०

नोट :—ओ३म के झण्डे, हवन कुण्ड व ओ३म के बैज भी उपलब्ध हैं।

प्राप्ति स्थान

[illegible]—चमूपति साहित्य प्रकाशन विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर—४

दक्षिण भारत में सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी समारोह की तैयारियां

पं० वेदभूषण अधिष्ठाता अन्तर्राष्ट्रीय वेद प्रतिष्ठान दिन-रात दक्षिण भारतीय सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी समारोह के कार्य में जुटे हुये हैं।

लोहे के बड़े मेखला वाले यज्ञ कुण्ड बनवाने का कार्य आरम्भ हो गया है। जिस विशाल मैदान में यह कार्यक्रम हो रहा है वह मैदान भी आर्य समाज का अपना निजी मैदान है। इस मैदान में सात मंजिला अन्तर्राष्ट्रीय महर्षि दयानन्द भवन बनाने की विशाल योजना बनाई गई है। जो शीघ्र ही मूर्त रूप लेने जा रही है। समारोह की तैयारी जोरों पर है।

दो घण्टों मे ही 27हजार का दान

प० वेदभूषण जी के त्याग भाव का इतना प्रभाव है कि जैसे ही पं० जी ने दो-चार मित्रों से समारोह की चर्चा की तो दो घण्टे मे एक ही श्रद्धावान धर्म प्रेमी ने ग्यारह हजार एक सौ ग्यारह का चैक पण्डित जी को दे दिया। दो प्रतिष्ठित व्यापारियो ने पांच-पांच हजार रुपए प्रदान किए। एक सज्जन ने इक्कीस सौ रुपए तथा पांच धर्म प्रेमियों ने एक-एक हजार रुपए इस पवित्र कार्य के लिए प्रदान कर दिए। मैटाडोर गाडी सहित कुल अढ़ाई लाख रुपए समारोह पर व्यय [illegible]। भवन निर्माण की योजना इससे पृथक् है।

दक्षिण भारतीय सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी समारोह जो ७ मई १९८१ से १० मई तक हैदराबाद नगर में आयोजित है, में देश भर के मूर्धन्य विद्वानों एवं भजनोपदेशक भाग ले रहे है। जिनके नाम इस प्रकार हैं—

शास्त्रार्थ महारथी प० बिहारीलाल शास्त्री काव्यतीर्थ, शास्त्रार्थ महारथी प० शान्ति प्रकाश शास्त्रार्थ महारथी ओम-प्रकाश जी खतोली वाले, महात्मा आर्य भिक्षु वानप्रस्थ, प० उत्तमचन्द जी शरर, आचार्य वीरेन्द्र जी शास्त्री, क्रान्तिकारी युवा नेता ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी तथा स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती दीक्षित, तथा वेदाचार्य सावित्री देवी वेद भारती। प्रसिद्ध भजनोपदेशक--श्री नत्थासिंह आर्य, श्री मानचन्द आर्य 'पथिक' श्री दीपचन्द आर्य, श्री नरेन्द्रदत्त, मैजिक लालटेन के प्रचारक।

—

सभा की निम्न योजनाओं के लिए

अधिक से अधिक धन भेजिए

पंजाब की आर्य समाजों से अपील

१. सभा के वेद प्रचार विभाग के लिए जो आर्य समाज का मुख्य कार्य है।

२. सभा के साहित्य प्रकाशन के लिए जो वर्तमान युग मे प्रचारार्थ सबसे प्रभावशाली साधन है।

३. सभा के नये भवन के निर्माण के लिए।

४. सभा की ओर से बनाये जा रहे कादिया के लेखराम स्मारक, मोही के स्वतन्त्रानन्द स्मारक तथा तलवन के श्रद्धानन्द स्मारक के निर्माण के लिए।

५. प्रचारार्थ एक जीप खरीदने के लिए।

६, सभा की शिक्षा संस्थाओं के संचालन तथा संवर्धन के लिए।

वीरेन्द्र, सभा प्रधान

रामचन्द्र जावेद सभा मन्त्री

जगत के समाचार

आर्य समाज गुरदासपुर का वार्षिकोत्सव 25 मई से

गुरदासपुर—स्थानीय आर्य समाज (गुरुकुल) विभाग का वार्षिकोत्सव २५ मई से १ जून तक मनाया जा रहा है।

समाज के मन्त्री श्री वेद प्रकाशनन्दा ने उक्त जानकारी देते हुए बताया कि आर्य समाज, ग्रेटर कैलाश, दिल्ली के प्रधान श्री शान्ति प्रकाश जी के सुपुत्र श्री वीरेन्द्र ने उनकी समाज के लिए एक सुन्दर मंच बनवा दिया है तथा मन्दिर के भवन को रंग रोगन करवा दिया है। जिस पर अनुमानतः २१ सौ रुपए व्यय हुए।

आर्य समाज की अन्तरंग सभा ने एक प्रस्ताव पारित कर श्री वीरेन्द्र द्वारा किए गए उक्त पुण्य कार्य के लिए आभार व्यक्त किया।

—

आर्य पुत्री पाठशाला

तलवण्डी साबो जिला भटिण्डा के आर्य कन्या पाठशाला श्री सत्यपाल सिंह जी की प्रधानता में हवन यज्ञ के बाद जारी कर दी गई है। इस अवसर पर निम्न दान प्राप्त हुआ:—

श्रीमती सन्तोदेवी, धर्म पत्नी स्वर्गीय पं० चौ० आत्मासिंह जी ५०१)

श्रीमती प्रसन्नीदेवी जी माता श्री जनकराज जी—५०१ रुपये।

श्री गुरु बख्शसिंह जी माल पटवारी तलवण्डी साबो—१०१ रुपये।

श्री प्रेम कुमार जी (मैनेजर पाठशाला सुपुत्र श्री किशोरचन्द जी—१०१)

श्री जयनारायण जी वानप्रस्थी गुरुकुल भटिण्डा—११ रुपये।

श्री गुरबचनसिंह जी—११ रुपये।

—ओम्प्रकाश आर्य अधिष्ठाता

आर्य वानप्रस्थ आश्रम भटिण्डा

आर्य शिक्षण संस्थाओं की निर्देशिका



आर्य शिक्षण संस्था परिषद ने देश तथा विदेश में स्थित आर्य शिक्षण संस्थाओं का नवीनतम सूचनाओं सहित 'आर्य शिक्षण संस्था निर्देशिका १९७१' छपकर तैयार हो गई है। इसका मूल्य १२ रुपये रखा गया है।

यह निर्देशिका प्राप्त करने का पता है—

आर्य समाज, जियालाल आर्य केसर गंज अजमेर!

सामाजिक न्याय के नाम पर आरक्षण का संघर्ष कितना सही

(२ पृष्ठ का शेष)

संभव नहीं है अमुक पार्टी या नेता ही उनको न्याय दिला सकता है। यह राष्ट्रीय दृष्टि से बहुत खतरनाक भ्रम है और समाज के तमाम वर्गों के, खासकर हरिजनों और पिछड़े वर्गों के सामने यह स्पष्ट हो जाना चाहिए कि कमजोर वर्ग के विकास की समस्या राष्ट्र की समस्या है। [illegible] नहीं हो सकता, बल्कि इसका हल सारे समाज के मिले-जुले प्रयत्नों से ही संभव है।

परोपकारिणी यज्ञ समिति दिल्ली का चुनाव

परोपकारिणी यज्ञ समिति कृष्ण नगर दिल्ली के वार्षिक निर्वाचन में वर्ष ८१ में निम्न अधिकारी चुने किए गए—

संरक्षक—स्वामी ओमाश्रित

उपसंरक्षक—श्री सेवाराम जी

योजना मन्त्री—श्री कमल किशोर आर्य,

संयोजक—श्री कृष्णलाल जी, प्रचार मन्त्री—श्री गुरुदत्त आर्य, कोषाध्यक्ष एवम् कार्यालय मन्त्री—कुमारी सुषमा आर्या।

—

श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वर्ष 14—अंक 20, 5 ज्येष्ठ सम्वत् 2038, तदनुसार 17 मई 1981 दयानन्दाब्द 156 । वार्षिक शुल्क 15)

धर्म विमुख क्यों आज हो रहे आर्य धर्म के अभिमानी

एक साथ उच्चार करें हम ऐसा व्यवहार करें ।
एक मन्त्र का घोष करें कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ॥

★ आज नहीं प्राचीन समय से मन्त्र हमारा सथी ।
दूर दूर तक फैलायी थी आर्य धर्म की थाती ।
किन्तु चक्र जब घमा तब लक्ष्य हुआ था ओझल ।
जाग उठी है दृष्टि हमारी रही नहा अब बोझल ।
एक साथ उच्चार करें ।१।

★ वेद उपनिषद मिख त कथा कन्त्व्य हमारा
राम कथा गीना दिखलाती जो ग न्तव्य हम रा ।
मिल विश्व म दूर दूर तक सम्कृति के बिखरे अवशेष ।
करत प्र रित करो पुन तुम वितरित जागति का स देश ।
एक साथ उच्चार करें ।२।

खण्ड खण्ड क्यो आज हो रही प्रिय पावन भारत भमि ।
धर्म विमुख क्यो आज हो रहे आय धम के अभिमानी ।
काय हमे ऐसा करना जो धर्म द्रोह को रोके ।
सत्य सिद्ध हो वशज हम उन वेदो के ऋषियो के ।
एक साथ उच्चार करें ।३।

★ अखिल विश्व मे एक बार पुनि उन्नत ओ३म ध्वजा डोले ।
आखल विश्व मे एक बार पुनि वैदिक धम की जय बोल ।
वेदों के अनुशीलन से हम आविष्कार नित नय कर ।
धरती का मानव भारत का आराधन और नमन कर ।
एक साथ उच्चार करें ।४।



THE ARYA MARYADA JULLUNDUR

आओ गायें, उसका गान

सखाय आनिषीदत प्रनानाय प्रभायत।
शिशुं न यज्ञैः परिभूषत श्रिये ॥

(सखायः) मित्रो ! (आनिषीदत) आओ, बैठो (पुनानाय) उस पावन प्रभु के गीत गाओ (यज्ञैः) यज्ञों से (अपनी आत्मा को) श्रिये परिभूषत) शोभा के लिए ऐसे सजाओ (शिशुं न) जैसे साफ सुथरे बच्चे (को सजाते हैं)।

मैंने बच्चों की एक पत्रिका में पढ़ा था कि एक बार चीन के एक के एक भाग में कुछ सिपाही यात्रा कर रहे थे। एक दिन रात होने पर वे एक सूखे नाले के निकट ठहरे। रात को जब वे थक कर सो रहे थे तो अचानक उन्होने ये शब्द सुने सूखे नाले की तह से मुट्ठी भर पत्थर उठा लो। ऐसा करने पर तुम्हें दु:ख भी होंगे, सुख भी।" दोपहर को जब उन्होंने अपनी यात्रा स्थगित की तो उन्हें मालूम पड़ा कि वे पत्थर जो इन्होंने उठाए थे वे हीरे और लाल थे। तब उन्हे यह पता लगा कि जिस ने यह कहा था कि पत्थर उठा लो तुम्हें दु:ख भी होगा और सुख भी उस की बात बिल्कुल ठीक थी क्योंकि उन पत्थरों के उठाने से उन्हे सुख हुआ कि उन्हे रत्न मिले और दुःख हुआ कि उन्होने और अधिक क्यों न उठाए।

ठीक यही बात मित्रों की भी है। यदि आप ने धन, यश, मकान, भूमि और सोने चांदी का सचय कर भी लिया हो, तब भी आपने कुछ नही किया। अमेरिका की एक पत्रिका में एक पत्रकार ने हेनरी फोर्ड की मुलाकात का एक लम्बा बयान छपवाया था। उसमे हेनरीफोर्ड ने कहा था 'आप धन देकर मित्र नहीं पा सकते। मित्र पा सकते हो अपने को दे कर। वह मैंने नही किया। अगर मुझे फिर से जीवन शुरू करने का अवसर मिले तो पहला काम जो मैं करूंगा, वह होगा मित्रों की तलाश।" इस लिए इस मन्त्र मे कहा गया है कि द्वेष, ईर्ष्या और शत्रुता से जलते हुए लोगों, पुराने द्वेषों और वैरों को भुलाकर आओ एक हो जायें और मिल जुल कर बैठें। क्या करने ? उस प्रभु गुणों का गान करने जिसने तुम्हारा इन पशुओं, पक्षियों, नरपतियों एवं प्राणियों का निर्माण किया है। जब तक हम मित्र न बनेंगे तब तक उसका गान न गा सकेंगे। जब तक हम तक हम मित्र न बनेंगे तब तक उसका गान न गा सकेंगे। जब तक हम बुराईयों से ईर्ष्या, द्वेष मद, मत्सर आदि बुराईयों से घिरे रहेंगे, जबतक हम कुत्सित उपायों से जीवन बिता रहे होंगे, जब तक दूसरो को ठग कर दूसरों की विवशता से लाभ उठाकर हम अपने को बढ़ाने का प्रयास कर रहे होंगे तब तक हम प्रभु के साथ एक हो ही नही सकेंगे तब तक वह प्रभु हमसे दूर रहेगा क्योंकि हम गलत राह के राही हैं। यदि हम आनन्दमय बनना चाहते हैं तो हमें अपनी आत्मा से और उसमें विराजित अविनाशी प्रभु से सम्बन्ध जोड़ना होगा। हम यह भूल जाते हैं कि सृष्टि के चक्र को चलाने वाला प्रभु है। मैं नहीं हूं। कितना ही जोर लगाऊं मेरी इच्छा नहीं, उस की इच्छा पूरी होती है। समय आता है, हमें अपनी इच्छा को उसकी इच्छा के सामने झुकाना पड़ता है। ससार में महान् से महान् व्यक्ति हुये परन्तु समय आया जब उनके मंसूबे मिट्टी में मिल गये। खेल उसीका है, हम सब उस खिलाड़ी के हाथों शतरंज के हाथों शतरज के पासे हैं। इस लिए शत्रुता की जड़ अहंकार को मिटाना होगा। काम, क्रोध, मद, लोभ आदि नष्ट होंगे।

पारस्परिक मित्रता बढ़ेगी। तब हमें मालूम पड़ेगा हम सब दो नहीं एक प्रभु की सन्तान हैं। एक प्रभु के पुत्र हैं। हमारा सम्बन्ध बन्धु और मित्र का है। इस लिये आओ-आओ प्रभु की महिमा का गान करें। अपने ऊंचे स्वरों से आकाश पाताल को एक कर दें। उनमें प्रभु का प्यारा नाम भर दें।

अरे ओ जीवो ! अपने को प्रभु के हाथों में छोड़ दो—अपने आपको मिटा दो—अहंकार को भगा दो। यज्ञ के लिये अपने को समर्पित कर दो। यज्ञ क्या ? परोपकार अर्थात् दुःखियों एवं पीड़ितों की सेवा। प्रभु की गोद में आकर अपने को उसी प्रकार बना लो जिस प्रकार एक छोटा सा बच्चा सब प्रकार की द्वेष आदि की भावनाओं से शून्य, पवित्र होता है। यज्ञ निष्काम सरल हृदय सन्त की वेशभूषा है। यज्ञ व्यापक सर्वात्म-मित्रता का ही नाम हैं। यज्ञ बासामम मित्रता निर्वैरता का नाम है। विद्या में वृद्ध और निर्वैरता में बालक, यही वृत्ति यज्ञ वृत्ति है। यह तभी आ सकती है जब हम अहंकार को छोड़कर प्रभु के प्रति आत्म समर्पण कर कर दें।

एक आदमी पहाड़ पर घूम रहा था। तूफान आया। वह नीचे गिरा गिरते समय एक डाल हाथ आ गई। रात के समय कुछ दीखता न था। रात लम्बी थी। वह लटका-लटका थक गया। अब हड्डियां टूट जाने और मर जाने के डर से न तो वह डाल को छोड़ सकता था और बहुत अधिक थक जाने से डाल को पकड़े भी नहीं रह सकता था। अब दोनों हालत में मौत उसके खड़ी थी। अन्त में उसे जब कुछ न सूझा तो उसने भगवान का नाम लेकर डाल छोड़ दी। वह धरातल पर आ गया। धरातल उसके पांव से एक फुट नीचे था। 'मैं' उसे लटकाये हुये था। उसने अपने को उसके हाथ छोड़ा अब उसका उत्तरदायित्व था जैसे चाहे रखे। अतः उस पर भरोसा रख। अहंकार को मिटा। उसका हाथ हर समय तेरी रक्षा को बढ़ा है। संसार के लोगों के साथ मिल कर गा—

आई कहां से मधुर-मधुर सी,
धीमे-धीमे बढ़ती-बढ़ती होती
साकार-1
अब न सकूंगा, सोया था मैं,
खोया था मैं,
व्याकुल सा हूं, यहां नहीं है मेरा
प्रिय संसार।
हो उठती थी, यहां पास ही
मुझे लक्ष्य कर
उस वीणा की बरसम, बरसम,
अविरल, अविरल
मंजुल-मंजुल कोमल सी झनकार।
उसे न सुनकर, स्वपन समझ कर,
चपल, चपलतर इस शरीर में
इन प्राणों में, अपने मन में, चित्त
बुद्धि में
अहंकार में समझ रहा था सार।
अब निर्भय हूं कैसे ठहरूं, इस धरती
से, इस अम्बर से
इन नदियों से, रोम रोम से
ओ३म् ओ३म् की यह ध्वनि उठती
जिस में अनुपम प्यार।

—सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम. ए. एल. टी.

वेद सुधा

एक आदमी पहाड़ पर घूम रहा था। तूफान आया। वह नीचे। गिरा गिरते समय एक डाल हाथ आ गई। रात के समय कुछ दीखता न था। रात लम्बी थी। वह लटका-2 थक गया। अब हड्डियां टूट जाने और मर जाने के डर से न तो वह डाल को छोड़ सकता था और बहुत अधिक थक जाने से डाल को पकड़े भी नहीं रह सकता था। अब दोनों हालत में मौत उसके सामने खड़ी थी। अन्त में उसे जब कुछ न सूझा तो उसने भगवान का नाम लेकर डाल छोड़ दी।

मरते हुए भी भारत मां की जय के नारे

यह घटना उस समय की है जब हमारे देश भारत पर अंग्रेजों का शासन था। अंग्रेज भारतीयों का शोषण करके सब धन अपने देश को पहुचा रहे थे, भारतीय उनकी शोषण नीति से तंग आ चुके थे। जहां अंग्रेज साहबी ठाठ बाट से रहते थे वहां करोड़ों भारतीयों को दो जून भर-पेट रोटी भी नसीब नहीं थी। अंग्रेजों को भारत भूमि से निकालने को उनके अत्याचारों से तंग आकर भारतीयों ने ठानी और इसका परिणाम यह हुआ कि सन् १८५७ का विद्रोह हो गया। जिसमे हिन्दू मुस्लिम मराठे एक जुट होकर लड़े। यद्यपि इसमें कुछ देश द्रोहियों के कारण विद्रोह में उन्हें सफलता नही मिली। परन्तु अब अंग्रेज इस बात को जान गये कि उन्हें यहां चैन से नहीं बैठने देंगे।

इस विद्रोह के पश्चात् सन् १८८५ में इण्डियन नेशनल कांग्रेस की स्थापना हुई। धीरे-धीरे देश की उन्नति और स्वतन्त्रता की प्राप्ति उनका ध्येय बन गया। जब गांधी जी अफ्रीका से आए तो स्वतन्त्रता आंदोलन जोर जोर पकड़ गया। आजादी की लड़ाई के लिए आंदोलन होते रहते थे और सारे देश की आंखें इन वीर क्रांतिकारियों की ओर लगी रहती थी।

यह सन् १९२८ की बात है। क्रांतिकारियों ने आगरा में एक मकान ले रखा था उसमें इनकी गुप्त सभायें होती थी। वहीं पर आगे का कार्यक्रम तैयार किया जाता था। उस सभा में चन्द्रशेखर आजाद बता रहे थे कि पुलिस वाले और गुप्तचर विभाग के लोग उन्हें किस तरह सताते और यातनायें देते रहते हैं।

बाद में २१ मार्च १९३१ को सुखदेव व भगतसिंह को फांसी की सजा हुई तो राजगुरु को भी उनके साथ फांसी पर लटका दिया गया। मरते समय भी उनके मुंह से भारत माता की जय के नारे बोले जा रहे थे।

ओ३म्

आर्य मर्यादा

अग्ने नय सुपथा राये अस्मान्, विश्वानि देव वयुनानि विद्वान् ।
युयोध्यस्मज्जुहुराणमेनो, भूयिष्ठां ते नमउक्तिं विधेम ।।

ऋ० १-१८९-१

मनुष्य धन की प्राप्ति के लिए नीच साधनों का भी आश्रय लेता है अतः इस मन्त्र में प्रभु से प्रार्थना की है कि हे प्रभो ! हम कभी भी कुटिल पाप कर्मों में प्रवृत्त न हों। आप हम पर ऐसी कृपा करें। जिससे हमें उत्तम कर्मों के द्वारा धन की प्राप्ति हो जाए।

—सम्पादकीय—

आर्य प्र. नि. सभा पंजाब के सदस्य महानुभावों से एक निवेदन

19 अप्रैल को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की अन्तरंग सभा की एक बैठक जालन्धर में हुई थी, उसमें जहां और कई विषयो पर विचार किया गया था, वहां एक यह भी था कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक अधिवेशन कहां और कब किया जाये ? मैं दूसरी सभाओं के विषय में कुछ कहना नहीं चाहता, परन्तु अपनी सभा के विषय में यह अवश्य कहना चाहता हूं कि हमें इस बात पर गर्व है कि हम अपनी सभा के विधान के अनुसार वार्षिक अधिवेशन करते हैं और अपने अधिकारियों का चुनाव भी हर वर्ष करते हैं। एक दो बार सभा का अधिवेशन एक वर्ष में दो बार भी हुआ है। यह सब कुछ इसलिए किया जाता है कि अधिकारियों का सदस्य महानुभावों के साथ सम्पर्क बना रहे। जब कभी कोई ऐसा अधिवेशन होता है तो सदस्यों को न केवल अधिकारियों के साथ विचार विमर्श करने का अवसर मिल जाता है, अपितु सदस्य आपस में मिलकर भी कई बातों पर विचार कर लेते है। उसका यह परिणाम होता है कि संगठन को भी शक्ति मिलती है और सभा का प्रभाव भी बढ़ता है। मैं यह तो नहीं कह सकता कि वार्षिक अधिवेशन में हम जो भी निर्णय करते हैं, उन पर आगे चलकर उसी प्रकार कार्य भी होता है। मैंने देखा है और मुझे यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं कि कई बार कई महत्वपूर्ण निर्णय अधूरे रह जाते हैं और उन पर जो कुछ काम होना चाहिए वह नहीं होता। फिर भी मैं यह अवश्य अनुभव करता हूं कि सभा के अधिवेशन जब कभी होते हैं, उनसे हमें लाभ पहुंचता है। यही कारण है कि हम अपना वार्षिक अधिवेशन पिछले कई वर्षों से निश्चित करते चले आ रहे हैं। हमारे कई विरोधियों ने कई बार हमारे मार्ग में कई प्रकार की रुकावटें पैदा करने का भी प्रयत्न किया है, वे कचहरी में भी गए हैं और हमारे विरुद्ध कई बार निषेधाज्ञा लेने का भी प्रयत्न किया है। परन्तु आज तक उन्हें कभी सफलता नही मिली। यह आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के संगठन और उसके अनुशासन का ही प्रभाव है कि अभी तक हमारा पग आगे ही आगे बढ़ रहा है। इसके लिये मैं सभा के प्रतिनिधि महानुभावों को बधाई देता हूं, क्योंकि यह सब उनके ही आशीर्वाद का परिणाम हैं।

सभा की अन्तरंगसभा ने यह निश्चय किया है कि सभा का वार्षिक अधिवेशन ११-१२ जुलाई को इस बार पटियाला में होगा। जैसा कि प्रतिनिधि महानुभाव जानते हैं, हम अधिकतर जालन्धर से बाहर सभा का अधिवेशन करने का प्रयत्न करते हैं। १९७५ में हमारा अधिवेशन अम्बाला में हुआ था, उसके पश्चात् जालन्धर में हुआ था जालन्धर के बाद राजपुरा में हुआ था। राजपुरा के पश्चात् लुधियाना में हुआ था और लुधियाना के पश्चात् नवांशहर में हुआ था अब अगला अधिवेशन पटियाला में हो रहा है। आर्यसमाज पटियाला के अधिकारी महानुभावों ने विशेषकर उसके प्रधान जी और मन्त्री जी ने यह निमन्त्रण दिया है कि सभा का आगामी अधिवेशन पटियाला में किया जाए, जो कि अन्तरंगसभा ने स्वीकार कर लिया है। इसका सारा कार्यक्रम तो समय पर सब प्रतिनिधि महानुभावों को पहुंच जाएगा, परन्तु जिस बात की परन्तु जिस बात की ओर मैं उनका विशेष ध्यान दिलाना चाहता हूं, वह यह है कि उन्हें इस अधिवेशन में पंजाब की वर्तमान परिस्थितियों को सामने रखते हुए आर्यसमाज के प्रचार के विषय में विशेष विचार करना चाहिए। हमें यह न भूलना चाहिए कि आर्यसमाज केवल एक धार्मिक संस्था ही नहीं है, एक प्रकार से यह ही एक ऐसी संस्था है, जो इस समय पंजाब में हिन्दुओं के हितों की रक्षा कर रही है और आगे भी कर सकती है। आर्य समाज की यह विशेषता रही है कि उसने सदा ही अपने देशवासियों की सेवा निस्वार्थ भावना से की है। राजनैतिक दल प्रायः वोटों के लिए या मन्त्री पद के लिए या असैम्बली या लोकसभा की सदस्यता के लिए जनता की सेवा करते हैं, परन्तु आर्य समाज को कभी इस प्रकार का लालच नहीं हुआ। उसके सामने सदा एक ही लक्ष्य रहा हैं कि वह अपने देश और अपने समाज की सेवा कैसे कर सकता है ? इसलिए हमारा जो अधिवेशन पटियाला में हो रहा है, उसमें हमें दो बातों पर विशेष रूप से विचार करना चाहिए। एक यह कि पंजाब में आर्य समाज का प्रचार कैसे हो सकता है ? और दूसरा यह कि आर्यसमाज पंजाब की हिन्दू जनता की रक्षा कैसे कर सकती है ? हिन्दुओं में मैं अपने हरिजन भाईयों को भी सम्मिलित करता हू। उनकी ओर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। कोई दूसरी सस्था आज ऐसी नही है जो हरिजनों की ओर ध्यान दे रही हो। इसका एक परिणाम यह भी निकल रहा है कि हमारे हरिजन भाई हम से कुछ दूर जा रहे हैं। आज भी यदि उन्हें किसी धार्मिक सस्था में कुछ विश्वास है तो केवल आर्यसमाज में है। इसलिए हमारा और भी अधिक कर्त्तव्य हो जाता है कि हम उनकी तरफ भी ध्यान दें। उनकी जो समस्याएं हैं उन पर विचार करें और जहा तक सम्भव हो सके, उनका कोई समाधान निकालने का प्रयत्न करे।

हमारे सामने इस समय कुछ सामाजिक समस्याएं भी हैं। जिनकी ओर हमें विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। उनमे एक दहेज की प्रथा है, मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि इस क्षेत्र में हम बुरी तरह विफल रहे हैं। हमने इस समस्या का कोई समाधान ढूंढने की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया। आर्य समाज का पुराना इतिहास साक्षी है कि आर्यसमाज की सफलता का एक कारण यह भी था कि वह दूसरों को कोई आदेश देने से पहले स्वयं कुछ कर के दिखाया करती थी। कोई कारण नही कि जहां तक दहेज की प्रथा का सम्बन्ध है आर्य समाजी क्यों न यह घोषणा करें कि वे न किसी से दहेज लेंगे और न किसी को दहेज देंगे इसी के साथ यह भी आवश्यक है कि विवाह सस्कार में कम से कम व्यय किया जाए। कुछ समय हुआ, जब हमने यह फैसला किया था कि विवाह सस्कार आर्य समाज मन्दिरों में करवाये जायें परन्तु बहुत कम व्यक्तियों ने इसे क्रियान्वित किया है। हम यदि दहेज और विवाह इन दोनो पर जोर दें तो हो सकता है कि हिन्दू समाज मे आर्य समाज का सम्मान और उसकी प्रतिष्ठा बढ़ जाए।

एक और दिशा की तरफ मैं आर्यजनता का ध्यान दिलाना चाहता हू। वह यह है कि हमने हिन्दी को प्रोत्साहन देने के लिए कोई विशेष पग नही उठाया। मैं तो यह भी समझता हू कि अब वह समय भी आ गया है कि यदि आर्यसमाज को कोई सक्रिय पग उठाना पडे तो उसके लिए भी हम तैयार रहना चाहिए। हम बार-बार हिन्दी का शोर तो मचाते हैं, लेकिन उसकी उन्नति और प्रगति के लिए कुछ करते-कराते नही हैं। इस लिए इस ओर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त और भी कई समस्यायें हैं, जिनकी तरफ आर्यसमाज को ध्यान देना चाहिए। मैं प्रतिनिधि महानुभावो से यह निवेदन करूंगा कि यदि वह अपने सुझाव या वह समस्याएं जो आर्यसमाज के सामने हैं, उनके विषय में हमें अपनी सम्मति सक्षिप्त रूप मे लिख कर भेज दें तो हम वार्षिक अधिवेशन पर पर विचार कर लेंगे। मेरी यह हार्दिक इच्छा है कि हमारा वार्षिक अधिवेशन केवल चुनाव करने या सभी का बजट स्वीकार करने के लिए ही न रहे अपितु उसमे इन गम्भीर समस्याओं पर विचार किया जाए जो हमारे देश और समाज के सामने है पटियाला में होने वाले अधिवेशन में हमें इन सब बातों पर विचार करना चाहिए।

जैसा कि प्रत्येक अधिवेशन में होता है। सभा के अधिकारियों का चुनाव भी होता है। इस ओर भी विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है। मैं पहले भी कई बार कह चुका हू और अब फिर निवेदन करना चाहता हूं अब हमें कुछ ऐसे नवयुवक तैयार करने चाहिए, जो आर्य समाज की सेवा का व्रत लें और उस के कार्यभार को सम्भालें। यदि हमने नवयुवक तैयार न किए तो आर्यसमाज का भविष्य बहुत ही अधिक धूमिल हो जाएगा। इसका यह अभिप्राय नही कि जो पुराने सेवक हैं उन्हे एक तरफ रख दिया जाए। उनकी भी आवश्यकता है, परन्तु उसी के साथ नवयुवकों की भी आवश्यकता है। इस लिए कोई ऐसा ढंग निकालना चाहिए कि नवयुवक आगे आ सकें। और वह धीरे-धीरे सारा कार्यभार सम्भाल लें। मैं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सब आर्यसमाजों के अधिकारी महानुभावों से निवेदन करूंगा कि वे सभा में अपने प्रतिनिधि भेजते समय इस बात का ध्यान अवश्य रखें कि अधिक से अधिक नवयुवक प्रतिनिधि के रूप में आ सकें।

पटियाला में होने वाले अधिवेशन को मैं विशेष महत्व देता हू। इसी लिए मैंने ये कुछ सुझाव प्रतिनिधि महानुभावों के सामने रखे है। आशा है वे इन पर गम्भीरतापूर्वक विचार करेंगे।

—वीरेन्द्र

सुपरिटेंडेंट—कौन सी सेहत ?

लाजपत—मानसिक सेहत मन का आन्तरिक स्वास्थ्य ।

सुपरिटेंडेंट—मानसिक सेहत, मैंने जेल की नियमावली अच्छी तरह पढ़ी हुई है, परन्तु उसमें मानसिक सेहत का जिक्र नहीं है मैं अपनी तसल्ली करना चाहता हूं कि आपका स्वास्थ्य गिरा तो नहीं. कृपा करके आप इस मशीन पर खड़े हो जाओ ताकि मैं आपका वजन तोल सकूं ।

लाजपत—मेरा वजन बिल्कुल ठीक है, आप तकलीफ न करो।

सुपरिटेंडेंट— फिर आपको कोई तकलीफ तो नही ?

लाजपत—मुझे पखे व कुली का बड़ा आराम था क्योंकि मुझे अनिद्रा की बीमारी है, कभी दिन के समय मेरी आंख लग जाती थी, पर जब से आपने कुली व पखा हटा लिया है मैं दिन के समय सो नहीं सकता ।

सुपरिटेंडेंट—पखा, कुली आपकी जरूरत नही समझी, यह ऐश्वर्य है, इसलिए सरकार पखे व कुली का खर्च नही दे सकती ।

लाजपत—यह गलत है कि पंखा व कुली की जरूरत नही, खैर, अगर सरकार पखे व कुली का खर्च बरदाश्त नही करती तो न सही, कितने अफसोस की बात है कि सरकार ने नाई का बिल देने से इन्कार कर दिया ।

सुपरिटेंडेंट—आपके नाई का खर्चा बहुत ज्यादा था उसने एक महीने के बिल में तीस दिन की हजामत लगाई ।

लाजपत—तो इसमे गलत क्या था ।

सुपरिटेंडेंट—प्रति रोज हजामत करवाना दिल्लगी है, क्या आप अपने घर पर हर रोज हजामत करवाते थे ?

लाजपत—क्रोध में—सुपरिटेंडेंट साहब आपका क्या मतलब है कि रोज हजामत कराने की अय्याशी के वास्ते मे जेल में पड़ा हू ? हां, यह अधिकार तो केवल आपको है, आपका पहला प्रश्न कि कैदी की सेहत तो ठीक है उत्तर हां में मिल जाय, दूसरा कैदी को किसी वस्तु की जरूरत तो नही, न मैं मिल जाए तो आप समझते है कि आपने मेरे तरफ से अपना कर्त्तव्य पूरा कर लिया है, आपका बड़ा अहसान होगा, कृपा करके मेरी आवश्यकताओं की ओर ध्यान दो ।

सुपरिटेंडेंट—जेब में से कागज निकालकर, यह आपका पत्र है जो आपने सैक्रेटरी आफ स्टेट को इगलिश व हिन्दुस्तानी समाचार पढने और एक पजाबी नौकर रखने की आज्ञा दी जाए, आपके लिए एक सिक्ख नौकर रख दिया गया है, परन्तु समाचार पत्र पढ़ने की आज्ञा नही दी जा सकती ।

लाला लाजपतराय के जीवन पर आधारित एक प्रसिद्ध नाटक

शेरे पंजाब लाला लाजपतराय

ले०—श्री बी० एस० खोसला

(गतांक से आगे)

आपका क्या मतलब है, कि रोज हजामत कराने की अय्याशी के वास्ते में जेल में पड़ा हूं ? हां, यह अधिकार तो केवल आपको है, आपका पहला प्रश्न कि कैदी की सेहत तो ठीक है उत्तर हां में मिल जाय, दूसरा कैदी को किसी वस्तु की जरूरत तो नहीं, न में मिल जाए तो आप समझते हैं कि आपने मेरे तरफ से अपना कर्त्तव्य पूरा कर लिया है ।

लाजपत—परन्तु आप मुझे मेरा पत्र वापिस क्यों करते हो ?

सुपरिटेंडेंट—क्योंकि इस पत्र में बेकायदगी है, आप भारत मन्त्री लन्दन को सीधा पत्र नहीं भेज सकते ।

लाजपत—मैंने भारत मन्त्री लन्दन को सीधा पत्र नहीं भेजा है. मैंने तो आप के हाथ में पकड़ाया हैं ।

सुपरिटेंडेंट—पर आपकी दरखास्त पंजाब के रास्ते जाना चाहिए ।

लाजपत—ऊंची, सुपरिटेंडेंट साहिब यह बात मेरी समझ से बाहर है कि मैं चौबीस घण्टे का कैदी जिसकी प्रत्येक हरकत आपकी निगरानी में हैं, जिसकी रोजाना सैर पर भी आपका पहरा है, मेरे पास क्या वसीला है कि पत्र को पंजाब सरकार के रास्ते भेजूं, इससे साफ स्पष्ट है कि आपकी सरकार मेरी आवश्यक मांगो पर ध्यान नही देना चाहती ।

सुपरिटेंडेंट—यह गलत हैं, सरकार ने आपकी आवश्यकताओं पर ध्यान दिया है, यह सरकार का उत्तर है, जेब मे से एक पर्ची निकाल कर लाला लाजपतराय के हाथ में देता है ।

लाजपतराय—एक दृष्टि से, यह कोई जवाब है, पढ़ते हुये पहले अपनी इच्छा से समाचार पत्र पढ़ने की आज्ञा नही, दूसरा पुलिस की निगरानी नही घटाई जा सकती, तीसरा डफरिन किले से बाहर सैर की आज्ञा नही मिल सकती, चौथा अपने घर से नौकर को नहीं मगवा सके, पाचवा कैदी के बरखिलाफ जो इलजाम बताया जा चुका है, इसके अतिरिक्त हुजूर शहनशाह हिन्द के राज के बदअमनी को रोकने के लिए मुझे नजरबन्द किया गया है, मुझे अभी तक नहीं बताया गया कि मुझे नजरबन्द क्यों किया गया है, इस इलजाम की नीव क्या है मैं अपने पत्र में लिख चुका हूं कि लाहौर व रावलपिंडी के फसादों में मेरा कोई हाथ नहीं, मैंने कभी भी अपने भाषण में लोगों को भड़काया नहीं, मैंने कभी शहनशाह हिन्द की फौजों में बगावत फैलाने की कोशिश नहीं की और जब कभी किसी सरकारी कार्यवाही की विरोधता की है, कानून और विधान के अन्दर रहकर ही की है, फिर मुझे कैद करने का कारण ?

सुपरिटेंडेंट—तुम्हें पता है कि तुम्हें १८३८ के रेगूलेशन नम्बर ३ के अन्तर्गत नजरबन्द किया गया है ।

लाजपत—सुपरिटेंडेंट साहिब मैं कानून को समझता हूं, मेरी रग में १८१८ का रेगूलेशन नम्बर तीन गैर कानूनी है ।

सुपरिटेंडेंट—गैर कानूनी है ? यह किस तरह हो सकता है ? मैं सरकार का अपमान सुनने के लिए तैयार नहीं। उठ कर बिना साहब सलाम के सीढ़ियां उतर जाता है, नीचे सार्जेंट से कुछ बातें कर फाटक से बाहर चला जाता है लाला लाजपतराय पुस्तक पढ़ने की कोशिश करते हैं, जब सफल नहीं होते तो बरामदे में आगे पीछे टहलने लगते हैं फिर कुछ कागज व कलम लेकर लेकर लिखने लग जाते हैं, उनका सिक्ख नौकर अन्दर से आता हैं ।

सिक्ख—लाला जी खाना खाओगे ?

लाजपत—अभी नही ।

सिक्ख—देर हो गई है जो मुझ से थोड़ा बहुत बन पाया है परोस देता हू ।

लाजपत—अभी मेरी तबीयत नहीं है ।

सिक्ख पीछे हटकर खड़ा हो जाता हैं, लाला जी का ख्याल है कि वह चला गया है, वह वह पुर्जा जो सुपरिटेंडेंट ने दिया था, ध्यान से पढ़ते हैं अपनी इच्छा से समाचार पत्र पढ़ने की आज्ञा नहीं दी जा सकती, पढ़ने से हटकर समझ नहीं आती कि क्यों अंग्रेज सरकार मुझे इगलिश के समाचार पत्र पढ़ने से रोकती है।

सिक्ख—अंग्रेज बड़ा भोला बादशाह है, अंग्रेज लिखते समय यह नहीं सोचते कि उनकी लिखत कैदी भी पढ़ सकते हैं । और उनसे सीधी तीरन्दाजी की आजमाइश करने के लिए अंग्रेजों की ही निशाना बनाएंगे ।

लाजपत—सरदार जी आपने बड़े मार्के की बात कही है' शायर ने भी कहा है, कस ना मासंबत फले मीर बन्दाबी—उसने तीर अन्दाजी क्या सीखी जिसने अपना हाथ अपने उस्ताद पर न आजमाया ।

सिक्ख—यही शेर मेरे दिमाग में घूम रहा था ।

लाजपत—यह शेर मुझे प्यारा लगता है, अच्छा जाओ फिर खाना ला ही दो ।

सिक्ख जाता है और लाला लाजपतराय उन कागजों को जो अभी लिखे थे पढ़ने लग जाता है, सिक्ख थाली लाकर मेज पर रखता है, दूसरा नौकर कुर्सी लगाता है और मोमबत्तियां जला देता है; लाला जी मेज पर बैठ जाते है ।

लाजपत—क्या बनाया है सरदार जी ?

सिक्ख—दाल है साथ में आलूओं की सब्जी है ।

लाजपत—वाह-वाह- कई महीनों से मैं अपने पंजाबी खाने के लिये तरस रहा था, देखते ही दाल में नमक गहरा है ।

सिक्ख—यह तो मेरे से बड़ी भूल हुई है ।

लाजपत—आलू तो बिल्कुल कच्चे हैं ।

सिक्ख—हाथ जोड़कर, मैं बहुत शर्मिन्दा हू ।

लाजपत—रोटी सरदार जी जली हुई है ।

सिक्ख—मैं माफी मांगता हूं, मैं रसोईया नहीं हू, मैं आपके दर्शनों का अभिलाषी था आपके पास आने का कोई और रास्ता नही था, इसलिए मुझे रसोईये का पाखण्ड करना पड़ा अब मेरी इच्छा पूरी हो गई हैं और कल प्रातः मैं चला जाऊंगा ।

लाजपत—आपको नौकरी से जवाब देने की मुझे खुशी नही ।

सिक्ख—आज आप बहुत उदास मालूम होते हैं, इन कागजों में क्या लिखा है ।

लाजपत—यह मेरी आपबीती है ।

सिक्ख—मुझे सुनाओगे ।

लाजपत—पढ़ते हुये, तुम्हारे साथ जो व्यवहार हो रहा है विचित्र नहीं आज से हजारों वर्ष पहले स्त्रियां व पुरुष इससे भी कहीं ज्यादा दुःख सह चुके हैं, सुकरात जैसों को भी नेकी के बदले काफी तकलीफें दिये गये, तुम में इतनी बुजदिली कहां से आ गई, स्वार्थी दुनिया का दस्तूर है हरेक अपने लाभ के लिए दूसरे को दबाता है अंग्रेज कोई फरिश्ते नहीं जो तुमसे इन्साफ करें, दुनिया के रंग न्यारे हैं

सिक्ख—पिछली बात आपने रुपए की कही है, मगर इसकी पल्ले बांध लो तो मन कभी भी डोलेगा नहीं. हमें गुरुओं का आदेश है कि सदा चढ़ती कला में रहना, मैं प्रातः अन्धेरे में ही चला जाऊंगा मगर आप उदासी छोड़कर मुझे विदा करें, तो मुझे चैन प्राप्त होगा, लाला लाजपतराय कागजों को मोमबत्ती से जला देते हैं, मुस्कराते हुए सिक्ख की ओर देखते हैं, उसके चेहरे पर चैन और प्रसन्नता है । (क्रमशः)

गुरुकुल कांगड़ी के दीक्षान्त-समारोह पर

साथियो

मैं कहां तक गुरुकुल की उपलब्धियों विफलताओं अथवा सपनों का बखान करूं ? पंजाबी थियेटर के संस्थापक श्री गुरशरण सिंह औलखा ने शेरे पंजाब ला लाजपतराय पर पंजाबी में एक एकांकी नाटक लिखा। उसका हिन्दी अनुवाद गुरुकुल विद्यालय के अध्यापकों ने किया है, जो शृंखलाबद्ध रूप से आर्य मर्यादा में प्रकाशित हो रहा है। सर्वश्री जितेन्द्र और दीनानाथ के नेतृत्व में वार्षिक परीक्षाओं के पश्चात् गुरुकुल विद्यालय के ब्रह्मचारी इस नाटक को खेलने जा रहे हैं। इसी प्रकार हम सचेष्ट हैं कि वेद महाविद्यालय का संस्कृत विभाग अपने विद्यार्थियों द्वारा कोई न कोई संस्कृत नाटक तैयार करावे। हम यह भी चाहते हैं कि विद्यालय में संगीत की भी कक्षाएं जारी हों। जिससे कि ब्रह्मचारी वेद मंत्रों श्लोकों इत्यादि के सस्वर पाठ करने में कौशल्य प्राप्त कर सकें और हम उन्हें टी० वी० रेडियो इत्यादि के माध्यम से दूर-दराज तक प्रसारित करें।

हम यह भी चाहेंगे कि गुरुकुल विद्यालय के ब्रह्मचारियों को किसी न किसी हस्तकला कौशल में पर्याप्त दक्षता प्राप्त करने का अवसर मिले ताकि यहां से उत्तीर्ण होने के पश्चात् वह सरकारी नौकरियों की तलाश में इधर उधर न भटकें। ऋषि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में वेद वेदांग वर्णित भूगोल विज्ञान, ज्योतिष इत्यादि की शिक्षा के अतिरिक्त गुरुकुल की पाठ विधि में आयुर्वेद गान्धर्व वेद धनुर्वेद अथर्ववेद के प्रशिक्षण का भी प्रस्ताव किया है। आज जब बैंकों इत्यादि से कर्जे आसानी से मिल सकते हैं कोई वजह नहीं हमारे ब्रह्मचारी नौकरी की खातिर दर दर भटकें। इस कार्य क्रम को ठोस स्वरूप देने हेतु हमने खादी ग्रामोद्योग से सम्पर्क स्थापित किया है आशा है कि आगामी वर्ष में इस दिशा में हम सफलता प्राप्त होगी और विद्यालय में शिल्पकला के प्रशिक्षण का सुचारू प्रबन्ध हो जाएगा।

अब मैं युवक साथियों को सम्बोधित करना चाहूंगा।

आर्य युवको

आप सब जानते हैं १९८२ में नई दिल्ली में एशियाई खेलें होने जा रही हैं। और इनके बाद १९८४ में लास एंजिल्स में ओलम्पिक खेलें होंगी। मैं जानना चाहूंगा आप उनमें विजयश्री प्राप्त करने के लिये क्या तैयारी कर रहे हैं ? जैसा मैंने अनेक बार कहा है, ओलम्पिक की खेलों में लगभग ६०० पदक वितरित होते हैं, भारत के हिस्से में कितने आते हैं ? जनसंख्या के अनुपात से हम भारतवासी विश्व का एक सातवां भाग हैं। हमें ६०० में से ३० पदक जीतने चाहिए। यदि हम ऐसा नहीं कर पाते तो क्यों ? क्या कभी आपने इस पर विचार किया है ?

जैसे मैं डा० सुरेशचन्द्र शास्त्री कहा करते हैं कि पुस्तक परीक्षा में तो लच्छाक कुपाक खिलाक अथवा खुराक प्राप्त करके प्रथम श्रेणी उपलब्ध की जा सकती है परन्तु क्रीड़ा के क्षेत्र में ऐसा नहीं हो पाएगा। यहां तो निरन्तर साधना अटूट तप और अखण्ड ब्रह्मचर्य की आवश्यकता होगी। क्या आप यह कीमत देने को तैयार हैं ? आइए आज ध्यानचन्द का स्मरण करें जिसने भारत की हाकी की टीम का कुशल नेतृत्व करके ५० वर्ष पहले विश्व खेल कूद जगत में भारत माता का मुख उज्ज्वल किया था। आइये उस के पदचिन्हों पर चलते हुए एशियाई और ओलम्पिक खेलों में भारत के गौरव के लिए एवं अपने और अपने माता पिता के सम्मान के लिये स्वर्ण पदकों की मालाएं अर्जित करने का संकल्प लें। हां इस यज्ञ में जहां आपकी साधना और तप की

कबड्डी प्रतियोगिता के लिए चुनी गई है।

साथियो

आज देश और समाज में सर्वत्र विघटनकारी शक्तियों का प्रादुर्भाव हो रहा है। एक राष्ट्र एक विधान एक निशान की भावना धूमिल हो रही है। भारत में चिराग लेकर भी ढूंढिए तो भारतीय या हिन्दुस्तानी जन मुश्किल से मिलेगा। यहां कोई पंजाबी है तो कोई बंगाली कोई असमिया है तो कोई मारवाड़ी कोई मराठा है तो कोई गुजराती कोई ब्राह्मण है तो शैव या वैष्णव कोई सिख या जाट है तो कोई हरिजन या अहीर शिया या सुन्नी। लेकिन हिन्दुस्तानी आज कहां है ? आज देश में प्रान्तीयता और उप जातिवाद की बीमारी घुन की तरह लगी हुई हैं। ऋषि दयानन्द ने हमें राष्ट्र प्रेम का मन्त्र दिया था। दयानन्द के सैनिक आर्य जन ही इस बीमारी का दृढ़ता से मुकाबला कर सकते हैं।

कुलपति श्री बलभद्र कुमारजी द्वारा सम्बोधन

आहुतियां पड़ेंगी वहां हम वहां का धन और सुव्यवस्था की सामग्री जुटानी होगी गुरुकुल का वर्तमान प्रशासन इस दिशा में अपनी जिम्मेदारी के प्रति पूर्ण सजग है। हम यह स्वप्न लेते हैं कि आगामी एशियाई खेलों में गुरुकुल के स्नातक अथवा ब्रह्मचारी अपना कला कौशल दिखाकर कुल माता का नाम उज्ज्वल करेंगे। इस हेतु हमने गुरुकुल में शारीरिक शिक्षा के निदेशक का पद सृजन करने का निश्चय

जिला जब सहारनपुर के निर्णय दिनांक २ जुलाई के बाद जब मैं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले से मिला तो उन्होंने मुझे माल्यार्पण करते हुए सर्वच्छन्दम का मन्त्र दिया था। मेरा दृढ़ मत है कि इस संकट की घड़ी में जब हम अपने आप को आन्तरिक और बाहरी आसुरी शक्तियों से घिरा हुआ पाते हैं हम सबका हित इसी मन्त्र का स्वीकार करने में है।

वहां जमीन में गढ़ा हुआ एक हवन कुण्ड प्राप्त हुआ जहां अनुमानत स्वामी श्रद्धानन्द यज्ञ किया करते थे। 5 एवं 6 मार्च को सभी शिविरवासियों ने वहां यज्ञ किया। रात्रि को कांगड़ी ग्रामवासी डेढ़ बजे तक भजन, प्रवचन एवं स्वामी श्रद्धानन्द के संस्मरण सुना करते थे।

किया है। यहां के विद्यार्थियों का डील डौल बहुत सुन्दर है उनमें अदम्य उत्साह है। पौरुष है। कमी है केवल पथ प्रदर्शन की और वैज्ञानिक तौर पर प्रशिक्षण की। इसे हम दूर करने जा रहे हैं।

इस अवसर पर मैं देहरादून कन्या गुरुकुल विद्यालंकार की छात्रा कु० इन्दिरा नेगी को उसकी उपलब्धि पर साधुवाद कहना चाहूंगा। इसने अखिल भारतीय प्रतियोगिता में नवीन मापदण्ड स्थापित किया और अब अन्तर्राष्ट्रीय

ब्रह्मचारियों में राष्ट्र प्रेम और एकता की भावना जाग्रत करने हेतु हमने १५ अगस्त को स्वतन्त्रता दिवस के अवसर पर विद्यालय के ब्रह्मचारियों को निम्नवत ४ सदनों में विभक्त किया और उन्हें ध्वज प्रदान किये।

१ वीर हकीकत सदन २ शहीद चन्द्रशेखर आजाद सदन ३ शहीद भगत सिंह सदन, ४ शहीद रामप्रसाद बिस्मिल सदन

इसी प्रसंग में हमने यह भी निश्चय किया है कि हम वीरों शहीदों की पुण्य तिथियां और विभिन्न आर्य पर्व यथेष्ट श्रद्धा और उल्लास से मनाया करेंगे।

इसी शृंखला में दिसम्बर को शिक्षक दिवस मनाया गया इसी प्रकार बाल दिवस महिला दिवस रामदेव दिवस, शहीद लेखराम दिवस गुरुकुल स्थापना दिवस आर्य समाज स्थापना दिवस श्रद्धानन्द सप्ताह और ऋषि निर्वाण उत्सव इत्यादि भी सोत्साह मनाये गये।

परम्परानुसार इस वर्ष भी वसन्त पंचमी के अवसर पर पुण्य भूमि में सोल्लास सहभोज एवं खेल कूद के कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

समापन किस्त—4

ऋषि बोधोत्सव भी पुण्य भूमि में मनाया गया। ४ मार्च को कांगड़ी ग्राम में यज्ञ हवन किया गया। इस अवसर पर कांगड़ी ग्राम के श्री अर्जुन सिंह नामक १०२ वर्षीय वृद्ध सज्जन ने जो कि स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ काम करते थे अपने संस्मरण सुनाते हुए कहा कि स्वामी जी को पेड़ों से अत्यन्त प्रेम था लेकिन अब ये निर्दयता पूर्वक काटे जा रहे हैं। इस पर विज्ञान महाविद्यालय के वनस्पति विभाग के अध्यक्ष डा० विजय शंकर ने संकल्प किया कि आगामी वर्षा ऋतु में वे इस ग्राम में ७५० पेड़ लगाएंगे। ७५० इसलिए कि कांगड़ी ग्राम की जनसंख्या ७५० है। इसी प्रकार गांव की सफाई चिकित्सा व्यवस्था या विद्यालय आदि के प्रबन्ध के लिए जिलाधीश बिजनौर से सम्पर्क स्थापित किया गया जिन्होंने कि इन कार्यों के लिए अपने सम्बन्धित अधिकारियों को आदेश दे दिए हैं। मैं जिलाधीश बिजनौर के प्रति इस सहयोग के लिए अपना आभार प्रकट करना चाहूंगा।

भाषण शृंखला में स्वामी श्रद्धानन्द की जीवनी एवं उनके आदर्शों पर प्रकाश डाला गया। इस अवसर पर उपस्थित सभी युवकों विद्यार्थियों ने प्रतिज्ञा की कि वह स्वामी दयानन्द द्वारा दिये गए निर्देशों के अनुसार २५ वर्ष की आयु से पूर्व विवाह नहीं करेंगे।

तत्पश्चात यह कार्यक्रम गुरुकुल कांगड़ी के पुरातन मूल विद्यालय के भवन में साधना शिविर के रूप में परिवर्तित होकर दिनांक ६-३-८१ तक चला। वहां जमीन में गढ़ा हुआ एक हवन कुण्ड प्राप्त हुआ जहां अनुमानत स्वामी श्रद्धानन्द यज्ञ किया करते थे। ५ एवं ६ मार्च को सभी शिविरवासियों ने वहां यज्ञ किया। रात्रि को कांगड़ी ग्रामवासी डेढ़ बजे तक भजन प्रवचन एवं स्वामी श्रद्धानन्द के संस्मरण सुना करते थे।

इस साधना शिविर में आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री सरदारी लाल वर्मा ने भी दो दिन बिताए। आयुर्वेद कालेज गुरुकुल कांगड़ी के प्रिंसिपल

(शेष पृष्ठ ६ पर)

आर्यसमाज पर छाया निराशा का घटाटोप छटकर रहेगा

—यशपाल आर्य बन्धु

आर्यसमाज मे व्याप्त शिथिलता का इतनी प्रबलता से प्रचार किया जा रहा है कि कर्मण्यता एवं जागरूकता बेचारी दुम दबाये बैठी है। इतनी शिथिलता वास्तव में है नहीं कि जितनी प्रसारित एवं प्रचारित की जा रही है। शिथिलता के इस बेसुरे आलाप ने निराशा की भद्दी भावनाओ को जगा दिया है पर क्या वस्तुस्थिति इतनी अधिक गंभीरहै ?

उन्नीसवी शताब्दी का सर्वप्रमुख तथा प्रगतिशील जन आन्दोलन आर्य समाज अपनी उन्नति के विभिन्न सोपानों को पार करता हुआ अब थका सा विश्रान्ति खोज रहा है। इसमे सन्देह नही कि इस क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास सर्वतोमुखी क्रान्ति के अभियान का समुज्ज्वल इतिहास है। इसकी कर्मण्यता तथा प्रगतिशीलता की जमाने भर पर धाक थी। किन्तु दुर्भाग्य समय के फेर से काल के प्रवाह से यह आन्दोलन निराशा के पंक मे आकण्ठ डूब रहा है। जिस समाज को राष्ट का पुरोहित बनकर जगना और जगाना था वह स्वय ही आलस्य प्रमाद एव अकर्मण्यता की गहरी निद्रा के वशीभूत हो रहा है। आन्तरिक कलह ने आशा की रही सही किरण को भी तिरोहित कर दिया है। सर्वत्र निराशा का वातावरण है। आज सबत्र यही चर्चा है कि— बाग की रगीनियो को क्या हुआ बागबानो से यह पूछना चाहिए। पर स्थिति यह है कि—

समय दे रहा है चुनोती पे चुनौतिया
देखता हू पिये जा रहे हैं लोग।
कैसा पहरा है चौकीदारो का
बाग बरबाद किये जा रहे है लोग।
बागबानो के रहते बाग बरबाद हो

कैसी विडम्बना है यहा पर क्या करे—

रहबर ही रस्ता भूल गये तकदीर के अपने क्या कहिए। पर क्या रहबरो को कोसने भर से काम चल सकेगा ? नहीं कदापि नही।

आज प्रत्येक व्यक्ति आर्य समाज के शैथिल्य एव निराशा भरे वातावरण को भर पेट कोस रहा है पर उसको दूर करने को न तो स्वय ही कोई प्रयत्न करता है एव न ही कोई ठोस उपाय ही सुझा रहा है। परिणाम स्वरूप लोग हताश एव निराश होते चले जा रहे हैं। आज आर्य समाज मे व्याप्त शिथिलता का इतनी प्रबलता से प्रचार किया जा रहा है कि कर्मण्यता एव जागरूकता बेचारी दुम दबाये बैठी है। इतनी शिथिलता वास्तव मे है नही कि जितनी प्रसारित एव प्रचारित की जा रही है। शिथिलता के इस बेसुरे आलाप ने निराशा की भद्दी भावनाओं को जगा दिया है। पर क्या वस्तु स्थिति इतनी अधिक गम्भीर है यदि निष्पक्ष भाव से देखा जाए तो बात ऐसी नही जैसी बताई जा रही है। यह बात ठीक है कि मन्दिरो एव घरों से निकल कर आर्य समाज दूसरी ओर विद्वानो के मस्तिष्कों मे एव विश्वविद्यालयो के शोधार्थियों मे घर जमाता दिखाई दे रहा है। सुदूर विदेशो में आर्य समाज विश्वविद्यालयो मे शोध का विषय बन रहा है। मन्दिरो मे अथवा सत्सगो मे चन्द एक बूढ़ो को बैठा देखकर लोग कह उठते हैं कि आर्य समाज मन्दिरो एव साप्ताहिक अधिवेशनो तक ही सीमित है। यदि हम ऐसा समझते हैं तो निश्चय ही भूल पर हैं। यह आर्य समाज का यथार्थ मूल्याकन नहीं। इसका तात्पर्य यह नही कि हम साप्ताहिक अधिवेशनो मे उपस्थिति की न्यूनता का कोई औचित्य सिद्ध कर रहे हैं। हमारा तो यह कहना है कि आर्य समाज साप्ताहिक सत्सगो का नाम नही। न ही इसके आकने का केवल मात्र यही एक साधन है। आर्य समाज को आकने के लिए इसके सभी पहलुओ पर विचार करना आवश्यक है। इतना सब कुछ होते हुए भी हम यह मानते हैं कि साप्ताहिक अधिवेशन इसकी शक्ति का सबसे बड़ा स्रोत है। उनकी उपेक्षा नहीं की जा सकती। अत हमे विचारना होगा कि हमारे साप्ताहिक सत्सगो मे उपस्थिति दिन प्रतिदिन गिरती क्यो जा रही है। पर इससे भी पूर्व जिस बात की आवश्यकता है उस ओर ध्यान दिलाना आवश्यक समझते हैं।

आज आर्य समाज के सम्मुख सबसे प्रमुख समस्या हमारी दृष्टि से निराशा का वातावरण है। हमने निराशा का घुटनभरा ऐसा दूषित वातावरण बना दिया है कि आशा की कोई किरण ही दिखाई नही देती। निराशा के गहन अन्धकार में आर्यजन परमुखापेक्षी से विचर रहे हैं। आज सर्वत्र अन्धकार को कोसा जा रहा है। बिना ये सोचे विचारे कि केवल कोसने से ही अन्धकार क्या दूर हो सकता है। आज प्रत्येक व्यक्ति अन्धकार को कोस रहा है और समझता है कि इस प्रकार अन्धकार दूर हो जाएगा। पर क्या कभी कोसने से अन्धकार कभी दूर हुआ है ? यदि हम अन्धकार का भगाना चाहते हैं तो हमे अन्धकार को कोसने की बजाय एक नन्हा सा दीपक प्रज्वलित कर देना उचित होगा। एक नन्हा सा दीपक भी अन्धकार का कुछ तो विनाश करेगा ही और यदि ऐसे असख्य दीपक एक साथ जगमगा उठे तो निश्चय जानिए यह धरा जगमगा उठेगी। काश ! हम लोग अन्धकार को कोसने की अपेक्षा स्वय ही दीपक बनकर जल उठे तो आर्य समाज की शान ही दूसरी होगी। यदि हम चाहते हैं कि आर्य समाज उन्नत हो तो हमे सबसे पहले निराशा को त्यागना होगा। जब हम स्वय आशावादी होंगे तो निराशा के वातावरण को भी बदल सकते हैं। छोड़िए इस बात को कि दूसरे क्या कर रहे हैं ? आइये हम स्वय देखें कि हम क्या कर रहे है। हम दूसरो को उठाने की बजाए स्वय उठें हम दूसरो को चलाने की बजाये स्वय चलें हम दूसरों को सुधारने की बजाय स्वय सुधरें इस ससार को आर्य बनाने से पहले स्वय आर्य बनें प्रगतिशील बनें कर्मण्य बने, कर्मशील बनें। आज ससार हमारी बातों को नही कर्मों को देख रहा है। दुख है हम इस कसौटी पर खरे नही उतर रहे। याद रखे। शब्दो की अपेक्षा कर्म अधिक जोर से बोलते हैं। हमे वाणी लेखनी आदि के बजाय कर्मो से उपदेश देने होंगे तभी आर्य समाज की उन्नति हो सकती है। हम प्रयत्नशील हों कि हमे कर्मों से उपदेश देने होंगे तभी आर्य समाज की उन्नति हो सकती है। हम प्रयत्नशील हों कि हमारे कर्मों से जग प्रभावित हो, हमारी कथनी और करनी मे अन्तर न हो। अन्धकारमय वातावरण को दूर करने का एकमात्र यही उपाय है। उठो आर्यो ! स्वय जगो ससार को जगा दो। आज प्रत्येक आर्य यही कहे कि— रोशनी की नजर हो जाए गी सब तारीकियां।

मेरे सीने में जले हैं
नूरे उरफा के चिराग।
लाख दुनिया की हवाएं
हमसा आबर हों मगर।
हम जलाते ही रहेंगे
अम्मे दाना के चिराग।

यदि हम मे से प्रत्येक आर्य ऐसा साच ले एवम कर्त्तव्य पथ पर आरूढ़ हो जाए। तो फिर यही कहना होगा कि

रोशन रहेगा तेज हवाओं मे हम तक
फूंकों से यह चिराग बुझाया न जाएगा।

गुरुकुल कांगड़ी के दीक्षान्त समारोह पर

(५ पृष्ठ का शेष)

डा० सुरेशचन्द्र शास्त्री भी यहा पधारे और उन्होंने सफाई और स्वास्थ्य की दृष्टि से कांगड़ी ग्राम की ओर विशेष ध्यान देने का आश्वासन दिया।

मुझे इस शिविर में ऐसा आभास हुआ कि मानो हमारे पूर्वजो की आत्मा हमे ललकार कर यह चुनौती एव पुण्य सन्देश दे रही है कि यज्ञ की ज्वाला की भान्ति—

१ सर्वत्र प्रकाश फैलाओ—अन्धकार मिटाओ।

२ सर्वत्र सुगन्धि फैलाओ-दुर्गन्ध मिटाओ।

३ अपनी दुर्भावनाओं को दग्ध करो,
४ सर्वदा ऊर्ध्वगामी बनो।

मैं समझता हू यदि हम ऋषि दयानन्द द्वारा दिए गए इस सत्य मार्ग के पथिक बनने का प्रयास करें तो इसमें न केवल हमारा कल्याण है वरन् स्वदेश और ससार का भी कल्याण है।

मान्य अतिथि

मैं शायद जरूरत से ज्यादा बातें कह गया। मेरे दिल मे भाव है। मैं उसे प्रकाशित होने से रोक नही पाया क्षमा प्रार्थी हूं।

इससे पहले कि मैं आप से नव स्नातको को आशीर्वाद देने के लिए निवेदन करू मैं गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र के प्रति अपनी अपने सहयोगियों की कृतज्ञता प्रकट करना चाहता हू जो इतने व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद यदा-कदा हमें सम्भाषण के लिए समय निकालते रहते हैं। साथ ही मैं स्थानीय अधिकारियों जिलाधीश पुलिस अधीक्षक, स्थानीय न्यायाधीश एव वनाधिकारियो के प्रति भी अपना आभार प्रकट करना चाहूंगा जिनको हम समय असमय परेशान करते रहते हैं।

उपस्थित देवियो एव सज्जनो,

मैं आप सबका आभारी हू जिन्होंने हमे अपना अमूल्य समय प्रदान करके यहां पधारने का कष्ट उठाया, मेरे सहयोगियों ने आपकी यात्रा सुखद बनाने के प्रयत्न मे अपनी ओर से कोई कसर बाकी नहीं रखी। फिर भी यदि आपके स्वागत सत्कार में कोई त्रुटि रह गई हो तो उसके लिए क्षमा करेंगे।

मैं अपने साथियों के प्रति भी कृतज्ञ हू जो सत्रारम्भ से ही गुरुकुल की छवि सुधारने में तत्पर है। उन्हें देर सवेर अपने सत्कर्मों का फल अवश्य मिलेगा। प्रभु होने के नाते उन्हें धन्यवाद करते मैं मुझे रत्ती भर भी संकोच नहीं है।

मान्य अतिथि,

आपका अधिक समय न लेता हुआ अब मैं आपसे निवेदन करूंगा कि उपस्थित नव-स्नातकों को आशीर्वचन प्रदान कीजिए।

रूढ़िवादियों के विरुद्ध सुधारवादी बोहराओं का संघर्ष

मुस्लिम धर्म के दाऊदी बोहरा सम्प्रदाय के सुधारवादी सदस्य एक लबे अर्से से रूढ़िवादियो के विरुद्ध सघर्ष करते आ रहे हैं और रूढ़िवादियों द्वारा उनका हिंसात्मक विरोध करने की नीति अपनाने के कारण यह समस्या और अधिक गभीर और चिन्तनीय बन गयी है ।

रूढ़िवादी दाऊदी बोहराओ के धार्मिक नेता हैं डाक्टर सय्यदना, जिनके हाथ में जितने अधिकार हैं व कभी हजरत मुहम्मद के पास भी नही रहे । उनके अत्याचारों तथा दाऊदी बोहरा समाज के हालात के अध्ययन करने के लिए जनता शासन काल मे नाथवानी आयोग बैठाया गया था । इस आयोग ने इस समाज मे व्याप्त अनेक कुरीतियो का पर्दाफाश करने के साथ साथ उन्हे दूर करने की विधियो की भी सिफारिश की ।

सुधारवादी बोहराओं ने १९४४ मे अपने सम्प्रदाय म लोकतान्त्रिक तथा धर्मनिरपेक्ष की चेतना को जागृत करने के उद्देश्य के पहले विश्व बोहरा सम्मेलन का आयोजन किया था । तब रूढ़िवादियो ने उसे नहीं होने दिया था । और ३६ वर्ष बाद जब तीसरा विश्व बोहरा सम्मेलन सती सुदराबाई हाल मे जहा पहला सम्मेलन आयोजित हुआ था हुआ तो फिर रूढ़िवादियो ने इस सम्मेलन को असफल करने का प्रयास किया जिसमे विदेशों से आए ८०० प्रतिनिधियो मे से १० जिनमे ९ महिलाए भी बुरी तरह घायल हुए ।

हमारी कामना है कि बोहरा धर्म के ठेकेदारो के विरुद्ध छेड़ें गए इस धर्म युद्ध मे सुधारवादियो की विजय हो । सुधारवादी मुस्लिम समाज मे व्याप्त बहुपत्नी प्रणाली और धार्मिक तानाशाही के विरुद्ध लड रहे है उनकी इस न्यायपूर्ण लड़ाई मे हर भारतीय उनके साथ है ।

—सदाजीवतलाल चन्दूलाल

अशोक आर्य अबोहर द्वारा प्रचार

आर्य समाज पटेल नगर दिल्ली

विभागीय वार्षिक भ्रमण पर कक्षा के सभी विद्यार्थियो के साथ दिनांक २ से ५ मार्च तक दिल्ली रहे । (आर्यसमाज पटेल नगर मे निवास किया एवं ऋषि बोधोत्सव पर उपरोक्त समाज में व्याख्यान हुआ । ऋषि महिमा व केरल मे शुद्धि कार्य पर विचार रखे । श्रोता मन्त्र मुग्ध हो उठे तथा मोपला यथ लीग केरल के लिए बहुतो ने दान भी शुद्धि निमित्त दिया ।

नाम करण

यहीं दिनांक ५ से ८ मार्च तक जयपुर गीता भवन मे ठहरा (यहा श्री अशोक आर्य ने अपने मित्र श्री अरुण शर्मा की सुपुत्री का नामकरण सस्कार किया तथा उसका नाम मीमांसी रखा ।

यज्ञ और विज्ञान

होली के अवसर पर दिनांक २१ मार्च को आर्य समाज प्रेमनगर करनाल में यज्ञ और विज्ञान विषय पर प्रवचन हुआ ।

चित्र प्रदर्शनी

दिनांक २१ मार्च को आर्य समाज सैक्टर २७ चण्डीगढ में स्लाइडो द्वारा श्री अशोक आर्य ने ऋषि दयानन्द और आर्य समाज सम्बन्धी चित्रो का प्रदर्शन करते हुए सारगर्भित व्याख्यान दिया दिया जिसकी सबने प्रशसा की गई ।

कश्मीर मे आय कर अफसरो का अपमान भारत की प्रभुसत्ता को खुली चुनौती है

नई दिल्ली आर्य समाज दीवान हाल द्वारा आयोजित भारी जन समूह को सम्बोधित करते हुये श्री रामगोपाल शाल वाले ने कहा कि देश के भिन्न भिन्न भागों से हिन्दुओ के धर्म परिवर्तन के जो समाचार आ रहे हैं वह अत्यन्त चौंका देने वाले है । उन्होंने कहा कि कश्मीर मे भारत सरकार के आय कर अधिकारियो की अपमानजनक पिटाई भारत सरकार की प्रभुसत्ता का खुली चुनौती है । अब समय आ गया कि जम्मू कश्मीर मे राष्ट्रपति शासन लागू किया जाए और सरकार हरिजनो गिरीजनो तथा अनुसूचित जातियो को धार्मिक सरक्षण देने का भी प्रबन्ध करे

इस सभा मे सुप्रसिद्ध आर्य नेता श्री पृथ्वीसिंह आजाद ने घोषणा पूर्वक कहा कि स्वतन्त्रता से पूर्व जब हरिजनों को मुसलमान बनाने का षड्यन्त्र रचा गया था उस समय मुझे बुलाकर महात्मा गांधी ने कहा था कि हरिजनो का धर्म परिवर्तन रोका जाए । मैंने आर्य समाज की मदद से एक भी हरिजन को मुसलमान नहीं होने दिया । अब अरब देशों द्वारा भारत के इस्लामीकरण और हरिजनों को मुसलमान बनाने की योजना चली हैं उस पर सार्वदेशिक सभा के आदेश पर मैं इस कार्य का कमान को तैयार हुआ हू और उसमे अवश्य कामयाब होगे ।

सार्वदेशिक आर्य वीर दल प्रशिक्षण शिविर

विश्वविद्यालय गुरुकुल कागडी हरिद्वार मे 1 से 15 जून 81 तक

देश की समस्त प्रान्तीय सभाओं एव आर्य समाजो के पदाधिकारियो तथा आर्य वीर दल के सचालकों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि शिरोमणि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की पुण्य स्थली विश्वविद्यालय गुरुकुल कागडी हरिद्वार मे १ जून से १५ जून १९८१ तक आर्य वीर दल शिक्षक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा हैं ।

आपसे साग्रह अनुरोध है कि आप अपने क्षेत्र से सुयोग्य युवको से जो शिक्षा की दृष्टि से गुरुकुल के स्नातक शास्त्री बी० ए० या साहित्य रत्न प्रभाकर परीक्षोत्तीर्ण हो (या उनका यह स्तर हो) और उनकी आयु १९ वर्ष से कम तथा २५ वर्ष से अधिक न हो आवेदन पत्र सभा कार्यालय मे यथाशीघ्र भिजवा देव । जिससे योग्य और अधिकारी युवा शिक्षक तैयार किए जा सकें।

प्रवेशार्थी गणवेश—(दो लाल लगोट दो काले कच्छे दो सैंडो बनियान दो जेबो वाली कोलर युक्त आधी बाहो वाली कमीज सफेद मौजे ब्राउन (फलीट जूत) कान तक के नाप की अच्छी लाठी थाली कटोरा लोटा नोटबुक पेंसिल और अनुकूल बिस्तरा साथ लावें ।

शिविर मे शिक्षार्थियों का भोजन एव आवास नि शुल्क प्राप्त होगा । प्रार्थना पत्र पजीकृत करने का शुल्क मात्र ११ रुपये होगा । जिसे प्रार्थना पत्र के साथ धनादेश से (अथवा मनिआर्डर द्वारा) भेजा जाना चाहिए।

साथ मे हम आप से पुन अनुरोध करते हैं कि इस प्रशिक्षण शिविर मे आप योग्य से योग्य युवकों को सम्मिलित होने के लिए प्रेरित कर तथा उन्हें मार्ग व्यय आदि के निमित्त आर्थिक सहायता भी कराने की अनुकम्पा कर । जो अत्यन्त आवश्यक है जिससे योग्य युवक अर्थाभाव के कारण प्रशिक्षण लाभ से वचित न रह सकें । जो युवक प्रशिक्षण मे प्रथम और द्वितीय स्थान लेकर उत्तीर्ण होगे उनकी प्रान्तीय अथवा स्थानीय कार्य क्षेत्र मे मदक्षिणा नियुक्ति करनी ज वेगी ।

—श्री ओम्प्रकाश त्यागी मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा

आर्य जगत के समाचार

शोकाञ्जलि

गुरदासपुर—स्व कालेज की कार्यकारिणी एक शोक प्रस्ताव पारित शकुन्तला अग्रवाल के निधन पर श्रद्धा-ञ्जलि व्यक्त की तथा उनके पति श्री योगेन्द्र पाल से संवेदना प्रकट की गई।

कन्या गुरुकुल वाराणसी का वार्षिकोत्सव

वाराणसी—स्थानीय पाणिनी कन्या महाविद्यालय का दशम वार्षिकोत्सव २२ २४ मई तक भव्य समारोह के साथ मनाया जा रहा है।

इस मे आचार्य प रामानन्द शास्त्री (पटना) प सत्यप्रिय जी (हिसार) श्री सत्यदेव जी आर्य (जयपुर) प पन्नालाल पीयूष (अजमेर) कु भद्रपाल जी (अलीगढ) प ओम् प्रकाश जी (यमुनानगर) भाग लेंगे।

इस अवसर पर गुरुकुल की कन्याओं द्वारा बौद्धिक एव शारीरिक प्रदर्शन अनूठे ढग से किया जाएगा।

पारिवारिक सत्संग

आर्य युवक सभा मुक्तिधाम की ओर से दिनांक २६ ४-८१ दिन रविवार को पारिवारिक सत्संग श्री सतीश कुमार जी मल्होत्रा के घर किदवई नगर में हुआ। यज्ञ के पश्चात् छोटे बच्चे सजीव श्रीराम प्यारेलाल श्री आर्य श्री मदनमोहन जी सगीताचार्य एव दो लडकियों रमा एव मोना के मनोहर भजन हुये। मनोहर भजनो के पश्चात् श्री त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री का मनोहर प्रवचन हुआ, जिसको सैकड़ो की सख्या मे लोगों ने सुना तथा बहुत ही प्रभावित हुए। उसके पश्चात् शास्त्री जी ने आर्य युवक सभा की ओर से मल्होत्रा परिवार को वैदिक साहित्य भेंट किया। शान्ति पाठ एव जयघोषों के साथ सत्संग समाप्त हुआ।

—सुधीर भाटिया प्रधान



अकालियों ... साम्प्रदायिक मनोवृत्ति ... पड़ेगी मैं ... आर्य प्रति-निधि सभा के ... पूर्व सदस्य श्री ... स्वामी ने अकालियों द्वारा खालसा स्थान के प्रति अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा कि अमरीका और इंग्लैंड के कुछ विदेशी नागरिक सिखों के बहकावे पर अकालियों ने सिखों को एक अलग राष्ट्र घोषित किया, और एक स्वतन्त्र खालिस्तान की मांग की है। हर्ष का विषय है कि अधि-काश सिखों ने इन साम्प्रदायिक मांगो का स्वागत नहीं किया और इसकी आलोचना की है।

श्री स्वामी ने गत इतिहास का हवाला देते हुये कहा कि एक समय सभी हिन्दू सिख ग्रन्थ साहब का पाठ करते थे। गुरुद्वारों में हिन्दू भारी सख्या में श्रद्धा के साथ जाते थे और अपने बच्चों में से किसी एक को सिख बनाने में गौरव अनु-भव करते थे। बहुत से हिन्दू परिवारों में नियमित रूप से ग्रन्थ साहब का पाठ होता था। शादी विवाह भी निर्संकोच सिख-हिन्दू के मध्य होते थे, परन्तु अकालियों द्वारा अलग पजाब व खालि-स्तान का नारा लगाते ही हिन्दुओं ने गुरुद्वारों में जाना बन्द कर गुरु ग्रन्थ साहब का पाठ भी बन्द कर दिया।

वैवाहिक

सुन्दर, सुशील गृहकार्य में दक्ष बी० ए०, बी० एड० तथा पुस्तकालय प्रशिक्षित व अपनी जोकि राजकीय सेवा में रत है के लिए सुयोग्य वर की आवश्यकता है। जात पात बन्धन कोई नहीं है। इच्छुक पत्र पूर्ण विवरण सहित लिखें।

प्रबंधक—अशोक आर्य डी० ए० वी० कालेज अबोहर



श्री वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा अर्जुन प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वर्ष 14—अंक 21, 12 ज्येष्ठ सम्वत् 2038, तदनुसार 24 मई 1981 दयानन्दाब्द 156 । वार्षिक शुल्क 15) रुपए

आर्य समाज के प्रयास रंग लाए—

विधर्मी बने कुछ हरिजनों ने पुनः हिंदुत्व अंगीकार किया

विदेशी धन के बल पर धर्म परिवर्तन बर्दाश्त नहीं—आर्य नेताओं की चेतावनी

हैदराबाद—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री रामगोपाल शालवाले ने कहा कि आर्य समाज विदेशी धन के बल पर धर्म परिवर्तन को बर्दाश्त नहीं करेगा ।

श्री शालवाले आंध्रप्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा हैदराबाद मे अरब देशो के धन से दक्षिण भारत मे किए जा रह कथित बलात धर्म परिवर्तन के विरोध मे आयोजित विशाल आर्य सम्मेलन मे बोल रहे थे उन्होने कहाकि देशद्रोही गतिविधियों को न तो हम पनपने देंगे और न ही अपने हरिजन भाईयों को किसी लालच मे आ कर पतित होने देंगे ।

श्री शालवाले भूतपूर्व संसद सदस्य श्री ओम प्रकाश त्यागी एव श्री मुखी सिंह आजाद आदि आर्य नेताओ ने मीनाक्षीपुरम मे हरिजनों के बलात धर्म परिवर्तन की घटना की जानकारी प्राप्त की ।

सभा की एक सूचना के अनुसार सरकार ने श्री शालवाले की शिकायत पर सरकार ने हरिजनों के बलात् धर्म परिवर्तन की घटना की सरकारी जांच के आदेश दिए हैं और कुछ हरिजन अपने धर्म मे लौट आए हैं ।

श्री रामगोपाल शाल वाले ने देश की राष्ट्र विरोधी शक्तियो को चेतावनी दी कि आर्यसमाज उनके इस प्रकार के कार्यों को कदापि सहन नहीं करेगा । राष्ट्र विरोधी शक्तियो का सामना करने के लिए उन्होने आर्यजनो का आह्वान किया ।

सभा के मन्त्री श्री ओम प्रकाश त्यागी ने कहा है कि आज देश को भीषण खतरों का सामना है और अब देश मे वही स्थिति बनती जा रही है जो सन १९४७ में थी । इन सब बुराईयों को दूर करने का एकमात्र उपाय है वर्तमान वोटों की राजनीति समाप्त कर ब्रिटेन अथवा अमेरिका की भांति राष्ट्रपति प्रणाली प्रचलित की जाए । जिसमे वोटों की प्राप्ति के लिए किसी को प्रसन्न करने की आवश्यकता न हो ।

भारत के इस्लामीकरण की साजिश

ज्ञात हुआ कि अखिल भारतीय जमायते इस्लामी के हैदराबाद मे हाल ही मे हुए १०वें सम्मेलन में भारत के इस्लामीकरण की खौफनाक साजिश तैयार की गई है ।

अंग्रेजी साप्ताहिक 'संडे' ने इस साजिश का रहस्योद्घाटन करते हुए बताया है कि भारत के इस्लामीकरण के लिए तैयार की गई समयबद्ध योजना के अनुसार आगामी दशक मे हरिजनो की भारी तादाद को मुसलमान बना दिया जाएगा । जिससे एक दशक में ही भारत मे मुस्लिम जनसंख्या ८ करोड़ से बढ़ कर २० करोड़ तक पहुच जाएगी । और भारत के इस्लामीकरण की साजिश के तहत देश मे मुस्लिम बहुमत वाला एक राज्य तैयार कर लिया जाएगा ।

इस सम्बन्ध में यह भी कम चिन्तनीय नहीं है कि प्रधान-मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी जिन्होने पाच वर्ष पूर्व जमायत इस्लामी को प्रतिबन्धित कर दिया था अब इस सम्मेलन का स्वागत किया है । विदेश मन्त्री श्री नरसिम्हाराव ने हैदराबाद के निवासियो को सम्मेलन के आयोजन के लिए बधाई दी है ।

ज्ञातव्य है कि १९७७ मे जनता पार्टी ने सत्ता मे आने के बाद जमायते इस्लामी पर से प्रतिबन्ध हटा लिया था लेकिन इसी संगठन ने जब जम्मू-कश्मीर मे यह सम्मेलन करने का प्रयास किया तो राज्य सरकार ने इसकी स्वीकृति देने से इन्कार कर दिया था ।

आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश के प्रधान तथा भाषा आयोग के अध्यक्ष श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम् ने जमात द्वारा भारत के इस्लामीकरण षड्यन्त्र के प्रति सतर्क करते हुए इसकी राष्ट्र विरोधी गतिविधियो के खिलाफ प्रचण्ड शंखनाद किया है । उन्होने भारत सरकार से भी इस संगठन की ओर गम्भीरतापूर्वक ध्यान देने की माग की है । वह इस्लाम के विरोधी नहीं बल्कि इस्लामीकरण के आह्वान को आपत्तिजनक मानते हैं उनका आरोप है कि जमायते इस्लामी अल्प संख्यको को देश विरोधी गतिविधियो के लिए भड़का रही है । जिसे इस्लामी देशो से इस कार्य के लिए भारी आर्थिक मदद मिलती है ताकि भारत मे एक इस्लामिक राज्य की स्थापना की जा सके । उन्होने इस बात पर घोर आश्चर्य व्यक्त किया है कि राज्य सरकार ने जमायत को हैदराबाद मे यह सम्मेलन करने ही क्यो दिया है जबकि जम्मू कश्मीर सरकार ने जमायत को इस प्रकार का सम्मेलन करने से मनाही कर दी थी । उन्होने कहा कि जमायत की इस प्रकार की गतिविधिया राष्ट्र के लिए खतरा पैदा कर रही हैं ।

जमायते इस्लामी नामक इस संगठन की स्थापना १९४१ मे की गई थी तथा इसका मुख्य उद्देश्य भारत मे हकूमत ए-इलाही की स्थापना करना रहा है । जमात के दो दिवसीय सम्मेलन मे देश भर के लगभग १० हजार प्रतिनिधियों तथा इस्लामिक विश्व के सहयोगी प्रतिनिधि मण्डलो ने भाग लिया । सम्मेलन मे जो पर्चे बांटे गये उनमे मुसलमानो की हर प्रकार से रक्षा के लिए मुस्लिम बहुमत वाले एक अलग राज्य की स्थापना पर बल दिया गया है ।

सम्मेलन मे जमायते इस्लामी हिन्द के अमीर मौलाना मोहम्मद युसुफ ने कहा कि अधिकतर लोगो को इस्लाम की मूलभूत शिक्षाओ का ज्ञान नहीं है । इस स्थिति मे हम सैद्धान्तिक व व्यवहारिक रूप मे इस्लाम लागू करने के बाद ही इस बारे मे कोई आशा कर सकते हैं ।

जमायत भारत मे जहा तक सम्भव हो सके शरीयत (इस्लामी कानून) लागू करना चाहती है ।

उसमे कहा गया कि धर्मनिरपेक्ष राष्ट्रीय एकता स्थापित नहीं कर सकी है । सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त पुस्तकें एक धर्म विशेष की मान्यताओ और सिद्धान्तो को व्यक्त करती है ।

इस सम्मेलन के आयोजको को प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी के उस सबोधन से प्रोत्साहन मिला है जो उन्होने एक अन्तर्राष्ट्रीय सेमिनार मे दिया था उन्होने इस सेमिनार जो विश्व (विशेष रूप से भारत) की संस्कृति और सभ्यता के लिए इस्लाम का योगदान विषय पर आयोजित किया गया था मे कहा गया कि इस्लाम हमारे अपने धर्मों मे से एक है । यह भारत मे फलता फूलता रहेगा ।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

सन्ध्या कथा—विषयों को भोगने से तृष्णा नहीं, हम मिट जाते हैं

सुख की सामग्री के उपस्थित होने पर विषयों से विमुख होना आसान नहीं। इसका एक तरीका ऊपर बताया कि विषयों से पराङ्-मुख होने के लिए प्रभु के प्रति अपने को समर्पित करना होगा। संसार के प्रति अनासक्ति की भावना रखनी होगी। निष्काम बनना होगा। परन्तु जब हमारा घर अतुल ऐश्वर्यों से भरा हो, शरीर स्वस्थ हो, भोग-विलास की सामग्री विद्यमान हो तब कैसे यह अनासक्ति या प्रभु समर्पण होगा। इसके लिए हमें विषयों के वास्तविक स्वरूप को समझना होगा। इसके दोष देखने होंगे? इन विषयों की पहली बात तो यह है कि 'आपात रम्याः विषयाः पर्यन्त परितापिनः, विषय जब भोगे जा रहे होते हैं तब तो उनमें बड़ा रस आता है पर अन्त में अर्थात् जब हम उन्हें भोग लेते हैं वे दुःख देने वाले होते हैं। इसीलिए भर्तृहरि जी ने कहा है, 'भोगाः न भुक्ताः वयमेव भुक्ताः तृष्णा न जीर्णं वयमेव जीर्णः विषयों को भोगने

मनसा परिक्रमा का तीसरा मन्त्र

से तृष्णा मिटती नहीं है, हम ही मिट जाते हैं। मनुस्मृति मे कहा है, 'हविषा कृष्णवर्त्मेव भूय एवाभिवर्द्धते' जैसे आग में घी की आहुति दी जाए तो ज्वालाएं और भी भड़क उठती है वैसे ही विषय भी भोगने से और लपलपाने लगते हैं। इसलिए मनसा परिक्रमा का मन्त्र कहता है—

"पृदाकू रक्षिता" विषयो में विषधर सर्प का भाव लाओ तो यह भाव तुम्हारा रक्षक है। भर्तृहरि जी ने वैराग्य शतक में इन्हें सांप माना है। कहा है—

सखे धन्या केचित् त्रुटित भवबन्ध व्यतिकराः।
अचिन्वन्तोऽरम्ये मनसि विषयाशी-विषमतिम्।

हे मित्र धन्य है वे पुरुष जिन्होंने ससार के बन्धनका सम्बन्ध तोड़ दिया है, और जो मन में विषय रूपी सर्प की गति नहीं खोजते हैं।

भर्तृहरि जी के वैराग्य का कारण भी यही विषयों का विवेचन है। एक बार एक बहुत ही मणियों का बना हुआ कोई फल उन्हें मिला। उन्होंने वह फल अपनी प्रेमिका को दिया, प्रेमिका ने अपने प्रेमी को दे दिया और उसने अपनी प्रेमिका को दे दिया। उसके बाद उस प्रेमिका ने वह फल भर्तृहरि जी को लाकर दे दिया। उसे देखकर उनके मुख से निकल गया—

यां चिन्तयामि सततं मयि सा विरक्ता,
साप्यन्यमिच्छति जनं स जनोऽन्य-सक्तः।
अस्मत्कृते च परितुष्यति काचिदन्या,
धिक् तां च तं च मदनं च इमां च मां च।

भर्तृहरि जी कहते हैं कि इसलिए मेरी प्रेमिका को, उसके प्रेमी को, कामदेव को, मुझे चाहने वाली को और मुझ को धिक्कार है।

इसलिये कहते हैं कि विषयों से हटने के लिए अपना परमेश्वर की ओर चित्त को लगाओ। भगवान् के लिये अपने मन में ऐसा प्यार करते है जो किसी रुकावट को माने नहीं, हर बलिदान के लिए तैयार हो तो भगवान् प्राप्त हो जाता है। जब मन अन्दर की ओर देखता है, बाहर की ओर नहीं, तब ही भगवान् के दर्शन होते हैं। कबीर कहते हैं:—

नैनों की कर कोठड़ी, पुतली पलंग बिछाय,
पलकों की चिक डाल के पी को लिया रिझाय।

पुरुष है। यही पुरुष प्रेरणा के स्रोत है। मेरे जीवन के आदर्श है पवन स्वरूप भगवान् को मेरा शत-शत प्रणाम, अपनी ओर मुझे आकर्षित करते रहना। विषयों में विषधर सर्प के साथ तुझे नमस्कार है। मुझे दूर करते रहना। मुझे विषयों से सदा बचाते रहना। विषयों को खाते जाते है अनुभवी गुरुओं! तुम्हें मेरा नमस्कार, मुझे प्रेरणा देते रहना, पथ-प्रदर्शन करते रहना।

—सुरेशचन्द्र वेदालंकार

वेद सुधा

भर्तृहरि जी के जीवन की ही घटना है। एक बार वे घास के हरे भरे मैदान में टहलने जा रहे थे। रात का समय था हरी-भरी घास पर किसी ने पान खाकर थूक दिया था। वह बुलबुले के समान बन गया था और चन्द्रमा की किरणों से हीरे का चमकता कण लग रहा था। भर्तृहरि जी ने उसे झट से उठाया। हाथ थूक मे सन गया। इसी प्रकार विषय देखने में मनोरम होते हैं पर उनका वास्तविक रूप बहुत ही भद्दा होता है। विषय विष है। एक श्लोक में आया है—

विषस्यविषयायां च दूरमत्यन्तरम्।
उपभुक्तं विषं हन्ति विषयाः स्मरण दपि।

विष और विषय का क्या मुकाबला? दोनों में बहुत ही अन्तर है। विष खाने पर ही आदमी मरता है और विषय तो स्मरण मात्र से मनुष्य को मारने वाले होते हैं।

भगवान कृष्ण कहते हैं:—

विषयेन्द्रिय संयोगाद्यत्तदग्रेऽमृतोपमम्।
परिणामे विषमिव तत्सुखं राजसं स्मृतम्।

विषयों और इन्द्रियों के संयोग से जो सुख आरम्भ में अमृत के समान लगता है और परिणाम में विष के समान वह राजस है।

कठोपनिषद् में कहा है—

पराञ्चि खानि व्यतृणत् स्वयम्भूस्तस्मात् पराङ् पश्यति नान्तरात्मन्।
कश्चिद्धीरः प्रत्यगात्मानमैक्षदावृत्तचक्षुरमृतत्वमिच्छन्।

कठ० ४-१

स्वयम्भू परमेश्वर ने इन्द्रियों को बहिर्मुख बनाया हैं। अतः मनुष्य बाहर की ओर देखता है, अन्दर की आत्मा को नहीं। कोई बुद्धिमान् पुरुष मोक्ष की इच्छा करता हुआ अपने चक्षु आदि इन्द्रियो का संयम करके अन्तरात्मा को देखता है।

विषयों से बचने के लिए प्रेरणा कहां से मिलेगी? उत्तर मिला, अन्नाशिनः, विषयों को खाने वाले अन्न संज्ञक पुरुष प्रेरक हैं। अन्न शब्द का अर्थ है 'अद्यते-अत्ति च भूतानि तस्मादन्नं तदुच्यते' जो खाया जाता है वह अन्न है और जो भूतों अथवा विषयों को खाता है वह भी अन्न है। जो इन्द्रियों में रमण नहीं करता, इन्द्रियों में जो नहीं फंसा, बल्कि इन्द्रियां जिसके वश में हैं। जो मनुष्य जिह्वा, आंख, नाक, कान और स्पर्शेन्द्रियों के वश में न होकर उन्हें वश में कर लेता है वह अन्न संज्ञक पुरुष है। राजा जनक, महर्षि दयानन्द, महात्मा गान्धी, अन्न संज्ञक

भर्तृहरि जी के जीवन की ही घटना है। एक बार वे घास के हरे-भरे मैदान में टहलने आ रहे थे। रात का समय था। हरी-भरी घास पर किसी ने पान खाकर थूक दिया था। वह किरणों से हीरे का चमकता कण लग रहा था। भर्तृहरि जी ने उसे झट से उठाया। हाथ थूक में सन गया। इसी प्रकार विषय देखने में मनोरम होते हैं, पर उनका वास्तविक रूप बहुत ही भद्दा होता है।

सार्वदेशिक सभा का वार्षिक अधिवेशन

नई दिल्ली—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का साधारण वार्षिक अधिवेशन ३० ३१ मई १९८१ को मध्यान्ह अढ़ाई बजे से यहां आर्य समाज मन्दिर दीवान हाल, चांदनी चौक में होगा। जिसमें निम्न विषय विचाराधीन होंगे।

१. आगामी वर्ष के लिए प्रतिष्ठित सदस्यो का निर्वाचन।

२. शोक प्रस्ताव।

३. विगत २-३ अगस्त, १९८० के वार्षिक अधिवेशन की कार्यवाही की सम्पुष्टी।

४. गत वर्ष का कार्य विवरण (वार्षिक रिपोर्ट) आय-व्यय लेखा सहित स्वीकृत्यर्थ।

५. आगामी वर्षों के लिए सभा के अधिकारियों एवं अन्तरंग सदस्यों का निर्वाचन।

६. आगामी वर्ष के लिए लेखा-निरीक्षक की नियुक्ति।

७. आगामी वर्ष के लिए बजट की स्वीकृति।

८. दयानन्द पुरस्कार समिति के सदस्यों का निर्वाचन।

९. महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी समारोह पर विचार।

१०. आर्य समाज के भावी कार्यक्रम पर विचार।

११. अन्तरंग द्वारा पारित प्रस्तावों पर विचार।

१२. अन्य विषय प्रधान जी की अनुमति से।

सदस्यों के आवास व भोजन की व्यवस्था आर्य समाज मन्दिर दीवान हाल में होगी। प्रान्तीय सभाओं और आर्यसमाजों के सदस्यों द्वारा अधिवेशन में भाग लिए जाने के पंचमार्ग। प्रवेश राशि का प्राप्त होना अनिवार्य है। जिनका प्राप्त हो चुका है, उनके लिए यह टिप्पणी अपेक्षित नहीं है।

—ओमप्रकाश त्यागी मन्त्री

ओ३म्

आर्य मर्यादा

इन्द्रमहं वाणिजं चोदयामि स न ऐतु पुरएता नो अस्तु।
नुदन्नराति परिपन्थिनं मृगं स ईशानो धनदा अस्तु मह्यम्।

अथर्व ३-१५-१

भावार्थ—मैं 'कृषि-वाणिज्य-गोरक्षा' द्वारा संसार का उपकार चाहने वाला व्यक्ति, धनी व व्यापार-कुशल पुरुष को प्रेरणा करता हूं कि वह हमारे पास आए और हमारे सामने मुख्य पुरुष होकर रहे। वह समय पर माल न देने वाले को, व्यापार के मार्ग में व्यवस्था के उल्लंघन करने वाले, लूट व चोरी करने वाले, तथा चंचल वृत्ति व्यापारी को दण्डित करता हुआ हमें हमारे माल का पैसा दिलाता रहे।

—सम्पादकीय—

सार्वदेशिक धर्म रक्षा का मोर्चा सम्भाले

30-31 मई को सार्वदेशिक सभा का दिल्ली में वार्षिक अधिवेशन हो रहा है जिसमें निर्वाचन के अतिरिक्त देश के आर्य समाज के इस शिरोमणि संगठन के कार्य की भी अनेक योजनाएं प्रस्तुत होंगी। मेरी अपनी सम्मति में सार्वदेशिक सभा को प्रान्तीय सम्मेलनों और अन्तर्देशीय सम्मेलनों के अतिरिक्त इस समय एक मात्र एक ही मोर्चा सम्भालना चाहिए, वह है धर्म रक्षा का? समूचे देश मे इस समय ईसाईयत और इस्लाम का जोर जिस प्रकार से बढ़ रहा है उससे समस्त भारतीयता के पुजारी चिन्तित हो उठे है। उत्तर-पूर्व और दक्षिण में जहा ईसाईयत का इस समय हमारे यहां बोलबाला है वहां उत्तर प्रदेश में इस्लाम जिस तेजी से बढ़ रहा है उससे देश की आन्तरिक सुरक्षा भी चिन्ता का विषय बनती जा रही है। इसलिए हमारी सार्वदेशिक सभा को अपनी पूरी शक्ति भारतीयों की धर्म रक्षा पर लगानी चाहिए। शुद्धि के नाम से हमारी धर्म निरपेक्ष सरकार भी चौंक उठती है और उसे भय लगता है कि आर्य समाज दूसरों के धर्म परिवर्तन का काम करने लगा है किन्तु अपनों की धर्म रक्षा पर न उसे आपत्ति हो सकती है न विधर्मियों को। इसलिए इस वर्ष सार्वदेशिक सभा को एक धर्म-रक्षा विभाग खोल कर अपनी पूरी शक्ति इस महान् कार्य में लगानी चाहिए और सभी क्षेत्रों में कार्य करने वाले कार्यकर्ता तैयार करने चाहिए और उन्हें सब ओर भेजकर अपनों की धर्म रक्षा का प्रयत्न करना चाहिए। साथ ही सब प्रदेशों से धर्म परिवर्तन के आंकड़े एकत्रित करके प्रान्तीय सरकारों और केन्द्र की सरकार तक पहुंचाने चाहिएं। और सरकार के बड़े अधिकारियों पर बड़े प्रेम से यह स्पष्ट करना चाहिए कि इससे देश की स्वतन्त्रता किसी भी समय खतरे में पड़ सकती है। प्रयत्न करके इसे साम्प्रदायिक रूप नहीं देना चाहिए, प्रत्युत इसे राष्ट्रीय समस्या का रूप देना चाहिए और वैसा ही अपने आन्दोलन तथा कार्यक्रम का रूप बनाना चाहिए।

—रामचन्द्र जावेद
सभा मन्त्री

गुरुकुल करतारपुर से लाभ उठाईये

पाठ गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के जन्मदाता स्वामी श्रद्धानन्द जी की जन्म-स्थली है। छोटे बच्चों की शिक्षा का एक मात्र ही गुरुकुल है और वह है करतारपुर का। जिसे गुरु विरजानन्द संस्कृत महा-विद्यालय कहते है। वैसे तो प्राज्ञ, विशारद शास्त्री कराने वाले संस्कृत के अन्य भी कई विद्यालय पंजाब में हैं, परन्तु छोटे बच्चों की शिक्षा का गुरुकुल केवल करतारपुर में ही हैं।

गत वर्ष तक इसका सम्बन्ध गुरुकुल झज्जर से था, अब हमने प्रयत्न करके इसका सम्बन्ध गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार से करा दिया हैं और इस वर्ष से गुरुकुल कांगड़ी की विद्याधिकारी परीक्षा में यहां के ब्रह्मचारी बैठने लगे हैं। यह परीक्षा गुरुकुल की सूचना के अनुसार भारत भर की सभी संस्थाएं और विश्वविद्यालयों ने मैट्रिक के बराबर स्वीकार कर रखी हैं इसके पश्चात् वे उच्च शिक्षा के लिये गुरुकुल कांगड़ी में प्रविष्ट हो सकते हैं और वहां की विद्यालंकार और विद्या वाचस्पति की उपाधियां प्राप्त कर सकते हैं और आगे अन्य यूनिवर्सिटियों की परीक्षाएं दे सकते हैं। एक प्रकार से हमने गुरुकुल कांगड़ी की एक शाखा पंजाब में खुलवा दी है, जिससे यहां के बच्चों का भविष्य निश्चित और उज्ज्वल हो गया है।

वैसे भी बच्चों के रहन-सहन और शिक्षा का यहां सुन्दर और प्रायः नि:शुल्क प्रबन्ध है। खान-पान के लिए बच्चों को शुद्ध घी और दूध दिया जाता है। विद्यालय की अपनी गौशाला है। सन्ध्या हवन के साथ दैनिक व्यायाम भी अनिवार्य है। लगभग चालीस बच्चों पर एक लाख रुपया वार्षिक व्यय हो रहा है। जो प्रायः पंजाब के दानी श्रद्धानन्द बन्धुओं के दान और सहयोग से ही पूरा हो रहा है पंजाब सरकार की कोई निश्चित ग्रान्ट हमें प्राप्त नहीं हो रही। जहां मैं पंजाब के संस्कृत, हिन्दी प्रेमी बन्धुओं से इस संस्था के लिए आर्थिक सहयोग की अपील करता हूं वहां इसमें अपने बच्चे प्रविष्ट कराने का भी आग्रह करता हूं। हमारा लक्ष्य इसमें अधिक से अधिक छात्र दाखिल करना और शिक्षा प्रणाली को आज प्रभावित करना भी है। आशा है कि सब बन्धु सहयोग देंगे। यह आर्य प्रतिनिधि सभा की एक गौरवमय संस्था है जिस का प्रबन्ध एक ट्रस्ट कर रहा है जिसके प्रधान सेठ शिवचन्द जी और मन्त्री श्री चतुर्भुज जी मित्तल हैं जो तन-मन-धन से इस संस्था की सेवा में लगे हैं।

—रामचन्द्र जावेद
सभा मन्त्री

चर्च के मुंह पर चांटा : केरल के कैथोलिकों द्वारा

कोचीन (केरल) के सीरियन ईसाई एक लम्बे अर्से से 'धार्मिक संस्कारों और कर्मकाण्डों का दुरुपयोग करने वाले चर्च-अधिकारियों की धौंस सहते आ रहे थे। चर्च के ये तानाशाह अधिकारी उन १५,००० परिशनरों के साथ, जो वैरापोली के मठ से सम्बद्ध हैं, दासों जैसा व्यवहार करते थे, जबकि स्वयं वहां के एक पल्ली पुरोहित फादर जोसेफ पप्पामित्तो के बारे में परिशनरों का विश्वास है कि वह चर्च की राशि का उपयोग अपने ऊपर करता है तथा अनेक अपराधों से ग्रस्त हैं।

(ब्लिट्ज)

जब परिशनरों ने चर्च के अधिकारियों की ढीलता और अन्यायपूर्ण व्यवहार के प्रति आवाज बुलन्द की, तो उन्होंने परिशनरों को तंग करने के उद्देश्य से ४ जनवरी को चर्च बन्द कर दिया। इससे परिशनरों को जन्म, मृत्यु तथा विवाहादि संस्कारों को सम्पन्न करने में कठिनाई अनुभव होने लगी। लेकिन तो भी उन्होंने चर्च के तानाशाहों के आगे हार नहीं मानी, और अपनी यह मांग जारी रखी कि तानाशाह चर्च अधिकारियों को फौरन हटाया जाए। उन्होंने पल्ली-पुरोहित का घण्टों तक घेराव किया और उससे चर्च की सम्पत्ति का हिसाब देने को कहा। पल्ली-पुरोहित ने सड़ास में जाकर अपनी पतलून की जेबें नोटों और बैंक बुकों से भर ली, ऐसा कहा जाता है। अन्त में, पुलिस के हस्तक्षेप से उसकी रक्षा हो सकी।

अन्त मे परिशनरों की जीत हुई और अब वे आततायी पुरोहितों के चंगुल से मुक्त हो गये हैं, आशा है, इस शानदार विजय से उनका भी मनोबल बढ़ा हैं, उस से प्रेरित होकर वे उन विदेशी मिशनरियों को भी अपने बीच से भगाने में सफल होंगे, जो न केवल भारतीय ईसाईयों के साथ भेदभाव करते हैं, वही भारतीय संस्कृति और भारत राष्ट्र का समूल नाश करने पर भी तुले हैं।

हम स्वाधीन होकर भी भाषाई गुलाम क्यों ?

हिन्दी

मैं क्या कहूं ? किससे कहूं ? अपनी मातृभाषा, अपनी मातृभूमि, अपनी नीति पद्धति के अनादर, अपमान और अनास्था का दोषारोपण किस पर करूं ? जब पुत्र ही मां को दुत्कारे। मा का परित्याग करे, उसकी सेवा सुश्रूषा छोड़ कर परकीयता का प्रेमी बने, तब मां क्या करे ? उसकी लज्जा का अपहरण करने वाला उसी का पुत्र है, उसी की कोख से उत्पन्न हुआ है, उसीके दूध से पला और पुष्ट हुआ है और अब उसी का नाम लेने से कतराता है। जो शब्द बाल्यावस्था में सीखे, उनके स्थान पर ऐसे शब्द सीखता और बोलता है, जिन्हें उसके बन्धु नहीं जानते। ऐसे शब्द उसे मातृभूमि से काट कर किसी और का सिद्ध कर रहे हैं। हम आज हम नहीं है। भारतीय केवल नाम लेने के लिए है, अन्यथा कोई अरब है, कोई अंग्रेज है कोई रशियन (रूसी) है।

देश में एक वरेण्य विभूति आई थी। अपने त्याग-तप द्वारा, अहिंसा के आचार द्वारा और बलिदानों की ज्योति-शिखा के प्रज्वलन द्वारा देश को आठ सौ वर्षों की पराधीनता से मुक्ति दिला गई। पर हम ने स्वाधीन होते ही उसे भुला दिया, उसके आदर्शों को ताक पर रख दिया तथा प्रभुतामद के मद में, भौतिकता के जड़वाद में आपाद मस्तक निमग्न विदेशों की वेश-भूषा एवं आचार-विचार का अनुकरण किया। आज कहां है महात्मा गांधी का आदर्श जो इस देश के महामात्य चाणक्य का स्मरण कराता था। विदेशी जिसके चरणरज में लोटते थे, उसके पुत्र आज विदेशियों की नकल करने और चरण-चुम्बन में जुटे हुए हैं।

जड़वाद की अर्थवृत्ति ऐसा नग्न नाच नाच रही है कि भाई-भाई का शत्रु बन बैठा है। परकीयता उसकी अस्मिता पर प्रहार कर रही है। पराधीनता के युग मे हमारी अस्मिता जागृत रही और विदेशियों की रीति नीति से मोर्चा लेती रही। विदेशियों ने बाहर से लाकर बहुत कुछ हम पर थोपना चाहा, पर वे हमारी भाषा और सभ्यता को मिटा सके ? फिर आज स्वाधीन होकर भी हम विदेशी भाषा और सभ्यता के दास क्यों बन रहे हैं ? हमें अपनेपन से क्यों घृणा है ? ईसाइयों ने तो अंग्रेजी स्कूल खोले ही. हम भी उसी में लगे हैं बच्चा इस देश का, पर वह सात सागर पार की भाषा सीख रहा है और अपने को अपनी भाषा बोलने वालों से श्रेष्ठ समझ रहा है। ऐसा क्यों ? यह इसलिए सम्भव हुआ कि महात्मा गान्धी के अनुयायी उनके अनुगमन से पृथक हो गए। यथा राजा तथा प्रजा-स्वाधीन यूरोप का अनुकरण करते हैं, तो राज कर्मचारी क्यों न करें। उनके परिवार तथा पड़ोस वाले वैसा ही क्यों न करें ?

संविधान बना और पास हुआ। हिन्दी को सबने एक स्वर से देश की सम्पर्क भाषा स्वीकार किया पर कार्यान्वयन में अंग्रेजी को अपनाया। आयोग भी बैठा, प्रस्ताव भी पास हुए, पर दिल्ली ? दिल्ली अभी दूर है। जब तक अस्मिता का धनी कोई माई का लाल पैदा नहीं होता, तब तक भारत का रूप नहीं धारण कर सकता। भगवान फिर किसी विभूति को भेजें। कोई क्षात्र तेज आर्यत्व को हृदय में सजाये हुये सम्भव है, निकट भविष्य में ही उद्दीप्त हो उठे और यह देश पुनः अपने को पहचानने लगे।

विदेशियों का रंग इस समय कुछ जोर पकड़ रहा है। वे इस देश की भाषा और आचार-पद्धति को दबा देना चाहते हैं। यदि इस देश की भूमि का अन्न जल जोर नहीं पकड़ता पूर्वजों का रक्त जोश कुछ कर जाने की प्रेरणा नहीं देता और हम स्वयं विदेशीयता का पल्ला नहीं छोड़ते, तो भविष्य अन्धकारमय है। इस आने वाले अन्धकार को कैसे रोका जाए ? इसके लिए कुछ उपाय मेरी समझ में आ रहे हैं :—

ईसाईयों ने तो अंग्रेजी स्कूल खोले ही, हम भी उसमें लगे हैं, बच्चा इस देश का, पर वह सात सागर पार की भाषा सीख रहा है और अपने को अपनी भाषा बोलने वालों से श्रेष्ठ समझ रहा है। ऐसा क्यों ? यह इसलिए सम्भव हुआ कि :......

(२) सर्वप्रथम उन ज्ञान-धनी विप्रों और इतिहास-रक्षक पौराणिकों को अपने कर्त्तव्य का बोध होना चाहिए। उनके समक्ष यह महान कार्य है कि वे इस देश के निवासियों को, चाहे वे किसी भी सम्प्रदाय या मजहब के हों, पूर्वजों की याद दिलायें। ईसाई और मुसलमानों की अधिकांश संख्या इसी देश के रक्त से सम्बन्धित है। फकीर आज तक अपने को भट्ट समझते हैं। मुसलमानों मे यादवों, चौहानों, राठौरों आदि के अनेक हिन्दू परिवार विद्यमान हैं। इन्हें अपने कुलों की बार-बार याद दिलाई जावे। यदि जावा, सुमात्रा के हिन्दू मुसलमान होकर भी अपने नामों को धारण किए हुए हैं और राम कृष्ण आदि महापुरुषों की कथाएं सुनते हैं, तो भारत के मुसलमान और ईसाई ऐसा क्यों नहीं कर सकते ?

(२) देश भर में संस्कृत शिक्षण की ओर विशेष ध्यान दिया जाए। यदि काबुल विश्वविद्यालय संस्कृत को कला-संकाय के छात्रों के लिए अनिवार्य विषय बना सकता है, तो भारतवर्ष के विश्वविद्यालय ऐसा क्यों नहीं कर सकते ?

(३) हिन्दी भाषा को अविलम्ब राजभाषा घोषित कर दिया जाए और अंग्रेजी को इस पद से तुरन्त हटा दिया जाय।

(४) भारतवर्ष में प्रान्तीय लिपियों के साथ सार्वजनिक रूप में देवनागरी लिपि का प्रचार किया जावे, जैसाकि पूर्व काल में था और दक्षिण में अब तक रहा है।

(५) देश पहले है, प्रान्तीयता बाद में। इस भावना को जन-जन के हृदय में स्थान प्राप्त हो।

(६) हिन्दुओं के सभी वर्णों को परिवार के सदस्यों के समान मिलकर रहना चाहिए। सभी के कार्यों का सहयोग राष्ट्र रूपी परिवार को समृद्ध एवं यशस्वी बना सकता है।

(७) अब्दुल गफ्फार खां या जस्टिस छागला के शब्दों में ईसाई, मुसलमान सब अपने को आर्य या हिन्दू कहें। मजहब एक विचारधारा है, वह खून को नहीं बदल सकता।

—आचार्य मुन्शीराम शर्मा 'सोम'

यदि इन उपायों से काम किया जाए तो भारत का भविष्य निश्चित रूप से उज्ज्वल होगा। अन्धकार छा रहा है, पर वह वैसा ही है जैसे प्रकाश में घन घटा। यह कालापन कुछ काल का ही है। आगे तो सूर्य को उदित होना ही है। हां हमें अपना कर्त्तव्य पालन करने से पीछे नहीं हटना है जो भाई इस कर्त्तव्य से विमुख हो रहे हैं, उन्हें भी हमारी कर्त्तव्यपरायणता शिक्षा देगी, मार्ग दिखावेगी।

उत्तिष्ठत, जाग्रत, प्राप्यवरान् निबोधत।

भारत का इस्लामीकरण

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हैदराबाद सम्मेलन में मुसलमानों के पवित्र ग्रंथ कुरान की १२ भारतीय भाषाओं में अनुवाद की हुई प्रतियां जारी की गईं। कुरान की इन प्रतियों को साढ़े पांच करोड़ गैर मुसलमान लोगों में उपहार स्वरूप बांटा जा रहा है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री भू. पू. संसद सदस्य श्री ओमप्रकाश त्यागी ने देश भर की आर्यप्रतिनिधि सभाओं को एक पत्र भेजकर उन विदेशी षड्यंत्रों से आगाह किया है जो भारत में वैदिक धर्मियों (हिन्दू जाति) को समाप्त करने के लिए विदेशी प्रयत्न चल रहे हैं, इसके लिए भारत में विदेशों से बड़ी धन राशियां चली आ रही हैं।

श्री त्यागी ने अपने पत्र में कुवैत में १६ जनवरी १९७२ के 'अरब टाइम्स' पत्र का हवाला देते हुए कुवैत सरकार की इस घोषणा को छापा है कि 'कुवैत भारतीय उपमहाद्वीप में मुसलमानों की मदद करने के कार्यक्रम में पूरी आर्थिक सहायता देगा। लन्दन आधारित इस्लामी केन्द्र ने यह वक्तव्य भी दिया है कि भारत के ५० हिन्दू परिवारों को गुप्त रूप मुसलमान बना लिया गया है। केन्द्र ने यह घोषित किया है कि इन परिवारों के कृषि सम्बन्धी रोजगार के लिए ५० हजार डालर की मदद की गई है।

त्यागी जी ने अपने वक्तव्य में कहा है कि ईसाईयों और मुसलमानों—दोनों का ही यह विश्वास है कि हिन्दू जाति को एक न एक दिन किसी एक वर्ग में मिलना होगा, दोनों ही इस होड़ में हैं कि कौन अधिक से अधिक हिन्दुओं को अपने धर्म में परिवर्तित कर सकता है।

श्री त्यागी ने अपने पत्रक में यह भी लिखा है कि विदेशी ईसाई मिशनरियों द्वारा हिन्दुओं के सामूहिक धर्म परिवर्तन की गतिविधियों को रोकने के लिए ही उन्होंने संसद में धर्म-स्वातन्त्र्य विधेयक रखा था, परन्तु अब सप्रमाण मुसलमानों की गतिविधियों भी उभर कर आ गई हैं।

महामन्त्री जी ने आर्यसमाजों और आर्यजनों को सचेत किया है कि विदेशी धर्मों के प्रचारकों की इस प्रकार की गतिविधियों से उन्हें सावधान होना चाहिए और धर्म-परिवर्तन की कोई घटना इनके सामने आए तो उसका डट कर मुकाबला करें।

आर्य मर्यादा के ग्राहक स्वयं बनों और दूसरों को बनाओ, आर्य समाज के सदस्य स्वयं बनो और दूसरों को बनाओ, हिन्दी मर्यादा—स्वयं भी पढ़ो और दूसरों को भी पढ़ाओ।

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज की देन

—प्रो. जयदेव आर्य

अपने जन्म-काल से आर्य समाज ने ही नहीं, अपितु उसके संस्थापक महर्षि दयानंद और उनके गुरु स्वामी विरजानन्द जी ने भी भारत के स्वाधीनता-आंदोलन में महत्वपूर्ण योगदान किया है। उसी योगदान का संक्षेप में परिचय देना प्रस्तुत निबन्ध का उद्देश्य है। —सम्पादक

बीसवीं सदी के प्रारम्भ में बंग-भंग आंदोलन के पश्चात् जब भारतीय क्रांतिकारी भारतीय स्वाधीनता के लिए देश-विदेश में क्रांति का शंख फूंक रहे थे, भारतीय राष्ट्रीय महासभा अंग्रेजी राज्य के प्रशस्ति गान की अपनी पुरानी परम्परा को अभी त्याग नहीं पाई थी और इसी लिए उसके अन्दर विद्यमान नर्म और गरम दल के लोगों का उस पर अधिकार जमाने के लिए जन-जोर संघर्ष हो रहा था, जिसकी प्रबल अभिव्यक्ति १९०७ में कांग्रेस के सूरत-अधिवेशन में हुई थी, उसी समय भारत और यूरोप में क्रांतिकारी आन्दोलन के जन्मदाता श्री श्याम-जी कृष्ण वर्मा ने लिखा था, "Of all movementsin India for politcal regeneration of the country none is so potent as the Arya Samaj, The ideal of that society, as proclaimedby its founder is an absolntely free & independent form of nation" इन्हीं वर्मा जी ने १९२७ में स्विटजरलैंड में काशी नगरी प्रचारिणी सभा के श्री रामनारायण मिश्र को एक पुस्तक की सामग्री दिखाते हुए कहा था कि आर्य समाज ने स्वा० दयानन्द को केवल धार्मिक नेता के रूप में ही प्रस्तुत किया है, जो उचित नहीं है। मैं उनके सही स्वरूप को दर्शाने वाला उनका जीवन-चरित्र लिखना चाहता हूं। १९०५ में प्रारम्भ बंग भंग आंदोलन में आर्य समाज की भूमिका स्वीकार हुए रोम्यां रोलां ने लिखा है, 'This' "Arya Smaj whethcr he wished it, or not prepared the way in १९०५ fcr the revolt of Bengal' पंजाब के भू० पू० मुख्यमन्त्री ज्ञानी जैल सिंह ने आर्य समाज स्थापना-शताब्दी-समारोह के अवसर पर कहा था कि जितने देशभक्त आर्यसमाज ने देश को दिए है, उतने देशभक्त किसी अकेली दूसरी संस्था ने नही दिए।

आर्यसमाज ने भारत के स्वतन्त्रता-संग्राम में जो अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है, उसकी कुछ झलक उपर्युक्त प्रामाणिक नेताओं और लेखकों के वक्तव्यों से मिल जाती है।

महर्षि दयानन्द और स्वा. विरजानन्द

भारत के स्वाधीनता संग्राम का इतिहास १८५७ की क्रान्ति से प्रारम्भ होता है। क्या महर्षि दयानन्द का इस क्रांति के नेताओं नानाजी आदि से कोई प्रत्यक्ष सम्पर्क और परिचय था और क्या ब्रिटिश सरकार अपने जीवन काल में ही उन्हें एक राजनीतिक विद्रोही फकीर मानती थी? यह प्रश्न लम्बे समय से विवाद का विषय बना हुआ है। कलकत्ता के श्री दीनबन्धु शास्त्री ने महर्षि दयानन्द की अज्ञात जीवनी प्रकाशित की है, जिस में ऋषि दयानन्द के मुख से ही १८५७ की क्रान्ति में उनके योगदान और उसके नेताओं से अपने गहरे सम्पर्कों का विस्तार पूर्वक वर्णन करवाया गया है। उनके अनुसार यह आत्मकथा ऋषि ने स्वयं अपने कलकत्ता निवास के समय कुछ लोगों को लिखवाई थी। उत्तर प्रदेश की प्राचीन समय से चली आ रही प्रसिद्ध सर्वखाप पंचायत के महामन्त्री चौ० कबूल सिंह ने उनके पुराने ऐतिहासिक रिकार्ड से ढूंढ कर उसके कासिदमीर मुश्ताक मीरासी द्वारा १८५६ में लिखित एक विवरण प्रकाशित करवाया है। जिसके अनुसार स्वा० विरजानन्द ने मथुरा के पास के एक जंगल में हुई भारी सभा देश की स्वतन्त्रता के सम्बन्ध मे एक ओजस्वी वक्तृता दी थी और बहादुर शाह जफर के शहजादे तथा नानासाहब पेशवा आदि ने उसकी वन्दना की थी।

अम्बाला के दीवान अलखधारी ने १८७२ मे कलकत्ता में लार्ड नार्थब्रुक से हुई महर्षि दयानन्द की भेंट-वार्ता का विवरण प्रस्तुत किया है, जो उनके अनुसार उन्हें उक्त वाइसराय की डायरी से मिला है। ऋषि ने इस भेंट मे स्पष्ट रूप से वाइसराय के सामने भारत को शीघ्र ही स्वतन्त्र देखने की अपनी इच्छा प्रकट की थी। और इसकी सूचना वाइसरायने लन्दन भेजकर ऋषि के कार्यों पर कड़ी नजर रखे जाने की व्यवस्था की थी इन सभी विवरणों की प्रामाणिकता की अभी तक पुष्टि नहीं हो पाई है। हां। अंग्रेजी राज्य हरावल सेना के रूप में विश्वविख्यात पादरियों की भारत को ईसाई बनाने की योजना को महर्षि के प्रचार से जो धक्का लगा था, वह भारत में ब्रिटिश राज्य की स्थिरता के लिए एक प्रबल खतरा अवश्य था। इस लिए भी उनकी गतिविधियों, शिक्षाओं और उनके भारत में बढते प्रभाव से ब्रिटिश सरकार का उस समय चिन्तित होना स्वाभाविक था। इस प्रकार की कई सम्भावनाओ के आधार पर कुछ लोगों ने ऋषि की मृत्यु मे भी ब्रिटिश कूटनीति एवं षड्यन्त्र की सम्भावना प्रकट की है। आर्यसमाज के प्रसिद्ध विद्वान प. भगवद्दत्तजी बी० ए० को अजमेर निवासी प० भागराम ने बतलाया था कि वह अंग्रेजी सरकार द्वारा महर्षि दयानन्द के कार्यकलाप की सूचना देने के लिए गुप्तचर नियुक्त किए गए थे। उनका कहना था कि यदि महर्षि के समकालीन वाइसरायों द्वारा समय-समय पर इण्डिया आफिस लन्दन को भेजी गई रिपोर्टों की जांच-पड़ताल की जाए तो महर्षि की मृत्यु के रहस्य पर कुछ प्रकाश पड़ना सम्भव है। श्री पृथ्वीसिंह मेहता ने अपनी पुस्तक 'हमरा राजस्थान' में यह भी कहा है कि १८१४ में मथुरा के समीपस्थ क्षेत्र हाथरस, मुरसान आदि के जिन जमींदारों तथा अलवर भरतपुर, करौली ग्वालियर जयपुर आदि के राजाओं ने अंग्रेजों से लोहा लिया था, उन सभी से स्वा० विरजानन्द का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा था और उनमें से एक दो को तो उन्होने राजनीति धर्म, दर्शन आदि का अध्ययन भी करवाया था। अतः १८५७ की क्रांति में उनको रुचि होनी स्वाभाविक थी। विरजानन्द के शिष्य मथुरा निवासी पं० नवनीत जो ने उनके सम्बन्ध मे एक लम्बी कविता रची थी। उसकी निम्न दो पंक्तियां विशेष महत्वपूर्ण है—

"सम्प्रदायवाद वेद विहित विरोधिन को नाशन प्रचण्डी ने। गोरे के प्रभारी ही उद्दण्ड भी उठाए दण्ड चण्ड हो प्रतिज्ञा करी प्रज्ञाचक्षु दण्डी ने॥" लगता है, किसी अंग्रेज राज्याधिकारी से बातचीत मे स्वा० विरजानन्द के स्वाभिमान को चोट पहुची है और उन्होंने नन्द विनाशक चाणक्य के समान रौद्र रूप धारण करके अंग्रेजी शासन के विनाश की प्रचण्ड प्रतिज्ञा की है सम्भव है, यह घटना कभी किसी अंग्रेज अधिकारी के पास अपनी सार्वभौमिक सभा बुलाने का प्रस्ताव ले जाने पर घटी हो। ऐसी अवस्था में क्रांति में उनकी रुचि अवश्य रही होगी। महर्षि दयानन्द ने भी सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास मे रणछोड की मूर्ति के माहात्म्य खण्डन प्रसंग में अंग्रेजों से १८५७ में लडने वाले वाघेरो की तथा संस्कृत वाक्य प्रबोध के राजनीति-प्रकरण में १८७९ में लड़ने वाले अफगानों की खुले दिल से प्रशंसा की है। इन तथा कुछ अन्य हेतुओ के आधार पर जहां विद्वानों का एक पक्ष क्रान्ति से उनका सम्बन्ध जोडता है, वहा दूसरा पक्ष हाल मे ही प्रकाशित इन की प्रामाणिकता और फलत: उनके आधार पर निकाले गए निष्कर्षों को अस्वीकार करता है। वस्तुत: जब तक इन हस्तलेखों की प्रामाणिकता तथा उनमें प्राप्त विवरणो की पूर्वसिद्ध तथ्यो से अविरोधिता और सामान्य उपलब्ध स्रोतो से उनकी सत्यता असन्दिग्ध रूप मे पुष्ट या निरस्त न हो जाए, तब तक हमारे लिए उनके सम्बन्ध मे निश्चय पूर्वक कुछ कहना अनुचित है।

राष्ट्रवाद के जन्मदाता, दयानन्द

स्वा० विरजानन्द और महर्षि दयानन्द का १८५७ की क्रान्ति से प्रत्यक्ष सम्बन्ध रहा हो या न रहा हो तथा ब्रिटिश सरकार ने महर्षि को विद्रोही मानकर उन की मृत्यु का षड्यन्त्र रचा हो या न रचा हो, पर इतना निश्चित है कि महर्षि दयानन्द ने प्रचार क्षेत्र मे आने के बाद भारतीय राष्ट्रवाद को अत्यधिक सुदृढ वैचारिक धरातल प्रदान करके एक प्रकार से भारतीय स्वाधीनता आन्दोलन की नीव अवश्य डाल दी थी। भारत के लौह पुरुष सरदार पटेल ने महर्षि के चरणो मे अपनी अन्तिम श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए इसी विचार की पुष्टि करते हुए कहा था, It was he who actually laid the foundation of Indian freedom" श्रीमती एनीबेसेण्ट ने कभी कहा था कि जब भारत माता की स्वतन्त्रता का मन्दिर निर्मित होगा तो उसमें सर्वोच्च स्थान नगे साधु महर्षि दयानन्द को दिया जाएगा। भारतीय स्वतन्त्रता आन्दोलन से सम्बद्ध जितने भी महत्वपूर्ण विषय थे, प्राय: उन सब को सर्वप्रथम एक जन-आन्दोलन का रूप देने का पूर्ण श्रेय महर्षि दयानन्द को जाता है। (क्रमश)

लाला लाजपतराय के जीवन पर आधारित एक प्रसिद्ध नाटक

शेरे पंजाब लाला लाजपतराय

ले०—श्री बी० एस० खोसला

(गतांक से आगे)

एक्ट चार

सन् १९२० ऐंग्लो वैदिक कालेज का लम्बा बरामदा, पिछली दीवार में दो दरवाजे और दो खिड़कियां हैं, बरामदे के बीच एक चौखटा स्तंभ है, इमारत मोटी ईंट व चूने की बनी हुई है, दरवाजो मे कमरे के अन्दर पड़े खाली बैंच दिखाई दे रहे हैं कमरे मे से कुछ विद्यार्थी बाहर निकले हाथों मे पुस्तकें व कापियां पकड़े जल्दी-जल्दी आपस मे बातें करते हुए दाएं-बाएं निकल जाते है, इनमे से दो विद्यार्थी दरवाजों मे ठहर जाते है किशोर के सिर करिमटी टोपी है और फकीरचन्द के लम्बी लड़ वाली पग, दोनो ने देसी जूते तंग पाजामे घुटनो तक कमीजें और घुटनो से कोई ६ इंच ऊपर चार बटनो के खुले कालर वाले कोट पहने हुए हैं।

किशोर—प्रोफेसर अग्रवाल के लैक्चर की कुछ समझ नही आई।

फकीरचन्द—समझ तो मुझे भी कुछ नही आया, किशोर मदन बहुत होशियार है इससे पूछते हैं--

मदन कमरे से बाहर निकल कर आ रहा होता है, इसका पहनावा फकीरचन्द जैसा ही है।

किशोर बात सुनना मदन।

मदन—क्या बात है ?

किशोर—बात यह है कि फकीरचन्द और मुझे अग्रवाल का लैक्चर समझ नही आया।

फकीर-किशोर कहता है कि तुम बड़े होशियार हो।

मदन—नही, मैं किस तरह से होशियार हू।

किशोर—लियाकत तो तेरे पेट मे हैं।

फकीर—किशोर की मां कहती है कि मेरे बड़े बेटे के पेट मे चार अक्षर मे जान......

किशोर—तो हमारे सारे अगले-पिछले धोने धोये जाएं, इसलिए मेरी मां तुम्हे बहुत आशीर्वाद देगी।

मदन—तुम्हारा दिमाग बड़ा तेज है वह किस तरह हो सकता कि तुम्हे प्रोफेसर अग्रवाल के लैक्चर की समझ नही आए।

किशोर—मेरा दिमाग किसी और तरफ था।

मदन—छोड़ो व्यर्थ की बातें मत करो मैं चलता हू।

जाने लगता है परन्तु फकीरचन्द उस को बाजू से पकड़ लेता है।

फकीर—मेरा दिमाग तो कक्षा में ही था परन्तु आज प्रोफेसर अग्रवाल के हवास तितर-बितर थे कह रहा था कि कालेज की पढाई छोड़ तो और सब लड़के उसके कहे पर चलें तो सबसे पहली चोट अग्रवाल साहब को ही लगेगी।

किशोर.. इतना सियाना होते भी आपने पांव पर आप कुल्हाड़ा मार रहा है।

मदन—प्रोफेसर अग्रवाल गान्धी जी का सन्देश दे रहा था कि विद्यार्थी कालेजों व विद्यालयों का बाईकाट करें और ना-मिल-वरतन-असहयोग आन्दोलन में हिस्सा लें।

फकीर—परन्तु हम किस तरह असहयोग आन्दोलन मे हिस्सा लें ? इस पर प्रोफेसर अग्रवाल ने प्रकाश नही डाला।

किशोर—कालेज छोड़कर घर बैठ जाए।

फकीर-हाथ पर हाथ रखकर ?

मदन—नही, प्रोफेसर अग्रवाल ने कहा कि महात्मा गान्धी यह चाहते हैं कि विद्यार्थी स्कूलो व कालेजो पर पिकेटिंग करें।

फकीर—मान लो कि विद्यार्थियों का पिकेटिंग सफल हो जाता है और सब स्कूल व कालेज खाली हो जाए तो प्रश्न तो वही का वही रहा।

मदन—महात्मा गांधी ने यह भी कहा कि लोगों को सड़कें बनानी चाहियें कारखानों मे कार्य करना चाहिए।

किशोर—पर मैं तो यह पूछूंगा कि लाला लाजपतराय ने इस बारे में क्या कहा है ?

मदन—लाला लाजपतराय के पास कुछ विद्यार्थी गए थे। उन्होंने कहा कि तुम अपना लाभ व नुक्सान स्वयं सोचो और फैसला करो, उन्होने कहा कि विद्यार्थियों को इस हालत में तिलांजलि देनी चाहिए, जब वे समझें कि वे अपने फैसले पर दृढ़ रह सकेंगे।

फकीर—बात तो ठीक है, हम जोश मे आकर कालेज छोड़ दें घर से खाना पानी बन्द हो जाए फिर क्या करेंगे ?

किशोर-मेरे माता पिता की बहुत इच्छा है कि मैं डाक्टर बनूं, इसलिए मैं विज्ञान पढ़ रहा हूं।

फकीर—मगर किशोर के माता-पिता चाहते हैं कि वह डाक्टर बने तो किशोर कालेज छोड़ दे तो हो सकता है कि उस के माता पिता को इतना सदमा पहुंचे कि वे उसे पारखती दे दें, प्रो. अग्रवाल के लैक्चर मे इन प्रश्नों का कोई जवाब नहीं था।

किशोर—अब विद्यार्थियों को इन प्रश्नों का उत्तर कौन देगा ?

फकीर—प्रश्न एक नही प्रश्न तो और भी कई हैं, जैसे कि हम एक वर्ष के अन्दर-अन्दर स्वराज प्राप्त कर सकते हैं। हमारे नेता यह समझते हैं कि अगर हम एक वर्ष असहयोग आन्दोलन का प्रोग्राम चला लें तो सरकारी मशीनरी में गड़बड़ हो जाएगी और अंग्रेज राज नष्ट हो जाएगा। मुझे इस बात पर विश्वास नही आता।

किशोर—मेरा विचार पूछो तो हमे लाला लाजपतराय के पास जाना चाहिए उनसे मुश्किलो का हल पूछना चाहिए।

फकीर—मेरा भी यही विचार है लाला लाजपतराय हमारी ठीक अगवाई करेंगे।

मदन—पर लाला लाजपतराय इतने बड़े व्यक्ति हैं सारी दुनिया उन्हें पूजती है। मुझे तो उनके पास जाने में डर लगता है।

फकीर—डरने की क्या बात है ?

मदन—हम उन्हें जाकर क्या कहेंगे ?

किशोर—जब जनता उनको पूजती है तो वे भी जनता को प्यार करते होंगे। चलो सामने सड़क पार उनका घर है, आओ चलें।

फकीर—वे इधर ही आ रहे हैं। वे लाला लाजपतराय ही हैं, सफेद पगड़ी वाले।

मदन—हम उनका यहीं इन्तजार करते हैं।

लाला लाजपतराय वजीरचन्द के साथ बातें करते हुए बरामदे के दूसरे हिस्से तक पहुंचते हैं। लाला जी की आयु 44 वर्ष की है। उनका पहनावा वही हैं परन्तु कपड़े कुछ बढ़िया हैं। हाथ में सोटी है। उनकी मूछों में कोई-कोई बाल सफेद है। जैसे ही वे बातें करते हैं।

लाला लाजपतराय वजीरचन्द के साथ बातें करते हुये बरामदे के दूसरे हिस्से तक पहुंचते हैं, लाला जी की आयु ४५ वर्ष की है, उनका पहनावा वही है. जो दूसरे ऐक्ट में था, परन्तु कपड़े कुछ बढ़िया है, हाथ में सोटी है, उनकी मूछों में कोई कोई बाल सफेद है, जैसे ही वे बातें करते हैं, विद्यार्थियों की संख्या बढ़ती जाती है।

वजीर—दूर इशारा करते हुये, ला. जी उस खाली जगह पर आपका लाइब्रेरी बनाने का विचार था।

लाजपत—सोच में, हां।

वजीर—नक्शा दिखाते हुये, प्रिंसिपल साहब ने यह नक्शा बनवाया है, यह पुस्तकालय की इमारत है, तीन तरफ बरामदा है, मेरा विचार है इमारत दो छत वाली होनी चाहिए, क्योंकि विद्यार्थियों की गिनती बढ़ने से नई जरूरतें पैदा हो रही है।

लाजपत—उनका ध्यान नक्शे की तरफ नही बल्कि दूर खड़े विद्यार्थियों की तरफ है, क्या कहा नई जरूरतें पैदा हो रही हैं।

वजीर—हां लाला जी लड़कों की गिनती हजार से ऊपर है।

लाजपत—परन्तु मूल की जरूरतें कुछ और हैं महात्मा गान्धी ने कहा है कि विद्यार्थियों के लिए स्कूल व कालेज से बाहर निकल आना जरूरी है।

वजीर—परन्तु लाला जी डी. ए. वी. कालेज स्वामी दयानन्द सरस्वती की यादगार जिसकी एक-एक ईंट आपने बड़ी मुश्किल के साथ अपने निजी धन को पानी की तरह बहा कर खून-पसीने को एक कर चिनी, क्या यह विद्या मैदान वीरान हो जाएगा ? उस मल्लाह के क्या कहने जो कि डावां डोल नौका को अपनी बाहों व बुद्धि के जोर से भवरों और तूफानों के मझधार से बचा लाए और शान्त जल में चप्पू के इशारे मानने लग जायें तो मल्लाह ही उसके पैंदे में छेद करके उसे डुबो दे।

लाजपत—नक्शे को हटाते हुये, आओ वजीरचन्द उन लड़कों की बात सुनें, विद्यार्थियों की ओर बढ़ रहे होते हैं कि वे भी पास आ जाते हैं और हाथ जोड़ कर नमस्ते करते हैं।

लाजपत—नमस्ते, भाई नमस्ते, किशोर को) क्या नाम है तुम्हारा काका ?

किशोर—जी मेरा नाम किशोर है।

लाजपत—किशोर, तुम्हारी मुझे बड़ी लम्बी-चौड़ी शिकायत आई है।

किशोर—हां जी, जरूर आई होगी।

लाजपत—क्या हुआ था।

किशोर—परसों की बात है, हम पंक्ति बनाकर बोर्डिंग हाऊस से कालेज आ रहे थे जिस समय कोर्ट स्ट्रीट से निकल रहे थे तो हैरल्ड साहब बैरिस्टर का लड़का घोड़े को एड़ी लगाकर अपनी कोठी से बाहर निकला, हमारी पंक्ति को तोड़ कर टाप गया, सब लड़के घोड़े की लपेट में आने के डर से बिखर गये, फकीरचन्द बड़ी मुश्किल से बचा।

(क्रमशः)

पारिवारिक सत्संग

लुधियाना [illegible] सभा की ओर से १० मई [illegible] बावला के किदवई नगर [illegible] आर्य समाज स्वामी दयानन्द [illegible] श्री रामकुमार जी आर्य के [illegible] यज्ञ के पश्चात् श्री कृपाराम जी आर्य एवं श्रीमती सुमेधा जी आर्य के मनोहर भजन हुये। इसके पश्चात् मुनि [illegible] वानप्रस्थी का जो प्रवचन हुआ, जिसे सैकड़ों लोगों ने सुना। आर्य युवक सभा की ओर से वानप्रस्थी जी ने बावला परिवार को वैदिक साहित्य भेंट किया। शान्ति पाठ तथा जयघोषों के साथ सत्संग समाप्त हुआ।

योग जिज्ञासुओं के लिए शुभ अवसर

देहरादून-योग विद्या के प्रकाण्ड पण्डित स्वामी सत्यपति जी द्वारा वैदिक साधन आश्रम तपोवन, नाला पानी देहरादून में १ जून से १५ जुलाई तक योग शिक्षण शिविर आयोजित किया जा रहा है।

प्रत्येक शिविरार्थी के लिए भोजन आदि का शुल्क स्वयं वहन करना होगा। शिविर में प्रात: व सायं कम से कम एक घण्टा क्रियात्मक योग व मध्याह्न में दर्शन व्यास भाष्य सहित कक्षा रहेगी।

—

हरियाणा आर्य वीर दल सम्मेलन

पलवल—आर्य वीर दल हरियाणा के मन्त्री श्री अजित कुमार आर्य ने १६ मई से रोहतक में होने वाले सम्मेलन के लिए अधिकाधिक आर्य वीरों को शामिल होने की अपील की है।

अपने एक लिखित वक्तव्य में उन्होंने हरियाणा के मण्डलाध्यक्षों को निर्देश दिए हैं कि वे अधिक से अधिक आर्य वीरों को गणवेश सहित सम्मेलन में लाने का प्रयास करें।

—

आर्यसमाज करोल बाग दिल्ली का वार्षिकोत्सव

नई दिल्ली—स्थानीय आर्य समाज करोल बाग का ५२वां वार्षिकोत्सव ३ मई से ११ मई तक हुआ,, जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी शालवाले, महामन्त्री श्री ओमप्रकाश जी त्यागी, आचार्य जैमिनी जी शास्त्री, स्वामी मुनीश्वरानन्द जी त्रिवेदी तीर्थ, भजनोपदेशक श्री जयदेव जी जितोई वाले तथा श्री प्रकाशचन्द जी शास्त्री आदि प्रमुख विद्वान् भाग लेंगे।

—

प्रशंसनीय

जमशेदपुर—स्थानीय आर्य समाज की ओर से प० ओमपाल शास्त्री एम० ए० (लुधियाना) द्वारा गत दिनों ७ दिवसीय कथा का आयोजन हुआ।

इस कार्यक्रम के अन्तर्गत क्योंझर जिले में आए तूफान के पीड़ितों की सहायतार्थ ७ बोरी चावल ४ बोरी चूड़ा, ५ बोरी मुरमुरे तथा १० हजार पुराने तथा नए वस्त्र भेजे गये। जिससे आर्य समाज की काफी प्रशंसा की गई।

राखरंग कस्बे में नई आर्य समाज व डी० ए० वी० स्कूल की स्थापना की गई। जिसमें आर्य कार्यकर्त्ताओं ने भारी योगदान दिया।

नवयुवक आर्य बनें

मुंगेर—आर्य कुमार सभा, बेवारा की ओर से गत दिनों बृहद् यज्ञ का आयोजन हुआ। जिसमें शान्ति प्रकाशजी शास्त्रीय महारथी (हरियाणा) श्री प० सतीशचन्द्रजी वेदाचार्य (चण्डीगढ) श्री प० वसुमित्र जी आदि अनेक विद्वानों के प्रवचन हुए।

इस अवसर पर अनेक नवयुवकों ने आर्य कुमार सभा की सदस्यता ग्रहण की और मांस-मदिरा त्यागने व शुद्ध आचरण का व्रत लिया।

आर्य विद्वानों को सुनने के लिए मुस्लिम समाज भी भारी संख्या में आता रहा।

आर्यसमाज नवांशहर का निर्वाचन

नवांशहर—आर्य समाज नवांशहर का वार्षिक चुनाव गत १० मई को साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् सम्पन्न हुआ जिसमें निम्न पदाधिकारी निर्वाचित हुए।

प्रधान—प० देवेन्द्रकुमार जी वरिष्ठ उपप्रधान—श्री वेदप्रकाश जी सरीन, उपप्रधान—श्री के० के० सैगर तथा श्री जितेन्द्र नाथ भल्ला मन्त्री—श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, उपमन्त्री—श्री चण्डीचरण कोषाध्यक्ष—श्री देवीदास जी पजनी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री वीरेन्द्र सरीन लेखा-निरीक्षक-श्री वेदप्रकाश शर्मा।

दोआबा आर्य हा० सै० स्कूल

व्यवस्थापक—श्री वेदप्रकाश सरीन, सचिव—प० वेद प्रकाश शर्मा, डब्ल्यू०-एल० आर्य कन्या हाई स्कूल व्यवस्थापक—श्री जितेन्द्रभल्ला सचिव—श्री फूलचन्द बी० एल० एम० महिला महाविद्यालय नवांशहर, सचिव—श्री जानकीदास जैन, एडवोकेट आर्य बाल विद्या मन्दिर नवांशहर, व्यवस्थापक—श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल, सचिव—श्री वीरेन्द्र सरीन।

—

सम्पादक के नाम पत्र

हिन्दी की चिंदी: स्वयं हिन्दी वालों द्वारा

'भाषा का विकास और सामाजिक विकास सहगामी होने चाहिए। पर भारत में भाषा सामाजिक विकास की अनुगामिनी बन गयी है। विकासशील देशों की भाषा भी विकासशील होती है पर भारत की अदालतों में, कार्यालयों में, सामान्य क्रिया कलाप में भी हिन्दी का विकास नहीं दीखता। सर्वाधिक दुःख इस बात का है कि जो हिन्दी की रोटियां खाते हैं, वे ही हिन्दी की उपेक्षा कर रहे हैं, पीड़ा के भरे ये शब्द हिन्दी के किसी हिन्दी-भाषी पत्रकार नहीं, चेकोस्लोवाकिया के हिन्दी विद्वान् डा० स्मेकल के हैं, जो पिछले दिनों भारत में थे।

श्री स्मेकल ने सब भारतवासियों को सम्बोधित करते हुए एक अन्य उल्लेखनीय और महत्वपूर्ण बात कही। भले ही भारत में कई प्रकार की भाषाएं बोली जाती हैं, परन्तु विदेशियों के लिए भारत एक ही है और वहां की प्रतिनिधि भाषा हिन्दी ही है। हिन्दी के साथ ही भारत की प्रतिष्ठा जुड़ी है।

बड़े आश्चर्य और खेद का विषय है कि जो बात एक विदेशी को साफ साफ दिखाई देती है, वह अंग्रेजी और अंग्रेजियत के रंग में रंगे हमारे शासकों और स्वयं हिन्दी की रोटियां खाने वाले प्राध्यापकों, पत्रकारों, बुद्धिजीवियों, साहित्यकारों आदि को दिखाई नहीं देती। उन्हें अपने विकास की चिन्ता है, हिन्दी के विकास की बिल्कुल नहीं, हिन्दी को उसका उचित स्थान दिलाने के लिए वे कभी गम्भीरता से नहीं सोचते।

यही कारण है कि स्वयं अपनी जन्म-भूमि भारत में हिन्दी की जड़ें क्षीण होती जा रही हैं और उसे शक्तिमान बनाने की ओर किसी का ध्यान नहीं है, हिन्दी भाषियों का तो सबसे कम। हिन्दी की चिंदी खुद हिन्दी वाले ही कर रहे हैं। जब तक हिन्दी का सम्बन्ध भारतीयों और विशेष रूप से हिन्दी भाषियों के व्यावहारिक जीवन से नहीं होगा, तब तक उसका विकास असम्भव है।

—विनीत गुप्त बम्बई

आर्य जगत के समाचार

मुरादाबाद में शान्ति भंग न होने दी जाए

मुरादाबाद—मुरादाबाद की हिन्दू रक्षा समिति ने प्रधान मन्त्री से मांग की है कि वे व्यक्तिगत रुचि लेकर मुरादाबाद की स्थिति सम्भालें और यहां की शान्ति भंग न होने दें।

समिति के प्रवक्ता ने बताया कि पिछले दिनों भारी मात्रा में हथियारों का पकड़ा जाना इस बात का प्रबल प्रमाण है कि मुस्लिम वर्ग के पास हथियारों का भण्डार है, जिनका प्रयोग भराजक तत्व करेंगे।

समिति ने सुझाव दिया है कि तीन दिन के लिए उचित साधन अपनाकर सारे नगर की तलाशी ली जाए और जिनके पास हथियार मिलें, उन्हें कड़ा दण्ड दिया जाए। समिति ने चेतावनी दी कि यदि सरकार ने समय पर पग नहीं उठाए तो मुरादाबाद का भविष्य चिन्ताजनक हो जाएगा।

गुरुकुल में आग

हाथरस— १६ अप्रैल की रात्रि को बिजली के तारों से निकली चिन्गारियों से कन्या गुरुकुल के खलिहान में आग लग जाने से लगभग २६,००० रुपये का गेहूं और भूसा देखते-देखते स्वाहा हो गया। गुरुकुल की कन्याओं ने आग बुझाने में अत्यधिक साहस और उत्साह से कार्य किया, परन्तु आग पर पूरा काबू अलीगढ़ से आए अग्निशमन दल ही कर पाया। सासनी कोतवाली के अध्यक्ष श्री छोटेसिंह यादव ने अत्यधिक सहायता की, जिसके लिए गुरुकुल उनका कृतज्ञ है। दानी महानुभावों से क्षतिपूर्ति के लिए आर्थिक सहायता देने की प्रार्थना की गई है।

—

मेवात में हिन्दू रक्षा सम्मेलन

नूह,-गत दिवस यहां मेवात के विभिन्न नगरों से आर्य प्रतिनिधियों की एक बैठक स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती जी की अध्यक्षता में हुई।

बैठक में निश्चय किया गया कि बड़े स्तर पर मेवात के किसी स्थान में जून माह में क्षेत्रीय हिन्दू रक्षा सम्मेलन आयोजित किया जाए। मेवात में बाहर से आए मुस्लिम मुल्लाओं की गतिविधियां इन दिनों बढ़ जाने से क्षेत्र में आतंक पैदा हो रहा है। हिन्दू रक्षा समिति को अनेक पत्र इस सम्बन्ध में प्राप्त हुए थे। इस पर हिन्दू नेता प्रो० रामसिंह महात्मा वेद भिक्षु ने मेवात का दौरा किया और यहां बैठक में भाग लिया। श्री प० सुन्दरलाल को सम्मेलन का संयोजक नियुक्त किया गया है।

स्मरण रहे कि दिल्ली से १० मील की दूरी से मेवात क्षेत्र प्रारम्भ हो जाता है।

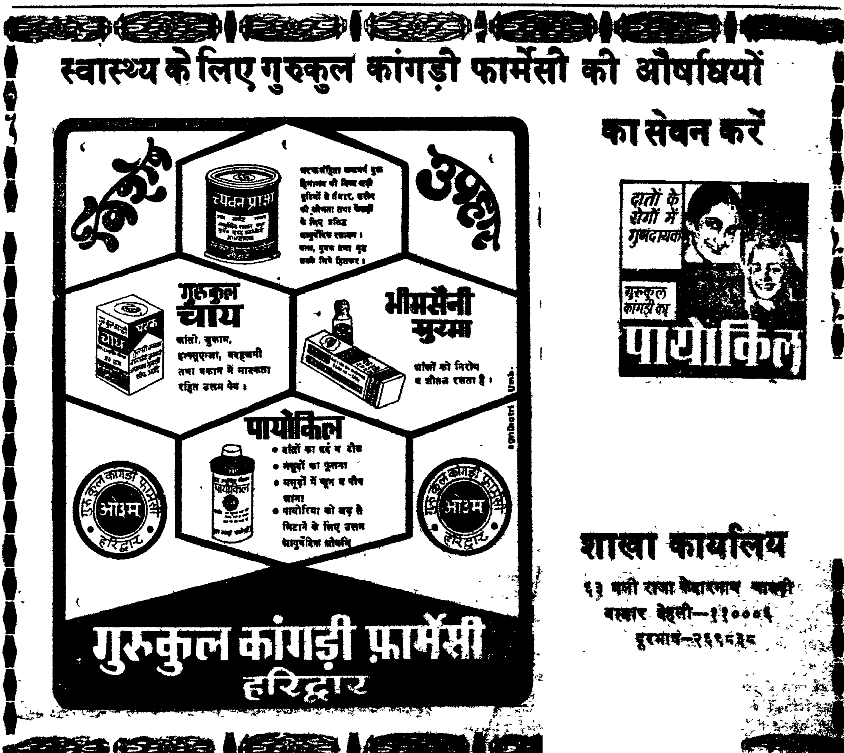
—सीता शास्त्री

आर्य समाज मोनियाना मण्डी (जिला भटिण्डा) में वेद प्रचार

आर्य समाज मोनियाना मण्डी में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से ४-४-८१ से १०-४-८१ तक वेद प्रचार किया गया। श्री पं० सुभाष जी शास्त्री तथा श्री प० रामनाथ जी पधारे। रात को खुले स्थान में मण्डी के अन्दर प्रचार होता रहा, प्रातः पारिवारिक सत्संग होता रहा। लोगों पर अच्छा प्रभाव पड़ा। सभा को २०२) वेद प्रचार के लिए भेंट किये गये।

—सुरेश आर्य

—



वीरेन्द्र जी सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वर्ष 14—अंक 12 19 ज्येष्ठ सम्वत् 2038 तदनुसार 31 मई 1981 दयानन्दाब्द 156 [illegible]

9

आर्य नेताओ के अध्ययन दल की घोषणा

हरिजनों का सामूहिक धर्मान्तरण विदेशी षड़यन्त्र

सार्वदेशिक सभा धर्म परिवर्तन विरुद्ध 30 मई से देशव्यापी आन्दोलन चलाएगी

नई दिल्ली तमिलनाडु मे नेनकाशी जिलान्तर्गत मीनाक्षीपुरम मे हिन्दू हरिजनो को बलात् मुसलमान बनाए जाने के काण्ड का अध्ययन करने के पश्चात् वरिष्ठ आर्य नेता इस निष्कर्ष पर पहुंचे है कि इसके पीछे कोई सुनियोजित विदेशी षडयन्त्र है।

मात्र [illegible] प्रधान—श्री [illegible] मन्त्री श्री [illegible] प [illegible] नाम [illegible] बडे [illegible] विदेशी षडयन्त्र [illegible] और बलात् [illegible] इस्लाम [illegible] उद्देश्य [illegible] 9 मई [illegible]।

इसमे पूर्व [illegible] ने [illegible] और [illegible] भी निरीक्षण किया जहा मुसलमान [illegible] सामूहिक रूप मे हरिजनो [illegible] और उनकी स्त्रियो को [illegible] प्रकार से अपमानित किया। अध्ययन दल को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि इस घिनौने कृत्य मे एक भी हरिजन घर को बख्शा नही गया। प्रत्येक हरिजन परिवार का धर्मान्तरण करने के लिए उन्हे बुरी तरह से पीटा, डराया धमकाया लूटा खसूटा गया और उनकी महिलाओ से नीचता पूर्वक व्यवहार किया। इस सब आक्रमण के पीछे एक ही कुत्सित भावना थी कि [illegible] हरिजन भयभीत हो कर इस्लाम स्वीकार कर लें।

उसके बाद आर्य नेताओ के अध्ययन दल ने मीनाक्षीपुरम मे इस्लामीकरण काण्ड के पीछे की असलियत को जानने के लिए वहा के लोगो से सम्पर्क किया। संयोग से अनुसूचित जाति व जनजाति) भी उसी दिन वहा थे। अध्ययन के दौरान आर्य नेताओ को

(शेष पृष्ठ ६ पर)

औरंगजेब तो जाग उठा है लेकिन शिवा जी...?

17 मई को रोहतक में हरियाणा आर्य वीर दल का सम्मेलन हुआ था। मै भी इसमे भाग लेने के लिए गया था। एक आर्य वीर ने भाषण देते हुए यह प्रश्न किया कि औरंगजेब जाग उठा है शिवा जी कब जागेगे ? वह उन प्रयत्नो का उल्लेख कर रहा था जो विभिन्न भागो मे इस्लाम के प्रचार के लिए किए जा रहे हैं। इसके साथ उस धनराशि का जिकर भी किया गया जो अरब देशो से इस काम के लिए देश मे आ रही है। कुवैत से प्रकाशित उस समाचार पत्र का जिकर भी किया गया जिसमे यह लिखा था कि भारत मे हिन्दू हरिजनो को मुसलमान बनाने के लिए एक योजना बनाई गई है और अरब देश इसके लिए रुपया देगे। उस समय उस आर्य वीर ने यह पूछा था कि औरंगजेब तो जाग उठा है शिवाजी कब जागेंगे ?

जो कुछ कहा गया है उसके मूल मे यह भावना काम कर रही है कि आज हिन्दुओं पर चारो ओर से हमला हो रहा है। युग बदल चुका है, इसलिए जरूरी नहीं कि हमला केवल हथियारो के जरिये ही हो। विचारो का हमला भी हो सकता है और धन शक्ति के माध्यम से भी। हमारे देश में दोनों ओर से हमला हो रहा है। अरब देशों के की सब कर अब [illegible] हैं, कम्यूनिस्ट देशों से भी [illegible] है और [illegible]



-श्री वीरेन्द्र-

रहे हैं। इस तरह हमारे देश मे कई प्रकार का हमला हो रहा है। भारत आज तक हिन्दुओ का देश समझा जाता रहा है। इसलिए १९४७ से पूर्व दुनिया के लोग इसे हिन्दुस्तान कहते थे। मुसलमानों और अंग्रेजो ने मिलकर इसे हिन्दुस्तान बना दिया था यानि एक ऐसा देश जहा हिन्दू ही रहते हो। उस युग में बाहर की दुनिया इस देश के मुसलमानों को भी हिन्दू ही कहती थी और आज तो शेख अब्दुल्ला भी कहते हैं कि वह हिन्दुओ की ही सन्तान है।

आजादी के बाद हमारे देश के नेताओ ने इस देश की पुरानी संस्कृति और सभ्यता को पुन स्थापित करने का प्रयास किया था। इस लिए हिन्दुस्तान का नाम भारत रखा गया। देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी को इस देश की राजभाषा बना दिया गया। सरदार पटेल और डाक्टर राजेन्द्रप्रसाद ने मिलकर सोमनाथ मन्दिर का पुनर्निर्माण खडा कर दिया। निश्चय था कि एक सम्मिलित भारत मे भारत की प्राचीन प्रतिष्ठा को फिर से जीवित करने की कोशिश की गई। मै इसे सीमित क्षेत्र के लिए कहता हूं कि सरदार पटेल और डाक्टर राजेन्द्र प्रसाद जैसे नेता इस देश को जो रूप देना चाहते थे वह न दे सके और शीघ्र ही हम से विदा हो गए। उसके बाद इस देश की बागडोर पण्डित नेहरू के हाथ आ गई उन्होने धर्मनिरपेक्षता का झंडा ऊंचा कर दिया और वे तमाम लोग जो हिन्दू और हिन्दू धर्म के विरोधी थे इस झंडे के नीचे जमा हो गए। आज हालत यह है कि हिन्दू और हिन्दू धर्म को खत्म करने के लिए अत्यधिक रुपया बाहर से आ रहा है और उन लोगो का सारा ध्यान हमारे हरिजन भाइयो की ओर जा रहा है वह ही हिन्दुओ का सबसे अधिक गरीब वर्ग है इस लिए उन्हे शोषित करने के लिए करोडो रुपया खर्च किया जा रहा है।

शिवाजी ने धर्म की रक्षा के लिए औरंगजेब के विरुद्ध तलवार निकाली थी। आज हालात बदल चुके हैं, किसी के विरुद्ध तलवार निकालने की जरूरत नही है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

सन्ध्या कथा—

हृदय को प्रभु प्रेम से भीगने दो

ओ उदीची दिक् सोमोऽधिपतिः,
स्वजो रक्षिताऽशनि रिषवः।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो,
रक्षितृभ्योनम इषुभ्यो नम एभ्यो।
अस्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं वय
द्विष्मस्त वो जम्भे दध्मः।

अ० ३-२७-४

(उदीची) ऊपर मुंह उठाने की अथवा शान्ति के अन्वेषण की (दिक्) दिशा है। इस दिशा में (सोमः) सोमरूप भगवान् (अधिपतिः) आदर्श है। (स्वज.) शान्ति का जन्म आत्मा से है यह भाव (रक्षिता) रक्षक है (अशनिः) जो आत्मा को प्राप्त कर चुके हैं, वे व्यक्ति (इषव) प्रेरक हैं। उस सोम रूप भगवान् को नमस्कार हो, रक्षक भाव को नमस्कार हो, प्रेरक वह सहायक अशनि अर्थात् आत्मा को प्राप्त करने वाले पुरखों को नमस्कार हो. इन सबको नमस्कार हो। जो हमको द्वेष करता है, जिसको हम द्वेष की आंख से देखते हैं, उस द्वेष भाव को आपकी दाढ़ में रखते हैं।

मनसा परिक्रमा का चतुर्थ मन्त्र (1)

अब तक हमने जीवन में आगे बढ़ने का निश्चय किया है, ऐश्वर्यों को प्राप्त करने का निश्चय किया और फिर उन ऐश्वर्यों से ऐ पराङ्मुख होकर विषय एवं भोग-विलासों पर विचार किया। ऐश्वर्य प्राप्त करने के बाद हमने विषयों के स्वरूप पर विवेचन कर उनकी घातक शक्ति एवं उनके तीव्र विष का पता पाया और हमने देखा मनुष्य इनमें बुरी तरह फंसा रहता है। इनसे छुटकारा पाना कठिन है, एक कवि ने इसकी कविता को अनुभव करते हुए कहा है—

भिक्षाऽशनं तदपि नीरस मेक वयम्,
शय्या च भूः परिजनो निजदेह मात्रम्।
वस्त्रं च जीर्णशत खण्ड मलीन कन्था:
हा हा तथापि विषया न परित्यजन्ति।

अर्थात्—मनुष्य भीख मांग कर खाता है, वह नीरस भोजन भी दिन में एक ही बार मिलता है, जमीन पर सोता है, कोई पारिवारिक व्यक्ति नहीं, कपड़े जीर्ण-शीर्ण हैं और गुदड़ी में लिपटा रहता है तो भी विषय इस दुर्दशा युक्त व्यक्ति को भी नहीं छोड़ते हैं हमारी आपकी तो बात ही क्या है?

फिर एक दृष्टान्त दिया है—

कृशः काणः खञ्जः श्रवणरहित-
पुच्छविकलः।
व्रणीपूति: क्लिन्न: कृमिकुल शतैरा-
कृत तनुः।
क्षुधाक्षामो जीर्णो, पिठरज कपालार्पित
गल।
शुनीमन्वेति श्वा हतमपि च हन्त्येव
मदनः॥

अर्थात्—एक कुत्ता कमजोर है, काना है, लंगड़ा है, कान से रहित है, पूंछ कट चुकी है- देह में बड़े २ फोड़े निकले हुये हैं और घाव हैं तथा शरीर सैंकड़ों बिलबिलाते कीड़ों से ढका हुआ है. भूख से कृश जीर्ण, धूल में लिपटा हुआ कुत्ता, कुतिया के पीछे लगा रहता है, अरे! दुःख है कि ऐसे मरे हुये को भी कामदेव (विषय) मार रहा है।

इन विषयों से बचने के लिए वैराग्य व्रत के धारण ने सहायता पहुंचाई। हृदय प्रभु प्रेम से भीग गया। एक म्यान में दो तलवारें नहीं रह सकती अब साधक उदीची दिशा में बढ़ने लगा। 'उदीची' शब्द उद्+अंच से बना है। इसका अर्थ है, ऊपर की ओर गति करना। अब उदीची दिक् अर्थात् मुंह ऊपर उठाने की दिशा की ओर वह बढ़ने लगा है। अर्थात् अब शान्ति की खोज साधक का लक्ष्य हो गया है।

वेद सुधा

एक कुत्ता कमजोर है, काना है, लंगड़ा है, कान से रहित है, पूंछ कट चुकी है, देह में बड़े-बड़े फोड़े निकले हुए हैं। और घाव हैं तथा शरीर सैंकड़ों बिलबिलाते कीड़ों से ढका हुआ है, भूख से कृश-जीर्ण, धूल में लिपटा हुआ कुत्ता कुतिया के पीछे लगा रहता है, और दुःख है कि ऐसे मरे हुए को भी कामदेव (विषय) मार रहा है।

'उदीची दिक्' ऊपर उठने की दिशा का अधिपति 'सोम' है। सोम शब्द 'षुञ्' धातु से बनता है जिसका अर्थ है निचोड़ना अथवा रस निकालना। परमात्मा शान्ति का सरोवर है. भक्तों के हृदय में वह शान्ति का रस निचोड़ रहा है। वह 'सोम' क्या है? इससे शान्ति निकालने के लिए क्या करना होगा?

'सोम' को संस्कृत में कहते हैं, 'सौम्यता' और इसका अर्थ है नम्रता, शीतलता, मधुरता, मीठा बोलना, कोमल व्यवहार, मीठा स्वभाव, भगवान् के लिए प्रेम भक्ति। इससे ही शान्ति एवं आनन्द मनुष्य को मिलता है यह सोम रस है।

'सौम्यता या नम्रता मनुष्य का एक आभूषण है। जो लोग अकड़े रहते हैं हर समय, उनकी एक न एक दिन गर्दन टूटती है जरूर। तेज तूफानी आन्धी में अकड़ने वाले वृक्ष टूट जाते हैं, नमने वाले वृक्ष और बेलों का कुछ नहीं बिगड़ता। तीव्र झोंकों में झुक जाने से वे बच जाते हैं। रावण अकड़ा नष्ट हो गया। क्या नहीं था, रावण के पास—बस शान्ति नहीं थी। हिटलर अकड़ा नष्ट हो गया, क्या नहीं था, हिटलर के पास—पर, शान्ति नहीं थी। युगाण्डा का ईदी अमीन अपनी अकड़ के कारण नष्ट हो गया। भुट्टो अपनी अकड़ के कारण समाप्त हो गया। सोम के उपासक के हृदय में दैवी सम्पदा आने से शान्ति आ जाती है। दैवी सम्पदा किसे कहते हैं—

तेजः क्षमा धृतिः शौचमद्रोहोनाति-
मानिता।
भवन्ति सम्पदं दैवीमभि जातस्य
भारत।

हे अर्जुन! सुन 'दैवी सम्पदा' वालों के मुख मण्डल पर तेज, क्षमा, धृति, पवित्रता, अद्रोह, घमण्ड का न होना विद्यमान रहता है। उन्हें प्रत्येक अवस्था में शान्ति ही शान्ति दिखाई देती है।

महर्षि दयानन्द के जीवन चरित्र को देखने से पता चलता है कि उन्होंने अपने जीवन में सोम की उपासना की थी। परिणाम यह हुआ कि उनके जीवन में कोई भी कष्ट अपने मार्ग से विचलित न कर सका। कोई भी प्रलोभन विषयों की ओर आकृष्ट न कर सका। उनके विरोधी उन्हें जब ज्ञान और तर्क में हरा न सके तो उन्होंने एक आकर्षक औरत को उनके पास भेजा और उसे प्रलोभन देकर कहा कि जाओ और शोर मचा दो कि दयानन्द ने मुझे छेड़ा है। इस औरत [illegible] कर [illegible] एक सुन्दर युवती [illegible] थी। वह [illegible] थी। [illegible] उनके सौन्दर्य की ओर भी ध्यान दिया था, पर जब वह स्वामी जी के दरवाजे पर पहुंची तो उनके चेहरे के तेज और उसमें विद्यमान शान्ति को देखकर इतनी प्रभावित हुई कि शोर मचाना तो दूर उसने एक-एक कर अपने सभी आभूषण उतार फैंके, और रोने लगी। स्वामी जी ने उसे कहा — मां, क्यों रोती हो? सभी बातें सुनकर स्वामी जी ने उसकी आत्मा को जागृत किया। और वह रोती हुई बोली, मेरी रक्षा करो महाराज, मेरे अपने आप से, मेरे लोभ से, मेरे पाप से मेरी रक्षा करो। इसके विपरीत 'आसुरी सम्पदा' के स्वभाव वाले व्यक्तियों का भी गीता में उल्लेख है—

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्य-
मेव च।
अज्ञान चाभिजातस्य पार्थ सम्पद-
मासुरीम्॥

हे अर्जुन! जो लोग पाखण्ड, घमण्ड, अभिमान, क्रोध, और कठोर वाणी अपनाते हैं वे आसुरी सम्पदा वाले हैं। इस प्रकार सोम के अर्थ हैं मिठास, झुक जाना, नम्रता। वैराग्य धारण करने के बाद यदि हममें नम्रता न आई, तो वह वैराग्य बेकार है। आज साधु और सन्तों में घमंड आ जाता है। पर, सच्चा साधु नम्र होता है अतः उपासक कहता है, मैं सोमस्वरूप है परमात्मा को पुकारता हुआ स्वयं भी सौम्यता=नम्रता की भावना को जीवन में धारण करता हूं। मैं सौम्य बनता हूं। महान् बनकर भी हम सौम्य नम्र बनें।

Be humble if thou wouldest attain to wisdom and Be humblier still where wisdom thou hast mastered.

यदि आप बुद्धि प्राप्त करना चाहते हैं तो नम्र बनो, यदि आप बुद्धि प्राप्त कर चुके हैं तो और भी अधिक नम्र बनो। प्रभु के सोम गुण को धारण करने से मनुष्य में मादकता आ जाती है, मस्ती आ जाती है. अथर्ववेद में एक मन्त्र में उपासक कहता है—

उन्मादयत मरुत उदन्तरिक्ष मादय,
अग्न उन्मादया त्वमसौ मामनु शोचतु,

अथर्व १-१३०-४

हे हवाओ! मुझे पागल बना दो।
हे आकाश! मुझे दीवाना बना दो।
हे अग्नि! तुम भी अपना जीवन मुझे दो।

यह है सोम की प्राप्ति। सोम की मादकता। जिसके हृदय में सोम प्रभु प्रकाश देता है उसकी वाणी में मधुरता आ जाती है, चेहरे पर तेज, और सोम तक पहुंचते ही—

भिद्यते हृदयग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्व संशयाः,
क्षीयन्ते चास्य कर्माणि तस्मिन् दृष्टे
परावरे।

[illegible] हृदय की गांठें [illegible] सभी संशय नष्ट हो जाते हैं [illegible] [illegible] (क्रमशः)

—[illegible]

ओ३म्

ये पन्थानो बहवो देवयाना अन्तरा द्यावापृथिवी संचरन्ति ।
ते मा जुषन्तां पयसा घृतेन यथा क्रीत्वा धनमाहराणि ।

अथर्व० ३।१५।२।

भावार्थ—इस पृथिवीलोक और द्युलोक के मध्य में जो बहुत से व्यापार करने के उत्तमोत्तम तरीके वैश्य के द्वारा व्यवहार में लाये जाते हैं, उन्हें अपनाकर हम लोग दूध-घी आदि पुष्टिकारक भोज्य पदार्थों से सदा सम्पन्न रहें । जिससे हमारे शरीर और बुद्धि सदा सुपुष्ट बने रहें । और हम लोग माल खरीद, और उसे बेच कर सम्पत्ति का संग्रह करते रहें । अर्थात् हमारे पास प्रचुर मात्रा में धन सदा बना रहे । इस कार्य में ईश्वर हमारी सदा सहायता करता रहे ।

—सम्पादकीय—

बीड़ी और सिगरेट की राजनीति

ऐसा प्रतीत होता है कि अकाली पंजाब में शान्ति न होने देंगे । वह कभी कोई प्रश्न खड़ा कर देते हैं, कभी कोई खड़ा कर देते हैं । एक समस्या का समाधान निकलता नहीं कि वे दूसरी शुरू कर देते हैं । इसका परिणाम है कि पंजाब में साम्प्रदायिक वातावरण बहुत अधिक बिगड़ रहा है । अब उन्होंने अमृतसर में बीड़ी और सिगरेट की दुकानें बन्द कराने का अभियान आरम्भ कर दिया है । कोई आन्दोलन शान्तमय ढंग से किया जाये तो उस पर किसी को आपत्ति नहीं हो सकती । परन्तु जब डण्डे के जोर से कुछ करवाने का प्रयत्न किया जाए, तो वातावरण दूषित हो जाता है । और ऐसा प्रतीत होता है कि पंजाब मे भी ऐसी स्थिति पैदा हो जायगी ।

जहां तक बीड़ी और सिगरेट को बन्द कराने का प्रश्न है, आर्यसमाज अकालियों से पूर्णतया सहमत है, अपितु एक पग और भी आगे जाता है और वह चाहता है कि केवल बीड़ी और सिगरेट की दुकानें ही बन्द न हों, उसके साथ शराब, मांस और सब मादक वस्तुओं की दुकानें बन्द होनी चाहिए । यदि अकाली साम्प्रदायिक सद्भावना से प्रेरित होकर हिन्दुओं को भी साथ लें और साथ ही यह भी कहें कि वे शराब, मांस अफीम और भंग आदि सब मादक वस्तुओं को बन्द करवाना चाहते हैं, तो आर्यसमाज इसमें उन्हें अपना पूरा सहयोग देने को तैयार है । परन्तु जो कुछ अकाली कर रहे हैं, वह तो एक राजनीतिक भावना से प्रेरित होकर ही किया जा रहा है । उन्हें यह मालूम है कि बीड़ी और सिगरेट की दुकानें केवल हिन्दू ही चलाते हैं । इसलिए हिन्दुओं को परेशान करने के लिए यह आन्दोलन शुरू किया गया । इस सम्बन्ध में उनसे यह भी पूछा जा सकता है कि अमृतसर को बने अब लगभग चार सौ वर्ष हो गये हैं । इसमें महाराजा रणजीत सिंह का शासन भी रहा है और पिछले पन्द्रह वर्षों में दो बार अकाली दल भी सत्तारूढ़ रहा है । न तो महाराजा रणजीत सिंह ने सिगरेट और बीड़ी पर कोई प्रतिबन्ध लगाया था न अकालियों ने । जो अकाली आज यह कह रहे हैं कि यह बन्द होना चाहिए । वे उस समय चुप क्यों थे जिस समय पंजाब के शासन की बागडोर उनके अपने हाथ में थी । वास्तविक स्थिति यह है कि अकाली केवल बीड़ी और सिगरेट पर ही जोर दे रहे हैं । वे शराब का नाम नहीं लेते । क्योंकि अकाली दल के कई नेता स्वयं शराब पीते हैं । सिक्ख गुरुओं ने केवल तम्बाकू के विरुद्ध ही अपनी भावनाएं व्यक्त नहीं की, वे शराब के भी वैसे ही विरोधी थे । परन्तु आज की राजनीति अकालियों के हाथ में है और अकाली शराब के विषय में इसलिए नहीं बोलते क्योंकि उनके कई नेता शराब पीते हैं ।

प्रश्न पैदा होता कि आर्यसमाज को इसके विषय में क्या करना चाहिए ? आर्यसमाज बीड़ी और सिगरेट का वैसा ही विरोधी है, जैसे कि अकाली, कुछ अधिक ही है, कम नहीं । परन्तु आर्यसमाज शराब और मांस का भी विरोधी है । इसलिए हम अकालियों के इस आन्दोलन का विरोध करना नहीं चाहते । केवल इतना ही स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि हमारी सहानुभूति उसी आन्दोलन के साथ होगी, जो शान्तमय हो । हम यह तो कर सकते हैं कि जो व्यक्ति सिगरेट या बीड़ी पीते हैं, उनसे जाकर हाथ जोड़ कर कह दें । परन्तु हम उनकी दुकानें डण्डे के जोर से बन्द करवाने का प्रयत्न नहीं करेंगे । उसकी प्रतिक्रिया अच्छी नहीं होगी । बल्कि लोगों में विरोधी भावना पैदा होगी । हम यह भी समझते हैं कि शराब बीड़ी और सिगरेट से अधिक हानिकारक है । और जहां तक हमारे धर्म का सम्बन्ध है, उसमें न शराब की अनुमति दी गई है न मांस की और न बीड़ी और न सिगरेट की । इसलिए हम तो चाहेंगे कि यह सब चीजें पंजाब में बन्द कर दी जायें । परन्तु हम अपने आपको किसी धोखा में रखना नहीं चाहते और न किसी और को धोखा देना चाहते हैं । हम जानते हैं कि हमारी शक्ति और हमारे साधन सीमित हैं । इसलिए जो भी आन्दोलन करेंगे, वह ऐसा होगा जिसके द्वारा हम अपने देशवासियों को समझा सकें कि वे इस प्रकार की वस्तुओं का बहिष्कार कर दें, जिनका मनुष्य के शरीर पर और मन मस्तिष्क पर प्रभाव अच्छा न हो । परन्तु पंजाब में जो वातावरण आज बन गया है और अकालियों की जो स्थिति है, उसमें आर्यसमाज और अकाली दल में आपस का कोई सहयोग होता दिखाई नहीं देता । विशेषकर इसलिए भी कि अकाली जो कुछ कर रहे हैं, वह राजनैतिक दृष्टिकोण से है । कहने को तो वे कहते हैं कि उनका धर्म और उनकी राजनीति एक दूसरे से अलग नहीं हो सकती । परन्तु इस समय उन्हें अपने धर्म की इतनी चिन्ता नहीं, जितनी अपनी राजनीति की । जो कुछ वे कर रहे हैं, उसके दो रूप हैं । एक यह कि वे पंजाब की वर्तमान कांग्रेस सरकार के लिए कुछ नई कठिनाईयां पैदा करना चाहते हैं । जब वे उन व्यक्तियों की दुकानें बन्द करवाने का प्रयत्न करेंगे, जो बीड़ी और सिगरेट बेचते हैं, तो उसकी प्रतिक्रिया अच्छी न होगी । न केवल वह दुकानदार ही दुःखी होंगे, परन्तु सब हिन्दुओं में यह भावना पैदा होगी कि यह अभियान उनके ही विरुद्ध है । इस प्रकार अकाली एक तीर से दो पक्षी मारने का प्रयत्न करेंगे । वे सरकार को भी तंग करेंगे और हिन्दुओं को भी तंग करेंगे । लेकिन वे यह नहीं देख रहे कि इसका परिणाम आगे चल कर क्या होगा ? पंजाब में अकाली हिन्दुओं के सहयोग के बिना अपनी कोई भी सरकार न तो बना सकते हैं और न चला सकते हैं । ऐसी स्थिति में यदि वे हिन्दुओं को तंग करेंगे तो हिन्दुओं का विश्वास खो बैठेंगे और कल को जब कभी चुनाव होंगे तो हिन्दू कभी भी उनका समर्थन नहीं करेंगे । इसलिए अन्त में अकाली घाटे में ही रहेंगे ।

परन्तु आर्यसमाज को अकालियों की राजनीति की इतनी चिन्ता नहीं । जितनी इस बात की कि पंजाब के हिन्दू अपने आपको निसहाय न समझें । इसलिए यह आवश्यक है कि इस विषय में आर्यसमाज अपनी स्थिति स्पष्ट कर दें । मैं पंजाब के सब आर्यसमाजियों, विशेषकर आर्यसमाजों के अधिकारियों से यह निवेदन करना चाहता हूं कि वे अपने साप्ताहिक सत्संग मे यह स्पष्ट कर दें कि आर्यसमाज मांस, शराब, बीड़ी सिगरेट और इस प्रकार की दूसरी मादक वस्तुओं का प्रबल विरोधी है । आर्यसमाज यह भी चाहता है कि इन सब की बिक्री बन्द हो जानी चाहिए । परन्तु आर्यसमाज अकालियों के इस अभियान का समर्थन करने को तैयार नहीं, क्योंकि यह बीड़ी या सिगरेट के विरुद्ध नहीं है यह वास्तव में हिन्दुओं को तंग करने के लिए शुरू किया जा रहा है । इसलिए आर्यसमाज अकालियों के किसी भी ऐसे आन्दोलन या अभियान का समर्थन नहीं कर सकता, जहां बलात् किसी को कोई काम करने के लिए विवश किया जाये । बीड़ी और सिगरेट की दुकानें बन्द करवानी हैं, तो उसका एक सभ्य ढंग है और वह यह कि जो लोग इस प्रकार का व्यापार करते हैं, उनसे मिलकर उन्हे समझाया जाये और उनसे कहा जाये कि वे यह काम बन्द कर दें । यदि अकाली इस प्रकार का कोई आन्दोलन प्रारम्भ करने को तैयार हैं, तो आर्यसमाज भी उसमें अपना पूरा सहयोग देने को तैयार है । परन्तु यदि अकाली यह चाहें कि डण्डे के जोर से पंजाब में उनकी बात मानी जाये तो यह न होगा । इसलिए सब आर्यसमाजियों को इस विषय में अपनी नीति स्पष्ट कर देनी चाहिए और जनता से जाकर कहना चाहिए कि जिस उद्देश्य के लिए अकालियों ने यह आन्दोलन प्रारम्भ किया है, हम उससे तो सहमत हैं । परन्तु उस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए जो ढंग अपनाया गया है; हम उसके विरोधी हैं ।

—वीरेन्द्र

पंजाब की आर्यसमाजों की सेवा में

जैसा कि समाचार पत्रों द्वारा पूर्व सूचित किया जा चुका है कि आर्य प्रतिनिधिसभा का निर्वाचन ११,१२ जुलाई १९८१ को पटियाला में हो रहा है । सभा के प्रतिनिधि प्रायः समाजों ने गत वर्ष ही ३ वर्षों के लिए निर्वाचित कर दिये थे जिन आर्यसमाजों ने अब तक नहीं किए वह १२ जून ८१ से पहले अपने प्रतिनिधि निर्वाचित करा कर सभा से स्वीकार करा लें और नियमानुसार अपना वेद प्रचार दशांश तथा आर्य मर्यादा का शुल्क भी भिजवा दें । ताकि उन्हें अधिवेशन का एजण्डा और प्रवेश पत्र भिजवाया जा सके ।

२. सभी आर्यसमाजों से यह भी निवेदन है कि वह अपने वार्षिक निर्वाचन भी नियमानुसार सभा के अधिवेशन से पूर्व कर लें ।

३. जिन समाजों में सभा प्रधान जी ने तदर्थ समितियां बना रखी हैं वह उन की आज्ञा के बिना निर्वाचन न करें ।

४. जिस समाजों में निर्वाचन के कारण कोई मतभेद चल रहा हो वह अपने निर्वाचन सभा के द्वारा ही करवाएं ।

—रामचन्द्र जावेद, सभा-मन्त्री

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज की देन

—प्रो. जयदेव आर्य

डा. राजेन्द्र प्रसाद के शब्दों में जिन बातों पर महात्मा गान्धी ने जोर दिया, उन सबका श्री गणेश महर्षि दयानन्द उनसे 50 वर्ष पूर्व कर चुके थे। जहां गांधी जी ने नमक सत्याग्रह 1630 में आरम्भ किया, वहां महर्षि दयानन्द ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में नमक एवं गरीबों द्वारा वन से काटी जाने वाली लकड़ी एवं घास पर लगने वाले कर की आलोचना 1875 में ही की थी।

स्वदेशी वस्तुओं, स्वदेशी राष्ट्र-भाषा हिन्दी, स्वदेशी सांस्कृतिक भाषा संस्कृत, स्वदेशी उद्योग, स्वदेशी संस्कृति, स्वदेशी शिक्षा, स्वदेशी राज्य, स्त्री शिक्षा, अनिवार्य शिक्षा, गोरक्षा, स्वदेशी न्याय-व्यवस्था तथा ईसाईयत के स्थान पर स्वदेशी वैदिक धर्म के पक्ष में और भारत की एकता के प्रमुख शत्रु जाति प्रथा और अस्पृश्यता के विरुद्ध तुमुल आन्दोलन सर्वप्रथम महर्षि दयानन्द ने ही आरम्भ किया था।

किस्त - 2

जिस स्वराज्य शब्द को दादा भाई नैरोजी ने कांग्रेस के मंच से १९०६ में उच्चारित किया, उसका उद्घोष महर्षि दयानन्द उससे बहुत पूर्व अपने ग्रन्थों में कर चुके थे। तिरोल के अनुसार उनके स्वदेशी और स्वराज्य का स्वरूप हिन्दू राष्ट्रवाद के आदर्श 'राजनीतिक स्वतंत्रता' से भी कहीं अधिक व्यापक और विस्तृत था। मेरा विचार है कि नैरोजी ने यह शब्द सत्यार्थ प्रकाश से ही ग्रहण किया होगा क्योंकि आर्यसमाज लन्दन की १८८६ की कार्यवाही में उनके वहां उपस्थित होने का उल्लेख मिलता है। श्याम जी के पट्टशिष्य वीर सावरकर ने जो १९०७ में १८५७ की क्रान्ति को विद्रोह नहीं, अपितु प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम घोषित किया उसमें भी सम्भवतः श्याम जी को कुछ प्रेरणा सत्यार्थ प्रकाश के पूर्वोद्धृत मत से प्राप्त हुई है।

यह सत्य है कि महर्षि दयानन्द मूलतः कोई राजनीतिक व्यक्ति नहीं थे, अपितु उनकी राजनीति, उनका समाज-शास्त्र और अर्थशास्त्र ये सभी कुछ उनके धर्म-शास्त्र वेद से निःसृत हुए थे। उन्होंने ब्रिटिश साम्राज्य के विरुद्ध कोई सीधा आन्दोलन नहीं छेड़ा था। अपितु सर्वप्रथम एक ऐसा समाज निर्माण करने का आन्दोलन छेड़ा था, जो पूर्णरूप से सामाजिक न्याय एवं समता पर आधृत हो और उसके फलस्वरूप वह विदेशी गुलामी के जुए से स्वयं को मुक्त कर सके। 'स्वाधीनता से सामाजिक न्याय की स्थापना पहले' के दयानन्द एवं उनके शिष्य रानाडे सम्मत इस सिद्धान्त को प्रसिद्ध एम० एन० राय ने भी एक क्रान्तिकारी धारणा माना है। पश्चात्कालीन भारतीय नेतात्रयी में से एक विपिन चन्द्र पाल ने महर्षि प्रतिपादित समाज-व्यवस्था को फ्रेंच क्रान्ति के आदर्श से उत्तम आदर्श से घोषित किया था। यदि ऋषि दयानन्द इस धार्मिक और सामाजिक आन्दोलन को न छेड़ते तो भारत में राजनीतिक आन्दोलन के इस प्रकार सफल होने का प्रश्न न उठता। इसीलिए एक अंग्रेज अधिकारी कर्नल हार्कोर्ट ने स्वामी श्रद्धानन्द से कहा था कि यदि आपका समाज इस आदर्श के अनुसार बन जाए तो हमें आज ही भारत छोड़ना पड़े।

ऋषि दयानन्द के शिष्य :

ऋषि दयानन्द ने जहां स्वराज आन्दोलन को उपयुक्त वैचारिक ठोस धरातल पर प्रतिष्ठित किया, वहां उन्होंने देश को भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम में प्रत्यक्ष भूमिका निभाने वाले कई योग्य शिष्य भी प्रदान किये। इनमें से इन्दौर, बड़ौदा एवं उदयपुर के राजा क्रान्तिकारियों तक की सक्रिय सहायता करते रहे। स्वा० नित्यानन्द और राज्यरत्न आत्मा राम जी भी बड़ौदा नरेश को राष्ट्रीय कार्यों में प्रेरणा और मार्गदर्शन देते थे। महाराजा बड़ौदा ने तो १९२० में जार्ज पंचम के राज्यारोहण समारोह में दरबारी शिष्टाचार का उल्लंघन करके अंग्रेजी साम्राज्य की अवज्ञा की थी तथा महाराजा उदयपुर उसमें किसी बहाने से सम्मिलित नहीं हुए थे। महाराजा बड़ौदा ने १९३१ और ३५ में भारत की स्वतन्त्रता का समर्थन करते हुए स्वतन्त्र भारत में अपनी रियासत मिला देने की घोषणा की थी।

इन राजाओं के अतिरिक्त उनके कई शिष्यों ने प्रत्यक्षतः स्वाधीनता-संग्राम का नेतृत्व किया। समस्त उत्तर भारत में स्वाधीनता संग्राम के प्रारम्भिक संचालक एवं नेता प्रायः महर्षि दयानन्द के ही शिष्य थे। राजस्थान में उनके शिष्य कृष्ण सिंह बारहट ने, तो पंजाब में स्वयं ऋषि के हाथ से यज्ञोपवीत लेने वाले स्व० अर्जुन सिंह ने अपनी तीन पीढ़ियों के रक्त का तेल देकर स्वतन्त्रता की मशाल को जलाए रखा। कृष्ण सिंह के दो पुत्रों केसरी सिंह तथा जोरावर सिंह और एक पौत्र प्रताप सिंह बारहट तथा अर्जुन सिंह के तीन पुत्रों—स० किशन सिंह, अजीत सिंह, स्वर्ण सिंह और पौत्र स० भगत सिंह ने क्रान्ति-यज्ञ में अपनी आहुति दी। पंजाब के ही स्वा० श्रद्धानन्द ने अपने एक पुत्र इन्द्र विद्यावाचस्पति के साथ असहयोग आन्दोलन में भाग लिया, तो उनके दूसरे ज्येष्ठ पुत्र हरिश्चन्द्र ने क्रान्ति-आन्दोलन में। स्वा० जी ने १९१९ में चांदनी चौक में घण्टाघर के सामने गोरों की संगीनों के आगे अपनी छाती खोल उन्हें अपनी संगीनें झुकाने पर विवश कर दिया था, तो मुसलमानों की प्रार्थना पर जामा मस्जिद के मेम्बर से हिन्दू-मुस्लिम एकता का सन्देश देकर एक अनुपम कार्य किया था। उनका अपने समय के कांग्रेस के सर्वोच्च नेताओं में अन्यतम स्थान था और १९१९ में वह दिल्ली के बेताज बादशाह माने थे। पंजाब के ही स्वा० सोमदेव ने अपनी आग उगलती लेखनी और वाणी से पहले पंजाब में क्रान्ति ज्वाला प्रज्वलित की, तो फिर उत्तर प्रदेश रामप्रसाद बिस्मिल और राजा महेन्द्र प्रताप को क्रान्ति-यज्ञ में दीक्षित किया।

गुजरात के श्याम जी कृष्ण वर्मा ने जिन्हें महर्षि ने आक्सफोर्ड में असिस्टेन्ट प्रोफैसर लगवाया था, भारतीय क्रान्ति आंदोलन को जन्म दिया और वीर सावरकर, मदन लाल ढींगड़ा, सरदार सिंह राणा, मैडम कामा और ला. हरदयाल जैसे अनेकानेक लोगों को क्रान्ति पाठ पढ़ाया। क्रान्तिकारियों की बाईबिल सोशियोलोजिस्ट पत्र, उनके तीर्थ लन्दन के इण्डिया हाउस एवं इण्डिया होमरूल सोसाइटी के वही संस्थापक थे। महर्षि के ही अन्यतम शिष्य पूना के जस्टिस महादेव गोविन्द रानाडे कांग्रेस में माडरेट दल का आदि नेता और गांधी जी के राजनीतिक गुरु गोपाल कृष्ण गोखले के भी गुरु थे। इस प्रकार भारतीय स्वाधीनता के लिए किए जा रहे आन्दोलन की दोनों धाराओं—क्रान्तिकारी और कांग्रेस—के आदि नेता प्रायः महर्षि दयानन्द के ही पट्ट शिष्य थे। कांग्रेस में भी गर्म दल के तीन नेताओं—लाल, बाल, पाल—में प्रथम नेता लाला—लाजपत राय आर्य समाज के स्तम्भ थे और केवल ऋषि दयानन्द को ही अपना गुरु मानते थे। कांग्रेस को अंग्रेज भक्ति के मार्ग से हटाकर उग्र राष्ट्रवादी आन्दोलन बनाने में उनका विशेष हाथ था।

स्वाधीनता-संग्राम में आर्यसमाज

महर्षि के पश्चात् आर्य समाज की बहुमुखी राष्ट्रीय गतिविधियों से भारतीयों में जो चेतना, आत्मसम्मान, आत्मविश्वास आत्मनिर्भरता, निज संस्कृतिगौरव, गतिशीलता एवं कार्यकुशलता का विकास हुआ उससे ब्रिटिश सरकार आशंकित हो उठी और आर्य समाज के नेताओं की राजनीतिक आन्दोलनात्मक गतिविधियों से उसने आर्य समाज को एक विद्रोही राजनीतिक संस्था मान लिया। इसके फलस्वरूप आर्य समाज की संस्थाओं और आर्य समाजियों पर सरकार की कड़ी दृष्टि रहने लगी। आर्य समाजी नौकरी, वह भी विशेषकर सैनिक, के अयोग्य माने जाने लगे. आर्यसमाजी उपदेशकों का आचारावर्ती में जाना होने लगा; आर्य समासद दस नम्बरी हो गए, आर्यसमाजी सैनिकों की यज्ञोपवीत उतारने और सरकारी कर्मचारियों को आर्यसमाज छोड़ देने के आदेश मिलने लगे, पानीपत के उपायुक्त ने तो प्रतिष्ठित नागरिकों को आर्यसमाजियों को नजरबन्द करने की प्रेरणा दे डाली, आर्यसमाज मन्दिरों को विद्रोह के अड्डे मानकर उनकुओं पर भी नजर रखी जाने लगी। आर्यसमाज नरेला के संख्या हवन कर रहे ७० व्यक्तियों को पकड़ कर पीड़ा दी गई और दो को तो छः मास तक लालकिले के तहखाने में बन्द रखा गया।

पंजाब के गवर्नर माइकल ओडवायर ने पंजाब को 'The only great province which made really serious war effort' कहा है और इसका कारण वह केवल आर्यसमाज को मानता था। इसी विचार की अभिव्यक्ति सरवेलेण्टाइन शिरोल ने भी की थी। इसी कारण १९०२ में इलाहाबाद १९०५ में रावलपिंडी और १९०९ में पटियाला रियासत में आर्यसमाज और सत्यार्थ प्रकाश को राजद्रोही मानकर उन पर अभियोग चलाए गए। कराची में आर्य समाज की तलाशी हुई और और उसके मन्त्री पर राजद्रोह का अभियोग चला। पटियाला राज्य में रातों-रात ८५ प्रमुख आर्यसमाजी नेता बन्दी बना लिए गए और आर्य समाज मन्दिरों को मुहरबन्द कर दिया गया। अभियोगों के पीछे सेना की गुप्तचर के महान सहयोगी लाला बेलीराम की थे।

(क्रमशः)

(पिछले से आगे)

फकीर—हां, लाला जी, अगर मैं घोड़े के रास्ते में से हटने की जरा भी देरी करता तो जरूर मेरी हड्डी पसली टूट जाती।

मदन—हैरल्ड साहब के बेटा का घोड़ा हवा की तरह उड़ रहा था।

लाज०—फिर क्या हुआ ?

किशोर—हम लड़कों को बहुत गुस्सा आया। हमने सोचा कि यह हमारे लिए बहुत शर्म की बात है कि इस तरह से बेइज्जती हुई हमने यह फैसला किया कि अगर इस लड़के ने फिर ऐसी हरकत की तो इसे जरूर मजा चखाएंगे। जब फिर हम टोली बना कर सड़क पार कर रहे थे कि उसी तरह अंग्रेज बैरिस्टर का बेटा घोड़े को दौड़ाता कोठी से बाहर निकला। मैंने उसे कहा कि घोड़ा रोक ले परन्तु वह अपने गुमानमें चाबुक घुमाता हिन्दुओं के बारे में गन्दे शब्द बोलता, हमारे ऊपर चढ़ आया। मैंने अपनी नागशाही वाली जूती उतार कर मोटी नालों वाली जूती दिखाते हुए उसकी तरफ फैंकी। जूती उसके गाल पर लगी। वह घोड़े की दुम दबा कर कोठी में वापिस घुस गया।

लाज०—मिस्टर हैरल्ड आज सुबह कोठी पर आया था। लड़का भी साथ था। मिस्टर हैरल्ड को यह गुस्सा था कि डी० ए० वी० कालेज के लड़कों ने उसके बेटे के मुंह पर देसी जूती मारी है। लड़के के गाल पर गहरा जख्म हुआ है। बहुत बुरी बात है।

फकीर—लाला जी, किशोर ने जो किया वह हमारी रजामन्दी के साथ किया था। अगर दूसरे दिन भी हम इस तरह बेइज्जती करवा लेते तो आपने कहना था कि तुम्हें अपनी इज्जत का कोई ध्यान नहीं।

लाज०—शाबाश, तुमने जो किया ठीक किया (किशोर की पीठ थपथपाते) तुमने अपने स्वाभिमान की रक्षा की। मैं मिस्टर हैरल्ड को सारी बात समझा चुका क्योंकि वह मेरा और आपका पड़ोसी है।

फकीर—पड़ोसी होगा पर ..

लाज०—इसलिए मेरा विचार है कि तुम्हारे व मिस्टर हैरल्ड के बेटे के बीच समझौता हो जाए। वह अपनी गलती मानने के लिये तैयार है और क्योंकि उसे गहरा जख्म हुआ है किशोर तुम्हें अफसोस प्रकट करना चाहिए।

किशोर—मुझे यह मन्जूर है।

ला०—तुम अपने अफसोस का इजहार मुझे लिख कर दे दो।

किशोर—कागज जेब में से निकालते हुए (मदन कलम देता) (मदन कलम देता है) मुझे अफसोस है कि मैंने तुम पर जूती से वार किया।

फकीर—जूती से पहले देसी का शब्द लगा दो।

किशोर—(ठीक करके) अब यह

लाला लाजपतराय के जीवन पर आधारित एक प्रसिद्ध नाटक

शेरे पंजाब लाला लाजपतराय

ले०—श्री वी० एस० खोसला

ठीक, मुझे अफसोस है कि मैंने तुम पर देसी जूती से वार किया।

(लड़के हंसते हैं और लाला लाजपतराय के चेहरे पर प्रसन्नता की मुस्कराहट है।)

लाज०—हो तुम्हारा नाम किशोर है ? कहां के रहने वाले हो।

किशोर—हिसार का।

लाज०—(दिलचस्पी के साथ) अच्छा तो तुम हिसार के रहने वाले हो। किसका बेटा है।

किशोर—चौधरी घनश्याम दास का।

लाज०—चौधरी घनश्याम दास वकील का ?

किशोर—हां जी।

लाज०—(किशोर के कन्धे पर हाथ रख कर) मैं अच्छी तरह जानता हूं चौधरी घनश्याम दास को। तुम कब से यहां पढ़ते हो।

छूने के लिए आगे बढ़ता है। लाला जी उसको कन्धे से पकड़ते हैं। नहीं भाई एक इन्सान के आगे सिर झुकाने का कोई मतलब नहीं। क्यों भई लड़को किस से हारकर आये हो।

पहला खिलाड़ी—फोरमैन कालेज से।

लाजपत—कितने गोल से ?

दूसरा—तुमने कितने गोल किए ?

तीसरा—दो।

लाजपत—उन्होंने।

पहला—तीन।

लाजपत—कोई डर नहीं। आप लड़े तो खूब ?

पहला—हां जी, कमी तो कोई नहीं छोड़ी।

लाजपत—कोई फिकर नहीं। तुम रात को खाना मेरी कोठी पर खाना (वजीर चन्द को) वजीर चन्द जी पन्द्रह लड़कों के लिए खाना तैयार करवा देना।

वजीर—परन्तु इतने थोड़े समय,

मेरी बात ध्यान से सुनो। मदन फकीर की बाजू पकड़ता है। ठीक है वो अंग्रेज है और अंग्रेज की हैसियत में उसे हिन्दुओं के साथ बदसलूक करने का कोई अधिकार नहीं। पर वो पड़ौसी है और पड़ौसियों के बीच दुश्मनी दोनों के लिए हानिकारक हो सकती है।

किशोर—मेरा दूसरा वर्ष है।

लाज०—तुम कभी मिलने नहीं आए। वो सामने मेरी कोठी है।

किशोर—सोचा तो कई बार है पर... ..

लाज०—पर शर्म करता रहा। इसी लिए मैं आज आ गया हूं।

(लड़के हंसते हैं।) चार पांच लड़के खेल की पोशाक में एक फुटबाल को उछालते हुए ऊंची-ऊंची बातें करते हुए आते हैं।

पहला खिलाड़ी यह मौका फिर हाथ नहीं आना।

दूसरा खिलाड़ी जे जे राम गेंद अगर आसमान न चढ़ा देता तो गोल हो जाना था।

तीसरा ध० प० खि० इसलिए मैच बराबर हो जाना था। (दूसरे से) इस हार का बदला लेना पड़ेगा।

(लाला लाजपतराय को देख कर उन्हें प्रणाम करते हैं। एक लड़का पैर

में पन्द्रह व्यक्तियों का खाना किस तरह बनेगा। बछोवाली कासरत के भी दस व्यक्ति होंगे।

लाज०—कोई बात नहीं समय कम है तो खाना देर से खा लेंगे। अब यह लड़के जान मार कर आए हैं, अगर इन्हें कोई बढ़िया हलवा न खिलाया तो क्या कहेंगे क्यों मन्जूर है बुजरग मेहरा जी।

किशोर—इनका नाम क्या बताया है ?

लाज०—इनका शुभ नाम वजीर चन्द भोला है। बहुत भले लोक हैं। इन के बिना पता नहीं मैं क्या करता। इसी लिये मैं इन्हें बुजरग मेहरा जी कहता हूं। बुजरज मेहरा जी बादशाह नौशिरवां को अक्ल का रास्ता बताता था। अच्छा लड़को वो सामने (इशारा करते हुए) मेरी कोठी है तुम रात को खाना मेरे साथ खाना।

पहला—बहुत अच्छा जी।

दूसरा—आपकी बहुत मेहरबानी।

तीसरा—नमस्ते।

(फुटबाल के खिलाड़ी चले जाते हैं

किशोर—लाला जी ये मेरे सहपाठी हैं। मदन और फकीर चन्द।

(तीनों नमस्ते करते हैं।)

लाज०—तुम कौन से विषय पढ़ते हो ?

मदन—मैं इतिहास और संस्कृत पढ़ता हूं।

फकीर—मैं इतिहास व अर्थ का विद्यार्थी हूं।

एक्ट चार

किशोर—लाला जी मेरे विषय रसायन पदार्थ व विज्ञान है।

मदन—आज हमारे प्रोफैसर अग्रवाल ने कक्षा में क्या कहा था कि हमें कालेज छोड़ देना चाहिए।

लाज०—आपका क्या विचार है ?

फकीर—हमें समझ नहीं आता कि हमारे लिए कौन सा मार्ग ठीक है।

किशोर—लाला जी हम आपकी सलाह पूछते हैं कि हमारे लिए क्या उचित है।

फकीर—हां लाला जी हमें ठीक रास्ता बताएं।

लाज० सुनो पहली बात तो यह है कि आप अपने बीच में फैसला करने की लियाकत पैदा करो। तुम्हें यह समझना चाहिए कि तुम मुल्क के मुस्तकबिल हो देश का भविष्य हो, देश को तुम पर उम्मीदें हैं। इसलिए तुम फैसला करो, पूरी तरह सोच समझ के, जो एक बार निश्चय कर लो तो उस पर दृढ रहो। फिर तुम्हारा मन डांवाडोल नहीं होना चाहिए। मेरा विचार है कि मैडिकल और इन्जीनियरिंग के विद्यार्थी बिल्कुल पढ़ाई न छोड़ें क्योंकि जब स्वराज मिल गया आम लोगों की सेहत और उद्योगों की उन्नति के लिए हमें डाक्टरों व इन्जीनियरों को और भी जरूरत पड़ेगी। इनके बिना हमारा गुजारा नहीं हो सकता। आर्टस के विद्यार्थी बेशक छोड़ दें। आर्टस की पढ़ाई का कोई बहुत फायदा नहीं। इतिहास व अर्थ की जो शिक्षा तुम्हें दी जाती है तो न तो हमारी सभ्यता पर ठीक प्रकाश डालती हैं और न ही देश की आर्थिक समस्याओं को सुलझाने में मदद देती है। इसलिए मैं कहता कि आर्टस के विद्यार्थी बेशक पढ़ाई छोड़ दें और मुल्क की खिदमत में लग जाएं।

मदन—हम किस तरह मुल्क की खिदमत करें।

लाज०—हमारे मुल्क मे कई जरूरी चीजों की कमी है। ग्राम्दोरफ्त के जरिये खाम करके देहातों में बहुत कम है। मैं कहता कि जवान लड़के सड़कें और कारखानों में बनी चीजें दूर बनाने रोड़ी कूटने का कार्य अपने हाथ मे लें। इन विदेशी कपड़ा कारखानो मे बनी चीजें दूसरे मुल्कों से महगी भाव आती हैं और हमारा करोड़ों रुपया सोना चांदी के रूप में हर वर्ष बाहर चला जाता है। जिस करके मुल्क दिनों दिन गरीब हो रहा है क्योंकि न देश के युवक कारखानों मे कार्य करें और देश की पैदावार बढ़ाएं। (क्रमशः)

महर्षि दयानन्द विद्यापीठ पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ में आयोजित संगोष्ठी

महर्षि दयानन्द विद्यापीठ के तत्वावधान में स्वामी दयानन्द के दार्शनिक विचारों पर एक संगोष्ठी दिनांक १६-१७ मई को विश्वविद्यालय परिसर में सफलतापूर्वक हुई। वेद मन्त्रों के आधार पर पंजाब विश्वविद्यालय के एम० ए० द्वितीय वर्ष के छात्र श्री तुलसीराम ने मंगलाचरण किया, तथा आचार्य कृष्णसिंह आर्य ने स्वागत भाषण पढ़ा। संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुये विश्वविद्यालय के कुलपति डा० आर० सी० पाल ने दयानन्द पीठ की स्थापना तथा उसके विगत कार्यों का संक्षिप्त विवरण करते हुये यह आशा प्रकट की कि डा० भवानीलाल भारतीय के सुयोग्य नेतृत्व में यह पीठ स्वामी दयानन्द के उदार एवं प्रगतिशील विचारों को लेकर उच्चस्तरीय शोध तथा अनुसन्धान का कार्य सफलता पूर्वक कर सकेगी। संगोष्ठी के अध्यक्ष सुप्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् डा० स्वामी सत्यप्रकाश जी ने अपने लिखित भाषण में स्वामी दयानन्द के दार्शनिक विचारों का विश्लेषण किया तथा सामाजिक सन्दर्भ में [illegible] तत्पश्चात् दयानन्द पीठ के अध्यक्ष डा० भवानीलाल भारतीय ने महर्षि दयानन्द के दर्शन पर अब तक हुए शोध कार्यों का विवरण प्रस्तुत करते हुए महर्षि की प्रमाण मीमांसा, तत्वमीमांसा, तथा षड्दर्शन समन्वय आदि पहलुओं की विस्तृत समीक्षा की।

स्वल्पकालीन अन्तराल के पश्चात् गोष्ठी औपचारिक रूप से आरम्भ हुयी। सर्व प्रथम गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग के अध्यक्ष डा० जयदेव विद्यालंकार ने स्वामी दयानन्द के दार्शनिक विचारों को ऐतिहासिक सन्दर्भ में प्रस्तुत करते हुये उनके विचारों को रामानुज के विशिष्टाद्वैत की अपेक्षा मध्व के द्वैत सिद्धान्त के अधिक निकट बताया। इस समय की चर्चा में प्रो० धर्मवीर, डा. ब्रह्मानन्द शर्मा आदि ने भाग लिया।

संगोष्ठी का द्वितीय सत्र गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा की अध्यक्षता में आरम्भ हुआ, इसमें डा. ब्रह्मानन्द शर्मा भूतपूर्व अध्यक्ष गवर्नमेंट कालेज अजमेर ने महर्षि दयानन्दस्थ [illegible] 'अपना' [illegible] [illegible] विद्वान तथा भारत के राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित प० युधिष्ठिर मीमांसक ने अपने प्रवचन में मीमांसा दर्शन से सम्बन्धित कतिपय दुरुह एवं जटिल समस्याओं का समाधान करते हुये मीमांसा दर्शन की सुगम व्याख्या उपस्थित की।

द्वितीय दिन के प्रातः कालीन सत्र का आरम्भ पंजाब विश्वविद्यालय के दर्शन विभाग के अध्यक्ष डा, धर्मेन्द्र गोयल के सभापति पद स्वीकार कर लेने से हुआ। इस समय आचार्य बालकृष्ण दीवान ने दर्शन शास्त्र की उपयोगिता तथा मनुष्य जीवन के लिए उसकी आवश्यकता का प्रतिपादन करते हुये स्वामीजीकी दार्शनिक भावनाओं को स्पष्ट किया, तत्पश्चात् प्रो. धर्मवीर ने अपना शोध पत्र पढ़ते हुये स्वामी जी के शिक्षा दर्शन की कतिपय मौलिक अवधारणाओं को विश्लेषित किया, विश्व वेद परिषद् के अध्यक्ष प. वीरेन्द्र शास्त्री ने महर्षि दयानन्द के दार्शनिक सिद्धान्तों का खुलासा करते हुये मुक्ति से पुनरावृत्ति जैसी कतिपय विशिष्ट धारणाओं को विभिन्न प्रमाणों से पुष्ट किया। संगोष्ठी का समापन महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय रोहतक के संस्कृत विभागाध्यक्ष डा. जयदेव विद्यालंकार की अध्यक्षता में आरंभ हुआ।

दयानन्द पीठ के भूतपूर्व शोध छात्र डा. विमलकुमार ने कर्म फल सिद्धान्त की विवेचना करते हुए कतिपय शंकाएं प्रस्तुत कीं जिनका समाधान डा. ब्रह्मानन्द शर्मा तथा डा. भवानीलाल भारतीय ने किया, डा, आनन्दकुमार ने यजुर्वेद संहिताओं के आलोक में महर्षि दयानन्द प्रतिपादित त्रैतवाद का सर्वांगीण विवेचन करते हुये इस सिद्धान्तको सर्वथा शास्त्रानुमोदित युक्तिसंगत तथा यथार्थवाद के ठोस धरातल पर सिद्ध किया, अपने उपसंहारात्मक भाषण में दयानन्द पीठ के अध्यक्ष डा. भवानीलाल भारतीय ने गोष्ठी में प्रस्तुत किए गए विभिन्न विचारों का सम्यक् मूल्यांकन करते हुए महर्षि दयानन्द के दर्शन को राष्ट्र तथा मानव जाति के लिए अत्यन्त प्रेरणा एवं स्फूर्ति का स्रोत बताया उन्होंने संगोष्ठी में भाग लेने वाले विद्वानों, श्रोताओं के प्रति आभार व्यक्त करते हुए चंडीगढ़ के आर्य समाजों तथा करनाल के चौधरी प्रतापसिंह जी के प्रति आभार प्रकट किया जिनकी उदार सहायता में यह आयोजन सम्पन्न हुआ।

आर्य नेताओं के अध्ययन दल का निष्कर्ष

'हिन्दू युवतियों का व्यापार'

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बताया गया कि गांव के निर्धन लोगों को विदेशी धन का लालच देकर उनका धर्म परिवर्तन किया गया। इतना ही नहीं धर्म परिवर्तन के समय भय का वातावरण बनाने के लिए वहां चारों ओर से बसों में भर-भर कर हजारों मुसलमानों को वहां जमा किया गया। जिनमें से अधिकांश गैर भारतीय मुसलमान ही थे। इतना ही नहीं हिन्दू धर्म का परित्याग करने वालों को ५००-५०० रुपए देकर पुरस्कृत किया गया। वहां एकत्रित ७ हजार मुसलमानों की दावत पर ४०,००० रुपए उड़ाए गए। इस्लाम मत में दीक्षित होने वाले प्रत्येक व्यक्ति को निशुल्क वस्त्र प्रदान किये गए। भारी धनराशि लगा कर नई मस्जिद की बुनियाद रखी गई।

आर्य नेताओं के अनुसार उक्त तथ्यों से यह स्वतः सिद्ध है कि यह धर्म परिवर्तन विदेशी षड्यन्त्र का ही अंग है। जिसके लिए अरब देशों से अन्धाधुन्ध भारी मात्रा में धन भेजा जा रहा है।

आर्य नेताओ के अध्ययन दल को यह जानकर आश्चर्य हुआ कि जिस मुस्लिम विधायक एव संसद सदस्य ने हरिजनों को मुसलमान बनाने में नेतृत्व किया उसके विरुद्ध तमिलनाडु सरकार व राजनीतिक पार्टियों ने मुंह तक नहीं खोला। यह भी कम आश्चर्य का विषय नहीं कि क्षेत्र के विधायक साहुल हमीद व उसके साथियों ने धर्मान्तरित हरिजनों को क्षेत्रीय निदेशक के पास जाने से बलपूर्वक रोका। दुर्भाग्यवश निदेशक महोदय मीनाक्षीपुरम् न जा कर उससे डेढ़ कि. मी. दूर पापोली गांव में इस मामले की जांच करा रहे थे। और उन्होंने हरिजन बन्धुओं से मिलने की आवश्यकता अनुभव नहीं की।

अध्ययन दल के कुछ सदस्यों ने पीड़ा देने वाली एक अन्य घटना प्रत्यक्ष देखी कि वहां से सैकड़ों की संख्या में भारतीय नवयौवनाएं श्रीलंका के मार्ग से अरब देशों में भेजी जा रही थीं। इन ललनाओं को बलात् मुसलमान बना कर चन्द सिक्कों के बदले बेच डाला जाता है। आर्य नेताओं ने हिन्दू युवतियों व महिलाओं की इस प्रकार बिक्री पर चिन्ता प्रकट की।

इस प्रकार की घटनाओं से क्षेत्र में साम्प्रदायिक तनाव व्याप्त हो गया है। मीनाक्षीपुरम् में कुल ३५० हरिजन घर हैं जिनमें से १४० परिवारों को विधर्मी बना दिया गया। आर्य समाज के प्रयास से उनमें से ५० परिवार पुनः अपने धर्म में लौट आए।

आर्य नेताओं का अध्ययन दल अन्ततः इस परिणाम पर पहुंचा कि मीनाक्षीपुरम् के हरिजनों को उन की इच्छा के खिलाफ बलात् घरों से निकाल कर मुसलमान बनने पर विवश किया गया। यह घटना अचानक नहीं अपितु सुनियोजित षड्यन्त्र का हिस्सा है। जिसका प्रत्यक्ष प्रमाण विदेशी मुस्लिमों व केरल तक के ७ हजार मुसलमानों की वहां पर उपस्थिति थी। अरब देशों के कुछ धार्मिक कठमुल्लाओं ने इस सामूहिक धर्म परिवर्तन काण्ड में भाग लिया। पैसा पानी की तरह बहाया गया। यह धन राशि कहां से टपकी, किसने दी। इसका कोई स्रोत नहीं मिल सका न ही कोई इस बारे में कोई बताता है।

आर्य नेता इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि भारत में अरब देशों ने भारत के निर्धन हरिजनों के धर्मान्तरण के उद्देश्य के लिए भारी धन आ रहा है। आर्य नेताओं ने भारत सरकार से देश की अखण्डता व सुरक्षा के लिए इस धन पर शीघ्र प्रतिबन्ध लगाए जाने की मांग की है। और सरकार से इस प्रकार के राष्ट्र द्रोही कार्यों के खिलाफ कठोर कदम उठाए जाने को कहा है।

सार्वदेशिक सभा ने धर्म की आड़ में विदेशी धन के आयात को रोकने तथा धर्म परिवर्तन की घटनाओं को रोकने के लिए देश व्यापी आंदोलन चलाने का निर्णय किया है। सभा इस सम्बन्ध में ३०-३१ मई को अपने निर्वाचित अधिवेशन में ठोस कदम उठाएगी।

अध्ययन दल को यह जान कर हर्ष हुआ कि मीनाक्षीपुरम् में सवर्ण हरिजन हिन्दू का कोई भेदभाव नहीं और वे सब एकतावद्ध हो गए हैं। जब अध्ययन दल ने वहां के ब्राह्मण वर्ग को यह बताया कि आर्य समाज वहां यज्ञ करके हरिजनों को यज्ञोपवीत देना चाहता है तो उन्होंने इसका सहर्ष स्वागत किया।

औरंगजेब जाग उठा है लेकिन शिवाजी कब जागेंगे

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

लेकिन जिस विचारधारा की रक्षा के लिए शिवाजी ने अपनी तलवार निकाली थी आज उस विचारधारा का नामोनिशान मिटाने की कोशिश हो रही है। हम तलवार नहीं निकाल सकते न इसकी जरूरत है लेकिन विदेशी रुपया और विदेशी विचारों का जो प्रचार हमारे देश में हो रहा है, इसका मुकाबला तो होना चाहिए। हिन्दू इस समय सो रहे हैं। वे शिवाजी और प्रताप का नाम तो लेते हैं लेकिन यह भूल जाते हैं कि इन दो महापुरुषों ने किस उद्देश्य के लिए तलवारें निकाली थीं। यदि आज औरंगजेब का नाम लेने वाले जाग उठे हैं और वह औरंगजेब के मिशन को पूरा करने के लिए करोड़ों रुपया खर्च कर रहे हैं तो क्या शिवाजी का नाम लेने वाले सोए रहेंगे। जमाना पुकार-पुकार कर पूछ रहा है कि औरंगजेब जाग उठा है शिवाजी कब जागेंगे?

पारिवारिक सत्संग

लुधियाना

आर्य युवक सभा लुधियाना की ओर से १७-५-८१ (रविवार) को पारिवारिक सत्संग माता विद्यावती जी मल्होत्रा के घर समराला रोड पर किया गया। हवन यज्ञ के पश्चात श्री कृपाराम जी आर्य बहिन सोमा रमा सरिता एवं निर्मलजी के मनोहर भजन हुये। इसके पश्चात पण्डित रामकुमार जी आर्य (पुरोहित) आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार) का मनोहर प्रवचन हुआ। जिसकी सैकड़ो की संख्या मे लोगो ने सुना और बहुत ही प्रभावित हुए। इसके पश्चात पुरोहितजी ने आर्य युवक सभा की ओर से मल्होत्रा परिवार को वैदिक साहित्य भेंट किया। शान्ति पाठ में जयघोषो के साथ सत्संग समाप्त हुआ।

पठानकोट

पठानकोट—आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट गत ८ महीनो से लगातार पारिवारिक सत्संगो का आयोजन कर रहा है जिसमे भरपूर सफलता प्राप्त हो रही है। पहले यह सत्संग हर पन्द्रह दिनो बाद होता था, अब गत दो महीनो से हर सप्ताह हो रहा है। स्थानीय आर्य समाज के विद्वान् पुरोहित श्री मनोहरलाल आचार्य एम० ए० के सहयोग से कार्यक्रम काफी रोचक व प्रभावशाली सिद्ध हो रहा है, अभी तक जिन परिवारो में यह सत्संग हो चुके हैं उनका विवरण निम्नलिखित है—श्री प्यारेलाल प्रधान, श्री गिरधारी लाल गुप्ता, श्री रतनशाह, श्री ज्ञानचन्द, श्री टेकचन्द, श्री रामलाल अग्रवाल श्री योगेन्द्रपाल, श्री बालकराम, श्री डा० जयप्रकाश श्री एस० पी० नन्दा, श्री सहाराम वकील, श्री सोमराज, श्री मुनी लाल, श्री चरणदास श्री डा० बनमेश्वरदास गुप्ता।

पारिवारों मे नव जागृति, गृहस्थ सुधार, वर्तमान समस्याए व उनका समाधान आदि विषयो पर विशेष प्रकाश डाला जाता है। इन कार्य मे श्री प्यारेलाल जी (प्रधान) प्रशंसापूर्ण योगदान दे रहे हैं। उल्लेखनीय है कि यहां एक नि-शुल्क औषधालय की नींव रखी जा रही है।

—स्वतन्त्र कुमार, मन्त्री

चण्डीगढ़

चण्डीगढ़—स्थानीय सेक्टर पंजाब विश्वविद्यालय के अध्यक्ष डा० भवानीलाल भारतीय के निवास स्थान कोठी ए० बी० ३ में वैशाख पूर्णिमा को विश्व-वेद परिषद् की चण्डीगढ़ शाखा के तत्वावधान में पारिवारिक हवन सत्संग का आयोजन किया गया। इस अवसर पर [illegible] श्री [illegible] के [illegible] भाषण हुए।

अपील

जालन्धर—शहीद भगतसिंह नगर आर्य समाज के अधिकारियो ने भवन निर्माणार्थ जनता व दानी महानुभावो से आर्थिक सहयोग की अपील की है।

समाज के प्रधान श्री मुल्कराज आर्य महामन्त्री—श्री सुखदेवराज तथा कोषाध्यक्ष—श्री नरेश कुमार शास्त्री ने एक वक्तव्य मे महर्षि दयानन्द की विचार-धारा के प्रचार प्रसार का सामयिक महत्व प्रतिपादित करते हुए इस उद्देश्य के लिए नए भवन के निर्माण कार्य मे अधिकाधिक योगदान की अपील की है। उन्होने बताया कि १०१ रुपये अथवा इससे अधिक राशि देने वाले दानी सज्जनो के नाम पत्थरो पर अंकित किये जाएंगे। दान निम्न पते पर भेजने को कहा गया है।

प्रधान आर्य समाज १६८
शहीद भगतसिंह नगर जालन्धर

कु. सुखलाल आर्य मुसाफिर स्मृति ग्रन्थ

नई दिल्ली—स्वतन्त्रता सेनानी अमर बलिदानी कुंवर सुखलाल आर्य मुसाफिर जिनके गीतों के कारण अंग्रेजी शासन की दीवारें हिल गई थी और कुंवर साहब को जेल डाल दिया गया था, के जीवन चरित्र और तड़पानेवाले गीतो का प्रकाशन किया जा रहा है। यह दुर्लभ ग्रन्थ आर्य समाज के लिए गौरव का विषय होगा।

श्री विक्रमसिंह शास्त्री ने इस अद्भुत ग्रन्थ को प्राप्त करने के इच्छुको को इसके लिये १० रुपये प्रति पुस्तक के लिये अग्रिम रूप से निम्न पते पर भेजने को कहा है।

— विक्रमसिंह शास्त्री
९५ ए०, जनता फ्लैट
साकेत, नई दिल्ली—११००१७

अपनी बात

'आर्य मर्यादा' के अनेकानेक पाठको समर्थकों एवं प्रशंसकों को यह जानकर हर्ष होगा कि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अपने इस मुख पत्र को अधिकाधिक आकर्षक और मौलिक बनाने का निर्णय लिया है। जिससे यह आर्य जगत् की स्तरीय एवं प्रतिनिधि पत्रिका का स्थान ले सके। इसके लिये हम आप के रचनात्मक सुझावों का स्वागत करेंगे। अपने सुझाव निम्न पते पर भेजें—

'आर्य मर्यादा' साप्ताहिक,
गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा,
जालन्धर

'वन्देमातरम् गाना होगा या भारत से जाना होगा'

लखनऊ—यहां पिछले रविवार को उत्तर प्रदेश हिन्दू महा सभा के तत्वावधान मे आयोजित हिन्दू सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के अध्यक्ष महात्मा वेद भिक्षुजी ने मुस्लिम बन्धुओ से निवेदन किया कि वे भारत को अपनी मातृ भूमि और पुण्य भूमि समझें। महात्मा जी ने चेतावनी दी कि यदि मुसलमानो को राष्ट्र गीत वन्देमातरम गाने पर भी आपत्ति है तो फिर उन्हे यह देश छोड़ना ही होगा

अपने उद्‌बोधन को जारी रखते हुए महात्मा जी ने कहा कि मुसलमान इस सच्चाई को जितनी जल्दी समझ लें उतना ही अच्छा है। मुसलमानो से हमारा कोई विरोध नहीं है। हमारा विरोध है इस भावना से कि वे भारत में रहते है यहां के नागरिक है लेकिन गान पाकिस्तान के गाते हैं। यह स्थिति सहन नहीं की जा सकती। अजीब हालत है कि मक्का की मस्जिद पर हमला हो और उस पर प्रोटेस्ट करने के लिए हैदराबाद मे दंगा फिसाद किया जाए। हिन्दुओ की सम्पत्ति जलाना देशद्रोह है।

इस सिलसिले मे महात्मा जी ने बिहार शरीफ के दंगों की चर्चा की और बताया कि किस प्रकार शराबियो के आपसी झगड़े को साम्प्रदायिक दंगे का रूप दे दिया गया। पहले मुसलमानो की ओर से हुई लेकिन जब हिन्दुओ ने बदला लिया तब कहा गया कि यह दंगा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने करवाया है।

सम्पादक के नाम पत्र

साम्प्रदायिकता क्या है ?

चूंकि साम्प्रदायिकता हमारे देश मे दण्डनीय अपराध है और अभी तक उसकी कोई परिभाषा निश्चित नहीं हुई है इसलिए यह बहुत जरूरी है कि यह परिभाषा निश्चित हो जाए।

आज देश मे अल्पसंख्यक और बहुसंख्यक जो दो वर्ग है उनका वर्ग भेद वास्तव मे धर्म भेद ही है अर्थात उनके वर्गीकरण का आधार ही साम्प्रदायिक है

इस देश की सरकार का कर्त्तव्य है कि वह दोनो वर्गों के धर्मों का पालन करे किन्तु वह बहुसंख्यक वर्ग को तो साम्प्रदायिक बताती है और अल्पसंख्यक वर्ग के धर्म की रक्षा करना अपना कर्त्तव्य घोषित करती है। किस तर्क और न्याय के आधार पर इसे उचित माना जाए यह समझ मे नहीं आता।

एक और समझ मे न आने वाली बात यह है कि विभाजन के समय भारत और पाकिस्तान की सरकारो ने एक दूसरे को आश्वासन दिया था कि वे अपने २ देशो मे रहने वाले प्रत्येक निवासी के धर्म की रक्षा करेंगी।

इसके बावजूद जब पाकिस्तान और बंगला देश मे करोड़ो हिन्दुओ पर अत्याचार हुए और उन्हें बलात मुस्लिम बनाया गया तो हमारी सरकार ने उसमे हस्तक्षेप को साम्प्रदायिक माना। साम्प्रदायिकता को दण्डनीय अपराध मानने वाली हमारी सरकार को पहले यह स्पष्ट करना चाहिए कि वह साम्प्रदायिकता का क्या अर्थ लगाती है ऐसा अर्थ लगाते समय ही उसे साम्प्रदायिकता विषयक दुमुंही नीति का पता चल जाएगा। —मथुराप्रसाद

सभा की निम्न योजनाओं के लिए

अधिक से अधिक धन भेजिए

पंजाब की आर्य समाजों से अपील

१ सभा के वेद प्रचार विभाग के लिए जो आर्य समाज का मुख्य कार्य है।

२ सभा के साहित्य प्रकाशन के लिए जो वर्तमान युग मे प्रचारार्थ सबसे प्रभावशाली साधन है।

३ सभा के नये भवन के निर्माण के लिए।

४ सभा की ओर से बनाये जा रहे कादियां के लेखराम स्मारक मोही के स्वतन्त्रानन्द स्मारक तथा तलवन के श्रद्धानन्द स्मारक के निर्माण के लिए।

५. प्रचारार्थ एक जीप खरीदने के लिए।

६, सभा की शिक्षा संस्थाओं के संचालन तथा संवर्धन के लिए।

वीरेन्द्र,
सभा प्रधान

रामचन्द्र जावेद
सभा मन्त्री

सभाको 51 सौ का दान

स्वामी स्वतन्त्रतानन्द उमरिया मह्स म । जला लुधियाना के नित्त सदि ना को ओमती गणवती भला न ५१ पय दन दी।
सभा नकी ओभ । माली मे मय प्रन भ पत्र ब अ नेएक म भ च

विवाह हुआ

नविग न क सुप्रसिद्ध भ र तमाली श्री मा० मप्रसाद जी क सुपत्र का शुभ विवाह सम्पन्न हुआ उन्हे ब ब

म० रम्प्रसाद जी इस उपल य म मय प्रतिनिधि सभ पंजाब को वेद प्रचार के लि ४१ रुपये भ किये।

—

आर्य जगत के समाचार

आर्य समाज कपूरथला का वार्षिक चुनाव

कपूरथला ग्न २ मई १० १० आर्य समाज कपूरथला का व षिक चुनाव सम्पन्न हुआ। जिसका विवरण इस प्रक

म न श्री देवीन्द्र ल प्रधान प्रधान श्री पवन कुमार उपप्रधान श्री ग मिन्द्र श्रीमती प्रा मदेवी मन्त्री—श्री अमरनाथ उपमन्त्री—श्री रामन थ स्त्री श्री म० न्न स कोषाध्यक्ष श्री गाज्ञनन्दन स मन्त पुस्तकाध्यक्ष श्री त्रिलोकचन्द लेखा निरीक्षक श्री रोशन लाल नैय्यगार अन्तरंग सदस्य—श्री रामनाथ सेठी श्री योगिन्द्रपाल श्री प्रीतमल स श्री महिन्द्र प्रकाश श्रीमती श्रीमती सुरिन्द्र कुमारी श्रीमती रत्नदेवी श्रीमती प्रकाशवती भाटिया।

स्वा. ओमानंद जी दुर्घटना ग्रस्त

रोहतक—ग्राम अमन के प्रसिद्ध म याला श्री स्वामी ओमा द आ सरस्वती १ मई को उस समय दुघटना ग्रस्त हो गए जब वे जीप गाग द से दक्षिमा (राजस्थान) के उ समाज होनी मोहल्ला क न को मच पर लौट रहे थे।

जब जीप नीचन ग्र म समीप आई तो उसका टायर यक टन म स्टयरिंग फन हो गया और जीप अनियन्त्रित होकर पानी से भर ज०ह मे जा गिरी। जिससे स्वामी जी के सिर दोनों हाथ और पावों पर गम्भीर चोट आ गई। जीप बिल्कुल क्षतिग्रस्त हो गई।

671 श्री गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार (सहारनपुर)

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज फगवाड़ा के श्री रघु रिवराम जी का निधन पिछले एक दुघटना में हो गया। वह स्कूटर पर जा रहे थे से एक कार के साथ टकराने से उनकी मृत्यु हो गई।

समाज फगवाड़ा म एक शोक उपलक्ष्य मे हुई जिसमे परम पिता परमात्मा से प्रार्थना की गई कि प्रभु इस दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करें तथा उनके परिवार के सदस्यों को यह वियोग सहन करने की शक्ति प्रदान कर।

—

कृण्वन्तो — ओ३म् — विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वर्ष 14—अंक 13 2० ज्येष्ठ सम्वत 2038 तदनुसार 7 जून 1981 दयानन्दाब्द 156। एक प्रति 3० पैसे (वार्षिक शुल्क 1० रुपए



—6 जून को हिन्दू साम्राज्य राज्याभिषेक दिवस पर विशेष —

धर्म रक्षक छत्रपति शिवाजी महाराज

— 9 JUL 1981

- श्री वीरेन्द्र

छत्रपति शिवाजी जिन्हें कुछ व्यक्ति शिवाजी मराठा के नाम से भी याद करते हैं। वे भारत के इतिहास के एक ऐसे गौरवमय व्यक्तित्व हैं, जो समय समय पर इस देश की जनता को प्रेरणा देते रहते हैं। हमारे देश में कई ऐसे महापुरुष हुए हैं जिन्होंने अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए अपना सब कुछ दे दिया। कुछ ऐसे भी हुए हैं जिन्होंने अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए अपना बलिदान दिया। परन्तु शिवा जी का व्यक्तित्व ऐसा था जहां धर्म और राजनीति दोनों का समन्वय हुआ है। शिवाजी के विषय में इतिहास कारों की यह धारणा है कि उन्होंने हिन्दू धर्म को पुनः पुनर्जीवित किया जब कि मुगल शासकों के समय में वह एक प्रकार से समाप्त हो गया था। इसलिए कुछ इतिहासकारों ने उन्हें धर्म रक्षक की उपाधि से भी सुशोभित किया है। शिवा जी के धर्म और ईश्वर भक्ति की उसका श्रेय उनके माता-पिता को दिया जाना चाहिए। उनकी माता जीजा बाई जी को उनके गुरु श्री रामदास को।

कहते हैं कि एक बार शिवाजी ने समर्थ गुरु रामदास जी के विषय में यह सुना कि वह जो उपदेश देते हैं उससे प्रेरित होकर लोग अपने धर्म की रक्षा के लिए अपना जीवन भी दान देने को तैयार हो जाते हैं। इस पर उन्होंने यह प्रतिज्ञा ली कि जब तक वह गुरु रामदास के दर्शन न कर लेंगे वह अन्न ग्रहण नहीं करेंगे। इसलिए वह अपने गुरु की तलाश में इधर उधर घूमते रहे और अन्त में उनके पास पहुंचकर उनके चरणों को छू कर कहने लगे कि वह उनके पास ही रहना चाहते हैं और उनकी सेवा में अपना जीवन व्यतीत करना चाहते हैं। इस पर गुरु रामदास जी ने उनको कहा कि—क्या इसलिए तुम हमारे पास आए हो। तुम कर्मवीर क्षत्रीय हो। तुम्हारा काम है देश और प्रजा को विपत्तियों से बचाना तथा यज्ञ और ब्राह्मणों की सेवा करना। यही श्री रामचन्द्र जी की आज्ञा है। भगवद् गीता में श्री कृष्ण ने अर्जुन को जो उपदेश दिया था उसको याद करो। योद्धा के कर्तव्य मार्ग पर चलो कर्म योग को साधना करो।

अपने गुरु के इस उपदेश को क्रियान्वित करने के लिए उन्होंने अपना जीवन समर्पित करने का प्रण ले लिया और उसके बाद उन्होंने सारा जीवन देश और धर्म की रक्षा में ही लगा दिया। वह अपने गुरु के परम भक्त थे। गुरु की आज्ञा के बिना कोई काम न करते थे और एक सच्चे कर्मयोगी की तरह एक बार अपने सारे राज्य का दान पत्र लिखवा कर और अपनी मोहर लगा कर उसे अपने गुरुदेव की झोली में डाल दिया। इस पर गुरुदेव ने मुस्करा कर कहा था—अब तो वह राज्य हमने ले लिया। तुम हमारे प्रतिनिधि के रूप में कार्य करो। कहते हैं कि उसके पश्चात शिवाजी ने अपने राज्य का रंग भगवा कर दिया और सब को घोषणा कर दी कि यह राज्य गुरुदेव का है और शिवाजी उनके सेवक मात्र हैं।

श्री गुरु रामदास का शिवाजी पर इतना प्रभाव था कि उन्होंने यह संकल्प कर लिया कि वह हिन्दू धर्म को पुनर्जीवित करेंगे। इसीलिए उन्होंने औरंगजेब के विरुद्ध युद्ध प्रारम्भ कर दिया। वह औरंगजेब को हिन्दू जाति और हिन्दू धर्म का सबसे बड़ा विरोधी समझते थे। इसलिए उन्होंने औरंगजेब के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी। इसमें सन्देह नहीं कि उस समय औरंगजेब बहुत अधिक शक्तिशाली बन चुका था। उसका विरोध करना आसान न था। परन्तु शिवाजी ने भी यह संकल्प कर रखा था कि इस देश में जो भी हमारे धर्म का विरोधी है। वह उसका बीज नाश करने का प्रयत्न करेंगे। उनके संकल्प उनके साहस और उनकी शूरवीरता ने धीरे धीरे उन्हें औरंगजेब का प्रतिद्वन्द्वी बना दिया।

> परन्तु शिवाजी ने भी यह संकल्प कर रखा था कि इस देश में जो भी हमारे धर्म का विरोधी है। वह उसका बीज नाश करने का प्रयत्न करेंगे। उनके सल्कप, उनके साहस और उनकी शूरवीरता ने धीरे-धीरे उन्हे औरंगजेब का एक प्रतिद्वन्द्वी बना दिया।

शिवाजी में एक विशेषता थी वह यह कि वह अत्यन्त उच्च आचार के व्यक्ति थे

(शेष पृष्ठ ९ पर

पंजाब में संकीर्ण व साम्प्रदायिक ताकतों के खिलाफ

शंखनाद

अमृतसर—आर्य समाज ने अपने गौरवमय अतीत को दोहराते हुए अमृतसर में सिगरेट-बीड़ी के नाम पर कुछ संकीर्ण एवं शरारती तत्वों द्वारा छेड़े जा रहे 'शोशे' का समुचित उत्तर दिया है। आर्यसमाज ने समूचे हिन्दू जगत को संगठनबद्ध करके अकालियों की कुटिल चाल के आगे अवरोध लगा दिया है। गत 31 मई को सिगरेटबीड़ी के विरोध की आड़ लेकर हिन्दुओं को दबाने व आतंकित करने के षड्यन्त्र को आर्य समाज ने विफल कर दिया। परिणाम स्वरूप पंजाब की हिन्दू शक्ति जागृत और संगठित हो उठी।

सिगरेट बीड़ी के नाम पर हिन्दुओं को दबाने का षड्यन्त्र राष्ट्र घातक—श्री वीरेन्द्र

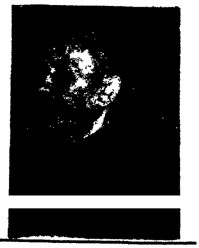
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र, जोकि पंजाब हिन्दू संगठन के संयोजक भी हैं, ने गत दिवस आर्यसमाज श्रद्धानन्द बाजार में एक विशाल सभा को सम्बोधित करते हुये हिन्दू जनता को सचेत किया कि सिगरेट-बीड़ी के विरुद्ध आन्दोलन तो एक बहाना है। उन्होंने कहा कि वस्तुतः यह लोग विदेशी ताकतों के एजेण्ट होने के नाते पंजाब को आग लगाने के कुत्सित प्रयासों में लगे हुए हैं जिससे राष्ट्र की अखण्डता को प्रश्न चिन्ह लग गया है। परंतु श्री वीरेन्द्र ने चेतावनी दी कि आर्य समाज उनके इस घिनौने षड्यन्त्र को हरगिज सफल नहीं होने देगा।

श्री वीरेन्द्रने धमकी दी कि यदि इसबरती से पोषण प्राप्त करने वालों ने 'नमक-हराम' और 'गद्दार' बनने की जुर्रत की तो उन्हें इस देश से निष्कासित करने के लिए असम के ढांचे पर सशक्त आन्दोलन चलाया जाएगा। उन्होंने कहा कि जो लोग इस देश को अपना देश नहीं मानते उन्हें यहां रहने का किंचित मात्र भी हक नहीं है।

उन्होंने कहा कि बीड़ी-सिगरेट निषेध की मांग उचित होते हुए भी हिन्दुओं को दबाने की भावना से प्रेरित है। जिसे किसी भी हालत में सहन नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि हिन्दू पूरे स्वाभिमान से जीना जानते हैं और इस आड़ में देश की एकता को क्षति पहुंचाने वाले तत्वों का संगठित होकर मुकाबला किया जाएगा।

सभी हिन्दू धर्मावलम्बियों को संगठनबद्ध होने का आह्वान करते हुए उन्होंने कहा कि अब केवल अमृतसर से ही नहीं सारे पंजाब से एक ही आवाज उठनी चाहिए कि हम एक हैं। जो कुछ ३१ मई को अमृतसर में हुआ है, कोई नेता उसके बारे में नहीं बोला, ऐसी स्थिति में इसके अतिरिक्त कोई रास्ता नहीं कि वे स्वयं अपनी रक्षा की तैयारी करें।

आर्य समाज में यह सभा शरारती अकाली तत्वों द्वारा चलाए जा रहे अभियान का जायजा लेने के लिए आयोजित की गई थी। जिसमें श्री चतुर्भुज मित्तल, अमृतसर की केन्द्रीय आर्य सभा के सभी अधिकारियों एवं पंजाब के प्रमुख हिन्दू नेताओं ने भाषण दिए।



चिटगांव के हिन्दुओं पर इस्लामी हमला

बंगला देश के एक मात्र गैर-मुस्लिम प्रधान जिले चटगांव में यूं तो बौद्धों और हिन्दुओं का अस्तित्व समाप्त करने का षड्यन्त्र विभाजन काल से ही चल रहा है, पर इधर बंगला देश के शासक हिन्दुओं की दुर्भाग्य लीला को और अधिक दुर्भाग्यपूर्ण बनाने पर तुल गए हैं। वह अत्यन्त निर्लज्जता के साथ, युद्ध स्तर पर अपनी हिंसक और विध्वंसक मुद्राएं दिखा रहे हैं।

विभाजन के समय चटगांव क्षेत्र के ९८ प्रतिशत निवासी गैर मुस्लिम थे और हिन्दू तथा बौद्ध धर्मों के अनुयायी थे, और उन्होंने रेडक्लिफ आयोग को एक ज्ञापन देकर इस क्षेत्र के पाकिस्तान में मिलाए जाने का कड़ा विरोध किया था। पर तत्कालीन भारतीय नेताओं की लापरवाही के कारण यह गैर मुस्लिम बहुल क्षेत्र पू० पाकिस्तान का एक अंग बन गया।

मुस्लिम शासकों का दमन चक्र पूर्वी पाकिस्तान के जन्म से ही आरम्भ हो गया। बौद्धों और हिन्दुओं को मुसलमान बनने के लिए बाध्य किया जाने लगा। १९६७ में पौने चार लाख की आबादी में मुस्लिम १५ हजार से बढ़कर ५० हजार हो गए। १९७४ तक पूरी आबादी बढ़कर ५ लाख हो गई थी जिसमें मुसलमानों की संख्या १ लाख थी। यह बोलते आंकड़े इस्लाम के आक्रामक रवैये का प्रत्यक्ष प्रमाण हैं।

जब मुल्लाओं और मुस्लिम अधिकारियों का सतत और व्यापक सांस्कृतिक, धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक आक्रमण भी इस क्षेत्र के बौद्धों और हिन्दुओं को भारी संख्या में मुसलमान बनाने में असफल रहा तो शासकों ने अपनी गैर मुस्लिम प्रजा को सताने के लिए सैन्य बल का सहारा लिया। पर गैर मुस्लिमों द्वारा संचालित शान्ति वाहिनी सफलता पूर्वक सरकारी सेना का मुकाबला कर रही है। ऐसे संकेत मिले हैं कि अपनी इस सफलता से प्रसन्न होकर शान्ति वाहिनी इस क्षेत्र को बंगला देश से पृथक कर भारत से संयुक्त करने के प्रयास में लगी है। भारतीय शासन तथा जनता को उनकी भरपूर सहायता करनी चाहिए।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वह मुसलमानों के विरुद्ध अवश्य लड़ते थे परन्तु मुसलमानों की मस्जिद की पूरी रक्षा करते थे। औरंगजेब ने हिन्दुओं के मन्दिरों को तुड़वा दिया। परन्तु शिवाजी ने मुसलमानों की मस्जिदों की पूरी रक्षा की। वह इतने चरित्रवान थे कि किसी महिला की तरफ बुरी नजर से नहीं देखते थे और न किसी दूसरे को देखते थे। वह अत्यन्त संयमी भी थे, और उनका धर्म सच्चा मानव धर्म था। कहते हैं कि एक बार मराठों ने कल्याण नामक एक नगर को जीत लिया और उसके सुलतान को कैद कर लिया तो शिवाजी के एक सेनानायक ने सुलतान की बेटी और परमरूपवती राजकुमारी को शिवाजी के लिए उपहार रूप में भेंट करने का फैसला किया। जब शिवा जी को यह पता चला तो शिवाजी ने कहा कि उस रूपवती राजकुमारी को उनके दरबार में पेश किया जाये। जब वह आई तो शिवाजी उसके आगे हाथ जोड़ कर खड़े हो गये और कहने लगे, कि बहिन यदि मेरी माता भी इतनी सुन्दर होती, जैसी कि तुम हो तो सम्भवतः मैं भी सुन्दर होता। जब उन्होंने उस राजकुमारी को अपनी बहिन कह दिया तो उसके पश्चात् उन्होंने फिर उसकी तरफ नहीं देखा और उसे बहुत से गहने और कपड़े देकर उसे उसके पिता के पास भेज दिया।

शिवाजी के जीवन में ऐसी कई और घटनाएं भी आती हैं। जिनसे पता चलता है कि समर्थ गुरु श्री रामदास का उन पर कितना प्रभाव था। हमारे इतिहास में ऐसे कई उदाहरण मिलते हैं, जब हमारे राजाओं महाराजाओं ने फकीरों और सन्तों के प्रभाव में आकर अपने जीवन की धारा बदल दी। सम्राट् चन्द्र गुप्त के विषय में कहा जाता है कि उन्हें बनाने वाले वास्तव में उनके गुरु विष्णु गुप्त चाणक्य ही थे। जिस प्रकार शिवाजी ने श्री गुरु रामदास जी से प्रेरणा लेकर धर्म की रक्षा के लिए संकल्प किया था, उसी प्रकार सम्राट् चन्द्र गुप्त ने अपने गुरु चाणक्य के प्रभाव में आकर फिर से भारत में एक स्वाधीन राज्य स्थापित करने का संकल्प किया था। शिवाजी ने भी अपने संकल्प को पूरा किया और चन्द्र गुप्त ने भी।

शिवाजी के साथ हमारे धर्म हमारी संस्कृति और हमारी परम्पराएं बन्धी हुई हैं। आज भी जब हम उन्हें याद करते हैं तो एक ऐसे महान् योद्धा का चित्र हमारे सामने आ जाता है, जिसने अपने धर्म की रक्षा की और जिसकी यह कामना थी कि वह अपने धर्म और अपनी संस्कृति की केवल रक्षा ही न करें, उसे देश-देशान्तरों तक पहुंचायें। वह इसे भारत से बाहर पहुंचाने के लिए तो कुछ न कर सके, क्योंकि उनका देहान्त ५३ वर्ष की आयु में ही हो गया था। परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं कि उन्होंने मुगल बादशाह के साथ कई लड़ाईयां लड़ीं। और अपनी तलवार जिसे भवानी तलवार कहते थे। उसके द्वारा उन्होंने अपने धर्म की रक्षा के लिए जो कुछ भी हो सका किया।

६ जून १६७४ को हिन्दु रीति के अनुसार उनका राज्याभिषेक हुआ। उन्होंने कई किले जीते थे। सिंह गढ़ और राजगढ़ दो ऐसे विशेष स्थान थे, जहां उन्होंने अपने साम्राज्य को सुसंगठित करने का सबसे अधिक प्रयत्न किया था उनका राज्याभिषेक भी राजगढ़ में ही हुआ था। वहां उन्होंने छत्र धारण करके हाथी पर सवार होकर जलूस निकाला। उनके आगे दो हाथियों पर दो झण्डे थे। जिनमें एक झण्डा श्री गुरु रामदास जी के भगवें वस्त्र का था। शिवाजी उस झण्डे को अधिक महत्व देते थे।

६ जून को उनके राज्याभिषेक दिवस पर हमें एक बार फिर भारत माता के उस महान् सपूत को अपनी श्रद्धांजलि भेंट करनी चाहिए और उसी के साथ यह संकल्प भी करना चाहिए कि जिस प्रकार शिवाजी महाराज ने अपने धर्म की रक्षा के लिए अपने प्राणों की बाजी भी लगा दी थी, वैसे ही हम भी अपने धर्म की रक्षा के लिए जो कुछ हम से हो सकेगा, करने को सदा तत्पर रहेंगे। यही शिवाजी महाराज को हमारी वास्तविक श्रद्धांजलि होगी।

सच्ची कथा—

उदीची दिशा में चल रे पाथिक

'सोम' का उपासक शान्ति चाहता है। सोम में शान्ति है, सोम में रस है, सोम में आनन्द है। अथर्ववेद १०-८-४४ मन्त्र में कहा है 'रसेन तृप्तो न कुतश्चनोनः', वह सोम प्रभु रस से तृप्त है, रस से भरपूर है। वह किसी प्रकार से न्यून नहीं। संसार में जो रस है, आनन्द है, वह तो उसी रसमय का है अतः साधक सांसारिक पदार्थों से आनन्द का कण-कण मिथ्या न करके उस आनन्द घन के पास जाता है। वहां डेरा लगा देता है। सामवेद ३. ८-२-६-२ मन्त्र के एक टुकड़े में उपमा देते हुए बताया है—मध्वो न मक्ष आसते, जैसे मधु पर मक्खियां आ बैठती हैं। मधुमक्खियां मधु की तलाश में निकलती हैं, मधु मिलने पर वहां डेरा डाल देती हैं। संसार से सन्तप्त जीव आनन्द की तलाश में निकलते हैं, ज्यों ही उन्हें आनन्द घन प्रभु का मेल होता है, वे भी मक्खियों की भांति वहां आसन जमा लेते हैं और उनकी सम्पूर्ण कामनाओं का विषय परमेश्वर हो जाता है। तैत्तिरोपनिषद् के ब्रह्मानन्द वल्ली के भाष्य में कहा है—

> यच्च कामसुखं लोके यच्च दिव्यं महत्सुखम्।
> तृष्णाक्षयसुखस्यैते नार्हतः षोडशीं कलाम्॥

संसार में जो काम सुख है, अथवा जो कोई महान् दिव्य सुख है वह तृष्णा नाश से होने वाले आनन्द का सोलहवां भाग भी नहीं है। अतः गीता कहती है इस शान्ति को प्राप्त करो। कैसे—

> विहाय कामान्यः सर्वान् पुमांश्चरति निःस्पृहः।
> निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति।
> गीता २-७१

अर्थात्—जो विषयों की सब कामनाओं को छोड़कर राग रहित होकर विचरता है, जो ममता और अहंकार की कलुष भावना को उखाड़ फेंकता है वह शान्ति प्राप्त करता है।

वैदिक शब्दों में सोम पान के लिए कहा है—

> सोमं मन्यते पपिवान् यत् सम्पिषन्त्योषधिम्।
> सोमं यं ब्रह्माणो विदुर्न तस्याश्नाति पार्थिवः॥
> अथर्व १४-१२

अर्थात्—घासफूस बूटी को पीसकर निचोड़ता है और समझता है मैंने सोमरस पी लिया। वह इस पृथ्वी का भोला व्यक्ति, उस सोम रस का आस्वाद कर नहीं पाता जिसका तत्त्व ब्रह्मवेत्ता लोग जानते हैं।

अब प्रश्न उत्पन्न होता है कि यह शक्ति आती कहां से है: कहते हैं शान्ति कहीं बाहर नहीं, वह तो 'स्वजः' है। इसे पाने के लिए बाहर की दौड़ बन्द करनी होगी, अन्तर्मुख होना होगा, अपनी कलुष भावना और कामनाओं के पहाड़ को खोदना होगा। इस पहाड़ को खोदते-खोदते रोम रोम से जब पसीने की धारा बह चले भी तब स्वयं अन्तःकरण में शान्ति का स्रोत फूट पड़ेगा। यजुर्वेद ३२-११ मन्त्र के एक अंश में बताया गया है—'आत्मनात्मानमभि संविवेश' आत्मा के द्वारा व्यापक परमात्मा में, मैं प्रविष्ट हो गया हूं।' मनुष्य का कर्त्तव्य आत्म दर्शन है, जिसने इसे नहीं किया उसने कुछ नहीं किया। ऐसे मनुष्य विषय भोग में फस जाते हैं। उनकी दशा का चित्र कठोपनिषद् में खींचा गया है—

> पराचः कामाननुयन्ति बालास्ते मृत्योर्यन्ति विततस्य पाशम्।
> अथ धीरा अमृतत्वं विदित्वा ध्रुवमध्रुवेष्विह न प्रार्थयन्ते।

भोले लोग बाहर फैले हुए विषयों के पीछे दौड़ते हैं। वे आगे आगे जाती हैं, हाथ नहीं आती, ये पीछे-पीछे भागते हैं पकड़ नहीं पाते। इच्छाओं की तो ये क्या पूरा कर पाते, मृत्यु का जाल चारों तरफ पड़ा है, उसी में जा उलझते हैं। धीर लोग अमृतत्व को जानकर अध्रुवों में अर्थात् नित्य की कामना नहीं करते। अतः शान्ति का आनन्द 'स्वजः' आत्मा से उत्पन्न है। इस प्रकार शान्ति का जन्म आत्मा से है यह भाव रखा करता है।

इस शान्ति के दुर्गम पथ पर चलने की प्रेरणा कहां से मिली? उत्तर मिला 'अशनिरिषवः', जो आत्मा को प्राप्त कर चुके हैं वे लोग प्रेरक हैं। 'अशनि' शब्द दो शब्दों के मेल से बना है। अश्नातिइति अशः, जो भोगों का भोग करता है वह अशः है अर्थात् आत्मा है। अशं नयतीति अशनि।' जो आत्मा को प्राप्त करता अथवा कराता है वह अशनि है। यह 'अशनि' पुरुष हमारे प्रेरक हैं। राम, कृष्ण, स्वामी दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द, 'अशनि' हैं। यही हमारे प्रेरक हैं। इन्हें कोई भय और विपत्ति विचलित नहीं कर सकती।

स्थान का नाम तो मुझे याद नहीं। अनूपशहर या अमृतसर की घटना है। स्वामी दयानन्द भाषण कर रहे थे। उन विरोधियों की प्रेरणा से प्रेरित एक जाट भाषण के समय गुस्से से भरकर एक डंडा लेकर गर्जता हुआ कि तू हमारे देवी-देवता, गंगा और मन्दिरों की आलोचना करता है, स्वामी जी की ओर बढ़ा। सभा में खलबली मच गई, पर, स्वामी जी के चेहरे पर जो तेज आया, वह दर्शनीय था, वे जरा भी विचलित नहीं हुए, जरा भी घबराये नही और मुस्कराते हुये बोले, अरे भाई, तू मुझे मारना चाहता है। इन सब आलोचनाओं की जड़ यह मेरा, मस्तिष्क है, ले इस पर मार डण्डा। जाट स्वामी जी के चेहरे को देखकर और उनकी निर्भीक आवाज तथा आत्मा की शान्ति और शक्ति को जानकर उनके चरणों पर गिर पड़ा और बिलख-बिलखकर क्षमा मांगने लगा। यह लोग हैं 'अशनि'। यह हमारे प्रेरक हैं।

मेरे जीवन के आदर्श हे सोम स्वरूप भगवान्! लो मेरा शक्ति भरा प्रणाम अपनी ओर मुझे आकर्षित करते रहना। मेरे रक्षक तथा सहायक शान्ति का जन्म आत्मा से है यह मेरे आत्मिक भाव। तुझे नमस्कार है। मुझे दृढ़ करते रहना और कुटिलता से बचाते रहना। अपनी आत्मा की शक्ति से प्रेरणा देने वाले अनुभवी बुजुर्गो! तुम्हें मेरा नमस्कार' मुझे प्रेरणा देते रहना।

उदीची दिशा मे चल रहे हे पथिक, यदि तूने हृदय शक्ति उत्पन्न कर ली तो तेरा जन्म सफल है। इसके लिए ध्यान रखना, योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं वो जम्भे दध्मः।' जो हम से द्वेष करता है और जिससे हम द्वेष करते हैं उस द्वेष भाव को तेरे जबड़े में रखते हैं। राग-द्वेष की विजय से शान्ति मिलेगी। आनन्द मिलेगा।

—सुरेशचन्द्र वेदालंकार,
175, आफरा बाजार,
गोरखपुर

वेद सुधा

स्वामी दयानन्द भाषण कर रहे थे। उनके विरोधियों की प्रेरणा से प्रेरित एक जाट भाषण के समय गुस्से से भरकर एक डण्डा लेकर गर्जता हुआ कि तू हमारे देवी-देवता गंगा और मन्दिरों की आलोचना करता है, स्वामी जी की ओर बढ़ा। सभा में खलबली मच गई पर, स्वामी जी के चेहरे पर जो तेज आया वह दर्शनीय था। वे जरा भी विचलित नहीं हुए, जरा भी घबराए नहीं और मुस्कराते हुए बोले, अरे भाई तू मुझे मारना चाहता है। इन सब आलोचनाओं की जड़ यह मेरा मस्तिष्क है, ले इस पर मार डण्डा। जाट स्वामी जी के चेहरे को देखकर और उनकी निर्भीक आवाज तथा आत्मा की शान्ति और शक्ति को जानकर उनके चरणों पर गिर पड़ा और बिलख-बिलखकर क्षमा मांगने लगा: यह लोग हैं 'अशनि'। यह हमारे प्रेरक हैं।

मनसा परिक्रमा का चतुर्थ मन्त्र (2)

अष्टम अनुवाक में आनन्द की मीमांसा करते हुए बताया है—

> सैषाऽऽनन्दस्य मीमांसा भवति। युवा स्यात्साधु युवाध्यायकः आशिष्ठो, द्रढिष्ठो बलिष्ठः। तस्येयं पृथिवी सर्वा वित्तस्य पूर्णा स्यात्, स एको मानुष आनन्दः। ते ये शतं मानुषा आनन्दाः स एको मनुष्य गन्धर्वाणामानन्दः, श्रोत्रियस्य चाकामहतस्य।

अर्थात्—कल्पना करो कि एक युवक है, बहुत अच्छा युवक पढ़ा-लिखा युवक, शासन करने वाला, दृढ़ और बलवान्। अब कल्पना कीजिए कि उसके लिए संपूर्ण पृथ्वी धन-धान्य से पूर्ण हो जाए। उसे उससे जो आनन्द होगा वह एक 'मानुष आनन्द' होगा। इस प्रकार के सौ मानुष आनन्दों से एक 'मनुष्य गन्धर्वानन्द' बनता है। सौ मनुष्य गन्धर्वों का आनन्द है उससे एक देव गन्धर्वानन्द बनता है क्षोभित तथा कामनाओं से आसक्त व्यक्ति को ऐसा आनन्द प्राप्त होता है। निष्काम ब्रह्मज्ञानी का यह एक कामना है और ब्रह्मानन्द उस सोम को पाने का आनन्द। इसे कैसे लिया जाए? किसने पिया या किया यह अलौकिक आध्यात्मिक—लोकों से, किन्हों ने पिया? सोम दर्शन २-४२ पर व्यास

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज की देन

नेपाल में शुकराज शास्त्री को कांग्रेस और आर्य समाज का प्रबल प्रचार करने के कारण के कारण 'गुस्ताख आर्य समाजी' कहकर बिना मुकद्दमा चलाए फांसी दे दी गई। उनके पिता जी को पहले ही विद्रोही मानकर जेल में डाल दिया गया था। हैदराबाद में अंग्रेजी सरकार के पिट्ठु निजाम ने आर्य समाजियों पर भयकर अत्याचार किये जिस पर आर्य समाज को

किस्त - 3

१९३८ में भारी सत्याग्रह और १९४७ में कुछ आर्य युवकों को निजाम की कार पर बम प्रहार और राजकरों से जमकर सशस्त्र संघर्ष करता पड़ा। अन्ततः उन्ही की अगवानी और सहयोग से भारतीय सेना ने हैदराबाद को विजित किया। इसमें अनेक आर्यों का बलिदान हुआ।

आर्य समाज की संस्थाए

यद्यपि आर्य समाज एक संस्था के रूप मे राजनीतिक सस्था कभी नही था, परन्तु फिर भी निजी रूप में आर्यसमाज के अनेक सस्थाओ, विशेषकर शिक्षण संस्थाओ ने भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम में अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान किया और अकथनीय अत्याचार सहे। इनमे सर्वाधिक योगदान गुरुकुल कांगड़ी और डी० ए०-वी० कालेज का रहा। इन दोनों की चर्चा ब्रिटिश ससद तक में हुई और बाद मे इंग्लैंड के प्रधानमन्त्री बनने वाले, रैम्जे मैकडानल्ड की अध्यक्षता में एक विशेष जांच कमीशन भारत भेजा गया। प्रसिद्ध साम्यवादी लेखक यशपाल ने, जिन का बचपन गुरुकुल कांगड़ी मे बीता था, लिखा है कि उनमे देश प्रेम की भावना का लगभग पूर्ण श्रेय गुरुकुल को है। यही सस्था थी जहां राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य मे इतिहास की सही शिक्षा दी जाती थी। वहां अंग्रेजों के विरुद्ध युद्ध संचालन करती हुई जान आफ आर्क ? १८५७ के युद्ध तथा अंग्रेज के आने से हुई भारत की दुर्दशा के बड़े बड़े चित्र गुरुकुल की दिवारों पर प्रदर्शित थे। ला० हरदयाल जैसे अनेक क्रान्तिकारी यहां सप्ताहों ठहरते थे। वहां के ब्रह्मचारियों ने १५०० रुपये गांधी जी को अफ्रीका भेजे थे और गान्धी जी के सत्याग्रह आश्रम के सारे बालक उसकी स्थापना से पूर्व यहीं रहे थे एक बार तो उत्तर प्रदेश के गवर्नर ने यहां छापे की योजना तक बना ली थी। स्वा. श्रद्धानन्द, आचार्य रामदेव, आचार्य अभय-देव तथा उनके ब्रह्मचारियों ने अनेक बार सत्याग्रह में भाग लिया। मार्शल-ला के समय स्वा० श्रद्धानन्द द्वारा स्थापित पजाब सेवा समिति में भी ब्रह्मचारियों ने प्रशंसनीय कार्य किया। १९३० के सत्याग्रह में तो गुरुकुल के महाविद्यालय विभाग के सारे ही ब्रह्मचारी सत्याग्रह करने चले गये थे। ब्रह्मचारी सर्वमित्र और सत्य-भूषण ग्राम-प्रचार में ही कम्प ही स्वर्ग सिधार गये। १९३२ में आचार्य रामदेव पंजाब कांग्रेस के डिक्टेटर के रूप में जेल गए।

गुरुकुल महाविद्यालय ज्वालापुर के आचार्य नरदेव शास्त्री कांग्रेस के प्रमुख नेता रहे। १९४२ में यहां के अनेक अध्यापक, स्नातक तथा छात्र भूमिगत रहे। गुरुकुल डौरली को सरकार ने अवैध घोषित कर दिया था। १९४२ में इसके सारे प्रमुख सदस्य जेलों में रहे और इसके आचार्य श्री सेवाराम शास्त्री १९४६ में जेल में ही शहीद हो गए। गुरुकुल चरौंडा १९४२ में अंग्रेज जिलाधीश द्वारा अवैध और जब्त घोषित होते होते बचा। इसके आचार्य स्वा० रामेश्वरानन्द जी १९३१ देहरादून जेल में रहे। निजाम हैदराबाद मे लोहा लेने वाले श्री बंसीलाल व्यास द्वारा स्थापित गुरुकुल घटकेश्वर भी दूसरे सभी गुरुकुलों की तरह समस्त देश के क्रान्तिकारियों का सुरक्षित शरण स्थल रहा है। दयानन्द उपदेशक विद्यालय लाहौर की भी पुलिस द्वारा तलाशी हुई थी और उसके आचार्य स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी पंजाब के गवर्नर हत्या-षड्यन्त्र के आरोप में नजरबन्द बनाए गये थे। वह १९३० में पजाब में कांग्रेस आन्दोलन के नेता थे। गुरुकुल गुजरां-वाला १९१९ में मार्शल-ला का शिकार हो गया। शहीद सुखदेव के क्रान्ति गुरु आचार्य मुक्तिराम उपाध्याय (स्वामी आत्मानन्द) के गुरुकुल पोठोहार पर पुलिस का हार पहरा था। गुरुकुल भज्जर के आचार्य भगवानदेव भी जेलों में में रहे। वैदिक आश्रम अलीगढ़ १९०८ में ही विद्रोहियों का अड्डा रहा और अनेक सदस्यों को जेल से इसकी व्यवस्था बगब हो गई। मुसाफिर विद्यालय आगरा के छात्र और शहीद रोशनसिंह आर्य के सम्बन्धी अभिलाषचन्द्र ने रास-बिहारी बोस के यहां बम का निर्माण व परीक्षण किया था। वहीं के पं० महेश-प्रसाद मौलवी प्रत्येक आन्दोलन में भाग लेते थे। १९२१ के असहयोग आन्दोलन में जोरदार भाग लेने के कारण यह विद्यालय बन्द हो गया।

डी. ए. वी. कालेज, लाहौर क्रान्ति का केन्द्र था। स० किशनसिंह लाला लाजपतराय तथा भाई परमानन्द जैसे लोग इससे सम्बद्ध रहे। १९४२ में यहां के छात्रों और अध्यापकों की खूब पिटाई हुई। होस्टल की दीवारें खून के धब्बों से सन गई थीं। मार्शल-ला के दिनों में यहां के छात्रों को मई-जून की दोपहर में नंगे सिर-पांव कई-कई मील चलने को बाध्य किया गया। यहां के छात्रों की एक गुप्त क्रान्तिकारी संस्था थी जिसके मन्त्री प्रिंसिपल भगवान दास, संरक्षक बाबा गुरमुखसिंह और सेठ राम-नारायण वर्मा थे तथा सदस्यों में अनेक सरकारी अधिकारी भी थे। डी० ए० वी० कालेज कानपुर के कई छात्र पुलिस मुठ-भेड़ में शहीद हुए थे और वहां के अध्यापक मुन्शीराम शर्मा 'सोम' क्रान्तिकारियों के अन्तरंग सहयोगी थे। ला० लाजपतराय द्वारा स्थापित नेशनल कालेज, लाहौर मे प्रबल क्रान्तिकारी सगठन था और बंगाल महाराष्ट्र आदि प्रान्तों के क्रान्तिकारियों से इसका गहरा सम्पर्क था।

डी. ए. वी. कालेज, लाहौर क्रान्ति का केन्द्र था। स. किशनसिंह, लाला लाजपतराय तथा भाई परमानन्द जैसे लोग इससे सम्बद्ध रहे 1942 में यहां के छात्रों और अध्यापकों की खूब पिटाई हुई। होटल की दीवारें खून के धब्बों से सन गई थीं।

आर्य वीर दल का भी स्वाधीनता-सग्राम मे भारी योगदान रहा है। इसकी प्रतिज्ञा धर्म, देश और राष्ट्र की सेवा थी और देश तथा राष्ट्र के प्रति आर्य वीर के कर्त्तव्य का नाम 'राष्ट्र धर्म' था। मध्य प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, पंजाब, बंगाल, बिहार और आसाम तक इसकी शाखाएं फैली थीं। बंगाल और आसाम में ५४५ महिलाएं भी इसकी सदस्या थीं। १९४२ में अनेक आर्य वीर जेल गये और फांसी पर लटके। नागपुर के कालूराम को फांसी लगी।

उग्र राष्ट्रवादी आर्य समाज

भारत की स्वाधीनता में उग्र राष्ट्र-वादी क्रान्तिकारी आन्दोलन और इस आन्दोलन में आर्य समाज का योगदान अत्यन्त महत्वपूर्ण है। अनेक उग्रराष्ट्र-वाद के प्रचारक और क्रान्तिकारी आर्य समाजी थे और क्रान्तिकारियों को आर्य समाजियों से प्रचुर सहयोग मिलता था। लाहौर में एक गुप्त संस्था 'भारत समाज' के प्रमुख सहायक ला० लाजपतराय, स० अजीतसिंह तथा भाई परमानन्द सभी आर्य समाजी थे। अमेरिका में जब एक बार ला० हरदयाल के मन में वैराग्य जगा तो भाई परमानन्द ने उन्हें प्रबोधन देकर पुनः क्रान्तिकारी आन्दोलन में सक्रिय किया। ला० हरदयाल ने लिखा था कि सत्यार्थ प्रकाश के अध्ययन से मेरी विचार धारा की दिशा ही बदल गई है। १९०७ में मांडले-निर्वासन के समय सरकार ला० लाजपतराय को सेनाओं को भड़काने के कारण दूसरा नाना साहब मानती थी और फिर भी उनकी वापसी पर महात्मा मुन्शी-राम ने आर्य समाज बच्छोवाली में उन का भाषण करवाया था। महाशय कृष्ण

—प्रो. जयदेव आर्य

के क्रान्तिकारी लेखों के कारण लन्दन के एक समाचार पत्र ने उन्हें 'अग्नि सम्पादक' की उपाधि दी थी। जब द्वितीय विश्व-महायुद्ध में नेहरू जी ने नेता जी की भारत पर आक्रमण करने की योजना की भर्त्सना की थी, तो महाशय जी ने अंग्रेज सरकार की परवाह न करते हुए अपनी लेखमाला में जर्मन सेनाओं के स्वागत की घोषणा की थी। स० अजीतसिंह के निर्वासन के समय पंजाब में प्रसिद्ध दो गीतों में से एक न मिण्टो है वायसराय अपना, न किचनर है कमान अफसर' म० कृष्ण ने अपने पत्र 'प्रकाश' में छाप कर एक तरह से अंग्रेज सरकार से खुले विद्रोह की घोषणा की थी। ठीक इन्ही विचारों का प्रचार करने वाले अनेक आर्य समाजी प्रचारकों का उल्लेख तत्कालीन गृह-राज-नीतिक विभाग को प्राप्त गुप्तचर विवरणों में मिलता है। आर्य युवकों की 'आर्य स्वराज्य सभा' नामक एक पृथक् संस्था भी थी। उसका एक पत्र भी निकलता था, जिसे अमेरिका में बैठे ला० हरदयाल भी पसन्द करते थे। प्रो० वेदव्रत, वैद्य रामगोपाल तथा अजीतसिंह सत्यार्थी आदि इसके क्रान्तिकारी कार्यकर्ता थे। इन्हीं ने अंग्रेजी सरकार के विरोध के बावजूद लाहौर में सड़क के बीच ला० लाजपतराय की प्रतिमा स्थापित की थी, जिसे इन्होंने १९४७ में लाहौर से लाकर शिमला में स्थापित कर दिया।

आन्दोलन और आर्य समाज

महाराष्ट्र में क्रान्ति-आन्दोलन को सर्वप्रथम संगठित करने की प्रेरणा हुतात्मा वासुदेव बलवन्त फड़के को महर्षि दयानन्द, के शिष्य महादेवगोविन्द रानाडे के भाषण से मिली थी।

(क्रमशः)

(गतांक से आगे)

फकीर—पर लाला जी जिस तरह आप कहते हो कि स्वराज मिलने पर देश को डाक्टरों व इन्जीनियरों की बहुत जरूरत होगी उसी तरह सरकारी महकमों का कार्य चलाने के लिए ग्रार्टस ग्रेजुएट की जरूरत न पड़ेगी।

लाजपत—वर्तमान शिक्षा तुम्हें अपनी संस्कृति से कोरा रखती है। तुम्हारे सामने भारत की एक बिगड़ी तस्वीर पेश करती है कि भारत कभी एक राष्ट्र नहीं था देश की राजनैतिक एकता अंग्रेजों की दी हुई है।

किशोर—लाला जी हमने पढ़ा है कि चौथी पांचवीं सदी में गुप्त साम्राज्य सारे भारत में फैल गया और समुद्रगुप्त की धाक हिमालया से लेकर राजपूताना से मालवा तक मानी जाती थी।

लाजपत—बिलकुल ठीक है, वो जमाना था जब मिश्र और बेबीलोन की सभ्यता की रोशनी अभी इंग्लैंड, फ्रान्स और जर्मन तक नहीं पहुंची थी। एक तरफ प्राचीन भारत के गौरव और महानता के बारे में तुम्हें कुछ नहीं बताया जाता और दूसरी तरफ तुम्हें मुल्कों का खास करके योरोप के इतिहास इसलिए नहीं पढ़ाया जाता कि कहीं तुम्हारे मन पर फ्रांसिसी क्रान्तिकारी पर पड़ी मुसीबतों के पहाड़ और अन्त में उनकी शानदार जीत का असर न पड़ जाए और कहीं तुम आजादी प्राप्त करने के लिए उनकी तरह लड़ने मरने के लिए तैयार न हो जाओ। तुम्हें अपने योद्धाओं जैसे शिवा जी, राणा प्रताप, गुरु गोविन्द सिंह जी, टीपू सुल्तान व झांसी की रानी लक्ष्मीबाई की जीवनियों के साथ पूरी जान पहचान नहीं कराई जाती कि उनके कारनामें पढ़ कर तुम्हारे अन्दर जोश न आ जाए और तुम गुलामी की जंजीरें तोड़ कर फैंक न दो। विदेशी शिक्षा तुम्हें रहना, बैठना और सोचने में कार्बन कापी बना रही है और इस तरह स्वराज से दूर ले जा रही है, इसलिए मैं नई पीढ़ी को विदेशी शिक्षा से परहेज करने की सलाह देता हूं।

फकीर—अगर आप समझते हैं कि विदेशी शिक्षा हमारे लिए अच्छी नहीं और देश को इसका नुकसान है तो हमारे नेता हमें राष्ट्रीय शिक्षा देने का प्रबन्ध क्यों नहीं करते?

लाजपत—मैं बहुत प्रसन्न हूं कि बेटा तुमने यह प्रश्न किया। तुम्हारे मन में कोई ऐसी शंका नहीं होनी चाहिए कि तुम्हारी शिक्षा के लिए कैसे राष्ट्रीय महाविद्यालय का प्रबन्ध हो रहा है।

लाला लाजपतराय के जीवन पर आधारित एक प्रसिद्ध नाटक

शेरे पंजाब लाला लाजपतराय

ले०—श्री जी० एस० खोसला

किशोर—पर लाला जी ऐसा प्रबन्ध क्यों नहीं हो रहा?

लाजपत—हमारे नेताओं का विचार है और है भी ठीक हम जल्दी से जल्दी स्वराज प्राप्त करना चाहते हैं, इसलिए मैं: सामने इशारा करते हुए, सड़क के पार अपनी कोठी में लोकमान्य तिलक की याद में तिलक स्कूल आफ पोलिटिक्स खोल रहा हूं जिसमें युवकों को राजनीति के बारे में शिक्षा दी जाएगी।

किशोर—लाला जी हम जानना चाहते हैं कि ये पढ़ाई जो हम कर रहे हैं इसके बारे में आपका क्या विचार है।

लाजपत— 'किशोर के कन्धे पर हाथ रख कर' मेरे विचार में अपने अखबार 'वन्दे मातरम्' में पेश करता हूं और वकालत के विद्यार्थी जो समझें कि जिस सरकार को खत्म करने का फैसला राष्ट्र ने किया है उस सरकार के कालिजों में पढ़ना उनके अन्तःकरण के विरुद्ध है वो न मिलवरतन के असहयोग में किसी न किसी सेवा का बीड़ा उठाएं। एक ईमानदार और देशभक्त सड़क बनाने वाले मजदूर की पदवी एक डिप्टी कमिश्नर से कहीं ऊंची है। मैं चाहता हूं कि राष्ट्र के नौजवान गावों, कारखानों व मिलों में जाकर अपने हाथों से काम करें और अपने आपको मजदूरों का साथी समझें जो तुम्हारे प्यार व इन्तजार में आंखें बिछा कर बैठे हैं।

फकीर—लाला जी जो सलाह आप दे रहे हैं, क्या हमारे नेता उस पर चलने के लिए तैयार हैं?

लाजपत—मैं जो सलाह आपको दे रहा हूं अपनी तरफ से दे रहा हूं। अगर आज कोई मेरा बेटा कालिज में पढ़ रहा होता तो निसन्देह मैं उसे सड़क पर रोड़ी कूटने के लिए लगा देता, बाकी सब नेताओं की मैं कसम नहीं खा सकता। मैं समझता हूं कि तुम्हारे मन में क्या है? मैं मानता हू कि सब नेता दयानतदार नहीं होते वे कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं. उनमें से कई ऐसे हैं जो सच्चे देशभक्त नहीं है जो बुजदिल व स्वार्थी है, कोंसिलों की सदस्यता व उच्च पदों के पीछे नाक रगड़ते हैं, हमें इन कमजोरियों से ऊपर उठना चाहिए और इस बात पर यकीन होना चाहिए कि हमारे लिए कौन सा मार्ग ठीक है, वो मार्ग है कुर्बानी का, क्योंकि जब तक हम स्वार्थों को भूल कर देश की स्वतन्त्रता के निशाने पर दृढ़ होकर अपने आप को इस महान कार्य के लिए अर्पण नहीं करेंगे हम गुलामी की जंजीरों को तोड़ नहीं सकेंगे।

अगर आज कोई मेरा बेटा कालिज में पढ़ रहा होता तो निसन्देह मैं उसे सड़क पर रोड़ी कूटने के लिए लगा देता। बाकी सब नेताओं की मैं कसम नहीं खा सकता। मैं समझता हूं कि तुम्हारे मन में क्या है, मैं मानता हूं कि सब नेता दयानतदार नहीं होते, वे कहते कुछ हैं और करते कुछ हैं, उनमें से कई ऐसे हैं जो सच्चे देश भक्त हैं।

अ.वाज—लाला जी फिर हमारे लिए क्या आज्ञा है?

लाजपत—आज्ञा नहीं सलाह। लिव इन्जरसली साऊदी का शेयर है·

आना मन बशम कि रोजे
जग बीनी पुश्तेमन,
हो मन की दरमियाते
खाको खू बीनी सरे।

इसका अभिप्राय यह है कि मैं वो नहीं कि लड़ाई के दिन मेरी पीठ देखो, मैं वो हू कि तुम मेरे सिर मिट्टी व खून से लथपथ देखोगे।

—एक आवाज आती है 'लाला लाजपत राय नारा लगता है "जिन्दाबाद" एक आवाज—हम गुलामी की जंजीरों को तोड़ना चाहते हैं। हम इस तरह का बलिदान देने के लिए तैयार है। पर हमारे सामने कोई साफ रास्ता नहीं। एक तरफ लोकमान्य तिलक ने अपनी नैशनल डैमोक्रेटिक पार्टी की ओर से एक बयान निकाला है और दूसरी तरफ इसके विपरीत महात्मा गान्धी ने होम रूल लीग के प्रधान होने की हैसियत से असहयोग आन्दोलन व बाईकाट का एलान जारी करते हुए कहा है कि हम एक वर्ष के अन्दर स्वराज लेकर रहेंगे हम किसकी पैरवी करें।

एक और आवाज—आपने अमेरिका से लिखा था कि अभी किसी भी बड़े आन्दोलन में महात्मा गान्धी की परीक्षा नहीं हुई किस बिनाह पर उन्हें असहयोग आन्दोलन की बागडोर सौंप दी जाए क्या आपका विचार है कि हम आंखें बन्द करके महात्मा गान्धी के पीछे लग जाए।

एक्ट चार

लाजपत—मेरी राय पूछो तो आंखें बन्द करके कभी कुएं में भी छलांग मत लगाओ, मेरे मन में लोकमान्य तिलक के लिए बड़ा सम्मान है परन्तु इसका मतलब यह नहीं कि मुझे उसके इख्तलाफ राय का हक नहीं, मैं स्वामी दयानन्द को अपना गुरु समझता हूं पर यह जरूरी नहीं कि मुझे उनकी शिक्षा पर अन्धविश्वास है, दूसरी तरफ गान्धी जी की सादगी व पवित्रता के कारण मेरे मन में उनके प्रति बड़ी श्रद्धा है, जिस तरह हजरत मूसा ने मिश्र में अपने देशवासियों की अगवाई की थी उस तरह गांधी जी भी भारतीय जनता को मुक्ति का मार्ग दिखाएंगे। यह मेरा निजी विश्वास है, पर जहां तक उनके असहयोग आन्दोलन का प्रोग्राम है मुझे यह मानने में कोई संकोच नहीं कि मैं फैसला ही कर सका, इसलिए समय अब है फिर नहीं. मुझे इस बात पर विश्वास है कि एक वर्ष के अन्दर हम स्वराज प्राप्त कर सकते हैं मैं उनमें से नहीं जो कहते हैं अंग्रेजों को निकालो, पीछे देखी जाएगी, तुम्हें पता है कि कुछ सप्ताह मे कलकत्ते का एक विशेष अधिवेशन इस मामले को तय करने के लिए होना है, तुम कांग्रेस के फैसले का इन्तजार करो।

किशोर—हमारी यह इच्छा है कि, उस अधिवेशन की प्रधानगी तुम्हे स्वीकार करनी चाहिए।

लाजपत—मेरे पर जोर काफी डाला जा रहा है परन्तु मैं पांच साल तो बाहर रहा हू और इस हालत से पूरी तरह परिचित नही हू, इसलिए मेरे जवान दोस्त, मैं तुम्हारी बुद्धि से लाभ उठाना चाहता हू तुम किस दलील पर यह सिफारिश कर रहे हो।

किशोर—लाला जी आपकी गैर-हाजरी में जो कुछ पंजाब के साथ बीती वो आप से छुपी नहीं, जलियां वाले बाग का कत्लेआम मार्शल-ला के अन्तर्गत पंजाबियों पर हुए अत्याचार अमृतसर की गलियों में घुटने रगड़ कर जाने का हुक्म, हमारे शहरी भाइयों का अपमान, इनकी ज्यादतीयों का बदला लेने का साधन, ढूंढने के लिए आप से बढ़कर कोई योग्य नहीं।

(क्रमशः)

आर्यों की संस्कृति विश्व पर प्रभावी

अनेक पुरातात्विक, भवन निर्माण कला, शिक्षा, भाषा, चिकित्सा संगीत कला, गणना, माप-तोल आदि उत्खनन से प्राप्त साक्ष्यों, प्रतीकों, संस्कृति, सभ्यता में बिखरे इतिहास के अवशेषों, भौगोलिक परिस्थितियों राज्य चिन्हों आदि में अब प्रायः निरन्तर शोध द्वारा सिद्ध करना सम्भव हो गया है कि आर्यों का साम्राज्य पूरे विश्व में फैला हुआ था। सारा भौतिक, पर्यावरण हमारी संस्कृति से मण्डित था। इस संस्कृति के वैदिक संस्कृति, आर्य संस्कृति, सनातन (हमेशा बना रहने वाला) और हिन्दू संस्कृति नाम कहे जाते हैं जोकि वास्तव में मानव संस्कृति जैसी पूर्वाग्रह मुक्त विशाल संस्कृति है।

इस्लामी शब्द कोषों में हिन्दू का अर्थ चोर, आदि दिया है पर हमारे वेदों में सभी व्यक्तियों को सभ्य सुशील अनुशासित, सुसंस्कृत बनाने का आग्रह किया गया है—

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्।

सारी धरती परिवार है-वसुधैव कुटुम्बकम् यहां का आदर्श रहा है। पुराने एटलस देखने पर भौगोलिक प्रमाणों से यह प्रतीत होता है कि आर्य विश्व दिग्विजय के लिए अनेक बार जा सके होंगे। जहां-जहां आर्यगण गये अपने ऋषियों की भूमि, वास्तवों के नामों के साथ साथ जुड़ते गये। ये सभी शासक संस्कृत बोलने वाले थे इसीलिए स्थानों का नाम ऋषीय (रशिया) साइबेरिया शिविर प्रदेश, इरावती तटवर्ती देशों के नाम ईरान ईराक पड़े, कैस्पियन सागर कश्यप ऋषि के नाम से तो पुलस्त्य ऋषि (रावण का नाना) के नाम से पेलेस्टीन राम से रोम (अरार्थों उच्चारण भेद मात्र है) अत्रि ऋषि के नाम से इटली बाद में नाम परिवर्तित हो गया। यह सब उत्खनन की सहायता से प्राप्त पुरातात्विक प्रमाणों मे चित्रित रामायण की दुर्लभ (उपलब्ध) प्रति, शिवलिंग, भस्मव्यवरित ललाट वाले यूनानी राजा की मूर्ति-चित्र इसे सिद्ध करते हैं। अफ्रीकन राम के द्वितीय पुत्र कुश के वंशज हैं। गौतमालय (ग्वाटे माला) भुवनेश्वर (ब्यूस आयर्स) अरुणाव (उरुग्वे) आदि स्थान संस्कृत नामों के कालवाश अपभ्रंश प्रचलन मात्र हैं।

कालगणना की दृष्टि से आवर (hour) होरा का प्रतिरूप है तो ६० पल विपल-क्षणादि मिनट सैकेण्ड के, सप्ताह दिनों के नाम, महीनों का सर्वोच्च क्रम आरम्भ से ही विश्व को पढ़ाया। यह तभी संभव है जब कि राज्य शासन वहां रहा हो।

-मानचित्र में भारत को देखें तो २००० मील समुद्र पार कर इंग्लैंड, एथेन्स, फ्रांस तक बड़ी आवाजाही से भारतीयों के राज्य के चिन्ह ढूंढे जा सके हैं, राज्य चिन्हों जैसे बैठने का राज्यासन इंग्लैंड के सबसे पुराने राज्यसनों में एक सींग वाली गाय व सिंह का मिलना तथा सोवियत यूनियन के समरकन्द क्षेत्र में उदीयमान सूर्य चलता हुआ बाघ, सूर, शार्दूल नाम से पुकारा जाता है जो संस्कृत के सूर्य शार्दूल का चिन्ह तैमूरलंग के तेजोमहल की कब्र पर है।

स्वस्तिक चिन्ह जर्मनी का है जोकि आर्य संस्कृति का ही है।

शिक्षा पद्धति में प्रचलित शब्द बहुत से समान ध्वनि वाले संस्कृत के तत्सम शब्द अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन ग्रीक के मालूम पड़ते हैं, मात्रा और भार का क्रम नियम भारत से सर्वत्र फैला। मैडिकल सिस्टम भी प्राचीन भारत से अन्यत्र गया है ऐसा इस चिकित्सा पद्धति में प्रचलित निदान तथा रोगों के नाम से साम्यता रखने वाले अंग्रेजी नामों से सिद्ध होता है यथा हृत् (हार्ट) आर्द्र कपाल (हाइड्रोसेफालिक) यकृत्शोथ (सिरोसिस...) आदि-आदि भाषा की दृष्टि से विश्व की सारी भाषाएं संस्कृत से निकली हैं, इस्लाम, ईसायत, ... के-बीरन, ग्रीक में ... दुहिता ... हरि ... (ईसु) Christ कृष्ण का उच्चार भेद है आमानुष मात्र है; ... सितार (सप्ततार) गिटार-त्रितार हार्ड-सुर्योदा आदि संगीत के आधार पर भी आर्यत्व का प्रभाव इन पर देखा जा सकता है।

—पुरुषोत्तम नागेश ओक

पुरातात्विक दृष्टि से कश्मीर से कन्या कुमारी तक की सारी मस्जिदें हिन्दू ऐतिहासिक स्थान है। अहमदाबाद के जामामस्जिद के भद्र नामक एक स्थान के आधार पर न्यायालय द्वारा भी इसका समर्थन प्राप्त हो चुका है। हर मुस्लिम धर्मान्तरित हिन्दू है और हर मस्जिद परिवर्तित हिन्दू धर्म-स्थान है। त्रिमूर्ति की उपासना अष्टांग आयुर्वेद से प्रचलित होकर साइबेरिया तक फैली है, अतः वहां अभी भी आयुर्वेदिक हिमवण्टकादि का प्रयोग होता है, वैटिकन शहर वाटिका शब्द से सम्बन्धित है।

इस प्रकार सहस्रों ऐसे उदाहरण विश्व भर में आर्यों के साम्राज्य की प्राचीनता को उजागर करते हैं।

सम्पादक के नाम पत्र

सभी हिन्दू धर्मावलम्बियों से अपील

आर्य समाज सदैव से भारतीय संस्कृति सभ्यता व धर्म की रक्षा करता रहा है। जब-जब देश धर्म पर संकट आया तब-तब आर्य समाज ने अपने महान् त्याग व बलिदान से देश धर्म की रक्षा की इतिहास इसका साक्षी है।

आज देश व धर्म दोनों संकट में हैं इस संकट की जो टीस आर्य समाज के हृदय में है वह लिखी नहीं जाती।

हिन्दू जाति को एक सूत्र में गुथी माला को अनेक भागों में पिरोने का दुःसाहस किया जा रहा है जो आर्य समाज के लिए एक चुनौती है। आज हरिजनों को अलग करने की कुटिल नीति चल रही है कल हो सकता है जाटव आदि को भी अलग करने की चेष्टा की जाए और हिन्दू जाति को अपंग बनाया जाए, यह सब कुछ जो हो रहा है वह हिन्दू जाति के असंगठित होने का दुःखद परिणाम है। इस सम्बन्ध में मुझे एक घटना याद आई। एक समय १ नाई, १ ब्राह्मण, १ वैश्य व एक हरिजन कहीं यात्रा पर साथ-साथ जा रहे थे रास्ते में एक ईख के खेत से सबने एक-एक गन्ना तोड़ लिया।

किसान छिपकर यह देख रहा था, वह निकल कर बाहर आया तो देखा यह तो चार हैं इनसे कैसे विजय पा सकता हूं उसने उचित सोची और हरिजन से बोला—

क्यों रे भंगी के, एक तो ब्राह्मण है जो सबके पूज्य हैं, एक सेठ जी हैं जो समय-समय पर हमें धन देते हैं, एक नाई है जो हमारी सेवा करता है, पर भंगी के तू बता तूने गन्ना तोड़ने का कैसे साहस किया और मार पछाड़ा, अन्य तीनों देखते रहे।

फिर नाई से कहा तू हमारे सेठ जी व ब्राह्मण की होड़ करता है इनका तो हमको आदर करना चाहिए पर नाई के तूने गन्ना तोड़ने का कैसे साहस किया और मार पछाड़ा, अन्य तीनों देखते रहे।

इसी प्रकार उसी उचित ब्राह्मण व सेठ जी में भी मार लगाती।

यह है असंगठित होने का दुष्परिणाम।

आज हिन्दू जाति संगठित नहीं है, उसका ही यह दुष्परिणाम है कि अनार्य गैर हिन्दू इसकी एकता को भंग कर इसे पद-दलित करने पर तुले हुये हैं।

अतः मैं सभी हिन्दू धर्मावलम्बियों से प्रार्थना करता हूं कि वे सब आर्य समाज के संगठन में एक होकर हिन्दू जाति को पददलित होने से बचाएं और भारत सरकार की कुटिल नीति को विफल कर दें।

जब हिन्दू जाति संगठित हो जाएगी तो कोई शक्ति इसको छिन्न-भिन्न करने का दुःसाहस नहीं कर सकती।

—वेदमुनि

सार्वदेशिक सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी

विश्व प्रसिद्ध राजस्थान की ऐतिहासिक वीर भूमि एवं प्रकृति की अद्भुत छटाओं से परिपूर्ण झीलों के नगर उदयपुर में आर्य जगत् के सर्वोच्च संगठन—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा देहली के अन्तर्गत तथा आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के तत्वावधान में दशहरा व दीपावली के अवकाशों के मध्य दिनांक १६, १७ व १८ अक्तूबर १९८१ को सार्वदेशिक स्तर पर सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी का विशाल समारोह बड़ी धूम-धाम से मनाया जाएगा।

संसार भर में वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार एवं उसके प्रकाशनार्थ राजस्थान के अजमेर नगर में ही उन्होंने वैदिक यन्त्रालय तथा परोपकारिणी सभा की स्थापना की। राजस्थान के धर्म प्रेमी वीर शासक उदयपुर, जोधपुर, शाहपुरा तथा जयपुर आदि के नरेशों को उन्होंने वैदिक धर्म में दीक्षित करने तथा राजनैतिक चेतना देने का भरसक प्रयास किया।

सत्य सनातन ईश्वरीय ज्ञान वेद की दिव्य ज्योति से विश्व भर को प्रकाशित करने के लिए ही उन्होंने उदयपुर के प्रसिद्ध नवलखा महल में बैठ कर संसार का महान् वैचारिक क्रान्तिकारी ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश लिखा जो संसार भर के मानव मात्र को उनकी आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनैतिक एवं वैज्ञानिक क्षेत्र की प्रत्येक समस्याओं के समाधान हेतु दिशा निर्देश, नवचेतना एवं प्रबल प्रेरणा दे रहा है। महर्षि दयानन्द के इस प्रकार के आश्चर्यजनक ज्ञान, साधना, त्याग, तपस्या एवं महत्ता का परिचायक सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ ही है। जिसकी परम पावन शताब्दी मनाने का विश्व-भर के आर्यों को तथा विशेषकर राजस्थान को परम सौभाग्य प्राप्त हो रहा है।

अब उदयपुर में मनाया जाने वाला सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी का यह विशाल समारोह देश-विदेश में चल रही अनेक प्रवृत्तियों, समस्याओं एवं चुनौतियों को देखते हुये आर्य जगत् की सम्पूर्ण शक्ति ... त्याग, बलिदान एवं जीवित जागृत होने का परिचय देने का ... सुअवसर है। वह दिन भी दूर नहीं, जब-कि इस अवसर पर उदयपुर का नवलखा महल भी हमें ... हो ... यह सब आपके संगठन, शक्ति के ... पर ही निर्भर है।

—कोटूसिंह एडवोकेट, ... सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी समिति राजस्थान

आर्य प्र. नि. सभा पंजाब द्वारा प्रकाशित तथा प्रसारित साहित्य की पुस्तकें

१.	सत्यार्थप्रकाश हिन्दी,	४—५०
२.	सत्यार्थ प्रकाश (उर्दू)	१०—००
३.	„ अंग्रेजी	२०—००
४.	आर्य समाज—अतीत की उपलब्धियां तथा भविष्य के प्रश्न —ले०—डा० भवानीलाल भारतीय	१०—००
५.	पंजाब का आर्य समाज ले०—प्रि० रामचन्द्र जावेद	४—००
६.	सिलिम्पसज फराम सत्यार्थ प्रकाश (अंग्रेजी) —ले० डी० एन० वासुदेव जी	३-००
७.	स्वामी श्रद्धानन्द (अंग्रेजी) —ले० श्री के० एन० कपूर जी	५—००
८.	स्वामी श्रद्धानन्द उपदेश माला	०—२५
९.	पोलीटीकल टैस्टामैंट आफ स्वामी श्रद्धानन्द	०—२५
१०.	जन्म साखी (ले० ज्ञानी पिण्डीदास जी)	२—००
११.	सिक्ख गुरु अते आर्य सिद्धान्त (पंजाबी) —ले० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी सरस्वती	२—५०
१२.	आर्य समाज दा दिग्दर्शन (पंजाबी) — ले० आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद)	२—००
१३.	वेद और उनका प्रादुर्भाव — ले० महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज	५०—०० सैंकड़ा
१४.	श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द और उनका दिव्य सन्देश	०—२५
१५.	भागवत खण्डनम् —ले० स्वामी दयानन्द जी सरस्वती	०—५०
१६.	नीहारिकावाद और उपनिषद् (ले०—पं० चमूपति)	००—२५
१७.	वीतराग स्वामी स्वतन्त्रतानन्द —ले० श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु	१—००
१८.	हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी —ले० ज्ञानी पिण्डी दास जी	० -२५
१९.	प्रिंसीपल आफ आर्य समाज अंग्रेजी, —ले० श्री पूर्णचन्द जी एडवोकेट	२—००
२०.	मृत्यु और परलोक —ले० महात्मा नारायण स्वामी जी	२—५०
२१.	संस्कार विधि —ले० स्वामी दयानन्द जी सरस्वती	४—५०
२२.	मेरे सपनों का भारत, —ले० श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री	२—५०
२३.	आर्य पर्व पद्धति —ले० श्री प० भवानी प्रसाद	५—००
२४.	पूजा किस की —ले० श्री राम गोपाल शालवाले	०—२५
२५.	आर्य समाज „ „	०—३०
२६.	सत्य की मंजिल सेवा की राह —ले० शावी राम जोशी	१०—००
२७.	बाल सत्यार्थ प्रकाश ले० प्रोफेसर विश्वनाथ विद्यालंकार वेदोपाध्याय गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार,	३—००
२८.	धर्मस्वातन्त्र्य विधेयक क्यों ? ले० रघुनाथ प्रसाद पाठक	१—००
२९.	माण्डूक्योपनिषद् —टीका म० नारायण स्वामी	० - ३५
३०.	प्रभु भक्ति स्तोत्र —ले० लोकनाथ जी वाचस्पति	०—४०
३१.	धर्मवीर पं. लेखराम —ले० स्वामी स्वतन्त्रानन्द	०—४०

आर्य मर्यादा के विशेषांक

१.	मेरी आत्मकथा के कुछ पृष्ठ —ले० आचार्य रामदेव जी	१—००
२.	स्वतन्त्रानन्द संस्मरणांक	१—५०
३.	वेद में पुनरुक्ति दोष नहीं	२—५०
४.	यजुर्वेदाध्याय का ३२ वां स्वाध्याय	१—००
५.	अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी	१—५०

नोट :—ओ३म के झण्डे, हवन कुण्ड तथा ओ३म के बैज भी उपलब्ध हैं।

प्राप्तिस्थान

व्यवस्थापक—चमूपति साहित्य प्रकाशन विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर—४

पारिवारिक सत्संग

लुधियाना

आर्य युवक सभा लुधियाना की ओर से दिनाक २४-५-८१ रविवार को श्री राम शुक्ल जी यादव निवास स्थान पर करतारपुरा (नजदीक कश्मीर नगर) में पारिवारिक सत्संग किया गया। पण्डित रामकुमार जी आर्य, (पुरोहित आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना ने हवन यज्ञ कराया, यह यज्ञ उस बस्ती में जाकर किया गया। दो नवयुवक हवन यज्ञ से इतना प्रभावित हुए कि उन्होंने उसी समय अपनी इच्छा से यज्ञोपवीत धारण किया। हवन यज्ञ के पश्चात् श्री कृपाराम जी आर्य एव पण्डित रामकुमार जी आर्य के मनोहर भजन हुए। इसके पश्चात् स्वामी नित्यानन्द जी के मनोहर प्रवचन हुए। जिसमें उन्होंने वैदिक धर्म के बारे मे बताया, स्वामी जी के प्रवचन से लोग बहुत ही प्रभावित हुए। इनके पश्चात् स्वामी जी ने आर्य युवक सभा की ओर से यादव जी को वैदिक साहित्य भेंट किया। शान्ति पाठ एव जयघोषों के साथ सत्संग समाप्त हुआ।

पठानकोट

आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट द्वारा परिवारों मे धार्मिक चेतना व नव जागृति लाने हेतु गत आठ महीनों से लगातार पारिवारिक सत्संगों का आयोजन किया जा रहा है जिसमें भरपूर सफलता मिल रही है। इन साप्ताहिक पारिवारिक सत्संगो में पारिवारिक समस्याए व समाधान, गृहस्थ सुधार, सन्तति निर्माण आदि विषयो पर प्रकाश डाला जाता है। आर्य जनता के सहयोग से हमारा यह कार्यक्रम और भी रोचक व सफल बन सकेगा।

उल्लेखनीय है कि यहा आर्य समाज में शीघ्र ही एक धर्मार्थ औषधालय भी खोला जा रहा है।

—प्यारेलाल, प्रधान

आर्य समाज फगवाड़ा की गतिविधिया

१. आर्य समाज स्थापना दिवस—५ अप्रैल ८१ रविवार प्रात १० बजे से साय ५ बजे तक डा० वीरेन्द्र, श्री आत्मदेव जी अमृतसर, वैद्य ओमप्रकाश इन्दु, श्री केवल कृष्ण जी एम० ए० बी० एड० आदि महानुभावो ने भाग लिया अन्त मे प्रीति भोजन के पश्चात् कार्यक्रम समाप्त हुआ।

२ राम नवमी—१२ अप्रैल ८१ को राम नवमी का पर्व प्रात: साढे ९ से साढे ११ बजे तक मनाया गया। जिसमे श्री आत्मदेव जी, अमृतसरी, श्री हरिचन्द जी, वैद्य ओमप्रकाश इन्दु आदि विद्वानों के व्याख्यान हुए।

३. वैशाखी—१३ अप्रैल ८१ सोमवार को वैशाखी का पर्व प्रात: साढे ७ से साढे १० बजे तक महाशय बनारसीदास जी की प्रधानता मे मनाया गया।

४, महात्मा हंसराज जन्म दिवस—१९ अप्रैल ८१ को महात्मा हंसराज जन्म दिवस मनाया गया जिसमें श्री ओमप्रकाश इन्दु, श्री हरिचन्द जी वानप्रस्थी, श्री देश बन्धु चोपड़ा, एम० ए० आदि ने भाग लिया।

आर्य समाज स्थापना दिवस उत्सव पर—फिल्लौर, नवाशहर आदि से महानुभावो ने पधार कर बहुत उत्साहित किया

५. वेद प्रचार—२७ अप्रैल ८१ से ३० अप्रैल ८१ तक प्रतिदिन प्रात. साढे ६ से साढे ८ बजे तक तथा रात्रि साढे ८ से साढे १० बजे तक प० त्रिलोकचन्द्र जी शास्त्री वेद प्रचार अधिष्ठाता आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा तथा प० मदन जी संगीताचार्य, आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा द्वारा बडी सफलता एव उत्साह से कार्यान्वित हुआ।

—देशबन्धु चोपडा मन्त्री

सभा की निम्न योजनाओं के लिए

अधिक से अधिक धन भेजिए

पंजाब की आर्य समाजों से अपील

१. सभा के वेद प्रचार विभाग के लिए जो आर्य समाज का मुख्य कार्य है।

२. सभा के साहित्य प्रकाशन के लिए जो वर्तमान युग में प्रचारार्थ सबसे प्रभावशाली साधन है।

३. सभा के नये भवन के निर्माण के लिए।

४. सभा की ओर से बनाये जा रहे कादियां के लेखराम स्मारक, मोही के स्वतन्त्रानन्द स्मारक तथा तलवन के श्रद्धानन्द स्मारक के निर्माण के लिए।

५. प्रचारार्थ एक जीप खरीदने के लिए।

६, सभा की शिक्षा संस्थाओं के संचालन तथा सवर्धन के लिए।

-वीरेन्द्र, सभा प्रधान

—रामचन्द्र जावेद सभा मन्त्री

वार्षिक निर्वाचन

आर्यसमाज ... मारपुर ... गत ... रविवार ... जिसमे निम्न प्रकार ... सर्वसम्मति से चुने गये

प्रधान श्री भामसिंह जी उपप्रधान श्री जगदीश लाल ... श्री कृष्णलाल मन्त्री मन्त्री श्री कृष्णानन्द उपमन्त्री श्री सुभाष सूद श्री विमल ... कोषाध्यक्ष—श्री रामेश्वर दास पुस्तकाध्यक्ष ... ब्रह्मप्रकाश लेखानिरीक्षक श्री मोहन लाल ... अन्तरंग सदस्य ... मोहन लाल ठाकर श्री चन्दनसिंह श्री श्यामदास ... श्री महेन्द्र दत्त तनेजा श्री देवऋषि

आर्य जगत के समाचार

हरियाणा आर्य वीर दल की माग

आकाशवाणी रोहतक व दिल्ली से वेद मन्त्रों का गायन हो

रोहतक—हरियाणा प्रान्तीय आर्य वीर दल का गत १ ... १७ मई को ... सम्पन्न हुये सम्मेलन में एक प्रस्ताव पारित कर विदेशी धन पर रोक लगाने तथा जमायते इस्लामी जैसी साम्प्रदायिक संस्था पर तुरन्त पाबन्दी लगाने की माग की गई। प्रस्ताव में कहा गया कि ... धर्म परिवर्तन को तत्काल प्रतिबन्धित नहीं किया गया ... का ... निकल जाएगा

एक अन्य प्रस्ताव में आर्य वीर दल ने भारत सरकार से अनुरोध किया गया कि आकाशवाणी के दिल्ली तथा विशेषकर रोहतक केन्द्र से प्रतिदिन प्रातः ... वेद मन्त्रो का गायन एवं व्याख्या प्रसारित की जाए

सम्मेलन मे पारित किए गए तीसरे प्रस्ताव मे राष्ट्र विरोधी एवं पृथकतावादी तत्वों की कड़ी आलोचना की गई। सीमा प्रान्त पंजाब में अकालियों द्वारा ... के प्रति सम्मेलन मे चिन्ता प्रकट की गई। भारत सरकार से इस प्रकार की साम्प्रदायिक ताकतो को कुचल देने की माग की गई।

आर्य समाज दयानन्द मार्ग

आर्य समाज दयानन्द मार्ग (... रोड) शकर ... दिल्ली ... गुरुकुल ... पुस्तकालयाध्यक्ष श्री ... ए एल ... सरोजनी नगर नई दिल्ली निवासी ... की सुपुत्री ... के साथ अन्तर्जातीय विवाह आर्य समाज मन्दिर सरोजनी नगर में पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ और आर्य समाज दयानन्द मार्ग शकरबस्ती की ओर से ... वर वधू ... के पवित्र ... के शुभ अवसर पर नवदम्पति श्री ... जी तथा श्रीमती ... को उपस्थित जनता की ओर से आशीर्वाद दिया गया और इस दम्पति को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपमन्त्री श्री प० सच्चिदानन्द जी शास्त्री ने अपना लिखित आशीर्वाद भेजा तथा पंजाबी बाग आर्यसमाज के पूर्व प्रधान श्री प० सत्यानन्द जी शास्त्री एम ए ने भी नवदम्पति को आशीर्वाद दिया नवदम्पति ने आर्य समाज दयानन्द मार्ग ... रहे कि इस ... परिवार की सुपुत्रिका का विवाह भी जाति पाति रहित ही हुआ है।

—... भारतभूषण मन्त्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वर्ष 14—अंक 14, 3 आषाढ़ सम्वत् 2038, तदनुसार 14 जून 1981, दयानन्दाब्द 156। एक प्रति 35 पैसे (वार्षिक शुल्क 15 रुपए

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का त्रैवार्षिक अधिवेशन

धर्म रक्षा महाभियान का घोषणा

देश में इस्लामीकरण व ईसाईकरण के कुचक्रों को विफल बनाने का संकल्प

नई दिल्ली—(वि. प्र.) सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने गत दिनों यहां सम्पन्न हुए अपने त्रैवार्षिक अधिवेशन में विदेशी धन के बल पर चल रहे इस्लामीकरण व ईसाईकरण के कुचक्रों को विफल बनाने के उद्देश्य से धर्म रक्षा महाभियान चलाने की घोषणा की है। इसके अतिरिक्त देश के दलित वर्गों के उत्थानार्थ भी एक विशेष योजना तैयार की गई है।

सभा द्वारा यहां जारी की गई एक प्रेस विज्ञप्ति में सरकार से मांग की गई है कि अनुसूचित जातियों की भान्ति अनुसूचित जनजातियों के धर्म-परिवर्तन करने पर उन्हें सरकारी सुविधाएं बन्द होनी चाहिए। सभा ने राष्ट्र रक्षा की दृष्टि से बलात् धर्म-परिवर्तन में सक्रिय विदेशी एजेन्टों तथा विदेशी धन पर तुरन्त प्रतिबन्ध लगाने की भी मांग की।

सभा द्वारा पारित एक अन्य प्रस्ताव में खालिस्तान आन्दोलन को भारत की एकता एवं प्रभुसत्ता को चुनौती करार देते हुए इसकी कटु आलोचना की गई। प्रस्ताव में कहा गया कि इसके पीछे भारत विरोधी विदेशी ताकतों का हाथ है। इस घृणित और राष्ट्र विरोधी कार्यों में लगे लोगों के खिलाफ कड़ी कार्यवाही की मांग की गई। डा० गोपाल सिंह की अध्यक्षता में गठित अल्पसंख्यक आयोग की सिफारिशों को राष्ट्रीय एकता पर गहरी चोट बताया गया। अतः इन सिफारिशों व आयोग को शीघ्र रद्द करने की मांग की गई।

इसके अतिरिक्त आकाशवाणी की उर्दू रेडियो सर्विस से प्रतिदिन होने वाले इस्लाम के प्रचार व प्रसारण का घोर विरोध किया गया। इसे अविलम्ब बन्द करने की मांग करते हुये उर्दू सर्विस पर वेदों-उपनिषद आदि को उर्दू भाषा में प्रसारित करने की मांग की गई।



अधिवेशन में भाग लेने हेतु आए श्री रामचन्द्रराव जी वन्दे मातरम् का दिल्ली रेलवे स्टेशन पर भव्य स्वागत। चित्र में श्री रामगोपाल जी वानप्रस्थ व सभा के महामन्त्री श्री ओमप्रकाश जी पुरुषार्थी दिखाई दे रहे हैं।

सार्वदेशिक सभा के चुनाव सर्वसम्मति से सम्पन्न : शालवाले पुनः प्रधान निर्वाचित

नई दिल्ली—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के त्रैवार्षिक अधिवेशन में आगामी 3 वर्षों के लिए चुनाव भी किया गया। जिसमें लाला रामगोपाल वानप्रस्थ को सर्वसम्मति से सभा प्रधान निर्वाचित किया गया।

अन्य निर्वाचित अधिकारियों के नाम इस प्रकार हैं—उपप्रधान—श्री रामचन्द्र राव वन्दे मातरम्, श्री पृथ्वीसिंह आजाद, [illegible] सिंह, डा० [illegible], [illegible] भल्ला, [illegible]।

मन्त्री—श्री ओमप्रकाश पुरुषार्थी, संयुक्त मन्त्री—श्री [illegible]सिंह (एडवोकेट), श्री [illegible] शास्त्री, उपमन्त्री—श्री [illegible], पं० वासुदेव शर्मा, श्री दिलीप वेदालंकार, पं० राजगुरु शर्मा, कोषाध्यक्ष—श्री सोमनाथ मरवाहा एडवोकेट, पुस्तकाध्यक्ष—श्री विशुद्धानन्द शास्त्री।

अन्तरंग सदस्य—श्री वीरेन्द्र, प्रो० शेरसिंह, श्री वेदव्रत, श्री रामचन्द्र राव कल्याणी, श्री भगवानदेव शर्मा, श्री सरदारीलाल वर्मा, श्री रामचन्द्र जावेद, महात्मा आनन्द मुनि, श्री मथलसेन चोपड़ा वैद्य रविदत्त, पं० आनन्द प्रिय, श्रीमती कौसल्यादेवी, श्री विश्वम्भर प्रसाद शर्मा श्री गौरीशंकर कौशल, आचार्य सत्यानन्द शास्त्री, डा० [illegible] कुमार शास्त्री, पं० विद्याधर, श्री शिवकुमार शास्त्री।

प्रतिष्ठित सदस्य—श्री अमर स्वामीजी, स्वा० सर्वानन्द जी, डा० हरिप्रकाश, पं० आनन्दप्रिय जी, प० भगवान देव।



लाला रामगोपाल वानप्रस्थ के लगातार तीसरी बार सभा चुने जाने पर श्री सरदारीलाल वर्मा, श्री शिवकुमार शास्त्री (भू० पू० संसद सदस्य) तथा आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद आदि आर्य नेता उन्हें बधाई व कामनाएं देते हुये।

सन्ध्या कथा—

आओ / हम कंटक पथ पर चलना सीखें

मनसा परिक्रमा का पांचवां मन्त्र (1)

ध्रुवा दिग्विष्णुरधिपति
कल्माषग्रीवो रक्षिता वीरुध इषवः ।
तेभ्यो नमोऽधिपतिभ्यो नमो,
रक्षितृभ्यो नम इषुभ्यो नम एभ्यो-
स्तु ।
योऽस्मान् द्वेष्टि यं वयं द्विष्मस्तं,
वो जम्भे दध्मः ।

अथर्व ३-२७-५

(ध्रुवा) स्थिरता की) (दिक्) दिशा है। इस दिशा म (विष्णु) व्यापक परमात्मा (अधिपति) स्वामी है। कार्य मे प्रतिष्ठित होना जीवन है यह भाव (रक्षिता) रक्षक है (वीरुध) नीचे से ऊपर उठ- वाले वृक्ष (इषवः) प्रेरक है। (तेभ्य) उस (अधिपतिभ्य) व्यापक परमात्मा को नमस्कार हो। रक्षक भाव को नमस्कार हो। प्रेरक वह सहायक वीरुधो को नमस्कार हो। इन सबको नमस्कार हो। जो हमको द्वेष करता है और जिसे हम द्वेष करते हैं उसद्वेष भाव को अपनी दाढ मे रखते हैं।

मनुष्य अपनी जीवन यात्रा के लिए जाने वाला यात्री है। वह चलता चला जाता है— चलता चला जाता है। आगे बढ़ने पर उसे दो रास्ते दिखाई देते हैं। कठोपनिषद मे इन रास्तो को श्रेय मार्ग और प्रेय मार्ग कहा जाता है। प्रेय मार्ग का रास्ता अत्यन्त सुन्दर और आकर्षक है। इस रास्ते की सड़कें पक्की हैं। सड़क के दोनो ओर हरे भरे वृक्ष हैं। कहीं कहीं फूलो की रंग बिरंगी क्यारियां हैं। जगह जगह पर फव्वारे लगे हुए हैं और उनके पास बैठा हुआ गवैया संगीत की सुरीली तान छेड़ रहा है। रेडियो और टांजिस्टर के गाने मन को मुग्ध कर रहे हैं। जगह-जगह होटलो मे सुरा और सुन्दरी की सुविधा है। बोतलें खुल रही हैं। कैबरे नृत्य हो रहा है। नाना प्रकार के स्वादिष्ट भोजनों की सुगन्धि चारों ओर फैल रही है। यह रास्ता सरस और सुन्दर है मनुष्य इसी ओर जाना चाहता है पर यह रास्ता शान्ति और आनन्द का रास्ता नहीं। चलते जाओ—चलते जाओ पता नहीं क्यो शान्ति नहीं मिलती?

दूसरा रास्ता श्रेय मार्ग या कल्याणकारी मार्ग है। यह जंगल की सकरी और पथरीली पगडंडी है। ऊबड़-खाबड सी सड़क, कहीं टीले, कहीं गड्ढे, प्रकाश है नहीं, धूल उड़ रही है, स्थान स्थान पर कांटेदार झाड़ियां हैं, स्थान-स्थान पर नुकीले कठोर और भयानक चट्टानें हैं। परन्तु यह मार्ग कौन बतलाते हैं, आनन्द और शान्ति का मार्ग है। मनुष्य इस मार्ग को चुनना नहीं चाहता है। जब मनुष्य प्रेय से ऊब जाता है और उसमें विवेक जागृत हो जाता है। भोगों की वास्तविकता और निःसारता को जब मानव देख लेता है उसे विषयो से शान्ति नहीं मिलती तब उसके दिल मे विवेक और वैराग्य उदय होता है और वह इस मार्ग पर चल पड़ता है। यह सूखी पगडंडी है, न सजधज न रौनक न चहल पहल।

न चमक दमक, न तड़क भड़क सूना मार्ग। प्रिय प्रतीत होने वाले पदार्थों के परित्याग का मार्ग। इस मार्ग को केवल तमाशे या परिवर्तन के लिए नहीं आत्मा के अभ्युदय और निःश्रेयस के लिए स्वीकारा। वह यह इन कठिनाईयों से घबराता नहीं है—स्थिरता और दृढ़ता के साथ बढ़ता चला जाता है। इस प्रकार अब उसकी दिशा ध्रुवा अर्थात् स्थिरता की दिशा है और इस दिशा का अधिपति विष्णु है। विष्णु भी परमात्मा का नाम है। वेवेष्टि सर्वजगत् इति वह सब जगह व्याप रहा है। कैसे—सूत्रे मणिगणा इव (गीता ७-७) जैसे धागे मे मणियां गुथी हुई होती है वेद मे कहा है, स ओत प्रोतश्च विभुः प्रजासु (यजु० ३२-८) वह परमात्मा सभी प्रजाओं में धागे-सूत्र के समान ओत-प्रोत है। उर्दू के एक कवि ने कहा है—

तू है हर जर्रे में जिन्दा है
अगर गौर करके देखा है।
मुख्तलिफ है रंग व बू
पर है हरेक में तेरा जलवा।

इस भावना से भर कर हम यज्ञ में पहले किए जाने वाले आचमन मन्त्र में कहते हैं अमृतोपस्तरणमसि ईश्वर हमसे नीचे का बिछौना है। अमृतापिधानमसि प्रभु हमारे ऊपर का ओढ़ना है। यजुर्वेद के ४०वें अध्याय के पहले मन्त्र में कहा है 'ईशावास्यमिदं सर्वं यत्किञ्च जगत्यां जगत्' संसार में जितने पदार्थ हैं सब ईश्वर से व्यापक हैं। ईश्वर की उस व्यापकता को साधक अपने मे लाना चाहता है।

इस स्थिरता के लिए रक्षक भाव कौन सा है कहते हैं कल्माष ग्रीवो रक्षिता कर्म मे प्रतिष्ठित होना जीवन है यह भाव आवर्त तक पहुचने मे सहायता पहुचाने वाला। कल्माष ग्रीव शब्द तीन शब्दो से बना है 'कल्मन्' का अर्थ कर्म अर्थात् कम है। 'आसनम्' आम प्रतिष्ठा स्थिति की। कर्मसु आसास कर्माल। कर्मास एव कल्माष। कल्माष एव ग्रीवा यस्य कर्म मे प्रतिष्ठित होना ही जिसका जीवन है।

—सुरेशचन्द्र वेदालंकार,
175, आफरा बाजार,
गोरखपुर

वेद सुधा

रेडियो और टांजिस्टर के गाने मन को मुग्ध कर रहे हैं। जगह-जगह होटलो मे सुरा और सुन्दरी की सुविधा है। बोतलें खुल रही हैं, कैबरे नृत्य हो रहा है। नाना प्रकार के स्वादिष्ट भोजनो की सुगन्धि चारो ओर फैल रही है। यह रास्ता सरस और सुन्दर है मनुष्य इसी ओर जाना चाहता है पर यह रास्ता शान्ति और आनन्द का रास्ता नहीं। चलते जाओ—चलते जाओ पता नहीं क्यो शान्ति नहीं मिलती।

भगवान किसे कहते हैं

'भग' का अर्थ है ऐश्वर्य जिसके पास ऐश्वर्य है वह भगवान् है। संसार मे ऐसा देखा जाता है कि किसी के पास कम ऐश्वर्य है किसी के पास अधिक। ज्ञान बल और धन ये तीनो ऐश्वर्य मे गिने जाते है। जिसके पास यह शक्तियां है वह भगवान् है। इन शक्तियो से सम्पन्न व्यक्ति को भी भगवान कहा जा सकता है। परन्तु इसका यह अर्थ नहीं कि वह व्यक्ति परमात्मा है। परमात्मा तो परम ऐश्वर्यवान है। उससे बढ़कर किसी के पास ज्ञान, बल और धन नहीं है। इसीलिए परमात्मा के लिए भी भगवान शब्द का प्रयोग किया जाता है।

'भग मे हस्तो भगवान्' इस वाक्य मे भी भगवान् का अर्थ ऐश्वर्य वाला है। अर्थात मेरा हाथ ऐश्वर्य को कमाने वाला है। भगवत्तर है अर्थात अधिक ऐश्वर्य को कमाने वाला है।

आपके पास ऐश्वर्य कब आएगा? जब आप वेद के बताए हुए मार्ग पर चलोगे प्रत्येक नवयुवक और नव युवती दृढ़ संकल्प के साथ वेद की इस प्रतिज्ञा को मन मे धारण करें—

कृत मे दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः।
गोजिद भूयासमश्वजिद् धनञ्जयो हिरण्यजित्॥ अथर्व० ७।५०।८

यदि कर्त्तव्य मेरे दायें हाथ मे है तो विजय मेरे बायें हाथ मे है। मैं कर्मठ बनकर गाय घोड़े आदि उपयोगी पशुओं वाला धन वाला सोने आदि कीमती धातुओं वाला हो जाऊं।

प्रत्येक कार्य उद्यम से ही सिद्ध होता है मनोरथो से नहीं। आज की युवा पीढ़ी के लिए वेद ने मार्ग दर्शन किया है किन्तु आजकल के नवयुवक ज्योतिषियो के सामने हाथ फैलाकर पूछते हैं कि मेरे हाथ मे क्या लिखा है या ऐश्वर्यवान् बनने के लिए लाटरी की टिकट खरीदते फिर रहे हैं अथवा जुआ खेलते फिरते हैं। स्मरण रखिए आप कर्म ही आपके भाग्य के निर्माता हैं। किसी नीतिकार ने यथार्थ कहा है "पूर्व जन्म कृत कर्म तद्दैवमिति कथ्यते"

अर्थात् पहले जन्म में किए हुए कर्म ही इस जन्म के भाग्य निर्माता होते हैं महर्षि दयानन्द ने इसलिए प्रारब्ध से पुरुषार्थ को बलवान कहा है क्योंकि पुरुषार्थ से ही प्रारब्ध बनता है और पुरुषार्थ से ही भविष्य, अतः प्रत्येक व्यक्ति को पुरुषार्थी होना चाहिए।

प्रत्येक कार्य उद्यम से ही सिद्ध होता है मनोरथों से नहीं आज की युवा पीढ़ी के लिए वेद ने मार्ग दर्शन किया है किन्तु आजकल के नवयुवक ज्योतिषियों के सामने हाथ फैलाकर पूछते हैं कि मेरे हाथ में क्या लिखा है? या ऐश्वर्यवान् बनने के लिए लाटरी की टिकट खरीदते फिर रहे हैं अथवा जुआ खेलते फिरते हैं। स्मरण रखिए आपके कर्म ही आपके भाग्य के निर्माता हैं।

—

ओ३म्

आर्य मर्यादा

प्रजाभ्यः पुष्टिं विभजन्त आसते रयिमिव पृष्ठं प्रभवन्तमायते ।
असिन्वन् दंष्ट्रैः पितुरत्ति भोजनं यस्ताः अकृणोः प्रथमं सास्युक्थ्यः ॥
ऋक् २-१३--१४

भावार्थ–हमें उस प्रभु का धन्यवाद करना चाहिए, जिसने निःस्वार्थ भाव से असंख्य पदार्थ हमें भोग के लिए प्रदान किये हैं। बुद्धिमान् लोग प्रभु के इस महा-यज्ञ को देख अपने-अपने स्थानों पर उसी प्रकार पोषक पदार्थों का उत्पादन कर सब की भलाई के लिए उनका वितरण कर रहे हैं। जिस प्रकार अपने यहां आए अतिथि को उत्तमोत्तम पदार्थ देते हुए प्रसन्नता होती है, वैसे ही उन्हें भी पोषक पदार्थों को अपने तक ही सीमित न रखकर सबको वितरण करते हुए परम प्रसन्नता होती है। हम सबको इसी यज्ञीय नियम का पालन करना चाहिए।

–सम्पादकीय–

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों से एक निवेदन

किसी भी संस्था का भविष्य उसके संगठन और अनुशासन पर निर्भर होता है। आर्यसमाज यदि अपने जीवन के एक सौ वर्ष समाप्त कर सका है, तो उसका एक कारण यह भी है कि उसका अनुशासन और उसका संगठन बहुत सुदृढ़ रहा है। समय-समय पर कई महानुभावों ने आर्यसमाज की जो निष्काम सेवा की है और कईयों ने उसके लिए जो बलिदान दिए हैं, यह उसी का परिणाम है कि आज आर्यसमाज एक जीती जागती सुसंगठित और शक्तिशाली संस्था है। परन्तु कई बार ऐसा भी प्रतीत होता है कि आर्यसमाज के अधिकारियों और कार्यकर्ताओं में कुछ शिथिलता आ रही है, वे अब इतने सक्रिय नहीं रहे, जितने कि वे पहले थे। इसी लिए कई बार यह प्रश्न भी किया जाता है कि आर्यसमाज का भविष्य क्या है? कई व्यक्ति तो ऐसे भी हैं, जो यह कहते हैं कि अब आर्यसमाज की कोई आवश्यकता नहीं है। मैं उनसे सहमत नहीं हूं। मैं तो यह भी समझता हूं कि आर्यसमाज की कभी भी इतनी आवश्यकता न थी, जितनी कि आज है। इस लिए हमें इसके संगठन और इसकी व्यवस्था की ओर विशेष ध्यान देना चाहिए।

मैं दूसरे प्रांतों के विषय में कुछ कहना नहीं चाहता, परन्तु जहां तक पंजाब का सम्बन्ध है मेरी यह निश्चित धारणा है कि आज पंजाब को आर्यसमाज की जितनी आवश्यकता है, इससे पहले कभी न थी। आर्यसमाज ही एक ऐसी संस्था है, जो विघटनकारी तत्वों का मुकाबला कर सकती है। पिछले दिनों अमृतसर में बीड़ी और सिगरेट के नाम पर जो आंदोलन शुरू किया गया था और अमृतसर के आर्यसमाजी भाईयों ने जिस प्रकार मिलकर बड़े साहस के साथ, उसका विरोध किया, वह अत्यन्त प्रशंसनीय है और उसके लिए मैं अमृतसर के आर्य भाईयों को हार्दिक बधाई देता हूं। इसी के लिए पंजाब के दूसरे जिलों के आर्य भाईयों से भी कहना चाहता हूं कि उन्हें भी समय-समय पर अपनी शक्ति का और अपने संगठन का वह ही प्रदर्शन करना चाहिए, जो पिछले दिनों अमृतसर के आर्य भाईयों ने किया है

इसी सन्दर्भ में मैं कुछ सुझाव आर्यसमाजों के अधिकारियों के सामने रखना चाहता हूं। पंजाब में इस समय १५४ आर्यसमाजें ऐसी हैं, जो आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब के साथ सम्बन्धित हैं। परन्तु देखना तो यह है कि कितनी समाजें ऐसी हैं, जो संगठित हैं और जो समय पर अपने ऐसे कार्यक्रम करती रहती हैं, जिनसे आर्यसमाज का प्रचार हो सके और उसका संगठन भी शक्तिशाली बन सके। मुझे यह लिखते हुई बहुत दुःख होता है कि पंजाब की १५४ समाजों में से पिछले वर्ष केवल ४१ आर्यसमाजों ने अपने उत्सव किए। केवल तीन समाजों में वेदसप्ताह मनाया और बत्तीस समाजो ने सामान्य प्रचार किया। नौ समाजों में यज्ञ भी कराया गया। अमृतसर में आर्यसमाज शक्ति नगर ने सब से बड़ा और प्रभावशाली यज्ञ करवाया था।

यह तो स्पष्ट है कि जो कुछ किया गया है, वह सन्तोषजनक नहीं है। यदि १५४ में से केवल ४१ आर्य समाजों ने उत्सव करने हैं, तो आर्य समाज का प्रचार कैसे हो सकता है? और जो आर्य समाजें एक वर्ष मे एक उत्सव या यज्ञ भी नहीं करवा सकतीं, वे आर्य समाजें प्रचार क्या करेंगी? कई बार यह कहा जाता है कि अब आर्य समाज के सत्संग मे बहुत कम लोग आते हैं। यह है भी कुछ हद तक ठीक, परन्तु जब आर्य समाजें कुछ काम ही न करेंगी तो लोग आएंगे कैसे? उत्सव एक वर्ष के बाद होता है जो आर्य समाज एक वर्ष में एक उत्सव भी नही कर सकती, वह बाकी क्या करेगी? कई आर्य समाजें ऐसी भी हैं जिन्होंने कई कई वर्ष से अपना उत्सव नही किया। कुछ व्यक्ति किसी स्वार्थ भावना से उसके अधिकारी तो बन जाते हैं, परन्तु करते-कराते कुछ नहीं है। उत्सव न करने से एक तो प्रचार नही होता, दूसरा आर्य समाज के लिए चन्दा इकट्ठा नहीं होता। यदि आर्यसमाज के लिए चन्दा न हो तो वह सभा को अपना पूरा दशांश कैसे दे सकती है? कई महानुभाव सभा के सदस्य बनने के लिए आर्य समाज के फार्म भर कर तो भेज देते हैं, परन्तु न तो उनका आर्यसमाज का कोई सत्संग होता है और न ही कोई प्रचार होता है। यह स्थिति सन्तोषजनक नहीं है। ११-१२ जुलाई को पटियाला में सभा का जो वार्षिक चुनाव हो रहा है, उसमें जहां और कई समस्याओं पर विचार किया जाएगा, वहीं इस बात पर भी विचार होना चाहिए कि आर्य समाजों को सक्रिय कैसे किया जाए? मैं यह मानता हू कि सभा के पास इतने उपदेशक और भजनीक नहीं हैं जो सब जगह पहुंच सकेंगे। परन्तु यदि सब आर्य समाजें अपने उत्सव करने शुरू कर दें तो सभा कुछ और उपदेशकों और भजनीकों की सेवाएं भी प्राप्त कर सकती है। प्रायः यह भी देखा गया है कि आर्य समाजें सभा के उपदेशको और भजनीकों के अतिरिक्त कुछ दूसरे महानुभावों को भी बुलाती है। हमें इस पर भी कोई आपत्ति नहीं, यदि प्रत्येक आर्यसमाज अपना उत्सव विधिवत करे। हमें यह न भूलना चाहिए कि आज परिस्थितियां बहुत कुछ बदल गई हैं। अब हमारे पास उस उच्चकोटि के अवैतनिक उपदेशक बहुत कम हैं, जितने कि पहले हुआ करते थे, इसलिए जो जिला सभाएं बनाई गई हैं. उनके अधिकारियों का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह स्वयं सक्रिय भाग लेकर अपने-अपने जिला में आर्यसमाज का भजनीक बन जाता था। क्यों न उस प्रथा को फिर से पुनर्जीवित किया जाये?

पटियाला में सभा का जो अधिवेशन हो रहा है, उसमें सारी स्थिति पर विचार होना चाहिए। मेरा एक सुझाव और भी है, जिस पर सदस्य महानुभावों को विचार करना चाहिए। वह यह कि जो आर्य समाज अपना वार्षिक उत्सव न करे, उसे सभा की सदस्यता से कुछ समय के लिए वंचित कर दिया जाए। जब तक आर्य समाजों के अधिकारियों को यह अनुभव न होगा कि उनकी शिथिलता के कारण उनकी समाज का एक अधिकार छिन सकता है, उस समय तक वह कुछ भी नही करेंगे। यह हमारे लिये अत्यन्त ही अशोभनीय बात है कि बड़ी-बड़ी आर्य समाजें उत्सव नही करती। अगर बड़ी न करेंगी तो छोटी कैसे कर सकती हैं? कई ऐसी छोटी आर्य समाजें भी हैं, जिनके अपने साधन बड़े सीमित हैं। उनके जिले की बड़ी आर्य समाजो का यह कर्तव्य हो जाता है कि वे अपने जिले की छोटी आर्य समाजों की सहायता करें। उनके उत्सव कराने में पूरा सहयोग दें। यदि हम आपस मे मिलकर एक दूसरे की सहायता न करेंगे, तो आर्य समाज का काम कैसे चल सकता है। पंजाब मे विशेषकर यदि आर्य समाज का संगठन शक्तिशाली न बना तो स्थिति अत्यन्त गम्भीर हो जाएगी, क्योंकि आर्य समाज के अतिरिक्त और कोई भी ऐसी संस्था नही, जो पंजाब के हिन्दुओं की रक्षा कर सके। आर्य समाज जितना शक्तिशाली बनेगा, उतना ही हिन्दुओं मे स्वाभिमान और संगठन बढ़ेगा। इसलिए पंजाब की सब आर्य समाजों के अधिकारियों की सेवा में मेरा यह निवेदन है कि वे आर्य समाज के संगठन की ओर विशेष ध्यान दें। जहां-जहां कमजोर आर्य समाजें हैं, उनकी सहायता करें और एक ऐसी स्थिति बन जानी चाहिए कि सब आर्य समाजो के उत्सव होते रहें। और सारा साल ही आर्य समाज का प्रचार सक्रिय रूप से होता रहे। मैंने जो सुझाव रखा है, मैं चाहूंगा कि पटियाला मे हमारा जो वार्षिक उत्सव हो रहा है, उसमे इस पर विचार किया जाए। समय की यह मांग है कि पंजाब में आर्य समाज को अधिक से अधिक शक्तिशाली बनाया जाये। उसके बिना हमारा बचाव नही है। इसलिए इधर ध्यान देने की आवश्यकता है।

–वीरेन्द्र

पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी के दशम् वार्षिकोत्सव में

गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली की श्रेष्ठता मुखरित

22 मई को प्रातः पाणिनी कन्या महाविद्यालय का दशम् वार्षिकोत्सव सुन्दर सुशोभित वेदी पर सभासीन आर्य भाई-बहिनों की सम्मिलित वेद ध्वनि एवं यजमानों द्वारा श्रद्धापूर्वक यज्ञशाला में यज्ञाहुति देते हुये प्रारम्भ हुआ।

यज्ञ के पश्चात् वानप्रस्थाश्रम के लिए क्रय की गई नवीन भूमि का बैंड-बाजों सहित धर्मनिष्ठ आर्य बहिन श्रीमती सुन्दरी देवी जी टाण्डा ने उद्घाटन किया। ओ३म् ध्वजोत्तोलन हुआ तथा यज्ञ कुण्ड में विशेष मन्त्रों से आहुति श्रीमती मुन्नीदेवी एवं उनके पतिदेव श्री मोतीलाल आर्य इलाहाबाद ने दी। तत्काल उसी भूमि से इन दोनों देवियों श्रीमती सुन्दरी देवी जी एवं श्रीमती मुन्नीदेवी जी ने वानप्रस्थाश्रम के लिए ११००-११०० रुपये देने की घोषणा की तथा कटघर बरबालान के एक आर्य भाई श्री रामचन्द्र पटवारी ने भी उसी समय १११० रुपये देने की सहर्ष घोषणा की। श्री आचार्य प० सत्यप्रिय जी हिसार ने अपने वक्तव्य में समाज शब्द की वेद के आधार पर उत्तम व्याख्या की।

रात्रिकालीन सभा में आज श्री पं० ओ३म् प्रकाश वर्मा आकाशवाणी कलाकार तथा कविवर श्री पन्नालाल जी पीयूष द्वारा मनोहारी भजन एवं उत्सव की उपयोगिता सुन्दर शब्दों में बताई गई। श्री प० आचार्य रामानन्द जी का व्याख्यान हुआ। विद्यालयीय लघुतमा कन्याओं ने पाणिनी प्रणीत पांचो उपदेश ग्रन्थ अष्टाध्यायी धातु पाठ, गणपाठ, उणादि कोष, लिङ्गानुशासन एवं वैदिक कोष निघण्टु पर अन्त्याक्षरी तथा उनका शुद्ध धारा-प्रवाह पाठ सुनाकर उपस्थित जनता को चकित कर दिया। कन्याओं के आज के कार्यक्रम 'दश' संवत्सरों की कहानी ने तो चुनेहुये शब्दों में प्रथम वर्ष से प्रारम्भ कर आज दस वर्ष तक की गतिविधियों का दिग्दर्शन ही नहीं कराया अपितु अपनी संख्यागत सभी विशेषताओं को नन्हीं बालिकाओं से बड़ी बालिकाओं तक के वक्तव्य में बौद्धिक शास्त्रीय आधार लिये हुए बड़े सुन्दर शब्दों मे देखा जा सकता था। प्रस्तुतीकरण और भाव शैली को देखते हुये सभी बालिकाएं उत्तमोत्तम थी ऐसा इस कार्यक्रम के निर्णायक श्री डा० ज्योतिर्मित्र जी रीडर चिकित्सा विज्ञान संस्थान का हि० वि० वि० एवं श्रीमती डा० सरोजिनी वार्ष्णेय प्रिंसिपल महिला महाविद्यालय बी० एच० यू० ने कहा, तथापि तृतीय संवत्सर की बच्ची कु० निधि को प्रथमाङ्क प्राप्त करने पर १०० रुपये का निर्धारित पुरस्कार श्री मूलराज नन्दा पारितोषिक देने की घोषणा हुई। आज की सभा का सभापतित्व श्री रामप्रसाद जी त्रिपाठी पू० पू० व्याकरण विभागाध्यक्ष सं० स० वि० वि० ने किया और अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में पाणिनी प्रणीत वेदांग अष्टाध्यायी, धातुपाठ की उपयोगिता पर सारगर्भित प्रकाश डाला तथा कन्याओं के उज्ज्वल भविष्य की शुभ कामना की।

इसी सभा में दशम वार्षिकोत्सव की साहित्यि भेंट 'महर्षि दयानन्द प्रतिपादित वैदिक दर्शनम्' इस उत्तम पुस्तिका का विमोचन हुआ। पू० आचार्या प्रज्ञादेवी जी ने इस पुस्तिका के सन्दर्भ में किये गये श्रम उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुये आर्यों से मनन पूर्वक इसे पढ लेने को प्रेरित किया आज के कन्याओं के कार्यक्रम का संयोजन कु० मधु (अमृतसर) पू० म० द्वि० वर्ष ने बड़े उत्तम रीति से किया।

वार्षिकोत्सव के द्वितीय दिवस तक राजस्थान, गुजरात, हिमाचल, दिल्ली, मनौरी, मुरादाबाद आदि दूर-दूर स्थानों के भी श्रद्धालु भाई-बहिन आ गये थे तथा कई आर्य परिवार अपने हाथों में चन्दन की समिधा उत्तम मेवे युक्त हवन सामग्री शुद्ध घृत, गेहूं, चावल आदि की बोरियां गुग्गुल धूप आदि लेकर प्रातः काल यज्ञशाला में बड़ी श्रद्धा से यजमान बने। सुदूर स्थानों के कई भक्तों ने यहीं यज्ञवेदी पर अपने पुनः अपने पुत्रपुत्रियों का चूड़ा कर्म यज्ञोपवीत, नामकरण, अन्नप्राशन आदि संस्कार पू० आचार्याजी से करवाया। श्री कु० भद्रपाल जी संगीत विशारद के भावपूरित भजन हुये। आचार्य सत्यप्रिय जी का आज भी आध्यात्मिक प्रवचन हुआ श्री पू० आचार्य रामानन्द जी ने बड़ी मधुर शैली से शंका समाधान किया।

आज मध्याह्नोत्तर अकस्मात् बड़ा प्रचण्ड आंधी तूफान आया परन्तु इतनी अस्त व्यस्त स्थिति भी प्रभु कृपा व समस्त आर्यों एवं ब्रह्मचारिणियों के पुरुषार्थ से एकदम शमन गई और रात्रि की सभा विद्युत व्यवस्था न होते हुए भी उसी दुगुने उत्साह के साथ सम्पन्न हुई।

रात्रिकालीन सभा में 'भारतीय पर्वों की उपयोगिता उद्देश्य पद्धति एवं विशेषता पर एक पत्रकार गोष्ठी, कन्याओं द्वारा आयोजित हुई जिसका प्रबुद्ध वर्ग ने बहुत स्वागत किया और कहा कि "इस माध्यम से आर्य समाज का अत्यन्त प्रचार कन्यायें कर रही हैं। पर्व एवं व्रतों को लेकर जन समाज में कितना ढोंग आडम्बर बना हुआ है उस सबका निराकरण बड़े प्रभावोत्पादक शैली से हुआ है"। कार्यक्रम के प्रारम्भ में सस्वर विकृति सहित वेदपाठ संस्कृत गीत, सांकेतिक गान, व्यंगात्मक कविता तथा संस्कृत में व्याख्यानादि भी कन्याओं द्वारा बड़े उत्तम हुए। आज कन्याओं का अन्तिम कार्यक्रम ठण्डाई गीत था जिसके बोल थे—पियो जी मेरी ठण्डाई जलसे के लिए बनाई, ने वस्तुतः सबको तरावट ला दी। इस गीत से वेदानुकूल दिनचर्या का संतुलित प्रतिपादन हुआ।

कन्याओं का अन्तिम कार्यक्रम ठण्डाई गीत था जिसके बोल थे—पियो जी मेरी ठण्डाई जलसे के लिए बनाई, ने वस्तुतः सबको तरावट ला दी। इस गीत से वेदानुकूल दिनचर्या का संतुलित प्रतिपादन हुआ।

आज के कार्यक्रम की संयोजिका कु. ऋचा शास्त्री प्र. वर्ष थी।

कन्याओं द्वारा आयोजित पत्रकार गोष्ठी में सर्वोत्तम बोलने वाली छात्रा कु. सुनीता उ म. द्वि. वर्ष को श्री छुन्न लाल गंगाराम बिसनपुर ने १०० रु. के पुरस्कार पुरस्कृत किया गया।

२८ मई उत्सव का अन्तिम दिन आज प्रातः यज्ञशाला मे पूर्णाहुति का दिन था। आर्य भाई बहिनों से परिपूर्ण यज्ञवेदी पर जैसे अध्यात्म रस सजीव हो उठा हो ऐसा उन श्रद्धालु भक्तों के संयत, अनुशासित, प्रभुभक्ति में लीन मुखाकृति को देखकर प्रतीत होता था। स्थानीय सुप्रतिष्ठित जनों ने भी बड़ी संख्या में सपरिवार आकर अग्नि में आहुति प्रदान की पूर्णाहुति प्रचुर मात्रा में नारियल मेवे फलादि आहुत करके सम्पन्न हुई। यजमानों को मेवे फलादि का सुगन्धित उत्कृष्ट यज्ञशेष आशीर्वाद वितरित किया गया।

उसके पश्चात् नवनिर्मित शान्ति वाचनालय का उद्घाटन पू० माता शान्ति देवी जी ने वेद मन्त्रों से आहुति देकर समारोह किया तथा भाव विभोर होकर अपने पति देव के नाम से नवीन वानप्रस्थाश्रम की भूमि पर 'द्विवेदी कुटीर' बनवाने की भी घोषणा की। आज केवल एक दिन के लिए सुयोग्य वक्ता कुशल पत्रकार तथा आर्य जगत् के सम्पादक श्री प० क्षितीश कुमार जी वेदालंकार भी दिल्ली से पूर्व घोषणानुसार पधार गए थे, उनके प्रातः कालीन एवं रात्रिकालीन दोनों व्याख्यान अत्यन्त प्रभावोत्पादक हुये।

सध्याह्नोत्तर आज एक विशेष विद्वत गोष्ठी हुई जिसमें छात्राओं के अभिभावकों तथा संस्था संचालकों की रीति-नीतियों पर गहराई से विचार हुआ एवं कुछ ठोस निर्णय लिए गए।

कु. माधुरी शास्त्री

वार्षिकोत्सव की रात्रिकालीन अन्तिम सभा में आज के मुख्य अतिथि श्रीयुत् धर्मवीर जी आर्य (संसद् सदस्य) का शुभागमन सबको उत्साहित कर गया। आपने विद्यालयीय पवित्र गरिमा में डूब कर अतीव हृदयग्राही वचन बोले। विद्यालय की उच्च शिक्षा तपस्या एवं राजकीय अनुदानादि के चक्कर से दूर रहकर आचार्या जी एवं उनकी अनुजा आचार्या मेधा देवी जी की एकान्त साधना तथा पुरुषार्थ की उन्होंने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

आज कार्यक्रम में शारीरिक खेल व्यायामों के प्रदर्शन का मुख्य आकर्षण था। जिसमें कन्याओं की तत्परता अनुशासन प्रियता देखते ही बनती थी। इस खेल व्यायाम कार्यक्रम का कुशल संचालन कु० प्रियम्वदा शास्त्री एवं कु० नन्दिता शास्त्री कर रही थी। आज संस्कृत में सर्वोत्तम भाषण कु० मधु का आंका गया जिसे श्री गौरीनाथ पाठक रजत पदक पुरस्कार प्रदान किया गया। पुरस्कार वितरण श्री सेठ लल्लूराम आर्य मनौरी ने किया। पू. आचार्या जी ने वार्षिक विवरण प्रस्तुत किया तथा समस्त आगत विद्वानों कार्यकर्ताओं उपस्थित आर्य नर-नारियों के धन्यवाद शान्ति पाठ के साथ सभा की अन्तिम कार्यवाही समाप्त हुई।

प्रतिवर्ष की भांति वाराणसीस्थ आर्य समाज लल्लापुर के कर्मठ सदस्यों का रात-दिन एक करके सर्वात्मना सहयोग प्राप्त हुआ तथा प्रभु की अपार कृपा के फलस्वरूप महोत्सव अतीव सुन्दर शान्त वातावरण में सानन्द सोल्लास सम्पन्न हुआ।

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज की देन

1857 की क्रांति के बाद सर्वप्रथम एक अंग्रेज अफसर मि. रैण्ड की छाती पर गोली मारने वाले चाफेकर बन्धुओं को श्यामजी कृष्ण वर्मा का सहयोग प्राप्त था। पुलिस-चंगुल से बच कर निकले बालकृष्ण चाफेकर को हैदराबाद के प्रसिद्ध आर्य समाजी मुख्य-न्यायाधीश केशव राव कोरटकर के द्वारा तिलक ने सहायता दिलवाई थी। लन्दन में सर्वप्रथम कर्जन वायली को यमलोक भेजने वाले मदनलाल धींगड़ा कट्टर आर्य समाजी थे। वीरसावरकर स्पष्ट कहते थे कि मैं जिस स्वाधीनता का चिन्तन करता हूं, उसमें महर्षि दयानन्द का सत्यार्थ प्रकाश सहायक है, इसलिए मैं स्वा० दयानन्द का पक्का चेला हूं। वह अण्डेमान में भी कैदियों को सत्यार्थ प्रकाश विशेष रूप से पढ़ाते थे और राजबन्दी भी उसे बार-बार पढ़ते थे। स० अजीत सिंह ने १९४६ में गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव पर अध्यक्ष पद से बोलते हुए अपने को दृढ़ आर्यसमाजी

किस्त - 4

बताया था। देश-निर्वासन से पूर्व उनकी क्रांतिकारी संस्था 'भारत माता सोसायटी' के प्रमुख सहायक डा० गोकुल चन्द नारंग, चौ० रामभजदत्त, डा० ईश्वरी प्रसाद, म० कृष्ण, लाला लाजपतराय तथा म० रत्नचन्द आदि प्रसिद्ध आर्य समाजी ही थे।

महाशय रत्नचन्द ने ही उन्हें २ मास तक अपने घर में छिपाए रखा था। उनके भाई स० किशन सिंह तथा पिता स. अर्जुन सिंह भी आर्य समाज तथा डी० ए० वी० कालेज के सक्रिय कार्यकर्ता थे। उनके दो भतीजों—सरदार जगत सिंह और भगत सिंह का यज्ञोपवीत संस्कार भी आर्यसमाजी विद्वान पं० लोकनाथ जी तर्कवाचस्पति ने करवाया था। भगत सिंह अपने कलकत्ता प्रवास मे तीन मास तक आर्य समाज कार्नवालिस स्ट्रीट में रहे थे और सन्ध्या-हवन में रुचिपूर्वक भाग लेते थे। उनके साथी शहीद सुखदेव भी आर्यसमाजी परिवार से थे तथा उन के चाचा ला० अचित राम कांग्रेस के कर्मठ कार्यकर्ता थे। प्रथम विश्वयुद्ध के समय जर्मनी में प्रथम भारत सरकार बनाने वाले राजा महेन्द्र प्रताप भी कट्टर आर्यसमाजी के रूप में प्रसिद्ध रहे हैं। स्वा० श्रद्धानन्द के पुत्र हरिश्चन्द्र उन्हीं के साथ विदेश गए थे।

1912 में दिल्ली में लार्ड हार्डिंग के जलूस पर बम फेंकने की योजना में अनेक क्रांतिकारी आर्यसमाजी थे। भाई बालमुकुन्द शहीद भाई मतिदास के वंशज तथा भाई परमानन्द के चचेरे भाई थे और म० हंसराज के अधीन आर्य समाज के प्रचारक भी रहे थे। उनकी फांसी लगते ही उनकी पत्नी रामरखी ने भी अपनी इच्छामात्र से ही प्राण त्याग कर अद्भुत बलिदान का उदाहरण प्रस्तुत किया था। प्रताप सिंह बारहट इसी कांड में पकड़े जाकर बरेली जेल में शहीद हुए थे। उनके परिवार का दावा है कि लार्ड हार्डिंग पर बम बसन्त कुमार विश्वास ने नहीं, अपितु प्रताप सिंह के चाचा ठाकुर जोरावर सिंह ने फेंका था, जिनका फरारी की अवस्था में ही १९३८-३९ में देहान्त हो गया। प्रताप सिंह के पिता केसरी सिंह को कोटा डकैती कांड में काला पानी तथा सम्पत्ति जब्ती की सजा मिली थी। उनके साथ ही स्वा. श्रद्धानन्द के दमाद डा० गुरु-

स. अर्जुनसिंह भी आर्य समाज तथा डी. ए. वी. कालेज के सक्रिय कार्यकर्त्ता थे। उनके दो भतीजों—स. जगतसिंह और भगतसिंह का यज्ञोपवीत संस्कार भी आर्य समाजी विद्वान् पं. लोकनाथ जी तर्कवाचस्पति ने करवाया था। भगतसिंह अपने कलकत्ता प्रवास में तीन मास तक आर्यसमाज कार्नवालिस स्ट्रीट में रहे थे और सन्ध्या-हवन में रुचिपूर्वक भाग लेते थे। उनके साथी शहीद सुखदेव भी आर्यसमाजी परिवार से थे।

दत्त भी थे। इसी षड्यन्त्र में म० हंसराज के पुत्र बलराज को ७ वर्ष के सख्त कैद का दण्ड मिला था। इस षड्यन्त्र में गदर पार्टी के सक्रिय कार्यकर्त्ता प० जगत राम हरियाणवी भी सम्मिलित थे, जिनका मृत्युदण्ड आजीवन कारावास में बदल गया था। वह डी ए० वी० कालेज तथा भाई परमानन्द के प्रभाव से क्रांतिकारी बने थे। इसी काण्ड के शहीद मास्टर अमीर चन्द आदि कुछ अन्य क्रान्तिकारी भी आर्यसमाजी थे।

बर्मा मे फांसी लगने वाले गदर पार्टी के कार्यकर्त्ता पं० मोहन लाल पाठकदृढ आर्यसमाजी थे। मैनपुरी षडयन्त्र के नेता प० गेंदा लाल दीक्षित तथा काकोरी डकैती कांड जिसके १० सदस्यों में आधे से अधिक अर्धवयस्क थे, के नेता राम प्रसाद बिस्मिल तथा सदस्य ठाकुर रोशन सिंह आर्य तथा विष्णु शरण दुब्लिस भी कट्टर आर्यसमाजी थे। बिस्मिल की अन्त्येष्टि उनकी इच्छानुसार आर्यसमाज गोरखपुर द्वारा शान से की गई थी १८५७ के बाद सशस्त्र विद्रोह के अपराध में उत्तर प्रदेश में फांसी पर झूलने वाले वह प्रथम क्रांतिकारी थे। उनके बाद क्रांति की बागडोर चन्द्रशेखर आजाद ने सम्भाली। इस प्रकार काकोरी कांड में फांसी लगने वाले ४ मे से २ बिस्मिल और रोशन सिंह—आर्यसमाजी थे। दुब्लिस को अंडेमान भेजा गया था। गृह राजनीतिक विभाग की १९०८ की रिपोर्ट के अनुसार लाहौर में उस समय स्वतन्त्रता-संघर्ष के लिए २००० आर्य-समाजियों ने अपने नाम लिखवाये थे। शचीन्द्र नाथ सान्याल ने स्वयं पंजाब में विप्लव आंदोलन के संगठन में सफलता का श्रेय श्री जयचन्द्र विद्यालंकार को दिया है। क्रांतिकारी हंसराज वायरलैस, सत्यदेव विद्यालंकार क्रान्तिकारियों के महान् सहायक दिल्ली के श्री कृष्ण, स्व० ठाकुर यशपाल सिंह संसद-सदस्य, सत्याग्रहियों पर गोली चलाने का आदेश न मानने वाले श्री चन्द्र सिंह गढ़वाली और गढ़वाल के ही क्रांतिकारी भवानी सिंह

स्त्रियो मे बम्बई मे अंग्रेजी अधिकारी पर दुर्गा भाभी के साथ गोली दागनेवाली महिला सुशीला दीदी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर की भतीजी और चौ० रामभजदत्त की पत्नी श्रीमती सरला देवी, दिल्ली के ला० नारायणदत्त की सुपुत्री सुमित्रा दीदी, चौ० देशराज की पत्नी श्रीमती चन्द्रावती ज्ञानी पिण्डीदास की सुपुत्री सुदेशी श्रीमती चन्द्रावती लखनपाल एवं जयचन्द्र विद्यालंकार की बहन श्रीमती पार्वती देवी आदि अनेक आर्य महिलाओ ने क्रांति एवं कांग्रेस आंदोलनो मे भाग लिया। नेताजी की आजाद हिन्द सेना के ३ प्रमुख नायकों में से एक श्री सहगल आर्यसमाजी थे। सान्यपाल के अनुसार क्रांतिकारियो की अपीलें और साहित्य छापने का साहस भी आर्यसमाजी प्रेस ही करते थे। राधेश्याम पारीख के अनुसार जेल जाने और फांसी पाने वाले अधिकतर लोग आर्यसमाजी थे। क्रांतिकारी यशपाल के शब्दों मे, "आरम्भ मे पंजाब मे जितने भी क्रांतिकारी हुए हैं, सभी आर्यसमाजी परिवारों या वातावरण की उपज थे। और बाद में कांग्रेस का प्रभाव फैल जाने पर भी अधिकतर ऐसे लोगों की ही रही। पंजाब में क्रांति की ज्वाला भड़काने का श्रेय बंगाल के आंदोलन को नहीं, बल्कि उस समय की विद्रोही आर्यसमाजी मनोवृत्ति और सिक्ख विद्रोह से बचे हुए असन्तोष को ही है। किसी संस्था का इससे अधिक योगदान क्या हो सकता है!

आर्यसमाज और कांग्रेस

क्रांतिकारी आन्दोलन की तरह कांग्रेस आंदोलनमें भी आर्यसमाज का योगदान शानदार रहा है। पहले अनेक कांग्रेस की सभाएं तक आर्यसमाज में होती थीं। अम्बाला के बा० मुरलीधर तथा श्री अलखधारी, लाहौर के चौधरी रामचन्द्रदत्त तथा १८९३ में वहां कांग्रेस-अधिवेशन बुलाने वाले बख्शी जैशीराम, जालन्धर के रायजादा भक्तराम तथा म० मुंशी राम के साले ला० देवराज आदि अनेक आर्यसमाजी प्रमुख कांग्रेसी थे। लाहौर षड्यन्त्र केस के अभियुक्त श्री वीरेन्द्र, रणवीर तथा मार्शल-ला में अमृतसर के ३ प्रमुख नेताओ में से २—डा० सत्यपाल तथा महाशय रत्नचन्द्र आर्यसमाजी थे। क्रांतिकारी कवि लाल चन्द फलक, श्री भूमिसेन सच्चर, श्री प्रबोधचन्द्र एवं ला० जगत्नारायण, प्रमुख पत्र-सपादक वन्दे मातरम् के ला० राम प्रसाद, पंजाबी के ला० यशवन्त राय, आर्यपत्रिका, प्रकाश एवं प्रताप आदि के

—प्रो. जयदेव आर्य

म० कृष्ण, मिलाप के श्री खुशहाल चन्द, दिल्ली के विजय, वीर अर्जुन आदि के श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति कानपुर के प्रताप के शहीद गणेश शंकर विद्यार्थी, श्री बनारसी दास चतुर्वेदी आदि आर्यसमाजी थे। गांधी जी के सत्याग्रह आश्रम में गाया जाने वाला गीत गुरुकुल कांगड़ी से आया था, जिसके रचयिता इन्द्र विद्यावाचस्पति थे। १९०७ के प्रसिद्ध रावलपिंडी कांड के सभी प्रमुख अभियुक्त आर्यसमाजी थे। गढ़वाल प्रदेश मे देवता का समान मान्य, अछूतो की डोला पालकी समस्या के संघर्ष के नेता जयानन्द भारती भी आर्यसमाजी रहे हैं।

नेपाल, दक्षिणी अफ्रीका, मोरिशस देशो मे भी आर्यसमाजियो ने ब्रिटिश सरकार से लोहा लिया। १९१३ मे ला० लाजपतराय ने अमेरिका मे इण्डियन होम-रूल लीग बनाई थी, जिसमें ८००-९०० अमेरिकन भी थे। उत्तर प्रदेश मे जिला मेरठ सबसे आगे रहा है, वहा से असहयोग आन्दोलन मे जाने वाले २०० सत्याग्रहियों मे से अधिकतर आर्य समाजी थे।

(क्रमश.)

लाला लाजपतराय के जीवन पर आधारित एक प्रसिद्ध नाटक

शेरे पंजाब लाला लाजपतराय

ले०—श्री बी० एस० खोसला

(गतांक से आगे)

फकीर—किशोर ठीक कह रहा है लाला जी।

लाजपत—इन ज्यादतियों का बदला लेना हमारा लक्ष्य नही होना चाहिए, हमारा तो यह लक्ष्य है भारत को स्वतन्त्र कराना सोने को अगर आंच में डाला जाए तो और भी पवित्र हो जाता है, इस तरह दुःख की ज्वाला मनुष्य को पवित्र बनाती है, उसके हृदय से डर निकल जाता है, जलियांवाले बाग ने दुनिया को बता दिया कि चाहे हिन्दुस्तानी गुलाम हैं पर उनमें जान है जुल्म सहकर उनकी आत्मा मुर्दा नही हुई बल्कि आजादी के संग्राम के लिए आगे से ज्यादा तैयार है, इसलिए निश्चय कर लो कि हम पूरी रोटी लेंगे और आधी से सन्तुष्ट नहीं होंगे, चाहे मैं कांग्रेस का प्रधान बनूं चाहे नहीं, मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि पंजाब की आवाज दुनिया तक पहुंचाऊंगा।

एकट चार

लाला लाजपतराय की कोठी की ओर से एक सेवादार एक तार लेकर आता है और वजीरचन्द को पकड़ाता है।

वजीर—जल्दी-जल्दी पढ़ते हुये, पं० मोतीलाल नेहरू का तार है आप विधिपूर्वक प्रधान चुन लिए गए हैं, बधाई।

झट एक और सेवादार भागा हुआ आता है और वजीरचन्द के हाथ में तार पकड़ाता है।

वजीर—यह सर आशुतोष चौधरी कलकत्ता हाईकोर्ट के रिटायर्ड न्यायाधीश का तार है, पढते हुए बंगाल का बहुमत तुम्हारी तरफ है, कांग्रेस की प्रधानगी स्वीकार करें।

विद्यार्थी और जोर से नारे लगाते हैं लाला लाजपतराय जिन्दाबाद, लाला लाजपतराय उनके जोश को रोकने का प्रयत्न करते हैं, परन्तु विद्यार्थी उनको कन्धों पर उठा लेते हैं और चारों ओर से आसमान गूंजने लगता है, लाला जी को उनकी कोठी की तरफ ले जाते हैं कि परदा गिर जाता है।

※ ★ ※

(पांचवा एकट शुरू)

३० अक्तूबर १९२८ सायंकाल का समय लाहौर के मोहरी दरवाजे के बाहर बाग मे आम सभा का बीच वाला हिस्सा जिसमें एक ऊंचा मंच है जिसमें सात-आठ कुर्सियां पड़ी हैं, इनमें और सारी सभा मे हिन्दू मुसलमान और सिक्ख मिले जुले हैं मंच पर एक आराम कुर्सी है जो खाली है।

मंच के नजदीक औरतें बैठी है, एक कोने मे एक पुलिस थानेदार व दो सिपाही हैं।

लोगों की वेश-भूषा मिली-जुली है, बहुत सारे लोगों के सिरों पर पगड़ियां हैं अलग-अलग ढंग की, पगड़ियों में लम्बे फूले व तुमले हैं, कुछ दबी हुई और कुछ फूली हुई वेश-भूषा खुले बन्द गले के कोट पश्चमी ढंग की कमीजें पजामें या सलवारें सम्मिलित नहीं कुछ लोग पठानी पहनावे सीधा कुर्ता व लांग वाली धोती पहने हुये हैं, कुछ लोग पश्चमी कपड़े पहने हुये हैं, कुछ लोगों के हाथों में काली झण्डियां हैं।

जब पर्दा खुलता है तो कार्यवाही आगे आरम्भ होती है, एक नेता भाषण दे रहा है, सभा में कई बार नारे लगेंगे इसमें दर्शकों को भी शामिल होना चाहिए।

एक भाषण, डाक्टर आलम पहनावा सफेद बन्द गले का कोट लाहौरी पजामा तुरदार टोपी, साथियो आज का

अंग्रेज सरकार ला. लाजपतराय को लाठियों की मार से घायल करके उनको राजनीति में काम करने से नकारा करना चाहती है, लोग शेम-शेम के नारे लगाते हैं, क्योंकि अंग्रेज ला. लाजपतराय से डरते हैं, लाला जी से छुटकारा पाने के लिए सरकार नें क्या नहीं किया? उनको कई बार बन्द किया यहां तक कि उनको देश निकाला भी दिया गया।

दिन हिन्दुस्तान की तारीख में एक काला दिन है, आज जो लाहौर स्टेशन पर हुआ लोग उसको सुनकर त्राहि-त्राहिकर उठे हैं हमारे मुअज्जिज हर दिल अजीज नेता लाला लाजपतराय को शेरे पंजाब को एक अंग्रेज अफसर ने बड़ी बेरहमी के साथ बैतों से मारा, लालाजी अपने और साथियों के साथ एक अमन जलूस की अगवाई कर रहे थे, यह जलूस साईमन कमीशन के तास्सुरात व जो आम जनता में जो मायूसी हुई है उसका इजहार करने के लिए निकाला गया था, इसमें हजारो की गिनती में लोग शामिल हुए, आज साईमन लाहौर आया, इसके सभी सदस्य अंग्रेज हैं, हिन्दुस्तानी एक भी नहीं, क्या इतने बड़े मुल्क मे बरतानवी सरकार को कोई भी व्यक्ति इस उच्च पद के लिए नहीं मिला? आज कल कई हिन्दुस्तानी बड़े लायक पढ़े लिखे व मशहूर वकील हैं, न्यायाधीश हैं, इन्जीनियर, डाक्टर कई जिनकी हिन्दुस्तान से बाहर भी मानी जाती है उनमें कईयों के ज्ञान को बरतानवी सरकार ने बड़े बड़े खिताब देकर माना है आश्चर्य की बात यह है कि ऐसी सैंकड़ों मशहूर हस्तियों में अंग्रेज सरकार को एक भी हिन्दुस्तानी इस योग्य नहीं मिला।

मेरा ख्याल है कि अंग्रेज सरकार हिन्दुस्तान के मुस्तकबिल का फैसला करने में हिन्दुस्तानियों को सम्मिलित नहीं करना चाहती, इसलिए इसका बाईकाट है और जवाब मुंह तोड़ होना चाहिए, हमारे पास इसके अलावा कोई और चारा नहीं था, कि हम लाहौर के शहरी साईमन कमीशन का इस्तकबाल काली झण्डियों व साइमन वापिस जाओ के नारों के साथ करते, मंच पर बैठा एक व्यक्ति खड़ा होकर साईमन वापिस जाओ, का नारा लगाता है, सब लोग जोर से इस नारे को दुहराते हैं, हमने अमन में लाला लाजपतराय की अगवाई के अधीन अपना अफसोस जाहिर किया ताकि सारे विश्व को पता लग जाए कि यह कमीशन हमे मन्जूर नहीं, परन्तु सरकार की ओर से जो कार्यवाही हुई वह वहशियाना थी, व्यक्तिगत तहजीब के बरखिलाफ थी, और इस कार्यवाही पर सरकारी गर्दन शर्म से झुक जानी चाहिए व वतनप्रस्तों की गर्दन फखर से ऊंची उठ जानी चाहिए, यहा इस जलसे में नौकरशाही व गुमाश्ते पुलिस के सिपाही व अफसर मौजूद हैं अगर उनमें हिम्मत है तो हमारे उठे हुये सिरों को नीचा करने की कोशिश करें।

थानेदार व और सिपाही मुंह फेर लेते हैं लोगों में कुछ घुसर-पुसर होती है जो साफ सुनाई नहीं देती।

अंग्रेज सरकार लाला लाजपतराय को लाठियों की मार से घायल करके उनको राजनीति में काम करने से नकारा करना चाहती है, लोग शेम-शेम के नारे लगाते हैं, क्योंकि अंग्रेज लाला लाजपतराय से डरते हैं, लाला जी से छुटकारा पाने के लिए सरकार ने कुछ नहीं किया, उनको कई बार बन्द किया यहां तक कि उनको देश निकाला भी दिया गया। जब १९०७ में लाला जी को मांडले भेजा गया, सरकार ने इस भेद को छुपाकर रखा कि लाला जी को जलावतन किया जा रहा है क्योंकि सरकार को पता था कि अगर यह खबर निकल गई कि लाला जी को बाहर भेजा जा रहा है तो लोग उठ खड़े होंगे और अपने महबूब नेता को जालिमों के पंजे से निकाल लायेंगे, एक दिन लाला जी सुबह कचहरी जाने की तैयारी कर रहे थे कि एक पुलिस इन्स्पेक्टर उनकी कोठी पर यह पैगाम लेकर पहुंचा कि कमिश्नर साहब आपको जरूरी काम

एकट पाचवा

के लिए मिलना चाहते हैं, लाला जी बग्घी में बैठकर कचहरी की ओर चल पड़े, जब बग्घी कोठी के बाहर निकली तो एक अंग्रेज पुलिस अफसर छलांग मार कर बग्घी पर चढ़ गया, लाला जी कमिश्नर के दफ्तर पहुंचे तो उनको देश निकाले का हुक्म सुना दिया गया, पर यह नहीं बताया गया कि उनको कहां भेजा जा रहा है, लाला जी का दिल इतना मजबूत था कि उन्होंने अपने बच्चों तक खबर पहुंचाने की कोशिश नहीं की, लाला जी को मोटर में बिठा दिया गया और साथ डिप्टी कमिश्नर व सुपरिटेंडैंट पुलिस भी बैठ गये। लाला जी को छावनी लेजाकर कोठी में बन्द कर दिया गया। रात के अन्धेरे में स्पेशल रेलगाड़ी उनके सफर के पहले पड़ाव कलकत्ते भेजा गया। यह स्पेशल गाड़ी मीआमीर स्टेशन से चली, क्योंकि सरकार को डर था कि अगर लाहौर स्टेशन से चली तो जलावतन की खबर सारे शहर में आग की भान्ति फैल जाएगी और लोग किसी भी हालत में अपने प्यारे नेता को अपने से अलग नहीं होने देंगे। फिर भी लाहौर स्टेशन पुलिस से खचाखच भरा हुआ था, सब रेलगाड़ियों की आवाजाई बन्द हो गई, सब अंग्रेज मेमों के बच्चे लाहौर स्टेशन पर पहुंचा दिए गए और उनको लाहौर से निकालने का पूरा-पूरा इन्तजाम कर दिया गया, इससे आप अन्दाजा लगा सकते हैं कि अंग्रेज सरकार लाजपत से कितनी डरती थी, आज हमारे प्यारे नेता शेरे पंजाब की बेइज्जती हुई है क्या हमें बदला नहीं लेना चाहिए, अगर मेरे से पूछा जाए तो अवश्य लेना चाहिए, ईंट का जवाब पत्थर से देना चाहिए, लाहौर के शहरियों मुझे इस बात का उत्तर दो कि तुम इस कार्य के लिए तैयार हो?

(क्रमशः)

वार्षिक निर्वाचन

जालन्धर

जालन्धर—स्थानीय आर्य समाज होशियारपुर रोड स्वामी श्रद्धानन्द बाजार का गत रविवार ११ मई को वार्षिक निर्वाचन सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ। जिसमें निम्न अधिकारी निर्वाचित घोषित किए गए।

प्रधान—श्री योगेन्द्रपाल सेठ उपप्रधान—श्री चन्द्रभान अग्रवाल, श्री देसराज सेठी, मन्त्री—श्री प्रकाशचन्द कालड़ा, उपमन्त्री—श्री सोहनलाल वैदिक मिशनरी, श्री कुन्दनलाल अग्रवाल, कोषाध्यक्ष—श्री मोहनलाल सेठ, पुस्तकाध्यक्ष—श्री बृजलाल कालिया, लेखा निरीक्षक—श्री हुसराज शर्मा।

विशेष अन्तरंग सदस्य—श्री कृष्णलाल हस, श्री चिरञ्जीलाल अग्रवाल, श्री हुसराज मग्गो, श्री अमृतलाल खन्ना तथा डा० दीवानचन्द डैंटिस्ट।

—

पटियाला

पटियाला—आर्य समाज त्रिपोली गेट पटियाला के वार्षिक चुनाव में निम्न पदाधिकारी निर्वाचित किए गए—

प्रधान—श्री रत्नलाल, उपप्रधान—श्री सालिगराम मन्त्री—श्री रामलक्ष्मण दास, कोषाध्यक्ष—श्री कुलवन्तराय।

अन्तरंग सदस्य—श्री गया किशन श्री वेदव्रत तथा श्री कुलदीपराज।

नई दिल्ली

नई दिल्ली—आर्य समाज, पहाड़गंज दिल्ली का गत १० मई को वार्षिक निर्वाचन सम्पन्न हुआ। जिसमें निम्न अधिकारी चुने गये-

संरक्षक—श्री रामभरत मिनोचा प्रधान—श्री प्रियतम दास रसवन्त, उपप्रधान—श्री सुरेन्द्र कुमार पहूजा, तथा श्री गणेशदास, मन्त्री—श्री श्यामदास कपदेव, उपमन्त्री—श्री देवराज राजपाल तथा श्री सतीश कुमार, प्रचार मन्त्री—श्री अशोक कुमार पहूजा कोषाध्यक्ष—श्री चिरञ्जीलाल सुधा, पुस्तकाध्यक्ष—श्री लक्ष्मणदास कालड़ा, मन्त्री आर्य वीर दल—श्री विजय कुमार पहूजा, लेखा-निरीक्षक—श्रीअजय कुमार कपूर।

जन्म दिन पर यज्ञ

फिरोजपुर-आर्य युवक सभा फिरोजपुर शहर में गत २१ मई को चिरंजीव गौरव कुमार के जन्म दिन के उपलक्ष्य में ... घर पर यज्ञ का आयोजन किया। ... आर्य ने ...

जगाधरी

जगाधरी—स्थानीय आर्य समाज जगाधरी वर्कशाप में गत १८ मई से २४ मई तक वेद प्रचार का आयोजन किया गया। जिसमें सभा कार्यालयाध्यक्ष श्री ओम्प्रकाश जी आर्य एवं श्री हजारीलाल जी की भजन मण्डली ने सभा की ओर से प्रभावी प्रचार किया।

प्रातः आर्य समाज मन्दिर तथा रात्रि को खुले मैदान में व्याख्यान तथा भजनोपदेश हुए। गुरुकुल कायड़ी से श्री प० रामप्रसाद जी वेदालंकार भी उत्सव में उपस्थित हुए। उनके मार्मिक व्याख्यान भी हुए।

वेद प्रचार सप्ताह

सभा को समाज की ओर से १०१ रुपए वेद प्रचारार्थ भेंट किए गए।

सभा को समाज की ओर से ५०१ रुपए वेद प्रचारार्थ भेंट किए गए। माता श्यामादेवी जी जो इस समाज के लिए प्रेरणा स्रोत हैं ने भी व्यक्तिगत रूप से सभा को २०० रुपये भेंट किए।

—

तलवाड़ा

तलवाड़ा आर्य समाज तलवाड़ा टाऊन में गत १८ मई से २४ मई तक वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया। जिसमें सभा के विद्वान् उपदेशक श्री प० विजय-कुमार जी तथा श्री तुलसीदेव जी गायनाचार्य ने मिलकर सम्पन्न करवाया।

इस महत्वपूर्ण कार्यक्रम का जन-सामान्य पर यथेष्ठ प्रभाव पड़ा। इस अवसर पर सभा को २५१ रुपये दशांश तथा १५ रुपये आर्य मर्यादा के शुल्क के रूप में भेंट किए गए।

—

सहित व्याख्या करके यज्ञ सम्पन्न करवाया यज्ञ के उपरान्त विनोद व सुशील मेहता बन्धुओं ने जन्म का भजन बोल कर उपस्थित सैंकड़ों नर-नारियों को आनन्दित किया। इस अवसर पर जलपान का आयोजन भी किया गया। बाद में वैदिक साहित्य तथा स्वामी दयानन्द जी का चित्र श्री ओ३म् प्रकाश भाटिया जी ने गौरव कुमार को भेंट किया। इस अवसर पर गौरव कुमार के घर वालों पर यज्ञ का बहुत प्रभाव पड़ा। इस यज्ञ का आयोजन श्री ... जी ने करवाया।

वार्षिकोत्सव

नवांशहर

नवांशहर—आर्य समाज नवांशहर का वार्षिकोत्सव गत १४ से १७ मई तक बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ, चारों दिन प्रातःकाल यज्ञ, भजन तथा उपदेश होते रहे। शनिवार तथा रविवार को उत्सव का विशेष कार्यक्रम रखा गया जिसमें सभा की ओर से श्री प० रामनाथ जी सिद्धान्त विशारद, श्री प० विजय कुमार जी, श्री तुलसीदेव जी गायनाचार्य और श्री हजारीलाल जी तथा श्री माईदास जी ने भाग लिया।

सभा कार्यालयाध्यक्ष श्री ओम्प्रकाश आर्य भी चारों दिन उत्सव में सम्मिलित होते रहे। रविवार को ऋषिलंगर का आयोजन किया गया था जिसका सारा व्यय श्री वेदप्रकाश जी शर्मा ने अपने पास से देकर उदाहरण उपस्थित किया। सभा को श्रद्धापूर्वक ११०० रुपये वेद प्रचारार्थ भेंट किए गये।

फिरोजपुर

फिरोजपुर—आर्य समाज बस्ती टैंकावाली फिरोजपुर का वार्षिकोत्सव जोकि गत ४ मई से १० मई तक चलता रहा, सभा के महोपदेशक इतिहास केसरी श्री प० निरञ्जन देव जी श्री प सुभाषचन्द्र शास्त्री तथा श्री श्यामसिंह जी हितकर भजन मण्डली और श्री तुलसीदेव जी गायनाचार्य की उपस्थिति से अत्याधिक सफल रहा। सभा के मान्य विद्वानों एवं भजनोपदेशकों की भूरि-भूरि प्रशंसा की गई। इस अवसर पर सभा को ३०० रुपये वेद प्रचार निधि में भेंट किये गए।

वेद गोष्ठी

चण्डीगढ़—आर्य विद्वान् डा० भवानीलाल भारतीय के निवास पर गत १८ मई को वैशाख पूर्णिमा को वेद गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें प्रसिद्ध वैदिक विद्वान् प० युधिष्ठिर जी मीमांसक की अध्यक्षता में केन्द्रीय विश्व वेद परिषद के उपाध्यक्ष आचार्य वीरेन्द्र शास्त्री ने आर्य समाज के तीसरे नियम की व्याख्या की। उन्होंने आर्य समाज पर स्वाध्याय के लिए बल दिया।

इस अवसर पर परिषद के नए सदस्य भी बनाए गए। परिषद के मन्त्री श्री आसूराम जी ने वैदिक विद्वानों व उपस्थित महानुभावों का हार्दिक धन्यवाद किया।

सम्पादक के नाम पत्र

अनुभव का सत्य

ऋषियों में शिरोमणि, योगियों में योगीराज अखण्ड बाल ब्रह्मचारी, सत्य के पुजारी देश हितकारी, संसार के उपकारी शास्त्रार्थ महारथी तर्क शिरोमणि मनुष्य कृत मतान्तरों, पन्थों के पाखण्ड और झूठ का पोल खोलकर ईश्वरीय ज्ञान सत्य सनातन वैदिक धर्म के पुनरुद्धारक दलित पीड़ितों के सुधारक स्त्री जाति को समान अधिकार दिलाने वाले भारत को विदेशी राज्य से मुक्त कराने का मूल मन्त्र अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में प्रकाशित करने वाले गोपाल (गोकरुणानिधि) यतीमों विधवाओं के हमदर्द, अपनी भाषा गुजराती होते हुये तथा संस्कृत के महान् पण्डित होते हुए अपनी सब पुस्तकें हिन्दी भाषा का ज्ञान प्राप्त करके हिन्दी में लिख कर भारत की राष्ट्र भाषा हिन्दी बनाने का श्रेय प्राप्त किया सर्वकालीन वेदार मग्ज स्वामी दयानन्द सरस्वती जी महाराज जिनके सारे ग्रन्थ सत्यार्थ-प्रकाश संस्कारविधि गोकरुणानिधि, ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका काशी शास्त्रार्थ वेद भाष्य व्याख्यान पत्र व्यवहार आदि ग्रन्थों को पढ़कर ईश्वर जीव प्रकृति के गुण, कर्म और स्वभाव को समझ कर मैं दिमागी तौर पर स्वतन्त्र हुआ और अन्य सभी को ऋषिकृत ग्रन्थों को एक बार अवश्य पढ़ने की सम्मति देता हूं।

—मोतीसिंह इन्दौरा तथा रतनगढ़

सभा की निम्न योजनाओं के लिए

अधिक से अधिक धन भेजिए

पंजाब की आर्य समाजों से अपील

१. सभा के वेद प्रचार विभाग के लिए जो आर्य समाज का मुख्य कार्य है।

२ सभा के साहित्य प्रकाशन के लिए जो वर्तमान युग में प्रचारार्थ सबसे प्रभावशाली साधन है।

३. सभा के ... के लिए।

४. सभा की ओर से ... जा रहे कादियां के लेखराम स्मारक, मोही के ... स्मारक ... तलवन के श्रद्धानन्द स्मारक के निर्माण के लिए।

५. प्रचारार्थ एक जीप खरीदने के लिए।

६. ... के लिए।

-वीरेन्द्र, —रामचन्द्र जावेद सभा मन्त्री

आर्य जगत के समाचार

आर्य युवक सभा द्वारा यज्ञ

[illegible] २२ मई शुक्रवार को प्रातः साढ़े ६ बजे श्री चन्द्र भवन जैन मैनेजर फर्म बृजलाल जैन एण्ड सन्ज के प्लाट नं० ६०४ [illegible] नगर लुधियाना के भवन निर्माण अवसर पर यज्ञ का आयोजन किया गया। पण्डित रामकुमार आर्य ने हवन यज्ञ सम्पन्न कराया। इस अवसर पर श्री दीवानचन्द जैन मालिक फर्म भी उपस्थित थे। इस अवसर पर जैन साहिब ने कई संस्थाओं को काफी दान दिया। पण्डित जी ने सब परिवार को आशीर्वाद दिया।

मुस्लिम युवती की शुद्धि [illegible]ह

[illegible] उदयपुर निवासी श्री [illegible] के साथ वैदिक रीति से सम्पन्न हुआ। शुद्धि एवं विवाह संस्कार [illegible] वेदालंकार ने सम्पन्न करवाया। इस अवसर पर आर्य समाज के अधिकारीगण उपस्थित थे।

शोकांजलि

जालन्धर —[illegible] आर्य जगदीश नारायण के सुपुत्र श्री अरुण कुमार के असामयिक निधन पर आर्य समाज बस्ती [illegible] में [illegible] प्रस्ताव पारित किया गया। सामूहिक सत्संग के पश्चात २ मिनट का मौन धारण कर ईश्वर से दिवंगत की आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की गई।

दुःखद

नई दिल्ली—आर्य जनता को यह सूचना देते हुए बड़ा दुःख हो रहा है कि प्रसिद्ध आर्य नेता लाला हरिवंशजी का गत २१ मई को देहावसान हो गया।

आर्य जगत् के वरिष्ठ नेताओं ने शुद्धि का महत्त्वपूर्ण कार्य करने वाले आर्य नेता लाला हरदयाल को शोकांजलि भेंट की। उन्होंने आर्यसमाज की महत्ती सेवा की थी।

आर्य मर्यादा के ग्राहक स्वयं बनो और दूसरों को बनाओ, आर्य समाज के सदस्य स्वयं बनो और दूसरों को बनाओ, हिन्दी भाषा—स्वयं भी पढ़ो और दूसरों को भी पढ़ाओ।

आवश्यकता है

आर्य हाई स्कूल फगवाड़ा के लिए एक हिन्दी अध्यापक की आवश्यकता है। योग्यता—शास्त्री ओ टी या प्रभाकर ओ टी हो, आर्य समाज के सिद्धान्तों को जानने तथा प्रवचन व संस्कारों आदि में दक्ष व्यक्ति को प्राथमिकता दी जाएगी।

निम्न पते पर शीघ्र प्रमाण पत्रों सहित प्रार्थना पत्र भेजें।

—कैलाशनाथ भारद्वाज, मन्त्री आर्य हाई स्कूल फगवाड़ा।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

~/VV

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वर्ष 14—अंक 16 22 आषाढ़ सम्वत् 2038, तदनुसार 5 जुलाई 1981 दयानन्दाब्द 156। एक प्रति 35 पैसे (वार्षिक शुल्क 15 रुपए)

भारत के इस्लामीकरण हेतु देशी व विदेशी एजेन्सियां सक्रिय

नई दिल्ली—हरिजनो के इस्लामीकरण की समस्या पर जहा मसलमानो की मनोकाक्षाए अपनी सख्या वृद्धि के लिए योजनाए रखते हैं वहा अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्रकारियो को उद्देश्यपूर्ति मे यहा के कुछ मुस्लिम सक्रिय हो गए है और हरिजनो को उन के लालच से तथा भय दिखाकर मुस्लिम बनने को विवश कर रहे हैं। पूर्व मे मलेशिया इस्लामिक देश बन चका है इण्डोनेशिया को भी मलेशिया की भाति मुस्लिम देश बनाया जा रहा है।

दक्षिण भारत मे इस्लामीकरण की योजना मे भारतीय मुसलमानो तथा विदेशी एजेन्सियो का हाथ है।

धर्मान्तरण के लिए हाजीमस्तान द्वारा भारी धन

हमारी जानकारी के अनुसार प्रसिद्ध स्मगलर हाजी मस्तान भी इस इस्लामीकरण की योजना मे अपना धन व्यय कर रहा है।

मीनाक्षीपुरम जिसो ३५० पर हरिजनों के और २५ पर थेवर जाति के लोगों के हैं शायद जिन मुसलमानो को आयोग के सन्मुख प्रस्तुत किया गया है वे अन्य गावों मे हो मीनाक्षीपुरम के नही।

निर्देशक महोदय ने माना है कि तिरुनलवेली के मुसलमानो ने साउथ इण्डिया इस्लामिक सोसायटी के लोगो को बुलाया धर्म परिवतन का काय १९६६ से कर रही है और अब तक ८००० (आठ हजार) हरिजन व्यक्तियो को मुसलमान बना चुकी है। जब इस ओर निर्देशक का ध्यान आकृष्ट किया गया तो उनका कहना था कि ऐसी सोसायटी के कार्यों को चैक करना और उसकी रिपोर्ट सरकार को देना उनके कार्य प्रणाली मे नही है।

धर्म परिवर्तन के सम्बन्ध में निर्देशक महोदय के अपने विचार हैं कि वर्षों से हरिजनों के साथ छुआछूत का व्यवहार और उनकी उपेक्षा इस सामूहिक धर्म परिवर्तन का कारण है। इस सामूहिक धर्म परिवर्तन में दो व्यक्तियो की मृत्यु भी को उल्लिखित किया है जिसकी सम्बन्ध में पुलिस द्वारा हरिजनों को धमकाया डराया गया था। पुलिस की धमकियो से घबराकर हरिजनो ने साउथ इण्डिया इस्लामिक सोसायटी को अपनी रक्षार्थ बुलाया। यदि इस कथन को भी सच मान्या जाए तो क्या इस्लामिक सोसायटी द्वारा किसी की विवशता का नाजायज लाभ उठाना नहीं कहा जाएगा? पुलिस के बचाने के लिए धर्म परिवर्तन का आकर्षण क्या

आर्यसमाज की सरकार को चेतावनी : जांचायोग की मांग

कहता है? यह हमारे भारतीय सविधान के सर्वथा प्रतिकूल है। अत भारत सरकार से आर्य समाज यह माग करता है कि—

१—भारत सरकार अनुसूचित जाति और जनजातियो के क्षत्रीय निर्देशक को तुरन्त निलम्बित करे और एक जाच कमीशन उनके विरुद्ध निम्न बातो की छानबीन करने के लिए नियुक्त करें—

(क) रिपोर्ट की बाते पूरी जाच करने से पूर्व कैसे प्रसारित की गई?

(ख) निर्देशक ने बलात धर्मान्तरण क्यो की?

(ग) जाच का कार्य एक निश्चित मत बनाकर क्यो किया गया?

(घ) साउथ इण्डिया इस्लामिक सोसायटी की गतिविधियो का उच्चाधिकारियो तक क्यो नही पहुचाया गया। जो सस्था १९६८ से मद्रास के क्षेत्र मे कार्य कर रही थी कम से कम जब से वे क्षत्रीय निर्देशक नियुक्त हुए तो उनका उस समय यह कर्त्तव्य होता था।

२ साउथ इण्डिया इस्लामिक सोसायटी की गतिविधियो पर तुरन्त रोक लगे जो बडी तेजी से अवैधानिक रूप मे बे रोक टोक बढती चली आ रही हैं।

३ भारत सरकार जाच करे कि विदेशी धन के प्रभाव मे सामूहिक धर्म परिवर्तन का होना तथा भारतीय मुसलमानो को अपने राष्ट्र के कर्त्तव्य से विमुख होने को विवश करता है।

एक निष्पक्ष जाच आयोग का गठन कर ऊपरलिखित बातो की जाच कराई जाए। इस आयोग मे एक हाईकोर्ट का जज तथा दो वरिष्ठ भारतीय प्रशासन अधिकारी (आई० ए० एस०) हो। यह आयोग मुस्लिम लोगो की गतिविधियो तथा विदेशी एजेन्ट्स का पता लगाकर समस्या का समाधान कर।

आर्य समाज भारत सरकार को चेतावनी देता है कि सामूहिक धर्म परिवर्तन के प्रति कडा रुख अपनाए। यदि सरकार इस चेतावनी के बावजूद कुछ नही करती तो आर्य समाज इस काम को अपने हाथ मे लेगा। आर्य समाज केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकार के साथ सहयोग करने को तैयार है। अनुसूचित जातियो को जो सास्कृतिक सुरक्षा मिली है उसे सुनिश्चित बनाया जाए।

—

अगला अक अधिवेशन अक

सभा का अधिवेशन ११ १२ जुलाई को पटियाला मे हो रहा है। उसके सबध मे आर्य मर्यादा का अगला अक सभा अधिवेशन अक होगा जिसमे सभा की वार्षिक रिपोर्ट और बजट आदि प्रकाशित किये जाए गे —रामचन्द्र जावेद सभा मन्त्री

सन्ध्या करें—

आइए हम बृहस्पति बनें

बृहस्पति, बनना आदर्श है, उस रास्ते मे बढ़ते में 'विभो' आगे बढ़ता जाऊं, उड़ान लेता ही जाऊ, ऊपर उठता ही जाऊ, यह भाव ही हमारा रक्षक है। हम प्रभु के जितना निकट रहते हैं, उतनी ही हमारी शक्तियां बढ़ जाती हैं। यदि हम उस बृहस्पति से एकता कर लें तो हमारे जीवन मे एक नया उत्साह, उल्लास व शक्ति आ जाएगी। ईश्वर के निकट जाने के लिए हमारे विचार उच्च होने चाहिए सद्विचार मनुष्य को ईश्वर के निकट ले जाते हैं। ईश्वर के स्मरण से ही हम ईश्वर से स्वाभाविक सम्बन्ध बना लेते हैं और तब संसार में हमें कभी भी अकेलापन अनुभव नही होगा क्योंकि हमारे साथ सदा हमारा ईश्वर रहता है। उस महान् सृष्टा से नाता जोड़ कर ही हम उसके निर्माण कार्य में हाथ बटा सकते हैं। पृथ्वी का कण कण उसी निर्भरता की अपूर्व योजना की गवाही देता है। हमारा जीवन भी तभी सच्चा मानव-जीवन होगा जब हम पृथ्वी के सुन्दर रूप को और भी सुन्दर बना सकेंगे, मनुष्यता

मनसा परिक्रमा का षष्ठम् मन्त्र (2)

को ईश्वरत्व के पास ले जाएंगे। मनुष्य की सभी शक्तियां इसी बात पर निर्भर करती है कि वह ईश्वर के कितना निकट है, उसने ईश्वर से कितनी एकता स्थापित कर ली है। जितना हो वह ईश्वर से अधिक सम्बन्ध बताएगा उतनी ही उसकी योग्यताएं बढती जाएगी। मनुष्य का जीवन उतना ही महान् होगा जितना अधिक ईश्वर से उसका सम्बन्ध होगा।

प्रभु से सम्बन्ध होने पर तुम डरोगे नहीं। तुम्हारे प्रयत्न निष्फल नही होंगे। तुम्हें कोई कमी नहीं रहेगी क्योंकि तुम जान जाओगे कि तुम उस महान् दानी के अत्यन्त निकट हो, जिसके पास सबके लिए सब कुछ है। तब तुम जीवन में विश्वास के साथ चलोगे। अपने प्रयत्नों के पीछे शक्ति लगा दोगे और मनचाहा फल पा लोगे। अतः तुम बृहस्पति के प्रकाश में कदम रखो। तुम्हारी सब दुर्बलताएं, कठिनाइयां पाप सूर्य के सामने अन्धकार की तरह नष्ट हो जाएंगे।

इस प्रकार अपना जीवन ईश्वर को अर्पण कर दो। जो कुछ काम करो प्रभु का समझ कर करो, यदि ईश्वर की प्रार्थना में थोडा समय लगाना हितकर है तो सारा जीवन उसी को समर्पित करना कितना उत्तम है। जीवन का सबसे अच्छा क्या उपयोग हो सकता है कि उसका प्रत्येक क्षण प्रभु सेवा मे लगे। हमारा प्रत्येक कार्य, विचार और हमारा प्रत्येक शब्द उसकी सेवा के लिए हो। सब कुछ ईश्वरार्पण कर उसकी आज्ञा के अनुसार उसकी इच्छापूर्ति कीजिए। आपके जीवन में आनन्द, शान्ति मधुरता और विश्वास का प्रवेश होगा। तुम अपने में दत्तचित्तता, परिश्रमशीलता, सच्चाई, ईमानदारी, उत्साह, निश्चय, दूरदर्शिता, स्वातन्त्र्य प्रियता, धीरता, आत्म सयम, सहानुभूति, बुद्धि, विवेक और सरलता को विकसित करो। यही प्रभु के पास पहुचने के साधन हैं।

जब हमारा ईश्वर के साथ इतना गहरा सम्बन्ध हो जाता है कि चारों ओर हमें वही दिखाई दे तब हमारी कमजोरी संकीर्णता, भीरुता, सन्देह अपने आप हम से विदा हो जाते हैं और हमें पूर्ण निर्भयता और शक्ति प्राप्त होती है, जिनका उद्गार खास परमात्मा से है।

इस रक्षक भाव को पूरा करने का बल या प्रेरणा हमें कहां से मिलती है? उत्तर देते हैं—'वर्षमिषव:' जो उपकार भावना से अपनी शक्तियों की वर्षा करने वाले लोग हैं, वे प्रेरक है। महर्षि दयानन्द से जब किसी ने कहा कि आप सारे ससार को मुक्त कराने की चिन्ता में क्यों हैं? उन्होंने कहा मैंने यदि यह कार्य नहीं किया तो मेरे जीवन का क्या लाभ,? इसलिए महर्षि दयानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द के जीवन का अनुकरण करते हुये—उनसे प्रेरणा लेते हुए आगे बढ़ना है। लोगों की सहायता करते चलना पहाड़ या मीनार पर चढ़ने के समान प्रकाशदायक है। इसलिए प्रेरणा ले अपने जीवन को दूसरों के लिए अर्पित करो।

इसलिए आईये, हम बृहस्पति बनें, हे बृहस्पते! हे जीवनामृत! मैं अपने अन्तःकरण को निर्मल करू। जिस प्रकार वर्षा की बूंदें तप कर ऊचे चढ़ती हैं। वहां स्थूल और समृद्ध हो, जगत् के उपकार के लिए जमीन पर आती है। मिट्टी मे अपने को मिला देती है परन्तु पृथ्वी को हरा भरा बना जाती है। बीज अपने को दूसरों के लिए मिट्टी में मिला देता है और वहा हरे भरे पौधे खड़े कर देता है जिसे खाकर पशु, पक्षी, मनुष्य सब जीवित रहते हैं, दीपक की बत्ती अपने को नष्ट करके सबका मार्ग प्रदर्शन कर जाती हैं, अन्धेरे में भटकते लोगो को रास्ता दिखा जाती है। अतः ऊचे से ऊचे चढ़कर भी प्रकाशशील बनकर भी सबसे चाहने योग्य बनकर भी दूसरों के कल्याण के लिए स्वाहा हो जाने का अभ्यास करो और वर्षा की बूंद बनकर सबको शान्ति और शीतलता दो। वर्षा की बूद हमारी प्रेरक शक्ति है।

ऊर्ध्वा दिशा के अधिपति हे बृहस्पते! तुम्हें मेरा भक्ति भरा प्रणाम, हमें अपनी ओर आकर्षित करते रहना। अन्तःकरण की भावना विशुद्ध करने वाले हैं आको, तुम्हें नमस्कार, हमें दृढ करते रहना। ऊचे चढ़कर भी जगत् के कल्याण के लिए अपने को मिट्टी में मिला देने वाली हे वर्षा की बूंदो! तुम्हें नमस्कार, हमें पथ-प्रदर्शन करते रहना।

अन्त में हम पुनः चाहते हैं, जो हम से द्वेष करते हैं और जिनसे हम द्वेष करते हैं, उस द्वेष भाव को आपकी दाढ़ में रखते हैं, प्रभो!

—सुरेशचन्द्र वेदालंकार,
आफरा बाजार, गोरखपुर।

वेद सुधा

प्रभु से सम्बन्ध होने पर तुम डरोगे नहीं। तुम्हारे प्रयत्न निष्फल नहीं होंगे। तुम्हें कोई कमी नहीं रहेगी क्योंकि तुम जान जाओगे कि तुम उस महान् दानी के अत्यन्त निकट हो जिसके पास सबके लिए सब कुछ है।

म. दयानन्द वचनामृत

ओम् की महिमा

ओ३म्—ओ३म् परमात्मा का निज नाम है, जैसे एक मनुष्य माता-पिता की सन्तान होने से पुत्र कहलाता है, उसकी सन्तान उसे पिता भी कहकर पुकारती है पत्नी की दृष्टि में वर पति है, भृत्यों के लिए वह स्वामी है। जितने मनुष्य जगत् में है, वे सभी पुत्र अवश्य हैं, अतः किसी मनुष्य का पुत्र यह विशेष नाम उचित नहीं होता। इसी प्रकार पिता आदि नामों की दशा जान लेनी चाहिए। उन मनुष्यों को दूसरों से व्यावृत्त करने के लिए मनु गोतम, कपिल, विश्वामित्र वसिष्ठ आदि किसी भी विशिष्ट नाम से अभिहित करना अनिवार्य हो जाता है। अन्तु गुणो और कर्मों के कारण परमात्मा के गौणिक तथा कार्मिक नाम भी अनन्त हैं। उन नामों के कारण नामी का कभी कभी सां र्य भी हो जाता है। यथा परमात्मा का एक नाम दयालु है। किन्तु दया करने वाला मनुष्य भी दयालु कहलाता है। इसी प्रकार न्यायकारी आदि नामों के विषय में जान लीजिए। हां 'ओ३म्' एक ऐसा नाम है जो परमात्मा के अतिरिक्त और किसी का नाम नहीं है। वेदादि शास्त्रों में परमात्मा का मुख्य नाम 'ओ३म्' ही बताया गया है। मुख्य नाम व्यवहार के लिए होता है, महाभाष्यकार पतञ्जलि जी ने लिखा है—'व्यवहारार्थं संज्ञाकरणं लोके' नामकरण ससार में व्यवहार के लिए बुलाने आदि के लिये होता है।

वेद में मनुष्य को संबोधन करके कहा गया है—इयंते यज्ञिया तनूः स (यजु) तेरा यह तन सर्व पूज्य परमात्मा से मिलने का साधन है। अभिप्राय यह है कि जो जीव मनुष्य तन में आया है वह यदि चाहें तो परमात्मा से मिल सकता है। एक मनुष्य गूंगा—मूक उत्पन्न हुआ है। वह बेचारा भगवान् के विविध नामों-गाड, अल्लाह, ईश्वर आदि का उच्चारण नहीं कर सकता, तो क्या वह परमात्मा की पूजा की इच्छा करके भी वंचित रहेगा? नहीं, नहीं, ऐसा नहीं। भगवान् का ऐसा संक्षिप्त नाम है जिसे मूक भी बोल सकता है और वह है 'ओ३म्'। ओ३म् भगवान् का निज नाम होने में यह सबसे प्रबल और अकाट्य युक्ति है।

—पं. धर्मदेव मनीषी

ओ३म्

आर्य मर्यादा

न मे स्तेनो जनपदे न कदर्यो न मद्यपः।
नानाहिताग्निर्नाविद्वान् न स्वैरी स्वैरिणी कुतः॥ इति॥

भावार्थ—मेरे राज्य में एक भी चोर, कंजूस और शराबी नहीं है। ऐसा कोई व्यक्ति नहीं है जो नित्य यज्ञ न करता हो, और वेदों का विद्वान न हो। यहां कोई व्यभिचारी नहीं है। व्यभिचारिणी स्त्री का तो प्रश्न ही नहीं उठता है।

—सम्पादकीय—

आर्य प्र.नि.सभा पंजाबके सदस्यों महानुभावोंकीसेवामेंएक निवेदन

11-12 जुलाई को पटियाला में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का वार्षिक अधिवेशन हो रहा है। इस सम्बन्धमें मैं सदस्य महानुभावों की सेवा में कुछ निवेदन करना चाहता हूं। ताकि जब वे इस अधिवेशन में आयें तो सारी स्थिति पर गम्भीरतापूर्वक विचार करें और आगामी वर्ष के लिए कोई ऐसा कार्यक्रम बनाएं, जिसके द्वारा पंजाब में आर्यसमाज का संगठन शक्तिशाली बन सके। और आर्य समाज का प्रचार भी ठीक प्रकार से हो सके। मैंने एक दस सूत्रीय कार्यक्रम बना कर सभा की अन्तरंगसभा को दिया है। यदि उसने इस पर विचार करके इसे स्वीकार कर लिया तो, वह वार्षिक अधिवेशन में सब सदस्य महानुभावों के सामने आ जाएगा। वे इसमें संशोधन भी कर सकते हैं। इसे बढ़ा भी सकते हैं और छोटा भी कर सकते हैं। परन्तु यदि इस कार्यक्रम पर गम्भीरता पूर्वक विचार कर लिया जाए और उस कार्यक्रम को आगामी वर्ष के लिए स्वीकार कर के अपना एक ध्येय बना लिया जाए कि हमने इसे चलाना है, तो मैं समझता हूं कि पंजाब में आर्य समाज कोई सक्रिय और रचनात्मक काम कर सकेगा। मुझे यह स्वीकार करने में कोई संकोच नहीं है कि पिछले एक वर्ष में हमने उतना काम नहीं किया, जितना हमें करना चाहिए था। कई प्रकार की कठिनाईयां हमारे रास्ता में आई हैं। फिर भी मैं यह अनुभव करता हूं कि हम चाहते तो कुछ और काम भी कर सकते थे, जो हमने नहीं किये। इसका उत्तरदायित्व मैं किसी और पर डालना नहीं चाहता। सभा का प्रधान होते हुए यह मेरा काम था कि मैं पंजाब में आर्य समाज के संगठन को शक्तिशाली बनाने के लिए कोई प्रभावशाली पग उठाता। यदि वह नहीं उठा तो उसका उत्तरदायित्व प्रधान पर ही पड़ सकता है और पड़ना चाहिए। परन्तु मैं नहीं चाहता कि पिछला इतिहास फिर दोहराया जाए। इसलिए सब सदस्य महानुभावों से यह निवेदन करने लगा हूं कि पटियाला में जब वे सब इकट्ठे हों तो पंजाब की वर्तमान परिस्थितियों पर भी गम्भीरतापूर्वक विचार करें। हमारे सामने इस समय दो चुनौतियां है। एक तो आर्य समाज के प्रचार की चुनौती, दूसरी पंजाब में हिन्दुओं की जो स्थिति है उसकी भी एक चुनौती है। मैं उसे विशेष महत्व इसलिए देता हूं क्योंकि मैं अनुभव करता हूं कि पंजाब में आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है, जो हिन्दुओं के अधिकारों की रक्षा के लिए कुछ कर सकती है। मई मास के अन्त में अमृतसर में बीड़ी और सिगरेट के नाम पर जो आन्दोलन प्रारम्भ किया गया, वहां अमृतसर के आर्य भाईयों ने अपने जिस संगठन का प्रदर्शन किया और अकालियों को जिस प्रकार ललकारा, उसके कारण आर्यसमाज की धाक बैठ गई है और अमृतसर के हिन्दू भी यह अनुभव करने लगे हैं कि आर्य समाज एक ऐसी संस्था है, जो विघटनकारी शक्तियों का सामना कर सकती है। मैं चाहता हूं कि जो प्रभाव हमारे अमृतसर के आर्य भाईयों ने वहां की जनता पर डाला है, वह ही सब नगरों में आर्य सामाजी वहां की जनता पर डाले। संघर्ष और संकट का ही एक समय होता है, जब किसी संस्था का प्रभाव औरों पर पड़ता है। इसलिए आज कल जो कुछ पंजाब में हो रहा है या कल को हो सकता है, उसे समझते हुए आर्य समाज के संगठन को अधिक से अधिक सुदृढ़ और [illegible] की आवश्यकता है। ताकि पंजाब का एक एक हिन्दू यह [illegible] सकती है।

दूसरी चुनौती जिसका मैंने ऊपर जिकर किया है, वह यह है कि हम आर्य समाज का प्रचार अधिक से अधिक कैसे कर सकते हैं। इस सम्बन्ध में, मैं यह सुझाव अवश्य देना चाहता हू कि हमे केवल समाज मन्दिरों के अन्दर हीं रह कर और संध्या, हवन करके या किसी उपदेशक का उपदेश सुन कर ही यह नहीं समझ लेना चाहिए कि हमारा कर्त्तव्य पूरा हो गया है। महर्षि दयानन्द ने लिखा था कि संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य है। हम इसे पूर्णतया भूल गए हैं। हम न तो अपना उपकार करते हैं और न ससार का उपकार करते हैं। न अपना उद्धार करते हैं और न ही समाज का उद्धार करते हैं इसलिए अब हमें कुछ इधर भी सोचने की आवश्यकता है। इस सम्बन्ध मे एक बात जो मैं विशेष रूप से प्रतिनिधि महानुभावो के सामने रखना चाहता हूं, वह यह है कि युवक शक्ति को आर्य समाज मे लाने के लिए प्रयत्न नही हो रहा। मैं कई बार जब आर्य समाजों के उत्सवो पर जाता हू तो मुझे कई ऐसे नवयुवक मिलते हैं, जो आर्य समाज के लिए काम तो करना चाहते हैं, परन्तु समाज के अधिकारी उन्हे प्रोत्साहन नही देते। यह भी देखा गया है कि कई समाजो के अधिकारी किसी दूसरे को समाज मे कोई महत्व-पूर्ण पद नही लेने देते। कई बड़ी-बड़ी समाजें ऐसी भी हैं, जिनके सदस्यो की सख्या बहुत अधिक सीमित रहती है। जिन संस्थाओं के साथ हमारा संघर्ष रहता है, वो तो अपनी संख्या बढ़ाने के लिए बहुत कुछ करती हैं, परन्तु आर्य समाजें अपने सदस्यों की सख्या बढ़ाने के लिए कुछ नही करती। कई ऐसी आर्य समाजें भी हैं, जो अपने वार्षिकोत्सव ही नही करती। कई कई वर्ष व्यतीत हो जाते हैं, उनकी आर्य समाज में कोई समारोह नही होता। यह स्थिति उत्साह-जनक नही है। कई बार लोग कहते भी हैं, कि क्या कारण है कि आर्य समाज वह प्रगति नही कर रहा, जो पहले किया करता था? इसका एक कारण यह भी है कि अब कई आर्य समाजों के ऐसे अधिकारी बन जाते हैं, जिन्हें आर्य समाज की प्रगति में कोई रुचि नही होती, वे केवल यह चाहते हैं कि उनका अधिकार बना रहे। अधिक कठिनाई वहा होती है, जहां किसी आर्य समाज के साथ कोई शिक्षा सस्था भी लगी हो। वहा उस सस्था में अपना महत्व बढ़ाने के लिए कुछ लोग आर्य समाज मे आ जाते हैं, उसके पश्चात् वे आर्य समाज की कोई सेवा नही करते। यही कारण है कि युवक शक्ति आर्य समाज में नहीं आ रही। समय आ गया है जबकि प्रत्येक आर्य समाज मे युवकों को पदाधिकारी बनाया जाए, प्रधान और मन्त्री इन दोनों में से एक तो अवश्य किसी युवक को पदा-धिकारी बनाना चाहिए। अन्तरंग सभा मे भी उन्हे पर्याप्त सख्या मे रखना चाहिए। इस दिशा में आर्य समाज दयानन्द बाजार लुधियाना, आर्य समाज फगवाड़ा और आर्य समाज दीनानगर इन तीनो ने जो कुछ काम किया है, वह सराहनीय है। फिरोजपुर में भी युवक आर्य समाज के काम मे सक्रिय भाग ले रहे हैं। पिछले दिनों इन सब युवकों से लुधियाना मे मिलकर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हुई और इस परिणाम पर पहुचा हू कि यदि आर्य समाजो के अधिकारी युवको को प्रोत्साहन दें, तो बहुत से युवक आर्य समाज में आ सकते हैं।

मैंने कुछ सुझाव सदस्य महानुभावों के सामने रखे हैं। यह आवश्यक नही कि जो कुछ मैंने लिखा है, उस सब को ही स्वीकार कर लिया जाए। यह भी हो सकता हैं कि जो कुछ मैंने कहा है कि इस के अतिरिक्त कुछ और सुझाव भी सामने आएं। उन पर भी विचार करना चाहिए। मेरी प्रार्थना केवल इतनी है कि जो महानुभाव पटियाला में पहुंचेंगे उन्हें केवल अधिकारियो का चुनाव करके या सभा का बजट पास करके ही वापस नहीं चले जाना चाहिए। परन्तु उन्हे गम्भीरतापूर्वक सारी स्थिति पर विचार करना चाहिए और आर्यसमाज के सामने जो समस्याएं हैं, उनका कोई समाधान ढूंढने का प्रयत्न करना चाहिए,

—वीरेन्द्र

इस सम्मान के लिए धन्यवाद

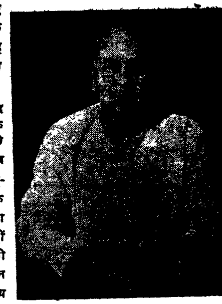
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गत कई वर्षों से अपने पुराने कार्यकर्ताओं और सेवकों का सम्मान करती चली आ रही है जब कभी हमारा कोई सम्मेलन होता है हम उसमें अपने पांच, सात, पुराने कार्यकर्ताओं को किसी न किसी रूप मे अवश्य सम्मानित करते हैं। इसका केवल एक उद्देश्य यह होता है कि जिन लोगों ने अपनी संस्था की कोई सेवा की है सार्वजनिक रूप से स्वीकार किया जाए। आर्य समाज आर्थिक रूप में एक बहुत ही गरीब संस्था है। इसमें आप को वह लोग बहुत ही कम मिलेंगे जिन्हे हम बड़े-बड़े व्यापारी या पूंजीपति कह सकते हैं। आज कल अधिकांश पूंजीपति वही बनते हैं जो ब्लैक के माध्यम से, रिश्वत से या किसी अन्य भ्रष्टाचार से रुपया बटोर सकें। आर्य समाज में इस प्रकार के लोग बहुत कम मिलेंगे इसका यह परिणाम है कि यह संस्था आर्थिक रूप मे सदा घाटे में रहती है।

आज कल भगवान रजनीश, सत्यसाईं बाबा, महेश योगी, और इस प्रकार के लोगों की धाक है। उन्हें अन्दर से और बाहर से अवांछित रुपया मिलता है। उनके आश्रम भी बनते हैं तो महलों की तरह। वह लोगों को जो उपदेश देते हैं उनका कोई प्रभाव हो या न, लेकिन उनका सिक्का चलता है। आर्य समाज किसी प्रकार के पाखण्ड में विश्वास नहीं रखता। इस लिए वह किसी को धोखा नहीं देता। जमीन पर बैठे स्वर्ग में नहीं पहुंचा देता। इसलिए उस के पास लोग भी कम आते हैं और रुपया भी कम आता है। जो आते हैं वह प्राय: साफ और सुथरे होते हैं उनका कोई नैतिक स्तर होता है। वह रुपया के पीछे मारे-मारे नही भटकते। जो भी काम करते हैं इमानदारी से करते हैं। जो कहते हैं सच्चाई से कहते हैं। ऐसे लोग आज कल दुनिया मे बहुत कम मिलते हैं। इसलिए आर्य समाज का क्षेत्र भी बहुत सीमित है।

लेकिन चूंकि इसके कार्यकर्ता प्राय: कुछ उच्चनैतिक स्तर रखते हैं अत: आर्य समाज यदाकदा उन का उत्साहवर्द्धन करती रहती है। ताकि उनका मनोबल बढ़ता रहे और जिस कार्य में वह लगे हुए हैं उसमें लगे रहें। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रधान होते हुए मैं इस समय तक अपने दूसरे साथियों को सम्मानित करता रहा हूं। तथ्य तो यह है कि मैं अभी अपने आप को इस योग्य भी नहीं समझता कि मेरा भी उसी प्रकार सम्मान किया जाए जैसा कि दूसरों का किया गया है। पंजाब में जिन लोगों ने आर्य समाज की सेवा की है उनसे मेरा स्थान बहुत पीछे है। ऐसे परिवार में जरूर पैदा हुआ हूं जिसने आर्यसमाज की सेवा की है। लेकिन स्वयं अपने आप को इस मामला में अभी बहुत छोटा समझता हूं। यही कारण है कि जब कभी इससे पूर्व यह सुझाव रखा गया कि अगर दूसरों का सम्मान होना है तो सभा प्रधान का भी होना चाहिए। मैं इस सुझाव को यह कहकर टालता रहा हू कि मैं अभी आपको इस योग्य नहीं समझता कि मुझे भी उसी तरह सम्मानित किया जाए जिस तरह आर्य समाज के दूसरे सेवकों को किया जाता है।

किन्तु लुधियाना की आर्य समाज दयानन्द बाजार (दाल बाजार) ने मेरे सामने यह सुझाव रखकर मुझे कठिनाई में डाल दिया कि वह मुझे सिक्कों से तोलना चाहते हैं। पहली प्रतिक्रिया तो मेरी यही थी कि इन्हें इन्कार कर दूं किन्तु फिर यह समझ कर मैं तैयार हो गया कि जो रुपया इकट्ठा होगा वह भी आर्य समाज के काम आ जाएगा। इस पर २८ जून को आर्य समाज दयानन्द बाजार लुधियाना के वार्षिकोत्सव पर मुझे सिक्को से तोल दिया गया। और इस तरह १० हजार रुपया मुझे मिल गया। लेकिन मैंने उसी समय उसे उन्हें ही वापिस कर दिया जिन्होंने वह दिया था। मैंने कहा कि यह रुपया आर्यसमाज का है यह उसके काम ही आना चाहिए।

मैंने अपनी ओर से यह सुझाव अवश्य दे दिया कि इसमें से ५ हजार रुपया आर्य समाज दयानन्द बाजार अपने पास रख ले तीन हजार रुपया आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को दे दिया जाए और दो हजार रुपया दयानन्द अस्पताल लुधियाना को दे दिया जाए। यह मेरा सुझाव है इसे मानना या न मानना आर्य समाज के अधिकारियों का काम है। जहां तक मेरा सम्बन्ध है मैंने वह सारा रुपया जैसे का वैसा ही वापिस कर दिया है इसमें एक भाई ने १५३० रुपए दिए, एक बहन ने गोरक्षा के लिए ११०० रुपए दिए एक और बहन ने मोही स्मारक के लिए ५०० रुपया दिया। इस तरह सारा मिला कर दस हजार रुपया जमा हो गया।



मैं आर्य समाज दयानन्द बाजार लुधियाना के अधिकारियों का हृदय से आभारी हूं कि उन्होंने आर्य समाज के एक तुच्छ सेवक का उत्साहवर्द्धन किया है। लेकिन जैसा कि उस समय कहा भी गया। मेरा क्षेत्र अब केवल आर्य समाज नहीं है मैं तो पंजाब के हिन्दू मात्र को एक ही नजर में देखता हूं। उन सब की सेवा करना अपना कर्त्तव्य समझता हू। आर्य समाजी हो, सनातन धर्मी हों यह जैनी हों स्वर्ण हिन्दू हों या हरिजन हों मैं सब को एक ही वृक्ष की शाखाएं समझता हूं मेरी नजर में हिन्दू और सिख में भी कोई अन्तर नहीं है। इसलिए आर्य समाज दयानन्द बाजार लुधियाना ने मेरा जो सम्मान किया है वह इसीलिए कि मैं पंजाब के सब हिन्दुओं और सिखों की सेवा करना चाहता हूं।

28 जून को जो कुछ लुधियाना में किया गया वह वस्तुत: मुझे यह अनुभव कराने के लिए कि अभी मुझे और भी बहुत कुछ करना है। परम पिता परमात्मा से यही प्रार्थना है कि वह मुझे इस योग्य बनाएं कि मैं उस विश्वास को पूरा कर सकूं जिस का प्रकटीकरण लुधियाना के भाई-बहनों ने २८ जून को दिया है।

—वीरेन्द्र

सभा की निम्न योजनाओं के लिए

अधिक से अधिक धन भेजिए

पंजाब की आर्य समाजों से अपील

१. सभा के वेद प्रचार विभाग के लिए जो आर्य समाज का मुख्य कार्य है।

२. सभा के साहित्य प्रकाशन के लिए जो वर्तमान युग में प्रचारार्थ सबसे प्रभावशाली साधन है।

३. सभा के नये भवन के निर्माण के लिए।

४. सभा की ओर से बनाये जा रहे कादियां के लेखराम स्मारक, मोही के स्वतन्त्रानन्द स्मारक तथा तलवन के श्रद्धानन्द स्मारक के निर्माण के लिए।

५. प्रचारार्थ एक जीप खरीदने के लिए।

६, सभा की शिक्षा संस्थाओं के संचालन तथा संवर्धन के लिए।

—वीरेन्द्र,
सभा प्रधान

—रामचन्द्र जावेद
सभा मन्त्री

विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत अब तक प्राप्त दान की सूची

शहीद पं. लेखराम स्मारक कादियां—

१. गुप्त दान—५०० रुपये। २. श्री ओम्प्रकाश महेन्द्र, प्रधान आर्य समाज मोरिण्डा—१०० रुपये। ३. आर्य समाज सै० २२ चण्डीगढ़—११०० रुपये। ४. आर्य प्रतिनिधि सभा, आन्ध्र प्रदेश, हैदराबाद—५००० रुपये। ५. श्री द्वारिकानाथ गुप्ता (दिल्ली) की डिस्पैंसरी के लिए कमरा निर्माण तथा २५०० रुपये नकद।
६. श्री ओम्प्रकाश भाटिया (अटारी बाजार) जालन्धर—डिस्पैंसरी के लिए एक कमरा निर्माण।

2. वेद प्रचार निधि—

१. प्रधान, आर्य समाज भटिण्डा—११०० रुपये। २. महेन्द्र पाल वर्मा (मैनेजर वार्ड होजरी) लुधियाना—११०० रुपये।

3. स्वामी स्वतन्त्रतानन्द स्मारक, मोही—

१, श्रीमती यशवन्ती मल्ता—११०० रुपये।

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर की गतिविधियां एवं वार्षिक चुनाव

७-६-८१ से १२-६-८१ तक रात के आठ बजे से साढ़े नौ बजे तक समाज मन्दिर में संगीत आचार्य श्री तुलसीदेव के मधुर भजन तथा पं० निरञ्जनदेवजी इतिहास केसरी तीर्थ जी की वेद कथा होती रही १३-६-८१ को सायं पांच बजे यू० एम० ओ० द्वारा विकलांग वर्ष घोषित करने के उपलक्ष में विकलांग दिवस मनाया गया जिसमें अन्धविद्यालय के अध्यापक तथा अन्धे बच्चों ने और कुष्ट आश्रमके हिंदूधर्ममें दृढ़ विश्वास रखने वाले कुष्टि धर्मी प्रेमी सज्जनों तथा अमृतसरमें चल रहे कोशिश नाम की संस्था के गूंगे, बहरे, सुन्दर प्यारे बच्चों ने अपने भविष्यके जीवन को उज्ज्वल बनाने के प्रयत्नों का दिग्दर्शन कराया। १४-६-८१ रविवार को साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् सभा मन्त्री श्री सुभाष भाटिया ने वर्ष भर का आय-व्यय का इस अवधि से अनेक प्रकार की गतिविधियों का ब्यौरा दिया जिसमें समाज द्वारा मनाए गए सभी धार्मिक, तथा राष्ट्रीय त्योहार, रोगों का निरीक्षण दुकानदारों, गृहस्थियों, सभा सुसाईटियों तथा ऊंचे पद पर विराजमान हिंदू अफसरों को आर्य धर्म का साहित्य छोटी पुस्तकें तथा सत्यार्थ प्रकाश इत्यादि मुफ्त बांटने का संक्षिप्त ब्योरा दिया। सैंकड़ों सत्यार्थ प्रकाश तथा हिन्दी, गुरमुखी की पुस्तकें आधे मूल्य पर दी गई। इसी वर्ष से गुरु विरजानन्द संस्कृत विद्यालय करतारपुर को धन राशि और अनाज, कुष्ट आश्रम तथा अन्धविद्यालय जैसी संस्थाओं को दी गई सामग्री दान तथा श्रीरामचन्द्र राव वन्देमातरम् जैसे तथा संन्यासी विद्वानों का सम्मानित करना शुद्धि तथा जात-पात तोड़ कर दहेज बिना विवाह अपने समाज द्वाराकराना श्री ओंकार नाथजी वहलकी देखरेखमें आर्यवैदिक गर्ल्ज हायर सैकण्डरी स्कूल जिसमें एक हजार के लगभग पुत्रियां शिक्षा ग्रहण करती उनका भी परिचय दिया, जनगणना में समाज ने जनता को कितना जागरूक कर दिया इस पर भी रोशनी डाली गई समाज में दोनों समय अग्निहोत्र और सायंकारी सभा की भांति चलती रही है। समाज के कोषाध्यक्ष मवयधान श्री वीरेन्द्र देवगण जी ने बताया सुरक्षित कोष को नही छेड़ा गया है और सारा खर्च किराया तथा दानों द्वारा पूरा किया गया है।

प्रधान प्रो. ओमप्रकाश वैद जी ने सारा साल में सब बहन भाईयों के साथ देने के लिए धन्यवाद किया उन्होंने कहा कि हम सब एक परिवार की तरह महर्षि दयानन्द जी के ऋण उतारने में लगे रहे उन्होंने पिछली सभा को भंग करके नये सभी सदस्य चुनने का आदेश दिया। चुनाव करवाने के लिए श्री देवदत्त जी मेहता ने वैद्याचार्य बाबु राम शर्मा जी का नाम प्रस्तुत किया और श्री जसवन्त ओबरा जी ने उसका समर्थन किया। प्रधान का नाम पूछने पर श्री विशेसर नाथ सेठ एडवोकेट जी ने कहा पिछले कई वर्षों से बहुत अच्छा कार्य हो रहा है इसलिए वह फिर प्रो. ओम्प्रकाश वैद जी का नाम प्रस्तुत करते हैं इसका अनुमोदन सूबेदार श्री शामलाल जी पण्डित तीर्थ राम शर्मा जी राजपाल सूरी जी ओम्प्रकाश शर्मा तथा अन्य कई सज्जनोंने किया क्योंकि और दूसरा नाम पूछने पर भी नही आया इसलिए प्रो. ओम्प्रकाश जी वैद तीसरी बार १९८१-८२, के लिए सर्वसम्मति से प्रधान चुने गए। ये भी सर्वसम्मति से निश्चय हुआ की समाज की अन्तरग सभा तथा स्कूल की प्रबन्ध कमेटी बनाने का अधिकार उनको ही दिया जाता है। सभा वैदिक धर्म की जय महर्षि दयानन्द की जय घोष के साथ विसर्जित हुई।

—वैद्याचार्य बाबूराम शर्मा

—

आर्य समाज मिट्ठू बस्ती जालन्धर

आर्य समाज बस्ती मिट्ठू का वार्षिक निर्वाचन २१-६-८१ को यू. आर, एम माडल स्कूल दिलबाग नगर में श्री नोतन दास श्री भाटिया की अध्यक्षता में सर्व सम्मति से सम्पन्न हुआ। पदाधिकारी एवं अन्तरग सदस्य इस प्रकार हैं।

संरक्षक श्री राम लुभाया जी नन्दा प्रधान श्री नोतन दास जी भाटिया सेवा मुक्त तहसीलदार, उप-प्रधान श्री महेन्द्र पाल जी खन्ना एम.ए बी.एड श्री शिव लाल जी भाटिया मालिक गणेश स्पोर्टस प्रो. देवीदयाल जी अरोड़ा डी ए वी कालेज जालन्धर, मन्त्री प्रो. किशोरी लाल जी भोला सैक्शन अफसर नार्दन रेलवे जालन्धर, प्रचार मन्त्री प्रो. सुभाष चन्द्रजी वर्मा, उपमन्त्री श्री राजेन्द्र कुमार जी भाटिया बी. काम, श्री योगेन्द्र कुमार जी, भारत भूषण जी नन्दा बी. काम, कोषाध्यक्ष श्री हरिचन्द जी भाटिया, अडीटर श्री बलराम जी लाइब्रेरियन श्री सोहन लाल जी. अन्तरग सदस्य

श्री डा. तिलक राज भोला जी. ए. एम, एस. मिसेज सुदर्शन कपूर, श्री कुन्दन लाल अबरोल, श्री सत्य पाल जी, श्रीमती प्रेम कोहली प्रिंसीपल यू. आर एम. माडल स्कूल, श्री हर्ष अरोड़ा, प्रिंसीपल आर्य कन्या हाई स्कूल बस्ती गौ श्री रोशन लाल ओबराय, वेदप्रकाश नन्दा, श्री बनवारी लाल जी, श्री अमृत-लाल मल्हन् एम. ए. बी. एड, किशोरी लाल भोला।

मंत्री

—

आर्य समाज पटियाला

आर्य समाज चौक पटियाला का वार्षिक चुनाव २१-६-८१ को सर्वसम्मति से निम्न प्रकार हुआ। प्रधान—श्री वेद प्रकाश जी महता उपप्रधान—श्री बलभद्र जी मल्होत्रा, कुमारी फूल जी शर्मा, मंत्री श्री ईश्वरदास जी ज्ञानी, कोषाध्यक्ष श्री नरेन्द्र जी खन्ना।

मंत्री

आर्य समाज चौक पटियाला,

फिरोजपुर

केन्द्रीय आर्य सभा फिरोजपुर का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार हुआ। प्रधान श्री डा. साधु चन्द विधायक, मन्त्री श्री पण्डित देवी राम जी शर्मा, कोषाध्यक्ष श्री मनोहर लाल जी

विश्व वेद परिषद चण्डीगढ़

चौ. रूप चन्द जी एडवोकेट उप-प्रधान श्री विश्वबन्धु जी कोषाध्यक्ष और श्री रणवीर शास्त्री को सर्वसम्मति सहायक मन्त्री मनोनीत किया गया।

आर्य परिवारों, युवक और युवतियों मे वेद के पठन-पाठन के अभाव की पूर्ति के लिए जहां परिषद ने वेद विशारद वेद-भूषण और वेद रत्न की परीक्षाओं को चालू कर दिया है वहां संस्कृत के पठन-पाठन का आयोजन भी किया गया है।

शोक प्रस्ताव

आर्य युवक सभा फिरोजपुर ने एक शोक सभा में श्री मदन मोहन जी आर्य भजनोपदेशक के निधन पर शोक प्रकट किया। उनकी आत्मा की शान्ति के लिए परमात्मा से प्रार्थना की तथा उनके परिवार के सदस्यों के साथ सहानुभूति प्रकट करते हुए उन्हे सान्त्वना दी।

स्त्री आर्यसमाज, संगरूर

स्त्री आर्य समाज,संगरूर का वार्षिक चुनाव दिनांक २२ जून, १९८१ दिन सोमवार को सम्पन्न हुआ एव निम्न अधिकारी निर्वाचित हुए। प्रधान श्रीमती कृष्णा रानी उपप्रधान श्रीमती लाजवन्ती मन्त्रिणी: श्रीमती प्यारी देवी उपमन्त्राणी श्रीमति कमलेश रानी, कोषाध्यक्ष श्रीमती शान्ता रानी आर्या। प्रतिष्ठित सदस्याएं श्रीमती शकुन्तला देवी, श्रीमती प्रेमदेवी कुमारी राजरानी, श्रीमती कृष्णा रानी कालड़ा श्रीमती कमला गुप्ता, सरोज एवं श्रीमती कान्ता रानी।

प्यारी देवी मन्त्रिणी

आर्य समाज कोटकपूरा

आर्य समाज कोटकपूरा का वार्षिक निर्वाचन श्री राजेन्द्र कुमार देवड़ा की अध्यक्षता में श्री सतीश कुमार सदस्य जिला आर्य सभा की तरफ से नियुक्ति की उपस्थिति में निम्न प्रकार हुआ--

प्रधान—श्री रिखीराम मोगा, उप-प्रधान—श्री रजिन्द्र कुमार देवड़ा, मन्त्री —श्री महिन्द्रपाल मैंगी, उपमन्त्री—श्री श्री यशपाल देवड़ा, कोषाध्यक्ष—श्री एम० गुलजार, मैनेजर—श्री आर्य माडल स्कूल श्री महिन्द्रपाल मल्हन आडीटर—श्रीमती कैलाशवती जी, श्री राजिन्द्र प्रसाद देवड़ा, प्रबन्ध कमेटी—मैनेजर श्री महिन्द्रपाल मल्हन।

सदस्य—मुख्याध्यापक श्री महेश उप्पल, श्री राजिन्द्र प्रसाद देवड़ा, श्री वीरेन्द्र कुमार, प्रधान व मन्त्री भी इसके पदाधिकारी होंगे।

—

सम्पादक के नाम पत्र

सामयिक एवं सटीक सम्पादकीय

आर्य मर्यादा के दिनांक १८-५-८१ के अंक में सम्पादकीय शीर्षकान्तर्गत आपके विचार पढ़े। आपने हरिजनो, दहेज व विवाह मे फिजूल खर्ची, हिन्दी एवं युवको को आर्य समाज में लाने एवं उन पर नेतृत्वका भार डालकर कार्य कराने आदि जो विचार प्रस्तुत किये है, वह वस्तुतः सामयिक, विचारणीय, उपादेय एव क्रियान्वयन योग्य हैं। एतदर्थ मैं आपका हृदय से आभारी हूं।

आवश्यकता है कि हम आर्य समाजके अधिकारी एवं सदस्यगण हरिजनों में आर्य विचारधारा का अपूर्व उत्साह से प्रचार करें। उन्हें आर्य समाज के सदस्य बनायें, उनकी कठिनाईयों को सुनकर उनका समाधान करें कराएं, उनके द्वारा निमन्त्रित किए जाने पर सम्मलित हों एवं सहयोग आदि कार्य करें, यह आज की ज्वलन्त आवश्यकता है। इस दिशा मे मुख्यतः आर्य युवकों द्वारा सचालित इस समिति के माध्यम से देहरादून नगर के हरिजनों में अपूर्व उत्साह से आर्य विचार धारा का प्रचार किया जा रहा है। रविवार को परिवारों एव हरिजन बस्तियो में स्थान चुनकर वहा लोगों के सहयोग से प्रचार का आयोजन किया जाता है जिसमें सब लोग उत्साह से सम्मिलित होते हैं। कुछ परिवारो में विवाह, नामकरण आदि सस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार एव सादगी से कराये गये। असहाय सहायता मृतकों के वैदिक रीत्यानुसार अन्त्येष्टि कर्म आदि कार्य भी समिति के कार्यक्रमों के अंग बने हैं। सारे कार्यक्रम हिन्दी भाषा में होते हैं इस प्रकार हम प्रयत्न कर रहे हैं, कि हम आर्यसमाज का जन-सामान्य एवं हरिजन भाईयों में उनके पास जाकर वेद का सन्देश सुनाएं एवं प्रचार करें।

—वैदिक सत्संग समिति देहरादून

आर्य जगत के समाचार

डा. सूर्यदेव शर्मा द्वारा पच्चास हजार रुपये का दान

आर्य समाज के सुप्रसिद्ध विद्वान् तथा डी० ए० वी० उच्च माध्यमिक विद्यालय अजमेर के भूतपूर्व प्रधानाध्यापक डा० सूर्यदेव जी शर्मा मन्त्री आर्यसमाज अजमेर ने अपने जीवन की सात्विक संचित आय की पच्चास हजार रुपये की राशि आर्यसमाज शिक्षा सभा अजमेर को दान मे दे दी है। इसके उपलक्ष्य मे शिक्षा सभा ने उनके नाम पर सूर्यदेव आर्य माध्यमिक विद्यालय की स्थापना करने का निश्चय किया है। इस नवीन स्कूल भवन का शिलान्यास राजस्थान के शिक्षा मन्त्री करेंगे।

आशा है प० सूर्यदेव जी के पुराने विद्यार्थी, मित्र और प्रशंसक अढाई लाख रुपये की अनुमानित लागत से बनाये जाने वाले इस विद्यालय भवन के कोष मे उदार आर्थिक सहायता देकर सूर्यदेव के प्रति अपने स्नेह का परिचय देकर शिक्षा प्रसार के इस कार्य मे सहयोग देंगे।

पारिवारिक सत्संग

रविवार २८-६-८१ को साय ५'३० बजे से ७-३० बजे तक श्री रवीन्द्र कुमार जी अग्रवाल के निवास स्थान २१ बी० मोतीनगर लुधियाना मे एक प्रभावशाली पारिवारिक सत्सग हुआ, श्री रूपलाल शर्मा, श्री प्रो० बालकृष्णजी के प्रभावशाली उपदेश हुए। सारा कार्यक्रम बडा सफल रहा। सत्सग के प्रति लोगों की श्रद्धा बढी।

—

लुधियाना में योग व्यायाम प्रशिक्षण

स्वामी सर्वानन्द जी सरस्वती जोकि विदेशो मे योग व्यायाम चिकित्सा का प्रशिक्षण देने के बाद अब स्वदेश लौट आए हैं, लुधियाना मे केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की प्रार्थना पर रखबाग (गोलबाग) लुधियाना मे प्रात ५ ३० बजे से ६-३० बजे तक प्रतिदिन प्रशिक्षण दे रहे हैं। इच्छुक महानुभाव ठीक समय पर पधार कर लाभ उठावें।

—

उत्सव सम्पन्न

आर्यसमाज हबीबगंज लुधियानाका उत्सव बडी धूमधाम से २०-२१ जून को सम्पन्न हुआ, सभा की ओर से प० सर्वदेव तथा श्री श्यामसिंह हितकर भजन मडली ने भाग लिया। उपदेशो तथा भजनो से जनता बडी प्रभावित हुई। श्री रूपलाल जी शर्मा ने बडे प्रभावशाली ढग से यज्ञ कराया। २१ जून को पजाब के राजस्व मन्त्री श्री बेअन्तसिंह तथा स्थानीय एम ए ए श्री गुप्ता ने यज्ञ मे पूर्णाहुति डाली और अपने प्रभावशाली प्रवचन दिए और समाज में चल रहे स्कूल के लिए मान मन्त्री ने १० हजार रुपये देने की घोषणा की तथा सामने चल रहे गन्दे नाले को बन्द करवा देने का आश्वासन दिया।

सभा का वार्षिक अधिवेशन 11 को

पटियाला—आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का वार्षिक समारोह ११ तथा १२ जुलाई को यहा अमर आश्रम में किया जाएगा, जिसकी अध्यक्षता आर्य जगत् के महान् नेता तथा पत्रकार श्री वीरेन्द्र जी करेंगे। यह जानकारी स्थानीय आर्य समाज के मन्त्री श्री शिवरदास जी ज्ञानी ने दी। यह पहला अवसर है कि आर्य प्रतिनिधिसभा का वार्षिक समारोह पटियाला मे आयोजित किया जा रहा है।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जनहित प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वर्ष 14—अंक 17, 29 आषाढ़ सम्वत् 2038 तदनुसार 12 जुलाई 1981, दयानन्दाब्द 156 । एक प्रति 35 पैसे (वार्षिक शुल्क 15 रुपए)

महाराष्ट्र के स्पीकर व हरिजन नेता गवई की चेतावनी

हरिजनों का धर्म परिवर्तन देश के लिए घातक

'इस्लाम लादने के लिए मीनाक्षीपुरम में पेट्रो डालर का भरपूर उपयोग किया गया'

नई दिल्ली—महाराष्ट्र विधानसभा के अध्यक्ष एवं रिपब्लिकन पार्टी के नेता श्री आर एस. गवई ने मीनाक्षीपुरम में हरिजनों को मुसलमान बनाए जाने पर अपनी तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए कहा है कि राजनीतिक स्वार्थों से प्रेरित ऐसे धर्मान्तरण राष्ट्र के लिए घातक हैं।

राजधानी के एक साप्ताहिक के साथ भेंटवार्ता में, उन्होंने कहा कि स्वेच्छा से धर्मान्तरण अलग बात है लेकिन मीनाक्षीपुरम में जो कुछ हुआ है, वह ऐसा नहीं है। वहां हरिजनों को तरह-तरह का प्रलोभन देकर इस्लाम स्वीकार करने के लिए दबाव डाला गया। इस कार्य में पेट्रो डालर का भरपूर उपयोग हुआ है। जिसका देश के हितों पर बुरा परिणाम होगा।

श्री गवई जो हरिजन समुदाय के नेता भी हैं, स्वयं तमिलनाडु भी गए और वहां के हरिजनों का सही मार्ग-दर्शन करने का प्रयास किया।

उन्होंने कहा "मैं सैकुलर होते हुए भी इस तरह के धर्मान्तरणों का विरोधी हूं। मीनाक्षीपुरम में सामूहिक धर्मान्तरण के पीछे नीयत अच्छी नहीं है। मुसलमानों ने हरिजनों को जो भी मदद दी वह उनके प्रति प्रेम के कारण नहीं, बल्कि उनका धर्म परिवर्तन कर अपने समुदाय में मिलाने के लिए दी।"

श्री गवई ने कहा कि धर्म निरपेक्षता के नाम पर चलने वाली धर्मान्धता का मैं प्रबल विरोधी हूं।

जाति व्यवस्था पर कड़ा प्रहार करते हुए श्री गवई ने यह मत व्यक्त किया कि इसने आदमी का अवमूल्यन किया है। आज चुनावों मे वोट देते समय उम्मीदवार छोटा होता है, जाति बड़ी। उम्मीदवार मनोनीत करते समय भी जाति बड़ी होती है, उम्मीदवार छोटा। चुनावों में निर्वाचन क्षेत्र में जिस जाति के लोग अधिक होते हैं उसी जाति के व्यक्ति को उम्मीदवार बनाया जाता है मतदाता भी जाति के आधार पर वोट देते हैं।

सार्वदेशिक सभा दिल्ली के अध्यक्ष श्री रामगोपाल शालवाले ने देश की राष्ट्रद्रोही शक्तियों को चेतावनी दी कि आर्य समाज उनके इस प्रकार के कार्यों को कदापि सहन नहीं करेगा। उन्होंने आर्यजनों से अनुरोध किया कि ऐसी राष्ट्रद्रोही शक्तियों का सामना करने के लिए प्रत्येक देशभक्त कटिबद्ध हो जाए,

आर्य समाज का 'धर्म रक्षा महाभियान' 26 जुलाई से

नयी दिल्ली—आर्य समाज की ओर से २६ जुलाई को देश भर में 'धर्म रक्षा महाभियान' के अन्तर्गत हरिजनों को समाज में समान स्थान दिए जाने की दृष्टि से अनेक रचनात्मक कार्यों को करेगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ला. रामगोपाल शालवाले ने यहां बताया कि राजधानी दिल्ली तथा देश के बड़े नगरों, कस्बों तथा गांवों में इस दिन हरिजन स्नेह सम्मेलन आयोजित किए जाएंगे। इस दिन हरिजनों को मन्दिरों, कुओं तथा अन्य स्थानों पर ले जाकर उनके साथ भोजन आदि वितरित कराया जाएगा।

उन्होंने बताया कि कुछ स्थानों पर हरिजन युवकों को यज्ञोपवीत दिए जाएंगे तथा उनसे हवन में आहुति डलवाई जाएगी श्री शालवाले ने कहा कि दक्षिण भारत के कुछ स्थानों पर हरिजनों को बहकाकर तथा प्रलोभन के बल पर मुसलमान बनाये जाने की घटना से सवर्णों की आंखें खुल जानी चाहिए। आर्य समाज अपने जन्म काल से हरिजनों को हिन्दू समाज का अटूट अंग मान कर उन्हें समान स्थान देने के अभियान में लगा रहा है,

उन्होंने चेतावनी दी कि जाति के आधार पर भेदभाव को सहन नहीं किया जाएगा तथा देश के प्रत्येक मन्दिर एवं कुओं को हिन्दू मात्र के लिए खोलना होगा।

आ.प्र.नि.सभा पंजाब का अधिवेशन स्थगित

जालन्धर—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का ११-१२ जुलाई को पटियाला में होने वाला वार्षिक अधिवेशन किन्हीं अपरिहार्य कारणों से स्थगित कर दिया गया है। सभा के अन्तरंग सदस्यो की गत ५ जुलाई को यहां हुई एक बैठक मे उक्त निर्णय लिया गया था।

आर्यप्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री प्रिंसीपल रामचन्द्र जावेद ने एक प्रैस विज्ञप्ति मे यह घोषणा करते हुए आर्य समाजों के प्रतिनिधियों से अपील की कि वे पूर्व घोषित अधिवेशन तिथियों पर पटियाला में पहुंचने का कष्ट न करें उन्होंने कहा कि अधिवेशन के लिए आगामी नई तिथियो की घोषणा सभा द्वारा निर्णय लिए जाने के बाद पुनः कर दी जाएगी।

इस सम्बन्ध में सभी प्रतिनिधियों एव आर्य समाजों व आर्य संस्थाओं को सभा की ओर से एक परिपत्र भेज कर सूचित कर दिया गया है। ताकि उन्हें किसी प्रकार की कठिनाई अथवा भ्रान्ति न हो।

आत्म निरीक्षण—

आर्यसमाज और उपदेशक

लगभग २५ वर्ष उपदेशक विद्यालय में सेवा करने के बाद आर्यसमाज में उपदेशकों के लिए जो स्थान है—उसके विषय में अपने कुछ विचार देना चाहता हू। सम्भवतः इस क्षेत्र में काम करने वाले भाईयों के लिए यह कुछ उपयोगी होंगे।

कार्य क्षेत्र में कार्यकर्ता की योग्यता के अतिरिक्त समाज में इस कार्य के प्रति क्या धारणा है—इसका भी खास महत्व है। कालिज या स्कूल में हिन्दी अथवा संस्कृत के अध्यापक का स्थान चाहे वह कितना ही योग्य ही क्यों न हो अंग्रेजी-गणित अथवा विज्ञान के अध्यापकों से सदा नीचा रहता है और रहेगा। जब भी कालिज के प्रिंसिपल पद के लिए अथवा स्कूल के मुख्याध्यापक पद के लिए चुनाव का अवसर आएगा हिन्दी—संस्कृत का अध्यापक सम्भवतः यह पद कभी न पाएगा। वर्तमान अर्थ युग की यह स्वाभाविक धारणा है।

अतएव जो भी युवक उपदेशक-प्रचारक क्षेत्र मे काम करने आए उन्हें पहले ही समझ लेना चाहिए कि समाज मुह से कहते हुए भी कभी दिल से उन्हें वह मान्यता नहीं देता जिसके वे स्वयं को अधिकारी समझते हों। उन्हें सन्तोष करना ही होगा अथवा यह कार्य छोड़ना होगा।

टंकारा की संस्था के स्नातक विद्यार्थियों के जो पत्र मुझे मिलते है उनमें कुछ ऐसी शिकायतें लिखी होती हैं:—

१. पहली शिकायत तो वेतन के सम्बन्ध में है। आज कल जब बढ़ई और मिस्त्री २५/-, ३०/- प्रतिदिन मांगते है—मजदूर १०/- १२/- से कम काम नहीं करता और सरकारी घोषणा के अनुसार प्रशिक्षित कार्यकर्ता को कम से कम ३००/- प्रति मास मिलना चाहिए। ऐसे वातावरण में एक विद्यार्थी को जिसने दशम श्रेणी में बाद चार वर्ष ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ तथा वेद-शास्त्र-संस्कृत आदि का अध्ययन किया है। यदि आर्य-समाज १५०/- से २५०/- प्रति मास देने की बात करे तो क्या यह मजाक नहीं। प्रायः वेतन नए उपदेशक-पुरोहित का यही है।

२. उपदेशक विद्यालय-टंकारा के सामने एक विषम समस्या और भी है।

यहां के स्नातक जब कहीं कार्य के लिए जाते हैं तो पूछा जाता है कि तुम ने कोई सरकार मान्य परीक्षा-शास्त्री आदि की है या नहीं। यह प्रश्न केवल सामान्य आर्य भाई ही नही करते। आर्यसमाज के अधिकारी भी करते हैं। विचित्र बात है। क्या शास्त्री आचार्य आदि परीक्षाओं में ऋषि दयानन्द के ग्रन्थ पढ़ाए जाते हैं। इन परीक्षाओं में तो प्रायः वे ग्रन्थ पढ़ाए जाते है जिन्हें ऋषिवर ने निषिद्ध माना है—न पढने के लिए लिखा है। इन ग्रन्थों का आर्यसमाज के सिद्धान्तों से कोई सम्बन्ध ही नहीं।

३. देवबन्द-सहारनपुर में हमारे मुसलमान भाइयों की एक संस्था है—दारूल-उलुम। उसमें १००० के लगभग विद्यार्थी पढ़ते हैं और संस्था का वार्षिक खर्च तीन लाख से ऊपर है। न तो वहां सरकारी सहायता है और न सरकारी डिग्री। उद्देश्य प्रचारक विद्वान उत्पन्न करना है।

मुसलमान भाईयो की ओर भी ऐसी

जो संस्थाएं यह समझती हैं कि संस्था के खर्च का 95% तो सरकार उठाए और संस्था के जीवन और दर्शन पर उनका प्रभुत्व हो तो वे एक ऐसा स्वपन देख रही है जो कभी वास्तविक नहीं बनेगा।

अनेक संस्थाएं होंगी। सम्भवत ईसाई तथा अन्य मतावलम्बियो की भी ऐसी ही संस्थाएं होंगी। अंग्रेजी शिक्षा-पद्धति के प्रचार से पहले ग्राम-ग्राम मे तथा काशी आदि केन्द्रों में जो शिक्षा संस्थाएं थीं पाठशालाएं थीं वे कौनसी सरकार द्वारा मान्य थी।

४ मैं समझता हू आर्यसमाजों द्वारा सरकार मान्य डिग्रियों की मांग एक हीन भावना का प्रतीक है। प्राय सम्पूर्ण भारत के लिए कुछ अपवादों को छोड़कर शिक्षा के आदर्श इंग्लैंड तथा अमेरिका कि शिक्षा संस्थाएं उपस्थित करती हैं। यह अब भी लगातार ऐसा ही चल रहा है।

अब तो खैर समय ही बदल गया है। अनेक वर्ष पूर्व जब गुरुकुल की डिग्रियां सरकार मान्य न थी, लगातार यह प्रयत्न हो रहा था कि सरकार की मान्यता मिल जाए। गुरुकुलों के अध्यापक और विद्यार्थी डी. ए. वी. कालिजों के विद्यार्थियों और अध्यापकों की ओर ललचाई आंखों से देखते थे। डी. ए. वी. संस्थाओं के अध्यापक और विद्यार्थी गवर्नमेंट कालिजों की शान शौकत से प्रभावित थे तथा भारतीय गवर्नमेंट कालिजों से विद्यार्थियों और अध्यापकों को कैम्ब्रिज और आक्सफोर्ड के स्वपन आते थे।

आज भी लगातार वही परिस्थिति है। सम्भवतः कुछ और इस भावना की वृद्धि हो गई है।

५. अब तो प्रायः सब शिक्षा संस्थाएं सरकारी अनुदानों पर ही चल रही हैं जो धन देगा नीति और अनुशासन उस ही का होगा।

६. इस संपूर्ण वातावरण में सरकारी सहायता के बिना और सरकारी मान्यता के बिना केवल आर्य जनता द्वारा आर्य जनता के लिए संस्था चलाना एक दुःसाहस नहीं तो और क्या है। यदि आर्य जनता को ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों की आर्य जीवन के परिवेश में प्रशिक्षण करना है तो स्वतन्त्र उपदेशक विद्यालय ही चलाने होंगे और उनके स्नातकों का मान करना होगा।

मैं समझता हू कि उपदेशक विद्यालयों का भी यह कर्तव्य है कि वे अपने छात्रों की योग्यता, व्यावहारिक ज्ञान तथा चरित्र बल का ऐसा प्रदर्शन करें कि वे आर्य जनता का मन मोह सकें। पर हरहालात में सरकारी मान्यता का मोह त्यागना होगा। धर्म निरपेक्ष सरकार की सहायता से चलने वाली संस्थाओं में आर्य समाज के सिद्धांत और कर्मकांड की शिक्षा नहीं दी जा सकती।

जो संस्थाएं यह समझती है कि संस्था के खर्च का ९५ प्रतिशत तो सरकार उठाए और संस्था के जीवन और दर्शन पर उनका प्रभुत्व हो वे एक ऐसा स्वप्न देख रही है जो कभी वास्तविक नहीं बनेगा।

७. अब यह स्पष्ट समझ लेना चाहिए कि आर्य समाज के सिद्धान्तों का, विशेष प्रचार या तो स्वाध्याय प्रिय वानप्रस्थी तथा संन्यासी कर सकते हैं। अथवा विधिवत शिक्षा प्राप्त उपदेशक विद्यालयों के स्नातक।

यहां एक कटु सत्य का उल्लेख करना चाहता हूं। जिन उपदेशकों, साधु तथा महात्माओं की आंख राजनीतिक लाभों पर हो। पार्लियामेंट अथवा प्रान्तीय परिषदों की सदस्यता पर हो, उनके द्वारा किए गए प्रचार से आर्य समाज की हानि तो हो सकती है लाभ नहीं। और यह प्रलोभन भी आजकल बड़े-बड़े विरक्त महात्माओं के मन को भी चंचल कर रहा है। इस के लिए किसी एक व्यक्ति को दोष देना ठीक न होगा। गांधी और दयानन्द का तपस्या का युग चला गया है, जब भुने हुए चने भी ८ रुपए किलो मिल रहे हों तो साधु महात्मा क्या मिट्टी खाकर जीएंगे। दूध और घी तो सुपना हो रहे हैं। इस भयंकर अर्थ संकट के युग में इस पापी पेट को पालने के लिए धन तो अत्यावश्यक है। क्या समाज साधु महात्माओं की पालना करता है या कर सकता है? साधारण गृहस्थ को तो किसी अतिथि के आने की सूचना पर ही बुखार चढ़ जाता है। अतः इस युग में यदि पार्लियामैण्ट की सदस्यता अथवा प्रांतीय परिषदों की सदस्यता अत्यन्त प्रलोभनीय हो तो दोष किसका है। समझदार और चुस्त व्यक्ति यदि प्रान्तीय परिषद् का सदस्य बन गया तो एक पीढ़ी के लिए खाने पीने का प्रबन्ध हो गया समझो और पार्लियामैण्ट की सदस्यता से जिसमें ईमानदारी से-श्री दीनानाथ जी सिद्धान्तालंकार के अन्दाजे के अनुसार एक सदस्य पर साठ हजार प्रति मास व्यय होता है—दो पीढ़ियों की आवश्यकताएं पूरी हो जाती हैं।

आर्यसमाज यदि चाहता है कि उसके साधु सन्त प्रचार कार्य में जुट सकें तो बौद्ध-युग की तरह मठ अथवा विहारों का प्रबन्ध करना होगा जहां प्रचारकों और इन साधु-सन्तों की देख-रेख की जा सके।

८, टंकारा का उपदेशक विद्यालय पिछले लगभग २५ वर्ष से चल रहा है। उसके पास उत्कृष्ट साधन हैं। विशाल प्रासाद, समृद्ध पुस्तकालय, वाचनालय पाठशाला, खेती की जमीन तथा सबसे बढ़ कर ऋषि भक्त समर्थ ट्रस्टीगण तथा उत्पन्न उत्साही अधिकारी। इसके स्नातक भारत के अनेक प्रान्तों में कार्य कर रहे हैं। अफ्रीका में भी इसके प्रचारक गए हैं। आर्य जनता के सहयोग से यह संस्था उच्चकोटि की आदर्श संस्था बन सकती है—पर इसके सामने २ आदर्श सदा रहने चाहिए—

१. आर्थिक दृष्टि से इस पर राजनीतिक नियन्त्रण न हो।

२. संस्था के प्रशिक्षण को सरकारी मान्यताओं के साथ न जोड़ कर ऋषि दयानन्द के आदर्शों के साथ जोड़ा जाए।

मैं समझता है कि यही आदर्श सभी आर्य उपदेशक-संस्थाओं के सामने भी होने चाहिएं।

—सत्यदेव विद्यालंकार

ओ३म्

आर्य मर्यादा

इन्द्रमहं वणिजं चोदयामि स न ऐतु पुरएता नो अस्तु ।
नुदन्नराति परिपन्थिनं मृगं स ईशानो धनदा अस्तु मह्यम् ॥ अथर्व ३।१५।१॥

भावार्थ—मैं 'कृषि-वाणिज्य-गोरक्षा' द्वारा संसार का उपकार चाहने वाला व्यक्ति, धनी व व्यापार-कुशल पुरुष को प्रेरणा करता हूं कि वह हमारे पास आये, हमारे सामने मुख्य-पुरुष होकर रहे । वह समय पर माल न देने वाले को, व्यापार के मार्ग में व्यवस्था के उल्लंघन करने वाले, लूट व चोरी करने वाले, तथा चंचलवृत्ति व्यापारी को दंडित करता हुआ हमें हमारे माल का पैसा दिलाती रहे ।

–सम्पादकीय–

धर्म परिवर्तन अभियान के उत्तर में धर्म रक्षा महा अभियान

आर्य बन्धु यह तो सुन ही चुके हैं कि इस समय भारत के हिन्दुओं को उनके अपने देश में अल्पसंख्यक बनाने के लिए एक अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र रचा गया है । ईसाई और मुसलमान देशों से भारतमें अगणित पैसा भेजा जा रहा है ताकि इस देश के हरिजनों को धर्म परिवर्तन करने के लिए तैयार किया जा सके । पिछले दिनों तामिलनाडू के एक नगर मीनाक्षीपुरम में जो कुछ हुआ है, वह इस समय तक सारे देश को पता चल गया है । यदि आर्य-समाज के प्रतिनिधि वहां न पहुंचते तो किसी को भी पता न चलता कि हमारे देश में क्या कुछ हो रहा है । इसके लिए सारी हिन्दू जाति को आर्यसमाज के नेताओं विशेषकर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी वानप्रस्थ, सार्वदेशिक सभा के मन्त्री श्री ओमप्रकाश जी त्यागी, आन्ध्र के कर्मठ वीर आर्य नेता श्री वन्देमातरम् रामचन्द्रराव और पृथ्वी सिंह जी आजाद के आभारी होना चाहिए जिन्होंने मीनाक्षीपुरम जाकर जो कुछ देखा वह सब कुछ अपने देशवासियों के सामने रख दिया है । इसका एक परिणाम यह भी हुआ है कि सारी हिन्दू जनता में एक नई जागृति पैदा हो गई है और सब स्थानों पर इस षड्यन्त्र के विरुद्ध एक अभियान प्रारम्भ करने का निश्चय किया गया है । जैसा कि पहले भी होता रहा है ऐसे समय में आर्यसमाज सबसे आगे आकर उस चुनौती को स्वीकार करता है, जो हमारे विरोधी समय-समय पर हमें देते रहते हैं । आज सारे देश में कहीं ईसाईयों की तरफ से और कहीं मुसलमानों की तरफ से हरिजनों का धर्म परिवर्तन कराने की जो योजना बनाई जा रही है, आर्यसमाज ने उसे विफल बनाने के लिए एक बहुत बड़ी अपनी योजना बनाई है । उसके अनुसार सार्वदेशिक सभा ने सारे देश में धर्म रक्षा महाभियान प्रारम्भ करने का फैसला किया है । २६ जुलाई को सारे देश में सब आर्यसमाजें अपने-अपने नगर में यह अभियान आरम्भ करेंगी । इसका वास्तविक उद्देश्य केवल यह है कि हरिजनों को हिन्दू से अलग करने के जो प्रयत्न हो रहे हैं, विफल बनाया जाए । इस अभियान को सफल बनाने के लिए दो बातोंकी आवश्यकता है । एक तो यह कि हरिजन भाईयों को हिन्दुओं विरुद्ध जो शिकायतें हैं, उन्हें दूर कराने का प्रयत्न किया जाए । दूसरा यह कि वे हिन्दू जिन्हें स्वर्ण हिन्दू कहा जाता है अपने मन मुटाव भुलाकर हरिजनों को अपना ही भाई समझ कर अपने गले लगाएं । हरिजनों को मुसलमानों और ईसाईयों से दूर रखने की कोई भी योजना उस समय तक सफल नहीं हो सकती, जब तक हम यह भूल न जावें कि हम से अलग कुछ ऐसे व्यक्ति भी हैं, जिनमें और हमारे बीच कोई अन्तर है । आर्यसमाज यह काम सब से अधिक और सफलता पूर्वक कर सकता है । महर्षि दयानन्द सरस्वती ने सत्यार्थ प्रकाश में यह स्पष्ट कर दिया है कि वह शूद्र किसे समझते हैं । एक तो उन्होंने यह लिख दिया है कि कोई भी व्यक्ति जन्म के आधार पर शूद्र नहीं बन सकता । जो भी बनता है अपने कर्म के आधार पर बनता है । और शूद्र का अर्थ यह नहीं कि जो किसी विशेष जाति में उत्पन्न हुआ हो, या कोई नीचे स्तर का व्यक्ति हो । बल्कि जो अनपढ़ हो, कोई काम न कर सके, जिसका व्यवहार दूसरों के साथ अच्छा न हो, उसे ही शूद्र समझना चाहिए । इसलिए आर्यसमाज का सब से आवश्यक काम इस समय यही है कि हरिजनों के विषय मे जो भ्रान्तियां हरिजनों के मन में और दूसरे हिन्दुओं के मन में पैदा हो रही हैं, उन्हें दूर किया जाये । जब तक यह नहीं होगा, उस समय तक न तो हम हरिजनो को बचा सकेंगे और न ही हिन्दुओं को बचा सकेंगे ।

इसलिए आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाबसे सम्बन्धित सब आर्यसमाजोंसे मेरा यह नम्र निवेदन है कि वे भी उस महाभियान में सम्मिलित हों जो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा २६ जुलाई को प्रारम्भ कर रही है । उस दिन पंजाब की प्रत्येक आर्यसमाज में यज्ञ किये जायें, जहा हरिजन भाईयो को ही यजमान बनाया जाए । उनके साथ सार्वजनिक सभाएं भी की जायें । जिनमें हरि-जनों को यह विश्वास दिलाया जाए कि हम उन्हें उसी प्रकार अपने भाई समझते हैं, जिस प्रकार दूसरे हिन्दुओं को । उन्हें यह भी बताने की आवश्यकता है कि धर्म परिवर्तन से उन्हें क्या हानि होगी ? उदाहरणार्थ यदि वे मुसलमान बनते हैं, तो हो सकता है कि कुछ समय के लिए उन्हें कुछ आर्थिक लाभ हो जाये । परन्तु सामाजिक रूप में अधिक लाभ न होगा । सबसे अधिक हानि तो स्त्रियो को होगी । मुसलमान अपनी महिलाओं को पर्दे में रखते हैं और एक-एक व्यक्ति चार-चार विवाह भी कर लेता है । इसलिए धर्म परिवर्तन से कोई लाभ न होगा और आज हिन्दू हरिजनों को जो सुविधायें कानूनी तौर पर मिली हुई हैं, धर्म परिवर्तन के पश्चात् वह उन्हें न मिल सकेंगी । आर्यसमाज को अपनी सभा समस्याओं पर प्रकाश डालना चाहिए । और उस दिन एक प्रीति भोजन भी होना चाहिए । जहा सब मिल कर और इकट्ठे बैठ कर खा सकें । इसके अतिरिक्त प्रत्येक आर्यसमाज को यह भी देखना चाहिए कि यदि कोई ऐसे हरिजन हों जो अधिक कठिनाई में हों, उनकी भी जितनी सहायता हो सकती हो, करने का प्रयत्न करना चाहिए । मैं जानता हू हमारे पास उतना धन नहीं है, जितना मुसलमानों और ईसाईयों के पास है । परन्तु हमें यह न भूलना चाहिए कि यह हिन्दुओं के जन्म मरण का प्रश्न है । अब भी यदि वे सोए रहे तो और दस बीस वर्षों में इस देश पर या तो मुसल-मानों का राज्य होगा या ईसाईयों का । हम एक पाकिस्तान तो बना चुके हैं । अगर हम सोए रहे तो मालूम नहीं कितने पाकिस्तान या ईसाईस्तान बन जायें । इसलिए अब सोनेका समयनहीं, अपितु जागनेका समय है । वैसे तो इस समय सारी हिन्दू जाति को ही सक्रिय होना चाहिए । हिन्दुओं की जितनी भी धार्मिक और सामाजिक संस्थाएं हैं, उन्हें इस दिशा में तन-मन-धन सब लगा देना चाहिए । परन्तु कोई और करे या न करें, आर्यसमाज को अवश्य इस दिशा में कुछ न कुछ करना चाहिए । आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब की अन्तरंगसभा की जो बैठक ५ जुलाई को हुई थी उसमें भी इस पर विचार किया गया था और यह निश्चय किया गया था कि पंजाब में भी धर्म रक्षा अभियान प्रारम्भ किया जाए पंजाब के अतिरिक्त हिमाचल मे ईसाई प्रचार बहुत जोरों से किया जा रहा है । हिमाचल के हमारे आर्य भाईयों का भी यह कर्त्तव्य है कि वे इस ओर ध्यान दें । इसलिए मैं पंजाब की सब आर्यसमाजों से यह निवेदन करना चाहता हूं कि २६ जुलाई को सारे देश की आर्यसमाजें जो धर्म रक्षा अभियान प्रारम्भ कर रही हैं, उसमें पंजाब के आर्य जगत को भी अपना पूरा योगदान देना चाहिए । २६ जुलाई से पंजाब में जो कार्यक्रम प्रारम्भ किया जाना है, इस पर विचार हो रहा है और शीघ्र ही सभा के कार्यालय से सब आर्यसमाजों के नाम एक परिपत्र भेज दिया जायेगा, जिसमे वह सारा कार्यक्रम दिया जायेगा । जो इस सम्बन्ध मे निश्चत किया जायेगा । मुझे आशा ही नहीं विश्वास भी है कि पंजाब की आर्यसमाजें किसी से पीछे नहीं रहेंगी । और अपने धर्म की रक्षा के लिए जो कुछ भी उनसे हो सकेगा, वह करेंगी । आर्यसमाज ने पहले भी धर्म रक्षा के लिए बड़े बड़े बलिदान दिए हैं । कोई कारण नहीं कि वह अब पीछे रहें । इसलिए पंजाब की सब आर्य समाजोंको इस धर्म रक्षा अभियान में कूदने के लिए तैयार हो जाना चाहिए ।

—वीरेन्द्र

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज की देन

महर्षि का 'सत्यार्थ प्रकाश' सर्व-सन् १८७५ ई० में छपा था। 'सत्यार्थ प्रकाश' में प्रस्तुत विषयों के पर्यालोचन से महर्षि के अनुपम पाण्डित्य, अकाट्य तर्क, गहन अध्ययन, मनन तथा साधना का समुज्ज्वल रूप संसार के समक्ष है। ऋषि ने मानवीय समाज को शारीरिक, आत्मिक, राजनैतिक तथा भौतिक उन्नति के परिप्रेक्ष्य में अभूतपूर्व दार्शनिक तथा वैज्ञानिक विचारों का प्रकाशन किया है। सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्दशमणिमाला में षष्ठ समुल्लासमें महर्षि के राजनीतिक विचार धारा का दिव्य दर्पण है। इस समुल्लास के प्रारम्भ में ऋषिवर ने ऋग्वेद की एक ऋचा के आधार पर सम्पूर्ण राज्य व्यवस्था को तीन भागों में बांटा है। वे तीन भाग विद्यार्य सभा, राजार्य सभा तथा धर्मार्य सभा है। ऋषि ने शतपथ ब्राह्मण और मनु के धर्म शास्त्रानुसार सभापति (राष्ट्र-पति) का निर्वाचन, सैन्य सञ्चालन, शस्त्रादि व्यवस्थापक कर व्यवस्था, राजा के गुण और दिनचर्या, मन्त्रिमण्डल निर्माण

किस्त — 7

युद्ध संचालन, सन्धि, विग्रह, योग. आसन. द्वैध भाव, ससथ, षडग राजधर्म, जल, स्थल तथा नये सेना की रचना, व्यूह-निर्माण, दण्ड विधान आदि का विशद विवेचन किया है। इसी प्रकार इस महान् ग्रन्थ के अन्य अनेक स्थल भी ऋषि की राष्ट्रीय विचार धारा के सजीव चित्र प्रस्तुत करते हैं। उदाहरणार्थ :—

क—माता-पिता के समान कृपा, न्याय और दया के साथ विदेशियों का राज्य भी पूर्ण सुखदायक नहीं है।

(स० प्र० समु० ८, पृष्ठ १४१)।

ख—'सृष्टि से लेकर महाभारत पर्यन्त चक्रवर्ती आर्य कुल मे ही हुये थे। अब इनकी सन्तानों का अभाग्योदय होने से राजभ्रष्ट होकर विदेशियों के पादाक्रान्त हो रहे हैं। (स० प्र० समु० ११ पृष्ठ १७३)

ग—आर्यावर्त्त में वैदेशिक राज्य की स्थापना के मूलभूत कारण को ऋषि दयानन्द १०वें समुल्लास में आपसी फूट, मतभेद ब्रह्मचर्य, विवादि का सेवन करना मानते हैं।

घ—ऐसे शिरोमणि देश को महाभारत के युद्ध ने ऐसा धक्का दिया कि अब तक भी यह अपनी पूर्व दशा मे नहीं आया। क्योंकि जब भाई को भाई मारने लगे तो नाश होने में क्या सन्देह है।

(स० प्र० समु० ११, पृष्ठ १७४)।

इसी प्रसग में राष्ट्र कवि स्व० मैथिलीशरण गुप्त के भी विचार पठनीय हैं :—

इस सर्वनाशी युद्ध का वह दृश्य घोर था।

उस ओर था यदि पुत्र तो लड़ता पिता इस ओर था। सन्तान ही के रक्त में यह मातृ भूमि सनी यहां,

उस स्वर्ग की सी वाटिका की हाय राख बनी यहां।

ङ०—हे परमेश्वर! स्वदेशस्थ आदि मनुष्यों को अत्यन्त परस्पर निर्वैर, प्रीतिमान, पाखण्डरहित करें, अन्योऽन्य प्रीति से परमवीर्य पर क्रम से निष्कण्टक राज्य भोगें। हम सब में नीतिमान् सज्जन पुरुष हों। (आर्याभिविनय द्वि० प्र० म० १)

'स्थाली पुलक' के न्याय से ऋषि की राष्ट्रीय विचार धारा को परखने के लिए निबन्ध के विस्तार भय से इतने ही उद्धरण पर्याप्त हैं।

इस प्रकार ऋषि ने बंग विभाजन के ३० वर्ष पूर्व देश में स्वदेशी आन्दोलन का सूत्रपात किया। उन्होंने इस दिशा में भारतीयता के भाव जगाने के लिए देश-वासियों में आर्य भाषा (हिन्दी) तथा आर्यावर्त्त इस पवित्र शब्दत्रयी को प्रचारित किया। ऋषि की स्वदेश भक्ति विषयक निम्नलिखित कुछ उद्धरण पठनीय एवं मननीय हैं।

ब्राह्म समाजी तथा प्रार्थना समाजी लोगों की समालोचनार्थ ऋषि लिखते हैं—

(१) परन्तु इन लोगों में स्वदेश-भक्ति बहुत न्यून है। अपने देश की प्रशंसा व पूर्वजों की बड़ाई करना तो दूर रहा, उस के बदले बहुत निन्दा करते हैं।

(स० प्र० समु० ११, पृष्ठ २४१)।

(२) 'उस समय देश में धन बहुत था और स्वदेश भक्ति भी थी।'

(स० प्र० समु० ११, पृष्ठ १८६)

सत्यार्थ प्रकाश के चतुर्दशमणिमाला में षष्ठ समुल्लास महर्षि की राजनीतिक विचारधारा का दिव्य दर्पण है। इस समुल्लास के प्रारंभ में ऋषिवर ने ऋग्वेद की एक ऋचा के आधार पर सम्पूर्ण राज्य व्यवस्था को तीन भागों मे बांटा है। वे तीन भाग विद्यार्यसभा, राजार्य सभा तथा धर्मार्य सभा हैं।

स्वदेशी आन्दोलन के जनक

देश में कुछ लोगों की धारणा है कि सन् १९०५ में 'लार्ड कर्जन द्वारा बंग-विच्छेद किए जाने पर भी लोगों में स्वदेशी भावना का उदय हुआ। किन्तु ऐसे लोग भूल जाते हैं कि ऋषि दयानन्द तो ८५ वर्ष पूर्व ही स्वरचित ग्रन्थों में, व्याख्यानों में, यथा समय स्वदेशी वस्तुओं के प्रयोग में स्वदेश भक्ति की भावना प्रकट कर चुके थे। ऋषि महाराज के इस स्वदेशी प्रकार के कारण ही आर्य समाज में दीक्षित व्यक्ति तो सन् १८७५ से ही स्वदेशी मोटे वस्त्र पहनने और स्वदेशभूषा में रहने के आदी हो चुके थे। इसीलिए 'अवरेस्ट इन इण्डिया' नामक पुस्तक मे आर्य समाजी की मुख्य पहिचान ही यह बताई गई थी, जो कि स्वदेशी मोटे कपड़े तथा बन्द गले के कोट धारण करें समझ लेना वह मनुष्य आर्य समाजी है। आज भी आर्य समाज के सैकड़ों उपदेशक तथा कार्यकर्त्ता इसी वेशभूषा में सुसज्जित पाये जाते हैं।

(३) 'हम और आपको उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे भी होगा, इसकी उन्नति तन, मन, धन से सब मिलकर प्रीति से करें।

(स० प्र० समु० ११ पृष्ठ २२५)

(४) 'अत्यन्त आनन्द की बात है कि आप लोगों में स्वदेश की बात निश्चित हुई है, परन्तु स्वदेश आदि सब मनुष्यों का निर्विघ्न आर्य समाज से यथार्थ होगा (ऋषि द्वारा श्रीयुत गोपालराव, हरि-देशमुख को लिखित पत्र चैत्र सु० ६ सम्वत १९३१)

(५) 'हे परमेश्वर! जैसा सत्य, न्याय युक्त अखण्डित, आपका राज्य है वैसा न्याय. राज्य हम लोगों का भी आपकी ओर से स्थिर हो। (आ० वि० प्र० म० म० १८)

वस्तुतः स्वदेश के प्रति श्रद्धा भक्ति की ये उदात्त भावनाएं ऋषि को अपनी गुरुवर्य दण्डी विरजानन्द जी महाराज से ही उत्तराधिकार में प्राप्त हुई थी। इन्हीं भावनाओं के प्रचार एवं प्रसार के लिए ऋषि का यह आर्य समाज भी सदैव सचेष्ट रहा है। इसी वातावरण में कोई कवि गा उठा।

जिसको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।

वह नर नहीं है, पशु निरा है, और मृतक समान है॥

आर्य समाज का उदय

यह बात सर्वविदित है सन् १८५७ की महान् क्रान्ति के १८ वर्ष पश्चात् सन् १८७५ ई० में ऋषि दयानन्द द्वारा बम्बई में आर्य समाज की स्थापना हुई। वस्तुतः ऋषि दयानन्द इस आर्य समाज के द्वारा देश में सर्वांगीण उन्नति एवं विकास का वातावरण प्रस्तुत करना चाहते थे। उन्होंने धार्मिक क्षेत्र में उत्पन्न हुई रूढ़ियों को समूल नष्ट करने का जहां बीड़ा उठाया था वहां देश को अंग्रेजी पारतन्त्र्य पाश से मुक्त कर पुनः जगत् गुरु के उच्चासन पर आसीन करने का भी प्रयास किया था। वे देश को कला-कौशल से परिपूर्ण एवं उद्योगों से परिपूर्ण देखना चाहते थे। इस विषय में उन्होंने विदेशों से पत्र-व्यवहार भी किया था। बस ऋषि दयानन्द की इन्हीं पवित्र धारणाओं को मूर्त रूप देनेके लिए आर्य समाज अपने उदयकाल से ही क्रान्तिकारी मार्ग पर अग्रसर हुआ।

हर्षवर्धन मिश्र शास्त्री

कांग्रेस की स्थापना

आर्य समाज की स्थापना के १० वर्ष पश्चात् बम्बई नगर में ही अखिल भारतीय कांग्रेस की स्थापना हुई। इसके प्रारम्भिक कार्यकर्त्ता अंग्रेजी शासन में कुछ अधिकार तथा कुछ सरकारी नौकरियों में भारतीयों के लिए विशिष्ट स्थान प्राप्ति के लिए ही हामी थे। धीरे-धीरे कांग्रेस की बागडोर देश के प्रतिष्ठित महा-पुरुषों के हाथ में आई। इनमें भी महादेव गोविन्द रानाडे, ऋषि के ही शिष्य समझे जाते थे। गोपाल कृष्ण गोखले ऋषि दयानन्द के विचारों से अत्यन्त प्रभावित थे। पंजाब केसरी लाला लाजपतराय एवं स्वामी श्रद्धानन्द सर्वात्मना आर्य समाजी थे। कालक्रम से बाल गंगाधर तिलक के बाद सन् १९२० में कांग्रेस का सूत्र महात्मा गान्धी के हाथों में आया श्री गांधी जी जो मिस्टर गांधी के नाम से प्रसिद्ध थे उनको गुरुकुल कांगड़ी विश्व-विद्यालय के संस्थापक महात्मा मुन्शीराम जी ने ही सर्वप्रथम गुरुकुल उत्सव पर महात्मा शब्द से सम्बोधित किया था।

(क्रमशः)

उत्तम जीवन का शुभारम्भ

वर्तमान काल, में सारे राष्ट्र अनेक दुःखों और संकटों से ग्रस्त हैं। अस्वस्थता, दुर्बलता, अराजकता, अशान्ति से वे खाए जा रहे हैं। असत्य नियमों, अशुभ विचारों, अशुद्ध कर्मों से ही तो ये बुलाए जा रहे हैं। सत्य नियमों शुभ विचारों, शुद्ध कर्मों से ही ये अवश्य दूर हो जाते हैं ? निम्नांकित सत्य नियम आदि द्वारा सब रोग (उक्त अस्वस्थता आदि) सर्वथा मिट जाते हैं।

परमेश्वर स्वयाज्ञा 'वेद' द्वारा, समस्त संसार के समस्त मनुष्यों को सर्व ही के हितार्थ सदा से ही उपदेश प्रदान करता है—१. उत्तम मार्ग ही कल्याण करता है। २. संसार के प्रत्येक मनुष्य को अच्छा बनाएं। मेरा मन शिव संकल्पों से युक्त हो। ४. मैं सभी प्राणियों को मित्र की दृष्टि से देखूं, हम एक दूसरे को मित्र की दृष्टि से देखें। ५. भाई, भाई से द्वेष करे। ६. परस्पर लड़ने वाले मौत के मार में गिरते हैं ? ७. मिलकर चलो. मिलकर संवाद करो। ८. ऐ इन्सानो ! मैं तुम्हारे दिलों को झट देखा करता हूं, और तुम्हारे दिलों को पाक करता हूं। तुम एक दूसरे को उसी तरह मुहब्बत से चाहो, जैसे एक गाय अपने नए पैदा हुए बछड़े को चाहती है।' इत्यादि अनेकों मन्त्र सब विषयों के परम पिता परमात्मा आदि सृष्टि से ही मनुष्य मात्र को प्रदान करता है। ९. हर बुराई को भूल जाना सीखो। १०. 'दूध तथा पानी से सीखो, मिलना और मिलाना। ११, सूरज की किरणों से सीखो, जगना और जगाना। सत्पुरुषों के जीवन से, सीखो चरित्र निज गढ़ना। १३. हम कल्याणकारी बल के स्वामी बनें। १४. हमारी बुद्धि और मन शांति के लिए हों। पवित्र यजुर्वेद। १५. हे परमेश्वर ! हमारी पूर्ण रक्षा के लिए हमें अज्ञान निवारक ज्ञान दें। निश्चय तू हमारे ज्ञान के लिए है। १६. हम सदा विद्वान् पुरुषों के उत्तम आचरण और उपदेशों के अनुसार रहें। १७. हमेशा यह सोचो कि पड़ोसी, नौकर, कुत्ते, वगैरह सारे जानवर और सारे के सारे इन्सान सुख से सोएं।

अतएव हमें (प्रत्येक ही को) आज ही से (कल नाम काल का) दृढ़ (शुभ) संकल्प लेना परम परम आवश्यक है, इसलिए कि प्रत्येक के आपसी वैमनस्य और द्वेष-भाव आदि पूर्णतया ही जल जावें और फिर से नवीन जीवन का शुभारम्भ हो, । तब हमारे सब ही दिन सच्चे सुख शान्ति आनन्द भरे हो जाएंगे, रहेंगे सदा सर्वदा। इसलिए आज से, अब ही से, ईश्वराज्ञा वेद—का रोजाना ही स्वाध्याय सुश्रवण सुपालन करते हुए अपने उक्त अभीष्ट (सर्वोत्तम अर्थात् सच्चे सुख आदि युक्त जीवन आदि) को निश्चय प्राप्त हो रहें।

बस यही मार्ग, सत्य—असली।
अन्य कोई भी असत्य—नकली है।
देख लें गम्भीरतापूर्वक यह तथ्य।
कहांगे फिर 'सचमुच यह ज्ञान सत्य।
होगा इसी से सर्व कल्याण नित्य।
अन्य तो करें देख जो परेशान नित्य
तो अपनावें उक्त ही मार्ग सत्य।
रहो पाते फिर सर्व सुख नित्य।

—श्री सज्जन जी, जालन्धर

जिला आर्य सभा भठिण्डा

२१-६-८१ दिन रविवार को प्रातः ९ बजे जिला आर्य सभा भठिण्डा तथा इस जैल की निकट की आर्य समाजों की मीटिंग आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल भठिण्डा में श्री म० हुक्मचन्द जी, मैनेजर आर्य विद्या मन्दिर मण्डी डबवाली की प्रधानता में की गई—भठिण्डा की आर्य समाजों के अतिरिक्त जीन्द, अबोहर, गोनियाना मंडी, रामा मंडी फरीदकोट, मंडी डबवाली की आर्य समाजों के प्रतिनिधि शामिल हुए—सर्वसम्मति से नीचे लिखे प्रस्ताव पास हुए—

१. प्रत्येक आर्य सभासद् के घर कम से कम एक बार प्रतिमास पारिवारिक सत्संग अवश्य हुआ करे।

२, सब आर्य समाजें अपने-अपने नगर में आर्य स्त्री समाजें बनावें।

३ आर्य समाज की सभी शिक्षा संस्थाओं में धर्म शिक्षा अनिवार्य हो।

४. प्रत्येक नगर की आर्य संस्थाएं अपने पर्व मिलकर उत्साह पूर्वक मनाए।

५. आर्य शिक्षा संस्थाओं के अध्यापक वर्ग को भी आर्य विचार धारा की योजना बनाई जावे ताकि वह विद्यार्थियों को धार्मिक शिक्षा दे सकें।

६. भठिण्डा मे आर्य समाज की कई शिक्षा संस्थाएं है, यहां से एक वार्षिक या अर्ध वार्षिक पत्रिका प्रकाशित की जाया करे जिसमें अध्यापक तथा विद्यार्थी अपने-अपने लेख तथा कविताएं प्रकाशित करें।

—

शोक प्रस्ताव

आर्य युवक सभा फिरोजपुर शहर के सदस्यों ने अपने साप्ताहिक सत्संग के बाद आर्य प्रादेशिक सभा के भजनोपदेशक श्री मदनमोहन जी के निधन पर शोक प्रकट किया। ईश्वर से प्रार्थना की गई कि उनकी आत्मा को शान्ति दे तथा उन के परिवारजनों को इस दुःख को सहन करने की सामर्थ्य प्रदान करे। उनके निधन से आर्य जगत् से एक उच्चकोटि का भजनोपदेशक सदा के लिए चला गया है।

दिनांक २८-६-८१ रविवार साप्ताहिक सत्संग के अवसर पर अलावलपुर आर्य समाज एव श्री दयानन्द धर्मार्थ आयुर्वैदिक औषधालय की सभा हुई जिसमें वयोवृद्ध कार्यकर्त्ता आजन्म ब्रह्मचारी परमपूज्य महाशय चन्द्रगुप्त जी आर्य सेवक के अचानक स्वर्गवास हो जाने पर गहरा शोक प्रकट किया गया उनके प्रति भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित की गई एवं परमपिता परमात्मा से दिवगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की गई। महाशय जी का सारा जीवन आर्य समाज एव औषधालय की सेवा मे समर्पित था।

सभा की निम्न योजनाओं के लिए
अधिक से अधिक धन भेजिए
पंजाब की आर्य समाजों से अपील

१. सभा के वेद प्रचार विभाग के लिए जो आर्य समाज का मुख्य कार्य है।

२. सभा के साहित्य प्रकाशन के लिए जो वर्तमान युग में प्रचारार्थ सबसे प्रभावशाली साधन है।

३. सभा के नये भवन के निर्माण के लिए।

४ सभा की ओर से बनाये जा रहे कादिया के लेखराम स्मरक, मोही के स्वतन्त्रानन्द स्मारक तथा तलवन के श्रद्धानन्द स्मारक के निर्माण के लिए।

५. प्रचारार्थ एक जीप खरीदने के लिए।

६, सभा की शिक्षा संस्थाओं के संचालन तथा संवर्धन के लिए।

-वीरेन्द्र, सभा प्रधान

—रामचन्द्र जावेद सभा मन्त्री

विभिन्न योजनाओं के अन्तर्गत अब तक प्राप्त दान की सूची

1. गोरक्षार्थ—

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना—११०० रुपये।

2. शहीद पं. लेखराम स्मारक कादियां—

१. गुप्त दान—५०० रुपये। २. श्री ओम्प्रकाश महेन्द्र, प्रधान आर्य समाज मोरिण्डा—१०० रुपये। ३. आर्य समाज सै० २२ चण्डीगढ़—११०० रुपये। ४. आर्य प्रतिनिधि सभा, आन्ध्र प्रदेश. हैदराबाद——५००० रुपये। ५ श्री द्वारिकानाथ गुप्ता (दिल्ली) की डिस्पैंसरी के लिए कमरा निर्माण तथा २५०० रुपये नकद।
३ श्री ओम्प्रकाश भाटिया (अटारी बाजार) जालन्धर—डिस्पैंसरी के लिए एक कमरा निर्माण।

3. वेद प्रचार निधि—

१. प्रधान, आर्य समाज भटिण्डा—११०० रुपये। २. महेन्द्र पाल वर्मा (मैनेजर यार्क होजरी) लुधियाना—११०० रुपये।

३, श्री जगन्नाथ जी चाणक्यपुरी नई दिल्ली—१०० रुपये।
४. मन्त्री आर्य समाज फील्ड गंज लुधियाना—५०० रुपये।
५. आर्य समाज अहमदगढ़ मण्डी—५०० रुपये।

4. स्वामी स्वतन्त्रतानन्द स्मारक, मोही—

१, श्रीमती यशवन्ती भल्ला—५१०० रुपये।
२ श्री हरिकृष्ण जी सेठी, सुलतानपुर लोधी—५०१ रुपये।
३. श्रीमती कमला आर्या लुधियाना—३३५ रुपये।

लुधियानाके निम्न महानुभावोंसे भी मोही औषधालयको मासिक सहयोग देते हैं।

२ श्री ओमप्रकाश जी लुधियाना २५ रुपये मासिक। ३ श्री अनन्तराम जी कोहली, लुधियाना १० रुपये। ४, श्रीमती विद्यावती आर्या १० रुपये। ५, श्रीमती विद्यावती बढा १० रुपये। ६ कुमारी वेद्वती ढढा १० रुपये। ७, स्त्री आर्य समाज सा० बा० १५ रुपये। ८. आर्य समाज माडल टाऊन १५ रुपये। ९. आर्य समाज जवाहर नगर १५ रुपये। १०. आर्य समाज फील्ड गंज १० रुपये। ११. कुमारी सत्या जी आर्या १० रु०। १२. श्री सतीश कुमार जी फील्ड गंज ५ रुपये।

आर्यसमाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर

आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द अमृतसर के तीसरी बार सर्वसम्मति से चुने गये प्रधान श्री प्रो० ओमप्रकाश जी वैद्य ने १९८१-८२ के लिए निम्नलिखित अधिकारियों के नाम की घोषणा की हैं।

सरक्षक—वैद्याचार्य बाबूरामजी शर्मा, उपप्रधान—श्री विशेशरनाथ जी सेठ, श्री देवदत्त जी मेहता, श्री श्यामलालजी मेजर सूबेदार, महामन्त्री—श्री सुभाषचन्द जी भाटिया, उपमन्त्री—श्री निहालचन्दजी श्री तीर्थराम जी शर्मा, कोषाध्यक्ष—श्री वीरेन्द्र कुमार देवगण, निरीक्षक—श्री ओमप्रकाश शर्मा पुस्तकाध्यक्ष, श्री द्वारकानाथजी विद्यालंकार।

—

गोबिन्दगढ़ जालन्धर

स्त्री आर्य समाज गोबिन्दगढ़ जालन्धर का वार्षिक चुनाव १० जून को निम्न प्रकार सम्पन्न हुआ—

प्रधाना—श्रीमती परमेश्वरी देवी, उपप्रधाना—श्रीमती लज्जावती भारद्वाज, श्रीमती गार्गीदेवी जी, मन्त्राणी—श्रीमती कृष्णा कोछड़, उपमन्त्राणी—श्रीमती सन्तोष धवन, प्रचार मन्त्राणी—श्रीमती आनन्दपुरी, लेखा निरीक्षक—श्रीमती सन्तोष वर्मा,

अन्तरंग सदस्याएं—श्रीमती ज्ञानदेवी जी, श्रीमती हरभजनकौर, श्रीमती कान्ता अरोड़ा, श्रीमती वेद सेठी, श्रीमती ज्ञानदेवी शर्मा।

—

स्त्री आर्य समाज पटियाला

स्त्री आर्य समाज पटियाला का वार्षिक चुनाव २० जून को सम्पन्न हुआ, जिसमें सर्वसम्मति से निम्न अधिकारी निर्वाचित किए गए—

प्रधाना—श्रीमती शारदादेवी, उपप्रधाना—श्रीमती कमलादेवी, श्रीमती चांद ग्रोवर, मन्त्राणी—श्रीमती शकुन्तला वीर एम० ए० बी० एड०, उपमन्त्राणी—श्रीमती लक्ष्मीदेवी, श्रीमती इन्द्रावती, कोषाध्यक्ष—श्रीमती सावित्री टण्डन, आय-व्यय लेखा निरीक्षका—श्रीमती उमा खोसला।

—

फिरोजपुर शहर

आर्य समाज रानी का तालाब फिरोजपुर शहर का वार्षिक निर्वाचन श्री साधुचन्द विनायक की अध्यक्षता में रविवार १४-६-८१ को प्रातः १० बजे निम्न प्रकार से हुआ—

प्रधान—श्री जगदीशचन्द्र जी आर्य, उपप्रधान—श्री मोहनलाल, मन्त्री—श्री कृष्ण कुमारजी, प्रचार मन्त्री—श्री विनोद कुमार जी, कोषाध्यक्ष—श्री वेद प्रकाश पुस्तकाध्यक्ष—श्री मनोहर लाल जी,

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

जवाहर नगर लुधियाना

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना का वार्षिक चुनाव २८-६-८१ को हुआ। निम्न पदाधिकारी सर्वसम्मति से निर्वाचित हुए—

प्रधान—श्री ओमप्रकाश महाजन, उपप्रधान—श्री बाबूराम, मन्त्री—श्री विजय सरीन, उपमन्त्री—श्री कृष्णलाल गुप्ता, प्रचार मन्त्री—श्री तिलोकचन्द, कोषाध्यक्ष—श्री सुभाषचन्द्र अरोड़ा, पुस्तकाध्यक्ष—श्री इन्द्रजीत गुप्ता, लेखा निरीक्षक—श्री यशपाल गुप्ता :

—

फिरोजपुर छावनी

आर्य समाज लुधियाना रोड फिरोजपुर छावनी ने सर्वसम्मति से श्री चमनप्रकाश नन्दा जी को अपना प्रधान इस वर्ष के लिए चुना और सर्वसम्मति द्वारा ही श्री चमन प्रकाश नन्दा जी को सब अधिकारी और अन्तरंग सदस्य अपनी इच्छा अनुसार चुनने का अधिकार दिया। उन्होंने नीचे लिखे सदस्य मनोनीत किए—

प्रधान—श्री चमन प्रकाश नन्दा, उपप्रधान—श्री द्वारकानाथ वर्मा, श्री रामचन्द्र आर्य, मन्त्री—श्री छज्जूराम आनन्द, उपमन्त्री—श्री किशोरचन्द, श्री धर्मपाल, कोषाध्यक्ष—श्री लालचन्द गुप्ता, पुस्तकाध्यक्ष—श्री सुभाष आनन्द, लेखा-निरीक्षक श्री पवन कुमार महाजन।

प्रो. स्वतन्त्र कुमार जी को पितृ शोक

प्रो० स्वतन्त्र कुमार जी मन्त्री आर्य समाज पठानकोट के पिता श्री शान्ति स्वरूप जी २५-६-८१ को निधन हो गया। यह समाचार सुनकर सभा कार्यालय के सभी कर्मचारियों को बड़ा दुःख हुआ। शोक एवं संवेदना प्रकट करते हुए दिवंगात्मा की सद्गति तथा श्री स्वतन्त्र कुमार जी को इस महान् दुःख को सहन करने की शक्ति देने के लिए परमात्मा से प्रार्थना की गई।

रायकोट

आर्य समाज रायकोट का वार्षिक चुनाव सम्पन्न हुआ जो इस प्रकार है—

प्रधान—श्री भीमसेन जी लोहे वाले, उपप्रधान—श्री प्रेमनाथ जी गुप्ता, मन्त्री—श्री सतीश कुमार कौड़ा, उपमन्त्री—श्री रजिन्द्र कौड़ा, कोषाध्यक्ष—श्री रूपचन्दजी गुप्ता, सहकोषाध्यक्ष—श्री राजिन्द्र कौड़ा, सदस्य—श्री जयप्रकाश जी, श्री रामसरूप जी, श्री सतपाल जी, श्री साधूराम जी, श्री राजपाल जी, श्री धर्मप्रकाश सब्बर।

—

यमुना बिहार नई दिल्ली

आर्य समाज यमुना बिहार की सदर्थ समिति का वर्ष ८१ का निर्वाचन निम्न प्रकार हुआ—

संरक्षक—श्री किशन आर्य, प्रधान—श्री ललिता प्रसाद, मन्त्री—श्री वेदप्रकाश वर्मा, उपमन्त्री—श्री वीरेश बंसल, कोषाध्यक्ष—श्री चेतनसिंह वर्मा, प्रचार मन्त्री—श्री कमल किशोर आर्य।

—

धनेटा जि. हमीरपुर (हि. प्र.) में आर्य समाज की पुन: स्थापना

धनेटा जि० हमीरपुर का एक प्रसिद्ध स्थान है। पुराने आर्य समाजियों का गढ़ है। चिरकाल से आर्य समाज का गढ़ है। चिरकाल से आर्य समाज का प्रचार शिथिल पड़ा हुआ था। ठाकुर प्रेमसिंह जी यू० पू० सैक्टरी वाली गौर्द की प्रेरणा से तथा वहां के स्थानीय पुराने आर्य बन्धुओं के सहयोग से आर्य समाज की पुनः स्थापना करके निम्नलिखित प्रकार से चुनाव हुआ—

प्रधान—श्री जगन्नाथ जी, उपप्रधान—श्री मथुरादास जी, श्री रामप्रकाश जी, मन्त्री—श्री विज बी० एस० सी०, प्रचार-मन्त्री—श्री प्रेमसिंह जी, पं० विद्या भूषण जी और स्वामी ओमानन्द के उपदेश हुए।

—गोविन्दराम आर्य

देवनगर नई दिल्ली

आर्य समाज देवनगर नई दिल्ली का वार्षिक निर्वाचन २१-६-८१ रविवार को श्री विमलचन्द्र जी विमलेश, उपमंत्री सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की अध्यक्षता में निम्न प्रकार से सपन्न हुआ—

प्रधान—श्री जय गोपाल जी वैदी, उपप्रधान—श्री डा० बी० देव जी, प० राम प्रसाद जी. मन्त्री—श्री महावीर जी उपमन्त्री—श्री राकेश जी वैदी, श्री यशपाल जी आर्य कोषाध्यक्ष—श्री हरिपाल जी, पुस्तकाध्यक्ष—श्री लालचन्द,

अन्तरंग सदस्य

श्री अमरनाथ जी शास्त्री, श्री ब्रजनन्दन प्रकाश जी, श्री रमेशचन्द्रजी, श्री योगेन्द्रकुमार जी, श्री ताराचन्द जी, श्री कृष्णलाल जी मदान।

—

गऊशाला रोड़ फगवाड़ा

आर्य समाज गऊशाला रोड फगवाड़ा का वार्षिक चुनाव रविवार २८-६-८१ को आर्य माडल हाई स्कूल में प्रो० सत्यदेव जी सरल की अध्यक्षता में सर्वसम्मति से सपन्न हुआ—

प्रधान—मा० हरिराम जी चोपड़ा, उपप्रधान—श्री अमरनाथ सोनी, श्री सत्यदेव सरल, श्री जगदीशचन्द सोंधी, मन्त्री—श्री अमृतलाल गुलाटी, उपमन्त्री—श्री जगन्नाथ सहगल, श्री करतीराम गुप्ता, प्रचार मन्त्री—श्री गौतमदेव मल्ला, कोषाध्यक्ष—श्री बालकृष्ण सब्बरवाल, लेखा निरीक्षक—श्री पृथ्वीराज ग्रोवर, अन्तरंग सदस्य—श्री मनोहरलाल चोपड़ा श्री केवलकृष्ण, श्री बलबीरचन्द बरसाली, श्री मित्रपाल कोली, श्री सुभाषचन्द्र एम० ए०, श्री चोखाराम बजाज, श्री बलराज कपूर एडवोकेट, श्री मुकेश कुमार कोहरी, श्री प्रकाशचन्द नारंग, श्री मदनमोहन नारंग, श्री प्रो० कैलाशनाथ भारद्वाज, श्री बलराज खोसला, श्री हरिमित्र छिब्बा, श्री सोमदेव शर्मा, श्री वीरबल पाहवा, श्री बालकृष्ण तिवारी, श्री सुशील कोहली

—

आर्य प्र. नि. सभा पंजाब द्वारा प्रकाशित तथा प्रसारित साहित्य की पुस्तकें

१	सत्यार्थप्रकाश हिन्दी,	४—५०
२	सत्यार्थ प्रकाश (उर्दू)	१०—००
३	„ अंग्रेजी	२०—००
४	आर्य समाज—अतीत की उपलब्धियां तथा भविष्य के प्रश्न —ले०—डा० भवानीलाल भारतीय	१०—००
५	पंजाब का आर्य समाज ले०—प्रि० रामचन्द्र जावेद	४—००
६	लिजिस्लेशन फराम सत्यार्थ प्रकाश (अंग्रेजी) —ले० डी० एन० वासुदेव जी	३ ००
७	स्वामी श्रद्धानन्द (अंग्रेजी) —ले० श्री के० एन० कपूर जी	५—००
८	स्वामी श्रद्धानन्द उपदेश माला	०—२५
९	पोलीटीकल टैस्टामैंट आफ स्वामी श्रद्धानन्द	०—२५
१०	जन्म साखी (ले० शास्त्री पिण्डीदास जी)	२—००
११	सिक्ख गुरु अते आर्य सिद्धान्त (पंजाबी) —ले० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी सरस्वती	२—५०
१२	आर्य समाज दा दिग्दर्शन (पंजाबी) — ले० आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद)	२—००
१३	वेद और उनका प्रादुर्भाव — म० महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज	५०—०० सैंकड़ा
१४	श्रद्धेय स्वामी श्रद्धानन्द और उनका दिव्य सन्देश	०—२५
१५	भागवत खण्डनम् —ले० स्वामी दयानन्द जी सरस्वती	०—५०
१६	नीहारिकावाद और उपनिषद् (ले०—पं० चमूपति)	००—२५
१७	वीतराग स्वामी स्वतन्त्रतानन्द —ले० श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु	१—००
१८	हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी — ले० शास्त्री पिण्डी दास जी	० २५
१९	प्रिंसीपल आफ आर्य समाज अंग्रेजी — ले० श्री पूर्णचन्द जी एडवोकेट	२—००
२०	मृत्यु और परलोक —ले० महात्मा नारायण स्वामी जी	२—५०
२१	संस्कार विधि —ले० स्वामी दयानन्द जी सरस्वती	४—५०
२२	मेरे सपनों का भारत, —ले० श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री	०—५०
२३	आर्य पर्व पद्धति —ले० श्री पं० भवानी प्रसाद	५—००
२४	पूजा किस की —ले० श्री राम गोपाल शालवाले	०—२५
२५	आर्य समाज	०—३०
२६	सत्य की मंजिल सेवा की राह —ले० आर्यी राम जोशी	१०—००
२७	बाल सत्यार्थ प्रकाश ले० प्रोफेसर विश्वनाथ विद्यालंकार वेदोपाध्याय गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार	३—००
२८	धर्मस्वातन्त्र्य विधेयक क्यों ? ले० रघुनाथ प्रसाद पाठक	१—००
२९	माण्डूक्योपनिषद् —टीका म० नारायण स्वामी	० ३५
३०	प्रभु भक्ति स्तोत्र —ले० लोकनाथ जी वाचस्पति	०—४०
३१	धर्मवीर पं० लेखराम —ले० स्वामी स्वतन्त्रानन्द	०—४०

आर्य मर्यादा के विशेषांक

१	मेरी आत्मकथा के कुछ पृष्ठ —ले० आचार्य रामदेव जी	१—००
२	स्वतन्त्रानन्द सस्मरणांक	१—५०
३	वेद में पुनरुक्ति दोष नहीं	२—५०
४	यजुर्वेदाध्याय का १२ वां स्वाध्याय	१—००
५	अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी	१—५०

नोट —ओ३म के झण्डे हवन कुण्ड तथा ओ३म के बैज भी उपलब्ध हैं।

प्राप्तिस्थान

व्यवस्थापक—चमूपति साहित्य प्रकाशन विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर—४

हिमाचल प्रदेश हिन्दू सम्मेलन की मांग

भारत सरकार तुष्टिकरण की नीति छोड़े

शिमला—भारत में बढ़ती हुई साम्प्रदायिक शक्तियों की गतिविधियों पर चिन्ता प्रकट करते हुए हिमाचल प्रदेशीय हिन्दू रक्षा सम्मेलन ने भारत सरकार से मांग की है कि वह देश के विभिन्न भागों में ऊभरती देशद्रोही शक्तियों के विरुद्ध प्रभावपूर्ण पग उठाए।

सम्मेलन में यह भी मांग की गई कि देश के सभी नागरिकों के लिए समान विधि नियम व आचार संहिता बनायी जाए।

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के अध्यक्ष महात्मा वेद भिक्षु जी ने शासन को चेतावनी देते हुए कहा कि यदि हिन्दुओं के साथ उपेक्षा का और मुसलमान व ईसाईयों के साथ पक्षपात का व्यवहार किया गया तो उसे सहन नहीं किया जाएगा। आपने कहा कि दक्षिण में हो रहे धर्मान्तरण को हिन्दू जनता रोकने के लिए प्रत्येक पग उठाएगी।

हिमाचल प्रदेश में विदेशी पादरियों की गतिविधियां रोकने के लिए समितियों का गठन कर दिया गया है। हिमाचल प्रदेशीय हिन्दू रक्षा समिति की स्थापना की घोषणा की गई। जिस के संयोजक डा० कैलाश मन्त्री श्री चमन लाल व कोषाध्यक्ष श्री कुन्दन लाल निर्वाचित हुए।

सम्मेलन की अध्यक्षता डा० कृपाराम जी ने की विभिन्न स्थानों से आए प्रतिनिधियों ने अपने विचार प्रकट किए। डा० महावीर भी बैठक में उपस्थित थे।

निम्न प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुए—

१ हिमाचल क्षत्रीय हिन्दू रक्षा सम्मेलन जमशेदपुर मुरादाबाद अलीगढ़ हैदराबाद व त्रिपुरा में हिन्दू धर्म की रक्षा के लिए शहीद होने वाले वीरों का हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

२ यह सम्मेलन भारत सरकार से मांग करता है कि देश के विभिन्न स्थानों पर बन रहे। १२ मुस्लिम शिक्षा केन्द्रों को अविलम्ब रोका जाए।

३ यह सम्मेलन दक्षिण में बड़ी संख्या में हिन्दुओं के सामूहिक धर्मान्तरण पर गम्भीर चिन्ता प्रकट करते हुए भारत सरकार से इस विषय में अविलम्ब कठोर पग उठाने की प्रार्थना करता है।

—

आर्य जगत के समाचार

प्रचार की धूम

देहरादून वदिक धम प्रचार प्रसाराथ आय समाज द्वारा स्थापित वदिक म सग समिति देहरादून की ओर म विगत एक वष से पारिवारिक स सगो एव स्थान २ पर वद प्रचार के आयोजको द्वारा अपूव उत्साह से प्रचार किया जा रहा है। स्थानीय दून चिकित्सालय के प्रागण मे यज्ञ एव वेदोपदेश भारतीय जीवन बीमा निगम के नवनिर्मित भव्य भवन का यज्ञ एव वेद प्रवचन द्वारा शभारम्भ एक विधव बहन के यहा यज्ञ एव उनको आर्थिक सहायता मतको के वदिक रीत्यनुसार अन्त्येष्टि कम आय समाज मे प्रा त आर्थिक सहायता से आय समाज मदिर मे योग शिविर एव रात्रिकालीन प्रवचन आदि आयोजन मख्य थे। हरिजन ब स्तयो एव उनके परिवारों मे भी अनेक प्रचार आयोजन अपूव सफलता से सप न किए गए। इसी प्रकार प्रचार काय बराबर जारी है। आर्य जगत के स्वामी जगदीश्वरान द जी स्वामी सुबुद्धानन्दजी वैद्य सुदशन जी प० सत्यव्रत जी प० भगवानदेव वेदालकार जी श्री यशपाल आय जी एव श्रीदेवदत्त पत्रकार आदि आय विद्वानो का समिति को सहयोग प्राप्त रहा।

सत्यार्थप्रकाश परीक्षाए

आय युवक परिषद दिल्ली द्वारा सचालित सत्याथ प्रकाश परीक्षाए इस वष २७ सितम्बर को सारे देश मे २०० से ऊपर परीक्षा के द्रो मे सम्प न होगी। इस वष सभी प रितोषिक दुगन कर दिए गए हैं। मुसलमानो ईसाईयो तथा पिछड वग के परीक्षा देने वालो के लिए भी विशेष पारितोषिक रखे हैं। इस सत्याथ प्रकाश शताब्दी वष मे अधिक से अधिक परीक्षार्थी बिठायें तथा नये केन्द्र स्थापित करें। परीक्षा सम्ब धी सभी प्रकार की जानकारी के लिए श्री चमनलाल जी एम ए ६४ अशोक विहार दिल्ली ५२ से पत्र व्यवहार कर।

—देवव्रत धर्मेन्द —ओमप्रकाश
आर्योपदेशक प्रधान एम एम सी मत्री

धर्मान्तरित भाईयो को वापिस लेंगे

शुद्धि चक्र मे तेजी लाओ अ भा शुद्धि सभा का आह वान

नई दिल्ली—अखिल भारतीय हिन्दू शुद्धि सभा के तत्वावधान मे दिल्ली की प्रमुख आय सस्थाओ एव आय हिन्दुजनो की एक विशेष बठक शुक्रवार २६ जन १९८१ को सायकाल ६ बजे आय समाज मन्दिर हनुमान रोड नई दिल्ली मे प्रो० रामसिह जी की अध्यक्षता मे हुई।

दक्षिण भा त में हुए हरिजनो के धम परिवतन एव मुरादाबाद अलीगढ मे छिड़ी हुई साम्प्रदायिक परिस्थिति के मूल मे अरब राष्ट्रो से आने वाली धन राशि के भीषण खतरे पर कार्यकर्ताओ ने अपने विचार प्रकट किए और निश्चय किया गया कि प्रत्येक कायकर्ता इस सम्बन्ध मे सावधान और सन्नद्ध रहे। प्रत्येक हिन्दू आय सस्था एव कायकर्ता को प्रयत्न करना चाहिए कि हमारे धर्मान्तरित हरिजन तथा दूसरे लोगो को पुन हिन्दू बनाया जाए और दूसरे धर्मावलम्बी पुरान पिछड लोगों स निरन्तर सम्पर्क कर उन्हे भी हिन्दू धम की अच्छाईयो और विशेषताओ का परिचय देकर फिर से अपने साथ लाया जाए।

उत्सव सम्पन्न

आय समाज बस्तासिह वाला का वार्षिक उत्सव सफलता के साथ सम्पन्न हुआ सभा की ओर से श्री विजय कुमार जी महोपदेशक श्री मनोहरलाल जी पुरोहित श्री रामचन्द्र जी शास्त्री श्री हजारीलाल जी तथा श्री साईदास जी तबला वादक ने भाग लिया। उत्सव हर प्रकार से सफल रहा।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वर्ष 14—अंक 18 4 श्रावण सम्वत् 2038 तदनुसार 19 जुलाई 1981 दयानन्दाब्द 156। एक प्रति 35 पैसे (वार्षिक शुल्क 15 रुपए)

इस्लामिक व ईसाई मिशनरियो के धर्मान्तरण गतिविधियो के जवाब मे

धर्मरक्षा महाभियान' चलाने के लिए व्यापक तैयारियां

महाभियान को चलाने के लिए समितियां गठित की गई

जालन्धर—(विशेष प्रतिनिधि द्वारा)—सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा के निर्देश पर देश भर मे 26 जुलाई से शुरू किए जा रहे धर्म रक्षा महाभियान के दृष्टिगत पंजाब की आय समाजो मे जोरों से व्यापक स्तर पर तैयारिया शुरू हो गई है। इस्लामिक व ईसाई संस्थाओं द्वारा विदेशी धन के बल पर हिन्दु हरिजनो के धर्म परिवर्तन के राष्ट विरोधी कुकृत्यो का मुंह तोड़ जवाब देने के लिए समूचा आर्य जगत् कटिबद्ध हो गया है।

आर्यजन न चेते तो मिट जाएंगे—श्री वीरेंद्र

विभिन्न स्थानो से प्राप्त रिपोर्टों के आधार पर कहा जा सकता है कि आर्य समाज अपनी वर्षों पुरानी शिथिलता को छोड़कर अपने तेजस्वी आन्दोलनकारी व प्रचण्ड स्वरूप को धारण कर चुकी है।

आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र की अध्यक्षता में गत दिवस [illegible] आर्यसमाज बस्ती गुजा में जालन्धर की सभी आर्यसमाजो की एक बैठक में धर्मरक्षा महाभियान को चलाने के लिए एक 11 सदस्यीय समिति भी गठित की गई है ताकि इस आन्दोलन को अधिक [illegible] सुनियोजित और [illegible] ढंग से चलाया जा सके।

बैठक को सम्बोधित करते हुए श्री वीरेन्द्र जी ने आर्यों को इस महाभियान के [illegible] से अवगत कराते हुए कहा कि यह हमारे लिए जीवन-मरण का प्रश्न बन गया है। [illegible] यदि हम [illegible] ईसाई मिशनरियों और मुसलमान [illegible] के हरिजन [illegible] और [illegible] हिन्दू [illegible] अल्पसंख्यक हो जाएंगे।

सवयक होकर रह जाएंगे।



उन्होंने चेतावनी दी कि हमारे धर्म और देश के विरुद्ध अन्तर्राष्ट्रीय षड्यन्त्र रचाए जा रहे हैं जिन्हें तन मन धन सब कुछ लगाकर हम किसी भी स्थिति में सफल नहीं होने देंगे।

श्री वीरेन्द्र ने आर्यों का आह्वान किया कि सार्वदेशिक सभा के निर्देश पर 26 जुलाई से व्यापक स्तर पर हरिजन स्नेह मिलन सम्मिलन व अन्य गतिविधियो को पूरी शक्ति के साथ सफल बनाए। हरिजनो को आर्यसमाज मे दीक्षित कर उनमे सदियो से घर किए बैठी आत्महीनता की भावना को धो डाले।

बैठक को श्री वीरेन्द्र के अतिरिक्त श्री सरदारी लाल आर्यरत्न श्री बालमुकुन्द श्री वेद प्रकाश (प्रधान आर्यसमाज बस्ती गुजा) श्री अमृत लाल बजाज एडवोकेट श्री नौहरिया राम श्री रामलभाया नन्दा और श्री लालचन्द ने सम्बोधित किया और उन्होंने सभा प्रधान को इस अभियान को पूरी शक्ति के साथ अधिक से अधिक सफल बनाने का विश्वास दिलाया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधियो ने केवल थोड़े समय में ही धर्म रक्षा महाभियान के लिए भारी धन राशि दान में दी।

बैठक मे यह भी निर्णय लिया गया कि जालन्धर मे महाभियान चलाने के लिए गठित 11 सदस्यीय समिति के श्री सरदारी लाल जी अध्यक्ष होंगे तथा 19 20 जुलाई को आर्य समाज ऋषि कुंज पक्का बाग मे समिति की आगामी महत्वपूर्ण बैठक होगी जिस मे जालन्धर की सभी आर्य समाजो के प्रतिनिधि भाग लेंगे।

इसी प्रकार की तैयारिया पंजाब में जोरो से शुरू हो गई हैं। सभा की ओर से सम्बद्ध सभी आर्य समाजो को इस सम्बन्ध मे एक परिपत्र भेज दिया गया है ताकि महाभियान को पूरे आन्दोलन का रूप दिया जा सके।

अमृतसर से प्राप्त समाचार के अनुसार सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाला राम गोपाल जी शालवाले की अध्यक्षता मे वहा भी इस सम्बन्ध मे महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए और महाभियान को पूरी शक्ति से चलाने के लिए योजनाएं बनाई गई।

'सरिता' का उलटा प्रवाह

'सरिता पत्रिका अपने हिन्दू धर्म विरोधी दृष्टिकोण के लिए प्रसिद्ध है। अप्रैल १९८१ के अंक मे उसमे दहेज की प्रथा को लेकर हिन्दू धर्म शास्त्रो को वेद से लेकर स्मृति ग्रन्थो तक सबका बुरा-भला कहा है इसके लेखक श्री सुरेन्द्र शर्मा हैं इसमे सन्देह नही कि लेखक ने प्रासंगिक उद्धरण ढूढने के लिए अच्छा परिश्रम किया है इसमे उनकी विद्वता तो प्रकट होती है पर यदि मूल भावना ठीक न हो तो विद्वता अधिक विनाशक हो जाती है।

पहले भावना पर ही विचार करें। 'सरिता के इसी अंक में हुसन जमाल नामक किसी मुसलमान सज्जन ने मुस्लिम समाज के विषय मे भी एक लेख लिखा हैं। इसमें इस समाज की अच्छी कडवी आलोचना की गई है। सम्भवत 'सरिता के सपादक को इस बात का अभिमान होगा कि उन्ही अनेको वर्ष केवल हिन्दू धर्म के अनेक रूपो और हिन्दू शास्त्रो का कोसने के बाद मुस्लिम समाज का भी एक आलोचक मिल गया।

पर श्री सुरेन्द्र शर्मा और हुसन जमाल मे एक प्रत्यक्ष भेद है। श्री हुसन जमाल ने कहीं भी कुरान शरीफ की शिक्षाओ की आलोचना और निन्दा नहीं की। उन्होंने उन पर आचरण न करने के लिए मुस्लिम-समाज को बुरा भला कहा है। उधर श्री सुरेन्द्र शर्मा ने दहेज के वर्तमान भयकर रूप के लिए वेद से लेकर सब स्मृति ग्रन्थ इत्यादि साहित्य को जिम्मेवार ठहराया है। तथा त्याज्य किया है।

हिन्दू सिक्ख] तथा मुसलमान इनके चिन्तन मे यह मौलिक भेद है-सम्भवत इनके मानसिक विकास मे अन्तर है। कोई सिक्ख या मुसलमान कितना भी प्रगतिशील क्यों न कहलाना चाहे अपने धर्म ग्रन्थो पैगम्बरो तथा गुरुओ के विरुद्ध कुछ न कहेगा। अपनी समाज की बुराईयो की आलोचना वह अवश्य कर सकता है। पर अनेक हिन्दू ऐसे भी होंगे जो दस पैसे के लालच मे अपने धर्म शास्त्रो को गालिया दे सके। यदि धर्म शास्त्रों और ऋषि मुनियों को गाली देने वाला कोई ब्राह्मण हो तो तथाकथित प्रगतिवादियों की दृष्टि मे उसका मूल्य बहुत बढ जाता है।

अब प्रकृति विषय पर आया जाए। इससे भी श्री सुरेन्द्र शर्मा ने ऋषि दयानन्द के विषय में जो लिखा है उस पर विचार किया जाए। विवाह में गोदान प्रसग के सत्कार विधि के निम्न मन्त्र है

इस वाक्य से विनयो करके अपनी शक्ति के योग्य वर की भाग्यवादि द्रव्य जो कि वर के योग्य हों, अर्पण करे।

श्री भीमसेन शर्मा द्वारा कहा यह टिप्पणी है— यथा शक्त्यालङ्कृत्य कन्या ... तोपस्काय माहितामिर्या कन्या पत्नीत्वेन तुभ्यमह सम्प्रदके

इस स्थल को श्री सुरेन्द्र शर्मा ने भयकर दहेज प्रथा का संकेत माना है। यहा विचारणीय यह है—

१ यहा केवल यह लिखा है कि कन्या का पिता अपनी शक्ति के अनुसार वर को योग्य पदार्थ दे।

२ कन्या को वस्त्र भूषण से अलकृत करके किया जाए।

३ श्री सुरेन्द्र शर्मा ने बडी चतुरता से आने जाने वाले उन सब मन्त्र भागो— जरा गच्छ परिधत्स्व वास तास्त्वा देवी जरिसे संव्ययस्व 'ममेय सस्तुयेस्या — जिनके द्वारा वर कन्या को वस्त्रादि देता है और प्रतिज्ञा करता है कि मैं ही तेरा पालन पोषण करूगा—की उपेक्षा कर दी है।

उन्होने उस सारे भाग की भी उपेक्षा कर दी है जहा वर कहता है कि अब तेरे अङ्ग तथा स्वभाव आदि मे किसी दोष पर मुझे आलोचना करने का अधिकार नही है क्योकि मैंने तुझे सोच समझकर परख-कर स्वीकार किया है।

४ इस सारे प्रसग मे जो बात खूब स्पष्ट और युक्ति सगत है उसे भुला दिया गया। उस समय पिता की सम्पत्ति मे कन्या का कोई भाग नही होता था। विवाह के समय ही जब वह सदा के लिए अलग हो रही है—पिता का यह धार्मिक और स्वाभाविक कर्त्तव्य होता था कि वह वस्त्र भूषण रूप में कन्या को कुछ दे।

क्या पिता की सम्पन्नता में कन्या का कोई भाग नहीं उसे तीन कपडों में ही घर से निकाल दिया जाए।

५ सप्तपदी प्रसग मे जहां वर और कन्या सात कदम साथ चलते हुए 'धन-धान्योवाय इस शब्द का प्रयोग करते है — जिसका अभिप्राय यह है कि हमारा धन-धन धान्य की वृद्धि करेगा वहां भी श्री सुरेन्द्र शर्मा यह अर्थ निकालते हैं कि कन्या का पिता मुझे धन धान्य देगा। यह कुभावना का ही प्रतीक है। यहा तो अन्न बल, सन्तान उत्तम ऋतुए मैत्री सुख और धन धान्य इन सात वस्तुओ की अभिलाषा प्रकट की गई है—क्या बाकी छ वस्तुए भी कन्या का पिता ही देगा।

६ विवाह के समय कन्या को कुछ देना केवल भारत में ही नहीं सब देशो में भिन्न-भिन्न रूपों में है। इग्लैंड के बादशाह को बम्बई का प्रदेश दहेज मे ही मिला था। क्या उसका आधार भी मनुस्मृति और हिन्दू शास्त्र ही थे।

२ श्री सुरेन्द्र शर्मा ने मनुस्मृति तथा शास्त्रो मे विवाह के पूर्ण प्रसग पर विचार न कर केवल उन स्थलो का लिया है जहा छिद्रान्वेषण सम्भव था। ऋषि दयानन्द ने मनुस्मृति तथा वेदादि के आधार पर विवाह के सम्बन्ध मे जो विवेचन किया है वह तो दहेज आदि कुप्रथाओ का भयकर विरोधी है—समर्थक नही। विवाह के आठ रूपो मे ब्राह्म दैव आर्ष प्राजापत्य इन चार रूपों को उत्कृष्ट माना गया है, ऐसा लिखा है कि इन्हीं के द्वारा कुछ देने का कहीं उल्लेख ही नहीं। आर्ष विवाह में तो उलटा वर पक्ष गाय आदि को देता है।

'आसुर विवाह मे ही वर पर कन्या द्वारा परस्पर कुछ लेना देना लिखा है। शेष तीन विवाह गांधर्व आसुर और पैशाच तो निन्दनीय है पर इन भी दहेज आदि का कोई सम्बन्ध नहीं।

आजकल की भयंकर और नीचता पूर्ण दहेज प्रथा का मूल प्राचीन शास्त्रों में ढूढ कर उनकी निन्दा करना और उन्हीं त्याज्य बतलाना केवल हिन्दुओं में ही प्रचलित एक विचित्र प्रवृत्ति है जिसका मूल अर्थ कोलुपता है सुधार भावना नहीं।

हिन्दू समाज के अन्दर जो एक ही है पर दहेज प्रथा के रूप तो भिन्न २ प्रान्तों में अलग-२ हैं। गुजरात में दहेज का रूप अनोखा हुआ कुछ है, पंजाब और उत्तर प्रदेश की कुछ जातियों में बहुत अधिक बगाल में बढकर उधर क्षत्रियो की शामिल बिरादरी में बहुत अधिक विकृत है।

इसे एक सर्वंव्यापक सर्व प्रकार समाज की बुराई समझ कर प्रचार अथवा शासन के द्वारा नष्ट करने का प्रयास चाहिए। सर्व में सहस्रों वर्ष पुराने शास्त्रों को टाग खीचने का कुछ लाभ नहीं।

यदि ऐसा करने से कुछ सज्जनों को कुछ धन लाभ होता हो और कुछ पत्रिकाओ का प्रकाशन बढता हो तो उन्हें तो ब्रह्मा भी नहीं रोक सकता। कभी कहा जाता था राजा का सत्य कारणाम् मत समझनु चाहिए—'अर्थ कालस्य कारणाम

—

श्री सुरेन्द्र शर्मा ने मनुस्मृति तथा शास्त्रों मे विवाह के विवाह पूर्ण प्रसग पर विचार न कर केवल उन स्थलो को लिया है जहा छिद्रान्वेषण सम्भव था। ऋषि दयानन्द ने मनुस्मृति तथा वेदादि के आधार पर विवाह के सम्बन्ध मे जो विवेचन किया है यह तो दहेज आदि कुप्रथाओं का भयकर विरोधी है—समर्थक नहीं।

गु.कु. करतारपुर को सात्विक दान

गत दिनो अमृतसर के प्रसिद्ध उद्योगपति श्री सी डी गुप्ता के घर १८ जून से २८ जून तक यजुर्वेद पारायण यज्ञ ब्रह्मा श्री नरेश कुमार शास्त्री व्याकरणाचार्य प्राचार्य श्री गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर की अध्यक्षता मे सम्पन्न हुआ अमृतसर की विभिन्न आर्य समाजों के पुरोहितों के अतिरिक्त गुरुकुल करतारपुर के छोटे छोटे ब्रह्मचारियो के मधुर वेदपाठ ने अमृतसर में एक नया कीर्तिमान स्थापित कर दिया। प्रातःकाल तथा सायकाल दोनों समय यज्ञ मे अत्यन्त श्रद्धा से गुप्ता परिवार के अतिरिक्त शहर के अन्य व्यक्तियो ने भी बडी निष्ठापूर्वक सम्मिलित होकर योगदान दिया।

यज्ञ मे सभी वेदपाठियों ब्रह्मा तथा प्रवक्ताओं को भरपूर दक्षिणा के अतिरिक्त आप श्री ने गुरुकुल करतारपुर की आवश्यकताओं को जानते हुए अपने परिवार की ओर से लगभग ३० हजार रुपए की अमराई ... यज्ञ के पश्चात् दान कर एक कमरा बनवाने का आश्वासन दिया।

श्री सी० डी० गुप्ता तथा उनकी माता श्रीमती ... जी पूर्व में भी विद्यालय को ५०-६० रुपए प्रतिमास दान देते हैं।

धन्यवाद सहित

मुख्याधिष्ठाता आचार्य विद्यालय ...

गुरुकुल करतारपुर

वैदिक गृहस्थ दर्शन :
पुस्तक समीक्षा

यह पुस्तक महर्षि स्वामी दयानन्द जी की सुविख्यात पुस्तक संस्कार विधि के विवाह संस्कार के अन्त में लिखे गृहाश्रम प्रकरण का ही अनुवाद है—जिसमें आर्य गृहस्थों के कर्तव्यो को विस्तार से लिखा गया है यह प्रकरण ऐसे स्थान पर स्थित है जहां साधारण गृहस्थो की दृष्टि नहीं पहुंच सकी।

इस प्रकरण में श्री स्वामी जी ने आर्य गृहस्थों के लिए वेद शास्त्रो तथा अन्य आर्ष ग्रन्थों के अनेक उपयोगी मन्त्रों तथा श्लोकों को लिखकर गृहस्थाश्रम की महानता और आर्य गृहस्थों के गृहस्थ सम्बन्धित कर्तव्यो को विस्तार से लिखा है।

वैदिक गृहस्थ दर्शन पुस्तक में निम्न विषय प्रस्तुत हैं—

१ विवाह संस्कार के समय वर और वधू की की गई प्रतिज्ञाओं के मन्त्र तथा उनके अर्थ—

२ सप्त पदि के मन्त्र तथा उनका विस्तार पूर्वक अर्थ—

३ गृहस्थ सबंधी आवश्यक और उपयोगी वेद मन्त्रों तथा आर्ष ग्रन्थो के श्लोकों की उपयुक्त व्याख्या के द्वारा आर्य गृहस्थों के कर्तव्यों और उनके सद्व्यवहारों को विस्तार से लिखा गया है—

४ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र चारों वर्णों के लक्षणो तथा कर्तव्यों को विस्तार से लिखा गया है—

५ राज्य कार्यों तथा सामूहिक सामाजिक कार्यों के संचालन के लिए तीन सभाओं का निर्माण तथा उनके विवेचन—

६ मनुस्मृति के प्रतिपादित धर्म के दस लक्षणों की विस्तार पूर्वक व्याख्या तथा धर्मानुष्ठान का विशुद्ध रूप—

७ आर्य गृहस्थो के लिए महर्षि जी की प्रतिपादित दिनचर्या—

८ आर्य गृहस्थों के लिए महर्षि स्वामी दयानन्द जी सरस्वती की अत्यन्त उपयोगी प्राणायाम विधि और उसके लाभ तथा पंच महायज्ञो की विधि और उनकी अनिवार्यता—

९ शाला कर्म विधि अर्थात् भवन निर्माण विधि को अथर्ववेद के आधार पर लिखी गई है—

१० मानव जीवन के सभी महत्व पूर्ण क्षेत्रों का अत्यन्त उपयोगी तथा हितकर मार्ग दर्शन वेद और सत शास्त्रों के आधार पर किया गया है—

टिप्पणी—जो सज्जन उक्त पुस्तक को उपहार के रूप में लेना चाहें वह पोस्ट कार्ड पर अपना डाक का पता भेज कर विभिन्न स्थानो से पुस्तक मगवा सकते हैं।

व्यवस्थापक
सरस्वती साहित्य सेवा सदन ३८
गुरचरण पार्क लुधियाना

हरिद्वार में शानदार शोभायात्रा

पारिवारिक वैदिक सत्संग मंडल जम्मू के तत्वावधान में सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी यात्रा की एक टोली २२ ६ ८१ को प्रात आर्य समाज मन्दिर हरिद्वार में दो बसों द्वारा पहुंची। साथ एक सत्यार्थ प्रकाश की पुस्तकों से भरी गाड़ी भी थी।

मध्याह्नत्तर चार बजे पंचपुरी की सभी आर्य समाजो के सदस्य आर्य समाज मन्दिर हरिद्वार इकट्ठे हुए और स्वागत समारोह तथा जलपान का आयोजन किया गया।

ठीक पांच बजे बैंड बाजे के साथ शोभायात्रा आर्य समाज मन्दिर से आरम्भ हुई, जिसकी प्रथम पंक्ति में आर्य सन्यासी, उनके ठीक पीछे वानप्रस्थी और तदनन्तर सभी आर्य संस्थाएं अपने-अपने झण्डों के साथ चल रही थी। शोभायात्रा बड़ी धूमधाम पूर्वक हरिद्वार के अपर के बाजार से होती हुई हर की पौड़ी पर [illegible] घाट पहुंची। [illegible] की ठण्डे मीठे पानी की व्यवस्था थी।

६ से ७ ३० बजे तक सुभाष घाट पर माता भीष्मवति जी की अध्यक्षता मे सत्संग हुआ जिसमे यज्ञ भजन कविता तथा प्रवचन आदि हुए। जम्मू से आए पं० विद्या भानु जी शास्त्री का प्रवचन प्रभावशाली था।

२३ जून १९८१ का प्रात ६ ३० बजे यह टोली बाबा वानप्रस्थाश्रम ज्वाला पुर की यज्ञशाला में यज्ञ में सम्मिलित हुई तदनन्तर जम्मू से आए विशिष्ट अतिथियों का माल्यार्पण द्वारा आश्रम के अधिकारियों ने स्वागत किया और अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश पर विद्वानो के भाषण हुए। ९ बजे सत्संग समाप्त हुआ। सत्संग के पश्चात् आश्रम की ओर से अतिथियों के लिए प्रातराश की व्यवस्था की गई, महात्मा हरप्रकाश संस्कृत विद्यालय में पार्टी की ओर से २०१ रुपये आश्रम को दान प्राप्त हुआ।

ध्यान दीजिए

वर्तमान समय मे वैदिक धर्म के प्रचार हेतु उपदेशकों की बड़ी भारी कमी हो रही हैं पुराने उपदेशक समाप्त होते जा रहे हैं। नये व्यक्ति कार्य क्षत्र मे आ नही रहें अगर यही दशा रही तो ध्यान दीजिए समाज के भविष्य का क्या बनेगा इसी स्थिति पर विचारते हुए आर्य जगत के मूधन्य विद्वान् शास्त्रार्थ केसरी पूज्य महात्मा अमर स्वामी जी महाराज ने एक स्थान (वेद मन्दिर) गाजियाबाद मे स्थापित किया हैं जहा पर उपदेशक भजनो पदेशक एव शास्त्राथ कर्ता तैयार किये जायेंगे। उनका सारा खच विद्यालय वहन करेगा इच्छुक सज्जन पत्र व्यवहार करें। सभा सस्थाओ को भी इस ओर अवश्य ध्यान देना चाहिए। सन्यासी वानप्रस्थी उपदेशक जो भी काय कर रहे हैं वह भी विशेष योग्यता प्राप्त करने हेतु पत्र व्यवहार कर सकते हैं।

—लाजपत राय आर्य
सयोजक वेद मन्दिर कवि नगर
गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

सभा की निम्न योजनाओं के लिए
अधिक से अधिक धन भेजिए
पंजाब की आर्य समाजों से अपील

१ सभा के वेद प्रचार विभाग के लिए जो आर्य समाज का मुख्य काय है।

२ सभा के साहित्य प्रकाशन के लिए जो वर्तमान युग मे प्रचाराथ सबसे प्रभावशाली साधन है।

३ सभा के नये भवन के निर्माण के लिए।

४ सभा की ओर से बनाये जा रहे कादिया के लेखराम स्मरक मोही के स्वतन्त्रानन्द स्मारक तथा तलवन के श्रद्धान द स्मारक के निर्माण के लिए।

५ प्रचारार्थ एक जीप खरीदने के लिए।

६ सभा की शिक्षा सस्थाओ के सचालन तथा सवधन के लिए।

वीरेन्द्र
सभा प्रधान

—रामच द्र जावेद
सभा मन्त्री

विभिन्न योजनाओ के अन्तर्गत अब तक प्राप्त दान की सूची

1. गोरक्षार्थ—

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना—११०० रुपये।

2 शहीद प लेखराम स्मारक कादिया—

१ गु त दान—५०० रुपये। २ श्री ओम्प्रकाश महे द्र प्रधान आय समाज मारिण्डा—१०० रुपये। ३ आय समाज सै० २२ चण्डीगढ—११०० रुपये। ४ आय प्रतिनिधि सभा आ ध्र प्रदेश हैदराबाद——५००० रुपये। ५ श्री द्वारिकानाथ गुप्ता (दिल्ली) की डिस्पैंसरी के लिए कमरा निर्माण तथा २५०० रुपये नकद।
३ श्री ओम्प्रकाश भाटिया (अटारी बाजार) जाल धर-डिस्पैंसरी के लिए एक कमरा निमाण।

3 वेद प्रचार निधि—

१ प्रधान आय समाज भटिण्डा—११०० रुपये। २ महेन्द्र पाल वर्मा (मैनेजर याक हौजरी) लुधियाना—११०० रुपये।

३ श्री जगन्नाथ जी चाणक्यपुरी नई दिल्ली—१०० रुपये।
४ मन्त्री आर्य समाज फील्ड गज लुधियाना—५०० रुपये।
५ आर्य समाज महमदगढ मण्डी—५०० रुपये।

4 स्वामी स्वतन्त्रतानन्द स्मारक मोही—

१, श्रीमती यशवन्ती भल्ला—५१०० रुपये।
२ श्री हरिकृष्ण जी सेठी सुलतानपुर लोधी ५०१ रुपये।
३ श्रीमती कमला आर्या लुधियाना—३३५ रुपये।

लुधियानाके निम्न महानुभावोंसे भी मोही औषधालयको मासिक सहयोग देते हैं

१ श्री ओमप्रकाश जी लुधियाना २५ रुपये मासिक। ३ श्री अनन्त राम जी कोहली, लुधियाना १० रुपये। ४ श्रीमती विद्यावती आर्या १० रुपये। ५, श्रीमती विद्यावती [illegible] १० रुपये। ६ कुमारी वेदवती [illegible] १० रुपये। ७, स्त्री आर्य समाज आ० बा० १५ रुपये। ८ आर्य समाज माडल टाउन १५ रुपये। ९ आर्य समाज जवाहर नगर १५ रुपये। १० आर्य समाज फील्ड गंज १० रुपये। ११ कुमारी सत्या जी आर्या १० रु०। १२ श्री सतीश कुमार जी फील्ड गंज ५ रुपये।

अनुकरणीय

मान्या बहिन कमला आर्या लुधियाना की एक लग्नशील कर्मठ और उत्साही महिला है। जहां वह स्वयं दान शील हैं वहां दूसरे परिवारों एवं बहिन भाईयों से भी दान रूप धन इकटठा करके कई सस्थाओं की सहायता करती रहती है। लुधियाना उनका दान एकत्रित करने का अपना अनोखा ढंग है उन्होंने कुछ परिवारों आदि में श्रद्धा पत्र (दान पत्र) रखवाए हुए हैं उनके द्वारा उनके पास जो भी धन आता है वह सभा को वेद प्रचार के लिए भेज देती है इस कार्य में आर्य कर्न्या हा सं स्कूल लुधियाना का उन्हें बहुत सहयोग प्राप्त है। इस वर्ष उनके द्वारा २३९० रुपये ६५ पैसे सभा को वेद प्रचार के लिए प्राप्त हुआ।

आर्य जगत के समाचार

पारिवारिक सत्संग

जालन्धर

आर्य केन्द्रीय सभा जालन्धर के तत्वावधान मे विशेष पारिवारिक सत्सग आर्य समाज बस्ती नौं जालन्धर की ओर से बाल्मीकि मजबर में अक्ति पार्क बस्ती नौ जालन्धर के सामने २१ ६ ८१ रविवार को साय ६ बजे किया गया। यज्ञ के यजमान श्री प्रकाशचन्द जी बने।

भारी सख्या मे उपस्थित जनता पर इसका विशेष प्रभाव पड़ा।

लुधियाना

लुधियाना मे ५ ७ ८१ को श्री अशोककुमार कोमरा जी के निवास ११९८ कल्याण नगर लुधियाना मे पारिवारिक सत्सग सम्पन्न हुआ। श्री कृपाराम जी प० ओमपाल जी शास्त्री एम० ए० तथा श्री महेन्द्र प्रताप जी आर्य के मनोहर प्रभु भक्ति के भजन हुए। प० राजाराम शास्त्री जी का अमृतमय उपदेश हुआ। परिषद् प्रधान श्री रमण कुमार आर्य जी ने परिवार को वैदिक साहित्य भेंट किया, परिवार ने वेद प्रचार हेतु २१ रुपए की धन राशि के० आ० यु० प० को दान रूप मे दी। यज्ञ के प्रति लोगो की विशेष श्रद्धा पाई गई।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज लक्ष्मणसिंह वाला अमृतसर का वार्षिक उत्सव धूमधाम से मनाया गया जिसमे आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सुयोग्य विद्वान् श्री विजय कुमार जी वध भाषपति श्री मनोहरलाल जी आचार्य पुरोहित आर्य समाज पठानकोट श्री रामनाथ जी मन्त्री हजारीलाल भजनोपदेशक आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब पधारे ग्राम के सभी लोग बहुत प्रसन्न हुए, वेद प्रचार मे ७५ रुपए दिए गए।

आर्य समाज [illegible] आर्य समाज [illegible] का इसका वार्षिकोत्सव बड़ी धूम धाम से मनाया गया। इस अवसर पर [illegible] किया [illegible] (श्री) शेरसिंह व स्वामी [illegible] जी) हिमाचल प्रदेश के [illegible] संन्यासी स्वामी ब्रह्मानन्द जी तथा स्वामी ओमानन्द जी पधारे थे। भजन मण्डली का प्रचार काफी प्रभावशाली हुआ। स्वामी ब्रह्मानन्द जी के उपदेश सरल व [illegible] थे स्वामी ओमानन्द जी ने भी प्रेम पूर्वक काम किया।

रात्रि का प्रोग्राम बहुत रोचक रहा स्थानीय देवियों कुमारियों ने इसे बहुत पसन्द किया, श्रोतागण की उपस्थिति सन्तोषजनक थी। तीन दिन तक [illegible] हिन्दी और [illegible] की [illegible] वेदामृत वर्षा होती रही।

अन्त मे सबको प्रेम पूर्वक प्रसाद देकर विदा किया गया।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा [illegible] जालन्धर मे मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय [illegible] जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वर्ष 14—अंक 19 18 श्रावण सम्वत 2038 तदनुसार 2 अगस्त 1981 दयानन्दाब्द 156 । एक प्रति 35 पैसे (वार्षिक शुल्क 15 रुपए

धर्म रक्षा महाभियान ने प्रचंड आन्दोलन का रूप ले लिया

देश घातकों के विरुद्ध आर्यसमाज का शंखनाद

जालन्धर, (विशेष प्रतिनिधि द्वारा)—आर्य समाज हिन्दुओंको सवर्ण-हरिजन के नाम पर विभाजित करने की कुटिल चाल को सफल नहीं होने देगा । आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने आर्यों को आह्वान किया कि वे जन्म के आधार पर बनी वर्ण व्यवस्था की परम्परा को समूल उखाड़ फेंके ।

श्री वीरेन्द्र ने अपने एक लेख में हिन्दुओं को सतर्क किया कि यदि वे सवर्ण हरिजन के नाम पर बंटे रहे तो उन्हें नष्ट करने की ताक में बैठी विदेशी ताकत हड़प जाएगी । श्री वीरेन्द्र ने आर्य समाजों को निर्देश दिया कि वे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेशानुसार २६ जुलाई से चल रहे धर्म रक्षा महाभियान को सफल बनाने मे सक्रिय भूमिका निभाए ।

श्री वीरेन्द्र ने आह्वान किया कि सभी आर्य समाजी अपने दलित एवं पिछड़े भाईयों को गले लगाकर समादर का स्थान दें । हरिजन के नाम पर बनी वर्ण भेद की दीवारों को ढा दें । उन्होंने स्पष्ट किया कि शताब्दियों से चली आ रही गलत व्यवस्था के कारण वर्ण व्यवस्था जन्मना मानी जाने लगी । जोकि हमारी वैदिक वर्ण व्यवस्था की मूल भावना के विपरीत है ।

उन्होंने कहा कि आर्य समाज और उसके संस्थापक महर्षि दयानन्द उन व्यक्तियों जिन्हें स्वार्थी अथवा अज्ञानी दलित व हरिजन का सम्बोधन देते हैं, गा हृदय से लगाते आए हैं । आर्य समाज मे बाल्मीकि जी को भी महर्षि का दर्जा दिया गया है ।

सभा प्रधान ने कहा कि महर्षि



सवर्ण-हरिजन के नाम पर हिन्दुओ को विभाजित करने की कुटिल चाल सफल नही होने दी जाएगी : श्रीवीरेन्द्र की चेतावनी

बाल्मीकि जी अथवा भक्त शिरोमणि गु रविदास जी महाराज के अनुयायी दलि या अछूत नही हो सकते । उन्होंने कह कि रामायण हिन्दुत्व का आधार है औ इस प्रकार महान धार्मिक ग्रन्थ राम म व उसके रचयिता महर्षि बाल्मीकि जी को अलग अलग नही किया जा सकता उन्होंने कहा कि रामायण के पुजारी महर्षि बाल्मीकि जी का भी ठीक उसी प्रका ही मानते हैं जिस प्रकार हरिजन हिन्दू यही कुछ हम गुरुवर रविदास जी के बा कह सकते हैं ।

उन्होंने हिन्दुओं को सावधान किय कि कुछ विदेशी तत्व हिन्दुओं को द फाड़ करके उन्हे समाप्त करने के षडयन्

(शेष पृष्ठ २ पर)

हैदराबाद के दंगो मे विदेशी एव पृथकतावादी तत्व सक्रिय

नयी दिल्ली—आन्ध्र प्रदेश के आर्य नेता तथा राज्य सभा आयोग के अध्यक्ष श्री वन्देमातरम राम चन्द्रराव ने प्रधान मन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी से गत दिवस भेंट कर उन्हें हैदराबाद में साम्प्रदायिक दंगों के बारे में जानकारी दी । उनके साथ आर्य समाजी नेता ला० रामगोपाल शालवाले तथा श्री पृथ्वीसिंह आज़ाद भी थे ।

आर्य नेता वन्देमातरम्, शालवाले व पृथ्वीसिंह आज़ाद, प्रधान मंत्री तथा गृह मंत्री से मिले

आर्य नेताओं ने प्रधानमन्त्री को दंगो के बारे मे एक ज्ञापन भी दिया जिस मे हैदराबाद मे सक्रिय पृथकतावादी तत्वों पर अविलम्ब नियन्त्रण के लिए कठोर पग उठाए जाने की मांग की गयी है

प्रधानमन्त्री ने उनको आश्वासन दिया कि सरकार साम्प्रदायिक दंगे फैलाने वाले तत्वों को कदापि बर्दाश्त नहीं करेगी । आर्य नेताओं ने

मीनाक्षीपुरम कांड मे हाजीमस्तान का हाथ

प्रधानमन्त्री को मीनाक्षीपुरम के सामूहिक धर्म परिवर्तन के बारे मे तथ्यों से भी अवगत कराया तथा विदेशी धन के दुरुपयोग पर कड़ा नियन्त्रण लगाये जाने की मांग की ।

बताया जाता है कि प्रधानमन्त्री सामूहिक धर्म परिवर्तन तथा विदेशी धन के दुरुपयोग की घटनाओं से स्वयं चिन्तित हैं । इससे पूर्व श्री वन्देमातरम ने गृह मन्त्री जैलसिंह से भी भेंट की । उन्होंने आरोप लगाया कि हैदराबाद के दंगों में

(शेष पृष्ठ २ पर)

तमिलनाडू के आठ जिलों को मुस्लिम बना देने की खतरनाक साजिश

केरल और तमिलनाडू की सीमा पर नैऋत्य दिशा मे मद्रास शहर से ६५० मील की दूरी पर है वह मीनाक्षीपुरम् गाव जो अब रहमतनगर बन चुका है। मीनाक्षीपुरम् का रहमत नगर के रूप मे बदल ग्रामों के पुन नामकरण के अन्तर्गत नही बल्कि बहुसख्यक हरिजनो के हाल ही मे ४ मास पूर्व किए गए धर्मान्तरण का परिणाम है। जिसमे समूचा गाव ही धर्मान्तरित हो गया है।

धर्म परिवर्तन का दुष्चक्र यही तक सीमित नही बल्कि अब यह तमिलनाडू के ७-८ जिलो तक व्याप्त हो चुका है। फरवरी १९८१ मे तिरुनलवेली जिले के मीनाक्षीपुरम ग्राम मे १०२ हरिजन परिवारो का धर्म परिवर्तन कर उन्हे मुसलमान बना दिया गया। आज तक इस गाव मे ७१५ हिन्दू मुसलमान बनाए जा चुके हैं।

धर्म परिवर्तन के लिए मुस्लिम सस्थाओं की ओर से अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर योजनाबद्ध प्रयास चल रहा है और भारत भूमि उन्हे इस उद्देश्य के लिए अधिक उवरा लगती है। एक विश्वस्त सूचना के अनुसार मुसलमानो ने दक्षिण भारत के ७ जिलो को मुस्लिम बहुसख्यक करने की योजना बनाई है। यह जिले हैं—उत्तर अर्काट, दक्षिण अर्काट तजावूर धमपुरी मदुराई रामनाथ पुरम और तिरुन वेलवई। असम केरल मेघालय नागालैंड और अब तमिलनाडू मे तेजी से मुस्लिम और ईसाई वर्चस्व बढ रहा हैं।

मुसलमान नेता घर-घर जाकर हरिजनो को फुसलाते हैं—"तुम हमारे मजहब में आ जाओ। तुम्हारी सारी समस्या समाप्त हो जाएगी। इस मजहब में मुसलमानो का कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता। साथ ही हमारा मजहब तुम्हें सब प्रकार की समानता भी दिलाएगा। तुम्हें सामाजिक प्रतिष्ठा धन—यह सब कुछ मिलेगा। जिन्हें आर्थिक असुविधा थी उन्हें मुसलमानों ने मुक्त हस्त और खुले हृदय से कपड़ा पैसा जुटाया।

दक्षिण भारत का हिन्दू प्रकृति से प्राय कर्म काण्डी, आत्म सीमित और स्वत के लिए ही धार्मिक है। उसमें सगठन अथवा हिन्दुत्व की भावना का अभाव है। धर्मनिरपेक्ष सामाजिक चेतना उसमे नहीं है। प्रत्येक को वैयक्तिक तौर पर धर्मान्तरण बुरा अवश्य है परन्तु सगठित होकर इसका मुकाबला करना चाहिए यह उसे नही सूझता। जबकि आज इसकी अत्यन्त आवश्यकता है।

और यह सिलसिला चलता चला गया ?

इस क्षत्र मे आज तक जिन लोगो का धर्म परिवर्तन किया गया उनकी जिलेवार सख्या इस प्रकार है—

रामनाथपुरम् जिला

किरनवट	५७
पुमेरी	९
अखप्पागकूटनी	४१
मेलमकेल	४४
अतिमतुर	१५०
कुब्बूर	२६०

तिरुनलवेली जिला

मीनाक्षीपुरम्	५६५

तजावर जिला

तिरुतरुपडी	४३
कुल धर्मान्तरित	१३६९

अपने समाज का व्यक्ति धर्म की अज्ञानता व अन्य धर्मावलम्बियो के कुप्रचार से और हिन्दू समाज की सकीर्णता से ही धर्मान्तरण के गर्त में गिरता है यही एक चिंता का विषय है। यदि हिन्दू समाज ने शीघ्र ही इस दिशा मे कोई ध्यान नही दिया तो असम और केरल की तरह तमिलनाडू मे भी मुस्लिम बहुमत के आसार पैदा होने मे देर नही लगेगी।

इसके अतिरिक्त तमिलनाडू मे एक बहुत बड़ा वर्ग नास्तिकों का है। जिसका धर्म पर कोई विश्वास नही। इसलिए कोई मुसलमान बन या ईसाई इस बात की उसे अधिक चिन्ता नहीं।

धर्मान्तरण की समस्या का मुकाबला करने के लिए आर्य समाज राष्ट्रीय स्वयसेवक सघ विश्व हिन्दू परिषद् मन्दिर रक्षण समिति और हिन्दू [illegible] के [illegible] रूप से एक सयुक्त सगठन हिन्दू [illegible] खड़ा किया है। ताकि हिन्दू [illegible] [illegible] का [illegible] और [illegible] के साथ [illegible] किया जा सके। इस सारे कार्य में [illegible] [illegible] ने अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा प्रशसनीय भूमिका सम्पादित की है।

इस केन्द्र के द्वारा मीनाक्षीपुरम् और मद्रास में विशाल सभाएं आयोजित की गई। मद्रास के प्रमुख लेखक व पत्रकार 'तुगलक के सम्पादक श्री रामा स्वामी रेड्डी, हरिजन नेता श्री विश्वनाथ ने सम्बोधित किया। उन्होंने धर्मान्तरण की विभीषिका से सवर्णों व हरिजनों दोनों को सावधान किया। हिन्दू एकता केन्द्र के पुरुषार्थ व प्रेरणा से मुसलमान बन १८ हरिजन पुन अपने हिन्दू धर्म मे लौट आए। इसके अतिरिक्त ५० और हरिजनो ने पुन हिन्दुत्व स्वीकार कर लिया। धीरे-धीरे यह सख्या बढने की सभावना है और इस प्रकार का वातावरण वहां बन रहा है।

हिन्दू एकता केन्द्र की ओर से मीनाक्षीपुरम् के साथ साथ जिले के ७ स्थानो पर विशाल हिन्दू सम्मेलनो की योजना बनाई है। जिस क्षेत्र मे यह धर्मान्तरण हुआ है वहा पद यात्रा द्वारा हरिजन बन्धुओ मे विश्वास पैदा कर उन्हें हिन्दुत्व का महत्व अवगत कराया जाएगा। धर्मान्तरण की राष्ट्र विरोधी साजिशों से पैदा होने वाले खतरे की जानकारी दी जाएगी। राज्य भर के सभी मन्दिरो में एक साथ प्रार्थना आयोजित करके हिन्दू धर्म रक्षा की प्रतिज्ञा व शपथ ली जाए गी। सभी धर्माचार्य व शकराचार्य भी इसमे आमन्त्रित है।

—सुभाषचन्द्र आर्य

धर्म रक्षा महाभियान ने प्रचण्ड आन्दोलन का रूप ले लिया

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

बना रहे हैं जिन्हे आर्य समाज खामोश बैठा देखता नहीं रहेगा। और आर्य समाज इस प्रकार की राष्ट्र विरोधी व धर्म विरोधी ताकतो का मूलोच्छेदन करके रहेगा। आर्यसमाज को वोट की राजनीति की आड मे सवर्ण हरिजन के बटवारे के खिलाफ सघर्ष करने का भी आह्वान किया।

श्री वीरेन्द्र ने पजाब हरियाणा हिमाचल और जम्मू कश्मीर के आर्य समाजो के अधिकारियो से हरिजनो को अधिकाधिक सख्या मे आर्य समाज का सदस्य बनाने और यजमान बनाने की अपील की।

इसके साथ ही देश भर में धर्म रक्षा-महाभियान को लेकर व्यापक स्तर पर आन्दोलन चलाए जाने के उत्साहजनक समाचार मिले हैं। देश भर की आर्य समाजो मे हरिजन भाईयो को समादृत करके सम्मानित किया जा रहा है। परिजनो को सवर्णों की समकक्षता मे आर्य समाज से प्रतिष्ठित सदस्य बनाया गया। स्थान स्थान पर यज्ञो व सम्मेलनों मे हरिजन भाईयो को उनका अपेक्षित महत्व दिया गया। इस प्रकार आन्दोलन के पूरे जोरो के साथ चलने से सवर्ण हरिजन खाई बहुत जल्द पट जाने की सभावना है।

जालन्धर में भी बस्ती गुजा व भार्गवपुरा की हरिजन बस्तियों में इस प्रकार के आयोजन करके उन्हें प्रतिष्ठित किया गया। इन आयोजनों में भारी सख्या में हरिजनों को सवर्णों ने गले लगा कर सद्भाव की भीयारें बाट दी।

आर्य नेताओ को प्रधानमन्त्री तथा गृहमन्त्री से भेंट

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

विदेशी एव पृथक्तावादी अराजक तत्वो का हाथ है।

उन्होने गृहमन्त्री श्री जैलसिंह से भेंट कर उन्हे हैदराबाद के साम्प्रदायिक दगो की घटनाओ की जानकारी दी। श्री वन्दे मातरम के साथ हैदराबाद के भूतपूर्व महापौर श्री किशनलाल भी थे।

श्री वन्दे मातरम् ने बताया कि हैदराबाद मे सभी भी पाकिस्तान समर्थक रजाकारों के पुराने साथी सक्रिय हैं तथा वे किसी न किसी बहाने से शान्ति भग करने के षड्यन्त्र मे लगे रहते है ऐसे तत्वो के विरुद्ध समय रहते कार्यवाही की जाती तो इस प्रकार की हिंसक घटनाओ से बचा जा सकता था।

श्री वन्दे मातरम् ने बताया कि हैदराबाद में सदियों से सुहागिन महिलाओ का पर्व 'बोनाल' मनाया जाता रहा है। इस बार बोनाल के जलूस पर सशस्त्र हमला करके हिंसक वारदातें शुरू की गई। इसी प्रकार पहले मस्जिद के सामने से बारात के जलूसों पर हमले की घटनाए हो चुकी हैं। इस प्रकार के तत्वों को सख्ती से कुचला जाना जरूरी है।

आर्य नेता ने बताया कि हैदराबाद के लगभग १५० व्यक्तियों को छुरों से घायल किया गया है। यह निश्चित है कि छुरेबाजी करने वाले वहां के स्थानीय [illegible] सिक न होकर बाहर के [illegible] गुण्डे ही थे।

वन्दे मातरम् ने आरोप लगाया कि मीनाक्षीपुरम् मे सामूहिक धर्म परिवर्तन के पीछे कुख्यात तस्कर हाजी मस्तान के गिरोह तथा विदेशी तत्वों का हाथ है।

श्री वन्दे मातरम् मीनाक्षीपुरम् तथा आस-पास के क्षेत्र का दौरा करने के बाद यहां बातचीत कर रहे थे उन्होंने बताया कि मीनाक्षीपुरम् केरल के [illegible] बहुल जिला में [illegible] के नजदीक है। उसी क्षेत्र में कुख्यात तस्कर हाजी मस्तान का गांव है। उन्होने भय तथा लालच के कारण हरिजनो को धर्म-परिवर्तन के लिए बाध्य किया गया।

श्री वन्दे मातरम् ने आशा व्यक्त की कि आर्य समाज एवं सनातन धर्म के सक्रिय सहयोग [illegible] से अब मीनाक्षीपुरम् के हरिजन [illegible] का [illegible] लगभग ५० परिवार पुनः हिन्दू धर्म में दीक्षित भी हो चुके हैं।

ओ३म्

आर्य मर्यादा

उभा हि हस्ता वसुना पृणस्वा प्रयच्छ दक्षिणादोत सव्यात् । यजु० ५ १९

अर्थ—हे बल रूप प्रभो ! तू हमारे हाथों को उत्तम द्रव्यों और ऐश्वर्य से भरपूर कर दे । दक्षिण और वाम पार्श्व से भी सबसुखदायक धन हमें प्रदान कर ।

—सम्पादकीय—

आर्य भाईयो ! हरिजनों को अब न भूलो

26 जुलाई का धर्म रक्षा महाभियान सफलता पूर्वक प्रारम्भ हो गया । जो समाचार प्राप्त हुए हैं उनसे पता चलता है कि कई स्थानों पर यह समारोह बहुत ही उत्साह के साथ आयोजित किया गया । जालन्धर में यह बहुत ही सफल रहा । भारत सरकार के सूचना व प्रसारण मन्त्रालय की उपमन्त्री कुमारी कुमुद जोशी विशेष रूप से हमारे सम्मेलन में आईं और उन्होंने यहां आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के विषय में अपने जो विचार प्रकट किये वे बहु अत्यन्त ही सराहनीय व उत्साह वर्धक थे । इससे हम यह अनुमान भी लगा सकते हैं कि हमारे देश में कितने ऐसे व्यक्ति हैं जिन्हें आर्य समाज में रुचि है । हम उन्हें नहीं जानते उनके साथ अपना सम्पर्क नहीं रखते इसलिए उनके विषय में हमें पता भी चलता । जो कुछ कुमारी कुमुद जोशी ने कहा है उसे सुनकर उस सम्मेलन में बैठे बहिनों और भाईयों को जो उत्साह मिला है उसके द्वारा उनके लिए आगे काम करना और भी आसान हो जाएगा ।

परन्तु जिस बात की ओर मैं आर्य जनता का ध्यान विशेष रूप से दिलाना चाहता हूं वह यह है कि इस समारोह के पश्चात हमें पहले की तरह सो नहीं जाना चाहिए । परन्तु सक्रिय रूप से हरिजन समस्या का कोई समाधान ढूंढने का प्रयत्न करना चाहिए । हमारे हरिजन भाईयों की यह शिकायत है और यह कुछ हद तक ठीक भी है कि हम आगे पीछे तो उन्हें नहीं पूछते जब कोई संकट आ जाता है तो उस समय उनकी ओर ध्यान देने लग जाते हैं । यही कारण है कि अभी तक हरिजन समस्या का कोई सन्तोषजनक समाधान हम नहीं ढूंढ सके । मैं अपने आर्य समाजी भाईयों से कहना चाहता हूं कि अब प्रत्येक आर्य समाज को ऐसी योजनाएं बनानी चाहिए जिनके द्वारा हम अपने हरिजन भाईयों की कठिनाईयों और समस्याओं को दूर करने के लिए कोई सक्रिय काम करें । और वह भी समझें कि आर्य समाज एक ऐसी संस्था है जो उनका कष्ट निवारण कर सकती है । २६ जुलाई को हमने जो कुछ किया है उसका भी बहुत प्रभाव रहा है । परन्तु मैं इसे पर्याप्त नहीं समझता । कभी २ इस प्रकार के समारोह कर देने से इस समस्या का कोई समाधान न होगा । हम एक सौ वर्ष तक छूतछात के विरुद्ध बहुत कुछ कहते रहे हैं । उसका एक परिणाम यह भी हुआ है कि इस बिमारी के विरुद्ध लोगों में घृणा तो अवश्य उत्पन्न हो गई है । गान्धी जी ने तो बहुत देर के बाद छूतछात के विरुद्ध अपनी आवाज उठाई थी । महर्षि दयानन्द सरस्वती ने तो उनसे बहुत पहले यह कह दिया था कि कोई भी व्यक्ति जन्म के आधार पर न ब्राह्मण है न क्षत्रिय है न वैश्य और न शूद्र है । जो कुछ है भी हम बनते हैं अपने कर्मों के अनुसार ही बनते हैं । महर्षि दयानन्द जी ने जो बीज बोया था गांधी जी ने उसे अपने प्रचार के पानी द्वारा प्रफुल्लित करने का प्रयत्न किया और अब वह एक वृक्ष के रूप में हमारे सामने है । परन्तु यह भय सदा ही रहता है कि कहीं यह वृक्ष सूख न जाए और हम फिर उसी प्रकार पुरानी बीमारी में फंस न जाएं । इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि आर्य समाज अब सक्रिय रूप में अपने उन भाईयों के उद्धार के लिए काम आरम्भ कर दें जिन्हें हम हरिजन अछूत या दलित कहते हैं । अछूत तो आर्य समाज ने कभी किसी को समझा नहीं । किसी भयानक बिमारी के कारण कोई अछूत हो जाए तो वह और बात है परन्तु जन्म के आधार पर तो हम किसी को अछूत नहीं मानते । हरिजन शब्द भी गांधी जी ने ही प्रचलित किया था आर्य समाज तो सामाजिक रूप से पिछड़े हुए भाईयों को दलित ही कहता रहा है इसलिए बहुत समय तक वह दलित उद्धार के लिए काम करता रहा । मैं समझता हूं अब हमें फिर दलित उद्धार की तरफ ही ध्यान देना चाहिए । जो भी व्यक्ति सामाजिक या आर्थिक रूप से दलित हो पीडित हो उसके उद्धार का बीड़ा आर्य समाज को फिर उठा लेना चाहिए यह उसी स्थिति में हो सकता है यदि प्रमुख आर्य समाजी अपने हरिजन भाईयों को आर्य समाज में सेवा का एक अवसर दें । उनका उत्साह बढ़ाएं और अपने साथ मिलाकर उन्हें यह समझने का अवसर दें कि आर्य समाज ही एक ऐसी संस्था है जो संकुचित दृष्टिकोण से बहुत ऊपर है और जो अपने दलित भाईयों को गले लगाने को तैयार है । हरिजन शब्द ने भी हमारे लिए एक समस्या पैदा कर दी है । कई बार ऐसा प्रतीत होता है कि हिन्दुओं या आर्यों के मुकाबला में हरिजन नाम की एक नई जाति पैदा हो गई है । इसीलिए मैं समझता हूं कि आर्य समाज एक बार फिर दलित उद्धार की तरफ अपनी सारी शक्ति लगा दे ताकि हमारे जो भाई सामाजिक और आर्थिक रूप में दलित हैं वह समझें कि उन्हें कोई सहारा मिल गया है । हमें अधिक से अधिक दलित भाईयों को अपने सदस्य बनाने चाहिएं । उनके घरों में उनकी बस्तियों में जाकर यज्ञ हवन करने चाहिएं । उनके दुःख सुख में सम्मिलित होना चाहिए । और जहां तक सम्भव हो सके उनकी आर्थिक कठिनाईयों को दूर करने का प्रयत्न करना चाहिए । सबसे अधिक आवश्यकता इस बात की है कि जिन्हें हम हरिजन या दलित कहते हैं उनके मन मस्तिष्क से बात निकाली जाए कि वह दूसरों से कुछ घटिया हैं । उन्हें यह विश्वास दिलाने की आवश्यकता है कि वे भी दूसरे मनुष्यों की तरह ही मनुष्य हैं । यह काम आर्य समाज से अच्छा और कोई नहीं कर सकता । इसीलिए मैं अपने आर्यों भाईयों और बहिनों से कहना चाहता हूं कि दलित उद्धार का जो काम पिछले एक सौ वर्ष से करते चले आ रहे हैं अब उसे और भी अधिक सक्रिय रूप में करने की आवश्यकता है । मेरी सम्मति में अगर हमने अपने देश और अपनी जाति को बचाना हो तो हमारी सारी शक्ति इसी काम में लग जानी चाहिए ।

—वीरेन्द्र

द्रों को वेदादि शास्त्र पढ़ने सुनने का प्रकार का प्रमाण यजुर्वेद के २६वें अध्याय में दूसरा मन्त्र है —

यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः ।।
ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय ।।

देखो परमेश्वर स्वयं कहता है कि जैसे ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य शूद्र और अपने भृत्य व स्त्री आदि और अति शूद्रादि के लिए भी वेदों का प्रकाश किया है अर्थात वेदों को पढ़ पढ़ा और सुन सुना कर विज्ञान को बढ़ा के अच्छी बातों का ग्रहण और बुरी बातों का त्याग करके दुःखों से छूट कर आनन्द को प्राप्त हों । कहिए । अब तुम्हारी बात मानें व परमेश्वर की क्या ईश्वर पक्षपाती है कि वेदों के पढ़ने सुनने का शूद्रों के लिए निषेध और द्विजों के लिए विधि करे ? जो परमेश्वर का अभिप्राय शूद्रादि के पढ़ाने सुनाने का न होता तो इनके शरीर में वाक् और श्रोत्र इन्द्रिय क्यों रचता ? जैसे परमात्मा ने पृथ्वी जल अग्नि वायु चन्द्र सूर्य और अन्नादि पदार्थ सबके लिए बनाए हैं वैसे ही वेद भी सबके लिए प्रकाशित किए हैं और जहां कहीं निषेध किया है उसका यह अभिप्राय है कि जिसको पढ़ने पढ़ाने से सम्मति भी—

चार वर्णों का निर्माण लोक में धन कमाने तथा जीविका उपलब्ध करने के लिए किया गया था ये धन की जरूरत पूरा करने के लिए धन्धे मात्र के व्यवसाय मात्र हैं । जितने पेशे विद्या से सम्बन्धित हैं जैसे वकील जी नर्सिंग वकालत अध्यापक उपदेशक के कार्य तथा विज्ञान की खोज आदि ये सब ब्राह्मण वर्ण के अन्तर्गत समझे जाते हैं जितने राज्य की सुरक्षा सम्बन्धी कार्य हो सकते हैं चाहे वे शासन विभाग (सिविल) से सम्बन्धित हों चाहे सेना विभाग से वे सब क्षत्रिय वर्ण के अन्तर्गत माने जाते हैं । जितने काम व्यापार कला कौशल और कृषि आदि से सम्बन्धित होते हैं वे सब वैश्य वर्ण के अन्तर्गत स्वीकार किए जाते हैं और जिन कार्यों के करने में शारीरिक श्रम अधिक करना पड़ता है वे सब शूद्र वर्ण के अन्तर्गत माने जाते हैं । वस्तुतः में वर्ण नाम विभाग या डिपार्टमेन्ट का समझा जाना चाहिए । जो व्यक्ति जिस विभाग में कार्य करेगा उसका नाम उस विभाग में कार्य करने वाला हो जाएगा

हम यह भूल गए कि इन वर्णों में प्रत्येक वर्ण वाला अपने पेशे के काम में विशेषज्ञ हुआ करता है इसलिए उसमें छुटाई बड़ाई का प्रश्न नहीं उठता भेद तो

(शेष पृष्ठ ६ पर)

(५ पृष्ठ का शेष)

प्रकार के हुआ करते हैं। एक श्रेणी (Kind) का भेद दूसरा दर्जा (Degree) का भेद। जिन वस्तुओं मे श्रेणी का भेद होता है उनमे दर्जों का भेद नहीं हुआ करता और न हो सकता है अर्थात यह नही कह सकते हैं कि यह घोडा इस मेज से अच्छा है न यह कहा जा सकता है कि यह मेज इस घोड़े से अच्छी है। हां १० घोडो मे यह कहा जा सकता है कि अमुक घोडा अन्यों से अच्छा है। इसी प्रकार १० मेजो मे भी यह बात कही जा सकती है कि अमुक मेज अन्यो से अच्छी है इसलिए कि १० घोड और १० मेजें दोनो पृथक पृथक एक एक श्रेणी की चीजें हैं इसी प्रकार यह वर्ण भी पृथक श्रेणी के समूह हैं इनमें भी दर्जों का भेद नही हो सकता अर्थात यह नही कह सकते कि ब्राह्मण क्षत्रिय से ऊंचा है या वैश्य शूद्र से इत्यादि।

वर्ण का आरम्भ ब्रह्मचर्य आश्रम के समाप्त होने के बाद हुआ करता है और मानव धर्मशास्त्र के अनुसार उसी समय किसी व्यक्ति की रुचि का भी पता चला करता है कि वह किस पेशे से धन कमाने की रुचि रखता है अर्थात अध्यापन करके धन कमाना चाहता है या राज्य सम्बन्धी कार्य करके या अन्य कोई व्यवसाय करके। उसी के अनुकूल उसका वर्ण हो जाता है। इसलिए इन वर्णों का जन्म से न कोई सम्बन्ध है और न हो सकता है।

भविष्य महापुराण में लिखा है वर्णों में गाय और अश्व के समान कोई जाति भेद नही कार्य शक्ति के निमित्त से ही इनमे व्यवसाय भेद है और वह भी कृत्रिम है।

गाय तथा अश्व का छोटे से छोटा बच्चा तुरन्त पहचाना जाता है और किसी को भी उसमें अन्य भावना उत्पन्न नही होती परन्तु मनुष्य के बच्चे की इस प्रकार की पहचान कि यह ब्राह्मण का बच्चा है या क्षत्रिय वैश्य और शूद्र का सर्वथा असम्भव है अत पुराणकार ठीक लिखता है कि —

तस्मान्न गोऽश्ववत् कश्चित
जाति भे दोऽस्ति देहिनाम्
कार्यशक्ति निमित्तस्तु
सकेत कृत्रिमो भवेत् ॥
(भवि महा-पु प्र० ४०।३५)

वेद ने तो तपसे शूद्र कह कर शूद्र को तपोधन का स्वामी बना दिया है। अपने शरीर के श्रम द्वारा मानव मात्र के कल्याण मे जो अहर्निश लगा रहे तथा सबकी शारीरिक आवश्यकताओ की पूर्ति के साधन जुटाता रहे ऐसा वर्ग तो सम्मान का पात्र है। घृणा अथवा उपेक्षा का कदापि नही। हैरानी तो यह है कि जो वर्ग गन्दगी फैलाते हैं उनका श्रेष्ठ स्थान लिया गया और जो उनके द्वारा फैलाई गई गन्दगी को साफ करके वायुमण्डल को शुद्ध और पवित्र बनाता है उसे न केवल घटिया समझा गया अपितु अपने विशाल समाज का अंग मानने से भी इन्कार कर दिया गया।

हमारे इसी अन्याय पूर्ण व्यवहार का यह दुष्परिणाम है कि हमारे अपने भाई आज गैरों की गोद में जान पर खेल हो गए हैं और धड़ाधड़ जा रहे हैं।

कितनी विडम्बना है कि जब तक यह हमारे बने रहते हैं राम और कृष्ण को रामायण और गीता को गऊ और ब्राह्मण को मानते रहते हैं हम इन्हें अपना मानने को बिल्कुल तैयार नहीं होते इनको अपनी घृणा और अन्याय का शिकार बनाते रहते हैं। परन्तु ज्यों ही वे ईसाई या मुसलमान बन जाते हैं हमारी सारी घृणा और विद्वेष का भाव दूर होकर न जाने कहा भाग जाता है क्या यह हमारा व्यवहार अपने समाज को सशक्त बनाने और जीवित रखने का है या निर्बल बना कर मृत्यु के समीप ले जाने का?

आज जो कुछ दक्षिण भारत मे तथा देश के अन्य भागो में सुनियोजित ढंग से हो रहा है उसकी ओर समय रहते यदि हमने ध्यान न दिया और कोरी हठधर्मिता और रूढिवाद का अपने को शिकार बनाए रखा तो इस अपने देश मे ही हम विदेशी बना दिए जाएंगे यह निश्चित है।

इसलिए आओ देवदयानन्द के सन्देश को सुनते और मानते हुए हम अपनो को पहचाने तथा उन्हें यह अनुभव करा दें कि वे हमारे हैं और हमारे ही रहेंगे हम उन्हें किसी भी हालत में अपने से पृथक न होने देंगे।

सुनो वेद क्या कहता है —

प्रिय मा कृणु देवेषु
प्रिय राजसु माकृणु
प्रिय सर्वस्य पश्यत
उत शूद्र उतार्ये
अथर्व १९।६२।१

अर्थात मुझे देवों का प्यारा बना क्षत्रियो का प्यारा बना वैश्य तथा शूद्र का प्यारा बना। इससे स्पष्ट है कि ब्राह्मण क्षत्रिय वैश्य और शूद्र वेद की दृष्टि में समान है सभी आर्य हैं और सवर्ण हैं अवर्ण तो चाण्डाल दस्यु तथा राक्षस होते हैं। हमें तो उनको भी अपने सद्व्यवहार तथा सदाचार द्वारा आर्य बनने का आदेश है। वेद में कहा है—

इन्द्र वर्धन्तो अप्तुर
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
अपघ्नन्तो अराव्ण
ऋ० ९।६३।५

उत्सव तथा वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज सरूर—१७ से २७ ८-८१ तक।

आर्य समाज सैक्टर २२ चण्डीगढ़—१६ से ३०-८-८१ तक।

आर्य समाज फाजिल्का—२४ से ३० ८ ८१ तक।

आर्य समाज गिदड़बाहा (उत्सव)—१८ से २३ ८ ८१ तक।

आर्य समाज शक्ति नगर अमृतसर तथा आर्य समाज छावनी का उत्सव फिरोजपुर तथा आर्य समाज सामाना से तिथियों का निश्चय करने के लिए पत्र व्यवहार हो रहा है।

आप भी अपने समाज मे वेद प्रचार सप्ताह का आयोजन कीजिए। सभा पूरा सहयोग देगी।

—ओम्प्रकाश आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष

जागो ! जागो !!

जाग उठो! जाग उठो!
अवेद छोडो! वेद पढो!

अर्थात छोड दो सभी वेद विरुद्ध पुस्तक बात कार्य। और पढो वेद वेदानुकूल ही पुस्तकें बातें कार्य। कि अवेद से देखा जो सर्वहानि—विश्व—अशान्ति अकस्मात वेद से ही देख लें। सब ही लाभ विश्व शान्ति कल्याण।

अवेद अल्पज्ञ मनुष्य कृत! अत कोई के लिए और वह भी अन्तत अहित में! जबकि वेद सर्वज्ञ ईश कृत। अत सब ही के लिए व सदा सर्वदा ही हित में।

इसीलिए सब स्वामी ईश्वर का समस्त ही मनुष्यो को आदि सृष्टि से ही उपदेश—

यह मेरी पवित्र वाणी वेद भगवान मनुष्य मात्र के लिए है। ब्राह्मण क्षत्रिय शूद्र और इनसे भी जो नीच हो सब इस का पढकर अपना कल्याण कर सकते हैं।

यजुर्वेद पवित्र

तभी तो ऊपर कथन किया गया है—छोड दो सभी वेद विरुद्ध पुस्तकें-बातें कार्य और पढ़ो वेद वेदानुकूल ही पुस्तकें बस इसी में ही सर्वहित विश्वशान्ति विश्वशान्ति

लीजिए इसी (उपरोक्त) निमित्त सब हितैषी सत्पुरुषों के उद्गार—

सत्यम असली के प्रथम पाच ज्ञान लाभ—१ भवसागर से पार उतरने के लिए सत्यम की नौका से बढकर और कोई साधन नही है। २ वास्तविक सत्यम तो ईश्वर के सग सत्पुरुष के सग सत्कृति के सग। सुख शान्ति आनन्द तो मिलें निश्चय इन्हीं के सग। ३ सत्य का ज्ञान न होना ही सारे कष्टों और दुःखो का मूल कारण है। ४. बुद्धिमान मनुष्य तो आदि से ही सत्य को अपना नियम बनाते हैं। लेकिन मूर्ख लोग ठोकर खाने के बाद आखिरकार सत्य मार्ग पर आ जाते हैं। ५ हम असत्य मार्ग पर चाहे जितनी दूर जा चुके हों वहां से लौट पड़ना उस पर चलते रहने से बेहतर है।

—सज्जन कुसयम (जि० जालन्धर)

हे कालजीत विद्वानों ईश्वर की महिमा को बढाते हुए दुष्टो की दुष्टता का नाश करके सारे ससार को आर्य अर्थात श्रेष्ठ बनाओ।

वेद के इस आदेश का हमें पालन करना है तथा अछूत कहे जाने वाले अपने उपेक्षित भाइयों को गले लगा कर अछूता बनाया है।

शोक प्रस्ताव

आर्य युवक सभा लुधियाना की २३ ७ ८१ की बैठक मे दो शोक प्रस्ताव पारित किए गए।

१ प्रादेशिक सभा के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री मदनमोहन जी के निधन पर गहराशोक प्रकटकरते हुए उनकी आत्मा के लिए शान्ति की तथा परिजनो के लिए इस दुःख को सहन करने की शक्ति परमात्मा से प्रार्थना की गई।

२ आर्य युवक सभा के उपमन्त्री प्रो० स्वतन्त्र कुमार जी (पठानकोट) के पिता श्री शान्ति स्वरूप जी के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया तथा उनकी आत्मा के लिए शान्ति की और प्रो० स्वतन्त्र कुमार जी व उनके परिवार को इस असहनीय दुःख को सहन करने की शक्ति देने के लिये परमात्मा से प्रार्थना की गई।

चौधरीसिंह का निधन

हरियाणा के प्रसिद्ध आर्य समाजी प्रचारक चौधरी कुंवर चौधरी सिंह का १६ ७-८१ को निधन हो गया। उनकी आयु ६५ वर्ष की थी। आप प्रसिद्ध लोक कवि चौधरी ईश्वरसिंह के शिष्य थे। आपने आयु भर उनकी प्रेरणा से आर्य समाज का प्रचार किया और अनेक आर्य समाजों की स्थापना की। आपने आर्य समाज के प्रचार के लिए कई पुस्तकें भी लिखीं।

आपने हैदराबाद आर्य सत्याग्रह हिन्दी रक्षा आदि आन्दोलनों में भाग लिया। आप अन्त तक आर्य समाज की सेवा करते रहे।

आर्य प्र. नि. सभा पंजाब द्वारा प्रकाशित तथा प्रसारित साहित्य की पुस्तकें

१	सत्यार्थप्रकाश हिन्दी	४—५०
२	सत्यार्थ प्रकाश (उर्दू)	१०—००
३	„ अंग्रेजी	२०—००
४	आर्य समाज—अतीत की उपलब्धियां तथा भविष्य के प्रश्न —ले०—डा० भवानीलाल भारतीय	१०—००
५	पंजाब का आर्य समाज ले०—प्रि० रामचन्द्र जावेद	४—००
६	विज़िडमस फराम सत्यार्थ प्रकाश (अंग्रेजी) —ले० डी० एन० वासुदेव जी	३ ००
७	स्वामी श्रद्धानन्द (अंग्रेजी) —ले० श्री के० एन० कपूर जी	५—००
८	स्वामी श्रद्धानन्द उपदेश माला	०—२५
९	पोलीटीकल टैस्टामैन्ट आफ स्वामी श्रद्धानन्द	०—२५
१०	जन्म साखी (ले० ज्ञानी पिण्डीदास जी)	२—००
११	सिक्ख गुरु अते आर्य सिद्धान्त (पंजाबी) —ले० स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी सरस्वती	२—५०
१२	आर्य समाज दा दिग्दर्शन (पंजाबी) —ले० आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद)	२—००
१३	वेद और उनका प्रादुर्भाव —ले० महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज	५०—०० सैकड़ा
१४	अमर स्वामी श्रद्धानन्द और उनका दिव्य सन्देश	०—२५
१५	भागवत खण्डनम् —ले० स्वामी दयानन्द जी सरस्वती	० ५०
१६	नीहारिकावाद और उपनिषद् (ले०—पं० चमूपति)	००—२५
१७	वीतराग स्वामी स्वतन्त्रानन्द —ले० श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु	१—००
१८	हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी —ले० ज्ञानी पिण्डी दास जी	० २५
१९	प्रिंसीपल आफ आर्य समाज अंग्रेजी —ले० श्री [illegible]चन्द जी एडवोकेट	२—००
२०	मृत्यु और परलोक —ले० महात्मा नारायण स्वामी जी	२—५०
२१	संस्कार विधि —ले० स्वामी दयानन्द जी सरस्वती	४—५०
२२	मेरे सपनों का भारत —ले० श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री	२—५०
२३	आर्य पर्व पद्धति —ले० श्री पं० भवानी प्रसाद	५—००
२४	दुखड़ा दिल की —ले० श्री राम गोपाल शालवाले	०—२५
२५	आर्य समाज	०—३०
२६	सत्य की मंजिल सेवा की राह —ले० मादी राम जोशी	१०—००
२७	बाल सत्यार्थ प्रकाश ले० प्रोफेसर विश्वनाथ विद्यालंकार वेदोपाध्याय गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार	३ ००
२८	धर्मस्वातन्त्र्य विधेयक क्यों ? ले० रघुनाथ प्रसाद पाठक	१—००
२९	माण्डूक्योपनिषद —टीका म० नारायण स्वामी	० ३५
३०	प्रभु भक्ति स्तोत्र —ले० लोकनाथ जी वाचस्पति	०—४०
३१	धर्मवीर पं० लेखराम —ले० स्वामी स्वतन्त्रानन्द	०—४०

आर्य मर्यादा के विशेषांक

१	मेरी आत्मकथा के कुछ पृष्ठ —ले० आचार्य रामदेव जी	१—००
२	[illegible]	१—५०
३	वेद में पुनरुक्ति दोष नहीं	२—५०
४	यजुर्वेदाध्याय का ३२ वां स्वाध्याय	१—००
५	अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी	१—५०

नोट —ओ३म् के झण्डे हवन कुण्ड तथा ओ३म् के बैज भी उपलब्ध हैं।

प्राप्तिस्थान

व्यवस्थापक—चमूपति साहित्य प्रकाशन विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर—४

आर्यसमाजों के वार्षिक चुनाव

आर्य वीर दल गुरुकुल करतारपुर का वार्षिक चुनाव

आर्य वीर दल गुरुकुल करतारपुर का वार्षिक चुनाव गुरुकुल के आचार्य श्री नरेश कुमार जी व्याकरणाचार्य की अध्यक्षता मे सर्वसम्मति से सम्पन्न हुआ। जिसमे निम्न पदाधिकारी एक वर्ष के लिए चुने गए

सरक्षक—श्री नरेश कुमार जी व्याकरणाचार्य प्रधान शिक्षक—श्री सुखदेव जी शास्त्री शिक्षक—श्री ब्रह्मचारी स्वदेश कुमार जी सहशिक्षक ब्रह्मचारी परम वीरसिंह जी प्रधान—श्री ब्रह्मचारी प्रियव्रत जी आर्य उपप्रधान—ब्रह्मचारी सोमपाल जी आर्य मन्त्री—ब्रह्मचारी अरविन्द कुमार जी प्रचार मन्त्री ब्रह्मचारी देवदत्त जी आर्य कोषाध्यक्ष—ब्रह्मचारी भगवानदेव जी आर्य।

—

गांधी नगर दिल्ली

आर्य समाज गांधीनगर (यमुना) दिल्ली मे रविवार दिनांक २२ ७ ८१ को निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये—

प्रधान—श्री जयप्रकाश आर्य उपप्रधान—श्री सत्यपाल भाटिया श्री बसन्त राय पुरी मन्त्री—श्री सन्तराम मदान उपमन्त्री श्री शान्ति स्वरूप शर्मा प्रचार मन्त्री श्री श्याम सुन्दर जी पुस्तकाध्यक्ष—श्री रामपाल लेखा निरीक्षक श्री राधेश्याम।

—

हनुमान रोड नई दिल्ली

आर्य समाज हनुमान रोड नई दिल्ली का वार्षिक साधारण अधिवेशन रविवार दिनांक १२ जुलाई १९८१ को आर्य समाज मन्दिर मे प्रातः ९ ३० बजे हुआ जिसमे निम्नलिखित अधिकारी सर्व सम्मति से निर्वाचित हुए—

प्रधान—श्री राममूर्ति केला उपप्रधान—श्री सरदारीलाल वर्मा [illegible] सहदेव पं० चन्द्रभानु सिद्धान्त भूषण मन्त्री श्री विमलचन्द्र [illegible] मन्त्री श्री हरकृष्णलाल सहदेव उपमन्त्री—श्री खैरायती लाल भाटिया —[illegible] बुद्धराम गुप्ता भण्डारी—श्री सोमदत्त शर्मा कोषाध्यक्ष—श्री सुरेन्द्र कुमार भाटिया पुस्तकाध्यक्ष—श्री त्रिलोकी नाथ मिश्र सहायक पुस्तकाध्यक्ष श्री राजीव भाटिया लेखा निरीक्षक—श्री बसन्तराय खन्ना।

तिलकनगर नई दिल्ली

आर्य समाज तिलक नगर नई दिल्ली का वार्षिक चुनाव दिनांक १९ ७ ८१ रविवार का निम्न प्रकार हुआ—

प्रधान श्री वीरभान वीर मन्त्री—श्री जगदीशचन्द्र नागपाल कोषाध्यक्ष—श्री बलदेवराज

(अनारकली) मन्दिर मार्ग

प्रधान—प्रि० शान्ति नारायण उपप्रधान प्रि० त्रिलोकीनाथ प्रि० मोहनलाल श्री सरदारीलाल श्री ओ० पी० गोयल कु० विद्या आनन्द श्री एच० आर० मल्होत्रा प्रि० तिलकराज गुप्ता श्रीमती लाजवन्ती छाबड़ा श्री आशासिंह जी खन्ना श्रीमती सरला गुप्ता श्री शान्तिलाल सूरी मन्त्री—श्री राम नाथ सहगल सहमन्त्री श्री रामशरण दास आहूजा श्री विजयकुमार उपमन्त्री—श्री [illegible] श्री गोपाल कृष्णदत्त श्री सोहनलाल श्री योगेश्वर महाजन कोषाध्यक्ष—श्री रामदास खोसला सह कोषाध्यक्ष श्री चिरञ्जीलाल।

औषधालयाध्यक्ष—श्रीबेनीराम अबरोल एम० बी० बी० एस०।

—

सभा की निम्न योजनाओ के लिए

अधिक से अधिक धन भेजिए

पंजाब की आर्य समाजो से अपील

१ सभा के वेद प्रचार विभाग के लिए जो आर्य समाज का मुख्य कार्य है।

२ सभा के साहित्य प्रकाशन के लिए जो वर्तमान युग मे प्रचारार्थ सबसे प्रभावशाली साधन है।

३ सभा के नये भवन के निर्माण के लिए।

४ सभा की ओर से बनाये जा रहे कादियां के लेखराम स्मारक मोही के स्वतन्त्रानन्द स्मारक तथा तलवन के श्रद्धानन्द स्मारक के निर्माण के लिए।

५ प्रचारार्थ एक जीप खरीदने के लिए।

६ सभा की शिक्षा संस्थाओं के संचालन तथा संवर्धन के लिए।

वीरेन्द्र सभा प्रधान

—रामचन्द्र जावेद सभा मन्त्री

आर्य जगत के समाचार

पारिवारिक सत्संग

आर्य युवक सभा की तरफ से १६ ७ ८१ को बी० एस० एफ० की किसी एक चौकी पर यज्ञ का आयोजन किया गया। प्रो० जगदीश आर्य ने यज्ञ करवाया तथा वेद का उपदेश किया और ब्रह्मचारी महेश जी ने मधुर भजनो से सबको नर नारियो को आनन्दित किया।

वार्षिकोत्सव

आर्य समाज गिदड़बाहा का वार्षिक उत्सव १९ अगस्त से २३ अगस्त तक बड़ी धूम धाम से मनाया जा रहा है प्रातः यज्ञ तथा रात्रि कथा म प्र मभिक्षु जी करगे। २२ अगस्त को जन्माष्टमी को दो बजे शोभा यात्रा होगी तथा २३ अगस्त को विशाल यज्ञ तथा कवि सम्मेलन होगे जिसमे कई उच्चकोटि के विद्वान तथा भजनोपदेशक भी पधार रहे है

आर्य वीर दल गुरुकुल करतारपुर का स्थापना



रविवार १२ ७ ८१ मध्याह्नोत्तर साढ़े चार बजे आर्य वीर दल गुरुकुल करतारपुर का स्थापना दिवस श्री आचार्य नरेश कुमार जी शास्त्री व्याकरणाचार्य सरक्षक आर्य वीर दल गुरुकुल करतारपुर की अध्यक्षता में सोत्साह सम्पन्न हुआ। आर्य वीरो ने वैदिक राष्ट्र गीत से कार्य क्रम का आरम्भ किया। तदनन्तर आर्य आर्य वीरों ने अपने अपने भाषण गीत भजन कविता आदि रोचक कार्यक्रम प्रस्तुत किये। ब्र० प्रियव्रत जी ने अपने ...क—आर्य वीर दल की ... गुरुकुलीय जीवन पूर्व का अपेक्षा अधिक सयमित हुआ और इसके विचारो मे उन्मुक्तता तथा शरीर मे परिवर्तन आया। ब्र० सत्यदेव जी ने अपने भाषण मे एक स्थान पर आर्य वीर दल को सार्वभौम घोषित करते हुए आर्य वीर दल को युग निर्माण की एक श्रृंखला कहा। तत्पश्चात् श्री सुखदेवराज जी (भूतपूर्व शिक्षक सार्वदेशिक आर्य वीर दल पजाब हरियाणा हिमाचल प्रदेश) ने आर्य वीरो को बड़ जोशीले शब्दो मे सम्बोधन करते हुए उन्हे अपने कर्त्तव्य की ओर प्रेरित किया। श्री किशनलाल जी अध्यापक ने आर्य वीरो को आर्यों के इतिहास से परिचित कराया। श्री साम नाथ जी यादव ने भी आर्य वीरो को प्रेरणाप्रद विचार दिए।

गुरुकुल कांगड़ी, विश्वविद्यालय को 50 लाख रुपए की राशि

श्री बलभद्र कुमार जी हूजा कुलपति के प्रयत्नों से गुरुकुल कांगड़ी विश्व विद्यालय को छठी पंचवर्षीय योजना के अन्तर्गत विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा ५० लाख रुपए की राशि निर्धारित की गई है। इस सम्बन्ध में विश्वविद्यालय अपनी योजनाएं बनाकर शीघ्र ही विश्व विद्यालय अनुदान आयोग को प्रेषित करेगा। इस राशि का उपयोग भवन, प्रयोगशाला निर्माण प्रोफेसरो आदि के पदो के सृजन ... पुस्तक ... एम० एस सी और एड तथा अन्य विषयों में एम ए कक्षाएं खोलने आदि के लिए किये जाने की सम्भावना है।

निश्चय ही इस अनुदान से विश्व विद्यालय और अधिक प्रगति की ओर अग्रसर होगा।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा अर्जुन प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

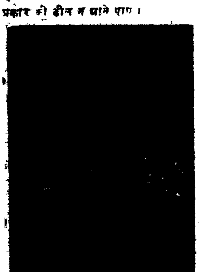
17 AUG 1981

वर्ष 14—अंक 20, 25 श्रावण सम्वत् 2038, तदनुसार 9 अगस्त 1981, दयानन्दाब्द 156 । एक प्रति 35 पैसे (वार्षिक शुल्क 15 रुपए)

धर्म रक्षा महाभियान

ढील न आने पाए—जावेद

जालन्धर, (वि० प्र०)—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महासचिव श्री० राम चन्द्र जावेद ने आर्यों को आह्वान किया है कि धर्म रक्षा महाभियान में किसी प्रकार की ढील न आने पाए।



यहां जारी की गई एक प्रेस विज्ञप्ति में श्री० जावेद ने दावा किया कि हरिजन स्नेह सम्मेलनों के सदर्भ में आर्य समाजों में अत्याधिक उत्साह है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस कार्यक्रम से हरिजन आर्यसमाज के निकट आए हैं और गुण, कर्म, स्वभाव के आधार पर वर्ण व्यवस्था से वे प्रभावित हुए हैं।

श्री जावेद ने कहा कि धर्म रक्षा महाभियान सतत रूप से चलाया गया एक आन्दोलन है जिसका २६ जुलाई से प्रारम्भ आशातीत सफल रहा।

उन्होंने घोषणा की कि शीघ्र ही धर्म रक्षा महाभियान के अन्तर्गत अनेक कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे और मुस्लिम व ईसाई संस्थाओं के राष्ट्र विरोधी षड्यन्त्रों को पूर्णतया असफल बना दिया जाएगा। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि धर्मान्तरण का तूफान बन्द हो जाएगा।

हरिजनों ने यज्ञोपवीत पहने, यज्ञ किए और गले मिले

सुभाष चन्द्र आर्य—

जन्मगत आधार को लेकर टिका वर्णव्यवस्था का ढांचा तो १९वीं शताब्दी में ही उस समय चरमरा गया था जब महर्षि दयानन्द सरस्वती ने वर्ण व्यवस्था को गुण-कर्म-स्वभाव की सुदृढ बुनियाद पर प्रतिष्ठित किया। फिर फिर क्या था, समस्त पौराणिक मान्यताए ध्वस्त हो गईं। धर्म के तथाकथित ठेकेदारों की मन घड़न्त मान्यताए तिरोहित होने लगीं। लेकिन ५ हजार वर्षों में भटके पौराणिक समाज में कुछेक पुरातपंथी संस्कारों के अवशेष अभी भीतर ही भीतर जिन्दा रहे।

बस! विधर्मियों ने हिन्दू समाज की इसी दुर्बलता को ही अपने षड्यन्त्रों की कामयाबी का सूत्र बना लिया इस्लामी और क्रिश्चानी शत्रुओं ने हिन्दू समाज की जन्मना वर्ण व्यवस्था को प्रचार-प्रसार प्रचारित करके विघटन का बीजारोपण किया। हिन्दू समाज के दलित और दुर्बल वर्ग (हरिजन) पर भारी धन और बल के साथ आक्रमण किया। हरिजनों को उन्होंने अपने मतों में आत्मसात कर लेने की घृणित एवं कुटिल चाल चली। देश भर में प्रच्छन्न रूप से छिपी इन विधर्मी एवं विदेशी शक्तियों ने सम्पूर्ण भारत पर इस प्रकार से सांस्कृतिक आक्रमण छेड दिया। लेकिन स्वभाषा, स्वधर्म, स्वसंस्कृति और स्वदेश की रक्षा में सदैव अग्रणी रहने वाले आर्यसमाज ने वर्षों से आई शिथिलता को तोड कर इस चुनौती को खुले हृदय के साथ स्वीकारा। सुप्त हिन्दू जाति को झिंझोड़ा जन्मगत वर्ण-व्यवस्था को शास्त्र विरोधी घोषित किया।

आर्य समाज की सर्वोच्च अधिकारिणी सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने धर्म रक्षा महाभियान का तुमुलनाद कर दिया। सभा के आदेश

(शेष पृष्ठ २ पर)

पंजाब हिन्दू संगठन द्वारा संघर्ष का शंखनाद

अलग कौम का नारा लगाने वालें मताधिकार से वंचित किए जायें

अमृतसर, (वि. प्र.) पंजाब हिन्दू संगठन ने राज्य के हिन्दुओं के हितों की रक्षा के लिए संघर्ष करने का आह्वान किया है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी की अध्यक्षता मे विभिन्न हिन्दू संगठनों की यहां आर्य समाज शक्ति नगर में हुई एक बैठक मे चार प्रस्ताव पारित हुए जिनमें एक संघर्ष की रूप रेखा बनाने तथा इसकी तिथि निश्चित करने, अन्य आवश्यक कार्यों और स्वयंसेवकों की भर्ती आदि के लिए उपसमितियां गठित करने का अधिकार श्री वीरेन्द्र को सौंपा गया।

दूसरे प्रस्ताव में संगठन का एक प्रतिनिधिमण्डल प्रधानमन्त्री श्रीमती गांधी को मिलने के लिए भेजने तथा उन्हें ज्ञापन देने का निर्णय किया है। ज्ञापन में पंजाब में उग्रवादी अकालियों द्वारा उत्पन्न स्थितियों तथा अल्पसंख्यक हिन्दू सम्प्रदाय की कठिनाइयों का विवरण दिया जाएगा। एक सप्ताह तक ज्ञापन तैयार करने के बाद प्रधानमन्त्री को पत्र भेजकर प्रतिनिधिमण्डल को मिलने का समय निश्चित करने का आग्रह किया जाएगा।

बैठक में पारित दो प्रस्तावों मे पंजाब की वर्तमान स्थिति का उल्लेख



करते हुए कहा गया है कि वर्तमान स्थिति से निपटने के लिए सरकार तथा लोगों को सगठित होकर तथा मजबूती से उसका मुकाबला करना चाहिए। प्रस्ताव में इस बात की आशंका व्यक्त की गई है कि राज्य में उग्रवादी अकालियों के सिक्ख अलग 'कौम' के नारों से १९४७ में देश विभाजन के समय जैसे हालत उत्पन्न हो सकते हैं। इसलिए इन का सरकार और लोगों द्वारा सगठित ढग से मुकाबला किया जाना चाहिए।

सगठन ने मांग की है कि भारत को अलग-अलग कौमों का देश कहने वालों को मताधिकार से वंचित किया जाए और उन्हें विधानसभाओं अथवा लोकसभा में प्रतिनिधित्व न दिया जाए। सगठन ने यह माग भी की कि स्वयं अलग 'कौम' कहने वाली संस्थाओं तथा विदेशी सहायता प्राप्त करने वाली संस्थाओं को गैर कानूनी घोषित कर प्रतिबन्ध लगाया जाए।

पंजाब की हिन्दू जनता से अपील की गई कि वे देश की अखण्डता को भग करने वालों का सगठित होकर मुकाबला करें। प्रस्ताव यह भी कहा गया कि

(शेष पृष्ठ २ पर)

वेद और श्रावणी पर्व

—धर्मवीर शास्त्री, शिक्षा वाचस्पति आर्य समाज जीतपुर (मेरठ)

आर्यों के तीन प्रकार के पर्व हैं एक तो वे जो ऋतु से सम्बन्ध रखते हैं जैसे हरि तृतीया, श्रावणी दीवाली होली आदि दूसरे वे पर्व हैं जो जीवन से सम्बन्ध रखते हैं। जैसे कृष्णजन्माष्टमी रामनवमी इत्यादि और तीसरे वे पर्व हैं जो राष्ट्रीय पर्व के नाम से पुकारे जाते हैं जैसे १५ अगस्त जैसा कि ऊपर हम लिख आये हैं कि श्रावणी पर्व ऋतु सम्बन्धी पर्व है इस का एक नाम ब्रह्म ऋषि तर्पण है तो एक अन्य नाम रक्षा बन्धन भी है। जैसे अगर हम इस की वास्तविकता में जाना चाहें तो पता चलेगा कि यह पर्व विशेषत वेद रक्षा का पर्व है वेद सब सत्यविद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना -सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।

कई सज्जन कहने लग जाते हैं कि इस नियम में स्वामी जी ने वेद का पढ़ना पढ़ाना तो धर्म बताया पर आचरण करना कहीं नहीं लिखा। उन सज्जनों के अनुसार नियम की लाईन ऐसी होनी चाहिए थी कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है वेद का पढ़ना पढ़ाना सुनना सुनाना तथा आचरण करना सब आर्यों का परम धर्म है मैं ऐसे सज्जनों से निवेदन करना चाहता हू कि भाई जहां वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना जैसे शब्दों का प्रयोग है वहां आचरण करना तो स्वत ही भाव आ गया क्योंकि महाभाष्य में महर्षि पतञ्जलि ने एक स्थान पर लिखा है।

विद्या चतुर्भिप्रकारै उपयुक्ता भवति आगम कालेन स्वाध्याय कालेन प्रवचन कालेन व्यवहार कालेन इति

अर्थात विद्या की उपयोगिता चार साधनों से हैं आगम काल (श्रवणकाल) स्वाध्याय काल प्रवचन काल तथा व्यवहार काल से। यहां पर व्यवहार काल आचरण करना कराना का ही तो भाव स्पष्ट कर रहा है। अत उक्त वक्ता का निष्कर्ष तो स्वतः हो जाता है पर वेद को पढ़ना पढ़ाना भी हमारा जाता रहा आज के दिन हम विचारें कि हम ऋषि के बनाये नियम से कितनी दूर होते चले जा रहे हैं। आज मुसलमानों के घर में कुरआन शरीफ ईसाइयों के घर में बाईबल तो मिलेगी पर आर्यों के घर में चारों वेदों में से एक वेद भी देखने को मुश्किल से मिलेगा।

प्राय समस्त धार्मिक ग्रन्थों में हमें वेद की महिमा देखने को मिलेगी विस्तारभय से मैं सब प्रमाण न देकर केवल मनु जी का एक वाक्य लिख देना उपयुक्त समझूंगा।

सत्यसेत सर्व कर्माणि वेदमेक न सत्यजेत सन्यासी अर्थ सब कर्मों को त्याग दे पर वेद के स्वाध्याय को न छोड़े। इस वाक्य से स्पष्ट है कि सभी

हमें याद रखना चाहिए कि वेद तथा वेदानुकल ग्रन्थों का पठन पाठन ही स्वाध्याय है। मनोरंजन के लिए किस्से कहानियां आदि पढ़ना स्वाध्याय नहीं।

आश्रम वासी तो वेद को पढ़ें ही पढ़ें परन्तु सन्यासी भी जो कि सर्व त्यागी हो जाता है वह भी वेद के स्वाध्याय को न छोड़े। आप इस वाक्य से ही अनुमान लगा सकते हैं कि वेद की कितनी महिमा है।

हमें याद रखना चाहिए कि वेद तथा वेदानुकूल ग्रन्थों का पठन पाठन ही स्वाध्याय है। मनोरंजन के लिए किस्से कहानियां आदि पढ़ना स्वाध्याय नहीं। जैसे विकृत भोजन से शरीर रोगी हो जाता है उसी तरह उपन्यास तथा शृंगार रस की दूषित कहानियाँ आत्मा और मन को विकृत कर देती हैं और आज हम एक ओर बहुत कार्यवाही करते रहे हैं वहीं नहीं हमारी सरकार भी इस पर रोक नहीं लगाती कि जिससे ऐसे गन्दे उपन्यास कहानियां आदि न लिखी जाएं आज हमारी संस्कृति पर इन अश्लील किस्से कहानियों उपन्यासों तथा चलचित्रों के पोस्टरों को देखने से बहुत गलत प्रभाव पड़ रहा है मुझे इस बात की खुशी है कि मेरठ शहर के आर्य समाज के साप्ताहिक सत्संग में इस बात की गहरी चिन्ता व्यक्त की गई कि प्रतिदिन नैतिक मूल्यों का ह्रास हो रहा है आर्य समाज ने 'सान्ध्य टाईम्स' में दिल्ली में कैबरा (डांसों) नृत्यों का अधिक मात्रा में विज्ञापन आदि पर सरकार का ध्यान दिलाया है तथा सरकार से अनुरोध किया है कि इन पर रोक लगाई जाए। मुझे इस बात की भी खुशी है सुमेधा पत्रिका का प्रकाशन कर आर्य समाज मेरठ शहर ने एक सराहनीय काम किया है जिसके पढ़ने से नवजागरण होगा। मैं इसके लिए उन्हें बधाई भी देता हू। परमात्मा करे यह पत्रिका दिनों दिन प्रगति कर लोगों का मार्ग दर्शन करती रहे।

वैदिक काल में श्रावण पूर्णिमा से प्रारम्भ करके चार मास तक विशेष रूप से वेदों का स्वाध्याय होता था उस दिन वृहद यज्ञ कर के यज्ञोपवीत बदल कर सभी वेदरक्षा का व्रत लेते थे। धीरे धीरे वेदों का पठन पाठन समाप्त हो गया और इस पर्व का सम्बन्ध स्त्री जाति की रक्षा तथा ब्राह्मणों की रक्षा से हो गया। विदेशियों के आक्रमण काल में जब सभी जाति तथा ब्राह्मणों का मान नष्ट होने लगा उस समय रक्षा बन्धन कि प्रथा प्रचलित हुई। आज बहिनें भैयों के लिए रक्षा सूत्र न बांधें बल्कि आज बहिनों को चाहिए कि रक्षा सूत्र बांध कर वेदकी रक्षा दिलाने की प्रतिज्ञा भाईयों से इस अवसर पर करायें स्वयं भी वेद पढ़ें और भाईयों को भी प्रतिज्ञा करायें भगवान करें वह दिन जल्दी हमारे देश में आवे कि माताएँ भी चरखा कातती हुई वेद की सूक्तियों को बोलती हुई सुनाती दें।

पंजाब हिन्दू संगठन

(पृष्ठ १ का शेष)

हिन्दू जनसंख्या [illegible] के [illegible] अत्याचार भी [illegible] रहे हैं। [illegible] में [illegible] साम्प्रदायिक उन्माद भड़काने वाले [illegible] डटकर मुकाबला किया जाएगा और [illegible] हित के लिए कुर्बानी [illegible] न हिचकिचाया जाए।

चौथे प्रस्ताव में पंजाब सरकार से कहा गया कि यदि [illegible] हिन्दुओं को उनका उचित स्थान प्रदान न किया तो हिन्दू [illegible] कुर्बानियां देंगे और ऐसी स्थिति से उत्पन्न होने वाले हालातों के लिए सरकार उत्तरदायी होगी।

इस बैठक को सम्बोधित करने वाले सभी संगठनों विशेषकर [illegible] की संगठनों ने हिन्दुओं के अधिकारों के व उनकी सुरक्षा के लिए तन मन धन से सहायता करने का विश्वास दिलाया। सायंकाल दुर्ग्याणा मन्दिर में एक जनसभा का आयोजन किया जिसे श्री वीरेन्द्र प० मोहनलाल, श्री चतुर्भुज मित्तल आदि नेताओं ने सम्बोधित किया।

पंजाब हिन्दू संगठन की बैठक को सम्बोधित करने वाले अन्य वक्ताओं में सर्वश्री चतुर्भुज मित्तल डा० काशी चरण महाशय मुनीलाल खन्ना जगन्नाथ मिश्रा महाशय नन्द किशोर [illegible] सिंह आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

हरिजन गले मिले

(पृष्ठ-१ का शेष)

का अनुशासित आर्यसमाजियों ने निरोधार्य कर सर्वत्र एक महान्आन्दोलन छेड़ दिया। आर्य समाज के इस महा आन्दोलन के महत्व को अनुभव करते हुए सम्पूर्ण हिन्दू समाज एक पथ पर संगठित हो गया। आर्य समाज की इस अभूतपूर्व सफलता की सर्वत्र विजय दुन्दुभि बजी।

राष्ट्र भर में हरिजन स्नेह सम्मेलन हुए। शताब्दियों से उत्पीड़ित दलित और उपेक्षित हरिजनों को हृदय से लगाकर समस्त भेदभाव मिटा दिए। वर्ण भेद की असमान दीवारें धराशायी हुईं। हिन्दू समाज के इसी दुर्भेद्य अंग ने समादृत सम्मानित होकर उसकी सफलता हाथ बनने का संकल्प लिया। उनका सार्वत्रिक युगपति [illegible] हुआ। गत २६ जुलाई को देश के कोने कोने में हरिजनों ने यज्ञोपवीत संस्कार पहने, यज्ञों में यजमान बने। तथाकथित सवर्णों ने उन्हें अपने गले से लगा लिया। देश भर में गले-मिलने भेदभाव मिटाते हिन्दू समाज के इस दृश्य को देखकर [illegible] उसकी अखण्डता के [illegible] की अविरल धारा में [illegible] आधार पर परंपरागत वर्ण-व्यवस्था का ढांचा बह गया। सम्पूर्ण हिन्दू समाज एकीकृत और संगठित हो गया।

ओ३म्

आर्य मर्यादा

पितुं नु स्तोषं महो धर्माणं तविषीम् ।
यस्य त्रितो व्योजसा वृत्रं विपर्वमर्दयत् ॥ ऋ० १।१८७।१॥

अर्थ—पिता के समान प्राणीमात्र के रक्षक अन्न का मैं निश्चयपूर्वक आदर करता हूं, उसे पूज्य समझता हूं, उसकी स्तुति करता हूं, क्योंकि वह प्राणिमात्र में प्रकार बलों का धारक है। उसके द्वारा प्रदत्त शक्ति से ही शरीर आत्मा और मन इन तीनों में बल, मेधा या ज्ञान में प्रवृद्ध मानव आन्तरिक और बाह्य शत्रुओं को उनकी हड्डी पसली तोड़ कर या उन्हें निस्तेज करके समाप्त कर देता है।

—सम्पादकीय—

पंजाब में आर्यसमाज के लिए नई चुनौती

आर्यसमाज का सारा जीवन ही चुनौतियों से भरा रहा है एक समाप्त होती है और दूसरी सामने आ जाती है और आर्यसमाज की भी यह विशेषता रही है कि उसने सदा इन चुनौतियों को स्वीकार किया है और उनका यथोचित उत्तर भी दिया है। यही कारण है कि आज सब व्यक्ति यह समझते हैं कि आर्यसमाज ही एक ऐसी संस्था है, जो सक्रिय रूप में उन समस्याओं का समाधान ढूंढने का प्रयत्न कर रही है, जो इस समय हमारे देश के सामने है। तामिलनाडू के मीनाक्षीपुरम में जो कुछ हुआ सब से पहले आर्य समाज ने अपने देशवासियों का ध्यान उस तरफ दिलाया था। अब तो और भी कई संस्थाएं उसमें रुचि लेने लग गई हैं, परन्तु आर्यसमाज ने ही सब से पहले अपने देशवासियों को जगाया था। और उसका परिणाम बहुत ही अच्छा निकला है।

पंजाब में भी समय-समय पर हमारे सामने कई प्रकार की चुनौतियां आती रहती हैं। आजकल अकालियों की ओर से हमें एक चुनौती दी जा रही है और वह यह कि देश की एकता और अखण्डता की सुरक्षा की जा सकती है या नहीं? आर्यसमाज इसमें भी सब से आगे है। अमृतसर में सिगरेट बीड़ी के नाम पर अकालियों ने जो शरारत शुरू की थी, उसका शक्तिशाली उत्तर भी आर्य समाज ने ही दिया था। मैं पंजाब की आर्य जनता के सामने एक नई समस्या रखने लगा हूं। मैं चाहता हूं कि वे उसकी ओर भी ध्यान दें। मैंने इसका नाम चुनौती इस लिए रखा है क्योंकि यह एक गम्भीर समस्या है और पंजाब में किसी ने भी अभी तक इस ओर ध्यान नहीं दिया। मैं चाहता हूं कि आर्यसमाज इस में भी सब से आगे रहे और इस समस्या का समाधान ढूंढने के लिए भी कोई सक्रिय पग उठाए। जैसा कि यह सब को मालूम है कि उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश आदि प्रांतों से हमारे लाखों देशवासी पंजाब में आ गए हैं। वे आते तो यहां बड़े-बड़े जिम्मीदारों की सहायता के लिए है, परन्तु उसी के साथ वे कुछ और व्यवसाय भी करने लग जाते हैं। कुछ कारखानों में भी काम करते हैं और कुछ लोग रिक्शा चलाते हैं, कई कार्यालयों में चपड़ासी बन जाते हैं। निश्चित रूप से तो कहना कठिन है कि उनकी संख्या कितनी है। परन्तु वे हजारों नहीं लाख हैं। प्रश्न हमारे सामने यह है कि इन लाखों व्यक्तियों को कौन सम्भालने का प्रयत्न करे? ऐसा प्रतीत होता है कि कम्युनिस्टों ने इनकी ओर विशेष ध्यान दिया है। वह इन के संगठन बना रहे हैं। और ऐसी स्थिति पैदा कर देना चाहते हैं कि ये लोग जिन्हें साधारण भाषा में भैय्ये कहा जाता है, इनके प्रभाव में आ जायें और वे इन्हें अपने राजनैतिक उद्देश्यों के लिए जैसे भी प्रयोग करना चाहें कर सकें। यह स्थिति अत्यन्त असन्तोषजनक है। यदि और किसी ने इसकी ओर ध्यान न दिया तो यह कम्युनिस्टों की तरफ झुक जायेंगे। इसलिए मैं पंजाब की सब आर्यसमाजों से सानुरोध निवेदन करना चाहता हूं कि उन्हें इन लोगों की ओर ध्यान देना चाहिए। मुझे बताया गया है कि इन्होंने अपनी सभायें बना ली है। उनका पता किया जाये। उनके अधिकारियों से मिला जाये। उन्हें आर्यसमाज के सत्संग और दूसरे उत्सवों पर बुलाया जाये। और उनके दुख-सुख में आर्यसमाजी सम्मिलित हों। ताकि दूसरे प्रान्तों से आए हुए हमारे यह भाई यह अनुभव न करें कि उन्हें पूछने वाला कोई नहीं। हमें यह भी न भूलना चाहिए कि उनके यहां रहने से हमारी राजनैतिक शक्ति भी बढ़ती है। इसलिए यह हमारे अपने हित में है कि हम उन्हें अपने साथ रखें। यह उसी स्थिति में सम्भव हो सकता है। कि सब आर्यसमाजें यह देखें कि उनके नगर में उत्तर प्रदेश-बिहार से आये हुए ये भैय्ये कहां रहते हैं? क्या काम करते हैं? उनके जो प्रमुख व्यक्ति हों, उनसे मिला जाये। और उनसे कहा जाये कि उन्हें जिस समय किसी प्रकार की कोई आवश्यकता हो तो वे आर्यसमाज के अधिकारियों से अपना सम्पर्क बनायें। यह अत्यन्त आवश्यक है कि यदि आर्यसमाज ने इस ओर विशेष ध्यान दिया तो ये सब आर्यसमाज के समीप आ जायेंगे और इनके द्वारा हमारी शक्ति भी बढ़ जायेगी यह तो आर्य बन्धु सुन ही चुके होंगे कि पंजाब में हिन्दुओं की संख्या पहले से कुछ अधिक हो गई है। यह बहुत कुछ इन लोगों के कारण ही हुए। इसलिए हमारा यह कर्त्तव्य हो जाता है कि हम इनके रक्षक भी और इनके सहायक भी बन कर और इन्हें अपना ही भाई समझ कर, अपनाकर अपने साथ लेकर चलें। यदि आर्यसमाज इस दिशा में कुछ काम कर जाये तो वह अपने देश और हिन्दू जाति के लिए उसकी एक बहुत बड़ी सेवा होगी। इसीलिए मैंने कहा है कि यह एक और चुनौती है, जो आर्यसमाज को स्वीकार करनी चाहिए। कुछ अकाली यह आन्दोलन चला रहे हैं कि इन भैय्यों को पंजाब छोड़ने पर विवश किया जाये। आर्यसमाज को यह आन्दोलन चलाना चाहिए कि कोई भी शक्ति इन्हें पंजाब से निकलने पर बाधित नहीं कर सकती। आर्यसमाज इनका पूरा साथ देगी। इसलिए सब आर्यसमाजों के अधिकारियों से कहना चाहता हूं कि उनके नगर में बिहार और उत्तर प्रदेश आदि से आए भैय्यों की तरफ विशेष ध्यान दें और ऐसी स्थिति पैदा करें कि वे आर्यसमाज के समीप आ जायें। और आर्यसमाज का एक अंग बन कर ही पंजाब में रहें। उनके दुख-सुख में हमें उनकी पूरी सहायता करनी चाहिए। ताकि वे निश्चिन्त हो कर पंजाब में रह सकें।

—वीरेन्द्र

पंजाब की आर्य जनता को मेरी बधाई।

मैं पंजाब की आर्य जनता को बधाई देना चाहता हूं कि २६ जुलाई को हमने जो धर्म रक्षा महाभियान प्रारम्भ किया था, वह पंजाब में बहुत सफल रहा है। इस समय तक भिन्न-भिन्न नगरों से जो-जो सूचनाएं मिली हैं, उनसे ऐसा प्रतीत होता है कि प्रायः सब आर्यसमाजों ने इस समारोह को उत्साह पूर्वक मनाया है। परन्तु कुछ आर्यसमाजों से मुझे यह शिकायत भी है कि जब कभी कोई ऐसा समारोह होता है, या आर्य प्रतिनिधिसभा उन्हें कोई आदेश देती है, तो वे सभा को यह लिखने का कष्ट नहीं करते कि उन्होंने सभा के आदेश की पालना की है या नहीं? मुझे यह कहने में भी कोई संकोच नहीं कि कुछ आर्यसमाजें अपने आपको स्वतन्त्र समझती हैं। उनका यह विचार है कि वे आर्य प्रतिनिधिसभा के आधीन नहीं है। इसलिए सभा के आदेश की पालना करें या न करें। यदि करें तो यह आवश्यक नहीं कि वे सभा को सूचित करें कि ये कुछ किया गया है या यह कुछ नहीं किया गया। यदि सभा को समय-२ पर आर्यसमाजों की गतिविधियों की सूचना मिलती रहे, तो सभा के लिए यह अनुमान लगाना सुगम हो जाता है कि कौन-कौन सी आर्यसमाज क्या-क्या कर रही है। कई बार सभा की ओर से समाजों को परिपत्र जाते हैं परन्तु समाजें उनका उत्तर भी नहीं देती। ऐसी स्थिति में न तो सभा का अनुशासन रह सकता है और न ही आगे पर बढ़ने का उत्साह मिलता है, बल्कि कई बार तो निराशा भी होती है। इसलिए सब आर्यसमाजों के अधिकारियों महानुभावों से मेरा यह नम्र निवेदन है कि वे सभा को अपनी गतिविधियों से पूरी तरह अवगत कराते रहें और साथ ही समय-२ पर सभा उन्हें जो आदेश देती रहे, उसे भी पूरा करने का प्रयत्न करते रहे। हमें यह कभी भी न भूलना चाहिए कि आर्यसमाज की शक्ति उसके संगठन और उसके अनुशासन में है। मुझे यह कहने में भी यह कोई संकोच नहीं कि ये दोनो चीजें शिथिल हो रही हैं। दूसरी धार्मिक संस्थाओं में हम से अधिक अनुशासन है यही कारण है कि उनका हम से अधिक प्रचार होता है इसलिए सब आर्यसमाजों के अधिकारी वर्ग से मेरी यह प्रार्थना है कि वे समय-समय पर जो भी काम करते रहे सभा को सूचित करते रहें, ताकि हमें पता चलता रहे कि हम कहां तक प्रगति कर सकेंगे।

—वीरेन्द्र

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज की देन

डा. राजेन्द्र शर्मा

किस्त— 9

ऋषि दयानन्द के शिष्यों में श्री महादेव गोविन्द (रानाडे मूल शब्द है) रानाडे थे जिन्होंने कांग्रेस के मूल सिद्धान्तों में राष्ट्रीयता की पुट दी। इसी (राजनैतिक) शिष्य परम्परा में श्री गोपाल कृष्ण गोखले का नाम आता है। श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति ने भारतीय 'स्वतन्त्रता संग्राम के इतिहास' में लिखा है कि महादेव गोविन्द रानाडे की शिष्यता ने गोखले को त्याग मार्ग का राही बना दिया था। इसी शिष्य परम्परा में गांधी जी गोखले को अपना राजनैतिक गुरु मानते थे। अतः यह सिद्ध है कि देश प्रेम की सुरधारा जो दयानन्द जी रूपी हिमालय से प्रादुर्भूत हुई वह म० गो० रानाडे तथा गोखले रूपी क्षेत्रों को सींचती हुई महात्मा गांधी रूपी क्षेत्र को हरित करने में वरदान सिद्ध हुई।

गांधी जी अफ्रीका से आये तब तक वे मिस्टर शब्द से सम्बोधित किये जाते थे। स्वामी श्रद्धानन्द ने गुरुकुल कांगड़ी में इन्हें सम्मानित कर मिस्टर से महात्मा बनाया। अप्रैल १९१९ ई० में जलियांवाला गोली काण्ड हुआ। मार्शल ला का दमनचक्र चल रहा था। गोलियों के घाव हरे थे। तब देश भक्ति का दम भरने वाले सभी कांग्रेसी चुप थे। चौ० बुग्गा और महाशय रतनचन्द बन्दी बनाकर अण्डेमान भेज दिए गये थे। मार्शल ला के अभियुक्त डा० सत्यपाल की सेवाएं त्याग तथा बलिदान आर्य समाज के राष्ट्रीय दृष्टिकोण का एक विशेष अनूठा अध्याय है। उस विकट संकट के समय में स्वामी श्रद्धानन्द ने अलौकिक साहस का परिचय देकर कांग्रेस अधिवेशन के स्वागताध्यक्ष का कार्य भार सम्भाला जिसके कारण गांधी जी का देश की राजनीति पर अधिकार हो गया। मार्च १९१९ ई० में रौलट एक्ट के विरुद्ध दिल्ली में विशाल जलूस निकला जिसका नेतृत्व श्रद्धानन्द जी कर रहे थे। गोरे और गोरखे सैनिकों ने मारने को बन्दूकें तानीं स्वामी जी छाती खोल कर खड़े हो गए और संगीनों की धमकी हवा में उड़ गई। श्रद्धानन्दजी संसार के इतिहास में पहले व्यक्ति थे जिन्होंने जामा मस्जिद की वेदी पर से ४ अप्रैल १९१९ ई० को राष्ट्रीय परिस्थितियों के विचार-विनिमय हेतु मुसलमानों के आमन्त्रण पर अल्लाहो अकबर के नारों के साथ ऋग्वेद के एक मन्त्र पर व्याख्यान प्रारम्भ कर 'ओम शान्ति शान्ति शान्ति' के साथ समाप्त किया। ६ अप्रैल १९११ ई० को पुनः फतहपुरी, दिल्ली की मस्जिद में स्वामी जी का वाज (व्याख्यान) हुआ। फलतः हिन्दू-मुस्लिम एकता ने गांधी जी के असहयोग आन्दोलन को असाधारण बल दिया जिसके माध्यम स्व० श्रद्धानन्द जी थे।

महर्षि दयानन्द के राष्ट्रीयता के पक्षपोषण का प्रत्यक्ष स्वरूप इनके शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा के व्यक्तित्व तथा कृतित्व में मिलता है जिन्हें ऋषि ने अध्ययन हेतु इंगलैंड नियुक्त किया था। विदेशों में देश को दासता के पाश से मुक्त करने हेतु जो क्रान्ति हुई उसका श्रेय उनके शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा को है। ये काठियावाड़ में जन्मे थे जिसने अनेक महापुरुषों को जन्म दिया। ये महर्षि के अनन्यभक्त थे जिन्हें ऋषि ने १८७९ ई० में इंगलैंड भेज दिया। देश की स्वाधीनता की आकांक्षा और स्वाभिमान की भावना ऋषि की शिक्षा तथा सत्संग से उत्पन्न हुई। जिसमें धार्मिक तथा राजनैतिक उद्देश्य अन्तर्निहित थे। ये रतलाम, बड़ोदा, उदयपुर, जूनागढ़ आदि राज्यों में दीवान रहे। जूनागढ़ में घुटन का अनुभव हुआ जहां वातावरण संकुचित था। अंग्रेज सरकार के दुर्व्यवहार से ये अप्रसन्न थे। अतः इनका सम्बन्ध महाराष्ट्र के स्वाधीनतावादी युवक दलों तथा उग्र नेता महात्मा तिलक से हो गया। १८९६-९७ ई० में देश अकाल से पीड़ित था तब अंग्रेजों ने करोड़ों का अनाज भारत से इंग्लैण्ड भेजा जिससे जनता में रोष व्याप्त हो गया। उसी समय पूना में प्लेग का प्रकोप हुआ। शासन ने क्षेत्र खाली करने का आदेश दिया जिसमें पुलिस ने असभ्यता तथा नृशंसता का व्यवहार किया। फलस्वरूप बालकृष्ण व दामोदर (चाफेकर बन्धुओं) ने मिस्टर रेण्ड तथा लैफ्टीनेन्ट कर्नल एमर्स्ट को गोली से उड़ा दिया। उस दिन २२ जून १८९७ ई० को विक्टोरिया का सतरवां राज्याभिषेक दिवस मनाया जा रहा था। नगर में उत्सव में आतिशबाजियां छूट रही थीं। भारतीय सूरमाओं के हाथों से यह पहली ही गोली दागी गई थी जिसके कारण दयानन्द के भक्त शिष्य श्याम जी कृष्ण वर्मा को जीवन की अन्तिम घड़ियों तक मातृ भूमि से दूर रहना पड़ा। बालकृष्ण चाफेकर को हैदराबाद (दक्षिण) भाग गया था। उसकी सहायता तिलक ने प० विनायकराव विद्यालंकार के पिता वहां के मुख्य न्यायाधीश श्री केशवराव कोरटकर के माध्यम से धन भेजकर की, जिन्होंने वहां आर्य समाज का बीजारोपण किया था। लन्दन में श्याम जी ने इण्डिया हाऊस की स्थापना की, जिसमें वहां के भारतीय छात्रों को स्वाधीनता का पाठ पढ़ाकर स्वतन्त्रता संग्राम में जीवन अर्पण करने हेतु तैयार किया जाता था। ऐसे छात्रों को दयानन्द छात्रवृत्ति दी गई जिनमें वीर सावरकर, लाला हरदयाल, सेनापति बापट तथा मदनलाल ढींगरा भी थे। यहां गदर दिवस धूमधाम से मनाया गया। १९०८ ई० में श्याम जी ने लन्दन विश्वविद्यालय में बम बनाने की सामग्री तथा उपायों पर व्याख्यान देकर कहा था कि जब आप में से कोई जान पर खेलने को तैयार होगा तब उसे पूरा विवरण दूंगा। लन्दन की सरकार को यह ज्ञात हुआ तो वह इनके पीछे पड़ गई और श्याम जी फ्रांस चले गये। १९१४ के विश्व युद्ध में वहां भी कठिनाई हुई तब ये स्विटजरलैंड चले गये वहां अपने देश की स्वतन्त्रता के अरमान संजोए। महर्षि दयानन्द का शिष्य मातृ भूमि से दूर १९३० ई० में परलोक सिधार गया। वीर सावरकर इन्हीं के शिष्य थे जिन्हें विवाह होते ही काले पानी का दण्ड मिला। देश की दासता की कड़ियों को तोड़ने हेतु परिवार को बिलखता छोड़ अण्डेमान में अपनी सिसकती जवानी बता दी।

> देश प्रेम की सुरधारा जो दयानन्द जी रूपी हिमालय से प्रादुर्भूत हुई वह म. गो. रानडे तथा गोखले रूपी क्षेत्रों को सींचती हुई महात्मा गांधी रूपी क्षेत्र को हरित करने मे वरदान सिद्ध हुई।

महर्षि की देश भक्ति के शिष्यों की परम्परा में पंजाब के लाला लाजपतराय दयानन्द की अपना आचार्य मानते हुये स्पष्ट आर्य समाजी रूप में राष्ट्रीय कार्य क्षेत्र में आए, इस नरनाहर की दहाड़ से लन्दन की पार्लियामेंट की दीवारें कम्पित करती थीं। इन्होंने आर्य समाज की राष्ट्रीय-शिक्षण संस्थाओं की स्थापना में तन-मन-धन अर्पण कर दिया। ये ब्रिटिश सरकार की नीति के विरोधी थे और उग्र विचारों के कारण स्वराज की भिक्षा मांगने के पक्ष में नहीं थे। १८९२ ई० में जब कांग्रेस का नाम लेवा और पानीदेवा कोई नहीं था तब इन्होंने रात-दिन एक करके लाहौर अधिवेशन कराया। सब आर्य समाजी तन-मन-धन से जुट गये। आज देश उस पुराने इतिहास को भूल रहा है। अधिवेशन की सफलता से सरकार की वक्र-दृष्टि हो गई। मई १६ सन १९०७ ई० को लाला जी को निर्वासित कर मांडले जेल (बर्मा) में बन्द कर दिया। गुप्तचरों ने उस समय यह रिपोर्ट दी थी कि— पंजाब के आर्य समाजियों की एक लाख सेना लाला जी के इङ्गित पर विद्रोह करने को उद्यत है और आर्य समाज विद्रोह का केन्द्र है। लन्दन में विशाल सभा हुई, पार्लियामेंट में प्रश्न हुए। अन्त में ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री ने ११ नवम्बर १९०७ को लाला जी व अजीतसिंह जिन्हें जेल में मिलने भी नहीं दिया गया था को मुक्त करने के आदेश दिए और दोनों इसी दिन मुक्त कर दिए गए। फिर लाला जी इंगलैंड गये वहां इनका सम्पर्क श्यामजी कृष्ण वर्मा से हो गया। तभी १९१४ का विश्व युद्ध छिड़ा। अंग्रेजों को भय था कि इनके भारत लौटने से स्थिति विस्फोटक हो जाएगी अतः इन्हें भारत से निर्वासित रखा। नवम्बर १९१४ में अमरीका चले गये और वहां लाला जी ने तरुण भारत पुस्तक के माध्यम से प्रचार किया कि भारत ब्रिटिश शासन नहीं चाहता तथा देश स्वाधीन करने हेतु बड़े से बड़ा बलिदान करने को तैयार है। इण्डियन होम रूल लीग की स्थापना हुई जिसमें आर्य समाजी डा० हार्डिकर तथा डा० केशवदेव ने सहयोग दिया जिससे अमरीका में भारत की प्रतिष्ठा बढ़ गई। जलियांवाले बाग में सभा में एकत्रित जनसमूह पर डायर और गोरे सिपाहियों द्वारा गोलियों की वर्षा अंग्रेजी शासन के इतिहास का सबसे काला पृष्ठ है। इस क्रूर अमानुषिक अत्याचार से लाला जी व्याकुल हो उठे। तब आप स्वदेश लौटे।

(क्रमशः)

स्वामी दयानन्द रचित सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास पर आधारित—

आदर्श शासक कौन

वर्तमान समय में देश में बढ़ती हुई अनुशासनहीनता 'हाय-हाय मुर्दाबाद' के नारे, यत्र-तत्र हिंसा बलात्कार चोरियां डाके भूख तथा महंगाई आदि को देखते हुए मन में दुःख के साथ प्रश्न पैदा होता है कि आखिरकार यह सब क्यों हो रहा है? इस का एक ही उत्तर है कि हमारे शासक आदर्श नहीं हैं। अतः राजा कैसा होना चाहिए अथवा आदर्श राजा में क्या गुण होने चाहिए, इसका उत्तर महर्षि दयानन्द जी वेदों तथा मनुस्मृति को प्रमाण मानकर सत्यार्थ प्रकाश के छठे समुल्लास में देने का प्रयत्न किया है जिसका सारांश निम्नलिखित है—

किसी भी सभा का सभापति संस्था का उच्चाधिकारी राज्य या देश का प्रबन्ध कर्ता अथवा राजा को शासक कहते हैं।

अथर्व वेद के अनुसार

इन्द्रो जयाति न परा जयाता
अधिराजो राजसु राजयाते चर्कृत्य
ईड्यो वन्द्यश्चोपसद्यो नमस्यो भवेह।

अर्थ—हे मनुष्यो! जो (इह) इस मनुष्य के समुदाय में (इन्द्र) परम ऐश्वर्य का कर्ता शत्रुओं को (जयाति) जीत सके (न पराजयाते) जो शत्रुओं से पराजित न हो। राजाओं में अधिराज (सर्वोपरि) (राजयाते) प्रकाशमान हो (चर्कृत्य) (सभापति होने का अत्यन्त योग्य) (ईड्य) प्रशंसनीय गुण कर्म स्वभाव युक्त (वन्द्य) सत्करणीय (चोपसद्य) समीप जाने और शरण लेने योग्य (नमस्य) सब का माननीय (भव) होवे उसी को सभापति राजा करें।

तात्पर्य यह कि आदर्श शासक को प्रशंसनीय गुण कर्म स्वभाव से युक्त शत्रुओं को जीतने में समर्थ माननीय तथा शरण लेने योग्य होना चाहिए।

मनु जी के अनुसार

जो व्यक्ति वायु के समान सबके प्राणों के समान प्रिय हृदय की बात जानने वाला, पक्षपात रहित न्यायाधीश के समान वर्तने वाला सूर्य के समान प्रतापी न्याय, धर्म विद्या का प्रकाश फैलाने वाला तथा अन्याय व अज्ञान रूपी अन्धकार का नष्ट करने वाला, अग्नि के समान दुष्टों का नाश करने वाला, चन्द्र के समान श्रेष्ठ पुरुषों को आनन्द देने वाला तथा कुबेर के समान बहुत ऐश्वर्यशाली हो वही सभाध्यक्ष सभापति या राजा होने के योग्य होता है।

जो पुरुष प्रजा की रक्षा करने तथा उसे आनन्दित करने के लिए न्यायपूर्वक दण्ड देता है चारों वेदों का ज्ञाता सत्यवादी जितेन्द्रिय योगाभ्यासी उत्साही तथा दृढ़ निश्चयी होता है जो काम को बढ़ाने वाले मांस स्त्री का अतिसेवन तथा मद्य पान आदि दोषों से दूर रहता है क्रोध से उत्पन्न व्यसनों जैसे परनिंदा दूसरों के गुणों को अवगुण कहना कठोर वचन कहना धन का अन्याय के कार्यों पर खर्च करना आदि से दूर रहता है तथा जिस का जीवन अनुकरणीय होता है। मनु जी के अनुसार वही सच्चा राजा या आदर्श शासक होता है।

जो सभापति या राजा प्रजा के सुख की कामना करता है जो क्रोध व लोभ से अपने प्रजाजनों का सुख नष्ट नहीं करता जो अपनी प्रजा या सभा के कार्यों को देखकर दुष्टों पर तीक्ष्ण तथा श्रेष्ठों पर कोमल रहता है वही माननीय राजा पूजनीय तथा आदर्श कहलाता है।

जो राजा मित्र और शत्रु का परख करना जानता है जो धर्म का जानने वाले किए हुये उपकार को मानने वाले प्रसन्न स्वभाव के अनुरागी व्यक्ति को चाहे वह कितना छोटा क्यों न हो उसे मित्र बनाता है तथा जो बुद्धिमान कुलीन शूरवीर चतुर दाता कृतज्ञ किए हुए उपकारों को मानने वाले तथा धैर्यवान् पुरुष को शत्रु नहीं बनाता वह प्रशंसा को प्राप्त करता है। इस प्रकार जो प्रशंसनीय कार्य करता है उसे आदर्श राजा कहते हैं।

जो राजा अपनी प्रजा को अपनी सन्तान के समान सुख देता है उसको धन धान्य एवं आरोग्यकारी खानपान देकर सम्पन्न करता है तथा अपने काम में स्वतन्त्र रहकर भी प्रजा से सम्बन्धित प्रतियुक्त छाया में परतन्त्र रहता है। जो घूम घूम कर अपने मन्त्री मण्डल के कार्यों को देखता है तथा उनका सभा अथवा राजा की आज्ञा का उल्लंघन करने का साहस नहीं करता उसे आदर्श राजा कहते हैं।

जिसके राज्य अथवा सभा में सभी सभासद सदाचारी व धार्मिक होते हैं तथा परस्पर मिलकर प्रसन्नता पूर्वक रहते हैं जिसके राज्य में विद्वान लोगों का सम्मान होता है तथा जिसके सभी सभासद आलस्य रहित होकर स्वतन्त्रता पूर्वक अपने अपने कार्यों को करते हुये देश की उन्नति में लगे रहते हैं उस राज्य के राजा को आदर्श राजा या आदर्श शासक कहते हैं।

जिसके शासन में शत्रु अथवा दुष्ट जन शासन के दण्ड से कांपते हैं तथा परोपकारी व्यक्तियों अथवा देशभक्त लोगों को उत्साह वर्धक पुरस्कार मिलते हैं जिसके शासन में कोई चोरी डाका अत्याचार नहीं होता तथा स्त्रियों के साथ बलात्कार नहीं करते वह राजा अतीव श्रेष्ठ होता है।

जिस की सभा में चारों वेदों न्याय शास्त्र व धर्म शास्त्र के ज्ञाता ब्रह्मचारी गृहस्थी तथा वानप्रस्थी सदस्य हों और

प्रिं. विमला छावड़ा

उस सभा द्वारा की गई व्यवस्था या निर्णयों का राजा स्वयं भी उल्लंघन नहीं करता उसे आदर्श शासक कहते हैं।

जिसके राज्य में विद्या का प्रसार तथा धर्म की स्थापना करने और राज्य का शासन प्रबन्ध अच्छी तरह चलाने और राज्य में शान्ति व अनुशासन बनाये रखने के लिए तीन सभाएं—विद्यार्थ सभा धर्मार्य सभा तथा राजार्य सभाएं हों।

सभाओं में आलसी मूर्ख कामी क्रोधी तथा चापलूस व्यक्ति सभासद न हों अपितु ऐसे विद्वान तथा धार्मिक पुरुष कार्य करते हों जो दण्ड नीति ब्रह्म विद्या न्याय विद्या तथा लोक व्यवहार विद्या को जानते हों जो क्रोध में भरकर बिना अपराध किसी को दण्ड नहीं देते कठोर वचन नहीं बोलते तथा धनादि का अन्याय में व्यय नहीं करते दूसरों की उन्नति देखकर ईर्ष्या व द्वेष से नहीं जलते और न ही दूसरों के गुणों में दोषारोपण करते हों। जिनके सभासद शिकार जुआ नहीं खेलते, मद्यपान नहीं करते तथा स्त्रियों का अत्यन्त संग नहीं करते अपितु धार्मिक हैं उस सभा के सभापति अथवा राजा को आदर्श शासक कहते हैं।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

> जिसकी सभा में चारों वेदों न्याय शास्त्र व धर्म शास्त्र के ज्ञाता ब्रह्मचारी, गृहस्थी तथा वानप्रस्थी सदस्य हों और उस सभा द्वारा की गई व्यवस्था या निर्णयों का राजा स्वयं भी उल्लंघन नहीं करता। उसे आदर्श शासक कहते हैं। जिसके राज्य में विद्या का प्रसार तथा धर्म की स्थापना करने और राज्य का शासन प्रबन्ध अच्छी तरह चलाने और राज्य में शांति व अनुशासन बनाए रखने के लिए तीन सभाएं—विद्यार्थ सभा धर्मार्य सभा तथा राजार्य सभाएं हों।

होता है। जिस राजा के गूढ़ विचार को कुजन मिलकर जान नहीं सकते जिसके विचार परोपकार के लिए गुप्त तथा पवित्र रहते हैं वह राजा धनहीन होकर भी सारी पृथ्वी पर राज्य करने में समर्थ होता है।

जो सभापति दूरदर्शी होकर भविष्य को जान लेने की योग्यता रखता है जो वर्तमान में तुरन्त निश्चय करके अपने कर्तव्य को जानता है तथा जो दोषों को दूर कर गुणों को स्थिर करता है वही कुशल राजनीतिज्ञ तथा आदर्श राजा कहलाता है।

जो सभापति या राजा अपने शत्रु के छल बल को समझने की शक्ति रखता है, जो राजा दूसरों की चाल चलने वालों की हर चाल को समझता है और उन व्यक्तियों को अपना शत्रु समझता है जो भीतर से शत्रु से मिले हों और ऊपर से अपने साथ मित्रता रखते हों ऐसा राजा योग्य सत्कार करता है और उनके परिवार का भरण पोषण करता है अपराधियों को पक्षपात रहित होकर ऐसा दण्ड देता है व ऐसे देश में रखता है जहां से वह पुनः लौटकर न आ सके उसे आदर्श राजा या शासक कहते हैं।

जिस राजा के शासन में चारों ओर शान्ति खुशी तथा प्रशंसा युक्त सुगन्धित वातावरण होता है। जिसकी सभा के सभी सभासद अपने राजा के चरित्र उसके सत्यपूर्ण पक्षपात रहित न्याय पर पूर्ण विश्वास रखते हैं और जिसके निर्दोष व स्नेह सिक्त तथा तेजस्वी आचरण की सर्वत्र प्रशंसा करते हैं उसके आदेशों का पालन करते हैं तथा उसे पितृतुल्य मानते हुए उससे सन्तानवत प्रेम करते हैं।

जिसके राज्य में प्रत्येक व्यक्ति निर्भयता पूर्वक रहता हुआ अपने शासक

पंजाब की सभी आर्य समाजों में 26 जुलाई को हरिजन स्नेह सम्मेलन उत्साह के साथ सम्पन्न

सार्वदेशिक सभा के आह्वान पर सारे पंजाब में २६ जुलाई १९८१ को धर्म रक्षा अभियान तथा हरिजन स्नेह सम्मेलन हुए।

१. जालन्धर में आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में भक्ति पार्क बस्ती गुजां में २६ जुलाई को प्रातः १० बजे से एक बजे तक बृहद् सम्मेलन हुआ। जिसमें जालन्धर के सभी आर्य बन्धु तथा सभी आर्य समाजों के प्रतिनिधियों और हरिजन वाल्मीकि नेताओं व जनता ने भाग लिया। इनके अतिरिक्त भारत सरकार के सूचना व प्रसारण मन्त्रालय की उपमन्त्री कुमारी कुमुद जोशी ने भी भाषण दिया। श्री वीरेन्द्र जी प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, श्री सरदारीलाल जी मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा, कु० कमला खन्ना, प्रिंसिपल हंसराज महिला विद्यालय, प्रधान केन्द्रीय सभा, श्री धर्मदेव आर्य, श्री मनोहरलाल आर्य, श्री प्रीतमलाल जी आर्य के अतिरिक्त हरिजन व वाल्मीकि नेता श्री प० बख्शीरामजी, श्री मदनसाईं जी, श्री मोहनलाल जी जख्मी, श्री लाहौरीराम जी बाली आदि ने इस सम्मेलन में अपने ओजस्वी विचार रखे।

सम्मेलन के उपरान्त आए हुए हजारों लोगों को यज्ञ शेष दिया गया, ५०० पुस्तकें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से मुफ्त बांटी गई—तथा लगभग एक हजार लोगों ने प्रीति भोज किया। भोजन का प्रबन्ध आर्य हाई स्कूल बस्ती गुजां के प्रि० श्री रामकुमार शर्मा अध्यापक श्री प्रीतमसिंह जी तथा दूसरे सारे स्टाफ, साईं दास स्कूल के प्रिंसिपल श्री बलदेवराज जी जैन हाई स्कूल के प्रिंसिपल श्री वेद प्रकाश जी तथा उनके स्टाफ ने बड़ी उत्तमता से किया।

सायंकाल जालन्धर की हरिजन आबादी आबादपुरा में विशेष यज्ञ किया गया जिसमें सैकड़ों हरिजनों तथा वाल्मीकियों ने भाग लिया।

आर्य समाज फिरोजपुर शहर की सभी आर्य समाजों की ओर से केन्द्रीय आर्य सभा के तत्वावधान में वाल्मीकि मन्दिर में लगभग चार घण्टे का बहुत सुन्दर प्रोग्राम किया गया। यज्ञ के यजमान हरिजन दम्पत्ति बने। पं० देवेन्द्रकुमार शास्त्री, पं० हरिश्चन्द्र जी, श्री द्वारकानाथ वर्मा- प० नरसिंहदेव, श्री जगदीशचन्द्र, पं० देवीराम शर्मा, श्री हुक्मलाल जी मेहता, श्री रामचन्द्र आर्य, श्री जसवन्तसिंह प्रधान वाल्मीकि सभा आदि महानुभावों ने वेद मन्त्रों के आधार पर संगठन का उपदेश दिया व अपने विचार रखे। १०० के लगभग पुस्तकें मुफ्त बांटी गई समझदार हरिजन भाईयों ने आर्य समाज के संगठन की बहुत सराहना की।

३. आर्य समाज फाजिल्का के मंत्री मूलचन्द जी ने सूचना दी है कि २६-७-८१ को प्रातः आर्य समाज में और सायं आर्य नगर (धानक मुहल्ले) में विशेष यज्ञ तथा सम्मेलन किए गए। सभी आर्य बन्धुओं तथा हरिजन बन्धुओं ने इनमें भाग लिया। यह प्रस्ताव भी पास किया गया कि सरकार मीनाक्षीपुरम् के हरिजनों को मुसलमान बनाए जाने की जांच कराए और उन हरिजनों को पुनः हिन्दू धर्म में प्रवेश कराया जाए। इस अवसर पर यज्ञ शेष (प्रसाद) हरिजन भाईयों से बटवाया गया और सभी ने मिलकर खाया।

४. आर्य समाज गुरुकुल विभाग गुरदासपुर के प्रधान श्री वेद प्रकाश जी नन्दा ने सूचित किया है कि गुरदासपुर के प्रसिद्ध ऐतिहासिक नेहरू पार्क में २१-७-८१ से २६-७-८१ तक धर्म रक्षा अभियान के सम्बन्ध में महान् आयोजन किया गया। प्रातः आर्य समाज में और रात्रि कथा। पार्क में ब्रह्मचारी आर्य नरेश जी के प्रभावशाली प्रवचन होते रहे २५ व २६ जुलाई को विशेष आयोजन किया गया। यज्ञ के यजमान हरिजन भाई बने, शहर के सभी प्रतिष्ठित लोगों ने हजारों की संख्या में भाग लिया। स्थानीय उच्च न्यायाधीश (सैशन जज) स्थानीय विधान सभा के सदस्य श्री रत्नलाल कामरेड भी प्रवचन सुनने आते रहे, ब्रह्मचारी जी के प्रवचनों का बड़ा प्रभाव रहा। इनके अतिरिक्त पुरोहित रामनिवास जी शास्त्री, स्वामी प्रकाशानन्द जी, श्री गुलशन जी, श्री वेद प्रकाश जी, श्री वीरेन्द्र जी, स्त्री समाज की सदस्याओं के उपदेश तथा भजन हुए।

यज्ञ के यजमान हरिजन भाईयों को बनाया गया। २५-७-८१ को सायं ५ से ६ बजे तक महाशयां मुहल्ला में श्री रिखीराम जी के निवास पर, और ७ से ८ बजे तक ग्राम छोटा धीरपुर में श्री केवल कृष्ण जी एम० ए० के सहयोग से विशेष यज्ञों का आयोजन हुआ। यज्ञ शेष प्रसाद सभी यज्ञों पर हरिजन भाई-बहनों द्वारा वितरित किया गया और सभी ने प्रीति पूर्वक खाया।

इस सारे आयोजन का गुरदासपुर में बड़ा प्रभाव पड़ा। इस इलाके में काम कर रहे ईसाई मिशनरियों में इस प्रोग्राम ने खलबली पैदा कर दी।

५. आर्य समाज कोटकपूरा के मन्त्री श्री महेन्द्रपाल जी ने सूचित किया है कि २६-७-८१ को आर्य समाज में एक विशेष आयोजन किया गया जिसमें हरिजन भाई भी सम्मिलित हुए, लोगों को बताया गया कि आर्य समाज देश से छूतछात को मिटाना चाहता है। सबसे इस कार्य में योगदान देने की प्रार्थना की गई। २-७-८१ को गान्धी बस्ती में एक विशेष यज्ञ किया जिसमें बहुत से हरिजन ने भाई भाग लिया।

६. श्री वजीरचन्द प्रधान आर्य समाज भटिण्डा ने सूचित किया है कि भटिण्डा में हरिजन स्नेह उत्सव श्री ख्यालीराम जी की प्रधानता में मनाया गया। इसमें हरिजन परिवारों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया। श्री हंसराज जी, श्री कृष्णकुमार जी, श्री ओम्प्रकाश जी, श्री ख्यालीराम जी ने वर्ण व्यवस्था की व्याख्या करते हुए बताया कि हम सब एक हैं। प्रि० कमला भाटिया ने भोजन की सुन्दर व्यवस्था की, सभी ने मिलकर प्रीति भोज किया।

७. श्री प्यारेलाल जी प्रधान आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट ने सूचित किया है कि सैली कुलियां नामक हरिजन बस्ती में हरिजन स्नेह सम्मेलन किया गया। यज्ञ के पश्चात् श्री नरसिंहदेव शास्त्री, प्रो० स्वतन्त्रकुमार जी ने प्रभावशाली प्रवचन दिए। हरिजनों में जागृति पैदा हुई। इस समारोह में शहर के आर्य बन्धुओं तथा बस्ती के सभी हरिजन भाईयों ने भाग लिया।

८. फरीदकोट से श्री सत्यदेव जी शर्मा ने सूचित किया है कि आर्य समाज फरीदकोट २६-७-८१ को हरिजन स्नेह सम्मेलन मनाया गया। श्री धर्मवीर जी शास्त्री का उपदेश हुआ यज्ञ के यजमान हरिजन भाईयों को बनाया गया। श्री धर्मवीर शास्त्री के सुझाव को मानते हुए एक हरिजन विद्यार्थी को उपदेशक विद्यालय में पढ़ाने का दायित्व आर्य समाज के अधिकारियों ने अपने ऊपर ले लिया। यह सम्मेलन हरिजन भाई श्री रणजीतराय की अध्यक्षता में हुआ।

९. आर्य समाज खिदराबाद के मन्त्री श्री धर्मपाल जी जोशी ने सूचित किया है कि २६ जुलाई को आनन्द बस्ती में यज्ञ हुआ, पूरी बस्ती के हरिजन परिवारों ने इसमें भाग लिया। प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु, श्री हरविलास जी गुप्त ने प्रेरणा दायक अपने विचार रखे। बाद में प्रीति भोज हुआ। कार्यक्रम बड़ा सफल रहा।

१०. श्री धर्मवीर विद्यालंकार ने पीलीभीत से सूचित किया है कि २६-७-८१ को प्रातः ७ बजे यज्ञोपवीत संस्कार यज्ञ, प्रवचन, प्रसाद वितरण और सवर्ण-हरिजन-स्नेह मिलन बड़े हर्ष और उल्लास के वातावरण में मनाया गया। सैंकड़ों हरिजन एवं सवर्ण उपस्थित हुए। सनातन धर्म सभा, विश्व हिन्दू परिषद् एवं अन्य धार्मिक संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने भाग लिया।

सायंकाल ७ बजे से धर्म रक्षा सम्मेलन, वैदिक मन्त्रोच्चारण के अनन्तर श्री वीरेन्द्र जी प्रधानाचार्य, आयुर्वेदिक महाविद्यालय पीलीभीत के सभापतित्व में हुआ। सारा कार्यक्रम बड़ा प्रभावशाली रहा।

इसी प्रकार आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर, आर्य समाज नवांशहर दोआबा, आर्य समाज हबीबगंज (अमरपुरा) लुधियाना, आर्य समाज बरनाला, आर्य समाज समाना, आर्य समाज हरियाना (होशियारपुर) आदि विभिन्न आर्य समाजों में व्यापक स्तर पर हरिजन स्नेह सम्मेलन आयोजित होने के समाचार प्राप्त हुए हैं जो कि अत्याधिक सफल रहे।

इसी प्रकार पंजाब के अतिरिक्त सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आह्वान पर देश भर की आर्य समाजों में इस प्रकार के सम्मेलन आयोजित किए जाने के समाचार प्राप्त हुए हैं। आर्य समाज अजमेर ने यह आयोजन बड़े विशाल पैमाने पर किया।

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के आर्य समाज लोअर बाजार शिमला स्थित मुख्य कार्यालय से प्राप्त समाचार के अनुसार प्रदेश भर में जनसभाएं व यज्ञ आयोजित करके हरिजनों को सम्मानित किया गया और प्रीति भोज किए गए।

इन सम्मेलनों में हरिजनों को यज्ञोपवीत दिए गए। आर्य समाजों में हरिजन-सवर्ण मतभेद मिटाकर सामूहिक यज्ञ किए गए और साथ में इकट्ठे मिल कर प्रीति भोज किए गए।

वे हमारे बारे क्या सोचते होंगे ?

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के [illegible] [illegible] अखिल भारत [illegible] [illegible] आर्य रक्षा-[illegible] की योजना की है। यह [illegible] [illegible] और ईसाई [illegible] के विरुद्ध है।

[illegible] कि महाराष्ट्र प्रान्त [illegible] [illegible] महाभियान योजना [illegible] अथवा [illegible] के हिन्दुओं की रक्षा के लिए है। पर पढ़ने से पता [illegible] कि यह खतरा भारत में है।

स्वतन्त्र भारत में हिन्दुओं की संख्या ईसाई और मुसलमानों से कई गुना अधिक है। [illegible] से मैं ढोल [illegible] है, [illegible] [illegible] से ये [illegible] की घंटियां सुन [illegible] हूं। क्या स्वतन्त्रता के ३४ वर्ष बाद भारत में भी हिन्दू अपनी रक्षा में समर्थ नहीं हो पाए। क्या आने वाले सौ वर्ष तक हो पाएंगे ?

भारत के बाहर जो इस योजना को पढ़ेंगे वह क्या समझेंगे। अपने देश में इतने गुना होते हुए भी हिन्दू ईसाई और मुसलमानों से कूते जा रहे हैं। और जो सामान्य हिन्दू मुसलमान और ईसाई भूखा मर रहा है। ८।- किलो दाल, ३। किलो पानी मिला हुआ दूध, ६।- किलो दाल, ८।- किलो भुना चना, सीमेंट और मिट्टी के तेल के नितान्त अभाव के संकट भोग रहा है उसका कोई दु ख नहीं।

उसका बच्चा पढ़ नहीं सकता और पढ़े तो रोटी नहीं कमा सकता। उसका कोई दु:ख नहीं।

कृपया समाधान के दो शब्द लिखिएगा देश और धर्म के ये नेता लोग कब तक खतरे की घंटियां बजाते रहेंगे और हिन्दुओं को नंगा करते रहेंगे।

—सत्यदेव विद्यालंकार
१४२ ४, सैंट्रल टाऊन जालन्धर।

प्रेरणा

महर्षि दयानन्द जी के नारी-जाति [illegible] महान् उपकार हैं उनके ऋण से उऋण होने के लिए प्रत्येक महिला का यह कर्तव्य है कि वह अधिक से अधिक वैदिक धर्म के प्रचार और प्रसार के लिए कटिबद्ध रहे।

मैं वेद प्रचार के लिए भारत वर्ष के भिन्न भिन्न प्रान्तों में लगभग २५ वर्ष से जाती हूं और [illegible] कल भी जा रही हूं। मुझे यह देखकर अत्यन्त दु:ख होता है कि अब पहले की अपेक्षा महिला समाज बहुत शिथिल होता जा रहा है। [illegible] साप्ताहिक सत्संग में बहुत कम उपस्थिति होती है।

इसलिए मेरा सब आर्य बहिनों [illegible] एवं मुख्य माताओं से यह निवेदन है कि वह अधिक से अधिक संख्या में स्त्री समाज के सत्संग में आया करें और अपनी-अपनी समाजों के वार्षिकोत्सव अवश्य किया करें। इतना ही नहीं जिन समाजों में पुरोहित हैं उनसे वेद पाठ सीखकर यज्ञ में वेद पाठी और ब्रह्मा बनें। महिला समाज की ओर से वैदिक साहित्य लेकर अपने आस-पास में रहने वाले लोगों में वितरण करें।

प्रत्येक परिवार की महिला स्वयं यज्ञोपवीत गले में धारण करें और अपने बच्चों के जात-कर्म से लेकर सब संस्कार करवाए। प्रतिदिन घर में सन्ध्या यज्ञ देव [illegible] इत्यादि अवश्य करें। प्रातः काल और रात्रि को सोने से पूर्व जिन मन्त्रों का पाठ करने का आदेश स्वामी दयानन्द जी ने दिया है अवश्य सारा परिवार बैठकर [illegible]।

आप में जो भी बहिन उपदेश देना जानती हो वह पौराणिक मन्दिर, गुरुद्वारे और आनन्दपुर वाले राधा स्वामी के [illegible] अपने विचार दी दें और पुस्तकें भी [illegible] जैसाकि मैं स्वयं करती हूं। वह लोग बहुत श्रद्धा से मेरे विचार भी सुनते हैं और मेरा लिखा साहित्य भी मांग मांग कर लेते हैं।

यह मैंने अपनी आर्य बहिनों को एक पथ प्रदर्शन किया है। आप सबका यह नैतिक कर्त्तव्य है कि इन सब कामों को करें तभी महर्षि का स्वप्न साकार हो सकता है और हम उनके ऋण से उऋण हो सकती हैं। मुझे पूर्ण आशा है कि आर्य बहिनें इस ओर ध्यान देंगी।

—आर्यामीरामति, आर्य वानप्रस्थ
आश्रम, ज्वालापुर

आदर्श शासक कौन ?

(२ पृष्ठ का शेष)

जिस शासक के पास सात-आठ कुलीन धार्मिक चतुर, शूरवीर, निष्कपट वेद शास्त्र ज्ञाता तथा दूरदर्शी मन्त्री होते हैं जो राज्य के कार्य को करने में कुशल होते हैं तथा जिस राजा के गुप्तचर विभाग, न्यायविधि तथा रक्षा विभाग दोनों के अधिकारी कुलीन लोभ रहित तथा धार्मिक होते हैं उसके राज्य में सुख और शान्ति का साम्राज्य रहता है।

जिस राजा की सभा में ऐसे धार्मिक व्यक्ति रहते हैं जो सदैव सत्य ही बोलते हैं तथा सभा में अन्याय होते देख मौन नहीं रहते अपितु अन्याय के विरुद्ध अपनी आवाज उठाते हैं उस राजा को आदर्श राजा कहते हैं।

जो राजा अपने शत्रु के साथ यथा योग्य व्यवहार—सन्धि या लड़ाई करने में चतुर अर्थात् साम दाम दण्ड-भेद नीति में निपुण आश्रयदाता के कर्मों में दोष देखकर उससे भी निशंक होकर युद्ध करने में समर्थ होता है और धार्मिक राज्य, से विरोध नहीं करता वह मनु जी के अनुसार आदर्श शासक कहलाता है।

जो राजा दण्ड देने योग्य को छोड़ देता है और जिन्हें दण्ड नहीं देना चाहिए उन्हें दण्ड देता है वह अपयश व दु:ख को प्राप्त करता है। अत आदर्श राजा इसके विपरीत दण्ड का मर्म समझते हुए दण्ड देने योग्य को यथोचित दण्ड दिलवा देते हैं चाहे वह पिता आचार्य मित्र स्त्री पुत्र और पुरोहित क्यों न हो और निरपराध को दण्ड नहीं देता।

आदर्श शासक अत्यन्त साहसी होता है। वह साधारण मनुष्य को जिस अपराध की जो सजा देता है उसी अपराध को करने पर उच्चाधिकारियों को उससे कई गुणा अधिक सजा देता है। वह स्वयं को उस अपराध की सजा से हजार गुणा अधिक दण्ड देता है अपने दीवान को आठ सौ गुणा और साधारण अपराधी को कम से कम आठ गुणा सजा देता है। बलात्कार करने वालों को दण्ड देने में एक क्षण भी देर नहीं लगती।

व्यभिचार को रोकने के लिए व्यभिचारिणी स्त्री को लोगों के सामने कुत्तों से कटवा कर मरवा देता है और पुरुष को लोहे के पलंग को अग्नि से तपा कर लाल करवाकर उस पर सुलाकर जीवित जला देता है।

आदर्श शासक बलात्कार चोरी, व्यभिचार जैसे गुप्त कार्यों में साक्षी का अत्यावश्यक नहीं समझता। आवश्यकता पड़ने पर वह उत्तम एवं गुणी पुरुष की साक्षी के अनुकूल न्याय करता है तथा काम क्रोध लोभ, मोह अथवा भय एवं अज्ञान से झूठी साक्षी (गवाही) देने वाले को दण्ड देता है।

आदर्श शासक कुशल योद्धा होता है और संग्राम में अपने से भी अधिक शक्तिशाली राजा के द्वारा संग्राम के लिए आह्वान करने पर विचलित नहीं होता अपितु बड़ी चतुराई से युद्ध करके विजय को प्राप्त करता है। वह शत्रु के साथ धर्मानुसार युद्ध करता है। फलतः वह नपुंसक शरण मूर्छित सोये हुए नग्न, भागते हुए अत्यन्त घायल किसी स्त्री बालक तथा वृद्ध पर शस्त्र नहीं चलाता, इसके विपरीत विजित विधवा स्त्रियों का सम्मान करता है व उनकी रक्षा करता है बालकों एवं वृद्धों का यथावत पालन-पोषण करता है और घायलों की चिकित्सा करवाता है।

आदर्श राजा शासक प्रजा के धनाढ्य वर्ग से मनु जी के अनुसार—

पञ्चाशद्भाग आदेयो राजा पशु हिरण्ययो
धान्यानामष्टमो भाग षष्ठो द्वादश एव वा ॥

अर्थात्—व्यापारियों व शिल्पियों अर्थात् सोने चान्दी का कारोबार करने वालों से उनके लाभ का पचासवां भाग अन्नों में छठा आठवां व बारहवां भाग कर लेता है तथा उसे अपनी प्रजा की सुख समृद्धि पर खर्च कर देता है।

सारांश यह कि आदर्श शासक बड़ा शूरवीर धर्मवीर दानवीर तथा कर्मवीर होता है। वह न्यायप्रिय कुशल राजनीतिज्ञ तथा लोकप्रिय होता है। सज्जन उसकी शरण में जाने में आनन्द अनुभव करते हैं तथा दुष्टजन उससे थर थर कांपते हैं। उसके सभासद अनुशासन में रहते हुए उसके न्यायोचित आदेशों का पालन करते हैं तथा वह स्वयं अपनी सभा की सम्मति के अनुसार कार्य करता हुआ अपनी प्रजा की एक पिता के समान रक्षा पालन तथा उन्नति करता है।

ईश्वर हमारे शासकों में सत्य व न्याय प्रवृत्ति पैदा करके उन्हें आदर्श बनाए।

आर्य समाज नूरपुर (कांगड़ा) में वेद प्रचार

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर के सुयोग्य आर्योपदेशक श्री प० [illegible] कुमार जी [illegible] और [illegible] भजनोपदेशक श्री [illegible] जी ने २२-७-८१ से २६-७-८१ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। श्रोता [illegible] व्याख्यानों तथा भजनों से खूब [illegible] हुये। आर्य समाज की ओर से सभा को १०१ रुपये वेद प्रचार में भेंट किए गए।

—मन्त्री आर्य समाज नूरपुर
(कांगड़ा)

सभा की निम्न योजनाओं के लिए
अधिक से अधिक धन भेजिए
पंजाब की आर्य समाजों से अपील

१ सभा के वेद प्रचार विभाग के लिए जो आर्य समाज का मुख्य कार्य है।

२ सभा के साहित्य प्रकाशन के लिए जो वर्तमान युग में प्रचारार्थ सबसे प्रभावशाली साधन है।

३ सभा के नये भवन के निर्माण के लिए।

४ सभा की ओर से बनाये जा रहे कादियां के लेखराम स्मारक मोही के स्वतन्त्रानन्द स्मारक तथा तलवन के श्रद्धानन्द स्मारक के निर्माण के लिए।

५ प्रचारार्थ एक जीप खरीदने के लिए।

६ सभा की शिक्षा संस्थाओं के संचालन तथा संवर्धन के लिए।

—वीरेन्द्र
सभा प्रधान

—रामचन्द्र जावेद
सभा मन्त्री

आर्य जगत के समाचार

पारिवारिक सत्संग

दिनांक १९-७-८१ को आर्य युवक [illegible]भा लुधियाना की ओर से पारिवारिक [illegible]त्संग का आयोजन श्री नवनीतलाल जी [illegible]र्य के निवास स्थान १५५-१२ करीम[illegible]रा मे किया गया। यज्ञ श्री सुदर्शनदेव [illegible]स्त्री जी ने सम्पन्न कराया। यज्ञ के [illegible]द श्री ओमपाल शास्त्री, श्री कृपाराम [illegible], श्री विनोद बासल, श्री वीरेन्द्र जी, [illegible]स्नबाला, स्वर्ण कान्ता, सरोजबाला, [illegible] रश्मी ने बहुत मधुर स्वर में ईश्वर [illegible]ति के भजन गाए। भजनों के बाद श्री [illegible]दर्शनदेव जी, श्री वेदप्रकाश जी शास्त्री, [illegible]न प्रकाश वर्मा जी के मधुर उपदेश हुए [illegible]से सैंकड़ो की सख्या में उपस्थित लोगो [illegible] सुना और बहुत ही प्रभावित हुए।

चण्डीगढ़ में व्यास पूर्णिमा का आयोजन

दिनांक १७-७-८१ को व्यास पूर्णिमा (गुरु पूर्णिमा) विश्व वेद परिषद् के तत्वावधान मे १४३/३६ ए. में पूर्णमासेष्टि यज्ञ के साथ मनाई गई। जिस पर [illegible] डालते हुये डा० भवानीलाल [illegible] अध्यक्ष महर्षि दयानन्द पीठ पंजाब [illegible] विद्यालय ने कहा कि जिस [illegible] ने महाभारत के विशालकाय [illegible] का सम्पादन करके तत्कालीन परिस्थितियो को कौरव पाडव चक्रवर्ती राज्य के महान् कथानक के रूप मे समाज के सामने रखा और महर्षि पातञ्जलि के योग दर्शन का आदर्श भाष्य भी किया। उन [illegible]

[illegible] ऋचाओं का संग्रह करने वाले ऋषियों की यादगार में जिन्हें आरम्भ से व्यास का पद प्राप्त रहा है और जिन्होंने [illegible] प्रकार अविद्या से दूर करने के [illegible] गुरु परमेश्वर के वेद ज्ञान का [illegible] कर सबको कल्याण का [illegible] बताया। उनकी पवित्र स्मृति में [illegible] पूर्णिमा है। जिसके लिए [illegible] महर्षि वशिष्ठ, विश्वामित्र, महर्षि सन्दीपन, गुरु द्रोणाचार्य, समर्थ गुरु राम दास, गुरु नानकदेव, गुरु तेग बहादुर, गुरु गोबिन्दसिंह, परम हंस रामकृष्ण सरीखे आदर्श गुरुओं ने भगवान् राम, योगीराज कृष्ण धर्मराज युधिष्ठिर, छत्रपति शिवा जी, स्वामी विवेकानन्द जी और महर्षि दयानन्द आदि महापुरुषों को अपनी महान् शिक्षा से बनाया और देश जाति की रक्षा हेतु अपने सर्वस्व का भी बलिदान किया।

ऐसे महान् गुरुओं की आज के युग में आवश्यकता है जिन से शिष्य वर्ग का जीवन ऊचा हो और राष्ट्र तथा समाज पुनः उन्नति के शिखर को प्राप्त हो।

—बाबूराम आर्य, मन्त्री

आर्य युवक सभा की ओर से डाक्टर बांगिया जी ने यजमान परिवार को वैदिक साहित्य भेंट किया। आरती, जयघोष व शान्ति पाठ से यज्ञ सम्पन्न हुआ।

प्रवेश आरम्भ

[illegible]

[illegible] पद्धति से आवासीय [illegible]) [illegible] प्रवेश आरम्भ है। [illegible] विषयों के साथ। [illegible] प्रति उज्ज्वल। [illegible] निर्धन मेधावी [illegible] अतिरिक्त [illegible] सम्मिलन, आयोजन, [illegible] व [illegible] अतिरिक्त सुविधाएं—[illegible] तक उच्चाध्ययन, भारत भ्रमण, [illegible] प्रचार यात्रा आदि, भोजन पौष्टिक, पारिवारिक वातावरण, [illegible] शिक्षा प्रणाली। प्रवेश [illegible] सीमित स्थान। पत्र-व्यवहार करें।

डा० [illegible] एम० ए०, पी० एच० डी० दर्शनाचार्य, [illegible] [illegible]

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा [illegible] प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वर्ष 14—अंक 2?, 1 भाद्रपद सम्वत् 2038, तदनुसार 16 अगस्त 1981, दयानन्दाब्द 156 । एक प्रति 35 पैसे (वार्षिक शुल्क 15 रुपए)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा ने

तमिलनाडू के एक गांव को गोद लिया

धर्म रक्षा महाभियान का दूसरा चरण भारी उत्साह केसाथ शुरू : यज्ञों में हरिजन ब्रह्मा, गायत्री उच्चारण व 'ओम' अंकित मालाएं

मण्डू मल्कापुरम् (नलगोंडा)—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा ने अपने धर्म रक्षा महाभियान के अन्तर्गत यहां गायत्री मन्त्रों और यज्ञ समारोह के बाद उस गांव को गोद लिया।

इस यज्ञ में गांव के हरिजन परिवार ने ब्रह्मा की भूमिका निभाई। इस अवसर पर मल्कापुरम सहकारी पट्टा कृषि संघ के सचिव श्री वी. वेंकटसेम, सभा के वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम, उपाध्यक्ष के महात्मा दयानन्द तथा सभा के नेता श्री पृथ्वीराज शास्त्री आदि उपस्थित थे।

यज्ञ समारोह में उपस्थित अनेक हरिजन परिवारो ने गायत्रीमन्त्र का उच्चारण किया। यज्ञ की समाप्ति पर महात्मा दयानन्द ने श्री वेंकटसेम, उनकी पत्नी तथा गांव के सरपच सहित अनेक हरिजन परिवारों को 'ओ३म्' अंकित मालाएं प्रदान की। बाद में श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम ने सम्वाददाताओं को बताया कि दक्षिण में धर्म रक्षा हेतु चलाए गए अभियान के अन्तर्गत इस गाव गोद लिया गया है। यह निर्णय हाल ही में मीनाक्षीपुरम् में हरिजनों के इस्लाम धर्म अपनाने की घटना को देखते हुए लिया गया है।

श्री वन्देमातरम ने बताया कि इस अभियान का मुख्य उद्देश्य गांव के लोगों के आर्थिक विकास के साथ ही जाति-भेद और छुआछूत जैसी बुराईयों को दूर करना है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने लगभग ३० वर्ष पूर्व इस गांव के विकास के लिए मलकापुरम् सहकारी पट्टा कृषि संघ की स्थापना की थी। श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम, महात्मा दयानन्द और श्री पृथ्वीराज शास्त्री इस अभियान के प्रचार हेतु तिरुपति सहित तमिलनाडू के अनेक क्षेत्रों का दौरा करेंगे।

हरिजनों का धर्म परिवर्तन षड्यन्त्र

आर्य समाज का शिष्टमंडल दक्षिण भारत के दौरे पर

नई दिल्ली (वि.प्र.)—विदेशी षड्यन्त्रों की भारत विरोधी नीतियों को उग्र रूप से प्रचारित करने के हथकण्डों का प्रमुख आधार हरिजनों के सामूहिक धर्म परिवर्तन के लिए जो भूमिका निभाई जा रही है, उससे आर्य समाज के नेता सबसे अधिक चिन्तित हैं।

सार्वदेशिक सभा के अध्यक्ष श्री रामगोपाल शालवाले ने बताया कि सभा के निर्देश पर प्रयोजन देहरादून के संचालक पूज्य महात्मा दयानन्द तथा सभा के कार्यालय मन्त्री पं. पृथ्वीराज शास्त्री आदि आर्य नेताओं का शिष्टमण्डल दिल्ली से हैदराबाद होकर तमिलनाडू के नगरों तथा ग्रामों के दौरा पर रवाना हो चुका है। इनके साथ श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव तथा मद्रास के कई आर्य विद्वान भी इस यात्रा में भाग लेंगे। यह प्रतिनिधि मंडल हरिजन बन्धुओं में आत्म विश्वास तथा अपने पुरातन धर्म में निष्ठा जगाएगा और अनेक धर्म गुरुओं तथा मठाधीशों को भी मिलेगा।

श्री शालवाले ने बताया कि मीनाक्षीपुरम से लेकर मदुराई, मद्रास तथा अन्य ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े-बड़े यज्ञो का आयोजन कर धर्म परिवर्तन के विदेशी कुचक्रों को रोकने का पूरा प्रयत्न किया जा रहा है।

श्री शालवाले ने देश के सभी आर्य धर्मावलम्बी विद्वानो, सन्यासी-महात्माओं तथा गुरुकुलो के ब्रह्मचारियों से अपील की है कि इस समय सब काम छोड़ कर धर्म रक्षा महाभियान की सफलता के राष्ट्रीय एव धार्मिक कार्यो मे जुट कर विधर्मों तथा विदेशी धन से देश को कमजोर करने के षडयन्त्रो का खुल कर सामना करें।

—

हरिजन समस्या और उसका समाधान

संस्कृत वाङ्मय में हाथी के पर्यायवाची शब्दों मे एक शब्द 'गम्भीरवेदी' है हाथी को गम्भीरवेदी इस लिए कहा जाता है कि जब वह तरंग मे होता है तो फीलवान के पैरो के संकेत और उसकी विशेष प्रकार की ध्वनि की परवा नही करता और स्वेच्छाचारिता से बढ़ता चला जाता है। उस स्थिति मे चालक मर्यादित करने के लिए तीक्ष्ण अंकुश को उसके मस्तक मे चार छ अंगुल घुमा देता है तब हाथी को कुछ आभास होता है कि मुझे अमुक दिशा मे चलने के लिए आज्ञा दी जा रही है।

ठीक यही गम्भीरवेदिता हिन्दू समाज पर भी पूर्णत चरितार्थ होती है। आर्य समाज अपने जन्मकाल से ही इस अस्पृश्यता की समस्या की विकरालता को समझता था और उसने सदा ही इसके समाधान का मार्ग हिन्दू समाज को सुझाया। वेद की मर्यादा के अनुसार श्रम की दृष्टि से सारे मानव समाज को चार भागो शिक्षक रक्षक पालक और सेवक के रूप में विभक्त किया। जिनको वेद और स्मृति की शब्दावली मे अब तक ब्राह्मण क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र नाम से पुकारा जाता रहा है। मानव समाज का यह श्रम विभाग मनुष्य के शरीर के कार्य विभाग के आधार पर है और सर्वथा स्वाभाविक है। मानव के शरीर में सोचने देखने, चखने सुनने और सूंघने अर्थात् ज्ञान सम्बन्धी समस्त व्यवहार सिर के माध्यम से होता है, यह एक भाग है सम्पूर्ण शरीर की रक्षा और कष्टो से बचाने का काम हाथ करते हैं, यह दूसरा भाग है। खाये हुए भोजन का रस और रक्त बनाकर आवश्यकतानुसार सम्पूर्ण शरीर के अवयवो मे बांटना पेट का काम है यह तीसरा भाग है और समस्त शरीर को ज्ञान के लिए रक्षा के लिए उदरपूर्ति के लिए ढोकर ले जाना पैरो का काम है। यह शरीर का चौथा भाग है। जैसे प्रत्येक मनुष्य अपनी आवश्यकता के अनुसार शरीर के इन अंगो का प्रयोग करता है उसी प्रकार मानव समाज भी एक विशाल शरीर है और उसकी भी सब आवश्यकताएं जिन्हे शिक्षा रक्षा पालना और सेवा के नाम से पुकारा जा सकता है। इनको समाज के लोग बिना किसी भेदभाव के योग्यतानुसार पूर्ण करते चलें। यह थी ऋषियो की श्रेष्ठ समाज की परिकल्पना। इसमे न कोई ऊंचा था न नीचा। प्रत्येक अंग महत्वपूर्ण है। ज्ञान के समय सिर का महत्व है तो चलने के समय पैरो का। सिर काटने के लिए कोई शत्रु तलवार हाथ मे लेकर आक्रमण करता है तो पैर और हाथ यह सोचते कि संकट तो सिर पर है हमे इसमें उलझने की क्या आवश्यकता है? ऐसा कभी हो ही नहीं सकता। उस संकट का सामना करने को हाथ पैर सभी सक्रिय हो जाते हैं और अपनी रक्षा करते हैं। इसी प्रकार पैर मे कांटा लगे और वह कांटा यदि हाथ की अंगुलियो के नाखूनो की पकड़ मे न आ रहा हो तो गांव मे चरवाहों को दांतों से कांटो को खीचते देखा गया है। इसी प्रकार का स्वास्थ्य और सौमनस्य आदर्श मानव समाज मे भी होना चाहिए।

किन्तु खेद कि वह वर्णव्यवस्था बिगड़ गयी और जन्ममूलक जातियां बिरादरियो के रूप मे हिन्दू समाज का एक भौंडा रूप इस समय हमारे सम्मुख है। वेद और गीता के मानने वाले जो [illegible] कर (यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानुपश्यति यजुर्वेद, शुनि चैव श्वपाके च पण्डिता समदर्शिन—गीता) समता का स्वर्णीय उपदेश संसार को देते थे, वे अपने ही स्वार्थ साधन के लिए इतने हृदयहीन और पाषाण बन जायेंगे यह कल्पना भी नहीं की जा सकती थी।

कालक्रम से बीच में कुछ महापुरुष आये और उन्होंने इस अन्याय को दूर करने के लिए आवाज उठाई। ऋषि दयानन्द उनमें से अग्रणी थे और क्योंकि वे वेद वेदांगो के भी महान् विद्वान् थे इस लिए वर्ण व्यवस्था मे जन्म के कारण आयी इस जड़ता को दूर कर कर्म के आधार पर वर्ण निश्चय का उद्घोष ऋषि ने किया। उनके तर्कों का उत्तर देने की क्षमता इन धर्माचार्यों मे नहीं थी। किन्तु हिन्दू समाज तो वह गम्भीर वेदी है कि जब तक परिस्थिति का अंकुश इसकी खोपड़ी मे नही चुभता तब तक यह ठीक मार्ग पर चलने को तैयार नही।

आर्य समाज अपने मंच और पत्रों के माध्यम से इस विभीषिका का हिन्दू समाज के समक्ष रखता रहा। पंजाब में डूम और मेघो का उत्तर प्रदेश के पहाड़ी जिलों मे बसने वाली अनेक पिछड़ी बिरादरियों का आर्य समाज ने उद्धार किया। किन्तु कार्य की विशालता की दृष्टि से ये महत्वपूर्ण कार्य भी समुद्र मे बिन्दु सदृश ही थे।

विशाल हिन्दू समाज रूपी जलाशय मे से पानी किस प्रकार रिस रहा है और अन्तत इसका परिणाम क्या होने वाला है, यह प्रत्येक जनगणना के पश्चात् चर्चा होती नही है। किन्तु हिन्दुओं ने करवट तक बदलने की आवश्यकता नही समझी।

पहली जनगणना सन् १८८१ मे हुई। उसके अनुसार भारत में हिन्दुओ की संख्या कुल आबादी की ७४.८ प्रतिशत थी। सन् १८९१ की जनगणना मे ७१.६ प्र. श. रह गयी। सन् १९०१ मे ७१.४ प्र श हो गयी। सन् १९११ मे ६९.६ प्र. श. बची। सन् १९२१ मे ६८.७ प्र. श. रह गयी, सन् १९३१ मे ६७.७ प्र. श. बची। इस प्रकार पचास वर्षों में हिन्दुओ की संख्या लगभग सात प्रतिशत कम हो गयी। यदि इसी अनुपात में भी यह घटने का क्रम जारी रहा तो ४५ वर्ष की अंगुष्ठ-कुमारी मे हिन्दू संसार से समाप्त हो जायेंगे।

सन् १९११ की जनसंख्या की रिपोर्ट के आधार पर भारत में कुल हिन्दू २१ करोड़ ७५ लाख ८६ हजार ८९२ थे। वहां सन् १९२१ मे २१ करोड़ ६७ लाख ६४ हजार ५८६ रह गए। इस प्रकार हिन्दू साढे आठ लाख घट गये।

सन् १९११ मे भारत मे कुल ईसाई ३८ लाख थे। सन् २१ मे (साढ़े सैंतालीस लाख हुए। सन् ३१ मे ६३ लाख से भी अधिक हो गये। पंजाब प्रान्त मे जहां सन् १८८१ मे ईसाई कुल ३८७ थे। वहां सन् १९२१ मे ३ लाख ४७ हजार ४५२ हो गए।

ह्रास का यह क्रम तो स्वाधीनता से पहले का है, [illegible]

भारत जब स्वाधीन हुआ तो विदेशी ईसाई बिस्तर लपेटने की सोचने लगे। भारत के भूभाग मे रहने का निश्चय करने वाले मुसलमान भी बड़े मासूम बन कर रहने लगे। किन्तु यहां कुर्सी संभालने वालो ने जब धर्मनिरपेक्षता का नारा बुलन्द किया और मुसलमानो को अपने वोट के महत्व का पता चला तो आंखें बदलते देर न लगी। जो भी सत्ता मे आता है, यत्न यही करता है कि बस कुर्सी मेरे नीचे अटल जमी रहे, प्रतिदिन संसार मे इस सत्ता की धूप छांव के खेल देखते हैं, फिर भी अपने कौशल के आधार पर अपने को सुरक्षित रखना चाहते हैं। ऐसे सावन के अन्धो को किसी शायर ने कितनी बढ़िया चेतावनी दी है :

> मुहब्बत की कुर्सी भी पल भर का तमाशा है।
> जिस शाख पे बैठे हो वह टूट भी सकती है॥

सन् १९७७ मे यहां भी कुर्सियां बदली। जनता पार्टी के नाम से एक भानमती के कुनबे ने सत्ता संभाली, वे कुछ लोगो की खुशामद में और १० कदम आगे गये, इन्होने नारे लगाये अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी का मुस्लिम स्वरूप सुरक्षित रहना चाहिए। अल्पसंख्यक आयोग की स्थापना इन्हीं की दूरदर्शिता का परिणाम है। अब फिर इन्दिरा जी सिंहासन पर सुशोभित हैं। मुरीद लोग फिर आस-पास जमा हैं। [illegible]

मुसलमानों के मस्तिष्क मे हरिजनों को इस्लाम में लाने की बात बहुत देर में आयी [illegible] यह हिन्दुओं का सौभाग्य ही है। क्योंकि ये तो अब तक सल्तनत की खुमारी में अपने आपको सवर्णों से भी उत्कृष्ट समझते रहे अब राजनीति की बासी कढ़ी में उबाल आया है और मीनाक्षी पुरम् में हिन्दू गम्भीर वेदी (हाथी) को जो अंकुश चुभा है इसने इसकी आंखें खोल दी हैं। महन्तो के सिंहासन हिल उठे हैं, सभी पुरोहित चौंक कर सावधान हो गये हैं और लगता ये है कि अब नींद टूटी है तो कुछ करके ही रहेंगे।

धर्माधिकारियों! [illegible] अपने अधिकार का प्रयोग करो। [illegible] के पूर्वजों के ऐसे-ऐसे अस्त्र पड़े हुए हैं कि जिनसे हिन्दू समाज का काया कल्प हो जाए। वेद की तो बात ही क्या है?

आप पुराणो से ही प्रेरणा ले लो।

भागवत ५.४.१३ में लिखा है

यवीयास एकाशीति जायन्तेय पितुरादेशकर।

महाशालीना महाश्रोत्रिया यज्ञशीला कर्म विशुद्धा ब्राह्मणा बभूवु।

इसकी टीका का काव्यकलाभूषण, साहित्यभूषण प. गोविन्द दास व्यास [illegible] प्रकार की है [illegible] की पत्नी) के शेष ८१ पुत्र पिता के आज्ञाकारी महाशीलवान वेद के उत्तमतया जानने वाले विशुद्ध कर्म करके ब्राह्मण हुए।

वायु पुराण अध्याय ९२.४५ गृत्स के पुत्र चारो वर्णों के हुए। हरिवंश पुराण ३२.२० अंगिरा के पुत्र भी चारो वर्णों के हुए।

गौतम स्मृति अध्याय १६ में चारो वर्णो को गायत्री का अधिकारी माना है। विष्णु स्मृति १.९ में शूद्र को पांचो यज्ञों का अधिकारी माना है। गरुड़ पुराण आचारकाण्ड में शूद्रो को यज्ञोपवीत का विधान है।

—शिव कुमार शास्त्री
एम १३, साकेत, नई दिल्ली

ओ३म्

आर्य मर्यादा

यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता ॥

अर्थात् "जहां नारियों की पूजा होती है वहां देवता वास करते हैं" हमारे देश में नारी के लिए कितना ऊंचा स्थान था यह इससे विदित होता है। नारियां भिन्न-२ विद्याओं में पारंगत हुआ करती थीं।

—सम्पादकीय—

कांगड़ी ग्राम में मैंने क्या देखा ?

"कांगड़ी" शब्द केवल आर्यसमाज के इतिहास में ही नहीं, हमारे देश के इतिहास में एक विशेष महत्व रखता है। इस शब्द के साथ केवल एक शिक्षा संस्था का इतिहास ही बन्धा हुआ नहीं, अपितु यह हमें उस युग की याद दिलाता है, जब आज से कोई अस्सी वर्ष पूर्व अमर हुतात्मा श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने हरिद्वार से दस पन्द्रह मील दूर एक जंगल में स्थित कांगड़ी ग्राम के समीप पहला गुरुकुल प्रारम्भ किया था। उसके साथ उन्होंने भारत की शिक्षा प्रणाली को एक नई दिशा दिखाई थी। उसके पश्चात् युग बदलता गया और परिस्थितियां भी बदलती गईं। एक समय ऐसा आया कि गंगा की बाढ़ गुरुकुल को बहा कर ले गई। परन्तु न ही श्री स्वामी जी महाराज और न ही उस समय की आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब निराश होने को तैयार थी। वे सब समझते थे कि यह गुरुकुल केवल एक शिक्षा संस्था ही नहीं है, इसके द्वारा एक नए युग का प्रादुर्भाव हो रहा है। गुरुकुल को चलाने के लिए हरिद्वार में आकर नए भवन खड़े कर दिए और आज वहां एक ऐसा विश्वविद्यालय चल रहा है, जो यदि सुचारु रूप से चलता रहे तो इस देश के नए निर्माण में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। मैं आज यह तो नहीं कहता कि गुरुकुल जिस प्रकार से चलना चाहिए वैसा ही चल रहा है, परन्तु यह अवश्य कह सकता हूं कि यह दिन प्रति प्रगति की ओर बढ़ रहा है। वहां का वातावरण आज बहुत ही सन्तोषजनक है और यदि कोई नई समस्या खड़ी न हो गई तो मेरा यह पूर्ण विश्वास है कि गुरुकुल फिर से एक ऐसी प्रभावशाली संस्था बन जाएगा जिसकी ओर इस देश के शिक्षा विशेषज्ञ देखने लगेंगे।

पिछले तीन दिन मैंने फिर गुरुकुल में ही व्यतीत किए थे। गुरुकुल विश्वविद्यालय के कुलाधिपति होने के कारण मुझे समय-समय पर वहां जाना पड़ता है और वहां की समस्याओं का समाधान ढूंढने के लिए मैं अपनी ओर से प्रयत्न करता रहता हूं। इस बार मैं जब गुरुकुल गया तो मैंने एक नई बात भी देखी है, जिसकी ओर आर्य जनता का ध्यान विशेष रूप से दिलाना चाहता हूं। यद्यपि गुरुकुल के वे भवन जो श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने बनवाए थे, गंगा की बाढ़ में बह गए हैं परन्तु महाविद्यालय का भवन अभी भी वहां खड़ा है। पिछले दिनों गुरुकुल के कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा के नेतृत्व में गुरुकुल के अध्यापक और विद्यार्थी तीन दिन वहां जाकर कर रहे हैं और वहां उन्होंने एक शिविर भी लगाया था। उसके पश्चात् वे उस कांगड़ी ग्राम में गए जिसके नाम पर यह गुरुकुल श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने प्रारम्भ किया था। उस ग्राम के लोग उन्हें देख कर चकित हो गए, क्योंकि उन्हें कभी आशा न थी कि कभी कोई उनकी भी सुनेगा। इस ग्राम में केवल ७०० व्यक्ति रहते हैं। वे भी टूटी फूटी झोंपड़ियों में उनमें १०२ वर्ष का वह अर्जुन सिंह भी है, जो श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ काम किया करता था। उसने जब अपने ग्राम के पास उस पुराने गुरुकुल में एक नया दीपक जलते हुए देखा तो उसकी आंखों में आंसू आ गए। उसने कहा कि लगभग ६० वर्ष के पश्चात् महाविद्यालय के उस भवन में फिर से किसी ने दीपक जलाया है। अपना शिविर समाप्त करने के पश्चात् श्री हूजा अपने विद्यार्थियों और अध्यापकों के साथ कांगड़ी ग्राम में गए। वहां सब ग्राम वासियों को इकट्ठा किया और वहीं यह घोषणा भी की कि गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के छात्र और अध्यापक इस ग्राम को अपनाते हैं और इसे अपना ही ग्राम समझ कर इस की उन्नति और प्रगति के लिए जो कुछ भी हो सकेगा करेंगे। उसके पश्चात् वहां एक और उत्सव किया गया, जिसमें मुरादाबाद के कमीशनर भी आए थे और उन्होंने भी यह घोषणा की है कि सरकार इस ग्राम की पूरी तरह सहायता करेगी। उन्होंने यह भी कहा है कि गुरुकुल या आर्यसमाज इस ग्राम के लिए जितना धन देंगे, उससे नौ गुणा ज्यादा धन सरकार अपने पास से देगी। इसी के साथ वहां बहुत से नए पेड़ भी लगा दिए हैं एक पक्की सड़क भी बना दी गई है। लेकिन अभी इस ग्राम और गुरुकुल के बीच दो नदियां पड़ती हैं। इसलिए बरसात के दिनों वहां तक पहुंचना कठिन होता है। परन्तु यह आशा की जा रही है कि वहां तक एक सड़क बन जाएगी और फिर से वही पुराना गुरुकुल नए सिरे से जीवित हो जाएगा।

9 अगस्त की प्रातः सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री सोमनाथ जी मरवाह और दिल्ली आर्य प्रतिनिधिसभा के प्रधान श्री सरदारी लाल जी वर्मा भी वहां गए थे। उसी दिन सायं मैं भी वहां गया था। इसने वहां कुछ नए पेड़ भी लगाए हैं, सारे ग्रामवासियों को इकट्ठा करके उन्हें यह विश्वास दिलाया है कि यह ग्राम अब सारे आर्य जगत का ग्राम बन गया है। इसकी प्रगति और उन्नति के लिए जो कुछ हो सकेगा, वह किया जाएगा। गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के एक प्राध्यापक श्री विजय कृष्ण जी इस सारी योजना के प्रबन्धक बना दिए गए हैं। उनके साथ एक श्री गुप्ता हैं, जो वृक्षारोपण आदि के विशेषज्ञ समझे जाते हैं। ये दोनों समय समय पर वहां जाते रहते हैं और उस ग्राम को नया रूप देने की योजनाएं बनाते रहते हैं। वहां एक पांचवीं कक्षा तक पढ़ाने के लिए श्रद्धानन्द विद्यालय भी है उसे एक हाई स्कूल बनाने की योजना भी बनाई गई है। इसके अतिरिक्त वहां लघु उद्योग या गृह उद्योग को चालू करने पर भी विचार हो रहा है। मेरा यह सब कुछ लिखने का अभिप्राय केवल यह है कि आर्य जनता को यह पता चले कि कांगड़ी ग्राम जहां कि गुरुकुल कांगड़ी प्रारम्भ हुआ था उसे पुनर्जीवित करने के लिए योजना बना ली गई और गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों और अध्यापक वर्ग ने उसे अपने ग्राम के रूप में अपना लिया है। सरकार कहती है कि यदि एक लाख रुपया आर्य समाज उसके लिए दे दे तो नौ लाख रुपया सरकार अपने पास से दे देगी। मैं इसे सारे आर्यसमाज के लिए एक चुनौती समझता हूं। एक एक व्यक्ति यदि एक एक रुपया भी देने लगे तो एक लाख रुपया इकट्ठा करना हमारे लिए कठिन न होगा। यह भी कैसे एकत्रित करना है, इस पर भी विचार हो रहा है। परन्तु मैं यह अपना नैतिक कर्त्तव्य समझता हूं कि हम सब मिलकर इस ग्राम को एक आदर्श ग्राम बना दें। श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने तो जंगल मे मंगल कर के दिखा दिया था। क्या हम यह भी नहीं कर सकते कि उनकी स्मृति को स्थायी रूप देने के लिए इस ग्राम को सारे आर्य समाज का ग्राम समझ कर इस ढंग से बनाने का प्रयत्न करें कि दूर दूर लोग इसे भी देखने आएं और उस पवित्र भूमि की यात्रा करें, जहां स्वामी श्रद्धानन्द के बनाए कुछ भवन अब भी खड़े हैं। यह स्थान यदि हम चाहें पर्यटन का एक बहुत बड़ा केन्द्र बन सकता है। आशा है कि आर्य जगत इस सारी स्थिति पर गम्भीरता पूर्वक विचार करेगा। हम प्रयास करेंगे कि अप्रैल में गुरुकुल कांगड़ी का जो वार्षिकोत्सव होता है, इस बार उसका कार्यक्रम कुछ इस प्रकार बनाया जाए कि उस पुण्य भूमि पर भी लोग पहुंच सकें। वहां आज भी महाविद्यालय का भवन खड़ा है और जिनके कमरों पर उन महानुभावों के नाम के पत्थर लगे हुए हैं, जिन्होंने अपने पास से धन देकर यह भवन खड़ा किया था। इसका एक ऐतिहासिक महत्व है, जिसे हमें भूलना न चाहिए।

—वीरेन्द्र

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज की देन

जब आप स्वदेश लौटे, १९२० ई० में जगह-जगह घूम-घूम कर असहयोग का सन्देश दिया। ३ सितम्बर १९२१ ई० में राजद्रोही भाषण का अभियोग लगा पुनः उन्हें गिरफ्तार कर लिया। अगस्त १९२२ में बिना शर्त छूटे, परन्तु जेल में क्षयरोग के शिकार हो कर। चालीस चालीस सहस्त्र रुपए देकर तिलक राजनीति के विद्यालय को स्थापित किया। राष्ट्रीय कार्यकर्ता तैयार करने हेतु पीपुल्स सोसायटी स्थापित की। फिर स्वराज्य दल स्थापित किया। ३० अक्तूबर १९२७ ई० को सहस्त्रों की संख्या में एकत्रित हो जनता एक कण्ठ हो नारे लगा रही थी, "साइमन वापस जाओ"। लाला जी जुलूस का नेतृत्व कर रहे थे। मि० स्काट सुपरिण्टेण्डेंट पुलिस ने लाठी चार्ज कराया। साण्डर्स की लाठी के वार से लाला जी की काया झेल तो गई परन्तु घातक चोटें लगने के फलस्वरूप १७ नवम्बर १९२७ ई० को लाला जी का निधन हो गया।

महर्षि दयानन्द एवं आर्य समाज के प्रखर राष्ट्रीय भावना वाले देशभक्तों में

डा. राजेन्द्र शर्मा

भाई परमानन्द का नाम है जो इतिहास के अध्ययन हेतु डी. ए. वी. कालिज लाहौर द्वारा इंगलैंड भेजे गए थे। वहां से वे डिग्री (उपाधि) तो न लाये अपने साथ १८५७ ई० के विद्रोह पर समस्त उपलब्ध साहित्य कालिज हेतु ले आए। इंगलैंड में ये श्याम जी कृष्ण वर्मा के प्रभाव में आ गये थे। पुस्तको के साथ एक साथ क्लोस्टयल से छपी पत्रिका ले आए जिसमें श्याम जी ने बम बनाने की विधि लिखी थी जो १९०९ ई० में तलाशी में पकड़ी गई। भाई जी को २५-२५ हजार रुपयों की जमानत पर छोड़ा गया, तब ये सरदार भगतसिंह के पिता किशन सिंह जी के साथ रहते थे। सन् १९१४ ई० मे जब भारत लौटे तो इन्हें लार्ड हार्डिंग पर बम फैंकने और गदरपार्टी से सम्बन्धित बता कर गिरफ्तार कर लिया गया और फांसी का दण्ड दिया गया जो बाद में काले पानी की सजा में परिवर्तित कर दिया गया जहां कोल्हू बैल की तरह चलाना आदि कार्य कराये गए और हथकड़ी, बेड़ियों में जकड़ कर नरक तुल्य तंग कोठरियों में रखा। बन्धन में जीवन बाती को तिल-तिल जलाते इन्होंने उत्कट देश प्रेम का परिचय दिया। इनके भाई बालमुकुन्द को लार्ड हार्डिंग पर बम फैंकने के सम्बन्ध में फांसी हुई।

इतिहास के मुंह बोलते तथ्य प्रकट करते हैं कि महर्षि दयानन्द और आर्य समाज से स्वतन्त्रता का मन्त्र सीख कर भगत सिंह का परिवार देश पर बलिदान हो गया जो युग युगान्तरों तक देश को सत्प्रेरणा देता रहेगा। परिवार की क्रान्तिकारी परम्पराओं में इनके पितामह अर्जुनसिंह का यज्ञोपवीत संस्कार महर्षि दयानन्द ने कराया था जिनके ये शिष्य थे। इनके तीनों पुत्र किशन सिंह अजीतसिंह तथा स्वर्णसिंह भी पिता की भान्ति आर्यसमाजी थे और इनमें भी उसी भान्ति क्रान्ति की भव्य-भावनायें देदीप्यमान थीं। भगतसिंह के छोटे भाई कुलतारसिंह तथा रणवीर सिंह का कहना है कि महर्षि दयानन्द ने हमारे सम्पूर्ण परिवार को देश पर मरना सिखाया। ये दोनों भाई अभी भी जीवित हैं। किशन सिंह ने क्रान्ति की ज्वालाएं कृषकों तक पहुचाई। जिससे पंजाब में विद्रोह की स्थिति हो गई

भगत सिंह के छोटे भाई कुलतार सिंह तथा रणवीर सिंह का कहना है कि महर्षि दयानन्द ने हमारे सम्पूर्ण परिवार को देश पर मरना सिखाया। ये दोनों भाई अभी भी जीवित हैं।

और इन्हें बन्दी बना कारावास में डाल दिया। स्वर्ण सिंह जेल की यातनाओ से पीडित होकर भरी जवानी में चल बसे। अजीतसिंह ने ३८ वर्ष विदेशों में धूल छानी १९४६ ई० में स्वदेश लौटे और १४ अगस्त १९४७ ई० में जब स्वाधीनता दिवस समारोह के उपक्रम हो रहे थे, परलोक सिधार गए। किशनसिंह जी भी क्रान्ति आन्दोलन में यावज्जीवन सहयोग देकर परलोक चले गए।

भगतसिंह डी० ए० वी० कालिज लाहौर में जयचन्द्र विद्यालंकार तथा भाई परमानन्द के सम्पर्क में आकर इनके क्रान्तिकारी विचारों से प्रभावित हुये। अज्ञातवास स्थिति में कलकत्ता में आर्यसमाज में ठहरे थे और दिल्ली में स्वामी श्रद्धानन्द तथा श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति के यहां ठहरते थे। इसका कारण स्पष्ट है कि उस समय आर्यसमाज अथवा आर्यसमाजियों में ही ऐसे व्यक्तियों को ठहरा कर अपने को जोखिम में डालने का साहस था। १७ अगस्त १९२८ ई० को लाला लाजपतराय का हत्यारा साण्डर्स ज्यों ही दफ्तर से निकल कर मोटर साइकिल लेकर चला कि भगत सिंह ने गोली दाग दी। फिर चन्द्रशेखर और राजगुरु ने दो गोलियां मारीं। लालाजी की मृत्यु का बदला लिया गया, अपमान के इस बदले से राष्ट्र में गौरव उत्पन्न हुआ तथा चेतना आई। २३ मार्च १९३१ ई० को नियम भंग कर, भगतसिंह को संध्या के अंधेरे में फांसी दे दी गई और शव सम्बन्धियों को नहीं दिये तथा अनाथों के पुत्रों की तरह सतलुज में फैंक दिये गये।

क्रान्तिकारियों के शिरोमणि, काकोरी काण्ड के प्रणेता शहीदों में अग्रगण्य श्री रामप्रसाद, बिस्मिल' आर्यसमाजी थे और शाहजहांपुर (उ० प्र०) की आर्यकुमार सभा के अधिकारी थे। फांसी से ३ दिवस पूर्व लिखित आत्म कथा में उसने लिखा है कि—"मैं थोड़े दिनों में ही आर्यसमाजी बन गया। मैंने पिता जी से कहा कि आर्यसमाज के सिद्धान्त सार्वभौम हैं, उन्हें कौन हरा सकता है? (पृष्ठ ११) मेरे गुरदेव शीर्षक के अन्तर्गत पृष्ट २३ पर लिखा है कि "कतिपय सज्जनों की प्रार्थना पर आप आर्य समाज मन्दिर शाहजहांपुर में ही निवास करने लगे।......स्वामी जी मुझे धार्मिक तथा राजनैतिक उपदेश देते थे। लाला हरदयाल का आप से बहुत परामर्श होता था। एक बार महात्मा मुंशीराम (श्रद्धानन्द) जी को आपने पुलिस के प्रकोप से बचाया था। आचार्य रामदेवजी तथा (महाशय) श्री युत कृष्णजी से आपका बड़ा स्नेह था।

(पृष्ठ १०८)

यदि देश हित मरना पड़े मुझको सहस्रों बार भी
तो भी न इस कष्ट को निज ध्यान में लाऊं कभी॥
हे ईश भारत वर्ष में शत् बार मेरा जन्म हो॥
कारण सदा ही मृत्यु का देशोपकारक कर्म हो॥

अन्तिम समय की बात शीर्षक में १९ दिसम्बर १९२७ ई० को फांसी होने की चर्चा है। बलिदान (सम्पादक जयवान देव आचार्य प्रकाशक गुरुकुल झज्जर) पुस्तक के अनुसार 'बिस्मिल उसी दिन प्रातः काल तीन बजे उठते हैं शौच स्नान आदि नित्य कर्म करके यज्ञ करते हैं। फिर ईश्वर स्तुति करके फांसी के तख्ते पर यह कहते हुए लटक जाते हैं कि, हम ब्रिटिश साम्राज्य का नाश चाहते हैं।

मैनपुरी षडयन्त्र के मुख्य नेता गेंदालाल दीक्षित (बिस्मिल के साथी) भी आर्यसमाजी थे जो औरेया जिला इटावा (उ० प्र०) में अध्यापक थे। स्वदेश की कार्यसिद्धि में इन्होंने निःसहाय अवस्था में अन्तिम बलिदान दिया, उसी की स्वप्न में आशंका न थी।

इन 'बिस्मिल के साथी अशफाकुल्ला यद्यपि मुसलमान थे परन्तु आर्यसमाज की राष्ट्रभक्ति से प्रभावित थे एक बार हिन्दू-मुस्लिम दंगा हुआ तब ये आर्यसमाज मन्दिर में बातें कर रहे थे तभी कुछ मुसलमानों ने मन्दिर पर आक्रमण किया तो इन्होंने पिस्तौल तान ली और कहाकि, "यद्यपि मैं मुसलमान हूं परन्तु इस मंदिर की एक-२ ईंट मुझे प्राणों से प्यारी है। यदि किसी ने दृष्टिपात किया तो गोली का निशाना बनना पड़ेगा"। यह है आर्यसमाज की लगन, निष्ठा और देश प्रेम का प्रभाव! मरते समय दिल के अरमान निम्न पंक्तियों में फूट पड़े:—ऐ पुख्ताकार-उल्फत हुशियार डिग न जाना, फरमान कृष्ण का था अर्जुन को बीचरण मे। कुछ आरजू नहीं है, है आरजू तो यह है, रख दे कोई जरा सी खाके वतन-कफन में॥

मदन लाल धींगड़ा इन्डिया हाउस के सम्पर्क से देश भक्ति के रंग में रंग गये। ये भी दयानन्द की राष्ट्रीय भावना से प्रेरित थे। इन्होंने भरे जन-समूह में कर्जन वायली को गोली से उड़ा कर भारत माता के अपमान का प्रतिशोध लिया था।

राजा महेन्द्र प्रताप ने देश के लिये अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया। अफगानिस्तान में भारत की अस्थायी सरकार निर्मित की थी। ३२ वर्ष तक विदेशों में भटकते रहे। १९०८ ई० में आपने प्रेम महाविद्यालय वृन्दावन की स्थापना की थी। यह संस्था आज गुरुकुल विद्यालय के रूप में है। जिसकी भूमि उद्यान सहित इनने आर्यसमाज को प्रदान की थी।

(क्रमशः)

वयं जयेम

(आर्या मीरा यती, आर्य वानप्रस्थाश्रम, ज्वालापुर)

यह वेद की छोटी सी सूक्ति प्रत्येक मानव को एक अनुपम सन्देश दे रही है। ऐसा लगता है कि जैसे मानव को जगा रही है चेतावनी दे रही है और अपनी प्यार भरी गोद में बिठा कर मीठी तथा मधुर भाषा में लोरी देती हुई कह रही है, कि मेरे अमर पुत्रों तुम इस संसार में "वयं जयेम्" अर्थात् मानव के तन को पाकर विजय प्राप्त करने के लिए आये हो। विजयी बनने के लिए तुम्हें यह जीवन मिला है अविजयी अर्थात् हारने के लिए नहीं।

इसलिए ध्यान रखना और वही कार्य करना जिससे तुम विजय प्राप्त कर सको। वह तभी हो सकेगा जब तुम अपने समक्ष जीवन का लक्ष्य लेकर चलोगे अपने उद्देश्य को नहीं भूलोगे। आज तक जितने भी महापुरुष हुए हैं सब ने लक्ष्य को समक्ष रख कर ही विजय प्राप्त की है।

सबसे प्रथम हमें उस देव दयानन्द की याद आती है जिसने जीवन का लक्ष्य चुना था दो बातों को समक्ष रख कर पहला तो यह था कि सच्चे शिव की खोज करूंगा। दूसरे मृत्यु के (चुंगल) चक्कर से कैसे छूटा जा सकता है। बस इसी उद्देश्य को लेकर वह अपने घर के सुखों को छोड़ कर जंगल की ओर चल पड़े थे। चलते-चलते मार्ग में कितने ही कष्ट आए, कितनी ही मुसीबतों का सामना उन्हें करना पड़ा परन्तु क्या मजाल जो वह अपने उद्देश्य से जरा भी विचलित हुए हों। वह "चरवैति २" का पाठ पढ़े हुए थे। इसी कारण उन्होंने अपने पग को पीछे नहीं होने दिया आगे ही आगे बढ़ते गए जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने एक दिन अपने लक्ष्य को प्राप्त कर ही लिया। आज उनके जीवन से प्रेरणा लेकर कितने ही लोगों ने अपने जीवन सफल किए। उन्हीं लोगों के कारण आर्यसमाज का इतिहास सुनहरी अक्षरों में लिखा गया है।

चाहे हम आध्यात्मिक क्षेत्र में हों, चाहे सामाजिक में तो चाहे फिर राजनैतिक क्षेत्र में ही क्यों न हों तभी हम विजयी बन सकते हैं। जब हमारे सामने लक्ष्य हो, उद्देश्य हो।

महात्मा गान्धी ने भारत को विदेशी लोगों के चंगुल से छुड़ाने का उद्देश्य समक्ष रखा था यद्यपि शरीर दुबला पतला था परन्तु मन बलवान था। जब कर्मचन्द गान्धी विदेश में वकालत करते थे, उन्हें एक केस के कारण वहां से निकाल दिया गया। वह रेलगाड़ी में बैठकर जा रहे थे एक गोरे आदमी ने उन्हें ट्रेन से धक्का दे दिया। गान्धी नीचे गिर गए, दांत टूट गए, नाक से खून बहने लगा। उसी समय प्रतिज्ञा की कि अंग्रेजों को निकाल कर बाहर फैंकना है और देश को विजय करना है।

श्री सुभाषचन्द्र बोस जी की भी यही प्रतिज्ञा थी, वह आई० सी० एस० पास करके लन्दन से आए १८ वर्ष की आयु थी फ्रांस तथा पेरिस होते हुए भारत आ रहे थे कि एक दिन पेरिस में घूम रहे थे एक महिला ने समीप आकर पूछा। आप कौन से देश से आए हो। सुभाषचन्द्र जी ने उत्तर दिया—भारत से आए है। फिर दूसरा प्रश्न किया आपका नाम क्या है? उत्तर दिया मुझे सुभाषचन्द्र बोस कहते है। वह देवी बार-बार सुभाष जी की ओर देख रही थी। सुभाष जी को बहुत बुरा लगा वे गुस्से से बोले "क्यों बार-२ देख रही हो" कहने लगी "भारत मे रहते हो कुत्तों की तरह" सुभाष जी पानी-२ हो गए। उसी समय कोट, पैन्ट, टाई उतार कर फेंक दी और उसी समय प्रतिज्ञा की जब तक भारत को स्वतन्त्र नही बना लूंगा चैन से नहीं बैठूंगा। फिर उन्होंने जय आजाद हिन्द फौज बनाई जिसमें स्त्री और पुरुषों लड़के और लड़कियो को भर्ती किया।

वयं जयेम् प्राप्त करने के लिए हमें जो साधन अवश्य अपने जीवन में धारण करने चाहिएं। उसमें पहला शारीरिक है दूसरा आध्यात्मिक। बिना शारीरिक जयेम् किए हम एक दम भी आगे नहीं बढ़ सकते। यह शारीरिक जयेम् भी तभी हो सकता हैं जब हम स्वास्थ्यके नियमों का पालन करेंगे, सब से प्रथम तो यह है कि सब लोग प्रात:काल उठने का अभ्यास करें। वेद का आदेश है जो व्यक्ति प्रात: काल उठता है वह उत्तम सम्पति उपलब्ध करता है।

श्री रामचन्द्र जी को देख लो जब वह जंगल में गए तो क्या देखा ऋषियों के आश्रम में राक्षस लोग मांस के टुकड़े फैंक जाते थे उन्होंने कहा जब तक इनको मार न लूं चैन से नहीं बैठूंगा। देखो कैसे अपनी प्रतिज्ञा को पूर्ण किया। जितने भी महापुरुष हुए हैं वे अपने गुणों के कारण विजय प्राप्त करके गये हैं इसी लिए युग-युग तक उनकी अमरगाथा के गीत गाये जा रहे हैं।

वयं जयेम् प्राप्त करने के लिए हमें दो साधन अवश्य अपने जीवन में धारण करने चाहिएं। उसमें पहला शारीरिक है दूसरा आध्यात्मिक ? बिना शारीरिक जयेम् किए हम एक दम भी आगे नहीं बढ़ सकते। यह शारीरिक जयेम् भी तभी हो सकता है जब हम स्वास्थ्य के नियमों का पालन करेंगे। सबसे प्रथम तो यह है कि सब लोग प्रात: काल उठने का अभ्यास करें वेद का आदेश है जो व्यक्ति प्रात: काल उठता है वह उत्तम सम्पत्ति उपलब्ध करता है।

प्रात: रत्न प्रातरित्वा दधाति ॥ ऋ० १-१५५ ॥

प्रात' जागने वाला प्रभात में रत्न धारण करता है। आज लोग वेद की बात को न मान कर रात्रि के १२ बजे तक जागते रहते हैं और प्रातः काल सूर्योदय तक सोये रहते हैं। फिर बिना हाथ मुंह धोये कुल्ला किए ही 'बैड टी' ले लेते हैं जिससे बहुत हानि होती है। शरीर को नीरोग रखने के लिए रात्रि को १० बजे शयन कर लेना चाहिए और और प्रातः ८ बजे उठना चाहिए। सबसे प्रथम मुंह में ठंडा जल भर कर आंखो मे २५ छींटे पानी से लगाने से आंखों की ज्योति बढ़ती हैं। उसके पश्चात् शौचादि से निवृत्त होकर आसन प्राणायाम करें। तत्पश्चात् स्नान करके फिर सैर के लिए जाना चाहिए। तब प्रातराश लें ऐसा करने से स्वास्थ्य उत्तम रहता है।

दूसरा आध्यात्मिक जयेम् है इसके बिना हमारा जीवन किसी काम का नहीं है। बिना आत्मिक उन्नति किए आज तक न कोई सफल हुआ है और न हो ही सकता है। हम इस बात का विवेचन करें किस तरह से आध्यात्मिक जयेम् हो सकता है। परमपिता परमात्मा ने हमको पांच ज्ञानेन्द्रिया पांच कर्मेन्द्रियां दी हैं। उसके साथ ही मन, बुद्धि, पांच कोष इत्यादि भी दिये हैं। जिनसे हम ईश्वर चिन्तन करें। इतना ही नहीं पांच ज्ञान इन्द्रियों से ठीक-ठीक ज्ञान प्राप्त करें और पांच कर्म इन्द्रियों से श्रेष्ठ कर्म करें यदि अच्छे कर्म करेंगे तभी मन और बुद्धि पवित्र रह सकते है और शुद्ध मन ही हमें विजय प्राप्त करने में सहायता देता है अशुद्ध मन तो कुकर्मों में ले जाता है जिसके परिणाम स्वरूप हमारी जीत न होकर हार हो जाती है।

इसके बाद जो पांच कोष हैं हम उनका विवेचन करें तो लाभ होगा यह पांच कोष ही नही यह पांच अमोलक खजाने हैं जिस प्रकार किसी देश के राजा के पास हीरा मोती, जवाहर, सोना, चांदी के पांच खजाने होते हैं वह उन्हें किस प्रकार से सुरक्षित रखता है। इसी तरह उस नियामक ब्रह्मा ने हमारे शरीर के भीतर पांच कोष बनाये हैं उनके नाम है। अन्नमय कोष, प्राणमय कोष, मनमय कोष, विज्ञानमय कोष और पांचवा है आनन्दमय कोष।

इन सब में प्रथम अन्नमय कोष है इसका शरीर में मुख्य स्थान इसलिए माना गया है कि यदि यह बिगड़ गया तो शरीर चल ही नहीं सकता। इसलिए अन्नमय कोष को ठीक रखने के लिए हमें कैसा अन्न खाना चाहिए। शास्त्र की मर्यादा है हितभुक्, मितभुक ऋतुभुक्। इनमें हितभुक् है जो हितकारी हो अपने स्वास्थ्य के अनुकूल हो वही भोजन खाना चाहिए, यह नही कि जिह्वा के वश होकर दही भल्ले, पूरी-कचौरी खा लें और पाचन शक्ति कमजोर हो तो अतिसार हो जाएगा। दूसरा मितभुक् का तात्पर्य है कि जितनी भूख हो उस से दो ग्रास कम लें, जिससे श्वास प्रश्वास की गति ठीक प्रकार से हो सके। तीसरा ऋतभुक् वह है जो ऋतु के अनुसार खाया जाता है यदि वर्षाऋतु मे मनुष्य गरिष्ठ भोजन लेगा तो वह हानिकारक हो जाएगे—यह कुछ साधन हैं जो प्रत्येक मनुष्य को अपने अन्नमय कोष को ठीक रखने के लिए अपनाने चाहिएं, यदि इन बातो का ध्यान रखेंगे तो अन्नमय कोष बिगड़ सकता है। दूसर मनोमयकोष है इसको पवित्र बनाना है यह पवित्र कैसे रह सकता है इसके लिए यहा यहा आवश्यक है कि हम आंख आंखो से भद्र देखें कानो से भद्र सुनें, वाणी से मीठा बोलें। वहां पर हम अन्न शुद्ध और पवित्र कमाई का खाए। वेद के अनुसार 'श्रेष्ठानि द्रवनानि'।

अर्थात् श्रेष्ठ अन्न हमारे घरो में कौन सा आना चाहिए। पवित्र कमाई का हो ब्लैक का काला धन न आवे। यदि हम पाप का धन घर में खर्च करते तो मन शुद्ध नही रह सकता। कहा भी है। 'जैसा खायें अन्न, वैसा बने मन' इस बात का प्रमाण महा भारत के उस समय का है

(शेष पृष्ठ ६ पर)

'श्रेष्ठ बनें सब'

हिमगिरि से ले सिन्धु जलधि तक
छा जाए चेतना सुवासित।
भारत के प्रांगण से भागे
विस्तृत जो अन्याय प्रसित।
पाखण्डों के गढ़ पर फिर से
चले प्रलय हो तीव्र कुठारा।
मानवता के तत्व सिसकते
हुए, धरा पर हों आश्वस्त।
दानवता का अट्टहास सब
भू पर हो पतनोन्मुख पस्त।
वेद ज्ञान की अविरल गंगा में—
अमृत पान करें जन सारा।
सत्य-सनातन-धर्म-सुवैदिक
वेदों का [illegible] धरती पर।
सभ्य-सुसंस्कृत-श्रेष्ठ बनें सब
वसुधा के वासी नारी-नर।
'कृण्वन्तोविश्वमार्यम' का—
गूंजे भू पर, अविरल, नारा।
सुखी तथा सम्पन्न शील हों
ऋषि-मुनियों के हम अनुयायी।
ज्योतिष्मान करें मानव-मन
फटे स्वार्थ लिप्सा की काई।
बढ़े सुपथ पर निर्भय होकर—
भारत वह प्राणों से प्यारा॥

—श्री राधेश्याम आर्य एडवोकेट

'पन्द्रह अगस्त अभिवादन है'

अभिनन्दन है अभिनन्दन है।
स्वतन्त्र दिवस तुम्हे वन्दन है॥
पाने को तुम्हे हर देश भगत।
छोड़ा सुख चैन सुवर्ण रजत॥
और तजे मोह का बन्धन है॥१॥
आजाद भगत शास्त्री गान्धी।
नेहरू सुभाष की स्नेह आंधी॥
तन मन धन किया समर्पण है॥२॥
आजाद किया भारत मां को।
सुख चैन दिया भारत मां को॥
जिह्साथा करी जो क्रन्दन है॥३॥
दुख कष्ट के कंटक दूर हुए।
दासता टूट अति चूर हुए॥
हर भाल लगा सुख चन्दन है॥४॥
नहीं झुकेगा ध्वज मेरा।
कट जाए भले यह सिर मेरा॥
पन्द्रह अगस्त अभिवादन है॥५॥
होकर शहीद आजाद किया।
निज भारत को आबाद किया॥
शत बार करूं अभिनन्दन है॥६॥

—शिवजी शास्त्री डी. ५-४६, त्रिपुरा भैरवी वाराणसी

[illegible]

(३ पृष्ठ का शेष)

जिस समय भीष्मपितामह शरशैया पर लेटे हुए थे तो युधिष्ठिर आदि कुछ [illegible] के लिए गए तो बाबा कहने लगे कि सभा में नहीं जाना चाहिए जहां पर अन्याय हो। यदि जाए भी तो उठकर आ जाना चाहिए। इस बात को सुनकर द्रोपदी भी खिलखिला कर हंस पड़ी। भीष्मपितामह जी कहने लगे क्या कारण है जो द्रोपदी भी हंस रही है। द्रोपदी ने कहा आप उस समय कहां पर थे जब दुःशासन मेरे वस्त्र उतार रहा था, आप उस समय न कुछ बोले और न ही उस सभा से उठकर गए। तो भीष्म जी कहने लगे बेटी तुम सत्य कहती हो मैंने उस समय पापी दुर्योधन का अन्न खाया था जिसके कारण मेरी बुद्धि पर पर्दा पड़ा हुआ था। अब युद्ध भूमि में तीर लगने से वह अशुद्ध रक्त निकल गया है।

तीसरा प्राणमय कोष है इस को ठीक रखने के लिए प्राणायाम करना चाहिए। तभी तो सन्ध्या में ३ से लेकर २१ बार तक प्राणायाम करने का विधान है। यह एक नहीं अनेक प्रकार का है सूर्य भेदी, चन्द्रभेदी, फिर (१) बाह्य, (२) आभ्यन्तर, (३) स्तम्भ वृत्ति. (४) बाह्याभ्यन्तराक्षेपी जितने भी लोग प्राणायाम करने वाले हुए हैं उनकी दीर्घायु तथा शरीर बलवान होता है। हमारे ही देश में राममूर्ति पहलवान हुए हैं। वे जब ८-१० वर्ष के हुए तो रोगी रहने लगे। इसी कारण न तो वह स्कूल में जाकर पढ़ाई कर सके और न ही घर में उनसे कोई स्नेह करे रोग के कारण दुःखी रहते थे एक दिन सोचा कि कुएं में जाकर मर जाऊं तो अच्छा रहेगा। प्रातः काल ही घर से चोरी निकल पड़े। मार्ग में जाते-जाते एक साधु का आश्रम आया बाहिर खड़े होकर देखने लगे महात्माजी ने अन्दर से देख लिया आकर पूछा बेटा क्यों खड़े हो। राममूर्ति ने सरल हृदय से कह दिया मरने के लिए घर से निकला हूं महात्मा जी ने समझाया जीवन बहुत कीमती है चलो अन्दर मेरे आश्रम में रहो। राममूर्ति १२ वर्ष तक रहा महात्मा जी ४ बजे प्रातः उठा देते थे फिर आसन-प्राणायाम इत्यादि सिखाए, कितना बलवान हो गया। वही राममूर्ति आगे जाकर कार तक रोकने लगा। यह सब शक्ति प्राणायाम के कारण ही उसे प्राप्त हुई? इसलिए प्रत्येक मनुष्य को प्रतिदिन दोनों समय नहीं तो प्रातः काल खाली पेट अवश्य ही प्राणायाम करना चाहिए। तभी प्राणमय कोष ठीक रह सकता है।

चौथा विज्ञानमय कोष यह बुद्धि कोष है। जब तक बुद्धि शुद्ध नहीं तब तक [illegible] बुद्धि शुद्ध ज्ञान से होती है [illegible] "[illegible]" इन महापुरुषों के [illegible] विद्वानों के साथ बैठ कर [illegible] करें और अपनी बुद्धि को [illegible] पवित्र बनाएं, जहां पर बुद्धि को [illegible] ऋतम्भरा भी बनावें [illegible] करें जिससे विज्ञानमय कोष ठीक रह सके।

पांचवां और अन्तिम कोष आनन्दमय कोष है इसके लिए हम विचार करें तो मालूम होता है कि यह आनन्द तो केवल परमपिता परमात्मा के पास ही है। इसलिए आनन्द को प्राप्त करने के लिए हम उस प्रभु की शरण में जाएं उसके समीप बैठ कर ओ३म् नाम का जप करें। इसके साथ-साथ ही पतंजलि ऋषि के लिखे अनुसार योग के आठ अंगों का पालन करें तभी चित्तवृत्ति का निरोध होगा? जब चित्त का निरोध हो गया तो ध्यान और जप में मन लग जाएगा फिर आनन्द की प्राप्ति होगी अन्यथा नहीं। इसलिए अधिक से अधिक समय मौन तथा एकान्त में रह कर आनन्द को प्राप्त करें।

बस अब आध्यात्मिक कर्तव्य हो गया तो हमारे जीवन का जो लक्ष्य है वह प्राप्त हो जाएगा इसलिए [illegible] करने के लिए प्रथम लक्ष को न भूलें दूसरे अपना जीवन आध्यात्मिक बनाएं? आज तक जितने भी महापुरुष हुए हैं उन सब की कीर्ति इसी कारण हुई है कि वे अपने जीवन को त्यागी, तपस्वी व्यतीत करके गए हैं। इसी कारण हजारों वर्षों के पश्चात् भी हम महर्षि वशिष्ठ, ऋषि विश्वामित्र, गौतम, कपिल, कणादि का नाम लेते हैं।

आचार्य रामदेव जन्म शताब्दी उद्घाटन समारोह

[illegible] के सुप्रसिद्ध विद्वान गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के भू. पू. आचार्य एवं कुलपति तथा कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून के संस्थापक स्वर्गीय आचार्य रामदेव जी की जन्म शताब्दी का उद्घाटन ३१ जुलाई १९८१ को कन्या गुरुकुल महाविद्यालय देहरादून में समारोह पूर्वक किया गया। इसका समापन श्री आचार्य जी के स्मृति दिवस ९ दिसम्बर को किया जायेगा इसी बीच में आर्य समाज एवं शिक्षा सम्बन्धी विभिन्न विचार गोष्ठियों के आयोजन किए जायेंगे जिसमें सुप्रसिद्ध विद्वानों एवं शिक्षा शास्त्रियों को आमंत्रित किया जायेगा।

गोवंश हत्या को पूर्णतया बन्द नहीं किया तो देश बर्बाद होगा

—स्वामी योगेश्वर विदेही हरि

भारत में गोवंश हत्या को नहीं रोका गया तो देश बर्बाद होगा। उक्त चेतावनी देते हुए भारत गो-संरक्षण परिषद के अध्यक्ष पूज्य महा मण्डलेश्वर स्वामी श्री योगेश्वर विदेही हरि जी महाराज ने भारतीय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी से अनुरोध किया कि वह अपने आश्वासन के अनुसार सम्पूर्ण गोवंश हत्या निरोध का केन्द्रीय कानून समस्त देश में बनवाए। पूज्य स्वामी जी ने प्रेस क्लब नई दिल्ली में पत्रकारों को सम्बोधित करते हुए कहा कि बंगाल के साथ उत्तर प्रदेश भी गम्भीर चिन्ता का विषय है। वहां कानून एवं जनहित की धज्जियां उड़ाकर हजारों गोवंश की हत्या कर मांस का निर्यात भैंस के नाम से देश के बड़े नगरों में कराया जा रहा है। इसी भान्ति गोवंश भी भिजवाया जा रहा है।

दिल्ली प्रदेश के अनेक स्टेशन भी गोवंश का सवाल गो हत्यारे क्षेत्रों को ... रहे हैं। सुना जाता है कि गोवंश एवं मांस पाकिस्तान आदि विदेशों को भी गुप्त रूप से भिजवाया जा रहा है।

पू. स्वामी जी ने इससे हो रही हानि का विवरण देते हुए कहा कि तेल एवं खाद की कमी से कृषि उपज घट होगी। ऊर्जा एवं ईंधन की कमी को दूर करने के लिए भी गोबर के बिना कोई सहारा उपलब्ध नहीं है।

अनुमान है कि गोवंश समाप्त करने के लिए गम्भीर षड्यन्त्र है। जिसमें विदेशी भी सम्मिलित हो सकते हैं। सरकार उक्त अत्याचार को समाप्त करने की बात सुनने के लिए तैयार नहीं है। इसलिए उत्तर प्रदेश में सांकेतिक सत्याग्रह प्रारम्भ किया जाएगा। इससे भी यदि सरकार जागृत नहीं हुई तो सत्याग्रह बढ़ाया भी जा सकता है। अपितु देश की स्थिति को देखते हुए तीव्र सत्याग्रह की योजना है। इस सम्बन्ध में आचार्य श्री विनोबा भावे जी से भी पत्र-व्यवहार चल रहा है। विनोबा जी ने श्री राधाकृष्ण बजाज को भी इस सम्बन्ध में कुछ आदेश दिए हैं।

पू. स्वामी जी ने गोबर की कमी के आंकड़े देते हुए पत्रकारों को बताया कि देहातों में ७०३ लाख घरों में से ६५१ लाख घर गोबर से बने हैं। २०० वर्ष से बने मकानों की मरम्मत प्रतिवर्ष गोबर से होती है। इण्डिया १९६६ पृष्ठ ३८९ टेबल २१८ के अनुसार तीसरी पंचवर्षीय योजना में ३८ लाख घरों की कमी थी जो पांचवीं योजना में ११८ करोड़ मकानों की कमी हो चुकी थी। सीमेंट मिलना भी कठिन हो रहा है।

४ कमरों के सीमेंट द्वारा बनाए घर पर कम से कम ४० हजार रुपए व्यय होता है जबकि गोबर से मामूली व्यय में तैयार होता है।

भारतवर्ष में विभिन्न उद्देश्यों के लिए कम से कम गोबर की आवश्यकता इस प्रकार है—

१	खाद के लिए	२०००० करोड़ टन
२.	१४ करोड़ परिवारों के लिए चूल्हे के ईंधन के लिए	७००० „
३	११८ लाख बेघर परिवारों के घर बनाने के लिए	४७२
३.	पुराने घरों की मरम्मत के लिए	४७२
४	अनाज की रक्षा के लिए	५०००
५	गन्दी जगह की सफाई के लिए	१०००
	योग	३३९ ४४ करोड़ टन

गोबर की उपज ६३ ८ करोड़ टन है। गोबर की वार्षिक कमी २७६ ३६ करोड़ टन है। हम प्रत्येक वर्ष अधिक से अधिक भूमि को जोत में ला रहे हैं। सन १९५० के बाद २७ ५ प्रतिशत कृषि भूमि बढ़ी। अधिकतर कृषि भूमि के लिए अधिक बैल एवं उनके गोबर मूत्र की खाद की परम आवश्यकता है।

१९७१ में ग्रामीण क्षेत्र में जनसंख्या ४३ करोड़ से ऊपर थी अब वह लगभग ५६ करोड़ है। ग्रामीण क्षेत्रों में चूल्हे के ईंधन का मुख्य स्रोत गोबर के उपले हैं। आज तो गोबर गैस प्लान्ट भी अति-आवश्यक हो गया है। उसके लिए और अधिक गोबर चाहिए।

तलाक बड़ा या आदर्श गृहस्थ जीवन

हिन्दू धर्म में विवाह को एक पवित्र धार्मिक संस्कार माना गया है। मनुष्य पशु की भान्ति अमर्यादित और स्वेच्छाचारी न हो जाए और उसे प्रेम को केन्द्रीभूत करके उसे पवित्र बनाने का बल प्राप्त हो इन उद्देश्यों को लेकर हिन्दू विवाह का पावन विधान है।

विवाह का उद्देश्य भोग नहीं किन्तु सतत जागरूकतापूर्ण उद्यम और बलिदान है। हिन्दू धर्मशास्त्रों में विवाह को यज्ञ कहा गया है और इस वैवाहिक यज्ञ में पति पत्नी को एक सूत्र में सदा के लिए लिए प्रेम रूप में ग्रथित करने के कारण विवाह संस्कार का शास्त्रों में बड़ा महत्व है। यदि पति पत्नी दोनों विधिवत गृहस्थ धर्म का पालन करें तो कोई कारण नहीं कि उनका वैवाहिक जीवन सुख और शान्ति से भरपूर न हो सके।

तलाक के मामलों में कमी लाने के लिए यह बहुत आवश्यक है कि हमारे पाठ्य क्रम में विवाह संस्कार की महत्ता और आवश्यकता विवाह संस्कार के पवित्र भाव और पति पत्नी दोनों के लिए अवश्य पालनीय धर्म एवं कर्तव्य आदि के सम्बन्ध में शिक्षा को भी स्थान मिले। उससे हमारी नयी पीढ़ी को यह समझने और याद रखने में आसानी होगी कि विवाह विलास-वासना का साधन नहीं अपितु नियम पूर्ण जीवन का साधन है।

—बिहारीलाल मेला राम कपूर

—

संस्कारो से परहेज क्यों ?

पाश्चात्य संस्कृति और अंग्रेजी शिक्षा ने हिन्दुओं की मानसिकता को किस सीमा तक विकृत कर दिया है कि वे अपने संस्कारो की अवहेलना करने में शर्म नहीं अब अनुभव करने लगे हैं वे भूल ही गए हैं कि गर्भाधान से लेकर मृत्युपर्यन्त चलने वाले प्रत्येक संस्कार का एक विशिष्ट अर्थ और महत्व है। वस्तुतः सब संस्कारों का प्रयोजन है मानव के बाह्य और आन्तरिक जीवन की शुद्धि और उसे बनाना।

दुख तो यह देखकर होता है कि ब्राह्मण जो कभी भारतीय संस्कृति और हिन्दू संस्कारशीलता के प्रहरी थे संस्कारो की हंसी उड़ाने और पग पग पर उनकी अवहेलना करना बड़े साहस का काम समझते हैं। उनके लेखे उपनयन संस्कार श्राद्ध विवाह संस्कार और अन्तिम संस्कार जैसे संस्कार बेतुके ढकोसले और व्यर्थ लगते हैं। यह सुनकर उन्हें हंसी आ जाती है कि जन्म से पूर्व से लेकर मृत्यु तक के प्रत्येक हिन्दू संस्कार के पीछे हमारे पूर्वज ऋषियों का एक ही उद्देश्य था मानव की शुद्धि उन्नति और उसका सर्वांगीण सुधार।

वह काल बीते अभी अधिक वर्ष नहीं हुए जब किसी कारणवश यदि कोई हिन्दू किसी संस्कार का पालन करने में असमर्थ रहता था तो वह काफी समय तक और पश्चाताप की आग में जलता रहता था लेकिन आज अधिकांश हिन्दुओं का नैतिक अधःपतन इतना अधिक हो गया है कि वे स्वयं तो संस्कारो की जानबूझकर अवहेलना करते ही हैं संस्कारशील हिन्दुओं की खिल्ली भी उड़ाते हैं।

संस्कारो की अवहेलना करके हम स्वयं अपनी संस्कृति की और अपनी अस्मिता की ही अवहेलना करते हैं।

—विश्व हिन्दू परिषद

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज विनय नगर नई दिल्ली की उपप्रधाना श्रीमती दया वती जी के अकस्मात निधन से आर्य समाज को बहुत बड़ी हानी हुई है। जिसकी पूर्ति असम्भव है माता जी चिरकाल से आर्यसमाज की तन मन धन से सेवा करती रही हैं वह बहुत पुरानी आर्यसमाज की कर्मठ कार्यकर्ता थी। आर्य स्त्री समाज के साप्ताहिक सत्संग भी बहुत वर्षों से उनके घर पर लगते हैं। वह आर्यसमाज के प्रत्येक —साप्ताहिक सत्संग यज्ञ कथा उत्सव आदि में नियमित रूप से उपस्थित रहती थी और अपना मार्ग दर्शन करती थी।

परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा को चिर शान्ति प्रदान करें और उनके परिवार जनों को यह महान दुःख सहन करने की शक्ति दें।

धर्म रक्षा महाभियान जरूरी

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान ने २६ जुलाई १९८१ से जो धर्म रक्षा अभियान का प्रोग्राम शुरू किया है यह आर्यों के लिए प्रसन्नता का विषय है। क्योंकि अब तक हमारे समाज में ऐसी परिस्थितियां बनती जा रही हैं यदि इनको रोकने का प्रयास न किया जाए तो यह लावा बन कर फूट सकता है इनके बहुत से दुष्परिणाम निकल सकते हैं। —वीरेन्द्र आर्य लुधियाना

पारिवारिक सत्संग

आर्ययुवक सभा फिरोजपुर शहर के सदस्य श्रीइन्द्रजीत भाटिया के निवास स्थान पर २९ जुलाई को उनके जन्म दिन के उपलक्ष्य में यज्ञ का आयोजन किया गया। श्री रघुवीर शास्त्री जी ने यज्ञ सम्पन्न करवाया और उपदेश दिया। इसके पश्चात प्रो, जगदीश चन्द्र आर्य और 'मनु मनु' की जोडी ने मधुर भजनों से सैंकड़ों नर नारियों को आनन्दित किया। अन्त मे इन्द्रजीत जी को महर्षि दयानन्द का चित्र और [illegible]।

फिरोजपुर में वेद प्रचार

आर्य युवक सभा लुधियाना रोड फिरोजपुर छावनी द्वारा दिनांक ६-७-८१ से १२-७-८१ तक "वेद प्रचार सप्ताह" मनाया गया जिससे वेदों के प्रकाश

लन्दन से आया एक खत

आर्य समाज लन्दन के तत्वावधान में साप्ताहिक सत्संग प्रत्येक रविवार को बन्दे मातरम् भवन में प्रो. सुरेन्द्र नाथ जी भारद्वाज की अध्यक्षता में बड़े सफलता पूर्वक सम्पन्न हो रहे हैं। अप्रैल तथा मई मास में हुए सभी यज्ञों के ब्रह्मा प्रो. भारद्वाज थे। आर्य समाज की बहनों द्वारा प्रस्तुत ऋषि कीर्तन के सामूहिक गान से समस्त वातावरण भक्तिपूर्ण हो जाता है। प्रति सप्ताह एक वेद मंत्र की व्याख्या की जाती है जो कि वर्तमान सामाजिक मूल्यों के अनुकूल होती है। तत्पश्चात मुख्य वक्ता के विद्वत्तापूर्ण प्रवचनों से प्रबुद्ध श्रोता लाभान्वित होते हैं।

पण्डित श्री इन्द्रमुनि जी महाराज और [illegible] (दिल्ली) के विवेक भूषण व विवेक भूषण ने भाग लिया। सुबह पारिवारिक सत्संग और साय समाज मन्दिर में प्रवचन हुआ। अन्तिम दिन सक्रिय सदस्यों को उनकी सेवाओं के प्रतिरूप प्रमाण पत्र दिये गए। — मंत्री



सां[illegible] कार्यक्रम

[illegible] कार्यक्रम [illegible] तथा १७ मई १९८१ [illegible] द्वारा प्रस्तुत संगीत [illegible] तथा लोक गीतों के कार्यक्रमों का आनन्द सैंकड़ों लोगों ने लिया।

हिन्दी कक्षाएं

प्रत्येक रविवार दोपहर २ बजे से ४ बजे तक हिन्दी कक्षायें नियमित रूप में चल रही हैं। अध्यापिकाओं के कुशल शिक्षण तथा परिश्रम से स्थानीय बच्चों ने हिन्दी में बोल चाल तथा लेखन में आशातीत प्रगति की है।

यज्ञ तथा प्रचार

प्रो. सुरेन्द्र नाथ भारद्वाज श्रीमती सावित्री छाबड़ा श्रीमती कैलाश मसीन, श्री [illegible] देव [illegible], श्री [illegible] शर्मा तथा प, गिरीश चन्द्र ने विविध स्थानों पर यज्ञ करवा कर वैदिक धर्म का प्रचार किया।

जन कल्याण तथा सेवा

पश्चिम की रंग बिरंगी चकाचौंध तथा [illegible] [illegible] [illegible] समाज [illegible] रहा है। [illegible] दिनों ऐसे ही [illegible] [illegible] विशेष प्रेम की [illegible] प्रो. [illegible] (आर्य समाज) ने लन्दन के [illegible] हास्पीटल में भेंट करके उन्हें सांत्वना प्रदान की [illegible] किया तथा [illegible] सहयोग का आश्वासन देकर राहत पहुंचाई।

आर्य युवक सभा

२ अगस्त को आर्य युवक सभा फिरोजपुर शहर की तरफ से युवक सभा के १ वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में एक प्रोग्राम पेश किया गया। सबसे पहले वेद मन्त्रों द्वारा यज्ञ किया गया। उसके बाद सभी युवकों ने अपने-अपने विचार [illegible] किया। श्री मोहन लाल जी और श्री चोय राम जी ने युवकों की सफलता पर बधाई दी और उन्हें आगे बढ़ने का आशीर्वाद दिया। अन्त में सबको चाय-पान करवाया गया।

—ललित बजाज मंत्री

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

Lvu

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वर्ष 14—अंक 22, 8 भाद्रपद सम्वत् 2038, तदनुसार 23 अगस्त 1981, दयानन्दाब्द 156 । एक प्रति 35 पैसे (वार्षिक शुल्क 15 रुपए)

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का आर्य समाजों को निर्देश

हिन्दू समाज को विश्रंखलित करने की साजिशों का डटकर मुकाबला करें

'हरिजन स्नेह सम्मेलन धर्म रक्षा महाभियान की भूमिका मात्र

आर्य (हिन्दू) जाति की आन्तरिक जात-पात छुआछूत ऊंच नीच आदि सामाजिक कुरीतियों का अनुचित लाभ उठाकर विदेशी शक्तियां भारत के इस्लामीकरण व ईसाईकरण करने में प्रयत्नशील हैं । सब आर्य समाजों को निर्देश दिया जाता है कि वे अपने लिए इसे चुनौती समझकर इन षड्यन्त्रों को विफल बनाने का भरसक प्रयत्न करें । इस पुनीत राष्ट्रीय कार्य में वे हिन्दू जाति के सभी वर्गों का सहयोग लेने का प्रयास करें । सौभाग्य से आज हिन्दू जाति का प्रत्येक वर्ग यह अनुभव करता है कि आर्य समाज ही इस संकट काल में आर्य (हिन्दू) जाति की रक्षा कर सकता है । इसके नेतृत्व में आज सभी वर्ग चलने को तैयार हैं ।

अपने कर्त्तव्य का ध्यान करते हुए ही सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने धर्म रक्षा महाभियान आन्दोलन चलाया है । इसके अन्तर्गत भारत की सभी आर्य समाजों में २६ जुलाई १९८१ को हरिजन स्नेह सम्मेलन दिवस मनाया । इस अवसर पर सर्वत्र यज्ञ किए गए यज्ञों पर हरिजन बन्धुओं का यज्ञोपवीत प्रदान किए गए । सहभोजन हुए तथा जलूस और जन-सभाएं बड़ी सफलता के साथ आयोजित किए गए । यह इस अभियान की केवल भूमिका मात्र थी ।

आर्य समाज को अब प्रयत्न करना चाहिए कि वे अपने आचरण एवं व्यवहार से हरिजन बन्धुओं में यह विश्वास उत्पन्न कर दें कि उन्हें आर्य (हिन्दू) जाति में सम्मान पूर्वक समानता का दर्जा प्राप्त है । उन पर होने वाले किसी भी अत्याचार या अन्याय का सामना करने में आर्य समाज उनके साथ है । इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए उन्हें नीचे लिखे कार्य क्रमों को क्रियात्मक रूप देना चाहिए ।

इस बात का ध्यान रहे कि अब हमारे भाषण नहीं अपितु आचरण ही हरिजन बन्धुओं के अन्दर सम्मान समानता व सुरक्षा की भावना उत्पन्न कर सकता है । हमारा आचरण इस प्रकार होना चाहिए ।

१ आर्य बन्धुओं को नित्य एक घंटा हरिजन बस्तियों में जाकर उनके बच्चों को सन्ध्या कराना चाहिए ।

२ प्रत्येक सप्ताह एक दिन उनकी बस्ती में एक यज्ञ सत्संग का आयोजन करें और सत्संग के पश्चात प्रसाद वितरण किया जाए ।

३ हरिजन परिवारों में जितने संस्कार हों उन्हें आर्य समाज के पुरोहित निःशुल्क कराएं ।

४ हरिजनों के विवाह आदि संस्कारों में आर्य बन्धुओं को सम्मिलित होना चाहिए और अपने विवाह संस्कारों पर उन्हें आमन्त्रित किया जाना चाहिए ।

५ प्रत्येक आर्य समाज को अपने सदस्यों एवं अधिकारी वर्ग में अधिक से अधिक स्थान देना चाहिए ।

६ समस्त सामाजिक कुरीतियों की मूल जन्म गत जात पात के उन्मूलन के लिए अन्तर्जातीय विवाहों को प्रोत्साहन देना चाहिए । प्रत्येक आर्य को यथा सम्भव अपने बच्चों के विवाह केवल गुण कर्म और स्वभाव के आधार पर जन्म गत जात-पात के बन्धन तोड़कर करने चाहिए

७ जो आर्य (हिन्दू) किन्हीं कारणों से विधर्मी बन गए हैं उन्हें पुनः अपने धर्म में वापस करने का प्रयत्न करना चाहिए ।

८ अपने मुख्य ध्येय 'कृण्वन्तो विश्व-मार्यम्' की प्राप्ति के लिए विधर्मियों को आर्य बनाना अपना परम कर्त्तव्य समझना चाहिए । आर्य बनने वाले बहन भाईयों का सार्वजनिक स्वागत होना चाहिए ।

९ अपने क्षेत्र में स्थानीय जिला तथा प्रान्तीय स्तर पर सार्वजनिक सभाओं एवं सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित ट्रैक्ट वितरण कर जनता को हम विदेशी षड्यन्त्रों के प्रति सतर्क करना चाहिए ।

१० जो आर्य बन्धु वैदिक सिद्धान्तों से परिचित हों और अंग्रेजी में बोलने की क्षमता रखते हों । वे अपना समय दक्षिण भारत में प्रचारार्थ देने के लिए सार्वदेशिक सभा को लिखें ।

११ आर्य समाज को इस धर्म युद्ध में अपनी क्षमता पुरुषार्थ तथा अपने धर्म की महानता प्रकट करना होगा । उन्हें सिद्ध करना होगा कि वैदिक धर्म विश्व बन्धुत्व तथा वसुधैव कुटुम्बकम का समर्थक है । यदि आर्यों ने ऐसा किया तो इस संघर्ष में भी पूर्व की भान्ति सफलता उन्हीं के साथ होगी ।

१२ प्रत्येक आर्य समाज अपने नगर के प्रत्येक घर में जाकर सार्वदेशिक सभा द्वारा प्रकाशित फोल्डर में और धर्म रक्षा अभियान कोष के लिए धन की अपील कर और संग्रहीत धन को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम चैक या ड्राफ्ट बनवाकर भेजें ।

—ओ३म् प्रकाश त्यागी मन्त्री
सार्वदेशिक आर्य प्र नि सभा दिल्ली

अमृतसर मे ईसाई परिवारो की शुद्धि

अमृतसर (वि प्र) आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द की ओर से १५ अगस्त से शुरू किया गया अथर्ववेद महोत्सव का आयोजन २३ अगस्त को सम्पन्न होगा उसी दिन कुछ ईसाई परिवारों की शुद्धि करके पुनः हिन्दू धर्म में वापस लाया जाएगा

समापन समारोह के अवसर पर योगेश्वर कृष्ण जन्माष्टमी के सम्बन्ध में विराट सम्मेलन किया जाएगा ।

अथर्ववेद महोत्सव की एक विशेषता यह रही कि यह प्रति दिन बदल-बदल कर अलग अलग बस्तियों के वाल्मीकि मन्दिरों में मनाया गया । इसका वाल्मीकि भाईयों पर विशेष प्रभाव रहा ।

संन्यास का गौरव

महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज अखण्ड ब्रह्मचारी परमयोगी प्रकाण्ड विद्वान् वेदों के मर्मज्ञ थे। वहां परम सुधारक भी थे। प्रत्येक रूढ़िवाद और असाध्य परम्परा पर इनकी दृष्टि पड़ी और उसका सही रूप जनता के सामने रखा। आश्रम व्यवस्था का जैसा उदात्त दृष्टिकोण महर्षि ने रखा वैसा अभी तक कोई विद्वान् रख नहीं सका। आज के संन्यासाश्रम के बारे में महर्षि के विचार प्रस्तुत करना चाहता हूं।

ढोंगी, पाखण्डी साधु नामधारी जिस प्रकार जनता का अहित कर रहे थे उसे महर्षि ने बड़े दुःख के साथ अनुभव किया। महर्षि लिखते हैं—

'लकड़े लंगोटी लगा धूनी तापते जटा बढ़ाते सिद्ध का वेश कर लेते हैं। गांजा, भांग, चरस का दम लगाते गृहस्थों के लड़कों को बहका कर चेले बना लेते हैं। कोई पढ़ता है तो उसे पढ़ने नहीं देते—कहते हैं—"पठित व्यातव्यमिस्तं वा दन्त कटाकटेति किं कर्त्तव्यम्। एक पण्डित को कहा—तू एक प्रकार का पाठ जानता है और हम स्तौगवेसाजन्नमें भी अवेलायत्नमें—भी "नवेनायन्नमें—तीन प्रकार का पाठ जानते हैं। इस प्रकार के साठ लाख साधु वेशधारी का आर्य समाज के भय से बढ़े नहीं हो रहा है।

श्रेष्ठ संन्यास आश्रम के सम्बन्ध में बृहत्पाराशरस्मृति, लघुहारीतस्मृति कौशायनस्मृति— याज्ञवल्क्यस्मृति-वसिष्ठस्मृति में जो कुछ लिखा है, वह सब कुछ यहां नहीं लिखा जा सकता। सार रूप में अब मात्र लिखते हैं। अर्थात् वैराग्योत्पत्ति होते पर शिखा यज्ञोपवीत घर, परिवार त्याग कर काषाय वस्त्र धारण कर गुदड़ी लंगोटी, मिट्टी पांस का पात्र लेकर कुलादि परिवार से स्नेहालाप छोड़ कर, जगल में ग्रामान्त देवगृह शून्यागार वृक्ष मूल में निवास करे। ब्राह्म मुहूर्त में उठे भिक्षा के लिए ग्राम-धाम में जावे, बायें हाथ में पात्र रखे, दायें हाथ से खाता रहे। यावद्धान्नेनतृप्तिः स्यात्तावद् भैक्ष्यं समाचरेत्, जब पेट भर जावे तभी भिक्षा समाप्त कर दे, भैक्ष्यं वा सर्ववर्णेभ्ययां न चेद्धाव्यद्विजातिषु, सब वर्णों से भिक्षा लेवे एक घर से या केवल द्विजातियों से ही मनाएंगे। आवश्यकता हो तो ग्राम में एक दिन नगर में पांच रात्रि ठहर सकता है। यज्ञाचर्म और वृत्ति से वेष्टित शरीर संन्यासी—सन्यजेत सर्वकर्माणि वेद भेदं न सम्य सेत्—सब कर्मों का त्याग कर दे किन्तु वेदों को न छोड़े, महाभारत आश्वमेधिक अनुशासन पर्व से

जैसा संन्यासी सर्वतो मुक्त होकर जगत् का उपकार करता है वैसा अन्य आश्रम नहीं कर सकता क्योंकि संन्यासी को मन्य विद्या से पदार्थों के विज्ञान की उन्नति का जितना अवकाश मिलता है इतना अन्य आश्रम को नहीं मिल सकता।

अ० ४६ में बहुत विस्तार से लिखा है, सार रूप में थोड़ा सा पाठकों की जानकारी के लिए लिखते हैं—

जब गृहस्थों के यहां रसोई घर से धुआं निकलना बन्द हो जाए। घर के सब लोग एक पी चुके बर्तन मांज धोकर रख दिए गए हों तब भी अधर्म के ज्ञाता सन्यासी को भिक्षा की इच्छा करनी चाहिए। चाहि भिक्षा भिक्षेत केवल प्राणयात्रिकः, नमुं जीताभि पूजितः, केवल प्राण रक्षार्थ भिक्षा ले। किसी के पूजने पर भोजन न करे।

अनागतं भव ध्यायेन्नातीत मनु
चिन्तयेत्।
वर्तमान मुपेक्षेत कालाकांक्षी
समाहितः।

आने वाले (भविष्य) का ध्यान न करे, बीते हुए का सोच न करे, वर्तमान की उपेक्षा करे और काल मृत्यु) की प्रतीक्षा करे।

न चक्षुषा न मनसा न वाचा दूषयेत्
दुरपि तु।
न प्रत्यक्षं परोक्षं वा किंचित् दुष्टं
समाचरेत्।

नेक मन वाणी से प्रत्यक्ष या परोक्ष में कोई दुष्कर्म न करे। ममता अहंकार इच्छा, आशा सब पर विजय प्राप्त करे। क्रोध, ईर्ष्या, असहूय को पास न आने दे, इसके पश्चात् महर्षि दयानन्द सरस्वती महाराज ने संन्यास आश्रम को निखार कर जनता के सामने रखा है।

संन्यास की आवश्यकता

(क) जैसे शरीर में शिराकी आवश्यकता है वैसे ही आश्रमों में सन्यास की आवश्यकता है। क्योंकि इसके बिना विद्या धर्म कभी नहीं बढ़ सकता और दूसरे आश्रमों विद्या ग्रहण गृह कृत्य और तप श्चर्यादि का सम्बन्ध होने से अवकाश बहुत कम मिलता है, पक्षपात छोड़कर वर्तना दूसरे आश्रमो का दुष्कर है' जैसा संन्यासी सर्वतोमुक्त होकर जगत् का उपकार करता है वैसा अन्य आश्रम नहीं कर सकता : क्योंकि संन्यासी को सत्य विद्या से पदार्थों के विज्ञान की उन्नति का जितना अवकाश मिलता है उतना अन्य आश्रम को नहीं मिल सकता।

(ख) सन्यासी वेदोक्त धर्म के उपदेश से परस्पर प्रीति उत्पन्न करायेगा तो लाखों मनुष्यों को बचावेगा और सब मनुष्य सन्यास ग्रहण कर ही नहीं सकते, क्योंकि सबकी विषयासक्ति भी नहीं छूट सकेगी।

इससे स्पष्ट है कि सन्यास प्रत्येक व्यक्ति के लिए अनिवार्य नहीं है। सन्यासी को योग्यता और उद्देश्य दोनों महत्वपूर्ण है दोनों की प्राप्त करने की क्षमता वाला ही सन्यास ले सकता है, आगे स्पष्ट करते हैं जब गृहस्थों से अन्नवस्त्रादि लेते हैं उनका प्रत्युपकार नहीं करते तो क्या सु पत्थर ही नहीं होंगे। जैसे आंख से देखना, कान से सुनना न हो तो आंख, कान का होना व्यर्थ है वैसे ही जो संन्यासी सत्योपदेश और वेदादि, सत्य शास्त्रों का विचार टकट नहीं करते वे भी जगत् में व्यर्थ भार रूप हैं।

जो अनधिकारी सन्यास ग्रहण करेगा तो आप डूबेगा औरों को भी डुबायेगा। जो इस संन्यास के मुख्य धर्म सत्योपदेशादि नहीं करते वे पतित और परकाष्टा है महर्षि के उक्त वाक्यों से सिद्ध है कि संन्यास के लिए एक विशेष योग्यता है उसे प्राप्त करने वाला ही संन्यास का अधिकारी है।

संन्यास की सीढ़ी

समाङ्ग निन्य मास्ते यास्मिन मुद्रा समाङ.न्यस्यन्ति दुःखानि कर्माणिमेन संसन्यास सः। सप्रशस्तो विधतं यस्य स संन्यासी। सम्यङ.न्यस्यन्त्य धर्माचरणानिर्यनवा सम्यङ. नित्यंसत्यकर्मबाल्ते, उपविशति स्थिरीभवति यत मनन्यथासः सन्यासी विद्यते मत्यस सन्यासी, सम्पूर्ण अधर्माचरणों का त्याग श्रेष्ट कर्मों में स्थिर होना संन्यास है। अर्थात् लोक में प्रतिष्ठा लालाय, धन से भोग माम्य, पुत्रादि के मोह से अलग होके संन्यासी लोग भिक्षुक होकर रात दिन मोक्ष के के साधनो में तत्पर रहते हैं।

ऐसा कौन कर सकता है—महर्षि लिखते हैं—

जो संन्यासी यथार्थ ज्ञान वा षड्दर्शनों से युक्त है वह दुष्ट धर्मो से बद्ध नही होता जो ज्ञान विद्या योगाभ्यास सत्संग धर्मानुष्ठान वा षड्दर्शनों से रहित विज्ञानहीन होकर संन्यास लेता है। वह संन्यास वाली और मोक्ष को अप्राप्त (होकर जन्म मरण) रूप संसार को प्राप्त होता है। ऐसे मूर्ख अधर्मी को संन्यास लेना व्यर्थ और धिक्कार देने योग्य है।

संन्यास कब लेवें

जिस दिन दृढ़ वैराग्य हो जावे उसी दिन ही संन्यास लेवे यदि पूर्ण अखण्डित ब्रह्मचर्य सच्चा वैराग्य और पूर्ण ज्ञान को प्राप्त होकर विषयासक्ति की इच्छा यथावत् उठ जावे जिसको दृढ़ निश्चय हो जावे कि मै मरण पर्यन्त यथावत संन्यास धर्म का निर्वाह कर सकूंगा। वह संन्यास लेवे।

कि सवर्ण को संन्यास लेना चाहिए

इस सम्बन्ध में महर्षि की सम्मति निम्न प्रकार है :—

ब्राह्मण ही को अधिकार है क्योंकि जो सब वर्णों में पूर्ण विद्वान् धार्मिक परोपकार प्रिय मनुष्य है उसी का नाम ब्राह्मण है। बिना पूर्ण विद्या धर्म परमेश्वर की निष्ठा और वैराग्य के संन्यास ग्रहण करने में संसार का विशेष उपकार नहीं हो सकता। इसीलिए ये लोक श्रुति है कि ब्राह्मण को संन्यास का अधिकार है अन्य कोई नहीं। यह मनु का प्रमाण भी है ?

एषवोऽभिहितो धर्मो ब्राह्मणस्य चतुष्पदिः।

ब्रह्मचर्य गृहस्थ वानप्रस्थ और संन्यासाश्रम करना ब्राह्मण का धर्म है इससे यह सिद्ध हुआ कि सन्यास ग्रहण का अधिकार मुख्य रूप से ब्राह्मण का है और क्षत्रियादि का ब्रह्मचर्याश्रम है।

यहा महर्षि के विचार स्पष्ट हैं कि ब्रह्मचर्य आश्रम सबके लिए अनिवार्य है, किन्तु गृहस्थ वानप्रस्थ संन्यास योग्यता पर निर्भर करते हैं।

किन्तु महर्षि ने मुख्य रूप से तथा सब वर्णों में पूर्ण विद्वान् आदि विशेषताओं वाले व्यक्ति को ब्राह्मण माना है। इसीलिए आगे लिख दिया है कि, 'जो द्विज अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, संन्यास गृहस्थ करता है। वह सब पापों को छोड़-छुड़ाके ब्रह्म को प्राप्त होता है।

संन्यासी का वेश क्या है ?

सब सिर के बाल, दाढ़ी, मूछ और नखों को समय-समय पर छेदन कराता रहे। पात्री दण्डी और कुसुम (अथवा गेरू) के रंगे वस्त्रों को धारण करे।

—पं. रामदयालु शास्त्री

15 अगस्त 1981

१

भारत की बात राखी, तन-मन प्राण देके,
जीवन स्वीकार किया, हेतु निज देश के।
प्रशासक गैर जब, ताड़ना विशेष साथ,
ठौंक दिए जेलों में, अनेक वीर वेष के ॥
उठाके भुजा को प्रण किया था वीरों ने दृढ़-
हटाके छोड़ेंगे हम, दुश्मन विदेश के।
भारत हमारा देश, हम देश वासी सब,
दुश्मन बने हैं आज गौराङ्ग क्लेश के।

२

फांसी पे चढ़े थे वीर कारावास बने घर,
बैंतों से उड़ाई खाल, 'बन्देमातरं बोलते।
हटे नहीं हट रहा, हठीले भारत वीर,
कटीले करार काम, किया शक्ति तोलते ॥
जंगलों में वास किया, हंस हंस प्राण दिया,
आजादी के हेतु वीर, सीना आगे खोलते।
कवि 'घनसार' रहा, भारत माता के पुत्र,
रक्त न बचाया कभी, रहा खून खोलते।

३

राखी औ स्वतन्त्र दिन, आया आज एक घर'
सोने में सुगन्ध जैसे, गौरव दिखाया है।
घर-घर उत्सव बड़े, हर्षोल्लास साथ,
देश में प्रकाश रूप-रम्य, निखराया हैं।
वीरों की है बदौलत, आजादी मिली है आज
खुशी हम कैसे प्रिय—दिवस कहाया है।
'घनसार, राखी बात, आजादी के वीर वर,
देश में तरङ्ग ले के झण्डा लहराया है।

राखी के सन्देश देने भाई भ्राता स्वतन्त्रता को,
राखी बैंधी सदा हाथ, रखिये आजाद को।
भारत भ्राता की बहिन, राखी ले के खड़ी आज,
बहिन को भूले, वीर धर्म मान आदी की।
आजाद हमारा वीर वीर रणधीर वर,
मैदान में लड़े सब—वैष धार खादी को।
पन्द्रह अगस्त आज, राखी भाई-बहिन मिले,
याद नही कीजे भ्राता परतन्त्रता दादी को।

—कवि कस्तूरचन्द 'घनसार' कवि कुटीर पीपाड़ शहर (राज०)

आर्य वीरो जागो और हरिजन मुहल्लों में जाकर हरिजन भाईयों को जगाओ

समस्त आर्य वीर दल के नगर-नायकों, मण्डलाधिकारियों और प्रान्तीय संचालकों एवं अधिष्ठाताओं से अनुरोध है कि वह अपने-अपने प्रभाव क्षेत्र में आर्य वीर दल की गतिविधियों का केन्द्र हरिजन हरिजन मुहल्लों को बनाएं।

सबर्ण आर्य वीर दल के सैनिकों एवं अधिकारियों का कर्त्तव्य है कि वह हरिजन भाईयों के मुहल्लों में आर्यसमाज आर्य वीर दल साधना मन्दिर, व्यायाम-शाला और प्रौढ़ शिक्षण केन्द्रादि चलाकर हरिजन भाईयों को सन्ध्या, हवन सिखाएं तथा समाजोत्थान हेतु उन्हें उच्चतम लोक व्यवहार में निपुण करें।

इस समय राष्ट्रहित तथा वैदिक मान्यताओं के रक्षार्थ इस कार्य को सर्वोच्च प्राथमिकता देकर आप अपना कर्त्तव्य पालन करेंगे। ऐसी आशा है।

—बालदिवाकर हंस

धर्म रक्षा महाभियान—

हरिजन स्नेह सम्मेलनों की सर्वत्र धूम

आर्य समाज साबुन बाजार लुधियाना में २६-७-८१ रविवार प्रात: ६ बजे से १० बजे तक धर्म रक्षा महाभियान सम्मेलन श्री राजाराम जी की अध्यक्षता में मनाया गया।

यज्ञ में हरिजन भाई श्री किशनलाल जी और श्री रघुबीरसिंह जी परिवारों सहित यजमान बने, सम्मेलन में श्री पं० उमेश चन्द्र जी (बिहार वाले) श्री राम धन जी आर्य, वैद्य कुन्दन लाल जी, श्री राजा राम जी ने धर्म रक्षा महाभियान के सम्बन्ध में अपने-अपने विचार दिये।

श्री वीरेन्द्र आर्य और श्री हरिदेव अग्रवाल जी के सुन्दर भजन हुए।

सम्मेलन के अन्त में श्री रघुवीर सिंह जी और श्री किशन लाला जी ने यज्ञशेष बांटा।

डा० बागिया मन्त्री

आर्य समाज नवांशहर के मन्त्री जी जी ने सूचित किया है कि २६-७-८१ को नवांशहर में सार्वदेशिक सभा दिल्ली तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर के निर्देशानुसार हरिजन स्नेह सम्मेलन आर्य समाज मन्दिर मेंआयोजित किया इस सम्मेलन में लगभग ४०० भाई बहनों ने भाग लिया जिन में २५० के लगभग हरिजन बाल्मीकि भाई थे। यज्ञ के यजमान हरिजन भाई बने। सनातन धर्म सभा के प्रधान डा. वेद प्रकाश जी. जैन सभा के मन्त्री श्री सन्त कुमार जी जैन, हरिजन भाईयों की ओर से श्री चानन राम एम. सी, श्री हरिकृष्ण बाली और, अमर चन्द, श्री लाभ चन्द, श्री मोहन लाल एम. सी. आर्य समाज की ओर से श्री प. देवेन्द्र कुमार. सुरेन्द्र मोहन, ला. देवी दास, सिक्ख भाईयों की ओर से श्री सुरेन्द्र जीत सिंह कोहली ने अपने विचार इस अवसर पर रखे। अन्त में सभी व्यक्तियों ने मिल कर सहभोज किया।

आर्य समाज शक्ति नगर अमृतसर के मन्त्रीजी ने सूचित किया है कि २६-७-८१ को केन्द्रीय आर्य सभा अमृतसर की ओर से हरिजन स्नेह सम्मेलन बड़ी धूम धाम से मनाया जिसमे सैंकड़ों बहन भाईयों ने भाग लिया नगर के प्रतिष्ठित हरिजन नेताओं ने सुझाव दिया कि जैसा यज्ञ यहां किया है ऐसे ही यज्ञ हमारी बस्तीयो में आकर करें हम आपको सहयोग देंगे। श्री प. ओम प्रकाश जी आर्य कार्यालयाध्यक्ष आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने सारगर्भित उपदेश किया जिसकी सभी ने सराहना की।

आर्य समाज राजपुरा से श्री मुनि चेतन देव जी ने सूचित किया है कि २६-७-८१ को बाल्मीक मन्दिर में एक विशेष यज्ञ किया गया तथा हरिजन स्नेह सम्मेलन किया। सभी यजमान हरिजन भाई बने उन्हें यज्ञो पवीत दिए गए, सभी ने प्रीति भोज किया हरिजन भाईयों ने भोजन परोसा सभी ने प्रेम से खाया।

—

सरकारी कामकाज हिन्दी में करने पर अनेक व्यक्ति पुरस्कृत

केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद ने सरकारी कामकाज में हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के लिए ९ सितम्बर, १९८० से ३१ अक्तूबर, १९८० तक की अवधि में अखिल भारतीय हिन्दी व्यवहार प्रतियोगिता का आयोजन किया था। इस प्रतियोगिता मे देश के अनेक नगरों में स्थित केन्द्रीय सरकार के अनेक कर्मचारियों ने भाग लिया। इसमें श्री भीष्म कुमार मोटवानी, बैंक नोट मुद्रणालय, देवास ने प्रथम स्थान प्राप्त किया है। दूसरा और तीसरा स्थान क्रमश: सर्वश्री मोहन लाल सुहाना, वेतन बचत योजना विभाग, जीवन प्रकाश शाखा, अजमेर तथा पन्नालाल, दूरभाष राजस्व लेखा कार्यालय, टीकाराम मंदिर, अलीगढ़ ने लिया है, पत्राचार विशेष पुरस्कार श्री कृष्ण प्रसाद दुबे, वेतन बचत योजना विभाग, जीवन प्रकाश शाखा, अजमेर को मिला है। चार प्रतियोगियों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिए गए हैं, पांच ऐसे अधिकारियों को भी पुरस्कृत किया गया है जिनके अधीन कार्य करने वाले प्रतियोगियों के अकों का जोड सर्वाधिक रहा है, फील्ड गन फैक्टरी. कानपुर के शाखा मंत्री श्री नवीन कुमार मिश्र को आयोजनकर्ता पुरस्कार मिला है।

परिषद धारा आयोजित इस प्रतियोगिता मे सफल प्रतियोगियों को पुरस्कार और प्रशस्ति पत्र नई दिल्ली में २८ मार्च १९८१ को होने वाले वार्षिक समारोह में दिए जाएगे।

१९८१ में यह प्रतियोगिता १ अगस्त से १० सितम्बर तक की अवधि मे हिन्दी में किए गए सरकारी काम-काज के आधार पर होगी।

—

आर्य जगत के समाचार

हरिजन आर्य बनें

वैदिक सत्सग देहरादून के मत्री एव आर्य समाज के कमठ कायकर्ता श्री शिवनाथ जी आर्य कई वर्षों से हरिजन बन्धुओ मे आर्य समाज का प्रचार कर रहे है। यहा आयोजित हरिजन स्नेह सम्मेलन मे भारी सख्या मे हरिजन बन्धु सपरिवार आर्य समाज मे आयोजित इस आयोजन मे सम्मिलित हुए। आर्य समाज के विद्वान पुरोहित श्री भगवान देव जी वेदालकार ने इन बन्धुओ को यज्ञोपवीत देकर विशेष यज्ञ सम्पन्न कराया। यज्ञ के पश्चात आर्य जगत के प्रख्यात विद्वान् पूज्य स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती जी महाराज का सारगर्भित उपदेश हुआ।

भारत के इस्लामीकरण की तैयारियां

सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले की देश वासियो से अपील

मीनाक्षीपुरम मे हरिजनो का धम परिवर्तन षड्यन्त्र का प्रथम चरण छूत छात जातिवाद ऊच नीच भेदभाव की खाई पाटने के लिए आर्य समाज सगठित रूप से मैदान मे—

हरिजनो तथा पिछड़े वर्गों के अधिकारो की रक्षा का सुदढ सकल्प। इस समय चूक गए तो भावी पीढ़ी खून के आसू बहाएगी।

तन मन धन से सहायता कीजिए। सहायता का धन बैंक ड्राफ्ट क्रास चैक अथवा नकद रूप मे सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा रामलीला मैदान नई दिल्ली के पते पर भेजें।

—ओ३म प्रकाश त्यागी मत्री

मेधावी छात्रा कु: अनिता

आर्य गर्ल्ज हा० सै० स्कूल लुधियाना की ग्यारहवीं कक्षा की छात्रा कु० अनिता सुपुत्री श्री बालकृष्ण जी दिल्ली आर्य युवक परिषद के तत्वावधान मे होने वाली सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षा—सत्यार्थ विशारद मे भारत भर में ८४ अक लेकर तृतीय स्थान पर आई है। इसी स्कूल की एक छात्रा गत वर्ष भारत भर मे प्रथम आई थी।

—

आर्य समाज ... १४ से १६ ...

स्वामी सत्य प्रकाश जी वेद कथा करेंगे

नई दिल्ली, आर्य समाज मन्दिर मार्ग जो कि आर्य प्रा० प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली का प्रसिद्ध आर्य समाज है का वार्षिकोत्सव १४, १५, १६ मार्च १९८२ शनि रवि और सोमवार को मनाया जाएगा।

वार्षिकोत्सव से एक सप्ताह पूर्व आर्य समाज के विश्वविख्यात सन्यासी सत्य प्रकाश जी महाराज वेद कथा करेंगे।

इस अवसर पर महिला सम्मेलन आर्य युवक सम्मेलन और हरिजन स्नेह सम्मेलन आदि होंगे मेरी आर्य जनता से प्रार्थना है कि वे इन तिथियों को अकित करें तथा उत्सव में अवश्य पधारने की कृपा करें,

—



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वर्ष 14—अंक 24, 29 भाद्रपद सम्वत् 2038, तदनुसार 13 सितम्बर 1981, दयानन्दाब्द 156 । एक प्रति 35 पैसे (वार्षिक शुल्क 15 रुपए)

मैं अविवाहित रह कर आर्यसमाज का प्रचार करूंगा—डा. सुमन

नई दिल्ली—नवाब छतारी के २४ वर्षीय पोते डा० आनन्द सुमन ने अपना धर्म परिवर्तित करने के बाद घोषणा की है कि वे अविवाहित रहकर आर्य समाज का प्रचार करेंगे।

डा० सुमन ने उक्त घोषणा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आयोजित एक अभिनन्दन समारोह में की। डा० सुमन ने कहा कि देश में चल रही इस्लामीकरण की साजिशों के पीछे अरब देशों की अपार धन राशि काम कर रही है जिसका मैं मौका मिलने पर सबूत पेश करूंगा। उन्होंने स्पष्ट किया कि सम्भल और छतारी का एक-एक बाशिन्दा जानता है कि मेरा नवाब खानदान से ताल्लुक है लेकिन इस्लाम के खिलाफ कदम उठाने के बाद उनके ही चाचा हुसैन सईद खां ने अपने खून को नकार कर मुझे सम्पत्ति से बेदखल कर दिया। ताकि मैं जायदाद में हिस्सेदार न बन सकूं। उन्होंने बताया कि उनकी बहनें उसके द्वारा उठाए गए कदम पर बहुत खुश हैं।

धर्मपरिवर्तन के कुछेक घटिया नमूने : मुल्लाओं के हथकण्डों से दो परिवार जहन्नुम

जन्नत वाले किस दुनिया का नाम है? लेकिन इस्लाम में जन्नत का एक काल्पनिक और खूबसूरत खाका खींचा गया है जहां हसीन हूरें हैं और शराब की नदियां बहती हैं। यानि एक ऐसी जगह जहां सुख और सुन्दरियां बहुतायत में हैं यह है इस्लाम का स्वर्ग। जिसके नाम पर जनूनी मुल्ला एवं कठमुल्ला भोले-भाले इन्सानों को बहका कर मुसलमान बना देते हैं। इतना ही नहीं धर्म परिवर्तन के लिए मुल्ला और मौलवी किस प्रकार के हथकण्डों पर उतर आए हैं इसके कई उदाहरण देखने को मिले हैं। जबकि धन व नौकरी पेश करके धर्म परिवर्तन की साजिशें रची गईं।

मेरठ में जाटव गेट पर जूतों की मुरम्मत करने वाले बादल सिंह नामक हरिजन को कर्जे में फंसा कर नाबालिग बच्चों सहित मुसलमान बनने को मजबूर कर दिया गया।

जाटव गेट मेरठ की मुस्लिम आबादी करमअली से जुड़ा हुआ एक इलाका है। जहां के धनी मुसलमानों ने बेचारे हरिजन बादल सिंह को मुसलमान बनाने के लिए कहा कि यदि वह सपरिवार इस्लाम कबूल कर ले तो उस पर जो कर्ज है उसे माफ किया जा सकता है।

बादल सिंह व उसके ३ सुपुत्रों को दिल्ली ले जाकर एक इस्लामी मरकज में मौलाना हामिद अली ने कलमा पढ़वा कर मुसलमान बना दिया। बादल सिंह का नाम बदल कर मोहम्मद अलीमुद्दीन रख दिया गया। उसके १४ वर्षीय पुत्र आनन्द कुमार का नाम शमीम अहमद, १२ वर्षीय पुत्र धर्म प्रकाश का नाम वसीम अहमद तथा ८ वर्षीय गुलाब सिंह का नाम कलीम अहमद रखा गया।

बादल सिंह की पत्नी तथा बेटियों ने धर्मपरिवर्तन से न केवल इन्कार कर दिया अपितु उसकी पत्नी ने जिलाधीश को एक ज्ञापन देकर आरोप लगाया कि कट्टर पंथी मुल्लाओं ने उसके ३ नाबालिग बच्चों को बहका कर मुसलमान बना दिया है। उसके तीनों बच्चे उसे वापिस दिलाए जाएं। पत्नी ने अपने पति को भी धन देकर धर्म बदल लेने के लिए प्रताड़ित किया।

28 वर्षीय युवक को 54 वर्षीय महिला ने फांस कर निकाह रचाया

राजधानी के निकटवर्ती कस्बा पिलखुवा में एक २८ वर्षीय विवाहित बाल्मीकि युवक का ५४ वर्षीय विवाहिता तथा ६ बच्चों की मां हाजरा से निकाह कर उसे इस्लाम मोहम्मद बना दिया गया।

विजय पिलखुवा के छिद्दा बाल्मीकि का इकलौता बेटा है। जिसका दस वर्ष पूर्व शकुन्तला देवी के साथ विवाह हुआ था। उसके ८ वर्षीय रामअवतार तथा एक वर्षीय सीमा-दो बच्चे हैं।

हाजरा ने उसे कभी मिठाई खिलाकर तो कभी-कभी लुभावनी अदाएं दिखा कर फांस लिया। क्षेत्र के कट्टरपंथी मुल्ला दोनों को दिल्ली ले गए जहां इमाम बुखारी से आशीर्वाद लेकर विजय का धर्म परिवर्तित कर दोनों का निकाह करा दिया गया। धर्म परिवर्तन तथा अनमेल निकाह से न केवल बाल्मीकियों बल्कि हाजरा के परिवार वालों में भी भारी रोष है।

हाजरा के बीमार पति अब्दुल रहमान ने फूट फूट कर रोते हुए कहा, "हाजरा से ज्यादा कसूरवार तो वह मौलवी तथा इमाम हैं जिन्होंने हमारे भरे-पूरे घर-परिवार को उजाड़ डाला। यह सवाब नहीं साब दोजख में भेजने का काम किया गया है।"

—सुभाष चन्द्र आर्य

उधर ५४ वर्षीय हाजरा ६ बच्चों की मां है। जिसका ५८ वर्षीय पति अब्दुल रहमान बीमार आदमी है। बेटे तथा बेटी नाजरा शादीशुदा हैं। हाजरा खिलौने बनाने बेचने का काम करती है। एक मुल्ला ने उस पर हाथ रखा कि यदि उसने जीवन में किसी भी आदमी को मुसलमान बनाने में कामयाबी हासिल कर ली तो उसे 'सवाब' और 'जन्नत' मिलेगी।

हाजरा रेलगाड़ी में प्रतिदिन खिलौने लेकर पिलखुवा से दिल्ली आती थी। विजय भी दिल्ली में ही चपरासी था।

हाजरा की बेटी नाजरा रोती हुई बोली, मेरे खाविंद को जैसे ही यह पता लगा कि उसकी बूढ़ी सास ने अपने बेटे की उम्र के साथ ब्याह रचा लिया है तो उसने मुझ से मारपीट की और बोला 'जिसके साथ तेरी मां भाग गई है तू भी उसी के साथ बैठ जा।' नाजरा ने बताया कि अब तो वे मुंह दिखाने के काबिल नहीं रहे और उसके पति ने भी उसे छोड़ दिया है।

हाजरा विजय के साथ जाते समय अपने बेटे का रिक्शा भी उड़ाकर ले गई थी जिससे उसका विवाहित बेटा भी बेरोजगार हो चुका है।

दूसरी ओर विजय का पूरा परिवार परेशान है। उसका पिता छिद्दा, जवान पत्नी शकुन्तला व बच्चे परेशान हैं। शकुन्तला ने प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी के नाम एक पत्र लिखकर मांग की है कि दो-दो परिवारों को तबाह करने वाले मुल्लाओं को गिरफ्तार किया

(शेष पृष्ठ ५ पर)

मोटी तनख्वाहों और ऐशपरस्ती का आकर्षण दिखा कर अरब देशों में हिन्दुओं को मुसलमान बनाया जा रहा है

इस पर अपने देश में हरिजनों के धर्म परिवर्तन पर जबरदस्त बहस छिड़ी हुई है। उधर अरब देशों में बड़े 'उच्च वर्ण' हिन्दू, अपनी मर्जी से मुसलमान हो रहे हैं।

इन भारतीयों के लिए धर्म मजाक बन कर रह गया है।

अरब देशों में आखिर हिन्दू क्यों मुसलमान बन रहे हैं।

कुछ तो इसलिए मुसलमान बन रहे हैं कि वे उन देशों में अधिक समय तक रह कर पैसा कमा सकें। मुसलमान बनने पर उन्हें मोटी तनख्वाह की नौकरियां मिल सकती हैं। अन्य अनेक सुविधाएं मिल सकती हैं जो अरब देशों में रहने वाले मुसलमानों को ही मिलती हैं।

कुछ हिन्दू एक से ज्यादा विवाह करने के लिए मुसलमान बन जाते हैं।

धर्म परिवर्तन की कुछ मिसालें पेश हैं। ये धर्म परिवर्तन खुले तौर पर हुए हैं। 'कुवैत टाइम्स' व अन्य अरब पत्रों में इन धर्म परिवर्तनों की घोषणाएं भी छपी हैं।

पहला उदाहरण : मद्रास के उच्च वर्ण के वी. सत्यमूर्ति पेशे से इन्जीनियर हैं। वह गत वर्ष ही कातार की नागरिकता पाने के लिए मुसलमान बने हैं और उच्च वेतन की नौकरी प्राप्त कर अब वहीं रह रहे हैं। अब उनका नाम है अब्दुल सत्तार। उनकी पत्नी मीनाक्षी भी इस्लाम ग्रहण कर महरुन्निसा हो गई है।

तमिलनाडु के एक उच्च वर्ण हिन्दु ब्राह्मण ने भी स्वेच्छा से दुबई में इसलिए इस्लाम ग्रहण किया है कि वहां जहाजरानी कम्पनी में उच्च वेतन की नौकरी प्राप्त कर सकें।

पंजाब के एक सवर्ण हिन्दू कमल शर्मा ने, जो पेशे से आटोमोबील इन्जीनियर हैं। कुछ ही मास पूर्व इसलिए इस्लाम- ग्रहण किया है कि वह उच्च वेतन की नौकरी व विलासितापूर्ण जीवन का आनन्द कुवैत में प्राप्त कर सकें।

बहरीन में रामेश्वर प्रसाद ठाकुर ने एक निर्यात-आयात फर्म में नौकरी के लिए धर्म परिवर्तन कर इस्लाम ग्रहण किया।

दुबई में रामलाल यादव इस्लाम धर्म ग्रहण कर अब्दुल रहमान हो गए हैं। ताकि एक अन्तरराष्ट्रीय मार्केटिंग संगठन में उच्च वेतन की नौकरी प्राप्त कर सके।

इन सभी मामलों में किसी प्रकार के कोई दबाव नहीं रहे हैं। इन सभी ने उच्च वेतनों की नौकरियों को पाने अथवा उन देशों में अपना प्रभाव बढ़ाने की दृष्टि से धर्म परिवर्तन किए हैं।

अनेक उच्च वर्णी हिन्दू अनेक अरब देशों में इसलिए मुसलमान बने हैं कि वे हरम बना कर ऐश कर सकें। जोकि केवल मुस्लिम धर्म व अरब देशों में ही कानूनी रूप से जायज है। हरम में हर तरह के मुक्त सेक्स की छूट है। वहां विश्व के हरम भाग की युवतियां रखी जा सकती हैं।

बलात धर्म परिवर्तन

पर ऐसा नहीं है कि अरब देशों में बलात धर्म परिवर्तन हों ही नहीं रहे हैं। और सभी स्वेच्छा व लालच से इस्लाम धर्म ग्रहण कर रहे हैं। उदाहरण के लिए गत वर्ष कुवैत में लालजी सिंह को एक निर्माण समाप्त होने के बाद भी रुकने पर पकड़ लिया गया। उसके अनुबन्ध के नवीनकरण करने के सभी प्रयत्न असफल रहे थे। तब उसके सामने एक ही विकल्प बचा—या तो वह जेल में सड़े या मुसलमान बन कर वहां की नागरिकता प्राप्त कर ले। वह दूसरा मार्ग ग्रहण करने को मजबूर हुआ ताकि कड़े दंड से बच करके वहां रह सके।

राम सिंह नाम के बढ़ई को भी सऊदी अरब मे इन्हीं स्थितियों में इस्लाम ग्रहण करना पड़ा। यही हालत कुवैत में आलोक पाण्डेय की हुई।

अरब देशों में वैसे भी किसी लड़की शादी करनी हो तो पहले मुसलमान बनना पड़ेगा।

पछताए

कुछ ऐसे भी भारतीय हैं जो अरब में शादी के लिए मुसलमान हो गए। पर बाद में पछताये। उदाहरण के लिए महाराष्ट्र के पारसी श्री रूसी मालिवा ने एक मिस्री लड़की से शादी के लिए इस्लाम धर्म ग्रहण किया, वे १२ वर्ष साथ साथ रहे। अन्त में तलाक देकर आ गए, उनका कथन है कि अरबों में लड़कियों को आजादी नहीं है। मेरी पत्नी मेरे साथ किसी दावत में नहीं जा सकती थी। मनोरंजन से उसे घृणा थी। मिस्री औरत चाहती है कि जल्द से जल्द बच्चे हो जाएं ताकि आदमी जंजीरों में बंध जाए। वे घर के अलावा कुछ भी नहीं चाहतीं।

औरतें

औरतों की स्थिति इस सम्बन्ध में बहुत खराब है। जबरन धर्म परिवर्तन कराए जा रहे हैं। भारत ही नहीं श्रीलंका, मलयेशिया, सिंगापुर, थाईलैंड, फिलीपीन व अन्य देशों से अरब देशों को नौकरी की तलाश में जाने वाली लड़कियों पर सभी स्तरों पर, धर्म परिवर्तन के लिए दबाव डाला जा रहा है,

अरब देशों में पहुंचनेपर शुरू में तो सब कुछ टीक-ठाक रहा, पर जल्द ही स्थिति बदल गई। वे ही अरब. अब रंग बदलने लगे। पहले उनके पासपोर्ट जब्त कर लिए गए ताकि वे कहीं नहीं जा सकें फिर उन्हें इस्लाम ग्रहण करने को कहा गया। वर्ना कानूनी कारंवाई की धमकी दी गई। इस तरह वे लड़कियां इस्लाम धर्म ग्रहण करने को मजबूर हुईं।

इसमें से अधिकतर लड़कियां गरीब घरों से गई हैं और अन्य व्यापारियों व उद्योगपतियों द्वारा नौकरियों पर रखी गई हैं, इनमें से अनेक को वे व्यापारी उनके देशों से ही नौकरी का लालच देकर ले आए। अरब देशों में पहुंचने पर शुरू में तो सब कुछ ठीक-ठाक रहा। पर जल्द ही स्थिति बदल गई। वे ही अरब, अब रंग बदलने लगे। पहले उनके पासपोर्ट जब्त कर लिए गए ताकि वे कहीं नहीं जा सकें। फिर उन्हें इस्लाम ग्रहण करने को कहा गया, वर्ना कानूनी कारंवाई की धमकी दी गई। इस तरह वे लड़कियां इस्लाम धर्म ग्रहण करने को मजबूर हुईं।

जिन्होंने इस धमकी की परवाह नहीं की, उन्हें अरब देश में गैर-कानूनी रूप से प्रवेश के आरोप में भेज दिया गया। उन्हें अरबों के हरमों में शामिल होने व ब्लू फिल्मों मे काम के लिए मजबूर किया गया।

प्राप्त आंकड़ों के अनुसार, कम से कम ५०० लड़कियों को दुबई, अरब, अमीरात, कुवैत, बहरीन, सऊदी अरब व कातार में हर वर्ष मुसलमान बनाया जा रहा है।

—आर. सी. सोमव

आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए

१. एक अवकाश प्राप्त शिक्षा विशेषज्ञ शिक्षा सलाहकार जो सभा की शिक्षण संस्थाओं का निरीक्षण कर सकें।

२. सभा की सम्पत्ति की देखभाल और उसके सम्बन्ध में कानूनी कार्यवाही करने के लिए अवकाश प्राप्त पटवारी या तहसीलदार जो हिन्दी पंजाबी अंग्रेजी व उर्दू जानता हो।

३. सभा भवन निर्माण के लिए अवकाश प्राप्त ओवर सीयर जो नई इमारत बनाने के काम को अच्छी तरह जानता हो।

४. सभा द्वारा संचालित बस्ती पठाना में आयुर्वेदिक औषधालय के लिए एक अनुभवी वैद्य जो वहां रह कर औषधालय चला सके।

उपरोक्त सभी असामियों को वेतन योग्यता व अनुभव के आधार पर दिया जाएगा। प्रत्याशी अधोहस्ताक्षरी को आवेदन करें या स्वयं मिलें।

रामचन्द्र जावेद
आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब किशनपुरा
जालन्धर

ओ३म्
आर्य मर्यादा

–सम्पादकीय–

सभा की नवनिर्मित अंतरंग का पहला अधिवेशन सम्पन्न

पंजाब की सभी समाजों को सजग तथा सशक्त बनाने, नवीन साहित्य तैयार करने, सभी आर्य समाजी संस्थाओं को सभा से सम्बद्ध करने, महिला समाजों, युवक समाजों तथा आर्य वीर दलों को संगठित करने, धर्म परीक्षाओं में अधिक परीक्षार्थी सम्मिलित कराने के लिए एक जोरदार अभियान चलाने का निश्चय किया।

6 सितम्बर जालन्धर के प्रसिद्ध शिक्षा संस्थान दोआबा कालेज के हाल में जालन्धर कोर्ट द्वारा स्वीकृत आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ४३ सदस्यीय अन्तरंग सभाका पहला अधिवेशन बड़े हर्ष और उल्लास के साथ सम्पन्न हुआ। लगभग सभी सदस्य उपस्थित थे। कुछ आम लोग भी अधिकारी वर्ग से समझौते की बधाई देने और सभी सदस्यों से सम्पर्क बनाने के लिए उपस्थित थे।

सर्वप्रथम मुकदमों की समाप्ति की पृष्ठभूमि और प्रतिक्रिया पर सभा प्रधान जी ने प्रकाश डाला और एक प्रस्ताव द्वारा इस समझौते और अभियोगो की समाप्ति पर सभा की ओर से हर्ष प्रकट किया गया,

इस के पश्चात् सभा मन्त्री जी ने सभा का १९८१-८२ का चार लाख रुपये का बजट प्रस्तुत किया जिस में भवन के निर्माण के लिए एक लाख रुपए, वेद प्रचार विभाग के लिए एक लाख रुपए, तथा साहित्य प्रकाशन, आर्य मर्यादा, और अन्य विभागों के लिए दो लाख रुपए खर्च करने का निश्चय किया गया। पंजाब की सभी जिला सभाओं के नाम उन के क्षेत्र और शक्ति के अनुसार राशि नियत की गई और सभी जिला सभाओं के साथ सभा के उपदेशक प्रचारक नियत करने करने का निश्चय किया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के विधान में परिवर्तन और संशोधन के लिए एक उप-समिति का निर्माण किया गया। साढ़े तीन बजे आर्य विद्या परिषद् की बैठक हुई जिसमें सभा की सभी शिक्षा संस्थाओं को सभा के पूर्णतया अधीन करने और उन्हें सभा तथा आर्य समाज के लिए उपयोगी बनाने पर विचार विनिमय हुआ और परिषद् के संविधान में संशोधन के लिए एक उपसमिति का निर्णय किया गया। और परिषद् से सम्बन्धित संस्थाओं की नवीन प्रबन्धक कमेटियों के निर्णय का अधिकार सभा प्रधान जी को दिया गया।

इस प्रकार पूरा दिन पंजाब के आर्य समाज तथा उसकी संस्थाओं को अधिक शक्तिशाली बनाने पर पंजाब के आर्य जगत् के प्रमुख कार्यकर्ता विचार करते रहे और अपनी सभा की गतिविधियों को और अधिक तेज बनाने का सब ने संकल्प लिया, २० सितम्बर का ११ बजे सभा भवन में केवल वेद प्रचार तथा गुरुकुल कांगड़ी की समस्याओं पर विचार करने के लिए अपनी अन्तरंग सभा बुलाने का निश्चय किया गया जिसका एजण्डा सब को भेजा जा रहा है।

—रामचन्द्र जावेद
सभा मन्त्री

गुरु विरजानन्द स्मारक करतारपुर का रजत जयन्ती समारोह

20 से २७ सितम्बर तक बड़े उत्साह तथा उल्लास के साथ मनाया जा रहा है जिसके प्रमुख कार्यक्रम इस प्रकार हैं।

सामवेद पारायण यज्ञ—२० सितम्बर से श्री पं० राजगुरु शास्त्री प्रारम्भ करेंगे।

महिला सम्मेलन—२६ सितम्बर प्रातः ९ बजे से एक बजे मध्यान्ह तक महिला सम्मेलन होगा, जिसमें पंजाब भर की स्त्री समाजों के प्रतिनिधि सम्मिलित होंगे।

शोभा यात्रा—२६ सितम्बर को तीन बजे मध्यान्ह शोभा यात्रा निकलेगी। सभी स्कूलों के बैंड बाजे तथा स्काऊट पहुंच रहे हैं।

स्वामी विज्ञानानन्द श्रद्धांजलि सम्मेलन—२६ सितम्बर रात के ८ बजे से ग्यारह बजे तक स्वामी विज्ञानानन्द जी की पहली बरसी मनाई जाएगी और उन्हें उनके श्रद्धालु विद्वान् और कवि अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करेंगे।

पूर्णाहुति तथा वेदारम्भ—२७ सितबर को यज्ञ की पूर्णाहुति से पश्चात् ९ बजे विद्यालय में नव प्रविष्ट विद्यार्थियों का वेदारम्भ होगा।

आर्य सम्मेलन २७ सितबर को दस बजे से एक बजे तक श्री रामगोपाल शालवाले प्रधान सार्वदेशिक सभा की अध्यक्षता में पंजाब-भर के आर्यों का सम्मेलन होगा जिसमे पंजाब में आर्य समाज को शक्तिशाली बनाने पर विचार होगा।

पारितोषिक वितरण—२७ सितबर की तीन बजे मध्यान्ह संस्कृत विद्यालय का ग्यारहवां पारितोषिक वितरणोत्सव होगा जिसकी अध्यक्षता पंजाब के स्वास्थ्य मन्त्री श्री सरदारी लाल कपूर करेंगे। विद्यार्थी अपना कार्यक्रम तथा क्रीड़ाओं का प्रदर्शन भी करेंगे।

सभा की ओर से पं० ओम् प्रकाश जी आर्य तथा हितकर भजन मण्डली वहां पधारेंगे। सार्वदेशिक सभाके प्रधान ला० रामगोपालजी शालवाले के अतिरिक्त अन्य अनेक नेता और विद्वान् पधार रहे हैं। इस वर्ष इस समारोह का आयोजन सभा कर रही है। इसलिए पंजाब भर की आर्य समाजें तथा स्त्री समाजो से मेरा आग्रह है कि सब बहिन-भाई परिवार तथा इष्ट-मित्रों के साथ करतारपुर पहुंचें।

—रामचन्द्र जावेद
सभा मन्त्री

अति आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों की सेवा में

श्रीमान् जी, सादर नमस्ते!

हम आपका ध्यान उस प्रस्ताव की ओर दिलाना चाहते हैं, जो आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने अपने साधारण अधिवेशन दिनांक २६ जुलाई १९८० को नवांशहर में पारित किया था। वह प्रस्ताव इस प्रकार है:—

सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि सभा की आय को बढ़ाने का सभी को विशेष रूप से प्रयत्न करना चाहिए। तथा प्रत्येक आर्य समाज अपनी वर्ष भर की सारी आय का चाहे वह किराया की हो, दान की हो अथवा सभासदों से प्राप्त हुए शुल्क की हो, उसका कम से कम दसवां भाग अवश्य सभा को दिया करें।'

हमें यह कहने में कोई संकोच नहीं कि बहुत कम आर्य समाजो ने इस प्रस्ताव की ओर ध्यान दिया है। ऐसा प्रतीत होता है कि आर्य समाजें आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की आर्थिक स्थिति को ठीक करने के लिए अपना कोई उत्तरदायित्व नहीं समझती। यह ऐसी स्थिति है जो हमारे विचार में अत्यन्त हानिकारक है और इसका परिणाम भी बहुत ही निराशाजनक निकल सकता है। इसलिए आपका ध्यान इस ओर दिलाने के लिए ही यह पत्र आपको लिखा जा रहा है। हम चाहते हैं कि एक मास के अन्दर सब समाजें जो आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित हैं निम्नलिखित प्रश्नों का उत्तर लिखकर सभा को भेज दें ताकि हमें भी पता चल सके कि किस आर्य समाज की अपनी आर्थिक स्थिति क्या है। हम निम्नलिखित जानकारी चाहते है:—

१. आपकी आर्य समाज के कुल सदस्य कितने हैं?

२. उनसे चन्दा के रूप में आपकी वार्षिक आय क्या है?

३. आपकी आर्य समाज की अचल सम्पत्ति क्या है? और उसकी मासिक आय कितनी है?

४. इसके अतिरिक्त आपकी आय का कोई और साधन भी है या नहीं। यदि है तो क्या और उससे कितनी आय आपको प्राप्त होती है?

५. दान के रूप में साल भर में आपकी समाज कितना धन प्राप्त करती है?

इन सबके आधार पर आपकी आर्य समाज की वार्षिक आय कितनी बनती है? कृपया यह सूचना हमें एक मास के अन्दर अन्दर अवश्य देने का कष्ट करें, जो समाजें सूचना नहीं देंगी उनके विषय में अन्तरंग सभा को सोचना पड़ेगा। आशा है आप इस ओर विशेष ध्यान देंगे और सभा को अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने में अपना पूरा सहयोग देंगे। यह आपकी अपनी सभा है, इसलिए इसकी सहायता करना भी आपका ही कर्तव्य है।

वीरेन्द्र	रामचन्द्र जावेद	डा. के. के पपरीवा
सभा प्रधान	सभा मन्त्री	कोषाध्यक्ष

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज की देन

गांधी जी ने कहा ऋषि दयानन्द ने हमें लोक के साथ सीधे सम्पर्क करने का मार्ग बताया। मैं जैसे-जैसे प्रगति करता जाता हूं, वैसे-वैसे मुझे महर्षि का बताया मार्ग दिखाई देता है "

के० सी० वरदाचारी, योगी अरविंद, एनीबेसेंट, मैक्समूलर, आपनाहाबर, रोमा रोला, ई० जी० डब्ल्यू रवेल, रेम्से मैकानल्ड, भटेनकोनो आदि ने भारत की प्राचीन महिमा को मुक्तकंठ से स्वीकार किया। मैक्समूलर को कहना पड़ा "संस्कृत साहित्य ऋग्वेद से प्रारम्भ कर ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका में समाप्त होता है— वेद शाश्वत वाणी है, अतः पूर्ण और भूल रहित भी। मैं दावा करता हू कि ससार में मनुष्य मात्र के स्वाध्याय के लिए यदि कोई पुस्तक है तो वह वेद है" राधाकृष्णन, तिलक, सुभाष, विठ्ठल भाई पटेल आदि ने महर्षि को 'स्वराज्य का प्रथम मंत्र द्रष्टा, महान् विप्लवकारी, राजनैतिक नेता तथा राष्ट्र विधायक माना" गांधी, वल्लभ भाई पटेल, मालवीय आदि ने देश में चल रहे रचनात्मक राष्ट्र निर्माणकारी कार्यों के मूल निर्देशक के रूप मे दयानन्द को श्रेय दिया एनीबेसेंट तथा एच० डी० ग्रिस वोल्ड ने कहा कि 'वेदों की ओर लौटो तथा भारत-भारतीयो के लिए का मंत्र द्रष्टा दयानन्द ही था।" सावरकर तथा लाला हरदास ने महर्षि को 'स्वा-

किस्त—14

धीनता सग्राम का सर्वप्रथम योद्धा तथा युवकों मे देशभक्ति की ज्योति जलाने वाला' कहा। जनगणना अध्यक्ष मि० ब्लन्ट तथा भारतीय अशान्ति के लिए आर्य समाज को अपराधी मानने वाले पत्रकार सर वैलेण्टाइल शिरोल ने कहा कि 'दयानन्द ने समाज सुधार को राष्ट्रीय स्वाधीनता के साधन रूप में अपनाया था। गान्धी जी ने कहा ऋषि दयानन्द ने हमें कोक के साथ सीधे सम्पर्क करने करने का मार्ग बताया। मैं जैसे जेसे प्रगति कदता जाता हूं, वैसे-वैसे मुझे महर्षि का बनाया मार्ग दिखाई देता है।"

लोकमत निर्माण एवं जागरण

राष्ट्रीय भावना एवं देशभक्ति की भावना लोकमत निर्माण के रथ पर आरूढ़ होकर सक्रमण करता है। ऋषि ने सर्वप्रथम व्यापक लोकमत का निर्माण कर उसे व्याख्यान, शास्त्रार्थ, लेख, भाष्य, पत्र-पत्रिकाओ, देश-व्यापी भ्रमण पुस्तक प्रचार एवं समाज सुधारपरक प्रवृत्तियों के माध्यम से सम्पूर्ण देश के जीवन को झकझोरा, राष्ट्र विघातक षड्यन्त्रों को रोका एवं समाज में व्याप्त अनेकता आत्मबल हीनता आदि को मिटाकर भाषा, गुणात्मक एव ऐतिहासिक वैशिष्ट्य के आधार पर आत्म सम्मान युक्त एक राष्ट्रीयता की भावना को जन्म देकर उसे सर्वांगीण स्वाराज्योमुखी बना दिया। इसी पर तिलक गाधी एवं काग्रेस आदि वैधानिक एवं क्रान्तिकारियों के आंदोलन चले। ऋषि ने अग्रेजों की अजेयता तथा वैशिष्ट्य आतंक से देश को मुक्त किया। नीतिज्ञ दयानन्द ने अपने धार्मिक एवं समाज सुधारपरक व्याख्यानों तथा पुस्तको में अपने राजनैतिक उद्देश्यों को अग्नि स्फुलिगों की तरह बिखेर दिया।

हिन्दी प्रचार, गौ रक्षा आदि के ज्ञापनों ने सत्याग्रह की पूर्वपीठिका तैयार की। स्टाम्पम ड्यूटी, नामक कर विरोध एवं जंगल कानुन विरोध, शुद्धि अछूतोद्धार, स्त्री जाति उत्थान, गुरुकुलीय एवं प्रौढ़ शिक्षा. 'एक सस्कृति एक भाषा एक देश का उद्घोष आदि ऋषि की मौलिक उद्भावनाएं थीं जिन्होंने देश के जीवन को झकझोर डाला। जागरण सगीत सर्वत्र मुखर उठा।

ऋषि के राष्ट्र जागरणकारी सर्व समाहारात्मक आन्दोलन पर टिप्पणी करते हुए लुइस एनू फ्रांस ने लिखा 'दयानन्द अपने' धार्मिक सुधारों के साथ ही हिन्दुत्व को इस बात की प्रेरणा देता था कि अपने भीतर एक सैनिक धार्मिक सुधारों के साथ ही हिन्दुत्व को इस बात की प्रेरणा देता था कि अपने भीतर एक धार्मिक सगठन बनावे।" कैम्ब्रिज विश्व-विद्यालय के प्रो० टाम्सने (Hindu Manners and Customs) पुस्तक में लिखा, "यदि दयानन्द को अधिक समय तक जीने का अवसर मिलता तो वह अपने अनुयायियों के लिए एक शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना कर जाता"

स्वाधीनता आन्दोलन का पुरस्कर्ता दयानन्द :

प्रथम एवं द्वितीय महायुद्धों में विनष्टप्राय किन्तु शीघ्र ही रणारूढ़ जर्मन राष्ट्र की तरह ऋषि दयानन्द ने १९५६ में पराजित हततेज भारत को पुन: संजीवनी प्रदान कर तेजस्विता, शक्ति एव आत्म संशोधन मार्ग पर आरूढ़ कर दिया। देश अब कांग्रेस क्रांतिकारी विस्फोटों के लिए तैयार हो गया। सन् १८८० ई० के आस पास की देश विस्फोटक स्थिति पर कांग्रेस के भावी सर विलियम वैडरबर्न ने लिखा एक ओर तो अशुभ और प्रतिगामी कानून, दूसरे रूस जैसा पुलिस का दमन, इससे लार्ड लिटन के समय में कोई क्रान्तिकारी विस्फोट होने ही वाला था ह्यूम को ठीक मौके की सूझी और उन्होंने इस काम में हाथ डाला।" वास्तव में ह्यूम को ७ जिल्दें हाथ लगी थी जिनमे भिन्न भिन्न जिलों में बागवत के भाव फैलने का वर्णन था।" कांग्रेस इतिहास लेखक डा० पट्टाभि सीता रमैया ने लिखा है कि 'यह तो एक रहस्य ही है कि अखिल भारतीय सगठन की कल्पना किसके मस्तिष्क से निकली। १८७७ के दिल्ली दरबार या कलकत्ते की अन्तर्राष्ट्रीय प्रदर्शनी ?" आर्य समाज के विषय में पट्टाभि ने लिखा, आर्य समाज में देशभक्ति के भाव बहुत प्रबल थे। राष्ट्र में एक तेजस्वी मनुष्यत्व का विकास हुआ जो हमारी पूर्व परम्परा और आधुनिक वातावरण दोनों के श्रेष्ठत्व का सामजस्य था। ह्यूम ने जनक्रांति के विरुद्ध बुद्धि जीवियों को कांग्रेस के रूप में वायसराय लार्ड डफरिन के परामर्श से विचार विमर्श का मंच देकर 'सेफटी वाल्व' का काम किया। अब राजनैतिक स्वाधीनता की धारा कांग्रेस के कगारों में तथा बाहर भी बहने लगी। किन्तु १८८५ से १९०५ तक की कांग्रेस प्रतिवर्ष राजभक्ति की शपथ लेती। १९१८ तक यह क्रम चला। शिक्षित अंग्रेज जाति के अधिवत्य को परमात्मा की कृपा माना जाता। वाय-सराय प्रतिनिधियों को सहभोज देते तथा सरकारी कर्मचारी भी उसमें सम्मिलित होते। कांग्रेस के सभापतियों - फीरोज-शाह-वेडरबर्न आदि को 'सर' की उपाधि तथा जजया ला मेम्बरका पद प्रलोभन स्वरूप दिया जाता। कांग्रेस की नीति उस समय तक उच्च प्रशासनिक पदों की मांग, बीच में यत्किंचित प्रतिनिधि के अधिकार तथा बाद में औपनिवेशिक स्वराज्य की मांग तक सीमित थी जिसे 'भिक्षावृत्ति की 'नीति' कहा जा सकता है। इस काल में कांग्रेस अधिवेशनों में लाला लाजपतराय' बाबूमुरलीधर, राय मूलराज तथा बक्सी जय श्रीराम सम्मि-लित होते थे। सामान्य आर्यसमाजी कांग्रेस के तत्कालीन कार्यक्रम से कहीं अधिक महत्वपूर्ण राष्ट्र विधायक कार्य-क्रमों मे युद्धस्तर पर संलग्न थे। उनकी धारणा थी कि कांग्रेस कार्यक्रमों से इस के संस्थापक अंग्रेज तथा पहले से ही सुप्रतिष्ठित मुसलमानों की ही स्थिति अधिक दृढ़ होगी। श्रद्धानन्द ने इसी काल में अनुभव किया कि कांग्रेस के कार्यों में धार्मिकता का अभाव है। इसी कारण कांग्रेस सम्मेलनों में गोम वेला के समय का अपव्यय तथा अंग्रेजी सभ्यता सस्कृति सत्ता एवं भक्ति का सुदृढ़ीकरण मानते थे। फलत: वे उससे दूर रहते थे।

राजधर्म एवं राजनीति :

महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों एवं कार-खानों में उद्गीरित राजधर्म, राजनीति, देशभक्ति एव राष्ट्रीयता सम्बन्धी

मदनमोहन जावलिया

विचारों के आधार पर आर्यसमाज को प्रचलित अर्थों में राजनैतिक सस्था नहीं मान सकते। राजनीति भी आध्या-त्मिकता, शिक्षा, अर्थ व्यवस्था, शरीर-सुधार आदि की तरह धर्म का अंग है। आर्यसमाज इसी व्यापक अर्थ में धार्मिक सस्था है। ईश्वर जीव, प्रकृति या कर्म-कांड सम्बन्धी चिन्तन तथा प्रचार करने वाली संस्था मात्र नहीं। इस अर्थ में राजनीति उसके धर्म क्षेत्र से बहिर्भूत नही है। इसीलिए शासन व्यवस्था सम्बन्धी शाश्वत सिद्धान्तों को ऋषि ने राजधर्म की सज्ञा दी है. और सामयिक पारिस्थितियों में अपनाए जाने वाली विचारों एवं कार्यपद्धति को राजनीति माना है।

कांग्रेस, हिन्दू महासभा तथा क्रांति-कारी आन्दोलनों के प्रवर्तन से; आर्य समाजियों को अपनी राज-नैतिक अभिरुचियों के क्रियान्वय के मार्ग उपलब्ध हो गए। सामयिक परिस्थितियों में तत्कालीन आर्य जाति के क्षत-विक्षत राज्य भ्रष्ट रथ को सामाजिक सांस्कृतिक आध्यात्मिक स्तरों पद पुनः स्थापित करने की अधिक आवश्यकता थी और सक्रिय राजनीति के समुद्र में इस अव्यवस्थित नौका को डाल कर सौम्य प्रयत्न को शैशवावस्था में ही नष्ट कर देने का खतरा वे मनीषी नहीं मोल लेना चाहते थे। (क्रमश:)

साहसिक, अविस्मरणीय एवं रोमांचकारी

—चन्द्रकेतु शर्मा

किस्त नं. 3

गुरुकुल कांगड़ी के ब्रह्मचारियों की जोखिम भरी कण्वाश्रम यात्रा

सूर्यास्त के समय ही ब्र० जी ऊपर की मंजिल वाले अपने कमरे से उतरे तथा फुल बूट पहनने लगे और यह क्या ? बड़े धैर्य पूर्वक अपने बूट में से अपना पैर निकाला हम सब ने देखा कि उनके पैर के अंगूठे पर एक बड़ा सा काला पहाड़ी बिछू चिपका हुआ है उसने अपने हाथ से ही पकड़ कर दूर पटक दिया। बच्चों ने उसे पत्थरों से कुचल डाला। उस पर उनका धैर्य दर्शनीय था। जीप में बैठकर डी० एफ० ओ० के बगले की पास की डिस्पेंसरी में उपचार कराकर शीघ्र ही लौट आये। यह सहनशीलता और धैर्य का अनुपम उदाहरण था।

और आते ही स्वय जीप मे सवार हो समस्त यात्री दल को ट्राली में बिठा उसी मार्ग से मालिनी नदी को पारकर जंगल की ओर चल दिए। यह हमारी यात्रा का अन्तिम चरण था और यही सबसे अधिक रोमांचक रहा। डी० एफ० ओ० के बंगले पर अधिकारी वर्ग से विचार विमर्श किया कि आज कल हाथियों का झुण्ड किस जंगल में विचरण कर रहा है। किस स्रोत पर उनसे मुलाकात हो सकती है। अब ब्रह्मचारीजी ने जीप की सड़क के मार्ग से छोडकर घने जगल में प्रवेश किया अनेक नदी नाले पार करते हुए लगभग साढे आठ बजे एक अत्यन्त घने बीहड़ जंगल में नदी के किनारे भैंस पालने वाले गूजरों ग्वालो के डेरे पर जीप खड़ी की ट्राली भी वहीं पर रुकी। आवाज लगाने पर बगलानुमा एक विशाल झोंपड़े में से मुखिया बाहर आया नमस्ते के बाद डी० एफ० ओ० का आदेश उसे बताया तुरन्त ही मुखिया ने अपने बड़े लड़के को वहा सामान की रक्षा के लिए खड़ाकर सम्पूर्ण काफले को पैदल ही साथ लेकर एक घने जगल की ऊंची नीची पगडण्डी की राह पकड़ी करीब डेढ़ कि० मी० की दूरी पर एक ऊंचे टीले पर लाकर सबको खड़ा किया। और बताया कि सब सज्जन शांत होकर यहीं खड़े रहें। यदि बात भी करनी हो तो अगूली की इशारे मात्र से करें। बोले कोई नहीं। नीचे नाले के सरोवर में हाथी पानी पीने आयेंगे शांति से उनका तमाशा देखें और दस मिनट भी न बीते होंगे क्योंकि हवा भी हमारे अनुकूल ही ही चल रही थी जिधर से हाथियों के आने के मार्ग था उसी तरफ से हवा चल रही थी। सामने घने जंगल की एक संकरी पगडंडी से विशाल काया दुर्दान्त भयकर सा दतैल हाथी निकला और सूड ऊपर उठाकर चारो ओर घूमने लगा जब वह निश्चिन्त हो गया यहां उसे किसी हिंसक जन्तु या मनुष्य की गन्ध न मिली तब वह अत्यन्त शात भाव से जगल में पुनः प्रविष्ट हो गया और एक दो मिनट

सूर्यास्त के समय ही ब्र. जी ऊपर की मंजिल वाले अपने कमरे ने उतरे तथा फुल बुट पहनने लगे और यह क्या ? बड़े धैर्य पूर्वक अपने बूट में से अपना पैर निकाला हम सब ने देखा कि उनके पैर के अंगूठे पर एक बड़ा सा काला पहाड़ी बिछू चिपका हुआ है उसने अपने हाथ से ही पकड़कर दूर पटक दिया। बच्चों ने उसे पत्थरों से कुचल डाला। उस पर उनका धैर्य दर्शनीय था।

के उपरान्त ही एक चिघाड़ लगाई यह शब्द अपने साथियों को सरोवर की ओर आने का निमन्त्रण ही था देखते ही देखते पंक्तिबद्ध हाथियों का झुण्ड एक-एक कर के आगे बढा। दर्शकों में कुछ ब्रह्मचारी चिल्ला उठे हाथी-हाथी क्योंकि निस्तब्ध रात्रि में तो हल्का शब्द ही गूंज उठता है

उत्सुकता से शान्त बैठ गए—गजराज आया सूण्ड उठाकर चारों ओर घुमाई पुन: जंगल में गया। चिघाड़ लगाई सब यात्रियों ने देखा कि एक-एक करके दस-बीस नहीं साठ-सत्तर हाथी उस सरोवर में आए सूण्डों में पानी भर कर खूब पिया और अपने ऊपर और अपने साथियों के ऊपर पानी बौछार कर नहाने और कलोल करने लगे हाथियों के घेरे के अन्दर उनके 15-20 छोटे बच्चे भी थे। उन सब को हाथियों ने मलमल का नहलाया।

फिर हाथियों की श्रवण शक्ति प्रबल होती है क्योंकि हाथी की आख बहुत छोटी होती हैं अतः वह दूर तक की चीज को नहीं देख पाता अतः हाथी की दृष्टि अत्यन्त कमजोर होने से, भगवान ने उसे कान छाज जैसे बड़े दिए हैं। अतः अत्यन्त धीमे बोला गया शब्द बहुत दूर से ग्रहण कर लेता है और फिर उन पर टार्च भी डाली गई अतः फिर चिघाड़ते हुए हाथियों का झुण्ड बिना पानी पिये जंगल की ओर चल पड़ा। कुछ विद्यार्थी तो इतना दृश्य देखकर वापस लौट पड़े परन्तु गाईड ने बताया कि देखिये मौसम गर्मी का है जलाशय सब सूखे हुए है वर्षा और शीत ऋतु में तो जगह-जगह पर पानी मिल जाता है परन्तु गर्मी की ऋतु में तो गिने चुने स्थानो पर ही पानी मिलता है। उनके कहने पर ५-७ मिनट में हाथी आयेंगे हुआ भी ऐसा ही सब उत्सुकता से शात बैठ गये गजराज आया सूण्ड उठाकर चारों ओर घुमाई पुन. जगल में गया चिघाड लगाई सब यात्रियो ने देखा कि एक-एक करके दस-बीस नही साठ सत्तर हाथी उस सरोवर में आये सूण्डों मे पानी भर कर खूब पिया और अपने ऊपर और अपने साथियो के ऊपर पानी बौछार कर नहाने और कलोल करने लगे हाथियो के घेरे के अन्दर उनके १५-२० छोटे बच्चे भी थे। उन सब को हाथियों ने मलमल कर नहलाया और गाईड ने बताया कि आज कल उ० प्र० सरकार ने जगल में कुछ शिकारी छोड़ रखे हैं और उनको आदेश दे रखा है कि हाथियों के छोटे बच्चों को जीवित ही पकड लाओ। अत. हाथी भी अत्यन्त सजग और सावधान हो गए हैं। अपने बच्चों की सतर्कता से रखवाली करते हैं। आधा घण्टा जल क्रीडा कर हाथी समूह जंगल में चला गया।

हमारे गुरुकुल के विद्यार्थियो ने यह दृश्य पहली बार ही देखा था। आकाश में चाद भी निकल आया था अब ब्र० जयन्त जी को एक चिन्ता थी कि सम्पूर्ण यात्रीदल को इस घने जगल से निकालकर गुरुकुल पहुचायें। अत वे स्वय भी यात्रीदल के साथ गुरुकुल कांगडी में पधारे, इस प्रकार यह अत्यन्त रोमांचकारी और आजन्म न भूलनेवाली यात्रा समाप्त हुई।

जन्म दिन

जालन्धर—स्त्री आर्य समाज पक्का बाग की मन्त्राणी सुशीला भगत के घर उनके सुपुत्र अश्विनी के जन्म दिन पर वैदिक सत्सग हुआ जिसमे प० रमेश आर्य पुरोहित ने यज्ञ करवाया। आर्य नेता ऋषिपालसिंह एडवोकेट सचालक प्रातीय आर्य वीर दल ने देश की अखण्डता एवं वर्तमान स्थिति पर ध्यान दिलाया, देश को एकता के सूत्र मे बाधनेके लिए कहा, इस अवसर पर सभा को ५१ रुपए वेद प्रचार प्राप्त हुआ। विशेष रूप मे जल-पान भी करावया। यज्ञ के यजमान नीरू, राकेश, श्री गोकुलचन्द भगत बनें, सैकड़ों की सख्या मे लोग आए, जिससे सत्सग सफल रहा।

(८ पृष्ठ का शेष)

सस्थाओं को ३१.३३ लाख रु, गैर राजानीतिक सस्थाओ को ५३ ४७ लाख रु. तथा तिब्बती शरणार्थियों को १९-५९ लाख रु प्राप्त हुए।

ईसाई धर्म प्रचारक सस्थाओ को सर्वाधिक धन देने वाला अमेरिका है जब कि मुसलमान राजनीतिक दलो और धार्मिक सगठनों को धन देने में सऊदी अरब प्रथम स्थान पर है। इनके अलावा रजनीश फाऊडेशन को २७-८० लाख रु. आनन्द मार्ग प्रचारक सघ को ३-३६ लाख रु. मिले। ये सभी सस्थाए विभिन्न प्रकार से अपार धन राशि प्राप्त कर रही हैं। उक्त आकड़े तो केवल खुले रूप में प्राप्त धन के हैं।

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जाए।

अब आर्य समाज ने विजय को समझा बुझा कर शुद्धि की ओर उसे फिर से हिन्दू बनाकर उसके उजड़े घर को स्वर्ग बना दिया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष लाला राम गोपाल शालवाले जी ने पिलखुवा पहुच कर इस मौका पर विजय को आशीर्वाद देकर अपने धर्म पर दृढ़ रहने को कहा।

यमुनानगर में हरिजन स्नेह सम्मेलन

हम बिकाऊ माल नहीं कि कोई हमारा धर्म ही खरीद ले

यमुनानगर—यहां धूमधाम से व उत्साहपूर्वक हरिजन बस्ती में एक स्नेह सम्मेलन का आयोजन बाल्मीकि सभा, सभी आर्य समाजों, केन्द्रीय सनातन धर्म सभा व राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के मिले-जुले प्रयत्नों से सम्पन्न हुआ। प्रारम्भ में हवन यज्ञ हुआ जिसमें यजमान पदों पर हरिजन भाई बहिनों को ही बिठाया गया, इस अवसर पर अनेकों हरिजन भाई-बहिनों ने स्वयं यज्ञोपवीत धारण किए व उन्होंने ही प्रसाद बांटा। इस अवसर पर रेलवे रोड, आर्य समाज के प्रधान श्री कृष्णचन्द आर्य ने कहा कि आर्य समाज ने हरिजनों को पण्डित बनाने का काम शुरू किया हुआ है क्योंकि जन्म के आधार पर वह ऊंच-नीच को नहीं मानती। आर्य जगत के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री ओम-प्रकाश वर्मा ने अपने मधुर भजनों से रसप्लावित किया। इस अवसर पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि यदि ऋषि दयानन्द की बात मान कर लगभग एक सौ वर्ष पहले हिन्दू समाज छुआछूत छोड़ देता अन्तर्जातीय विवाहों की परम्परा को बढ़ावा देते तो आज यह दिन देखने को न मिलता। केन्द्रीय सनातन धर्म सभा की ओर से जन्माष्टमी पर आयोजित लंगर में हरिजनों ने भोजन वितरित किया। हरिजनों ने सामूहिक रूप से प्रतिज्ञाएं कीं कि वे किसी भी स्थिति में अपना अपना धर्म नहीं छोड़ सकते क्योंकि हरिजन बिकाऊ माल नहीं।

—

हरिजनों के सांथ प्रीति भोज

चण्डीगढ़—२६ जुलाई १९८१ को गुरु रविदास भवन सैक्टर २० में आर्य समाज सैक्टर २२ के तत्वावधान मे स्थानीय आर्य समाजों, सनातन धर्म और हरिजन सभाओं के सहयोग से हवन-यज्ञ करने के पश्चात् एक बड़ा सम्मेलन किया गया। इसका कार्यक्रम चार घण्टे तक चलता रहता, जिसमें अनेक वक्ताओं ने अपने अपने विचार प्रकट किए।

इस सम्बन्ध मे एक बैठक २ अगस्त १९८१ को आर्य समाज सैक्टर २२ के तत्वावधान में फिर आयोजित की गई जिसमें—हरिजन भाईयो ने भारी संख्या मे भाग लिया। इसमें हरिजनों के धर्म-परिवर्तन की समस्या पर विस्तारपूर्वक विचार किया गया। एक सम्मेलन और प्रीति भोज १६ अगस्त १९८१ को शिव मन्दिर सैक्टर ८ में पण्डित मोहनलाल जी भूतपूर्व गृह मन्त्री, पंजाब तथा प्रधान सनातन धर्म प्रतिनिधि सभाएं उत्तर भारत की अध्यक्षता में किया गया। इस में भारत सरकार से आग्रह किया गया कि वह सामूहिक धर्म परिवर्तन की घटनाओं को रोक-थाम के लिए एक अध्यादेश तत्काल जारी करें।

—

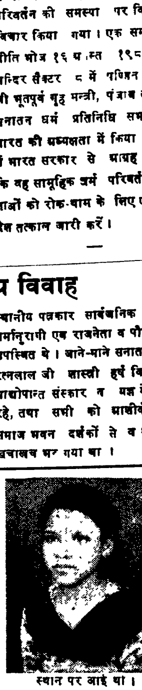
अन्तर्जातीय विवाह

बीकानेर—सुप्रसिद्ध साहित्य सेवी श्री अम्बिकादत्त गोस्वामी की पुत्री सुनीता का चि० योगेन्द्र अग्निहोत्री से पाणिग्रहण संस्कार आर्य समाज महर्षि दयानन्द मार्ग मे वहां के मन्त्री श्री भवरलाल आर्य बन्धु ने कराया। मन्त्रों की सुललित व्याख्या वयोवृद्ध विद्वान् प० सालिगराम जी शास्त्री ने की।

इस अन्तर्जातीय विवाह समारोह में स्थानीय पत्रकार सार्वजनिक कार्यकर्ता धर्मानुरागी एवं राजनेता व पौराणिक भी उपस्थित थे। जाने-माने सनातन धर्मी पं. रत्मलाल जी शास्त्री हर्ष विभोर होकर आद्योपान्त संस्कार व यज्ञ में उपस्थित रहे, तथा सभी को आशीर्वचन कहे। समाज भवन दर्शकों से व श्रोताओं से खचाखच भर गया था।

भारत भर में तृतीय

आर्य युवक परिषद् दिल्ली के तत्वावधान मे इस वर्ष आयोजित की गई सत्यार्थ प्रकाश की परीक्षा सत्यार्थ विशारद मे आर्य गर्ल्जहायर सकैण्डरी स्कूल लुधियाना की 11वी कक्षा की छात्रा कु. अनिता सुपुत्री श्री बाल कृष्ण 100 मे से 84 अंक लेकर भारत भर मे तीसरे स्थान पर रही। इसी स्कूल की अन्य छात्रा गत वर्ष भारत मे प्रथम



स्थान पर आई थी।

गुरु विरजानन्द स्मारक करतारपुर की रजत जयन्ती

गुरु विरजानन्द स्मारक समिति (ट्रस्ट) करतारपुर जिस की स्थापना श्री बद्रीनाथ जी अफ्रीका द्वारा प्रदत्त ५२०० रुपयों की सात्विक राशि से १९५६ में हुई थी। उसने अपने २५ वर्ष निरन्तर संस्कृत तथा भारतीय संस्कृति के प्रचार प्रसार में निर्विघ्न पूरे कर लिए हैं। इसी स्मारक की रजत जयन्ती उत्सव २० सितम्बर रविवार १९८१ से २७ सितम्बर १९८१ तक बड़ी धूमधाम से मनाई जा रही है। करतारपुर को महर्षि विरजानन्द जी की जन्मस्थली का गौरव प्राप्त होने से तीर्थ स्थान का महत्व प्राप्त है।

भारतीय स्वातन्त्र्य संग्राम के सर्व-प्रथम मार्गदर्शक गुरु विरजानन्द के अतिशय संस्कृत प्रेमी होने के कारण यह ट्रस्ट अपने अन्तर्गत संचालित एक संस्कृत महाविद्यालय जोकि गत वर्ष से विधिपूर्वक गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार के साथ सम्बन्धित हो चुका है। के द्वारा वेद तथा संस्कृत के प्रचार प्रसार से राष्ट्र की महान सेवाएं कर रहा है। जिसे आप सभी का व्यक्तिगत तथा सार्वजनिक रूप से पूर्ण सहयोग प्राप्त है। उसी सहानुभूति पूर्ण सहयोग की आशा से भारत के प्रख्यात विद्वानों को आमन्त्रित कर इस रजत जयन्ती महोत्सव का आयोजन किया जा रहा है।

२० सितम्बर से नित्य प्रति यजुर्वेद का पारायण यज्ञ होगा। जिस की पूर्णाहुति २७ सितम्बर रविवार प्रातः काल होगी। यज्ञ के ब्रह्मा पंडित श्री राजगुरु शर्मा मधु तथा वेद पाठी इसी गुरुकुल का ब्रह्मचारी वर्ग होगा। नव प्रविष्ट छात्रों का वेदारम्भ संस्कार भी इसी अवसर पर होगा।

२६ सितम्बर शनिवार मध्याह्नोत्तर पंजाब के कोने-कोने से दादागुरु विरजानन्द के प्रति अपनी श्रद्धाञ्जलि देने आया अपार जनसमूह अपनी एकता का प्रदर्शन करेगा। इस शोभा यात्रा में आप भी अपनी समाज तथा संस्था से अपने साथ, झण्डे, बैंड, बाजे सहित सम्मिलित अपना अमूल्य सहयोग दें।

२७ सितम्बर को पूर्णाहुति तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यक्रमों के अतिरिक्त आपके प्रिय गुरुकुल करतारपुर के ब्रह्मचारी अपना रोचक बौद्धिक कार्यक्रम गीत भजन, वेदपाठ, अन्त्याक्षरी संवाद आदि तथा अद्भुत चमत्कार पूर्ण शारीरिक प्रदर्शन में आग के गोले में से निकलना, आंख आदि के द्वारा सरिये मोड़ना, छाती पर पत्थर तुड़वाना, कांच पीसना, चाकी चीरना आदि विविध कार्यक्रम प्रस्तुत करेंगे।

इस धार्मिक समागम में आप अपने इष्ट मित्रों सम्बन्धियों तथा समस्त परिवार सहित अधिक से अधिक संख्या में भाग लेकर इस महोत्सव को अधिकाधिक सफल बनाएं तथा उच्चकोटि के विचारकों, विद्वानों, महात्माओं, सन्यासियों, के मधुर उपदेशामृत का पान का आत्मिक लाभ उठाएं। इस अमूल्य अवसर को हाथ से न जाने दें।

विशेष :—(१) इस कार्यक्रम की घोषणा अपनी समाज के साप्ताहिक सत्संग तथा शिक्षा संस्था के मञ्च से अवश्य करें।

(२) भोजन आवास का समुचित प्रबन्ध (ट्रस्ट) की ओर से होगा। पुनरपि आप अपनी समाज या संस्था से कितनी संख्या में पधार रहे हैं। इसकी सूचना देकर आवास तथा भोजन की व्यवस्था मे हाथ बटाएं।

(३) ऋतु अनुसार बिस्तर साथ लावें।

जगदेव सिंह की जयन्ती

आर्य समाज के आदर्श नेता तथा के वेदों के प्रकांड विद्वान् स्वर्गीय पंडित जगदेव सिंह सिद्धान्ती शास्त्री की ८२वीं जयन्ती दशहरे पर्व पर ८ अक्तूबर १९८२ को हरियाणा के ऐतिहासिक धार्मिक स्थान दयानन्द मठ, रोहतक में सभा की ओर से मनाई जा रही है।

इस अवसर पर हरिजन भाइयों के साथ सामूहिक यज्ञ, प्रीतिभोज तथा सार्वजनिक सभा का आयोजन आर्य जगत् के त्यागी, तपस्वी गीतराम संन्यासी स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती की अध्यक्षता में होगा। श्री सिद्धान्ती जी के श्रद्धालु तथा आर्य समाज के अन्य नेता भी पधारेंगे। श्री सिद्धान्ती जी जीवन तथा उन द्वारा किए गए समाज सुधार कार्य पर पुस्तक भी प्रकाशित की जाएगी।

इसी उपलक्ष में एक दिन पूर्व ७ अक्तूबर को रात्रि को वैदिक उपनिषद सम्मेलन भी रखा गया है।

आर्य प्र. नि. सभा पंजाब द्वारा प्रकाशित तथा प्रसारित साहित्य की पुस्तकें

१.	सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी,	४—५०
२.	,, (उर्दू)	१०—००
३.	,, अंग्रेजी	२०—००
४.	आर्य समाज—अतीत की उपलब्धियां तथा भविष्य के प्रश्न —ले०—डा० भवानीलाल भारतीय	१०—००
५.	पंजाब का आर्य समाज ले०—प्रि० रामचन्द्र जावेद	४—००
६.	मिलिम्पसज फराम सत्यार्थ प्रकाश (अंग्रेजी) —ले० श्री० एन० वासुदेव जी	३—००
७.	स्वामी श्रद्धानन्द (अंग्रेजी) —ले० श्री के० एन० कपूर जी	५—००
८.	स्वामी श्रद्धानन्द उपदेश माला	०—२५
९.	पोलीटीकल टैस्टामैंट आफ स्वामी श्रद्धानन्द	०—२५
१०.	जन्म साखी (ले० ज्ञानी पिण्डीदास जी)	२—००
११.	सिक्ख गुरु मते आर्य सिद्धान्त (पंजाबी) —ले० स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी सरस्वती	२—५०
१२.	आर्य समाज दा दिग्दर्शन (पंजाबी) ले०—आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद	२—००
१३.	वेद और उनका प्रादुर्भाव —ले० महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज	५०—०० सैंकड़ा
१४.	अर्जुन स्वामी श्रद्धानन्द और उनका दिव्य सन्देश	०—२५
१५.	भागवत खण्डनम् —ले० स्वामी दयानन्द जी सरस्वती	०—५०
१६.	मोहारिकावाद और उपनिषद् (ले० प. चमूपति)	००—२५
१७.	वीतराग स्वामी स्वतन्त्रतानन्द —ले० श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु	१—००
१८.	हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी —ले० ज्ञानी पिंडीदास जी	०—२५
१९.	प्रिंसिपल्स आफ आर्य समाज अंग्रेजी. —ले० श्री फूलचन्द जी एडवोकेट	२—००
२०.	मृत्यु और परलोक —ले० महात्मा नारायण स्वामी जी	२—५०
२१.	संस्कार विधि —ले० स्वामी दयानन्द जी सरस्वती	४—५०
२२.	मेरे सपनों का भारत, —ले० श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री	२—५०
२३.	आर्य पर्व पद्धति —ले० श्री पं० भवानी प्रसाद	५—००
२४.	पूजा किस की —ले० श्री राम गोपाल शालवाले	०—२५
२५,	आर्य समाज ,, ,,	०—३०
२६.	सत्य की मंजिल सेवा की राह —ले० शादी राम जोशी	१०—००
२७.	बाल सत्यार्थ प्रकाश ले० प्रोफैसर विश्वनाथ विद्यालंकार वेदोपाध्याय गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार,	३—००
२८.	धर्मस्वातन्त्र्य विधेयक क्यों? ले० रघुनाथ प्रसाद पाठक	१—००
२९.	माण्डूक्योपनिषद् —ले० टीका म० नारायण स्वामी	०—३५
३०.	प्रभु भक्ति स्रोत —ले० लोकनाथ जी वाचस्पति	०—४०
३१.	धर्मवीर पं. लेखराम —ले० स्वामी स्वतन्त्रानन्द	०—४०

आर्य मर्यादा के विशेषांक

१.	मेरी आत्मकथा के कुछ पृष्ठ —ले० आचार्य रामदेव जी	१—००
२.	स्वतन्त्रानन्द संस्मरणांक	१—५०
३.	वेद में पुनरुक्ति दोष नहीं	२—५०
४.	यजुर्वेदाध्याय का ३२वां स्वाध्याय	१—००
५.	अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी	१—५०

नोट :—ओ३म् के झंडे, हवन कुंड तथा ओ३म के बैज भी उपलब्ध हैं।

प्राप्तिस्थान

व्यवस्थापक—चमूपति साहित्य प्रकाशन विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर—4

गीदड़बाहा में अभूतपूर्व शोभा यात्रा व कथा

आर्य समाज गिदड़बाहा की आर्य समाज में गत कुछ वर्षों से श्री मदन लाल आर्य के सुप्रयास से पुन: जान दिखाई देने लगी है। कम सदस्य होते हुए भी कुछ न कुछ कार्यक्रम चलता ही रहता है। डा धर्मपाल गोयल जी आदि के समाज में आने से इसको और गति मिली जबकि अब अबोहर के श्री अशोक आदि की स्थानीय डी० ए० वी० कालेज पुस्तकाध्यक्ष के रूप मे पदभार ग्रहण करने से तथा डाक्टर ऊषा जी के आर्य समाज की सक्रिय सहयोग से भविष्य और भी उज्जल दिखाई देने लगा है।

इन उत्साही युवकों की मण्डली के सुप्रयास से १९ से २३ अगस्त तक आर्य समाज गिदड़बाहा का वार्षिक उत्सव बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इन दिनों महात्मा प्रेमभिक्षु जी मथुरा वालों द्वारा प्रात: काल पारिवारिक यज्ञ एव सायंकाल प्रवचनो द्वारा जन मानस को मन्त्र मुग्ध किया जाता रहा। आर्य पुत्री पाठशाला, वैश्य हाई स्कूल, डी० ए० वी० महिला कालेज, गुरु गोविन्द सिंह खालसा कालेज मे हुए प्रवचनों से विद्यार्थी व अध्यापक गण भी मन्त्र मुग्ध हो उठे। २३-८-८१ रविवार को यज्ञ के पश्चात प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु जी व म. वेद प्रकाश जी के ओजस्वी व्याख्यान व प्रो० मोहन मनीषी जी की मधुर कविताओं के पश्चात् आर्यन यूथ लीग (वैदिक मिशन) की बैठक हुई जिसमें सीमित आर्थिक साधनों द्वारा असीमित कार्य का विवरण एव प० नरेन्द्र भूषण जी की कठिनाईयों पर विचार किया गया व इन्ही दिनों लगभग १५० लोगों की शुद्धि की जानकारी दी।

वैदिक उपनिषद् सम्मेलन

आर्य विद्वानों को यह जानकार प्रसन्नता होगी कि आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा, दया नन्द मठ, रोहतक के तत्त्वावधान मे दिनांक ७ अक्तूबर १९८१ बुधवार को पण्डित जगदेवसिंह सिद्धान्ती के शुभ जन्म दिवस के उपलक्ष में "वैदिक उपनिषद् सम्मेलन" का आयोजन किया जा रहा है। इस सम्मेलन में आर्य विद्वानों के सहयोग की परम आवश्यकता है। सम्मेलन में विद्वानों के भाषण शंका समाधान तथा शोध-पत्र वाचन का कार्यक्रम रखा है। आर्य विद्वान् निम्नलिखित विषय पर अपने सारगर्भित लेख भेज कर कृतार्थ करें—

१. उपनिषदों का वैदिक आधार।
२. उपनिषदों की प्रामाणिकता।
३. महर्षि दयानन्द और उपनिषद्।
४. उपनिषदों का प्रतिपाद्य विषय।
५. महर्षि दयानन्द और उपनिषद।
६. उपनिषद् और वेदान्त (ब्रह्म)
७. उपनिषदों की शिक्षाएं।

सुदर्शनदेव आचार्य संयोजक
वैदिक उपनिषद् सम्मेलन

आवश्यकता

सुयोग्य अनुभवी तथा सदाचारी सिद्धान्त मर्मज्ञ विद्वान् उपदेशकों व भजनोपदेशकों की आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, जालन्धर के वेदप्रचार विभाग में कार्य करने के इच्छुक हों, की आवश्यकता है। वेतन योग्यता-अनुसार दिया जाएगा। प्रार्थी सभा कार्यालय में आवेदन करें।

—रामचन्द्र जावेद
मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा
पंजाब किशनपुरा चौक
जालन्धर

आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी

श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा स्थापित आर्य अनाथालय फिरोजपुर छावनी के विशाल प्राङ्गण में १५ अगस्त सन् १९८१ श्रावणी उपाकर्म (रक्षा बन्धन) व स्वतन्त्रता दिवस कराया।

जिसमें अन्तर्राष्ट्रीय उपदेशक महाविद्यालय ऋषि भूमि टकारा के सुयोग्य स्नातक श्री हरिसिंह आर्य सि. आचार्य जी के पुरोहित्य में बृहद् यज्ञ का आयोजन किया गया। जिसके यजमान पद [illegible] नियुक्त प्रिंसिपल श्री पी. डी. चौधरी (भूतपूर्व प्रिंसिपल डी. ए. वी. कालिज दसूआ) व धर्म पत्नी श्रीमती सन्तोष चौधरी (अवैतनिक लेडी सुपरवाइज़र) जी ने सुशोभित किया!

इस शुभ अवसर पर आश्रम के बच्चों को यज्ञोपवीत व आशीर्वाद देकर उत्साहित किया गया।

आर्य जगत के समाचार

विदेशी धन द्वारा भारत की स्वतन्त्रता समाप्त करने का षड्यंत्र

किस-किस देश से कितना धन मिला आंकड़े

नई दिल्ली—विदेशी धन के द्वारा भारत में यदि धर्मान्तरण को तुरन्त न रोका गया तो देश की स्वतन्त्रता संकट में पड़ जाएगी, देशवासियों को चेतावनी देते हुए अखिल भारतीय हिन्दू [illegible] समिति के अध्यक्ष महात्मा वेद भिक्षुः ने सरकार से तुरन्त कार्यवाही करने और अध्यादेश द्वारा धर्मान्तरण रोकने की मांग की है।

आपने कहा कि विश्वस्त सूत्रों द्वारा कई वर्षों के कड़े परिश्रम के बाद केन्द्रीय जांच ब्यूरों ने देश में खुले तथा चोरी छिपे आने वाले विदेशी धन के बारे में अकाट्य प्रमाण एकत्रित कर लिए हैं।

[illegible] निष्कर्ष निकले हैं कि विदेशी धन न केवल शैक्षणिक और धार्मिक संस्थानों को ही दिया जा रहा है बल्कि सामाजिक एवं विकास कार्य में लगे कुछ स्वयंसेवी संगठनों को भी मिल रहा है।

आंकड़ों से पता चला है कि इस वर्ष मई और जून के दौरान किसी न किसी बहाने से १४-२८ करोड़ रु. भारत आए। इनमें से ५-९० करोड़ रु. अमेरिका से, २-३६ करोड़ रु. जर्मनी से, १-५ करोड़ रु. नीदरलैंड से, ९-८२ लाख रु. ब्रिटेन से, १७-९७ लाख रु. रूस से, ११-४१ लाख रु. आस्ट्रेलिया से, ८-१६ लाख रु. सऊदी अरब से तथा ६-११ लाख रु. कुवैत से आए।

इसमें से सर्वाधिक ५-४५ करोड़ रु. पश्चिमी बंगाल को मिले। केरल को २-२४ करोड़ रु., महाराष्ट्र को १-४५ करोड़ रु., तमिलनाडु को १-२८ करोड़ रु., आन्ध्र प्रदेश को ८-८३ लाख रु., बिहार को ४५-[illegible] लाख रु., उत्तर प्रदेश को ११ लाख रु. और दिल्ली को १-४२ [illegible]

इन दो महीनों के दौरान विभिन्न ईसाई धर्म प्रचारक संस्थाओं को १२-५६ करोड़ रु. मिले। मुसलमान संगठनों को ४३-६३ लाख रु., अहमदिया धार्मिक

(शेष पृष्ठ ५ पर)

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जगदीश प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर के इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

25 NOV 1981

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वर्ष 14, अंक 26, 12 आश्विन सम्वत् 2038, तदनुसार 27 सितम्बर 1981, दयानन्दाब्द 156 । एक प्रति 35 पैसे (वार्षिक शुल्क 15 रुपए)

तमिलनाडू सरकार द्वारा 'सत्यार्थ प्रकाश' पर पाबन्दी की सम्भावना

सार्वदेशिक आर्य प्र. नि. सभा द्वारा विरोध

नई दिल्ली–सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की कार्यकारिणी ने तमिलनाडू सरकार द्वारा मद्रास आर्यसमाज को दिए गए पत्र के आधार पर सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाए जाने की सम्भावना पर आश्चर्य और दुःख प्रकट किया है ।

सभा ने स्पष्ट किया है कि महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती द्वारा एक सौ वर्ष पूर्व रचित इस धार्मिक ग्रन्थ पर मानव जाति में घृणा फैलाने एव भेद-भाव उत्पन्न करने का दोषारोपण नितान्त असत्य है । इस प्रकार की धार्मिक दखल-न्दाजी जहां इस ग्रन्थ में पूर्ण आस्था रखने वाले करोड़ों व्यक्तियों का अपमान है वहीं विधान की भावना के भी सर्वथा प्रतिकूल है ।

सभा ने तमिलनाडू सरकार से निवेदन किया है कि वह महर्षि स्वामी दयानन्द द्वारा रचित इस महान् ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' का पूर्वाग्रह से मुक्त होकर निष्पक्ष अध्ययन के पश्चात् विचार करे । जिससे यह स्पष्ट हो जाएगा कि उनका उद्देश्य इस ग्रन्थ द्वारा किसी के हृदय को ठेस पहुंचाना अथवा मानव जाति से भेदभाव करना नहीं और न ही इसका उद्देश्य किसी पर असत्यारोपण करना है अपितु सत्य को सत्य और असत्य को असत्य बताते हुए मानव मात्र को सत्य की ओर प्रेरित करना है ।

सभा की कार्यकारिणी द्वारा हैदराबाद में पारित उक्त प्रस्ताव पर विचार करने की मांग की गई है । अन्यथा आर्यसमाज को अपने धर्म ग्रन्थ की रक्षा के लिए गम्भीरतापूर्वक विचार करना होगा ।

—

गुरुकुल करतारपुर उत्सव

श्री वीरेन्द्र व प्रि. जावेद का अधिकाधिक संख्या में पहुंचने का आह्वान

जालन्धर, यहां से १३ कि. मी. दूर करतारपुर में गुरु विरजानन्द स्मारक गुरुकुल में२३ व २७ सितम्बरको वार्षिको त्सव बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा । इसके लिए आर्य जगत के प्रतिष्ठित विद्वान पंडित राजगुरु शर्मा जी के ब्रह्मत्व में २० सितम्बर से यज्ञ शुरू हो चुका है ।

इस में महिला सम्मेलन, युवक सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन और श्रद्धांजलि सम्मेलन के अतिरिक्त गुरु विरजानन्द संस्कृत पाठशाला के विद्यार्थी भी अपने भाषणों द्वारा अपनी योग्यता का प्रदर्शन करेंगे ।

आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री वीरेन्द्र एवं मंत्री प्रि राम चन्द्र जावेद ने उक्त जानकारी देते हुए पंजाब के संस्कृत प्रेमियों एवं आर्य जनता को आह्वान किया कि वे इस सम्मेलन में अधिकाधिक संख्या में सम्मिलित हों । उन्होंने बताया कि यह संस्था संस्कृत शिक्षा का एक बहुत बड़ा केन्द्र बनती जा रही है जिसमें अन्य राज्यों से भी विद्यार्थी पढ़ने आते हैं ।

आर्यों में आक्रोश

जालन्धर—(विशेष प्रतिनिधि)— तमिलनाडू सरकार द्वारा १९वीं शताब्दी के महान् ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' पर पाबन्दी की सम्भावना पर आर्य जगत में सर्वत्र क्षोभ एव तीखे रोष की लहर दौड़ गई ।

विभिन्न क्षेत्रों से प्राप्त समाचारो में तमिलनाडू सरकार को चेतावनी दी गई है कि महर्षि दयानन्द की विरचित इस ग्रन्थ पर प्रतिबन्ध लगाना भिड़ों के छत्ते को छेड़ने अथवा शेर की मांद में हाथ डालना सिद्ध होगा । आर्य समाजों एव आर्य संस्थाओं के पदाधिकारियों ने अपने इस ग्रन्थ की रक्षा के लिए सर्वस्व न्यौछावर कर देने का संकल्प घोषित करते हुये कहा कि यदि तमिलनाडू सरकार ने सत्यार्थ प्रकाश पर पाबन्दी का निर्णय न बदला तो यह उसके पतन का कारण सिद्ध होगा ।

अभी तक प्राप्त समाचारों के अनुसार हजारों आर्यों ने घोषणा की है कि इसके लिए सार्वदेशिक सभा जो भी आन्दोलन चलाएगी उसमें वह बढ़ चढ़कर भाग लेंगे और सत्यार्थ प्रकाश पर प्रतिबन्ध लगाने का दुःसाहस करने वाली दूर सरकार की तरह तमिलनाडू सरकारको भी झुकने पर मजबूर कर देंगे । अनेक आर्य वीरो ने धमकी दी है कि यदि सत्य की आवाज सत्यार्थ प्रकाश को दबाने की मूर्खता की गई तो आर्य समाज अपनी पारस्परिक संगठन शक्ति का प्रदर्शन कर उसे आजाद करा देगा ।

दूसरी ओर आर्य नेताओं का यह भी विचार है कि यदि तमिलनाडू सरकार ने यह धृष्टता की तो आन्दोलन छेड़े जाने से आर्य समाज की वर्षों की शिथिलता टूट जाएगी और अपनी शक्ति पर जिन्दा रहने की क्षमता रखने वाले आर्य समाज की धमनियो मे बहने वाला खून ताजगी और जानगी प्राप्त कर लेगा ।

डा. आनन्द सुमन की अपील—

हिन्दू युवक सावधान रहें

नई दिल्ली—आनन्द सुमन जिन्होने हाल ही में इस्लाम छोड़कर हिन्दू धर्म स्वीकार किया है ने एक विशेष वक्तव्य में हिन्दू युवकों को इस्लामीकरण के विदेशी षड्यन्त्रों से सावधान रहने के लिए कहा है ।

डाक्टर आनन्द सुमन ने कहा कि आज मुसलमान अरब व अन्य मुस्लिम देशो की मदद से हरिजनों का धर्म परिवर्तन करा रहे हैं । उन्होने कहा कि हमें इस षड्यन्त्र को हर कीमत देकर विफल कर देना होगा । उन्होंने कहा कि भारतीय समाज को अब यह नारा दिया जाना चाहिए, 'भारत मे रहना होगा 'वन्देमातरम्' कहना होगा ।'

भेड़िये की चाल छोड़ो

क्रोध मनुष्य का महान् शत्रु है

शुशुलूकयातुम्—मोह के कारण राग द्वेष उत्पन्न होता है।

प्रिय पदार्थों मे सुख की प्रतीति कराने वाले पदार्थों में मनुष्य को राग होता है। दु:ख का आभास कराने वाले अप्रिय पदार्थों के प्रति प्राणी को द्वेष होता है। राग और द्वेष दोनों क्रोध को उत्पन्न करते हैं। प्राणी जिस वस्तु से राग रखता है वह न मिले तो क्रोध आता है। क्रोध क्या है, दूसरे को मारने की इच्छा। भेड़िया, सिंह आदि की अपेक्षा अधिक क्रूर और हिंसक होता है। बिना कारण के भी आक्रमण कर देता है। तृप्त होने पर भी क्रुद्ध होकर आक्रमण करना इस का स्वभाव है। अज्ञान जन्य मोह-वृत्ति से उत्पन्न क्रोध को कौन शान्त कर सकता है। वेद कहता है 'अरे मनुष्य! 'शुशुलूकयातुं जहि' भेड़िए की चाल छोड़ दे। क्रोध को निकाल बाहर कर गीता में कहा गया है कि 'काम' (यहां काम शब्द विषय भोग या राग-द्वेष के लिए है) से क्रोध उत्पन्न होता है। कहा गया है :—

ध्यायतो विषयान्पुंसः संगस्तेषूपजायते।
संगात्संजायते काम: कामात्क्रोधोऽभिजायते।
क्रोधाद् भवति संमोह: संमोहात्स्मृतिविभ्रम:।
स्मृति भ्रंशाद् बुद्धि नाशो, बुद्धि नाशात्प्रणश्यति। २-६३

अर्थात्—विषयों का चिन्तन करने वाले पुरुष का उन विषयों मे संग बढ़ता जाता है। संग से वासना उत्पन्न होती है कि हमको काम (अर्थात् वह विषय) चाहिए और (इस काम की प्राप्ति में विघ्न होने से) उस काम से ही क्रोध की उत्पत्ति होती है। क्रोध से संमोह अर्थात् अविवेक होता है, संमोह से स्मृति भ्रंश स्मृति भ्रंश से बुद्धि नाश और बुद्धि नाश से पुरुष का सर्वस्व नष्ट हो जाता है।

क्रोध हमारा शत्रु है। क्रोध रूपी जो आग आप अपने शत्रु के लिए अपने हृदय मे जलाते हैं वह प्राय: आपके शत्रु से अधिक आपको जलाती है। क्रोध किसी कारण से ही पैदा होता है, वह कारण कितना भी बड़ा क्यों न आप जितनी बार क्रोधित होते हैं उतनी बार अपनी हानि करते हैं। क्रोध शरीर में हल्के जहर का काम करता है।

मनुष्य बुरा अर्जन, जलन, घबराहट, मार बैठना, घृणा करना, कठोरता, परेशानी उद्वेग से क्रोध के पर्याय या भाई बन्द हैं। क्रोध निमन्त्रण पाकर इनके साथ आता है और अनेक कठिनाईयां और परेशानियां उत्पन्न कर देता है। वह दु:ख और दरिद्रता को जन्म देता है क्रोध आप में घृणा का भाव भर देता है जो कभी-कभी मनुष्य को नेस्तनाबूद कर देता है।

क्रोध महा चाण्डाल है

गंगा के किनारे एक साधु अपनी कुटिया में रहते थे। उन्होंने एक दिन कपड़े धोए। धूप में गंगा के किनारे रेत पर सूखने के लिए डाल दिए। तभी एक चाण्डाल आया। उसे भी गर्मी लग रही थी वह नहाया और वहां कपड़े भी धोने लगा। कपड़े धोने की आवाज सुनकर साधु बाहर निकला और चाण्डाल को वहां नहाने तथा कपड़े धोते देखकर और उनके छींटे अपने कपड़े पर पड़ते देखकर उसके पास आकर बोला तू अन्धा है। चाण्डाल होकर यहां कपड़े भी अपवित्र कर दिए हैं और चाण्डालको पीटना शुरू कर दिया। उन्होंने दुबारा स्नान किया। चाण्डाल भी गंगा में कूद पड़ा। साधु को उस पर तरस आया और बोले—अभी तो पसीने से तर हो रहा है। सर्द गर्म हो जाएगा तो परेशान हो जाएगा। अजी क्यो नहाता है?

चाण्डाल बोला—आप भी तो नहा चुके, आप क्यों नहाते हैं?

साधु ने कहा—मुझे चाण्डाल ने छू लिया था इसलिए नहाता हूं। चाण्डाल बोला—और मुझे महा चाण्डाल (आपके क्रोध ने) छू लिया था इसलिए नहाता हूं,' सचमुच महा चाण्डाल है। सब कुछ बिगाड़ देता है। जहां उत्पन्न हो जाए सर्वनाश कर देता है। मन को निर्मल बनाने के लिए क्रोध को निकट मत आने दो। शान्त, सहनशील और गम्भीर मनुष्य कार्य और जीवन में सफल होते हैं।

मुस्कराहट में जीवन की सफलता है

काफी पुराने जमाने की बात है। इंगलैंड में चुनाव का ज़ोर था। लायड जार्ज जो वहां प्रधान मन्त्री भी बन चुके हैं—भाषण दे रहे थे। हाल खचाखच भरा हुआ था। अपने भाषण के अन्त में वे जोर से बोले, 'मैं सब देशों की आजादी चाहता हूं। इंगलैंड के लिए पूर्ण आजादी यूरोप के लिए पूर्ण आजादी, हिन्दुस्तान के लिए आजादी। इतने में एक आदमी जो विपक्ष था, जिसे हिन्दुस्तान की आज की बात सुनकर बुखार आ जाता था। अचानक खड़ा होकर गुस्से से चिल्लाया—जहन्नुम के लिए भी आजादी।

लोग हंसते हुए लायड जार्ज की ओर ताकने लगे। अगर वे माकूल जवाब न दे पाते या क्रोध में आ जाते तो उनके भाषण का प्रभाव समाप्त हो जाता। उन्होंने मुस्कराते हुए कहा—जी हां, मैं जरूर चाहता हूं कि हरेक शख्स अपने अपने देश की आजादी के लिए अवश्य खड़ा हो।

सब ठहाका लगाकर हंस पड़े। बेचारा जहन्नुम का नागरिक बनकर रह गया।

इसी तरह मैकडोनाल्ड जो मजदूर दल के नेता और इंगलैंड के प्रधानमन्त्री भी रह चुके हैं, एक घटना हुई। मैकडोनल्ड के प्रभावशाली भाषण के बाद कुर्सी पर ठीक वह ही उसका विरोधी खड़ा हुआ और उसने पूछा, 'मिस्टर मैकडोनल्ड क्या आपको याद है कि आपके पिता गदहा गाड़ी हांकते थे? यह बात उनको उत्तेजित करने के लिए कही गई थी, पर उन्होंने शान्त चित्त से उत्तर दिया जी हां, बाबूजी याद है। मेरे पिता जी की गाड़ी तो टूट गई, पर उनका गधा अब भी सामने खड़ा है। इस प्रकार वह मुंह की खाकर शान्त हो गया।

इस प्रकार भेड़िए की चाल क्रोध को छोड़ दीजिए। आप कह सकते हैं कि यह जब आता है तो समझ में नहीं आता कि इसे कैसे छोड़ें? क्रोध को रोकने का तरीका है कि एक से दस तक गिनती गिनिए और अगर आ ही जाए तो एक से सौ तक गिनती गिनिए। क्रोध क्यों आ रहा है, इस विषय में तर्क कीजिए और उसे अपने मन से धक्के देकर निकाल दीजिए। जिस चोट की वजह से क्रोध आता है वह चोट उसमें पैदा होने वाले क्रोध की बनिस्बत कम नुकसान पहुंचाती है।

एक व्यापारी ने जिस पर क्रोध हावी हो रहा था और उसके व्यापार को नष्ट होने की सीमा तक पहुंचा दिया था। क्रोध पर विजय पाने की कहानी इस प्रकार लिखी है—मैं अपनी इच्छा से अधिक ईश्वर के आदेशों को प्रीति करने लगा, उनका पालन करने लगा और अपने कार्यों को शान्ति और धैर्य से करने लगा। अपने से अधिक दूसरों की सहायता करने लगा और बुरे विचार, आलोचना, घृणा, स्वार्थ, बदले की भावना, घमण्ड, कठोरता को मैंने दूर कर दिया मैं शान्त रहने लगा और सबके साथ नम्र व्यवहार करने लगा। ईश्वर ने मेरी सहायता की। उसने मुझे क्रोध की भट्ठी से निकाल कर शान्ति के झरने के निकट ला बिठाया। वेद ने इसलिए कहा है—'शुशुलूकयातुम जहि' भेड़िए की चाल (क्रोध) छोड़ दे। अर्थ की हिंसा छोड़ दें।

—सुरेशचन्द्र वेदालंकार
एम० ए० एल० टी०, १७५ बाफरा बाजार, गोरखपुर

वेद सुधा

क्रोध को रोकने का तरीका है कि एक से दस तक गिनती गिनिए और अगर आ ही जाए तो एक से सौ तक गिनती गिनिए। क्रोध क्यों आ रहा है, इस विषय में तर्क कीजिए और उसे अपने मन से धक्के देकर निकाल दीजिए। जिस चोट की वजह से क्रोध आता है वह चोट उससे पैदा होने वाले क्रोध की बनिस्बत कम नुक्सान पहुंचाती है।

ओ३म्

आर्य मर्यादा

—सम्पादकीय—

सामूहिक धर्म परिवर्तन का राजनीतिक पहलू

वर्तमान समय में भारत मे विदेशी धन की सहायता से शिक्षा व सेवा की बाढ में यहां निर्धन जनता का लोभ, लालच व भय के बल पर सामूहिक धर्म परिवर्तन हो रहा है। इसका एक पहलू तो स्पष्ट ही है कि इससे भारत के धार्मिक वर्गों का सन्तुलन प्रभावित होगा, अर्थात् भारत का वर्तमान धार्मिक व सांस्कृतिक ढांचा प्रभावित होगा। परन्तु धर्म निरपेक्ष सरकार के लिए यह एक विशेष चिन्ता का विषय नहीं है। यह पहलू केवल धार्मिक वर्गों के नेताओं अथवा मठाधीशों का ही सिरदर्द है।

क्या वर्तमान सामूहिक धर्म परिवर्तन का कोई राजनीतिक पहलू भी है ? जो देश के राजनीतिक ढांचे को प्रभावित कर सके ? इस प्रश्न का संक्षेप मे उत्तर यही है कि जो व्यक्ति संसार के इतिहास से लेशमात्र भी परिचित हैं वह बड़ी सरलता से समझ सकते हैं कि ये सामूहिक धर्म परिवर्तन अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति का एक अंग है और राजनीतिक दृष्टि से एक विशेष राजनीतिक पूर्ति के लिए किए जा रहे हैं। इस सर्वविदित लक्ष्य को जो व्यक्ति नहीं समझता उसे राजनीति अथवा सरकार मे रहने का कोई अधिकार नहीं है।

धर्म वास्तव में मन-मस्तिस्क से सम्बन्धित व्यक्तियों का नाम है जो व्यक्ति का शारीरिक, मानसिक, आत्मिक व सामाजिक उन्नति कर उसे इस लोक और परलोक में सुख, शान्ति व परमानन्द प्राप्त कराता है। प्रत्येक व्यक्ति को अपना धर्म चुनाव करने का अधिकार है और होना चाहिए। जिस देश में व्यक्ति को अपना धर्म चुनने का अधिकार नहीं है वह देश सभ्य देशों की कोटि में न होकर जंगली देशों की कोटि में होते हैं। जैसे संसार के सम्पूर्ण मुस्लिम देशों और मुख्यत: अरब देशों में व्यक्ति को इस्लाम धर्म के अतिरिक्त अन्य धर्म स्वीकार करने का अधिकार नहीं, अन्य धर्मावलम्बियों को वहां दूसरे दर्जे का नागरिक माना जाता है।

संसार में जब तक वैदिक धर्म या इससे सम्बन्धित धर्म प्रभावी रहे, तब तक व्यक्ति को अपना धर्म चुनने की पूर्ण स्वतन्त्रता थी। अर्थात् विचार स्वातन्त्र्य था। परन्तु जब से संसार में सैमेटिक धर्मों अर्थात् ईसाई व इस्लाम धर्म का उदय हुआ तब से धर्म एक स्वतन्त्र वस्तु न रहकर राजनीति का एक प्रधान अंग बन गया, या यों कहिए कि इन धर्मों ने राजनीति अथवा शासन को अपने प्रचार का एक प्रमुख साधन बना लिया।

संसार का इतिहास इस बात का साक्षी है कि इस्लाम व ईसाई धर्मों ने संसार में किस प्रकार तलवार तथा लोभ-लालच के बल पर अपने धर्म का प्रचार किया इनकी तलवारों तथा छल-कपट से भरे उपायों से इतिहास के पन्ने खून से रंगे पड़े हैं और धर्म नाम की वस्तु को कलंकित कर दिया। इन्हीं धर्मों के काले कारनामों से संसार के महान् क्रान्तिकारी कार्लमार्क्स के हृदय में धर्म से घृणा हो गई और उसने धर्म को अफीम की संज्ञा देते हुए कहा—इसे खाकर समाज पागल हो जाता है।

आज भारत इन्हीं सैमिटिक धर्म अर्थात् ईसाई तथा इस्लाम धर्म के अनुयायियों द्वारा भारत में विदेशी धन के बल पर गरीब हिन्दुओं का सामूहिक धर्म परिवर्तन किया जा रहा है। इनको धन भेजने वाले अमरीका, अरब देश इन्हीं धर्मों के अनुयायी हैं। इन धर्म परिवर्तनों के पीछे राजनीतिक उद्देश्य न होना आश्चर्य की वस्तु ही हो सकती है। अपितु यह कहा जा सकता है कि इन धर्म परिवर्तनों के पीछे राजनीति ही है और राजनीति का न होना सर्वथा असम्भव है। यदि बात को देशभक्त जनता व सरकार न समझे तो इसे देश का दुर्भाग्य ही कहा जा सकता है। इसके अतिरिक्त मूर्ख व्यक्ति भी समझ सकता है कि अमरीका, अरब देश अपनी अपार धन राशि भारत में शिक्षा व सेवा के नाम पर भेज रहे हैं तो ऐसा कौन सा कारण है कि इन देशों के हृदयों में भारत के लिए अचानक इतना प्रेम उमड़ आया कि वे पानी की तरह यहां अपना धन बहा रहे हैं।

अमरीकी षड्यन्त्र से प्रभावित होकर अरब देशों से भी एक षड्यन्त्र की रचना सन् १९७३ में पान इस्लामिक लीग के रूप मे की, जिसका लक्ष्य मोरक्को से लगाकर इण्डोनेशिया के समस्त देशों को इस्लाम धर्म के झण्डे के नीचे लाना है उसी योजनानुसार इस्लामिक कल्चरल सैंटर लन्दन ने अपने डायरेक्टर श्री बदवई को भारत में गुप्त रूप मे सर्वे करने भेजा। उनकी रिपोर्ट कुवैत देश से प्रकाशित अरब टाइम्स समाचार पत्र मे प्रकाशित हुई जिसमे स्पष्ट रूप से कहा गया है कि सैन्टर के लिए भारत में अपनी योजनाओं की पूर्ति के निमित्त ऐसा सुनहरी मौका प्राप्त नहीं होगा। इस समय यदि प्रयत्न किया जाए तो भारत के समस्त हरिजनों में मुसलमान बनाकर यहां मुसलमानों की संख्या तुरन्त बीस करोड बनाई जा सकती है। इसी योजना के अन्तर्गत भारत में हरिजनों का सामूहिक धर्म परिवर्तन किया जा रहा है।

संयुक्त राष्ट्र संघ के एक जन-गणना विशेषज्ञ की रिपोर्ट के अनुसार सन् २००० में भारत की कुल संख्या साधारण गति से ९० करोड हो जाएगी जिसमें हिन्दुओं की संख्या ४० करोड और मुसलमानों की ३५ करोड और ईसाईयों की १५ करोड होगी। ये आंकड़े देते हुए उसकी दृष्टि मे हरिजनों का सामूहिक धर्म परिवर्तन नहीं था। क्योंकि उस समय यह प्रयास प्रारम्भ नहीं हुआ था। इसका अर्थ है कि २००० से पहले ही भारत में हिन्दू-जाति अल्पसंख्यक बन जाएगी।

भारत मे हिन्दू जाति के अल्पसंख्यक बनते ही यहां जनतन्त्र तथा धर्म-निरपेक्षता सदैव के लिए कूच कर जाएंगे और यहां का शासन ईरान, पाकिस्तान बंगलादेश, मलेशिया आदि मुस्लिम देशों की भान्ति होगा। मुसलमानों के अतिरिक्त अन्य सभी धर्मावलम्बी दूसरे दर्जे के नागरिक बन जाएंगे।

—ओम्प्रकाश त्यागी

गुरु विरजानन्द स्मारक सम्मेलन

एक वर्ष के बाद पुनः वह दिन आ रहा है जब हम दण्डी गुरु श्री स्वामी विरजानन्द जी महाराज के चरणों में अपनी श्रद्धांजलि भेंट कर सकेंगे। प्रत्येक वर्ष की भान्ति इस बार भी २६ और २७ सितम्बर को यह सम्मेलन करतारपुर में बड़ी धूमधाम से मनाया जा रहा है। आर्य समाज के सभी बड़े बड़े सम्मेलन एक बहुत बड़े यज्ञ के साथ शुरू होते हैं। गुरु विरजानन्द स्मारक सम्मेलन का शुभारम्भ भी एक यज्ञ के साथ कर दिया गया है। हमारे देश के उच्चकोटि के विद्वान् और पंडित श्री राजगुरु जी शर्मा ने २० सितम्बर से गुरु विरजानन्द स्मारक भवन करतारपुर में यज्ञ शुरू कर दिया है। इसकी पूर्णाहुति २७ सितम्बर को प्रातः डाली जाएगी। सम्मेलन २६ और २७ सितम्बर को हो रहा है उसमें अनेक बड़े-बड़े प्रख्यात सन्यासियों और पंडितों के व्याख्यान और उपदेश सुनने को मिलेंगे। महिला सम्मेलन, युवक सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन और श्रद्धांजलि सम्मेलन के अतिरिक्त गुरु विरजानन्द व संस्कृत पाठशाला के विद्यार्थी भी अपने भाषणों द्वारा अपनी योग्यता का प्रदर्शन करेंगे। यह पाठशाला जिसमें अब ६० विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं संस्कृत शिक्षा का एक बहुत बड़ा केन्द्र बनती जा रही है। अन्य राज्यों से भी अब विद्यार्थी यहां पढ़ने आते हैं। इसका एक परिणाम यह भी है कि इस विद्यालय की आर्थिक कठिनाईयां बढ़ती जा रही हैं। इसलिए भी यह आवश्यक है कि पंजाब के संस्कृत प्रेमी भाई और बहिनें अधिक से अधिक संख्या में २६ और २७ सितम्बर को करतारपुर पहुंचें। मैं पंजाब के आर्य समाजी भाईयों और बहिनों से विशेष रूप से यह प्रार्थना करना चाहता हूं कि उन्हें करतारपुर अवश्य पहुंचना चाहिए।

वैसे तो २६ और २७ सितम्बर को समस्त कार्यक्रम ही उच्चकोटि का होगा परन्तु श्री राजगुरु जी ने जो यज्ञ २० सितम्बर से शुरू किया है और जो २७ सितम्बर को समाप्त होगा इसमें अधिक से अधिक जनता को भाग लेना चाहिए। मैं विशेष रूप से करतारपुर के भाईयों और बहनों से कहूंगा कि उन्हें इस यज्ञ में आहुति डालकर अपने जीवन को सार्थक बनाना चाहिए।

—वीरेन्द्र

यात्रा वृत्त

—डा. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार विजिटर,

गुरुकुल कांगड़ी में मेरे आठ दिन

दिन—1

परन्तु अगर इस दिशा में हमारी सस्था संस्था के रूप में ऐसे छात्रों का चयन कर उन्हें इन परीक्षाओं के लिए तैयार करे तो बहुत अधिक सफलता मिल सकती है। मैंने गुरुकुल के कुलपति महोदय तथा यहां के आचार्यों तथा प्राचार्यों को परामर्श दिया है कि इस दिशा में संगठित रूप में प्रयत्न करें। प्रत्येक प्रोफेसर अपने छात्रों में से किसी एक छात्र को चुनकर उसके विकास के लिए प्रयत्न करें। अपना लक्ष्य यही बना लें, उस छात्र को भी इस लक्ष्य को प्राप्त करने में कृत संकल्प बना दें। इस में छात्र को तो अध्ययन में प्रयत्न करना ही होगा, प्रोफेसर को भी छात्र के समान ही प्रयत्न करना होगा। दिन-रात उनका ध्येय इस लक्ष्य की पूर्ति करना होना चाहिए। इस प्रकार अगर प्रति वर्ष गुरुकुल के दो छात्र, दो छात्र नहीं तो अगर एक छात्र भी इन प्रतियोगिताओं में सफल हो जाता है, तो गुरुकुल की शिक्षा की धाक सारे शिक्षा जगत में जम जाएगी और देश के कोने कोने से छात्रों की गुरुकुल में प्रवेश पाने की भीड़ लग जाएगी इस प्रयोग के विश्वविद्यालय स्तर पर सफल होते ही हमारे उस गुरुकुल को जिसे मैं मूल गुरुकुल कहता हूं, जिसमें बच्चे ७ वर्ष के लगभग लिए जाते हैं विशेष लाभ होगा। वह लाभ क्या होगा?

वह लाभ यह होगा कि गुरुकुल की इस नवीन दिशा में सफलता को देखकर वे लोग जो इसी सफलता को पाने के उद्देश्य से अपने बच्चो को उच्च स्तर के कहे जाने वाला शिक्षा सस्थाओं में भर्ती करने को उत्सुक रहते हैं वे हम मूल गुरुकुल में अपने बच्चो को भर्ती करने लगेंगे क्योंकि उच्च स्तरीय शिक्षणालयों में बच्चो की भर्ती करने का मुख्य उद्देश्य यही है कि वहा के छात्रों को उच्च पद प्राप्त करने की क्षमता हो जाती है—ऐसा समझा जाता है।

परन्तु मूल गुरुकुल जिसे मैं गुरुकुल की रीढ की हड्डी समझता हूं जिसमें बच्चे ७-८ वर्ष के लिए जाते हैं उसको सफल बनाने के लिए विश्वविद्यालय की शिक्षा की प्रतियोगियाओं में डाल देना ही काफी नहीं है। उसका प्रभाव तो विद्यालय विभाग के छात्रों की संख्या बढ़ाने में पड़ेगा ही, परन्तु फिर भी विद्यालय विभाग के छात्रों के जीवन स्तर को उच्च करना होगा। जीवन स्तर को उच्च करने का अभिप्राय यह है कि उनके कपड़े साफ सुथरे हों, खान-पान ढग का हो, टट्टी, पेशाब की आधुनिक ढग की व्यवस्था हो अध्यापक तथा अधिष्ठाता उच्चकोटि के हों, उनके खेलने, व्यायाम आदि की व्यवस्था इतनी उत्तम हो जितनी आज कल के किसी भी पब्लिक स्कूल की हो सकती है। हम स्वय ही नही देखने वाले भी कह सकें कि हमारे इस विद्यालय की व्यवस्था किसी पब्लिक स्कूल से कम नहीं है। उससे बेहतर ही है। हमारे अध्यापक ऐसे होने चाहिएं जो इन बच्चों में से योग्यता तथा प्रतिभा के आधार पर कुछ बच्चों को चुनकर शुरू से ही उन्हें सरकारी प्रतियोगिताओं के लिए तैयार करें, हमारा अन्तिम सफल लक्ष्य होना चाहिए कि अन्ततोगत्वा विश्वविद्यालय के सभी विभागों में उन छात्रों की सख्या अधिक हो जाए जो प्रारम्भ से ही गुरुकुल में ७-८ वर्ष की आयु में प्रविष्ट हुए हैं, और जो गुरुकुल के मूल सिद्धान्तों, ब्रह्मचर्य वैदिक विचार धारा तप, स्वाध्याय तथा तपस्या में अपना जीवन बिता चुके हों।

कहने को तो बहुत कुछ कहा जा सकता है परन्तु जो योजना मैंने यहां आकर गुरुकुल के अधिकारियों तथा छात्रों के सामने रखी है वह एक दो साल में ही अभीष्ट फल ला सकती है।

विद्यालय विभाग का संचालन करने वाला कोई ऐसा व्यक्ति नहीं है जो अपनी सारी शक्ति को इसे इतना ऊंचा ले जाने में व्यय कर दे जिससे इसकी ऐसी स्थिति हो जाए कि हम पब्लिक स्कूलों की तरफ झांकने के स्थान में पब्लिक स्कूलों के संचालकों को गुरुकुल विद्यालय को अपना आदर्श मनाने में विवश कर दें।

विद्यालय विभाग

मैं अपने पिछले लेख में लिख चुका हूं कि २६ अगस्त से मैंने ८-१० दिन गुरुकुल कांगड़ी में व्यतीत किए। विश्वविद्यालय विभाग के कार्यकर्ताओं से भी मिला। विद्यालय विभाग की कार्य प्रणाली से भी परिचय प्राप्त किया। मेरी विचार धारा यह है कि गुरुकुल की रीढ़ की हड्डी विद्यालय विभाग है और हमें उसे उन्नत करने के लिए हर सम्भव उपाय की खोज करनी चाहिए। इस विभाग के छात्र ७-८ वर्ष की आयु में लिये जाते रहे हैं, उन्हें छात्र न कहकर ब्रह्मचारी कहा जाता रहा है, उन्हें सन्ध्या, हवन कराया जाता है, वे छात्रावास में रहते हैं, उनके कोमल मन पर गुरुकुलीय विचारों के सस्कार डाले जा सकते हैं, उनका जीवन हम जिस दिशा में ढालना चाहें ढाल सकते हैं जो विश्वविद्यालय मे छात्र भर्ती होते हैं १७-१८ वर्ष के होते हैं, उन पर हमारी विचार धारा, हमारी सस्कृति हमारे लक्ष्यों की छाप डाल सकना उतना सरल नहीं है जितना ७-८ वर्ष के बालकों के जीवन पर डाल सकना सभव है। ऐसी स्थिति में हमे अपनी सम्पूर्ण शक्ति विद्यालय विभाग को समुन्नत करने के लिए लगाना ही उचित है। यह विभाग इतना विशाल हो जाना चाहिए कि हमारे विश्वविद्यालय में भर्ती होने वाले छात्रों का यही फीडर हो जाना चाहिए, पहले के युग में ऐसा ही था। यही कारण था कि उस समय के स्नातक जो अपने जीवन के प्रारम्भिक १० वर्ष गुरुकुल विद्यालय में व्यतीत कर चुके होते थे, वे महाविद्यालय में आकर गुरुकुलीयता के रंग में रंग जाते थे। इस स्थिति को लाने का एक ही उपाय है। वह उपाय यही है कि विद्यालय को हर स्तर उन्नत किया जाए जिससे हर माता-पिता को, गुरुकुल के स्नातकों को, सभा के अधिकारियों को अपने पुत्र गुरुकुल में प्रविष्ट करने की इच्छा ही नहीं, उत्सुकता उत्पन्न हो।

गुरुकुल के पास क्या नहीं है जो अच्छे किसी पब्लिक स्कूल के पास है यहां विशाल परिसर है, उत्तम भवन है, छात्रावास है, खेलने के लिए अनेक क्रीड़ा क्षेत्र है, स्विमिंग पूल की जगह चौड़े पाटी की लम्बी चौड़ी नहर है, खेलने-कूदने की सब सुविधाएं हैं। इतना सब कुछ होते हुए भी हमारे छात्रों का जीवन स्तर अनाथालयों के छात्रों के समान है। इसके दो कारण हैं एक तो यह कि हमने अध्यापकों का स्तर ही बहुत निम्न रखा हुआ है, दूसरा यह कि हम अब तक इसी सोच में हैं कि छात्रों के अभिभावकों से कम से कम व्यय लिया जाए। विद्यालय विभाग का सचालन करने वाला कोई ऐसा व्यक्ति

जिल्द नं.—2

नहीं है जो अपनी सारी शक्ति को इसे इतना ऊंचा ले जाने में व्यय कर दे जिससे इसकी ऐसी स्थिति हो जाए कि हम पब्लिक स्कूलों की तरफ झांकने के स्थान में पब्लिक स्कूलों के संचालकों को गुरुकुल विद्यालय को अपना आदर्श मनाने में विवश कर दें। इस दिशा में कार्य करने वाले होनहार स्वप्न द्रष्टाओं का कभी सग्रह था, अब ऐसे व्यक्तियों की खोज की जा सकतीहै। परन्तु आज की विकट आर्थिक स्थिति में उनके जीवन स्तर को भी उच्च बनाये रखना होगा। मेरी सम्मति में विद्यालय विभाग के लिए उच्चकोटि का शिक्षा प्राप्त कोई व्यक्ति ढूंढना पड़ेगा जिसे शिक्षा जगत का अनुभव हो, स्वप्न द्रष्टा हो, गुरुकुल विद्यालय को ऊंचे स्तर पर ले जाने के लिए कृतसकल्प हो और जिसकी आर्थिक समस्या को हम पूर्णतः हल कर सकें। इसके साथ उसे हमें ऐसे अध्यापक देने होंगे जो उच्चकोटि के शिक्षा विद हों। केवल बी० ए०, बी० टी० पास कर लेना पर्याप्त नहीं है। शिक्षाविद् होने की योग्यता के साथ आदर्शवादिता की पुट भी आवश्यक है।

(क्रमशः)

भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में आर्यसमाज की देन

किस्त—15

> **क्रान्तिकारियों तथा स्वतन्त्रता सेनानियों की यशोगाथा का वर्णन करते समय उनके आर्य समाजीपन को मन्मथनाथ गुप्त तथा कांग्रेसी, कम्युनिस्ट लेखक पक्षपात के कारण उजागर नहीं करते हैं। भगतसिंह को सिख या कम्युनिस्ट सिद्ध करने का प्रयत्न किया जाता है। जबकि यह बात तथ्यहीन है। मार्क्स-लेनिन की जीवनी का अध्ययन करना या सशस्त्र क्रान्ति का नाम लेने से आर्य समाजी का आर्य समाजीपन खण्डित नहीं हो जाता।**

मगलाल हींगरा ने मेवाड़ से श्यामजी के निष्कासन के जिम्मेदार रेजिडेन्ट सरविलियम कर्जन वायली को गोली का निशाना बनाया और स्वयं फांसी पर चढ़ गया। काकोरी केस के रामप्रसाद बिस्मिल, उनके शिष्य अशफाकुल्ला, डा.रोशनसिंह, गेंदालाल दीक्षित, राजेन्द्र लाहिड़ी चन्द्रशेखर आजाद, भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव, अमीरचन्द, अवध बिहारी, भाई परमानन्द के चचेरे भाई बालमुकन्द, की पत्नी रामकरनी देवी, होतीलाल वर्मा महात्मा हंसराज के पुत्र बलराज, हरिकृष्ण, रणवीर, विद्यार्थी खुशीराम, स्वामी श्रद्धानन्द के पुत्र हरिश्चन्द्र, यशपाल, हंसराज वायरलैस, पं. जगदीशचन्द्र शास्त्री, सूफी अम्बाप्रसाद, राजा महेंद्र प्रताप, रामरकरवामल (जिन्होंने यतीन्द्र नाथ दास से भी अधिक दिनों तक अंडमान में यज्ञोपवीत धारण करने के अधिकार की रक्षा के लिए अनशन कर प्राण होम दिए थे), कृष्णसिंह, केसरी सिंह, जोरावरसिंह, प्रताप सिंह बारहठ, विजयसिंह पथिक, रामनारायण चौधरी बारवा, ठा० गोपालसिंह, हिन्दू महासभा के रासबिहारी बोस, कवि लालचन्द फलक, कु० सुखलाल आर्यमुसाफिर, गोवा के मोहन रानाडे आदि सैंकड़ो ही क्रांतिकारी नेताओंने आर्य-समाजी क्रांति पाठ पढ़ कर फांसी, काला पानी अथवा जेल की कठिन यंत्रणा भोगी।

स्वतन्त्रता आन्दोलन में गांधीवादी अथवा क्रांतिवादी मचों से युक्रत महिलाओं की संख्या भी अगणित है। उनमें अग्रणी थी भाई बालमुकन्द की फासी के साथ ही प्राण त्यागने वाली उनकी पत्नी रामरक्खी देवी, रामभजदत्त चौधरी की पत्नी तथा टैगोर परिवार की सरलादेवी चौधरी, इतिहासकार एवं क्रांतिवीर जयचन्द विद्यालंकार की बहन पार्वती देवी, कांग्रेस आन्दोलन में कार्यरत महिलाएं थीं चन्द्रावती लखनपाल, रामकली देवी (प० शिवदयालु की पत्नी) प्रियंवदा देवी शकुंतला देवी गोपाल आदि।

कवियों तथा भजनोपदेशकों में से बसन्तसिंह वर्मा टोहाना के गीत उनकी इज्जत भी क्या खाक जिनको पगड़ी है विदेशी; से आर्य नगर कीर्तन में सम्मिलित लोगों ने अपनी पगड़ियां और टोपियां फेंक दीं। 'पगड़ी संभाल जट्टा' तथा 'तूभी बदल फलक कि जमाना बदल गया' के गायक लालचन्द फलक, कु० सुखलाल आर्य मुसाफिर, प्रकाशचन्द्र कविरत्न कु० जोरावरसिंह आदि ने भी स्वयं भाग ले कर जागरण का शंख फूंका।

आर्य समाज के सैंकड़ों पत्रों एव पत्रकारों ने इस महायज्ञ में अपनी आहुतियां दीं श्रद्धानन्द, महाशय कृष्ण, इन्द्र विद्यावाचस्पति, हरिश्चन्द्र, हरिशंकर, बनारसीदास, माता सेवक पाठक, मूलचन्द्र अग्रवाल, गणेश शंकर विद्यार्थी (स्वामी मगलानन्द पुरी), भगतसिंह, दीना नाथ सिद्ध, इन्द्रजी के विद्यालंकार शिष्य, कृष्ण चन्द रामगोपाल सत्यदेव, सत्यकाम, भीमसैन आदि स्वामी विद्यानन्द, राधामोहन गोकुलजी देशबन्धु गुप्त मुन्शी समर्थदास, इसी तरह बगला गुजराती, उर्दू आदि अन्य भाषाओं के आर्य पत्रों-पत्रकारों ने अपना मूल्यवान योगदान दिया। प्रताप-अर्जुन-विजय (जिसने अपने ३-४ मास के कार्यकाल में दिल्ली-पजाब राजस्थान मध्य भारत में राजनैतिक जागरण प्रारम्भ कर दिया) तेज, मिलाप आर्य गजट-आर्य मार्तण्ड, महारथी, सद्धर्म प्रचारक श्रद्धानन्द आदि पत्रो ने भी अपनी भूमिका निभाई

संन्यासियों में फौज को भड़काने वाले स्वामी स्वतन्त्रानन्द जलिया वाला बाग के अनुभवानन्द शांत, स्वामी आत्मा नन्द, श्रद्धानन्द, स्वामी गोपालदास (चरु निवासी) डा० नृसिंहदास आदि के नाम अग्रगण्य हैं। बिहार के स्वामी सहजानन्द ने किसानों का सर्वाधिक शक्तिशाली आन्दोलन चलाया। भवानीदयाल सन्यासी ने देश तथा विदेश में प्रवासी हितों पर विशेष ध्यान दिया। आर्य समाज के स्वतन्त्रता सेनानियों ने किसानों मजदूरों तथा पिछड़े वर्गों के लिए भी काम किया। सर छोटू राम, स्वामी सहजानन्द, विजय सिंह पथिक आदि ने किसानों में काम किया। विद्यार्थी, व्यापारी, वर्कर, कोई भी वर्ग पीछे न रहा।

आर्यसमाज भवन, मदिर-शिक्षण संस्थाए क्रांतिकारियो के लिए आश्रय स्थल थे। ला० हरदयाल सातवलेकर, गेंदालाल, राजेन्द्र लाहिड़ी तथा अन्य अनेक गुरुकुल कागड़ी ज्वालापुर आदि में रसोईये, नौकर, जिज्ञासु आदि के रूप में रहते छात्रों को स्वाधीनता का पाठ पढ़ाते थे। सुभाष, भगतसिंह, कार्नवालिस स्ट्रीट आर्य समाज कलकत्ता में रहे।

क्रान्तिकारियों तथा स्वतन्त्रता सेनानियो की यशोगाथा का वर्णन करते समय उनके आर्य समाजीपन को मन्मथनाथ गुप्त तथा कांग्रेसी कम्युनिस्ट लेखक पक्षपात के कारण उजागर नही करते हैं। भगतसिंह को सिख या कम्युनिस्ट सिद्ध करने का प्रयत्न किया जाता है जबकि यह बात तथ्यहीन है। मार्क्स-लेनिन की जीवनी का अध्ययन करना या सशस्त्र क्रान्ति का नाम लेने से आर्य समाज का आर्य समाजीपन खण्डित नही हो जाता। इस निबंध की परिमित परिधि में सबके लिए प्रमाण प्रस्तुत करना सभव नहीं है।

रियासती भारत का स्वतन्त्रता आन्दोलन

रियासतों मे दोहरी गुलामी भी थी और आत्मीयता परक मर्यादित स्वाधीनता भी। हैदराबाद तथा काश्मीर मे मुस्लिम साम्प्रदायिकता ने सन् १९०० ई० के बाद इन सम्बन्धों में कटुता उत्पन्न कर दी।

राजस्थान

ऋषि दयानन्द ने राजस्थान के क्षात्र धर्म को प्रवाहित का, चरित्र सुधार का, स्वाधीनता का तथा किसानों एव दलितों को हीनता भाव के परित्याग का पाठ पढ़ाया। फलतः जोधपुर में खादी वेश कर्मचारियों में अनिवार्य हो गया। हिन्दी को रियासतों में राजभाषा बना दिया गया। अछूतों के लिए पाठशालाए खुलीं, स्वाधीनता (अंग्रेजों के विरुद्ध) आन्दोलन में शाहपुर के बारहट परिवार के ऋषि शिष्य कृष्णसिंह तथा उनमें क्रान्तिकारी पुत्र केशरीसिंह, जोरावरसिंह (हार्डिंग पर बम फेंकने वाले) तथा प्रतापसिंह ने देश में क्रान्तिकारियो का साथ दिया। राजस्थान में श्याम जी कृष्ण वर्मा, दामोदरदास राठी, सत्यदेव एवं जयचन्द्र विद्यालंकार तथा होतीलाल वर्मा के पद-चिन्हों पर विजयसिंह पथिक, डा० गोपालसिंह, रामनारायण चौधरी तथा ज्वालाप्रसाद शर्मा ने क्रान्ति, किसान सगठन एव सशस्त्र प्रतिरोध का मार्ग अपनाया। चन्दकरण शारदा, नृसिंहदास, भरतपुर के गोकुल के गोकुलजी, युगलकिशोर चतुर्वेदी, ठा० देशराज, घासीराम चौधरी, डा० शान्ति स्वरूप डाटा, क्षेमानन्द राहत, मा० आदित्येन्द्र, चुरु के स्वामी गोपाल दास, खूबचन्द, सत्यनारायण सर्राफ आदि ने जन-जागृति की। दिल्ली के विजय तथा वीर अर्जुन पत्रों ने राजस्थान के राज्यों में जागरण को जन्म दिया। ऋषि के साक्षात सम्पर्क मे आकर 'सप सभा' नाम्नी सभा द्वारा अंग्रेजी के विरुद्ध मेवाड़ के दक्षिणी

मदनमोहन जावलिया

क्षेत्र बागड़, मध्य भारत, गुजरात के भील क्षेत्रों में सशस्त्र सघर्ष द्वारा १५०० सैनिकों की आहुति देने वाले गोविन्द, मोतीलाल तेजावत, आज के एम० पी० मामा वादेश्वर दयाल, आदि ने राजस्थान में रियासती दमन, अंग्रेज सत्ता एवं शोषकों के विरुद्ध जन-चेतना जाग्रत की। हीरालाल शास्त्री, जयनारायण व्यास आदि जन-नेताओं के निर्माण में ऋषि दयानन्द तथा आर्य समाज का भारी योगदान रहा।

हैदराबाद

भिन्न विश्वेश्वर अवतारी सीद्दीक दीनदार से प्रेरित सम्प्रदायान्ध मुसलमानों के प्रभाव से निजाम ने ८५ प्रतिशत हिन्दू जनता के नागरिक एव धार्मिक अधिकार छीने। आर्य समाज हिन्दू महा सभा, स्टेट कांग्रेस आदि के सहयोग से अभूतपूर्व सत्याग्रह छेड़ा। घनश्यामसिंह गुप्त महा० नारायण स्वामी जी, श्यामलाल, बंसीलाल, विनायकराव, नरेन्द्र आदि की नेतृत्व कुशलता से सत्याग्रह सफल हुआ। १९३९ ई० की जन-जागृति ने ही १९४७-४८ के कासिमरिजवी इत्तहादुलमुसलमीन तथा रजाकारों के राक्षसी पजो से हैदराबाद को मुक्ति दिलवाई।

(क्रमशः)

खानपुर में चतुर्वेद पारायण महायज्ञ

गोहाना, खानपुर गांव में वैद्य धर्मपाल जी २ अक्तूबर से २५ अक्तूबर तक चतुर्वेद पारायण महायज्ञ करवा रहे हैं। जिस पर पचास हजार रुपए खर्च होंगे। यज्ञ के ब्रह्मा महान विद्वान आचार्य विष्णु मित्र जी होंगे। प. धर्मभानु जी गुरुकुल भैंसवाल के ब्रह्मचारियों के साथ चारों वेदों के मन्त्रों का पाठ करेंगे आहुति हरियाणा के भूतपूर्व शिक्षा मन्त्री चौ. माड सिंह जी डालेंगे, तथा अन्तिम दिन आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी व सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी वानप्रस्थ सार्वजनिक सभा को सम्बोधित करेंगे। यज्ञ में सहस्रों स्त्रीपुरुष भाग लेंगे। अन्तिम दिन प्रीति भोज भी होगा।

इससे पहले वैद्य धर्मपाल जी ने एक लाख रुपए के दान से कन्या गुरुकुल खानपुर मे मुख्य द्वार और गुरुकुल भैंसवाल में छात्रावास का निर्माण करवाया है। खानपुर गोहाना से पांच मील है। हर समय रोडवेज की बसें और टैम्पू की सवारियां उपलब्ध हैं। श्री नत्था सिंह जी का यज्ञ के दिनों में रात्रि को प्रचार होगा।

आर्य केन्द्रीय सभा जालन्धर की मांग

सरकार भेदभाव खत्म करे

जालन्धर, गत दिन आर्य समाज ऋषि कुंज में केन्द्रीय आर्य सभा की बैठक सम्पन्न हुई जिस की अध्यक्षता प. सत्यदेव विद्यालंकार ने की। सभा में चौ, ऋषि पाल सिंह श्री सरदारी लाल, चौ, हरबंस लाल श्री अमृतलाल बजाज तथा अन्य नेता उपस्थित थे।

सभा में ला. जगत नारायण की हत्या पर खेद व्यक्त किया गया और शोक प्रस्ताव पारित हुआ। सभा में पंजाब सरकार से मांग की गई कि वह भेदभाव पूर्ण नीति खत्म करे। यह मांग भी की गई कि अपराधियों को गुरुद्वारा तथा दूसरे धर्म स्थानों से बाहर निकालने की व्यवस्था की जाए। धर्म स्थानों को पनाहगाहें न बनाया जाए।

यह भी मांग की गई कि सरकार सभी सदस्यों के धर्म-स्थानों का समान आदर करे।

किसी विशेष सम्प्रदाय को कृपाण के बहाने हथियार रखने और उन्हें लेकर चलने की अनुमति नहीं दी जाए।

कुछ लोग सरकारी और निजि प्लाटों पर निशान साहिब गाड़ कर उस पर कब्जा करने का प्रयास करते हैं उन्हें सख्ती से रोक दिया जाए। सभा में कहा गया कि सरकार ने भेदभाव पूर्ण नीति न छोड़ी तो इसके गम्भीर परिणाम निकल सकते हैं।

गोवंश का महत्व

भारत में ५-४ करोड़ बैल कृषि कार्य कर रहे हैं। एक जोडी बैल अनुमानत: ६.५ एकड भूमि जोत सकती है। पूर्ण कार्य के लिए २१ करोड ३० लाख बैल चाहिए। १.५० करोड़ बैल गाडियों मे ३ करोड मीट्रिक टन माल ढोने के लिए ३ करोड बैल कार्य करते हैं। देहात में ५० प्रतिशत सडकों पर अब भी ट्रक एवं बसें नही चल सकती। बहुत बडी संख्या में माल वितरण की आवश्यकता तथा ढुलाई ढहाई कार्य बैल ही करते हैं। शासको को चाहिए कि बैलगाड़ियों की उन्नति के लिए तकनीकी एव आर्थिक सहायता गोवंश पालकों को दें। खाद एव ईंधन की कमी पूर्ण करने के लिए बहुत बडी मात्रा में गोबर-मूत्र गोवंश ही देता है। जिससे गोबर गैस प्लांटों द्वारा इंजन चलाने, विद्युत कार्यों के साथ कृषि के लिए उपयोगी खाद मिलता है। अनेकों असाध्य रोगों की औषधियां गोबर-मूत्र से तैयार होती हैं। अतएव गोवंश कभी अयोग्य नहीं होता. उसे न समझने वाले ही अयोग्य हैं।

—

फाजिल्का में वेद सप्ताह

आर्य समाज फाजिल्का के तत्वावधान में दिनांक २४-८-८१ से ३०-८-८१ तक वेद कथा, सप्ताह का कार्यक्रम बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर सभा की ओर से पं० निरञ्जन देव जी इतिहास केसरी और पं० श्यामसिंह जी हितकर और श्रीराम तबला वादक आए हुए थे। प्रतिदिन प्रात: ७-३० बजे से ९-३० बजे तक हवन यज्ञोपदेश, रात्रि को ८-३० से १०-३० बजे प्रवचन और अन्तिम दिन दिनांक ३०-८-८१ को ऋषि लंगर का आयोजन किया गया। जिसमें सैंकड़ों लोगों ने लंगर खाया और रात्रि को आर्य नगर (ज्ञानक मुहल्ला में प्रचार कार्य हुआ। सभी स्थानों पर उपस्थिति काफी अच्छी थी। सभा को ३२३ रुपये वेद प्रचार हेतु दिये गये।

स्वतन्त्रता दिवस

लुधियाना—आर्य हायर सैकण्डरी स्कूल लुधियाना में प्रधान श्री रणवीर जी भाटिया की अध्यक्षता में स्वतन्त्रता दिवस समारोह बड़ी धूमधाम से मनाया गया।

—

मानव में मानवता आए

धर्म कर्म के पालन में यदि, नर नारी सब जुट जाए।
सदाचार जग में फैले औ, अनाचार सब मिट जायें॥
झूठ कपट चोरी जारी के, बुरे कर्म सारे त्यागें।
परोपकार के काम करें सब, क्लेश सारे कट जाएं॥
ईर्ष्या द्वेष वैर मिटा कर, प्रेम परस्पर अपनावें।
छोटे बड़े सब मिल कर बैठें, भाई मदद में मिट जाएं॥
पर सुख को अपना सुख समझें, पर दुख भी दुख अपना हो।
भक्ति से प्रभु की विमुख न हों, संकट जो आए हट जाएं॥
प्रतिज्ञा करें यह सभी युवक, दहेज प्रथा को तोड़ेंगे।
कन्यायें ना बलि होंगी, यदि, दहेज लेने से नट जाएं॥
वेदों को पढ कर अमल करें, शादां यह लक्ष हमारा हो।
मानव में मानवता आए. पाप धरा से मिट जावें॥

कवि०—श्री बनवारी लाल 'शादां' प्रधान आर्य समाज
माडल बस्ती नई दिल्ली—५

आवश्यकता

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए

१. एक अवकाश प्राप्त शिक्षा विशेषज्ञ शिक्षा सलाहकार जो सभा की शिक्षण संस्थाओं का निरीक्षण कर सकें।

२. सभा की सम्पत्ति की देखभाल और उसके सम्बन्ध में कानूनी कार्यवाही करने के लिए अवकाश प्राप्त पटवारी या तहसीलदार जो हिन्दी पंजाबी, अंग्रेजी व उर्दू जानता हो।

२. सभा भवन निर्माण के लिए अवकाश प्राप्त ओवर सीयर जो नई इमारत बनाने के काम को अच्छी तरह जानता हो।

४. सभा द्वारा सचालित बस्ती पठानां में आयुर्वेदिक औषधालय के लिए एक अनुभवी वैद्य जो वहां रहकर औषधालय चला सके।

उपरोक्त सभी असामियों को वेतन योग्यता व अनुभव के आधार पर दिया जाएगा। प्रत्याशी अधोहस्ताक्षरी को आवेदन करें या स्वयं मिलें।

—रामचन्द्र जावेद
आर्य प्रतिनिधि-सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन
चौक किशनपुरा जालन्धर।

शोक प्रस्ताव

आर्य समाज मेन बाजार पठानकोट के दो कर्मठ व लगनशील सदस्य श्री अमीचंद राय महाजन तथा श्री रामलाल अजमानी का देहान्त हो गया। श्री अमीचंद राय जी बहुत दानवीर पुरुष थे तथा श्री अजमानी आर्य समाज के दीवाने थे, इन दोनों के वियोग से आर्य समाज को काफी दु:ख है।

हम सभी पठानकोट के आर्यजन इन दिवंगत आत्माओं की शान्ति व सद्गति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। ईश्वर शोकसन्तप्त परिवारों को इस सदमें को सहन करने की शक्ति दें।

—मनोहरलाल शर्मा

प्रिंसिपल धनीराम आर्य का निधन

सोनीपत– आर्य समाज के युवक नेता प्रिंसिपल धर्मपाल आर्य का १३ अगस्त को निधन हो गया। आप की आयु ४४ वर्ष की थी।

आप आर्य समाज ख़ूबार सोनीपत के मन्त्री, वेद प्रचार मण्डल सोनीपत के मन्त्री आर्य कुमार परिषद् पंजाब के मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अंतरंग सदस्य गुरुकुल इन्द्रप्रस्थ के आचार्य डी०-ए० वी० स्कूल गोहाना तथा सोनीपत के संस्थापक तथा वहां प्रि० रह चुके हैं।

—वेद सिंह आर्य

असुर खदेड़ दो, नष्ट भी कर दो

ये रूपाणि प्रतिमु चमाना असुरा
सन्त स्वधया चरन्ति ।
पुरापुरो निपुरो ये भरन्ति,
अग्निष्टाल्लोकात्प्रणुदात्यस्मान ॥
यजु० २-३०

शब्दार्थ—(ये) जो (रूपाणि प्रतिम चमाना) अपने रूपों को छिपाकर) रोचक रूपों को दिखाते हुए (असुरा सन्त) असुर, राक्षस होते हुए या (स्वधया) अन्न से, रस से, स्थूल पार्थिव शक्ति से (युक्त होकर इस मन्त्र में) (चरन्ति) विचरते हैं और (ये) जो (परापुर.) धर्म से दूर हटकर अपने आपको पूरते है (निपुर) नीचे गिरकर निकृष्ट उपायों से भी अपने को पूरते हैं, (भरन्ति) इस प्रकार अपने को भरत हैं वा दूसरो को भरते हैं (तान्) उन (छिपे असुरों को) (अग्नि) तेजोमय सतापक अग्नि (अस्मात् लोकात्) इस लोक से (प्रणुदाति) दूर कर देवे, हटा देवे ।

देखिए जरा गम्भीरता पूर्वक—नि सन्देह ईसाई, मुस्लिम आदि उपरोक्त वेद मन्त्र के भाव ने युक्त है, अर्थात् ये स्वार्थी लोग सदा अपने ही पेट भरने में लगे हुए हैं। ये परापुर और 'निपुर' है, धर्म से बहुत दूर होकर बिल्कुल विमुख होकर भी अपने आपको मारते हैं। अधर्म अन्याय द्वारा दूसरों को हरते हुए और अपने स्वार्थों को पूरा करते हुए, किन्तु ऊपर से अपने आपको धार्मिक सच्चे दिखलाते हुए ये असुर इस भारत मे अन सुख चैन पाते हुए विचरते हैं, अनेक प्रान्तो मे क्या क्या कर रहे हैं देख नही रहे क्या सेवक जैसे दुष्मदर्शी जन !

इन प्रच्छन्न असुरों का जाकि ज्ञात असुरो की अपेक्षा बहुत भयकर हैं, इस पवित्र भूमि से तत्काल ही खदेड़ दो यथा स्थिति नष्ट भी कर दो ! यह पवित्र भारत, पवित्रो, देवो, श्रेष्ठों के लिये ही है। असुर भावो असुर लोगो आसुरी शक्तियो के लिए कहा कि कदापि नहीं है । जागो ! साथो भय ! अन्यथा जान लो अपना भारत अपना नही रहेगा। जीवन ही फिर अपना न रहेगा।

हे भारत शासका ! वर्तमान का कार्य-क्रम सब बेकार।

किया न जो उक्त असुरो को फरार।
जागो राष्ट्रपति-प्रति प्रधानमन्त्री!
सावधान सावधान !!

फिर न कहना हुआ न हुमे यह भी सत्य ज्ञान !

—सज्जन कुमार
कुलथम (जालन्धर)

—

सत्यार्थ प्रकाश ग्रन्थ माला

सत्यार्थ प्रकाश के १४वें सम्मुल्लास तथा स्वमन्तव्यामन्तव्य पर १५ भागो मे आचार्य दत्तात्रेय वाब्ले द्वारा सम्पादित एव जाने माने आर्य विद्वानों द्वारा विशेष रूप से लिखी गई यह ग्रन्थ माला सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी के अवसर पर प्रचारार्थ उपलब्ध है।

सरल भाषा तथा आकर्षक रंगीन आवरणो स प्रकाशित प्रत्येक भाग का मूल्य लागत मात्र ५० से ७५ पैसे रखा गया है, एक सौ या अधिक प्रतियो पर पच्चीस प्रतिशत की छूट पूरा सैट केवल छ रुपये मे। डाक व्यय अलग। अपने आर्डर शीघ्र बुक कराए ।

प्राप्ति स्थान—आर्य समाज अजमेर ।

—मन्त्री

धार्मिक हिन्दी परीक्षाएं

भारतवर्षीय आर्य विद्या परिषद् की धर्म परीक्षाए विद्या विनोद विद्या रत्न, विद्या विशारद, विद्या वाचस्पति गत २५ वर्षों से समस्त भारत में, छात्रों से धर्म ज्ञान हेतु चल रही हैं जिनमे सुन्दर सुनहरी उपाधि पत्र मिलता है। परीक्षाए आगामी जनवरी मे होगी परीक्षा शुल्क भी कम है। केन्द्र स्थापनार्थ आवेदन पत्र एव नियमावली निम्नस्थ पते से नि शुल्क मगाए ।

—डा० सूर्यदेव शर्मा एम० ए० शास्त्री, परीक्षा मन्त्री, आर्य विद्याप्ररिषद्

चाद बावडी रोड, अजमेर

आवश्यकता है

दो विदुषी सुशिक्षित आर्य कन्याओं के लिए दो सुयोग्य आर्य वरो की—एक कन्या आयु २७ वर्ष ४ मास, कद ५ फुट ९ इच रग गन्दमी एम० ए० बी० एड०, चश्मा लगाती है।

दूसरी कन्या आयु २५ वर्ष ९ मास कद ५ फुट ५ इच, गौर वर्ण द्वितीय श्रेणी एम० ए० पास, गृह कार्य मे दक्ष। दोनों कन्याओ के लिए सुयोग्य सुशिक्षित बारोजगार वरो की आवश्यकता है। जाति बधन नही। दहेज के लोभी पत्र व्यवहार न करें। निम्न पते पर पूरी जानकारी के लिए पत्र व्यवहार करें।

—रणजीतसिंह एम. ए
२ ७८० रामनगर, सहारनपुर (उ० प्र०)

अति आवश्यक सूचना

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब से सम्बन्धित आर्य समाजो के अधिकारी महानुभावों की सेवा में

श्रीमान जी सादर नमस्ते !

हम आपका ध्यान उस प्रस्ताव की ओर दिलाना चाहते है जो आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब ने अपने साधारण अधिवेशन दिनाक २६ जुलाई १९८० को नवाशहर मे पारित किया था। वह प्रस्ताव इस प्रकार है —

सर्वसम्मति से निश्चय हुआ कि सभा की आय को बढाने का सभी को विशेष रूप से प्रयत्न करना चाहिए। तथा प्रत्येक आर्य समाज अपनी वर्ष भर की सारी आय का चाहे वह किराया की हो दान की हो अथवा सभासदो स प्राप्त हुए शुल्क की हो, उसका कम से कम दसवा भाग अवश्य सभा को दिया करे ।

हमे यह कहने में कोई सकोच नही कि बहुत कम आर्य समाजो ने इस प्रस्ताव की ओर ध्यान दिया हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि प्राय समाजें आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब की आर्थिक स्थिति को ठीक करने के लिए अपना कोई उत्तरदायित्व नही समझती। यह ऐसी स्थिति है जो हमारे विचार मे अत्यन्त हानिकारक है और इसका परिणाम भी बहुत ही निराशाजनक निकल सकता है। इसलिए आपका ध्यान इस ओर दिलाने के लिए ही यह पत्र आपको लिखा जा रहा है। हम चाहते हैं कि एक मास के अन्दर सब समाजें जो आर्य प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित हैं निम्नलिखित प्रश्नो का उत्तर लिखकर सभा को भेज दे ताकि हमे भी पता चल सके कि किस आर्य समाज की अपनी आर्थिक स्थिति क्या है। हम निम्नलिखित जानकारी चाहते है —

१ आपकी आर्य समाज के कुल सदस्य कितने हैं ?

२ उनसे चन्दा के रूप मे आपकी वार्षिक आय क्या हैं ?

३ आपकी आर्य समाज की अचल सम्पत्ति क्या है ? और उसकी मासिक आय कितनी है ?

४ इसके अतिरिक्त आपकी आय का कोई और साधन भी है या नही। यदि है तो क्या और उससे कितनी आय आपको प्राप्त होती है ?

५ दान के रूप मे साल भर मे आपकी समाज कितना धन प्राप्त करती है ?

इन सबके आधार पर आपकी आर्य समाज की वार्षिक आय कितनी बनती है ? कृपया यह सूचना हमे एक मास के अन्दर अन्दर अवश्य देने का कष्ट करें जो समाजें सूचना नही देंगी उनके विषय मे अन्तरग सभा को सोचना पड़ेगा। आशा है आप इस ओर विशेष ध्यान देगे और सभा को अपनी आर्थिक स्थिति सुधारने मे अपना पूरा सहयोग देंगे। यह आपको अपनी सभा है, इसलिए इसकी सहायता करना भी आपका ही कर्तव्य है।

वीरेन्द्र	रामचन्द्र जावेद	डा के के पसरीचा
सभा प्रधान	सभा मन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्यसमाज मोगा मे वेद प्रचार सप्ताह

आर्य समाज मोगा में वेद प्रचार समारोह सोमवार १७ से ३१ अगस्त तक बड़े उत्साह से मनाया गया, यज्ञ की पूर्णाहुति के बाद श्री कृष्ण जन्माष्टमी का समारोह किया गया जिसमें श्री कृष्ण कुमार जी और श्री विजय कुमार जी शास्त्री जी ने अपने प्रभावशाली प्रवचन दिए। आर्य पुत्री पाठशाला तथा आर्य माडल स्कूल की प्रिंसिपल तथा स्त्री आर्य समाज की बहिनों ने भजन गाए, स्कूल की छोटी २ बच्चियां भी प्रातः एवं सायं इसमे शामिल हुईं।

पं० विजय कुमार शास्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के योग्य महा-उपदेशक और स्त्री आर्य समाज के सत्संग में प्रवचन दिया।

—

आर्य जगत के समाचार

मोगा

२६-७-८१ रविवार को सार्वदेशिक सभा आदेश अनुसार आर्य समाज मोगा में धर्मरक्षा महा अभियान के अन्तर्गत हरिजन भाईयों का एक सम्मेलन हुआ। हरिजन भाईयों ने यज्ञ किया और यज्ञोपवीत धारण किया है।

अपने व्याख्यानों मे हरिजन भाईयों ने इस बात को दोहराया कि वे हिन्दू समाज के अंग है। विदेशियों की धर्म परिवर्तन चालों का डटकर मुकाबला करेंगे, हरिजन भाईयों ने सबको यज्ञ शेष दिया।

—

गिदड़बाहा में स्त्री समाज स्थापित



...जी के आह्वान पर ... आर्य तथा डा० ... प्रयास से दिनांक २९-८-८१ ... सायं चार बजे श्रीमती कमला गुप्त तथा श्रीमती डा० उषा गर्ग के नेतृत्व में आर्य पुत्री पाठशाला में आर्य समाज की स्थापना की गई।

हवन यज्ञ के पश्चात् श्रीमती सरस्वती मदान तथा श्रीमती निर्मला गोयल ने मधुर भजन रखे। अन्त में अबोहर के ओजस्वी कार्यकर्त्ता श्री अशोक आर्य (जो कि आज कल डी० ए० वी० कालेज गिदड़बाहा में ही कार्यरत हैं, ने स्त्री समाज की स्थापना के अवसर पर उपस्थित महिलाओं के समक्ष उन्हें बधाई देते हुए हवन-यज्ञ के तीन अंगों (अग्नि-होत्र, ...) का महत्व समझाया तथा भविष्य में रविवार को सायं चार बजे अधिकाधिक संख्या में आर्य पुत्री पाठशाला में आकर आर्य स्त्री समाज के सत्संग में नियमित सम्मिलित होने का आह्वान किया।

—

बीकानेर—नगर आर्य समाज का वार्षिकोत्सव ४ से ६ अक्तूबर में समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। इस उत्सव में हिन्दू समाज के अभिन्न अंग हरिजन, जन-जाति, अनुसूचित जाति व अन्य अप-वंचित लोगों को लोभ-लालच, बहका-फुसलाकर संगठित सुव्यवस्थित रूप से ईसाई या मुसलमान बनाने के धार्मिक व राजनैतिक षड्यन्त्र की फैलती आग और उसके दूरगामी परिणामों को दृष्टिगत रखते हुए रोकथाम के प्रभावी उपाय अपनाने पर विशेष बल दिया जाएगा।

—



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।


सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी एवं ऋषि निर्वाण विशेषांक

भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का साप्ताहिक मुख पत्र

※ आर्य मर्यादा ※

का

सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी एवं ऋषि निर्वाण विशेषांक

वार्षिक शुल्क 15 रुपए (इस अंक का मूल्य 1 रुपया)

वर्ष 14 अंक-30-31, 14 कार्तिक सम्वत् 2038 दयानन्दाब्द 156,
तदनुसार 25 अक्तूबर तथा 1 नवम्बर 1981 का संयुक्तांक

प्रधान सम्पादक—श्री वीरेन्द्र

प्रि. रामचन्द्र जावेद

—सम्पादकीय—

महर्षिदयानंद की जय

18 अक्तूबर को दिल्ली में विराट हिन्दू सम्मेलन हुआ है। इसमें 2 लाख हिन्दू न हुये। 5 लाख हुए या 10 लाख यह एक ास्पद प्रश्न है लेकिन यह एक निर्विवाद वास्त- है कि हिन्दुओ का इतना बडा सम्मेलन इससे ी नही हुआ कुंभ के समय हरिद्वार मे और ृण के समय कुरुक्षेत्र मे हिन्दू लाखो की सख्या हो जाते हैं लेकिन इनके सामने समय-समय समस्याए आती रहती हैं उन पर विचार के लिए और उनका समाधान तलाश करने के इतने हिन्दू इससे पूर्व एक जगह पर इक्ट्ठे नही मीनाक्षीपुरम् और अन्य स्थानो पर हिन्दू हरि- का जो इस्लामीकरण किया गया है उसने सारे समाज को झझोड कर रख दिया है। इस नए ान का मुकाबला कैसे किया जाए, इस पर विचार के लिए यह विराट सम्मेलन किया गया है और यह मानना पड़ेगा कि यह एक सफल सम्मेलन । इसके माध्यम से हिन्दुओं का ध्यान उन कमियो ओर दिलाया गया है जिनकी वजह से वह कमजोर रहा है। विशेष रूपसे छूआछूतकी बीमारी जो हिंदू अन्दर ही अन्दर घुन की तरह खाए जा रही ।

मैंने इस विराट सम्मेलन की सारी कार्रवाई ी तो मेरे मुह मे अनायास निकला "महर्षि ानन्द की जय।" जो कुछ हिन्दू समाज के बडे- ड़े धार्मिक नेता आज कह रहे हैं महर्षि दयानन्द रस्वती ने एक सौ वर्ष पहले कह दिया था। ताब्दियो के बाद इस देश मे दयानन्द के नाम से क योगी पैदा हुआ था जिसने हिन्दुओ को चेतावनी ते हुए कहा था कि यदि छूआछूत की बीमारी दूर की गयी तो यह हिन्दू समाज को ले डूबेगी। इस श ने उस योगी की भविष्यवाणी को न सुना था ल्कि जो कुछ उन्होने कहा था उसके कारण उन पर त्थर फैंके गए थे। कहा गया कि यह व्यक्ति हिन्दू र्म की पवित्रता को खत्म कर रहा है। बड़े-बड़े शंकराचार्य और बड़े-बड़े मठधारी लठ लेकर दयानन्द के पीछे पड गए थे। इनकी जुबान बन्द करने की कोशिश की गयी और अकबर इलाहाबादी के शब्दों मे कई कट्टर पथी उन दिनो कहते थे और बाद मे भी कहते रहे :—

'अकबर नाम लेता है खुदा का इस जमाना मे'

लेकिन दयानन्दजी ने न थप्पडो की परवाह की न लाठियों की और न उन गालियो की जो उनकी जिंदगी में उन्हे दी गयी। वह पूर्ण निडरता से अपनी राह पर चलते गए और कहते रहे कि छुआछूत खत्म होनी चाहिए, परम पिता परमात्मा सब को एक जैसा पैदा करते हैं और वह सब को एक नजर से देखते हैं। इसलिए जन्म के आधार पर किसी के साथ भेदभाव करना सब मे बडा पाप है। कोई व्यक्ति अच्छा है या बुरा इस का फैसला उसके कर्म के आधार पर होना चाहिए। महर्षिदयानन्द के अनु- सार एक ब्राह्मण के घर पैदा हुआ एक व्यक्ति शूद्र बन सकता है यदि इसके कर्म अच्छे हैं। भावार्थ यह कि महर्षि दयानन्द के अनुसार कौन अच्छा है या कौन बुरा, कौन ब्राह्मण है और कौन शूद्र इसका निर्णय जन्म के आधार पर नही बल्कि कर्म के आधार पर होना चाहिए।

अपने देशवासियो को यह सदेश देकर महर्षि दयानन्द इस ससार से चले गए लेकिन जाने से पहले आर्यसमाज कायम कर गए और इस के जिम्मा काम लगा गए कि वह उस समय देश मे जन्म पर आधारित छुआछूत को खत्म करने का बीडा उठाए। आर्यसमाज ने प्रथम चरणमे यह काम बहुत जोर-शोर से किया, लेकिन कुछ देर के बाद यह ढीला पड गया। और ऐसे हालात पैदा हो गए कि आर्य समाज के बारे भी कहा जाने लगा :—

"जमाना बडे शौक से सुन रहा था
हमीं सो गए दास्ता कहते-कहते।"

जहां आर्य समाज ने इस आंदोलन को छोडा था। महात्मा गाधी ने उसे वहीं से शुरू किया। जिन्हे

पहले महर्षि दयानन्द ने और बाद में आर्य समाज ने दलित का नाम दिया था गांधी जी ने उन्हें हरिजन का नाम दे दिया। आर्य समाज दलित उद्धार कर रहा था। महात्मा गाधी ने हरिजन उद्धार शुरू कर दिया। आर्य समाज के दलित उद्धार आंदोलन मे दोनो तरह के पिछड़े हुए लोग शामिल थे, धार्मिक रूप में पिछड़े हुए भी और आर्थिक रूप मे पिछड़े हुए भी। गांधी जी ने अपने हरिजन आंदोलन को एक राजनीतिक रंगत दे दी और इसके साथ गाधी जी और डाक्टर अम्बेदकर के बीच एक नया सघर्ष शुरू हो गया। हमारे दलित भाई हरिजन रूप मे एक अलग वर्ग बन गए। इन्हें जो नए राजनीतिक अधिकार मिल गए थे उनके कारण वह अपने-आपको हिन्दुओ से अलग समझने लगे। इनमें बहुत बडी सख्या उन लोगोंनेकी थी जो आर्थिक रूप में पिछड़े हुए थे। उनकी निर्धनता से नाजायज फायदा उठाने के लिए ईसाइयो और मुसलमानों ने इनका ईमान खरीदना शुरू कर दिया। करोड़ों रुपया अमेरिका, ब्रितानिया और कैनेडा व जर्मनी से ईसाइयत के प्रचार के लिए और अरब देशो से इस्लाम के प्रचार के लिए आने लगी। एक इस्लामी देश कुवैत एक समाचारपत्र ने यह रहस्योद्घाटन किया है कि एक ऐसी योजना बनाई गई है कि भारत में इतने हरिजन मुसलमान बना दिए जाए कि आगामी बीस वर्षों में भारत में हिन्दू जो आज बहुमत मे हैं अल्पसंख्या मे हो जाए। इसका पहला नमूना तमिलनाडू के एक कस्बा मीनाक्षीपुरम् मे पेश किया गया। जब इस कस्बा के तीन हजार हरिजनो को मुसलमान बना दिया गया। यह खतरा की घंटी थी लेकिन इसे पुन: सुनने वाली आर्य समाज ही थी। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा का एक प्रतिनिधिमण्डल मीनाक्षीपुरम् पहुचा, उसने वहां सारी परिस्थिति का जायजा लिया और एक तरफ भारत सरकार को झझोडा कि वह देखें कि विदेशों से आया रुपया कितनी तबाही मचा रहा है, दूसरी तरफ अपने देशवासियो को चेतावनी दी कि यदि वह सोये रहे तो न उनका धर्म रहेगा और न उनकी संस्कृति। इसके साथ 26 जुलाई को सारे देश में आर्यसमाज की ओर से धर्मरक्षा महाभियान शुरू किया गया। और देशवासियो का ध्यान छुआछूत की इस लानत की ओर दिलाया गया जिसकी ओर एक सौ वर्ष पूर्व महर्षि ने हमारा ध्यान दिलाया था।

जो धर्म रक्षा महाभियान आर्यसमाज ने 26 जुलाई को शुरू किया था अब उसका दूसरा रूप विराट हिन्दू सम्मेलन के रूप मे 18 अक्तूबर को दिल्ली में देखने को मिला है। इस सम्मेलन में हिन्दू समाज के बड़े-बड़े धार्मिक नेता शामिल हुए और सबने एक आवाज मे कहा कि छुआछूत की यह लानत खत्म होनी चाहिए, यदि यह खत्म न हुई तो हिन्दू समाज खत्म हो जाएगा अर्थात् जो कुछ एक सौ वर्ष पहले महर्षि दयानन्द ने कहा था आज वह सारा देश कह रहा है, उस समय महर्षि के कुछ देशवासियो ने उन पर पत्थर फैंके, आज उनके ही देशवासी उनकी स्मृति मे उन पर फूल चढा रहे हैं। किसी युग मे शंकराचार्य दिग्विजय के लिए निकले थे 18 अक्तूबर को दिल्ली का विराट सम्मेलन महर्षि दयानन्द की दिग्विजय थी। काश! वह लोग जिन्हे आज हरिजनो की चिन्ता हो रही है उन्होने इससे पहले दयानन्दजी की आवाज सुनी होती। लेकिन सुबह का भूला शाम को घर आ जाए तो उसे भूला नही कहते। अब भी यदि हिन्दू समाज यह समझ ले कि छुआछूत की यह लानत खत्म किए बगैर उनका कल्याण नही तो हिन्दू समाज की सोई हुई किस्मत फिर जाग पडेगी। एक सौ वर्ष पहले योगी दयानन्द ने जो भविष्यवाणी की थी और जो रास्ता हमे दिखाया था, एक सौ वर्ष के बाद वह शतप्रतिशत सही सिद्ध हो रहा है। उन्होने कहा था कि जीवित रहना चाहते हो तो छुआछूत को दफना दो, आज भी इनका सन्देश यह ही कह रहा है कि हिन्दुओ ! यदि जिन्दा रहना चाहते हो तो छुआछूत को खत्म कर दो।

—वीरेन्द्र

श्री वीरेन्द्र द्वारा प्रधानमन्त्री को ज्ञापन

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गान्धी को प्रदेश की वर्तमान परिस्थितियों के सन्दर्भ में १६ अक्तूबर को नई दिल्ली में एक ज्ञापन प्रस्तुत किया। प्रधानमन्त्री महोदया ने सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र को पंजाब के हिन्दुओं के प्रतिनिधिमण्डल से नेता के रूप में वार्ता के लिए आमन्त्रित किया था। इस वार्ता के दौरान श्री वीरेन्द्र जी ने प्रधानमन्त्री को पंजाब के हिन्दुओं की वस्तुस्थिति से अवगत करा कर उनकी समस्याओं के समाधान पर बल दिया। श्री वीरेन्द्र जी द्वारा प्रधानमन्त्री को प्रस्तुत किए गए ज्ञापन की अविकल प्रति यहां प्रस्तुत है। —सम्पादक

आदरणीया प्रधानमन्त्री जी,

पंजाब के वर्तमान संकट में जो समस्यायें पैदा हो रही हैं, उन पर विचार करने के लिए आपने पंजाब के हिन्दुओं के कुछ प्रतिनिधियों को बातचीत के लिए बुला कर उन्हें अपने विचार आपके सामने रखने का जो अवसर दिया है, उसके लिए मैं आपका आभारी हूं। परन्तु मेरी यह निश्चित धारणा है कि यह पर्याप्त नहीं है। पंजाब की सारी स्थिति को ठीक प्रकार से समझने के लिए यह भी आवश्यक है कि पंजाब के उन सब समुदायों के प्रतिनिधियों को बुला कर उनकी बात सुनें। जो अकालियों की साम्प्रदायिक नीति से बहुत दुखी हैं। और जो चाहते है कि पंजाब में एक ऐसा स्वस्थ वातावरण पैदा किया जाए कि साम्प्रदायिकता हमेशा के लिए समाप्त हो जाए। इसलिए मेरा यह आपसे निवेदन है कि आप पंजाब के हरिजनों विशेषकर बाल्मीकि, रविदासी, मेघ, मजहबी सिक्ख और दूसरे हरिजनो के प्रतिनिधियों को बुला कर उनसे भी पूछें कि वे क्या चाहते हैं। इन के अतिरिक्त नामधारियो, निरंकारियों और दूसरे गैर अकाली सिक्खों की बात भी सुनें। और फिर किसी अन्तिम निर्णय पर पहुचे। जहां तक अकालियो का सम्बन्ध है, वे तो पिछले ३५ वर्षों से एक निश्चित कार्यक्रम के अनुसार चल रहे हैं। और आप उन्हें समझाने का चाहे कितना प्रयास करें वे उसी रास्ता पर चलते रहेंगे।

पंजाब की समस्याओं के विषय में मेरा यह आर्यसमाज का जो दृष्टिकोण है वह आपके सामने स्पष्ट रूप मे रख देना चाहता हूं, ताकि सारी स्थिति का आपको पता चल जाए और उसके आधार पर आप उन समस्याओं का कोई समाधान निकाल सकें। इसलिए पंजाब की आर्य जनता का यह निश्चित मत है कि :—

१. अकालियों के साथ किसी भी अन्तिम निर्णय पर पहुंचने से पहले उन से यह आश्वासन लेना भी आवश्यक है कि इसके पश्चात् वे फिर कोई नया आन्दोलन प्रारम्भ नहीं करेंगे। पिछले ३५ वर्षों में वे समय-समय पर कई आन्दोलन करते रहे हैं और अब उन्होंने धर्मयुद्ध प्रारम्भ करने की घोषणा रखी है। प्रत्येक आन्दोलन के साथ वे सरकार से कुछ न कुछ ले लेते हैं। इस प्रकार उनकी शक्ति बढ़ती है और वे सिक्ख जनता में यह भावना पैदा करने का प्रयास करते हैं कि सरकार उनके आगे झुक गई है। १९४९ में उन्होंने सच्चर फार्मूला बनवा लिया था। १९५६ में पंजाबी सूबा का आन्दोलन प्रारम्भ करके रीजनल फार्मूला बनवा लिया था। १९६६ में वे पंजाबी सूबा लेने में सफल हो गए थे : समझा यह गया था कि इसके बाद उनकी और कोई मांग नहीं है। परन्तु समय समय पर वे अपनी नई नई मांगें पेश करते रहते हैं। उसका परिणाम यह है कि पंजाब का वातावरण प्राय: विषाक्त रहता है और इस प्रदेश में कभी भी चैन नहीं पड़ता। जो कुछ पिछले एक डेढ महीने मे पंजाब मे हुआ है, उसकी अवहेलना नहीं की जा सकती। इसलिए यह आवश्यक है कि यदि आपने अकालियों की कोई और बात माननी है, तो यह यह उसी आधार पर होनी चाहिए कि इसके पश्चात् वे फिर कोई नया आन्दोलन प्रारम्भ नहीं करेंगे।

२. उनसे यह मांग भी की जाए कि वे किसी भी धार्मिक या राजनैतिक अधिकार की प्राप्ति के लिए की गई हिंसा का किसी भी रूप में समर्थन नहीं करेंगे।

३. वे खालिस्तान और इस प्रकार के हर उस आन्दोलन का विरोध करें, जो देश की एकता और अखण्डता को नष्ट करना चाहता हो।

४, वे पंजाब के हिन्दुओं को समय समय पर धमकियां देने या उन्हें किसी प्रकार का नीचा दिखाने की मनोवृत्ति को सदा के लिए छोड़ दें और हिन्दुओं को अपने बराबर का नागरिक समझें।

५. अकालियों के साथ मिलकर कांग्रेस को उस समय तक कोई मन्त्रिमण्डल नही बनाना चाहिए, जब तक कि अकाली अपनी साम्प्रदायिक और सकुचित नीतियों को नही छोड़ते।

६. अकालियों की किसी भी ऐसी माग को स्वीकार न किया जाए, जिसके द्वारा केन्द्रीय सत्ता किसी प्रकार भी शिथिल या निर्बल हो। भारत का बचाव इसमें ही है कि केन्द्रीय सरकार शक्तिशाली हो।

७. अकालियों की किसी ऐसी मांग को भी स्वीकार न किया जाये जिसके कारण पंजाब के हिन्दू और हरिजन अपने आपको एक संकट में समझें और उनके हितों को आघात पहुचे।

८. पजाब सरकार की सरकारी सेवाओ में विशेषकर पुलिस में इस समय जो सन्तुलन बिगड़ गया है, उसे शीघ् से शीघ् ठीक किया जाये पजाब के अल्पसख्यकों को उनके वे अधिकार दिए जायें, जो विधान के अनुसार उन्हें मिलने चाहिए।

९. वे सब अकाली जो अपने आपको एक पृथक राष्ट्र कहते हैं उन्हें किसी भी चुनाव में खड़े होने और वोट लेने या देने के अधिकार से वंचित कर देना चाहिए। जो लोग अपने आप को भारतीय कहने में लज्जा अनुभव करते हैं, उन्हें किसी चुनाव मे खड़े हो कर जनता के प्रतिनिधि बनने का कोई अधिकार नहीं है।

१०, पंजाब में हिन्दी को विदेशी भाषाओं से भी अधिक अपमानित किया जा रहा है। देश की राष्ट्र भाषा होते हुए भी उसे वह सन्मानित स्थान नहीं दिया जा रहा, जो राजकीय प्रशासक में उसे मिलना चाहिए।

११. पजाब के हिन्दू अल्पसख्यक हैं, इसलिए उन्हें वे सब अधिकार और वे सब सुविधाएं मिलनी चाहिएं जो देश के दूसरे प्रदेशों मे अल्पसख्यको को मिली हुई हैं,

१२. पंजाब की पुलिस लाला जगतनारायण की हत्या और जालन्धर और तरनतारन के गोलीकाण्ड का अभी तक कोई सुराग नहीं निकाल सकी। इसलिए यह काम सी. बी आई. को सौंपा जाए। पजाब पुलिस अपनी वर्तमान स्थिति में कोई सफलता प्राप्त करने में असमर्थ है। इसलिए जनता में विश्वास पैदा करने और लोगों को यह आश्वासन देने के लिए कि वे पूर्णतया सुरक्षित हैं और सुरक्षित रहेंगे, यह काम सी. बी. आई. को सौंप दिया जाये।

मैंने पंजाब की वर्तमान स्थिति सक्षिप्त रूप मे आपके सामने रख दी हैं। अन्त में केवल यह कहना चाहता हू कि जो कुछ पिछले डेढ़ मास में हुआ है, उसके कारण पंजाब की जनता विशेषकर हिन्दू और हरिजन इस समय बहुत परेशान हैं और घबराये हुए हैं। पजाब की वर्तमान सरकार पर से उनका विश्वास उठ रहा है। इसलिए यह आवश्यक है कि वे लोग जिन्होंने आज तक कांग्रेस का साथ दिया है, वे यह समझें कि कांग्रेस के हाथ में उनका भविष्य सुरक्षित है। इसलिए आपसे प्रार्थना है कि जो सुझाव आपके सामने रखे हैं उन पर गम्भीरता पूर्वक विचार करें और उन्हें समक्ष रखते हुए ही अकालियों के साथ जो बातचीत करनी है और जो निर्णय लेना है, वह लें।

मंगल कामनाओं सहित—

भवदीय,

वीरेन्द्र

सभाप्रधान

सत्यार्थ प्रकाश की रचना क्यों ?

II

आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद, वरिष्ठ उपप्रधान
आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब

क्रांतिकारी, युगनिर्माता, युगपुरुष, महर्षि दयानन्द जी महाराज का जिस समय प्रविर्भाव हुआ, उस समय भारत की जनता मानसिक एवं शारीरिक दासता के कारण अज्ञानान्धकार में भटक रही थी और धार्मिक अन्धविश्वास एव मिथ्या धार्मिक कृत्यो की जजीरों में जकड़ी थी। मानसिक दासता से छुटकारा दिलाये बिना मानसिक स्वतन्त्रत समाज को दिलाना अत्यन्त असम्भव था। अत: दूरदर्शी महर्षि ने सोई हुई विचार शक्ति को जगाने, भूले भटको को सत्य का मार्ग दिखाने, अज्ञान-अन्धकार मे भटकती हुई जनता को प्रकाश दिखाने के लिए अपने महान एवं अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना की, जो १९वी शताब्दी की वैचारिक क्रान्ति की एक अद्वितीय पुस्तक है।

महर्षि दयानन्द ने सोये हुए समाज को न केवल जागृत ही किया अपितु समाज के प्रत्येक सदस्य के हृदय में आत्म विश्वास की अग्नि प्रज्जवलित की और वैदिक धर्म, पुरातन वैदिक सस्कृति तथा राष्ट्र प्रेम की भावना पैदा की, जिसने विदेशी शासन की जड़ें उखाड़ने का काम किया और राष्ट्र को स्वराज्य प्राप्ति की ओर अग्रसर किया। यदि महर्षि दयानन्द आर्य समाज की स्थापना और सत्यार्थ प्रकाश की रचना न करते तो न हीं तो वैदिक सभ्यता का पुनरुद्धार होता न ही देश में वैदिक समता और ममता की भावनाएं उत्पन्न होती। ऋषि के इन दो महान कार्यों का ही पुण्य प्रताप है कि आज हम स्वतन्त्र हैं, अपनी वैदिक संस्कृति पर गौरव करते हैं और 'कृणवन्तो विश्वमार्यम्' के सिद्धान्तको जन-जन तक पहुंचा कर एक सर्वश्रेष्ठ समाज की स्थापना के लिए प्रयत्नशील है महर्षि के महान कार्य को देख कर ही महान फ्रैंच विचारक रोम्या रोलां ने लिखा वह (ऋषि दयानन्द) भारत के राष्ट्रीय सगठन तथा पुनर्निर्माण का अग्रदूत था।'

अमेरिका के विख्यात तत्वदर्शी एण्ड्रो जैक्सन ने लिखा था कि :—

'आर्य समाज की भट्टी में एक आग सुलगाई गई है जिस का उद्देश्य सनातन एव पुरातन आर्य धर्म को अपने स्वाभाविक पवित्र रूप मे लाना है। यह आग भारत के एक परम योगी, परमात्मा के वरद पुत्र ऋषि दयानन्द सरस्वती के हृदय में प्रकट हुई थी और एक उज्ज्वल तथा दीप्तिमान प्रकाश के साथ जल रही थी।'

इस उज्ज्वल दीप्ति और प्रकाश ने ही स्वामी दयानन्द जी महाराज से इस अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की रचना करवायी थी। सत्यार्थ प्रकाश ही एक ऐसा धर्म ग्रन्थ है जिसमें वैयक्तिक विकास, सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक व्यवहारिक, वैज्ञानिक, ऐतिहासिक, धार्मिक लौकिक तथा पारमार्थिक सभी विषयो पर प्रकाश डाला गया है जो व्यक्ति जीवन मे एक बार सत्यार्थ-प्रकाश पढ़ ले तो फिर उसे किसी दूसरी पुस्तक के पढने की आवश्यकता नही रहती। सत्यार्थ-प्रकाश ऋषि द्वारा स्वाध्याय किए हुये ३६०० ग्रन्थो का सार है जो—धर्म शास्त्र.

समाज शास्त्र और नीति शास्त्र की एक कुंजी कहा जा सकता है। बहुत से विद्वान इस विचार के समर्थक हैं कि महाभारत ही में जो कुछ वर्णित है वह सर्वत्र है और जो उसमें वर्णित नहीं वह कहीं भी नहीं (यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत क्वचित्। महाभारत (ग्रा० प० २,३३०) परन्तु मेरा अपना दृष्टिकोण यह है कि आज के युग में महाभारत और रामायण के तुल्य यदि कोई दूसरी पुस्तक हैं तो केवल सत्यार्थ प्रकाश है जो धर्म, राष्ट्र और समाज पर किए जाने वाले आक्रमणों का सामना करने की शक्ति प्रदान करता है। दूसरे शब्दों में सत्यार्थ प्रकाश ही आज के युग की रामायण है यही महाभारत है और यही गीता भी है।

सत्यार्थ प्रकाश ही एक ऐसा महान ग्रन्थ है जिसने दुनिया को फिर से वेदों की ओर मोड़ा और लाखों व्याकुल आत्माओं को नवजीवन प्रदान किया। अनेको प्राणियों को जीवन में सत्य का प्रकाश देकर आत्मोन्नति के मार्ग पर चलाया और देश की स्वाधीनता के लिए भारतीयों का मार्ग प्रदर्शन करके उन्हें देश भक्त क्रान्तिकारी, समाज सुधारक, एवं समाज के उसरैया (उत्थापक) बनाया।

सत्यार्थ प्रकाश सच्चे अर्थों में एक ऐसा दिव्य ग्रन्थ और रोशनी का मीनार है जो युग निर्माण और चतुर्मुखी प्रगति की भावना से सम्पूर्ण मानव समाज के कल्याण और उन्नति के लिए रचा गया।

महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश के लिखने के विचार को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि :—

'मेरा इस ग्रन्थ (सत्यार्थ प्रकाश) के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना हैं अर्थात् जो सत्य है उस को सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाए किन्तु, जो पदार्थ जैसा है उस को वैसा ही कहना, लिखना और मानना सत्य कहाता है।'

जिन लोगों ने सत्यार्थप्रकाश का कभी स्वयं स्वाध्याय नहीं किया अपितु वैदिक धर्म विरोधी लोगों से सत्यार्थ-प्रकाश के विषय मे कुछ सुना सुनाया है वे यह विचार बनाये बैठे हैं कि सत्यार्थ प्रकाश तो सब मतमतान्तरों और सभी प्रचलित विचारधाराओं का खण्डन ही करता है। हमारा विनम्र आग्रह है कि वे सत्यार्थ प्रकाश को स्वयं पढ़ें और विचारें। सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय करने से उन्हें स्वयं यह पता चल जाएगा कि इस महान ग्रन्थ के जो चौदह समुल्लास हैं उनमें से पूर्वार्द्ध के दस समुल्लासो में मानव जीवन के विधायक कर्तव्यों का विवेचन है और वैदिक धर्म की विचार धारा, दार्शनिक मान्यता तथा साधना पद्धति का उल्लेख है जो मनुष्य मात्र के लिए अनुकरण करने के एवं आचरण में लाने के योग्य है। मतमतान्तरों की खण्डनात्मक बातें तो उतरार्द्ध के केवल चार समुल्लासों में हैं। मनमतान्तरों के खण्डन में भी महर्षि का दृष्टिकोण कितना ऊंचा था इसके जानने के लिए उनका अपना कथन प्रस्तुत हैं—

'यद्यपि मे आर्यावर्त देश में उत्पन्न हुआ और बसता हूं तथापि जैसे इस देश के मतमतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हू वैसे ही दूसरे देशस्थ मत वालों के साथ भी बर्तता हूं। जैसा स्वदेश वालों के साथ मनुष्योन्नति के विषय में बर्तता वैसा विदेशियों के साथ भी, तथा सब सज्जनो को भी लर्तने योग्य है। क्योंकि मैं भी जो किसी एक का पक्ष-पाती होता तो जैसे आज कल के स्वमत की स्तुति मन्डन और प्रचार करते और दूसरे मत की निन्दा हानि और बन्ध करने में तत्पर होते हैं वैसे मैं भी होता। परन्तु, ऐसी बातें मनुष्यपन के बहि: हैं।'

सत्यार्थ प्रकाश का सभी आर्य हिन्दू पूरा आदर इसीलिए करते हैं कि एकमात्र ऐसा ग्रन्थ है जिसमें वैदिक सस्कृति के पुनरुद्धार की रूपरेखा ऐसी मिलती है जो आज के युग के किसी ग्रन्थ मे नहीं मिलेगी। यह ग्रन्थ विश्व के प्रत्येक प्राणिमात्र के कल्याण का मार्ग दर्शाता है और मानव मात्र को उस सभ्यता एवं संस्कृति का दिग्दर्शन कराता है जो युगों-२ से 'सर्वजन हिताय. सर्वजन सुखाय' का उद्घोष निनादित करती चली आ रही है।

सत्यार्थ-प्रकाश शताब्दी और हमारा दायित्व

आज से लगभग एक सौ वर्ष पूर्व उन्नीसवीं शताब्दी के महान् क्रांतिकारी महर्षि दयानन्द ने मानव जाति के कल्याणार्थ अपना घोषणा पत्र 'सत्यार्थ प्रकाश' नामक अमर ग्रन्थ के रूप में लिखा था। समय क्रांति इस ग्रन्थ की मूलात्मा थी। मानव अथवा मानवीय समाज के सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक एवं राजनीतिक क्षेत्र में मनुष्य व समाज का वास्तविक कर्त्तव्य व धर्म क्या है? इस तथ्य को दर्शाते हुये उन्होंने असत्य का खण्डन कर सत्य को ही प्रस्तुत किया था।

ग्रन्थ को लिखने से पूर्व महर्षि ने अपने मन्तव्य को दर्शाते हुए इस की भूमिका में अपने विचार इस प्रकार व्यक्त किए "मनुष्य का आत्मा सत्यासत्य का जानने वाला है तथापि अपने प्रयोजन की सिद्धि, हठ, दुराग्रह और अविद्यादि दोषों से सत्य को छोड़ असत्य में झुक जाता है परन्तु इस ग्रन्थ में ऐसी बात नहीं रखी है और किसी का मन दुखाना वा किसी की हानि पर तात्पर्य है, किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य जान कर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें। क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है" "यद्यपि आज कल बहुत से विद्वान अनेक मतों मे हैं। यदि वे पक्षपात छोड सर्वतन्त्र सिद्धात अर्थात् जो जो बातें सबके अनुकूल सब में सत्य हैं उनका ग्रहण और जो एक दूसरे से विरुद्ध बातें हैं, उनका त्याग कर परस्पर प्रीति करते वर्तावें तो जगत का पूर्ण हित होवे।" मेरा इस ग्रन्थ को बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है, उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है।"

महर्षि दयानन्द के लक्ष्य को कोई भी विद्वान कितना ही प्रयत्न क्यों न करे उसे पूर्ण रूपेण जनता के सम्मुख उपस्थित करने में असमर्थ ही रहेगा। परिणाम स्वरूप जनता की स्थिति उन अन्धों की भांति है जो हाथी को देखने अथवा जानने के प्रयत्न में उसका जो जो अग जिसके हाथ मे आया उसने हाथी के स्वरूप को उसी रूप मे समझ लिया। परन्तु सही हाथी उसकी कल्पना से कोसों दूर था। इसी प्रकार जिस व्यक्ति की दृष्टि दयानन्द की सामाजिक क्राति पर पड़ी उसने उसे समाज सुधारक, जिसकी दृष्टि उनकी धार्मिक क्रांति पर पड़ी उसने उन्हें धर्म गुरु समझा, जिसका दृष्टि उसकी राजनीतिक क्रांति पर पड़ी उसने उसे राजनीतिक नेता समझा इत्यादि, परन्तु दयानन्द क्या थे और क्या चाहते थे यह सही रूप में उनका अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' ही जनता के सन्मुख उपस्थित करने मे समर्थ है। जितनी बार विद्वान इस ग्रन्थ को पढ़ता है उतनी ही बार उसे इसमें नई बातें मिलती हैं। वास्तव में यह ग्रन्थ वेदों का सार है।

अतः वर्तमान् सत्यार्थ-प्रकाश-शताब्दी-वर्ष को मनाने का सर्वोत्तम उपाय आर्यो, आर्य समाजों व आर्य संस्थाओं के लिए एक मात्र यही है कि इस ग्रन्थ को ससार के प्रत्येक कोने, व व्यक्ति तक पहुचाया जाय। इसके लिए प्रत्येक को तुरन्त अपनी सामर्थ्यनुसार लक्ष्य निर्धारित करना चाहिए कि वह कितनी सख्या में सत्यार्थ प्रकाश को निःशुल्क गैर आर्य समाजियों में वितरित करेगा। यदि ऐसा न कर केवल इस वर्ष

—ओमप्रकाश त्यागी,
(सभा मन्त्री)
भूतपूर्व संसद सदस्य

को जलसे, जलूस व समारोहों के द्वारा ही मनाया गया तो यह एक ढोंग व दिखावा होगा और उस महान् क्रांतिकारी के प्रति विश्वासघात होगा।

आर्य संस्थाओं का यह कर्त्तव्य है कि वह संसार को समस्त प्रमुख भाषाओं में इस ग्रन्थ को अनुवादित करा कर लागत मात्र पर वितरण हेतु आर्य समाजों व आर्य बन्धुओं को प्रदान करें। व्यवस्था इस प्रकार की जाय ताकि जनता को यह ग्रन्थ केवल एक रुपए में प्राप्त हो सके।

आर्य जनता को यह जानकर हर्ष होगा कि भारत की लगभग सभी भाषाओं तथा अंग्रेजी, फ्रेंच, बर्मी, चीनी, जर्मन तथा स्वाहिली आदि विदेशी भाषाओं में इस ग्रन्थ का प्रकाशन हो चुका है और सार्वदेशिक सभा ने निश्चय किया है कि लागत मूल्य से भी कम मूल्य पर वह इस ग्रन्थ को आर्य समाजों को प्रदान करेगी। आर्यसमाजो का कर्त्तव्य हो जाता है कि वह तुरन्त अपनी मांग सभा में भेजें।

सत्यार्थ प्रकाश-वितरण-कार्य के अतिरिक्त इस ग्रन्थ के मर्म को जनता के दिल-दिमाग तक पहुंचाने के लिये, आर्य समाजों एवं आर्य संस्थाओं को अपने यहां विद्वानों द्वारा कथाओं, भाषणों, परीक्षाओं का भी आयोजन करना चाहिए और अपने नगर चौराहों व दीवारों पर ऐसे आकर्षक वाक्य लिखाने चाहिए जो जनता को इस ग्रन्थ को पढ़ने के लिए प्रेरित करें। उदाहरणार्थ वाक्य इस प्रकार के हो सकते हैं।

१. यदि सच्चे शिव के दर्शन करने हैं तो सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो।

२. सत्य सनातन धर्म को समझने के लिए सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ो।

३. धर्म के नाम पर चल रहे पाखण्डों से बचने के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ो।

४. विश्व-शांति का सन्देश सत्यार्थ प्रकाश में पढ़ो। विश्व बन्धुत्व की प्राप्ति का मार्ग 'सत्यार्थ प्रकाश' मे पढ़ो।

६. अपने परिवार का कल्याण चाहते हो तो सत्यार्थ-प्रकाश का स्वाध्याय करो।

—

जाग जाओ

—रमाकान्त दीक्षित

बहुत खो चुके हो, कुछ कर दिखाओ।
बहुत सो चुके हो, अब जाग जाओ॥
रहने न दो, कहीं भू पर अन्धेरा,
नाचे आंगन में हंसता सवेरा,
छल-कपट की तुम धज्जियां उड़ाओ,
कि बाज अब तो, चिड़ियों से लड़ाओ,
गद्दारों से कह दो, भाग जाओ।
बहुत सो चुके हो, अब जाग जाओ॥
सामने जो मन्जिल, दिखती विकट है,
धीरज धरो तो, वही फिर निकट है,
बदलो तुम धरा के, घिनौने वसन,
बने फिर से चांदनी, मन की जलन,
निज नाम, बलिदानियों में लिखाओ।
बहुत सो चुके हो, अब जाग जाओ॥
देश चाहता है, कुछ आज तुम से,
कि बैठे हुए हो, क्यों आज गुम से,
मिटे न परहित, व्यर्थ व जवानी,
अन्त हो न सुखद, व्यर्थ वह कहानी,
लीलती भयानक, लपटें बुझाओ।
बहुत सो चुके हो, अब जाग जाओ॥

—

प्रकाश पर्व दीवाली—आवश्यकता है इस प्रकाश को दूसरों तक पहुंचाने की ?

(प्रो० चन्द्र प्रकाश आर्य, हिन्दी विभाग, दयाल सिंह कालेज, करनाल)

आज देश में दीपावली मनाई जा रही है। यह ऐसा पर्व है जिसको प्रत्येक समुदाय एवं प्रत्येक वर्ग मानता है। उत्तर हो या दक्षिण, पूर्व हो या पश्चिम दीपावली समान रूप से सर्वत्र मनाई जाती है। दीवाली प्रकाश की प्रतीक माना जाता है इसलिए नगर २ में, गांव २ में तथा घर २ में प्रकाश के दीपक जलाए जाते हैं। घरों के ऊपर तथा घरों के बाहर दीपक जगमगाते हैं। चारों ओर प्रकाश ही प्रकाश दिखाई देता है परन्तु हमारे भीतर अन्धेरा है। मकानों में प्रकाश है, गलियों में प्रकाश है परन्तु हमारे मन के अन्दर अन्धेरा है—अज्ञान का, ईर्ष्या और द्वेष का वैर तथा पक्षपात का, व्यक्ति मन मे निराशा का अन्धेरा है, चिन्ता का अन्धकार है, स्वार्थ की निशा है। व्यक्ति जीवन मे कितने कह सकते हैं कि उनके मन में प्रकाश है, सुख एवम् शान्ति है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी २ समस्याओं से पीड़ित है, उसकी अपनी अपनी कुंठाएं हैं, निजी वेदनाएं हैं, जिसको पूछो उसकी अपनी कहानी है सुनने वाला कोई चाहिए। कितने लोग अपने स्वार्थ के संकीर्ण दायरे से निकल कर बाहर की ओर झांक सकते हैं ? आज व्यक्ति के इसी लोक मे अन्धेरा है, अन्य लोकों की तो बात दूर रही।

हमारे सामाजिक जीवन में साम्प्रदायिकता का अन्धेरा है। मुरादाबाद, अलीगढ़, बिहार शरीफ तथा हैदराबाद मे हुए दंगे क्या ज्योति के प्रतीक हैं ? ये साम्प्रदायिक दंगे इस प्रकाश पर्व पर अन्दर झांकने का सन्देश दे रहे हैं, बीमारी बाहर नही, रोग हमारे अन्दर है। हरिजनों की हत्या, हरिजनों

दयानन्द सन्यासी थे, उनका अपना कोई स्वार्थ न था। जनहित के लिए राष्ट्र के लिए उन्होंने अपने को वार दिया। आज हमें इसी प्रकार के प्रकाश की जरूरत है जो हमारे सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन से भ्रष्टाचार पक्षपात छूआछूत भेदभाव साम्प्रदायिकता एवं आर्थिक विकास विषमता के अन्धकार को दूर कर सकें तथा अन्तर्राष्ट्रीय जीवन में विश्वबन्धुत्व एवं भाईचारे के दीप को जला सकें।

को जिन्दा जलाना हरिजनों द्वारा धर्म परिवर्तन हमारे समाजिक जीवन में घोर अन्धेरे के प्रतीक हैं। समाज में जाति-पांति, छुआछूत का तीव्र भेदभाव अब भी अमावस की काली रात का सूचक है।

आर्थिक क्षेत्र की ओर आपको ले चलूं तो वहां भी अन्धकार छाया है। यद्यपि पिछले ३४ वर्षों में हमने देश को आगे ले जाने में भारी प्रगति की है, इससे हम इन्कार नही कर सकते। भास्कर और रोहिणी राकेट इस दिशा में हमारे बढ़ते हुए कदमो के सूचक हैं परन्तु इस दिशा में अभी

बहुत कुछ करना शेष है। आज भी लाखों लोगों के घरों में अन्धेरा है। अब भी लगभग ६० करोड़ लोग गरीबी की रेखा से नीचे का जीवन बिता रहे हैं। उनके घरों में अन्धेरा है और हम प्रकाश पर्व मना रहे हैं। उनको जीवन की प्राथमिक सुविधाएं प्राप्त नहीं हैं। वे रोटी, कपड़ा और मकान के लिए संघर्ष कर रहे हैं। दिल्ली, कलकत्ता, बम्बई, मद्रास जैसे महानगरों के साथ उनमे रहने वाले झुग्गी झोंपड़ी वालों को न भूलिए, वहां के फुट-पाथों को न भूलिए। हैदराबाद और विजयवाड़ा के सड़क के आदमी से पूछिए कि दिवाली कैसी मन रही है? बिहार और उड़ीसा तथा राजस्थान के गरीब मजदूरों से पूछिए कि प्रकाश पर्व कितना महंगा है? हम और आप अपने तक ही दिवाली को मानकर खुश हो जाते हैं। अपनी खुशी में सबकी खुशी मान लेते हैं। अपने घर में उजाला देखकर सबके घरों में उजाला समझ लेते हैं। सवाल तो यह है कि समाज के अन्य लोगों के घरों में भी खुशी के दीप जगमगायें, राम, महावीर, दयानन्द, रामतीर्थ और गुरु तेगबहादुर को आज हम याद करते हैं तो इसलिए कि उन्होंने दूसरों के लिए प्रसन्नता के दीप जलाये, उन्होंने समाज के लिए, देश के लिए अपना सर्वस्व बलिदान कर दिया। राम ने क्या-२ कष्ट नहीं सहन किए, वे जंगलों में भटकते रहे। उन्हें गद्दी या शासन का लोभ न था। उन्हें आज के शासकों की तरह कुर्सी या सत्ता से लगाव न था। जनहित के लिए उन्होंने अपनी पत्नी तक का त्याग कर दिया। दयानन्द संन्यासी थे, उनका अपना कोई स्वार्थ न था। जनहित के लिए, राष्ट्र के लिए उन्होंने अपने को वार दिया। आज हमें इसी प्रकार के प्रकाश की जरूरत है जो हमारे सामाजिक एवं राष्ट्रीय जीवन से भ्रष्टाचार, पक्षपात, छूआछूत, भेदभाव, साम्प्रदायिकता एवं आर्थिक विषमता के अन्धकार को दूर कर सके तथा अन्तर्राष्ट्रीय जीवन में विश्व बन्धुत्व एवं भाईचारे के दीप को जला सके।

सत्यार्थ प्रकाश की रचना

यह ग्रन्थ चौदह समुल्लास अर्थात् चौदह विभागों में बांटा गया है। इसमे दस समुल्लास पूर्वार्द्ध और चार उत्तरार्द्ध में बने हैं। प्रथम में—ईश्वर के ओङ्कारादि नामों की व्याख्या। द्वितीय में—सन्तानों की शिक्षा। तृतीय में—ब्रह्मचर्य, पठन-पाठन व्यवस्था सत्यासत्य ग्रन्थों के नाम और पढ़ने पढ़ाने की रीति। चतुर्थ में—विवाह और गृहस्थाश्रम का व्यवहार। पचम में—वानप्रस्थ और सन्यासाश्रम की विधि। छठें में—राजधर्म, सप्तम में—वेदेश्वर विषय। अष्टम में—जगत् की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय। नवम् में—विद्या, अविद्या, बन्ध और मोक्ष की व्याख्या। दशम् में—आचार, अनाचार और भक्ष्याभक्ष्य विषय। एकादश में—आर्यावर्त्तीय मत-मतान्तर का खण्डन मण्डन विषय। द्वादश में—चार्वाक, बौद्ध और जैन मत का विषय। त्रयोदश में—ईसाईमत का विषय। चौदहवें मे—मुसलमानो के मत का विषय। और चौदह समुल्लासों के अन्त मे आर्यों के सनातन वेदविहित मत की विशेषत. व्याख्या लिखी है

सत्यार्थ प्रकाश ने कहां-कहां क्रांति नहीं की

—पं० ओम्प्रकाश आर्य, कार्यालयाध्यक्ष, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज का अनुपम ग्रन्थ, आर्य समाज का अभेद्य कवच, सत्यार्थ प्रकाश सत्यान्वेषी मुमुक्षु के लिए अमृत-तुल्य है। जब कभी जिस किसी ने पक्षपात रहित होकर पूर्ण मनोयोग से इस ग्रन्थ रत्न का स्वाध्याय किया, उसका जीवन बदल गया। अविद्या तथा अन्ध विश्वास इसके पाठ मात्र से किस प्रकार दूर होते हैं, इसके लिए पाठक निम्नलिखित सत्य घटनाओं को ध्यानपूर्वक पढ़ने का कष्ट करें, और लाभ उठाए —

नवीन वेदान्त का भक्त त्रैतवादी बना

१—स्वर्गीय श्री स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज नवीन वेदान्ती साधु थे। वेदान्त की मस्ती में घूमते-घूमते चित्रकूट में आकर कुछ मास ठहर गये। वहां सर्दियों में आप यमुना के किनारे नंगे पड़े रहा करते थे। उन्हीं दिनों उनकी छाती और कटि में दर्द रहने लगा, जो अन्त तक रहा। यहां स्वामी जी महाराज बड़े तप का जीवन व्यतीत करते और २४-२४ घण्टे तक अपने विचारों में लीन रहा करते थे, भोजन का विचार आया और मिल गया, तो खा लिया, नहीं तो मस्ती में बैठे हैं, बीमारी की सूचना गाव के एक ठाकुर को मिली, जो स्वामी जी का सेवक था, किन्तु धार्मिक विचारों में वह अपने इलाके में एक ही आर्य समाजी था। उसने आकर औषधि आदि द्वारा स्वामी जी की खूब सेवा की। जब स्वामी जी नीरोग हो गए तो मन में इच्छा हुई कि यहां से अन्यत्र चलें। आपने अपने सेवक ठाकुर को मिलने के लिए बुलाया। वह आते समय अपने साथ एक पुस्तक को रेशमी वस्त्र में लपेट कर ले आया, और विनीतभाव से निवेदन किया कि महाराज! यदि आप मेरी सेवा से प्रसन्न हैं, तो इस पुस्तक को ग्रहण कीजिए और यथासभव इसका आदि से अन्त तक अध्ययन करने की कृपा अवश्य कीजिए।

स्वामी जी महाराज ने उस पुस्तक को, जो बड़े सुन्दर रेशमी रूमाल में लपेटी हुई थी, ले लिया और प्रतिज्ञा की कि वह इसको अवश्य पढ़ेंगे। यह कहकर वहां से गोरखपुर की ओर प्रस्थान किया। मार्ग में रेशमी रूमाल को खोलकर देखा, तो वह आर्य भाषा में सत्यार्थ प्रकाश की एक सुन्दर प्रति थी। स्वामी जी ने सत्यार्थ प्रकाश का नाम तो सुन रखा था, परन्तु नवीन वेदान्ती होने के कारण वह इस पुस्तक को देखना तक पसन्द न करते थे, किन्तु अपने सेवक ठाकुर को वचन दे चुके थे, इसलिए, और दूसरे यह भी मन में आया कि चलो देख तो लें कि इसमें क्या लिखा है? सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ना प्रारम्भ कर दिया। सत्यार्थ-प्रकाश की आद्योपान्त पढ़ने के साथ ही स्वामी जी कुछ और के और बन गए। सत्यार्थ प्रकाश के पाठ ने नवीन वेदान्त की कपोल-कल्पित मान्यता दूर करके सत्य का का प्रकाश कर दिया और स्वामी सर्वदानन्द जी महाराज पक्के और सच्चे वैदिक धर्मी बनकर यावज्जीवन वैदिक धर्म का प्रचार करते रहे।

कट्टर शिव भक्त आर्य समाज का नेता बना

स्वर्गीय श्री प० गगा प्रसाद जी एम० ए०, रिटायर्ड चीफ, जज टीहरी-गढवाल का एक लेख 'आर्य समाज के चमकते रत्न' शीर्षक से मार्च १९०७ की मासिक सार्वदेशिक पत्रिका में प्रकाशित हुआ था, जिसमे उन्होंने लिखा था—

'मुझको बाल्यावस्था ही से धर्म में रुचि थी, परन्तु मेरे विचार पौराणिक थे। यद्यपि मेरे पिता और पितामह आर्य समाज मेरठ के समासद् थे, परन्तु मैं मन्दिर में जाकर नित्य शिव की पूजा करता, और उस पर जल चढ़ाता था। सन् १८८४ ई० में जब मैंने मिडिल परीक्षा

पास की तो सत्यार्थ प्रकाश का दूसरा संस्करण प्रकाशित हो चुका था। मेरे पितामह ने उसको खरीदा, वे वृद्ध थे, इसलिए उनको सत्यार्थ प्रकाश सुनाने का काम मेरे सुपुर्द हुआ। मैंने कुछ भाग उनको पढ़कर सुनाए। परन्तु मैंने सारे ग्रन्थ को बड़े चाव से पढ़ा। सत्यार्थ प्रकाश को पढ़कर मेरे विचारों की काया पलट हो गई और मैं कट्टर आर्य समाजी हो गया।

लंगड़ी देवी के दाम्पत्य जीवन की रक्षा कैसे हुई

भैरोंवाल, मलकपुर और जफरवाल दिया इन तीनों ग्रामों का सम्मिलित एक ही आर्यसमाज था, जिसके मन्त्री थे महाशय चूनीलाल। महाशय जी की धर्म पत्नी दोनों टांगों से लंगड़ी थी। एक बार पंडित विश्वनाथ जी उनके घर गये। महाशय जी की धर्म पत्नी इनके वहां पहुंचने पर धन्य ऋषि दयानन्द 'अमर ऋषि दयानन्द' बार-बार कहने लगी, जिस पर श्री पंडित विश्वनाथ जी ने उस देवी से पूछा—देवी! तू अनपढ़ है, महर्षि की महिमा तुझे कैसे अनुभव हुई?' तो उसने बतलाया कि जब मेरा विवाह हुआ, तो मेरा पति महाशय चूनीलाल पांचवीं कक्षा में पढ़ता था! मेरा श्वसुर अध्यापक था, और उसका वेतन केवल ८ रुपए मासिक था। वे बहुत निर्धन थे। इसलिए मेरे पिता जी ने निवेदन किया कि मेरी लड़की लंगड़ी है। अगर आपको स्वीकार हो, तो सम्बन्ध हो सकता है। मेरे श्वसुर ने स्वीकृति दे दी। मेरे पति आठवीं पास करके इलाका बार में नहर के पटवारी हो गए, और ऊपर की आय होने लगी। थोड़े दिनों में लगभग दस हजार रुपये जमा हो गए। अब मैं उन्हें बुरी लगने लगी। मित्रों ने कहा—तुमने क्यों लंगड़ी स्त्री घर में रखी हुई है?' अन्ततः एक जगह पर दो हजार रुपए में दूसरा रिश्ता तय हुआ, और मुझे वापस मां-बाप के घर भेजने का निश्चय हो गया।

उन दिनों लाला जगन्नाथ जी जिलेदार, जो दृढ़ आर्य और प्रचार की लगन रखते थे, हिन्दू पटवारियों में सत्यार्थ प्रकाश बांटा करते थे। एक पुस्तक महाशय चूनीलाल को भी दे गए, जिसे उन्होंने बड़े चाव से पढ़ा। सत्यार्थ प्रकाश के पढ़ने से जीवन का कांटा बदल गया। महर्षि के बतलाए पत्नी व्रत धर्म का बड़ा प्रभाव पड़ा। नये रिश्ते का सौदा वापिस हो गया।

ईसाई बनते-बनते वैदिक धर्मी बनने की कहानी

४—सठियाला जिला अमृतसर के रहने वाले डा० विश्वनाथ जी, बोताला, जिला अमृतसर में प्रतिदिन पढ़ने जाया करते थे। वहां एक ईसाई मिशनरी रहता था, जो अपने मिशन का खूब प्रचार करता था। स्कूल के विद्यार्थियों से उस पादरी को बड़ा प्रेम था। वह विद्यार्थियों को बाईबिल की कहानियां सुनाया करता, तथा छोटे-छोटे ट्रैक्ट भी बांटा करता था और सदा हिन्दू धर्म के विरुद्ध प्रचार किया करता था। डा० विश्वनाथजी ने 'मैं आर्य समाजी कैसे बना?' शीर्षकान्तर्गत लिखा है—

मुझे भी उस मिशनरी ने कई ट्रैक्ट पढ़ने को दिए, तथा एक प्रति बाईबिल की भी दी। मैंने बाईबिल को बड़े ध्यान से पढ़ा। उस के पढ़ने से मेरे विचार बदल गए तथा मुझे हिन्दू धर्म से बहुत घृणा हो गई। मैं ईसाई मिशनरी से रोजाना बात-चीत किया करता था। मेरे विचारों को देखकर ईसाई मिशनरी ने मुझे कहा कि आप दीनानगर चलें। मैं आप को हर प्रकार की सहायता करूंगा। मैंने दूसरे दिन विचार करके उत्तर देना मान लिया।

दूसरे दिन प्रातः मुझे बोताला की तरफ जाते हुए एक साधु मिले, उन्होंने मुझ से कहा कि तुम कहां जा रहे हो? मैंने उत्तर दिया कि मैं स्कूल जा रहा हूं। उन्होंने फिर मुझ से पूछा कि—पढ़कर क्या करोगे? मैंने उत्तर दिया कि—'सांसारिक ज्ञान प्राप्त हो जाएगा। मैंने साधु का नाम पूछा। उन्होंने कहा—मेरा नाम योगेन्द्रपाल है। मैं संन्यासी हूं। मेरे गुरु स्वामी दयानन्द जी महाराज थे। क्या तुमने उनका नाम सुना है? मैंने कहा—नहीं। फिर आपने कहा कि तुम्हारा स्कूल पहुंचने का समय होने वाला है चार बजे सायं मुझे मिलना। मैं स्वामी जी को सायं चार बजे मिला, तो उन्होंने कहा कि—तुम्हारे विचार अच्छे हैं। मैं तुम्हें उपदेश करता हूं कि प्रतिदिन सत्यार्थ प्रकाश पढ़ा करो और सच्चे दिल से इसकी प्रतिज्ञा करो, मैंने सत्यार्थ-प्रकाश को प्रतिदिन पढ़ने की प्रतिज्ञा की और इस ग्रन्थ-रत्न को अस्सी (८०) बार पढ़ा। इसके पाठ से मेरे सन्देहों की निवृत्ति हो गई और जिस बाईबिल से मुझे प्रेम था, उसका मैंने खण्डन प्रारम्भ कर दिया। स्वामी

...प्रसाद जी की कृपा से सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर मैं दृढ़ वैदिक धर्मी बन गया और ईसाई होते-होते बच गया '

'सत्यार्थ प्रकाश' एक निष्पक्ष मुसलमान की दृष्टि में

५—श्री ऐजाज अहमद गौरी सिद्धान्त शास्त्री लाहौर ने जुलाई १९४७ के मासिक 'सार्वदेशिक' में प्रकाशित सत्यार्थ प्रकाश की रक्षा और प्रचार कैसे हो ? उस अपने लेख में लिखा था—

—इस समय और भी बहुत सी धार्मिक पुस्तकें उपलब्ध हैं, मगर यही एक ऐसी पुस्तक है कि जिसको जब पढ़ा जाए, कोई न कोई नई बात तो बतलाती है। पता नहीं स्वामी जी ने इसमें क्या अमृत भर दिया है! और पुस्तकें हैं, वे एक बार पढ़ ली जावें, तो दोबारा पढ़ने को भी जी नहीं चाहता। मगर गुरुदत्त जैसे और भी कई विद्वानों का कथन है कि हमने इस पवित्र सत्यार्थ प्रकाश का कई बार स्वाध्याय किया, मगर तृप्ति नहीं हुई। क्योंकि हर बार कोई न कोई नई बात ही मिलती थी। इसी कारण इसे पुनः पढ़ने को दिल चाहता है।

मैं स्वयं अपना विचार बतलाऊं। मैंने बहुत से धार्मिक ग्रन्थ, कुरान, बाईबिल, श्री गुरु ग्रन्थ साहिब पढ़े। मगर सबको एक ही बार पढ़ा। यह सत्यार्थ प्रकाश पढ़ते आज मुझे ६ वर्ष के करीब हो गए, मैं नित्य प्रति इस पवित्र ग्रन्थ को गवेषणापूर्वक पढ़ता हूं। यदि स्वाध्याय ठीक न हो तो केवल दर्शन कर लेता हूं। पता नहीं स्वामी जी की वाणी मे क्या आकर्षण है ?'

सत्यार्थ प्रकाश मृत प्रायः जीवनों के लिए संजीवनी बूटी है ज्ञान का कलश है, अमृत का घड़ा है। इस ग्रन्थ-रत्न का गुणगान कहां तक किया जाये ? लेखनी और वाणी यहां मूक है, सच्चा लाभ और अनुभव तो इसके अध्ययन से ही प्राप्त हो सकता है।

—

विद्वानों की दृष्टि में सत्यार्थ प्रकाश

✽ युग प्रवर्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपनी अमर कृति सत्यार्थ प्रकाश में अकर्मण्यता और जन्म जाति, जातिवाद का घोर विरोध किया है। हमारे समाज में यह बुराईयां अभी भी व्याप्त है। इस कृति से इन बुराईयों से लड़ने की आज भी हमें प्रेरणा मिलती है,

—चरणसिंह, भूतपूर्व प्रधान मन्त्री

★ जाति-पांति से उत्पन्न भेदभाव विहीन तथा मानवता और समानता पर आधारित समाज के निर्माण का कार्य स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ-प्रकाश जैसा ग्रन्थ देश को प्रदान करके ही किया था।

—जगजीवनराम, भूतपूर्व उपप्रधान मन्त्री

✽ हिन्दू जाति की ठण्डी रगों में उष्ण रक्त का संचार करने वाला यह ग्रन्थ अमर रहे, यही मेरी कामना है। सत्यार्थ प्रकाश की विद्यमानता में कोई विधर्मी अपने मजहब की शेखी नहीं मार सकता।

—विनायक दामोदर सावरकर

— सत्यार्थ प्रकाश ने प्रकाश दिखाकर अन्धकार को दूर किया और लोगों को सन्मार्ग दिखाया।

—मोहनलाल मोहित, मौरीशस

✽ सत्यार्थ प्रकाश स्वामी दयानन्द की मार्केतुल आला तसनीफ (सर्वोत्तमकृति) है और स्वामी दयानन्द आर्यों के गुरु है।

—मौलाना मुहम्मद

✽ सत्यार्थ प्रकाश ने न जाने कितने असंख्य व्यक्तियों की काया पलट की होगी।

—स्वामी श्रद्धानन्द

+ यदि सत्यार्थ प्रकाश की एक प्रति का मूल्य एक हजार रुपया होता तो उसे सारी सम्पत्ति बेचकर खरीदता।

—गुरुदत्त विद्यार्थी एम० ए०

—

आओ दीप जलाएं

—राधेश्याम आर्य एडवोकेट, मुसाफिरखाना सुलतानपुर (उ० प्र०)

वेदो के पावन पथ पर,
फिर चले हमारा देश,
ऋषि मुनियों के गूंजे भू,
पर पुन: मधुर उपदेश ।
मित्र बने धरती के सब जन,
सभी दिशाएं मित्र बने,
हटें युगों से जो छाए हैं,
दानवता के मेघ बने ।
ज्योतिर्मय हो भू-का कण,
कण, ज्योतिर्मय हो जन-अन्तर,
ज्योतिर्मय हो आभा मन की,
ज्योतिर्मय हो मन्वन्तर ।
जाति पांति का भेद मिटे सब,
मिटे मनुजता उत्पीडन,
ज्ञानालोक धरणि पर फैले,
आंख उनींदी का उन्मीलन ।
मोहाक्रान्त मनुज के उर मे,
उठे नवलतम् उद्बोधन,
प्रकृति जमी के गूढ़ रहस्यों,
का-सुन्दरतम् सशोधन ।
नव्य-ज्योति पा ले अगडाई,
मानव जगती का उदभ्रान्त,
समरसता का स्रोत बहे,
ज्योतिष्मय मानव मन विश्रान्त ।
आर्य बनें हम भारतवासी,
जगती आर्य बनाएं,
आर्य सपूतो ! मानवता का,
आओ ! दीप जलाएं ।

—

दयानन्द ऋषिराज महान्

सोया राष्ट्र जगाने वाले,
वेद ध्वजा लहराने वाले,
सत्य-सनातन धर्म वेद का-
भू को फिर दिखलाने वाले ।

★

पतितों का उद्धार किया—
स्थिर कर दिया पुनः गतिमान ।
दयानन्द ऋषिराज महान् ।

●

सन्त्रस्तों को साहस देकर,
मनुष्यता को निर्भय कर,
जाग्रत किया जगत को सारे-
वेदों की विद्या लेकर,

●

गहन अविद्या-अन्धकार से—
ग्रसित किया भू ज्योतिमानि ।
दयानन्द ऋषिराज महान् ।

×

अनुपमेय था वह व्यक्तित्व,
दिव्य, समग्र रहा कृतित्व,
बड़े बड़े विद्वान् पराजित हुए—
तुम्हारा सुन वक्तृत्व,

★

मानव की सम्पूर्ण प्रगति हित—
किया अलौकिक अनुसन्धान ।
दयानन्द ऋषिराज महान् ।

—हरिदत्त आर्य

सत्यार्थ प्रकाश बनाने का प्रयोजन

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत सत्यार्थ प्रकाश में से चुने हुए महत्वपूर्ण वचनों का संग्रह

मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य अर्थ का प्रकाश करना है। अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादित करना, सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाए। किन्तु जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना लिखना और मानना सत्य कहाता है।

जो मनुष्य पक्षपाती है, वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है, इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता।

इसीलिए विद्वान् आप्तों का यही मुख्य काम है कि उपदेश व लेख द्वारा सब मनुष्यों के सामने सत्यासत्य का स्वरूप समर्पित कर दें, पश्चात् वे स्वयं अपना हिताहित समझकर सत्यार्थ का ग्रहण और मिथ्यार्थ का परित्याग करके सदा आनन्द में रहें।

इस ग्रन्थ में जो कहीं कहीं भूल चूक से अथवा शोधने तथा छापने में भूल चूक रह जाए उसको जानने जनाने पर जैसा वह सत्य होगा वैसा ही कर दिया जाएगा और जो कोई पक्षपात से अन्यथा, शंका व खण्डन मण्डन करेगा उस पर ध्यान न दिया जाएगा। हां जो वह मनुष्य मात्र का हितैषी होकर कुछ जनावेगा उसको सत्य सत्य समझने पर उसका मत संग्रहीत होगा।

उन्नति का कारण सत्योपदेश

जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें, क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।

❋

मनुष्य जन्म का होना सत्यासत्य का निर्णय करने-कराने के लिए है, न कि वाद-विवाद विरोध करने-कराने के लिए। इसी मत-मतान्तर के विवाद से जगत में जो-जो अनिष्ट फल हुए, होते हैं और होंगे उनको पक्षपात रहित विद्वज्जन जान सकते हैं। जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मत-मतान्तर का विरुद्धवाद न छूटेगा तब तक अन्योऽन्य को आनन्द न होगा, यदि हम सब मनुष्य और विशेष विद्वजन ईर्ष्या, द्वेष छोड़ सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना कराना चाहें तो हमारे लिए यह बात असाध्य नहीं है।

—

क्योंकि पक्षपात से क्या २ अनर्थ जगत में न हुए और न होते हैं। सच तो यह है कि इस अनिश्चित क्षणभंगुर जीवन में पराई हानि करके लाभ से स्वयं रिक्त रहना और अन्य को रखना मनुष्यपन से बहिः है।

—

मनुष्य उसी को कहना कि मननशील होकर स्वात्मवत् अन्यों के सुख दुःख और हानि लाभ को समझें, अन्यायकारी बलवान् से भी न डरे और धर्मात्मा निर्बल से भी डरता रहे। इतना ही नहीं किन्तु अपने सर्व सामर्थ्य से धर्मात्माओं को चाहे वे महा-अनाथ निर्बल और गुणरहित क्यों न हों, उनकी रक्षा, उन्नति प्रियाचरण और अधर्मी चाहे चक्रवर्ती सनाथ महाबलवान् और गुणवान् भी हों तथापि उसका नाश, अवनति, अप्रियाचरण सदा किया करे। अर्थात् जहां तक हो सके वहां तक अन्यायकारियों के बल की हानि और न्यायकारियों के बल की उन्नति सर्वथा किया करें। इस काम में चाहे उसको कितना ही दारुण दुःख प्राप्त हो, प्राण भले ही चले जावें परन्तु इस मनुष्यपन रूप धर्म से पृथक् कभी न होवे।

(शेष पृष्ठ १९ पर)

मनुष्य नहीं, पशुओं का बड़ा भाई

(पृष्ठ १८ का शेष)

जैसे पशु बलवान् होकर निर्बलों को दुःख देते और मार भी डालते हैं, जब मनुष्य शरीर पा के वैसा ही कर्म करते हैं तो वे मनुष्य स्वभाव युक्त नहीं, किन्तु पशुवत हैं और जो बलवान् होकर निर्बलों की रक्षा करता है वही मनुष्य कहाता है और जो स्वार्थवश होकर परहानिमात्र करता रहता है, वह जानों पशुओं का भी बड़ा भाई है।

—नवीन मत चलाना मेरा अभिप्राय नहीं—

मेरा कोई नवीन कल्पना का मत-मतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है। किन्तु जो सत्य है उसको मानना मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझको अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्यावर्त में प्रचलित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता।

△विद्वानों से अपील△

यद्यपि आज कल बहुत से विद्वान् प्रत्येक मतों में हैं वे पक्षपात छोड़ सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात्, जो-जो बातें सबके अनुकूल सबमें सत्य है, उनका ग्रहण और जो एक दूसरे से विरुद्ध बातें हैं उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्तें वर्तावें तो जगत् का पूर्ण हित होवे। क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेक विध दुःख की वृद्धि और सुख की हानि होती है। इस हानि ने, जो कि स्वार्थी मनुष्यों को प्रिय है, सब मनुष्यों को दुःखसागर में डुबा दिया है।

—किसी का मन दुःखाना नहीं—

इस मेरे कर्म से यदि उपकार न मानें तो विरोध भी न करें क्योंकि मेरा तात्पर्य किसी की हानि व विरोध करने में नहीं किन्तु सत्यासत्य का निर्णय करने कराने का है। इसी प्रकार सब मनुष्यों को न्याय दृष्टि से वर्त्तना अति उचित है। मनुष्य जन्म का होना सत्यासत्य का निर्णय करने कराने के लिए है, न कि वाद-विवाद विरोध करने कराने के लिए।

यद्यपि इस ग्रन्थ को देखकर अविद्वान् लोग अन्यथा ही विचारेंगे तथापि बुद्धिमान् लोग यथायोग्य उसका अभिप्राय समझेंगे, इसलिए मैं अपने परिश्रम को सफल समझता और अपना अभिप्राय सब सज्जनों के सामने धरता हूं। इनको देख दिखलाके मेरे श्रम को सफल करें और इसी प्रकार पक्षपात न करके सत्यार्थ का प्रकाश करना मेरा व सब महाशयों का मुख्य कर्त्तव्य काम है। सर्वात्मा सर्वान्तर्यामी सच्चिदानन्द परमात्मा अपनी कृपा से इस आशय को विस्तृत और चिरस्थायी करे।

मित्रता से वाद-विवाद

सत्य के जय और असत्य के क्षय के अर्थ मित्रता से वाद व लेख करना हमारी मनुष्य जाति का मुख्य काम है। यदि ऐसा न हो तो मनुष्यों की उन्नति कभी न हो।

अन्य मतो के सम्बन्ध में।

इन सब मतवादियों, इनके चेलों और अन्य सबको परस्पर सत्यासत्य के विचार करने में अधिक परिश्रम न हो, इसलिए यह ग्रन्थ बना है।

जो-जो इसमें सत्य के मत का मण्डन और असत्य का खण्डन लिखा है वह सबको जानना ही प्रयोजन समझा गया है। इसमें जैसी मेरी बुद्धि, जितनी विद्या और जितना इन चारों मतों के मूल ग्रन्थ देखने से बोध हुआ है, उसको सबके आगे निवेदित कर देना मैंने उत्तम समझा है, क्योंकि विज्ञान गुप्त हुए का पुनर्मिलना सहज नहीं हैं। पक्षपात छोड़कर इसको देखने से सत्यासत्य मत सबको विदित हो जाएगा। पश्चात् सबको अपनी २ समझ के अनुसार सत्यमत का ग्रहण करना और असत्य मत को छोड़ना सहज होगा।

बारहवें समुल्लास में जो-जो जैनियों के मत के विषय में लिखा है सो-सो उनके ग्रन्थों के पते पूर्वक लिखा है। इसमें जैनी लोगों को बुरा न मानना चाहिए क्योंकि जो-जो हमने इनके मत विषय में लिखा है वह केवल सत्यासत्य के निर्णयार्थ है न कि विरोध व हानि करने के अर्थ। इस लेख को जब जैनी, बौद्ध वा अन्य लोग देखेंगे तब सब को सत्यासत्य के निर्णय में विचार और लेख करने का समय मिलेगा और बोध भी होगा।

यह बौद्ध जैन मत का विषय बिना इनके अन्य मतवालों को अपूर्व लाभ और बोध करने वाला होगा क्योंकि ये लोग अपने पुस्तकों को किसी अन्य मतवाले को देखने पढ़ने वा लिखने को भी नहीं देते।

—

ऋषिनिर्वाण-पर्व (दीपावली) पर विशेष लेख

महर्षि दयानन्द सरस्वती की दो विशेषताएं

—प्रा. भद्रसेन

आज जिस युग में आप और मैं जी रहे हैं, वह विज्ञान का युग कहलाता है। विज्ञान की सुख सुविधाओं और व्यवस्थाओं ने मानव के जीवन में आमूल-चूल परिवर्तन कर दिया है। मेरे और आपके जीवन का कोई भी ऐसा पहलू नहीं है, जो आज विज्ञान से प्रभावित न हो। प्रातः से लेकर रात तक तथा सिर से लेकर पैर तक हमारा हर पहलू विज्ञानसे प्राप्त होने वाले लाभों का गुणगान कर रहा है।

विज्ञान का अर्थ है—विशिष्ट, व्यवस्थित, अनुभावत्मक ज्ञान अर्थात् अपने चारों ओर घटने वाली अज्ञात घटनाओं एवं बातों के कार्य-कारण सम्बन्ध को टटोलना, अनुभव और परीक्षण के आधार पर किसी घटना या बात के अज्ञात, छिपे हुए रहस्य, कार्य-कारण नियम का पता लगाना। विज्ञान किसी पुस्तक, गुरु, रीति-रिवाज का गुलाम नहीं है, अपितु खुले दिल से हर होने वाली बात के न मालूम रहस्य को खोजता है। विज्ञान का इतिहास इस बात का साक्षी है, कि वह सदा प्रगतिशील रहा है। वह कभी भी लकीर का फकीर नहीं बना: इसीलिए ही उसने प्रत्येक क्षेत्र में अद्भुत प्रगति की है। हां, वहां कुछ सार्वकालिक तथ्य भी हैं।

आज हम जिस महापुरुष की महान् विभूति को प्रकाशपर्व के पवित्र अवसर पर स्मरण कर रहे हैं। उस महान् वैज्ञानिक में भी भी विज्ञान के उपरिनिर्दिष्ट सिद्धान्त के अनुसार दो विशेषताएं थीं—अर्थात् तर्क—सत्य की कसौटी पर किसी बात को कसना तथा प्रगतिशीलता।

तर्क का रूप पूरी तरह से विज्ञान से मेल खाता है। जैसे विज्ञान अनुभव और परीक्षण से अज्ञात के कार्य-कारण-नियम को खोजता है, वैसे ही तर्क की परिभाषा बताते हुए महान् तार्किक न्याय-विद्या-विशारद गौतम-मुनि ने न्याय दर्शन १,१,४० में लिखा है—"अविज्ञा-ततत्त्वेऽर्थे कारणोपपत्तित ऊहस्तर्कः" न मालूम बात या घटना का घटने वाली स्थितियों, कारणों के आधार पर ऊहा-पोह करना ही तर्क है, अर्थात् न सुलझने वाली बात को सुलझाने के लिए रास्ता निकालना। न्याय-दर्शन के भाष्यकार वात्स्यायन मुनि ने लिखा है—तत्त्वज्ञानाय कल्पते। सोऽयं तर्कः प्रमाणानि प्रतिसन्दधानः प्रमाणाभ्यनुज्ञानात् प्रमाणसहितो वादे साधनाय अर्थस्य भवति १,१। तर्क प्रमाणों का समन्वय करते हुए प्रमाणों के साथ मिल कर किसी विषय का प्रतिपादन करता है।

वेद को परम प्रमाण मानने वाले निरुक्तकार यास्क ने भी तर्क के महत्त्व को स्वीकार करते हुए कहा है कि एक बार कुछ जनों ने ऋषियों की परम्परा का विच्छेद होते देखकर चिन्ता के स्वर में पूछा—आगे कौन ऋषि होगा? महर्षि यास्क ने कहा—(मन्त्रार्थचिन्तायुक्त) तर्क ही ऋषि होगा।

तर्क और विज्ञान का यह पूरा का पूरा रूप महर्षि दयानन्द पर लागू होता है। तभी तो उन्होंने आर्य-समाज के चतुर्थ नियम मे लिखा है कि 'सत्य के ग्रहण करने और असत्य के छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिए। ऋषि से पहले हजारों संस्कृत के ग्रन्थ थे, जिन को 'बाबा वाक्यप्रमाणम्' या 'सत्यवचन महाराज' के रूप में आंख मूंद कर प्रमाण माना जाता था। परन्तु ऋषि ने इतनी लम्बी परम्परा के होते हुए भी शेष का त्याग कर आर्ष और वेद को एकमात्र प्रमाण-कोटि में रखा। ऋषि के सामने प्रत्येक बात को मानने की कसौटी—वेद-सत्य-तर्क ही थी। तभी मैक्समूलर ने कहा था—'स्वामी दयानन्द का एक-एक सिद्धान्त, नियम वेद पर आधारित था।'

महर्षि की दृष्टि में वेद ईश्वरीय वाणी होने से जल, वायु आदि प्राकृतिक तत्त्वों की तरह पूर्ण सत्य और अकाट्य है और वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है।

सारा का सारा सत्यार्थ-प्रकाश इस बात का साक्षी है कि महर्षि लकीर के फकीर न थे, आंख मूंद कर किसी बात को मानने के पक्ष में नहीं थे। वे हर बात को तर्क-सत्य की कसौटी पर कसते थे। सत्यार्थ-प्रकाश का यह नाम रखना तथा इस ग्रन्थ की भूमिका और अनुभूमिका का एक-२ शब्द आंख कान खोल देने वाला है। काश! कि हम इस ग्रन्थ की भूमिका ही पढ़ लेते।

ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका के यज्ञ प्रकरण में महर्षि ने लिखा है—"यद्यदावश्यकं युक्तिसिद्ध तत्तत्कर्तव्यं, नेतरत्। यज्ञ क्रिया के लिए जो-जो आवश्यक और युक्ति सिद्ध है वही-वही करना चाहिए, अन्य नहीं ('कुतः ? तैर्विना तदसिद्धेः) क्योंकि उसके बिना यज्ञ सम्पन्न न हो सकने से।

ऐसे ही विदेश जाने के सम्बन्ध मे निर्देश है कि 'प्रश्न—आर्यावर्त देश-वासियो का आर्यावर्त देश से भिन्न भिन्न देशों में जाने से आचार नष्ट हो जाता है, वा नही ? उत्तर—यह बात मिथ्या है. क्योंकि जो बाहर-भीतर की पवित्रता करनी, सत्यभाषणादि आचरण करना है, वह जहा कही करेगा आचार और धर्मभ्रष्ट कभी न होगा और जो आर्यावर्त में रह कर भी दुष्टाचार करेगा, वही धर्म और आचार-भ्रष्ट कहावेगा।'

(दशम समुल्लास)

इसलिए ही महर्षि अपनी तर्कशीलता के कारण कर्मठता के समर्थक थे। उनका दृढ मत था कि हर क्षेत्र में उस-उस क्षेत्र की पद्धति से ही कार्य करके सफलता प्राप्त की जा सकती है। साधना से ही साध्य की सिद्धि होती है। एतदर्थ-मन्त्र, तन्त्र, साहित्य और विशेषतः वेद तथा आर्ष-साहित्य को स्वीकार करते थे। प्रत्येक स्थिति में धर्म के समर्थक थे, धर्म तो टिका ही शास्त्रों पर है, तर्क पर नहीं। तर्क तो अश्रद्धा का भाई है और धर्म का सम्बन्ध केवल और केवल श्रद्धा से है। ऐसी स्थिति में महर्षि दयानन्द को धर्म-शास्त्र की अपेक्षा तर्क के साथ जोड़ना उचित नही है। यदि सर्वांग रूप से देखा जाए तो वस्तुतः आचार्य दयानन्द के विचारों के पीछे तर्क सत्य की मूल भावना विशेष कार्य करती है।

हां, आज धर्म को केवल कर्मकांड तक सीमित करके शास्त्र और श्रद्धा को गुलाम बना दिया गया है। वैसे धर्म का सम्बन्ध आचार, मानव-व्यवहार, मानवता से है। इसका किसी को क्या लाभ कि मैं कितनी चोटी, जनेऊ, बाल, माला रखता और जप, तप, सन्ध्या, हवन, पूजा-पाठ करता हूं। दूसरों को तो लाभ या प्रयोजन है कि व्यवहार में मैं उन के साथ कैसा वर्तता हूं। यदि मैं उनके साथ ईमानदारी, इन्सानियत से नहीं बर्तता, मेरी निशानियों, दिखावों का औरों को क्या लाभ ? अतः पवित्रता, मानवता ही वस्तुतः धर्म हैं और महर्षि ने इसलिए 'धृतिः क्षमा दमोऽस्तेय' इत्यादि मनुनिर्दिष्ट आचरण को ही सर्वत्र धर्म के रूप में प्रतिपादित किया है।

आज के जीवन के लिए तर्क और प्रगतिशीलता ये दोनों बातें अनिवार्य हैं। हमारा आज का जीवन इन दो के ही चारो ओर घूम रहा है। इन दोनों को अपनाए बिना वैज्ञानिक युग में हम जी नहीं सकते, दिन काटने की बात दूसरी है। आज के इस युग में प्रगति, सफलता का राज ही, ये दो बातें हैं। वैसे रोजमर्रा का हमारा जीवन यह स्वत. प्रमाणित करता है, कि हम धर्मशास्त्र या धर्म के कुछ रूपों की केवल दुहाई देते हैं, उन को व्यवहार मे स्थान नही देते हैं क्योंकि इनकी कोई उपयोगिता नहीं है—(काका कालेलकर) इसका स्पष्ट अर्थ यह है कि इन बातों को हम अव्यावहारिक (आऊट आफ डेट मानते हैं। पुनरपि इनकी दुहाई देकर इस तरह हम अपने आपको कितने दिन तक धोखे मे रख पाएंगे। अतः आइए इस प्रकाश-पर्व पर हम प्रकाश (सचाई-विज्ञान) के पथ को अपनाएं।

जब अब्दुल्ला गांधी पुनः हीरालाल गांधी बना

सत्यार्थप्रकाश का चमत्कार

कुछ मुसलमानो के बहकाने से महात्मा गांधी के सुपुत्र हीरालाल गान्धी मुसलमान बन गए और अपना नाम अब्दुल्ला गान्धी रख लिया। यह सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने के बाद वे पुनः हिन्दू बन गए। उस समय उन्होंने जो वक्तव्य दिया था, वह दर्शनीय है :

बम्बई, नवम्बर २०, १९३६

आदरणीय भद्रपुरुषों ! बहनो और भाइयो !

नमस्ते।

कुछ लोग यह जानकर हैरान होंगे कि मैं पुनः क्यों हिन्दू बन गया हूं। बहुत सारे मुसलमान और हिन्दू इस बारे में तरह-तरह की अटकलें लगा रहें होंगे, पर मैं अपना हृदय आपके सामने खोलकर रखे बिना नहीं रह सकता। आजकल धर्म के नाम पर जो कुछ चलता है, उसमें केवल सिद्धान्त ही शामिल नहीं हैं, परन्तु उसमें सिद्धान्तों के अलावा अपने अनुयायियों की संस्कृति, उनका सामाजिक जीवन और नैतिकता भी शामिल होती है। इन्हीं सबका अनुभव प्राप्त करने के लिए मैंने इस्लाम धर्म ग्रहण किया था। परन्तु मैंने जो कुछ देखा और अनुभव किया उसके आधार पर मैं कह सकता हूं कि प्राचीन वैदिक धर्म के सिद्धान्त, वैदिक संस्कृति, उसका साहित्य और भाषा उसके अनुयायियों का सामाजिक और नैतिक जीवन—किसी भी दृष्टि से इस्लाम से या अपने देश में प्रचलित अन्य मतों या धर्मों से हीन नहीं हैं, बल्कि उनसे बहुत उत्कृष्ट है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म के सही स्वरूप को यदि हम हम समझ सकें तो हम यह जोर देकर कह सकते है कि जो भी सत्य या सार्वभौम सिद्धान्त इस्लाम या अन्य मतमतान्तरों में पाए जाते हैं, वे सब वैदिक धर्म से ही गए हैं। इसलिए यदि दर्शनिक दृष्टि से देखा जाए तो धर्मान्तरण जैसी कोई चीज नहीं है, केवल सत्य की तलाश ही एक मात्र तत्व है।

जैसे कि कुछ सार्वभौम सत्य कतिपय साम्प्रदायिक सिद्धान्तों से मिलकर अन्य मतों के विकृत होने का कारण बन गए, वैसे ही भारत के कुछ मुसलमानों के साथ सम्बद्ध होने के बाद मैं यह कह सकता हूं कि मोहम्मद साहब के धार्मिक सिद्धान्त और फरमानों से आज से मुसलमान बहुत दूर चले गए हैं।

जहां तक मैं जानता हूं, हज़रत खलीफा उमर ने अन्य धर्मावलम्बियों के धार्मिक स्थानों और संस्थानों को नष्ट करने का कभी आदेश नहीं दिया—जो कि वर्तमान समय में हमारे देश की ज्वलन्त समस्या है।

इन परिस्थितियों और तथ्यों को देखते हुए मैं इस परिणाम पर पहुंचा हूं कि मैं अब किसी भी तरह इस्लाम की और अधिक सेवा नहीं कर सकता।

जैसे कोई नीचे गिरा हुआ व्यक्ति धीरे-धीरे ऊंचाई की ओर चलते हुए अपने मूल स्थान तक पहुंच जाता है, वैसे ही मैं भी महर्षि दयानन्द द्वारा प्रतिपादित वैदिक धर्म के सिद्धान्तों को पहचानने और उन तक पहुंचने का प्रयत्न कर रहा हूं। ये सिद्धान्त सत्य हैं, मौलिक है, सार्वभौम हैं और बिना किसी देश, जाति या सम्प्रदाय के भेदभाव के समग्र मानव-समाज के लिए वैसे ही उपयोगी हैं जैसे कि सूर्य की किरणें। बिना किसी भय और पक्षपात के ऋषि दयानन्द ने 'सत्यार्थ प्रकाश' और ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका'

आदि स्वरचित प्रसिद्ध ग्रन्थों में इन सिद्धान्तों का समर्थन और प्रतिपादन किया है।

इस प्रकार आर्य समाज के प्रयत्नों से और स्वामी दयानन्द सरस्वती के उपदेशों के अनुग्रह से मैं पुनः अपने पितृ-धर्म और मातृ-संस्कृति की चरण-शरण में आ रहा हूं। यदि मेरे माता-पिता, रिश्तेदार और मित्रगण इस समाचार को सुनकर प्रसन्न हुए हों, तो मैं उनसे आशीर्वाद की याचना करता हूं।

अन्त में, मैं इतना ही कहता हूं कि मेरी रक्षा करो, मुझ पर दया करो और मुझे क्षमा करो। बम्बई आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं का और यहां उपस्थित अन्य सभी सज्जनों का मैं हृदय से धन्यवाद करता हूं।

सबको 'नमस्ते' के साथ अभिवादन करके मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हूं :

'तमसो मा ज्योतिर्गमय।'

ओम् शान्तिः।

हीरालाल गांधी

(गांधी वाङ्मय संग्रहालय में सुरक्षित मूल हस्तलेख की फोटो प्रतिलिपि से अनुदित)

ऋषि सन्देश सुनाता है

—कविराज श्री बनवारीलाल 'शादां'

धरती के ताप मिटाना है, तुमको देश बचाना है,
उठो उठो अब अरे आर्यो, ऋषि सन्देश सुनाना है,
अनाचार और पाप बढ़ रहे, भारत के अब घर-घर में,
मानव फंसे लोभ में इतने, भ्रष्टाचार है दर-दर में,
गुरुकुल नव विद्यालय खोलकर।
वैदिक पाठ पढ़ाना है।

मूर्ति पूजा बढ़ी है इतनी, ठग बन गये भगवान यहां,
चोर-उच्चके व्यभिचारी का, होता है सम्मान यहां,
सत्यार्थ प्रकाश के प्रकाश से,
सब पोल खोल दिखाना है।

चांदी के सिक्कों से अब तो काम सभी हो जाते हैं।
सच्चे को ना टुकड़ा मिलता, झूठे मौज उड़ाते हैं।
आचार बने फिर से देश का,
आर्य देश बनाना है।

ऋषिवर के अनुयायी हो तुम, लेखराम के राही हो,
दयानन्द और हंसराज, लाजपत के वीर सिपाही हो।
उनका अब ऋण तुमको 'शादां'
तन-मन लगा चुकाना है।

—

सत्यार्थ प्रकाश– एक विवेचन

—डा. भवानी लाल भारतीय

मनुष्य प्रायः अपने विचारों की अभिव्यक्ति के लिए वाणी और लेखनी जैसे साधनों का प्रयोग करता है। व्याख्यान, प्रवचन तथा सम्भाषण प्रणाली के द्वारा हमें अपने विचारों के प्रचार प्रसार मे सहायता मिलती है, इसी प्रकार अपने मन्तव्यों और सिद्धान्तों को पुस्तक का रूप प्रदान कर हम उन्हें स्थायी रूप प्रदान करते हैं। भारत के धार्मिक एवं सास्कृतिक नवजागरण के अग्रदूत ऋषि दयानन्द ने जब अपने सिद्धान्तो का प्रचार आरम्भ किया, तो प्रारम्भ में उन्होंने व्याख्यान एवं प्रवचन प्रणाली को ही अपनाया था। किन्तु शीघ्र ही उन्होंने अनुभव किया कि स्वल्प अवधि के जीवन मे अधिकतम मनुष्य समुदाय तक अपनी बात को पहुचाना सम्भव नही होगा। यही परामर्श उन्हें अपने भक्त राजा जयकृष्णदास से भी मिला जिन्होंने स्वामी जी से उनके काशी निवास काल में निवेदन किया कि यदि अपने सिद्धान्तों को लेखबद्ध कर पुस्तक का रूप दे दें तो वह उन सभी लोगों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा जो उपदेश श्रवण का लाभ प्राप्त करने में असमर्थ हैं। फलतः स्वामी जी ने सत्यार्थ-पकाश नामक ग्रन्थ लिखने का संकल्प किया।

राजा जयकृष्णदास ने सत्यार्थ-प्रकाश लिखने की प्रेरणा तो दी ही, स्वव्यय पर प० चन्द्रशेखर नामक एक महाराष्ट्र निवासी पंडित को भी स्वामी जी की सेवा मे नियुक्त कर दिया। उस समय तक स्वामी दयानन्द का हिन्दी भाषा लेखन का अभ्यास विशेष परिष्कृष्ट नहीं था, अतः वे अपने मन्तव्य को मौलिक रूप से व्यक्त करते जाते और पं. चन्द्रशेखर उसे भाषा का परिधान पहनाने में दत्त चित्त रहते। इस प्रकार सत्यार्थ-प्रकाश का लेखन कार्य १२ जून १८७४ से आरम्भ होकर सितम्बर १८७४ में समाप्त हो गया। अगले वर्ष (१८७५ ई०) राजा जयकृष्णदास ने इस युगान्तरकारी ग्रन्थ को स्टार प्रेस बनारस में मुद्रित करा कर प्रकाशित किया।

सत्यार्थ-प्रकाश को विश्व के धार्मिक, दार्शनिक और आध्यात्मिक विचार समूह का नवनीत तथा मानव मनीषा का सार सर्वस्व कहा जा सकता है। जैसा कि नाम से ही विदित होता है, इस ग्रन्थ के माध्यम से लेखक ने सत्य अर्थ का प्रकाशन किया है। ग्रन्थ के नामकरण तथा लेखन ने भूमिका में लिखा "मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य-सत्य अर्थ का प्रकाश करना है, अर्थात् जो सत्य है उस को सत्य और जो मिथ्या है उस को मिथ्या ही प्रतिपादित करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। वह सत्य नही कहाता, जो सत्य के स्थान में असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाए। किन्तु जो पदार्थ जैसा है उस को वैसा ही कहना लिखना और मानना सत्य है।"

सत्यार्थ प्रकाश दो भागों में विभक्त है। पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध। पूर्वार्द्ध में दस अध्याय हैं जिन्हें लेखक ने 'समुल्लास' नाम से अभिहित किया है। इसमें क्रमशः ईश्वर तथा उसके अनेक नाम, बालकों की शिक्षा, उच्चतर शास्त्रीय शिक्षण व्यवस्था, गार्हस्थ्य धर्म और उसकी आनुषंगिक समस्याएं, वानप्रस्थ और परिव्राजकों के कर्तव्य कर्म, राजा और प्रजा अन्योन्याश्रित धर्म, वेद की सार्वभौम शिक्षाएं तथा ईश्वर का स्वरूप, सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय विषयक वैदिक चिंतन, जीवात्मा के बन्धन और मोक्ष का रहस्य तथा आचार अनाचार एवं भक्ष्याभक्ष्य विषय वर्णित और विवेचित हुए हैं। ग्रन्थ के उत्तरार्द्ध में लेखक ने क्रमशः आर्यावर्तीय मतमतान्तर, चार्वाक, जैन और बौद्ध आदि एतदेशिय नास्तिक (अवैदिक) मत तथा ईसायत एवं इस्लाम की आस्थाओं मान्यताओं तथा धारणाओं का

सप्रमाण, सतर्क तथा युक्ति सिद्ध खण्डन किया है । इस प्रकार धर्म के विधेयात्मक पक्ष का समग्र विवेचन करने के पश्चात् लेखक ने यह भी बता दिया है कि संसार में नाना मतमतान्तरों की उत्पत्ति और प्रचार के लिये मनुष्य का अज्ञान, हठ, दुराग्रह और अन्ध विश्वास ही उत्तरादायी है । ग्रन्थान्त में स्वमन्तव्यामन्तव्य शीर्षक प्रकरण लिखकर धर्म के उन मूलभूत तत्वों की परिभाषा और व्याख्या भी लेखक ने उपस्थित की है जो इस बात में ब्रह्मा से लेकर जैमनि मुनि पर्यन्त ऋषि मण्डली को मान्य रहे हैं और जिन्हें वह सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् साम्राज्य सार्वजनिक धर्म कहता है । इस प्रकार सत्यार्थ प्रकाश के लेखक ने अपने ग्रन्थ में वैयक्तिक और सामाजिक इतिकर्त्तव्यों के साथ मनुष्य के लिए मानवीय और आचारणीय नैतिक, दार्शनिक और आध्यात्मिक सिद्धांतों एव मान्यताओं की भी स्पष्ट रूपरेखा प्रस्तुत की है ।

समग्र दृष्टि से देखने पर विदित होता है कि स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ-प्रकाश के माध्यम से त्रिविध प्रकार की वैचारिक पद्धति और आचरण में लाई जाने योग्य आदर्श जीवन मीमांसा को प्रस्तुत किया है । इस दृष्टि से सत्यार्थप्रकाश के विभिन्न समुल्लासो को निम्न प्रकार से समूहबद्ध किया जा सकता है ।

१. वैयक्तिक, पारिवारिक और सामाजिक जीवन के आदर्श-इसके अन्तर्गत द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, पञ्चम, षष्ठ और दशम समुल्लासों को रखा जा सकता है ।

२. दार्शनिक और आध्यात्मिक सिद्धान्तो को विवेचन प्रथम, सप्तम, अष्टम तथा नवम् समुल्लासों मे किया गया है ।

३. मनुष्य के लिए अनिष्टकारी साम्प्रदायिक चिंतन तथा विभिन्न प्रकार का पारस्परिक विरोध उत्पन्न करने वाली कर्मकाण्ड विधियों के खण्डन परक समुल्लासों ग्रन्थ के उत्तरार्द्ध में रखे गए हैं ।

सत्यार्थ-प्रकाश लिखते समय लेखक को एक बड़ी आशंका इस बात की थी कि शायद उसके ग्रन्थ लेखन में निहित मूल आशय और अभिप्राय को मताभिमानी और सम्प्रदायों के प्रति निष्ठा रखने वाले पूर्वाग्रही पाठक ठीक-२ प्रकार से न समझ सकें । इसीलिए उन्होंने ग्रन्थारम्भ की भूमिका तथा उत्तरार्द्ध के प्रत्येक समुल्लास के प्रारम्भ मे प्रस्तुत अनुभूमिकाओ में ग्रन्थ लेखन में उनके मौलिक अभिप्राय तथा खण्डन मडन में निहित उनकी उदार तथा पक्षपात रहित दृष्टि को स्पष्ट करने मे लेखक ने कोई सकोच नही किया है । स्वामी जी को आशका थी कि 'जो कोई इस ग्रन्थ कर्त्ता के तात्पर्य से विरुद्ध मनसा से देखेगा उसको कुछ भी अभिप्राय विदित नही होगा । ...यद्यपि इस ग्रन्थ को देखकर अविद्वान् लोग अन्यथा ही विचारेंगे तथापि बुद्धिमान् लोग यथायोग्य इसका अभिप्राय समझेंगे ।' इसी प्रकार खण्डन-मण्डन के नाजुक विषय में तो और अधिक बुद्धिभेद तथा शंकाकुल वातावरण बनने की सम्भावना को ध्यान में रखकर सत्यार्थ प्रकाशकार ने उत्तरार्द्ध की अनुभूमिकाओ में लिखा—'इस मेरे कर्म से यदि उपकार न मानें तो विरोध भी न करें, क्योंकि मेरा तात्पर्य किसी की हानि वा विरोध करने में नहीं, किन्तु सत्यासत्य का निर्णय करने-कराने का है ।' स्वामी जी का दृढ़ विचार था कि जब तक वादी प्रतिवादी होकर प्रीति से वाद व लेख न किया जाए तब तक सत्यासत्य का निर्णय नहीं हो सकता । उनका यह भी विश्वास था कि 'मनुष्य का आत्मा यथायोग्य सत्यासत्य का निर्णय करने का सामर्थ्य रखता है ।...इसलिए सत्यार्थ प्रकाश का यह खण्डन-मण्डन प्रधान उत्तरार्द्ध मत-मतान्तरों को वास्तविक स्थिति और उनके मानवता को भ्रमित करने के प्रयासों का उद्घाटन करने की दृष्टि से ही लिया गया है ।

ग्रन्थ लेखन विषयक अपने अभिप्रायो को इतने स्पष्ट रूप में व्यक्त करने पर भी विभिन्न स्तरो के पाठकों के मनों मे नाना प्रकार की भ्रान्तिया सत्यार्थ प्रकाश को लेकर यदा-कदा उत्पन्न होती रही हैं । सामान्य पाठक की तो बात ही क्या, महात्मा गाधी जैसे विचारशील एव उदार आशय वाले महापुरुष भी सत्यार्थ प्रकाश के खण्डनात्मक अश मे लेखक के आशय को समझने में असमर्थ रहे, फलतः उन्होंने इस वैचारिक क्रान्ति के उद्भावक ग्रन्थ को निराशाजनक पुस्तक कहा । जब महात्मा गाधी को

(शेष पृष्ठ २६ पर)

भी सत्यार्थ प्रकाश के पढ़ने और समझने में भ्रम हो सकता है तो वे मतान्ध तथा साम्प्रदायिक भावापन्न पण्डे पुजारी, मुल्ला, मौलवी एवं पादरी तो भला इस ग्रन्थ रत्न के गूढ़ाशय को समझ ही क्या सकते थे जिन्होंने सदा ही अपने स्वार्थ संकुल दृष्टिकोण को प्राथमिकता दी तथा ज्ञानालोक के प्रसारक चण्डांशु रूप सत्यार्थ प्रकाश पर निन्दा और कुत्सा रूपी पंक उछालने का निष्फल प्रयास किया।

इस प्रकार हम देखते हैं कि महर्षि दयानन्द रचित इस अद्भुत कृति ने संसार के धर्म, दर्शन, विचार तथा चिन्तन के क्षेत्र में नवीन प्रकाश फैलाया है। विश्व के धार्मिक साहित्य में सत्यार्थ प्रकाश का महत्वपूर्ण स्थान है। आने वाले युगों का मानव इस ग्रन्थ से सतत प्रेरणा ग्रहण करता रहेगा!

—

सत्यार्थ प्रकाश

यह दीप नहीं है दावा नल।

तुम समझे तम फैला काला, यह जली अतः दीपक ज्वाला,
जिससे पथ देख सके दुनिया, भटके न कहीं आंखों वाला,
यह भूल तुम्हारी थी केवल। यह दीप नहीं है दावानल ॥

था घिरा क्योंकि भीषण तम घन,
थे तीक्ष्ण शूल औ शुष्क सुमन,
चुभते थे, थी पीड़ित जगती,
इसलिए बना उसको ईंधन—
यह दावानल है बला प्रबल।
यह दीप नहीं है दावानल ॥

मिथ्या हो राख न तब जलकर,
यह नहीं बुझाए, बुझने का,
होगा जितना तूफान सबल।

तब तक यह सत्य जले भास्कर,
यह लेगा उतना जोर पकड़—
यह दीप नहीं, है दावानल।

—पं. उदयवीर विद्यालंकार

सत्यार्थ प्रकाश की गरिमा

—श्री विद्यानन्द सि. शास्त्री

उन्नीसवी शताब्दी मे दो महाविभूतियां कार्य क्षेत्र मे दिखाई पडी, एक रूस का कार्ल मार्क्स तथा दूसरा भारत का दयानन्द। दोनों के कार्य भिन्न-भिन्न हैं, किन्तु समय एक ही है। एक ओर जहां कार्ल मार्क्स ने रोटी कपडे की समस्या को सुलझाया वहा दूसरी ओर दयानन्द ने मनुष्य की सर्वांगीण उन्नति को ओर ध्यान दिलाया। कार्ल मार्क्स की प्रसिद्ध कृति 'कैपिटल' है और महर्षि दयानन्द की 'सत्यार्थ प्रकाश'। वास्तव में हम विचार करें तो देखते हैं कि जीवन की आवश्यकताएं रोटी कपड़ों तक ही सीमित नहीं हैं, उसके पश्चात् भी अनेक कर्त्तव्य कर्म शेष रह जाते हैं। इसलिए प्रथम तो जनता इस ओर मुड़ी, किन्तु जब देखा कि मानव-कल्याण इतने से ही नही हो पाता है तो शीघ्र ही इस मार्ग को छोडने लगी इसके विषय में माननीय प० गगाप्रसाद जी उपाध्याय लिखते हैं, 'सौभाग्य से समझदारी से परिपूर्ण विचारो का प्रभुत्व होने लगा है और सौ वर्ष से अधिक पूर्व से जो धर्म विरोधी आन्दोलन प्रारम्भ हुआ था और जो बाद में जन साधारण में व्याप्त हो गया था उसका प्रभाव समझदार व्यक्तियो पर नही रहा है। भयकर तूफान जो

कार्ल मार्क्स की प्रसिद्ध कृति 'कैपिटल' है और महर्षि दयानन्द की 'सत्यार्थ प्रकाश'। वास्तव में हम विचार करें तो देखते हैं कि जीवन की आवश्यकताएं रोटी-कपड़ों तक ही सीमित नहीं हैं, उसके पश्चात् भी अनेक कर्त्तव्य कर्म शेष रह जाते हैं। इसलिए प्रथम तो जनता उस ओर मुड़ी, किन्तु जब देखा कि मानव-कल्याण इतने ही से नहीं हो पाता है तो शीघ्र ही इस मार्ग को छोड़ने लगी।

निम्न वर्ग के लोगों के हृदय में घर किए हुए हैं वे कालान्तर में शान्त हो जाएंगे। यह था एक मनुष्य द्वारा अदूरदर्शिता पूर्ण प्रशस्त किया गया मार्ग। ऋषि दयानन्द ने भी एक मार्ग प्रशस्त किया जो वैदिक धर्म के नाम से प्रसिद्ध है। यह ऋषि-मुनियो द्वारा निर्धारित सनातन से प्रवाहित मार्ग है। एक पर चलने से भूख तो मिट सकती थी किन्तु शान्ति नहीं मिल सकती थी। दूसरे पर चलने से सुख शान्ति दोनो मिल सकती है किन्तु 'यत् तदग्रे' विषमिव परिणामेऽमृतोपमम्' गीता (१८-३७) अर्थात् जितने भी मनुष्योचित शुभ कर्म हैं प्रथम करने मे विष के तुल्य किन्तु परिणाम में अमृत के समान होते हैं, वाली बात चरितार्थ करते हुए भी सत्यार्थ प्रकाश मे इसी प्रकार के विचारों का समावेश है।

अज्ञान की ज्योतिहीन छाया भूतल पर पूर्णतः व्याप्त थी। मानव की मानवता ईर्ष्या-द्वेष की भट्टी में भस्म हो समाप्त हो चुकी थी। मोक्ष प्रदायिनी पवित्र गंगा में नाना नदी-नालों के मलिन जल आकर उसमें दुर्गन्ध उत्पन्न कर चुके थे। स्याही की काली-कलूटी रजनी के मध्य उलूकगण मन-मानी चालें चल रहे थे। मानवीय गगन मण्डल में चांदनी के प्रभाव में क्षुद्र तारागण ही टिमटिमा जाते थे। अज्ञान, स्वार्थ अविद्या का नग्न नृत्य हो रहा था। इस प्रकार सत्य वेद ज्ञान की ज्योति से दूर मानव को ले जाने का प्रयास करते हुए अज्ञान के पुजारियों को देख ऋषि मौन न रह सके। उस समय ऋषि की क्रान्तदर्शी ज्ञान ज्योति ने अन्धकाराच्छादित मस्तिष्क को आलोकित करना चाहा और वह ज्ञान ज्योति किरण बनकर स्फुटित हुई सत्यार्थ प्रकाश के रूप में, जिससे साधक शीघ्र ही चल पड़े अपने चिर विस्मृत सच्चे मार्ग पर। नाना सम्प्रदाय वालों के फैलाए पाखण्ड जाल के तिमिर को हटाने के लिए सत्यार्थ प्रकाश विद्युत ज्योति बना।

मानव जीवन का ऐसा पहलू है जिस पर इस ग्रन्थ में प्रकाश न डाला गया हो। सत्य क्या है ? मनुष्योचित कौन से कर्म ग्रहणीय हैं और कौन से त्याज्य ! सब सत्यार्थ प्रकाश मे निहित हैं। यही कारण है कि जनता इसे श्रद्धा से देखती है और उस पर आचरण करना चाहती है। इस ग्रन्थ को बनाने का उद्देश्य क्या है ? इसके विषय मे स्वयं ऋषि लिखते हैं मेरा इस ग्रन्थ को बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य अर्थ का प्रकाश करना है अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है।'

आद्योपान्त सत्य अर्थ के लिए ही प्रकाश मिलता है। सभी मतावलम्बी इस समय तक अपने पक्ष को पुष्ट करने में ही अपना गौरव समझते थे, जिससे वैर-भाव बढ़कर परस्पर लड़ाई-झगड़े हुआ करते थे। जो भी कार्य क्षेत्र में उतरता वह अपने को सिद्ध, योगी, अवतारी भगवान का दूतादि सिद्ध करता है और इसी आडम्बरिक बल पर प्रसिद्धि भी पा लेता था, किन्तु तभी जब तक जनता वास्तविकता से दूर रहती थी। लेकिन ऋषि ने कहीं भी अपने को सिद्ध नहीं बताया है। उन्होंने अपने पक्ष को पुष्ट करने के लिए तर्क का सहारा अवश्य लिया किन्तु सर्वत्र सत्य के आधार पर ? सत्यार्थ प्रकाश के सभी समुल्लास सार्वभौमिकता के विचारों से परिपूर्ण है, कहीं भी संकीर्ण भावना नहीं आ पाई है। स्वयं भूमिका में ऋषि लिखते हैं, 'यद्यपि मैं आर्यावर्त्त देश में उत्पन्न हुआ हूं और वसता हूं तथापि जैसे इस देश के मत-मतान्तरों की झूठी बातों का पक्षपात न कर यथातथ्य प्रकाश करता हूं वैसे दूसरे देशस्थ वा मतोन्नति वालों के साथ भी वर्तता हूं।' ये वाक्य उनके मनुष्योन्नति के विचार को पुष्ट करने को काफी हैं।

यह ग्रन्थ चौदह समुल्लासों अर्थात् विभागों में रचित है। विचारों का समन्वय दो खण्डों अर्थात् पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध में विभक्त है। प्रथम खण्ड पूर्वार्द्ध में दश समुल्लास और उत्तरार्द्ध में चार समुल्लास हैं। इस ग्रन्थ को यदि हम 'सूत्र' कहें तो कोई अतिश्योक्ति न होगी। क्योंकि सूत्र उसे कहते हैं जो बहुत को थोड़े में बतला दे। भिन्न-भिन्न समुल्लासों में जो भी विषय हैं वे सब सूत्र रूप में ही हैं। जितने भी विषय अर्थात् मूर्ति पूजा, ज्ञान, कर्म उपासना, राजकार्य, बौद्ध, जैन, ईसाई, मुस्लिम मतादि हैं उन सभी पर सूत्र रूप में ही प्रकाश डाला गया हैं। बाद में इन एक विषयों को ही लेकर आर्य समाजियों ने अनेक ग्रन्थ तैयार कर सामने रखे।

धार्मिक भाव

वह समय कितना भयंकर था कि जब हमारे धर्माचार्य लोगों ने धर्म-कर्म की कुंजी अपने हाथों में रखी थी। ये सन्मार्ग या सत्योपदेश तो न करते थे किन्तु धर्म-कर्म का ठेका अपने ही पास रखा बताते थे जो जहां से उठता

वहीं से कुछ उपदेश कर गुरु बन बैठता था। ईश्वर के नाम पर मनमानी ठगी हो रही थी। ज्ञान, कर्म, उपासना मुक्ति के मार्ग समाप्त हो गए थे। धर्म मिट्टी के घड़े से भी कमजोर बन चला था। ऐसे समय में वैदिक धर्म का वास्तविक स्वरूप ऋषि ने सत्यार्थ प्रकाश रूपी दर्पण में दिखलाया। भिन्न-भिन्न मत-मतान्तर दुःखी आत्माओं को शान्ति देने के स्थान पर उन्हें और दुःखी बनाते थे, पुराण मात्र ही धर्म के पुस्तक माने जाते थे, लगभग एक हजार मतमतान्तर मनुष्यों को तबाह कर रहे थे, ऋषि ने सत्यार्थ प्रकाश में सब मतों को तर्क की कसौटी पर कस सर्व साधारण के सामने प्रस्तुत किया, जिससे पाठकों को स्वतन्त्र विचार करने की शक्ति मिली। सत्यार्थ प्रकाश का एकादश समुल्लास बताता है कि धर्म तो विद्या पढ़ने, ब्रह्मचर्य करने, पूर्ण युवावस्था में विवाह, सत्संग, पुरुषार्थ सत्य व्यवहार, आदि में है। मनुष्य अपने नित्य के कार्यों को भूला बैठा था, किन्तु सत्यार्थ प्रकाश ने पंचयज्ञों का विधान रखा। धार्मिक जगत पर जहां इसका तात्कालिक प्रभाव पड़ा वहां इसने संसार के समस्त विचारशीलों एवं दार्शनिकों के मस्तिष्क में एक विचित्र उथल-पुथल उत्पन्न कर दी जिससे अब तक के समस्त धार्मिक, सामाजिक, दार्शनिक एवं आडम्बरी ग्रन्थों की एक नए ढंग से व्याख्या की जाने लगी। सर्वप्रथम पाखण्ड और आडम्बर पूर्ण धर्म पर विचार करने की शक्ति सत्यार्थ प्रकाश ने ही दी। गंगा स्नान को मुक्ति का साधन माना जाता था। न तस्य प्रतिमा अस्ति" वेद मन्त्रों से मूर्ति पूजा सिद्ध की जाने लगी थी, इन सबकी पोल खोलता हुआ सत्यार्थ प्रकाश निरन्तर लोकप्रिय होता गया। इसने सभी मतमतान्तरों को समाप्त कर "वेदोऽखिलो धर्म-मूलम" का मार्ग प्रशस्त किया। सभी धर्मों के विषय में संक्षिप्ततः जितना प्रकाश पाठकों को यहां मिलेगा उतना और कहीं नहीं।

सामाजिक भाव

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। जो कुछ भी वह सीखता है और जो कुछ कर्म करता है उसका प्रभाव समाज पर अवश्य पड़ता है। प्राचीन ऋषिमुनियों ने हमारी उन्नति के लिए वर्णाश्रम की व्यवस्था की थी इसी वर्णआश्रम के आधार पर मनुष्य सुखी था। ये वर्ण-आश्रम समाज रूपी रथ के पहिए थे। कालान्तर में इनका रूप सर्वथा लुप्त हो गया। यही कारण है कि आज भी हमारे समाज में भेद-भाव, छुआ-छूत का रोग व्याप्त है। आज तो कुछ अंश तक वास्तविकता का ज्ञान है, किन्तु सत्यार्थ प्रकाश के पूर्व की हालत दयनीय थी। समाज का एक आवश्यक अंग घृणा का पात्र बना हुआ था। वर्णों की उत्पत्ति गुण, कर्म स्वभाव से न मानी जाकर जन्म से मानी जाने लगी थी। कोई वर्ण व्यवस्था का वास्तविक रूप बतलाने वाला न था, किन्तु सत्यार्थ प्रकाश की निम्न पंक्तियों ने रहस्य खोल दिया—"प्रश्न—क्या जिसके माता-पिता ब्राह्मण होता है और जिसके माता-पिता अन्य वर्णस्थ हों उसकी सन्तान ब्राह्मण कभी हो सकती है?" उत्तर—हां, बहुत से हो गए, होते हैं और होंगे भी, जैसे छान्दोग्य उपनिषद में जाबाल ऋषि अज्ञातकुल, महाभारत में विश्वामित्र क्षत्रिय वर्ण और मातंग ऋषि चाण्डाल कुल ब्राह्मण हो गए थे, अब भी जो उत्तम विद्या शोभा वाला है, वही ब्राह्मण के योग्य होता है और वैसा ही आगे भी होगा।" कथित ब्राह्मणों ने विवाह की अवस्था बाल्यकाल में ही निर्धारित कर रखी थी। यहां तक समस्या हो गई थी कि जन्मते ही शादी तय हो जाती थी या अबोध की ही शादी हो जाती थी। वर-वधू के परस्पर प्रतिज्ञा के जो मन्त्र थे वे कथित ब्राह्मण ही बोल देते थे। यही नहीं उन्होंने शास्त्रों में ऐसी व्यवस्था रक्खी जिससे माता-पिता को कच्ची उम्र में ही शादी कर देना आवश्यक हो जाता था। उस समय के लिए सत्यार्थ प्रकाश के निम्न वाक्य कितने प्रभावोत्पादक हुए—'जब तक इसी प्रकार सब ऋषिमुनि, राजा-महाराजा, आर्य लोग ब्रह्मचर्य से विद्या पढ़के ही स्वयंवर विवाह करते थे तब तक इस देश की सदा उन्नति होती थी। जब से यहां ब्रह्मचर्य से विद्या न पढ़ना, बाल्यावस्था में पराधीन अर्थात् माता-पिता के अधीन विवाह होने लगे तब से क्रमशः आर्यावर्त देश की हानि होती चली आयी इससे इस दुष्ट काम को छोड़कर सज्जन लोग पूर्वोक्त

प्रकार के स्वयंवर विवाह करें। सो विवाह वर्णानुक्रम से करें और वर्ण व्यवस्था भी गुण, कर्म, स्वभाव के अनुसार होनी चाहिए।"

मनुष्य-मनुष्य से घृणा करने लगा था। खान-पान में जहां मद्यपान आदि पदार्थों का सेवन बढ़ा, वहां नौ कन्नौजिये ग्यारह चूल्हे भी बन गए। देखें सत्यार्थ प्रकाश में प्रस्तुत पंक्तियां "जो-जो बुद्धि का नाश करने वाले पदार्थ हैं, उनका सेवन कभी न करें और अन्न, सड़े, बिगड़े, दुर्गन्ध आदि से दूषित अच्छे प्रकार न बने हुए और मद्य मांसाहारी, म्लेच्छ कि जिनका शरीर मद्य मांस के परमाणुओं से ही पूरित है उनके हाथ का न खावें।" यही नहीं गाय आदि उपकारी पशुओं का भी भक्षण होता था। उस पर ऋषि ने जहां 'गोकरुणानिधि' लिखकर समाज का ध्यान खींचा वहां सत्यार्थ प्रकाश के दशम समुल्लास में भी वर्णन किया जो अति विचारणीय है।

समाज में स्त्रियों की दशा अत्यन्त गिरी हुई थी। 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' को समाज भूल गया था। उनको पढ़ाना अधर्म समझा जाता था। स्त्रीशूद्रो नाधीयाताम् की व्यवस्था कर दी गई थी, किन्तु सत्यार्थ प्रकाश ने स्त्रियों का स्थान समाज में पुरुषों के बराबर ही बताया। एक स्थल पर ध्यान चला ही जाता है—जैसे पुरुषों को व्याकरण धर्म, और अपने व्यावहारिक विद्या न्यून से न्यून अवश्य पढ़नी चाहिए, वैसे स्त्रियों को भी व्याकरण, धर्म, वैद्यक, गणित, शिल्प विद्या तो अवश्य सीखनी ही चाहिए। भूत प्रेत के भाव हमारे अन्दर व्याप्त थे। उनके निराकरण के लिए जादू टोना किया जाता था। जन्मोत्सव पर जन्म पत्र बनता था, इन अनेक सामाजिक दोषों को दूर करने के लिए द्वितीय समुल्लास दर्शनीय है।

वास्तव में यदि कह दें कि समाज की अवस्था देखकर ऋषि ने सत्यार्थ-प्रकाश की रचना की थी तो कोई अत्युक्ति न होगी। समाज को सत्यार्थ-प्रकाश द्वारा एक नई चेतना और ज्ञान मिला जिससे शीघ्र ही समाज में क्रान्तिकारी विचार चहुं ओर फैल गए, जो समाज में भयंकर विषमता थी वह काफी दूर होने लगी। सत्यार्थ प्रकाश का ही प्रभाव हैं कि आज समाज रचना नये ढंग से हो रही है।

राजनीतिक भाव

इस युग में पुनः एक बार प्रजातन्त्र के भावों को सत्यार्थ प्रकाश ने प्रचलित किया है। राजा को प्रजा द्वारा निर्वाचित किए जाने का सबल अनुरोध किया है, कुल परम्परा से किसी को राजा मानना इसे अभीष्ट नहीं है। राजा और राज कर्मचारियों का चुनाव दलबन्दी से ऊपर उठकर गुणों के आधार पर करने पर बल दिया। परतन्त्रता की बेड़ी में जकड़े हुए भारत का कल्याण सत्यार्थ प्रकाश से ही हुआ। आर्य समाजियों ने अपने अपने को स्वतन्त्रता की वेदी पर न्योछावर किया। सत्यार्थ प्रकाश के क्रान्तिकारी विचार ने कि विदेशी राज कितना भी पितृवत पालन करे अहितकर है, आर्य समालियों और देश-भक्तों को चुप नहीं रहने दिया। इसमें ऐसे राज्य की कल्पना है जिसमें प्रजा सुखी, सदाचारी, धर्मात्मा, धनी एवं शिक्षित बने। साथ ही राष्ट्र व्यवस्था के लिए राजार्य सभा धर्मार्य सभा और विद्यार्य सभा की व्यवस्था हमारे सामने रखी। इन्हीं तीनों सभाओं की सम्मति से राजनियम (कानून) बनने चाहिये। दण्ड व्यवस्था, राजकर्तव्य राज कर्मचारियों के अठारह व्यसन निषेध, मन्त्री दूत, राजपुरुषों के लक्षण, मन्त्रीमण्डल के कार्य दुर्ग निर्माण व्यवस्था, युद्धनीति, ग्राम-नगर व्यवस्था कर-ग्रहण, शत्रु से युद्ध में बचावः न्याय, साक्षी, आदि अनेक राजसम्बन्धी नियम, छठे समुल्लास में देखने को मिलते हैं। राजनीति विषयक विशेष जानकारी के लिए कहा है—'विशेष वेद, मनुस्मृति सप्तम, अष्टम, नवम अध्याय, शुक्रनीति तथा विदुर प्रजागर और महाभारत शांति पर्व के राजधर्म और आपद्धर्म पुस्तकों में देखकर पूर्ण

राजनीति को धारण करके माण्डलिक अथवा सार्वभौमिक चक्रवर्ती राज्य करें और ये समझें कि "वयं प्रजापते: प्रजा अभूम" (यजुर्वेद १८ । २९) । आज भारतीय सरकार ने जिन कार्यों को अपने हाथों में लिया है उन सभी का सूत्रपात सत्यार्थ प्रकाश में मिलता है ।

ऐतिहासिक भाव

ऐतिहासिक भावों से भी सत्यार्थ प्रकाश ओत-प्रोत है । एक इतिहासकार भूतकालिक बातों को निष्पक्ष तथ्ययुक्त प्रकाश में लाने का प्रयत्न करता है । दुर्भाग्य से ब्रिटिश काल में इतिहास की जो छीछालेदर हुई थी वह अति दयनीय है । इस काल में उन्हीं विचारों को प्रश्रय दिया जो ब्रिटिश राज्यानुकूल थे । भारतीय इतिहास के सांस्कृतिक पृष्ठ लगभग समाप्त हो चुके थे । रामकृष्ण आख्यानों के केवल नाटक मात्र ही रह गये थे । शिवाजी आदि लुटेरे कहे जाते थे । वेदादि सभी पवित्र ग्रन्थ काल्पनिक काव्य माने जाते थे । आर्य विदेशी थे, गंवार थे अशिक्षित थे ऐसे अनेक भाव नवीन इतिहास रचना में स्थान पा गए थे उस समय सत्यार्थ प्रकाश ने भारतीयता का आदर्श रूप हमारे सामने रखा ।

साहित्यिक भाव

साहित्यिक दृष्टि से भी सत्यार्थ प्रकाश कसौटी पर कसने से खरा उतरता है । साहित्य, साहित्यकार के हृदय में उठने वाले भावों का प्रतिबिम्ब होता है । यद्यपि इसका निर्माण साहित्यिक दृष्टि से कदापि नहीं किया गया है । इसका उद्देश्य तो मानव मात्र को सुमार्ग पर लाना ही था । दर्पण में जिस प्रकार मनुष्य अपना प्रतिबिम्ब देखता है उसी प्रकार इस सत्यार्थ प्रकाश-दर्पण में तत्कालीन अनेक घटनाओं विचारों तथा प्रवृतियों की प्रतिच्छाया देखने को मिल जाती है । एक साहित्यकार अपने काल की घटनाओं से प्रभावित होकर चित्र करता है, किन्तु ऋषिराज ने इस ग्रन्थ में भूत, वर्तमान, भविष्य तीनों कालों का चयन कर एक एक अपूर्व कोष तैयार कर दिया है । एक साहित्यकार स्वभावत: प्रगतिशील होता है, उसकी प्रगतिशीलता ही उसे अपने मानसिक मनोभावों को व्यक्त करने को बाध्य करती है । साहित्यिक को प्रभावयुक्त बनाने के लिए यह आवश्यक है कि वह जीवनोपयोगी सच्चाइयों को प्रकाश में रखे । सत्यार्थ प्रकाश का प्रत्येक स्थल साहित्यिक गुणों से भरा है एक स्थल पर श्री प्रेमचन्द जी ने कहा है कि—"साहित्य उसी उसी रचना को कहेंगे जिसकी भाषा प्रौढ़, परिमार्जित एवं सुन्दर हो और जिसमें दिल और दिमाग पर असर डालने का गुण हो ।" यदि हम इस लिखित कथन के आधार पर सत्यार्थ प्रकाश की समीक्षा करें तो हम देखते हैं । कि वह प्रत्येक दृष्टि से साहित्यिक दृष्टिकोणों से पूर्ण हैं ।

सक्षेप में, सत्यार्थ प्रकाश वह ग्रन्थ है जो मानव जीवन के सर्वांगीण विकास के प्रत्येक स्थल पर प्रकाश-स्तम्भ बन ज्योति: प्रसारण करता है ।

ऋषिवर तुमने—

रमाकान्त दीक्षित

ऋषिवर तुमने जन-मानस में, मनहर बीन बजाई।
जप, तप, साहस, बल, संयम के सपने टूट रहे थे,
पावन धर्म ध्वजा को पाकर मिलकर लूट रहे थे,
धर्म दिवाकर तुमने बढ़ाकर उनको फिर ललकारा,
हमें आज भी दिशा बताते, बनकर तुम ध्रुवतारा,
ग्राम नगर की गली-गली में, रस की धार बहाई।
ऋषिवर तुमने जन-मानस में मनहर बीन बजाई।

प्रेय मार्ग को छोड़ा तुमने, श्रेय मार्ग अपनाया,
नया उजाला दिया जगत को तमका क्षोभ भगाया,
पतझर ने बगिया लूटी थी, फिर से फूल खिले हैं,
भेद-भाव के नाग लहरते, अब तो गले मिले है,
धर्म नीति के गठ-बन्धन पर गूंज उठी शहनाई।
ऋषिवर तुमने जन-मानस में मनहर बीन बजाई॥

अब कुंठा, संत्रास, घुटन की. सिमट रही है साया,
प्रदीप जलाकर तुमने, भ्रम का भूत भगाया,
जन-जीवन के अन्तर्मन का, शीशा संवर रहा है,
घर के आंगन में खुशियों का, कुमकुम बिखर रहा है,
युग से भटक रही मानवता को, सीधी राह दिखाई।
ऋषिवर तुमने जन-मानस में, मनहर बीन बजाई॥
मिला तुम्हीं से गौरव हमको, जीवन की परिभाषा,
अध्यात्म गिरि पर चढ़ जाने, जगती को नव आशा,
शाश्वत ज्ञान, कर्म भक्ति को, तुम सा पूत मिला जब,
चमके नभ में चांद सितारे सुख का भाग मिला तब.
दीपित तम का कोना-कोना, ऐसी ज्योति जगाई।
ऋषिवर तुमने जब मानस में, मनहर बीन बजाई॥

—

सत्यार्थ प्रकाश गौरव-गान

पं० हरिशंकर शर्मा

प्राणों से भी बढ़ कर प्यारा।
है 'सत्यार्थ प्रकाश' हमारा ।।

मोह महातम हरने वाला ज्ञान उजाला करने वाला।
भव्य भावना भरने वाला दिव्य ज्योति का स्रोत-सितारा ।।
है 'सत्यार्थ प्रकाश' हमारा।

वैदिक पाठ पढ़ाने वाला गत गुण-गौरव गाने वाला।
फिर से 'सतयुग' लाने वाला दयानन्द ऋषि का चखतारा।।
है 'सत्यार्थ प्रकाश' हमारा।

शुभ सन्मार्ग सुझाया इसने बुद्धिवाद उमगाया इसने।
'गुरुडम' का गढ़ ढाया इसने जग में निर्भय भाव प्रचारा ।।
है 'सत्यार्थ प्रकाश' हमारा।

सोता देश जगाया जिसने प्रेम-प्रवाह बढ़ाया जिसने।
स्वालम्ब सिखलाया जिसने जिसने 'सत्यधर्म' विस्तारा ।।
है 'सत्यार्थ प्रकाश' हमारा।

कोटि-कोटि जनता का जीवन, अर्पित है इस पर समोदमन।
त्यागी, सुधी, साधुओं का धन, मानवता का सबल सहारा ।।
है 'सत्यार्थ प्रकाश' हमारा।

यदि इस पर संकट आएंगे रक्षाहित हम डट जाएंगे।
मर जाएंगे, कट जाएंगे, मिटा न आगे मिटने हारा।
है सत्यार्थ प्रकाश' हमारा।

जब हम प्रण पर अड़ जाते हैं कुछ न विरोधी कर पाते हैं।
सब के पांव उखड़ जाते हैं मिलता है जिससे बल सारा ।।
है 'सत्यार्थ प्रकाश' हमारा।

वैदिक धर्म-ध्वजा फहराएं बलि वेदी पर सीस चढ़ाएं,
मरते-मरते गाते जाएं अजर, अमर अक्षय ध्रुवधारा ।।
है 'सत्यार्थ प्रकाश' हमारा।

—

ऋषि दयानन्द के साक्षात् दर्शन

—स्वामी अच्युतानन्द

सम्वत् १९२७ में जब मैं काशी में पढ़ता था। मैंने एक विद्वान् के पास एक लम्बा चौड़ा नागरी अक्षरों में लिखा हुआ विज्ञापन देखा, जो हमारे महर्षि दयानन्द जी की ओर से बांटा गया था। उसमें लिखा था कि ऐकाशी के विद्वानो! समझो और सोचो, तुम्हारी इस धूर्तता से क्या धर्म निर्णय हो सकेगा? आओ जिसने मूर्ति पूजा विषय में शास्त्रार्थ करना है कर लो। क्यों अज्ञानता में पड़े हो? इस पाषाण पूजा से कुछ न मिलेगा।

एक दिन मैं घूमता हुआ उस आनन्द बाग में चला गया जहां हमारे पूज्य स्वामी जी महाराज विराजमान थे, एक लकड़ी के तख्त पर चौकड़ी लगाकर केवल एक भंगवा कोपीन पहने हुए बैठे थे। नीचे कई और सज्जन भी बैठें स्वामी जी से संस्कृत में वार्तालाप कर रहे थे। मैंने उन के चरणों में नमस्कार किया और बैठ गया। जब अन्य सज्जन चले गए तब स्वामी जी उठकर बाग में टहलने लगे। मैं भी उनके पीछे हो लिया। तब मैंने स्वामी जी से प्रश्न किया, महाराज जीव कल्याण कैसे हो? वेद मन्त्र पढ़कर उत्तर दिया कि बिना ज्ञान और पवित्र आचरण के मुक्ति नहीं हो सकती। मैंने पूछा महाराज! नाम कैसे प्राप्त हो? उत्तर मिला कि ज्ञानियों का सत्संग करने और विद्या पढ़ने से पाषाण पूजन आदि व्यर्थ कर्मों से ज्ञान हो सकता है—न मोक्ष मिल सकती है। तुम अभी बालक हो खूब विद्याभ्यास करो, इन प्रश्नों के उत्तर को तुम स्वयं समझ जाओगे। स्वामी जी महाराज को नमस्कार करके अपने ठिकाने चला आया। उस समय कहीं भी कोई आर्य समाज नहीं बना था। उन दिनों स्वामी जी महाराज ने एक संस्कृत पाठशाला स्थापित की थी। जिसमें काशी में स्वर्गवासी महामहोपाध्याय शिवकुमार शास्त्री अध्यापक थे। स्वामी जी महाराज उनको तीस रुपये मासिक देते थे और एक साधु जवाहर दास जी २५) मासिक लेकर उस पाठशाला में योग दर्शन आदि पढ़ाते थे और तीसरे एक संन्यासी आदरी अध्यापक थे। इसी संन्यासी के पास कई मास तक मैं भी अष्टाध्यायी और योगदर्शन पढ़ता रहा। इस पाठशाला में स्वामी जी की ओर से विद्यार्थियों को पुस्तकें बिना मूल्य मिलती थीं लगभग १००) मासिक का व्यय स्वामी जी महाराज करते थे।

इसके पश्चात् मैं कई बार स्वामी जी को मिला। दो बार सम्वत् १९३६ विक्रमी में कुम्भ के अवसर पर शास्त्रार्थ भी किया। इसी कुम्भ के मेले पर स्वामी जी महाराज नवीन मतों का ऐसा खण्डन करते थे कि लोग सुनकर आश्चर्य चकित रह जाते संस्कृत धारा प्रवाह ऐसा सुन्दर थी कि वैसा सुनने में फिर नहीं आया: स्वामी जी के पास साधुओं और पण्डितों की भीड़ लगी रहती। एक दिन सब लोगों को स्वामी महाराज कह रहे थे। कि वेद और उपनिषदादि आर्ष ग्रन्थों में कहीं भी मूर्ति पूजा का विधान नहीं हां जो भागवत् और शिव पुराण आदि ग्रन्थ है उन में है। यह भागवतादि महर्षि व्यास के नहीं, सम्प्रदायी लोगों के बनाये झूठ ग्रन्थ हैं। तुम लोग इन से भी एक कदम आगे बढ़ गये। भला कहो तो सही तुम लोग जो लकड़ी की ध्वजा बनाते, उसे को खूब फूलों के हारों से सजाते। उस को नमस्कार करते तथा उस के आगे शंख घड़ियाल बजाते और नर सिंह की धूं धूं से आसमान को गुञ्जाते हो यह लक्कड़ पूजा किस पुराण में लिखी है स्वामी जी की वार्ता सुन कर सब साधु—ब्राह्मण कहते—भई कहते तो ठीक हैं पर हम क्या करें? सभी लोग करते हैं और हम भी करते हैं।

मैंने इस कुम्भ में स्वामी जी से भेद अभेद विषय पर बहुत काल तक उत्तर—प्रश्न किए। मैं सत्य कहता हूं कि ऐसा विद्वान निर्भय सत्य वक्ता तेजस्वी—जितेन्द्रिय दूसरा कोई नहीं देखा। नवीन वेदान्त की समीक्षा जैसे स्वामी जी महाराज करते थे वैसी दूसरा कोई नहीं कर सकेगा। बड़े-बड़े नवीन आचार्य अपने अपने समुदाय की बातें करते हैं किसी ने भी वेदों की ओर ध्यान नही दिया और इन महर्षि जी ने घर घर में वेद फैलाए वेद के सहस्रों पुस्तक छप गए।

यूरोप के प्रसिद्ध साहित्यिक विद्वान श्री रोम्यां रोल्यां की दृष्टि में

महर्षि दयानन्द

सिंह समान निर्भीक प्रकृति वाला यह महापुरुष उन व्यक्तियों में था जिन्हें भारत का मूल्यांकन करते समय यूरोप भुलाने की चेष्टा करता हुआ भी भुला न सकेगा, क्योंकि ऐसा करना उस के (यूरोप) लिये महंगा सौदा सिद्ध होगा।

दयानन्द पाश्चात्य विचारों से विमोहित दार्शनिकों के साथ समझौता करने वाले महानुभाव न थे।

उस (दयानन्द) पर विजय पाना असम्भव था क्योंकि वे वैदिक वाङ्मय और संस्कृत के अनुपम भण्डार थे। उनके शब्दों की धधकती हुई आग से उनके विरोधियों का विरोध भस्मसात् हो जाया करता था! वे लोग जल की प्रबल बाढ़ के साथ दयानन्द की तुलना किया करते थे। शंकराचार्य के पश्चात दयानन्द जैसा वेदविद् भारत भूमि में उत्पन्न नहीं हुआ।

दयानन्द की उग्र और प्रौढ़ शिक्षायें उसके देशवासियों की विचारधारा के अनुकूल थीं और उन शिक्षाओं से भारतीय राष्ट्रीयता का सर्व प्रथम नवजागरण हुआ।

महान् वीर योद्धा दयानन्द का उत्साह पूर्वक स्वागत होने का कारण इस पृष्ठ भूमि के प्रकाश में सहज ही में समझ में आ सकता है कि वे स्वयं वेदों के उग्र प्रचारक थे और वेदों के प्रकाण्ड पं. और मर्मज्ञ थे. वे ऋषियों की परम्परा के अंग थे। और वीर भावना के साथ प्राचीन भारत के पवित्र ग्रन्थों को साथ ले कर कार्य क्षेत्र में अवतीर्ण हुए थे। उन्होंने अकेले भारत पर आक्रमण करने वालों के विरुद्ध मोर्चा लगाया।

दयानन्द ने अपने देश के प्राचीन व अर्वाचीन किसी भी निवासी को क्षमा नहीं किया जिसने किसी न किसी रूप में उस भारत के १०० वर्ष से हुए पतन में योग दिया था, जो किसी समय संसार का शिरमौर था।

यह सत्य है कि भारत के लिए वह एक दिन एक युग प्रवर्त्तक दिन था जब एक ब्राह्मण ने न केवल यह स्वीकार किया कि उस वेद ज्ञान पर मानवमात्र का अधिकार है जिनका पठन पाठन उन से पूर्व के कट्टर ब्राह्मणों ने निषिद्ध कर दिया था, अपितु इस बात पर भी बल दिया कि वेदों का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना आर्यों का परम धर्म है।

दयानन्द ने भारत के निष्प्राण शरीर में अपना अदम्य उत्साह, अपना दृढ़ निश्चयात्मक संकल्प और सिंह जैसा रक्त भर कर उसे सजीव किया। उसके शब्द वीरोचित शक्ति के साथ गूंज गये।

सब से मुख्य बात यह है कि दयानन्द को अस्पृश्यों की विद्यमानता की घृणित अन्याय सर्वथा असह्य था। उनके अधिकारों का जितनी उग्रता से दयानन्द ने समर्थन किया उतनी उग्रता से अन्य किसी ने नहीं किया। अस्पृश्य जन पूरी समानता के आधार पर आर्य समाज में प्रविष्ट होते है।

वस्तुतः भारतीय राष्ट्रीय चेतना के पुनर्जन्म और जागरण में जो इस समय (१९६०) उस देश में अपने पूर्ण यौवन में देख पड़ रही है, सबसे प्रबल प्रेरणा दयानन्द से प्राप्त हुई थी।

('भारत का एक ऋषि' से साभार)

—

सत्यार्थ प्रकाश

—उत्तम चंन्द शरर

जिस की तालीम ने बिस्मिल के जगा अरमां
जिस को स्वराज्य स्वदेशी की पताका कहिए।
उसी सत्यार्थ को जो शख्स बुरा कहता है।
उसे गद्दार न कहिए तो भला क्या कहिए ?

कुफरोईयां की दुहाई हो नहीं छिप सकती।
कितनी दीवार उठाई हो नहीं छिप सकती।
आप सत्यार्थ की आंखों से अगर देखेंगे।
लाख पर्दे में बुराई हो नहीं छिप सकती।

पढ़ के सत्यार्थ में खण्डन को न घबरायें जनाब।
रद्दे बातल से अयां और सदाकत होगी।
फूल और कांटे हैं दोनों ही चमन की जीनत।
इन्हीं कांटों से फूलों की हिफाजत होगी।

आईना चेहरे का हर दाग दिखा देता है।
उसकी फितरत का तकाजा है यह शिकवा कैसा।
आप सत्यार्थ की तनकीद से नाराज न हों।
अपने चेहरे को ही धो डालिए गुस्सा कैसा।

अकलो दानिश से हर इक मसले को सुलझाओ।
यही सत्यार्थ का कहना है समझ पाओ इसे।
आदमीयत पै करो रहम ऐ दुनिया वालो।
हर्म व देर में अब और न पटकाओ इसे।

सूर्योदय तथा सूर्यास्त

—प्रो. उत्तम चन्द जी शरर

रात्रि का प्रगाढ़ अन्धकार चहूं ओर छा रहा था, किसी को कुछ भी तो दिखाई न देता था, न किसी को किसी की पहचान ही थी, मैथ्यू आरनल्ड के कथनानुसार :—

For the world which seems,
To lie bafore us, like a laud of dreame
So var'ous so beautiful, so new
Hath reaily neither joy,,nor love
uor light."

स्वप्न लोक था, इतना विविध, इतना सुन्दर और चिर नवीन संसार पर इसमें कोई आनन्द नहीं था, और कहीं प्रकाश नहीं था। जीवन कितना ऊबा देने वाला बन चुका था ? लोग जीवन के अस्तित्व से ही इन्कार कर चुके थे। वस्तुतः यह सब रात्री के अन्धकार की माया थी।

और तब

इसे ईश्वर की दया कहिए अथवा प्रकृति का विधान एक ओर से अरुणोदय हुआ, आकाश पर लाली चमक उठी धरती का कण-कण आनन्द और प्रकाश की सरिता में, अप्लावित हो उठा, जैसे धरती को रोमांच हो गया। दीपक बुझ गए, सितारे खो गए, चन्द्रमा तक अपनी महत्ता जाती देख भाग निकला, पक्षी चहचहा उठे, फूलों ने सुगन्धि बिखेरी, वायु उसे स्थान-स्थान पर बांटने निकला प्रकाश में सारा संसार नहा उठा।

परन्तु

कुछ जीव ऐसे भी थे जिन्हें सूर्य का प्रकाश रास नहीं आया, कुछ के नेत्र प्रकाश के अभ्यस्त नहीं थे कुछ का स्वार्थ अन्धकार में ही फल फूल सकता था उन सब ने आकाश की ओर धूल फैंकी, संसार के नेत्रों में धूल डाली, विरोध द्वेष की कालिमा से प्रकाश को छिपाना चाहा पर मध्याह्न के सूर्य ने किसी की न चलने दी

और

समय ने फिर पलटा खाया, सूर्य दिन भर तो प्रकाश फैलाता रहा, परन्तु वह सदा तो इसी धरती के लिए नहीं रुक सकता था ? उसे कई और लोक भी तो आलोकित करने थे ? वह तो एक यात्री था एक दानी के समान जीवन भर ज्ञान और प्रकाश लुटाता रहा जड़ पड़े पदार्थों में भी जीवन की उष्मा देता रहा धरती के कण-कण को आकाश के तारों का प्रतिद्वन्द्वी बनाता रहा, परन्तु वह तो आखिर मुसाफिर ही था वह सदा के लिए रुक तो नहीं सकता था, अतः सायं काल को यात्री अपनी किरणें सिमेट चल निकाला, जैसे उसे इस धरती से मोह भी नहीं था, वीतराग, निर्द्वन्द्व, प्रकाश का पुंज दीपावली की सायं को दूसरे लोक को आलोकित करने चल निकला, धरती पर फिर अन्धकार फैलने लगा, सन्ध्या अपनी कालिमा लिये उतरने लगी, और, समस्या का समाधान ? शायद कवीन्द्र रवीन्द्र का यह गीत पथ प्रदर्शन कर सके। सायंकाल को सूर्य देवता अस्त होना चाहते थे अन्धकार धरती पर उतर रहा था रात्रि की माया विस्तार पा रही थी तभी जाते हुये ने संसार के प्राणियों को आवाज दी 'क्या कोई है जो मेरे जाने के पश्चात् मेरे प्रकाश फैलाने के मिशन को ले चले ?" चारों ओर सानाटा छा गया कहीं से कोई उत्तर न मिला, और तब...तब मन्दिर के एक कोने में पड़े छोटे से दीपक झिलमिला कर कहा "सूर्य देवता तुम प्रकाश के पुंज हो मैंने तुमसे ही प्रकाश पाया है, पर अब तुम जा रहे हैं। तो मैं क्षुद्र दीपक सही आपके मिशिन को फैलाऊ गा अपनी थोड़ी सी लौ से ही सही यथा शक्ति जीवन भर टिम टिमाऊंगा, और टिमटिमाऊगा तो शायद मेरी थोड़ी सी लौ के प्रकाश में कोई भूला भटका मुसाफिर रास्ता खोज सके" दीपावली की सायं को प्रकाश का पुंज अस्त हो गया, मनचले दीपको। टिमटिमाओ शक्ति भर टिम-टिमाओ कोई बड़ी बात नहीं इसी थोड़े से प्रकाश से किसी यात्री का मार्ग प्रशस्त हो पाये।

दयानन्द के गुरुवर वीर

रचयिता—नरेशकुमार शास्त्री,

मातृ-पितृ अरु नेत्रहीन से नहीं किसी ने प्यार किया,
भाई से भौजाई ने भी बहुत कटु व्यवहार किया ।
स्वाभिमान जब जागा अपना छोड़ नगर 'करतार' चला,
परम पिता को पिता मानकर जगत परिवार चला ।१।

डेढ़ वर्ष निर्मल गंगा में गायत्री शुभ जाप किया,
सरस्वती ने सरस्वती को सरस्वती वर आप दिया ।
मथुरा में विद्यालय खोला देने को विद्या अमृत दान,
त्याग अनार्ष को आर्ष ज्ञान का करने लगे छात्र नितपान ।२।

दयानन्द सा शिष्य प्राप्त कर हुआ गुरु को हर्षोल्लास,
तीन वर्ष तक नित्य निरन्तर किया ऋषि ने विद्याभ्यास ।
गुरुदत्त प्रदत्त सद्वेद धर्म का, करने जग में पुनः प्रचार,
निगमागम व्याकरण आदि पर सब पर किया पूर्ण अधिकार ।३।

महर्षि व्याकरण आदि दिवाकर पुण्य कीर्ति के शिष्य महान्,
दिया दक्षिणा में गुरुवर को ऋषिवर ने निज जीवन दान ।
गुरु श्रेष्ठ के श्रेष्ठ शिष्य ने किया दम्भ पाखण्ड विनाश,
दिया वेद का सरल भाष्य और अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश ।४।

साधन हीन सिद्ध साधक ने भूख प्यास अभिशाप सहे,
गर्मी, सर्दी, वर्षा. आंधी अमित ताप सन्ताप सहे ।
आओ मिलकर सभी करें हम उसी विभूति का गुणगान,
उसके पद-चिन्हों पर चलकर कर लें हम भी अमृतपान ।५।

हे पुरुषोत्तम ! अमर-पुत्र हे नारायण सुत मान्य ! मुनीश !
हे नरेश' ! युग-युग तक होवे तेरा जय-जयकार यतीश !
विरजानन्द मूर्ति हे गुणी ! मुनीश्वर सुधि सुधीर !
'नमो नमस्ते नमो नमस्ते , दयानन्द के गुरुवर वीर ।६।



ऋषि दयानंद के चरणों में श्रद्धांजलियां

"स्वामी दयानन्द सरस्वती ने हिन्दू धर्म के सुधार का बड़ा कार्य किया और जहां तक तक समाज सुधार का सम्बन्ध है, वह बड़े उदार-हृदय थे। वे अपने विचारों को वेदों पर आधारित और उन्हें ऋषियों के ज्ञान पर अवलम्बित मानते थे। उन्होंने वेदों पर बड़े-बड़े भाष्य किये, जिस से मालूम होता है कि वे पूर्ण विज्ञ थे। उनका स्वाध्याय बड़ा व्यापक था।"

—मैक्समूलर

ऋषि दयानन्द ने भारत के शक्ति शून्य शरीर में अपनी दुर्धर्ष शक्ति, अविचलता तथा सिंह-पराक्रम फूंक दिया है।"

'ऋषि दयानन्द उच्चतम व्यक्तित्व के पुरुष थे। यह पुरुष उन में से एक था जिन्हें यूरोप प्रायः उस समय भुला देता है, जबकि वह भारत के सम्बन्ध में अपनी धारणा बनाता है। किन्तु एक दिन यूरोप को अपनी भूल मान कर उसे याद करने के लिए बाधित होना पड़ेगा, क्योंकि उस के अन्दर कर्मयोगी, विचारक और नेता के उपयुक्त प्रतिभा का दुर्लभ सम्मिश्रण था। दयानन्द ने अस्पृश्यता व अछूतपन के अन्याय को सहन न किया और सबसे अधिक उनके अपहृत अधिकारों का उत्साही समर्थक दूसरा कोई नहीं हुआ। भारत में स्त्रियों की शोचनीय दशा को सुधारने में भी दयानन्द ने बड़ी उदारता व साहस से काम लिया। वास्तव में राष्ट्रीय भावना और जन-जागृति के विचार को क्रियात्मक रूप देने में सबसे अधिक प्रबल शक्ति उसी की थी। वह पुनर्निर्माण और राष्ट्रीय संगठन के अन्यन्त उत्साही पैगम्बरों में से थे।

—फ्रेंच लेखक रोम्यां रोलां

'यह निश्चित है कि शंकराचार्य के पश्चात् दयानन्द से अधिक संस्कृतज्ञ गम्भीर अध्यात्मवेत्ता, आश्चर्यजनक वक्ता और बुराई का निर्भीक प्रहारक भारत को प्राप्त नहीं हुआ।'

—मेडम ब्लेवेट्स्की

'यह स्वीकार करना पड़ेगा कि भारत के सांस्कृतिक व राष्ट्र के नव जागरण में स्वामी दयानन्द का स्थान अन्यन्त महत्वपूर्ण है। उनकी मान्यताओं और सिद्धांतों ने एक बार तो हीन भाव ग्रस्त इस जाति को अपूर्व उत्साह से भर दिया।'

—एमर्सन

'मैं स्वामी दयानन्द सरस्ती को सदैव गत शताब्दी के उन महापुरुषों में से एक समझता रहा हूं, जिन्होंने परमहंस रामकृष्ण और स्वामी विवेकानन्द जैसे महान् पुरुषों की तरह नवीन हिन्दू धर्म की गहरी और दृढ़ नींव डाली है और इसे पौराणिक भ्रांतियों से शुद्ध कर दिया।'

—एस. एल. माइकेल

'उनकी मृत्यु से भारत ने अपने योग्यतम पुत्रों में से एक को खो दिय'। हमारा स्वामी जी से पत्र व्यवहार होता था। सचमुच वे एक आला इन्सान ही नहीं फरिश्ते थे।'

—कर्नल अलकाट

स्वामी दयानन्द निःसन्देह एक ऋषि थे। उन्होंने अपने विरोधियों द्वारा फेंके गये ईंट-पत्थरों को शांतिपूर्वक सहन कर लिया। उन्होंने अपने में महान् भूत और भविष्य को मिला दिया। वह मर कर भी अमर हैं। ऋषि का प्रादुर्भाव मानव को कारागार से मुक्त करने और जाति बन्धन तोड़ने के लिए हुआ था। ऋषि का आदेश है—'आर्यावर्त्त, उठ जाग, समय आ गया है, नये युग में प्रवेश कर, आगे बढ़।'

—पाल रिचर्ड

हमें वेदों के अध्ययन को प्रबल प्रोत्साहन देने और यह सिद्ध करने में कि मूर्तिपूजा वेद-सम्मत नहीं है, स्वामी दयानन्द के महान उपकार को अवश्य स्वीकार करना चाहिए। आर्यसमाज के वर्त्तमान जाति की मूर्खता और उसकी हानियों के विरुद्ध अपने अनुयायियों को तैयार करने के अतिरिक्त यदि और कुछ भी न करते तो भी वह वर्त्तमान भारत के बड़े नेता के रूप में अवश्य सम्मान पा जाते।'

—डा. विण्टरनीज

'वर्त्तमान स्वराज्यान्दोलन के कारण स्वामी दयानन्द की गिनती भारत के निर्माताओं में स्वीकार की जानी चाहिए, स्वामी दयानन्द एक महान् तथा पुण्यशाली व्यक्ति थे। वे भारत वर्ष के कीर्ति स्तम्भ थे, यह सब को स्वीकार करना पड़ेगा। उनको खोकर भारत की भीषण शोचनीय हानि हुई है।'

—ग्रास वोल्ड

'स्वामी दयानन्द एकेश्वरवादी, वेद पर अपने सिद्धांतों को मानने वाले, प्रगति समर्थक तथा देशोद्धारक थे,

—मोनियर विलियम्स

'आर्यसमाज समस्त संसार को वेदानुयायी बनाने का स्वप्न देखता है। स्वामी दयानन्द ने इसे जीवन और सिद्धान्त दिया। उनका विश्वास था कि आर्य जाति चुनी हुई जाति है, भारत चुना हुआ देश है और वेद चुनी हुई धार्मिक पुस्तक है।

—रेमजे मेकडानल्ड

स्वामी दयानन्द के सिद्धांतों के विषय में कोई मनुष्य कैसी ही सम्मति स्थिर कर ले, परन्तु यह सबको मान लेना पड़ेगा कि स्वामी दयानन्द अपने देश के लिए गौरव रूप थे। दयानन्द को खोकर भारत को महान् हानि उठानी पड़ी है। वे एक महान् और श्रेष्ठ पुरुष थे।

कांग्रेस के संस्थापक श्री ए. ओ. ह्यूम

"मेरा सादर प्रणाम हो उस महान् गुरु दयानन्द को, जिसकी दृष्टि ने भारत के आध्यात्मिक इतिहास में सत्य और एकता को देखा और जिसके मन ने भारतीय जीवन के सब अंगों को प्रदीप्त कर दिया। जिस गुरु का उद्देश्य भारत वर्ष को अविद्या, आलस्य और प्राचीन ऐतिहासिक तत्व के अज्ञान से मुक्त कर सत्य और पवित्रता की जागृति में लाना था, उसे मेरा बारम्बार प्रणाम है। मैं आधुनिक भारत के मार्गदर्शक उस दयानन्द को आदरपूर्वक श्रद्धांजलि देता हूं, जिसने देश की पतितावस्था में भी हिन्दुओं को प्रभु की भक्ति और मानव समाज की सेवा के सीधे व सच्चे मार्ग का दिग्दर्शन कराया।"

—रवीन्द्र नाथ ठाकुर

'महर्षि दयानन्द तपोमूर्ति थे। उन्होंने भारत में दिव्य ज्योति प्रकाशित की थी। उन्होंने हिन्दू समाज को पुनर्जन्म देने के सब प्रयत्न किये थे। वे भारत को स्वतन्त्र तथा दिव्य देखना चाहते थे। आर्षकाल को पुनः लाने के लिए वे प्रयत्नशील रहे। उन्होंने मृतप्राय हिन्दू जाति में पुनः प्राण संचार किया था। वे हिन्दू संस्कृति की अप्रतिम प्रतिमा तथा भारत माता के अक्षय पात्र थे।

—मदन मोहन मालवीय

सत्यार्थ प्रकाश में—

—प्रो. वेद सुमन वेदालंकार
डी० ए० वी० कालेज करनाल

महर्षि दयानन्द के दार्शनिक विचार

वह कौन सा ग्रन्थ है जिसने नास्तिकों को आस्तिक बनाकर उनके जीवन का काया-कल्प किया। वह कौन सी पुस्तक है जिसके स्वाध्याय से मौलाना मौलवी हैदर अली, अब्दुल गफूर, दीन मुहम्मद जैसे मुसलमान वैदिक धर्म में सम्मिलित हुए। वह कौन सी रचना है जिसके विचारों से भगतसिंह, राम प्रसाद बिस्मिल आदि अनेकों नवयुवक क्रान्तिकारी भारत मां की परतन्त्रता की बेड़ियों को तोड़ने के लिए अमर शहीद हो गए। किस पुस्तक की विचार धारा से प्रभावित होकर अन्य मतावलम्बियों को अपने मतों की पुस्तकों में परिवर्तन करना पड़ा। वे कौन सी दार्शनिक मान्यताएं हैं जिनके समक्ष भारतीय एवं पाश्चात्य सभी दार्शनिकों के सिद्धान्त विज्ञान की दृष्टि से अधूरे दिखाई देते हैं, निष्पक्ष रूप से इन सभी प्रश्नों का जवाब महर्षि दयानन्द के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में मिलेगा। जिसको मैं वैदिक साहित्य की पूंजी मानता हूं।

राजा जयकिशन दास की प्रेरणा पर महर्षि जी ने जिस अमर ग्रन्थ की रचना की उसमें मुस्लिम, ईसाई, जैन, बौद्ध एवं हिन्दुओं में प्रचलित लगभग सभी मतों की जानकारी सत्यासत्य के रूप में मिल जाती है, जिन मजहबों के नाम पर मानवता के साथ खिलवाड़ किया गया तथा अनेकों बार खून की नदियां बहाई गईं, अनेकों वैज्ञानिकों को सच्चाई कहने पर मौत के घाट उतार दिया गया, उन मतों का दिग्दर्शन इस अमर ग्रन्थ में मिल जाता है। लगभग तीन मास में लेखक ने इसे लिखकर पूरा किया। इस थोड़े समय में ही मानव समाज के प्रत्येक पहलू को ऋषि ने जिस ढंग से स्पष्ट किया वह प्रत्येक बुद्धिजीवी के लिए मनन करने योग्य है। वस्तुतः स्वामी जी का यह ग्रन्थ ज्ञान का भण्डार है, कठोपनिषद् के शब्दों में—

भिद्यन्ते हृदय ग्रन्थिश्छिद्यन्ते सर्वसंशयाः। मुण्डकोपनिषद) जैसे साधक के परमेश्वर की साधना करने से हृदय की ग्रन्थियां खुल जाती हैं उसके सभी संशय दूर हो जाते हैं उसी प्रकार मनुष्य को इस ग्रन्थ के स्वाध्याय से वास्तविकता का बोध हो जाता है और उसकी सभी शंकाएं दूर हो जाती हैं, मनुष्य के हृदय की सभी उलझनें समाप्त हो जाती हैं।

महर्षि दयानन्द के ज्ञानरूपी समुद्र की एक बिंदु को लेकर इस अमर ग्रन्थ की चर्चा करने लगा हूं। आधुनिक युग में अधिकांश लोग स्वामी दयानन्द को एक मात्र समाज सुधारक ही मानते हैं, यद्यपि यह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सबसे अगुआ स्पष्ट रूप से दिखाई देते हैं। राजधर्म, धार्मिक जीवन, सामाजिक जीवन, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ तथा संन्यास आश्रम, ईश्वर का अस्तित्व तथा स्वरूप, मोक्ष, भक्ष्याभक्ष्य, शिक्षा-पद्धति आदि मानव जीवन के सभी पहलुओं पर ऋषि ने अपने अमर ग्रन्थ में प्रकाश डाला। जबकि अन्य महापुरुष अपने ग्रन्थों में एकांगी दृष्टिकोण लेकर चलते रहे यहां महर्षि दयानन्द अखंड बाल-ब्रह्मचारी, महान योगी, वेदों के मन्त्र द्रष्टा के रूप में वेद भाष्यकार ऋषि, दया के भंडार, अद्भुत समाज सुधारक, देश की स्वतन्त्रता के प्रथम उद्घोषक थे। वहां पर ये अद्वितीय दार्शनिक थे।

❋ अभी तक भारतीय लोग केवल शंकराचार्य एवं रामानुज आचार्य आदि को ही विशेष दार्शनिक मानते रहे। पाश्चात्य विद्वानों में सुकरात, प्लैटो, अरस्तु, कान्ट ह्यूम बरकले आदि को ही दार्शनिक मानते रहे। जिन वैदिक दर्शनों पर संसार के सभी दार्शनिक सिद्धान्त आधारित हैं उन सिद्धान्तों को महाभारत काल से महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के माध्यम से संसार के समक्ष प्रस्तुत किया। अनेक मतावलम्बियों ने वैदिक दर्शनों के ऋषियों को नास्तिक कहा। जैसे सांख्यकार ऋषि कपिल के बारे में आज भी विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाता है कि वे ईश्वर को नहीं मानते थे। केवल जीव और प्रकृति को ही मानते थे। इसी प्रकार वैदिक दर्शनों में कई बातों में परस्पर मतभेद है। जैसे वेदान्त-दर्शनकार ऋषि-व्यास ब्रह्म के सिवाय अन्य सत्ता के अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते। इसी प्रकार आठों प्राणों के बारे में भी एकमत नहीं है। आसद्य-कार्यवार तथा सद्य-कार्यवार की दृष्टि से भी वेदान्त दर्शन तथा सांख्यमत में मतभेद है। इस प्रकार की अनेकों शंकाएं वैदिक दर्शनों के बारे में भी की जाती हैं।

❋ महर्षि दयानन्द ने अपने अमर-ग्रन्थ "सत्यार्थ-प्रकाश" सभी प्रकार के दार्शनिक सिद्धान्तों को जानने के लिए मतभेद का निराकरण किया। वैदिक दर्शनों के सिद्धान्तों को जानने के लिए प्राचीन महर्षियों की विचारधारा को समझना बड़ा जरूरी है। महर्षि ने सत्यार्थ प्रकाश में वैदिक ऋषियों के सभी दार्शनिक सिद्धान्तों को संक्षिप्त रूप से अंकित किया। इतनी सुन्दर वैज्ञानिक विचार-धारा, जिस को पढ़ने से हृदय के बन्द कपाट खुल जाते हैं। ज्ञान की दृष्टि से मनुष्य नवजीवन में प्रवेश करता करता है। वह सच्चे अर्थों में द्विज कहलाने का अधिकारी बन जाता है।

❋ १. सर्वप्रथम ऋषि ने उस आक्षेप का उन्मूलन किया जिसके आधार पर वैदिक दर्शनों में परस्पर मतभेद बताया जाता है। सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में प्रश्नोत्तर के समय में महर्षि दयानन्द इस प्रकार से पूर्वपक्ष की शंका का समाधान करते हैं।

पूर्वपक्ष :—जैसे सत्यासत्य और दूसरे ग्रन्थों का परस्पर विरोध है वैसे अन्य शास्त्रों में भी है। जैसा सृष्टि विषय में छः शास्त्रों का विरोध है। मीमांसा-कर्म, वैशेषिककाल, न्याय-प्रमाणु, योग-पुरुषार्थ, सांख्य-प्रकृति और वेदान्त-ब्रह्म से सृष्टि की उत्पत्ति मानता है। क्या यह विरोध नहीं है?

उत्तर :—प्रथम तो बिना सांख्य और वेदान्त के दूसरे चार शास्त्रों में सृष्टि की उत्पत्ति प्रसिद्ध नहीं लिखी और इनमें विरोध नहीं। क्योंकि तुम को विरोधाविरोध का ज्ञान नहीं। मैं तुमसे पूछता हूं कि विरोध किस स्थल में होता है। क्या एक विषय में अथवा भिन्न-भिन्न विषयों में?

पूर्वपक्ष :—एक विषय में अनेकों का परस्पर विरुद्ध कथन हो उसे विरोध कहते हैं। यहां भी सृष्टि एक ही विषय है।

उत्तर :—क्या विद्या एक है या दो?

पूर्वपक्ष :—एक है।

उत्तर :—जो एक है तो व्याकरण, वैद्यक, ज्योतिषी, आदि का भिन्न-२ विषय क्यों हैं? जैसे एक विद्या में अनेक विद्या के अवव्यवों का एक दूसरे से भिन्न प्रतिपादन होता है वैसे ही सृष्टि विद्या के भिन्न-२ छः अवव्यवों का शास्त्रों में प्रतिपादन करने से इनमें कुछ भी विरोध नहीं, जैसे :—घड़े के बनाने में कर्म, समय, मिट्टी, विचार, संयोग, वियोग आदि का पुरुषार्थ, प्रकृति के गुण और कुम्हार कारण हैं। वैसे सृष्टि का जो कर्म-कारण है उस की व्याख्या मीमांसा में, समय की व्याख्या वैशेषिक में, उपादान कारण की व्याख्या न्याय में, पुरुषार्थ की व्याख्या योग में, तत्वों के अनुक्रम से परिगणन की व्याख्या सांख्य में, और निमित कारण तो परमेश्वर है उसकी व्याख्या वेदान्त दर्शन में है। इससे कुछ भी विरोध नहीं। जैसे वैद्यक शास्त्र में निदान, चिकित्सा, औषधि दान और पथ्य के प्रकरण भिन्न-२ कथित हैं परन्तु सब का सिद्धान्त रोग की निवृति है। वैसे ही सृष्टि के छः कारण हैं इनमें से एक-२ कारण की व्याख्या एक-२ शास्त्रकार ने की है। इसलिए इनमें कुछ विरोध नहीं है। पाठक इससे विचार करें कि महर्षि दयानन्द ने किस प्रकार के वैदिक दर्शनों में समन्वय स्थापित किया।

२. महर्षि दयानन्द ने सगुण और निर्गुण शब्द की बुद्धियुक्त तर्कसंगत व्याख्या प्रस्तुत की है। मध्ययुगीन दार्शनिक एवं कवियों ने इन शब्दों से निराकार व साकार की उपासना का सन्देश दिया। महात्मा तुलसीदास ने लिखा है कि—

"अगुनहि सगुनहि नाहि कछु भेदा । गावहिं श्रुति पुरान बुध वेदा ।
अगुण अरूप अलख अज जोई । भक्ति प्रेमवश सगुण सो होई ॥"

अर्थात् अगुण और सगुण परमात्मा में कोई भेद नहीं है । वह निराकार, निर्गुण परमेश्वर ही भक्तों की भक्ति के वशीभूत हो करके सगुण बन जाता है । अर्थात् साकार रूप में अवतार लेकर पृथ्वी पर आ जाता है । किन्तु किसी भी शब्द कोष में सगुण शब्द का अर्थ साकार नहीं मिलता संस्कृत के व्याकरण के अनुसार भी सगुण शब्द का अर्थ अवतार के रूप में देखने को नहीं मिला । महर्षि ने प्रथम समुल्लास में सगुण और निर्गुण शब्द की व्याख्या करते हुए लिखा है कि—

"यो गुणैः सहं वर्तते सः सगुणः" जो सब का ज्ञान सर्वसुख, पवित्रता, अनन्तबल आदि गुणों से युक्त है इससे परमेश्वर का निर्गुण है । "यो गुणेभ्यो निर्गतः सः निर्गुण ईश्वरः" जितने सत्व, रज, तम, रूप, रस, स्पर्श, गन्ध आदि जड़ के गुण, अविद्या, अल्पज्ञता, राग, द्वेष और अविद्या आदि क्लेश जीव के गुण हैं उनसे जो पृथक है वह निर्गुण ईश्वर कहलाता है ।" इस प्रकार स्वामी दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ में परमेश्वर की सगुण एवं निर्गुण की उपासना का स्पष्टीकरण किया है ।

३. वैदिक दर्शनों में सांख्य तथा न्याय दर्शन के सद्कार्यवाद और असद्कार्यवाद को देखकर कई विद्वानों में मतभेद दिखाई देता है और अनेक विद्वान सद्कार्यवाद और असद्कार्यवाद की व्याख्या करते हुए न्याय में मत-भेद बतलाते हैं । किन्तु महर्षि ने ऋग्वेद के एक मन्त्र द्वारा इस शंका का समाधान किया—

नासदासीन्नो सदासीत्तदानीं नासीद्रजो नो व्योम परोयत् (ऋ० अ० ८ अ० ७ व० १७ म० १)

अर्थात जब यह कार्य सृष्टि उत्पन्न नहीं हुई थी, तब एक सर्वशक्तिमान परमेश्वर और दूसरा जगत का कारण अर्थात जगत बनाने की सामग्री विराजमान थी । उस समय असत्शून्यमान आकाश अर्थात जो नेत्रों से देखने में नहीं आता सो भी नहीं था क्योंकि उसका व्यवहार नहीं था । उस काल में सत अर्थात सतोगुण, रजोगुण, तमोगुण मिल कर जो प्रधान कहाता है वह भी नहीं था अर्थात सृष्टि बनने से पूर्व यह संसार सत इसी रूप में विराजमान नहीं था और असत् ऐसा भी नहीं कि उसका मूलकारण नहीं था । अपने मूलकारण प्रकृति के रूप में यह भौतिक जगत 'सत' विद्यमान था । परन्तु सृष्टि के प्रलय के समय यह संसार वर्तमान रूप से असत् था । प्रत्येक वस्तु उत्पत्ति से पूर्व अपने कारण में अप्रकट होती है और उत्पन्न होने के बाद प्रकट हो जाती है । अतः सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर पता चलता है कि दोनों दर्शनों के ऋषि सांख्य एवं न्याय में सृष्टि के सद् असद् स्वरूप की व्याख्या कर रहे हैं । उसका भाव यह नहीं कि वे एक दूसरे के विरोधी हैं ।

४. सृष्टि उत्पति के सिद्धान्त के बारे में भी महर्षि ने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत की है । महर्षि से पहले कुछ लोग इस सृष्टि की उत्पत्ति एकमात्र ब्रह्म से मानते थे । कुछ दार्शनिक परमेश्वर की सत्ता को न मानकर जीव और प्रकृति के संयोग से सृष्टि की रचना मानते हैं और अन्य कुछ दार्शनिक केवल मात्र भौतिक पदार्थों से ही सृष्टि की व्याख्या प्रस्तुत करते हैं । परन्तु महर्षि ने वैदिक साहित्य का मन्थन करके अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में सृष्टि उत्पत्ति के लिये ईश्वर, जीव और जगत-इन तीनों सत्ताओं को अनादि बताया । महर्षि ने जगत के तीन कारण- निमित्त, उपादन और साधारण माने हैं । व्यवहार रूप से भी हम संसार में देखते हैं कि बिना तीन कारणों के वस्तु बनती नहीं । स्पष्टीकरण के लिए हम इस रूप में कह सकते हैं-एक बनाने वाला, दूसरा बनाने की उपयुक्त सामग्री, तीसरा उपभोक्ता । यह सृष्टि उत्पत्ति का वैज्ञा-निक सिद्धान्त महर्षि ने प्रस्तुत किया ।

५. वैदिक दर्शनों के आठों प्रमाणों बारे में जो मतभेद दिखाई देता है उसका उत्तर भी हमें सत्यार्थ प्रकाश के तृतीय समुल्लास में मिलता है । इस प्रकार अन्य अनेक दार्शनिक सिद्धान्तों की व्याख्या सत्यार्थ प्रकाश में देखने को मिलती है । अद्वैत शब्द की व्याख्या सत्यार्थ प्रकाश में लिखी है ।

'सजातीयविजातीय स्वगत भेद शून्य ब्रह्म' इस प्रकार से वह परमेश्वर इन तीन प्रकार के भेदों से रहित होने से अद्वैत कहलाता है जब कि शंकराचार्य के मत में अद्वैत शब्द को लेकर एक-मात्र ब्रह्म की सत्ता को स्वीकार करते हुए जीव और प्रकृति की सत्ता से इन्कार कर दिया गया है।

इस प्रकार महर्षि ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश प्रकाश में सभी दार्शनिकों का तुलानात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हुए संसार के समक्ष ईश्वरीय वैदिक सिद्धान्तों को प्रस्तुत किया है। सत्यार्थ प्रकाश के अवसर पर प्रत्येक का यह कर्त्तव्य है कि वह यथाशक्ति महर्षि के इस अमर ग्रन्थ को प्रचारित करने में अपना योगदान दे। यह ग्रन्थ अनेक विद्याओं का भण्डार है। आओ हम सब मिल कर महर्षि के इस अमर ग्रन्थ के स्वाध्याय का व्रत लें।

—

आर्य वीरों की सेना सजेगी

पंजाब की समस्त आर्य समाजों तथा आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों से निवेदन है कि पंजाब प्रान्तीय आर्य वीर दल की कार्यकारिणी का गठन करने के लिए आपके नगर में अथवा शिक्षण संस्था में जो भी सज्जन आर्य वीर दल के साथ रुचि रखते हों उनके नाम व पूरा पता भेजने की कृपा करें। अथवा व्यक्तिगत रूप से सम्पर्क करें।

—ऋषिपालसिंह एडवोकेट प्रान्तीय संचालक,
आर्य वीर दल पंजाब, कोठी नं. २ 'अंकुश'
(नई कचहरी चौक)
जालन्धर—१४४००१

महिला संगठन की मिटिंग

१२।१०-८१ को साढ़े तीन बजे आर्य महिला विभाग की मिटिंग रामामण्डी में हुई जिसमें ५०० के लगभग बहनों ने भाग लिया और पूरे जोर से खालिस्तान का खंडन किया अन्त में हिन्दू सिख भाई-भाई के नारे लगाए गए भाग लेने वाली बहनें हिन्दू सिख एकता पर बल दिया। सुशील महाजन, मिसेज रमेश, रविजज, मिसेज बेरी, कमला आर्य, राजबिन्द, कौशल्य मैदान, महिमा रानी, राज इस उपस्थित हुए।

कमला आर्य, प्रधान
स्त्री समाज ऋषिकुंज
जालन्धर

आदर्श प्रचारक श्री भद्रपाल जी का देहान्त

आर्य जगत् को यह जानकर अत्यन्त दुःख होगा कि आर्य समाज के प्रभावशाली प्रचारक, मधुर गायक और सुलझे हुए वक्ता श्री भद्रपाल जी का अपने गांव मण्डोली जिला अलीगढ़ में २९ सितम्बर को एक विषैले सर्प के डसने से दो घंटे से भी कम समय में शरीरान्त हो गया। श्री भद्रपाल जी ने एक आर्य परिवार में जन्म लिया। प्रारम्भ में श्री सर्वदानन्द साधु आश्रम में शिक्षा प्राप्त की, उसके पश्चात् कण्ठ मीठा होने के कारण हितैषियों की प्रेरणा पर पंजाब के प्रसिद्ध संगीतज्ञ भक्त मंगूराम जी से चार वर्ष तक संगीत की उच्च शिक्षा प्राप्त करके आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में २० वर्ष से भी अधिक समय तक बहुत ही सफलता पूर्वक प्रचार कार्य किया। उसके बाद उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा में भी कुछ वर्ष सेवा की। अब लगभग २० वर्ष से वे अपने स्वतन्त्र कार्यक्रमों पर जाते थे।

अबोहर में ऋषि लंगर तथा विशेष यज्ञ

आर्य समाज अबोहर के उत्सव पर निरन्तर लगातार सप्ताह भर ऋषि लंगर चलता रहा रविवार ४-१०-८१ को सैंकड़ों आर्य बन्धुओं ने प्रतिभोज किया। भोजन का सारा प्रबन्ध तथा व्यय श्री ला. चतरुराम जी ने किया यह आर्य समाज के लग्नशील और उत्साही कार्यकर्ता हैं।

इस अवसर पर विशेष यज्ञ भी प्रतिदिन प्रातः होता रहा आर्य समाज के सुयोग्य पुरोहित श्री विमल कुमार जी शास्त्री ने इसे सुचारू रूप से चलाया।

सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी एवं ऋषि निर्वाण

आत्मचिन्तन की जरूरत

—सुभाष चन्द्र आर्य

एक चूहा शिवलिंग पर कूदकर मूलशङ्कर को अन्वेषण मार्ग दे जाता है। आज न जाने कितने चूहे शिव के मस्तक पर निर्बाध कूदंन कर रहे हैं? हमें यह भी दिखाई नहीं देता कि स्वयं हमारे शिरों में ही चूहे कूद रहे हैं। वे चूहे कभी हमारे पैरों को काटते हैं तो कभी पेट पर चौकड़ी लगाते है, कभी छाती पर पंजे मारते हैं और कभी आंखों को कुतरने का प्रयास करते हैं। साम्प्रदायिकता का चूहा कितना सशक्त है। जब यह उछलता है तो समाज छिलता हैं। धरा रक्तरंजित होती है। सधवाएं विधवाएं होकर बिलखती हैं, वृद्धजनों की लाठी छिनती है, बाल-बालिकाएं अनाथ हो जाते हैं, निर्दोष इस क्रूर अग्नि की आहुति बनते हैं।

हम भी तो उसी ऋषि के अनुयायी हैं। हमें बोध क्योंकि नहीं होता? हम अबोध होकर भी बोध के गीत सुनाने में जुटे हैं यह आत्मचिंतन का विषय है। हमें इस बात का अभिमान है कि हमने अतीत में ज्ञान की प्रखर रश्मियों से सर्वस्व आलोकित किया। देश ही नहीं अपितु समूचे विश्व को एक विचार सरणि दी। हमारे विचारों से थोथे मतवादी एवं प्रपंची हिल उठे। वे प्रकम्पित हो गए।

ज्ञान की यह धारा प्रत्येक के जीवन में टकराती है पर हम तो देखते हुए भी नहीं देखते, सुनते हुए भी नहीं सुनते। बोध का रश्मिजाल समग्र संसार में फैला हुआ है। कुछ लोगों के मस्तिष्क में जब बोध की तरंगें टकराती हैं तो उनका मस्तिष्क निर्मल और निष्कलुष हो जाता हैं।

स्वामी समर्पणानन्द जी ने एक बार गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव पर अपने भाषण में कहा था। हमारी परम्परा में कभी राष्ट्र में रक्षामंत्री का पद नहीं रहा। हम चक्रवर्ती रहे, आक्रामक रहे और आक्रमण करके अपनी राज्य सीमाओं को विस्तरित करते रहे। हमारे यहां आक्रमण मन्त्री रहे जो आक्रमण की मन्त्रणा देते रहे, दूसरों पर हावी रहे। पर जब से रक्षा का भाव आया हम निर्बल हो गए।

ऋषिवर के निर्वाणोत्सव एवं उनके महान ग्रन्थ के शताब्दी महोत्सव के अवसर पर आर्यजनों को आत्मचिन्तन करने की जरूरत है। ऋषि द्वारा बिकीर्ण की गई ज्ञान रश्मियों से स्वयं को आलोकित करने की आवश्यकता है। जिस प्रकाशपुंज ने हमारा पथ प्रशस्त किया वह सूर्य तो कब का अस्त हो चुका। लेकिन उसी ज्ञान सूर्य से प्रकाश पाकर टिमटिमाते दीपकों को पूरी शक्ति के साथ टिमटिमाना होगा ताकि अज्ञानान्धकार इस धरा को आच्छादित न कर पाए।

नाना अवैदिक मतमतान्तरों और साम्यवाद की आंधी तथा पश्चिमी झंझावात टिमटिमाते दीपकों को बुझा देने को कटिबद्ध हैं। विदेशी थैलियों के बल पर धर्म परिवर्तन, अराष्ट्रीय तत्वों की खुल खेल आर्यजनों को चुनौती हैं। आर्य समाज को इन सभी मोर्चों पर लोहा लेना है। महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश की रचना करके आर्य समाज को सम्पूर्ण क्रान्ति का कार्यक्रम दिया। लेकिन उसके कार्यान्वयन में हम कहां तक सफल हुए यह देखना जरूरी है। ताकि भावी रणनीति समय रहते तय की जा सके।

तर्क शुद्ध ज्ञान भण्डार, गौरवपूर्ण अतीत के अतिरिक्त हमारा मार्ग प्रशस्त है इस पर भी हम भटके रहे तो समूचा विश्व हम पर अट्टहास करेगा। आओ हम सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी और ऋषि निर्वाण के अवसर पर महर्षि के मिशन को पूर्ण करने का संकल्प लें।

—

सत्यार्थ प्रकाश के सम्बन्ध में

मुस्लिम विद्वानों की सम्मतियां

—मौलाना मुहम्मद अली

पंजाब में अब्दुलगफूर नामक एक मुसलमान ने सत्यार्थ प्रकाश के विरुद्ध आन्दोलन छेड़ा था बाद में मुस्लिमलीग ने इस आन्दोलन का श्री मौलाना मुहम्मद अली जैसे समझदार मुसलमानों द्वारा भी विरोध किया गया और अब उनके द्वारा दबाया भी गया। मौलाना सुप्रसिद्ध मुस्लिम लीडर थे और इण्डियन नेशनल कांग्रेस के अध्यक्ष भी रह चुके थे, उन्होंने अपने उर्दू पत्र हमदर्द के ९-२-१९२५ के अंक में जो लेख लिखा उसका निम्नलिखित अवतरण इस प्रकार है।

"सत्यार्थ प्रकाश स्वामी दयानन्द को मार्कतुल आला तसनीफ (सर्वोत्तम कृति) है और स्वामी दयानन्द आर्यों के गुरु हैं। आर्य उनकी इस कदर इज्जत करते हैं कि उससे बढ़कर किसी इन्सान की इज्जत इनके दिल में नहीं। इसी तरह उनकी तसनीफ (रचना) सत्यार्थ प्रकाश की भी बेअन्दाज इज्जत (असीम आदर) करते हैं और इसे मजहबी किताब (धर्म ग्रन्थ) का दर्जा देते हैं। हकूमत इस किताब को जब्त नहीं कर सकती और जब्त करके खामखाह अपने सर पर मुसीबत मोल नहीं लेगी। हकूमत को क्या पड़ी है कि वह ऐसी ताकतवर जमात शक्तिशाली समाज को जैसी आर्यों की है बिना वजह अपना दुश्मन बना ले। बहरहाल एक नामुमकिन अतल और फिजूल ख्वाहिश (व्यर्थ इच्छा) का इजहार करके हिन्दू अखबारात को दावत दी गई है कि वे कुरान पाक के मुताल्लिक भी ऐसी मांगें करें।

इसी प्रकार के विचार श्री मिर्जायाकूब और मौलवी मुराद अली अजमेरी ने भी प्रकट किए थे।

मिर्जा साहब ने जो अंजुमन अहमदिया इशायत इस्लाम के मन्त्री थे लिखा था—

स्वामी दयानन्द मुसलमानों के मेहरबान दोस्त थे क्योंकि दोस्त वही जो दोस्त के नकायस (त्रुटियों) को बताकर उसे राहे रास्त सन्मार्ग पर लाने की कोशिश करें।

(आर्य गजट फरवरी १२०)

मौलवी मुराद अली ने कोहेनूर के ३-११-१८८३ के अंक में महर्षि दयानन्द व सत्यार्थ प्रकाश को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा था—

महर्षि दयानन्द जैसे बुजुर्गवार बार-बार दुनिया में पैदा नहीं होते। उनकी यादगार न सिर्फ आर्यो बल्कि अंग्रेजों, यहूदियों और मुसलमानों के दिलों में और उन की किताबें हजारों वर्ष बल्कि कयामत तक कायम रहेगी।

आर्यों के अलावा तमाम कौमें इस चश्मे फैज (उपकार स्रोत) सत्यार्थ प्रकाश से अब्द आबाद तक (सृष्टि के अन्त तक) सैराब (सिंचित) होती रहेगी।

१९२६ से तजीम और तबलीग के दिनों में पंजाब के मुसलमानों ने सत्यार्थ प्रकाश की जब्ती की मांग की थी। उस समय हजारों आर्य समाजियों ने हस्ताक्षर करके अपना दृढ़ निश्चय घोषित किया कि वे सत्यार्थ की रक्षा के लिए हर प्रकार का बलिदान करने को समुत्सुक हैं। यह आन्दोलन विफल होना ही था और वह होकर रहा।

सत्यार्थ प्रकाश की महिमा

सत्यार्थ प्रकाश में अन्य धर्म सम्बन्धी जिन ग्रन्थों की आलोचना की गई हैं वह स्वामी दयानन्द के विचार स्वातन्त्र्य का उत्तम उदाहरण है। विचार स्वातन्त्र्य से घबराना कोरी कायरता है।

सूचना

पाठक महानुभावों को सूचित किया जाता है कि साप्ताहिक आर्य मर्यादा का २५ अक्तूबर तथा १ नवम्बर का संयुक्त अंक प्रकाशित होने के कारण अब ८ नवम्बर का अंक प्रकाशित होगा।

—सम्पादक

क्रान्तिकारियों का प्रेरणापुंज आग्नेय ग्रन्थ— सत्यार्थप्रकाश

(पं. विश्वमित्र शास्त्री. दयानन्द ब्राह्म महाविद्यालय, हिसार)

अंग्रेजी साम्राज्य के भारत में स्थापित होने के पश्चात् उस राज्य को जड़ मूल से नष्ट कर स्वराज्य की स्थापनार्थ सर्वप्रथम जो १८५७ का स्वातन्त्र्य समर लड़ा गया। उनका आयोजन कर उसे सफलता की ओर ले जाने वालों में मुख्य तीन व्यक्ति थे गुरु विरजानन्द उनके गुरु व ऋषि दयानन्द। स्वामी विरजानन्द के जीवन चरित्र में वेदानन्द तीर्थ लिखते हैं "विरजान्द जी ने अपने प्रजा चक्षुओं से यह देख लिया था कि भारत के पतन के प्रमुख दो कारण हैं प्रथम अंग्रेजों का भारत में साम्राज्य द्वितीय अनर्षि ग्रन्थों का पठन-पाठन। इन दोनों को नष्ट करने के लिए गुरु विरजानन्द ने अनेक राजा-महाराजाओं को आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन करवा कर स्वदेश भक्ति से प्रेरित कर १८५७ के स्वतन्त्रता समर के लिए तैयार किया था। कुछ देशद्रोहियों द्वारा अंग्रेजों का साथ देने के कारण सन् ५७ की क्रान्ति विफल हुई तब ऋषि दयानन्द ने विवश होकर शस्त्र का आश्रम छोड़कर शास्त्र का आश्रय लिया। पृथ्वी सिंह मेहता विद्यालंकार "हमारा राजस्थान" नामक पुस्तक में लिखते हैं "यों तो आजादी के लिए मर मिटने वाले दोनों साथी समवयस्क तथा समकालीन थे उनमें से एक नाना साहब पेशवा जब शस्त्र का आश्रय लेकर क्रान्ति में विफल हुए तब दूसरे (दयाराम) अर्थात् दयानन्द स्वामी ने शास्त्र का आश्रय लेकर भारत के जनमानस को जागृत किया। ऋषि दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश का प्रथम संस्करण १८५७ में प्रकाशित किया जिसमें अपनी प्रखर देशभक्ति की भावना से भारतीय अनुप्राणित किया उसके लिए निम्न वाक्य ध्यान देने योग्य हैं। एक तो यह कि "नौन और पौन रोटी में जो कर लिया जाता है मुझे अच्छा मालूम नहीं होता क्योंकि नौन बिना दरिद्र का भी निर्वाह नहीं किन्तु सबको नौन आवश्यक होता है और वे मेहनत मजदूरी से जैसे तैसे निर्वाह करते है। उसके ऊपर भी वह नोक का (कर) दण्डतुल्य रहता है इससे दरिद्र को क्लेश पहुंचता हैं अतः कर (टैक्स) लवणादि के ऊपर न रहना चाहिए। पौन रोटी से भी गरीबों को बहुत क्लेश पहुंचता है क्योंकि गरीब लोग कहीं से घासोच्छेदन करके आय व लकड़ी का भार (तो) उनके ऊपर कोड़ियों के लगने से उनको क्लेश अवश्य होता होगा, इससे पौन रोटी का जो कर स्थापता करना हैं सो भी हमारी समझ से अच्छा नहीं" "सरकार कागज कों बेचती है और बहुत से कागजों पर धन बढ़ा दिया है। इससे गरीब लोगों को बहुत क्लेश पहुंचता है। सो यह बात राजा को करनी उचित नहीं, क्योंकि इनके होने से बहुत गरीब लोग दुःख पाके बैठे हैं। कचहरी में बिना धन के कुछ बात नहीं होती, इससे कागजों के जो बहुत धन लगाया है, सो मुझको अच्छा मालूम नहीं होता।"

इस ग्रन्थ से न जाने कितने क्रान्तिकारियों ने प्रेरणा प्राप्त करके राष्ट्र की बलिवेदी पर अपने प्राणों की आहूति दे दी। ऐसे देश भक्तों में श्याम जी कृष्ण वर्मा प्रमुख हैं। जिन्होंने स्वयं ऋषि दयानन्द का शिष्यत्व ग्रहण करके तथा सत्यार्थ-प्रकाश से प्रेरणा लेकर देश की स्वाधीनता के लिए ऐतिहासिक कार्य किया इन्हीं की क्रांतिदीक्षा में दीक्षित मदनलाल ढींगरा तथा स्वातन्त्र्य वीर सावरकर थे।

सावरकर तो अण्डेमान जेल में कारावास का दण्ड भोगते समय भी वहां के बन्दियों को जो ग्रन्थ पढ़ाया करते थे। उनमें सत्यार्थप्रकाश मुख्य था। "अण्डेमान में हिन्दी पुस्तकों की भरती करके अन्तस्था वाचनालय रखे थे। इन वाचनालयों में अर्थशास्त्र, राजनीति, राजकीय आन्दोलन आदि नवीनतम पुस्तक भी नित्य आती रहती थीं, जिससे प्रौढ़ विषयों का ज्ञान होने में सुविधा रहती थी। सत्यार्थ प्रकाश की ओर मैंने विशेष ध्यान दिलवाया। राजबन्दी भी उसे बार-बार पढ़ते थे। स्वामी दयानन्द जी का वह ग्रन्थ कुछ अपदान छोड़कर हिन्दु संस्कृति के उच्चत्व मन पर अंकित करता है। हिन्दू धर्म का राष्ट्रीय स्वरूप व्यक्त करता है तथा एक अदम्य उत्साह हृदय में भरता है।" पाठक वर्ग इतने मात्र से वीर सावरकर का सत्यार्थप्रकाश के प्रति दृष्टिगत समझ सकते हैं। उनके शब्दों में यही राष्ट्रधर्म का प्रतिपादक व बोधक ग्रन्थ है। १८५७ में दिल्ली की केन्द्रीय आर्य सभा की ओर से जब वीर सावरकर का सार्वजनिक अभिनन्दन किया गया, तब आपने अपना मन्तव्य निम्न शब्दों में अभिव्यक्त किया—"आर्य समाज और महर्षि दयानन्द के सम्बन्ध में मेरी श्रद्धा किसी से छिपी नहीं। महर्षि दयानन्द का "सत्यार्थप्रकाश" पढ़कर मैं सन्तोष प्राप्त करता हूं। मैं जिस स्वाधीनता का चिन्तन करता हूं। उसमें महर्षि का सत्यार्थ प्रकाश सहायक है। इसलिये मैं महर्षि दयानन्द का पक्कका चेला हूं। इस समय देश में आर्य समाज ऐसी संस्था है, जो प्रत्येक प्रकार के राजनीतिक स्वार्थो और सन्देहों से ऊपर है। इसी में देश के अधिक कल्याण की क्षमता है।

महर्षि के इस विचित्र ग्रन्थ ने केवल सामान्य व्यक्तियों को ही प्रभावित नहीं किया, प्रत्युत स्वाधीनता संग्राम में अग्रणी दादा भाई नौरोजी जैसे व्यक्तियों को भी प्रभावित किया हैं। एक दिन लोकमान्य गंगाधर तिलक ने हैरान होकर देखा कि दादा जी भाई नौरोजी "सत्यार्थ प्रकाश" के पन्ने उलट रहे थे। उन्होंने विनोद में पारसी देश-भक्त से प्रश्न किया "क्या आप आर्य समाजी बन गये हैं?" नहीं मुझे स्वराज्य समय में स्वामी दयानन्द के ग्रन्थ से भारी प्रेरणा प्राप्त हुई है" दादा भाई ने उत्तर दिया।

अमर हुतात्मा भगतसिंह के सारे परिवार को ही इस अपूर्व कृति ने बलिदान पथ का पथिक बना दिया था। भगतसिंह के दादा अर्जुन सिंह को इस ग्रन्थ से कितना प्रेम था निम्न घटना से जाना जा सकता है—एक बार दादा अर्जुनसिंह किसी सम्बन्धी के यहां गये हुए थे। वहां किसी ग्रन्थ ने सत्यार्थप्रकाश के नात से कल्पित उदाहरण देकर खण्डन करता आरम्भ कर दिया। आपने कहा, उसमें ऐसा नही लिखा है यह आप स्वयं ही मनघड़न्त बात कर रहे हो। परन्तु पुस्तक होने कारण श्रोता सन्देह में थे: दादा जी वहां से अपने घर लौटे और अपने दिन बीस कोस पैदल चल कर आए और पुस्तक दिखाकर उनसे बोले कि बताओ इन में कहां है? तब ग्रन्थी से खिसक गया।

१९६५ के भारत पाक युद्ध के दौरान शहीद होने वाले मेजर आसाराम त्यागी इसी की बदौलत शहीदों की पंक्ति में अग्रिम स्थान पा सके। हरियाणा के गौरव होशियार सिंह तो युद्ध के मोर्चे पर भी सत्यार्थ प्रकाश साथ लिए हुए थे जो आज उनके घर में सुरक्षित उनकी स्मृति दिलाता है। इन्हीं वीरों में १९६५ के अमर शहीद कैप्टन सुरेन्द्र कुमार भी इसी अमर ग्रन्थ की उपज थे जो अबोहर क्षेत्र के प्रसिद्ध आर्य समाजी मास्टर तेगराम जी के सुपुत्र थे। इन आर्य वीरों में प्रसिद्ध आर्य नेता स्व० ठाकुर यशपाल सिंह के भतीजे कैप्टन विक्रम सिंह भी चमकते सितारे हैं। स्व० ठाकुर जी के कथनानुसार उन्हें कई बार सत्यार्थ प्रकाश का राजधर्म प्रकरण पढ़ाया गया।

देव दयानन्द ने गीत सुनाया

—प्रभुचन्द 'आर्य पथिक' पो०—चेवारा, (मुंगेर)—

ज्ञान कर आत्मा का रे प्राणी
सभी धर्मों का सार यही है ।
आकर ऋषियों ने तुझ को जगाया
तेरा बाजू पकड़ कर उठाया ।

देख दयानन्द गीत सुनाया
कर्म करके श्रद्धानन्द बताया ।
वेद ज्ञान दयानन्द गया
प्रेम से रहना सब को सिखाया ।

फिर भी क्यों तू न उठने की ठानी
इन्शा जाती है तेरी जवानी ।
क्यों बना है तू अब भी अज्ञानी
पाकर कर वैदिक धर्म को रे ज्ञानी ।

ज्ञान कर आत्मा का रे प्राणी
सभी धर्मों का सार यही है ।
ज्ञान कर——

जाग दयानन्द के कर्मवीरों
जाग श्रद्धानन्द के रणधीरों ।
जाग गुरु गोविन्द नानक के सुरों
जाग दयानन्द के धर्मवीरों ।

तुझे कितने महर्षि ने जगाया
तेरा क्या नाम है ये बताया ।
अमृत — पुत्र है तू
'पथिक' कि बात सुन ।

प्रभु — भक्ति में बन जा लाशानी
ज्ञान कर आत्मा का रे प्राणी ।
सभी धर्मों का सार यही है ।

ज्ञान कर——

दिवाली का सन्देश

श्री डा. सूर्यदेव शर्मा साहित्यालंकार एम. ए. डी. लिस्ट अजमेर

समय था जब यह भारत वर्ष,
जगद्गुरु था सब का सिरमौर।
अनूपम था उस का उत्कर्ष,
न समता का था कोई और ॥

चमकता चक्रवर्ति साम्राज्य,
अवनि तलपै अशेष अभिराम ।
विजय कर लंका सहित समाज,
अयोध्या आये थे जब राम ।

हुआ था सच्चा स्वागत मान,
हर्ष का उमड़ा सिन्धु अपार ।
किया श्री रामचन्द्र का मान,
जला कर दीप दिया उपहार ॥

दीप माला का दिव्य स्वरूप,
झलकता दीप ज्योति के बीच ।
मनाते पर्व प्रजा सह भूप,
नित्य स्वतन्त्र्यवृक्ष को सींच ।

वर्ष का वणिज ब्याज व्यापार,
लगाते थे व्यापारी आज ।
दीना दूर देश से टार,
सजाते थे सब वैभव—साज ॥

दिवाली की थी काली रात,
छिपाया जिसने वैदिक—भानु ।
कलित कलिका पर था आघात,
ललित लतिका पर क्रूर कृशानु ॥

"दया" का दिया बझा कर आप,
गए 'आनन्द' भवन के द्वार ॥
सहा आर्यों ने वह सन्ताप,
दीर्घ दारुण थी दैवी मार ॥

अवनि पे अर्क होत जब अस्त,
अमातम ढके अखिल आकाश ।
जला घर-घर में दीप गृहस्थ,
प्रतापी पाते पुण्य प्रकाश ॥

इसी विधि वैदिक 'सूर्य' स्वरूप,
छिपा स्वामी का जीवन आज ।
जलाओ घर-घर दीप रूप,
करो संस्थापित आर्य समाज ॥

अखिल जन मण्डल होवे आर्य,
वेद का पकड़ पथ कल्याण ।
हमारे घर आता प्रति वर्ष,
दिवाली का सन्देश महान् ॥

फिर दिवाली आई

–सत्यपाल 'पथिक'

यह आ गई है आ गई लो फिर दीवाली आ गई।
दिल पर ऋषि की याद फिर बन के घटा सी छा गई।
जिस दिन हुए संसार में दर्शन ऋषि के आखरी।
सुन लो कथा उस दिन की जो पत्थर को भी पिघलाई।
अजमेर की भूमि थी वह और वक्त था वह शाम का।
इक जोत जब बुझने लगी हर जिन्दगी घबरा गई।
कांचो जहर पिए दूध मे पूरा महीना हो गया।
सारा जिसम छलनी हुआ नस-नस चुभन तड़पा गई।
अन्दर से जिसकी नाड़ियां उस कांच ने थीं काट दी।
और जहर की तासीर भी अपना असर दिखला गई।
वेदों मे जितने मन्त्र हैं इतने ही छाले देह पर।
प्यारे ऋषि की यह दशा भक्तों के दिल दहला गई।
सारे वदन में दर्द था दु:खता था चाहे रोम-रोम।
पर मुस्कराहट अन्त तक चेहरे का साथ निभा गई।
यह तो वही काया है जो रखती थी ताकत शेर की।
और अब बड़ी मजबूर है गुल को तरह कुम्हला गई।
उसने कहा जब खोल दो दरवाजे और सब खिड़कियां।
यह बात ही अब कूच का बस वक्त समझा गई।
और फिर आकर मेरे पीछे खड़े होकर सभी
खुद ली समाधि का दशा जो अपूर्व दृष्य बना गई।
मन्त्रों का उच्चारण किया और प्रेम से सन्ध्या करी।
फिर लेट गये आराम से जिव्हा यह बोल सुना गई :
अच्छी करी लीला प्रभु इच्छा तुम्हारी पूर्ण हो।
यह कह के आंखें मूंद ली बिजली सी इक लहरा गई।
फिर सांस खीचा जोर से और तन से बाहर कर दिया।
बस यह हवा जाली हुई परलोक में पहुंचा गई।
लो देखते ही देखते पिंजरे का पछी उड़ गया।
हर दिल की धड़कन रुक गई हर इक नजर पथरा गई।
ऐसी लगीं इक चोट सी कैसे कहूं कैसी लगी।
दिल की कली जल कर रही हर आंख जल बरसा गई।
जग मे दयानन्द नाम का इक रहनुमा जाता रहा।
यह खबर थी सुनकर जिसे सारी जिमी थर्रा गई।
रुक जा 'पथिक' लिखते हुये आंखों में आंसू आ गए।
सूखा गला दिल भर गया बिरती तेरी चकरा गई।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक कृष्णपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वर्ष 14, अंक 35, 22 कार्तिक सम्वत् 2038, तदनुसार 8 नवम्बर 1981, दयानन्दाब्द 156। एक प्रति 35 पैसे (वार्षिक शुल्क 15 रुपए)

मानव हृदय में सत्य और असत्य का यह अनवरत युद्ध

अपने अन्दर के युद्ध में विजय प्राप्त करो

युद्ध कई प्रकार के होते हैं जैसे दो देशों की सेनाओं का आपस मे युद्ध दो देशों का युद्ध, दो पार्टियों का युद्ध, दो वर्गों का युद्ध दो व्यक्तियों का युद्ध आदि आदि। परन्तु एक युद्ध एक ही मानव के अन्दर होता रहता है। दूसरे युद्ध कभी-कभी और किसी समय होते हैं और युद्ध का कारण दूर हो जाने पर बन्द हो जाते हैं। परन्तु मानव का हृदय दो प्रकार की भावनाओं का युद्ध स्थल है। ये हैं सत्य और असत्य, अच्छी और बुरी भावनाएं। यह आश्चर्य का विषय है की एक ही शरीर में एक ही हृदय व मन में शुभ और अशुभ दोनों प्रकार की भावनाएं रहती है। जिनमे निरन्तर संघर्ष चलता रहता है। अच्छे से अच्छे व्यक्ति के मन में कभी-कभी दानवी कुप्रवृतियां जागृत हो उठती हैं और उसे पतन की ओर खींच ले जाती है। वह जानता बूझता उनकी की ओर चलता जाता है और प्राय उसके हृदय में पश्चाताप का उदय तब होता है जब उसका पतन पूरी तरह हो चुका होता है। पतित व्यक्ति का अन्तःकरण फिर जोर मारता है। आत्मग्लानि से फिर सत्य प्रवृतियों की ओर बढ़ने लगता है और धीरे-धीरे सद्गुणों का विकास होकर दुष्ट पतित और अधम मनुष्य भी फिर से सर्वोच्च मान, पद व प्रतिष्ठा को प्राप्त कर लेता है।

मनुष्य की मनोवृतियों में अक्सर यह संघर्ष निरन्तर चलता ही रहता है। कभी सोचता है मै ऊपर उठूंगा, धनी बनूंगा, बलवान बनूंगा, मजबूत इन्सान बनूंगा। आगे बढूंगा। जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए रुकूंगा नहीं। परमार्थ के पथ पर चलूंगा। सत्य को ग्रहण करूंगा और असत्य को सदा के लिए त्याग दूंगा। जब इन्सान इन उच्च भावनाओं के रास्ते मे रोड़ा अटकाने वाले असत्य विचारो, प्रवृतियो, भावनाओ को परास्त कर देता है और मानव हृदय इन पर विजय पा लेता है तो जीवन में महान चढ़ाव आता है।

जब मानव इन भावो को भूलाकर, वासना मोहक, मादक, पाप पंकज आमोद-प्रमोद, असलीलता आदि आदि में बहक जाता है। जब मन पर व हृदय पर असत्य प्रवृतियां उसे जकड़ कर अपना अधिकार जमा लेती हैं और इन्द्रियों को चपल कर देती है और वासनाओ में प्रवृत हो जाती है। वासनाओं से क्रोध, क्रोध से सम्मोह सम्मोह से स्मृति-भ्रम, स्मृति-भ्रम से बुद्धि नाश और बुद्धिनाश से सर्वनाश हो जाता है।

यह करूं या वह करूं जब मन में (हृदय में) ऐसा द्वन्द्व छिड़ जाता है तब मनुष्य को सावधान हो जाना चाहिए और वह रास्ता पकड़ना चाहिए जिसके साथ अपनी आत्मा हो वही श्रेष्ठ मार्ग है। अन्दर की आवाज को सुनकर जो आत्मा व परमात्मा की होती है मनुष्य को अपना मार्ग चून लेना चाहिए संघर्ष देर तक न चलने देना चाहिए नहीं तो राक्षसी विचार दैवी विचारों पर हावी हो जाएंगे। दिव्य विचारों, प्रवृतियों को बल देकर राक्षसी विचारों प्रवृतियों को तुरन्त नष्ट कर दें। नहीं तो यह भयंकर शत्रु जीवन को तबाह कर देगा। जरा-सी ढील से सारा बना बनाया ही खेल बिगड़ जाएगा।

राक्षसत्व इन्सान को गिराता है देवत्व इन्सान को ऊपर उठाता है। दोनों प्रकार की प्रवृतियों का निरन्तर हृदय में युद्ध चलता रहता है शुभ और अशुभ विचार निरन्तर उठते रहते हैं। लेकिन जो इस अन्दर के शत्रु से सावधान होते हैं। वह उस पर विजय प्राप्त कर लेते हैं और जो असावधान होते हैं वह शत्रु के द्वारा मुशकें बान्ध कर जकड़ लिए जाते हैं और उनका जीवन प्राय. नष्ट हो जाता है।

मन को निर्बल मत बनने दें। गिरते हैं तो फिर उठ खड़े हो जाओ। पहले तो दृढ़ता से कदम रखो गिरने का अवसर ही न आए अगर ऐसी स्थिति आ भी जाए तो गिरे मत पड़े रहो अपने अन्दर के देवत्व को बलवान बनाओ फिर मंजिल कोई दूर नहीं।

विचार धारा ही प्रत्येक कर्म की जननी है। गन्दी विचार धारा कभी न बनने दें, वाणी से सत्य ही बोले इससे वाणी का सयम हो जाएगा। कर्म अच्छे करें जिनको करने को आत्मा व परमात्मा प्रेरित करें, दत्तचित्त करें, इन्द्रियो को रोकें इससे कर्म-सयम हो जाएगा, मन को व्यर्थ के मोह जाल, वासना, दुष्ट भावो, इच्छाओं विचारो को रोके इससे मन का सयम हो जाएगा। बुद्धि से विचार करके कार्य करें। जैसे कुशल सेनापति शत्रु के चारो ओर घेरा डाल कर अपनी बुद्धि के बल से उससे हथियार डलवा देता है। और शत्रु विवस होकर आत्म समर्पण कर देता है वैसे ही अपनी श्रेष्ठ भावनाओं विचारों और इन्द्रियो की शक्तिसे दुष्ट विचारों रूपी शत्रु को वश मे कर निरन्तर कल्याण के पथ पर बढने चलो।

धन जीवन के लिए या जीवन धन के लिए ?

आज यह विचारणीय प्रश्न है कि धन जीवन के लिए है या जीवन धन के लिए है? पहले धन जीवन के लिए समझा जाता था परन्तु अब सारा जीवन धन के कमाने में लगा दिया जाता है। जीवन को जोखम में डाल कर, दाव पर लगा कर भी धन को इकट्ठा किया किया जाता है आखिर क्यों? कहा जाता है धन से सभी सुख के साधन मिल जाते हैं। परन्तु क्या कुछ मिलता है आओ विचार करें।

पैसे से सुन्दर स्वादिष्ट पकवान मिठाई, बढ़िया भोजन खरीदे जा सकते हैं। परन्तु भूख नहीं। भूख ढेर के ढेर रुपए देने से भी बाजार में नहीं मिलेगी रुपए से बादाम और शक्ति वर्धक दवाईयां तो खरीदी जा सकती है परन्तु शक्ति नहीं। ऐश्वर्य का सारा सामान तो खरीदा जा सकता है परन्तु शान्ति नही मिल सकती। रुपए से ऐनक मिल सकती हैं। परन्तु नजर नही मिल सकती रुपए से कोमल बिस्तर तो मिल जाएगा परन्तु नीन्द नही मिल सकेगी। रुपए से पोडर सुर्खी तथा श्रृंगार के दूसरे साधन तो मिल जाएंगे परन्तु सुन्दरता नही मिल सकेगी। रुपए से विद्या मिलेगी परन्तु विवेक नहीं। नौकर मिल जाएगा परन्तु सेवक नही। रुपए से स्त्री मिल सकती है। परन्तु धर्मपत्नी नही मिल सकेगी। धन से साथी मिल जाएंगे परन्तु सच्चा मित्र नहीं मिल सकेगा। रुपए से ढोलक बाजा, सितार आदि मिल सकते हैं। परन्तु सुरीला कण्ठ नही मिल सकता। ससार की उत्तम वस्तुए प्रायः बिना रुपए पैसे के ही प्राप्त हुआ करती है।

आर्य समाज के दीवाने सत्यपाल आर्य भिक्षु

(ले०—श्री सूर्य प्रकाश जी मेयरमैन)

३१ अक्तूबर को श्री सत्यपाल जी आर्य भिक्षु की पुण्य स्मृति में प्रतिवर्ष उनके जन्म स्थान सिंगोवाल (गुरदासपुर) में विशेष समारोह किया जाता है इस वर्ष भी ३१ अक्तूबर को प्रातः ८ बजे से हवन यज्ञ के साथ यह समारोह आरम्भ हुआ। जिसमें दीनानगर गुरदासपुर और आस-पास के बहुत आर्य बन्धुओं ने भाग लिया। श्री सेवाराम जी रेडियो सिंगर श्री प. धर्मपाल जी, श्री प. विजय कुमार जी शास्त्री, श्री हजारी लाल जी भजनोपदेशक के अतिरिक्त अन्य भी आर्य समाज के प्रतिष्ठित नेतागण व कार्यकर्त्ताओं ने उन्हें श्रद्धांजलि भेंट की।

श्री सत्यपाल जी आर्य भिक्षु आर्य समाज के बड़े दीवाने थे उन्होंने दलितोद्धार सभा में वर्षों कार्य किया। उनका जन्म सिंगोवाल ग्राम (गुरदासपुर) में २८ फरवरी १९०४ को श्री महाशय ताराराम जी के घर हुआ। उनकी माता का नाम सन्तोषी देवी था। इनका जन्म का नाम उद्धोराम था और बाद में वह सत्यपाल आर्य के नाम से प्रसिद्ध हुए। उनकी प्रारम्भिक शिक्षा आर्य हाई स्कूल दीनानगर में हुई। पं. सोम देव जी महाराज से इन्होंने उच्च शिक्षा प्राप्त की और वैदिक साहित्य के अध्ययन के पश्चात् आप सन् १९२० से १९४५ तक आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब (लाहौर) में उपदेशक रूप में कार्य करते रहे।

जनवरी १९३९ में पण्डित राम भजदत्त जी की पुण्य स्मृति में आर्वाखा (दीनानगर) में स्मृति भवन बनाने का निश्चय हुआ। आपने इस कार्य के लिए अपने आपको समर्पण कर दिया और भीषण प्रतिज्ञा की कि जब यह भवन नहीं बन जाता मैं अपने बाल बच्चों को नहीं मिलूंगा। जमीन पर सोऊंगा और अपने दाढ़ी केस भी नहीं कटवाऊंगा, भोजन भिक्षा मांग कर करूंगा। लोगों ने तथा मित्रगणों ने आपको ऐसी भीषण प्रतिज्ञा करने से रोका लेकिन आपकी प्रतिज्ञा महाराणा प्रताप की प्रतिज्ञा थी, भीष्म पितामह की प्रतिज्ञा थी, आपने किसी की न सुनी और एक वर्ष तक निरन्तर भगवां वस्त्र धारण करके स्थान-२ पर भिक्षुक बन कर स्मारक के लिए भिक्षा मांगी। आपके दृढ निश्चय और कठोर परिश्रम ने आप को इसमें सफलता प्रदान की और आप उस समय से आर्य भिक्षु के नाम से प्रसिद्ध हो गए :

सन् १९४० में हरिजन दलितोद्धार तथा महाशय कौमी सुधार सभा आर्वाखा के आप प्रधान निर्वाचित हुए। आपने घूम-२ कर हरिजनों में प्रचार कार्य किया। आपकी प्रेरणा से जनसमूह में हरिजन जातियों ने अपना "धर्म" वैदिक धर्म लिखवाया। आपने गांव-२ में आर्य समाजों की स्थापना की और आपके आह्वान पर सैंकड़ों हरिजन वीर, हैदराबाद आन्दोलन में सत्याग्रह के लिए गए। आप स्वयं भी सत्याग्रह के लिए हैदराबाद जत्था लेकर गए गुलबर्गा सैंट्रल जेल में दो वर्ष एक मास की सजा हुई। जेल से रिहा होने के बाद आप राष्ट्रपिता महात्मा गान्धी को वरधा-श्रम में मिले और कई महत्वपूर्ण विषयों पर उन से विचार विमर्श किया।

१६ जुलाई सन् १९४१ को आर्वाखा में वेद भवन पं. राम भजदत्त की आधार-शिला महात्मा गान्धी ने रखनी थी परन्तु किसी विशेष कारण से वह न आ सके उनके स्थान पर माता कस्तूरबा के शुभ कर-कमलों से यह आधारशिला रखी गई। बड़े सुचारू ढंग से इस भवन का निर्माण किया गया जो आज भी उन पुरानी यादों को ताजा कर रहा है।

सन् १९४७ में देश आजाद हो गया और देश के विभाजन के फल स्वरूप पाकिस्तान बन जाने से बहुत से भाई बे घर होकर पाकिस्तान से जि. गुरदासपुर में आए। आपने उन लोगों की बड़ी सेवा की, फरवरी १९४८ में आप हाजरी रिपोर्ट जिला हरिजन वेलफेयर अफसर गुरदासपुर नियुक्त हुए। इस समय आप ने जिला गुरदासपुर में आए शरणार्थियों को हजारों रुपया श्री हेमराज जी तहसीलदार को साथ लेकर शरणार्थियों को तकावी के दिलवाए और स्थान-२ पर उनके दुःखी परिवारों के लिए राशन और दूसरा खाने पीने का सामान ट्रकों द्वारा भिजवाया। आप दुःखी परिवारों की मदद के लिए सदा तत्पर रहते थे आपने उस समय के पंजाब के मुख्यमन्त्री डा. गोपी चन्द जी भार्गव से भेंट करके हरिजनों की भलाई के लिए पंजाब में कार्य करने की मांग की। जिसके फलस्वरूप हरिजनोद्धार के लिए कई कार्य किए गए।

सन् १९५७ में हिन्दी रक्षा आन्दोलन में आपने बढ़-चढ़ कर भाग लिया आप अपना एक जत्था लेकर दीनानगर से २४ जून को चण्डीगढ़ के लिए रवाना हुए। रास्ते में स्थान-२ पर प्रचार करते हुए ५ जुलाई १९५७ को चण्डीगढ़ पहुंच कर मुख्यमन्त्री श्री प्रताप सिंह जी कैरों की कोठी के आगे धरना शुरू कर दिया, आपको साथियों सहित गिरफ्तार कर लिया गया और पहले गुरदासपुर जेल में तथा उसके बाद पटियाला जेल में रखा गया।

आप अन्त समय तक वैदिक धर्म का प्रचार करते रहे। हरिजनों के उद्धार के लिए तथा आर्य समाज के प्रचार के लिए आपने अपना सारा जीवन लगा दिया। १९७५ में आपको दिल के दौरे पड़ने लगे और सख्त बीमार हो गए पठानकोट सिविल हस्पताल में आपका इलाज चलता रहा परन्तु यह बीमारी आपकी जान लेवा साबित हुई और आप ३१ अक्तूबर १९७५ को अपने सारे परिवार को रोता बिलखता छोड़ कर सदा के लिए अपनी जीवन यात्रा समाप्त कर गए।

आपका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीत्यानुसार पूज्यपाद स्वामी सर्वानन्द जी अध्यक्ष दयानन्द मठ दीनानगर की देख-रेख में हुआ। सैकड़ों लोगों ने इस पवित्र आत्मा को अपनी श्रद्धांजलियां अर्पित की। राजनैतिक और धार्मिक नेताओं ने इस अवसर पर पहुंच कर परिवार को सम्वेदना दी। जिसमें पंजाब मन्त्रिमण्डल के मन्त्री श्री कृष्णनाथ सहगल, श्री वीर मुनि जी एम.एल.ए. के अतिरिक्त और कई एम, एल. ए. वहां पहुंचे।

श्री सत्यपाल आर्य भिक्षु एक सच्चे भक्त, आर्य समाज के महान् प्रचारक, निष्काम सेवक, एक कर्मठ कार्यकर्त्ता, महाशय बरादरी में जान डालने वाले, सभी से प्रीति करने वाले, एक श्रेष्ठ व्यक्ति थे जिनका अभाव विशेष करके महाशय बरादरी में सदा खटकता रहेगा। उनकी पुण्य स्मृति मनाते हुए हुए हमारी उन्हें यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी कि हम उनके पद चिन्हों पर चलने का व्रत लें और उनकी भान्ति देश, जाति तथा समाज के लिए कार्य करने का संकल्प करें।

यह प्रसन्नता की बात है कि श्री सत्यपाल आर्य भिक्षु के परिवार से उन के पोते श्री विजय कुमार जी शास्त्री जो आजकल आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब में उपदेशक हैं ने उनके अधूरे कार्य को पूरा करने तथा उनके स्वप्नों को साकार बनाने का संकल्प लिया है जो इस समय वेद भवन आर्वाखा के महामन्त्री हैं और जो स्मारक श्री आर्य भिक्षु जी ने अपने खून पसीने से परिश्रम करके बनवाया था उसको उनके अनुरूप चलाने का प्रयत्न कर रहे हैं। इस वेद भवन के प्रधान श्री महाशय शंकर दास जी भी बड़े कर्मठ और लगनशील कार्यकर्ता हैं।

आर्य समाज वेद मन्दिर गढ़ा (जालन्धर) में वेद कथोत्सव

१२ से १८ अक्तूबर तक आर्य समाज वेद मन्दिर गढ़ा में वेद कथोत्सव बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। जिसमें जालन्धर की कई समाजों ने भाग लिया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सुयोग्य उपदेशक श्री विजय कुमार जी शास्त्री कथा करते रहे और श्री हजारी लाल जी के प्रभावशाली भजन होते रहे। उपदेशों व भजनों से जनता बड़ी प्रभावित हुई। १८-१०-८१ को ऋषिलंगर हुआ जिसमें सैंकड़ों आर्य बन्धुओं ने प्रीति भोज किया।

पंचपुरी (गढवाल) में सम्मेलन

आर्य समाज पंचपुरी (गढ़वाल) की ओर से स्व० श्री दयानन्द जी भारतीय स्वतन्त्रतासंग्राम सेनानी की जन्म शताब्दी ११ से १७ अक्तूबर तक बड़े उत्साह से मनाई गई और इसी प्रकार १७ अक्तूबर १९८२ तक यह शताब्दी भिन्न-भिन्न स्थानों पर मनाई जाएगी। इसमें हजारों लोगों ने भाग लिया। लुधियाना के हीरो साईकल उद्योग के मालिक श्री सत्यानन्द जी मुंजाल ने इस समारोह की सफलता में सहयोग दिया। श्री वेद प्रकाश जी शास्त्री लुधियाना श्री दीन दयाल जी आर्य लुधियाना, श्री स्वामी चिदानन्द जी और दूसरे कई उपदेशक तथा भजनोपदेशकों ने इसमें भाग लिया।

वार्षिक चुनाव

जिला आर्य सभा पटियाला का निर्वाचन :—

प्रधान—श्री हरप्रेम चन्द जी,
उप प्रधान—श्री मुनि चेतन्य देवजी
उप प्रधान—श्रीमती कौशल्या देवी जी।
मन्त्री—श्री जसपत्र जी मल्होत्रा,
प्रचार मन्त्री—श्री अशोक कुमार जी
कोषाध्यक्ष—श्री रमेश चन्द्र जी नागा।

ओ३म्

आर्य मर्यादा

सम्पादकीय—

ऋषि के पश्चात्

सन् १८८३ में दीपावली की रात को महर्षि दयानन्द महाराज का निर्वाण हुआ था। इस प्रकार इस वर्ष उनके निर्वाण के ९८ वर्ष पूर्ण हुए हैं। सन् १९८३ में हम उनकी निर्वाण शताब्दी मनाने की योजना बना रहे हैं।

क्या यह समुचित न होगा कि हम सर्वेक्षण कराएं कि इन ९८ वर्षों में आर्य समाज ने ऋषि के पश्चात् उनके लक्ष्यों और उद्देश्यों की पूर्ति में क्या कुछ किया है और जो कुछ शेष है उसे आने वाले २ वर्षों में पूरा करने की कोई प्रभावशाली योजना बनाएं। क्योंकि मैं प्रति वर्ष केवल निर्वाण दिवस मनाते रहना और कोई ठोस रचनात्मक पग न उठाना कोई लाभदायक बात नहीं समझता।

जहां तक आर्य समाज के विस्तार का सम्बन्ध है वह पर्याप्त सन्तोषजनक है। इस समय भारत के किसी भी कोने में चले जाएं आपको सर्वत्र आर्य समाजें मिलेंगी। भारत के हर प्रान्त में आर्य समाज के प्रान्तीय संगठन हैं और उनके अधीन सभी प्रान्तों के छोटे-बड़े नगरों में आर्य समाज के मन्दिर हैं और उनमें बराबर आर्य समाज के सत्संग लगते हैं और अब तो यह बात बड़े गर्व की है कि विदेशों में भी आर्य समाजें बन रही हैं और उनके बड़े बड़े संगठन बन रहे हैं अभी कुछ समय पूर्व लन्दन में और मारीशस में आर्य समाज के अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन हुए हैं। मेरी अपनी सम्मति में शायद ही किसी दूसरे भारतीय धार्मिक संगठन का इतना बड़ा संगठित विस्तार अब तक हो सका होगा।

यह भी मानना चाहिए कि आर्य समाज की ख्याति को चार चांद लगाने का काम किसी सीमा तक इसकी संस्थाओं ने भी किया है। यह संस्थाएं डी० ए० वी० और आर्य स्कूल तथा कालेजों के नाम से इस समय लगभग सभी प्रान्तों में चल रही हैं। पहले यह संस्थाएं केवल पंजाब में थीं। किन्तु अब इन का क्षेत्र प्रति दिन बढ़ रहा है। मैं यह भी मानता हूं कि इन संस्थाओं से आर्य समाज का नाम सर्वत्र पहुंचा है किसी समय इन संस्थाओं में आर्य समाज की शिक्षाएं भी समुचित ढंग से दी जाती थीं। उनके अच्छे शिक्षा स्तर के कारण दूसरे मतों और सम्प्रदायों के लोगों के बच्चे भी इनमें शिक्षा पाकर आर्य समाज से परिचित हुआ करते थे। किन्तु अब वह स्थिति नहीं जो पहले थी।

अब तो आर्य समाज संस्थाओं के लिए रह गया है संस्थाएं आर्य समाज के लिए कुछ नहीं कर रहीं। अब तो स्थिति यह हो गई है कि टीचरों की यूनियनें अपने लक्ष्यों के लिए इन्हें चला रही हैं बुरा मानने की बात नहीं कि आर्य समाज इनके जंजाल में उलझ कर रह गया है और पूरी शक्ति इनके संचालन में लगा रहा है। जिसका परिणाम आर्य समाज के प्रचार की दृष्टि से कुछ नहीं निकल रहा।

जहां तक प्रचार का सम्बन्ध है आर्य समाज दिन ब दिन इस क्षेत्र में पीछे जा रहा रहा है आर्य समाज में अब पहले के से मिशनरी प्रचारक नहीं रह रहे। न ही पुराने शास्त्रार्थ महारथी और विद्वान् इसके प्रचार क्षेत्र में दीख रहे हैं। मेरी समझ में ऋषि दयानन्द के प्रचार के दो प्रमुख लक्ष्य थे। आस्तिकता अर्थात् सच्ची ईश्वर भक्ति का प्रचार और दूसरा वेदों की सच्ची शिक्षा का प्रचार। जहां तक ईश्वर भक्ति और आस्तिकता का सम्बन्ध है प्रतिदिन स्थिति बिगड़ रही है। आज हमारे देश में भगवान् के सिवा सब की पूजा होती है और वेदों के सिवा सभी ग्रन्थों और पुस्तकों का पाठ और प्रचार होता है। गुरुडम हमारे यहां कितना जोर पकड़ रहा है इसका कोई अन्दाज नहीं। इसी प्रकार वेदों का वास्तविक रूप निखारने में आर्य समाज अभी सफल नहीं हो सका। आज भी वेद संसार भर के लिए केवल रहस्य बने हुए हैं। हम इन्हें सब सत्य विद्याओं का पुस्तक सिद्ध करने में सफल नहीं हो सके। आवश्यकता इस बात की है कि हम वेदों के अनुसन्धान पर अपनी पूरी शक्ति लगाएं और सब भाषाओं में उनके अर्थों को सफल तथा रोचक ढंग से रखें।

इसके लिए सबसे बड़ी बात है एक निश्चय करने की और वह यह कि हम अपने प्रचार का लक्ष्य केवल ईश्वर भक्ति और वेद प्रचार रखें। यह बड़े दुःख की बात समझिए कि हमारे सत्संगों और सम्मेलनों में इन दो बातों के बिना सब बातों की चर्चा होती है। जिसका यह परिणाम समझिए कि साधारण जनता हमारे भाषणों से तृप्त नहीं होती और अब दूसरे संगठनों के समारोहों में उसकी बड़ी भीड़ लगी रहती है। क्योंकि वे दूसरे सन्तों, साधुओं और गुरुओं की बातों में अधिक शान्ति अनुभव करती है।

अतः ऋषि के पश्चात् हमें उनके मिशन की पूर्ति के लिए बड़ी गम्भीरता के के साथ कोई योजना बनानी चाहिए। केवल मात्र ऋषि निर्वाण दिवस मनाने और उस पर ऋषि चरणों में श्रद्धांजलियां अर्पित करने से कुछ नहीं बन रहा। इसलिए मैं आर्य समाज के नेताओं और आर्य समाज के बड़े २ संगठनों के कर्णधारों से यह अपील करना चाहता हूं कि वे ईश्वर भक्ति और आस्तिकता के प्रचार में और वेद की शिक्षाओं के प्रसार में अपने सभी साधन जुटा दें। इन दो बातों को ही अपना केवल मात्र लक्ष्य रखें शेष सभी साधन इस लक्ष्य की पूर्ति में लगा दें इसी में आर्य समाज और देश का कल्याण होगा।

उदयपुर की सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी

मुझे खेद है कि मैं अनिश्चित स्वास्थ्य और कई अन्य व्यवस्ताओं के कारण उदयपुर नहीं जा सका किन्तु बताया जाता है कि लाखों लोग देश के कोने-२ से इस समारोह में इकट्ठे हुए। आर्य समाज के अनेक विद्वानों के जोरदार भाषण हुए मैं सार्वदेशिक सभा और राजस्थान प्रतिनिधि सभा के नेताओं को उनकी इस सफलता पर जहां हार्दिक बधाई देता हूं: वहां उनसे यह भी प्रार्थना करता हूं कि वे शताब्दी के वास्तविक लक्ष्य सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार की भी योजना बनायें और इस सम्बन्ध में सब से बड़ी योजना सत्यार्थ प्रकाश के सभी समुल्लासों पर अलग-अलग पुस्तकें प्रत्येक भाषा में प्रकाशित करने का है। काश कि हमारे नेता शीघ्र इस की ओर ध्यान दे सकें।

—जावेद

स्वागत है

आर्य समाज लन्दन के प्रधान प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज १५ वर्ष के पश्चात् अपने देश भारत में इन दिनों पधारे हुए हैं। वह दो मास अपने देश में ठहरेंगे और अपने मित्रों तथा सम्बन्धियों से मेल-मिलाप करेंगे, साथ ही आर्य समाज के बड़े-बड़े समारोहों में सम्मिलित होंगे। कुछ दिन पूर्व वह उदयपुर की सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी में सम्मिलित हुए थे। और अभी २७ अक्तूबर को दिल्ली के ऋषि निर्वाण दिवस समारोह में भी उपस्थित हुए थे। हम उनका अपने देश पहुंचने पर हार्दिक स्वागत करते हैं।

वह हमारे पंजाबी आर्य भाई हैं। उनका जन्म अमृतसर में हुआ था और आपने अपनी प्रारम्भिक शिक्षा अमृतसर के वैदिक धर्म स्कूल में पण्डित परशुराम जी की देखरेख में पाई। इसके पश्चात् आपने अमृतसर के के० बी० के० हाई स्कूल में शिक्षा प्राप्त की और मिडल और मैट्रिक परीक्षाएं जिला भर में प्रथम रहकर उत्तीर्ण की। वहां आपने पण्डित धर्मभानु जी शास्त्री के सम्पर्क से आर्य समाज का परिचय पाया।

अमृतसर के हिन्दू कालिज से संस्कृत आनर्ज के साथ आपने पंजाब यूनिवर्सिटी लाहौर से एम० ए० फिलासफी की परीक्षा पास की और पांच वर्ष वर्ष वहीं प्रोफैसर के रूप में काम किया। इसके पश्चात् आपने डी० ए० वी० कालिज होशियारपुर में काम करना आरम्भ कर कर दिया। जहां उन्होंने १३ वर्ष तक फिलासफी विभाग के हैड के रूप में कार्य किया। यहां उन्होंने हिन्दी और इतिहास में भी एम० ए० की परीक्षाएं पास कीं। और आजीवन सदस्य के रूप में दयानन्द कालिज मैनेजिंग कमेटी, आर्य कन्या विद्यालय, दयानन्द सालवेशन मिशन और विश्वेश्वरानन्द संस्थान में काम किया। आपने उक्त विद्यालय तथा संस्थान के मन्त्री के रूप में भी काम किया। यहां उन्हें लाला देवीचन्द, प्रिंसिपल रलाराम, आचार्य विश्व बन्धु और प्रि० बहादुरमल का निकट सम्पर्क प्राप्त हुआ। प्रिंसिपल सूर्यभानु जी का भी उन्हें आशीर्वाद प्राप्त हुआ। यहां से सन् १९६३ में वह इंगलैंड चले। और लन्दन में प्रोफेसर के रूप में काम करने लगे, आपने वहां हिन्दू सैन्टर के प्रधान के रूप में १२ वर्ष काम किया। इसके साथ ही उन्होंने आर्य समाज का काम भी प्रारम्भ कर दिया। और पिछले ९ वर्ष से आर्य समाज लन्दन के प्रधान हैं। सन् १९७८ में उनकी देखरेख में लन्दन में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य समाज शताब्दी का भव्य समारोह हुआ। हम उनका भारत पधारने पर हार्दिक स्वागत करते हैं और पंजाब की आर्य समाजों से विशेष रूप से प्रार्थना करते हैं कि जहां-जहां वह पहुंचें वहां उनका स्वागत करें।

—रामचन्द्र जावेद सभा मन्त्री

यात्रा वृत्त

—डा. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार विजिटर,

गुरुकुल कांगड़ी में मेरे आठ दिन

सारे परिसर का सब छात्रो का एक वेश होना होना चाहिए', अध्यापको का एक वेश होना चाहिए सब के वेश पर गुरुकुलीयता की छाप होनी चाहिए। इसी प्रकार विश्वविद्यालय के छात्र जो इस परिवार मे रहते है या बाहर से आते हैं सब पर गुरुकुलीयता छा जानी चाहिए। विश्वविद्यालय के अध्यापक अपने को यह न समझें कि वे प्रिविलेण्ड क्लास हैं। सब को मिलकर इस परिवार को शुद्ध वैदिक बनाने का प्रयत्न करना चाहिए और जो अपने को यहा की आश्रम-व्यवस्था मे ढाल सके तो उसे अपना मार्ग चुन लेना चाहिए। हमारा मूल हमारी जड विद्यालय विभाग है वही यथार्थ गुरुकुल है—यह लक्ष्य सामने रखकर सबको उसे दृढ बनाने तथा अपने को उसके अनुकूल ढालने से ही गुरुकुल के अस्तित्व का कुछ न्याय सगत कारण हो सकता है। यहा की प्रगतियो मे-हवन, सध्या, त्यौहार, प्रोग्राम मे सब परिवारवासियों को यह समझ कर कि व्यक्तिगत रूप मे उनका कोई स्वतन्त्र अस्तित्व नही है, वे सब इस परिवार में रहने के कारण मूल गुरुकुल के अग हैं, उसी गुरुकुल को, उसकी विचारधारा को पनपाना है, यहा की हर व्यवस्था मे घुल मिल जाना चाहिए।

आयुर्वेद महाविद्यालय के विषय मे मेरा विचार है कि इस का गुरुकुल से किसी न-किसी प्रकार का सबन्ध बनाए रखना चाहिए। इसके तीन उपाय हैं। एक उपाय तो यह है कि आयुर्वेद के परीक्षोत्तीर्ण छात्रो के लिए गुरुकुल विश्वविद्यालय द्वारा पी एच. डी के निबन्ध लिखने की व्यवस्था कर दी जाए, जिस पर निबन्ध पर विश्वविद्यालय की तरफ से उपाधि प्रदान की जा सके, दूसरा उपाय है कि आयुर्वेद कालेज के छात्रों के लिए औषधि-निर्माण की व्यवस्था गुरुकुल फार्मेसी से हो जिससे गुरुकुल का आयुर्वेद महाविद्यालय के साथ सम्बन्ध बना रहे, तीसरा उपाय यह है कि गुरुकुल विश्वविद्यालय से होम्योपैथी की शिक्षा देने का एक पृथक् कालेज खोल दिया जाए जिसके छात्र चालू विश्वविद्यालय के डिसेक्शन, एनाटोमी आदि विभागो में शिक्षा ग्रहण कर सकें। इसके लिए होम्योपैथी मैटीरिया मैडिका, थैराप्यूटिक्स तथा सिद्धान्त पढ़ाने के लिए एक या दो शिक्षक पर्याप्त होवे। इनका व्यय सरकारी होम्योपैथिक बोर्ड से अनुदान के रूप में लिया जा सकता है।

ऊपर जो—कुछ मैंने लिखा है उसमें बहुत कुछ तो बिना व्यय साध्य है, बहुत कुछ व्यय साध्य है। जो व्यय साध्य है उस पर मैं अलग से विचार प्रकट करूंगा जो मैं फिलहाल नहीं कर रहा।

—

सर्वधर्म हिन्दू हरिजन एकता स्नेह सम्मेलन

आर्य समाज दयानन्द मार्ग शकूर बस्ती नई दिल्ली के वार्षिक उत्सव पर

आर्य समाज दयानन्द मार्ग शकूर बस्ती दिल्ली के वार्षिक उत्सव पर २७ सितम्बर को सर्व धर्म हिन्दू हरिजन एकता स्नेह सम्मेलन श्री सज्जन कुमार जी ससद सदस्य दिल्ली की अध्यक्षता मे हुआ—

जिसमे सर्वश्री प० सच्चिदानन्द जी शास्त्री वरिष्ठ उपमन्त्री—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, प्रिंसिपल श्री ओम्प्रकाश जी महामन्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य, श्री मामचन्द जी रिवारिया, मन्त्री दलित वर्ग सभा दिल्ली प्रदेश तथा मन्त्री आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली राज्य श्री नेकीराम जी गुप्त पूर्व उपशिक्षा निदेशक दिल्ली राज्य, प्रधान आर्य समाज दयानन्द मार्ग (आर्य समाज की ओर स)

२ सर्वश्री डा० गोस्वामी गिरिधारीलाल जी महामन्त्री—सनातन धर्म प्रतिनिधि श्री प० ऋषिराम जी भागी, महामन्त्री अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा श्री प० सोमनाथ जी शास्त्री कार्यालय मन्त्री अ० भा० ब्रा० महा सभा, श्री रामेश्वर प्रसाद जी गुप्त (सस्थापक सनातन धर्म ट्रस्ट धर्म भवन, साऊथ एक्सटैंशन, नई दिल्ली) सनातन धर्म की ओर से)।

३ ज्ञानी श्री सरदार हजारासिंह मस्त ग्रन्थी गुरुद्वारा शकूर बस्ती, स० मेहरसिंह जी जत्थेदार और स० मनोहरसिंह म० अमरीकसिंह तथा स० सुरेन्द्रसिंह जी स० महेन्द्र सिंह आदि सिखो की ओर से।

४ श्री कृष्ण स्वरूप जी पूर्व कार्यकारी पार्षद, प्रधान—आल इण्डिया हरिजन लीग रजि दिल्ली प्रदेश—स्थापित महात्मा गान्धी। श्री रामकिशन पारचा, प्रधान शकूर बस्ती शाखा और श्री माम चन्द रिवारिया (हरिजनों की ओर से)।

५ श्री वासुदेवराय जी प्रधान सम्पादक एक नजर (निरकारी मण्डल की ओर से)।

६ श्री जयन्ती प्रसाद जी जैन सभा की ओर से)।

७ श्री महावीर प्रसाद जी जैन (पिताम्बर जैन सभा की ओर से)।

८ श्री डा० प्रेमलाल जी सहगल (राधा स्वामी सत्सग की ओर से)। विशेष रूप से आमन्त्रित एव उपस्थित थे।

९ श्री रामप्रकाश जी मन्त्री—(श्री रामतीर्थ मिशन की ओर से)।

सम्मेलन के प्रारम्भ में सर्व प्रथम भारत की अखण्डता एव स्वतन्त्रता के स्वतन्त्रता सेनानी महर्षि दयानन्द के अनन्य भक्त और सुप्रसिद्ध हिन्द समाचार के निर्भीक सम्पादक (पत्रकार) अद्वितीय पजाब केसरी लाला जगतनारायण जी अमर बलिदान की दिवगत आत्मा की तथा परिवारजनो की शान्ति तथा शक्ति प्रदान करने हेतु दो मिनट मौन बैठकर प्रभु से प्रार्थना की गई।

इसके पश्चात् भिन्न-भिन्न धार्मिक सगठनो के उपरोक्त प्रतिनिधियो के द्वारा अध्यक्ष महोदय का पुष्प मालाओ से स्वागत किया गया और आर्यसमाज की ओर से श्री चिरञ्जीवलाल जी बैरागी ने स्वागत गीत गाया।

इस सम्मेलन के सयोजक डा० भारतभूषण मन्त्री आर्य समाज दयानन्द मार्ग अपना कथन हिन्दू जाति को चेतना देने वाली इस कविता (शेयर) से आरम्भ किया कि—

न समझोगे तो मिट जाओगे ए
हिन्दोस्ता वालो।
तुम्हारी दास्तां भी न होगी
दास्तानो मे।

और यह बतलाया कि यह सम्मेलन किसी राजनीति से सम्बन्धित नही है केवल धार्मिक और सामाजिक है।

भारत सरकार के इस भेद-भाव पूर्ण व्यवहार के कारण देश के अराष्ट्रीय-पृथकतावादी कथित कुछ धर्मों मजहबों से सम्बन्धित व्यक्तियो मे सम्प्रदाय वाद (फिरका परस्ती) को तथा अपने इन धार्मिक स्थानों में षड्यन्त्र करने एव राजनैतिक शरण लेने को बढ़ावा और प्रोत्साहन मिलता है। जिसका परिणाम देश की सच्ची राष्ट्रीयता के लिए घातक हो सकता है।

निम्न प्रस्ताव सर्वसम्मति से पारित हुआ

सम्मेलन की अनेक सत्य प्रमाणों के आधार पर यह निश्चित धारणा है कि भेद-भाव आदि के मिथ्या आधार पर वर्तमान समय मे कुछ स्वार्थी एव देश के विघटनकारी अवांछित तत्व हमारे अनपढ़ पिछड़े हरिजन वर्ग को बहका कर भय, लोभ द्वारा सामूहिक रूप में जो धर्म-परिवर्तन करा रहे हैं उनके प्रति यह सम्मेलन भारत सरकार से यह भी मांग करता है कि ऐसी स्थिति पर पूर्ण नियन्त्रण रखने का प्रबन्ध करे और जांच द्वारा अपराधी वर्ग को कठोर उचित दण्ड दिया जाए और—

साथ ही साथ हरिजन आदि भाईयो से भी यह सम्मेलन प्रार्थना करता है कि वे स्वय भी अपनी झिझक को दूर करके हिन्दुओं के कथित धार्मिक स्थानो, उत्सवो एव सस्थाओं आदि में सम्मिलित हो तथा उत्साह पूर्वक उनके सदस्य भी बने, इससे कथित भेद-भाव स्वय ही समाप्त होता चला जाएगा।

—भारत भूषण
मन्त्री

लंदन : यहां केवल संस्कृत में बात कीजिए

विगत जनवरी मास में अपने प्रवास के दौरान मुझे ज्ञात हुआ कि लंदन में एक ऐसा विद्यालय है जहां संस्कृत अनिवार्य विषय है। संस्कृत का विद्यार्थी होने के कारण यह सुनकर मुझे हर्ष मिश्रित आश्चर्य हुआ और उस विद्यालय को देखने की लालसा जागृत हुई। मुख्याध्यापक श्री निकोलस डेबनहेम से दूरभाष पर सम्पर्क स्थापित कर मिलने का समय निश्चित कर लिया।

हम काम्सिंगटन क्षेत्र मे ९१ क्वीन्स गेट पर 'सेंट जेम्स इण्डिपेंडेंट स्कूल फार बाय्ज एण्डगर्ल्स' के प्रवेश द्वार पर पहुचे। यह भाग लंदन के हृदय जैसा ही है। द्वार पर श्री डेबनहेम ने भाव-भीना स्वागत किया।

संस्कृत शिक्षा की प्रेरणा

मैंने उनसे पूछा, "आपको संस्कृत शिक्षा की प्रेरणा कैसे प्राप्त हुई ?" उन्होने इस शिक्षा और और इस के विषय मे विस्तार से बतलाते हुए कहा, "लगभग तीस वर्ष से इस क्षेत्र में 'स्कूल आफ फिलास्फी' नामक मडल की रात्रि कक्षाए नियमित रूप मे चल रही हैं। जिनमे बुद्धिजीवि लोग तत्वज्ञान के विषय मे विचार विमर्श करते है। विभिन्न धर्मों के तत्वज्ञान का अध्ययन करते करत हम इस निष्कर्ष पर पहुचे कि मात्र तत्व चर्चा करने से कोई लाभ नही जब तक कि हमारा जीवन तत्व ज्ञान पर आधारित न हो। इस विचार विमर्श के मध्य निश्चित हुआ कि विश्व की सबसे श्रेष्ठ संस्कृति केवल वैदिक संस्कृत ही है। इस संस्कृत मे निहित तत्वज्ञान के अनुसार जीवन व्यतीत करने के लिए इसका सूक्ष्मता से गहन अध्ययन किया जाना चाहिए। हमने जाना कि कि वैदिक संस्कृति की मूल ती संस्कृत भाषा ही है। संस्कृत के साथ भाषा का का विशिष्ट सम्बन्ध है। अत' सर्व प्रथम संस्कृत भाषा का अध्ययन अनिवार्य है। सयोगवश भारत से आर्य संस्कृत के विद्वान श्री जायसवाल का हमे मार्ग दर्शन प्राप्त हो गया। यह हमारा सौभाग्य है कि हमारे मडल मे प्रोफैसर मेक्सोरी संस्कृत के अच्छे विद्वान हैं। वे ही सब को संस्कृत पढाने लगे।

"हमें ऐसा अनुभव हुआ कि यह सुविचार बहुत देर से हमारे मन मे आया। हमारे यहां सैंट जैम्स स्कूल है। यदि उस के विद्यार्थियों को आरम्भ से ही संस्कृत पढाया जाए तो आगे चल कर यह वैदिक संस्कृत के अनुसार जीवन व्यतीत करने वाला एक विशिष्ट समाज उत्पन्न हो जाएगा। यह सुविचार सर्व सम्मति से स्वीकार किया गया और इस विद्यालय मे गत दो वर्षों से संस्कृत विषय अनिवार्य कर दिया गया। प्रोफैसर मेक्सोरी ने संस्कृत के शिक्षकों को तैयार किया।

मैंने उत्सुकता वश पूछा "यहा के विद्यार्थियों के लिए संस्कृत भाषा नितात नवीन विषय होने के कारण अंग्रेज विद्यार्थी तो यहा प्रवेश नही लेते होगे ?

अंग्रेज बच्चों का संस्कृत प्रेम

श्री निकोलस ने बतलाया "हमारे विद्यालय मे ९०० विद्यार्थी है जिनमे से ९९ प्रतिशत अंग्रेज विद्यार्थी हैं और उन में से लगभग आधी संख्या बालिकाओ की है। हमारे यहा सह-शिक्षा नहीं है, बालिकाओ के लिए पृथक कक्षाए लगती हैं। वार्षिक शुल्क १६०० पाउण्ड है इस पर भी विद्यार्थियो की भीड बहुत है। इस विद्यालय मे समुचित स्थान न होने के कारण हमने हेम्स्टेट हीथ के निकट 'सेटवेदास्ट' नाम से दूसरी शाखा प्रारम्भ की है। उस मे भी विद्यार्थी समा नही पा रहे हैं। बहुतो को निराश करना पडता हैं। प्रवेश के लिए अत्यधिक भीड के कारण हम लोग कोई बडा स्थान खोज रहे है। हमारे विद्यालय मे सम्पन्न वर्ग के बच्चे ही पढने आते हैं। यहा "ए" स्तर (जो कि भारत की १२ वी कक्षा के समानान्तर हैं) तक की शिक्षा दी जाती है। पाठ्यक्रम मे संस्कृत लैटिन तथा ग्रीक भाषाए अनिवार्य है। इसमे भी संस्कृत भाषा पर ही विशेष ध्यान दिया जाता है।

हम मुग्ध भाव से श्री डेबनहेम को सुन रहे थे। उन्हे ने एक और आश्चर्य-जनक बात बताते हुए कहा, "हमारे विद्यालय की एक प्रमुख विशेषता यह हैं कि यहा विज्ञान, गणित, इतिहास, समाज-शास्त्र अथवा कोई अन्य विषय पढाने वाले शिक्षको को संस्कृत भाषा का ज्ञान होना अनिवार्य है। संस्कृत का ज्ञान हुए बिना यहा किसी भी शिक्षक को स्थान नही दिया जाता।

तब तो आपके यहा सभी शिक्षक भारतीय होगे ?"

"जी नही। सभी शिक्षक अंग्रेज ही है। हमारे अभ्यास में पूर्व की उडान और पश्चिमी का वेग देखने के मिलता है, हम लोग ऊपरी अभ्यास पसन्द नहीं करते। आगे दौड कर लौटना न पडे ऐसी हमारे संस्कृत शिक्षण की पद्धति है बाल्यकाल से महर्षि पाणिनि, विरचित व्याकरण 'लघु सिद्धात कोमुदी के माध्यम स संस्कृत का गहन अध्ययन करवाया जाता है जिससे कि उन की शिक्षा की आधार शिला दृढ हा सके। इस लिए हमारे विद्यालय मे प्रत्येक विद्यार्थी १८ वर्ष की आयु तक अनिवार्य रूप मे संस्कृत पढता है।

श्री डेबनहेम ने यह बतलाया, "विद्यार्थी संस्कृत के अक्षर ठीक ठीक लिख सकें इसके लिए एक विशेष प्रकार की लेखनी बनवायी है आजकल चालू लेखनियो से संस्कृत अच्छी प्रकार नही लिखी जा सकती।

भारत के जगन्नाथपुरी के गोवर्द्धन पीठ के जगदगुरु शकराचार्य आदरणीय श्री भारती कृष्णतीर्थ विरचित वैदिक गणित भी यहा पर विद्यार्थियो को पढाया जाता है

वैदिक जीवन चर्या

बालिकाओ को हम भारतीय नृत्य भी सिखाते हैं। जिसके परिणामस्वरूप उनमे लज्जायुक्त शील की वृद्धि होती है। हमारी मान्यता है कि शिक्षण केवल जीवन निर्वाह के लिए ही नही अपितु जीवनोद्धार के लिए भी होना चाहिए। हमारे यहा विद्यार्थियो को केवल शाका हारी भोजन ही दिया जाता है। शाका-हार मे भी तला हुआ, छौका हुआ, अधिक चटपटा आदि भोजन न होकर केवल पौष्टिक एव सात्विक आहार दिया जाता है। जिसमे विद्यार्थियो का मन निर्मल रहे। विद्यार्थियो के घर पर तो मासाहार चलता है। इस प्रकार हमारे विद्यार्थी दो संस्कृतियो के सम्पर्क में रहते हैं। किन्तु हमे पूरा भरोसा है कि हमारे यहा शिक्षा पाये हुए विद्यार्थी अपने भावी जीवन मे पूर्ण शाकाहारी रहकर वैदिक संस्कृति के अनुसार अपना जीवनयापन करेंगे।'

श्री डेबनहेम की बातें सुनकर उन विद्यार्थियो से मिलने की मरी उत्सुकता जाग उठी। मेरे मनोभावो को समझते हुए उन्होने घडी देखा और बोले, अभी ९ बजे फोर्म चार (भारत की आठवीं कक्षा) के वर्ग की कक्षा होगी। वह मुझे ही लेनी है। आइये, हम कक्षा मे चलते हैं।

हम दूसरी मजिल पर स्थित उक्त कक्षा में पहुचे। विद्यार्थियो ने हाथ जोड कर हमारा स्वागत किया। एक श्याम पट्टिका पर कोमुदी व्याकरण सूत्र लिखे देखकर मुझे अति प्रसन्नता हुई। कक्षा आरम्भ होने से पूर्व सभी विद्यार्थियो ने करबद्ध नेत्र मूद कर श्री डेबनहेम के साथ साथ ओ परमात्मने नमः, मगल-मत्र का उच्चारण किया। तत्पश्चात् वैदिक प्रार्थना "श नो मित्र श वरुण. . अर्थात् सूर्य हमारा मगल करन वाले हैं, वरुण हमारा मगल करने वाले हैं) आदि का वैदिक स्वर रचना मे स्पष्ट उच्चारण के साथ मधुर कठ से पाठ किया। भारत वर्ष मे प्राय संस्कृत उच्चारण मे प्रादेशिक भाषाओ का प्रभाव दिखलाई पडता है। परन्तु यहा तो शुद्ध उच्चारण देखने को मिला। हम को ऐसा लगा कि हम लदन मे नही किसी प्राचीन भारत के गुरुकुल म हैं।

हमने विद्यार्थितो की अभ्यास पुस्तिकाए भी देखी। उस मे अतिशय सुन्दर अक्षरो मे मन्त्र लिखे हुए थे। विद्यार्थियो ने कौमुदी सूत्र मौखिक भी सुनाए। यहा की शिक्षा प्रणाली मे स्नेह पूर्ण अनुशासन भी है। मैंने कुछ एक विद्यार्थियो स व्यक्तिगत रूप से पूछा "आपको संस्कृत भाषा भार स्वरूप प्रतीत नही होती ?

जी नही। जी नही। उन्होने उतर मे कहा 'हमे तो यह भाषा बहुत अच्छी लगती है। संस्कृत भाषा के उच्चारण से हमे एक अलौकिक शान्ति का अनुभव होता है।

श्री डेबनहेम का कहना है कि संस्कृत के उच्चारण से विद्यार्थियो का शारीरिक स्वास्थ्य बहुत अच्छा रहता है।'

संस्कृत मे बोलिए

एक विद्यार्थी ने मुझ से कहा, आप संस्कृत भाषा म बात कीजिए। मैने संस्कृत भाषा म कुछ बातें कह कर उनका भावार्थ उन्हे अंग्रेजी मे भी समझाया।

पूज्य आत्म स्वरूप स्वामी जी ने भी संस्कृत के विषय मे कुछ बातें बतलायी। तत्पश्चात् विद्यार्थियो ने मुझ से कहा—आप दोनो संस्कृत मे वार्तालाप करें, हम सुनना चाहते हैं।'

मेरे मित्र के अच्छी प्रकार से संस्कृत भाषा नही जानने के कारण यह सम्भव नही हो पाया तो उन विद्यार्थियो को बडा आश्चर्य हुआ। वे तो समझते थे कि भारतवासी सब संस्कृत ही बोलते होगे। हम भारतवासियो के विषय मे उन भोले-भाले बालको की क्या-क्या कल्पनाए एव धारणाए हैं इसका दिग्दर्शन हुआ।

—श्री नारायण भगत

आर्य समाज दयानन्द मठ ढन मोहल्ला जालन्धर के उत्सव पर 25-10-81 को पारित प्रस्ताव

प्रस्ताव—महर्षि दयानन्द मठ ढन मोहल्ला जालन्धर के १६ वें वार्षिक महोत्सव पर दिनाक २५ १०-८१ को आयोजित पजाब के समस्त राष्ट्रवादी महानुभावो का यह सम्मेलन एक स्वर से अपनी यह मान्यता द्वारा पुरजोर शब्दों मे घोषणा करता है कि 'भारत वर्ष' हम सभी की पूज्य माता है। अपनी भारत माता की अखण्डता की रक्षा करना हम सभी का परम कर्त्तव्य है।

इस सम्मेलन की यह स्पष्ट धारणा है कि अमेरिका तथा पाकिस्तान आदि कुछ विदेशी शक्तियो के सकेत और प्रेरणाओसे हमारी ही समाजके कुछ व्यक्ति अपनी इस भारत माता को खण्डित कर खालिस्तान आदि भावनाओ के रूप मे दो राष्ट्रो की माग कर रहे हैं।

इस प्रकार की मनावृति को यह सम्मेलन नितान्त राष्ट्रघातक और देश द्रोही कार्यवाही समझता है। हम राष्टवादी व्यक्ति भारत सरकार और पजाब सरकार से साग्रह एव सानुरोध माग करते हैं कि वह ऐसी राष्ट्र द्रोही परिस्थितियों से निपटने के लिए कठोर और दृढ नीति अपनाए। इस कार्य मे देश भक्त शक्तिया सरकार को सहयोग का पूर्ण आश्वासन देती हैं।

इस सम्मेलन का यह दृढ मत है कि पजाब जैसे सीमा प्रान्त मे तोड फोड की कार्यवाहिया श्रद्धेय लाला जगत नारायण जी जैसे वयोवृद्ध नेता एव अन्य निरीह व्यक्तियो का वध किया जाना पजाब राज्य सरकार के सचिवालय मे गोलिया चलाना भारतीय विमान का अपहरण करना घोर जघन्य राष्ट्र विरोधी कार्य है। हमारी दृष्टि मे इस प्रकार के विध्वसक उग्रवादी तत्वो की कड शब्दो मे जितनी भी निन्दा की जा सके थोडी है। समस्त देश के नागरिको ने इन कुकृत्यो की भरसक निन्दा भी की है किन्तु यह अत्यन्त हास्यस्पद है कि सरकार का ऐसे सौदे बाजी करना देश के लिए अत्यन्त घातक और भविष्य में इस प्रकार की कार्यवाहिया को प्रोत्साहन देना है।

यह सम्मेलन सरकार द्वारा अभी तक भी किसी अभियुक्त का न पकड सकना सरकार की पूर्ण असफलता प्रशासन की कमजोरी और कायरता का द्योतक समझता है।

इस सम्मेलन की यह पुरजोर माग है कि सरकार शीघ्राति शीघ्र अभियुक्तो को पकड़े अन्यथा तुरन्त त्याग पत्र दे कर जनता को अपने प्रतिनिधि चुनने का अवसर प्रदान करे।

पंजाब के समस्त राष्ट्र वादी लोगो के इस सम्मेलन का यह दृढ मत है कि सन्त भिडरा वाले द्वारा दिए जा रहे आपत्ति जनक वक्तव्यो द्वारा इस प्रान्त की शान्ति भग हो जाने का इस समय भय है। हम यह माग करते करते हैं कि सरकार उसे तुरन्त गिरफ्तार करे तथा सभी निहत्थों के शस्त्रो पर पाबन्दी लगाई जाए अन्यथा राष्ट्रवादी हिन्दुओ को भी फरसा, धनुष, गदा तलवार आदि शस्त्रो के रखने की आज्ञा प्रदान करे। ये सभी शस्त्र हिन्दुओ के धार्मिक पावन चिन्ह हैं और इन्हे धारण करना प्रत्येक हिन्दु तथा आर्य को धर्म शास्त्रो का आदेश है।

यह सम्मेलन पजाब प्रान्त में स्थित आर्य समाज सनातन धर्म सभा जैन सभा बौद्ध सभा, नामधारी, निरकारी राधा स्वामी आदि सगठनो से आग्रह करता है कि ये एकत्रित हो कर जन-सामान्य के सरक्षणार्थ एक सुदृढ नेतृत्व प्रदान करें तथा राष्ट्र घातक और देश द्रोहात्मक इस प्रकार के हिंसात्मक आन्दोलनो का डट कर मुकाबला करने के लिए जन समाज को सक्षम बनाने का प्रयत्न करें।

—आनन्द सागर आर्य

नवांशहर में ऋषि निर्वाण उत्सव

दिनाक २७-१० ८१ मगलवार आर्य समाज मन्दिर नवांशहर में ऋषि निर्वाण उत्सव बडी धूमधाम से मनाया गया,

हवन यज्ञ के पश्चात् श्री के के सहगल श्रीमती सुशीला आर्य, प देवेन्द्रकुमार प्रधान तथा श्री सुरेन्द्र मोहन तेजपाल मन्त्री ने ऋषि के चरणो मे श्रद्धांजलि अर्पित की।

ऋषि के जीवन चरित्र पर स्थानीय स्कूलो तथा कालेजो के छात्र छात्राओ ने कविताओ तथा भाषणों द्वारा प्रकाश डाला। इस प्रतियोगता में मिस रामेश्वरी देवी छात्रा बी एस कालेज प्रथम, मिस नीलम कुमारी तथा भगवन्त कौर छात्राए A C. T Class द्वितीय तथा मिस पूनम छात्रा W L आर्य गर्लज स्कूल तृतीय रही। सोमा छात्रा आर्य बाल विद्या मन्दिर ने Consolation पुरस्कार प्राप्त किया। इस उत्सव मे भाग लेने वाले सभी विद्यार्थियो को कापिया तथा मिठाई बाटी गई।

इस वर्ष ऋषि निर्वाण उत्सव पर नवांशहर के सभी स्कूलो के विकलाग अथवा अगहीन बच्चो को आर्य समाज मन्दिर मे आमन्त्रित किया गया। स्थानीय आर्य सस्थाओं के अतिरिक्त खालसा स्कूल सरकारी स्कूल तथा सनातन धर्म स्कूल के विकलाग बच्चे आर्य समाज मन्दिर मे उपस्थित हुए। लगभग २५ ऐसे छात्र छात्राओं को आर्य समाज की ओर से इस दिन सम्मानित तथा उत्साहित किया गया। प्रधान प. देवेन्द्र कुमार जी ने इन बच्चो को कापिया किताबें तथा मिठाई वितरण की। इन बच्चों में एक नया उत्साह और जागृति दृष्टि गोचर हो रही थी।

इस प्रकार ऋषि निर्वाण उत्सव विकलाग दिवस के रूप में भी बडी शान के साथ मनाया गया।

—सुरेन्द्र मोहन तेजपाल
मन्त्री

—

आर्य समाज मण्डी जालन्धर

आर्य समाज मण्डी जालन्धर मे २४ से २७ अक्तूबर तक वार्षिक उत्सव मनाया गया जिस में श्री सभा मन्त्री श्री प्रि० राम चन्द्र जी जावेद, श्री सरदारी लाल जी सभा उपमन्त्री, श्री अश्विनी कुमार जी सभा उप प्रधान श्री कर्म चन्द जी शास्त्री श्री प विजय कुमार जी शास्त्री, श्री प रामनाथ जी शास्त्री श्री अमर नाथ जी आर्य के उपदेश तथा भजन हुए।

—

दीवाली और दयानन्द

(लेखक—श्री सत्यपाल पथिक आर्य समाज फोर्ट बम्बई)

चले परलोक यात्रा पर हमारे हिन्द के माली।
लिए लाखों दिए आगे खडी स्वागत को दीवाली॥
करके दुनिया का उद्धार, जिस दिन छोड़ा था ससार।
कहने वाले कहते हैं था दीवाली का त्योहार॥
दीवाली दीवाली-दीवाली हर साल आती है दीवाली।

देह छोड निकल पडे मुक्ति पथ पर चल पडे।
अलविदा कहने को देखो दीप लाखों जल पडे॥
ओ-करने को अन्तिम दीदार आए दीपक बाध कतार।
कहने वाले कहत हैं था दीवाली का त्योहार दीवाली-२

नींद गहरी सो गया, आसमा में खो गया।
मौत आई थी मगर वह अमर जग मे हो गया॥
था टूट गए सारे हथियार हो गई सब चालें बेकार।
कहने वाले कहते हैं, था दीवाली का त्योहार-दीवाली-२

वह तो मुक्ति पाएगा लौटकर न आएगा।
भटकने वालों को फिर भी रास्ता दिखलाएगा।
ओ सजे पथिक गलिया बाजार, हर दरवाजा हर दीवार।
कहने वाले कहते हैं था दीवाली का त्योहार-दीवाली—२

—

उठो जवानो

कविराज—बनवारीलाल 'शादां' प्रधान आर्य समाज मौडल बस्ती नई दिल्ली

उठो जवानो ओ बलशाली,
देश पै छाई घटाएं काली,
गद्दार घुसे हैं देश के अन्दर,
तुम को करनी है रखवाली ।

जो प्यार की राहें पाट रहे-
जो देश के टुकड़े काट रहे,
पकड़ निकालो गद्दारों को,
देश भक्ति से जो जन खाली ।

कटें गाय ललना हैं लुटती,
चोरी जारी जेबें कटती,
बहादुरी से करो सामना,
भागे डर कर क्रूर कुचाली,
बने विधर्मी अपने भाई,

मुसलमान और ईसाई,
शीघ्र मिला आं गले लगाओ,
सगठन बने देश मे आली ।

अबला नही है भारत नारी,
रण चण्डी ज्वाला चिन्गारी,
लक्ष्मीबाई ये हैं पद्मा,
यदि ठानो तुम मन में अपने,
पूरे न हों दुश्मन के सपने,
वन्दर वार करेंगे कैसे,
वीर बहादुर जब हो आली।
जयचन्दो को पथ पर लाओ,
देश द्रोह की बान छुड़ाओ,
शिक्षा दो ऋषि दयानन्द की,
'शादां' आए फिर खुशहाली।

—

आर्य समाज सैक्टर 16 चण्डीगढ़ का—

तृतीय वार्षिकोत्सव

आर्य समाज सै० १६ चण्डीगढ का तृतीय वार्षिकोत्सव २७ सितम्बर से २ अक्तूबर तक आर्य जगत् के मूर्धन्य विद्वान् पं० पुरुषोत्तम शर्मा जी वेद प्रवचनों की अमृत वर्षा तथा युवा विद्वान् की ओजस्वी वाणी व तर्कपूर्ण वचनों से बड़ी धूमधाम से मनाया गया। दिनांक २-३-४ अक्तूबर को महिला सम्मेलन, स्कूल एवं कालेज भाषण प्रतियोगिता पं० गंगा-प्रसाद उपाध्याय स्मृति सम्मेलन, वेद सम्मेलन, योग प्रदर्शन, राष्ट्र एकता सम्मेलन व आर्य सम्मेलन आयोजित किए गये। इन सम्मेलनों में सर्वश्री पुरुषोत्तम शर्मा, डा० भवानीलाल भारतीय, डा० विक्रम कुमार, स्वामी निगमानन्द, प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु, प्रि० कृष्ण आर्य, आचार्य सत्यप्रिय इत्यादि प्रभृति विद्वानों ने अपने विचार प्रगट किए। सभा के भजनोपदेशक ठा० दुर्गादास ने इस सारे समय में अपने सुमधुर भजनो द्वारा आर्य जनता को आनन्दित किया, वार्षिकोत्सव मे आयोजित ऋषि लगर का आयोजन व वितरण हरिजन भाईयो के हाथो द्वारा हुआ। ११ अक्तूबर को आयोजित बाल्मीकि जन्मोत्सव पर एक विशाल नगर कीर्तन का आयोजन किया गया। चण्डीगढ़ की समस्त बाल्मीकि सगठन, सनातन धर्म सभाएं व समस्त आर्य समाजों ने हिस्सा लिया।

ला० जगतनारायण जी की हत्या के सम्बन्ध में इस समाज ने चण्डीगढ़ की तमाम आर्य हिन्दू व राष्ट्रवादी सगठनों की ओर से एक शोक सभा का आयोजन किया। —मन्त्री

आर्य समाज लुधियाना रोड की युवा सभा

आर्य युवक सभा, जी, टी, रोड फिरोजपुर छावनी का वार्षिक चुनाव ११-१०-८१ को आर्य समाज मन्दिर में सम्पन्न हुआ और निम्नलिखित पदाधिकारी निर्वाचित हुए :—

१. प्रधान—श्री राजेन्द्र गुप्ता
२. उप प्रधान—श्री मनोज आर्य
३ मन्त्री—देव राज दत्ता
४ कोषाध्यक्ष—बलराज
५. उप मन्त्री—सुरेन्द्र गुप्ता
६. उप कोषाध्यक्ष—सुधीर
७ पुस्तकाध्यक्ष—प्रमोद कुमार
८ वस्तु भण्डारी—राकेश कुमार
९. प्रचार मन्त्री—विजय आनन्द
१०. निरीक्षक—जितेन्द्र कुमार

मन्त्री
देव राज दत्ता

हरिजनों की भावना

दो अक्तूबर को गांधी जी का जन्म दिन हरिजन बस्तीयों में मनाया गया सामाजिक कार्यकरताओं ने और नेताओं ने अपने विचार रखे प्रवक्तावाद और खालिस्तान की मांग का सामूहिक हरिजनों ने विरोध किया और देश की एकता पर बल दिया और खालिस्तान प्रवक्तावादीयों को देश का गद्दार बताया और हरिजन ऐसी मांगो का विरोध करेंगे। कहा कि हम धर्म परिवर्तन नहीं करेंगे और अन्त में महर्षि दयानन्द जी और गांधी जी का धन्यवाद किया।

मन्त्री शिवनाथ आर्य
वैदिक सत्संग समिति
देहरादून।

दीपावली पर्व सम्पन्न

आर्य समाज जालन्धर छावनी में बड़े उत्साह से मनाया गया जिसमें २७-१०-८१ को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सुयोग्य उपदेशक श्री पं. धर्म देव जी का प्रभावशाली व सारगर्भित उपदेशक हुआ। इनके अतिरिक्त आर्य गर्ल्ज स्कूल तथा आर्य गर्ल्ज कालेज जालन्धर छावनी की छात्राओं ने भी अपने मनोहर भजन कविताए तथा विचार रखें। सारा कार्यक्रम बड़ा प्रभावशाली रहा।

बरनाला—लाल बहादुर आर्य गर्ल्ज कालेज में दीपावली का पर्व बड़े उत्साह से मनाया गया। छात्राओं की भाषण प्रतियोगिता भी इस अवसर पर हुई जिसमें कु. रेणुका शोरी प्रथम रही तथा कर्मजीत कौर द्वितीय रही। कालेज की प्रिंसिपल कु. विमला छाबड़ा जी ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला।

आर्य समाज बुढलाडा का वार्षिक उत्सव

आर्य समाज बुढलाडा जिला भठिंडा का वार्षिक उत्सव १६ से १९ अक्तूबर तक धूमधाम से मनाया गया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री प. निरन्जन देव जी, श्री पं. रामनाथ जी सि.वि., श्री प. सुभाष चन्द्र जी शास्त्री, भजनोपदेशक श्री रामनाथ जी यात्री, श्री श्याम सिंह हितकर भजन मंडली ने इस उत्सव में भाग लिया। इनके अतिरिक्त मानसा, भठिंडा, बरनाला, बरेटा, जाखल, अबोहर और गिदड़बाहा के आर्य बहन भाईयों ने भी इस उत्सव में पधार कर इस उत्सव की शोभा बढ़ाई। उत्सव बड़ा प्रभावशाली हुआ! सभा को ५०१ रु. वेद प्रचारार्थ दिया गया।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्तभवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वर्ष 14, अंक 36, 28 कार्तिक सम्वत् 2038, तदनुसार 15 नवम्बर 1981, दयानन्दाब्द 156। एक प्रति 35 पैसे (वार्षिक शुल्क 15 रुपए)

जिनका बलिदान दिवस 17 नवम्बर को है—

देशभक्ति के ज्योतिपुंज—ला. लाजपतराय जी

—वैदिक धर्म आर्य समाज और महर्षि दयानन्द की महत्ता के जीवन से प्रेरणा लेकर अपना सर्वस्व समाज और राष्ट्र के हित में अर्पित करने वाले सार्वदेशिक लोक सेवक एवं ओजस्वी नेता ला० लाजपतराय की गणना बलिदानी वीरों की प्रथम पंक्ति में की जानी चाहिए। लाला जी सही अर्थों मे महापुरुष थे। उन्होंने अपने जीवन का बहुमूल्य भाग देश सेवा के अर्पण किया और अपनी कमाई का अधिकांश भाग समाज हित मे लगाया।

देश निकाले के पश्चात् वापिस आने के बाद जो, व्याख्यान उन्होंने लाहौर मे आर्य समाज के मञ्च से दिया था उसमे कहा था कि—मेरे जीवन का जो हिस्सा खराब है वह मेरा अपना है वह या तो कुल की विरासत मे मिला है या मेरे पूर्व जन्म के संस्कारों का फल है। लेकिन मेरे जीवन का जो हिस्सा अच्छा और लोगो में प्रशंसा योग्य है वह सब आर्य समाज की बदौलत है। मैंने सार्वजनिक सेवा के तमाम सबक आर्य समाज में रहते हुए आर्य समाज से सीखे आर्य समाज के काम मे ही मैंने सार्वजनिक जीवन के प्रथम सबक सीखे, यदि मेरा बाल-बाल भी आर्य समाज पर न्यौछावर हो जाए तो भी मैं उन उपकारों से उऋण नही हो सकता यदि मैं आर्य समाज मे दाखिल न होता तो ईश्वर ही जाने क्या होता, मगर यह सच है कि मैं आज जो कुछ हूं वह न होता।

१७ नवम्बर १९२८ को देश धर्म पर बलिदान होने वाले पंजाब केसरी ला० लाजपतराय के कण्ठ सूत्र से निकले यह वचन आर्य समाज के लिए ज्योतिपुञ्ज का काम दे सकते हैं। इन्हीं

पंजाब केसरी श्री लाला लाजपतराय जी [illegible] गांधी ने लिखा था कि—लाला जी एक संस्था थे। युवा अवस्था में ही उन्होंने देशभक्ति को अपना धर्म बना लिया था, क्योंकि देश प्रेम में संकीर्णता न थी। वे देश से प्रेम करते थे इसलिए कि समस्त विश्व उन्हें प्यारा था उनकी राष्ट्रीयता अन्तर्राष्ट्रीयता से पूर्ण थी। इसलिए योरोपीयन लोगो पर भी उनका प्रभाव था।



विश्वविख्यात ऐसे महामानव को हम से जुदा हुए आधी शताब्दी से भी अधिक समय हो गया है। परन्तु राष्ट्र ने और राष्ट्र के प्रहरियों ने इस महामानव की स्मृति को बनाये रखने के लिये जितना कुछ करना चाहिए था, उसकी ओर इतना ध्यान नहीं दिया, १७ नवम्बर का दिन आता है और चला जाता है परन्तु जिस प्रकार एक बलिदानी वीर के प्रति श्रद्धा से भरपूर भावनाएं राष्ट्र भर में राष्ट्र के प्रत्येक नागरिक के जीवन से जुड़ी हुई होनी चाहिए, वैसा कुछ आज देखने मे नहीं आता यदि हमारा राष्ट्र आज स्वाधीनता के युग मे गर्व से अपने मस्तक को ऊंचा उठाकर जीवित जातियो व राष्ट्रों में अपना स्थान बनाए हुए है तो उसका सारा श्रेय पंजाब केसरी ला लाजपतराय सरीखे महामानवो के तप त्याग व बलिदान को ही है।

ला० जी का जन्म २८ जनवरी १८६५ ई० को ननिहाल मे फिरोजपुर जिला के ढूडिके ग्राम मे हुआ था। इनके पिता ला० राधाकृष्ण नार्मल परीक्षा मे पंजाब भर मे प्रथम आए थे। नार्मल पास कर लेने पर जगरांओं म ही अध्यापक नियुक्त हो गये, इन्होंने अपने पुत्र लाजपतराय को ६ वर्ष की आयु में ग्राम के स्कूल में भरती करा दिया। परन्तु पिता का तबादला होते रहने के कारण लाजपतराएजी को उनके साथ ही रहकर पढना पड़ा। अम्बाला से १८८० ई० मे इन्होंने इन्टरेंस परीक्षा पास की, इन्हें छात्रवृत्ति मिलने लगी पिता जी की सम्मति से लाहौर चले गये और एम०-ए० की परीक्षा वहा से पास करके पिता के अनुरोध पर मुख्तयारी की परीक्षा दी और उसमे उत्तीर्ण हो गए। लाहौर मे लाला जी के साथी प० गुरुदत्त विद्यार्थी और महात्मा हंसराज जी थे। लाहौर उन दिनो आर्य समाज की धार्मिक सामाजिक एव राष्टीय गतिविधियो का केन्द्र बना हुआ था महर्षि की विचारधारा ने शिक्षित समाज को अत्यधिक प्रभावित कर रखा था। आर्य समाज के सदस्य जहा एक ओर अन्धविश्वास और धार्मिक सकीणता से लोगो को बचाने मे लगे हुये

—ओम्प्रकाश आर्य,
सभा कार्यालयाध्यक्ष

थे वहा राष्ट्र की स्वतन्त्रता के लिए भी उन्हे तैयार कर रहे थे। ला० जी जैसा प्रबुद्ध नवयुवक इस वातावरण से प्रभावित हुए बिना कैसे रह सकता था १८८२ मे वे आर्य समाज के सगठन मे सम्मिलित हो गये। इसी साल उन्होंने वकालत की परीक्षा दी परन्तु उत्तीर्ण न हो सके। इसलिए अपने ग्राम जगराओं मे जाकर मुखतारी करने लगे। १८८५ मे पुन लाहौर आकर वकालत की परीक्षा पास की और १८८६ मे हिसार मे जाकर वकालत प्रारम्भ कर दी। लाला जी आर्य समाजी होने के कारण झूठ और जालसाजी व मुकद्दमे बिल्कुल नही लेते थे वे उन्हीं अभियोगो की पैरवी करते थे, जो दूसरो के अन्याय से पीड़ित होते थे इससे लाला जी को बहुत प्रसिद्धि हुई।

हिसार मे आर्य समाज की स्थापना अपने पास से १५ सौ रुपये देकर की।

(शेष पृष्ठ ४ पर)

प्रभो ! रोग और भय दूर कीजिए

शं न इन्द्राग्नी भवतामवोभिः शंन इन्द्रावरुणा रातहव्या ।
शमिन्द्रा सोमा सुविताय शंयो,, शंन इन्द्रापूषणा वाजसातौ ॥

(इन्द्राग्नी) विद्युत और अग्नि (अवोभिः) रक्षा कर्मों के द्वारा (नः) हमारे लिए (शम्) सुखकारी (भवताम्) हों (रात हव्या) भोग्य पदार्थों को देने वाले (इन्द्रावरुणौ) बिजली और जल (नः शम्) हमारे लिए सुखकारी हों। (इन्द्रासोमौ) सूर्य और चन्द्र (सुविताय) भोग्य पदार्थों की उत्पत्ति के लिए (शम्) हमारे लिए सुखकारी हों। (इन्द्रापूषणौ) विद्युत और पुष्टि करने वाला मेघ (वाजसातौ) धन और ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिए जिस कर्म से हो उस कृष्यादि कर्म में तथा (शयोः शमनं च रोगाणां यावनं च भयानाम्) रोगों के शमन और भयों को दूर करने में (नः) हमारे लिए (शम्) सुखकारी हों।

इस मन्त्र में (इन्द्र) शब्द चार बार आया है। इन्द्र शब्द के साथ पहले अग्नि शब्द आया है और प्रार्थना की गई है कि विद्युत और अग्नि अपने रक्षा रूप कर्मों के द्वारा हमारे लिए सुखकारी हों। विद्युत और अग्नि वास्तव में एक ही वस्तु है और दोनों ही मनुष्य की रक्षा करने में बहुत सहायता पहुंचाते है। विद्युत के उपयोग द्वारा आज व्यक्ति और समाज की रक्षा के नए नए प्रयत्न किए जा रहे हैं। जल के द्वारा मनुष्य विद्युत उत्पन्न कर रहा है, मशीनों से मनुष्य विद्युत उत्पन्न कर रहा है और उस विद्युत से नाना प्रकार की मशीनें चल रही हैं, अनेक प्रकार के उद्योग चलाए जा रहे हैं, सिंचाई आदि द्वारा कृषि की उन्नति की जा रही है। इस प्रकार नाना प्रकार के सुख के साधनों और रक्षा को देने वाली विद्युत हमें सुख पहुंचावे।

अग्नि का यह भी गुण है कि वह आगे बढ़ती है, ताप और प्रकाश देती है, कभी रुकती नहीं। उसमें घबराहट नहीं, चिन्ता नहीं, रुकता नहीं, ठहरता नहीं। जब तक आग है वह आगे बढ़ेगी जरूर। कहीं एक छोटी सी चिन्गारी भी रह जाए तो वह धीरे-धीरे महा प्रचण्ड ज्वाला बन जाती है। ऐसे ही हमें भी जीवन में रक्षा के लिए आगे बढ़ना होगा निरन्तर आगे बढ़ना होगा। दुःख, कष्ट और मुसीबतों की परवाह किए बिना आगे बढ़ना होगा। इस विश्वास के साथ कि जिस लक्ष्य पर हमें पहुंचना है वहां पहुंचे बिना हम दम न लेंगे। रुकेंगे नहीं, ठहरेंगे नहीं, परन्तु यह आग तभी कल्याणकारी होगी जब 'सम' अवस्था में रहेगी, हमने शरीर के अन्दर दो प्रकार की आग है। दो प्रकार की आग का मतलब है कि वह दो तरह कार्य करती है, एक जटराग्नि है जो मेदे में आई हुई चीजों को हजम करती है, वैश्वानर अग्नि दूसरी अग्नि है जो नाभि के पास रहती है और सूक्ष्म प्राण उत्पन्न करती है यह सूक्ष्म प्राण स्थूल प्राण से मिलकर हमें सांस देता है, जीवित रखता है। इस मन्त्र में परमेश्वर से हम प्रार्थना करते हैं कि यह दोनों प्रकार की आग 'सम' अवस्था में रहे जिससे ठीक तरह काम चल सके। कहा गया है—

समदोषाः समग्निश्च समधातु मल क्रियाः ।
प्रसन्नात्मेन्द्रियमनः स्वस्थ इत्यभिधीयते ।

वेद सुधा

संसार में जब तक हमारा जीवन है हमें रहने के लिए मकान, पहनने के लिए वस्त्र और खाने के लिए खाद्य पदार्थों की आवश्यकता रहेगी। बिजली जल द्वारा उत्पन्न की जाती है। बिजली के बिना मनुष्य का काम चलना कठिन है। अमेरिका में विचित्र विभिन्न मशीनें बिजली के द्वारा संचालित होती हैं।

शरीर के अन्दर तीन दोष हैं—वात पित्त और कफ। ये तीनों में एक अवस्था रहें तो शरीर ठीक रहता है। ऐसे ही आग भी 'सम' अवस्था में रहती है तो मनुष्य का मन, आत्मा और इन्द्रियां प्रसन्न रहती हैं, मनुष्य स्वस्थ रहता है। अतः अग्नि या आग सम हो, बराबर हो, न कम, न ज्यादा तो यह आग हमारे लिये रक्षक होगी। हमारे लिये सुखकारी होगी।

पुनः मन्त्र में इन्द्र और जल के सुखकारी होने की प्रार्थना की गई है। इनके सुखकारी होने का क्षेत्र है भोग्य पदार्थों की उत्पत्ति। संसार में जब तक हमारा जीवन है हमें रहने के लिए मकान, पहनने के लिए वस्त्र और खाने के लिए खाद्य पदार्थों की आवश्यकता रहेगी। बिजली जल द्वारा उत्पन्न की जाती है, बिजली के बिना मनुष्य का काम चलना कठिन है, अमेरिका में विचित्र विभिन्न मशीनें बिजली के द्वारा संचालित होती हैं, जिनसे मनुष्य को सुख प्राप्त होता है, वहां आप होटल में पहुंचे हैं, कोई बैरा नहीं जो आपको खाने के लिए आपकी वांछित वस्तुएं परोसेगा परन्तु आप अपनी जगह बैठिए और जिस वस्तु की आवश्यकता है उसका बटन दबाईए वह वस्तु आपके सामने स्वयं आ जाएगी। बटन दबाईए कपड़े धुल जाएंगे, सूख जाएंगे और उन पर लोहा हो जाएगा, दुकान में जो चीज चाहिए ले लीजिए और बाहर निकलते हुए निश्चित स्थान पर पैसे डाल दीजिए। वह मशीन आप को आदर के साथ विदा कर देगी और यदि आपने पैसे न डाले और जाना चाहा तो वह पकड़ लेगी। यह है बिजली के चमत्कार। यह बिजली हमें सुख देवे।

इस प्रकार जल भी सुखकारी है, वह न तो अधिक हो जाए—जिससे बाढ़ आ जाए और न इतना ही कम हो जिससे सूखा पड़ जाए, अन्न ही जीवन है, अन्न ही मुख्य भोग्य पदार्थ हैं, वह जल पर निर्भर है, बिजली पर निर्भर है, प्रभु बिजली और जल को हमारे भोग्य पदार्थों के लिये सुखकारी करे यह दूसरी प्रार्थना की गई है, आगे कहते हैं भोग्य पदार्थों को उत्पन्न करने वाले सूर्य और चन्द्र हमारे लिए सुखकारी हों, चन्द्रमा की किरणें रात को इस के औषधियों को बढ़ाती हैं, उनमें रस भरती हैं और सूर्य उनको पकाता है और पके हुए फल, अनाज और औषधियां मानव को सुख पहुंचाती हैं. प्रभु से प्रार्थना है कि वह सूर्य और चन्द्र हमें सुखकारी हों, सूर्य शुद्धता का प्रतिनिधि है, अन्य किसी भी वस्तु में अशुद्धता की सम्भावना हो सकती है, सूर्य में नहीं, सूर्य जहां स्वयं शुद्ध है वहां वह शुद्धता को करने वाला भी है, गन्दी, सड़ी, हुई वस्तुओं को अपनी किरणों से स्वच्छ कर देता है तथा उनके लिए हुए जल के अंश को ही आकर फिर मानव के कल्याण के लिए वृष्टि रूप में दे देता है, जब पृथ्वी में वर्षा का सिंचन करता है और उससे अन्न-फल और औषधियां उत्पन्न होती हैं, वह भोग्य पदार्थों को उत्पन्न करने वाले चन्द्र और सूर्य प्रभो! हमारे लिए सुखकारी हों।

चौथी प्रार्थना भगवान् से इस मन्त्र में की गई है कि धन और ऐश्वर्य देने वाले विद्युत और मेघ हमारे लिए सुखकारी हों, विद्युत हमें धन और ऐश्वर्य देता है उससे धन उत्पन्न करने के अनेक उद्योग, व्यापार आदि किये जाते है और मेघ द्वारा खेती आदि से हमें ऐश्वर्य प्राप्त होते है, वह मेघ तथा विद्युत भी प्रभु हमारे लिए सुखकारी करें।

और अन्त में कहते हैं है प्रभु हमारे रोग और भय को दूर करने के लिए आप हमारे लिये सुखकारी होईए अपना

—सुरेशचन्द्र वेदालंकार
एम० ए० एल० टी०. १७१ जाफरा बाजार, गोरखपुर

जीवन हम ईश्वर को अर्पण कर रहे हैं, हम जो भी कुछ करें प्रभु को समर्पित करें, यदि ईश्वर की प्रार्थना में थोड़ा समय लगाना लाभकर है तो सोचिए सारा प्रभु के हेतु लगाना कितना लाभकर होगा, परमात्मा को अपना समझते हुए भक्त ने कहा है—

तू अपने हुस्न को जरा मेरी नजर से देख।
ऐ दोस्त इस जहान में तेरे सिवाये कोई नहीं।

अथर्व वेद में एक मन्त्र है—

उन्मादयत मरुत उदन्तरिक्ष मादय,
अग्ने उन्मादय त्वमसौ मामनु शोचतु । अथर्व ६-१३०-४

अरी हवाओ ! मुझे पागल बना दो।
अरे आकाश ! मुझे दीवाना बना दो।

ऐ आग ! मुझे तुम भी अपना जीवन दो, यह हवा, यह आग, यह आकाश ही मुझे प्रभु का प्रेमी न बनावे वह प्रभु भी मेरा प्रेमी बन जाए, जब वह आनन्द स्वरूप मेरा प्रेमी बनेगा, तब मेरे लिये न कष्ट बचेगा न दुःख बचेगा, केवल आनन्द ही आनन्द रह जाएगा।

उस प्रभु से इस मन्त्र में प्रार्थना की गई है कि बिजली, आग, पानी, सब हमारे लिये सुखकारी हों और सबसे बढ़कर प्रभु आपकी कृपा हम पर रहे क्योंकि प्रार्थना चीजों और परिस्थितियों में अनुकूल परिवर्तन कर देती है, प्रार्थना कठिनाइयों का मुकाबला करने की शक्ति और आत्म विश्वास देती है मेरा कहना है कि वह सच्ची प्रार्थना जिसमें कठिनाई में भी ईश्वर दिखाई देता है हमें कठिनाई के मुकाबला करने का बल ही नहीं देती बल्कि कठिनाई की जगह सुख भी ला देती है यही इस मन्त्र में प्रार्थना है।

सम्पादकीय—

जिला आर्य सभाओं के कर्त्तव्य और उनकी कठिनाईयां

२६ अप्रैल को आर्य समाज नाभा का वार्षिकोत्सव था। वहा पटियाला की जिला आर्य सभा के सदस्य और अधिकारी भी आए हुए थे। उनके साथ कुछ उन कठिनाईयों के विषय में बात होती रही, जो उनके विचार में उनके सामने आती हैं। सगरूर की जिला आर्य सभा की प्रधाना कुमारी विमला छाबड़ा भी उस समय वहां थी। उन्होंने भी अपने विचार प्रस्तुत किए।

जो स्थिति मेरे सामने रखी गई, उसके आधार पर मैं इस [illegible] पर पहुचा हूं कि कई जिला सभाओ के अधिकारियो मे उत्साह तो बहुत है और ये काम भी करना चाहते हैं, परन्तु उन्हें उनके जिला की आर्य समाजों की ओर से वह सहयोग नहीं मिल रहा, जो मिलना चाहिए। मैंने देखा है कि उनके कई कार्यकर्ताओं के दिल में बहुत उत्साह है और वे काम भी करना चाहते हैं। परन्तु जो कुछ करना चाहते हैं, वह हो नही रहा। आपस के विचार विमर्श के पश्चात् कुछ सझाव भी दिए गए हैं, जिन पर कि सभा विचार करें।

एक सुझाव मेरे सामने यह भी रखा गया कि सब जिला सभाओं के अधिकारियो की बैठक की जाए। जिसमें वे अपनी अपनी कठिनाईयो, अपने विचार और अपने सुझाव सब के सामने रख सके। इसका यह परिणाम होगा कि जिनकी कठिनाईया हैं उनके समाधान के लिए उन्हें कुछ सुझाव दिए जाएंगे और जो नये सुझाव रखे जाएंगे उनसे दूसरे व्यक्ति लाभ उठा सकेंगे। मैं इस सुझाव से पूर्णतया सहमत हू। देखना केवल यही है कि बैठक १२ जुलाई से पहले की जाए या उसके बाद १२ जुलाई को पटियाला मे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब का वार्षिक अधिवेशन होना है, वहां सारे पजाब से प्रतिनिधि आए होंगे, वे भी इस समस्या पर विचार कर सकेंगे और उसी के आधार पर आगे के लिए भी कोई नया कार्यक्रम बनाया जा सकता है।

मैं यह भी चाहता हू कि सभा का जो निर्वाचन होता है, उसकी वर्तमान प्रणाली में भी कुछ परिवर्तन या संशोधन किया जाए। इस समय स्थिति यह है कि दो दिन सभा का वार्षिक अधिवेशन होता है और नये अधिकारियो का चुनाव सब से अन्त में होता है। चुनाव के पश्चात् अधिकारी भी अपने घरों को चले जाते हैं और सदस्य भी। फिर हम एक वर्ष के पश्चात् इकट्ठे होते हैं। एक तो मेरा यह सुझाव है कि सभा के सदस्यों का एक अधिवेशन छ: मास के पश्चात् अवश्य होना चाहिए। वार्षिक चुनाव ही यदि दो वर्ष या तीन वर्ष के पश्चात् हो तो और भी अच्छा है। परन्तु जब तक हम अपने विधान में कोई सशोधन न करें, उस समय तक यह सम्भव न हो सकेगा। और विधान मे उस समय तक सशोधन नही हो सकता जब तक सभा के विरुद्ध अदालतो में जो अभियोग चल रहे हैं, वे समाप्त नहीं होते। इसलिए चुनाव तो अभी एक ही वर्ष के लिए हो सकते हैं, परन्तु हम यह तो कर सकते है कि जब सभा का वार्षिक चुनाव होना हो, चुनाव सबसे पहले हो जाए। या पिछले वर्ष का बजट और रिपोर्ट जब स्वीकार हो जाए, उसके पश्चात् नए अधिकारियों का चुनाव कर लिया जाए। नए अधिकारी एक वर्ष के लिए अपना कार्यक्रम सदस्यों के सामने रखें। उस पर सब अपने अपने विचार रखें। और उसके अनुसार नए अधिकारी एक वर्ष के लिए अपना कार्यक्रम बनाएं। एक वर्ष के पश्चात् जब फिर चुनाव हों तो पिछले अधिकारियों से पूछा जा सकता है कि उन्होंने जो प्रस्ताव रखे थे, उन्हे कहा तक क्रियान्वित किया गया है? यही प्रणाली मेरे विचार मे जिला आर्य सभाओं मे भी होनी चाहिए। वास्तविक स्थिति इस समय यह है कि हमने अभी तक जिला सभाओं को वह महत्व नही दिया जो हमें देना चाहिए। यदि जिला सभाये ठीक प्रकार से काम करें, तो आर्य प्रतिनिधि सभा का बोझ बहुत कुछ हल्का हो सकता है। जिला सभाओं के अधिकारी आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधियो के रूप मे काम करें और उस जिला की आर्य समाजे भी जिला सभा के अधिकारियों को पूरा महत्व दें और उनके प्रत्येक आदेश का पालन करें। यह भी देखा गया है कि कई जिलों में वहां की आर्य समाजें अपनी जिला सभा की सदस्य नही बनी। इसलिए वह सभा के आदेश की पालना नही कर रहीं। यह स्थिति अत्यन्त असन्तोषजनक है। जिला सभायें बनाने का निर्णय प्रान्तीय सभा ने अपने वार्षिक अधिवेशन में लिया है। इसलिए प्रान्तीय सभा के जितने भी सदस्य हैं, वे उस निर्णय के पाबन्द हैं। यदि कोई आर्य समाज जिला सभा में सम्मिलित नही होती, तो यह एक प्रकार से उसकी अनुशासनहीनता होगी। आर्य प्रतिनिधि सभा को अपने आगामी वार्षिक अधिवेशन में इस पर भी विचार करना पड़ेगा कि जो समाजें जिला सभाओं मे सम्मिलित नही होंगी, उनके विरुद्ध क्या कार्यवाही की जाए? एक [illegible] हम सब को भली भान्ति समझ लेनी चाहिए कि जब तक हम अपने सगठन को शक्तिशाली नही बनाते, उस समय तक आर्य समाज अपने उस कर्त्तव्य को पूरा न कर सकेगा, जोकि महर्षि दयानन्द ने उसके जिम्मे लगाया है। मैं दूसरे प्रान्तो की बात नही करता, परन्तु जहां तक पजाब का सम्बन्ध है, मेरा यह दृढ विश्वास है कि जो कुछ इस प्रान्त में आर्य समाज कर सकता है और कोई दूसरी सस्था नही कर सकती। मैं यह मानता हू कि आर्य समाज मे बहुत अधिक शिथिलता है। यह भी जानता हू कि कई स्थानो पर कुछ ऐसे व्यक्ति अधिकारी बने हुये है, जो किसी दूसरे को आर्य समाज मे नहीं आने देना चाहते। फिर भी यह देखा गया है कि जब कभी कोई सकट का समय आता है, तो आर्य समाजी ही उस समय आगे आते हैं और वे ही कुछ बोलते हैं। पजाब मे अकाली आर्य समाज को अपना सबसे बड़ा विरोधी समझते हैं। यह केवल इसलिए कि उनका यह मत है कि हिन्दुओ मे अगर कोई जीती-जागती सस्था है, तो वह केवल आर्य समाज है। ऐसी स्थिति मे आर्य समाजियो का कर्त्तव्य और भी अधिक हो जाता है। हमें यह भी न भूलना चाहिए कि यदि हमारा सगठन शक्तिशाली हो जाए, तो उसका लाभ सबको पहुच सकता है। हम एक दूसरे की सहायता करते रहें और सुखदुख मे एक दूसरे का साथ देते रहे, तो उससे भी हमारा सगठन बहुत सुदृढ हो सकता है। जब जिला सभाएं बनाने का निर्णय लिया गया था, तो उस समय भी यही विचार था कि यह सभाएं आगे चल कर आर्यसमाज को शक्तिशाली बनाने में अपना बहुत योगदान दे सकेंगी।

इसलिए जहा जहा इस समय जिला सभाए बन गई हैं, उन्हे कुछ अधिक सक्रिय होना चाहिए और यह समझ कर काम करना चाहिए कि उनके जिले मे आर्य समाज के काम को करने का उत्तरदायित्व उन पर है। जहा समाजें बड़ी हैं जिनमे सदस्यों की सख्या भी बडी है और जिनकी आर्थिक स्थिति भी दृढ हैं, उन्हें इस दिशा मे और भी अधिक सक्रिय होना चाहिए। और जहा अभी आर्य समाजें नही बनी, वहा बनानी चाहिए। जहा बनी हुई हैं परन्तु शिथिल हैं, उन्हें सक्रिय करना चाहिए। जिला सभाओ का वास्तविक उद्देश्य उसी स्थिति मे पूरा होगा, यदि प्रत्येक नगर और प्रत्येक ग्राम मे आर्यसमाज होगी। इसलिए जहा इस समय आर्यसमाजें नही हैं, वहा उनकी स्थापना करना भी जिला सभाओ का काम हैं। जो जिला सभाए इस समय तक बन चुकी हैं, उनके अधिकारी महानुभावो से मैं यह निवेदन करना चाहता हू कि वे अपने अपने जिला को सम्भालें। जहा उन्हे कोई कठिनाई दिखाई दे उसे दूर करने के लिए सभा का जो भी सहयोग वह मांगेंगे, सभा उन्हें देगी और जहा तक इस सुझाव का सम्बन्ध है कि जिला सभाओं के अधिकारियों की एक बैठक बुलाई जाए, इस पर भी विचार कर लिया जाएगा और जब तक सभा का वार्षिक अधिवेशन नही होता उस समय तक आपस के सहयोग से जो कुछ भी हम कर सकते हैं, हमे करना चाहिए और वार्षिक अधिवेशन के समय वही अधिकारी निर्वाचित होने चाहिए जो एक ठोस कार्यक्रम के अनुसार जिला सभाओ को आगे ले जा सकें।

—वीरेन्द्र
सभा प्रधान

गुरु विरजानन्द वैदिक संस्कृत महाविद्यालय करतारपुर में 1 मई से प्रवेश आरम्भ

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा निर्देशित आर्ष पाठ प्रणाली एवं आधुनिक ज्ञान-विज्ञान का समन्वित पाठ्यक्रम इस महाविद्यालय की अपनी विशेषता है। एकान्त, शान्त और पवित्र वातावरण मे यहा बौद्धिक, शारीरिक व मानसिक विकास सम्यक रूप से होता है।

अनूठे अनुशासन मे आबद्ध गुरुकुलीय शिक्षा प्रणाली के साथ-साथ यहा नि शुल्क एव उत्तम शिक्षा की व्यवस्था है। अपने बच्चो को मेधावी, सुयोग्य और राष्ट्रभक्त बनाने के लिए इस महाविद्यालय मे प्रविष्ट कराए। महाविद्यालय में १ मई से प्रवेश आरम्भ हो रहे हैं। विस्तृत जानकारी के लिए सपर्क करें।

आचार्य—श्री गुरु विरजानन्द वैदिक सस्कृत महाविद्यालय करतारपुर (जालन्धर)

गुरुकुल कांगड़ी के दीक्षान्त-समारोह पर

कुलपति श्री बलभद्र कुमारजी द्वारा सम्बोधन

(किस्त 2)

अभी हाल ही हैं गुरुकुल कागडी विश्वविद्यालय को एसोसिएशन आफ इण्डियन यूनिवर्सिटीज की सदस्यता प्राप्त हुई है जिसके लिए मैं डा. अमरीक सिंह, सचिव, एसोसिएशन आफ इण्डियन यूनिवर्सिटीज का आभारी हू आज हमारी खेल कूद की टीमे अन्तर विश्वविद्यालय प्रतियोगिताओ मे भाग लेने गई है।

गत मास विश्वविद्यालय के विद्यार्थियो ने कुमायू की पहाडियो कार्बेट नेशनल पार्क एव दिल्ली उत्तर प्रदेश और राजस्थान के ऐतिहासिक नगरों की सरस्वती यात्राए की। उन्हे आदेश थे कि जहा-जहां जाए नियमपूर्वक हवन यज्ञ करें एव आर्ष साहित्य का विवरण करें। इस प्रकार उन्होने न केवल स्वय यात्रा का लाभ उठाया अपितु आर्य समाज के सन्देश का भी प्रचार-प्रसार किया। प्रचार और प्रसार के लक्ष्य को ही दृष्टि मे रख कर डा० सत्यकेतु विद्यालकार और डा० हरगोपाल सिह के सम्पादन में अग्रेजी मे त्रैमासिक पत्रिका "वैदिक प थ" के नियमित प्रकाशन का कार्य पुन. प्रारम्भ किया गया है। इसके अतिरिक्त डा० अम्बिका प्रसाद वाजपेयी के निर्देशन मे विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा त्रैमासिक "प्रह्लाद" एवं विष्णु दत्त राकेश के निर्देशन मे विद्यालय के ब्रह्मचारियों द्वारा त्रैमासिक "ध्रुव" पत्रिका का प्रकाशन कार्य प्रारम्भ किया गया हैं, जिससे कि प्रचार के कार्य के साथ-साथ गुरुकुल के विद्यार्थी पत्रकारिता के क्षेत्र में समुचित अनुभव प्राप्त कर सकें।

यहा यह भी उल्लेखनीय है कि गुरुकुल के वेद विभाग के अध्यक्ष डा० रामप्रसाद विगत कई वर्षों से सर्व साधारण से आर्य साहित्य के प्रचार हेतु लघु पुस्तिकाओ की रचना कर रहे हैं। अब तक इन्होने १९ ऐसी पुस्तकों का निर्माण किया है जिनकी ७५,००० प्रतिया जिज्ञासुओं मे वितरित की जा चुकी हैं। इन पुस्तिकाओं मे चुने हुए वेद मन्त्रो की व्याख्या दी जाती है जिससे कि उनके अर्थ सुबोध होकर सर्व साधारण मे हृदयगम हो सकें। इनका मूल्य केवल पढ़ना पढ़ाना सुनना सुनाना है।

मुझे यह कहते हुये प्रसन्नता हो रही है कि उनकी इस साधना और उपलब्धि को देखते हुए सघड विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर ने उनको एक हजार रु० का प्रथम आचार्य गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार ११ अप्रैल को हुये वेद सम्मेलन मे प्रदान किया।

यहा मैं प्रो० चन्द्रशेखर त्रिवेदी की स्वतः स्वीकृत कर्तव्य परायणता का भी उल्लेख करना चाहूगा। सत्यार्थ प्रकाश के दूसरे समुल्लास को शतपथ ब्राह्मण के 'मातृमान् पितृमानाचार्यवान् पुरुषो वेदः से आरम्भ करते हुये ऋषि दयानन्द लिखते हैं कि वास्तव में जब तीन उत्तम शिक्षक अर्थात् माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य होवे तभी मनुष्य ज्ञानवान् होता है।

आगे चल कर वह लिखते हैं कि मिथ्या बातो का उपदेश बाल्यावस्था में ही सन्तानों के हृदय में डाल दें जिससे स्वसन्तान किसी के भ्रमजाल में पड़के दुःख न पावे और वीर्य की रक्षा में आनन्द और नाश करने में दुःख प्राप्ति भी जना देनी चाहिये क्योंकि शरीर में सुरक्षित वीर्य रहता है तब उसको आरोग्य, बुद्धि, बल पराक्रम बढ़ के बहुत सुख की प्राप्ति होती है।

इसी समुल्लास में आगे चल कर स्वामी जी ने लिखा है कि जैसे अन्य शिक्षा की, वैसे ही चोरी, जारी, आलस्य, प्रमाद मादक द्रव्य मिथ्याभाषण, हिंसा, क्रूरता, ईर्ष्या, द्वेष, मोह आदि दोषो को छोडने और सत्याचार के ग्रहण करने की शिक्षा भी बालकों को देनी चाहिए। माता पिता तथा आचार्य अपनी सन्तानो एवं शिष्यो को सदा सत्य बालने के उपदेश करें और यह भी कहें कि जो जो हमारे धर्मयुक्त कर्म हैं उनका ग्रहण करो और जो जो दुष्ट कर्म हो उनका त्याग कर दिया करो। जो जो सत्य जाने उन का प्रचार और प्रकाश करें। किसी पाखण्डी दुष्टाचारी पर विश्वास न करें। और जिस जिस उत्तम कर्म के लिए माता पिता और आचार्य आज्ञा देवें उस का यथेष्ट पालन करो।

इसी लक्ष्य को सम्मुख रख कर गुरुकुल में ७ वी, ८ वीं. ९ वीं एवं १० वी, के ३१ ब्रह्मचारियों को प्रतिदिन एक-एक मन्त्र अथवा संस्कृत सुभाषित कण्ठस्थ करवाने का सकल्प प्रो० चन्द्रशेखर त्रिवेदी, प्रवक्ता, मनोविज्ञान विभाग ने लिया और जब १०२ मन्त्र श्लोक कण्ठस्थ हो गये तो इन्हें सघड़ विद्या सभा ट्रस्ट, जयपुर द्वारा प्रदत्त आर्थिक सहायता से 'जीवन ज्योति' नामक लघु पुस्तिका के आकार में प्रकाशित करवाया गया इसका विमोचन ऋषि बोधोत्सव के अवसर पर कांगड़ी ग्राम में आयोजित बृहत् सभा में किया गया।

यहां यह उल्लेखनीय है कि यह कार्यक्रम बीच मे ही टूट जाता यदि इस में वयोवृद्ध अधिष्ठाता पं चन्द्रकेतु एव स्वयं ब्रह्मचारीगण अटूट दिलचस्पी न दिखाते। मुझे पूर्ण आशा है कि गुरुकुल कांगड़ी विद्यालय का यह अग्रिम दस्ता जहां कही जाएगा ऋषि दयानन्द की ... और न्याय की पाखण्ड खण्डनी पताका ... प्रतिष्ठित करेगा एव सर्वत्र निर्भय होकर इदन्नमम की भावना से धर्माचरण करते हुए जीवन यात्रा में अग्रसर होगा।

आर्य भाईयो और बहनो,

यहा मैं आर्य स्वाध्याय केन्द्र का भी जिक्र करना चाहूगा। आप जानते ही हैं कि श्री रामगोपाल शालवाले के नेतृत्व में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने आर्य समाज के गत सौ वर्ष का बृहत् इतिहास तैयार करने की योजना बनाई है। इस कार्य की पूर्ति हेतु हमारे विद्वान् इतिहासवेत्ता डा० सत्यकेतु की अध्यक्षता में एक कार्य संचालन समिति का गठन किया गया है। डा० सत्यकेतु ने नेहरू नेशनल म्यूजियम की तरह का गुरुकुल में एक आर्य संग्रहालय बनाने का प्रस्ताव गुरुकुल के कुलाधिपति के समक्ष रखा, जिसे महर्ष स्वीकार करते हुए गुरुकुल में विद्यमान संग्रहालय का एक भाग उनके सुपुर्द करने का निश्चय किया गया है। यही पर वह आर्य स्वाध्याय केन्द्र का मुख्य कार्यालय एवं बृहत् पुस्तकालय भी स्थापित करेंगे, जहां आर्य विद्वानों द्वारा रचित ग्रन्थों के अतिरिक्त अत्यन्त मूल्यवान् पाण्डुलिपियो का एव ऐतिहासिक सामग्री का संग्रह एवं प्रदर्शन किया जाएगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि डा० सत्यकेतु का यह संकल्प शीघ्र ही सिद्ध होगा। इस कार्य मे गुरुकुल के इतिहास विभाग के अध्यक्ष डा० विनोदचन्द्र सिन्हा उनके साथ सहयोग कर रहे हैं।

देवियो और सज्जनों,

इस अवसर पर आर्य भट्ट विज्ञान मेले का उल्लेख न करूं तो प्रतिवेदन में एक बड़ी भारी कमी रह जाएगी। आप जानते हैं कि १९ अप्रैल १९७५ को भारतीय वैज्ञानिकों ने सोवियत रूस की सहायता से आर्य भट्ट उपग्रह को कक्षा में स्थापित करके बड़ी भारी वैज्ञानिक उपलब्धि प्राप्त की। तदुपरान्त भास्कर और रोहिणी की उपलब्धियो ने हमारे वैज्ञानिकों की कीर्ति में चार-चांद लगाए। भारत का नाम ऊंचा हुआ। आप सब यह भी जानते हैं कि पुरातन काल में वैज्ञानिक ... में भारत का कितना ऊंचा स्थान था, किन्तु कालगति से भारत अज्ञान और अन्धविश्वास के कूप में जा गिरा। ऋषि दयानन्द की कृपा हुई कि हम अपनी सनातन संस्कृति से सुपरिचित हुए और अब पुनः आध्यात्मिक एवं वैज्ञानिक उन्नति की ओर अग्रसर हैं, हालांकि वेद श्रेयस और प्रेयस दोनों की उपलब्धि की प्रेरणा देते हैं परन्तु कई क्षेत्रों में यह धारणा अब भी बनी हुई है कि आर्य समाज का काम केवल धार्मिक क्षेत्र तक सीमित है। सच तो यह है कि भारत के अथवा प्राणी मात्र के उद्धार के लिए आध्यात्मिक एव वैज्ञानिक उपलब्धियों के सुमधुर समन्वय की आवश्यकता है। इसी दृष्टि से स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरुकुल के पाठ्यक्रम में जहां आध्यात्मिक शिक्षा पर बल दिया वहां वैज्ञानिक शिक्षा की उपेक्षा नहीं की। मेरे पूज्य पिता जी आचार्य श्री गोवर्द्धन ने जो १९०८-१० तक में यहां मुख्याध्यापक थे, उन्ही दिनों हिन्दी मे भौतिकी और रसायन की दो पुस्तको की रचना की जो कई वर्षों तक यहां की पाठ विधि में प्रचलित रही। हिन्दी जगत मे भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों का प्रचार हो और हमारे ब्रह्मचारी उनमे सत्प्रेरणा प्राप्त करे इस आशय से गुरुकुल कांगड़ी के विज्ञान महाविद्यालय के डा० विजयशंकर के सम्पादकत्व में अब वहां से एक त्रैमासिक पत्रिका 'आर्य भट्ट' नाम से निकाली जाने लगी है। इसी शृंखला में इसी वर्ष यहां आर्य भट्ट मेले का भी आयोजन किया गया है। इसका विधिवत् उद्घाटन रुड़की विश्वविद्यालय के कुलपति जगदीश नारायण द्वारा ११ अप्रैल को सम्पन्न हुआ। इसमें हमें भारत हैवी इलैक्ट्रिकल्स रानीपुर, रुड़की विश्वविद्यालय, राष्ट्रीय छात्र सेना इत्यादि से अमूल्य सहयोग प्राप्त हुआ। हम उनके आभारी हैं।

आर्य बहिनों और भाईयो,

अब मुझे आपको एक दो और शुभ संवाद देने हैं। आप जानते ही है कि वर्षों पहले दानवीर श्री अमृतराय की श्रद्धा गुरुकुल परिसर में अमृत वाटिका के रूप में प्रकट हुई थी और मध्य में एक भव्य यज्ञशाला उजड़ी पड़ी रही। गत वर्ष इसमें पुन प्राण प्रतिष्टा हुई जब गुरुकुल आर्य समाज के नव-निर्वाचित तरुण अधिकारियों ने यहाँ साप्ताहिक सत्संग करने का निर्णय लिया। जिस कर्तव्य परायणता से डा० जयदेव यहां साप्ताहिक हवन यज्ञ कराते हैं वह श्लाघनीय है। इसकी शोभा बढ़ाते हैं गुरुकुल विद्यालय के ब्रह्मचारीगण और उनके धर्मपरायण अधिष्ठाता सर्वश्री ईश्वरसिंह चन्द्रकेतु, हुकमसिह और हरिबन्धु।

(क्रमशः)

वैदिक युग में स्त्रियों का स्थान

कु. प्रतिभा, एम. ए.

पुरुष एव स्त्री समाज के दो महत्वपूर्ण अंग माने गये हैं। दोनों का ही अपने अपने स्थान पर अपना-अपना महत्व है। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। दोनों एक दूसरे की अपेक्षा करते हैं। एक के बिना दूसरे के कार्य पूर्ण न होकर अपूर्ण रह जाते हैं। सृष्टि संचालन जैसा महत्व पूर्ण कार्य पारस्परिक सहयोग के बिना सम्भव नही है। ऐसी स्थिति में दोनों को समान स्तर पर रखा जाना उचित है। किन्तु भारतीय सस्कृति की दृष्टि से स्त्री को आदरणीय एवं पूज्य माना गया है। इसके अनेक कारण हैं। इनमें से दो एक कारणों का यहां उल्लेख कर देना अनुपयुक्त न होगा।

स्त्री को मातृ शक्ति के रूप में स्वीकार किया गया है। मातृ शक्ति सदैव पूज्य हुआ करती है क्योंकि मानव के निर्माण मे उसके शैक्षिक अनुदान में उसके प्रारम्भिक सस्कारो के उत्पादन तथा जागृत करने में उसका सबसे बड़ा एव महत्व पूर्ण योगदान हुआ करता है। शतपथ ब्राह्मण के निम्नलिखित वचन से इसकी पुष्टि होती हैं।

मातृमान् पितृमानन्नाचार्यवान्
पुरुषो वेद,

इस वाक्य मे सर्वप्रथम स्थान मातृ-शक्ति को ही प्रदान किया गया है।

माता अपनी सन्तानों के प्रति निस्वार्थ प्रेम को रखा करती है और सर्वदा उसका हित चिन्तन करने मे ही रत रहा करती है। ऐसा किसी अन्य के [illegible] किया जाना संभव नही है।

प्राचीनकाल से ही स्त्री जाति अथवा मातृ शक्ति को आदर्शात्मक तथा मर्यादा-युक्त सम्मान और आदर प्राप्त होता रहा है। उसके प्रति समाज मे स्वाभाविक निष्ठा और श्रद्धा विद्यमान रही है। परिवार तथा समाज में उनके द्वारा किये जाने वाले योगदान का सर्वदा महत्व तथा गौरव रहा है। मातृ शक्ति को विद्या, यश और सम्पत्ति का प्रतीक माना जाता रहा है। उसके बिना पुरुष सदैव अपूर्ण तथा अधूरा माना जाता रहा है। स्त्री को पुरुष की अर्द्धांगिनी कहा गया है और उसे श्री तथा लक्ष्मी के रूप में मनुष्य के जीवन को सुख एव समृद्धि से दीप्ति करने वाली कहा गया है।

वैदिक युग में स्त्री का बहुत बडा महत्व था। चाहे वह दुहिता के रूप में रही हो अथवा पत्नी के रूप मे अथवा माता के रूप में सदैव सम्मान भाजन थी। यहां तक कि उसे ही घर कहा गया है।

"जायेदस्तम्"

अर्थात् जाया ही घर है अथवा—

"गृहिणी गृहमुच्यते"

स्त्री सहधर्मिणी थी। उसके बिना किसी धार्मिक कृत्य का अनुष्ठान किया जाना सम्भव न था। सपत्नीक व्यक्ति ही यज्ञ इत्यादि कर्मकांडो के करने का अधिकारी था—

"अयज्ञो वाह्यो ष योऽपत्नीक."

तैत्तिरीय ब्राह्मण २।२।२।६। विशे

स्त्रियों को प्रत्येक अंश [illegible] अधिकार प्राप्त थे। पुरुषो के समान उन की शिक्षा दीक्षा का प्रबन्ध था। वे किसी भी अंश में पुरुषों से कम नही रहा करती थीं वे अपने शोभन आचरण तथा सदाचार के लिये प्रसिद्ध थी।

वैदिक युग के अन्तिम चरण उपनिषद काल में भी नारी का समाज मे अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान था। इस काल में भी उनकी शिक्षा का सुव्यवस्थित स्वरूप दृष्टि गोचर होता है। उपनयन संस्कार के पश्चात उनका सुव्यवस्थित अध्ययन प्रारम्भ हो जाता था। उनकी शिक्षा का समय निर्धारित था और शिक्षा की समाप्ति के अनन्तर वे या तो गार्हस्थ्य जीवन का उपयोग किया करती थी अथवा ब्रह्मचिंतन मे अपने तप पूत

सम्पत्ति का बटवारा अपनी दोनों पत्नियों कात्यायनी और मैत्रेयी मे किया था तब ब्रह्मज्ञानी मैत्रेयी ने कहा था—

'येनाहं नामृतास्याम,
किं तेन कुर्यामित।"

अर्थात् जिस धन एव समृद्धि से मैं अमरत्व प्राप्त नही कर सकती, उससे मेरा क्या लाभ ?

उत्तर मे महर्षि याज्ञवल्क्य ने आत्म-तत्व विषयक दार्शनिक पक्ष उन्हे समझाया था देखिये—

'बृहदारण्यक उपनिषद्।'

गार्गी ने महर्षि याज्ञवल्क्य से लोहा लेकर भारतीय तत्व चिंतन के इतिहास मे अपना नाम अमर कर दिया।

सम्पूर्ण वैदिक युग मे स्त्री और पुरुषो की शिक्षा का पृथक पृथक प्रबन्ध था। स्त्रियो के अध्यापन का कार्य स्त्रिया और पुरुषो के अध्यापन का कार्य पुरुष किया करते थे। इसी दृष्टि से महर्षि पाणिनि ने उपाध्याय (अध्यापक) की सहधर्मिणी तथा स्वय अध्यापिका का



जीवन को व्यतीत किया करती थीं। कुछ उदाहरण इस प्रकार के भी उपलब्ध होते हैं कि जिससे गृहस्थ जीवन में रहते हुए भी स्त्रियां आध्यात्मिक जीवन का अनुभव किया करती थी। वे अध्यात्म जीवन की रहस्यपूर्ण गुत्थियों को भी सुलझाने का प्रयास किया करती थी। ब्रह्मत्व के वर्णन में वे तत्कालीन दार्शनिकों से लोहा लेने में भी सकोच नही किया करती थी। बृहदारण्यक उपनिषद् में ऐसी ब्रह्मवादिनी नारियों की विद्वता का परिचय हमे प्राप्त होता है। इसके अन्तर्गत तत्कालीन ब्रह्मज्ञानी ऋषि याज्ञवल्क्य की धर्मपत्नी मैत्रेयी तथा याज्ञवल्क्य से शास्त्रार्थ करने वाली गार्गी को ही ले लीजिये। मैत्रेयी के जीवन में यह ब्रह्मज्ञान से उत्पन्न मन सन्तोष तथा पूर्ण वैराग्य का साक्षात्कार करते हैं। जीवन के अन्तिम काल मे जब याज्ञवल्क्य ने व्यावहारिक नीति को अपना कर अपनी

कार्य करने वाली स्त्रियों के लिए विभिन्न प्रकार के नामों की रचना की थी। उपाध्याय की स्त्री उपाध्यायानी कहलाती थी और स्वयं अध्यापन करने वाली स्त्री उपाध्याया।

इससे स्पष्ट हो जाता है कि वैदिक युग के अन्तिम चरण तक स्त्रियां बडी ही प्रौढ प्रवीण एव प्राञ्जल हुआ करती थी। उनका उदात्त चरित्र शिक्षण योग्यता एव सामाजिक सहयोग सभी कुछ उत्तम प्रकार का था।

स्मृति काल मे भी स्त्रियो की दशा प्राय: पूर्ववत ही थी। जैसा कि मनुस्मृतिकार मनु ने लिखा भी है—

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते
रमन्ते तत्र देवता।
यत्रैतास्तु न पूज्यन्ते
सर्वास्तत्राफला: क्रिया।
॥ मनु० ३५६ ॥

अर्थात् जिस घर में स्त्रिया समादृत हुआ करती है उस घर मे देवगण निवास किया करते हैं। जिस घर में स्त्रियो का सत्कार नही हुआ करता है वहा सभी प्रकार के कार्य निष्फल हुआ करते हैं।

समाज के अतिरिक्त परिवार मे भी पिता भाई पति और देवर इत्यादि द्वारा स्त्रियो को उत्तम आदर प्राप्त था—

पितृभिर्भ्रातृभिश्चैता पतिभिर्देवरैस्तथा।

पूज्या भूषयितव्याश्च बहुकल्याणमीप्सुभि ॥ मनु० ३-५५ ॥

उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट हो जाता है कि वैदिक युग मे स्त्रिया पूर्णरूपेण शिक्षित हुआ करती थी और उनके आचरण एव कार्यकलाप भी उनकी शिक्षा के अनुरूप ही हुआ करते थे। वे सदा उदार, विनय सम्पन्नता, उत्तम गुणों से समन्वित हुआ करती थी। अपने उत्तम आचरणो के द्वारा ही वे परिवार तथा समाज मे समादृत हुआ करती थी।

—

रामनवमी पर्व की धूमधाम

आर्य युवक सभा, फिरोजपुर शहर की ओर से ६ अप्रैल से १२ अप्रैल तक विशाल यज्ञ का आयोजन पंडित रघुवीर शरण शास्त्री की अध्यक्षता मे हुआ। १२ अप्रैल को यज्ञ की पूर्णाहुति डाली गई। जिसमे शहर व छावनी और बस्ती टैंकावाली के सभी आर्य नर-नारियों ने बहुत उत्साह से भाग लिया। पूर्णाहुति के पश्चात ध्वजारोहण डाक्टर साधुचन्द जी द्वारा हुआ। सभा की अध्यक्षता श्री पुरुषोत्तमलाल जी गुप्ता ने की। भगवान रामचन्द्र के जीवन पर श्री जीवनसिंह बेदी, पंडित रामेश्वरदास जी, लाला रामचन्द्र जी आर्य, दत्ता जी, ललित जी, विनोद जी तथा बलदेव जी ने अपने विचार प्रस्तुत किए। प्रोफैसर जगदीशजी, मनोज जी, विनोद महता बन्धुओ ने अपने भजनो द्वारा उपस्थित जन समूह को आनन्दित किया। इस अवसर पर आर्य युवक सभा पंजाब के प्रधान श्री महेन्द्र प्रताप आर्य भी उपस्थित थे। शान्ति पाठ व जयघोष के बाद ऋषि लंगर का आयोजन किया गया। आर्य युवक श्री ललित कुमार, इन्द्रजीत सर्वहितैषी, अरुण सतीश, सुभाष आदि ने बहुत ही उत्साह से कार्य किया। यह सारा कार्य श्री ओ३म्-प्रकाश भाटिया जी प्रेरणा से सम्पन्न हुआ।

— महात्मा मोहनलाल, मन्त्री आर्य समाज रानी का तालाब, फिरोजपुर शहर

दयानन्द आयर्वेदिक फार्मेसी की स्थापना

दयानन्द मठ चम्बा निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है। हिमाचल प्रदेश के सुरम्य स्थान पर रावी नदी के किनारे पर स्थित यह संस्थान हिमाचल प्रदेश मे वैदिक धर्म के प्रचार का केन्द्र बनता जा रहा है। अब आत्म निर्भरता एवं दीन दुखियो की सेवा मे जुट जाने की दिशा मे मठ ने एक सामयिक एवं उत्साहवर्धक कदम उस दिन उठाया जब १९-६-८१ को हिमाचल प्रदेश के राजस्वमन्त्री श्री सतमहाजन जी ने दयानन्द आयुर्वेदिक फार्मेसी एवं धर्प उद्योग की आधार शिला रखी। इस अवसर पर एक भव्य समारोह भी आयोजित किया गया जिस की अध्यक्षता पूज्य स्वामी श्री सर्वानन्द जी महाराज ने की।

फार्मेसी भवन पर अनुमानन एक लाख रुपए व्यय आने की सभावना है। आर्य बन्धुओ से अनुरोध है कि हिमाचल प्रदेश के इस एक मात्र वैदिक सस्थान को पल्लवित करने के लिए मुक्त हस्त से सहयोग प्रदान करे।

—सुमधानन्द

दक्षिण भारत सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी समारोह

हैदराबाद दक्षिण भारतीय सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी समारोह जो ७ मई से १० मई तक हैदराबाद नगर मे आयोजित है मे भाग लेने देश भर के मूर्धन्य विद्वानो एवं भजनोपदेशको की स्वीकृति प्राप्त हो चुकी है। जिनमे शास्त्रार्थ महारथी प० बिहारीलाल शास्त्री काव्यतीर्थ शास्त्रार्थ महारथी प० शान्ति प्रकाश शास्त्रार्थ महारथी ओम प्रकाश जी खतौली वाले महात्मा आर्य भिक्षु वानप्रस्थ श्री उत्तम चन्द जी शरर आचार्य वीरेन्द्र जी शास्त्री क्रांतिकारी युवा नेता ब्रह्मचारी आर्य नरेश तथा स्वामी विद्यानन्द सरस्वती शामिल हैं।

पारिवारिक सत्सग

आर्य युवक सभा लुधियाना की ओर से दिनाक १९-४-८१ दिन रविवार को श्री तिलक राज भाटिया जी के घर उनके सुपुत्र अमित भाटिया के जन्म दिन पर पारिवारिक सत्सग किया गया। इसके पश्चात पडित राम कुमार जी आर्य युवक सभा लुधियाना की ओर से श्री तिलक राज भाटिया जी को सत्यार्थ प्रकाश तथा वैदिक साहित्य भेंट किया। शान्ति एवं जयघोषो के साथ सत्सग समाप्त हुआ।

आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर का वार्षिक निर्वाचन

ज्वालापुर—आर्य वानप्रस्थ आश्रम ज्वालापुर का ५१वा वार्षिकोत्सव १५ से १८ अप्रैल तक उत्साह पूर्वक उल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर देश के कोने कोने से महानुभावो का आगमन हुआ। आगामी वर्ष के लिए निम्न पदाधिकारियो का निर्वाचन हुआ—

श्री बालनलाल जी सलूजा—प्रधान श्री कल्याण स्वरूप जी–वरिष्ठ उपप्रधान श्रीमती माता पुष्पावती जी भौगा— उपप्रधान श्री रघुनाथ प्रसाद जी–उपप्रधान श्री जीयालाल जी शर्मा—उपप्रधान श्री महेन्द्र मुनि जी—मन्त्री श्री केशवमुनिजी उपमन्त्री श्री किशनचन्द जी कालड़ा—उपमन्त्री श्री रेवती प्रसाद जी—उपमन्त्री श्रीमती माता सत्यवती जी पुरी—उपमन्त्री श्री जयन्ती प्रसाद जी—कोषाध्यक्ष श्री माधोप्रसाद जी—पुस्तकाध्यक्ष।

आर्य समाज राजापुर (नेपाल) का प्रथम वार्षिकोत्सव

आर्य समाज राजापुर (नेपाल) का प्रथम वार्षिकोत्सव १४ अप्रैल से १५ अप्रैल तक मनाया गया जिसमे आर्य जगत के भजनोपदेशक श्री ब्रजविहारी दास जी तथा श्री भगवानदीन शास्त्री के भजनोपदेशको के वैदिक सिद्धान्त पर आधारित प्रभावशाली भजन तथा हिन्दू समाज मे व्याप्त अन्धविश्वासो पर खण्डनात्मक प्रवचन हुए। कार्यक्रम मे सभी धर्मसम्प्रदाय के लोगो ने भाग लिया।

मन्त्री
आर्य समाज
राजापुर (नेपाल)
घनश्यामदास गुप्त

निष्क्रमण सस्कार

पिछले दिनो आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना के पुरोहित श्री रामकुमार शास्त्री की सुपुत्री कु० अर्चना का निष्क्रमण सस्कार लुधियाना के सुयोग्य विद्वान श्री वेद प्रकाश जी शास्त्री ने विधि पूर्वक कराया इसी सम्बन्ध मे श्री राम कुमार जी ने समाज मे एक विशेष सत्सग व समारोह का आयोजन भी किया।

—रणवीर भाटिया

आर्य समाज सुलतान लोधी का उत्सव

आर्य समाज सुलतानपुर लोधी का वार्षिक उत्सव १ २ ३, मई १९८१ को बड़ी धूमधाम से हो रहा है। सभा की ओर से श्री प० निरजन देव जी इतिहास केसरी श्री प० धर्म देव जी आर्य श्री श्याम सिंह जी हितकर भजनमण्डली इस उत्सव मे भाग ले रही है।

धर्म प्रेमी सज्जन उत्सव मे पधार कर धर्म लाभ उठावें।

—सुरेन्द्र शास्त्री पुरोहित

मुरादाबाद मे हिन्दू सम्मेलन का आयोजन

नई दिल्ली, अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति ने आगामी १९ मई को मुरादाबाद मे क्षत्रीय हिन्दू सम्मेलन आयोजित करने का निश्चय किया है।

समिति के कार्यकर्ताओ की एक बैठक कल यहां समिति के निर्देशक प्रो० रामसिंह और अध्यक्ष महात्मा वेद भिक्षु के सानिध्य मे हुई जिसमे उक्त घोषणा की गई।

प्रसिद्ध हिन्दू सन्यासी स्वामी ओमानन्द सरस्वती स्वामी जगदीश्वरानन्द सरस्वती प्रो० रामसिंह महात्मा वेद भिक्षु सस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान प्रो० धर्मवीर सहित अनेक विचारक सम्मेलन को सम्बोधित करेंगे।

मुरादाबाद हिन्दू रक्षा समिति के पदाधिकारी बैठक मे भाग लेने के लिए दिल्ली आए थे। उन्होने बताया कि रामपुर, बरेली मुरादाबाद बिजनौर आदि जिलो के ग्रामो के हिन्दुओ का अपनी रक्षा के लिए सजग करने का तीव्र प्रचार अभियान प्रारम्भ किया जा चुका है। ये ग्रामीण हजारो की सख्या मे सम्मेलन मे भाग लेंगे।

सिगरेट मे अट्ठारह जहर मौजूद

(२ पृष्ठ का शेष)

उसे दिल का बीमारी और पेट मे उत्पन्न होने वाले अलसर का खौफ कम दिखाई देगा। डाक्टरो के सर्वेक्षण ने यह भी बताया है कि सिगरेट छोड देने से नाक और गले की बीमारियो का भी अन्त हो जाता है।

यह भी देखने मे आया है कि सिगरेटो की सख्या आसानी से [illegible] जा सकती। हा दृढ विश्वास के साथ सिगरटो को पूर्ण रूप से छोडा जा सकता है।

हिन्दू नेताओं की हैदराबाद और तिरुनेलवेली यात्रा

नई दिल्ली मे २२ अप्रैल को अखिल भारतीय रक्षा समिति की कार्य समिति ने हैदराबाद की दीवारो पर चिपकाये गये उस पोस्टर पर विचार किया, जिस का शीर्षक है हुकूमत मुसलमानों को अलहदा इलाका दे दें। इसके अतिरिक्त तमिलनाडु के तिरुनेलवेली जिले के तेनकासी नामक स्थान पर १००० हिन्दू हरिजनो के इस्लाम ग्रहण करने की चिन्ताजनक घटना पर भी विचार हुआ। निश्चय हुआ कि अतिशीघ्र (सम्भवत) इसी महीने) हैदराबाद मे एक विशाल हिन्दू सम्मेलन आयोजित करके जनता को मुस्लिम लैंड बनाने के षडयन्त्र से सजग कराया जाए। प्रो० रामसिंह महात्मा वेदभिक्षु आदि नेता इस सम्मेलन को सम्बोधित करेंगे।

ये नेता सम्मेलन की समाप्ति पर तेनकाशी (तिरुनेलवेली) प्रस्थान करेंगे और वहां धर्मान्तरित किये गये हिन्दू हरिजनो को पुनः हिन्दू धर्म में लाने का प्रयत्न करेंगे। समिति का प्रयत्न होगा कि जो हिन्दू हरिजन पुलिस अधिकारियो की ज्यादतियो के फलस्वरूप मुसलमान हो गये हैं उन्हे आश्वस्त किया जाए और हिन्दू समाज मे उनका उचित स्थान दिलाया जाए।

सभा की निम्न योजनाओं के लिए

अधिक से अधिक धन भेजिए

पंजाब की आर्य समाजो से अपील

१. सभा के वेद प्रचार विभाग के लिए जो आर्य समाज का मुख्य कार्य है।

२ सभा के साहित्य प्रकाशन के लिए जो वर्तमान युग मे प्रचारार्थ सबसे प्रभावशाली साधन है।

३ सभा के नये भवन के निर्माण के लिए।

४ सभा की ओर से बनाये जा रहे कादियां के लेखराम स्मारक, मोही के स्वतन्त्रानन्द स्मारक तथा तलवन के श्रद्धानन्द स्मारक के निर्माण के लिए।

५. प्रचारार्थ एक जीप खरीदने के लिए।

६, सभा की शिक्षा सस्थाओ के सचालन तथा सवर्धन के लिए।

वीरेन्द्र, सभा प्रधान

रामचन्द्र जावेद सभा मन्त्री

मार्गबनगर में वेद प्रचार

आर्य समाज वेद मन्दिर मार्गबनगर जालन्धर में २ से ८ नवम्बर तक रात्रि ८ से ११ बजे तक निरन्तर वेद प्रचार होता रहा। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपदेशक श्री पं० विजयकुमार जी शास्त्री तथा श्री पं० रामनाथ जी शास्त्री के उपदेश तथा भजन होते रहे, ८-११-८१ को प्रातः ८ से सायं २ बजे तक विशेष समारोह हुआ जिसमें श्री सरदारी लाल जी तथा उपमन्त्री, श्री कर्मचन्द जी शास्त्री, श्री ऋषिपालसिंह जी एडवोकेट, रजिस्ट्रार आर्य विद्या परिषद् पं० धर्मदेव जी आर्य, श्री ज्ञानचन्द जी, श्री पं० मनोहरलाल जी, श्री प्रीतमजी, मन्त्री आर्य प्रा० स०, श्री पं० किशनचन्दजी श्री हरवंशलाल जी शर्मा बड़ा समाज की भजन मण्डली, बस्ती बाबा खैल समाज की भजन मण्डली तथा और बहुत से कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया।

कार्यक्रम बड़ा सफल रहा।

शेरे-ऐ-पंजाब की सिंह गर्जना

(पृष्ठ ४ का शेष)

घर से प्रतिबन्ध हटाया गया। २८ नवम्बर १९१६ को न्यूयार्क में एक भोज लाला जी के सम्मान में दिया गया, अमेरिका के अनेक संभ्रान्त व्यक्ति, राजनीतिज्ञ तथा सम्पादक इसमें सम्मिलित हुए, वहां से चलकर आप २० फरवरी १९२० को भारतीय तट पर बम्बई पहुंचे। वहां आपका भव्य स्वागत किया गया।

यौरोपीय महायुद्ध के समय भारतीय जनता को देश की स्वतन्त्रता के लिए कुछ न कुछ देने का जो वायदा अंग्रेजों ने किया था उसे वह भूल गए और उसके बदले में उन्होंने जलियांवाला काण्ड तथा रोलट एक्ट भारतीयों को उपहार स्वरूप दिए। मांटफो चैम्सफोर्ड स्कीम के रूप में नाम मात्र के सुधार की घोषणा की गई। जिससे भारत की जनता में असन्तोष की लहर दौड़ गई जनता के असन्तोष को दूर करने के लिए और शासन सुधारों की जांच करके इंगलैंड की सरकार को अपनी रिपोर्ट देने के लिए लार्ड साइमन की अध्यक्षता में एक कमीशन भारत भेजने की घोषणा वायसराय के द्वारा ८ नवम्बर १९२७ को की गई। ३ फरवरी १९२८ को यह कमीशन बम्बई पहुंच गया। उसी दिन सारे देश में हड़ताल की गई, बम्बई के पश्चात् दिल्ली में काले झण्डे दिखाये गये, कुछ लिबरल राजनीतिज्ञों को छोड़ कर सारा देश कमीशन के बहिष्कार की तरफ उठ खड़ा हुआ। अक्तूबर १९२८ के अन्तिम सप्ताह में साइमन कमीशन लाहौर आ रहा था, और लाहौर की जनता उसके बहिष्कार के लिए पूरी तैयारी करने में व्यस्त थी। स्टेशन पर उतरते ही साइमन कमीशन को काले झण्डे दिखाने और पूरी भीड़ के साथ साइमन वापिस जाओ कहने की योजना थी। इस प्रदर्शन में सभी संगठन शामिल थे, [illegible] प्रदर्शनकारियों का नेतृत्व कर रहे थे। ज्यों ही कमीशन के सदस्य लाहौर के स्टेशन पर उतरे, 'साइमन' गो बैक नारे लगने प्रारम्भ हो गए, अपार जनसमूह को हटाने के लिए बल का अनुचित प्रयोग किया गया और लाला जी पर लाठियां बरसाई गईं। इन्हीं लाठियों के प्रहार के परिणाम स्वरूप १७ नवम्बर १९२८ प्रातः साढ़े छः बजे यह नर-केसरी अमरपद को प्राप्त हो गया। इस नर-पुंगव ने अपने पर हुए लाठी प्रहार के पश्चात् निम्नलिखित वक्तव्य दिया था—

'जलूस बिल्कुल निहत्था था, हमारा इरादा झगड़ा करने का नहीं था...। मैं कहता हूं कि हम इन लाठियों के खाने के लिए तैयार है, और जब तक यहां अंग्रेज हुकूमत है तब तक हम उनके खाने के मुस्तहक हैं, लेकिन यह एक-एक लाठी गवर्नमेंट के तबदार के लिए एक-एक कील कफन का एक-एक धागा साबित होगी। अगर देश में कोई हिंसात्मक क्रान्ति होगी, तो उसकी जिम्मेवारी पुलिस और उसके अफसरों पर होगी। अगर गवर्नमेंट और उसके अफसर इसी प्रकार का अत्याचार करते रहेंगे, जैसाकि आज उन्होंने किया है तो भारत के जोशीले नौजवान, उत्तेजित और अधीर हो उठेंगे और उस समय मेरे, मालवीय जी के या महात्मा जी के लिए भी उन्हें अहिंसा की मर्यादा के अन्दर रखना असम्भव हो जाएगा।

भारत माता के सच्चे सपूत का बलिदान भारत के प्रति सच्ची भक्ति भावना को अद्‌बुद्ध करने आया है, आज हम फिर साम्प्रदायिक संकीर्णता, प्रान्तीयता: जातिवाद तथा अनुचित तुष्टिकरण की नीति का शिकार होकर इस अखण्ड भारत को पुनः खण्ड खण्ड करने और निर्बल बनाने की ओर ले जा रहे हैं, जोकि इन बलिदानी वीरों की देशभक्ति भावना के सर्वथा विरुद्ध है, आइए अपने विवेक को प्रबुद्ध करें, यह देश हमारा है हम सच्चे अर्थों में भारत माता के ऋण से उऋण हो सकें।

गोबिन्दगढ़ जालन्धर का उत्सव

आर्य समाज गोबिन्दगढ़ जालन्धर का वार्षिक उत्सव २ से ८ नवम्बर तक बड़े उत्साह से मनाया गया, ७ नवम्बर को २ से ५ बजे सायं तक आर्य महिला सम्मेलन हुआ जिसमें जालन्धर की सभी महिला समाजों ने भाग लिया। ८ नवम्बर को यज्ञ की पूर्णाहुति उत्सव का विशेष आयोजन तथा ऋषिलंगर प्रीति भोज हुआ जिसमें सैंकड़ों बन्धुओं ने प्रीति भोज किया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महामन्त्री श्री प्रि० रामचन्द्र जी जावेद श्री पं० निरञ्जनदेव जी महोपदेशक, श्री पं० तुलसीदेव जी, श्री पं० हजारीलाल जी भजनोपदेशक, श्री पं० ओ३म् प्रकाश जी आर्य, श्री वीरेन्द्र, कुलदीप साथी प्रसिद्ध गायक के उपदेश तथा भजन हुए इनके अतिरिक्त श्री स्वामी नित्यानन्द जी विदुषी बहनों आदि ने भी भाग लिया।

गुरु विरजानन्द संस्कृत विद्यालय करतारपुर के ब्रह्मचारियों ने आचार्य नरेश जी के निर्देशानुसार योगासन, जंजीर तोड़ना, थाली चीरना तथा कांच हाथों से पीसना, चार सूत के दो दो, तीन-तीन सरिए कण्ठ से मोड़ना आदि का प्रदर्शन किया, जनता ने प्रभावित होकर ब्रह्मचारियों को ईनाम दिए।

ऋषियों का सन्देश

(लेखक—श्री सत्यपाल 'पथिक' आर्य समाज कोर्ट—बम्बई)

(तर्ज—रेशमी सलवार कुर्ता जाली का)

अब यहां सत्संग सजाया जाएगा।
ऋषियों का सन्देश सुनाया जाएगा॥
मीठा-मीठा साज बजाया जाएगा।
और मधुर संगीत सुनाया जाएगा॥

मत करना यह आशा, होगी सतरंगी भाषा
या सब लोग बुलाकर, कोई सिनमा, खेल, तमाशा
दिखाया जाएगा-ऋषियों का सन्देश———१

सुन्दर कर्म कमाना, नर जीवन सफल बनाना
देश धर्म जाति पर, अपना कर्त्तव्य निभाना
बताया जाएगा, ऋषियों का सन्देश———२

सद् ग्रन्थों का पढ़ना. सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ना
जीवन की राहों में हिम्मत से आगे बढ़ना
सिखाया जाएगा, ऋषियों का सन्देश———३

कहे 'पथिक' जो योगी, वह बात यहां पर होगी
ज्ञान की दवा पिलाकर, हर नया पुराना रोगी
बचाया जाएग, ऋषियों का सन्देश सुनाया जाएगा–४

हैदराबाद में शपथ समारोह

आर्यसमाज का कार्य करने के लिए शपथ ग्रहण

हैदराबाद २९ अक्तूबर—आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश हैदराबादने एक सूचना में बताया है कि बुधवार दिनांक २८ अक्तूबर ८१ को आर्य प्रतिनिधि सभा आन्ध्र प्रदेश की ओर से शपथ समारोह का आयोजन विनायक राव भवन सुलतान बाजार में किया गया था। समारोह की अध्यक्षता श्री रामचन्द्र राव कल्याणी प्रधान सभा ने की। समारोह मे नगर की समाजो के प्रधान, मन्त्री और प्रतिष्ठित आर्यजनों ने भाग लिया।

श्री प० रामचन्द्रराव जी वन्देमातरम् वरिष्ठ उपप्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने उपस्थित आर्यजनों को सम्बोधित करते हुए विचार किया कि देश रक्षा और वैदिकधर्मोन्नति के लिए आर्यों को क्रियाशील होने की आवश्यकता है। देश के सन्मुख आज कई गम्भीर समस्याएं हैं और देश रक्षा की दृष्टि से कई खतरे भी। विदेशी धन के बल पर धर्म परिवर्तन का षडयन्त्र आरम्भ किया गया है जिसका सामना किया जाना है और यह कार्य केवल आर्य समाज के द्वारा ही हो सकता है। इसके लिए आर्यों को कटिबद्ध होने की आवश्यकता है। इस कटिबद्धता के लिए शपथ-क्रिया बड़ी प्रेरणादायी हो सकती है जहाँ कर्तव्य पालन की दिशा में स्थिर भी रख सकती है। यह आपने निम्न प्रकार 'शपथ' प्रस्तुत की।

शपथ—

१ मैं आर्य समाज का सदस्य हूं। इस समाज के सदस्य के नाते मेरे से इस बात की आशा की जा सकती है कि एक आर्य के नाते मेरे हर कार्य में आर्यत्व ही दृष्टिगोचर होता रहेगा। इस बात की मैं प्रतिज्ञा करता हूं।

२. आर्य समाज के मार्ग वैदिक धर्म का प्रचार करना मेरा धर्म है। इस निमित्त अपने जीवन को बनाऊंगा, जिससे किसी रूप से कलंकित हो जाए और मुझसे विश्वकल्याण का मार्ग अवरुद्ध न हो।

३ विदेशी तथा विधर्मी देश तथा धर्म को नुकसान पहुंचा रहे हैं, मैं शपथ लेता हूं कि देश और धर्म की रक्षा के लिए हर प्रकार का त्याग करने के लिए, अपने प्राण तक दूंगा।

श्री वन्देमातरम् रामचन्द्र राव जी के पश्चात् श्री प० जगन्नाथ जी सिंह ने अपनी एक कविता शपथ के सम्बन्ध में प्रस्तुत की और शपथ के सम्बन्ध में बल दिया।

तत्पश्चात् उपस्थित सभी आर्यजनों ने 'शपथ' पंक्तियों का उच्चारण कर अपनी प्रतिज्ञा को दोहराते हुए शपथ ग्रहण की।

आर्यसमाज नथा गुजरां का उत्सव

आर्य समाज नथा गुजरां (गुरदासपुर) मे वार्षिक उत्सव २९ से १ नवम्बर तक बड़े उत्साह से मनाया गया। इस अवसर पर आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के महोपदेशक श्री विजय कुमार जी शास्त्री श्री हजारीलाल जी भजनोपदेशक श्री रामनाथ यात्री के उपदेश तथा भजन हुए। इनके अतिरिक्त श्री स्वामी प्रकाशानन्द जी (गुरदासपुर) श्री प० वेदप्रकाश जी गुरुकुल कांगड़ी श्री प० मनोहरलाल पुरोहित (पठानकोट) स्वामी चिन्मयानन्द जी आदि विद्वानो तथा जिला गुरदासपुर की लगभग सभी आर्य समाजो ने इसमे भाग लिया इस उत्सव की सफलता का सारा श्रेय श्री प० धर्मपाल जी भजनोपदेशक को है जिनके परिश्रम से यह उत्सव सफल रहा। ५०१ रुपये सभा को वेद प्रचारार्थ दिया।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वर्ष 14, अंक 37, 14 मघर सम्वत् 2038, तदनुसार 29 नवम्बर 1981, दयानन्दाब्द 156। एक प्रति 35 पैसे (वार्षिक शुल्क 15 रुपए)

वैदिक संस्कृति की विश्वव्यापी यात्रा

—रंगनाथ राकेश

भारत के रहने वाले सभी नागरिक हिन्दू हैं। यहां कोई मुसलमान नहीं है और न ईसाई। बौद्धकाल तक सारा यूरोप और अरब आर्य थे।

विश्व विविध भाषाओं और संस्कृतियों का मिलन केन्द्र है। जिस प्रकार वेशभूषा और वाणी से व्यक्ति के देश की जानकारी की जा सकती है, ठीक उसी प्रकार भाषा द्वारा देश की संस्कृति का पता चल जाता है। भाषा-शास्त्रियों का कथन है कि पुरा काल में एक ही भाषा और एक ही संस्कृति थी। आधुनिक युग में राष्ट्र यदि इस सिद्धान्त को व्यवहारिक रूप दें तो पारस्परिक सद्भावना बढ़ेगी और मैत्री का वातावरण बनेगा, इसमें सन्देह नहीं है।

विश्व की प्राचीनतम भाषा वैदिक भाषा रही है। वैदिक संस्कृति ही सबसे प्राचीन संस्कृति है। यही वैदिकी भाषा और संस्कृति बाद में विश्व में फली-फूली और उसकी शाखाओं-प्रशाखाओं का विकास हुआ। वैदिक भाषा में ४७ चीनी में २०४, रूसी में ३५, फारसी में ३१, अरबी में २८, हिब्रू में २० और लेटिन २० उच्चारण वाले अक्षर हैं, जो वैदिक भाषा से ही विकसित हुए हैं। इस वैदिक संस्कृति का उदय स्थल हिमालय का उत्तर-पश्चिम प्रदेश रहा है। आर्य हिमालय को अपना मूल केन्द्र मानते हैं। अतः ऐसा कहना उचित ही होगा कि भारत से ही विदेशों में वैदिक भाषा और संस्कृति गई है।

पड़ोसी देश

चीन, जापान, बर्मा, ईरान, अरब आदि हमारे पड़ोसी देश हैं। महाभारत काल में ये राष्ट्र 'जम्बू द्वीप भारतवर्ष के अन्तर्गत थे। भारतीय पुराणों में चीन का उल्लेख हुआ है। महाभारत युद्ध में ईरान के लोग आए थे, गान्धार उस स्थान को कहते हैं जहां भेड़ अधिक संख्या में पाली जाए। कन्दहार या कान्धार गान्धार का अपभ्रंश है। अरब घोड़ों के लिए प्रसिद्ध है, 'अर्बन शब्द का अर्थ होता है—घोड़ा इसी अर्बन से अरब बना है। रामायण-काल में अरब सदाबहार देश था, किन्तु अरब का कुछ भाग मरुस्थल बन गया।

भाषा शब्दों की माला से बनती है। शब्दों के सहारे अर्थ ग्रहण कर उस देश की संस्कृति की तलाश कर सकते हैं, पाकिस्तान के पश्चिम भाग में 'पख्तू' जातियो का निवास स्थान है, 'पख्तू' वैदिक काल के 'पक्थ' कहे जाते हैं, इसी 'पक्थ' से पठान शब्द का विकास हुआ है, इसीलिए सीमान्त गांधी अब्दुल गफ्फार खां अपने को आर्य कहते हैं। वास्तव में पक्थ वैदिक राजा थे, क्या पाकिस्तान शब्द को पाक्थ स्थान से सम्बीकृत किया जा सकता है? यदि हां तो भारत और पाकिस्तान दोनों परम्परा से एक हैं। हमें राजनीति अलग कर सकती है, किन्तु भाषा और संस्कृति अलग नहीं कर सकती है। चीनी अपने को 'थी' का वंशज कहते हैं। 'थी' शब्द आयु का अपभ्रंश है। आयु पुरुखा के पुत्र थे। 'यजुर्वेद' में कहा गया है—'अग्ने आयुरसि'। चीन और भारत के सांस्कृतिक संबंधों को विस्तृत कैसे किया जा सकता है?

कण्व ऋषि ने मिश्र (मिस्र) मे जाकर वैदिक भाषा और संस्कृति का प्रचार किया था। भद्राश्ववासी चीनी भारत के भाई हैं, यदि वे सीना का जल पीते है तो भारत सिन्धु का जल पीता है। शक और लाव भारतीय जातीया रूस मे बसी थी, जिन्हे स्लैविक कहा जाता है, ऋग्वेद मे रूम और रूम का नाम आया है। 'यद्दा रूमे रूशमें। जापानी 'अनु' के वंशज हैं, भारतीय अनु जापानी भाषा में एनू बन गया है। हम सब एक थे, हमारी संस्कृति और भाषा एक थी। युग के अनुसार भाषा मे परिवर्तनशीलता होती गई। समय की उथल-पुथल और राजनीति के कारण हम एक दूसरे से अलग होते गए। हम पड़ोसी देशवासियों का रक्त एक ही है, यदि राष्ट्र अपनी संस्कृति और भाषा को समझने लग जाए तो राष्ट्रों मे मैत्री की भावना पनपेगी। विश्व बन्धुत्व की भावना जागृत होगी। हम एक दूसरे के निकट आएंगे। पारस्परिक सहयोग के विचार उदय होंगे। विश्व का प्रत्येक देश शान्ति और सुख से जीवनयापन करेगा। भाषाएं एक-दूसरे को समीप लाती हैं और संस्कृति राष्ट्र सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाती हैं।

सिन्धु का महत्व

यदि भारत मे सिन्धु नदी न बहती तो आज विश्व मे हिन्दु हिन्दुस्तान और हिन्दी का वर्चस्व नही होता। सिन्धु सरिता के कूल पर वैदिकी ऊषोदय हुआ था। ऋचाओं के गान से दिशाएं गुंजित हुई थी।

पुण्य सलिला सिन्धु के शारदीय सौन्दर्य को निहार कर यवन (ग्रीक) फूले नही समाए थे। सिन्धु की सभ्यता से वे प्रभावित थे। कालान्तर में वे आर्य भाषा से छिटक कर सिन्धु को 'इण्डस' बोलने लगे। धीरे-धीरे इंडस शब्द केतू-मालवर्ष रम्यकवर्ष एव श्वेत द्वीप से लेकर हरिवर्ष मे प्रचलित हो गया। 'इंडस' के तटवासी होने के कारण भारतीय 'इंडियन' कहलाए और देश का नाम 'इंडिया' हो गया। वह सांस्कृतिक सवाह-प्रवाह शताब्दियो तक चलता रहा।

ऋग्वेद की ऋचाए ईरान और अफगानिस्तान (अपगणस्थान) में ध्वनित हुई थी। वैदिक सोम होता, विश्व छन्द आदि क्रमश: होम, जोता, विस्प, जन्द ईरानी हो गए। दया, होम, दयू आदि क्रमश चीनी भाषा मे तो थोग, टियनतार हो गए हैं। एम, देयो उक्ष आदि जापानी बन गए हैं। पूरे यूरोप महाद्वीप मे आर्य भाषा बोली जाती थी। ग्रीक लैटिन फ्रांसीसि, जर्मन आदि भाषाए इसी आर्य भाषा से विकसित हुई है। भाषा और संस्कृति की प्राचीनता और सम्बन्ध को सहर्ष स्वीकार करने या पारस्परिक एकता और सद्भावना बढ़ेगी।

शक-लाव जातिया जो उत्तरकुरु के पश्चिम भाग मे बसी थीं, वे भी 'इण्डस' 'इण्डियन' और 'इंडिया' ही पुकारते थी। अपगणस्थान (अफगानिस्तान) बलूचिस्तान (बल-उच्च-स्थान) असुर दे

(शेष पृष्ठ ७ पर)

विद्वानों के-सुन्दर-२उपदेश हमें सुखकारी हों

वेद सुधा

पवन के झकोरों, नदियों के कलकल, पत्तों की मर्मर, झरनों की झरझर. बिजली की कड़क. पक्षियों के कलरव में तुम्हारी वीणा की झंकार सुनाई दे रही है। प्रभात के मन्द पवन में, सुधा भरे फूलो के प्याले, काले बादलों की ओट से निकजते चांद की मुस्कान में, अन्धकार को चीर कर आते हुए सूर्य के प्रकाश में नक्षत्रों झलझलाहट में कौन अपने हृदय का प्यार बांट रहा ?।

शं नो धाता शमुधर्ता नो अस्तु शंन
उरूची भवतु स्वधाभिः।
शं रोदसी बृहती शंनो अद्रिः श नो
देवानां सुहवानि सन्तु।

(धाता नः शम्) सबको उत्पन्न करने वाला हमारे लिए सुखकारी हो (धर्ता उ नः शमस्तु) सबको धारण करने वाला हमारे लिए सुखकारी हो। (उरूची नः शंभवतु) चारों दिशाओं में जो फैला हुआ है वह हमारे लिए सुखकारी हो। (बृहती रोदसी स्वधाभि. शम्) महान् द्यु और पृथ्वी, अपने भीतर जो कुछ धारे हुए हैं, वह सब हमारे लिए सुखकारी हो, (अद्रिः न'शम्) पर्वत हमारे लिए सुखकारी हो (देवनाम् सुहव निनः शम् सन्तु) विद्वानों के सुन्दर उपदेश हमारे लिए सुखकारी हों।

इस मन्त्र में प्रभु से शान्ति की प्रार्थना की गई है और उस प्रभु के गुणों का वर्णन भी किया है। प्रभु की जिस शक्ति ने हमें उत्पन्न किया है, जिस शक्ति ने हमें धारण किया हुआ है और जो शक्ति संसार की सभी दिशाओं मे समाई हुई है, इस संसार के द्युलोक और पृथ्वी लोक में सम्भाले हुए सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र, अग्नि, वायु आदि पदार्थ और वन, पर्वत जिसकी महिमा गा रहे हैं, और इस शक्ति का बोध कराने वाले विद्वानो के सुन्दर-सुन्दर उपदेश हमारे लिए सुखकारी हो।

इस ससार को उत्पन्न करने वाला और इस सारे ससार को धारण करने वाला कौन है? वह प्रभु है? ईश्वर ने कैसे यह संसार बनाया। ब्रह्माण्ड की दो अवस्थाएं एक अव्याकृत और दूसरी व्याकृत। व्याकृत को स्थूल और अव्याकृत को सूक्ष्म कहते हैं। ब्रह्माण्ड की सूक्ष्म अवस्था से पूर्व ब्रह्माण्ड अव्याकृत अवस्था में होता है अर्थात् प्रकृति की अपनी कारणवस्था में होता है' इस अव्याकृत अवस्था का नियामक होने के कारण परमात्मा का नाम ईश्वर है। परमात्मा अपना ईशन (ईश+वर) अर्थात् नियमन का कार्य मुख्य रूप से इस अव्याकृत अवस्था द्वारा करता है। जगत् के मूल-कारण में लगी हुई परमात्मा की ईशन शक्ति ही मूलकारण की परिपत अवस्थाओं में भी ईशन का काम दे रही है। जिस प्रकार मशीन के मुख्य पुर्जे में गति के देने के समय से समग्र मशीन गति में हो जाती है इसी प्रकार मूलकारण में प्रेरणा देने वाली ईशन शक्ति ही सूक्ष्म तथा स्थूल जगत् में भी ईशन का कार्य कर रही है। इस प्रकार ईश्वर सम्पूर्ण स्थूल और सूक्ष्म जगत् का नियामक होने से इस ससार का रचयिता और नियन्त्रक दोनों है।

संध्या के अघमर्षण मन्त्रों में प्रभु के उत्पादन धारण और नियामन का बड़े सुन्दर और भावपूर्ण शब्दों में वर्णन किया गया है। 'अहोरा त्राणि विदधत् विश्वस्य-मिषतो वशी' सम्पूर्ण प्राणी जगत् को वश में करने वाले विधाता ने अहोरात्र का निर्माण किया है। सृष्टिकर्त्ता ने जड़ परमाणुओं से यह सुन्दर सार खड़ा किया है। नीचे पड़े हुओं को वह उठाता है। डूबतों को बचाता है। पतित से पतित का उद्धार करता है। उसकी एक वर्षा से सूखे और मुर्झाए हुए घास, पत्ती और पेड फिर से लहलहा उठते है। यह प्रभु ही प्रलय के बाद विशाल विश्व की रचना करता है, उसका पालन और धारण करता है। इसलिए हम प्रभु से कहते हैं. 'चाहे सम्पूर्ण ससार के रचने वाले जगत् पिता परमेश्वर तुम त्रिभुवन पावन हो। हे परम महान्! सृष्टि का पालन, धारण और प्रलय का चक्र तुम्हारे हाथों से सचालित होता है। हे विश्व के निर्माण कर्त्ता! प्रलय के विनाश के बाद। तुम ही उस विराट् विश्व की रचना करते हो? हे सर्वाधार! प्रलय के बाद बिखरे हुए परमाणुओं को एकत्र कर उनमें रग-बिरगे रग भरते हो। रात्रि के अंधकार के बाद सूर्य का प्रकाश आता है, पतझड के बाद पत्तों, पुष्पों, और कलियों का उपहार लिए बसन्त आ पहुंचता है। तुमने इस सम्पूर्ण संसार को धारण और उत्पादन ही नहीं किया है तुम इस ससार के कण-कण में विद्यमान हो। तुम्हारी यह स्थिरता हमें भी प्रदान करो। तुम्हारी सर्व व्यापकता का वर्णन करते हुए कवि कहता है—

चतुर्दिक तुम्हीं नाथ छाए हुए हो,
मधुर रूप अपना बिठाये हुये हो,
तुम्हीं हत विधाता नियन्ता जगत् के
स्वयं भी नियम सब निभाये हुये हो।
प्रभो! शक्तियां दिव्य अनुपम तुम्हारी।
तुम्ही दूर तुम पास आए हुए हो।
करे हम भजन पुण्य शुभ कर्म जितने,
सभी में प्रथम स्थान पाए हो हुए।
करें वन्दना देव! निशि दिन तुम्हारी।
तुम्हीं बस हृदय में समाये हुये हो।

सृष्टि के रचयिता प्रभो! यह सारा ससार, यह चमका सूर्य, यह सुधा बरसाता सुधाकर, यह आकाश में मोती के समान जटित तारे सब तुम्हारी महिमा का वर्णन कर रहे हैं। पदार्थ, पदार्थ में विद्यमान नहीं कि संसार का कण-कण, अणु-अणु तुम्हारा गुणगान कर रहा है'

पुष्पोद्यान में, शस्यश्रेण्य में नक्षत्र खचित नील नभोमण्डल में तुम्हारी रूपराशि लहरा रही है। फूल की पंखुड़ियों, सतरंगी इन्द्रधनुष में, तितली के रग बिरंगे पंखों में हरे पत्तों और घने काले बादलों में गुलाबी उषा और चमकती सुनहली सन्ध्या में चित्रकार के रूप में तुम्हीं तो बैठ रग भर रहे हो।

पवन के झकोरों, नदियों के कलकल, पत्तों की मर्मर, झरनों की झरझर, बिजली की कड़क, पक्षियों के कलरव में तुम्हारी वीणा की झंकार सुनाई दे रही है।

प्रभात के मन्द पवन में, सुधा भरे फूलों के प्याले में, काले बादलों की ओट से निकलते चांद की मुस्कान में, अन्धकार को चीर-कर आते हुए सूर्य के प्रकाश में नक्षत्रों की जगमगाहट में कौन अपने हृदय का प्यार बांट रहा है। कवि की गद्य में लिखि कविता कहती है—

'रोज सवेरे सैकड़ों योजन दूर से चलकर आलोक—दूत किसका सन्देश कलियों के कान में कहने पुष्पों की क्यारियों में आ पहुंचता है और वह कौन सा सन्देश है जिसे सुन कलियां मुस्कराने लगती हैं। 'वह तुम्हीं हो प्रभु! तुम्हारे सिवाय कोई नहीं। सचमुच भक्त कह उठता है:—

हे दिव्य गुण सम्पन्न! हे द्युतिमान, प्रकृति के अणु-अणु में तुम्हारी ही छवि का तुम्हारे ही सौन्दर्य का प्रतिबिम्ब भासित हो रहा है। पृथ्वी का कण-कण और जल की एक एक बूंद तुम्हारी प्रेरणा से जीवन पा रही है. सब कहीं तुम्हारी गति हैं, तुम्हारा स्पन्दन है, तुम्हारी द्युति है, तुम्हारी लीला है, तुम्हारी विभूति है।' तुम्हारी इस विभूति को समझने वाला, इसका दर्शन करने वाला, इसे पाने वाला ही ज्ञानी कहलाता है और उस ज्ञानीं का उपदेश, उसके प्रवचन, उसकी वाणी हमें जो उपदेश देगी वह हमें सुखकारी होगी ही। अतः हे प्रभु! हम जीवन में कभी निराश न हों, कभी दुःखी न हों, कभी कष्ट से घबराएं न। जब तुम्हारा सहारा है तो कौन हमें हानि पहुंचा सकता है। प्रभो! सुख दो, आनन्द दो, शान्ति दो, यही कामना है, यही याचना है, यही भावना है।

—सुरेशचन्द्र वेदालंकार
एम० ए० एल० टी०. १७५ जाफरा बाजार, गोरखपुर

सत्य घटना पर आधारित—

निराशा में आशा : एक आर्य का बढ़िया कारनामा

हरिदास की माता का देहान्त उसके अति शैशव काल मे ही हो गया था। पिता की आर्थिक स्थिति सन्तोषजनक न थी। अतः उसका पालन-पोषण पिता को भार प्रतीत होने लगा। चाहिए तो यह था कि हरिदास को दाई के सुपुर्द कर देता। परन्तु उसको लेती कौन ? प्रथम तो धन का प्रश्न दूसरे अन्त्यज जाति मे वह पैदा हुआ था। जैसे तैसे पिता हरिदास को चार वर्ष तक पाल सका। देवयोग से वह भी काल का ग्रास बन गया। हा ! दीन बालक का अब कौन सहारा ? हरिदास का पिता राम का भक्त था उसका नाम रामदास था। एक बार वह जब किसी नदी मे चमड़ा साफ कर रहा था तब प० राम दुलारे वाजपेयी का पुत्र उसी नदी मे कुछ लड़कों के साथ स्नान करते हुए नदी मे डूब रहा था। उसको रामदास ने बचाया था। अन्य साथी तो उसे डूबता देखकर चले गये थे परन्तु नदी प्रवाह मे रामदास ही कूदा था। उसी ने उसको पकड़ा था इस कार्य से प्रसन्न होकर प० रामदुलारे ने रामदास से कहा था जब तुम पर भीड़ पड़े उस समय मुझे याद करना।

ब्राह्मण ने हरिजन बच्चे के पालन-पोषण का भार लिया

मरने से कुछ पहले रामदास ने प० रामदुलारे वाजपेयी को बुलाया और कहा कि मेरा यह बेटा हरिदास आपका बच्चा है इसको अपनी शरण दीजिए। उत्तर मे प० रामदुलारे ने कहा तुम निश्चिन्त रहो मैं इसका बाल भी बांका न होने दूंगा। अन्ततः रामदास तो इस संसार को छोड़कर चला गया और हरिदास को प० रामदुलारे की बिरादरी ने उन्हें तंग करना शुरू कर दिया और कहा कि तुम इस अन्त्यज बालक को छोड़ दो। अपने यहां से निकाल दो वरना तुम्हारा हुक्का पानी बन्द कर देंगे। रिश्ता नाता छोड़ देंगे बिरादरी से तुम्हें पृथक् कर देंगे। इस भय से रामदुलारे पंडित ने उस बालक को एक चमार के सुपुर्द कर दिया—और उसका खर्च मासिक देना स्वीकार कर लिया।

परन्तु वह दुष्ट चमार उस बालक को अच्छी तरह न रखता था। खाने पीने मे तंग रखता और खेत के काम मे जुटाए रखता था। खैर लड़के के जैसे तैसे चार साल बीते वह आठ साल का हुआ। प० रामदुलारे सख्त बीमार हो गये। इस महीने खर्च उस चमार के पास न भेजा जा सका। अब क्या था ? बालक हरिदास पर विपत्ति का पहाड़ टूट पड़ा। कार्य भार का आधिक्य तो था ही। तानाशाही और मारा-मारी से तंग आकर अन्ततः हरिदास को उस चमार का घर भी छोड़ देना पड़ा। घर से बाहर निकलकर कहां पहुंचा ? उसी नदी के किनारे जहां उसके पिता ने प० रामदुलारे के लड़के को डूबने से बचाया था।

एक आर्य ने आत्म हत्या सफल न होने दी

हरिदास जैसे ही नदी तट पर पहुंचा तो एक विमान शव को लिए कुछ लोग वहां आ पहुंचे। लड़के ने आश्चर्य से देखा कि यह क्या तमाशा है। पर जब प० रामदुलारे का शव काष्ठ चिता पर रखा गया तो बालक हरिदास को याद आया कि सम्भवतः यह उसी व्यक्ति का शरीर है जिसे मेरे पिता ने मुझे सौंपा था और उसी व्यक्ति के खर्च से मैं उस चमार के घर पलता रहा। पूछने पर ज्यों ही निश्चय हुआ कि यह वही प० रामदुलारे हैं तो लड़के की आंखों से आंसुओं की झड़ी लग गई। किन्तु उसके अन्तर को कौन जाने और कौन उसे धैर्य दे। लोग प० रामदुलारे के शव को भस्म करके चले गये परन्तु वह बालक सुबकियां लेता हुआ वहीं नदी के किनारे अपने भाग्य पर रोता रहा।

हरिदास को अब अपने जीवन का कोई सहारा न दिखाई दिया और न कोई निर्वाह का ही उपाय सूझा। तब उसने आंखें बन्द करके अपने को जल प्रवाहित कर दिया। देव की गति निराली है। सायंकाल का समय था प० परमात्माशरण आर्य सन्ध्यावन्दन के लिए नदी की ओर आए और बहते बालक को देख तुरन्त (वस्त्रों सहित जल में कूद पड़े और वेग से तैरकर बालक को पकड़ ही लिया और जल से बाहर ले आए। बालक घबराया हुआ था उसे परमात्माशरण सांत्वना देने लगे। लड़के ने कहा मुझे आपने डूबने से पकड़ा अब आप मेरा क्या बनाएंगे ? प० परमात्माशरण ने पूछा—क्या तुम्हारा कोई है।' बालक ने उत्तर दिया—'मेरा संसार में कोई नहीं है। छुटपन में माता-पिता मर गए और प० रामदुलारे को सौंप गये थे परन्तु चमार का बालक होने से बिरादरी वालों ने उनके घर से मुझे निकलवा दिया। हां उन्हीं के खर्च से अब तक पेट पालता रहा। अब पं० रामदुलारे भी इस संसार से चल बसे। यह कह वह बालक रोने लगा और आगे कुछ न कह सका। प० आर्य ने बालक हरिदास को प्यार किया। धैर्य दिया और कहा तू मेरा बेटा है मैं तेरा पालन करूंगा। कुछ चिन्ता न कर। मैं आर्य समाजी हूं आर्य लोग छुआ छात और ऊंच नीच नहीं मानते। चलो मेरे साथ मैं तुम्हें अच्छी तरह रखूंगा और पालूंगा।

परमात्माशरण उस हरिदास बालक को अपने साथ ले आए उनके अभी तक कोई सन्तान न हुई थी। उनकी पत्नी का नाम प्रभादेवी था। वह भी हरिदास बालक को देखकर बड़ी प्रसन्न हुई और उसे अपने घर का दीपक समझकर अपनाया। है भी ठीक दीपक से ही तो प्रभा चमकती है। आज हरिदास का नाम हरि शर्मा हो जाता है और वह डी० ए० वी० स्कूल मे पढ़ने लगता है। जब दस साल तक पहुंचता है तब प० परमात्माशरण के एक पुत्र उत्पन्न होता है। उसका नाम देव शर्मा रखा गया। यद्यपि परमात्माशरण तथा प्रभा देवी के निज पुत्र हो गया परन्तु हरि शर्मा पर वही प्रेम की दृष्टि रही जो पहले थी। जब हरिशर्मा की आयु १६ वर्ष की हुई उस समय देव शर्मा ६ वर्ष का हो गया था। इन दोनों मे परस्पर अटूट प्रेम पैदा हो गया। आश्चर्य की बात यह है कि ६ वर्ष के बालक देव शर्मा को भी उसके माता पिता ने यह पता न दिया कि हरि शर्मा तुम्हारा भ्राता नहीं वह अन्य का बालक है। धन्य है ऐसे सहृदय व्यक्ति।

परमात्माशरण का भी साया उठ गया

हरि शर्मा दसवीं क्लास मे पढ़ता था। परीक्षा मे अभी ३ मास शेष थे। दुःख है इन्फ्लूएन्ज़ा मे परमात्माशरण व प्रभा देवी भी चल बसे। हरि और देव शर्मा दो बालक ही घर मे रह गए। देव शर्मा के मामा आए। उसे अपने साथ लिया और सम्पत्ति भी। हरि शर्मा को साथ नहीं लिया। इस कार्य से देव शर्मा के मामा ने दोनों बच्चों के हृदयों पर कुठाराघात किया। हरि शर्मा छुटपन से देव शर्मा को प्यार से खिलाता रहा अपना साथी छोटा भाई समझता रहा और देव शर्मा को अपना सगा भाई समझता था। मामा जब देव शर्मा को मोटर पर सवार करने के लिए उठाने को तैयार हुए तो भागकर वह अपने बड़े भाई हरिशर्मा को चिपट गया और मामा को कहा मैं भाई को छोड़कर नहीं जाता। भाई को भी साथ ले चलो तो चलूंगा।

हरि शर्मा ने भी छोटे प्यारे भाई को छाती से लगा लिया। परन्तु मामा ने उससे बलात् छुड़वा लिया और मोटर मे बिठा लिया प्रेम के आंसू टपकाते हुए हरि शर्मा ने दौड़कर मोटर के आगे आना चाहा परन्तु उस कठोर हृदय मामा ने उसके एक बेंत मारी और एक तरफ धक्का दे दिया मोटर दौड़ा दी गई। हरि शर्मा अत्यन्त निराश और उदास हो आंखों से आंसू टपकाता हुआ घर आया परन्तु घर मे क्या था दो चार बर्तनों स्कूल की पुस्तकों थोड़े कपड़ों के सिवा और कुछ न था। सारा दिन रो रो कर खोता रात को अकेले नींद न आई। प्रातः होते ही घर को छोड़कर जंगल की राह ली।

उधर देव शर्मा बालक मोटर मे बैठा-बैठा रोता घबराता रहा। लगातार कई घन्टे रोने से उसे रास्ते मे ही बुखार हो गया और भय्या भय्या कहकर बेहोश हो गया। दिल की चोट मार्मिक होती है। देव शर्मा न जाने कैसा बेहोश हुआ कि वह पुनः होश मे न आया। मामा की कठोरता का ही यह दुष्परिणाम हुआ।

इधर हरि शर्मा जंगल जंगल भटकता था और चाहता था कि उसे कोई जंगली पशु खा जाए। अचानक देखता है कि भयानक रीछ आ रहा है रीछ ने ज्यों ही उस पर आक्रमण करना चाहा त्यों ही एक शेर दूसरी ओर से गर्जता हुआ आया। शेर की झपट यद्यपि थी हरि शर्मा के लिए किन्तु प्रतिद्वन्द्वी रीछ को देखकर शेर हरिशर्मा को छोड़कर रीछ पर झपटा। रीछ आगे और सिंह पीछे झपटते हुए घने जंगल मे हरि शर्मा की आंखों से ओझल हो गए।

हरि शर्मा वहां से एक पहाड़ी की चोटी पर चढ़ा और उसने अपने को वहां से लुढ़का दिया। लुढ़कते लुढ़कते २ चोटें खाते खाते वह अचेत हो गया और एक सन्त की कुटी के पास आ अटका। सन्त ने देखा कोई घायल कुमार है। वह उसे उठाकर अन्दर लाए और कुछ जड़ी बूटी पिलाकर सचेत कर दिया। पुनः गर्म दूध मे हल्दी और शिलाजीत पिलाने से चोट ठीक हो गई

—

भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम में आर्यसमाज की देन

अस्तु भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम के सूत्रधार स्वामी दयानन्द एव इन के द्वारा स्थापित आर्य समाज के अनेकानेक क्रान्तिकारी एव नैतिक बल के धनी स्वतन्त्रता सग्राम मे भाग लेत आए भले ही समाज उनके बारे मे कुछ विशेष जानकारी न रख सका।

इस स्थल पर यह आवश्यक प्रतीत होता है कि आर्य समाज के उन सेनानियो और उनके विशिष्ट कार्यो की चर्चा की जाए जिन्होने भारतीय स्वतन्त्रता सग्राम को दिशा-निर्देश दिया, आन्दोलन को आगे बढाया अथवा जन सामान्य को प्रेरित किया '।

(1) स्वामी श्रद्धानन्द

आर्य समाजी होने के कारण स्वामी जी उद्देश्य एव साधन दोनो की पवित्रता मे विश्वास करते थे। फलत गांधी जी के सत्य अहिंसा और सत्याग्रह रूपी अस्त्र का स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए स्वीकार करने के बाद स्वामी जी स्वतन्त्रता सग्राम मे कूद पड। आर्यों के

किस्त—18

सर्वमान्य नेता के आगे बढने से साधारण आर्य बडी सख्या में भाग लेने लग। ३० मार्च १९१९ ई० का वह दिन सदा याद किया जाएगा जब स्वामी श्रद्धानन्द ने दिल्ली के चादनी चौक पर अपना सीना खोलकर गोरखा सेना को ललकारा था कि यदि हिम्मत है तो गोली चला दे। इस घटना न स्वामी श्रद्धानन्द की दिलेरी साहसिकता तथा आत्मबल को प्रकट किया तो दूसरी ओर तत्कालीन नेतृत्व और जनता ने इस बात को स्वीकार किया कि आर्य समाज जैसी सस्था ही ऐसे नैतिक एव त्यागी पुरुष पैदा कर सकती है।

(2) लाला लाजपत राय

लाला जी का सम्बन्ध १८ वर्ष की आयु से ही आर्य समाज से बना। इनके भीतर राजनीति प्रेम आर्य समाज से बना था। वे अपने को स्वामी दयानन्द का शिष्य होने से गौरवान्वित समझते थे। सन् १८८८ मे प्रयाग कांग्रेस पर प्रतिबन्ध लगा था। फिर भी आप निर्भीक होकर इसमें सम्मिलित हुए। बाद में १९०५ के बनारस अधिवेशन मे मे विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार के प्रस्ताव का समर्थन करते हुए अपने आजादी के अधिकार की घोषणा की। आप कांग्रेस में गरम दल कि अनुआ समझे जाने लगे। देश भक्ति के आरोप मे आपको मांडले जेल में भेजा गया। अनेक बार आप जेल गए। आपने अमेरिका मे "इंडिया होम रूल" की स्थापना की। अनेक पुस्तकें लिखीं। १९२१ ई० मे स्थापित 'लोक सेवा मडल' आर्यों द्वारा सेवा का प्रमुख केन्द्र बना। क्रांति की ज्वाला फैलाने के लिए लाला जी ने "दि पिपुल" तथा "यग इंडिया" नामक अंग्रेजी पत्र एव "वन्दे मातरम्" नामक उर्दू पत्र शुरू किया।

आपके जीवन की सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना थी साईमन कमीशन का विरोध। ३० अक्तूबर १९२८ ई० को आपके नेतृत्व में काले झंडे से कमिशन का स्वागत हुआ और आपके ऊपर लाठी का प्रहार हुआ। इसी चोट से बाद मे आपकी मृत्यु भी हुई। आपने गरज के साथ कहा था—

आज मेरे ऊपर किए गए लाठी प्रहार के लहू की एक एक बूंद ब्रिटिश साम्राज्य के कफन की कील बनेगी। लाला जी के बलिदान से क्रांति की ज्वाला भडक उठी और प्रतिहिंसा के दृश्य सामने आते गए। आर्य समाज के इस बलिदान से सोया भारत जाग उठा। इनके महाप्रयाण पर श्री रोमा ने लिखा था—

I have always thought if Dayanand Saraswati lived in our time he would have thriled with roy at Recognising in Lajpatrai the highest type of Arya Samaj the warrior the knight without fear and without reproch

(3) भाई परमानन्द

भाई परमानन्द पूर्व के आर्यसमाजी थे। आपके क्रांतिकारी भाषण से ब्रिटिश सरकार बराबर डरती रही। आप विदेशों मे अनेक वर्षों तक रह कर भारत की आजादी के लिए प्रयत्नशील रहे। आप नवयुवक क्रांतिकारियों का हौसला बराबर बुलन्द करते रहे। आपके उग्र विचारों का प्रभाव लोगो पर खूब पडता था। नया कानून बना कर आप पर मुकद्दमा चलाया गया और ११ सितम्बर १९१५ को आपके लिए फांसी की सजा सुनायी गई। ७ दिसम्बर १९१५ को फांसी की तिथि घोषित हुई। किन्तु ऐन्डयूज और मालवीय जी के प्रयत्न से इनकी फांसी की सजा आजीवन कारावास मे बदल गई।

(4) सरदार भगत सिंह

आपके चाचा अजीत सिंह भी आर्य समाजी थे अपने क्रांतिकारी विचारो के कारण जेल की यातना भुगत चुके थे। आप डी ए वी कालेज के छात्र थे। श्री सुखदेव चन्द्रशेखर आजाद, आदि आपके साथी भी आर्य समाजी थे। लाला लाजपतराय के बलिदान का बदला लेने के लिए आपने प्रतिज्ञा की और मि० सान्डर्स की हत्या कर आपने अपनी प्रतिज्ञा पूरी की। लाला जी के खून का बदला लेने के कारण भगतसिंह अमर हो गए।

(५) राम प्रसाद बिस्मिल—

आपने भाई परमानन्द के फांसी की सजा सुनकर अत्याचारी अंग्रेजों से बदला लेने की प्रतिज्ञा की। आप कट्टर आर्य समाजी थे, फांसी के तख्ते पर झूलने के पूर्व आपने कामना की थी—I wish the down fall of British Empire

इस प्रकार हम देखते है कि आर्य समाजी लोगों ने सशस्त्र एव अहिंसक दोनो प्रकार की लडाई में भाग लिया, सबके सम्मिलित प्रयत्न से देश को राजनैतिक स्वाधीनता मिली। परन्तु स्वामी दयानन्द का स्वतन्त्रता का स्थायी सपना पूरा न हुआ।

आत्मिक उन्नति अर्थात् धर्म तत्व को समझने के लिए ईश्वर विश्वास।

शारीरिक उन्नति अर्थात् कार्य की सिद्धि के लिए ब्रह्मचर्य का पालन।

सामाजिक उन्नति अर्थात् सर्व की उन्नति के लिए कृषि, गोपालन, वाणिज्य तथा लघु उद्योगों का प्रचार।

इन साधनों के द्वारा इस आर्यावर्त आज सिद्धि से परम लक्ष्य 'मोक्ष' की ओर अग्रसर हो सकते है।

ओम्प्रकाश ब्रह्मचारी

(कैथल)

इस प्रकार हम देखते है कि आर्य समाजी लोगों ने सशस्त्र एव अहिंसक दोनो प्रकार की लडाई मे भाग लिया। सबके सम्मिलित प्रयत्न से देश को राजनैतिक स्वाधीनता मिली। परन्तु स्वामी दयानन्द का स्वतन्त्रता का स्थायी सपना पूर न हुआ।

मुसलमान शासकों ने भी गोवध हत्यारे के हाथ काटने एव मृत्यु तक का विधान—

राजीव को पत्र

नई दिल्ली—वह राजनीतिज्ञ असफल रहे जिन्होंने परम्परा अनुकूलएव गोवायवत का पालन नहीं किया; आज इसे अपनाइए उक्त शब्द संसद सदस्य श्री राजीव गांधी को लिए गए पत्र मे अ० भा० गो सरक्षण परिषद् के अध्यक्ष प० पू० महामण्डलेश्वर स्वामी श्री योगेश्वर विदेही हरि जी महाराज ने लिखे। पू० स्वामी जी ने लिखा है कि सविधान के अनुसार गोवध हत्या निरोध केन्द्रीय कानून बनाने का आदेश है, फिर भी अनेक शासन प्रधान के चक्कर मे उलझे रहे। पू० स्वामी जी ने सविधान अनुच्छेद २४८ एवं राज्य एव तथा केन्द्रीय सूचियों के उदाहरण से इसे स्पष्ट कर कहा है कि यदि आप इस समस्या को सुलझा दें तो देश पर आपका बहुत बड़ा उपकार होगा। श्री हरि जी महाराजनेकहाकिइस समय के सभी संकट में केवल गोवध ही भारत का सहारा है।

शहीद अंक

देश और समाज पर अपना सर्वस्व उत्सर्ग करने वाले ऐसे बलिदानियों की सूची बहुत लम्बी है जिनकी प्रेरणा का स्रोत आर्य समाज एव महर्षि दयानन्द सरस्वती रहे। आर्य मर्यादा ने अपने २७ दिसम्बर के एक विशेष अंक में उन ज्ञात अज्ञात सभी शहीदों का पुण्य स्मरण संजोने का निर्णय लिया है। परन्तु यह कार्य आप सब के बहुमूल्य सहयोग के बिना असम्भव है, अतः इस प्रकाशन को अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिए जहां मौलिक और अधिकृत सामग्री की अपेक्षा रहेगी वहां लगभग १०० पृष्ठों वाले इस विशेषांक के लिए, विज्ञापनों की भारी आवश्यकता रहेगी। वह सब आत्मीय आग्रह, सौजन्य व्यवहार और आर्थिक सहयोग देकर संग्रहणीय बना होगा। इसके लिए अपने लेख और सुझाव के साथ-साथ विज्ञापन व आर्थिक सहयोग भी भेजने की कृपा करें। इसका मूल्य ६ रुपए होगा। —सम्पादक

हम किसी भी हिन्दू का धर्म-परिवर्तन नहीं होने देंगे—
आर्य नेताओं की चेतावनी

नई दिल्ली—गत दिवस रामलीला ग्राउंड में आयोजित हिन्दू रक्षा समिति के सम्मेलन में बोलते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान महात्मा रामगोपाल जी वानप्रस्थ ने घोषणा की कि हमें चाहे जितने बलिदान देने पड़ें हम इस्लामिस्तान, ईसाईलैंड और खालिस्तान जैसी विघटनकारी मांगों का पूरी शक्ति से सामना करेंगे। हम उन सभी षड्यंत्री विचारधाराओं के विरुद्ध हैं जो देश की एकता, अखंडता और समानता की भावना को समाप्त करना चाहती हैं।

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के अध्यक्ष महात्मा वेदभिक्षु जी ने सम्मेलन में घोषणा की कि भारत के सभी देश भक्त देशद्रोही तत्वों को समाप्त करने के लिए रचनात्मक पग उठाएंगे और हम किसी भी हिन्दू का धर्म परिवर्तन नहीं होने देंगे। आपने कहा कि अब बड़ी तेजी से ईसाई और मुसलमान हिन्दू धर्म में प्रविष्ट हो रहे हैं और वह दिन दूर नहीं जब सारा भारत हिन्दू राष्ट्र होगा।

सम्मेलन में बोलते हुए प्रो० रामसिंह ने कहा कि देश के राजनीतिज्ञों को समझ लेना चाहिए कि संकट कितना बड़ा है और देश की रक्षा के लिए उन्हें पूरी शक्ति से सक्रिय होना चाहिए।

मध्य भारत के युवा मुस्लिम नेता श्री सलीम ने अपने भाषण में कहा कि जो मुसलमान भारत को मां मानते नहीं उन्हें भारत में रहने का कोई अधिकार नहीं।

महानगर परिषद के भू० पू० सदस्य प्रशांत वेदालंकार श्री दयानन्द एडवोकेट मुरादाबाद, श्री गौरीशंकर कोठारी, श्री सूर्यदेव एम० ए०, श्री बनारसीसिंह जी पत्रकार आदि प्रसिद्ध नेताओं ने भी अपने विचार प्रकट किए। सर्वसम्मति से निम्न प्रस्ताव पारित हुए—

१. हिन्दू रक्षा सम्मेलन भारत सरकार से मांग करता है कि भारत के समस्त नागरिकों के लिए समान विधि, नियम और सामाजिक कानून बनाए जाएं, सम्मेलन की दृष्टि में राष्ट्र की एकता के लिए यह परमावश्यक है।

हिन्दू रक्षा सम्मेलन भारत सरकार से मांग करता है कि असम-त्रिपुरा-काश्मीर व देश के सभी भागों से विदेशी नागरिकों को अविलम्ब निकाला जाए, उनका भारत में रहना भारत की सुरक्षा के लिए गम्भीर संकट है।

३ यह सम्मेलन भारत सरकार से मांग करता है कि विदेशी पादरियों और अरब देशों से आने वाले मौलवियों के विदेशी धन के ऊपर कठोर प्रतिबन्ध लगाए जाएं, जिन मजहबों का सूत्रधार भारत से बाहर है उन्हें मत परिवर्तन की अनुमति नहीं दी जाए और ऐसा करना गंभीर अपराध घोषित किया जाए।

४. यह सम्मेलन देश में उभरती अलगाववादी प्रवृत्तियों और सांप्रदायिक शक्तियों को पूरे बल से कुचलने की मांग करता है। यह सम्मेलन भारत सरकार को विश्वास दिलाता है कि राष्ट्र की एकता, सुरक्षा और सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण में वह शासन का पूरा २ साथ देगा।

५. यह सम्मेलन भारत सरकार से गो-हत्या बन्द करने, उर्दू को द्वितीय राजभाषा न बनाने और मुस्लिम विश्वविद्यालयों पर रोक लगाने की मांग करता है। साथ ही यह अल्पसंख्यक-बहुसंख्यक शब्दों का प्रयोग बन्द कर सभी को समान अधिकार व कर्तव्य पालन की नीति पर चलाने की मांग करता है।

६. यह सम्मेलन मजहबके आधारपर सेवाओं में संरक्षण, समाप्त करने की मांग करते हुए आग्रह करता है कि अल्पसंख्यक आयोग समाप्त किया जाए और जो भारत में रहकर भी भारत को मातृभूमि स्वीकार नही करता उसे वोट के अधिकार से वंचित किया जाए, प्रत्येक नागरिक को वोट का अधिकार देने से पहले एक शपथ पत्र भरने का नियम बनाया जाए जिसमें वह घोषित करे कि मेरी प्रथम निष्ठा भारत राष्ट्र के प्रति है।

—

धर्म रक्षा के लिए 20 हजार रुपए भेंट

देहरादून—आर्य समाज के विशाल प्रांगण में आयोजित धर्म रक्षा सम्मेलन में भाषण करते हुए श्री सनातन धर्म सभा गीता भवन, देहरादून के प्रधान श्री सर्दारीलाल ओबराय ने कहा कि जिस संस्कृति की रक्षा के लिए हम पाकिस्तान से अपने घर-बार छोड़कर आए थे, वह संस्कृति आज पुनः खतरे में पड़ गई है। उसकी रक्षा के लिए हिन्दुओं को कटिबद्ध हो जाना चाहिए।

सम्मेलन के संयोजक और आर्य समाज देहरादून के मन्त्री श्री देवदत्त बाली ने कहा कि संस्कृति की रक्षा के लिए आर्य समाजी और अन्य सब हिन्दू एक हैं।

पंजाब के भूतपूर्व मन्त्री तथा स्वतन्त्रता सेनानी और सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद ने श्री जगजीवनराम को जनता पार्टी छोड़ते हुए उनकी वर्तमान नीतियों की कड़ी आलोचना की। आपने कहा कि बाबू जी अब हरिजनों के नेता नहीं, केवल मुस्लिम नेता रह गए हैं, जब कि पहले राष्ट्र नेता थे, आपने कहा कि अरब देशों में तथा अन्य मुस्लिम राष्ट्रों में गैर मुस्लिमों को अपने धर्म के प्रचार की स्वतन्त्रता नहीं है तब हम कैसे उन्हें यहां इस्लाम का प्रचार करने की स्वतन्त्रता दिए हुए हैं। ऐसे मामलों में दो देशों के मध्य सदा समान परस्पर प्रबन्ध हुआ करता है। भारत सरकार को इस ओर गम्भीरता से ध्यान देना होगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के संयुक्त मन्त्री श्री पं० सच्चिदानन्द शास्त्री ने हिन्दुओं को चेतावनी दी कि पाकिस्तान में अल्पसंख्यक बना दिए जाने पर तो वे हिन्दुस्तान आ गए, अब यदि यहां अल्पसंख्यक बना दिए गए तो हिन्द महासागर के सिवाय कोई शरण स्थल नहीं रहेगा।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री ओमप्रकाश पुरुषार्थी भूतपूर्व संसद सदस्य ने अपने जोरदार भाषण में बताया कि मीनाक्षीपुरम की घटना के पश्चात आर्य समाज ने धर्म रक्षा अभियान के अन्तर्गत अब तक क्या २ काम किया है, आपने कहा कि हिन्दुओं ने यदि छुआ छूत की कुप्रथा को समाप्त न किया जिसकी जाति को भारी हानि हो रही है और यदि अब भी ऊंच-नीच की भावना को तिलांजलि न दी तो बच न सकेंगे। आपने कहा कि जो लोग चार पीढ़ी पहले अहिन्दू बन गये थे वे वापस आने को आतुर हैं बशर्ते कि हिन्दू अपने दिलों के द्वार खोल दें, आपने हिन्दुओं को चेतावनी दी कि 'हजम कर लो या हजम हो जाओ'।

सभापति पद से भाषण करते हुए श्री राम गोपाल शालवाले भू० पू० संसद सदस्य तथा प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने विघटनकारी तत्वों पर कड़ा प्रहार करते हुए बताया कि पाकिस्तान पुनः भारत पर आक्रमण करने की तैयारी कर रहा है, परन्तु चेतावनी दी कि यदि उसने ऐसी भूल की तो पांच दिन के भीतर उसका अस्तित्व मिट जाएगा।

आर्य समाज देहरादून के प्रधान डा० सोमनाथ डींगरा ने इस अवसर पर जिले के हिन्दुओं से एकत्र किए गए बीस हजार रुपए की राशि का चैक धर्म रक्षा अभियान हेतु माननीय शालवाले जी को भेंट किया। आर्य समाज के मन्त्री श्री देवदत्त बाली ने नेताओं को आश्वासन दिया कि उनके नेतृत्व में देहरादून की जनता इस अभियान में निरन्तर जागरूक रहेगी।

मुस्लिम युवक का पुनरागमन

धर्म रक्षा सम्मेलन के प्रारंभ में लगभग दो घण्टे पूर्व देहरादून के एक युवक अफसार अहमद ने हिन्दू धर्म स्वीकार करने की इच्छा व्यक्त की और उसे शुद्धि संस्कार के पश्चात आर्य समाज में सम्मिलित कर लिया गया। शुद्धि संस्कार आर्य समाज के पुरोहित पं० भगवानदेव वेदालंकार ने सम्पन्न कराया।

उल्लेखनीय है कि गत सप्ताह जब आर्य समाज धर्मपुर के कार्यकर्त्ता धर्म-रक्षा अभियान के लिए घर २ जाकर चन्दा एकत्र कर रहे थे, तो उस युवक के पास भी सहसा ही गए, इस युवक ने उन से कहा कि वह हिन्दू बनना चाहता है, क्या उसे हिन्दू बनाना स्वीकार करेंगे, आर्य समाजी कार्यकर्त्ताओं ने उसके प्रस्ताव का स्वागत करते हुए उसे कहा कि जब चाहो आर्य समाज मन्दिर में आकर शुद्धि संस्कार करा लेना, तो वह रविवार सायं को आर्य समाज आया और हिन्दू बनकर अपना नया नाम अमर सिंह घोषित कर दिया।

—

प्यारे ऋषि का प्यारा ग्रंथ-सत्यार्थ प्रकाश

—यशपाल आर्य बन्धु

उन्नीसवीं शताब्दी के भारतीय धार्मिक, सांस्कृतिक एवं राजनीतिक नवजागरण के अग्रदूत, महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अनुपम ज्ञानकोष सत्यार्थ प्रकाश बड़ी धूमधाम से अपनी शताब्दी मना रहा है। यह सौभाग्य विरले लेखकों के विरले ग्रन्थों को प्राप्त हो पाता है। महर्षि दयानन्द भारत के ऋषियों में अपनी प्रकार का अनोखा एवं निराला ऋषि था। उनके ग्रन्थों में सत्यार्थ प्रकाश अपनी किस्म का अनूठा ग्रन्थ है। यह ग्रन्थ वैदिक विचारधारा का सारसर्वस्व ही नहीं विश्व भर के विभिन्न प्रमुख मतमतान्तरों के विचारों का भी नवनीत है। वस्तुतः सत्यार्थ प्रकाश संसार का दिग्दर्शन यन्त्र है। इस का महत्व इसी बात से जाना जा सकता है कि धर्म एवं दर्शन के गूढ़ रहस्यों को प्रथम बार जनसाधारण के सम्मुख उन की अपनी बोलचाल की भाषा में रखने का सफल प्रयास है। यह ग्रन्थ उस समय लिखा गया था कि जिस समय हिन्दी भाषा अपना स्वरूप ही निश्चित नहीं कर पायी थी। इतिहास इस बात का साक्षी है कि उस समय हिन्दी गद्य का स्वरूप ही अभी निश्चित नहीं हो पाया था। ऐसे समय में गुजराती भाषा-भाषी होते हुए भी महर्षि दयानन्द ने जो कि संस्कृत भाषा के उद्भट विद्वान थे, अपने इस ग्रन्थ को हिन्दी भाषा में लिखा। इससे महर्षि का हिन्दी अनुराग ही नहीं उनकी अपार सूझ-बूझ एवं दूरदर्शिता का भी पता चलता है। महर्षि भारतीय एकता के लिए हिन्दी को बहुत महत्व देते थे और इसी लिए उन्होंने अपना यह ग्रंथ हिन्दी में लिखा। महात्मा गांधी, पण्डित जवाहर लाल नेहरू, बाल गंगाधर तिलक योगी अरविन्द आदि सभी राष्ट्रनेताओं ने अपना सारा साहित्य अंग्रेजी भाषा में लिखा जबकि सदैव राष्ट्रीयता का ही दम भरते रहे। सत्यार्थ प्रकाश के साथ हिन्दी भाषा के विकास का इतिहास जुड़ा है। हिन्दी के प्रचार प्रसार में इस ग्रन्थ की अपनी विशेष भूमिका है। उत्तर भारत में तो हिन्दी भाषा के विकास में इस ग्रन्थ का अपूर्व हाथ है क्योंकि लाखों अहिन्दी भाषी लोगों ने इस ग्रन्थ के स्वाध्याय के लिए हिन्दी सीखी।

इस ग्रन्थ का महत्व इस लिए भी है कि इसी एक ग्रन्थ के स्वाध्याय कर लेने से ही संसार के प्रायः सभी प्रमुख-२ मतों एवं उनके मान्य मन्तव्यों का परिचयात्मक ज्ञान हो जाता है। इस लिए भी इसी एक ग्रन्थ के पढ़ लेने से चारों वेदों के बारे में भ्रांत धारणायें निर्मूल हो जाती हैं एवं वैदिक धर्म का भी यथेष्ट ज्ञान प्राप्त हो जाता है। इस ग्रन्थ का महत्व इस लिए भी है कि यह मानव की सर्वांगीण उन्नति का पक्षधर है। यह ग्रन्थ मनुष्य के अभ्युदय एवं निःश्रेयस की सिद्धि की योजना प्रस्तुत करता है जिस पर चल कर कोई भी मानव अपने जीवन को सफल बना सकता है। रूढ़ियों, अन्धविश्वासों, कुरीतियों, कुप्रथाओं आदि से भारतवासियों को ही नहीं विश्व मानवता को बचाने में इस पवित्र ग्रन्थ ने जो भूमिका निभायी है, वैसी किसी अन्य ग्रन्थ ने नहीं। मानव मात्र को प्रत्येक युग में नयी प्रेरणा देनी वाली यह विश्व साहित्य की अद्वितीय रचना है और सद्विचार और मानव सद्गुणों का पोषक एकमात्र ग्रन्थ है। इस के स्वाध्याय से लाखों करोड़ों ने इसे अपना मार्गदर्शक बनाया है। यदि यह ग्रन्थ न होता तो मुंशी राम श्रद्धानन्द कैसे बनते? यह ग्रन्थ न होता तो गुरुदत्त मुनिवर गुरुदत्त कैसे बनते? यह ग्रन्थ न होता तो बिस्मिल जैसा क्रांतिवीर कैसे उत्पन्न होता। यह ग्रन्थ न होता तो वीर सावरकर कहां से आते। आहा! प्यारे ऋषि का प्यारा ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश आज भी विश्व गगन का अनुपम तारा बनकर चमक रहा है। आज भी विश्व को सीधी सच्ची निष्कंटक वेदोक्त राह दिखा रहा है। आज भी यह मानवता का पथ प्रदर्शन कर रहा है। विश्व भर के मिथ्या मत मतान्तरों को ललकारने की सामर्थ्य आज भी यदि किसी में है तो ऋषि के इसी अमर ग्रन्थ में है।

अज्ञान अविद्या को चुनौती देने वाला एकमात्र यही ग्रन्थ है। और सत्य तो यह है कि इस में कपोल कल्पित मिथ्या मतमतान्तरों की जो निष्पक्ष आलोचना की गई है, उसकी ताब न लाकर ही मतवादी लोग अपने-अपने धर्मग्रन्थों के दोषों को सुधारने में लगे हैं। और आज व्याख्यायें बदली जा रही हैं, मान्यतायें बदली जा रही हैं। चारों ओर एक अपूर्व खलबली सी मची है, एक ज्वाला सी उठी है कि जो संसार भर के अज्ञान अंधकार को भस्मसात करने को कृतसंकल्प है। कैसा अपूर्व दृश्य है यह हमारी संसार भर के सत्यान्वेषियों से प्रार्थना है कि वे विश्व भर के पुस्तकालय देख जावें और फिर बतावें कि महर्षि के इस ग्रन्थ जैसा अन्य कोई समग्र क्रांति का अग्रदूत ग्रन्थ कहीं है भी? वैचारिक क्रांति का अग्रदूत सत्यार्थ प्रकाश विश्व मानवता के लिए प्रकाश स्तम्भ का कार्य करता रहेगा। इस ग्रन्थ जैसा उच्चकोटि का दार्शनिक सन्दर्भ ग्रन्थ और कोई हो तो दिखावें कि जिसमें २९० ग्रन्थों के १८८६ सदर्भ उद्धृत किये गये हों। राजनीति के मर्म को खोलकर दिखाने वाला और परतंत्रता के बेड़ियों को उखाड़ फैंकने वाला इस जैसा और ग्रन्थ कहां मिलेगा? कहां मिलेगा इस जैसा आर्ष ग्रन्थ कि इस का ऋषि यह घोषणा कर के ग्रन्थ को प्रारम्भ करता हो कि मैं इसमें सत्य और श्रुत का ही प्रतिपादन करूंगा और अपनी इस प्रतिज्ञा को निभाते हुए ग्रन्थ के अन्त में पुनः यह उद्घोष करेगी मैंने इसमें सत्य ही कहा है, ऋत ही कहा है। है कोई माई का लाल जो ऋषि की इस प्रतिमा को मिथ्या प्रमाणित कर दे? है कोई ऐसा ग्रन्थ जो इतने सारे आक्रमणों को सह कर भी बड़ी शान के साथ अपनी विजय दुंदभी बजा रहा हो? इस जैसा लोकप्रिय ग्रन्थ कोई भी कहीं देखते सुनते मिल सकता है कि जिसके अर्द्ध-मुद्रित फर्मे खरीद-खरीद कर पढ़ने को लोग उतावले हो उठे हों ऐसा है मेरे प्यारे ऋषि का प्यारा ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश। हिन्दी माध्यम के किसी अन्य ग्रन्थ का इतनी सारी भाषाओं में अनुवाद कहीं हुआ हो तो बतावें? जितना इस ग्रन्थ ने कागज खपाया है, उतना किसी अन्य ग्रन्थ ने खपाया हो तो बतावें?

पाठक गण! बिना उथल-पुथल उलट-फेर एवं रक्त-पात के सर्वतोमुखी क्रांति लाने में सफलता किस ग्रंथ को मिली थी? जन-मानस में नयी चेतना, स्वतन्त्र चिन्तन और नया दृष्टिकोण लाने में कौन सा ग्रन्थ अग्रणीय रहा? प्राचीनता और नवीनता का समन्वय करने वाला आधुनिक युग का महानतम ग्रन्थ कौन सा है? पुरुषार्थ की प्रबलता दर्शाने वाला कौन सा ग्रन्थ कौन सा ग्रन्थ है? इन सभी प्रश्नों का एकमात्र उत्तर है "प्यारे ऋषि का प्यारा ग्रन्थ-सत्यार्थ प्रकाश।" सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी के अवसर पर आइये! हम फिर इसे एक बार और पढ़ने का संकल्प लें। हमारा विश्वास है कि इस रत्नाकर में जितनी बार भी कोई डुबकी लगायेगा, उतनी बार ही वह नवीन मोती खोज लायेगा। मुनिवर गुरुदत्त ने इसे अठारह बार पढ़ा था और हर बार नवीन विचारणीय सामग्री खोज निकाली। ऋषि के इस ग्रन्थ को हमें घर-घर पहुंचाना होगा और उसके शाश्वत सत्य सिद्धान्तों को अपने जीवन में उतारना होगा तभी हम ऋषि ऋण से उऋण हो सकते हैं। और तभी हमारा सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी मनाना सार्थक हो सकेगा।

मुस्लिम बने दो युवक पुनः हिंदू

हथबाली—हरियाणा के प्रमुख आर्य समाजी नेता श्री अमरचन्द (हथीन) के अनथक प्रयासों से हिन्दू से मुसलमान बने दो नवयुवक पुनः हिन्दू बन गए हैं। एक विशेष भेंट में श्री अमरचन्द ने बताया कि कि ग्राम खाईका तहसील पलवल जिला गुड़गांव का एक नवयुवक अमरसिंह मार्च में लापता हो गया तथा वह दीपावली पर अपने ही गांव में आकर मुस्लिम परिवारों में रुका तो गांव के मुस्लिमों ने शानदार जलूस निकालकर अमरसिंह को सम्मानित किया। अमरसिंह वापिस जाते समय गांव के एक अन्य युवक रतीराम को भी साथ ले गया। इन युवकों को बहकाने का आरोप गांव के ही एक मुल्ला इल्मी कबीरा पर है, रतीराम के जाते ही विश्व हिन्दू परिषद् के कार्यकर्ता मैदान में आए तथा हिन्दुओं को लामबंद किया। उपरोक्त नवयुवकों के परिवार के सदस्य तथा विश्व हिन्दू परिषद् के कार्यकर्ता उच्चाधिकारियों से मिले।

उच्चाधिकारियों के संपर्क से हथीन के थानाध्यक्ष श्री बुद्धसिंह ने दोनों युवकों को गाजियाबाद स्थित इस्लामी स्कूल से जा पकड़ा, इन युवकों की सुन्नत करा दी गई थी श्री अमरचन्द के अनुसार उक्त दोनों नवयुवकों का आर्य समाज के ढंग से शुद्धिकरण किया गया तथा एस. डी. एम. के यहां ब्यानों के उपरान्त जयपुरी स्थित गुरुकुल आश्रम को सौंप दिया गया है।

विवाह पर दान

हिमाचल प्रदेश सन्तोखगढ़ नगर में नकड़गढ़ ग्रामवासी धर्मवीर शर्मा अपने अनुज कर्मवीर शर्मा के विवाहोत्सव पर आर्य समाज ऊना द्वारा गठित वेद शिक्षा समिति को एक हजार रुपए की धनराशि वेद शिक्षा के प्रेमियों में महर्षि दयानन्द कृत यजुर्वेद-भाष्य के वितरणार्थ प्रदान की।

हिन्दी विरोध राष्ट्र विरोध है

जब से सेंटरमास्टके सेंट. जेवियर्स स्कूलों ने अपनी शिक्षा का माध्यम अंग्रेजी के स्थान पर हिन्दी करने का निश्चय किया है, तब से एक वर्ग विशेष के लोगों ने उसको बहिष्कार करने का निर्णय कर लिया। यह वर्ग विशेष हिन्दी भाषियों का ही है, यह सबसे बड़ी विडम्बना है।

राजनैतिक कारणों से जबरन बिहार में उर्दू को द्वितीय भाषा का गौरव देने वाले मुख्यमन्त्री श्री जगन्नाथ मिश्र को भी आशा है कि अगले एक वर्ष में बिहार के सभी सरकारी कार्यालयों के साथ ही न्यायालयों, विश्वविद्यालयों एवं लोक उपक्रमों में हिन्दी में काम-काज हो सकेगा।

उत्तर प्रदेश सरकार ने एक नया निर्णय लिया है कि केन्द्र से सारा पत्र-व्यवहार केवल हिन्दी में ही होगा और सरकार इस बात पर भी विचार कर रही है कि भविष्य में प्रेस-विज्ञप्तियां केवल हिन्दी में ही जारी हों।

हम बिहार के भूतपूर्व मुख्यमन्त्री तथा लोकदल के नेता श्री कर्पूरी ठाकुर के इस अभिमत से पूर्णतया सहमत हैं कि जो सरकार हिन्दी विरोधी है, वह राष्ट्र विरोधी है।

कमर वहीद नकवी के इस कथन से भी हम पूर्णतया सहमत हैं कि जिस हिंदी ने अंग्रेज शासन के नाजुक दौर में देश को एकता के सूत्र में बांधकर स्वतन्त्रता संग्राम को दिशा दी, वह राष्ट्रीय आकांक्षाओं को व्यक्त करने में क्यों समर्थ नहीं है।

यह जानकर प्रसन्नता और सन्तोष है कि महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री मेहरा महाराष्ट्र शासन के इस निर्णय के विरोधी हैं कि अगले शैक्षणिक वर्ष से माध्यमिक स्कूलों में हिन्दी को ऐच्छिक विषय बनाया जाएगा, उनका यह कथन पूर्णतया सत्य है कि राष्ट्रीय एकता सिर्फ हिन्दी भाषा से ही स्थापित हो सकेगी।

—

असम से मीनाक्षीपुरम तक सौ दयानन्द विद्यालय खुलेंगे

देहरादून—आर्य समाज देहरादून के १०वें वार्षिकोत्सव में भाषण करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली के संयुक्त मन्त्री पं० सच्चिदानन्द शास्त्री ने कहा कि पृथकतावादी तत्व ही देश में दंगे कराते हैं, आपने प्रश्न किया कि क्या कारण है कि दंगे वहीं अधिक होते हैं, जहां एक संप्रदाय विशेष का बहुमत है और जहां वह अल्पमत में हैं वहां दंगे प्राय: नहीं होते, सम्भल, मुरादाबाद आदि इसके ज्वलन्त उदाहरण हैं :

आर्य नेता ने सरकार की इस नीति को भी तर्क विहीन एवं अन्याय पूर्ण बताया कि हिन्दू शिक्षा संस्थाओं में धर्म-शिक्षा पर रोक लगाई जाती है, परन्तु अन्य संप्रदायों की शिक्षा सस्थाओं को इसकी खुली छूट है।

सामूहिक धर्म परिवर्तन के विदेशी षड्यन्त्रों पर जोरदार प्रहार करते हुए शास्त्री जी ने इसके मुकाबले में आर्य समाज द्वारा किए जा रहे कार्य का विस्तार से वर्णन किया, आपने घोषणा की आर्य समाज ने असम से मीनाक्षीपुरम तक सौ दयानन्द विद्यालय खोलने का निश्चय किया है और और मीनाक्षीपुरम में तो विद्यालय चालू कर भी दिया गया है। आपने कहा कि भारत की एकता के मार्ग में दो प्रमुख शत्रु मुख्य हैं, दंगे भड़काना और भारत को दार-उल-इस्लाम बनाना। आपने कहा कि अल्पसख्यक आयोग का गठन करके जनता पार्टी सरकार ने देशद्रोही कार्य किया था। संसार के किसी राष्ट्र ने आज तक ऐसा घातक पग नहीं उठाया।

शास्त्री जी ने अन्त में कहा कि कोई मुसलमान या ईसाई हमारा शत्रु नहीं है। आपने कहा कि भारत के ईसाई तथा मुसलमान सब हमारे पूर्वजों की सन्तान है।

—मन्त्री

दहेज की लालसा एव अश्लीलता के विरुद्ध अभियान महिला-सम्मेलन के निश्चय

देहरादून—आर्य समाज देहरादून के १०वें वार्षिकोत्सव पर आयोजित महिला सम्मेलन में जिसकी अध्यक्षता श्रीमती वेदवती जी विद्यालकृता ने की, भाषण कर्त्री महिलाओं ने दहेज चाहने वालों की कड़ी भर्त्सना की और दहेज न लाने या कम दहेज लाने पर बहुओं को तंग करने वालों को 'कूपड़' की सज्ञा दी,

सम्मेलन की संयोजिका डा. श्रीमती ब्रह्मवती नारग, उपप्रधाना आर्य समाज ने महत्वपूर्ण प्रस्ताव प्रस्तुत किया जिस पर नवियों के जोरदार भाषण हुए। भाषाओं ने श्रोताओं की भावनाओं को उद्वेलित कर दिया।

गुरदासपुर में ऋषि दयानन्द मार्ग और दयानन्द नगर

गुरदासपुर—नगर की प्रसिद्ध सड़क 'तिब्बड़ी' रोड का नाम अब ऋषि दयानन्द मार्ग रख दिया गया है और गत १४ नवंबर को नगरपालिका की ओर से इस सबध मे एक बोर्ड भी इस सडक पर लगाया जा चुका है। इसके अतिरिक्त जिला कचहरी के मुख्य द्वार के सामने एक नवनिर्मित कालोनी का नाम भी 'दयानन्द नगर' घोषित किया गया है।

उल्लेखनीय है कि आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने १८ अगस्त १८७७ को गुरदासपुर में पधार कर कई व्याख्यान दिए थे और २७ अगस्त १८७७ को यहां आर्य समाज की स्थापना की थी, इस प्रकार के ऐतिहासिक नगर में महर्षि की स्मृति को चिरस्थाई बनाने के स्थानीय आर्यसमाजों वर्षों से प्रयत्नशील था। अतः अब नगर पालिका ने यह दो नए नामकरण कर आर्य जनता की आकांक्षाओं को पूर्ण किया है।

—

आर्य समाज नया नंगल का वार्षिकोत्सव

आर्य समाज नया नंगल का वार्षिकोत्सव ९ से १५ नवबर तक बड़ी धूम-धाम से मनाया गया, ९ से १२ नवंबर तक प्रसिद्ध विद्वान् प्रो० रत्नसिंह (गाजियाबाद) की मनोहर व प्रभावशाली वेद कथा हुई। प्रातः यज्ञ का सचालन प्रतिदिन आर्य समाज के पुरोहित जी ने किया जिसकी पूर्णाहुति रविवार १५-११-८१ को प्रात' १० बजे हुई।

१३ से १५ नवबर को उत्सव का कार्यक्रम हुआ जिसमे आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के महोपदेशक प० धर्मदेव जी आर्य. श्री प० सुभाषचन्द्रजी शास्त्री और श्री श्यामसिंह हितकर भजन मडली के उपदेश व भजन हुए। इनके अतिरिक्त एक सन्यासी व हिमाचल हुआ मन्त्री श्री कृष्णलाल जी ने भी भाग लिया।

बच्चो की भाषण प्रतियोगिता हुई और सभी बच्चों को पारितोषिक दिए गए, ऋषि लगर रविवार १५-११-८१ को दोपहर २ बजे हुआ जिसमे सैकडो लोगों ने प्रीति भोज किया। इस उत्सव में आर्य समाज नंगल: आर्य समाज ऊना और अनेकों आर्य बन्धुओं ने पहुचकर उत्सव की शोभा बढ़ाई, सभा को ५०० रुपये वेद प्रचारार्थ दिया गया।

—रत्नलाल जारी
प्रधान आर्य समाज

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

गान्धार, पार्याण आदि के निवासो ने सिंधु का उच्चारण 'हिन्द' किया। हिन्द शब्द अर्बन देश मे भी प्रचलित हुआ. जिससे हम भारतीय हिन्दू हुए और हमारी भाषा हिन्दी हुई। इस प्रकार हिन्दी, हिन्दू, हिन्दुस्तान शब्द के पीछे सिन्धु शब्द का सांस्कृतिक सबाह बना रहा। हिन्दुस्तान का तत्सम 'सिन्धुस्थान' है। इस प्रकार इस देश में रहने वाले मुसलमान, पारसी तथा ईसाई नागरिक हिन्दुस्तानी हैं। ये हिन्दू हैं। उनकी भाषा हिन्दी है। हिन्दू शब्द सम्प्रदायवाचक नहीं है, बल्कि सिन्धु शब्द का सांस्कृतिक सवाह है।

विवाद राजनीतिक है

आज कल के तथाकथित आयाराम-गयाराम, राजनीतिज्ञ हिन्दू और मुसलमान का बखेड़ा खड़ा कर जी खा रहे हैं और उनकी राजनीति सगड़ी होकर चल रही है। इन राजनीतिज्ञो ने कभी सांस्कृतिक सवाह का सहारा नहीं लिया। आज साम्प्रदायिक दगे हो रहे हैं। बहुसख्यक और अल्पसख्यक का मामला उठता है। पृथकतावादी नीतियों का ताण्डव होता है। देश के सामने विकट समस्याएं आ खड़ी होती हैं। राष्ट्रीय क्षति के लिए कौन उत्तरदायी है? भारत की अखडता को समाप्त करने के लिए प्रतिक्रियावादी शक्तियां अपना उग्र रूप दिखाया करती हैं। भारत के रहने वाले सभी नागरिक हिन्दू हैं। यहां कोई मुसलमान नहीं है और न ईसाई। वैदकाल तक सारा यूरोप और अरब आर्य थे।

मिश्र में जाकर अगस्त्य ने सांस्कृति ध्वजा लहराई थी। कालान्तर मे आर्य सस्कृति नष्ट होती गई। मिश्र में पिरामिड युग आया। वे सिन्धु को भूले नहीं थे, उन दिनो देश में इमली, नील और सूक्ष्म वस्त्रों को निर्यात भारत से ही किया जाता था, नील का नाम 'इंडिगो पड़ गया और इमली का नाम 'तमरेहिन्द' यानी अंग्रेजी मे 'टेमरिंड' हो गया अंग्रेजी में लाटन शब्द भी सिन्धु वाचक है, अरब की सुन्दरियां जिन वस्त्रो एव आयातित वस्तुओं को खरीदती थी, उन्हें प्रेमानिरेक से हिन्दुस्तानी कहती थी। वैस्ट इंडीज, रैड इंडियन, इंडोनेशिया आदि देशों में सिन्धु का सांस्कृतिक सवाह लहरों की भान्ति चल रहा है। चीन का प्राचीन धर्म सिंटो क्या सिन्धु का साम्य हो सकता है? ससार के सभी राष्ट्रों के साथ भारत का सास्कृतिक सबध रहा है

हरियाणा में शुद्धि आन्दोलन

आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रयत्नों से सैंकड़ों मुसलमान हिन्दू धर्म में वापिस, गांव-गांव में पंचायतें—रोटी-बेटी के रिश्ते ।

रोहतक— आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा द्वारा प्रदेश भर में शुरू किया [illegible] शुद्धि आन्दोलन दिन-प्रति[illegible] पकड़ता जा रहा है, करना[illegible] स्मालखा के आस-पास [illegible] जाटों ने जोकि मुगल काल [illegible] बन गए थे, सामूहिक रूप से [illegible] पुनः हिन्दू, धर्म स्वीकार कर लिया है ।

आर्य सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता में स्मालखा के आस-पास के भौरा, रसूलपुर व खोजकीपुर आदि ५-६ गांवों की गत दिवस एक पंचायत की गई । इसमें मुस्लिम मूले जाटों ने पुनः हिन्दू धर्म स्वीकार करने की अपनी हार्दिक इच्छा व्यक्त की । जिस पर हिन्दू समाज से सम्बद्ध जाट परिवारों ने उन्हें रोटी बेटी रिश्ते का विश्वास दिलाया और वर्षों से बिछुड़े अपने भाईयों को फिर से गले लगा लिया ।

इसके बाद वैदिक रीति से यज्ञों के आयोजन करके मुस्लिम बने मूले जाटों की शुद्धियां की गई और उन्हें यज्ञोपवीत [illegible]ए गए, प्रीति भोज भी आयोजित [illegible] गए ।

इसी प्रकार हरियाणा के मेवात क्षेत्र के मेव मुसलमानों को भी पुनः हिन्दू धर्म में लाने के लिए सभा ने आन्दोलन शुरू कर दिया है ।

रोहतक के निकटवर्ती गांवों में रहने वाले मुसलमानों के अनुरोध पर ही छीलर-छिकार गोत्र के ग्रामों की एक पंचायत गत १५ नवम्बर को आर्य सन्यासी स्वामी ओमानन्द जी की अध्यक्षता में बुलाई गई । जिसमें मुगल काल में बलपूर्वक अथवा लोभ लालचवश बने मुसलमानों ने पुनः हिन्दू धर्म में लौटने की इच्छा व्यक्त की । इस पर वैदिक रीति से यज्ञ आयोजित करके सैकड़ों की संख्या में मुसलमानों की शुद्धियां की गई । उनके गोत्र वाले हिन्दू जाटों ने उन्हें अपने समाज में विलीन कर रोटी-बेटी के रिश्ते का विश्वास दिलाया ।

पूर्णिमासेष्टि यज्ञ और वेद गोष्ठी

चण्डीगढ़ २१ नवम्बर ८१ को कार्तिक पूर्णिमासेष्टि यज्ञ और वेद गोष्ठी का आयोजन कर्नल हर दयाल जी भोगल के गृह निवास पर ३५ सैक्टर में किया गया, यज्ञमान ने प्रतिदिन वेद पाठ करने का व्रत लिया और परिषद् के सदस्य बने । प्रो० केदारनाथ जी चोपड़ा सैक्टर ३३ ने भी सदस्य बनकर प्रवेश किया । डा० भारतीय जी ने वेद और यज्ञ की महिमा पर बहुत उत्तम विचार प्रस्तुत किये । श्री तुलसीदेव जी का ईश्वर गायन हुआ । परिवार ने दान आदि और यज्ञ शेष से सब का सत्कार किया । परिषद् की ओर से वेद पुस्तकें भेंट की गई ।

—परशुराम आर्य

गुरुकुलकांगड़ी विश्वविद्यालयमें रूसीशिष्टमण्डल का आगमन

हरिद्वार—विश्वविख्यात गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में रूसी शिष्टमंडल श्री आर्स एस. एफिमेनियो मन्त्री उच्च शिक्षा सोवियत संघ, डिप्टी लीडर सुप्रीम सोवियत, उपनिदेशक उच्च शिक्षा, डा० गेलर के एवं नई दिल्ली स्थित रूसी दूतावास की श्रीमती [illegible] का गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में कुलपति श्री बलभद्र कुमार हूजा एवं वहां के प्रोफेसरों ने स्वागत किया, शिष्टमंडल ने गुरुकुल कांगड़ी का संग्रहालय एवं स्वामी श्रद्धानन्द प्रदर्शनी का अवलोकन किया, उन्होंने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली तथा संस्कृत के माध्यम से शिक्षा आदि के उपाध्यायों से संस्कृत माध्यम से बोलकर जानकारी प्राप्त की । उन्होंने विश्वविद्यालय को देखकर यहां की आर्य संस्कृति की भूरि-भूरि प्रशंसा की और सोवियत भारत मैत्री पर हर्ष व्यक्त किया ।



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वर्ष 14, अंक 38, 21 मग्घर सम्वत् 2038, तदनुसार 6 दिसम्बर 1981, दयानन्दाब्द 156। एक प्रति 35 पैसे (वार्षिक शुल्क 15 रुपए)

देश भर में 2540 पंजीकृत ईसाई मिशनरियां सक्रिय

छोटा नागपुर क्षेत्र में ईसाईयों की बहुसंख्या से पृथकतावादी मनोवृत्ति का प्रोत्साहन : देशद्रोही तत्वों के खिलाफ हिन्दू सम्मेलन

नई दिल्ली—भारत में २५४० पंजीकृत विदेशी ईसाई मिशनरियां कार्य कर रही हैं। गृह राज्यमन्त्री श्री योगेन्द्र मकवाना ने राज्य सभा में एक प्रश्न के लिखित उत्तर में यह जानकारी देते हुए बताया कि मिजोरम, मणिपुर, त्रिपुरा और अरुणाचल प्रदेश में भी विदेशी मिशनरी हैं।

गत दिवस आर्य समाज के उत्सव पर आयोजित (हिन्दू रक्षा सम्मेलन ने सर्वसम्मति से मांग की कि छोटा नागपुर क्षेत्र से विदेशी पादरियों को तुरन्त हटाने की व्यवस्था की जाए, अन्यथा इस पिछड़े क्षेत्र में ईसाईयों की बहुसंख्या होने पर पृथकतावादी मनोवृत्ति को प्रोत्साहन मिलेगा।

बिहार के आचार्य रामानन्द शास्त्री ने मांग का समर्थन करते हुए कहा कि भारत मे देशद्रोही तत्वो को कुचलने मे हिन्दू जनता शासन का पूरा सहयोग करेगी।

अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति के अध्यक्ष महात्मा वेद भिक्षु ने अपने अध्यक्षीय भाषण मे भारत को ईसालैंड और इस्लामिस्तान बनाने के घातक षड्यन्त्रों को विफल करने लिए सर्वत्र हिन्दुओं को संगठित होने पर बल दिया।

इस पिछड़े क्षेत्र के लिए हिन्दू नेताओ का स्वागत जनता ने अत्यन्त उत्साह के साथ किया। सर्वसम्मति से निश्चय किया गया कि ६ माह के भीतर ही छोटा नागपुर क्षेत्र मे व्यापक स्तर पर जगद्‌गुरु शंकराचार्य की अध्यक्षता मे हिन्दू रक्षा सम्मेलन किया जाएगा।

इस अवसर पर नगर में हिन्दू रक्षा सम्मेलन किया जाएगा।

इस के साथ ही नगर मे हिन्दू रक्षा समिति की स्थापना भी कर दी गयी।

—

15 हरिजनों ने इस्लाम स्वीकारा

मद्रास—भारी वाहन फैक्टरी के अनुसूचित जाति एवं जनजाति एसोसिएशन के महामन्त्री श्री एम० लक्ष्मण के नेतृत्व में १५ हरिजनों ने इस्लाम धर्म ग्रहण किया। इनके वाहन फैक्टरी व कपड़ा फैक्टरी के आठ कर्मचारी भी शामिल हैं।

इस्लाम धर्म अपनाने का आह्वान श्री लक्ष्मण ने ही कुछ दिन पूर्व दिया था।

—

शास्त्रार्थ महारथी पं. शिव-दयालु शास्त्री का देहावसान

नई दिल्ली—आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान्, शास्त्रार्थ महारथी एवं तर्क शिरोमणि, पंडित शिवदयालु जी शास्त्री का २१ नवम्बर को निधन का समाचार सुनकर सर्वत्र शोक की लहर दौड़ गई है।

श्री शास्त्री जी आर्य प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक रह चुके हैं। शास्त्रार्थ करने में अत्यन्त निपुण, श्री शास्त्री जी के देहावसान से आर्य समाज को जो क्षति हुई है उसकी शीघ्र पूर्ति असंभव दिखाई देती है

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सभी कार्यकर्त्ताओं एव कर्मचारियों ने दिवंगत के शोक सतप्त परिवार से अपनी सवेदना व्यक्त की है। सभा कार्यालय मे हुई एक बैठक में उन्हे श्रद्धाजलि व्यक्त की गई और परमात्मा से उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करने की प्रार्थना की।

आर्य जनों के लिए गौरवास्पद

सार्वजनिक जीवन और उसकी शुद्धता देश को महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की एक बहुत बड़ी देन इंगित की गई है और अब भी की जा रही है। जब महर्षि दयानन्द ने आर्य-समाज लाहौर का परम सहायक वा सरक्षक बनने से इन्कार किया था तो हमे सार्वजनिक जीवन की शुद्धता का एक अत्यन्त आवश्यक एव महत्वपूर्ण पाठ पढाया था। वह पाठ था किसी भी पद को प्राप्त करने तथा पद के प्रति न्याय करने के लिए तीन शर्तों का होना जरूरी है और वे हैं किसी भी पदके लिए स्वय उम्मीदवार न होना. निष्काम और नि:स्वार्थ सेवा की भावना, पदलोलुपता से परे रहना और सार्वजनिक फण्ड के प्रति अनासक्त रहना।

आर्य समाज और देश में ऐसे कई महानुभाव हुए हैं जिन्होंने इस परम्परा की न केवल रक्षा ही की अपितु इसे चार-चांद भी लगाए। साथ ही जिनके नाम और काम आर्य समाज व देश की गौरव गाथा है। इसी गौरव गाथा को हम तथा देशवासी सम्भाल कर रख सकें तो उनकी स्मृति के साथ ही अपनी प्रतिष्ठा भी बनाए रख सकते हैं। यह भी समाज की देश के प्रति बहुत बड़ी सेवा हो सकती है जिसकी आज के युग मे परमावश्यकता हैं।

आर्य जनो को उस उच्चकोटि के एक शिक्षा-विशारद के उद्‌गार सामने रखने चाहिए जिसने कहा था कि जब हम परमात्मा के दरबार मे अपने कर्मों का चिट्ठा पेश करेंगे तो उनमें आर्य-समाजियो का चिट्ठा सबसे बढ़िया रहेगा। कोई प्रस्तुत करेगा कि मैंने अपने हितु-बान्धवो के हितार्थ बहुत पैसा कमाया धन सम्पत्ति का अर्जन किया जो पीछे आया हू।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब द्वारा 13 दिसम्बर को प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन

(शेष पृष्ठ 3 पर)

हे देव करो उनमुक्त भय! जाते हैं करने हम प्रकाश

अभय मित्रादभयममित्रात् अभय
ज्ञातादभयं पुरो यः ।
अभयं नक्तमभयं दिवानः,
सर्वा आशा मम मित्र भवन्तु ।

(मित्रात्) मित्र से मुझे भय न हो (अमित्रात्) अमित्र से (अभय) अभय हो (ज्ञातात् अभय) जो मालूम हो गया है उससे भय होकर और (यः) जो (पुरः) आगे आने वाला है, उससे (अभयम) अभय हो। (नः नक्तम् अभय) हमें रात में भी अभय हो (दिवा अभय) दिन में भी अभय हो (सर्वा आशा,) सब दिशाएं सब दिशाओं के वासी प्राणी (मम मित्र भवन्तु) मेरे मित्र हो जाए, मेरे मित्र रूप रहें।

इस मन्त्र में भय से बचने की प्रार्थना की गई है। भय क्या है? कभी सोचा है आपने? भय का मतलब है कि आप ईश्वर पर विश्वास नहीं करते। आप नास्तिक हैं। यदि आप ईश्वर पर विश्वास करते तो सर्व शक्तिमान् प्रभु के विद्यमान रहने पर भय होता ही क्यों?

भय पैदा कैसे होता है? कहीं से किसी अनहोनी बात की सम्भावना आपके मन में आ घुसती है, धीरे-धीरे उसका साफ नक्शा आप अपने सामने देखना शुरू कर देते हैं और फिर उससे डरने लगते हैं आप में उसका प्रभाव अपने शरीर पर अनुभव होने लगता है। लगता है दिमाग खाली होता जा रहा है, पसीना छूटने लगता है, पैरों में कमजोरी आ जाती है, पेट में मीठा-मीठा दर्द होने लगता है और विचार तरतीब से नहीं जुट पाते कटे पतंग की तरह इधर-उधर उड़ते रहते हैं और डर की एक प्रतिक्रिया की समाप्ति के बाद तो और भी बुरी गति होती है। आप अपने डर के सिवाय कुछ सोच भी नहीं पाते।

एक कहानी कहीं पढ़ी थी। एक डाकू था जिस पर कई हत्याओं के अभियोग थे और वह आजीवन कारावास की सजा भुगत रहा था, एक दिन अचानक वह जेल के दरवाजे के पास बने जेल के पहरेदार के कमरे में पहुंचा और पहरेदार तथा उसके साथियों की ओर पिस्तौल तानकर बोला— हाथ ऊपर उठाओ।

उस पहरेदार और उसके साथियों ने उसे खतरनाक आदमी समझ उसके आदेश का पालन किया, उसने उनसे चाबियों का गुच्छा ले लिया तथा सरदार को छोड़कर सबको जेल की काल-कोठरी में बन्द कर आया। सरदार से उसने कहा जेल का फाटक खोलो और और मुझे सरकारी मोटर में शहर ले चलो। सरदार उसे लेकर जेल के फाटक के बाहर निकला, जहां जेलर पेड़ों के नीचे टहल रहा था। जेलर ने एक कैदी को सरदार के साथ सरकारी गाड़ी में जाते देखा तो उसे कोई सन्देह नहीं हुआ। उस समय डाकू ने पिस्तौल कपड़ों के नीचे छिपा रखा था पर वह तनी सरदार की ओर थी।

कुछ मील जाकर डाकू ने सरदार को मोटर के नीचे उतार दिया। स्वयं मोटर चलाने लगा। उसने मोटर के चलते ही हंसकर सरदार को नमस्ते की और अपनी पिस्तौल उसके सामने फैंक दी। सरदार जब होश में आया तो उसने देखा कि वह पिस्तौल तो लकड़ी की थी। यह डाकू ने जेल में बना ली थी। इस नकल ने असल का काम किया।

इसी प्रकार भय लकड़ी की नकली पिस्तौल है। हमारा भय और निराशाएं लकड़ी की पिस्तौल की छलना है और हम इन छलनाओं की वास्तविकता को पहचानते नहीं हैं। इससे भय में इतनी शक्ति आ जाती है कि हमें वे कि कर्त्तव्य विमूढ बना देते हैं।

इसीलिए मन्त्र कहता है मुझे मित्र से भय न हो, मुझे अमित्र से भय न हो। मुझे मेरे सामने रहने वाले से भय न हो और परोक्ष में रहने वाले से भी मैं न डरूं। मुझे रात में डर न हो और मुझे दिन में भी डर न हो और मुझे दिन में भी डर न हो। संसार के सभी पदार्थ और प्राणी मेरे मित्र हों।

वेद सुधा

उस लड़की को—जिसकी आयु केवल पांच वर्ष की थी—रात में वह स्वप्न देखती है और इतनी डर जाती है कि उसका प्रभाव उसके अगले दिन के कार्यक्रम पर पड़ता है और कमजोर होती चली जाती है।

एक मनोविज्ञान की पत्रिका में एक लड़की की कहानी पढ़ी थी। इस लड़की की—जिसकी आयु केवल ५ वर्ष की थी—रात में वह स्वप्न देखती है और इतनी डर जाती है कि उसका प्रभाव उसके अगले दिन के कार्यक्रम पर पड़ता है और कमजोर होती चली जाती है।

एक बार उसके माता पिता उसे लेकर डाक्टर के यहां गए और डाक्टर ने सपने की बात सुनकर कहा 'अरे, मेरे सपने में भी तो यही शेर आता है। पहले मैं भी उसे देखकर डर जाया करता था पर मुझे पता चला कि वह बहुत भला शेर है। वह लोगों से खेलना पसन्द करता है। [वह तुमसे खेलने के लिए ही तो तुम्हारे सपनों में आता है। उससे दोस्ती करो तो वह तुम से प्रेम करने लगेगा—खेलने लगेगा।

उस दिन रात को सपने के बाद थोड़ी देर लिए तन-सी गई और ज़ोर-ज़ोर से सांस लेने लगी। परन्तु हमेशा की तरह वह चौंकी नहीं और उसके ओठों पर मुस्कराहट दौड़ने लगी। बच्ची के हृदय का शेर का भय निकल गया और शेर से उसकी दोस्ती हो गई। सत्य तो यह है कि समस्याएं हमें भय से कंपाती रहती हैं परन्तु वे सपने के शेर से भी अधिक निरापद हैं, जब हम उन्हें उस दृष्टि से देखने लगेंगे और उनसे मैत्री स्थापित करना शुरू कर देंगे तो हमारी समस्याओं की हमें नुकसान पहुंचाने की शक्ति चली जाएगी और उन से हमें लाभ भी होने लगेगा।

इसलिए भय पर विजय प्राप्त करने का सरल उपाय यह है कि आप मित्रता क्षेत्र बढ़ाइए और अपने भय से भी मैत्री कीजिए। उसके विषय में लोगों से बात कीजिए और जब वह सामने आए तो उसका स्वागत कीजिए और कहिए 'न तो तुम मेरे प्राण ही ले सकते हो, न मैं तुम्हारी वजह से पागल ही हुआ जा रहा हूं। तुम केवल एक मानसिक विकार हो जो परमेश्वर में अविश्वास के कारण मुझ में आ गया है। चले जाओ। बाहर मत रहो। अब मैंने परमेश्वर को आपने हृदय में रख लिया है और उसके प्रकाश और दीप्ति के सामने तुम्हारा निर्मल रूप मुझे स्पष्ट दीखने लगा है। मैं तुम से करूंगा नहीं। मैं तो अपने अन्तर्यामी से कहूंगा, हे अन्तर्यामिन् मुझ में ऐसा ज्ञान प्रदीप्त करो कि मेरे सब भय हट जाएं। ऐसा बल दो कि अन्धकार हो या प्रकाश विपत् हो या सपत्, अनुकूलताएं हों या प्रतिकूलताएं इन सब दशाओं में मैं निर्भय रह सकूं। संसार में मुझे किसी भी दिशा में और दशा में गम न हो।

अब अधिक न हो प्राणी निराश
हो जाए सबका क्लेश नाश,
हे देव! करो उन्मुक्त भय,
जाते हैं करते हम प्रकाश।

—सुरेशचन्द्र वेदालंकार
एम० ए० एल० टी०, १७५ जाफरा बाजार, गोरखपुर

जीवन की सर्वोच्च साधना

नदी की एक सूखी तलहटी थी। कंकड़-पत्थरों में हीरा माणिक खोजने वाला खोजी थकान से श्रान्त-क्लान्त हो गया था। वह अत्यन्त परेशान होकर अपने साथियों से बोला—'मैं अपनी इस खोज से पूरी तरह निराश हो गया हूं। कई दिनों की निरन्तर मेहनत से मैंने निन्यानवें हजार नौ सौ निन्यानवें पत्थर बटोर लिए होंगे, परन्तु मुझे ढेर में हीरे-माणिक का एक कण भी नहीं मिला।'

उसके एक साथी ने हंसकर कहा—'भाई, एक पत्थर बटोर लो। अपने पत्थरों की गिनती पूरी एक लाख करो। शायद उसी में तुम्हारा अरमान पूरा हो जाए।

निराश साथी ने एक पत्थर और उठा लिया। वह दूसरे पत्थरों से अधिक भारी था। उस चमकीले पत्थर को देखकर वह चिल्लाने लगा—दोस्तो, यह वाकई में हीरा है। असल में हमें हीरों की खान मिल गई है।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जीवन-यज्ञ में अनवरत प्रयास की निरन्तर आहुति देने में ही जीवन की सरलता अनुभव करते थे। उन्होंने लिखा था—संसार में एक ही वस्तु को मैं परम पावन मानता हूं, वह है अपनी प्रगति के लिए मनुष्य का अनवरत प्रयास। मानव मात्र के प्रति निश्छल प्रेम भाव रखते हुए और ईर्ष्या-द्वेष आदि भावनाओं की कलुषित कामनाओं से दूर रहकर निष्काम भाव से श्रमरत रहने की भावना ही जीवन की सर्वोच्च साधना है। —नरेन्द्र

ओ३म्

आर्य मर्यादा

सम्पादकीय–

पंजाब में आर्यसमाज के दो रूप

मैं समय समय पर पंजाब की आर्य जनता को इस प्रदेश में आर्य समाज की वास्तविक स्थिति के विषय में जानकारी देता रहता हूं। यह मैं इसलिए करता हू कि आर्य समाजों के अधिकारी व सदस्य महानुभावों जागरूक रहें और आर्यसमाज के लिए उनका जो कर्त्तव्य है, उसे पूरा करते रहें। मेरी यह निश्चित धारणा पहले भी थी और अब तो और भी अधिक प्रबल हो गई है कि पंजाब के हिन्दुओं का कल्याण आर्य समाज द्वारा ही हो सकता है। पंजाब में कोई दूसरी ऐसी सस्था नही जो हिन्दुओं के हितों की रक्षा कर सके और यदि उसकी आवश्यकता हो तो उसके लिए सघर्ष कर सके। आर्यसमाज यह सब कुछ कर सकता है। परन्तु हमें यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि उसे जो कुछ करना चाहिए वह नही कर रहा। उसका सबसे बड़ा कारण यह है कि आर्य समाजो मे कुछ शिथिलता आ रही है। उसके पुराने अधिकारी अब बूढे होते जा रहे हैं, उनमे न तो वह शक्ति है न सतर्कता जो पहले हुआ करती थी। परन्तु वह अपने-अपने स्थान छोड़ने को तैयार नही हैं। यदि हैं तो उनकी जगह लेने वाला कोई नहीं मिल रहा। इसलिए पंजाब मे आर्यसमाज की स्थिति इतनी सन्तोषजनक नही जैसी कि होनी चाहिए। इसलिए आर्य मर्यादा के माध्यम से पंजाब की आर्य समाजों के अधिकारियो के समक्ष अपने यह विचार रखना चाहता हू और उनसे मेरा यह निवेदन है कि वह इस पर गम्भीरता पूर्वक सोचें।

पिछले कुछ समय से हम देख रहे हैं कि आर्यसमाजों के वार्षिकोत्सव अब उतने नही हो रहे, जितने पहले हुआ करते थे। मैं यह मानने को तैयार हू कि अब हमारे पास उस स्तर के उपदेशक और भजनीक नही हैं जो पहले थे। परन्तु जो हैं वैसे भी आर्यसमाज की बहुत सेवा कर सकते हैं। यह उसी स्थिति मे सम्भव है यदि सब आर्य समाजें अपने-अपने वार्षिक उत्सव समय पर करती रहें। वर्तमान कमी को पूरा करने के लिए हमने यह निर्णय लिया है कि जो आर्यसमाजें अपने उत्सव फरवरी मार्च और अप्रैल मे करना चाहें, अभी से सभा के कार्यालय को सूचित कर दें। जहां सम्भव हो सके, अभी से तिथियां भी लिख दें जिन तिथियों में वे अपना उत्सव करना चाहते हैं यदि हमे अभी से पता चल जाए कि फरवरी-मार्च और अप्रैल में कौन-कौन सी आर्य समाजें उत्सव कराना चाहती हैं तो हम उनके लिए सभा के वर्तमान उपदेशकों व भजनीकों के अतिरिक्त कुछ उच्चकोटि के भजनीकों व उपदेशको का प्रबन्ध करने का प्रयत्न करें। परन्तु यह उसी स्थिति मे हो सकता है यदि सभा कार्यालय को कम से कम तीन मास पहले यह पता हो कि किस समाज ने फरवरी मार्च या अप्रैल में अपना उत्सव करना है। जो उपदेशक महानुभाव दूसरे प्रान्तो से बुलाये जाते हैं, उन्हें भी तो पहले निमन्त्रण देना पड़ेगा। इसलिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि आर्यसमाजें अभी से यह फैसला करें कि उन्होंने उत्सव कब करना है। प्रायः देखा गया है कि सभा के कार्यालय से पूछे बिना ही आर्य समाजें अपनी तिथियां निश्चित कर लेती हैं। इसका यह परिणाम होता है कि कई बार सभा का कोई भी उत्सव समाज के उत्सव पर नहीं पहुच सकता। क्योंकि उस समय सब उपदेशक दूसरी आर्य समाजों के उत्सव में गए होते हैं। इसलिए फरवरी-मार्च व अप्रैल में होने वाले उत्सवों की स्वीकृति सभा कार्यालय से पहले ले लेनी चाहिए। उस अवस्था में कार्यालय के लिए प्रबन्ध करना सुगम हो जाएगा।

पंजाब में कई ऐसी आर्य समाजें हैं, जिन्होंने ५-१० वर्षों में कोई उत्सव नही किया। इस का यह परिणाम है कि आर्य समाज का जो प्रचार चाहिए वह भी नहीं हो रहा। कई ऐसे महानुभाव भी हैं, जो केवल अधिकारी बनना चाहते हैं। अधिकारी बनने के पश्चात उन का जो उत्तरदायित्व है, उसकी उन्हें कोई चिन्ता नही होती। जहां-२ आर्यसमाज के साथ कोई शिक्षा सस्था भी चल रही है, वहां के अधिकारियों को अपनी शिक्षा सस्था में अधिक रुचि रहती है, लेकिन आर्य समाज में वह रुचि नहीं होती जो होनी चाहिए। हमारी शिक्षा सस्थाएं प्रचार का एक माध्यम होना चाहिए। जो बच्चे इन शिक्षा सस्थाओं में पढते हैं, आर्यसमाज के सिद्धान्तों और उसके इतिहास की उन्हे पूरी जानकारी होनी चाहिए। लेकिन कुछ महानुभाव ऐसे भी हैं, जो केवल अधिकारी बनना चाहते हैं। उसके बाद उनका जो कर्त्तव्य है, उसे वह पूरा नही करते और कई ऐसे अधिकारी भी हैं जो अपनी आर्यसमाज पर अपना ही अधिकार समझते हैं, वे किसी दूसरे को पास नही आने देते। इसका यह परिणाम भी हो रहा कि आर्यसमाज का क्षेत्र विस्तृत होने होने की बजाय सीमित होता जा रहा है। इसमें सन्देह नही कि कई स्थानों पर कुछ नई आर्यसमाजें भी खुली हैं। परन्तु जो पुरानी आर्यसमाजें हैं उनमे वह सक्रियता और सतर्कता दिखाई नही देती जो हम पहले देखते थे।

मैं पंजाब की आर्य जनता का ध्यान एक और बात की तरफ भी दिलाना चाहता हू वह है सभा की आर्थिक स्थिति-चूंकि आर्य समाजो के उत्सव नही होते, इसलिए सभा की जो आर्थिक सहायता उन्हें करनी चाहिए वह नही होती। हमने पिछले दिनो यह निर्णय लिया था कि इस वर्ष वेद प्रचार के लिए कम से कम एक लाख रुपया अवश्य इकट्ठा करना है। यह हमरा सकल्प उसी स्थिति मे पूरा हो सकता है यदि आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब के अधीन जितनी भी आर्यसमाजें हैं, वे सक्रिय हो जाएं और उनके अधिकारी अपने उत्तरदायित्व को समझते हुए अपने उत्सव भी करें प्रचार भी करें और धन भी एकत्रित करें और उसमे से सभा का जो भाग है, वह उसे दें। यदि उत्सव ही न होगे तो धन कैसे एकत्रित होगा और सभा को कैसे मिलेगा ? धन न होगा तो वेदप्रचार कैसे होगा ? इस सारी स्थिति को सामने रखते हुए प्रत्येक आर्य समाज को अपना एक ऐसा कार्यक्रम बनाना चाहिए कि वह अपने-अपने क्षेत्र में अधिक से अधिक प्रचार कर सके। आर्यसमाज यदि चाहे तो पंजाब का रूप बदल सकती है। परन्तु वह उसी अवस्था मे हो सकता है यदि वह अपना रूप बदलें। इस समय उस का रूप ऐसा नही जिस पर हम कुछ गर्व कर सकें। धीरे-धीरे हमारे अन्दर कई प्रकार की त्रुटियां पैदा हो रही हैं। उन्हे दूर करने की आवश्यकता है। जो कुछ मैंने ऊपर लिखा है उसे फिर दोहराता हू कि पंजाब की पंजाब की हिन्दू जनता का कल्याण आर्यसमाज के द्वारा ही हो सकता है। इसलिए आर्य-समाज को सुसगठित और शक्तिशाली सस्था बनाने की आवश्यकता है। यह उसी स्थिति मे हो सकता है यदि आर्यसमाजों के अधिकारी अपने उत्तरदायित्व को समझते हुए अपनी-अपनी आर्यसमाज को सक्रिय करें। प्रत्येक आर्यसमाज का वार्षिकोत्सव होना चाहिए। उसी स्थिति मे आर्यसमाज के सदस्य यह अनुभव करेंगे कि उनकी आर्यसमाज भी जीवित है। आशा है मेरी इस प्रार्थना पर आर्यसमाजो के अधिकारी गम्भीरता पूर्वक विचार करेंगे और मैंने जो सुझाव उनके सामने रखें हैं, उन्हें क्रियान्वित करने का प्रयत्न करेंगे।

—वीरेन्द्र

आर्य प्रांतीय महासम्मेलन 13 दिसम्बर के लिए पंजाब के हिन्दुओं में भारी उत्साह

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

जालन्धर (कार्यालय प्रतिनिधि) सभा की ओर से आगामी १३ दिसम्बर को यहां आयोजित किए जा रहे प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन के लिए व्यापक स्तर पर तैयारियां चल रही हैं। प्रदेश भर की विभिन्न आर्य समाजों और अन्य हिन्दू धर्मावलम्बी मत-मतान्तरों के प्रतिनिधियों की भारी संख्या में इस सम्मेलन में पहुंचने की संभावना है।

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र एवं श्री रामचन्द्र जावेद ने एक भेंट में उक्त जानकारी देते हुए बताया कि पंजाब की वर्तमान समस्याओं के सन्दर्भ में यह सम्मेलन समाधान की नई दिशा देगा। इस सम्मेलन मे सभी हिन्दू मतावलम्बियों को एक मच पर एकत्रित कर उन्हें संगठन भावना के प्रति जागृत किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि इस सम्मेलन की अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा के प्रधान श्री रामगोपाल वानप्रस्थ करेंगे। इसके अतिरिक्त सार्वदेशिक सभा के मंत्री श्री ओ३म प्रकाश पुरुषार्थी, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के उपप्रधान श्री पृथ्वी सिंह आजाद, आंध्रप्रदेश के आर्य नेता श्री रामचन्द्र राव 'वन्देमातरम्' हिन्दू महासभा के नेता प्रो रामसिंह, महन्त राम प्रकाश दास, बिहार के भूतपूर्व मुस्लिम इमाम मौलाना खुर्शीद आलम तथा अब श्री जयप्रकाश आर्य (शुद्धि उपरात) हरियाणा के आर्य नेता श्री राम मिहिर एडवोकेट, श्री सच्चिदानन्दशास्त्री आदि हिन्दू नेता भाग लेंगे। सम्मेलन में पंजाब प्रदेश कांग्रेस (इ) के अध्यक्षा कु. सरला पराशर के शामिल होने की भी सम्भावना है।

आर्य नेताओ ने बताया कि यह सम्मेलन जालन्धर मे १३ दिसम्बर को प्रात. ११ बजे प्रारभ होगा। जिसमें हजारो की तादाद में लोगों के पहुचने की आशा है।

भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम में आर्यसमाज की देन

सृष्टि के आरम्भ से लेकर महाभारत तक आर्यों का सार्वभौम चक्रवर्ती साम्राज्य रहा, परन्तु आर्यों के आलस्य, प्रमाद और आपस की फूट के रूप मे महाभारत के युद्ध के साथ उस स्वर्णिम अध्याय की समाप्ति हुई और तत्पश्चात् वैदेशिक दासता का युग आरम्भ हुआ, जिसमें विदेशियों की संगति ने आर्यों के जीवन को वैदिक मान्य मान्यताओं से सर्वथा शून्य कर दिया था- इस प्रकार दीन-हीन हुई आर्य जाति किसी प्रखर सुधारक की प्रतीक्षा में ही थी कि ऐसे काल में गुजरात के टंकारा नगर मे १८२४ ई० मे ऋषि दयानन्द सरस्वती का प्रादुर्भाव हुआ। वे शैशव से ही सर्वविध रूढ़िवाद के घोर विरोधी थे। इसी चिन्तन प्रणाली और कार्यपद्धति ने उन्हे बालक मूलशकर से उठाकर देशोद्धारक ऋषि दयानन्द सरस्वती के रूप मे विश्व के मंच पर ला बिठाया, जिसका प्रमाण उन्होंने अपने जीवन में भारत का सर्वविध काया-कल्प करके प्रस्तुत किया है, जब वे घर से निकले तब भारत में राजनीतिक जागरण के बीज पनपन मे प्रयत्नशील हो रहे थे। उनके दीक्षा गुरु स्वा० पूर्णानन्द जी तथा

किस्त—19

विद्या गुरु स्वा० विरजानन्द जी राजनीतिक जागरण के कार्यों में संलग्न थे।

1857 और दयानन्द

विरजानन्द जी ने तो तत्कालीन देशभक्त नेताओं में गुरु का पद भी प्राप्त कर लिया था। १८५७ की क्रान्ति के हेतु आयोजित गुप्त सभाओं में वे मार्गदर्शन करते थे। जीवनचरित से ज्ञात होता है कि तीव्र विद्या पिपासु दयानन्द को विरजानन्द का पता १८१५ में लगता है, लेकिन वे उनके पास १८५६ में पहुचते हैं, यह विलम्ब क्यों ? ऋषि स्वलिखित चरित्र भी इन तीन वर्षों पर मौन है, चरित्र के अनुसार इस काल में उनके भ्रमण का क्षेत्र कानपुर के आस-पास रहा है, जहा पर उक्त क्रान्ति की गुप्त तैयारिया की जा रही थी। वैसे भी दयानन्द की आयु उस समय ३६ वर्ष के लगभग थी। यह अवस्था स्वाभाविक ही उग्रता को पसन्द किया करती है, वैसे भी ऐतिहासिकों के मतानुसार उक्त क्रान्ति के आयोजन का सन्देश फैलाने में सभी मत के साधुओं का सक्रिय योगदान रहा है। नवीन खोजों के अनुसार तो नाना जी, लक्ष्मीबाई आदि क्रान्तिकारियों से ऋषि दयानन्द का न केवल सामान्य प्रत्युत मुख्य परामर्शदाता के रूप में गहरा सम्पर्क रहा हैं, इतिहास के प्रगतिशील सत्य गवेषक तो मुक्त कण्ठ से स्वीकारने लग गये हैं कि ऋषि दयानन्द नानाजी के गुरु थे, उक्त क्रान्ति की विफलता के बाद नाना जी को ऋषि ने संन्यास देकर दिव्यानन्द नाम से गुप्त रहकर आगामी अनुकूल काल की प्रतीक्षा करने को कहा था, अन्यथा नानाजी आत्म हत्या कर लेते। इसी हेतु ऋषि ने नानाजी को सुरक्षित रखने के लिए मोरवी के सामन्त के नाम पत्र देकर भेजा था। मोरवी में विद्यमान नानाजी की समाधि इस बात का प्रमाण है। इस प्रकार इन प्रमाणों से ऋषि दयानन्द का १८५७ की क्रान्ति मे सम्बन्ध पाठक स्वयंमेव अनुमान कर सकते हैं, क्योंकि ये प्रमाण इतने हीन या दुर्बल नही कि इनकी उपेक्षा की जा सके वैसे भी सत्य की खोज पर किसी एक का आधिपत्य नही है, सत्य के द्वार सदा सब के लिए खुले हैं, अत: इस सम्बन्ध में अभी तक ऐतिहासिकों के बहुमत को ही अन्तिम नहीं कहा जा सकता हैं, इस प्रकार उक्त क्रान्ति के विफल हो जाने पर महर्षि दयानन्द ने लेखनी द्वारा जनजागृति का उपक्रम किया।

साहित्य द्वारा जागृति

१८५७ वाले सत्यार्थ प्रकाश के प्रथम संस्करण में उन्होंने नमक तथा जंगली लकड़ी पर लगे प्रतिबन्ध की कठोर शब्दों में भर्त्सना की थी, जबकि कांग्रेस के द्वारा १९११ के आन्दोलन का मुख्य मुद्दा बनाकर अंग्रेजी सरकार से संघर्ष किया गया। १८८२ में ही महर्षि ने अंग्रेजी अदालतों पर अविश्वास प्रकट कर दिया था, जबकि कांग्रेस के सामने यह तथ्य १९१९ मे तिलक द्वारा मि० शिरोल पर चलाए गए मानहानि के अभियोग के निर्णय से आया था, विदेशी राजा की अपेक्षा स्वदेशी राजा की उत्तमता ब्राह्मसमाजियों की देशभक्ति की समालोचना, अंग्रेजों द्वारा भारत में बने जूते को भी अदालत में न घुसने देने की पीड़ा, गोरक्षा के प्रश्न पर तत्कालीन सरकार की आलोचना, जबकि इसी प्रश्न पर १८५७ की क्रान्ति हुई और इसी आधार पर १८७१ में नामधारियों के गुरु रामसिंह को जलावतन किया गया था, गोरक्षा और सरकार विद्रोह पर्यायवाची बन गए थे, ऐसे समय में गोहत्या की सारी जिम्मेदारी सरकार पर डालना, स्तुति प्रार्थनोपासना की पुस्तक आर्याभिविनय में विदेशी राज से छुटकारे की प्रार्थनाएं करना, आर्यों के प्राचीन गौरव का विस्तार वर्णन, ये सभी लेख महर्षि दयानन्द की उत्कट देशभक्ति के एवं राजनीतिक पुनर्जागरण के महत्वपूर्ण दस्तावेज हैं. जिन्होने आने वाले समय में भारत को वैचारिक क्रान्ति में अनुपम योगदान देकर आगामी स्वतन्त्रता संग्राम लड़ने के लिए सशक्त तथा समुद्यत किया था, इसे कोई नकार नहीं कर सकता है। इसी प्रकार कांग्रेस के काल में देशभक्तों की पहचान खादी का वेश रहा था, परन्तु महर्षि दयानन्द के जो वस्त्र अजमेर में रखे है वे सभी विशुद्ध देसी खादी के ही हैं, जबकि कांग्रेस के मंच पर खादी का सबसे प्रथम क्रियात्मक प्रयोग १९२१ के अहमदाबाद अधिवेशन के समय दृष्टिगोचर हुआ था। कलकत्ता में तत्कालीन वायसराय नार्थब्रुक से महर्षि दयानन्द की भेंट होने वायसराय द्वारा महर्षि से अपने भाषणों के आरम्भ में परमेश्वर से अंग्रेज राज्य की भारत में स्थिरता के हेतु प्रार्थना का संकेत देने पर महर्षि का न केवल दृढ़तापूर्वक इन्कार प्रत्युत उक्त साम्राज्य के जल्दी ही दूर होने की अपनी हार्दिक भाव की व्यंजना भी ऋषि दयानन्द सरस्वती की ज्वलन्त राष्ट्रभक्ति का वज्र प्रमाण है। अपने जीवनकाल में ऋषि का सभी आर्यसमाज सैनिक छावनियों वाले नगरों में ही स्थापित करना कोई अचानक संयोग मात्र नहीं है अपने जीवन के अन्तिम काल में राजस्थान के राजाओं से निकट संपर्क करना वहां के स्वाधीनता प्रेमी रक्त में अंग्रेजी निजात हासिल करने के गुप्त अभिप्राय का सूचक है, जिसका प्रभाव आगामी पृष्ठों से निश्चित हो सकेगा, चूंकि इससे साधुओं की विद्रोही भावना को देखते हुए विदेशी सरकार इस प्रकार राष्ट्रभक्त साधु को कैसे सहन कर सकती थी ?

मृत्यु का रहस्य

अत: तत्कालीन सरकार ने रियासत के राजाओं विशेषकर महर्षि प्रभावाधीन राजाओं को एक परिपत्र प्रेषित किया जिसका मुख्य ध्येय महर्षि के प्रभाव से उनका मुक्त करना प्रतीत होता है, जिसमें कुछ प्रश्नों के उत्तर मांगे थे, जोकि रियासत के अधिकार से सम्बन्धित

श्री सत्यप्रिय जी शास्त्री

थे, महर्षि ने जोधपुर की विवशता को देखते हुये उसका उचित उत्तर लिखवा दिया, सरकार के ग्रसर वाला का चित्र मांगने पर राजा ने सरलता से महर्षि का चित्र भेज दिया, कहते है कि इस पर राजस्थान के पोलिटिकल एजेंट पर दबाव पड़ा कि तुम्हारे राज्य में ऐसा खतरनाक व्यक्ति घूम रहा है और तुम उसका कोई इलाज नहीं सोचते इससे पूर्व वायसराय लन्दन को अपनी राय भेज चुका था, जिसमें महर्षि को एक विद्रोही फकीर कहा गया था। इसके साथ ही डा० अली मर्दानखां के उपचार काल में महर्षि की अवस्था सुधरने की अपेक्षा निरन्तर बिगड़ते ही जाना, सिद्ध करता है कि अंग्रेज और मुस्लिम शक्तियों के सम्मिलित षड्यन्त्र का शिकार महर्षि हुए हैं। भारत के स्वाधीनता संग्राम में दोनों शक्तियों का गठ-जोड़ देशभक्त शक्तियों की समाप्ति हेतु पदे पदे दृष्टिगोचर होता है, अन्त में तो देश विभाजन के रूप में उस का बीभत्स रूप सामने आता है, जिस राजा के महर्षि अतिथि थे, वह भी मौन रूप से इस संपूर्ण कांड को विवश हुआ देखता रहा, क्योंकि उसे पता था कि यदि तूने सत्यता प्रकट करने का दुस्साहस किया तो अंग्रेज सरकार किसी न किसी बहाने गद्दी से उतार कर स्वात्मा कर देगी। (क्रमश:)

महर्षि दयानन्द के जो वस्त्र अजमेर में रखे हैं वे सभी विशुद्ध देशी खादी के ही हैं। जबकि कांग्रेस के मंच पर खादी का सबसे प्रथम क्रियात्मक प्रयोग 1921 के अहमदाबाद अधिवेशन के समय दृष्टिगोचर हुआ था। कलकत्ता में तत्कालीन वायसराय नार्थब्रुक से महर्षि दयानन्द की भेंट होने, वायसराय द्वारा महर्षि से अपने भाषणों के आरम्भ में परमेश्वर से अंग्रेज राज्य की भारत में स्थिरता के हेतु प्रार्थना का संकेत देने पर महर्षि का न केवल दृढ़तापूर्वक इन्कार करना प्रत्युत उक्त साम्राज्य को जल्दी ही दूर होने की अपनी हार्दिक भाव की व्यंजना भी ऋषि दयानन्द सरस्वती की ज्वलन्त राष्ट्रभक्ति का वज्र प्रमाण है।

"दिल्ली में आर्य युवकों का विशाल संगम"

नई दिल्ली। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में आर्य समाज अनारकली मन्दिर मार्ग नई दिल्ली के वार्षिकोत्सव पर १५ नवम्बर १९८१ को एक विशाल आर्य युवक सम्मेलन परिषद् के महामन्त्री श्री अनिल कुमार आर्य के संचालन व संयोजन में सम्पन्न हुआ सम्मेलन की अध्यक्षता ब्रह्मचारी राजसिंह आर्य परिषद अध्यक्ष ने की।

सम्मेलन के उद्घाटन भाषण में आर्य जगत के प्रसिद्ध संन्यासी स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती महाराज ने कहाकि वर्तमान समय में आर्यसमाज ही युवकों का सही मार्ग दर्शन कर सकता है. उन्होंने बुजुर्गों से युवकों को जिम्मेदारी सौंपने का आह्वान किया। सार्वदेशिक आर्यवीर दल के प्रधान सचालक श्री बालदिवाकर हंस ने युवकों के नव निर्माण में माता-पिता व आचार्य का महत्व बताया। सार्वदेशिक आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष श्री जगबीर सिंह एडवोकेट ने समाज में व्यापत भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष के लिए युवकों को प्रेरित किया। आर्य युवक समाज अबोहर के प्रधान श्री अशोक आर्य ने युवकों को उत्साहित होकर कार्य करने की प्रेरणा दी। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के संरक्षक आचार्य देवव्रत जी ने ध्वजारोहण किया व ध्वज के महत्व पर प्रकाश डाला, उन्होंने युवक शब्द की व्याख्या करते हुए युवकों को रचनात्मक कार्य करने का आह्वान किया हरियाणा के आर्य युवक नेता श्री वीरेन्द्र रिसर्चस्कालर ने परिषद् के द्वारा अकरा-बाय से शास्त्रार्थ की प्रशसा करते हुए, परिषद् से ऐसे ही रचनात्मक कार्यों को करने की अपील की। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के सरक्षक वैदिक प्रवक्ता आर्य नरेश ने खालिस्तान की घातक मांग के विरुद्ध युवकों को जनजागरण का आह्वान किया। परिषद् के महामन्त्री श्री अनिल कुमार आर्य ने युवकों को 'वह पथ क्या पथिक कुशलता क्या नाविक की धैर्य परीक्षा क्या जब धारा ही प्रतिकूल न हो" पंक्तियों दुहराते हुए कठिनाईयों का सामना करने की प्रेरणा दी। प्रि. मोहनलाल, श्री ओम प्रकाश आदि वक्ताओ ने भी सम्बोधित किया।

प्रो. सारस्वत मोहन मनीषी, प. इस राष्ट्रीय सम्मेलन में दिल्ली के अतिरिक्त सैंकड़ों की सख्या में पंजाब, हरियाणा, राजस्थान, बंगाल, बिहार, उत्तरप्रदेश, व जम्मू राज्यों से भी युवको ने भाग लिया।

१. केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के अध्यक्ष ब्रह्मचारी राज सिंह आर्य ने।

२. बिना जातिगत भेदभाव विवाह व दहेज न लेन व देने तथा जातिसूचक शब्दों को न लगानं।

३. राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार हेतु दैनिक जीवन में प्रयोग व

"खालिस्तान" की देश की अखण्डता विरोधी मांग के विरोध व जनजागरण सम्बन्धी तीन प्रस्ताव रखे, जो सर्वसम्मति से स्वीकृत हुए।

इस सम्मेलन से प्रभावित होकर आर्य प्रादेशिक सभा के महामन्त्री श्री रामनाथ सहगल की अपील पर तुरन्त ७१२ रु का मच पर ढेर लग गया। इसके अतिरिक्त सार्वदेशिक व प्रादेशिक सभा के उपप्रधान श्री मुल्कराज भल्ला ने १०१ रु. के. आर्य, यु. परिषद् परिषद् फरीदाबाद मण्डल ने २०१ रु. पंजाब केसरी शाखा गुरु तेग बहादुर नगर ने १०१ रु. दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल ने १०१ रु. आदि ने दान की घोषणा की। परिषद् के महामत्री श्री अनिल कुमार आर्य ने आर्य समाज मन्दिर मार्ग व दूर-दूर से आये युवकों का आभार व्यक्त किया व दानियों का धन्यवाद किया।

सम्मेलन से पूर्व आर्यसमाज मंदिर मार्ग की ओर से ऋषि लगर का सुन्दर प्रबन्ध किया गया, जिसकी सुव्यवस्था परिषद् के नौजवानों ने श्री अजय सहगल के नेतृत्व में की। पंजाब केसरी शाखा को एक कप पुरस्कार में दिया गया व श्री निन्यप्रिय आर्य सोनीपत व श्री पवन आर्य फरीदाबाद को आचार्य देवव्रत जी ने सीटी व डोरी देकर सम्मानित किया श्री रामनाथ सहगल जी ने सबका धन्यवाद किया व युवको को सहयोग देने की अपील की।

—

हरिजनों को जब यह पता चला कि आर्य समाज वाल्मीकि जी को महर्षि मानता है तो वह खुशी से झूम उठे : खूब दान दिया।

फतेह आबाद गत रविवार को अमृतसर से २५ मील दूर इस गाव की हरिजन बस्ती में बड़ा मनोहर दृश्य था, उस दिन इस गांव की आर्य समाज ने सप्ताहिक सत्संग का आयोजन इसी बस्ती में किया था हरिजनों ने न केवल उत्साह से इस उत्सव में भाग लिया किंतु लोक कल्याण के जो कार्य यहां की आर्य समाज ने शुरू कर रखे हैं उनके लिए बढ़-चढ़ कर दान भी दिया। अमृतसर से आर्य समाज बाजार श्रद्धानन्द के प्रधान श्री ओम् प्रकाश जी वैद्य इसी उत्सव में भाग लेने के लिए पधारे। अपने प्रवचन में जब उन्होंने यह तथ्य उजागर किए कि आर्य समाज तो मात्र बाल्मिकि रामायण को प्रमाणिक मानता है और बाल्मीकि जी को महर्षि, तो सत्संग में बैठे हरिजन भाई खुशी से चहक उठे। आर्य समाज फतेहबाद के प्रधान श्री बृज मोहन जी भगारी ने हरिजनो से आग्रह किया कि इस गांव की आर्य समाज द्वारा प्रारम्भ जन कल्याण के कार्यों को लागू करने में वे स्वयं आगे आयें, दूर से ही न निहारते रहें। अपने गरीब भाइयों की सहायता के लिए आर्य समाज को माध्यम बनायें और बच्चों के शिक्षा दिलाने में असाधारण रुचि लें दैनिक हवन करने का स्वभाव बनायें एवं महापुरुषों के जीवन चरित्र पढ़ें।

सत्संग की समाप्ति पर हरिजन बहुत प्रसन्न दिखाई दे रहे थे।

आर्य समाज फतेह आबाद के प्रधान श्री बृज मोहन भंगारी ने एक वक्तव्य मे बताया कि उनकी समाज द्वारा नेत्र चिकित्सा फ्री कैम्प, फ्री आयुर्वेदिक अस्पताल, फ्री सिलाई प्रशिक्षण केन्द्र, फ्री कोचिंग सैंटर तथा निर्धन छात्र-छात्रों को निशुल्क पुस्तकें, कापियां व वस्त्र प्रदान करने आदि के लोककल्याण कार्यक्रम चलाए जा रहे है। उन्होने इन कार्यों के लिए जनता से दवाईयां, सिलाई मशीने, पुस्तकें, व नकद धनराशि की अपील भी की।

—

आ. स. साबुन बाजार लुधियाना का वार्षिकोत्व

.. हम सब भारतीय भारत सरकार से अनुरोध करते हैं कि जो राष्ट्र विरोधी कार्यवाहियों में संलग्न हैं और राष्ट्र के टुकड़े-टुकड़े के लिए जो मांग कर रहे उनके नाक में लगाम डालनी चाहिए, ताकि राष्ट्र द्रोही शक्तियों पर काबू पाया जा सके। ऐसी मांगों को शक्ति से निपटे।

आज कल पंजाब में जो अराजकता का दौर चल रहा है, जैसे लाला जगत-नारायण की हत्या, पंजाब सरकार के सचिवालय में गोली चलाना, विमान का अपहरण करना इत्यादि को शक्ति से ठीक करे और जो उनमें कार्यरत हैं उन से शक्ति से निपटे। हम सब इस प्रकार के कार्य करने वालों की निन्दा करते हैं।

सम्मेलन पुरजोर शब्दों में सरकार की निन्दा करती है, क्योंकि अभी तक किसी अभियुक्त को न पकड़ सकी सरकार की असफलता उसके कमजोर प्रशासन की ओर इंगित करता है और सरकार की कमजोरी स्पष्ट नजर आती है।

हम सरकार से पुरजोर शब्दों में माग करते हैं कि या तो सरकार दोषियों को पकड़ कर जनता को विश्वास में ले अथवा दोबारा जनता के दरबार में पेश हो।

पंजाब के सब राष्ट्र प्रेमियों की मांग है जो सम्प्रदायिक संगठन इस समय ब्यान दे रहे हैं इससे पंजाब में शान्ति भंग होने का भय है, ऐसे वक्तव्यों को देने वाले प्रत्येक राष्ट्र द्रोही को गिरफ्तार करे, आज कल साम्प्रदायिक शक्तियों द्वारा अल्पमतों को डराया जाता सामान्य बात है, इन सगठनो पर पाबन्दी लगाए।

यह सम्मेलन पंजाब प्रान्त मे स्थित आर्य समाज सनातन, धर्म, जैन सभा, बौद्ध धर्म, नामधारी, निरकारी, राधास्वामी आदि जो सगठन है, उन सबसे अपील करते हैं कि वे सब एक जुट होकर जन-साधारण के भय के वातावरण को दूर करने के लिए नेतृत्व प्रदान करे, ताकि राष्ट्र द्रोही शक्तिया जो अब उभर कर सामने आ रही हैं, उसका मुकाबला किया जा सके, उनका प्रत्येक राष्ट्र विरोधी विचार कुचला जा सके।

ज्ञान और पुरुषार्थ के अद्भुत समन्वयी

स्वामी वेदानन्द जी तीर्थ

आज से पूरे २५ वर्ष पूर्व आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब के महामन्त्री श्री स्वामी वेदानन्द तीर्थ का देहान्त सभा के दिल्ली स्थित उपकार्यालय पुरानी सब्जी मण्डी क्षेत्र की आर्य समाज गोविन्द भवन दयानन्द वाटिका में सहसा हृदयगति बन्द होने से हो गया था। स्वामी जी महाराज आर्यसमाज की एक अनन्य विभूति थे।

स्वामी वेदानन्द तीर्थ का नामकरण संस्कार के समय माता पिता ने क्या नाम रखा यह हम नहीं जानते। हां इतना जानते हैं कि गृहत्याग के पर्याप्त समय बाद जब वह काशी मे अध्ययन करते थे तो उन्हे ब्रह्मचारी "दयानन्द" के नाम से पुकारा जाता था। कुछ समय बाद जब उन्होने सन्यासाश्रम में प्रवेश किया तो उनके गुरु स्वामी अयानन्द तीर्थ ने उन्हें "दयानन्द तीर्थ" कह कर सम्बोधित किया। विद्याध्ययन के पश्चात् जब आप आर्य समाज के कार्यक्षेत्र में कार्य करने लगे तो लोगों ने कहा "आर्य समाज में दयानन्द नो एक ही होना चाहिये"। इस कारण स्वामी जी ने अपना नाम परिवर्तित कर लिया। तब से वह अपने आप को वेदानन्द दयानन्द तीर्थ लिखने लगे। उन्होंने अपने आप को "वेदानन्द तीर्थ" प्रख्यापित करना इस लिए पसन्द किया क्योंकि वह इस नाम को अपना अन्वर्थ नाम समझते थे। विद्याध्ययन में उनकी रुचि बचपन से ही थी। सच पूछो तो वेदाध्ययन रूपी आनन्द को पाने के लिए ही उन्हों गृह त्याग किया था।

स्मरण रहे कि "तीर्थ" शब्द यद्यपि संन्यासियों के एक सम्प्रदाय विशेष को चिन्हित करता है किन्तु स्वामी जी के पीछे उपाधि रूप में लगा हुआ यह परिचितजनों के लिए अन्वर्थ संज्ञा के समान ही था। आर्यसमाज के प्रवर्त्तक स्वामी दयानन्द सरस्वती ने अपने जगत प्रसिद्ध ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" के ग्यारहवें समुल्लास में ठीक ही लिखा है :—"जना : यस्तरन्ति तानि तीर्थानि" अर्थात् जिन का सहारा लेकर लोग दुःखों से तर जाते हैं उन्हें "तीर्थ" कहा जाता है। स्वामी वेदानन्द तीर्थ जी महाराज सच्चे अर्थों में एक ऐसे ही "तीर्थ" थे।

संस्कृत पठन-पाठन में निरन्तर लगे रहने के कारण आप का ज्ञान बड़ा परिपक्व हो गया था। वेदों, [redacted] उ.एयकों और उपनिषदों के आप मर्मज्ञ थे, शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द, ज्योतिष इन छओं वेदांगों में आप पारंगत थे। न्याय वैशेषिक, संख्य-योग मीमांसा और वेदांत इन छओं शास्त्रों पर आप को पूर्ण अधिकार प्राप्त था। काव्य, नाटक, छन्द अलकार आदि सब लौकिक विषय आप को उपस्थित थे। कोई भी व्यक्ति कहीं से भी कोई स्थल ले आता आप तुरन्त उसकी प्रसगोचित सगति लगा सन्तोषजनक व्याख्या कर दिया करते थे। अपने पैंसठ सत्तर वर्ष के जीवन मे आप ने पच्चास से अधिक वर्ष सरस्वती माता की आराधना में गुजारे थे। यही कारण था कि विद्यार्थियों के झुण्ड के झुण्ड सस्कृत पढ़ने के लिए आप के निवास स्थान पर एकत्रित होते थे। यदि यह कहा जाए कि "आपने आर्यसमाज को एक सौ से अधिक विद्वान, संन्यासी तथा उपदेशक और कार्यकर्ता दिए" तो कोई अत्युक्ति न होगी।

को यदि एकत्र किया जाए तो चार हजार किताबी पृष्ठों से कम न होंगी। समाचार पत्रों में आर्य सिद्धांतों की पुष्टि में लिखे गए लेखों का परिमाण भी इस से क्या कम होगा। आप की उन अनेकों रचनाओं की यहां गणना करना व्यर्थ है जो देश विभाजन के समय हुए

२7 नवम्बर को पुण्य तिथि पर विशेष

साम्प्रदायिक दंगों में नष्ट ही जाने के कारण छपाई न जा सकीं। किन्तु उन रचनाओ पर किये गये प्रयास का यदि मूल्यांकन करना ही हो तो उनका कलेवर भी तीन हजार किताबी पृष्ठों से क्या कम होगा। इतने विपुल और विशाल साहित्य-सर्जन मे सक्षम होने के लिए स्वामी जी ने वाग्देवी की एकनिष्ठ होकर कितनी लम्बी आराधना की होगी, यह विज्ञ पाठक स्वयं अनुमान लगा सकते हैं।

विद्याध्ययन के पश्चात् जब आप आर्य सजाज के कार्य क्षेत्र में कार्य करने लगे तो लोगों ने कहा "आर्य समाज में दयानन्द तो एक ही होना चाहिए"। इस कारण स्वामी जी ने अपना नाम परिवर्तित कर लिया। तब से वह अपने आप को वेदानन्द दयानन्द तीर्थ लिखने लगे। उन्होंने अपने आप को "वेदानन्द तीर्थ" प्रख्यापित करना इस लिए 7सन्द किया क्योंकि वह इस नाम को अपना अन्वर्थ नाम समझते थे।

स्वामी वेदानन्द तीर्थ जहां कहीं भी जाते वेद प्रेमी धर्म जिज्ञासु क्या आर्य समाजों और क्या गैर आर्यसमाजी, पौराणिक, जैन, मुस्लिम और ईसाई आदि भी आप से मिलने आते, मिलकर बातचीत करके अपने संशय मिटाते। इस प्रकार जहां धर्म जिज्ञासुओं की जिज्ञासा पूरी होती वहां आर्यसमाज का गौरव बढ़ता और वैदिक धर्म के प्रचार का मार्ग प्रशस्त होता। आप की विद्या, शालीनता और व्यवहार से खिचे हुए अनेकों धर्म जिज्ञासु-ब्रह्मचारी, गृहस्थी, वानप्रस्थी और संन्यासी, ईसाई पादरी, मुसलमान मौलवी, जैन आचार्य आदि-आदि आर्य समाज के उत्सवों पर आते और मन ही मन में आर्यसमाज के सिद्धांतों के कायल हो जाते। अनेकों ही गैर-आर्य समाजी ऐसे हैं जो आप के भक्त हैं और इसी नाते आर्यसमाज से स्नेह रखते हैं।

स्वामी वेदानन्द तीर्थ लेखनी के धनी थे। उन की समस्त प्रकाशित रचनाओं

स्वामी वेदानन्दतीर्थ में ज्ञान और पुरुषार्थ का अद्भुत समन्वय हुआ था। दोनों गुणों के सामञ्जस्य ने स्वामी जी महाराज के व्यक्तित्व को और भी निखार दिया था। सकट के समय कर्त्तव्य परायणता से प्रेरित हो स्वामी जी कर्मठता का सहारा लेते, जिससे आपकी प्रशासकीय क्षमता और भी ऊपर उठती और कार्य कुशलता के वे जौहर दिख जाती कि शत्रु भी स्तब्ध हो जाते। सत्यनिष्ठा आप में कूट-कूट कर भरी हुई थी। आस्तिकता और धर्म परायणता की आप मूर्ति थे। लोभ आप को छू तक नहीं गया था। आप बड़े मिलन सार, हंसमुख उदार और उत्साही थे। जो कोई भी आप के सम्पर्क में आता ऐसा अनुभव करता, जैसे स्वामी जी महाराज उसके आत्मीय ही हों।

किसी कवि ने ठीक ही लिखा है :-

हजारों साल नरगिस अपनी बे नूरी पर रोती है।
बड़ी मुश्किल से होता है चमन में दीदा-ए-वर पैदा।

"स्वामी वेदानन्दवयानन्द तीर्थ"

सत्यानन्द शास्त्री, पंजाबी बाग, नई दिल्ली

विदेहस्मृति सप्ताह

वेद-संस्थान (अजमेर-दिल्ली) के संस्थापकाध्यक्ष श्री स्वामी विद्यानन्द 'विदेह' के ८३वें जन्म दिवस के उपलक्ष में नई दिल्ली वेद संस्थान सी-२२, राजौरी गार्डन में ८ से १५ नवम्बर १९८२ तक विदेह-स्मृति सप्ताह मनाया गया। नित्य प्रातः श्री स्वामी दयानन्द 'विदेह' द्वारा योग प्रशिक्षण तथा यौगिक व्यायाम तदुपरांत महात्मा दयानन्द (तपोवन देहरादून) के ब्रह्मत्व में स्वस्ति-याग यज्ञ एवं आध्यात्मिक उपदेश हुए।

—

आर्यसमाज प्रतिनिधि मंडल देवली जाएगा

दिल्ली—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल वानप्रस्थ ने देवली में हरिजनों की निर्मम हत्या पर भारी रोष और क्षोभ प्रकट करते हुए सारी घटना की पूरी जांच और अपराधियों के विरुद्ध कठोर कार्यवाही की मांग की है।

श्री वानप्रस्थ ने एक वक्तव्य में कहा कि यह घटना किसी जाति अथवा वर्ग संघर्ष का परिणाम न होकर पुरानी शत्रुता के कारण हुई।

श्री शालवाले ने बताया कि आर्य समाज की ओर से शीघ्र ही एक प्रतिनिधि मंडल देवली भेजा जाएगा।

—

● अपने जीवन के शुद्ध स्वरूप को पहचान कर मोक्ष मार्ग पर, धर्म मार्ग पर साधना और समाधि के शिखर पर बढ़े चलो, यह वेद भगवान का और धर्म शास्त्रों का अनुपम उपदेश है।

● धर्म को मित्र बनाए बिना मानव अपने आपको और पारब्रह्म परमात्मा को प्राप्त नहीं कर पाया है।

—भारतवर्ष वह देश है जहां कभी ईश्वर के चिन्तन में पशु, पक्षी, शेर, चीते विषधर भुजंग भी मस्त पाए जाते है।

—

आर्य प्र. नि. सभा पंजाब द्वारा प्रकाशित तथा प्रसारित साहित्य की पुस्तकें

१	सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी	४—५०
२	(उर्दू)	१०—००
३	अग्रे जी	२०—००
४	आर्य समाज—अतीत की उपलब्धिया तथा भविष्य के प्रश्न —ले०—डा० भवानीलाल भारतीय	१०—००
५	पजाब का आर्य समाज ले०—प्रि० रामचन्द्र जावेद	४ ००
६	विजिम्पसज फराम सत्याथ प्रकाश (अग्रे जी) —ले० श्री० एन० वासुदेव जी	३—००
७	स्वामी श्रद्धानन्द (अग्रे जी) —ले० श्री के० एन० कपूर जी	५—००
८	स्वामी श्रद्धानन्द उपदेश माला	०—२५
९	पोलीटीकल टैस्टामैंट ग्राफ स्वामी श्रद्धानन्द	०—२५
१०	जन्म साखी (ले० ज्ञानी पिण्डीदास जी)	२—००
११	सिक्ख गुरु अते आर्य सिद्धान्त (पजाबी) — ले० स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी सरस्वती	२—५०
१२	आय समाज दा दिग्दर्शन (पजाबी) ले०—आचाय पृथ्वीसिह आजाद	३—००
१३	वेद और उनका प्रादुर्भाव —ले० महा मा नारायण स्वामी जी महाराज	५०—०० सैकडा
१४	श्रद्ध य स्वामी श्रद्धान द और उनका दिव्य स देश	०—२५
१५	भागवत खण्डनम —ले० स्वामी दयानन्द जी सरस्वती	०—५०
१६	नोहारिकावाद और उपनिषद (ले० प चमूपति)	००—२५
१७	वीतराग स्वामी स्वतन्त्रतानन्द —ले० श्री राजे द्र जी जिज्ञासु	१—००
१८	हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी —ले० ज्ञानी पिंडीदास जी	०—२५
१९	प्रिंसिपल ग्राफ आय समाज अग्रे जी —ले० श्री पूर्णचन्द जी एडवोकेट	२—००
२०	मृत्यु और परलोक —ले० महात्मा नारायण स्वामी जी	२—५०
२१	सस्कार विधि —ले० स्वामी दयान द जी सरस्वती	४—५०
२२	मेरे सपनो का भारत —ले० श्री प्रकाशवीर जी शास्त्री	२—५०
२३	आय पर्व पद्धति —ले० श्री पं० भवानी प्रसाद	५—००
२४	पूजा किस की —ले० श्री राम गोपाल शालवाले	०—२५
२५	आय समाज	० —३०
२६	सत्य की मजिल सेवा की राह —ले० शादी राम जोशी	१०—००
२७	बाल सत्यार्थ प्रकाश ले० प्रोफैसर विश्वनाथ विद्यालकार वेदोपाध्याय गुरुकुल कागडी हरिद्वार	३—००
२८	धर्मस्वातन्त्र्य विधयक क्यो ? ले० रघुनाथ प्रसाद पाठक	१—००
२९	माण्डुक्योपनिषद —ले० टीका म० नारायण स्वामी	०—३५
३०	प्रभु भक्ति स्रोत —ले० लोकनाथ जी वाचस्पति	०—४०
३१	धर्मवीर प लेखराम —ले० स्वामी स्वत त्रान द	०—४०

आर्य मर्यादा के विशेषाक

१	मेरी आत्मकथा के कुछ पृष्ठ —ले० आचाय रामदेव जी	१—००
२	स्वतन्त्रानन्द सस्मरणाक	१—५०
३	वेद में पुनरुक्ति दोष नही	२—५०
४	यजुर्वेदाध्याय का ३२वा स्वाध्याय	१—००
५	अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी	१—५०

नोट —ओ३म के झड हवन कु ड तथा ओ३म के बैज भी उपलब्ध हैं।

प्राप्तिस्थान

व्यवस्थापक—चमूपति साहित्य प्रकाशन विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब, गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर—4

देश भर में सभी समुदायों के लिए एक कानून हो

पृथकतावादी शक्तिया जघन्य अपराध करने पर उतारू हैं उन्होने हत्याओ का दौर शुरू कर रखा है आय नेताओ द्वारा विदेशी शक्तियो से सावधान रहने की चेतावनी

नई दिल्ली सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा ने चेतावनी दी है कि कुछ विदेशी तत्व धन देकर हमारे देश की एकता अखण्डता तथा सम्मान को समा त करने पर उत रू हैं अत हमे उनके षडयन्त्र के दृष्टिगत सावधान रहना है तथा देश की एकता का बनाए रखना है।

सार्वदेशिक आय प्रतिनिधि सभा ने देश भर के सभी समुदायो के लिए एक ही कानून बनाए जाने की आवश्यकता पर बल देते हुए कहा है कि सरकार के एक ओर ता धम निरपेक्षता की बात करती है तथा दूसरी ओर हि दू और मुस्लिम सम्प्रदाय के लोगो के लिए पृथक पृथक कानून बनाती है।

सभा के अध्यक्ष श्री रामगोपाल जी शालवाले तथ महाम त्री श्री ओमप्रकाश पुरुषार्थी ने जामनगर मे आयोजित किए गए सभा क स्वण जय ती अवसर पर जारी किए गए सयुक्त वक्तव्य मे कहा कि सरकार द्वारा भाषाई लोगो को अपनी मात भ षा मे शिक्षा ग्रहण करने के सबध मे दी गई सुविधाओं का हम समथन करते हैं लेकिन धार्मिक अल्पसख्यको के नाम हर सुविधाए देने से बहुसख्यक समुदाय मे प्रतिक्रिया स्वरूप साप्रदायिकता की भावना उत्प न होती है।

परिवार नियोजन का समथन करते हुए आय नेताओ ने कहा कि यह हि दू या मुसलमान पर समान रूप से लागु किया जाना चाहिए क्योकि जनगणना के अनुसार हि दुओ की सख्या घट रही हैं तथा मुस्लिम व ईसाई साम्प्रदाय के लोगो की सख्या बढ रही है।

सभा ने खालिस्तान की माग की नि दा करते हुए इस माग स सम्बद्ध सभी त वो के खिल फ सरकार द्वारा कडी कायवाही किए जाने की माग की है

सयुक्त वक्तव्य मे कहा गया है कि ये पृथकतावादी शक्तिया अब जघ य अपराध करने पर उतारू हैं तथा इ होने हत्याओ का दौर शुरू कर दिया है।

—

शोक सभा समाचार

मास्टर शामलाल जी आय उप म त्री आय समाज फ जिल्का के पूज्य पिता श्री मा० पोखरदास खिलाना के देहावसान पर हार्दिक शोक प्रकट किया और दिवगत आत्मा की सदगति के लिये प्राथना की गई। भारी जन समुदाय के के मध्य श्री स्वामी दयानन्द जी सरस्वती अलवर ने शान्ति यज्ञ सम्पन्न कराया और भाषण दिया।

वेद प्रचार—पूज्य स्वामी दयाना न द जी सरस्वती अलवर न दिनाक ६ ११ ८१ से १२ ११ १९८१ तक। प्रात एवम रात्रि समय भारी सख्या मे वेद प्रचार किया।

—मूल चन्द वर्मा

शहीद अक

देश और समाज पर अपना सवस्व उत्सग करने वाले ऐसे बलिदानियो की सूची बहुत लम्बी है जिनकी प्र रणा का स्रोत आय समाज एव महर्षि दयान द सरस्वती रहे। आय मर्यादा ने अपने २७ दिसम्बर के एक विशेष अक मे उन ज्ञात अज्ञात सभी शहीदो का पुण्य स्मरण सजोने का निणय लिया है। पर तु यह काय आप सब के बहुमूल्य योगदान के बिना असम्भव है अत इस प्रयास को अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिए जहा मौलिक और अभिनव सामग्री की अपेक्षा रहेगी वहा लगभग ६० पृष्ठो वाले इस विशेषाक के लिए विज्ञापनो की महती आवश्यकता रहेगी। यह अक अत्यधिक ज्ञानवर्धक मौलिक नव्यतर और आकर्षक साज-सज्जा वाला सग्रहणीय अक होगा। इसके लिए अपने लेख और सुझाव के साथ साथ विज्ञापन व आदेश शीघ्र ही भेजने की कृपा करें। इसका मूल्य २ रुपए होगा।

—सम्पादक

673. श्री पुस्तकाध्यक्ष जी
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (सहारनपुर)

विश्व वेद परिषद के नए अध्यक्ष

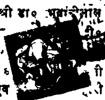
दिनांक २-१०-८१ की बैठक में श्री प० ०ी न वदश्र०ी ६द विज्ञानाचार्य (इन्दोर) को विश्व वेद परिषद का अध्यक्ष निर्वाचित किया। विश्व वेद परिषद द्वारा "वेदज्योति पत्रिका का प्रकाशन, वेद परीक्षा-सचालन तथा वेद गोष्ठियो का आयोजन किया जाता है, वेद प्रचारार्थ विद्वान उपदेशको की व्यवस्था है।

विश्व वेद परिषद द्वारा वेद संस्कृत का अध्यापन तथा पुस्तकालय तथा वाचनालय का सचालन हो रहा है। प्रत्येक पूर्णिमा को विशेष यज्ञ एव वेद सगोष्ठी का आयोजन होता है। गत आश्विन तथा कार्तिक की पौर्ण मासी

नगर आर्य समाज कैथूनीपोल, कोटा का पं म वार्षिकोत्सव

आदरणीय बन्धुओं।

इस पुनीत अवसर पर आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान श्री डा० भवानीलाल जी भारतीय एम० ... (चण्डीगढ), आचा० ... शास्त्री (बदायू), ... शास्त्री (अलीगढ) एव ... जी आर्य (बारां) पधार रहे हैं।



अत. आपसे सानुरोध प्रार्थना है कि सपरिवार, इष्ट-मित्रो सहित पधार कर धर्मोपदेश का लाभ उठावें। इस उत्सव मे दान देकर भी सहयोगी बनें।

स्थान—श्री दौलत सहाय जी भट नागर की चक्की का बाडा कैथूनीपोल, कोटा।

कार्यक्रम—दिनांक २५-१२-८१ शुक्रवार से दिनांक २७-१२-८१ रविवार तक। प्रात:—८ बजे से ११ बजे तक को वेद गोष्ठी एव विशेष यज्ञ सम्पन्न हुए गोष्ठी का विषय यज्ञ का विराट स्वरूप अथर्व वेद में गौ का वर्णन।

यज्ञ, भजन एव उपदेश। साय—७ बजे से १०-३० बजे रात्रि तक भजनोपदेश एवं निर्धारित विषयों पर व्याख्यान

दिनांक २६-१२-८१ शनिवार—दोपहर—२ बजे से ५ बजे तक महिलाओं के लिए विशेष कार्यक्रम।

दिनांक २७-१२-८१ रविवार—दोपहर—२ बजे से ५ बजे तक जात-पात तोड़क गोष्ठी।

विनीत—राम प्रसाद गुप्ता-प्रधान, राम प्रसाद वैदिक-मन्त्री।

—मन्त्री

पारिवारिक सत्संग

दिनांक १५-११-८१ रविवार को आर्य युवक सभा लुधियाना की ओर से पारिवारिक सत्संग श्री विनोद जी बांसल के निवास स्थान १०८३, शिवाला रोड लुधियाना में सायं ३ से ५ बजे तक किया गया। पंडित ओम पाल जी शास्त्री ने यज्ञ सम्पन्न कराया। युवक सभा लुधियाना की ओर से श्री राजा राम प्रधान आर्य समाज साबुन बाजार ने यजमान परिवार को वैदिक सहित्य भेंट किया।

आर्य युवकों द्वारा अपने साथी को अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि

लुधियाना—आर्य युवक सभा की ओर से युवा साथी श्री रघुवीर ... के निधन पर आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार में प्रधानमन्त्री श्री महेन्द्र प्रताप जी की अध्यक्षता में एक सभा हुई। भारी सख्या में उपस्थित आर्य युवकों ने अपने सक्रिय कार्यकर्ता को अश्रुपूर्ण श्रद्धांजलि व्यक्त की।

सर्वश्री सुधीर भाटिया, रूपलाल शर्मा, सत्य भूषण बांसिया, प. ओम पाल जी शास्त्री, प. राम देव जी आर्य, सुरेन्द्र आर्य, कृपा राम, सतपाल चन्द व श्री नवनीत आर्य ने शोक सभा को सम्बोधित करते हुए कहा की श्री रघुवीर जी के निधन से आर्य समाज एक उत्साही युवक से वंचित हो गया है।

श्री महेन्द्र जी आर्य ने कहा कि श्री रघुवीर जी आर्य समाज के अथक कार्यकर्ता थे। सभी युवकों ने बाद में मिलकर दिवंगत युवा साथी की आत्म शान्ति के लिए प्रार्थना की और उनके परिवार के दुख में समभागी अनुभव करते हुए दुख को सहन करने की प्रभु से प्रार्थना की।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्तभवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वर्ष 14, अक 39, 28 मग्घर सम्वत् 2038, तदनुसार 13 दिसम्बर 1981 दयानन्दाब्द 156। एक प्रति 35 पैसे (वार्षिक शुल्क 15 रुपए)

आर्य प्रतिनिधिसभा पजाब द्वारा 13 दिसम्बर को जालन्धर मे आयोजित हो रहे

हिन्दू सम्मेलन के लिए भारी उत्साह

जालन्धर (कार्यालय प्रनिनिधि)— पजाब की वनमान परिस्थितियो के दृष्टिगत आर्य प्रतिनिधि सभा ने १३ दिसम्बर का आमन्त्रित सम्मेनन को पजाब हिदू सम्मेलन का रूप देने की घोपणा की है। जिसमे आर्य समाज के अतिरिक्त हिन्दू धर्मावलम्बी सभी मतो एव सप्रदायो के नेता व प्रतिनिधि भारी सख्या मे व्यापक उत्साह के साथ शामिल हो रहे है। इसकी अध्यक्षता सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल जी वानप्रस्थ (शालवाले) करेंगे।

आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र तथा मन्त्री श्री रामचन्द्र जावेद ने एक सयुक्त वक्तव्य मे बताया कि प्रदेश की वतमान परिस्थितियो म इस सम्मेलन को केवल आर्य समाजियो तक ही सीमित न रखकर समूचे तौर पर हिन्दुओ के सयुक्त सम्मेलन को ही अधिक सार्थक और उचित समझा गया है।

आर्य नेताओ न बताया कि इस पजाब प्रातीय हिदू सम्मेलन, जोकि १३ दिसम्बर को देवी तालाब मदिर के सामने दोआबा कालेज मे प्रात यज्ञ के बाद ११ बजे शुरू होगा के लिए सभी तैयारिया पूण कर ली गई है इसम पजाब के सीमावर्ती प्रदेशो हिमाचल व हरियाणा से भी अनेक नेता शामिल होगे और वे पजाब के हिन्दुओ की समस्याओ के सन्दभ मे अपने विचार प्रस्तुत करगे।

आर्य नेताओ के अनुसार इस सम्मेलन मे पहुचने वाले प्रमुख हिदू नेताओ मे पण्डित मोहनलाल प्रो० राम सिह (हिन्दू महासभा) महत राम प्रकाश दास (विश्वहिन्दू परिषद) पजाब काग्रेस (इ) की अध्यक्षा कमारी सरला पराशर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा के मत्री श्री ओम प्रकाश पुरुषार्थी आर्य प्रतिनिधि सभा पजाब के उपप्रधान श्री पृथ्वी सिह आजाद आध्र प्रदेश के आर्य नेता श्री राम चन्द्र राव वन्देमातरम आदि शामिल है।

इसके अतिरिक्त इस सम्मेलन मे हाल ही मे मुस्लिम समाज मे शुद्ध होकर वैदिक धर्मी बने कुछ प्रमुख आर्य नेता मे भाग लेने के लिए पहुच रहे है जिनमे श्री जय प्रकाश आर्य (भूतपूर्व मौलाना खुर्शीद आलम बिहार) तथा डा० आनन्द सुमन के नाम उल्लेखनीय है।

इस सम्मेलन मे जालन्धर मे २० सितम्बर को कुछ उग्रवादियो द्वारा की गई फायरिंग के शिकार लोगो को भी उनकी सहायता के लिए प्राप्त की गई राशि वितरित की जाएगी जोकि दैनिक वीर प्रताप व प्रताप द्वारा उनकी सहायतार्थ सचालित शहीद परिवार फड के माध्यम से एकत्रित की गई थी।

आर्य नेताओ ने कहाकि यह सम्मेलन पजाब के हिन्दुओ को नई दिशा और नई जागृति देने वाला होगा। उन्होने आर्य समाजियो एव अन्य हिदू सगठन के समर्थको से इस सम्मेलन मे बढ चढ कर शामिल होने की अपील की।



THE ARYA MARYADA JULLUNDUR

जीवन में सच्चा आनंद चाहते तो हो, तप करो

यं तप भाति तपो अग्ने
मा तन्वं पतः।
वनेषु शुष्मो अस्तु ते
पृथिव्यामस्तु यद्धरः ॥

अथर्ववेद १८।२।३६

(अग्ने) हे विद्वान्! तू (यम्) शांति के लिए (तप) तपकर 'किसी को' (अति) अत्याचार से (मा तपः) मत तपा और 'किसी के' (तन्वम्) शरीर को 'अत्याचार से' (मा) मत सता। (वनेषु) सेवनीय व्यवहारों में (ते) तेरा (शुष्मः) बल (अस्तु) होवे और (यत्) जो (हरः) तेरा तेज है, वह (पृथिव्यां) पृथ्वी पर (अस्तु) होवे।

मुण्डकोपनिषद् में ऋषि ने वेद के इस मन्त्र का प्रतिपादन करते हुए कहा है 'सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा' सत्य से और तपस्या से आत्मा की प्राप्ति होती है। महाभारत के अनेक पर्वों में अनेक श्लोकों में तप के महत्व का प्रतिपादन किया गया है। आदि पर्व १७४।४६ में 'तप एवं परं बलम्' तप ही परम बल है—बतलाया गया है। वन पर्व में ९१।१९ में लिखा है 'तपसो हि परं बलम्' तप ही परम बल है—बतलाया गया है। वन पर्व में ९१।१९ में लिखा है 'तपसो हि परं नास्ति' तप से बढ़कर दूसरा कोई साधन नहीं है। वन पर्व में ही ९१।१९ और ११३।४८ में कहा गया है 'तपसा विन्दते महत्' तप से महान् फल की प्राप्ति होती है। वन पर्व ३००।११८ में आया है 'तपसा स्वर्गगमनम्' तप से स्वर्ग में जाने का सौभाग्य मिलता है।

परन्तु तप का क्या अर्थ है? हमारे शास्त्रों में अपने लक्ष्य को पूरा करने के लिए द्वन्द्वों को सहन करना तप बतलाया है। द्वन्द्व किसे कहते हैं? सुख और दुःख का एक जोड़ा है, समृद्धि और निर्धनता दूसरा जोड़ा है, मान और अपमान तीसरा, सर्दी और गर्मी चौथा। इस प्रकार अनेक जोड़े हैं। सुख और कष्ट, वर्षा और धूप, शक्ति—संपन्नता और विवशता, स्वतन्त्रता और परतन्त्रता, भूख और प्यास, इनमें से एक हो या दूसरा—अपने उद्देश्य या आदर्श को प्राप्त करने के लिए दोनों को सहन करना। दोनों में किसी के कारण पीछे न हटना, डगमगाना नहीं, यह तप है। गाली मिले या फूलों के हार, मान हो या अपमान, पेटभर भोजन न मिलने वाली निर्धनता हो या भोगविलास की प्रभूत सामग्री, किसी भी समय जीवन के लक्ष्य को न भुलाना तप है। इस प्रकार चिन्तामुक्त होकर भूख-प्यास, सुख दुःखादि परस्पर विरोधी द्वन्द्वों को सहने का नाम तप है।

तप के प्रसंग में एक शब्द की ओर आपका ध्यान आकर्षित कर दूं। वह शब्द है 'दीक्षा'। 'दीक्षा' शब्द का अर्थ है 'किसी कार्य में प्राणपण से सिर धड़ की बाजी लगाकर जुट जाना। जिस समय व्यक्ति में द्वन्द्व सहन का सामर्थ्य आता है और वह अपने कार्य को पूरा करने में जुट जाता है तब तप और दीक्षा से व्यक्ति और राष्ट्र में शक्ति, तेज और बल आता है। अथर्ववेद १९,४१,१ मंत्र का एक अंश है 'तपो दीक्षामुपनिषेदुरग्रे' ततो राष्ट्रं बलमोजश्च जातं, तदस्मै देवा उप-सन्नमन्तु'। अर्थात् जब मनुष्य में तप और दीक्षा का समावेश हो जाता है तब राष्ट्र और व्यक्ति तेज और शक्ति से सम्पन्न हो जाते हैं, तब बड़े-बड़े ज्ञानी ध्यानी भी उनके सामने झुकते हैं।

ऋग्वेद ९।८३।१ मन्त्र में तप की महिमा का उल्लेख करते हुए बताया गया है कि प्रभु की कृपा, प्रभु की रक्षा सर्वत्र है। बाहर के पदार्थों की क्या बात? वह तो हमारे अंग-अंग में व्याप्त है। आनन्दमय है, उसका आनन्द भी सर्वत्र है। किन्तु—अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते अर्थात् जिसने अपने शरीर को तप की अग्नि में तपाया नहीं, वह उस आनन्द को प्राप्त नहीं कर सकता। जब हम तपस्या के मार्ग पर, साधना के मार्ग पर चलना शुरू करेंगे हमें सोचना चाहिए कि हम ईश्वर से एक हो चुके हैं। अतः वह जो मुझ से कराना चाहेगा, उसे मैं करूंगा। अन्तरात्मा का आदेश मेरा कर्त्तव्य है। अतः अपनी शारीरिक, मानसिक, आत्मिक शक्तियों के विकास में किसी भी बाधा की परवाह न करूंगा। मैं सर्वशक्तिमान् ईश्वर के पुत्र की तरह जीवन व्यतीत करूंगा।

संसार की सम्पूर्ण उन्नति का कारण ईश्वरीय शक्ति है जो प्रत्येक मानव के हृदय में प्रेरणा बनकर निवास करती है। वह प्रेरणा संसार की प्रत्येक छोटी-बड़ी वस्तु को महान् गौरव के लिए तैयार करती है। वह प्रेरणा ही मनुष्य को तपने के लिए तैयार करती है। वह प्रेरणा ही मनुष्य को तप के लिए तत्पर करती है। मनुष्य जब शरीर और आत्मा को तप की भट्टी में डाल कर इसे पक्का बना लेता है तब उसके सारे दोष दूर हो जाते हैं। मनु महाराज ने कहा है—'तपसा किल्बिषं हन्ति' तप से दोषों का नाश होता है।

आजकल तप का स्वरूप विकृत हो गया है। कोई हाथ ऊपर उठाकर चलता है, कोई रात भर सर्दी में गंगा के शीतल जल में खड़ा रहता है, कोई प्रचंड गर्मी में गंगा की तपती रेत में बैठा रहता है, कोई अपने चारों ओर आग जलाकर सूर्य की चिलचिलाती धूप में बैठ जाता है। वह सब समझ रहे हैं कि हम तपस्या कर रहे हैं। इसमें शरीर को कष्ट देने के सिवाय तपस्या का कोई चिन्ह नहीं। महाभारत के शांति पर्व में कहा गया है—

चतुर्णां ज्वलतां मध्ये यो
नृपः सूर्यपंचमः।
तपस्तपति कौन्तेय न
तत्पंच तपः स्मृतम् ॥

हे कुन्तिपुत्र! जो चार अग्नियों में बैठ जाता है और सूर्य को पांचवां बना कर तप करता है, वह तप पंचाग्नि तप नहीं। वास्तविक तप का वर्णन करते करते हुए वहां कहा गया है—

—सुरेशचन्द्र वेदालंकार
एम० ए० एल० टी०, १७१ चाफरा बाजार, गोरखपुर

पञ्चानामिन्द्रियाग्नीनां विषयेन्धन
चारिणाम्।
तेषां तिष्ठति यो मध्ये तत्पंच
तपः स्मृतम् ॥

विषयरूप इन्धन में विचरने वाले इन्द्रिय रूप अग्नियों के मध्य में जो बैठता है, वही पंचाग्नि तप जानना चाहिए। विषय आग के समान है। इनमें रहता हुआ भी उससे जलता नहीं, वह तपस्वी है।

स्वामी श्रद्धानन्द जब मुन्शीराम थे, मांस खाने की उनकी आदत थी। एक दिन किसी कसाई को टोकरी में मांस ले जाते हुए उन्होंने देखा। उसमें कहीं सिर, कहीं पैर, कहीं पसलियां और कहीं खाल और कहीं खून टपक रहा था। उन्होंने उसी समय मांस न खाने का निश्चय किया और भोजन के समय जब वे अपने साथियों के साथ बैठे, और मांस की कटोरी उनके सामने आई तो उन्होंने तेजी से उसे उठाकर दीवार पर फेंक दिया। साथियों ने कारण पूछा। उन्होंने कहा आर्यत्व के लिए मांस छोड़ना अनिवार्य है। इसलिए कटोरी फेंक दी है। साथी बोले 'इतनी तेजी से कटोरी फेंकने की क्या आवश्यकता थी, [illegible]।' मुन्शीराम (स्वामी श्रद्धानन्द) बोले

(शेष पृष्ठ [illegible] पर)

वेद सुधा

महर्षि दयानन्द को जब उनके विरोधी ज्ञान तथा तर्क में न हरा सके तो उन्होंने एक चाल चली। उन्होंने एक बाजारू औरत को खूब सजा-धजा कर स्वामी जी के पास भेजने की योजना बनाई और उससे कहाकि तुम जब वहां पहुंचो तो शोर मचा दो कि यह साधु मुझसे छेड़छाड़ कर रहा है। उस के बाद हम उस पर टूट पड़ेंगे, उसकी मुरम्मत कर देंगे और उसे सर्वत्र बदनाम भी। सब समझकर जब वह महर्षि की कुटी के द्वार पर पहुंची और उसने समाधिस्थ रूप में तपस्या का तेज उनके मुख पर देखा तो वह स्तब्ध होकर वहीं खड़ी हो गई स्वामी जी का ध्यान जब समाप्त हुआ तो वह देखते हैं कि एक स्त्री खड़ी है और अपने आभूषण उतार-उतार कर फेंक रही है। स्वामी जी ने पूछा 'मां यह क्या कर रही हो?' वह फूट-फूट कर रोने लगी और उसने सम्पूर्ण वृत्तान्त एवं षड्यन्त्र स्वामी जी को बताया। मां! शब्द सुनकर उसके हृदय की दिव्य भावना उभर आई। महर्षि के चरणों में गिर पड़ी। आंसुओं से उनके पैरों को सींचती हुई बोली, "मेरी रक्षा करो महाराज, लोभ से और पाप से मेरी रक्षा करो।"

ओ३म्

आर्य मर्यादा

सम्पादकीय–

जालन्धर पहुंचो

जैसा कि पहले घोषणा हो चुकी है, रविवार १३ दिसम्बर को जालन्धर में विशाल हिन्दू सम्मेलन हो रहा है। आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब की कार्यकारिणी ने एक प्रान्तीय सम्मेलन करने का फैसला किया था। परन्तु पंजाब की वर्तमान परिस्थितियों को देखते हुए यह फैसला किया गया कि इसे केवल आर्य समाज तक ही सीमित न रखा जाए। पंजाब में जो कुछ हो रहा है, उसके विरुद्ध जनमत को संगठित करने की आवश्यकता है। परन्तु आर्य समाज के अतिरिक्त कोई दूसरी संस्था नहीं जो यह काम कर सके। बातें तो बहुत लोग बनाते हैं, लेकिन करता कराता कोई कुछ नहीं। इसलिए यही फैसला किया गया है कि १३ दिसम्बर को जो सम्मेलन किया जाना है, वह विशाल हिन्दू सम्मेलन होगा। इसका सारा प्रबन्ध आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब करेगी। परन्तु हिन्दू समाज के दूसरे वर्गों अर्थात् सनातन धर्मियों, जैनियों और दूसरे सब भाईयों को इसमे निमन्त्रण किया जाएगा हरिजन भाईयों को विशेषकर बुलाया जाएगा।

इस सन्दर्भ में मैं पंजाब की आर्य समाजों का ध्यान विशेष रूप से इस ओर दिलाना चाहता हूं। यद्यपि यह सम्मेलन हिन्दू सम्मेलन होगा, परन्तु इसका आयोजन पंजाब की आर्य समाजों की शिरोमणी सभा आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब कर रही है। इसलिए हम सब का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि हम इस सम्मेलन को सफल बनाएं। यह सम्मेलन केवल पंजाब के हिन्दुओं की प्रतिष्ठा और मान का ही प्रदर्शन न करेगा, परन्तु पंजाब के आर्य समाज की शक्ति का भी प्रदर्शन करेगा। हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि किसी संघर्ष के समय जो संस्था सबसे आगे आती है, जनता उसके पीछे ही चल पड़ती है। आर्य समाज ने आज अपने देश में जो महत्व और सम्मान प्राप्त किया है, उसका एक कारण यह भी है कि समय-समय पर जब कोई ऐसा संघर्ष प्रारम्भ हुआ है, जो धर्म और देश की रक्षा के लिए शुरू किया गया आर्यसमाज सदा ही आगे रहा है। पंजाब में भी आज धर्म और देश दोनों के लिए संकट पैदा हो गया है। जो लोग खालिस्तान का आन्दोलन चला रहे हैं। वे देश का एक और बंटवारा कराना चाहते हैं। इसी के साथ पंजाब में हिन्दुओं के लिए एक ऐसी स्थिति बनाई जा रही है, जहां उनके धर्म के लिए भी एक संकट पैदा हो सकता है। यह एक ऐसी स्थिति है, जिसे आर्यसमाज सहन नहीं कर सकता। यदि आर्यसमाज ने हैदराबाद और सिन्ध में जाकर अपने धर्म की रक्षा के लिए संघर्ष किया था, तो वह पंजाब में कैसे खामोश रह सकता है। हमारे अकाली भाई अपने अधिकारों की रक्षा के लिए एक धर्म युद्ध शुरू करना चाहते हैं। हम कोई धर्म-युद्ध प्रारम्भ करके कोई नई उलझन पैदा करना नहीं चाहते। परन्तु उसी के साथ यह भी स्पष्ट है कि यदि हमारे अधिकारों पर किसी प्रकार का आक्रमण किया गया या कोई ऐसी स्थिति पैदा की गई, जिसमें हमारे धर्म के लिए कोई संकट पैदा हो जाए तो फिर हमें भी धर्म-युद्ध प्रारम्भ करना पड़ा तो आर्यसमाज पीछे नहीं रहेगा। धर्म की रक्षा के लिए बलिदान देना आर्यसमाज जानता है। हमारे सिख भाईयों ने मुगलों के वक्त में अपने धर्म की रक्षा के लिए बलिदान दिया था, परन्तु आर्य समाज ने तो पिछले एक सौ वर्ष में न जाने कितने बलिदानी पैदा किये हैं। इसलिए अब जब कि एक बार फिर पंजाब में कुछ साम्प्रदायक तत्व हिन्दुओं को ललकार रहे हैं तो और कोई संस्था बोले या न बोले आर्य समाज उसका उत्तर अवश्य देगा। इसीलिए आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब ने प्रान्तीय आर्य सम्मेलन करने का फैसला किया था परन्तु हम तो संगठन में विश्वास रखते हैं और पंजाब के हिंदुओं के संगठन को शक्तिशाली बनाना चाहते हैं। इसलिए हमने प्रान्तीय आर्य सम्मेलन के स्थान पर विशाल हिन्दू सम्मेलन करने का फैसला किया है। अब इसे सफल बनाने का उत्तरदायित्व पंजाब की सारी आर्य समाजों पर है। इसलिए प्रतिनिधि सभा से सम्बन्धित सब आर्यसमाजों के अधिकारियों से मेरा यह निवेदन है कि वे १३ दिसम्बर को अधिक से अधिक संख्या में जालन्धर अवश्य पहुंचे। प्रत्येक आर्यसमाज अपना नाम पट और ओ३म के झंड लेकर आए और प्रत्येक आर्यसमाजी के सिर पर केसरी पगड़ी या केसरी टोपी और प्रत्येक आर्य महिला केसरी दुपट्टा या केसरी साड़ी पहने होनी चाहिए। इस समय हम अपने संगठन का जितना भी प्रदर्शन करेंगे, उतना ही हमारी स्थिति सुदृढ़ हो जाएगी। और जो विघटनकारी तत्व आज पंजाब के हिन्दुओं को दबाना चाहते हैं, उन्हें भी पता चल जाएगा कि कोई शक्ति अब हिन्दुओं को दबा नहीं सकती। इसलिए एक बार फिर पंजाब की सब आर्यसमाजो के अधिकारियों से यह निवेदन करना चाहता हूं कि वे अपने साथियो सहित १३ दिसबर को जालन्धर अवश्य पहुंचे। यह सम्मेलन देवी तालाब मन्दिर के सामने दोआबा कालेज में होगा। किसी भी रिकशावाले से यह कहा जा सकता है कि वह देवी तालाब पर ले चले तथा बस स्टैंड और स्टेशन के लिए दोआबा कालेज के लिए लोकल बसें भी मिल जाती हैं। तथा उसके बिल्कुल सामने दोआबा कालेज है। आशा है आर्य भाई और बहनें बहुत बड़ी संख्या में उस दिन जालन्धर पहुंचेंगे।

—वीरेन्द्र

आर्य वीरों का ध्वज गीत

जयति ओम् ध्वज व्योम बिहारी।
विश्व-प्रेम प्रतिमा अति प्यारी ॥ जयति० ॥

सत्य-सुधा बरसाने वाला, स्नेह-लता सरसाने वाला।
साम्य सुमन विकसाने वाला, विश्व-विमोहक भवभय हारी ॥

॥जयति० ॥

इसके नीचे बढ़ें अभय मन, सत्पथ पर सब धर्म धुरी जन।
वैदिक रवि का हो शुभ उदयन, आलोकित होवें दिशि सारी ॥

॥जयति० ॥

इससे सारे क्लेश शमन हो, दुर्मति दानव द्वेष दमन हों।
अति उज्ज्वल अति पावन मन हों, प्रेम तरंग बहे सुखकारी ॥
॥ जयति० ॥

इसी ध्वजा के नीचे आकर, ऊंच-नीच का भेद भुला कर।
मिले विश्व मुद मंगल गाकर, पन्थाई पाखंड बिमारी ॥

॥ जयति० ॥

इस ध्वज को लेकर हम कर में, भरदें वेद-ज्ञान घर-घर मे।
सुभग शान्ति फैले जगभर मे, मिटें अविद्या की अंधियारी ॥
॥ जयति० ॥

विश्व-प्रेम का पाठ पढ़ाई, सत्य अहिंसा को अपनावें।
जग में जीवन ज्योति जगावें, त्याग पूर्ण हो वृत्ति हमारी ॥
॥ जयति० ॥

आर्य-जाति का सुयश अक्षय हो, आर्य-ध्वजा की अविचल जय हो।
आर्य-जनों का ध्रुव निश्चय हो, आर्य बनावें वसुधा सारी ॥
॥ जयति० ॥

भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम में आर्यसमाज की देन

श्री सत्यप्रिय जी शास्त्री

किस्त—20

यदि समूचे उत्तर प्रदेश में सत्याग्रहियों की संख्या दो लाख थी तो उनमें आर्य समाजियों की संख्या पचास हजार तो निर्विवाद ही थी आर्य समाजी देवियों ने तो कमाल ही कर दिया उनमें विद्यावती, सत्यवती, वरसोदेवी, प्रकाशवती तथा शकुन्तला जी मुख्य थीं, जोकि आर्य समाज मेरठ की सदस्या थीं। रामकली ने तो अपने तीन नन्हें बालकों के साथ धरना दिया था। इसी प्रकार शोभावती अम्बादेवी हलद्वानी वाली ने भी कारागार की यातनाएं सहीं। हापुड़ में तो श्री पं. शिवदयालु जी ने विशाल राजनीतिक सम्मेलन की अध्यक्षता की।

अन्यथा राजा के सामने एक वेश्या और पाचक की क्या हिम्मत थी कि राजा के गुरु और मान्य अतिथि को जहर देकर मार दे, वेश्या को अपना पाप छिपाने का बहाना बनाया गया था, अजमेर निवासी श्री भागराम जी, जोकि महर्षि के ऊपर विशेष गुप्तचर छोड़े गए थे, का कहना था कि यदि इण्डिया आफिस में स्थित तत्कालीन वायसरायों के गुप्तचर और दस्तावेजों को पढ़ा जावे तो महर्षि दयानन्द की मृत्यु का वास्तविक रहस्य सामने आ सकता है। == इन सब प्रमाणों से पूर्वाग्रह मुक्त सत्यान्वेषी पुरुष इस परिणाम पर पहुंचेगा कि महर्षि को अंग्रेज सरकार ने अपने साम्राज्य का घोर विरोधी मानकर एक विशाल गुप्त षड्यन्त्र के द्वारा जहर देकर बलिदान कर दिया। इस प्रकार १८५७ के पश्चात् भारत का राजनीतिक दृष्टि से पूर्ण जागरण करने के कारण महर्षि दयानन्द सरस्वती का बलिदान हुआ था। शनैः शनैः आज यह सत्य संसार के समक्ष मुखरित होता जा रहा है, महर्षि दयानन्द सरस्वती के पश्चात् उनके सच्छिष्यों ने कांग्रेस के मंच से, जिस को एक कूटमति अंग्रेज ने ब्रिटिश सरकार के इंगित और आयोजन के अधीन उसकी जड़ों को सशक्त करने के उद्देश्य से स्थापित किया था, को राष्ट्रीय स्वरूप प्रदान कर उसके माध्यम से महत्वपूर्ण प्रशंसनीय कार्य किया, भारत की स्वाधीनता के हेतु कांग्रेस के मंच से दो प्रकार की विचारधाराओं ने अपने-अपने क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किया-एक गान्धी जी के नेतृत्व में अहिंसात्मक सत्याग्रहों के द्वारा और दूसरे सशस्त्र क्रान्तिकारी आन्दोलनों के जरिये, उक्त दोनों ही मोर्चों पर महर्षि दयानन्द के अनुयायी प्रथम पंक्ति में खड़े दिखाई देते हैं, प्रथम गान्धी मार्ग द्वारा किए गए योगदान की संक्षिप्त चर्चा उपस्थित की जा रही है।

अहिंसात्मक सत्याग्रहों द्वारा योगदान

राजनीतिक स्वतन्त्रता के क्षेत्र में गान्धी जी के गुरु गोपाल कृष्ण गोखले माने जाते हैं। श्री गोखले को यह विचार अपने आचार्य महादेव गोविन्द रानाडे से प्राप्त हुआ। परन्तु रानाडे तक यह विचार उनसे महर्षि दयानन्द सरस्वती से पहुंचा है, पूना में १८७५ में इनका समागम हुआ था, घनिष्टता यहां तक बढ़ी कि महर्षि ने रानाडे को अपनी उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा में नियुक्त किया था, इस प्रकार गांधी जी को यह विचार मूलतः महर्षि दयानन्द से ही मिला है। यह भिन्न बात है कि गांधी जी के हिन्दू मुस्लिम एकता विषयक विचार महर्षि से भिन्न थे, यह गांधी जी के विदेशी शिक्षा से प्राप्त चिन्तन पर आधारित थे, और उतने ही अंश में वे सदा असफल रहे, अस्तु, गांधी जी को महात्मा पद से विभूषित करने वाले अमर शहीद स्वा० श्रद्धानन्द जी थे, जिनका कांग्रेस के मंच पर भी समान प्रभाव रहा?, स्वाधीनता की तीन मूर्तियों में लाजपतराय तो महर्षि के प्रकट शिष्य थे, आर्य समाजी नेता इन्द्र विद्यावाचस्पति का योगदान भी किसी से कम नहीं, देशबन्धु गुप्ता, घनश्यामसिंह गुप्ता, भीमसेन सच्चर, म० कृष्ण एवं उनके दोनों पुत्र, स० खुशहालचन्द (वर्तमान आनन्द स्वामी) तथा उन के सभी पुत्र, सिन्ध में ताराचन्द गाजरा, हैदराबाद के पं० नरेन्द्र, विनायकराव विद्यालंकार, उत्तर प्रदेश के चौ० चरणसिंह चन्द्रभानु गुप्ता, गोविन्द बल्लभ पन्त, लालबहादुर शास्त्री, राजस्थान के चान्दकरण शारदा, कर्मवीर श्री जियालाल जी, हरियाणा के आचार्य भगवानदेव जी स्वा० रामेश्वरानन्द जी, पंजाब के चौ० वेदव्रत जी, वैद्य रामगोपाल जी, अजीतसिंह सत्यार्थी, देश प्रसिद्ध वक्ता कु० सुखलाल जी आर्य मुसाफिर बिहार के चौ० वेदव्रत स्वा० अभेदानन्द जी, इसी प्रकार डा० गोकुल चन्द नारंग, स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी, प्रि० देवीचन्द जी, स्व. स्वामी आत्मानन्द जी, मलगूमजी शास्त्री, जयानन्द भारती, महावीर त्यागी आचार्य नरदेव शास्त्री, स्वा० सत्यदेव परिव्राजक इत्यादि सभी लोग आर्य समाज से स्वाधीनता की प्रेरणा प्राप्त कर रहे हैं, इतना ही नहीं बल्कि दादाभाई नौरोजी भी सत्यार्थ प्रकाश पढ़कर उससे स्वाधीनता की प्रेरणा लेते थे।

अहिंसात्मक सत्याग्रहों में सर्वप्रथम १९२१ का असहयोग आन्दोलन हुआ, जिसमें सरकार का सहयोग त्याग किया गया, यद्यपि ऋषि दयानन्द सरस्वती तो परोपकारिणी सभा की स्थापना के समय ही इसका बीजारोपण कर गए थे, क्योंकि उन्होंने उसके नियमों में लिखा कि इसका पारस्परिक कोई भी झगड़ा सरकारी अदालत में न ले जाकर आपस में ही निपटना चाहिए, यही बीज इस आन्दोलन के रूप में प्रकट हुआ, जब उक्त आन्दोलन की घोषणा म० गांधी जी ने की तभी स्वा० श्रद्धानन्द जी महाराज ने गांधी जी को तार देकर इस युद्ध में सम्मिलित होने की सूचना दी। सूचना में लिखा कि मैंने इस धर्मयुद्ध में सम्मिलित होने का पूर्ण निर्णय कर लिया है। पाठक जरा सोचें कि आर्य समाजियों की दृष्टि में देश स्वाधीनता के हेतु लड़ा जाने वाला संग्राम धर्म युद्ध है, बस स्वामी जी के सम्मिलित होते ही प्रत्येक आर्य समाजी जी-जान से उक्त आन्दोलन में कूद पड़ा, इसका स्वामी श्रद्धानन्द्याय से कुछ प्रामाणिक वृत्त निम्न हैं, जहां-कहीं भी आर्य समाज या आर्य समाजी थे, वहीं कांग्रेस की शाखाएं सुदृढ़ थीं, मेरठ जिले के दो हजार सत्याग्रहियों में से अधिकांश [आर्य समाजी ही थे, जिला बुलन्दशहर के कठोर यातनाएं सहने वाले सत्याग्रहियों में अधिकांश आर्य समाजी थे- प्रतिशत इसी प्रकार जिला सुलतानपुर, मथुरा में अधिकांश आर्य समाजी ही सत्याग्रही थे, आर्य समाज के उपदेशक तथा कांग्रेसी नेता स्व० पं० शेरसिंह जी के अनुसार उस समय जेलों में अस्सी प्रतिशत आर्य समाजी थे, कहते हैं कि प० मोतीलाल नेहरू की अध्यक्षता में उस समय सत्याग्रहियों की जांच के लिए एक कमेटी बनाई गई थी, जिसकी रिपोर्ट का सारांश था कि सत्याग्रहियों में में लगभग सत्तर प्रतिशत आर्य समाजी विचार धारा के लोग हैं. जब महात्मा गान्धी ने इसके साथ खिलाफत जैसे विशुद्ध साम्प्रदायिक प्रश्न को नत्थी कर दिया और अपनी काल्पनिक अहिंसानीति को बरकरार रखने के कारण इसे स्थगित कर दिया, तब सारा देश निराशा के समुद्र में डूब गया तथा साम्प्रदायिक दंगे भड़क उठे, जिसका मूल कारण गान्धीजी के अदूरदर्शिता ही थी। इसके पश्चात् १९३१ में एक बार फिर देश ने गांधीजी के नेतृत्व में अंगड़ाई ली। इस आन्दोलन में भी हम आर्य समाजियों को अग्र पंक्ति में खड़ा हुआ पाते हैं, जोकि निम्न प्रमाणों से सिद्ध होता है यदि समूचे उत्तर प्रदेश में सत्याग्रहियों की संख्या दो लाख थी तो उनमें आर्य समाजियों की संख्या पचास हजार तो निर्विवाद ही थी आर्य समाजी देवियों ने तो कमाल ही कर दिया, उनमें विद्यावती, सत्यवती, वरसोदेवी, प्रकाशवती तथा शकुन्तला जी मुख्य थीं, जोकि आर्य समाज मेरठ की सदस्य थीं, रामकली जी तो अपने तीन नन्हें बालकों के साथ धरना दिया था, इसी प्रकार शोभावती, अंबादेवी हलद्वानी वाली ने भी कारागार की यातनाएं सहीं 'हापुड़ में तो श्री पं० शिवदयालु जी ने विशाल राजनीतिक सम्मेलन की अध्यक्षता की और वहां के हजारों सत्याग्रहियों के साथ रेल यात्रा की, पंजाब में इसका गुप्त संगठन एवं संचालन स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी महाराज कर रहे थे, दयानन्द उपदेश विद्यालय की तलाशी भी पुलिस ने बड़ी गहराई से ली थी, क्योंकि स्वामी जी उसके आचार्य थे, वहां के छात्रों ने भी उक्त आन्दोलन में भाग लिया था, आगरा मुसाफिर महाविद्यालय जहां आर्य समाज के लिए उपदेशक तैयार किए जा सकते थे, इन्हीं आन्दोलनों की चपेट में आकर बन्द हो चुका था, गुरुकुल कांगड़ी के आचार्य रामदेव जी ने भी अपने छात्रों के एक विशाल जत्थे के साथ सत्याग्रह कर रेल यात्रा की थी, गुरुकुल अनिश्चित काल के लिए बन्द कर दिया

(क्रमशः)

धर्मरक्षा महाभियान को आशातीत सफलता मिलने लगी

कई मुल्लाओं और पादरियों ने भी सपरिवार हिन्दू धर्म अपनाया

पादरी सपरिवार हिन्दू बना

सोलन। स्थानीय आर्यसमाज में रविवार को सत्संग के दिन पादरी सुधाकर मसीह (इवैंजिलिकल चर्च सोलन) को वैदिक धर्म में दीक्षित लिया गया। दीक्षा यज्ञ पं. बालकृष्ण शर्मा ने कराया।

श्री सुधाकर महाराष्ट्र के हैं तथा उन्होंने महाराष्ट्र, राजस्थान में ईसाई मत का प्रचार किया तथा गत दो वर्ष से सोलन में पादरी के रूप में कार्य कर रहे थे।

पं. बालकृष्ण शर्मा और उनकी पत्नी श्रीमती ममता शर्मा के सम्पर्क में आने के बाद श्री सुधाकर को वैदिक धर्म को समझने का अवसर मिला और उन्होंने सपरिवार हिन्दू धर्म में आने की इच्छा प्रकट की।

श्री सुधाकर को धर्म न बदलने के लिए चर्च की ओर से पर्याप्त आर्थिक प्रलोभन दिए गए परन्तु उन्होने उसे ठुकरा दिया। श्री सुधाकर के माता-पिता ने भी उन्हें सद्धर्म में लौटने पर आशीर्वाद दिया।

अब श्री सुधाकर का पूरा नाम सुधाकर पटेल और उनकी पत्नी का नाम कांता पाटेल हो गया है।

एक और मुस्लिम विद्वान् वैदिक धर्म में दीक्षित

इस्लाम के एक प्रसिद्ध धार्मिक नेता डा, मसीरुद्दीन कथाल एम. ए. पी.ऍच.डी. ने अपने परिवार सहित ११-११-८१ को बम्बई में वैदिक धर्म ग्रहण किया। दीक्षा संस्कार श्री ब्र. विश्वनाथ जी के द्वारा संपन हुआ। डा. महोदय का नाम मित्र जीवन, उनकी पत्नी बेगम नुसरत जहां का नाम श्रद्धादेवी रखा गया। उनकी ३ पुत्रियों के नाम इस प्रकार रखे गए :—

(१) शमीम—आम्रपाली

(२) शबनम—अर्चना

(३) सीरीन—अपराजिता।

इस अवसर पर डा० मित्र जीवन ने बताया कि "मैंने दो कारणों से वैदिक धर्म ग्रहण किया है। एक तो यह कि इस्लाम में अंकित है कि यदि किसी को बहिश्त (स्वर्ग) की ख्वाहिश (इच्छा) हो तो उसे भारत पर आक्रमण करना चाहिए। दूसरा यह कि हरिजनों के सामूहिक इस्लामीकरण से भारत में जन्मे मेरे देश प्रेम की भावनाओं को ठेस पहुंची। मैं इन बातों को सहन न कर सका और मैंने परिवार सहित हिन्दू धर्म ग्रहण करने का निश्चय किया।

श्री सदाजीवतलाल जी (हिन्दू विश्व परिषद् के एक ट्रस्टी) आर्यसमाज शांताकुंज के मन्त्री और धर्म रक्षा महाभियान के संयोजक श्री के. देवरत्न आर्य तथा श्री सेठ शांतिलाल जी सोमैया ने हिन्दू धर्म में दीक्षित हुए इस परिवार का स्वागत किया।

श्री मित्र जीवन का पंजाब के एक पुश्तैनी ईसाई परिवार में जन्म हुआ था। इनके पिता पादरी थे। इनकी शिक्षा मथुरा और इलाहाबाद में हुई। इसी विश्वविद्यालय से इन्होंने दर्शन शास्त्र में एम. ए. किया। वे श्री रामपुर (कलकत्ता) ईसाई विश्वविद्यालय से बी डी. (बचलर आफ डिवीनिटी) की डिग्री प्राप्त करके ईसाई प्रचारक बने। इन्होंने संस्कृत तथा वेदों दर्शन शास्त्रो, और उपनिषदों का सम्यक् अध्ययन किया और योग साधना भी की।

देश के प्राचीन धार्मिक सत् साहित्य से प्रभावित होकर इन्होने ईसाइयत के बजाय वैदिक सिद्धांतो का प्रचार करना शुरू कर दिया जिसके परिणाम स्वरूप भारतीय ईसाइयों मे अपने चर्चों का पूर्णत भारतीयकरण करने की भावना पैदा हुई। भारतीय ईसाई चर्च और उनके मध्य उभरे सैद्धांतिक मतभेद को लाट पादरी सहन न कर सके और उन्होंने पद त्याग के लिये इन्हें कह दिया।

१९७४ में इन्होंने विशुद्ध धार्मिक आधार पर इस्लाम ग्रहण किया। देवबन्द के दारुल उलूम के कुलपति मुहम्मद तैय्यब साहिब ने उन्हे और उनके परिवार को कल्मा पढ़ाया। इस्लाम की यह दीक्षा बम्बई की जामा मस्जिद में दी गई। कुरान, हदीस तथा अन्य इस्लामिक साहित्य की विद्वत्ता तथा धार्मिक एवं अध्यात्मिक योग्यता के कारण देश-विदेश के मुसलमानों ने इन्हें उच्चकोटि का धार्मिक नेता स्वीकार किया और तय्यब साहिब ने इन्हें अपने शिक्षा संस्थान की डाक्टर आफ फिलासफी की उपाधि से अलंकृत किया।

इस वर्ष जब हिन्दू समाज के कुछेक पिछड़े वर्गों ने हिन्दू धर्म को छोड़ कर इस्लाम ग्रहण करने की घोषणा की तो इनकी आत्मा को ठेस लगी। उनके शब्दों में "यदि स्वतन्त्र भारत में किन्हीं कारणों से इस प्रकार के धर्मान्तरण होते हैं तो निश्चय ही स्वतन्त्रता, राष्ट्र संविधान और समाज की तस्वीर कलुषित हुए बिना नहीं रह सकती। यह भारतीय धर्म और संस्कृति का खुला अपमान है।

यह ठीक है कि देश की आम जनता अज्ञान में डूबी हुई है और कष्टो तथा विपत्तियो में ग्रस्त है। जहा अज्ञान होता है वहा कमियां होती हैं और जहां कमियां होती हैं वहा, कष्ट और अत्याचार भी होते हैं। धर्म परिवर्तन समस्या का हल नही है। इसका हल गरीबी और अज्ञान का समूलोच्छेद ही है। दूसरे मत का समुचित अध्ययन किये बिना अपने मत को छोड़कर उसको ग्रहण करना बुद्धिमत्ता का कार्य नही है, भारत को इस्लाम या ईसाइयत की जरूरत नही है क्योंकि उसे अपनी भूमि पर ही इस्लामिक और ईसाई शक्तियों के उत्थान और पतन का पूर्व से ही अनुभव है। भारत का सर्वतोमुखी उत्थान अपनी सस्कृति और धर्म के झंडे के नीचे ही होगा।

हिन्दू समाज के पिछड़े वर्गो के सामूहिक मत परिवर्तन ने मुझे इस्लाम के परित्याग, हिन्दू धर्म का ग्रहण करने तथा पिछड़े वर्गो को दृढव्रती बनाने इस्लाम और मुस्लिम जाति की धार्मिक अव्यवहारिकता, समाजिक पेचीदगियो और इतिहास से परिचित करने के लिए विवश कर दिया।

विज्ञजनो को यह ज्ञात होना चाहिए कि इस्लाम का उदय रोटी की भूख से शुरू होता है और इसके अनुयायियो को शक्ति प्राप्त करने की दिन पर दिन बढ़ती हुई उत्कण्ठा से यह फैलता है। विश्व पर हकूमत करने की आवश्यकता से अधिक भूख और दूसरो पर बलात् छा जाने की भावना के कारण इस जाति का भविष्य उज्ज्वल नही देख पड रहा है।

श्री मित्र जीवन का भावी प्रोग्राम देश के पिछड़े वर्गों और जनजातियों के उद्धार और सेवा करने का है। इसके लिये उपयुक्त स्थान पर एक ऋषिकुल खोलने की योजना है जहा योग, आरोग्य और सस्कृति का प्रशिक्षण दिया जाएगा।

अन्य शुद्धियां

धर्मरक्षा महाभियान के अन्तर्गत विभिन्न स्थानों पर हिन्दूधर्म से अन्य धर्मों में गए व्यक्तियो को पुन: हिन्दू धर्म में दीक्षित किया गया। इस सप्ताह प्राप्त सूचनाएं इस प्रकार है —

आर्यसमाज पुलबगश ने भारतीय शुद्धि सभा के तत्वावधान में ८ नवम्बर को श्री रखा मसीह के परिवार ८ सदस्यो को जो स्वेच्छा से हिन्दू होना चाहते थे, यज्ञ कर वैदिक धर्म की दीक्षा दी गई। यज्ञ सभा के प्रधान श्री द्वारकानाथ ने कराया।

इस अवसर पर आर्य समाज पुलबगश के आर्यसमाजियों के अलावा स्त्री आर्य समाज और आर्यसमाज पहाड़ी धीरज, माडल बस्ती, आर्यपुरा, राणा प्रतापबाग, किशनगंज आर्य-युवक परिषद के सदस्य बडी सख्या मे उपस्थित थे। श्री रक्खा मसीह का नाम राम रक्खा और उनकी पत्नी गिरेरन का नाम गीता देवी रखा गया। इस अवसर पर जलपान का प्रबन्ध श्री ज्ञानचन्द खट्टर ने किया।

कानपुर। स्थानीय आर्य समाज मन्दिर गोविन्द नगर में इलाहाबाद के २५ वर्षीय युवक श्री एस. बरनाड ने हिन्दूधर्म की दीक्षा ली। श्री देवीदास आर्य ने यज्ञोपवीत धारण कराया। श्री बरनाड का नाम राजेश किशोर रखा गया। श्री राजेश किशोर उत्तर रेलवे मे फायरमैन है। उन्होने कहा कि हिन्दू धर्म के मानवतावाद के दृष्टिकोण से ही वे इससे प्रभावित हुए हैं।

बरेली। आर्य उपप्रतिनिधिसभा बरेली के तत्वावधान में हनुमानगढ़ी मन्दिर गांधी नगर मे नुरुल्लाह को जो मुसलमान हो गया था, पुन: हिन्दूधर्म में दीक्षित किया गया। इसका दुबारा नाम ओमप्रकाश ही रखा गया जो मुसलमान होने से पूर्व था।

उस अवसर पर हिन्दू धर्म की विशेषताओं के बारे में नगर के अनेक प्रतिष्ठित एव विद्वान व्यक्तियो ने भाषण दिए।

नई दिल्ली। आर्य समाज राजेन्द्र नगर मे हिन्दू शुद्धि सभा के माध्यम से तीन मुस्लिम परिवारो के १२ सदस्यों को हिन्दू धर्म की दीक्षा दी गई। यज्ञ आर्यभिक्षु वानप्रस्थी ने कराया। इस अवसर पर आर्यसमाजी, सनातनधर्मी, सभाके मन्त्री, महिला आश्रम राजेन्द्र नगर की माताए और विरजानन्द आर्य महाविद्यालय की छात्राए व गुरुकुल के ब्रह्मचारी उपस्थित थे।

समारोह में विशेष रूप से भाग लेने वालों में श्री रामभज, श्री देवराज, श्री आर. एस. चौधरी, श्रीमती मायावन्ती श्री गोवर्धनदास व्याम, डा. कर्मचन्द, और द्वारकानाथ जी थे। श्री रामनाथ ने पुन: हिन्दू बनने वालो का स्वागत किया।

आर्य ग्रन्थों की लोकप्रियता

ऋषि दयानन्द ने सस्कारविधि, सत्यार्थ प्रकाश एव वेदभाष्य भूमिका, तीनो मे ही पाठ विधि बताई हैं। बताई हैं। जिनमे वेद के साथ पुराण (ब्राह्मण-चाणक्य-उपनिषद), दर्शन, उपवेद, वेदाग सम्बन्धी ऋषि ग्रन्थो एव उन पर अन्य ऋषि कृत व्याख्याओ को पढ़ाना-पढ़ाना आर्यों के लिए अनिवार्य बताया है। आर्य गुरुकुल नाम से स्थापित विद्यालयो मे भी उन सब ग्रन्थों के पठन-पाठन की व्यवस्था न हो पाई। दयानन्द पाठविधि मे कुछ ग्रन्थ ऐमे हैं जो कही मिलते नहीं। कुछ ग्रन्थ ऐसे हैं जिनके भाषानुवाद आर्य विद्वानों द्वारा नही हुये हैं। जो गुरुकुलेतर आर्य विद्यालय हैं उनके छात्र व शिक्षको मे तथा आर्य वीरांगना या वीरदल वालो मे एव आर्यसभासदो मे आर्य ग्रन्थ लोकप्रिय हो जायें, इसके लिये यह आवश्यक है विभिन्न भाषाओं मे दयानन्द पाठविधि मे सकेतित ग्रन्थो के सर्वसुलभ सस्ते सस्करण निकाले जायें। यह तो निश्चित ही हैं कि जिन ग्रन्थों के भाषानुवाद आर्य विद्वानो द्वारा नही हुए हैं उन्हें शीघ्र ही अनुदित कराया जाये। तथा आर्य विधि उल्लिखित जो ग्रन्थ अप्राप्य हैं, उन्हें खोजा जाये। ताकि सारे ही ग्रन्थों के लोकप्रिय (पापुलर) सस्करण शीघ्र ही सर्वसुलभ हो सके।

प्रत्येक आर्य मे इतनी योग्यता होनी चाहिए कि वह वेद पढ़ा सके, सुना सके। किसी भी प्रेरणा से जब भी कोई अविवाहित या विवाहित युवा आर्यसभासद् बन जाता है तो सत्यार्थ प्रकाश आदि पढ़ता है, इससे सबधित ग्रन्थो की और ध्यान नहीं जाता है। सस्कारविधि व सम्बन्धित ग्रन्थो का अध्ययन भी वह नही कर पाता है। तथा वेदभाष्य (साथ मे भूमिका भी) मैं तो अपनी गति कुछ भी नहीं कर पाता है। आर्यसमाज सगठन मे सस्कृत शिक्षण की व्यवस्था नही है। प्रत्येक आर्यसमाज में एक ऐसा पुरोहित हो जो अष्टाध्यायी सूत्रपद्धति शिक्षण मे निपुण हो, तो फिर दयानन्द अष्टाध्यायी द्वादश भाग वर्णोच्चारितशिक्षा आदि के सहारे प्रत्येक आर्य लौकिक ही नही वैदिक सस्कृत भी सीख सकता है। प्रतिनिधि आर्यसमाजो को चाहिए कि परोपकारिणी सभा एव ऐसे ही ग्रन्थ न्यासों को सहयोग करें, ताकि आर्यसमाज के क्षेत्र मे सस्कृत शीघ्र ही लोकभाषा का रूप ले ले।

मान लीजिए कि उपर्युक्त प्रबन्ध सब ही आर्य समाजों में हो जावे तब भी प्रारम्भ करने के लिए आर्य ग्रन्थों के लोकप्रिय संस्करण तो आवश्यक होंगे ही। पाठकों की दृष्टि में 'बाल सत्यार्थ प्रकाश' एवं 'बाल ऋग्वेदादि-भाष्य भूमिका' आए ही होंगे। उन का उपयोग १५ वर्षीय बालवर्ग के लिए हैं, आधुनिक आर्य विद्यालयों के छात्र, आर्य सन्तानों के लिए ऐसे बाल सस्करण दयानन्द पाठविधि में बताये अन्य ग्रन्थों पर भी निकलें, जैसे-बाल मनुस्मृति, बाल चरक, बाल योग दर्शन, बाल छन्दोग्योपनिषद, बाल शतपथ ब्राह्मण इत्यादि। परन्तु लोकप्रिय या सर्वसुलभ सस्करण तथा बाल सस्करण में अन्तर होगा। लोकप्रिय सस्करण मे पूरे ही ग्रन्थ का सार होगा। भाषा रोचक एवं प्रवाह मयी होगी ही। बाल संस्करण तो १५ वर्ष तक आयु वालों के लिए उपयोगी होगा, परन्तु लोकप्रिय सस्करण तो युवा-प्रौढ़-वृद्ध सबके लिए उपयोगी होगा। लोकप्रिय संस्करण किसी एक विद्वान द्वारा लिखा जाए, आवश्यक नहीं है। वेदभाष्य भूमिका में ५० से अधिक विषय है। हर विषय पर अलग-अलग विद्वानों से लिखाया जा सकता है। एक विषय पर अधिक विद्वान भी लिख सकते हैं। इसी ग्रन्थ में एक है 'वेद विषय विचार विषय' जिसमें विज्ञान-कर्म-उपासना ज्ञान, काण्ड आदि अवान्तर भाग हैं। जरूरत हो तो सब पर अलग विद्वानों द्वारा लिखाया जा सकता है। सत्यार्थ प्रकाश तीसरे समुल्लास मे शिक्षा के साथ परीक्षा विषय भी है। दोनों पर अलग-अलग से लिखाया जा सकता है, ऐसे ही सातवें में ईश्वर एव ईश्वरीय ज्ञान विषयों पर भी।

किसी ग्रन्थ पर कोई एक ही विद्वान लोकप्रिय सस्करण तैयार कर दे तो ठीक, अन्यथा लेखक टोली तो है ही। दोनों ही स्थितियों में ध्यान यह रखा जाना चाहिए कि सम्पादन कार्य वह व्यक्ति करे जो लोकप्रिय सस्करण को नहीं लिख रहा। चाहे कितना ही धुरन्धर विद्वान हो। सम्पादन तो अन्य विद्वान से ही कराया जाए। आर्य परम्परा में ऐसा ही होता है। ग्रन्थ का लेखक है ऋषि अग्निवेश, तथा सम्पादक है चरक ऋषि। परन्तु पुस्तक का नाम प्रसिद्ध हैं 'चरक संहिता।' आर्य परम्परा में सम्पादन को अत्यधिक महत्व है। भोजन तैयार करना एक प्रकार की की कला है। भोजन को परोसना अन्य कला है इसका सम्बन्ध वितरण से है। इसी प्रकार से सम्पादन का ज्ञान वितरण को सुविधाजनक बनाने के लिए हैं। अस्पष्ट को स्पष्ट करना क्लिष्ट को सरल करना, अरोचक को रोचक बना देना यह सब सम्पादन कला है।

आर्य ग्रन्थों के सर्वसुलभ संस्करणों की बिक्री की कोई समस्या न होनी चाहिए। ऋषि निर्दिष्ट सब ही उपलब्ध भाषानुवाद सहित ग्रन्थ प्रत्येक आर्य के यहीं होना ही चाहिये। पहले सबके लोकप्रिय सस्करण खरीद लें। ये स्वयं के, परिवारजनों के, मित्र जनों के, सबके काम आयेंगे। तभी लोकप्रिय संस्करण केवल हिन्दी ही नहीं, भारत की अन्य मातृभाषाओं में निकले, तथा भूमण्डल की विभिन्न मातृभाषाओं में निकले। लेखक सर्वसुलभ संस्करण तैयार करने में यह ध्यान रखे कि आर्य ग्रन्थ के सूत्र-श्लोक आदि में भी ज्ञान है, उसके व्यवहार करने से वर्तमान मानव-समाज की किन-किन आवश्यकताओं की पूर्ति होती है? किन समस्याओं का निराकरण होता है? इन बातों पर जोर दे। यह ख्याल रखने से आर्यसभासदों के अलावा भी लोग रुचि लेंगे।

—गणेश कुटीर
गेंदालाल शर्मा
अजमेर

हिन्दू सें मुसलमान मुसलमान से हिन्दू

कुम्भकोनम : यहां से कुछ दूर कुलापुर गांव के जो ९३ हरिजन धर्म परिवर्तन कर मुसलमान हो गए थे उनमें से २० ने पुनः हिन्दू धर्म अंगीकार कर लिया।

इनके नेता ने कहा धर्म परिवर्तन के बाद का कुछ दिन का हमारा जीवन कैदियों का सा हो गया। उसने यह आरोप भी लगाया कि जो हरिजन युवक मुसलमान हो गये उनसे वादा किया गया था कि उन्हें कुवैत में रोजगार दिलाया जाएगा और कुवैत यात्रा मुफ्त रहेगी लेकिन वादा पूरा नहीं किया गया।

डा. सुमन की प्रेरणा पर एक अन्य मुस्लिम युवक शुद्ध

२५ वर्षीय एक अन्य युवक मोहम्मद हनीफ ने आर्य समाज गाजियाबाद में एक समारोह में वैदिक धर्म ग्रहण किया, आर्य समाज के पुरोहित पं. विजयपाल शास्त्री ने उसका शुद्धि संस्कार किया।

आर्य समाज मन्दिर में आयोजित इस समारोह में नवाब छतारी के पौत्र डा. आनन्द सुमन ने मोहम्मद हनीफ को बधाई दी।

उसका नाम श्री हरीशचन्द्र आर्य रखा गया।

इस अवसर पर महाशय बनवारी लाल, श्री बुद्धानन्द एवं श्री तेनू राम काम्बोज आदि ने भी उसे बधाई दी।

★

पौराणिकों ने वैदिक पद्धति से संस्कार व यज्ञ करवाए

फरीदकोट में गत २२ नवम्बर को श्री हरबन्स लाल शर्मा घन्टाघर वाली में उनकी सुपुत्री पुष्पलता का पाणिग्रहण सस्कार श्री चि. बलराम जी सुपुत्र श्री सागर राम बस्सी पठाना के साथ वैदिक रीति से स्व. पु. एवं वे. पु. आर्य भूषण पिपल ने सम्पूर्ण करके वर-कन्या को शुभ आशीर्वाद पुष्प वर्षा करके प्रदान कराया।

इससे पूर्व दिनांक २१-११-१९८१ ई० को कट्टर पौराणिक 'श्री सत्यपाल' शर्मा सुवर्णकार फरीदकोट ने अपनी अपनी सुपुत्री के विवाह से पूर्व वैदिक यज्ञ रचवा कर कन्या को सौभाग्य तिलक पु. आर्य भूषण 'पिप्पल' द्वारा आशीर्वाद दिला कर विवाह यज्ञ सम्पूर्ण कराया।

और दि. २८-११-१९८१ ई० को एक कट्टर आनन्दपुरी मत को मानने वाले श्री श्यामसुन्दर जी ने अपने भ्राता श्री रोशन लाल जी के विवाह से पूर्व वैदिक यज्ञ पु० आर्य भूषण 'पिप्पल' से रचवा कर विवाह की कार्यवाही आरम्भ कराई।

★

बाल बालिकायें वैदिक संध्या एवं यज्ञ करते हैं

फरीदकोट—यहां के डी. ए. वी. वि. फ. के बालक-बालिकाएं नित्य ५०-६० की संख्या में सहित श्रद्धालु अध्यापिकाएं वैदिक सन्ध्या, हवन करके वेद की मर्यादा का पुष्ट कर रही हैं। धर्म शिक्षक का कार्य "आर्य भूषण" जी के अन्तर्गत है।

★

आर्य वीर दल पंजाब की गतिविधियां

आर्य वीर दल अब सक्रिय रूप में बड़े अनुशासित ढंग से अपना कार्य करने में अग्रसर हो गया है। जालन्धर नगर में अनेक आर्य समाज के निमंत्रण पर दल के कार्यकर्ताओं पर आर्य वीर दल जालन्धर ने उन उत्सवों की व्यवस्था को सुनियोजित ढंग से सफल बनाया। आर्य समाज माडल टाऊन, आर्य समाज जालंधर कैंट, आर्य समाज बस्तीगुजां, आर्य समाज मुहल्ला गोविन्दगढ़, श्रीमद् दयानन्द मठ (वेद मंदिर) इन मुहल्ला के उत्सवों में आर्यवीरों ने भरपूर सहयोग दिया। अभी इसी २७-१२-८१ को आर्य समाज विक्रमपुरा के वार्षिकोत्सव में विशाल नगर कीर्तन शोभा यात्रा (जलूस) की व्यवस्था तथा चौराहों पर यातायात नियंत्रण आर्य वीरों की ही देख रेख में चल रहा था जो बड़ा सफल हुआ। इसके साथ साथ ही आर्य वीर दल बतका और लाठी का शानदार प्रदर्शन कर रहा था।

आर्य वीर दल जालन्धर की स्थापना आर्य नगर, बस्ती दानिशमंदां, आदर्शनगर छावनी कैंप, शहीद भगत सिंह नगर में हो चुकी है तथा जालन्धर के अन्य स्थानों, आर्य समाजों तथा शिक्षण संस्थाओं में यह कार्य स्थापना हेतु गति में आ चुका है और शीघ्र ही आर्य वीर दल तथा आर्य वीरांगना दल निर्माण हो जायेंगे। सभी ओर से हमारा उत्साह वर्धन हो रहा है।

दिनांक २९-११-८१ को लुधियाना नगर में भी आर्य वीर दल के कार्य का शक्तिशाली ढंग से संगठन करदिया गया है। श्री सुधीर भाटिया श्री आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना को नगर संचालक का पदभार सौंप दिया गया है जो बहुत उत्साही आर्य वीर हैं। और वीर दल लुधियाना जिले के कार्य को भी पुनः जागृति करने का उन्होंने हमें विश्वास दिलाया।

इसी प्रकार पंजाब प्रान्त के अन्य नगरों में से उत्साही आर्य जन हमें मिल रहे हैं ताकि हम वहां पर भी आर्य वीर दल के कार्य को शक्तिशाली ढंग से प्रारम्भ कर सके।

आर्य मर्यादा पत्रिका में यदा कदा आर्य वीर दल पंजाब को शक्तिशाली बनाने सम्बन्धी सूचनाएं तथा परिपत्र निकाले जा रहे हैं, इस सम्बन्ध में हमें सुझाव भी मिल रहे हैं तथा हम ऐसे और अधिक सुझावों का स्वागत करेंगे।

ऋषिपाल सिंह (एडवोकेट)
अधिष्ठाता,

जिस्म के सौदागरों के चंगुल से निकली ईसाई युवती की शुद्धि एवं विवाह

मेरठ, प्राप्त समाचार के अनुसार स्थानीय आर्य समाज में आयोजित एक समारोह में वैदिक मंत्र उच्चारण के बीच अनिता, विक्टम, डेक्सन एडवर्ड ने ईसाई मत छोड़कर हिन्दू वैदिक धर्म ग्रहण कर लिया।

मेरठ के प्रसिद्ध आर्य समाजी पुरोहित श्री भरत सिंह ने शुद्धि समारोह संपन्न कराया। शुद्धिकरण के उपरान्त इनके नाम [illegible] विक्टम से अनिता विक्टम के अनीता देवी तथा डेक्सन एडवर्ड के [illegible] सिंह रखे गए।

समारोह का आयोजन आर्य समाज [illegible] हिन्दू परिषद [illegible] के तत्वावधान में [illegible] इस अवसर पर अनिता एवं [illegible] सिंह को शुभ कामनाएं एवं बधाई देने के लिए भारी संख्या में लोग उपस्थित थे।

शुद्धिकरण के बाद अनिता एवं [illegible] सिंह को [illegible] वैवाहिक सूत्र में बांध दिया गया। दोनों ने अग्नि [illegible] में अग्नि [illegible] एक दूसरे के प्रति पूर्ण रूप से [illegible] जीवन जीने का संकल्प [illegible]।

[illegible] है कि अनिता को [illegible] जिस्म के सौदागरों के हाथों बेचने का प्रयास भी किया गया था किन्तु अनिता अपनी हिम्मत से वहां से बच निकली।

शहीद अंक

देश और समाज पर अपना सर्वस्व उत्सर्ग करने वाले ऐसे बलिदानियों की सूची बहुत लम्बी है जिनकी प्रेरणा का स्रोत आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द [illegible] रहे। आर्य मर्यादा ने अपने २७ दिसम्बर के एक विशेष अंक में उन सात [illegible] शहीदों का पुण्य स्मरण [illegible] का निर्णय लिया है। परन्तु यह कार्य आप सब के अनुरूप सहयोग के बिना असम्भव है, अतः इस अंक को अधिकाधिक उपयोगी बनाने के लिए वहां मौलिक और अधिकृत सामग्री की अपेक्षा [illegible] लगभग ६० पृष्ठों वाले इस [illegible] के लिए विज्ञापनों की महती [illegible]। यह अंक [illegible] [illegible], मौलिक [illegible] और आकर्षक [illegible] संग्रहणीय अंक होगा। इसके लिए अपने लेख और सुझाव के साथ-साथ विज्ञापन व आदेश शीघ्र ही भेजने की कृपा करें। इसका मूल्य २ रुपए होगा। —सम्पादक

(२ पृष्ठ का शेष)

'दुर्गुण को जितनी दृढ़ता और शक्ति से छोड़ा जाए वही ठीक है, जिससे वह फिर न आ सके' यह दृढ़ता ही तप है।

महर्षि दयानन्द को जब उनके विरोधी ज्ञान तथा तर्क में न हरा सके तो उन्होंने एक चाल चली। उन्होंने एक बाजारू औरत को खूब सजा-धजा कर स्वामी जी के पास भेजने की योजना बनाई और उससे कहाकि तुम जब वहां पहुंचो तो शोर मचा दो कि यह साधु मुझसे छेड़छाड़ कर रहा है। उसके बाद हम उस पर टूट पड़ेंगे, उसकी मुरम्मत कर देंगे और उसे सर्वत्र बदनाम भी। सब समझ कर जब वह महर्षि की कुटी के द्वार पर पहुची और उसने समाधिस्थ रूप में तपस्या का तेज उनके मुख पर देखा तो वह स्तब्ध होकर वहीं खड़ी हो गई। स्वामी जी का ध्यान जब समाप्त हुआ तो वह देखते हैं कि एक स्त्री खड़ी है और अपने आभूषण उतार-उतार कर फेंक रही है। स्वामी जी ने पूछा 'मां यह क्या कर रही है?' वह फूट-फूट कर रोने लगी और उसने सम्पूर्ण वृत्तान्त एवं षड्यन्त्र स्वामी जी को बताया। मां! शब्द सुनकर उसके हृदय की दिव्य भावना उभर आई। महर्षि के चरणों में गिर पड़ी। आंसुओं से उनके पैरों को सींचती हुई बोली. "मेरी रक्षा करो महाराज, लोभ से और पाप से मेरी रक्षा करो।" यह है इन्द्रिय निग्रह—यह है तपस्या का चमत्कार! सचमुच तप से बढ़कर जीवन निर्माण का कोई साधन नहीं।

इलाहाबाद में रामप्रसाद बिस्मिल के अनन्य साथी रोशनलाल को भी फांसी की सजा दी गई। बिस्मिल के वैदिक विचारों से उनके सभी साथी प्रभावित थे। फांसी से दो-एक दिन पूर्व जेल का अंग्रेज सुपरिन्टैंडैंट वहां निरीक्षण के लिए आया। कैदियों की कोठरी के सामने से गुजरते हुए रोशनलाल को देखकर अचानक कर वह खड़ा हो गया। उसने देखा जिसे दो-एक दिन में फांसी होने वाली है, उसके चेहरे पर दु:ख और चिन्ता की जरा भी छाया नहीं और वह अपने [illegible] के लिए प्रतिदिन की [illegible] कर रहा है। [illegible] से [illegible]—[illegible] करके क्या करोगे? कल तुम्हें फांसी मिलने वाली है?' रोशनलाल मुस्कराया और बोला: 'श्रीमन्! हम आर्य आत्मा को अमर मानते हैं, पुनर्जन्म में विश्वास करते हैं और हमारी यह मान्यता है कि हम मरते समय जिन संस्कारों को लेकर मरेंगे, वैसा ही हमारा अगला जन्म होगा। अतः मैं शक्ति, स्वास्थ्य, बल और देश भक्ति की भावना से आत्मा को सुसज्जित बना रहा हूं जिससे मेरा अगला जन्म इस देश में हो और मैं शक्तिशाली बनकर अंग्रेजी राज्य को उखाड़ने में समर्थ हो सकूं।' इस वीर को जरा भी भय नहीं, कहीं घबराहट नहीं। यह है तपस्या की शक्ति फांसी से सप्ताह भर पहले से ही फूट फूटकर रोते और यहां तक कि नमाज तक भूल जाने वाले पाकिस्तान के राष्ट्रपति भुट्टो का हाल सुना होगा। राम प्रसाद बिस्मिल और भगत सिंह की मृत्यु इतनी महान् क्या है? इसका कारण तपस्या है। 'तपसा विन्दते महत्' तपस्या से मनुष्य महत्पद प्राप्त करता है।

तप का जीवन बनाने के लिए निम्नलिखित कार्यों को संकल्प के साथ कीजिए:—

(क) अपना जीवन ईश्वर को अर्पण कर दें। जो कुछ काम करें प्रभु का समझ कर करें।

(ख) निश्चय कीजिए कि मैं सब से अधिक बनूंगा।

(ग) परिश्रम, ईमानदारी, उत्साह, दूरदर्शिता, सहानुभूति, विवेक और सरलता को अपने में विकसित कीजिए।

(घ) चिन्ता, क्रोध, जल्दबाजी, उत्तेजना, स्वास्थ्य को नष्ट करते हैं, अतः इनसे बचिए, खुशी, मधुरता और गहरी नींद डाक्टर को घर का दरवाजा नहीं देखने देते।

(ङ) विपत्तियां आने पर दुगनी शक्ति का प्रयोग कर यह दिखा दो कि हम हर विपत्ति को भी सुअवसर बना सकते हैं।

(च) हम केवल उसी की कामना करें जिससे मानवता, सत्य और स्वतन्त्रता के पथ बढ़ सकें।

इसी लिए ऋग्वेद ९।८३।१ मन्त्र में कहा है 'अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते' तप के द्वारा जो पक गए हैं, वे ही आनन्द को धारण कर सकते हैं, वे ही इसका रस ले सकते हैं। अतः आनन्द के अभिलाषी मनुष्य को चाहिए कि वह काम, क्रोधादि इन्द्रियों के विषय को जीतकर शारीरिक, मानसिक और आत्मिक तप के द्वारा ऐहिक और पारलौकिक सुख को प्राप्त करें।

—

फिजी में आर्यसमाज की सेवाओं की सराहना

सुवा—फिजी के प्रधानमन्त्री रातु सर कमीसेसे मारा ने इस उपमहाद्वीप में शिक्षा के प्रसार के लिए आर्यसमाज की सेवाओं और उसकी भूमिका की प्रशंसा की है।

वह फिजी की आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा बाद में संचालित आर्य कन्या पाठशाला के नए भवन के उद्घाटन समारोह को सम्बोधित कर रहे थे। रातु सर कमीसेसे ने पश्चिमी विभाग में भारतीय लड़कियों के लिए प्रथम स्कूल होने के नाते इसके द्वारा मार्गदर्शन करने की भूमिका की सराहना की।

इसी प्रकार सुवा में एक अन्य आर्य समाज गर्ल्ज स्कूल के स्वर्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर गवर्नर जनरल सर जार्ज कोकाबो ने उसके संस्थापकों को भारतीय समुदाय में स्त्री शिक्षा की भावना जागृत करने के लिए अपनी श्रद्धांजलि व्यक्त की।

सभा की ओर से फिजी के दो प्रमुख उपमहाद्वीपों विटी लेव्यू और वेन्युआ लेव्यू में इस प्रकार की ११ संस्थाएं चल रही हैं।

फिजी में आधमिक स्तर भारत के मिडल स्टैंडर्ड के समकक्ष) तक की शिक्षा की व्यवस्था है और विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा न्यूजीलैंड बोर्ड द्वारा दी जाती है। विश्वविद्यालयी शिक्षा की व्यवस्था दक्षिण के ९ राष्ट्रों द्वारा संयुक्त रूप से की जाती है जिनका केन्द्र सुवा में है।

इन दोनों स्कूलों के संस्थापक तीसरे दशक में भारत आए थे। पंडित अमीचन्द्र और पण्डित गोपेन्द्र नारायण पाठक १९२०-३७ में क्रमशः गुरुकुल कांगड़ी और गुरुकुल वृन्दावन से यहां आए। और स्थानीय लोगों ने उपनिवेश सरकार, भारतीय श्रमिकों के रोजगारदाताओं और गन्ना उत्पादकों के साथ मिलकर हर प्रकार का उन्हें सहयोग और योगदान दिया।

हफीज हरिशचन्द्र बन गया

मोदीनगर : शाहदरा के निकट डाकना में आज १९ वर्षीय एक मुस्लिम युवक हफीज ने हिन्दू धर्म स्वीकार किया।

आर्यसमाज की ओर से आयोजित इस शुद्धिकरण के बाद हफीज हरिश्चन्द्र हो गया।

हफीज के पिता का नाम मजीद है और वह शादी शुदा है। कहते हैं कि मुसलमान होते हुए भी हफीज हनुमान का भक्त था। कुछ माह पूर्व मुसलमान से हिन्दू बने डा० आनन्द सुमन की प्रेरणा से ही हफीज ने हिन्दू धर्म अपनाया है।

आर्यसमाज दयानन्द बाजार लुधियाना का चुनाव

लुधियाना : स्थानीय आर्यसमाज स्वामी दयानन्द बाजार का वार्षिक चुनाव श्री रणवीर भाटिया की अध्यक्षता में हुआ। जिसमें श्री देवराज कुमार को प्रधान चुना गया तथा कार्यकारिणी व अन्य सब समितियों को गठन करने का अधिकार भी उन्हें ही दे दिया गया।

आगामी अंक बंद रहेगा

आर्य मर्यादा का २७ दिसम्बर को 'शहीद अंक' विशेष सज-धज के साथ प्रकाशित हो रहा है। जिसके ६० पृष्ठों में अद्वितीय, अभिनव, मौलिक और ज्ञानवर्धक सामग्री रहेगी। अतः २० दिसम्बर का अंक उसी में समाविष्ट रहेगा। पाठक बन्धु ध्यान रखें।

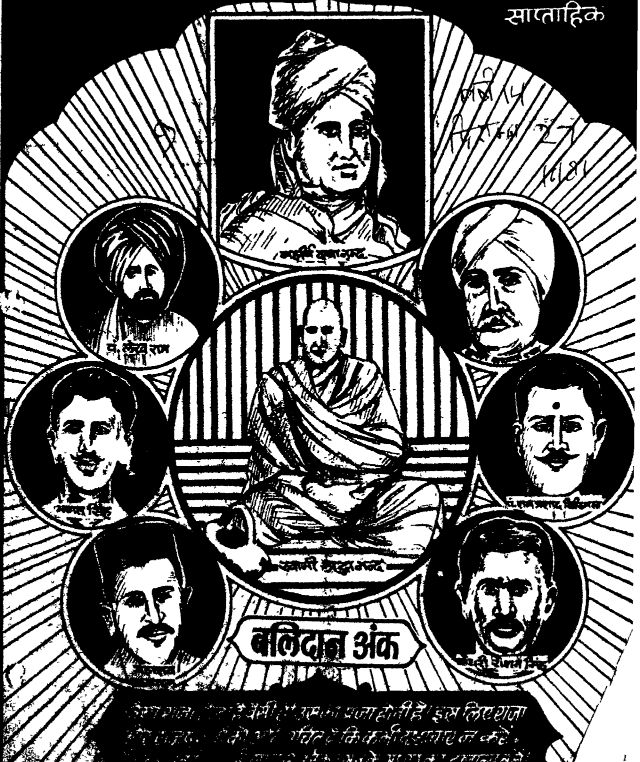
—सम्पादक

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जगजीवन प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

ओ३म्

आर्य मर्यादा

साप्ताहिक



ओ३म्

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर के मुख पत्र

का

शहीद अंक

वर्ष 14, 20-२7 दिसम्बर 1981 तदानुसार फाल्गुन, सम्वत् 2038 का संयुक्त अंक
वार्षिक मूल्य 15 रुपए। इस अंक का मूल्य 2 रुपए।

-वीरेन्द्र
सभा प्रधान

-रामचन्द्र जावेद
सभा मन्त्री

ओ३म्

आर्य मर्यादा

सम्पादकीय-

यह कहानी है बलिदान की

आर्यसमाज का इतिहास बलिदान का इतिहास है। तप और त्याग का इतिहास है। निष्ठा और आस्था का इतिहास है। इतिहास साक्षी है कि कोई भी संस्था वह धार्मिक हो, राजनैतिक या सामाजिक हो, प्रगति नही कर सकती यदि उसके पौधे को अपने खून से सीचने वाले बलिदानी न मिलें। आर्यसमाज में पिछले एक सौ ६ वर्षों में देश में जो वैचारिक क्रांति पैदा की है, उसका एक कारण यह भी कि समय-समय पर उसे ऐसे बलिदानी मिलते रहे, जो उस के आदर्शों और सिद्धान्तों के लिए अपना सर्वस्व देने को सदैव ही तैयार रहते थे। आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने अपने ही बलिदान से एक उदाहरण हमारे सामने रख दिया। अपने जीवन के अतिम युग में जब वह राजस्थान के उस समय के राजाओं और महाराजाओं के पास जाया करते थे। तो उन में से कई उन्हें कहा करते थे कि इधर उधर घूम कर वह अपना जीवन और अपना समय क्यों नष्ट कर रहे हैं। उनमें से कुछ उन्हें ऐसी सम्पत्ति देने को तैयार थे, जिसके सहारे वह आराम से बैठके अपना बाकी का जीवन व्यतीत कर सकते थे। वहां बैठे बैठे वह स्वाध्याय भी कर सकते थे। लोग उनके पास आते और वह उन्हें उपदेश भी दे सकते थे। उन्हें कहीं इधर-उधर जाने की आवश्यकता न थी। उन्हें यह भी मालूम था कि कुछ लोग उनके प्राण लेना चाहते हैं। वह अपना बचाव करना चाहते थे तो कर सकते थे। लेकिन उन्होंने एक की न सुनी और अपने लिए उन्होंने जो मार्ग निश्चित किया था, उस पर वह चलते रहे। और अन्त में उन्हें अपना बलिदान देना पड़ा। उन्हें जहर देकर उनकी हत्या की गई। इस प्रकार आर्यसमाज के प्रवर्तक ही आर्य समाज के पहले शहीद बन गए।

उसके पश्चात् शहीदों की एक ऐसी परम्परा प्रारम्भ हुई कि समय-समय पर आर्य समाज अपने शहीद पैदा करता रहा है। प. लेखराम स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज, महाशय राजपाल। हरियाणा के भगत फूल सिंह जम्मू के महाशय रामचन्द्र और दूसरे कई शहीदों ने समय-समय पर आर्य समाज-के पौधे को अपने खून से सीचा था। शहीदों की यह परम्परा केवल धार्मिक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं रही, आर्यसमाज ने राजनैतिक क्षेत्र के लिए भी अपने शहीद पैदा किए। यदि हम भारत के स्वाधीनता संग्राम का इतिहास पढ़ें, तो हमें पता चलेगा कि देश के लिए शहीद और वीर सैनानी आर्यसमाज ने दिए हैं किसी दूसरी संस्था ने नही दिए। रामप्रसाद बिस्मिल भगतसिंह, और चौ. रोशन सिंह जैसे वीरो ने हंसते-हंसते फांसी के फन्दे को चूमा था। यह सब आर्यसमाज के वातावरण में पैदा हुए, वही इनकी पालना हुई और वही उन्होंने अपने आपको अपने देश के लिए बलिदान करने का फैसला किया। जो फांसी तक नहीं पहुचते, उन्होंने एक दूसरे क्षेत्र में देश सेवा की। लाला लाजपतराय, भाई परमानन्द, स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी, आचार्य रामदेव जी और इनके साथ हजारों दूसरे देश भगत भी थे, जिन्होंने समय-समय पर स्वाधीनता के संघर्ष में अपना योगदान दिया। कई दूसरे क्रान्तिकारी भी आर्यसमाज की ही उपज थे।

विख्यात साहित्यकार और क्रान्तिकारी यशपाल की माता जी आर्यसमाज की सेवा करती रहीं। १९३२ ३३ तक क्रांतिकारी देवी सुशीलादेवी का नाम बहुत सुना गया। वह भी आर्यसमाजी विचारों की थी। उन्होंने जालन्धर के कन्या महाविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की थी। यदि कोई इतिहास का विद्यार्थी यह अनुसधान करने लगे, कि देश की स्वाधीनता के लिए जिन लोगों ने अपना योगदान दिया, उनमेंसे कितने आर्यसमाजी थे, वह इसी परिणाम पर पहुंचेगा कि बहुत बड़ी संख्या उनमें आर्यसमाजियों की थी।

लेकिन हम इन सब बलिदानियों को भूल गए। कई बार सोचता हूं कि हमारे ऊपर इनका जो ऋण है, उसे हम उसी स्थिति में उतार सकते हैं, यदि समय-समय पर हम उनको याद करते रहें। और उनके बलिदान से कुछ प्रेरणा लेकर हम आगे बढ़ने का प्रयास करें। इनमें श्री स्वामी श्रद्धानन्द, पंडित लेखराम, भगत फुल सिंह, पंडित रामप्रसाद बिस्मिल, भगत सिंह रोशन सिंह और म० रामचन्द्र, यह सब ऐसे शहीद हुए हैं, जिनके जीवन में हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। लेकिन हम उन्हें भुला चुके हैं। इस प्रकार की कृतघ्नता केवल आर्यसमाज में ही नहीं मिलेगी, सारे देश में मिलती है, हमारे देश वासी उन व्यक्तियों को बहुत कम याद करते हैं, जिनके बलिदान के कारण हम आज आजाद हुए हैं। ऐसे वातावरण में यदि आर्यसमाज के अपने इन शहीदों को ही याद नहीं करता, तो इसपर किसी को आश्चर्य न होना चाहिए. परन्तु हमारा सिर लज्जा से झुक जाता है, जब हम सोचते हैं कि हम अपने शहीदों को भुल रहे हैं, जिनसे हमें प्रेरणा मिल सकती है, हम उन्हें ही याद नहीं करते,

साप्ताहिक "आर्य मर्यादा" अपना शहीद अंक निकाल रहा है तो केवल इसलिए कि इसके द्वारा यदि हम अपने शहीदों को याद करके उनकी पावन स्मृति से कुछ नई प्रेरणा ले सकें, तो लेने का प्रयास करें, यदि इस विषय में हम कुछ लिखना चाहें, तो बहुत कुछ लिखा जा सकता है लेकिन हमने कभी उस ओर ध्यान नहीं दिया। आर्यप्रतिनिधिसभा पंजाब, इस दिशा में एक छोटा सा प्रयास कर रही है, २३ दिसम्बर को श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का बलिदान दिवस है, ५६ वर्ष पहले उन्होंने अपने धर्मप्रचार के लिए अपना बलिदान दिया था। यदि हम समय-समय पर अपने शहीदों को याद करते रहें, और जिस उद्देश्य को सामने रखकर उन्होंने काम किया था, और जिसके लिए उन्होंने अन्त में अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया था, यदि हम उसे याद करने का प्रयास करें, तो मेरा यह विश्वास है कि आर्यसमाज में एक नए जीवन का संचार हो जाएगा, मैं यह मानने को तैयार नहीं कि आर्यसमाज कुछ भी नहीं करता। आज भी बहुत कुछ कर रहा है परन्तु जो कुछ हो रहा है, उससे भी बहुत अधिक करने की आवश्यकता है, इसलिए हम अपने उन वीरों को समय-समय पर याद कर लेना चाहिए, अमर बलिदानी रामप्रसाद बिस्मिल ने फांसी लगने से कुछ दिन पहले कहा था,

नौजवानों जो तबीयत में तुम्हारी खटके,
याद कर लेना कभी हमको भी भूले भटके ॥

बिस्मिल ने यह केवल नवयुवकों के लिए ही कहा था परन्तु वास्तव में यह सब के लिए था, हम यदि अपने शहीदों को याद करते रहे, और उन्हें अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते रहें, तो संभव है इस तरह हम उस ऋण को कुछ उतार सके, जो उनका हमारे है ऊपर है, इसी उद्देश्य को सामने रखते हुए आर्य मर्यादा का यह शहीद अंक निकाला गया, यह आर्यसमाज के वीरों के बलिदान का इतिहास है, आशा है इसे पढ़ कर आर्य जनता कोई नई प्रेरणा लेकर संघर्ष के क्षेत्र में आगे बढ़ने का प्रयास करेगी,

—वीरेन्द्र
सभाप्रधान

आर्यसमाज ने मीनाक्षीपुरम् का बदला ले लिया

कोई हिन्दू इस्लाम या इसाई धर्म में प्रविष्ट होने के बाद फिर हिन्दू धर्म में वापस आ सकता है या नहीं ? इस प्रश्न पर हिन्दुओं में मतभेद रहा है। हमारे सनातनधर्मी भाई जो चले गए उन्हें वापस लेने के पक्ष में नहीं रहे। यद्यपि अब उनके विचारों में भी परिवर्तन आ रहा है। किन्तु आर्य समाज का दृष्टिकोण इस सन्दर्भ में कुछ भिन्न रहा है। वह इनको न केवल वापस लेने के ही पक्ष में हैं जो चले गए हैं प्रत्युत उन्हें भी अपने अन्दर समा लेने के पक्ष में हैं जो किसी न किसी कारणवश अभी तक हिन्दू समाज में शामिल नहीं हुए। इसलिए विगत एक शताब्दी से आर्य समाज मुसलमानों को और इसाईयों को हिन्दू बनने के लिए तैयार कर रहा है। इस संदर्भ में सबसे अधिक कार्य अमर बलिदानी श्री स्वामी श्रद्धानंद जो महाराज ने किया था। उन्होंने कई मुसलमानों को शुद्ध करके हिन्दू बनाया था। किन्तु उन्होंने जब असगरी बेगम नाम की एक मुसलमान लड़की को हिन्दू बनाकर उसका नाम शांति देवी रख दिया और उसे अपनी बेटी भी बना लिया तथा उसका विवाह तुरन्त एक सुशिक्षित हिन्दू युवक से कर दिया तो कुछ धर्मान्ध मुसलमान इसे सहन न कर सके। उनमें से एक अब्दुल रशीद ने स्वामी जी को गोली मार कर शहीद कर दिया।

इसके बाद भी यह क्रम चलता रहा। यद्यपि बीच में यह काम कुछ मध्यम पड़ गया था। पहले तो अंग्रेज इस प्रकार के मुसलमानों की पीठ ठोंकता रहा जो हिन्दुओं पर गोलियां चलाया करते थे। जब हम आजाद हो गए तो कांग्रेस के धर्म निरपेक्षवाद ने तबाही मचा दी। कई जगह मुसलमानों ने हिन्दू लड़कियों का अपहरण कर लिया। या उन्हें किसी तरह फुसला कर ले गए। यह कोई बीस-पच्चीस वर्ष पुरानी घटना है कि दिल्ली में सिकन्दर बख्त नाम के एक नौजवान ने राज शर्मा नाम की एक लड़की को फिसला लिया था। दिल्ली में बहुत शोर हुआ था। आर्यसमाज ने इसके विरुद्ध जबरदस्त आंदोलन भी किया था और इस लड़की को वापस लेने का प्रयास किया था। किन्तु सिकन्दर बख्त एक कांग्रेसी था और उसकी पीठ पर पं. जवाहर लाल नेहरू तथा दूसरे कांग्रेसी थे। आर्य समाज राज शर्मा को सिकन्दर बख्त के चंगुल से निकालने में सफल न हो सका। आज वही सिकन्दर बख्त भारतीय जनता पार्टी के महामन्त्री हैं। कांग्रेस की तरह भारतीय जनता पार्टी उर्फ जनता पार्टी उर्फ जनसंघ भी अब धर्म निरपेक्ष बन गया है अतः अब उसे कोई आपत्ति नहीं अगर कोई मुसलमान किसी हिन्दू लड़की को ले जाए।

आर्य समाज की कार्यपद्धति इस मामला में कुछ भिन्न रही है। यह एक क्रांतिकारी संस्था है। हिन्दुओं में जो कुछ कोई और दूसरी संस्था करने को तैयार नहीं होती वह आर्य समाज करने लगता है। जब इसके वीर कुछ करने का फैसला कर लेते हैं तो वह सिर पर कफन बांध कर मैदान में निकल आते हैं। स्वामी श्रद्धानन्द, पं. लेखराम, महाशय राजपाल, भगत फूल सिंह, जम्मू के पं. राम चन्द यह सब हिन्दुओं की रक्षा करते-करते शहीद हो गए। आर्य समाज को इस बात का गौरव है कि अपने धर्म की रक्षा के लिए विगत एक शताब्दी में जितने शहीद इसने पैदा किए है किसी दूसरी संस्था ने नहीं किए।

अब आर्य समाज फिर मैदान में निकला है। छः महीने हुए जब तामिलनाडु के एक गांव मीनाक्षीपुरम् में रात ही रात में तीन हजार हिन्दू हरिजनों को मुसलमान बना लिया गया। वह गरीब थे और पिछड़े हुए थे। अरब देशों से आये रुपए से उनका ईमान खरीद लिया गया। किसी को पांच सौ दिए गये, किसी को एक हजार दिया गया, किसी को पांच हजार दिए गये। और वह सब हिन्दू रात ही रात में मुसलमान बन गये। यह समाचार आर्य समाज के नेताओं के कानों तक पहुंचा। सब से पहले हैदराबाद के वीर आर्य समाज नेता श्री रामचन्द्र राव वन्देमातरम् वहां पहुंचे। कुछ दिन के बाद सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री रामगोपाल

शालवाले और महामन्त्री श्री ओमप्रकाश त्यागी भी वहां पहुंच गये। वहां स्थिति का अध्ययन करने के बाद वह इस परिणाम पर पहुंचे कि मीनाक्षीपुरम् में जो कुछ हुआ है यह एक बड़े षड्यन्त्र का परिणाम है। अरब देशों से करोड़ों रुपया वार्षिक आ रहा है। ताकि हिन्दुओं का ईमान खरीदा जा सके। इसी मध्य कुवैत के एक पत्र ने यह समाचार भी छाप दिया कि एक ऐसी योजना बनाई गई है जिसके माध्यम से हिन्दू हरिजनों को मुसलमान बनाया जाएगा और आगामी 20 वर्ष में भारत के हिन्दू बहुमत को अल्पमत बना दिया जाएगा।

आर्यसमाज ने इसे सारी हिन्दू जाति के लिए चुनौती समझा और स्वयं इसे स्वीकार करते हुए 26 जुलाई को सारे देशमें धर्मरक्षामहाभियान शुरू कर दिया। इस महाभियान ने सोई हुई हिन्दू जाति को झंझोड़ा। हिन्दुओं से कहा गया कि जागो, कब तक सोए रहोगे? इस महाभियान का एक परिणाम विराट हिन्दू सम्मेलन के रूप में हमारे सामने आया जो गत दिनों दिल्ली में हुआ था।

किन्तु आर्यसमाज केवल कहना नहीं जानता कुछ कराना भी जानता है। इसने मीनाक्षीपुरम् में जो कुछ हुआ है उसका बदला लेने का फैसला कर लिया। और हिन्दुओं को मुसलमान बनाने के जवाब में मुसलमानों को हिन्दू बनाने का अभियान शुरू कर दिया। इसका सब से पहला परिणाम यह निकला कि मीनाक्षीपुरम् में जो हिन्दू मुसलमान हो गए थे, उन में से अब बहुत से वापस आ गए हैं। इसीके साथ कई मुसलमान अब हिन्दू बना लिए गए हैं। आर्य समाज अधिक शोर नहीं डालता। चुपचाप अपना काम करना जानता है। बहुत कम लोगों को मालूम है कि उत्तरप्रदेश में विगत कुछ महीनों में कितने मुसलमान हिन्दू बनाए गए हैं। मुसलमानों के कई गांव के गांव हिन्दू बन गए हैं। आर्य प्रतिनिधिसभा हरियाणा ने मेवात में कई मुसलमानों को हिन्दू बना लिया है। पंजाब के कुछ आर्य समाजी नौजवानों ने कश्मीर के कई लड़कों और लडकियों को हिन्दू बना कर उनके विवाह कर दिये हैं। एक दो विवाह तो हिन्दू लड़कों के साथ हुए हैं और यह क्रम अब सारे देश में चल पड़ा है। न केवल यह कि जो चले गए थे वह वापस आ रहे हैं बल्कि उनके साथ कुछ और भी आ रहे हैं। इस सन्दर्भ में कुछ ऐसे भाईयों और बहनों की भी चर्चा करना चाहता हूं जिनका धर्म परिवर्तन विशेष महत्व रखता है। उन्होंने किसी भय या प्रलोभन से हिन्दू धर्म में प्रवेश नहीं लिया प्रत्युत यह समझ कर कि यह इस्लाम और इसाई धर्म से उत्तम है इसलिए उन्होंने इसे ग्रहण किया है।

बम्बई में डा. नसरुद्दीन कमाल ने हिन्दू धर्म में प्रविष्ट होकर अपना नाम आचार्य जीवन मित्र रख लिया है। डाक्टर कमाल या आचार्य जीवन मित्र का जन्म पंजाब के एक इसाई परिवार में हुआ था। वह एम. ए. करके इसाई धर्म का प्रचार करने लग गए। उनकी पहुंच पोपपाल तक हो गई। इसाई प्रचारकों की एक उच्च उपाधि बी. डी. इसाई धर्म की गहन जानकारी के लिये उन्हें दी गई। कुछ समय मुसलमानों की विख्यात संस्था दारुलालूम में भी इस्लाम बारे जानकारी प्राप्त करते रहे। वहां उन्हें दर्शन के विषय में डाक्ट्रेट से सम्मानित किया गया। 15 नवम्बर को बम्बईके शांताक्रुज आर्यसमाज मन्दिर में उन्होंने अपनी पत्नी और तीन बेटियों के साथ वैदिक धर्म में प्रवेश कर लिया। अब उनका नाम आचार्य जीवन मित्र हो गया है।

बिहारके एक कस्बा बेतिया के पुराने इमाम अब पं. जयप्रकाश आर्य बन गये हैं। जिन लोगों ने 13 दिसम्बर में हुए जालन्धर के हिन्दू सम्मेलन में उनका धुआंधार भाषण सुना था वह उनकी योग्यता और इस्लाम बारे जानकारी का अनुमान लगा सकते हैं। अब वह दयानन्द महाविद्यालय हिसार में वैदिक धर्म बारे और जानकारी प्राप्त कर रहे हैं।

हाल ही में आर्यसमाज ने एक बहुत बड़े मुसलमान को खैंच लिया है वह हैं शेख अमीर मुहम्मद। दक्षिण भारत में यह इस्लाम के सबसे बड़े प्रवक्ता समझे जाते थे। उर्दू, अरबी, अंग्रेजी, जर्मन और तामिल भाषा पर आप को पार प्राप्त है। दक्षिण भारत में सबसे बड़े इमाम के नाते इनकी पूजा होती थी। 20 दिसम्बर को आर्य समाज दीवान हाल दिल्ली में उन्होंने वैदिकधर्म ग्रहण कर लिया है। और उनका नाम अमदीश आर्य रख दिया गया है।

बम्बई के एक बहुत बड़े मुस्लिम परिवार की एक महिला जिसका नाम फातमा बेगम था अब फातमा आर्य बन गई है।

दिल्ली के शाही इमाम की एक निकटवर्ती सम्बन्धी शकीला बेगम अब आशादेवी बन गई है।

जो मुस्लिम महिलाएं हिन्दू धर्म में प्रवेश कर रही हैं वह अधिकांश इस्लाम में चार पत्नियां रखने की अनुमति के विरुद्ध रोष प्रकट करने के लिए ऐसा कर रही हैं। इनमें से एक ने कहा कि इस्लाम में महिला को एक जूती समझा जाता है। जिसे कोई पुरुष जब चाहे उतार कर फैंक दे और नयी पहन ले।

पाठक वृन्द! मैंने आपके समक्ष कुछ उदाहरण पेश किए हैं। आर्य समाज काम बहुत करता है शोर कम मचाता है। किन्तु आज वह बड़े गर्व से कह सकता है कि उसने मीनाक्षीपुरम् का बदला ले लिया है।

—वीरेन्द्र

मेरे भैया बिस्मिल

—श्रीमती शास्त्री देवी

मेरा जन्म सन् १९०१ में हुआ था। भाई रामप्रसाद बिस्मिल के ४ साल बाद मैं पैदा हुई थी। भाई जी मुझ पर बहुत स्नेह रखते थे। मेरे पिता के खानदान में लड़कियों को होते ही मार डालते थे। मेरे मारने के लिये बाबा और दादी ने माता जी को कहा, मगर माता जी ने नहीं मारा। भाई बहुत रोते थे कि बिटिया को मत मारो। मैं तीन महीने की हो गई थी, तब दादी ने माता जी से ताना मार कर कहा कि क्या लड़का है, जो इसकी इतनी हिफाजत करती है। माता जी ने बाबा के यहां से अफीम मंगाकर मुझे पिला दी। पड़ोस में थानेदार का मकान था। उनकी पत्नी हमारे घर आती थीं। उन्होंने मेरी खराब हालत देखी और कहाकि इसे क्या दे दिया? मैं दरोगा जी से कहूंगी। उन्होंने दरोगा जी से कह दिया। दरोगा जी ने दादी को बुला कर कहा कि मैं तुम को गिरफ्तार करा दूंगा। तुम लोगों ने कन्या की क्यों हत्या की? तब बहुत से इलाज किये। तीसरे दिन मुझे होश आया। फिर मां को दूध नहीं पिलाने दिया। कभी-कभी गाय का दूध छिपा कर माता जी पिला देती थीं। तीन साल तक अफीम के नशे में रखा। एक मुंसिफ साहब पड़ोस में रहते थे। उनके कोई बच्चा न था। मुंसिफ की पत्नी मेरे ही यहां से दूध मोल लेकर मुझे पिलाती रही। मैं चंगी होती गई, दो साल के बाद उनके भी बालक हुआ, मगर वे मेरी हिफाजत करती रही। कहने लगी, इसी कन्या के भाग्य से मेरे पुत्र हुआ। उनकी बदली हुई, तो मुझे मांगा और कहा मैं ही शादी करूंगी, मगर घरवालों ने नहीं दिया। भाई ने रोना शुरू किया कि मैं अपनी बिटिया को नहीं दूंगा। भाई को स्त्री समाज से बहुत प्रेम हो गया। मुझे भी बराबर साथ-साथ सन्ध्या-हवन सिखाया। आप क्रांतिकारियों के साथ चले जाते थे। मुझ से कह जाते थे किसी से कुछ न कहना। जो कह दिया तो जान से मार दूंगा। मैं लोअर मिडिल में जब पढ़ती थी, तब आपने रात को इश्तहार छपवाकर सरकारी जगहों पर अड़तालीस जिलों में लगवा दिये। पुलिस को पता चल गया कि रामप्रसाद ही सब में शामिल है। तब तक आप चार मित्र सलाह करके वायसराय को मारने को कलकत्ते रवाना हुए। बीच में इलाहाबाद रवाना हुए। गंगासिंह, राजाराम, देवनारायण और रामप्रसाद इन चारों में बहुत झगड़ा हो गया। रामप्रसाद का कहना था कि एक वायसराय को मारने से स्वराज नहीं हो सकता। जिस तरह एक रात में इश्तहार लगा दिये, इसी तरह सारे हिन्दुस्तान के अंग्रेज खतम कर दिये जाएं तो अच्छा हो। इन लोगों ने सलाह करके कहाकि पहले रामप्रसाद को ही खतम कर दो, यही काम नहीं चलने देगा। सब अंग्रेज किस तरह खतम हो सकते हैं। प्रातः समय त्रिवेणी के तट पर श्री रामप्रसाद जी

सन्ध्या कर रहे थे कि... ...ने तमंचा छोड़ दिया। पहली गोली न मालूम हुई, क्योंकि ध्यान प्राणायाम में था। दूसरी गोली कान के नजदीक से होकर निकली। कुछ सनसनाहट मालूम होने पर आंख खोलकर देखा, तो सामने-सामने तमंचा ताने खड़े हैं। उठ कर भागे। कपड़े और तमंचा वहीं पर छूट गया। जान बचा कर एक पंडित तिवारीजी के यहां पहुंचे। पंडित जी ने धीरज बंधाया, कहाकि क्या आफत आ गई। वे अपनी पहचान के थे। कुछ देर ठहर कर गायब हो गये। तब तक ये सब तिवारी जी के यहां पहुंच गये। पूछा कि यहां राम प्रसाद आये हैं। उन्होंने कह दिया कि यहां नहीं आये। इन लोगों ने बहुत ढूंढ़ा, मगर कहीं पता न मिला। ये लोग वापिस शाहजहांपुर आ गये। रामप्रसाद बंगाल की तरफ चले गये। इन लोगों ने समझा कि त्रिवेणी में गोली लगने से गिरकर मर गये। शाहजहांपुर में आकर कह दिया कि रामप्रसाद मारे गये। हमारे घरवालों ने सच मान लिया कि मर गये। उनका सब कारज भी कर दिया। फिर पिताजी बहुत घबराये कि लड़कियों की शादी भी करनी है। मैं अकेला कमाने वाला हूं उन्होंने मेरा पढ़ना भी बन्द कर दिया, अपने क्षेत्र में आकर शादी का इन्तजाम किया। जिला आगरा में पिनाहट के पास एक मौजा है। उसमें मेरे पिता की ननसाल थी, उसी के पास मेरी भी ननसाल थी। वहीं से शादी का प्रबन्ध किया। भाई का कहना था कि खूब पढ़ा कर अच्छे घर शादी करूंगा, मगर भाई के न होने से एक गरीब किसान के यहां कोसमा में शादी की। वह भला क्या कह सकती थी। जिस दिन उसकी शादी थी उसी दिन भाई शाहजहांपुर से आ गये। आप फिर लश्कर से दो तमंचे लाये। इतने में शाहजहांपुर में हद से ज्यादा चोरियां होने लगी। पुलिस चोर, बदमाशों से मिल गई तब इन लोगों ने सेवासमितियों द्वारा अपने सिर इन्तजाम रखा। मिर्जापुर से लाठियां मंगाई। बल्लमें गढ़वाई, रात-रात भर पहरा दिया। तब चोरियां बन्द हुई, फिर आप लश्कर गये। दो बन्दूकें लाये। कोसमा में आकर मेरी विदा कराई। स्टेशन पर जाकर एकान्त जगह में मेरी दोनों जांघों में बन्दूकें बांध कर भारी लंहगे में छिपा दी। फिर फर्रुखाबाद धर्मशाला में ठहरे। बिस्तर में बन्दूक बांध मेरे सिर होने रात भर रखी। आप दूर लेटे। सबेरे फिर उसी तरह बांध दी। मैं कुछ खड़ी रही, कुछ सहारे से पैर फैलाकर बैठ भी जाती थी। १२ बजे दिन बरेली पहुंच गये। वहां स्टेशन मास्टर ने भाई को पहचान कर उतार लिया। उनकी मित्रता थी। बहुत कहा कि अभी मत रोको, फिर आऊंगा, मगर वह मुझे पकड़ कर ले चले। मैंने बहुत कहा कि गठिया से मेरी टांगों में दर्द होता है। चलने से मजबूर हूं, मगर वह लिवा गये। धीरे-धीरे चले गये। भाई कुछ उदास हो गये। मगर मैं तो समझ गई। उन्होंने खाना बनवाया। मैं बाहर निकल आई और चल पड़ी। मैंने कहा, "मैं नहीं रहूंगी," उन्होंने बहुत कहा खाना खाकर चली जाना। मैं रोने लग गई। मेरी टांगों में दर्द से बैठने में बहुत तकलीफ होती है, घर ही जाऊंगी। मैं चल पड़ी। पीछे से भाई भी चल दिये। जब गाड़ी में बैठ गये तो बोले "बिट्टी तुम बहुत होशियार निकली। अब तो मैंने समझ लिया कि तुम सहायता दोगी।" शाहजहांपुर स्टेशन से तांगे में बैठकर घर पहुंच गये। मगर माता जी को कुछ न बताया। मुझसे भी मना कर दिया।

एक महीने बाद कोसमा फिर आ गई। फिर माता जी से फुसलाकर कुछ रोजगार करना चाहता हूं पिताजी से न कहना, रुपये लेकर फिर हथियार लाना शुरू कर दिया। मैं शाहजहांपुर तक पहुंचा देती थी। एक दिन अचानक पुलिस ने घर पर छापा मारा। भाई खाना खाने बैठे ही थे कि राजाराम को गिरफ्तार करके मेरे दरवाजे को जो आये सो मैंने भाग कर कहा कि पुलिस आ गई। भाई बोले कि कुण्डी बन्द करके मेरी सन्दूक में जितनी किताबें हैं, सब मिट्टी का तेल डाल कर जल्दी जला दो, मैं तो जाता हूं। आप छतों छतों सड़क पर कूद गये, सीधे स्टेशन गाड़ी में बैठकर आगरा आ गये। फिर पिनाहट पहुंच गये। वहां कौन पकड़ सकता था? पुलिस वालों ने किवाड़ तोड़ डाले। कुण्डी खोल दी। "यह क्या जला दिया!" घुड़की दी। रामप्रसाद कहां है? जल्दी बताओ।" हमलोगों ने कहा कि पता नहीं, ढूंढ़ लो। सारे सन्दूक खोल डाले। जो मिला ले गये, साइकिल उठा ले गये। पिताजी कचहरी में थे, दादी भी नहीं थी। अकेली माताजी और लड़कियां रोती रह

गई। छोटा भाई सुशीलचन्द्र गोदी में था। हम चार बहन दो भाई थे। तीन बहन की शादी हो गई, एक दस बरस की मर गई) दो बहन विवाह के बाद मर गईं एक छोटी बहन तो जहर खाकर मर गई। भाई को फांसी का हुक्म हुआ सुनकर उसने जहर खा लिया। उसकी शादी भाई ने एक जमींदार के साथ की थी। वह हमसे छः मील की दूरी पर थी, कुचेला के मौजे में। छोटा भाई बीमार हो गया, तपेदिक हो गई थी। पिताजी अस्पताल में भर्ती कर आए, डाक्टर ने कहा कि दो सौ रुपये दो, तो हम ठीक कर सकते हैं। पिताजी ने कहा कि मेरे पास अगर रुपए होते तो यहां क्यों आता? मुझे तो गवर्नमैंट ने मेट दिया, लड़का भी गया, पैसा भी गया। अब तो बहुत दिन हो गए। गणेशशंकर विद्यार्थी पन्द्रह रुपये मासिक देते हैं, उसमें गुजर करता हूं। एक हफ्ता अस्पताल में रहा, उसे खून के दस्त हुए, चौबीस घंटे में खत्म हो गया। दसवां दर्जा पास था। वह भी बोलने में अच्छा था। लोग कहते थे कि यह भी राम प्रसाद की तरह काम करेगा।

जब मैं शाहजहांपुर रहती थी, तब एक चौड़ा गड्ढ़ा था, उसमें सारे सामान रखे रहते थे। ऊपर एक तख्ता डाल दिया और मिट्टी डाल दी। आठवें दिन सफाई, तेल डालना, सुखाना पड़ता था जब कहीं ले गए तो निकाल लिए, कुछ सामान बम का भी रखते थे। एक दिन बारूद में रगड़ने से जोर से आवाज हुई। आप बच गए, निकलकर भाग गए हम लोग बहुत ही डरे मगर मिट्टी से सब ढक दिया। एक छोटा सा मकान अलग था। उसी में सब रहते था। उसी में उनके साथी भी छिपे रहते थे। मैं सबको खाना खिलाती थी। दूसरा कोई उस घर में नहीं जाता था। कुछ लोग आवाज सुनकर जाग पड़े। बन्दूकें कहां चलीं, हम लोग भी कहने लगे, देखो कहां से आवाज हुई, हम लोग तो सोते से जग पड़े, रामप्रसाद कहां है मालूम नहीं, वह तो कल से ही नहीं आया. गांव गया है, आप खंडहर गांव पहुंच गये। पांच दिन बाद आये। थाना नजदीक था। सिपाही भी आ गए। फिर मोती चौक में एक खाली मकान था। उसमें अपना काम करने लगे। बनारसीलाल बढ़ई तथा विष्णु शर्मा, जो अभी मौजूद हैं, बराबर काम करते थे। बनारसीलाल ने ही काकोरी केस में मुखबिरी की थी। विष्णु शर्मा चौदह साल की जेल भुगतकर आ गये— काकोरी केस में ' फिर रामप्रसाद सावन में मुझे लेने आए ' यहां से मुझे नहीं भेजा, आप कातिक की कह गये कि हम आवेंगे तब तक कुंवार की नौ दुर्गा में गिरफ्तार हो गए। नौमी का दिन था। प्रातः समय आप दातून कर रहे थे कि पुलिस ने छापा मारा। रामप्रसाद जल्दी निकले। आपने किवाड खोल दिए। एक पर्चा दे दिया, उसे आप पढ़कर बोले कि अभी चलता हूं। माता जी से कुछ बात करनी है। अच्छा यहीं जो कुछ कहना हो कह दीजिए। माता-पिता दोनों खड़े थे। पिता जी के पैर छूकर कहा माफी दीजिए। माता जी के पैरों पर सर रखकर बोले. "मैंने आपकी सेवा कुछ न कर पाई, माता धीरज रखना, छोटे भाई सुशीलचन्द्र को हृदय लगाया, मैं तो जाता हूं, न जाने फिर आया न आया। देश सेवा पर चाहे मेरा बलिदान ही क्यों न हो, मगर काम यही करूंगा मरने से मुझे कोई डर नहीं। जेल में कोई डर नहीं, शेर ही कटहरे में फंसे जाते हैं न कि गीदड़।" सबको प्रणाम करते हुए आप हंसते हुए चल दिये। अढ़ाई साल मुकदमा चला। सन २५ में छोटी बहन खतम हो गई। मेरे पुत्र पैदा हुआ। आप लखनऊ की जेल में थे, भानजे की सुनकर उत्सव मनाया। बहन की जहर खाकर आत्महत्या की बात सुनकर शोक भी किया। अपनी जीवनी में उन्होंने सारी बातें लिखी हैं, जो उनके हाथ की लिखी हुई हैं। उसमें कुछ बातें छोड़ दी हैं, हां मुख्य-मुख्य बातें आत्मकथा में हैं। आपके मुकदमें में जो कुछ था पिताजी ने लगा दिया, फिर पिता जी बहुत दुखित हुए। रामप्रसाद जी ने कहा कि अब तो बिल्कुल ही रोटी की भी दवा हो चुकी, मैं परवश हूं। तब आपने----—को पत्र लिखा कि जो कुछ पैसा मेरे हिस्से का हो मेरे पिता को देना, कुल सब कारखाने का हिसाब २०,००० रुपये का था, आधा दस हजार चाहिए, उसमें १७०० रुपये का कपड़ा कलकत्ता, १२००

रुपए का मद्रास, १५०० रुपए का लाहौर, २००० रुपये का शाहजहांपुर में उधार बटा हुआ था। उन्होंने लिखा कि लाहौर से जो पैसा मिले वह हमारी बहन को दे देना। मुझे उसको देने को कहा था। बाकी थोड़ा-थोड़ा करके मेरे पिता जी को देते रहना। मगर—ने एक पैसा नहीं दिया। कारखाने का सामान उनके पकड़े जाने के बाद सब अपने घर को लदवा ले गये। मेरी माताजी ने कहा कि एक चरखा मेरी पुत्री को दे दो। वह अपने हाथ से हीं कातकर कपड़ा बुनती है, उसी को पहनती है, मगर कुछ भी ध्यान न दिया। पछताकर बैठना पड़ा। फिर भी रामप्रसाद जी ने कई बार लिखा कुछ भी न दिया, बल्कि अकड़कर पिताजी से लड़े। फिर वकील को लिखा कि अब मैं जेल में हूं मेरे जो कुछ रुपये आपके यहां हैं, वह मेरे पिताजी को दे दीजिए। पांच हजार जमा थे। दो हजार अभी देना है। उन्होंने एक पाई भी न दी। कहते रहे कि देंगे। अब पिताजी बहुत दुखित हुए। माताजी बिलकुल दुख से कमजोर हो गईं। गणेश शंकर जी विद्यार्थी ने कानपुर में २००० रुपये चन्दा करके मुकदमें में सहायता की। फिर भी मेरे भाई को फांसी की सजा मिली। वकील साहब को अन्तिम पत्र में लिखा, "पिता जी, माताजी आप लोगों ने मुझसे अच्छा प्यार किया। अब एक अन्तिम निवेदन है कि एक बन्दूक मेरी बहन को दे देना बाकी छह हथियार आपके यहां रह जाएंगे। मेरे लिये आपने एक पत्र लिखा, माताजी को दिया कि बड़ी बिटिया को देना और उसे धीरज बंधाती रहना।" वह पत्र माता जी से कहीं किसी ने ले लिया। फिर न दिया। माताजी से मालूम होने पर मुझे बहुत ही दुख हुआ, पिताजी की हालत दुख से खराब हुई। तब विद्यार्थीजी १५ रुपये मासिक देने लगे। उससे कुछ गुजर चलती रही। फिर विद्यार्थीजी भी शहीद हो गये, मुझे भी बहन से ज्यादा समझते थे। समय-समय पर खर्चा भेजते थे। माता-पिता, दादी, भाई तथा दो गाएं थीं। रहने की जगह हरगोविन्द में एक टूटा-फूटा मकान बना दिया। उसमें गुजर करने लगे। वर्षा में बहुत मुसीबत उठानी पड़ी। फिर पांच सौ रुपए पं. जवाहरलाल जी ने भेजे। तब माता जी ने कहा कि कुछ जगह ले लो। इस तरह के दुख से तो बचें। नई बस्ती में जमीन अस्सी वर्ग गज ले ली। एक छप्पर एक कोठरी थी। उसमें गुजर की। पिताजी भी चल बसे। माताजी बहुत दुखित हुईं। एक महीने के बाद मैं भी विधवा हो गई। अब दोनों मा-बेटी दुखित थीं। मेरे पास एक पुत्र तीन साल का था, माता जी बोलीं कि मैं तो शरीर से कमजोर हूं किस तरह दूसरे की मजदूरी करूं। बिटिया अब क्या करना चाहिए। मैंने कहा कि जहां तक मुझसे होगा, माताजी आपकी सेवा करूंगी, अब आप धीरज बांधो। ईश्वर की यही इच्छा थी। माता जी के पास रामप्रसाद जी के बटन सोने के तीन तोले के थे। उन्होंने किसी को नहीं बताए, छिपाए रहीं, जाने कैसा समय हो, इसलिए कुछ तो पास रखना चाहिए। पिता जी के स्टाम्प खजाने में दाखिल किये, दो सौ रुपये वह मिले, फिर बटन बेच दिये। फिर मैंने ईंट लकड़ी लगाकर तिबारा तथा उसके ऊपर एक अटारी बनवाई। ऊपर माता जी ने गुजर की नीचे आठ रुपये में किराये पर उठा दिया। आठ रुपये में मैं, माताजी तथा बच्चा रहते थे बहुत ही मुसीबत से। एक साथ कभी-कभी खाना प्राप्त होता था। मैंने एक डाक्टर के यहां खाना बनाने का काम छह रुपये में कर लिया। कपड़े की कमी से बहुत ही दुखी रहे। बच्चा सयाना हुआ; माता जी ने सबसे फरियाद की कि कोई इस बच्चे को पढ़ा दो, कुछ कर खायेगा। मगर शाह-जहांपुर में किसी ने ध्यान न दिया। मैंने अपनी मेहनत से पांचवां दर्जा पास करा दिया, फिर तो पैसे का काम था। मजदूर होकर मजदूरी से गुजर की। कोसमा में तीन बीघा खेत था, वह भी कर्जे में रखा। कभी-कभी कोसमा में भी रह जाती थी। बिना पैसे कौन किसका होता है? यहां के लोगों में कोई भी मुंह से नहीं बोलता था। मैं अपनी मुसीबतों को लिख नहीं सकती। बहुत ही दुख उठाए। मेरी माता जी भी बहुत दुखी

(शेष पृष्ठ ४३ पर)

बलिदानी माताओं के बलिदानी सपूत

(सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम. ए. एल. टी.)
१७५ जापुरा बाजार, गोरखपुर

आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में लिखा है "गन्दे से गन्दा स्वदेशी राज्य अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से अच्छा है।" इस वाक्य के साथ महर्षि ने सबसे पहले राष्ट्रीयता की आवाज उठाई। इसके बाद कलकत्ता नगरी में स्वामी जी के अनेक भाषण हुए। एक अंग्रेज पादरी ने तत्कालीन वायसराय लार्ड नार्थब्रुक से स्वामी जी के भाषणों एवं विलक्षण प्रतिभा का वर्णन किया। लार्ड नार्थब्रुक ने १९८० में स्वामी जी से मिलने की इच्छा प्रकट की। स्वामी जी उनसे मिलने गए। पहले तो नार्थब्रुक ने पूछा कि क्या उन्हें अपनी सुरक्षा के लिए सरकारी सहायता की आवश्यकता है? स्वामी जी ने कहा 'मुझे किसी से किसी प्रकार का भय नहीं। मेरे ऊपर तो सर्व-रक्षक प्रभु का वरद हस्त है और वह प्यारा 'ओ३म्' मेरी रक्षा कर रहा है अतः मुझे सरकारी संरक्षण नहीं चाहिए। आगे नार्थब्रुक ने स्वामी जी से कहा "पण्डित दयानन्द' यदि ऐसी बात है तो क्या आप इस देश को ब्रिटिश शासन द्वारा दिए गए शान्ति और सुख के वरदान के सम्बन्ध में अपनी प्रशंसा के कुछ उद्‌गार प्रकट करेंगे और उपदेशों के समय की जाने वाली प्रार्थनाओं के समग्र भारत पर ब्रिटिश शासन बने रहने की प्रार्थना भी करेंगे।" स्वामी दयानन्द ने बिना किसी भय और संकोच के कहा "मैं किसी भी स्थिति में इस प्रकार के प्रस्ताव को स्वीकार नहीं कर सकता, क्योंकि यह मेरा दृढ़ विश्वास है कि मेरे देशवासियों के विकास के लिए और संसार के राष्ट्रों में सम्मानपूर्वक स्थान प्राप्त के लिए भारत वर्ष शीघ्र ही स्वाधीनता प्राप्त करे। मैं तो प्रति-दिन यह प्रार्थना करता हूं कि प्रभु, शीघ्र से शीघ्र हमारे देश को आपके राज्य से छुटकारा दिलाए ताकि यह निर्धन देश आपकी लूट खसोट से ज्यादा दरिद्र न हो जाय।"

स्वामी जी की यह राष्ट्र भावना आर्य समाजियों में कूट कूटकर भरी हुई थी। यही कारण है कि गांधी जी के आन्दोलन में आर्य समाजी नब्बे प्रतिशत से भी अधिक जेल गए और हिंसात्मक क्रान्तिकारियों पर आर्यसमाज के इन विचारों का बहुत अधिक प्रभाव था। दो बलिदानी वीरों की बलिदानी माताओं की घटना सुनिए। पहले शहीद भगतसिंह की और उसके बाद रामप्रसाद बिस्मिल की।

कहते हैं कि रामप्रसाद बिस्मिल की मां फांसी के बाद रोने लगी। जब लोगो ने उन्हे समझाया और सान्तवना देनी चाही तो मां ने कहा "मैं अपने पुत्र के बलिदान से व्यथित होकर नहीं रो रही हूं। यह तो मेरा सौभाग्य है कि मेरा पुत्र देश के लिए बलिदान हो गया। परन्तु मैं आज इसलिए रो रही हूं कि अब मेरे पास मेरा दूसरा पुत्र नहीं है, जिसे अब जब अन्य मातायें अपने पुत्रों को स्वतन्त्रता की वेदी पर बलिदान होने के लिए भेज रही होंगी, मैं भेज सकूंगी।

शहीदे आजम भगतसिंह की मां जो बाद में पंजाब माता कहलाईं—मोरावली की रहने वाली थीं। इनके पिता प्रसिद्ध क्रान्तिकारी थे। १८९८ ई. में उनका विवाह आर्यसमाजी रीति से हुआ। सितम्बर १९०७ ई. में

भगतसिंह का जन्म हुआ। विद्यावती के पति और देवर पर भी आर्य समाज का प्रभाव था और वे भी देशसेवा में लगे हुए थे। भगतसिंह अपनी मां को बेबे कहते थे। भगतसिंह जब सोलह-सत्रह बरस के थे तो एक व्यक्ति ने उन्हें बताया था कि उनके पुत्र को 'तख्त' या 'तख्ता' में से एक मिलेगा। भगतसिंह को फांसी होने के एक दिन पूर्व मां बेटे से मिलने आई तो बोली "बेटा, इसे मत छोड़ना, एक दिन तो मरना ही पर मरना वह जिसे सारा संसार याद करे और रो उठे। मैं खुश हूं कि मेरा बेटा ऊंचे और अच्छे कार्यों के लिए बलिदान हो रहा है। मेरी इच्छा है कि फांसी के तख्ते पर खड़ा होकर मेरा पुत्र 'इन्कलाब जिन्दाबाद' का नारा लगाए।" २३ मार्च १९३१ ई० को भगत सिंह को फांसी हुई तो वह रोई नहीं। इस बहादुर मां के बहादुर बेटे ने स्वर्णाक्षरों में लिखने योग्य शब्द अपनी मां से कहे "बेबे जी, रोना मत, ऐसा न हो कि आम पागलों की तरह रोती फिरें। लोग क्या कहेंगे कि भगतसिंह की मां रो रही है।" यह मां अपने पुत्र के बलिदान हो जाने के बाद १९३४ ई० तक घोर संकट में रही। १९३९-१९४० ई० में उनके दूसरे बेटे कुलतार सिंह और बलबीर सिंह स्वतन्त्रता आन्दोलन के सिलसिले में जेल गए। १९५१ ई० में उनके पति किशनसिंह दिवंगत हो गए।

इनके जीवन की एक मार्मिक घटना यह हुई कि २० अगस्त १९६५ ई० को भगतसिंह के अनल साथी बटुकेश्वरदत्त का निधन हो गया। दत्त की इच्छानुसार उनका अन्तिम संस्कार फिरोजपुर में सतलुज के किनारे वहीं किया गया जहां कभी भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव का किया गया था। उस समय विद्यावती शोक विह्वल हो गईं और आंसुओं के साथ बोली—"तुम चारों तो यहां इकट्ठे हो गए मुझे भी अपने पास बुला लो।" जनवरी १९७३ ई० को पंजाब सरकार ने उन्हें 'पंजाब माता' के सम्मान से विभूषित किया।

भगतसिंह दयानन्द कालेज के छात्र थे। इस संस्था पर आर्य समाज के नेता महात्मा हंसराज एवं लाला लाजपतराय का बहुत प्रभाव था। विद्यावती तो आर्य समाजी थी हीं, भगतसिंह को क्रान्ति एवं देशभक्ति की प्रेरणा 'मां' ने ही दी थी। भगतसिंह के क्रान्ति के दिनों का इतिहास आर्य समाज की प्रसिद्ध संस्था गुरुकुल विश्व-विद्यालय कांगड़ी से सम्बन्धित है। भगतसिंह के साथी क्रान्तिकारी एवं कहानी उपन्यास लेखक यशपाल भी कांगड़ी के छात्र थे। भगतसिंह अपने फरारी के दिनों में कांगड़ी में रहते थे।

श्रीमती विद्यावती का बलिदान-मैं इसे बलिदान ही कहूंगा क्योंकि अपने को फांसी चढ़वाना वीरता है पर अपने पुत्रों को राष्ट्र के लिए बलिदान की प्रेरणा देने वाली 'मां' के बलिदान की कल्पना माता ही कर सकती है—१ जून १९७५ ई० को ९८ वर्ष की अवस्था में दिल्ली में हुआ। धन्य है, पंजाब माता तूने देश को भगत सिंह सा अनमोल रत्न दिया। तू, पंजाब माता नहीं, सम्पूर्ण भारतवासियों की 'मां' भारत माता की प्रतिमूर्ति है। तेरे चरणों में हमारा सादर प्रणाम है।

(२)

राम प्रसाद बिस्मिल को गोरखपुर जेल में फांसी हुई। बिस्मिल ने फांसी के आदेश के बाद अन्तिम दिनों में अपनी आत्म कथा लिखी है। उसमें उन्होंने अपनी मां की कहानी भी लिखी है। वे लिखते हैं "ग्यारह वर्ष की अवस्था में उनका विवाह मुरलीधर से हुआ था। विवाह के बाद उन्होंने पढ़ना सीखा। बिस्मिल सहित उनके दो पुत्र और तीन पुत्रियां उत्पन्न हुई।" आगे वे लिखते हैं "मेरी मां का मेरे विचारों के निर्माण में बहुत बड़ा हाथ था। वे मेरे धर्म कार्यों और शिक्षा में बड़ी सहायता करती थीं। धार्मिक और देश भक्ति विषयक पुस्तकें पढ़ने के लिए पैसे देती थीं। वे मुझे अच्छे कार्यों के लिए सदा उत्साहित करती थीं, वे मेरा उत्साह भंग नहीं होने देती थी कारण बहुधा उन्हें पिता जी की डांट फटकार सुनने को मिलती थी। मुझे अपने जीवन में जो साहस, बल और देशभक्ति की प्रेरणा मिली वह मेरी माता और गुरुदेव सोमदेव सरस्वती की कृपा का परिणाम है, जब मैंने आर्यसमाज में प्रवेश किया तब मां से खूब वार्तालाप होता। मां ने मुझे आर्यसमाज के सिद्धांतों, और उपदेशों से परिचित कराया। आर्यसमाज के नेता भाई परमानन्द को जब फांसी की सजा हुई और मैंने पत्रों में पढ़ा तब अपने गुरु के पास जाकर उसका बदला

लेने और देश को अंग्रेजों के चंगुल से मुक्त कराने का वृत लिया, गुरु ने कहा 'बेटा, यह कठिन कार्य है, इसके लिए तप और साधना चाहिए, ईश्वर में विश्वास कर आपने मार्ग पर बढ़ते चलो, और मैं अपने मार्ग पर चल पड़ा," रामप्रसाद बिस्मिलने आगेलिखा हैं' यदि मुझे ऐसी मां न मिलती तो मैं अति साधारण व्यक्ति की भांति संसार चक्र में फंस कर जीवन निर्वाह करता, घर में मां और समाज के साप्ताहिक सत्संगों में गुरुदेव की प्रेरणा से मैं जीवन में आगे बढ़ने के लिए कृत संकल्प हुआ, मां ने ही मुझें सत्यार्थ प्रकाश के आधार पर "मन्दे से मन्दा स्वदेशी राज्य अच्छे से अच्छे विदेशी राज्य से अच्छा है" कह कर क्रांतिकारी जीवन की शिक्षा और प्रेरणा दी, क्रांतिकारी जीवन में भी उन्होंने वैसी ही सहायता प्रदन की जैसे इटली के क्रांतिकारी मेजिनी की उनकी माता ने की थी," बिस्मिल ने आगे लिखा, मां! महान् कष्ट में तुम ने मुझे अधीर नहीं होने दिया, सर्वैव अपनी प्रेम भरी वाणी सुनाते हुए सान्तवना देती रही, सदैव तुम्हारी दया की छाया में मैंने अपने जीवन में कोई कष्ट अनुभव नहीं किया, इस संसार में मेरी किसी भी भोगविलास या ऐश्वर्य की इच्छा नहीं, केवल एक तृष्णा है कि एक बार तुम्हारे चरणों की सेवा करके अपने जीवन को सफल बना लूं, किन्तु यह इच्छा पूर्ण होती नहीं दिखाई देती, और तुम्हें मेरी मृत्यु का दुःखद समाचार सुनाया जाएगा, मां, मुझे विश्वास है कि तुम यह समझकर धैर्य कारण करोगी कि तुम्हारा पुत्र माताओं की माता भारत माता की सेवा में अपने जीवन को बलिवेदी की भेंट कर गया और उसने तुम्हारी कोख को कलंकित नहीं किया, स्वाधीन भारत में जब इतिहास लिखा जाएगा तो किसी पृष्ठ पर उज्जवल अक्षरों में तुम्हारा भी नाम लिखा जाएगा', बिस्मिल को फांसी होने से पहले शिव वर्मा के साथ रामप्रसाद बिस्मिल की मां गोरखपुर जेल में अपने पुत्र से मिलने गई, अपनी स्नेहमयी आदर्श रूपा मां के प्रति श्रद्धा स्नेह, प्रेम के अश्रु उमड़ पड़े और वह रो पड़ा, राम प्रसाद बिस्मिल की मां ने कहा "मैं तो समझती थी कि मेरा बेटा बहादुर है, जिसके भय से अंग्रेज सरकार कांपती है, मुझे पता न था कि वह मौत से डरता है ' यदि तुम्हें रो कर ही मरना था तो व्यर्थ ही इस काम में आए'" राम प्रसाद बिस्मिल की आंख में मौत के भय के आंसू न थे पर मां के प्रति श्रद्धा और प्रेम के आंसू थे ' इस दृश्य को देखकर जेल के अधिकारियों के मुख से निकल पड़ा "वीर माता का पुत्र हो सकता है,"

राम प्रसाद बिस्मिल फांसी की अन्तिम घड़ी तक अविचल प्रसन्न और सामान्य थे : उन्होंने मरते समय (विश्वानि देव) के आठों मंत्र पढ़े और हंसते-हंसते उस फांसी की रस्सी को चूम लिया,

कहते हैं कि राम प्रसाद बिस्मिल की मां फांसी के बाद रोने लगी ' जब लोगों ने उन्हें समझाया और सान्तवना देनी चाही तो मां ने कहा "मैं अपने पुत्र के बलिदान से व्यथित होकर नहीं रो रही हूं, यह तो मेरा सौभाग्य है कि मेरा पुत्र देश के लिए बलिदान हो गया, परन्तु, मैं आज इस लिए रही हूं कि अब मेरे पास मेरा दूसरा पुत्र नहीं है, जिसे, जब अन्य मातायें अपने पुत्रों को स्वतन्त्रता की वेदी पर बलिदान होने के लिए भेज रही होगी, मैं भेज सकूंगी," उन का एक पुत्र रमेश पहले ही दवा के अभाव में मर चुका था, ऐसे समय क्या वीर माता के यह शब्द ससार के इतिहास मे कहीं देखे और कहीं सुने गए हैं ' मां का निधन १९५५ ई. में हुआ, धन्य है मां! तुम्हारा बलिदान, तुम्हारा त्याग और तुम्हारी प्रेरणा कहां मिल सकती है? माखन लाल चतुर्वेदी ने तुम्हारे जैसे वीरों के लिए 'पुष्प की अभिलाषा' शीर्षक कविता में बलिदानियों के लिए लिखा है :—

चाह नहीं सुरबाला के गहनों में मैं गूंथा जाऊं,
चाह नहीं प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊं,
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूं भाग्य पर इठलाऊं,
चाह नहीं सम्राटोंके शव पर हे हरि! मैं डाला जाऊं?
तो क्या चाहता है फूल।
मुझ तोड़ लेना बनमाली!
उस पथ में देना तुम फेंक।
मातृभूमि पर शीश चढ़ाने,
जिस पथ जाते वीर अनेक!

शहीद की दुल्हिन

(यशपाल आर्य बन्धु)

जहां न पहुंचे रवि वहां पहुंचे, कवि" किसी विद्वान का यह कथन सर्वथा यथार्थ है। कवि की उड़ान कभी-कभी रवि की गति को भी मात दे देती है। कवि लोग कभी-कभी ऐसी बात कह देते हैं कि जिसे सुन कर सामान्य जन अचम्भे में पड़ जाते हैं। ऐसी ही एक बात आर्य जगत के सुप्रसिद्ध कवि स्वर्गीय पण्डित प्रकाश चन्द्र 'प्रकाश' ने भी कही थी। इन पंक्तियों के लेखक ने जब उसे पढ़ा तो वह भी अचम्भे में पड़ गया और उसे कवि की कल्पना या उड़ान समझा था—प्रकाश जी ने एक स्थल पर लिखा है—

वो कोई और होंगे कि जो मरने से डरते हैं।
वतन पर मरने वाले मौत को दुल्हिन समझते हैं।

तब यह बात कुछ अटपटी सी लगी थी क्योंकि मौत और दुल्हिन का कोई सम्बन्ध प्रतीत नहीं हो रहा था। लेखक सोच भी नहीं सकता था कि वह वह मौत जिस का नाम सुनने मात्र से लोग कांप उठते हैं, उसे कोई दुल्हिन के रूप में भी स्वीकार सकता है। ऐसी ही एक उड़ान विश्व कवि रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने भरी थी। तब; जब उसने मृत्यु को अपने प्यारे श्याम के रूप में देखा था। लेखक उसे भी कवि एक उड़ान ही समझा था। पर जब महर्षि दयानन्द ने लिखा कि "मृत्यु से डरना मूर्खों काम हैं" तब उसे सोचने का कुछ अवसर मिला। और जब महात्मा गांधी ने मृत्यु को पुत्र—जन्मोत्सव के रूप में स्वीकारा तो लेखक इस विषय पर और मनन करने को बाध्य हो गया। क्योंकि न तो महात्मा गांधी ही कवि थे न महर्षि दयानन्द ही। मृत्यु भयानक नहीं, यह बात भी समझ आई। मृत्यु प्रभु का संदेश है, यह बात भी समझ आई कि 'मृत्यु दुल्हिन है' यह बात फिर भी समझ नहीं आ रही थी। रहस्य तब खुला कि जब लेखक अमर शहीद सरदार भगत सिंह का जीवनवृत्त पढ़ा। तब लेखक को अपनी भूल एवं पण्डित प्रकाश चन्द्र 'प्रकाश' की यथार्थ उक्ति एवं सच्ची उड़ान का पता चला। और "कवय: क्रांतिदर्शिन:" के अनुसार कवि की क्रांतिदर्शिता का यथार्थ बोध हुआ।

भोली महिला को क्या पता था कि भगत सिंह देश प्रेम की अग्नि के सम्मुख मृत्यु देवी को मर चुका है और कल वह उससे फेरे लेगा अगले दिन जब कोठरी से निकाल कर उन्हें नहाने के लिए पानी दिया गया, तो तभी वे समझ गए कि बारात की तैयारी है और जब वर यात्रा से पूर्व वर को नहलाया जाना भी आवश्यक होता है और बारात भी प्राय: सायंकाल को ही चढ़ती है तो फिर यह सब प्रक्रियायें पूरी कैसे न होतीं। उस रात तीन मित्रों की बारात चढ़नी थी। यह ठीक है कि दुल्हा अपनी शादी पर स्वयं नहीं नाचता-गाता पर वह अपने यार की शादी पर तो नाच-गा ही सकता है। बस फिर क्या था००

बात इस प्रकार है—साईमन कमीशन के विरुद्ध एक

विशाल जुलूस का नेतृत्व कर रहे पंजाब केसरी लाला लाजपत राय पर निमर्मता पूर्वक लाठियों का प्रहार करने वाले साण्डरस को मौत के घाट उतारकर और इस प्रकार अपने प्रिय नेता के खून का बदला लेने के पश्चात् क्रांतिकारियों की आगामी योजना ऐसम्बली हाल में बम्ब फैंकना थी। डी. ए. वी. कालेज और लाला जी के कौमी कालेज में पढ़े, उन्हीं के प्रिय एवं परम भक्त सरदार भगत सिंह तथा उनके साथी बटुकेश्वर दत्त को इस जोखिम भरे महान कार्य के लिए नियुक्त किया गया। ऐसम्बली हाल में इन्कलाब जिन्दाबाद के नारों के साथ दोनों वीरों ने बम्ब फैंके। और फिर कुछ लाल रंग के पर्चे भी फैंके जिनका आशय यह था कि—"बहारों को सुनानेके लिये विस्फोटके बहुत ऊंचे शब्द की आवश्यकता होती है।" यद्यपि ये दोनों वीर वहां से सरलता से भाग सकते थे किन्तु वे भागे नहीं और निर्भयतापूर्वक अपनी गिरफ्तारी दी। वे भागते भी कैसे, इतिहास को नया मोड़ जो देना था उन्हें। अतः वे वन्दी बना कर जेल में डाल दिये गये जहां उन्हें नाना यातनायें दी जाने लगीं। शहीद के अपने शब्दों में—

उसे फ़िकर है हरदम नया तर्जे जफा क्या है,

हमें यह शौक देखें तो सितम की इन्तहा क्या है।

बात तभी की है। सरदार भगत सिंह जब जेल की कोठरी में बन्द पड़े थे एवं अगले ही दिन उन्हें फांसी के झूले पर झुलाया जाना था, तभी वीरभूमि पंजाब की एक वीरांगना जो उनकी वीरता और शौर्य पर मोहित हो चुकी थी एवं मन ही मन उनका वरण भी कर चुकी थी, उनसे मिलने के लिए अकेले ही जेल में पहुंच गई। सरदार भगत सिंह उस अपरिचित महिला को देखकर बड़ी आत्मीयता से पूछने लगे कि "देवी तुम कौन हो? और ऐसे समय में जबकि मुझ से मिलने का साहस बड़े-बड़े साहसी भी नहीं कर पा रहे हैं, जबकि ऐसे समय में मुझ से मिलना अपने लिए घोर संकटों और विपत्तियों को निमंत्रण देना हैं, तुम अकेली क्यों चली आई हो? अतः हे देवी! बताओ तुम कौन हो? और कैसे आई हो?" उस वीर महिला का मुखमण्डल नारी के सहज स्वाभाविक आभूषण लज्जा की दीप्ति से दमक उठा और वह आंखें चुराती हुई, संकोच करती हुई, सिमटी सी बोली कि "मैं आप की मंगेतर अर्थात् भावी पत्नी हूं।" विस्मय भरी दृष्टि से सरदार बोले—"मेरी मंगेतर, मेरी भावी पत्नी?" और फिर बड़ी गम्भीरता के साथ बोले—"देवी! तुम भ्रम में हो, तुम्हें किस ने भुलावे में डाल दिया है? अरे! मेरी तो मंगनी कब की हो चुकी है। कल दोपहर को तो मेरी शादी भी होने जा रही है। तुम व्यर्थ ही यहां चली आई हो।" उस महिला ने अपने भाग्य को कोसते हुए ठण्डी आह भरी और बोली—"वह सौभागिन कौन है कि जिससे आप की शादी होने जा रही है?" वीर का सीना स्वदेश-प्रेम के भावों से फूल उठा। मुखमण्डल ओजस्वी हो उठा और वीरोचित स्वाभिमान से वह बोला—"फांसी" महिला के आंखों से टप-टप आंसू बहने लगे। और मन ही मन उस वीर को प्रणाम कर विदा हुई। पंजाबी के किसी कवि ने भगत सिंह के उत्तर को निम्न शब्दों में चित्रित किया है:—

तू भुल्ले राह पई जानिये, किस दित्ता भुलेखा पा।
मेरी मंगनी कद दी हो गई, मेरे पूरे हो गये चा॥
अज लगेगी मेंहदी रात नूं, सेहरा देसी रूप चढ़ा।
मेरे सोहणे वीर पंजाब दे, मैंनूं हत्थी लैणगे चा॥
काहनूं भुल के आई एं भोलिये काहनु भरनी ऐं
ठण्डी साह॥

भोली महिलाको क्या पता था कि भगत सिंह देश प्रेमकी अग्नि के सम्मुख मृत्यु देवीको वर चुका है। और कल वह उस से फेरे लेगा। अगले दिन जब कोठरी से निकाल कर उन्हें नहाने के लिए पानी दिया गया. तो तभी वे समझ गये कि बारात की तैयारी है। और जब वर यात्रा से पूर्व वर को नहलाया जाना भी तो आवश्यक होता है और बारात भी प्रायः सायंकाल को ही चढ़ती है। तो फिर वह सब प्रक्रियायें पूरी कैसे न होती, उस रात तीन मित्रों की बारात चढ़नी थी, यह ठीक है कि दूल्हा अपनी शादी पर स्वयं नहीं नाचता-गाता पर वह अपने यार की शादी पर तो नाच गा ही सकता है, बस फिर क्या था—इन्कलाब जिन्दाबाद के नारों के साथ वीर अपनी मस्ती में झूम उठे मानों सभी यही गा रहे हों—"आज मेरे यार की शादी है," पर यह क्या? यह यार लोग आपस में लड़ने-झगड़ने क्यों लग गए? जैसा कि अन्य कैदियों ने बताया, उनका

झगड़ा इस बात पर था कि फांसी के फंदे को सब से पहले कौन चूमेगा, जयमाला पहले कौन डलवायेगा ? इतिहास साक्षी है कि जयमाला डालने के लिए दुल्हिन के हाथ उठ ही नहीं रहे थे, तभी उतावले उन नवयुवकों ने स्वयं आगे बढ़कर वह जयमाला अपने गले में डाल ली और उस विचित्र दुल्हिन को गले लगा लिया। धन्य है भगत सिंह, धन्य है उसका बलिदान। जिस मृत्यु के नाम से ही लोग भयभीत हो उठते हैं। उसका ऐसा आलिंगन कि जैसे सुहाग मिलन हो। सत्य है :—

मरने वाले के होठों पे तबस्सुम की झलक।
मौत ने वस्ल का पैगाम दिया हो जैसे।।

(आर्य निवास, चन्द्र नगर, मुरादाबाद—३२)

लजाई न गोद आर्य बिस्लिम सपूतने

वीर-रण-धीर लाल भारत माता के प्रिय,
लजाई न गोद आर्य बिस्मिल सपूत ने !
मात ऋण निवारण हेत सुख त्याग चले,
किया था अमिट कार्य बिस्मिल सपूत ने !!

रग-रग देशाभिमानता का भरा ओज,
लिया दृढ़ व्रत आर्य बिस्मिल सपूतने !
कठिन कराल-काल जाल था गेरों का जामें,
रखा भाव अनिवार्य बिस्मिल सपूतने !!

(२)

वीरों से न खाली कभी रही न भारत धरा,
अग्रियों की फिरंगी फौज-देख घबराई थी !
वही नङ्ग-अङ्ग-रङ्ग देश के सपूत ऊँच !
आजादी की बुलन्द-सबिगुल बजाई थी !!

वही था सुदृढ़ वपु सोभित जनेऊ कन्धे,
तरुण, अरुण-तेज-शक्ति को बताई थी !!
बिस्मिल विशाल भाव के थे वीर पुंज बड़े,
देश के दीवाने, बाजी प्राण की लगाई थी !!

(३)

अभय निशंक रहे काल बन दुश्मनों के,
जीते जी न हाथ लगे, रखे हाथ मूंछ पे !
शेर-सा स्वरूप सज, बीहिड़ वनों में रहे,
भेड़ों के समान भागे, रखे हाथ मूंछ पे !!

देख ले ! गौरंग हम कभी न रहेंगे वीर—
गुलाम तुम्हारे आगे रखा हाथ मूंछ पे !
पीठ न दिखाई आगे वार कर खल दल !
खड़े रहे शेर सम, रखा हाथ मूंछ पे !!

—कस्तूर चन्द 'घनसार'

बलिदानी

आते रहें स्मरण हम को वे,
मभण जयी निज जन मानी,
मातृ भूमि की परवशता की,
पीर जिन्होंने थी जानी।
उन की परम्परा अक्षय हो,
जो दधीचि से बलिदानी,
वही जाति है वही ज्योति है,
वही पुनीत पवन पानी।

—राष्ट्र कवि मैथिली शरण गुप्त

दीप न ढूंढो

यह हिन्द है, हर शक्ल.
यहां नूर उगलती।
महलों की तरह रोशनी,
सड़कों पे मचलती।
कब्रों पे शहीदों की,
मगर दीप न ढूंढो।
यह चोर गली है,
यहां माचिस नहीं जलती।

—नेपाली

बलिदान कामना

चाह नहीं सुरबाला, के गहनों में गूंथा जाऊं,
चाह नहीं देवों के सिर पर चढ़ूं, भाग्य पर इठलाऊं,
चाह नहीं प्रेमी माला में बिंध प्यारी को ललचाऊं,
चाह नहीं सम्राटों के शव पर, हे हरि डाला जाऊं,
मुझे तोड़ लेना वनमाली उस पथ पर देना तुम फेंक,
मातृ भूमि पर शीश चढ़ाने, जिस पथ जाएं वीर अनेक।

—माखनलाल चतुर्वेदी

......जो होता बलिदान है

कहने को सम्राट बड़ा है, और सुखी धनवान है
सब से बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है

(१)

पाकर जन्म यहां जो रहता, दो दिन तिनके जोड़ कर
आज नहीं तो कल चल देगा, दुनियां से मुख मोड़ कर
भेंट चढ़ा दे जो तन-मन की सच्चा उस का ज्ञान है
सबसे बड़ा वही है जग में जो होता बलिदान है

(२)

इस जग में हर चचल मानव, अपना ही घर भरता है
जीता है अपनों की खातिर, अपनों पर ही मरता है
जो औरों के लिए उजड़ता, जग में उस का मान है
सबसे बड़ा वही है जग में जो होता बलिदान है

(३)

श्रद्धा है वरदान भक्ति का, सुन्दर त्याग समस्या है
अपनी धुन पर मर मिट जाना सबसे कठिन समस्या है
यही समस्या जो हल कर ले, उस का ही जय-गान है
सबसे बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है

(४)

मरने की धुन वह मस्ती है, जो ताजों को ठोकर दे
घनी-अन्धेरी रातों को भी, झिलमिल पूनम कर दे
नस-नस में है आग लगी, तो होठों पर मुस्कान है
सबसे बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है

(५)

जिन को सुख प्यारा है जग में, वे करते हैं प्रार्थना
जो चाहें ऐश्वर्य, करें वे, मन्दिर-मन्दिर अर्चना
किन्तु शहीदों को मरना ही, धर्म-भजन है, ध्यान है
सबसे बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है

(६)

पुण्य सताया जाए जगत में, पाप सताता जाएगा
पर बलिदान सदा दुनिया को, राह बताता जाएगा
यहां शहीद समय का ज्ञानी, पापी जग में नादान है
सबसे बड़ा वही है जग में, जो होता बलिदान है

—रचयिता श्री गोपाल सिंह नेपाली

देश और समाज पर आत्मोत्सर्ग करने वाला दीप्तिमान नक्षत्र बनकर चमकता है

—रघुनाथ प्रसाद पाठक-

आर्य समाज के कार्य विस्तार, उसकी उन्नति, उसकी दृढ़ता और प्रसिद्धि के लिए वैदिक धर्म के अकाट्य सिद्धांतों और बहुमुखी सर्वतोग्राही कार्यक्रम के अतिरिक्त जो तत्व जिम्मेवार हैं और रहे हैं, उनमें आर्यजनों की कर्मठता, योग्यता और कार्य-कुशलता के साथ-साथ उनकी त्याग, बलिदान और लोकहित की भावना भी विशिष्ट स्थान रखती है जो मुख्यतः आर्य समाज के यशस्वी संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती से विरासत से मिली थी।

इसे भावना के, इसकी प्रक्रिया के भव्य दर्शन, वेद प्रचार, धार्मिक व सामाजिक सुधार, लोक शिक्षा प्रसार, सेवी सहायता कार्य, अस्पृश्यता निवारण नारी उद्धार, पतितोद्धार, शुद्धि दलितोद्धार, राजनीतिक जागरण अपने धार्मिक व नागरिक अधिकार रक्षण आदि कार्यों में और उनकी उपलब्धियों में भली भांति होते हैं।

निःसन्देस आर्य समाज के जीवित शहीदों ने जिनकी संख्या बहुत बढ़ी चढ़ी रही है, आर्य समाज के मार्ग को साफ और प्रशस्त किया हो, हमारे मृत शहीदों ने अपने रक्त से आर्य समाज की नीव दृढ़ की और उसके इतिहास में उज्जवल अध्याय जोड़कर उसे चमकाया। इतना ही नहीं उन्होंने अपने त्याग व बलिदान से आर्य जाति और आर्य समाज को गौरवान्वित किया और इतिहास में अपना नाम भी अमर किया। आने वाली संतानें उनके त्याग व बलिदास पर आनन्द विभोर हो उनके अज्ञात चरणों में श्रद्धा व प्रेम से अपना मस्तक नवाएगी। हमारे अनेक बलिदानी वीरों को आम जनता जानती न थी परन्तु अत्याचार और अन्याय उन्हें यश के सोपान पर चढ़ा गए। उन के बलिदान ने उस पुल का कार्य किया, जिस पर से होकर के लोग दिव्य लोक में पहुंचे और कीर्ति उनका पीछा करती रही। निश्चय ही हमारे हुतात्माओं के आत्मोत्सर्ग से साहित्यकारों की कृतियां अलंकृत होंगी और कवियों की कृतियों को पवित्र रूप प्राप्त होता रहेगा।

निःसन्देह आर्य समाज के जीवित शहीदों ने जिन की संख्या बहुत बढ़ी चढ़ी रही है, आर्य समाज के मार्ग को साफ और प्रशस्त किया तो, हमारे मृत शहीदों ने अपने रक्त से आर्य समाज की नींव दृढ़ की और उसके इतिहास में उज्ज्वल अध्याय जोड़ कर उसे चमकाया।

हमारे हुतात्माओं को एक मात्र मृत्यु ने नहीं अपितु उनके पवित्र ध्येय ने हुतात्मा पद प्रदान किया। वे लोग धर्म व सत्य पर बलि हुए। सत्य के लिए प्राणों का उत्सर्ग करना, न मजहब विशेष के लिए और न देश विशेष के लिए अपितु संसार के लिए करना होता है। अतः उनका उत्सर्ग आर्यजनों को ही नहीं, देशवासियों को ही नहीं अपितु संसार भर के लोगों को प्रेरणा प्रदान करता रहेगा। वे माता-पिता धन्य हैं, जिन्हें उन जैसी वीर आत्माओं का माता पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वह देश व समाज धन्य है जिसमें उन जैसे वीर जन्म लेते हैं। वे लोग मूर्खों की तरह कीर्ति की चाह रखते हुए शहीद नहीं हुए थे और न अंधे जोश में शहीद हुए वरन् धर्म, सत्य, न्याय और लोकहित के लिए शहीद हुए थे। यही उनकी शहादत की महिमा है।

परमात्मा की और उनके बच्चों की सेवा में जो अपने जीवन की बलि देता है, वह एक भव्य दीप्तिमान नक्षत्र बनकर चमकता है। यह उक्ति हमारे सर्वप्रथम बलिदानी वीर महर्षि दयानन्द सरस्वती पर चरितार्थ हुई थी। इसी ने हमारे बलिदानी वीरों का मार्ग दर्शन दिया और सदैव मार्गदर्शन करती रहेगी।

—

फांसी की कोठरी में बन्दी बने हुए पं. राम प्रसाद बिस्मिल के हृदयोद्‌गार

साधु की गुफा न मिली तो क्या, साधना की गुफा तो मिल गई। इसी कोठरी में यह सुयोग प्राप्त हो गया कि अपनी कुछ अन्तिम बात लिख कर देशवासियों को अर्पण कर दूं सम्भव है कि मेरे जीवन के अध्ययन से किसी आत्मा का भला हो जाए। बड़ी कठिनता से यह शुभ अवसर प्राप्त हुआ।

महसूस हो रहे हैं बादे फना के झोंके।
खुलने लगे हैं मुझ पर असरार जिन्दगी के॥
बारे अलम उठाया रंगे निशात देखा।
आए नहीं हैं यूं ही अन्दाज बेहिसी का॥

वफा पर दिल को सदके जान को नजरे जफा कर दे।
मुहब्बत में यह लाजिम है कि जो कुछ हो फिदा कर दे॥

अब तो यही इच्छा है——

बहे बहेर फना में जरद या रब लाश बिस्मिल की।
कि भूखी मछलियां हैं जोहरे शमशीर कातिल की॥
समझ कर फूंकना इस को जरा ऐ दागे नाकामी।
बहुत से घर भी हैं आबाद इस उजड़े हुए घर में॥

—पण्डित राम प्रसाद बिस्मिल की जीवनी से

बलिदान वेला

नोट—सन् १९४४ में सिन्ध में जब 'सत्यार्थ प्रकाश' पर राज्य सरकार ने प्रतिबन्ध लगाया था उस समय यह कविता लिखी गई थी उसका मूल्य अब भी वैसा ही है।

डा. सूर्यदेव शर्मा साहित्यालंकार एम. ए. डी. लिट. (अजमेर)

(१)

वह हमारे पूज्य गुरु की, पुन्य पावन है धरोहर,
'सत्यार्थ प्रकाश' है, ससार हित सुखकर मनोहर।
ज्ञान की गंगा बहे जहां, सत्य का उपड़े पयोधर,
वेद के खिलते सरोरुह, दिव्य सुन्दर वह सरोवर।
तर्क का तरकस नवेला, आ गई बलिदान वेला।

(२)

मानवों की मुक्ति का सत्यार्थ साधन हो चुका है,
असम मतवादी जनों के, ढोंगमे डोंग डुबो चुका है।
आर्यों ने संगठन कर, देख आलस्य खो चुका है,
देश में राष्ट्रीयता के, बीज पावन बो चुका है।
जाति में जीवन उंडेला, आ गई बलिदान वेला।

(३)

कौन है संसार में जो जब्त उस को कर सकेगा,
कौन है जो 'सूर्य' को, आकाश में से हर सकेगा।
कौन है जो सिन्धु को निज बाहुओं से तर सकेगा,
कौन है जो वायु मण्डल को घड़े में भर सकेगा।
आग से है कौन खेला, आ गई बलिदान वेला।

(४)

वीर वर बलिदान वाला- लेखराम महीन थे,
स्वामी श्रद्धानन्द ने दिए धर्म पर ही प्राण थे।
राजपाल जैसे मनरची ने किए आह्वान थे,
वीर 'बिस्मिल' से शहीदों ने दिए बलिदान थे।
कौन दुःख हमने न झेला, आ गई बलिदान वेला।

(५)

आर्य वीरों का विभूषण तो, सतत संग्राम ही है,
अन्य अत्याचार से लड़ना हमारा काम ही है।
धर्म पर बलिदान देने में हमें आराम ही है,
धर्म हित बलिदान होने में अमर निज नाम ही है।
वीर डट जाता अकेला, आ गई बलिदान वेला।

दमन दुनाली से न डरेंगें, करेंगे क्रांति

स्वत्य के समर में समोद बलिदान होंगे,
रखेंगे न ऋण मातृ भूमि का चुकायेंगे।
सामना करेंगे शक्तिशाली नर-राक्षसों का,
प्रबल प्रनाथन वे हाथ उठायें।
पंच-तत्व वाले का प्रभुत्व नहीं मानने को,
छोड़ेंगे न धर्म लाखों चने चबायेंगे।
माथ न नवायेंगे नंवायेंगे न गौरव को,
नाथ न कहेंगे और न दास कहलायेंगे।
दमन दुनाली से डरेंगे न, करेंगे क्रांति,
कैसी भय भ्रांति है, भरोसा भगवान पर।
मान-अपमान धन-धाम की न परवाह,
प्राण तक देंगे वीर-पूजा के विधान पर।
स्वीय त्याग देखि स्वर्गीय राष्ट्र वीरान की,
प्रफुलित होंगी आत्माएं आसमान पर।
मित-मित्र ही है यह दावा है कि शत्रु तक,
बलि-बलि जायेंगे हमारे बलिदान पर।

—शिव दुलारे त्रिपाठी 'नूतन'

कन्या की आवश्यकता

(M. S.c .) एम. एस, सी. सुन्दर गौरवर्ण कन्या की आवश्यकता। मेरा द्वितीय पुत्र फर्स्टक्लास एम. एस. सी. (M. S. c.) है और सैन्ट्रल गवर्नमैंट की सर्विस में एक हजार मासिक पाता है। I. A. R. I. पूषा नई दिल्ली में रिसर्च असिस्टैन्ट है वहां ही पी. एच. डी. (Ph. D.) सुन्दर गौरवर्ण कद ५ फुट ६ ईन्च है। उसके लिए तदनुरूप सुन्दर गौरवर्ण एम. एस. सी, (M. Sc.) कन्या की आवश्यकता है। कद ५ फुट २ या ३ इन्च हो।

विवाह कायस्थमात्र में हो सकता है द्विजमात्र में हो सकता है। जाति प्रान्त देश का बन्धन नहीं है।

या कन्या साहित्याचार्य के अतिरिक्त अन्य किसी भी विषय की आचार्य परीक्षा उत्तीर्ण एम. ए. पी. एच. डी. हो। निम्न पते पर पत्र व्यवहार करें।

म० म० आचार्य विश्वश्रवा व्यास, वेद मन्दिर
१०३ बाजार मोतीलाल, बरेली (उ. प्र.)

कलम आज उनकी जय बोल

—श्री रामधारी सिंह दिनकर

जला अस्थियां बारी-बारी
छिटकायी जिसने चिनगारी
जो चढ़ गए पुण्य वेदी पर लिये बिना गरदन का मोल
कलम, आज उनकी जय बोल !

● ● ●

जो अगणित लघु दीप हमारे,
तूफानों में एक किनारे,
जल-जल कर बुझ गये, किसी दिन मांगा नहीं स्नेह मुंह खोल ।
कलम, आज उनकी जय बोल !

... ...

पीकर जिनकी लाल शिखायें,
उगल रही लू-लपट दिशायें,
जिनके पदाघात से सहमी धरती रही अभी यक डोल ।
कलम, आज उनकी जय बोल ।

★ ★ ★

अन्धा, चला चौंध का मारा,
क्या समझे इतिहास बिचारा
साक्षी हैं उनकी महिमा के सूर्य, चन्द्र, भूगोल, खगोल ।
कलम, आज उनकी जय बोल !

ओ३म्

कस्मै देवाय हविषा विधेम

आर्य समाज की बलिवेदी पर सर्वस्व उत्सर्ग
करने वाली हुतात्माएं हमारी प्रेरणा बने

आर्य गर्ल्ज हाई स्कूल मुकेरियां

(विपिन)

ओ३म्

यत्र नार्यस्तु पुज्यन्ते, रमन्ते तत्र देवता

शहीदों की चिताओं पर जुड़ेंगे हर बरस मेले
वतन पर मरने वालों का यही बाकी निशा होगा

प्रिंसिपल
शांतिदेवी आर्यमाहिला
कालेज दीनानगर

(विपिन)

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज की सदा जय हो

—नरेश कुमार शास्त्री
श्रीगुरुविरजानन्द वैदिक संस्कृ
महाविद्यालय करतारपुर

अदभुत् संन्यासी अभयदेव !
महिमा महान हे अजय देव !
रण के स्वर्णिम हे वीर देव !
हुङ्कार समर के धीर देव !
तारक पतितजन दयाधार !
त्यागी तापस उन्नत अपार !
मानव मणि हे करुणावतार !
स्वातन्त्र्यवीर हे नमस्कार ! ॥१॥

वाणी में कैसा था विकास !
मीठी बातें मीठा लिबास,
श्वासों में स्वर्णिम 'ओ३म्' वास !
रदनच्छद में मृदुहास भास।
दविजराज नरोत्तम स्वामी ने,
धान्यादि त्याग कर उच्च माल,
नरवीर वेद के ज्ञाता हो,
न्यारा खोला गुरुकुल विशाला ॥२॥

दमका सीना संगीनों में,
जीवन लक्षण में वीरों के,
मर जायें मात भूहेत सदा,
हारें न समर उन धीरों के।
राही निर्भीक निराला था,
जय भारत करने वाला था,
की क्रान्तिमय मन वाला था,
सरकार हिलाने वाला था ॥३॥

दारुण आपद् विश्राम धाम !
जय महावीर धन्य स्वनाम !
यति स्वामी श्रद्धानन्द तुझे !
[illegible] ॥४॥

ओ३म्

वयं राष्ट्रे जागृयाम:

हम राष्ट्र में जागरूक हों

अपने रक्त से समाज और राष्ट्र को सिंचित करने वाले आर्य बलिदानियों को सश्रद्ध नमन

रामकुमार शर्मा

मुख्याध्यापक

आर्य हाई स्कूल
बस्ती गुजां
जालन्धर

(विपिन)

वेदों में बलिदान परम्परा

(श्री प, श्री, सातवलेकर)

संस्कृत भाषा मे "बलि" शब्द के अर्थ हैं... हवि, अन्न, पूजा, कर, भेंट, और धार्मिक कर अतः बलिदान का अर्थ है हवि देना अर्थात यज्ञ में देवों के लिए हवि देना, अन्न देना, पूजा करना, कर देना, भेंट देना और धार्मिक कर देना।

वेदों में इन सभी अर्थों में बलि शब्द का उपयोग हुआ है। अग्नि में हवि देना, भूखों को अन्न देना, मातृभूमि या स्वराज्य आदि श्रेष्ठ तत्वों की तन, मन, धन से पूजा या अर्चना करना सभी बलिदान ही है। वेदों में मातृभूमि व अपने राष्ट्र के लिए हर प्रकार से बलिदान करने की आज्ञा है। अथर्ववेद का एक मन्त्र है—

उपस्थास्ते अनमीवा अयक्ष्मा,
अस्मभ्यं सन्तु पृथिवि प्रसूताः।
दीर्घं न आयुः प्रतिबुध्यमाना,
वयं तुभ्यं बलिहृतः स्याम।

अथर्व १२।१।६२

"हे मातृभूमे! तुझसे उत्पन्न हुए सब लोग रोग रहित, हमारे पास रहने वाले हों, हमारी आयु लम्बी हो, हम ज्ञान विज्ञान से युक्त हों तथा तेरे लिए हम बलिदान देने वाले हों।" हम मातृभूमि के हित के लिए अपने स्वार्थ की ओर यदि आवश्यकता हो तो अपनी भी बलि देने को तैयार रहें, हर तरह से हम मातृभूमि का हित करने वाले हों। उसके लिए हम हर तरह से कष्ट सहने को तैयार रहें। भूमि हमारी माता हैं, हमारी अपनी है, अथवा यों कहिए कि वह हमारी आत्मा ही है। वेद का कथन है—

माता भूमि पुत्रो हं पृथिव्याः ॥।

अथर्व १२।१।१२

"भूमि मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूं" पुत्र के लिए माता सर्वस्व होती है, अथवा यूं भी कहा जा सकता है कि पुत्र की माता उसकी आत्मा ही है, अतः "आत्मार्थे पृथिवी त्यजेत" अपनी आत्मा भूमि माता के हित के रास्ते में सारे पृथिवी भर के प्रलोभन भी क्यों न आए सबका त्याग करके हमेशा मातृभूमि की सेवा करनी चाहिए, यह है सच्चा बलिदान। सब देशवासी उसी एक मा के पुत्र है, उसके पुत्रों में न कोई बड़ा है, न कोई छोटा। अतः सबका कर्त्तव्य है कि लोग अपने बलिदान से माता का यश बढ़ाएं।

अथर्ववेद के बारहवें कांड के प्रथम सूक्त में, जिसमें मातृभूमि की सेवा का आदेश है, मातृभूमि बढ़ाने वाले गुण इस प्रकार बताए हैं—"सत्याग्रह, उग्रत या शौर्य, परिश्रम करना, सेवा के समय होने वाले कष्टों को सहन करने की क्षमता और मातृभूमि के लिए आत्म समर्पण करने की इच्छा।" इस कांड में स्थल-स्थल पर यह उपदेश है कि मातृभूमि के सब पुत्र अपने-अपने स्वार्थों की बलि देकर उसकी सेवा करें। सब देशवासी जिस प्रकार एक परिवार के सदस्य परिवार का ही हित करते है, उसी प्रकार, मातृभूमि की सेवा करें।

एक दूसरे मंत्र में कहा है—'हे मातृभूमे! जो मनुष्य तुझमें पैदा हुए हैं. जो तुझ में विचरण करते हैं, तथा जिन्हें तू धारण करती है, वे सब तेरी सेवा करें।

मातृभूमि की सेवा हो कैसे? इसका उत्तर भी एक वेदमन्त्र देता है—

"पृथिव्या निःशिशा अहि अर्चन् अनुस्वराज्यम्"

"मातृभूमि पर आक्रमण करके उसको दासता की जजीरों मे बांधने वाले शत्रुओं को मारकर स्वराज्य की अर्चना करने से ही मातृभूमि की सेवा हो सकती है।"

स्वराज्य की अर्चना के लिए, आक्रामक शत्रुओं से देश को बचाने के लिए बलिदान की आवश्यकता होती है, यह कोई कहने की बात नहीं है। इस प्रकार अपने बलिदान से स्वराज्य की अर्चना करके मातृभूमि की सेवा करने वाला व्यक्ति ही श्रेष्ठ और यशस्वी हो सकता है। वेदों में "इन्द्र" देवता का सबसे प्रमुख स्थान इसी कारण है कि वह अपने बलिदान से स्वराज्य की अर्चना करता है और अपने देश की सेवा करता है।

इसी प्रकार इन्द्र के सहायक "मरुत्" भी बड़े बलिदानी वीर हैं। वे भी शत्रु को नष्ट करते हैं, और अपने देश की सेवा में वे अपने खून का एक-एक कतरा तक अर्पण कर देते हैं, इसीलिए उनका नाम "मर्+उत्" (अर्थात मरने तक उठकर लड़ने वाले) है। वे सब स्वार्थ का त्याग करके परस्पर भाई के समान व्यवहार करते हैं, इसीलिए कहा गया है कि वे सब एक घर में रहते हैं। दुश्मन चाहे कितना भी प्रबल हमला करे, पर वे अपनी जगह अटल और अडिग रूप से रहकर शत्रुओं से देश की रक्षा करते हैं। इस प्रकार वेद ने "इन्द्र" और "मरुतों" के द्वारा बलिदान का महत्व बताया है।

वेदों में सबसे ज्यादा और स्वार्थ की बलि देने पर दिया गया है। वेद का आदेश है कि "हे मनुष्यों! तुम सब मिलकर चलो, मिलकर बोलो, तुम सबके मन एक हों।"

नेता के लिए बलि दान

वेदों में नेता के लिए "अग्नि" शब्द आया है, क्योंकि वह 'अग्रणी' हमेशा आगे रहता है। ऐसे नेता के लिए भी मनुष्यों को आत्म समर्पण की आज्ञा वेद देता है। का एक मन्त्र है—

तुभ्यं भरन्ति क्षितयो यविष्ठ बलि मग्ने अन्तित ओत दूरात्। ऋ ५।१।१०

हे बलवान नेता! तेरे लिए सारी प्रजाएं बलिदान प्रदान करती हैं।' वेदों में नेता का स्थान बहुत ऊंचा है। वह प्रजाओं से बलि मांगने का अधिकारी है, और प्रजा का भी कर्त्तव्य है कि जब-जब नेता बलिदान की माग करे, तब-तब सारी प्रजाएं बलिदान देने के लिए तैयार रहें। सुभाषचन्द्र जी बोस ने भी एक बार कहा था कि— "तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा।' यह नेता का वाक्य देशप्रेमियों के लिए आज्ञा है यदि ऐसा कोई समय आए तो सिर की बलि देने की भी आज्ञा वेद में है—बलि शीर्षाणि— (ऋ० ७।१८।१९

इस पवित्र कार्य में विद्वान या बुद्धि जीवी भी पीछे न रहें, इसलिए कहा है—

यस्मै देवा सदा बलिं प्रयच्छन्ति ॥

(अथर्व १०।७।३९)

"इसके लिए अथात् विद्वाने भी बलि दें।" इसी प्रकार सभी "राष्ट्रभृत" अर्थात् राष्ट्र का भरण पोषण करने वाले—राष्ट्र से प्रेम करने वाले="बलि भरन्ति" बलि देवें। मातृ-भूमि की सेवा के लिए ही वीरों का जन्म होता है, इसलिए मातृ-भूमि को 'वीरप्रसविनी' कहा गया है। अतः वीरों का कर्त्तव्य है कि स्वार्थपरता को छोड़कर तथा संगठित होकर देश के लिए उत्सर्ग करें।

राजा और बलि

संस्कृत में बलि का अर्थ 'कर' भी है। अतः वेदों में आता है कि राजा प्रजाओं से बलि ले। किसी भी राजा का कार्य बिना धन से चल नहीं सकता, इसलिए राजा प्रजा से थोड़ा-थोड़ा कर लेकर इस देश-रक्षा व देश-सेवा के महान् कार्य का सम्पादन करे दूर पूर्णेन बसति दूर ऊनेन हीयते। महद्यक्षं भुवनस्य मध्य, तस्मै बलि राष्ट्रभृतो भरन्ति ॥

'पूर्णों के द्वारा दूर तक और अधूरों के द्वारा निकट तक भुवन के मध्य में राज्य का प्रबन्ध करने वाला बैठा है। उसके लिए समस्त राष्ट्र बलि अर्थात् कर अर्पण करता है।' देश के लिए धन आदि पदार्थों का देना भी 'बलिदान' ही है। अतः वेद में कहा है—'बलि स्वर्ण: (१,७०।९) की सोने की बलि देश की रक्षा के लिए प्रजाएं दें इस राजा को भी बलि देने का वर्णन वेद में है। इस कर को लेकर राजा देश की रक्षा करके देश में शान्ति स्थापित करे। 'शान्ति पूर्ण साम्राज्य में सारी दिशाएं अभय—भयरहित हो जाती हैं और तब आर्य श्रेष्ठ राजा भी स्थिर हो जाता है, सारी प्रजाएं राजा को अनेक प्रकार से बलि भेंट देती हैं।" (अथर्व० १९।०५।४)

देवगण हमारे पूज्य हैं, उनकी पूजा करना हमारा कर्त्तव्य है। उनकी पूजा भी बलि अर्थात् हवि से ही हो सकती है। अग्नि में हवि डालने से अग्नि की पूजा होती है। इस अग्नि में सबको बलि-हवि देनी चाहिए। "जिस प्रकार घोड़ा प्रतिदिन घास खाता है, उसी प्रकार प्रति-

दिन अग्नि में हवि डालनी चाहिए" (अथर्व० १९।५५।६) यह अग्नि सबका प्राण है। शरीर में जब तक अग्नि सब का प्राण है। शरीर में जब तक तक अग्नि—उष्णता हैं, तभी तक जीवन रहता है! अतः जो मनुष्य इस अग्नि के लिए बलि देते हैं, वे ही इस लोक में उत्तमता से रह सकते हैं।

इस प्रकार वेदों में बलि के अनेक अर्थ हैं। और सभी अर्थों पर पर्याप्त प्रकाश डालकर बलिदान के स्वरूप की रूपरेखा वेदों ने प्रस्तुत की है।

*

शहीद की पत्नी भी बलिवेदी पर

आपके सुन्दर बलिदान को आपकी धर्मपत्नी श्रीमती रामरखी ने सती होकर और भी चार चांद लगा दिए। बात यह थी कि वे उनसे बहुत प्यार करती थी। विवाह हुए भी अभी बहुत दिन नहीं हुए थे, वे उनसे जेल में मिलने गई।

एक दिन बाहर से रोने-धोने का शब्द सुनकर सब कुछ समझ गई। उठी स्नान किया, वस्त्राभूषण पहन कर श्रृंगार किया और अपने प्रियतम से मिलने के लिए तैयार होकर घर के अन्दर एक चबूतरे पर बैठ गई। फिर वे नहीं उठी। जहां तक स्थूल दृष्टि देख सकती है, जहां तक आततायी शासकों का कानून विधान पहुंच सकता है, उससे बहुत दूर उस पार, जहां पर जेल नहीं, फांसी नहीं, पराधीनता भी नहीं, केवल प्रेम ही प्रेम है और है पूर्ण स्वतन्त्रता, इसी लोक में वे अपने चिर-प्रियतम श्री बालमुकुन्द से अनन्तकाल तक सहवास का आनन्द उठाने के लिए चली गई।

———

ओ३म्

संश्रुतेन गमे महि—हम वेदादि शास्त्रों के अनुकूल चलें

आर्य बलिदानियों की जय हो

अश्विनीकुमार प्रिंसिपल स्वामी स्वतन्त्रानन्द मैमोरियल कालेज दीनानगर

(विपिन)

हे युग के भागीरथ

स्वामी तुम्हारी कृपा से ही भारत में लहराता है आज तिरंगा।
गांधी को तुमने बनाया महात्मा देश का रोग किया झट चंगा।
रोये थे फूट के गंगा किनारे पे देखा जो देश का ढंग कुढंगा।
हे युग के भागीरथ! भारत में लाए गुरुकुल की गंगा।

चांदनी चौक में तान के सीना था देश को ओज का पाठ पढ़ाया,
मुर्दा हुआ था ये देश समूचा कि स्वामी ने उसको फिर से जिलाया।
राम कहूं, तुम्हें कृष्ण कहूं मैं शुद्धि सुदर्शन चक्र चलाया।
पानी जो मांगने आया था कातिल तूने उसे निज खून पिलाया।

खाने लगे जब भेड़िये देश से सिंह सी हांक लगाई!
भागे दबाके सभी दुम जब से वीर ने क्रोध से आंख दिखाई,
'श्रद्धा' ने श्रद्धा विहीन जनों के भी जाल में श्रद्धा की बेल उगाई।
राणा कहूं या शिवा तुम्हें कह दूं मैं चोटी जनेऊ की लाज बचाई।

व्यक्ति कहूं या समाज कहूं तुम्हें देव कहूं, इन्सान कहूं मैं।
कर्ण कहूं, बलि कह दूं तुम्हें अब दानी कहूं या कि दान कहूं मैं।
साध कहूं या कि साधना कह दूं य, सिद्धि कहूं, वरदान कहूं मैं।
प्रश्न यही है ये सामने मेरे कि कैसे तुम्हें भगवान कहूं मैं,

प्रो. सास्वत मोहन 'मनीषी'
डी. ए. वी. कालिज,
अबोहर (पंजाब)

'महर्षि का अमर बलिदान'

आर्य समाज आंदोलन के प्रवर्त्तक, वैदिक धर्मोद्धारक भारतीय स्वाधीनता संग्राम के प्रथम सेनानी महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज सबसे अधिक सत्य से प्रेम करते थे। जिस बात को सत्य समझते थे उसके साथ वे किसी अवस्था में भी समझौता न करते थे, वे सत्य के लिये जिये और सत्य की पवित्र वेदी पर उन्होंने अपने प्राणों का उत्सर्ग किया। अपने मजहब और अपने देश पर शहीद होने वाले बहुत से व्यक्ति हो सकते हैं, परन्तु एक मात्र सत्य पर मरने वाले कोई विरले ही होते हैं। सत्य के लिए मरना संसार के लिए मरने के समान होता है। इस प्रकार महर्षि दयानन्द को संसार के लिए मरने वाले शहीदों में स्थान प्राप्त है। महर्षि का रक्त अन्य दिव्य महात्माओं के समान इस उच्चतम स्थापना की सम्पुष्टि में बहा था कि वे परम प्यारे परमात्मा के सच्चे प्यारे पुत्र थे। ईश्वर के अतिरिक्त उन्हें, अन्य किसी का भय न था, और वे दिव्य रूप में स्वतन्त्र थे,। वे परमात्मा की वैदिक आज्ञा के प्रचार-प्रसार में समाज के क्षेत्र में कूदे, और सितारा बनकर चमके, वेद भगवान ने ठीक ही कहा है कि—"ऋतस्य पाथ नेधा पयामि अर्थात सत्य के पथ पर चलने वाले मनुष्य की परमात्मा रक्षा करते हैं,

महर्षि सत्य के पुजारी थे, सत्य को कहने व मानने में सदैव उद्यत रहते थे, तभी तो महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज के चौथे नियममें सगर्व घोषणा की है कि—"सत्य को ग्रहण करने और असत्य को छोड़ने में सर्वदा उद्यत रहना चाहिये किसी ने कितना सुन्दर लिखा है कि सत्यवादी सत्य कहने से कभी डरता नहीं।

मौत के डर से भी वह मिथ्या वचन कहता नहीं वास्तव में सत्य की ही जीत होती है, मुण्डकोपनिषद में कहा है कि "सत्यमेव जयते नानृतम सत्येन पन्था विततो देवयान: येनां क्रमन्ति ऋषयो ह्याप्त कामा यत्र तत् सत्यस्य परम निधानम् सत्य की विजय होती हैं, असत्य की नहीं, दिव्य जीवन का मार्ग सत्य से बना है. प्राप्त काम ऋषि इसी मार्ग द्वादा सत्य के परमधाम तक पहुंचते हैं' महाभारत में कहा हैं 'सत्यं स्वर्गस्य सोपानं सत्य स्वर्ग की प्रथम सीढ़ी हैं' सत्य क्या हैं? सत्य का अर्थ हैं—यथार्थ ज्ञान जैसा देखा-सुना या अनुभव किया हो—उसे वैसा ही कहने का नाम सत्य महर्षि है दयानन्द के शब्दों में जो पदार्थ जैसा है उसको वैसा ही कहना लिखना और मानना सत्य कहाता है महर्षि के जीवन में कूट-कूट कर सत्य भरा था आओ? हम देखें कि महर्षि के जीवन में सत्य निष्ठा और संसार-हित की भावना कितनी उग्र थी वे अपने भिन्न भिन्न ग्रन्थों में लिखते हैं कि—जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या हैं उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना मैंने सत्य अर्थ का प्रकाश समझा हैं वह सत्य नहीं कहाता जो सत्य के स्थान पर असत्य और असत्य के स्थान में सत्य का प्रकाश किया जाए

(सत्यार्थ प्रकाश भूमिका)

महर्षि दयानन्द ने अपने बलिदान से न केवल "शहादत" को ऊंचा ही उठाया अपितु अपने घातक जगन्नाथको क्षमा करके और प्राणों की रक्षार्थ धन देकर भाग जाने में उसे सहायता देकर शहादत को गौरवान्वित भी किया असीम मानव प्रेम तथा प्राण त्यागते हुए भी संसार के हर्ष समुदाय में योग देना जारी रखने की ऋषि दयानन्द जैसी मिसाल कहीं अन्यत्र मिल सकती हैं?

केवल मात्र मृत्यु से ही मनुष्य हुतात्मा नहीं बनता है अपितु अपने विशेष उद्देश्य से ही अमर हुतात्मा बनता हैं उद्देश्य जितना पवित्र होगा बलिदान भी उतना ही महान व ऊंचा होगा महर्षि का उद्देश्य विशुद्ध वेद ज्ञान वैदिक धर्म तथा परम्पराओं से संसार को प्रकाशित एव लाभान्वित कर सुख-शांति तथा आनन्द पहुंचाना था उन्होंने मानव जाति को वास्तविक आध्यात्मिक एवं भौतिक उन्नति का मार्ग दिखाया उन्होंने जनसाधरण को मिथ्या ज्ञान अन्ध विश्वास, गुरुडम, पाखण्ड और समाज के शरीर में घुन की तरह व्याप्त होकर विविध प्रथाओं तथा कुरीतियों की दासता से मुक्त कराने का प्रयत्न किया अपने सत्य प्रचार के कारण उन्हें अनेक कष्ट और अत्याचार सहन करने पड़े चौदह बार हलाहल विष दिया गया परन्तु उस परम पिता परमात्मा ने उन्हें जो महान पवित्र कार्य सौंपा था वे उसके संचालन में अडिग रहते हुये सफल रहे। उन अत्याचारों से अविचलित रहकर उन्होंने न केवल आत्मिक शक्ति की सर्वोपरिता ही सिद्ध की प्रत्युत उन्होंने अपने तप और त्याग से यह भी सिद्ध कर दिखाया कि शहीद के

रूप में मरने की अपेक्षा शहीद के रूप में जीवित रहना अत्यधिक कठिन होता है।

आज उनके महान उपकारों के कारण ही संसार उनकी प्रशंसा करता है। वस्तुत: यह सत्य सिद्ध बात है कि इस आर्य जाति पर महर्षि ने अनगिनत उपकार किये हैं। जिसको भुलाया नहीं जा सकता। किसी कवि ने ठीक ही कहा कि :—

गिने जाये मुमकिन है, सहरा के जर्रे,
समुद्र के कतरे, फलक के सितारे।
मगर तेरे अहसां दयानन्द स्वामी,
हैं कैसे सम्भव गिने जायें सारे।

वास्तव में यदि महर्षि १९वीं शताब्दी में इस भारतीय मंच पर न उतरते तो इस आर्यावर्त देश की क्या अवस्था होती? किसी हिन्दी साहित्यक कवि ने ठीक ही लिखा था कि :—

तुम कहते हो दयानन्द,
जो यहां न आते क्या होता।
मैं कहता हूं पड़ा-पड़ा यह,
भारत तो बेसुध सोता।
मन्दिर की मस्जिद हो जाती,
फिर कुरान कर में होता।
बपतिस्मा लेकर या भारत,
अब गिरजाघर में होता।
तुम कहते हो क्या होता,
जो यहां नहीं ऋषिवर आते।
मैं कहता हूं एक आर्य भी,
नहीं कहीं ढूंढ़ा पाते।

संसार की यह रीति है कि जीवन में तो महापुरुषों पर अत्याचार होते है, और मरने के बाद उनका गुणानुवाद होता है। महर्षि भी इसके अपवाद न थे?

भगवान दयानन्द ने प्राण त्यागते समय इन शब्दों का उच्चारण किया था "प्रभो! तेरी इच्छा पूर्ण हो"। तूने अच्छी लीला की। ये शब्द स्वतः उस हृदय से निकल सकते हैं। महर्षि ने परमात्मा की इच्छा को ही अपना विधान बनाया था। इसी लिये परमात्मा का सहाय्य उन्हें प्राप्त रहा और उनके लिये प्रत्येक बोझ हल्का और प्रत्येक कर्त्तव्य आनन्दप्रद बना रहा। वे अपने उच्च जीवन से हमें जीना और मरना सिखा कर महान प्रकाश में विलीन हुये थे। किसी ने ठीक ही कहा है कि :—

सूर्य सोने को गया, लाखों सितारों को जगाकर।
एक दीपक बुझ गया, लाखों चिरागों को जलाकर॥

महाकवि नाथूराम शंकर शर्मा के शब्दों में :—

आनन्द सुधासार दया का पिला गया।
भारत को दयानन्द दुबारा जिला गया।
डाला सुधारि वारि बढ़ी बेल मेल की
देखो समाज फूल फबिले खिला गया।
"शंकर" दिया बुझाय दिवाली को देह का।
कैवल्य के विशाल वदन में मिला गया।

आर्य समाज की नींव उसके प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द के अमर बलिदान से दृढ़ बनी है। अत: जब तक आर्य समाज में भगवान दयानन्द और उनके पश्चात के अमर हुतात्माओं की सत्य के लिए मर मिटने की भावना बनी रहेगी, तब तक उसका भविष्य उज्जवल बना रहेगा।

—जगदीश चन्द्र "वसु"

जान देनें को बेताब

वतन पे जान देने के लिए तैयार बैठे हैं ।

लाख बांधो तुम हमें जंजीर से, वक्त पे निकलेंगे
फिर भी तीर से ।

खौफ खाने वाले भाईयो हम नहीं, कैद से
फांसी हो जंजीर हो ।।

ओ३म्

श्रद्धा विदयन्ते वसु–श्रद्धा से धन प्राप्त होता है

शहीदाने वतन को श्रद्धांजलि सहित

पंजाब किताब घर
माई हीरां गेट
जालन्धर

(विपिन)

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

देश और समाज पर हुए शहीद
हमारे महाधन हैं

ओमप्रकाश टण्डन

प्रिंसिपल आर्य हायर सैकण्डरी स्कूल लुधियाना

(विपिन)

गुरुकुल शिक्षा पद्धति के पुनरुद्धारक स्वामी श्रद्धानन्द

—प्राचार्य दीनानाथ सिद्धांतालंकार

कबीरा खड़ा बाजार में सुकाटी लिए हाथ।
जो घर फूंके आपना सो चले हमारे साथ॥
चलो चलो सब कोई कहे आगे चले न कोय।
कंचन अस कामिनी दुर्गम घाटी दोय॥

संत कबीर के यह दोनों उपर्युक्त दोहे, आज की प्रासंगिकता में भी यदि किसी व्यक्ति पर अक्षरशः सत्य चरितार्थ हो सकते हैं, तो उन में अग्रगण्य स्वामी श्रद्धानन्द (पूर्व नाम महाशय मुंशी राम) हैं। इसकी पुष्टि में उनके जीवन के बहुसंख्यक प्रेरक प्रसंगों में से कुछ ही यहां प्रस्तुत किए जाते हैं :—

झूठे मुकद्दमे न लेने की प्रतिज्ञा

(१) जालन्धर में नामी वकील थे। वेदों और महर्षि दयानन्द के ग्रन्थों का दैनिक स्वाध्याय, संध्या, यज्ञ आदि करते थे। आर्यसमाज जालन्धर के प्रधान होने के साथ सारे इलाके में लगन और उत्साह के साथ खूब प्रचार चलाया करते जीवन में महर्षि के बरेली में अल्पकालीन सत्संग से ही अकल्पनीय क्रान्ति आ गई। वकालत तो झूठ से ही चल सकती है। आर्यसमाज में प्रवेश के साथ ही निश्चय किया कि झूठे मुकद्में पैरवी के लिए नहीं लूंगा। दोस्तों ने ताना मारा जल्दी बिस्तरा गोल करना पड़ेगा। मुंशी राम दृढ़ रहे। एक बड़ी आमदनी का मुकद्दमा आया। वृद्ध मुसलमान मुंशी था पर ईमानदार और वफादार। मुकद्दमा ले लिया उसने और पेशगी फीस भी, पर मालिक को अन्धेरे में रखते हुए। मुकद्दमा मैजिस्ट्रेट के सामने पेश हुआ। मुंशी राम की प्रतिज्ञा से वह परिचित था। उसने मिसल देखी। मुंशी राम के प्रति तनिक मुस्कराहट से देखते हुए बोला—"वकील साहब! क्या आपने इस मुकद्दमे की सारी फाइल गौर से देखी है!" इन शब्दों के साथ फाइल मुंशी राम की ओर बढ़ा दी। वह तत्काल समझ गए कि मुकद्दमा झूठा है। बोले—जनाब! मुकद्दमा झूठा है। मैं इसकी पैरवी नहीं करूंगा। मुंशी ने मुझे अन्धेरे में रखा। मैं इसे वापस लेता हूं।" इतना कहते ही महामन्त्री अपने सारे कागजात ले अदालत के कमरे से जब बाहर निकलने को तैयार हुए मैजिस्ट्रेट के बार-बार यह कहने पर भी कि अभी पैरवी करें और मुकद्दमा वापिस न करें।"—मुंशी राम तब तक कमरे से बाहर ज चुके थे। अर पहुंचते ही झूठा मुकद्दमा लेने के लिए जहां मुंशी को डांटा, वहां साथ ही पेशगी की सारी रकम तत्काल मुवक्किल को वापस करने की व्यवस्था की।

कुछ दिन तक वकालत ठण्डी पड़ गई। पर मुंशी राम अपने निश्चय पर अडिग रहे। परिणाम—केवल जालन्धर ही नहीं, सारे इलाके के चोटी के वकीलों में में गिने जाने लगे।

सन्तानों के विवाह जात-पात तोड़कर—

(२) सत्यार्थ प्रकाश में जन्मगत जात-पात और बिरादरी के तंग दायरे में ही विवाह का निषेध पढा। तब तक बड़ी पुत्री का विवाह हो चुका था। दूसरी पुत्री

के लिए लड़के की तलाश थी, अपने समूचे घर वालों और बिरादरी के प्रबल विरोध के बावजूद अपनी दूसरी पुत्री का विवाह एक दम किया बिरादरी जालन्धर से दूर मुलतान जिले में और आर्थिक दृष्टि से गरीब केवल एक ही गुण दृढ़ आर्य शिक्षित युवक, बिरादरी द्वारा बहिष्कार किए जाने पर भी सम्पन्न कर दिया, इनका नाम डा. सुखदेव जी गु.कु. में लगभग २५ वर्ष तक, पूर्णतः गु.कु. के प्रति समर्पित, त्यागी, प्रभुवत छाया के प्रति स्नेहशील रहे, इस से निवृत्त होने पर प्रमुख देश भक्त और कांग्रेस नेता तथा वर्षों तक विजयी कांग्रेस के अध्यक्ष रहे, इस घटना को आज के परिवेश में नहीं किन्तु पौन सदी पहले की हत्याभूमि में देखना चाहिए, महात्मा मुन्शी राम के अपने दोनों पुत्रों—गु.कु. कांगड़ी के सर्वप्रथम स्नातक हरीश चन्द्र के विवाह जा तपात तोड़ वर-वधू की आपसी पसन्द के बाद एकदम सादगी के साथ ही किए।

कन्या शिक्षा के अग्रदूत—

(३) मुन्शीराम जी की बड़ी लड़की वेद कुमारी मिशन स्कूल में पढ़ती थी। एक शाम को घर मे खेलते हुए ईसा ईसा बोल तेरा क्या लगेगा मोल बोल रही थी। पिता ने सुना और उसी क्षण आ कर दुखी हो बच्ची का मिशन स्कूल जाना बन्द कर दिया! नगर में आर्य समाज की ओर से कन्या 'पाठशाला' खोलने का आंदोलन शुरू किया हिन्दू तो कन्याओं की शिक्षा के कट्टर विरोधी थे। मुन्शी राम जी ने अपने साले भोला देवराज और अन्य थोड़े से आर्य समाजियों के सहयोग के शहर में ही प्राइमरी तक "आर्य कन्या पाठशाला" खोल दी। नगर में जोरदार विरोध हुआ। बिरादरी से बहिष्कृत किए गए। पर मुन्शीराम जी और देवराज जी डटे रहे। कुछ वर्ष बाद यही पाठशाला कन्या महाविद्यालय जालन्धर के रूप में केवल इस नगर और पंजाब में ही नहीं, अपितु सारे देश में नारी शिक्षा के क्षेत्र में अग्रतम रूप में मान्यता प्राप्त कर गयी।

सनातन धर्मी पंडित गोपीनाथ से शास्त्रार्थ

जालन्धर और आसपास के क्षेत्र में पौराणिकों के साथ विभिन्न धार्मिक समाजिक विषयों पर खूब शास्त्रार्थ होते थे जिन में आर्य समाज की ओर से प्रमुख वक्ता महात्मा मुन्शीराम होते। इन में एक ऐतिहासिक और उन दिनों सारे द्वाबा मालवा क्षेत्र में काफी सनसनी पैदा करने वाला शास्त्रार्थ सनातन धर्म के मुख्य नेता पं. गोपीनाथ के साथ मुन्शीराम का हुआ विषय मूर्ति पूजा और अब तक महात्मा मुन्शीराम गहन शास्त्रार्थ और संस्कृत के विद्वान् तो नहीं थे पर स्वाध्याय शील और प्रखर बुद्धि थे। पं. गोपीनाथ को मुह की खानी पड़ी, आर्य समाज की इस विजय से सारे क्षेत्र में वैदिक धर्म का डंका बज गया और इसकी धाक बैठ गई।

—रहतियों की शुद्धि :–एक आर्य माता की बलि—

(५) शुद्धि और दलितोद्धारके क्षेत्रमें अपने कुछ आर्य पुरुषों सहित महात्मा मुन्शीराम ने, अपने ही नगर निवासियों द्वारा जो यातनाएं और कष्ट उठाए आज उनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती। द्वाबा-मालवा के देहात में रहतियों का दलित वर्ण काफी संख्या में रहता था। महात्मा जी ने इन्हें शुद्ध कर वैदिक धर्म में प्रविष्ट किया। हिन्दू बिरादरी ने इसके प्रबल विरोध के रूप में आर्य समाजियों का कठोर सामाजिक बहिष्कार किया। नगर के कुएं और सार्वजनिक नलकों से पीने का पानी, बाजार से सब प्रकार की खरीद बिक्री, घरों में काम करने वाले नौकर-चाकर, मन्त्री मेहतर इत्यादि सब बन्द। कुछ निर्बल चित्त आर्य तो युवक गए माफी मांग कर; पर मुन्शीराम जी और गरीब डेढ़ दर्जन पुरुष डटे रहे। यह सामाजिक बहिष्कार कितना कड़ा था। इसका अनुमान इसीसे लग सकता है कि आर्य वीर पं. सोमनाथ की माता को भयंकर पेचिस इसलिए हो गई क्योंकि उन्हें नहर का गदला पानी पीना पड़ता था। पुत्र ने जब माता से कहा कि 'तुम्हारा जीवन खतरे में है, मैं माफी मांग तुम्हें बचा लूं' माता ने उसे डांटते हुए ऐसा करने से एकदम रोक दिया। परिण,म इस दुर्दान्त सामाजिक बहिष्कार के कारण माताका जीवन समाप्त हो गया। विरोधियों का भी दिल पिघला। आर्य समाज की विजय हुई।

मुसलमान की शुद्धि : विरोध के बावजूद

जन्म के मुसलमान लगभग २५ वर्षीय मुसलमान अब्दुल गफूर बी. ए. की शुद्धि कर, उसे धर्मपाल का नाम दे, महात्मा जी ने अपना धर्म पुत्र बना अपने पास रखा। वह गु, कु. में भी कई मास तक रहा—पीत वस्त्रधारी बनकर। पर वह बड़ा धोखेबाज और कुमार्ग गामी सिद्ध

हुआ जिसके फलस्वरूप महात्मा जी के विरोधियों को उन पर आक्षेप करने के अवसर मिले ।

—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान—

महात्मा मुन्शीराम जी, उन दिनों, गुरुकुल पार्टी के नेता और आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब के प्रधान थे, अपने अनेक दुर्लभ और स्वर्विसमर्स गुरुद्वारों तथा निश्छल निष्कपर सरल उदार व्यवहार पूर्ण निष्काम सेवा के फलस्वरूप कुछ पार्टी वाले लोग उनके विरुद्ध धड़ा बना कर खड़े हो गए थे, आश्चर्य की बात यह थी उनमें कुछ लोग जो उनके पास धर्मपुत्र बन कर आए और जिन्हें महात्मा जी ने अनेक प्रकार से उपकृत किया था वह भी इसमें शामिल थे, महात्मा जी को इस कृतघ्नता से काफी मानसिक खेद हुआ जिस का वर्णन उन्होंने अपनी उन दिनों में लिखी उर्दू पुस्तक 'मेरी जिन्दगी के नशे बो फरात' में दुःख भरे शब्दों में किया, इन सबके प्रति, महात्मा जी के व्यवहार में, फिर भी दुसब नहीं आया ।

—उर्दू प्रधान पंजाब में हिन्दी के प्रथम प्रयोक्ता—

महात्मा मुन्शी राम धार्मिक और कर्त्तव्य पालन क्षेत्र में कभी सौदेबाजी व नफ्टा-नुकसान नहीं देखते थे, उर्दू प्रधान पंजाब में वह पहले व्यक्ति थे जिन्होंने मुनाफे पर चल रहे अपने सन्दर्भ प्रचारक" सप्ताहिक को रातों रात हिन्दी में कर दिया जिससे उस में काफी घाटा उठाते रहे, पजाब के सार्वजनिक जीवन में हिन्दी का प्रचलन उन्होंने ही अपनी कई पुस्तकों पत्राव्यवहार तथा अन्य साधनों में किया, गु. कु. में शिक्षा का माध्यम प्रथम से अंतिम कक्षा तक द्वितीय ही था संभवतः—

गु. कु. विश्व विद्यालय भी स्थापना

महात्मा मुंशी राम ने अपने जीवन को सर्वाधिक क्रांतिकारी भारत में और भारत के इतिहास में जबकि वह क्रूए और अधिकारी पर प्रधान सफल विदेशी शासन नेय की बेड़ियों में जकड़ा हुआ था एवनवयुग की परीक्षाम था,

ज्वाला प्रर्यांत की, किसी ने कहा—जंगला में कौन मां बाप अपने लाडले बच्चों को बुद्ध बनाने भेगेगार, कौन इस इस नए जमाने में बच्चों को पंडित बनाना पसन्द करेगा, धन कहां से आएगा इत्यादि यह सब शेख चिलमी के चांचले हैं, पर महात्मा मुंशीराम किसी कच्ची धातु के नहीं बने थे और नहीं किसी कनफुकबे गुरु के चेले थे, यांगीर ग्ररज और रुगद्रष्टी स्वामी दयानन्द के कहर शिष्य और तप त्याग प्रभु विश्वास और इस संकल्प इत्यादि गुरुओं के धनी का उन्होंने घोषणा की मैं जब तक गुरुकुल के लिए ३० हजार रु. इकट्ठा नहीं कर लूंगा घर में वापस आ भोजन नहीं करूंगा, मेरे दोनों पुत्र सबसे पहले गुरुकुल में प्रविष्ट होंगे और गुरुकुल की शिक्षा भारत की प्राचीन पद्धती पर आधारित साथ ही वर्गमान पाश्चात्द विज्ञान, अलग भाषा इत्यादि की भी शिक्षा दी जाएगी,

लगभग ६ मास में ३० हजार रुपए हो गया, उन दिनों जबकि आर्य समाज का नाम भी बहुत कम लोग जानते थे और शिक्षा के लिए दान की भावना भी कम थी, बिसनौर के एक दानी ने गंगा पार कांगड़ी ग्राम सहित सैंकड़ों एकड़ जमीन दान कर दी, महात्मा मुन्शी राम ने चपनी जालन्धर की कोठी हजारों रुपए की संदर्भ प्रचारक पत्र और प्रेस सर्वस्व गुरुकुल के लिए अर्पित कर दिया. सन् १८८५ मार्च मास में जालन्धर के लाला श्मली ग्रास भंडरी और १० ब्रह्मचारियों के साथ महात्मा मुन्शीराम ने उस हिंस पशु समवोणहन आश्रम में ले गया ५ बजे यज्ञ-प्रार्थना के बाद इस अभूतपूर्व संस्था की स्थापना कर दी ।

गु. कु. में धड़ाधड़ बच्चों का प्रवेश होने लगा जब मैं गु. कु. की छठी-७वीं कक्षा में था-१९०८-१९१० में तब तक लगभग ग्राय इस संस्था में प्रथम कक्षा से १४ वीं कक्षा तक थे । गु.कु. में अपने बच्चे को प्रविष्ट कराने के लिए इतना उत्साह जनता में था, जितना आजकल अंग्रेजी के पब्लिक स्कूलों में देखा जाता है । तब ३० या ४० छात्र लोग के लिए विधिवत चुनाव बोर्ड बैठता था । उस समय गु. को शाखाएं मुलतान, कुरूक्षेत्र स्थानों पर भी थीं, कई बच्चे कहां भेज दिए जाते थे ।

आचार्य महात्मा मुन्शीराम से जब एक विदेशी यात्री ने पूछा कि आपके कितने बच्चे हैं, तब उन्होंने कहा —"जब मैं गृहस्थी था तब मेरे दो लड़के और दो लड़कियां थीं, पर जब में हानप्रस्थी हूं मेरे ५०० बच्चे हैं, सचमुच महात्मा मुन्शीराम गु.कु. ग्रोप के बच्चे को अपने पुत्र से मेहश प्यार करते थे, इसके कई उदाहरण मैंने गु. कु. के के छात्र जीवन में अनुभव किए और देखे पर यहां उल्लेख करना सम्भव नहीं है, यह इस तपः पूत और गहन आरण्य में चिकित्सा साधनों के अभाव में भी माता-पिता दर्जनों का दायित्व सम्भालने वाले महात्मा मुन्शीराम की किसी दिव्य शक्ति का–प्रभु-प्रदत्त-ही प्रभाव था

मैंने पहली बार अडिग चिन्त आचार्य मुन्शीराम जी को बच्चों की तरह फूट-२ रोते देखा;

(१० पृष्ठ का शेष)

रहीं। मेरा दुख उनको बहुत सताता था। विष्णु शर्मा चौदह साल जेल काटकर आये तो माता जी के दर्शन को आए। माता जी जाड़े के मारे ठिठुर रही थीं। उनका दुख देखकर चकित रह गए, पूछा, आपको किसी भाई ने भी मदद नहीं दी। माताजी रोकर बोलीं कि मदद देने वाला तो परमात्मा है। आंसुओं की धारा लग गई। बोलना बड़ी देर में निकला कि मेरी पुकार ईश्वर भी नहीं सुनते। जो इस शरीर से छुटकारा दें। विष्णु शर्मा ने अपना कम्बल उतारकर उन्हें ओढ़ा दिया। बोलो माता जी मैं आपकी सेवा जो होगी करूंगा। फिर उन्होंने बहुत कोशिश की। स्वराज होने पर माताजी की पैंशन ३० रुपए हो गई। फिर माता जी के साथ मेरी भी गुजर होने लगी। मोटा-खाना पहनना चलता रहा पर माता जी के स्वर्गवास के बाद पैंशन बन्द हो गई और मुझ पर आफत का पहाड़ टूट पड़ा। लड़के को पढ़ाने को पैसा न हो सका। फिर मैंने मैनपुरी के नेता लोगों से भी फरियाद की कि आप लोग मेरे लड़के को पढ़ा दें तो इसका जीवन सम्हल जाए। मगर अपने सुख के सामने गरीबों की कौन सुनता है? वह तो कोई नहीं सोचता कि कितने भाई कुर्बान हो गए, कितने जेलों में सड़े, तब आज वे एम. एल. ए. और मिनिस्टर बने बैठे हैं। जिन्होंने अपने को बलिवेदी पर चढ़ा दिया उनके खानदान वाले भूखों मर रहे हैं। आज दिन जो मैं अनाथ हूं दुखिया मेरे भाई रामप्रसाद जी होते तो अपने भानजे को कितना पढ़ाते। मेरी सहायता करते स्वराज्य में आज मैं हर तरह की मुसीबत उठा रही हूं। पर मेरी बात किसी ने नहीं सुनी। मगर ईश्वर की महिमा कोई नहीं जानता। मैं बहुत दुखी फाके कर रही थी। मेरा लड़का कुसंग में फंस गया था। वह घर से निकल गया था एक महीने तक पता न मिला। मैं और मेरी बहू दोनों अपने दुख में सलाह कर रहे थे कि चलो दोनों गंगा जी में डूब जाएं, कहां तक भूखों मरें? कपड़े को नंगे, एक दिन तो नहीं है जो काट लें। इतने में किसी ने आवाज दी कि माता जी आपसे कोई मिलने आया है। मैं फटी धोती पहने थी। शर्म से झुककर बोली, भाई साहब! कैसे तकलीफ उठाई? उन्होंने कहा—चतुर्वेदी ओंकार नाथ पांडे मेरा नाम है। बहन जी, मैं आपके ही दर्शन को आया हूं। फिर मैंने बार-बार धन्यवाद दिया। फिर पांडे जी ने कहा कि मेरे पास भाई बनारसी दास चतुर्वेदी का पत्र आया है कि कोसमा में शहीद रामप्रसाद बिस्मिल जी की बहिन भी है। उनके यहां आप खुद जाकर देखो कि वह किस तरह गुजर करती है? मैंने अपना घर दिखाया कि आप भीतर जाकर देख सकते हैं कि मेरे पास तो पांच सेर दाने भी न होंगे, ज्यादा क्या कहूं। मेरी हालत देखकर पांडे जी ने पांच रुपए दिए। मैंने चार रुपए की एक धोती ले ली, एक रुपया और खर्च मैंने किया। भाई बनारसी दास चतुर्वेदी ने मुझ दीन की पुकार सुनी। आपने अपील निकाली, तो अनेक भाइयों को दया आ गई। सहायता भी मिलने लगी। राष्ट्रपति महोदय और श्री कृष्ण कुमार बिड़ला से लगाकर छोटे-बड़े सबने मुझ पर दया की, पर मैं सकोच से उसमें से पैसा न खर्च कर सकी। चतुर्वेदी जी ने लिखा कि आप संकोच न करें, यह पैसा आपका ही है। आप कपड़े बनवा लीजिए। अन्न भी लेकर रख लीजिए। अब आप मुसीबत न उठाइए। बहुत दुःख आपने सहे। मैं आपको दुःख न होने दूंगा। फिर चतुर्वेदी जी ने बहुत कोशिश करके मेरी पेंशन चालीस रुपये करवा दी। उनको मैं कहां तक धन्यवाद दूं। उसी में हम तीनों प्राणियों की जैसे-तैसे गुजर बसर हो रही है।

***

ओ३म्

उग्रं वचो अपावधी—कठोर वचन त्याग दो

जो देश का शहीद है वो कौम की हयात है

॥ ओ३म् ॥

सं श्रुतेन गमेमहि मा श्रुतेन विराधिषि

(अथर्व)

सुने हुए के विपरीत न चलें,

हम सुने हुए के अनुकूल चलें,

हार्दिक शुभकामनाओं

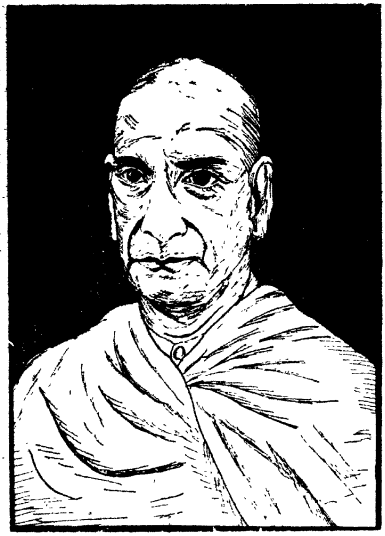
के साथ

डा. राम स्वरूप

पिण्डी स्ट्रीट

लुधियाना

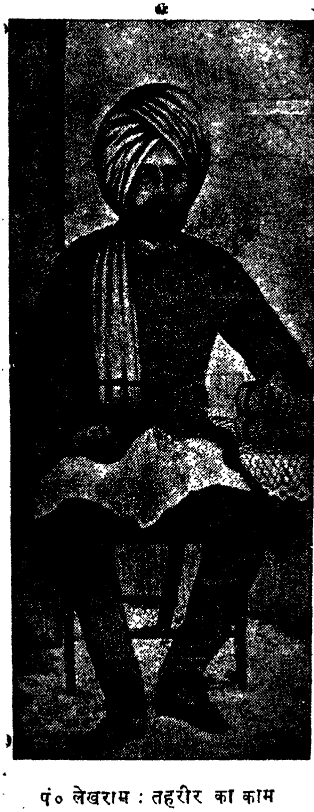
आर्यसमाज : शहीदों की अटूट श्रृंखला



स्वामी श्रद्धानन्द सर्वस्व समर्पण

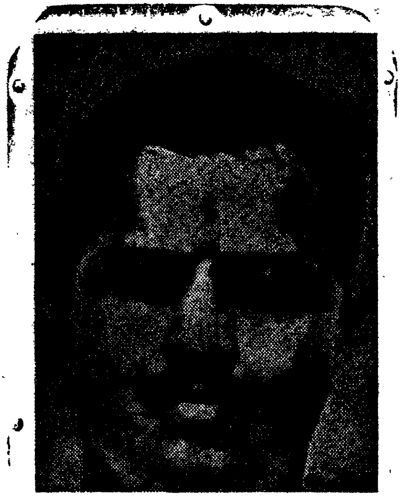


महाशय राजपाल—हम रहें न रहें, आर्यसमाज अमर रहे

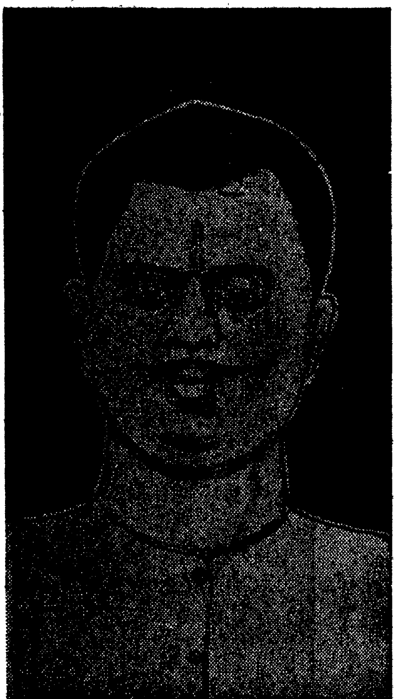


पं० लेखराम : तहरीर का काम
रुकने न पाए

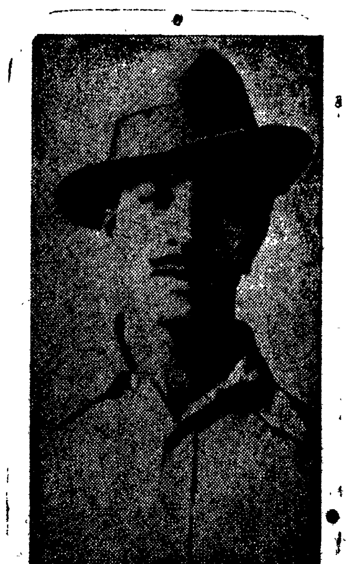
ज़रा याद करो कुर्बानी



अशफ़ाक उल्ला खां : खबरदार अगर किसी ने आर्य समाज पर हाथ उठाने की जुर्रत की।



राम प्रसाद बिस्मिल :
सरफरोशी की तमन्ना अब हमारे दिल में है।



भगतसिंह : आर्य समाज के भगत

वतन पर मिटने वाले आर्य शहीदों की जय हो।



सुखदेव



राजगुरु



शहीर उधमसिह

ओ३म्

(तमसो मा ज्योतिर्गमय:)

अज्ञानान्धकार से ज्ञान के उजाले की ओर—

—आर्य बलिदानी अमर रहें—

आर्य मर्यादा के शहीद अंक पर शहीदों को सश्रद्ध नमन

प्रि. वेद प्रकाश भारद्वाज

श्री पार्वती जैन हायर सकैण्डरी स्कूल,
विजय नगर
जालन्धर शहर ।



ओ३म्
च्यवन प्राश
गुरुकुल चाय
खांसी, जुकाम, इन्फ्लुएन्जा, बदहजमी तथा थकान में मादकता रहित उत्तम पेय।
भीमसैनी सुरमा
आँखों को निरोग व शीतल रखता है।
पायोकिल
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी
हरिद्वार
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी
हरिद्वार
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी हरिद्वार

(रजि० नं. पी० जे० एल० ५५)

ओ३म्

कृण्वन्तो विश्वमार्यम

ओ३म्

आर्य मर्यादा के शहीद अंक पर

शुभकामनाओं सहित

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक कृष्णपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र — जालन्धर

वर्ष 14, अंक 39, 27 पौष सम्वत् 2038, तदनुसार 3,10 जनवरी 1982, दयानन्दाब्द 156। एक प्रति 35 पैसे (वार्षिक शुल्क 15 रुपए)

विशाल हिन्दू सम्मेलन द्वारा आनन्दपुर प्रस्ताव रद्द

राष्ट्र की अखण्डता पर कोई आंच न आने दी जाएगी—श्री वीरेन्द्र

जालन्धर—(का. प्र.)—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के तत्वावधान में यहां गत 13 दिसम्बर को आयोजित विशाल हिन्दू सम्मेलन प्रत्येक दृष्टि से अत्यन्त सफल रहा। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष श्री लाला रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता में सम्पन्न होने वाले इस सम्मेलन में सभी हिन्दू धर्मावलम्बियों ने पंजाब की समस्याओं के दृष्टिगत संगठित होने की आवश्यकता पर बल दिया। इस सम्मेलन में सर्वसम्मति से विभिन्न महत्वपूर्ण प्रस्ताव पारित किए गए।

सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने सम्मेलन में मुख्य प्रस्ताव प्रस्तुत किए और हजारों की संख्या में उपस्थित जनसमूह ने हाथ उठाकर उनका समर्थन किया। इन प्रस्तावों में पंजाब में हाल ही में होने वाली हत्याओं, अराजकता, विमान अपहरण व बम विस्फोट की घटनाओं को राष्ट्र विरोधी गतिविधियां ठहराते हुए कहा गया कि इस सम्मेलन की यह निश्चित धारणा है कि समय आ गया है जब कि पंजाब के अल्पसंख्यक विशेषकर हिन्दू अपने हरिजन भाइयों के साथ मिल कर यह स्पष्ट कर दें कि—

१- वे आनन्दपुर साहब के प्रस्ताव को पूर्णतया रद्द करते हैं, क्योंकि यह कल को खालिस्तान का आधार बन सकता है।

२- वे देश के एक नए विभाजन का अपनी पूरी शक्ति से विरोध करेंगे।

३- वे प्रत्येक उस प्रयास का भी विरोध करेंगे, जिसके द्वारा केन्द्रीय सभा को किसी भी प्रकार कमजोर करने का कोई प्रयास किया जाएगा।

इसी के साथ यह सम्मेलन यह मांग भी करता है कि—

१- वे सब व्यक्ति जो अपने आप को एक अलग राष्ट्र कहते हैं, उन्हें किसी भी चुनाव में खड़ा होने या वोट मांगने या देने के अधिकार से वंचित कर दिया जाए।

२- पंजाब के हिन्दू जो इस प्रदेश में अल्पसंख्यक हैं, उन्हें वे सब अधिकार मिलने चाहिए, जो हमारे संविधान के अनुसार एक धार्मिक और भाषायी अल्पसंख्यक वर्ग को मिलने चाहिए।

३- एक ऐसा कमीशन नियुक्त किया जाना चाहिए, जो इस बात का फैसला करे कि पंजाब में अल्पसंख्यकों को जितनी सरकारी नौकरियां मिलनी चाहिए, वे मिल रही है या नहीं। यदि नहीं मिल रहीं तो उनका प्रबन्ध होना चाहिए।

४- हिन्दी इस प्रदेश की दूसरी राजभाषा घोषित होनी चाहिए।

५- पिछले तीन मास में पंजाब में जो हत्यायें हुई हैं, पंजाब पुलिस उन हत्यारों का पता लगाने में असफल रही है, इसलिए यह काम अब केन्द्रीय सरकार अपनी सी० बी० आई० एजेन्सी के द्वारा करवाए।

६- वे सब संस्थायें जो इस देश से बाहर किसी दूसरे व्यक्ति या संस्था के आदेश पर चलती हैं, वे सब गैरकानूनी घोषित की जाएं और किसी भी व्यक्ति या संस्था को बाहर की किसी संस्था के आधीन चलने की अनुमति नहीं मिलनी चाहिए।

७- इस प्रान्त में किसी भी व्यक्ति को यह अनुमति नहीं होनी चाहिए कि वह किसी भी मन्दिर या धार्मिक भवन या पूजा के स्थान पर बलात् अपना अधिकार कर लें। जहां जहां ऐसा अवैधानिक अधिकार किया गया है, वह सब स्थान खाली करवाए जाएं।

८- पंजाब में अल्पसंख्यकों को भी अपनी रक्षा के लिए शस्त्र रखने की अनुमति होनी चाहिए।

यह सम्मेलन पंजाब के सब हिन्दुओं का आह्वान करता है कि वे अपने सब प्रकार के मतभेद भुलाकर एक हो जाएं और इस राज्य में कुछ विघटनकारी तत्वों की ओर से जो चुनौती हिन्दुओं को दी गई है, उसका मुकाबला करने के लिए कटिबद्ध हो जाएं। हिन्दुओं के सब वर्गों में एकता और संगठन पैदा करना सबसे पवित्र कर्त्तव्य है। इसलिए यह सम्मेलन पंजाब के सब हिन्दुओं से और पंजाबियों से भी उनका सम्बन्ध चाहे

(शेष पृष्ठ पांच पर)

हा! त्रिलोकचन्द शास्त्री दिवंगत

(कार्यालय प्रतिनिधि द्वारा)



जालन्धर वैदिक वाङ्मय के उद्भट विद्वान्, संस्कृत के अनन्य उपासक एवं आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के सुविख्यात महोपदेशक पण्डित श्री त्रिलोकचन्द जी शास्त्री के आकस्मिक निधन से आर्य जगत् में सर्वत्र शोक छा गया।

श्री शास्त्री जी अपनी विद्वता, सौम्यता और आदर्श व्यवहार के कारण सर्वप्रिय एवं अजात शत्रु थे। आर्य समाज के अतिरिक्त सनातन धर्म, अहमदी सम्प्रदाय (कादियां) व विभिन्न मतावलम्बी भी उनके श्रद्धालुओं में से थे। साजीवन मिशनरी भावना से कार्य करने वाले श्री शास्त्री जी का आर्य समाज और वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार कार्य में उल्लेखनीय योगदान है।

श्री शास्त्री जी विगत कुछ अवधि से अस्वस्थ चल रहे थे और जालन्धर स्थित जनता अस्पताल में अपने मेधावी एवं सुयोग्य सुपुत्र डा० ऋषि कुमार आर्य के पास उपचाराधीन थे। लेकिन क्रूर काल ने गत २९ दिसम्बर को आर्य जगत् से इस आदर्श उपदेशक को छीन लिया। यह समाचार सुनते ही सर्वत्र शोक छा गया। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का जालन्धर स्थित गुरुदत्त भवन मुख्यालय उनके शोक में बन्द कर दिया गया। सभा कर्मचारियों ने ३० दिसम्बर को एक प्रार्थना सभा का आयोजन कर इस आर्य पुरुष की आत्मा की सद्गति की प्रार्थना करते हुए दिवंगत के परिवार की संवेदना में अपने आपको समभागी अनुभव किया।

डा० ऋषि कुमार के निवास पर आर्य जगत की ओर से १ जनवरी को श्री शास्त्री जी के सम्बन्ध में अन्तिम शोक दिवस मनाया गया और पगड़ी रस्म अदा की गई। इस अवसर पर पंजाब, हरियाणा, दिल्ली एवं अन्य अनेक स्थानों से आए आर्य नेताओं एवं उनके श्रद्धालु सनातन धर्मी व अहमदी प्रतिनिधियों ने उन्हें शोकांजलि व्यक्त की। सभा कार्यालयाध्यक्ष श्री ओ३म् प्रकाश जी आर्य ने कहा कि नश्वर देह के पश्चात् अब उनका यशः शरीर ही हमारी प्रेरणा पुंज है जिसे भुलाना उनकी उपलब्धियों पर कुठाराघात होगा।

१० जनवरी को प्रातः १० बजे माडल टाऊन जालन्धर की आर्य समाज में श्री शास्त्री को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया है। जिसमें सभी समाजों से शामिल होने की अपील की गई।

धर्मरक्षा महाभियान और उसकी उपलब्धियां

मीनाक्षीपुरम में हुए सामूहिक धर्मान्तरण तथा इस संबन्ध में विदेशी धन के किए जा रहे व्यापक षड्यन्त्र को विफल करने के लिए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के ३०-३१ मई १९८१ को हुए वार्षिक अधिवेशन में धर्मरक्षा महाभियान को प्रारम्भ करने का निश्चय किया गया था। इस अभियान के लिए शखनाद के बाद आर्य समाज ने बड़े पैमाने पर जहां हरिजनों में सुवर्णों के प्रति व्याप्त निराधार भय को दूर किया और देश भर में उनके और सवर्णों के स्नेह सम्मेलनों का आयोजन किया गया वहां इस्लाम में दीक्षित हरिजनो को पुनः हिन्दू धर्म में लाने का लक्ष्य बनाया गया। इतना ही नही हरिजनों को पुनः हिन्दूधर्म में लाने का लक्ष्य बनाया गया। इतना ही नही हरिजनो के अलावा भी जो हिन्दू कभी मुसलमान या ईसाई बन गए थे उन्हें भी अपने दादा परदादाओं के धर्म मे लौटा लाने का अभियान भी पूरी शक्ति के साथ हाथ मे लिया गया।

इस धर्मरक्षा महाभियान के अन्तर्गत आर्य समाज को अनेक उपलब्धियां प्राप्त हुई है: मीनाक्षीपुरम के लगभग आधे हरिजन परिवार जो मुसलमान बन गए थे स्वधर्म में लौट आए हैं। इसके अलावा बेतिया (बिहार) के इमाम खुर्शीद आलाम (नया नाम श्री जयप्रकाश आर्य), नवाब छतारी के पौत्र डा० रफत अखलाक (नया नाम डा० विमल), भोपाल के इंजीनियर श्री एस. डी. मरहूम (नया नाम श्री राजकुमार) और मेरठ की सुशिक्षिता शकीला (नया नाम सुश्री आशा) का हिन्दू धर्म में दीक्षित होना विशेष महत्व रखता हैं।

बम्बई के डा० नसरुद्दीन कमाल एम. ए. पी. डी. (बेचलर आफ डिविनिटी) का हिन्दू धर्म में प्रवेश भी एक विशेष उपलब्धि है।

श्री जय प्रकाश आर्य के परिवार के अन्य सदस्य हैं। पत्नी श्रीमती उर्मिला आर्य (जेबरुनिसा), पुत्र अभिराम आर्य (अमान खुर्शीद), पुत्र ओमप्रकाश आर्य (आबिद खुर्शीद), पुत्री अजली आर्या (अजुम) और पुत्री कुसुम आर्या (निकहत) डा. कमाल भी इस्लामी जगत के सुविख्यात विद्वान और धर्म मीसक है, उन्होंने इस्लाम के अलावा वैदिक धर्म का भी गहन अध्ययन किया है, उनके परिवार के अन्य सदस्य पत्नी और तीन पुत्रियों ने भी जो सभी विदुषी हैं, हिन्दू धर्म ग्रहण किया है।

इनके परिवर्तित नाम इस प्रकार हैं: डा. नसरुद्दीन (मित्र जीवन) बेगम मरसरत जहां (श्रद्धादेवी), कुमारी ग्रमीम (आम्रपाली) कुमारी शबनम (अर्चना), और कुमारी शिरीन (अपराजिता)।

यह प्रसन्नता की बात है कि आर्य समाज के इस अभियान से हरिजनों को मुसलमान बनाने का जो षडयन्त्र शुरू हो रहा था, उस पर अंकुश लग गया है और धर्म परिवर्तन की धारा दूसरी ओर बहने लगी है तथा आर्य समाज ने शुद्धि आन्दोलन को और तेज कर दिया है।

धर्म रक्षा महाभियान के बाद कई हजार मुसलमान और ईसाईयों को हिन्दू धर्म में दीक्षित किया गया। हमें जो समाचार प्राप्त हो रहे हैं, उनकी सूची आपको भेजी जा रही है। इनमें १५ नवम्बर तक प्राप्त सूचनाएं शामिल है। इससे आपको आर्य समाज द्वारा किए गए कार्यों की झांकी मिल सकेगी। हम समय पर इसकी सूचनाएं भेजते रहेंगे।

१. आर्य समाज कीर्तिनगर नई दिल्ली मे नवाब छतारी के पौत्र डा. रफात अखलाक (होम्यापैथ) को ३० अगस्त को शुद्ध कर उनका नाम डा. आनन्द सुमन रखा गया।

२. सितम्बर के आरम्भ में बेतिया जिला चम्पारण (बिहार) के इमाम श्री. खुर्शीद आ म फाइजल को सपरिवार शुद्ध किया गया। इनका नया नाम जय प्रकाश आर्य रखा गया। ये अरबी के विद्वान हैं तथा मुसलमानों में इनकी गिनती चोटी के विद्वानों में की जाती है।

३. आर्य समाज गोविन्दनगर में एक इसाई युवक व एक युवती और एक चार वर्षीय बालक को हिन्दू धर्म में दीक्षित किया गया।

४. आर्य समाज झाबुआ (पूर्व नीमाड़) में ८ जुलाई ८१ को नेपानगर के एक अंग्रेजी अधिकारी श्री डेनियल ब. विलियम को हिन्दू धर्म की दीक्षा देकर उनका नाम दीप कुमार आर्य रखा गया,

५. मीनाक्षीपुरम में १५-१६ जुलाई को दो दिवसीय हिन्दू एकता सम्मेलन के अवसर पर ५० नवमुस्लिम हरिजनों को पुनः स्वधर्म में लाया गया, शुद्धि संस्कार श्री वी. किशनलाल (हैदराबाद) ने कराया।

६. आर्य समाज मंदिर मल्हारगंज (इंदौर) में एक मुस्लिम महिला आशो को शुद्ध कर उसका विवाह वैदिक पद्धति से हेमसिंह नामक युवक से किया गया।

७. १५ अगस्त को सार्वदेशिक सभा के दूसरे शिष्टमण्डल के मीनाक्षीपुरम पहुंचने पर मुसलमान बने ९ हरिजन परिवारों के ४० व्यक्तियों को पुनः स्वधर्म में लाया गया।

८. तिरुची से ९ किलोमीटर दूर वेट्टी कुलम में एक मुसलमान को शुद्ध कर उसका नाम विश्वम् रखा गया। इस अवसर पर तमिलनाडु के एक मंत्री श्री वीरपन्न भी उपस्थित थे,

९. पिलखुवा में एक बाल्मीकि युवक को जो मुसलमान हो गया था, शुद्ध कर विजय नाम रखा गया। इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान लाल रामगोपाल शालवाले ने विजय को आशीर्वाद व धर्मोपदेश दिया।

१०. १४ अगस्त को बड़ोत में ईसाई बने श्री नित्यानन्द अपने परिवार के चार सदस्यों के साथ पुनः हिन्दू धर्म में दीक्षित हुए।

११. २७ अगस्त को ग्राम चक गजरौला में ३५ ईसाइयों को, १८ अगस्त को ग्राम रामनगर में ९३ इसाइयों को बड़ा गांव बुजुर्ग (अलीपुर) जि० मुरादाबाद में ११६ इसाइयों को और २८ अगस्त को ग्राम जम्मूपुरा में (जि० मुरादाबाद) में ६८ इसाइयों को पुनः हिन्दू धर्म में लाया गया। इन चारों स्थानों पर कुल मिलाकर ३५७ ईसाई हिन्दू बने।

१२. आर्य समाज दीवान हाल में ६ सितम्बर को तीन मुस्लिम युवकों को शुद्ध किया गया। इनके नए शेरसिंह (शेरखां), अजयसिंह (बाकूब) और मोहन कुमार (मुगले आजम) रखे गए।

१३. इंदौर मे फातिमा बी को शुद्ध कर उसका नाम माया देवी रखा गया और उसका विवाह मोहनलाल दर्जी के साथ आर्य समाज मंदिर में किया गया।

१४-१२ सितम्बर १९८१ को पुष्कर के निकट खरखेड़ी गांव में ११०० मुसलमान ने अपने को पृथ्वीराज चौहान का वंशज बताते हुए पुनः हिन्दू धर्म ग्रहण किया। इस विशाल शुद्धि समारोह को आर्य समाज और विश्व हिन्दू परिषद् ने संयुक्त रूप से किया।

१५. हिन्दू शुद्धि सभा के उपदेशक श्री भारत लाल के प्रयत्नों से ग्राम रायपुर कलां और ग्राम समसोई (जिला मुरादाबाद) के २७२ इसाइयों ने हिन्दू धर्म ग्रहण किया। इनमें २०६ रायपुर समसोई में और ६६ रायपुर कलां में हिन्दू बने। इनके पुराने नाम हिन्दू ही थे। केवल इनके नाम के आगे मसीह लगा हुआ था। मसीह हटा दिया गया। केवल कुछ नामों को जो [illegible] से बदलना पड़ा।

१६-२१ सितम्बर को सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रतिनिधि मण्डल की मीनाक्षीपुरम में चौथी यात्रा के समय २८ और नवमुस्लिम हरिजन परिवारों को जिनकी सदस्य संख्या ५० है, शुद्ध कर यज्ञोपवीत दिए गए।

१७. गांव मोटा (रसूलपुर जि० सोनीपत) में २८ अगस्त को १४ मुसलमानों को हिन्दू धर्म में दीक्षित किया गया। इससे पूर्व १२ अगस्त को इसी गांव के २३ मुसलमानों को शुद्ध किया गया था।

१८. बदायूं मण्डल के दो मंगहार राजपूतों को तथा एक अन्य राजपूत युवक को जो मुस्लिम युवतियों से विवाह कर मुसलमान हो गए थे, उन्हें पुनः शुद्ध किया गया। इनकी कुल सदस्य संख्या १२ हैं।

१९. कर्नाटक के बेल्थनगड़ी कस्बे में २ अक्तूबर को ७४ हरिजन ईसाई परिवारों को और इसी कस्बे में १२ नवम्बर को १०६ मुसलमान और ईसाई परिवारों के ६०३ व्यक्तियों को हिन्दू धर्म में दीक्षित किया गया।

२०. गोण्डा में आयोजित विश्व-हिन्दू दिवस के अवसर पर १४ नवम्बर को २० मुसलमानों ने जिनमें महिलाएं भी थी, हिन्दू धर्म ग्रहण किया। महन्त अवैद्यनाथ ने इन सबको रामायण की प्रति भेंट की।

२१. सेलम (तमिलनाडु) में सुगनेश्वर मंदिर में आयोजित एक सादे समारोह में ३६ इसाइयों ने हिन्दू धर्म स्वीकार किया। इनको भी हिन्दू धार्मिक पुस्तकें दी गई।

—सच्चिदानन्द शास्त्री कृते
(ओ३म् प्रकाश त्यागी)
मंत्री

स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस

आर्य कुमार सभा चौबारा में, स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस, वयोवृद्ध समाज सेवी श्री अम्बिका प्रसाद जी की अध्यक्षता में, २३ दिसम्बर ८१ को सम्पन्न हुआ।

मंत्री ब्र० ब्रह्मानन्द, प्रधान प्रद्युम्न, संयोजक आर्य पथिक, उपप्रधान विपिन चन्द्र, उपमंत्री विवेकमित्र, कोषाध्यक्ष, चिरंजानन्द एवम् मनोहर अनिल जी का संगीत तथा प्रवचन सराहनीय रहा। सभी ने आर्य हिन्दू संगठन, अछूतोद्धार शुद्धि आन्दोलन एवम् राष्ट्र रक्षा के लिए आह्वान किया। नगर एवम् क्षेत्र के सैकड़ों प्रतिष्ठित व्यक्ति इस समारोह पर उपस्थित हुए। सम्मलित स्वल्पाहार के बाद शांतिपाठ के साथ सभा स्थगित की गई।

ओ३म्

आर्य मर्यादा

सम्पादकीय–

कुछ इधर उधर की

आह ! पण्डित त्रिलोक चन्द जी शास्त्री—

सन् १९८१ आते आते पंजाब के आर्य समाज को एक महान विभूति को हम से छीन कर ले गया। आर्य जगत को मालूम हो चुका है कि प्रादेशिक सभा के प्रसिद्ध महोपदेशक श्री पंडित त्रिलोक चन्द जी शास्त्री २२ दिसम्बर को परलोक सिधार गए। निश्चय ही उनके उठ जाने से आर्य समाज की महान क्षति हुई है। वह वह योग्य सदाचारी, निष्ठावान और सर्वप्रिय उपदेशक की नई पीढ़ी के अभाव के उपदेशकों मे उनका स्थान सब से ऊंचा था। उन्होंने आजीवन एक प्रचारक के रूप में प्रादेशिक सभा के माध्यम से पंजाब के आर्य समाज की जो सेवा की उसे पंजाब के कृतज्ञ आर्य कभी भुला नही सकते। कादियां जिला गुरदासपुर उनका सेवा केन्द्र था। वहां के लेखराम स्मारक के निर्माण मे उनका योगदान अविस्मरणीय है। उन का आर्य समाज के दोनो पक्षो अर्थात् गुरुकुल तथा कालिज पर बड़ा मान सम्मान था। एक लम्बे समय तक महाशय राजपाल और श्री मदन मोहन भजन मण्डली के साथ मिल कर उन्होंने प्रचार कार्य किया। महाशय राजपाल जी कुछ मास पूर्व उनसे जुड़े हुए थे। अब वह भी जाते रहे हैं। इस प्रकार अब इस प्रचारक त्रिमूर्ति के तीनो सदस्य अब हमारे मध्य नहीं रहे। जिस काल मे वह शास्त्री हुए थे। यदि वह चाहते तो वह भी दूसरों की भांति स्कूलो और कालिजो के क्षेत्र मे जा सकते थे। किन्तु आर्य समाज के प्रति निष्ठा के कारण वह आजीवन प्रचारक रहे। इसी कारण उनके उठ जाने से केवल पंजाब के प्रादेशिक क्षेत्र म ही नही प्रत्युत गुरुकुल विभाग में भी उनकी कमी कभी पूरी नही होगी। हम यहां उनकी दिवंगत आत्मा की सद्गति की प्रार्थना करते हैं वहां उनके परिवार के लिए धैर्य और शान्ति की प्रार्थना करते हैं

जालन्धर का शिक्षा सम्मेलन

२१ दिसम्बर को जालन्धर में एक शिक्षा सम्मेलन का आयोजन किया गया था जिस मे पंजाब के प्राईवेट स्कूलों मे लगी नई और पुरानी लाइबिलिटी को हटाने के सम्बन्ध मे विचार किया गया। यह पहला अवसर था जबकि इस सम्मेलन मे पंजाब टीचर्ज यूनियन के प्रतिनिधि, स्कूलो के मुखिए और प्रबन्धक कमेटियों के अधिकारी वर्ग मिलकर बैठे थे। उन सबने निर्णय किया है कि आगामी तिमाही के स्केलों में वे लाइबिलिटी की राशि नहीं भरेंगे। शिक्षा विभाग ने यदि इस पर भी पंजाब सरकार के आदेश पर लाइबिलिटी की राशि काटने का निश्चय किया तो प्राइवेट स्कूलो की ओर से एक सम्मिलित आन्दोलन होगा। हम इस निर्णय का स्वागत करते हैं किन्तु इन स्कूलों से सम्बन्धित सभी लोगों को यह बता देना चाहते हैं कि सरकार शायद नई लाइबिलिटी हटाने को तो तैयार हो जाए। किन्तु पुरानी लाइबिलिटी हटाना नहीं चाहेगी। क्योंकि वह यह समझती है कि वह तो हम वैसे चले आ रहे हैं अतः सभी स्कूलो को तो संघर्ष के लिए उद्यत रहना चाहिए सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी ने इस सम्मेलन में उपस्थित होते ही घोषणा की—सभा और परिषद दोनों इस आन्दोलन का समर्थन करेंगी।

सभा के कालिज

तीन दर्जन स्कूलो के अतिरिक्त पंजाब मे सभा में लड़के और लड़कियों के लगभग एक दर्जन कालिज भी हैं। संगठन की दृष्टि से हम इन सब में सफलता और एकरूपता लाने का प्रयास कर रहे हैं। सभा का पूर्ण प्रयास है कि इन सभी कालिजो मे शिक्षा विभाग से ग्रान्ट सम्बन्धी तथा दूसरे नियमो तथा आदेशों का पूर्णतया पालन किया जाए और सब संस्थाओं के कर्मचारियो को स्वीकृत ग्रेड तथा अन्य सुविधाए दी जाए। किन्तु कहीं कहीं इन कालिजो के स्टाफ यूनियनें ऐसी मांगें भी प्रस्तुत कर रही है जिन्हे शिक्षा विभाग ने अभी स्वीकार नही किया। और ऐसी मांगो के कारण कहीं कहीं कुछ अशान्ति और अव्यवस्था भी चल रही है। हम स्थानीय प्रबन्धक कमेटियो से प्रार्थना करेंगे कि वे ऐसी समस्याओ का बड़ी स्थिरता और धैर्य से समाधान करें। और कहीं एक समय पर झुक कर दूसरी संस्थाओ के लिए समस्या न खड़ी करें! यद्यपि आर्थिक उत्तरदायित्व सब संस्थाओ का अपना अपना है किन्तु सभा की सब संस्थाओ मे एकरूपता और एकलक्षता बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि हम केवल शिक्षा विभाग के नियमो और आदेशों का अनुसरण करें।

उपदेशक वर्ग सेवाओ का लाभ उठाए

इन दिनो समाजो म शीत के कारण उत्सव आदि प्राय नहीं होते इसलिए सभा मे प्रचारक और उपदेशक बन्धु प्राय रिक्त रहते है। जिन समाजो मे सदाचार प्रेमी सदस्य हैं उन्हे इन दिनो हमारे उपदेशक वर्ग की सेवाओ का लाभ उठा कर सत्यार्थ प्रकाश अथवा वेदो और उपनिषदो की इनकी कथाए अपने यहा करानी चाहिए और विशाल मतो का आयोजन करना चाहिए। इनके अतिरिक्त जिला सभाए भी अपने अपने जिलो के केन्द्रीय स्थानो पर अपने जिला सम्मेलन कर सकती है। आशा है सभी समाजें इस ओर शीघ्र ध्यान देंगी।

कालिजो में भी धर्म शिक्षा परीक्षायें

इस वर्ष से आरम्भ हो रही हैं। इस वर्ष सभी कक्षाओ के लिए अभी एक परीक्षा ही आरम्भ की जा रही है। पंजाब और प्रादेशिक सभा के सभी कालिजो मे भेजे जा चुके हैं। स्कूलो की परीक्षाए ११ जनवरी को हो रही हैं। इन के पश्चात फरवरी के पहले सप्ताह म कालिजो की धर्म शिक्षा परीक्षा आरम्भ हो रही है। आशा है कि सभी क सभी अपने अधिक से अधिक छात्र छात्राओ परीक्षाए दिलाएंगे।

अपने सुझाव भेजो

इन दिनो सभा और परिषद के विधान मे संशोधनो के लिए उपसमितियो की मीटिंगें हो रही है जो बन्धु विधि विधान में रुचि रखते है वे अपने सुझाव सभा कार्यालय के पते पर मुझे भेज सकते हैं।

सभा भवन के लिए अपनी सहायता भेजो

सभा अपने भवन के जीर्णोद्धार तथा नवीनीकरण का निश्चय कर चुकी है। इसका नक्शा भी कार्पोरेशन से स्वीकार करा चुकी है। और सीमेंट आदि की उपलब्धि के लिए प्रयत्नशील है। आर्यसमाजों और धनीमानी आर्य बन्धुओ को सभा के इस सम्बन्ध मे अधिक से अधिक सहायता भेजनी चाहिए।

सभा की संस्थाओ का निरीक्षण

मैं प्रयत्न कर रहा हू कि कुछ समय निकाल कर सभा की सभी संस्थाओ का स्वय निरीक्षण करू और उनकी समस्याओं का परिचय प्राप्त करू और जहां तक सम्भव हो सके उनकी कमेटियो से मिलकर वहीं समाधान की तलाश करू। संस्थाए और सम्बन्धित समाजे तैयार रहे। सभा आदि के लिए भी धन संग्रह करना मेरी योजना का एक प्रमुख लक्ष्य होगा। यदि मेरा स्वास्थ्य ठीक रहा तो शीघ्र सभा के कुछ अन्य अधिकारियो के साथ दर्शन करूंगा।

—रामचन्द्र जावेद

सभामन्त्री

भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम में आर्यसमाज की देन

इस दृष्टि से देखो तो महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमर शिष्य क्रान्तिकारियों के पितामह श्यामजी कृष्ण वर्मा का नाम हमारे सामने आता है। इनको महर्षि ने ही विदेशों में भेजा था, जहां जाकर इन्होंने इण्डिया हाउस की स्थापना की थी, जो कि बाद में क्रान्तिकारियों का तीर्थस्थान बन गया था। इन्हीं की प्रेरणा पर विनायक दामोदर सावरकर विदेश गए और इनसे ही देशभक्ति की दिशा में निर्देशन प्राप्त कर पाये, सावरकर अपने को स्वामी दयानन्द का पक्का चेला कहते थे। अण्डमान के कारावास काल में वे कैदियों को सत्यार्थ प्रकाश पढ़ाया करते थे इन्हीं सावरकर के शिष्य मदन लाल धींगड़ा थे जिन्होंने लन्दन मे कर्जन वायली को नरक भेज कर भारत माता के अपमान का करारा बदला लिया था, ये स्वयं भी आर्यसमाजी परिवार से ही थे, इसी प्रकार ३१ वर्ष तक विदेशों की खाक छीनने वाले, आजादी के परवाने राजा महेन्द्र प्रताप जी भी आर्यसमाजी, वातावरण की ही

किश्त--21

देन थे, इन्हीं के साथ भारत को स्वतन्त्र करने की धुन में अपने को विदेशों में लापता कर देने वाले हरिश्चन्द्र जी स्वा. श्रद्धानन्द के पुत्र आर्यसमाजी वातावरण से ही स्वाधीनता की घट्टी पिये हुवे थे, दिल्ली षड्यन्त्र में भाग लेने वालों में भाई बालमुकुन्द बलराज (म० हंसराज के पुत्र) दोनों ही आर्यसमाजी थे, प्रथम विश्वविद्यालय के समय विदेशी सरकार का तख्ता उलटने के लिए गदर पार्टी ने एक योजना बनायी थी, दुर्भाग्यवश भेद खुल जाने से वह सफल नहीं हुई। तब बगावत के अपराध में अनेकों को फांसी, कारावास आदि दण्ड दिए गए थे, जिन मे पंजाब के सोहन लाल पाठक, राजस्थान के प्रताप सिंह बारहट, जगतराम हरयानवी आदि दृढ़ आर्यसमाजी ही थे, इनमें प्रताप सिंह बारहट के पिता केशरी सिंह बारहट तो ऋषि दयानन्द से दीक्षा लेकर उनके शिष्य बने थे, इन्होंने राजस्थान मे जीवन भर क्रान्ति का प्रबल नाद बजाया। इसी ओर ने कोटा के एक दुश्चरित्र महन्त के यहां स्वा० श्रद्धानन्द के दामाद डा० गुरुदत्त तथा अन्य क्रान्तिकारियों के साथ डाका डाल कर मिलने वाला धन देश की स्वाधीनता के कार्य में लगाने की योजना बनाई थी,

जिसमें इनको कालेपानी की सजा हुई थी। इसी प्रकार मैनपुरी षड्यन्त्र के मुखिया श्री पं० गेंदालाल जी दीक्षित तो प्रत्यक्ष रूप में आर्यसमाजी थे, आप आर्यसमाजी शिक्षा संस्थाओं में अध्यापन कार्य करते रहे हैं, देवता स्वरूप भाई परमानन्द तो उन आर्यसमाजी उपदेशकों में से थे जो कि महर्षि के सन्देश के प्रचारार्थ विदेशों में भी गए थे और देशभक्ति के अपराध में जिन्हें फांसी के बदले कालेपानी की यातनायें सहनी पड़ीं पंजाब केसरी ला० लाजपतराय महर्षि दयानन्द के उन अमर शिष्यों में से थे जिनके शब्दों में आर्यसमाज उनकी माता और ऋषि दयानन्द उनके पिता थे, इनकी देशभक्ति किसी से छिपी नहीं है,

काकोरी केस के अमर हुतात्मा

इसी प्रसंग में हमें काकोरी केस के अमर हुतात्मा बिस्मिल, रोशन सिंह तथा विष्णुशरण दुब्लिश के रूप में महर्षि के अमर शिष्य आजादी के मोर्चे पर खड़े नजर आते हैं, बिस्मिल तो सत्यार्थप्रकाश से ही जीवन प्राप्त करने वालों में से थे, इनको सशस्त्र क्रान्ति तथा देश भक्ति दीक्षा देने वाले स्वा० सोम देव जी आर्य समाज के उपदेशक थे, जिन्होंने शाहजहांपुर आर्यसमाज मन्दिर में इनको दीक्षा दी थी, बिस्मिल नित्य हवन करने वालों में थे, ठा० रोशनसिंह अपने को आर्यसमाजी मानते थे, विष्णुशरण दुब्लिश आर्य समाज के सदस्य रहे, फांसी के बाद राजेन्द्र लाहिड़ी की लाश का तो आर्यसमाजियों ने जुलूस निकाला था तथा सम्मानपूर्वक उनकी अन्त्येष्टि भी की थी।

भगतसिंह का दल

वीर भगतसिंह के दल में भी आर्यसमाज से प्रेरणा प्राप्त करने वालों की संख्या और अधिक प्रकट होती है, भगतसिंह के के दादा अर्जुनसिंह कट्टर आर्यसमाजी थे, नित्य हवन करते थे, आर्यसमाज के उपदेशक भी रहे, भगतसिंह के पिता किशन सिंह भी आर्य समाज के सदस्य रहे, इन के यहां सारे संस्कार आर्यसमाजी विधि से ही होते थे, अब भी होते हैं, ये आर्यसमाजी संस्थाओं में पढ़ते रहे हैं, इनके साथ यशपाल जी भी बचपन में गुरुकुल कांगड़ी में पढ़ते रहे, इनकी माता भी आर्यसमाजी थीं, सुखदेव भी बचपन में आर्य कुमार सभाओं में जाते थे. इनके चाचा अचिन्त्यराम जी आर्य समाज के सदस्य थे, कमीशन के सामने गवाही देते हुए उन्होंने कहा था कि मैं तो आर्यसमाजी विधि से सुखदेव की लाश की अन्त्येष्टि करता, इसी दल के सदस्य धन्वन्तरी 'काशीराम' तथा लेखराम प्रखर आर्य समाजी थे, हंसराज वारलैस तो आज भी अपने को आर्य समाजी घोषित करते हैं, इनके सिवा गुरु पं. जयचन्द्र जी विद्यालंकार आर्यसमाजी विद्वान ही थे, उस दल में काम करने वाली सुशीला दीदी आर्यसमाजी संस्था कन्या महाविद्यालय जालन्धर की देन थी, इस दल को आर्थिक सहयोग करने वाली देवियों में आर्यसमाजी नेता ला० नारायणदत्त जी ठेकेदार की सुपुत्री सुमित्रा प्रमुख थीं, दिल्ली के पूर्व महापौर श्री देशराज जी की पत्नी चन्द्रवती जी का योगदान तो इतिहास की स्वर्णिम निधि है।

हम प्रसिद्ध आर्य विद्वान् श्री गुरु पं. बुद्धदेव जी विद्यालंकार ... (illegible) ... क्रान्तिकारियों को आवास तथा आर्थिक सहयोग

इसी दल के सदस्य धन्वन्तरी काशीराम तथा लेखराम प्रखर आर्य समाजी थे, हंसराज वारलैस तो आज भी अपने को आर्यसमाजी घोषित करते हैं, इनके सिवा गुरु पं. जयचन्द्र जी विद्यालंकार आर्यसमाजी विद्वान् ही थे, उस दल में काम करने वाली सुशीला दीदी आर्यसमाजी संस्था कन्या महाविद्यालय जालन्धर की देन थी, इस दल को आर्थिक सहयोग करने वाली देवियों में आर्यसमाजी नेता ला. नारायणदत्त जी ठेकेदार की सुपुत्री सुमित्रा प्रमुख थीं। दिल्ली के पूर्व महापौर श्री देशराज जी की पत्नी चन्द्रवती जी का योगदान तो इतिहास की स्वर्णिम निधि है।

देकर युग ऋण चुकाया है। हिन्दी साहित्य के विख्यात लेखक स्व० जयदेव विद्यालंकार ने यहां इन देशभक्तों को सब प्रकार का योगदान दिया वहां राष्ट्रीय प्रामाणिक साहित्य के द्वारा जनजागृति तथा अनुकूल वातावरण के निर्माण में प्रशंसनीय सहयोग दिया है, इस दृष्टि से चन्द्रशेखर आजाद भले ही प्रत्यक्ष आर्यसमाजी न हों पुनरपि अपने गुप्त कार्य एवं संगठन के लिए आर्यसमाज मन्दिरों को विश्वस्त स्थान समझकर अधिक सम्पर्क रखते थे, प्रसिद्ध आर्य नेता एवं संसत्सदस्य स्व० ठा० यशपाल जी भी क्रान्तिकारी दल के माध्यम से भारत की स्वाधीनता के लिए स्तुत्य कार्य करते रहे हैं, आर्यसमाज के प्रसिद्ध दार्शनिक विद्वान् स्व० स्वामी आत्मानन्द जी तथा स्व० पं० जगदीश चन्द्र जी शास्त्री दर्शनाचार्य का भी उक्त दल के साथ क्रियात्मिक सहयोग रहा है,

श्री सत्यप्रिय जी शास्त्री

इसी प्रकार प्रसिद्ध आर्य प्रचारक स्वा० भीष्मजी का तो इन क्रान्तिकारियों से निकट का सम्पर्क रहा था, ये लोग स्वामी जी के करहेड़ा (मेरठ) में स्थित आश्रम में आकर समय-समय पर विश्राम किया करते थे, स्व० आर्य कवि चन्द्र, जिन्होंने तो एक बार एक आर्यसमाज के उत्सव पर सन् १८५७ के समय अंग्रेजों द्वारा किए गए अत्याचारों का कविता में दर्दनाक वर्णन किया तब उनको राजद्रोह के अपराध में कालेपानी की सजा दी थी जो कि बाद में वापस ली गई थी।

1942 की क्रान्ति

देश की स्वाधीनता के हेतु लड़े जाने वाले इस संग्राम की सबसे बड़ी कड़ी में अन्तिम पड़ाव सन् १९४२ की क्रान्ति के रूप में आता है। इसमें भी महर्षि के अनुयायियों ने पूर्ववत् ही बढ़ चढ़ कर भाग लिया, डी. ए. वी. कालिज लाहौर में तो पुलिस ने ... गोलियां चलाई थीं, गुरुकुल ... (मेरठ) पर तलाशी कर ली गई थी, ... दिया गया था। ... ... फांसी दी गई थी।

क्रमशः

राष्ट्र भाषा हिन्दी

ले०—[illegible] शास्त्री [illegible] गुरुकुल वैदिक संस्कृत महाविद्यालय [illegible], इलाहाबाद।

प्रत्येक देश की एक राष्ट्र भाषा अवश्य होती है, जिसे उस देश का अधिक पक्ष प्राप्तों के द्वारा स्वीकृत है, क्योंकि उसे उस देश की सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक आदि सम्पूर्ण प्रकार से हो जिससे वह व्यक्ति अपने देश के ज्ञान के साथ-साथ अपने जीवन के क्रिया कलापों को सही तरह से पूरित कर सके। अन्य देशों की तरह भारत देश की एक राष्ट्र भाषा अवश्य मेव हिन्दी भाषा घोषित है परन्तु जिस तरह से उसका क्रियान्वयन होना चाहिए उस ढंग से क्रियान्वित नहीं है, आज हमारा महान दुःख है कि जिस देश को सोने की चिड़िया एवं जिसे अन्य अनेक सम्माननीय उपाधियों से आहूत किया जाता था, तथा जिस देश की संस्कृति रीति रिवाज अति उत्कृष्ट एवं वैज्ञानिकतापूर्ण थे। जिस देश की भूमि पर देव तुल्य, राम कृष्ण, गौतम कणाद, पातञ्जलि, दयानन्द आदि जैसे वीर-सपूतों ने जन्म लिया। जिस देश की रम्य शस्य श्यामला भूमि पर अवतरित होने हेतु सभी लोग लालायित रहते थे ऐसा सुन्दर हमारा देश "चत्कार पंक्ति-रिव अच्छति आस्य पंक्ति" के अनुसार यह देश अधोगति को प्राप्त हुआ एवं नित्य प्रति अधोन्मुखी होता जा रहा है। यही मुख्य कारण है कि हमारे देश की राष्ट्र भाषा हिन्दी घोषित की जा चुकी है, परन्तु आज 'कथनी और करनी' को काफी अन्तर जमीन आसमान की छू रहा है। आज इस देश के उच्चाधिकारी राजकर्मी विशेष रूप से अंग्रेजी भाषा को प्रोत्साहन दे रहे हैं, आज रक्षक ही भक्षक बन रहे हैं। वास्तव में आज किसी कवि की ये पंक्तियां चरितार्थ हो रही हैं—

न कोई इंग्लिश न कोई जर्मन
न कोई रोमन न कोई टर्की,
मिटाने वाले हैं इसको अपने
हिन्दी को जो आज इसको मिटा रहे

जिसे फला यह समझ रहे हैं बका का राज उसी में है। नहीं मिटाने से मिट सकेंगे यह आज इसको मिटा रहे हैं। [illegible] दूसरा अगर है [illegible] वतन का [illegible] में। [illegible] को पहुंचने अपनी [illegible] को [illegible] रहे।

आज हमारे भारत देश को स्वतन्त्र हुए ३६ वर्ष के [illegible] होने को आ रहे हैं [illegible] कि [illegible] देश के उत्थान, पतन के लिए काफी समय होता है। अब इतना समय बीत जाने पर भी हम अपने नियमों, लक्ष्यों को लागू करने में क्यों असक्षम हैं? जबकि फ्रांस, जर्मन, इजरायल आदि प्रमुख देशों ने एकदम गिरी एवं पिछड़ी भाषा को राष्ट्र भाषा घोषित किया था उसे उन लोगों ने कुछ ही वर्षों में हर प्रकार से अपने कार्यों में प्रयुक्त कर लिया है, तथा अपना सभी कार्य अपनी राष्ट्र भाषा में ही करते हैं। जब हम एक छोटे से देश इजरायल की तरफ दृष्टिपात करते हैं कि उस छोटे से देश ने अपने देश की राष्ट्र भाषा उस भाषा को बनाया जो कि सम्भवतः काफी समय से पिछड़ी हुई थी परन्तु आज उन्होंने उस को हर तरह से अपने में मिला लिया है, कथनी और करनी एक कर उसे भाषा को गौरवान्वित कर रहे हैं, आज हमको उन लोगों से सीख ग्रहण कर कार्य करना चाहिए। आज हमें महान दुःख है कि भारत में उच्च पदों के लिए अंग्रेजी विशेष रूप से प्रमुख है न कि हिन्दी। आज उच्च पदोंके अभ्यार्थियों को आवश्यक है कि वह आंग्ल भाषा का सम्यकज्ञाता हो न कि हिन्दी भाषा का सम्यकज्ञाता। तो फिर प्राकृतिक रूप से यह प्रश्न उठता है कि केवल मात्र कथन के लिए राष्ट्र भाषा पद पर हिन्दी आसीन है, वह तो मेरे विचार से केवल मात्र उसी तरह से भार स्वरूपा है जिस तरह से एक लोकोक्ति है कि गधे के ऊपर वेद, उपनिषद, शास्त्र आदि का गट्ठर लाद दिया जाए तो वह केवल उसे भार ही समझता है न कि उसके महत्व को समझता है। ठीक वही गधे जैसी दशा देखा जाए? तो हम सबकी है। कथन मात्र के लिए हिन्दी राष्ट्रभाषा है परन्तु उस गधे की तरह हम इसे भार ही समझ रहे हैं। आज उसकी आवश्यकता, महत्व एवं वैज्ञानिकता, एकता आदि महत्वपूर्ण बातों की तरफ हमारा ध्यान आकृष्ट नहीं है। आज से कुछ वर्षों पूर्व स्वामी दयानन्द जी महाराज ने इसकी आवश्यकता को समझकर इसे हर तरह से उन्नतिशील बनाने के लिए प्रयत्न किया था। क्योंकि जिस प्रकार से एक रेलगाड़ी का संचालन करने हेतु आवश्यक होता है कि समस्त इञ्जन हो, ठीक इसी प्रकार से एक राष्ट्र के समस्त [illegible] निधियों एवं देश महात्म्य व संस्कृति की रक्षा हेतु आवश्यक होता है कि समस्त राष्ट्र भाषा हो, इञ्जन के अभाव में जिस तरह से एक रेलगाड़ी नहीं चल सकती ठीक उसी प्रकारसे एक देशभी राष्ट्रभाषा के अभाव सही प्रकारसे उन्नतशील नहीं हो सकता।

स्वामी जी महाराज की यह दूर दर्शिता थी कि वे स्वयं एक गुजरात प्रान्तवासी एवं गुजराती भाषा भाषी होने पर भी आज की तरह संकीर्ण भावनाओं को त्यागकर "सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय" एक राष्ट्रभाषा पर बल दिया। उन्होंने अपने ग्रन्थ लगभग सभी हिन्दी भाषा मे ही लिखे। स्वामी जी महाराज ने अपना अमर ग्रन्थ "सत्यार्थ प्रकाश" का लेखन भी हिन्दी भाषा में कर इसको जनमानस के अन्तः स्थल तक पहुचाने हेतु अनेक लोगो को प्रेरित किया। हमको इसका प्रत्यक्ष ज्वलन्त उदाहरण देखने को तब मिलता है। जबकि उनसे किसी विदेशी महिला ने प्रार्थना किया कि क्या मैं वेद एवं आपके ग्रन्थों का अंग्रेजी मे अनुवाद कर सकती हूं परन्तु तब स्वामी जी ने उस स्त्री को उत्तर दिया कि वैसे तुम्हारी बात उचित है, परन्तु तुम भी हिन्दी व संस्कृत का अध्ययन करके भारतीय साहित्य जैसे कि वेद उपनिषद, आदि के अध्ययन के साथ-साथ हमारे द्वारा लिखित ग्रन्थों का अध्ययन करो। क्योंकि अगर तुम ऐसा न करके हमारी पुस्तको का आंग्ल भाषा में अनुवाद कर दोगी तो जितने मेरे विदेशी भक्त जो कि भारतीय साहित्य के अध्ययन हेतु संस्कृत व हिन्दी का अध्ययन कर रहे हैं तुम्हारे द्वारे ग्रन्थों के अनुवाद हो जाने पर वे हिन्दी संस्कृत का अध्ययन करना बन्द कर देंगे जिससे हिन्दी व संस्कृत भाषा की क्षति होगी अतः तुम ऐसा मत करना।

वास्तव में उनकी इस भावना को देखने से हम अन्दाजा कर सकते हैं कि वे कितने हिन्दी प्रेमी थे। अतः हमें अपनी भाषा व संस्कृति तभी हमारा जीवन सार्थक है, क्योंकि किसी कवि की यह पंक्तियां भी ध्यान करनी पड़ती है—

जिसको न निज देश तथा निज
भाषा का अभिमान नहीं वह
नर नहीं निरा मृतक पशु समान है।

वास्तव में इसको हम समझें तो हमारा जीवन सार्थक है, क्योंकि जो लोग इस देश का अन्न जल का पान कर बड़े हुए हैं तथा जो कौम संगठन को भंग कर विद्वेष फैलाते हैं ऐसे धूर्त लोगों से वास्तव में भूमि केवल मात्र दबी जा रही है ऐसे लोगों को भूमि नष्ट करें।

आज सभी कौम अपना यह कर्त्तव्य समझें कि हर तरह से हम अपने जीवन में हिन्दी भाषा को ज्यादा से ज्यादा अपने सम्बन्धी एवं अपने सुहृदजनों को इसके महत्व से परिचित कराकर सरकार पर भी [illegible] तरह से दबाव डालें कि जिससे वह अधिक से अधिक सरकारी काम में प्रयुक्त कराकर इसको प्रयोग करने के लिए ज्यादा से ज्यादा मात्रा में प्रोत्साहित कर निरन्तर एकता सौहार्द, प्रेम, एवं देशोन्नति करे। तब वास्तव में इस तरह से निरन्तर प्रयत्नशील रहने पर वह दिन दूर नहीं होगा जब सब काम राष्ट्र भाषा हिन्दी में होगा तथा हमारी कथनी और करनी एक होगी। तब हम अपने मार्ग के संकटों से हटकर सफलता रूपी गगन चुम्बी को प्राप्त कर लेंगे तब किसी कवि की यह उक्तियां सार्थक होगी—

होगी सफलता क्यों नही कर्त्तव्य पथ
पर दृढ रहो।
दुश्मनों के वार सारे वीर बन
कर सहो॥
असफलता एक चुनौती हैं स्वीकार
करो।
क्या कमी रह गई देखो और
सुधार करो॥
जब तक सफल न हो नीद चैन
की त्यागो तुम।
संघर्षो का मैदान छोड़ मत भागो
तुम॥
कुछ किए बिना जय साकार नही
होती।
लहरों से डर कर नौका पार
नहीं होती॥

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

किसी भी सम्प्रदाय या वर्ग से हो कहना चाहता है कि वे उन तत्वों का मुकाबला करने के लिए तैयार हो जायें, जो इस देश में अराजकता, साम्प्रदायिकता और अराष्ट्रीय भावना पैदा करने का प्रयास कर रही है। हमें अपने स्वर्गीय प्रधान मन्त्री पंडित जवाहरलाल नेहरू के यह शब्द कभी न भूलने चाहिए कि भारत जीवित रहे, तो कोई मर नहीं सकता यदि भारत ही न रहा, तो जीवित कौन रहेगा।

पारित किए गए अन्यप्रस्तावोंमें कहा गया कि लाला जगत नारायण की हत्या किए जाने पर पंजाब के लोगों को भारी क्षोभ है। तरनतारन, जालन्धर, चंडीगढ तथा कपूरथला मे की गई हत्याओ के के प्रति भी लोगो को भारी रोष है। इन हत्याओं की निन्दा करते हुए शोक संतप्त परिवारों से सहानुभूति का प्रस्ताव पारित किया गया।

एक-दूसरे प्रस्ताव में यह प्रण लिया गया कि भारत की एकता, अखण्डता के लिए हर तरह का बलिदान दिया जाएगा और भारत की अखण्डता और एकता पर किसी तरह की आंच नही आने दी जाएगी।

पंजाब सरकार राज्य में शांति व्यवस्था बनाए रखने और हिंसक घटनाओं के अपराधियों का सुराग लगाने में पूर्णतया विफल रही हैं।

इसी तरह एक प्रस्ताव उत्तर प्रदेश से आया जिसमें इस बात पर अफसोस प्रकट किया गया था कि कुछ विदेशी ताकतों के कारण राज्य में परिस्थितियां बिगड़ी हैं और संकटकालीन स्थिति पैदा हो गई है।

पंजाब के हिंदुओं को अकेला न समझा जाए

श्री शालवाले की साम्प्रदायिक-तत्वों को चेतावनी

हिन्दू अब सिर कटाना नहीं सिर काटना सीखें—सिख अलग कौम खालिस्तान की ओर कदम—देश का कुछ विभाजन सहन न होगा

जालन्धर (का० प्र०)—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले ने गत दिवस यहां एक विशाल हिन्दू सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए कहा कि खालिस्तान का नारा लगाने तथा सिख एक पृथक् राष्ट्र की मांगों के पीछे राजनीतिक पार्टियों का हाथ है। अपने राजनीतिक स्वार्थों तथा हितों के लिए राजनीतिक पार्टियां कई तरह के नारे खोजती रहती हैं।

जो लोग हालात से निपटना जानते हैं उन्हीं की ही अन्त में जीत होती है। पंजाब के लोगों को किसी भी मामले में खास कर हिन्दुओं को दरपेश खतरे में अपने आपको अकेला नहीं समझना चाहिए।

उन्होंने आरोप लगाया कि सरकार गूंगी और बहरी है तथा इस पर तब तक कोई असर नहीं होगा जब तक कि इसे जगाने के लिए तरह तरह के आन्दोलन न किए जाए।

लाला जी ने कहा कि खालिस्तान की मांग करने वाले भूल जाएं कि वह अपनी इस कुचाल में कभी सफल हो पाएंगे। पाकिस्तान बनाने वाले लार्ड माऊंटबैटन मौजूद थे जो भारत के कमजोर नेताओं को भारत के दो टुकड़े करने के लिए मनाने में सफल हो गये थे लेकिन अब कोई माऊंटबैटन नहीं है तथा न ही कमजोर नेतृत्व है।

उन्होंने कहा कि आज भारत के एक तरफ चीन, दूसरी तरफ पाकिस्तान, तीसरी तरफ बंगला देश और चौथी तरफ अफगानिस्तान में रूस की सेनाओं ने सीमाओं पर जमाव कर रखा है जिससे भारत एक ऐसे खतरे में घिरा हुआ है जिसका सामना करने के लिए हमें तैयार रहना होगा। लेकिन बाहरी दुश्मनों से ज्यादा खतरनाक वह कुलबुलाते अन्दरूनी कीड़े हैं जो देश की अखण्डता और एकता के लिए एक चुनौती बने हुए हैं।

उन्होंने कहा कि देश का किसी भी हालत में विभाजन नहीं हो सकता। जो सरकार ऐसा करने का साहस करेगी उसे बरदाश्त नहीं किया जाएगा।

उन्होंने चेतावनी दी कि जो राजनीतिक दल तथा लोग खालिस्तानियों व उग्रवादियों को समर्थन देते हैं उनके लिए भारत की सरजमीं पर कोई जगह नहीं है।

आज हिन्दू पूर्ण रूप से संगठित है। यह कहना बिल्कुल गलत है कि हिन्दू बटा हुआ है।

लाला जी ने कहा कि खालिस्तानियों ने लाला जगत नारायण की हत्या करके अपनी कब्र खोद ली है। उन्होंने अप्रत्यक्ष रूप से चेतावनी दी कि यदि पंजाब के किसी भी हिन्दू का दिल दुखाया गया तो खालिस्तानियों को यह बात याद रखनी चाहिए कि उत्तर प्रदेश में भारी गिनती में हिन्दू भी रहते हैं और सिख भी।

इस अवसर पर बोलते हुए पंजाब सनातन धर्म महासभा के अध्यक्ष पण्डित मोहनलाल ने कहा कि खालिस्तान का नारा यद्यपि मुट्ठी भर लोगों ने लगाया है लेकिन अन्दर खाने उनका समर्थन करने वाले सैंकड़ों लोग मौजूद हैं। अकाली अपनी इस मांग को विभिन्न रूपों में रख रहे हैं। आनन्दपुर साहिब का प्रस्ताव तथा सिख अलग कौम की मांगें खालिस्तान की तरफ एक कदम है। अकाली चाहते हैं कि उन्हें एक ऐसा राज्य प्राप्त हो जिसमें सिखों का ही बोलबाला हो।

श्री रमेशचन्द्र ने कहा कि पंजाब इस समय कई तरह की कठिनाइयों से घिरा हुआ है। सरकार हिन्दुओं की रक्षा करने में असमर्थ रही है। हिन्दुओं को अपनी रक्षा आप करने के लिए तैयार होना पड़ेगा।

महन्त राम प्रकाश दास ने कहा कि उग्रवादी तत्व पंजाब को नष्ट और तबाह करने में लगे हुए हैं। सरकार इस कदर निकम्मी हो चुकी है कि ला एण्ड आर्डर की मिट्टी पलीत हो रही है और कोई एक्शन नहीं लिया जा रहा।

पंजाब मजहबी दल के अध्यक्ष श्री हजारा सिंह ने कहा कि यदि सरकार खालिस्तान बनाने के लिए मान गई और खालिस्तान बन गया तो तीस करोड़ अछूतों के लिए अछूतिस्तान लेने के लिए गोलियां खाने से भी पीछे नहीं हटेंगे। खालिस्तान नाम की कोई चीज नहीं है।

आन्ध्र प्रदेश के आर्य नेता श्री वन्देमातरम ने कहा कि खालिस्तान का नारा देश से नहीं बल्कि विदेशों से बुलन्द किया गया है जो हमारे देश की तरक्की होते नहीं देखना चाहते। इसी तरह के नारे असम और मीनाक्षीपुरम में भी बुलन्द हुए हैं।

श्री सत्येन्द्रनाथ ने कहा कि जो बक-जीवन राम जैसे नाजुक राजनीतिक अवसरों पर आन्दोलनों के कारण विदेशी ताकतों से मेल-जोल बढ़ा रहे हैं। लेकिन किसी भी ऐसी साजिश को देश के किसी भी हिस्से में सहन नहीं किया जाएगा जिससे कि देश कमजोर होता हो और देश का बटवारा होता है। इस अवसर पर श्री राम नारायण तथा प्रो० राम सिंह ने भी भाषण दिए।

हरियाणा के आर्य नेता श्री कपिलदेव शास्त्री ने कहा कि अकालियों को हरियाणा में अपनी आवाज उठाने का साहस इसलिए नहीं होता क्योंकि वहां बोली का जवाब गोली से दिया जाता है। उन्होंने पंजाब के हिन्दुओं को आह्वान किया कि वह सिर कटाना ही नहीं बल्कि सिर काटना भी सीखें।

पर्व सूची (सार्वदेशिक सभा द्वारा स्वीकृत)

स०	पर्व	सौर तिथि	चन्द्र तिथि	अंग्रेजी दिनांक	दिन
१	मकरसंक्रान्ति	१ माघ सु २०३८	माघ वदि ५ २०३८	१४-१-१९८२	बृहस्पतिवार
२	वसंत पंचमी	१७ माघ २०३८	माघसुदि ५ २०३८	३०-१-१९८२	शनिवार
३	सीताष्टमी	५ फाल्गुन २०३८	फा० वदि ८,२०३८	१६-२-१९८२	मंगलवार
४	दयानन्द बोधरात्रि (शिवरात्रि)	११ फा० २०३८	फा० व० १४,२०३८	२२-२-१९८२	सोमवार
५	लेखराम वीर तृतीया	१५ फा० २०३८	फा० सु० ३,२०३८	२६-२-१९८२	शुक्रवार
६	नवसस्येष्टि (होली)	२५ फा० २०३८	फा० सु० १५ २०३८	९-३-१९८२	मंगलवार
७	नवसंवत्सरारम्भ	१३ चैत्र सा० २०३८	चै० सु० १,२०३९	२६-३-१९८२	शुक्रवार
८	रामनवमी	२० चैत्र, २०३९	चै० सु० ९,२०३९	२-४-१९८२	शुक्रवार
९	हरितृतीया	८ श्रावण, २०३९	श्रा० सु० ३,२०३९	२३-७-१९८२	शुक्रवार
१०	श्रावणी उपाकर्म (रक्षाबन्धन)	२० श्रावण २०३९	श्रा० सु० १५ २०३९	४-८-१९८२	बुधवार
११	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	२[illegible] भाद्रपद, २०३९	भाद्र० व० ८,२०३९	१२-८-१९८२	बृहस्पतिवार
१२	विजयदशमी	११ आश्विन, २०३९	आ० सु० १०, २०३९	२७-९-१९८२	सोमवार
१३	गुरुविरजानन्द निर्वाण दिवस	१५ आश्विन, २०३९	कार्तिक वदी, [illegible]	१-१० १९८२	शनिवार
१४	ऋषिनिर्वाणदिवस (दीपावली)	३० आश्विन २०३९	कार्तिक [illegible] २०३९	[illegible]-११-१९८२	[illegible]
१५	श्रद्धानन्द बलिदानदिवस	८ पौष, २०३९	पौष[illegible] ५,२०३९	[illegible]-१२-१९८२	[illegible]

आर्य प्र. नि. सभा पंजाब द्वारा प्रकाशित तथा प्रसारित साहित्य की पुस्तकें

१.	सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी,	४—५०
२.	„ (उर्दू)	१०—००
३.	„ अंग्रेजी	२०—००
४.	आर्य समाज–अतीत की उपलब्धियां तथा भविष्य के प्रश्न —ले०–डा० भवानीलाल भारतीय	१०—००
५.	पंजाब का आर्य समाज ले०–प्रि० रामचन्द्र जावेद	४—००
६.	मिलिम्पसज फराम सत्यार्थ प्रकाश (अंग्रेजी) —ले० डी० एन० वासुदेव जी	३—००
७.	स्वामी श्रद्धानन्द (अंग्रेजी) —ले० श्री के० एन० कपूर जी	५—००
८.	स्वामी श्रद्धानन्द उपदेश माला	०—२५
९.	पोलीटीकल टैस्टामेंट आफ स्वामी श्रद्धानन्द	०—२५
१०.	जन्म साखी (ले० ज्ञानी पिण्डीदास जी)	२—००
११.	सिक्ख गुरु अते आर्य सिद्धान्त (पंजाबी) —ले० स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी सरस्वती	२—५०
१२.	आर्य समाज दा दिग्दर्शन (पंजाबी) ले०—आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद	३—००
१३.	वेद और उनका प्रादुर्भाव —ले० महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज	५०—०० सैंकड़ा
१४.	आधुनिक हरिजन समस्या	०—७५
१५.	भागवत खण्डनम् —ले० स्वामी दयानन्द जी सरस्वती	०—५०
१६.	नोहारिकावाद और उपनिषद् (ले० प. चमूपति)	००—२५
१७.	वीतराग स्वामी स्वतन्त्रतानन्द —ले० श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु	१—००
१८.	हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी —ले० ज्ञानी पिंडीदास जी	०—२५
१९.	प्रिंसिपल आफ आर्य समाज अंग्रेजी —ले० श्री पूर्णचन्द जी एडवोकेट	२—००
२०.	महर्षि दयानन्द (चित्रावली)	३—००
२१.	संस्कार विधि —ले० स्वामी दयानन्द जी सरस्वती	४—५०
२२.	आर्य पर्व पद्धति —ले० श्री पं० भवानी प्रसाद	५—००
२३.	पूजा किस की —ले० श्री राम गोपाल शालवाले	०—२५
२४.	आर्य समाज „ „	०—३०
२५.	सत्य की मंजिल सेवा की राह —ले० शादी राम जोशी	१०—००
२६.	बाल सत्यार्थ प्रकाश ले० प्रोफैसर विश्वनाथ विद्यालंकार वेदोपाध्याय गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार,	३—००
२७.	धर्मस्वातन्त्र्य विधेयक क्यों ? ले० रघुनाथ प्रसाद पाठक	१—००
२८.	माण्डूक्योपनिषद् —ले० टीका म० नारायण स्वामी	०—३५
२९.	प्रभु भक्ति स्तोत्र —ले० लोकनाथ जी वाचस्पति	०—४०
३०.	धर्मवीर पं. लेखराम —ले० स्वामी स्वतन्त्रानन्द	०—४०

आर्य मर्यादा के विशेषांक

१.	मेरी आत्मकथा के कुछ पृष्ठ —ले० आचार्य रामदेव जी	१—००
२.	स्वतन्त्रानन्द संस्मरणांक	१—५०
३.	वेद में पुनरुक्ति दोष नहीं	२—५०
४.	यजुर्वेदाध्याय का ३२वां स्वाध्याय	१—००
५.	अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी	१—५०

नोट :—ओ३म के झंडे, तथा ओ३म के बैज भी उपलब्ध हैं।

प्राप्तिस्थान

व्यवस्थापक—चमूपति साहित्य प्रकाशन विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर—4

मूले जाटों के ग्राम

परनाला निकट बहादुरगढ़ में आर्यसमाज की स्थापना

आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा की ओर से बहादुरगढ़ के निकट ग्राम परनाला जिला रोहतक से नवीन आर्य समाज की स्थापना की गई है। इस ग्राम में ३०० घर मूले जाटों के हैं जो कभी मुगल बादशाहों के समय में बलात मुसलमान बना दिए गए थे। भारत का विभाजन होने पर ये पाकिस्तान नही गए और हरियाणा के अन्य जाटो की भांति अपने पर्व मनाते रहे तथा विवाह संस्कार आदि वैदिक रीति से करते रहे।

सभी की ओर से इस ग्राम में महाशय रतनसिंह आर्य शुद्धि सभा प्रचारक तथा श्री केदार सिंह आर्य सभा कार्यालयाध्यक्ष के प्रयत्न से २९ नवम्बर को पं. मुन्शी लाल धर्मपाल की भजन मण्डली का वैदिक धर्म प्रचार करवाया गया तथा ३० नवम्बर को प्रातः आत्म शुद्धि आश्रम बहादुरगढ़ के संचालक स्वामी धर्ममुनि जी द्वारा यज्ञ तथा वेदोपदेश करवाकर २५ व्यक्तियों को यज्ञोपवीत दिये गए और उन्हें आर्यसमाज का विधिवत सभासद बनाया गया। उसी समय आर्यसमाज की स्थापना की गई जिसमें म. भूपसिंह को प्रधान, श्री किशनलाल मन्त्री, श्री नत्थूराम उपमन्त्री तथा श्री सुभाषचन्द्र को आर्य समाज का कोषाध्यक्ष बनाया गया, आर्यसमाज का सम्बन्ध आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा से किया गया तथा शीघ्र ही आर्य समाज का वार्षिक उत्सव भी करने का कार्यक्रम बनाया गया है।

—केदारसिंह आर्य

संकीर्ण और अर्थहीन साम्प्रदायिकता

पंजाब अभी तक देश के उन राज्यों में था, जहा साम्प्रदायिक सद्भाव का वातावरण बना हुआ है। लेकिन वहा अब हिन्दुओं और सिखों के बीच तनाव की स्थिति उत्पन्न कर दी है, उग्र सिखों के एक नेता संत जरनैल सिंह के इस अल्टीमेटम ने कि यदि पंजाब सरकार ने १५ जून तक सिगरेट और तम्बाकू की बिक्री पर रोक नहीं लगायगी, तो वे सिगरेट पीने पर रोक लागू करेंगे।

जैसा कि पंजाब हिन्दू संगठन के संयोजक श्री वीरेन्द्र ने पंजाब की हिन्दू जनता को सचेत करते हुए सही ही कहा है, सिगरेट, तम्बाकू की आड़ लेकर हिन्दुओं को दबाने और आतंकित करने का जो षडयन्त्र आरम्भ किया है, वह एक राष्ट्रघातक षडयन्त्र है। हम इस घिनौने षडयन्त्र को कभी सफल नहीं होने देंगे।

असल में इस षडयन्त्र के पीछे वे ही शक्तियां काम कर रही हैं जिन्होंने कुछ समय पूर्व 'खालिस्तान' की राष्ट्रविरोधी मांग खड़ी की थी। जैसे ही जन-समर्थन के अभाव में खालिस्तान का आन्दोलन ठण्डा पड़ा, संकीर्ण और अर्थहीन साम्प्रदायिकता से पूर्ण इस नये आन्दोलन को, जिसके असली शिकार सिगरेट और तम्बाकू के छोटे-छोटे हिन्दू व्यापारी है, आरम्भ कर दिया गया। पता नहीं, इन छोटे हिन्दू व्यापारियों को तग करने जैसे, अपवित्र कार्य और हिंसा से अमृतसर को 'पवित्र' बनाने का सकल्प कैसे पूरा होगा।

इस मांग के बाद, कुछ हिन्दुओ ने, जो पवित्र नगर मानने में सिखों से पीछे नहीं हैं, अमृतसर में शराब और मास की बिक्री पर भी रोक की माग उठायी है, जिसे स्वीकार करने को सिख लोग तैयार नहीं हैं।

धर्म के नाम लागों को बहकाने और हिंसा फैलाने की इस दुष्प्रवृत्ति की जितनी निंदा की जाये, उतना ही कम है।

—सबील

सवाधीनतताक चन्दूलाल बहल,
उपाध्यक्ष

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय बैडमिंटन टूर्नामेंट

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार में एक शिक्षक एवं शिक्षकेतर कर्मचारियों में बैडमिण्टन टूर्नामेंट का आयोजन श्री ओ० पी० मि० रीडर, मनोविज्ञान विभाग, तथा श्री करतारसिंह मेस इन्चार्ज द्वारा किया गया। फाईनल मैच डा० काश्मीरसिंह तथा श्री श्यामनारायण के मध्य हुआ, जिसमें डा० काश्मीरसिंह विजयी रहे तथा दूसरा स्थान श्री श्यामनारायण सिंह ने प्राप्त किया।

फाईनल मैच गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी तथा सहायक मुख्याधिष्ठाता श्री वीरेन्द्र जी की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

आर्य समाज साबुन बाजार लुधियाना का—

99वां वार्षिकोत्सव

आर्य समाज साबुन बाजार लुधियाना का ९९वां वार्षिक उत्सव बड़ी धूमधाम से २६ नवम्बर से २९ नवम्बर तक मनाया गया। २६ से २८ नवम्बर तक प्रतिदिन प्रातः यज्ञ एवं उपदेश प्रो० वेदव्रत जी एम० ए०, पं० ओमपाल जी शास्त्री एम० ए० व पं० मदनगोपाल शास्त्री करते रहे। श्री तुलसीदेव, श्री वीरेन्द्र आर्य, श्री कृपाराम जी, श्री हरिदेव अग्रवाल, श्री ज्ञान प्रकाश जी वर्मा के भजन होते रहे, प्रति रात्रि वेदों के विद्वान् डा० बालकृष्ण जी पी० एच०डी० वेद कथा करते रहे।

२९ नवम्बर को प्रातः यज्ञ के यजमान आर्य समाज के प्रसिद्ध नेता दानवीर पं० ब्रह्मदेव जी अफ्रीका वाले बने। सम्मेलन से पूर्व ओ३म् का ध्वज प्रसिद्ध आर्य समाजी नेता प्रि० रामचन्द्र जावेद महामन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा ने ध्वजारोहण किया, पं० ब्रह्मदेव जी, श्री पाशी जी, डा० बांगिया जी, प्रि० हस जी, श्री ऋषिपाल जी, प्रि० टण्डन जी, श्री राजा राम जी, डा० राम स्वरूप जी, श्री देव राज कुल्लर जी, प्रि० शारदा देवी जी, प्रि० यशवती भला, श्री धर्मपाल मशीन, श्री राज कुमार मेहता श्री सुरेन्द्र बरे आर्य और सैकड़ों आर्य समाजियों ने प्रि० जावेद जी का स्वागत किया।

वेद सम्मेलन एवं राष्ट्र कल्याण सम्मेलन की अध्यक्षता प्रसिद्ध आर्य नेता पं. ब्रह्म देव जी अफ्रीका वालों ने की, पं० जी ने समाज में एकता बनाये रखने की अपील की, पं० ओम प्रकाश आर्य जी ने वेदों के सम्बन्ध में प्रभाव पूर्ण प्रवचन दिया पं० रामधन जी और वैद्य कुन्दन लाल जी ने नौजवानों को राष्ट्र के प्रति एवं धर्म के प्रति जागरूक रहने का आह्वान किया। डा० सुरेश शर्मा पी. एच. डी. ने राष्ट्र एवं समाज की रक्षा के लिए नौजवानों को संकेत किया, प्रि० जावेद जी ने समाज के प्रचार एवं लोगों में बढ़ रही भ्रष्टता के लिए आह्वान किया। श्री राजा राम जी ने वेदों के प्रचार के लिए लोगों को प्रेरणा की। आर्य कालेज महिला विभाग, आर्य हाई स्कूल, नन्दी विद्यालय आर्य हाई स्कूल के छात्र छात्राओं ने गीत गाये, प्रि० जावेद जी ने पुरस्कार स्वरूप कपें शील्डें प्रदान की। डा० बांगिया ने आये हुए सभी महमानों एवं जनता का धन्यवाद किया। इसके पश्चात हजारों लोगों ने प्रीति भोज किया प्रीति भोज का सारा व्यय पं० ब्रह्म देव जी दानवीर अफ्रीका वालों ने किया। महर्षि जी के जय घोषों से वातावरण गूंज उठा।

—डा० बांगिया

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्तभवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वर्ष 14, अंक 40, 4 मार्गशीर्ष सम्वत् 2039, तदनुसार 17 जनवरी 1982, दयानन्दाब्द 156। एक प्रति 35 पैसे (वार्षिक शुल्क 15 रुपए)

गोहत्या बन्दी के लिए 30 जनवरी से देश भर में सत्याग्रह

विनोबाजी के नेतृत्व में राजघाट पर शाल. वाले सहित शीर्षस्थ धर्माचार्य उपवास रखेंगे

11 जनवरी से बूचड़खानों पर धरने दिए जाएंगे : सभी आर्य समाजों को निर्देश

नई दिल्ली—गोवंश की हत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाने की मांग को लेकर गान्धी जी के निर्वाण दिवस पर 30 जनवरी से शिवरात्रि 22 फरवरी तक देश भर में सौम्य सत्याग्रह का आयोजन किया जाएगा। यह सत्याग्रह आचार्य विनोबा भावे की प्रेरणा से शुरू किया जा रहा है।

सत्याग्रह का शुभारम्भ आचार्य विनोबा भावे ३० जनवरी को एक दिन का उपवास रखकर करेंगे। इस दिन देश भर में लाखों व्यक्ति उपवास रखेंगे।

विनोबा जी के प्रतिनिधि तथा गो-सेवा संघ के सचिव श्री राधाकृष्ण बजाज ने यहां सम्वाददाता सम्मेलन में बताया कि स्वामी करपात्री जी महाराज, आनन्द-मयी मां तथा देश के शीर्षस्थ धर्माचार्यों के साथ-साथ विराट हिन्दू समाज के अध्यक्ष डा० कर्णसिंह, भारतीय जनता पार्टी के अध्यक्ष श्री अटल बिहारी वाजपेयी, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल शालवाले आदि की भी उपवास करने की स्वीकृति प्राप्त हो गई है!

उन्होंने बताया कि श्री विनोबा भावे ने राष्ट्रपति, प्रधानमन्त्री व सभी धर्मों के नेताओं से अपील है की कि वे गो-हत्याबन्दी की भावना को लेकर इस सौम्य सत्याग्रह में शामिल हों तथा उपवास रखें।

श्री बजाज ने बताया कि आचार्य विनोबा भावे के आदेश से देश के विभिन्न राज्यों के १८ शांति सैनिक ११ जनवरी से बम्बई के देवनगर बूचड़खाने पर धरना देकर गोहत्या बन्दी अभियान का श्री गणेश करेंगे। जोकि अखिल भारतीय शान्ति सेना के तत्वावधान में सेना के संयोजक श्री अच्युत पांडे के नेतृत्व में शुरू किया जाएगा। उन्होंने बताया कि देवनगर कसाई खाने में प्रति माह १६ हजार गाय-बैलों की हत्या की जाती है।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष लाला रामगोपाल शालवाले ने एक सम्वाददाता सम्मेलन में यह जानकारी दी। उन्होंने बताया कि सभा ने देश भर में फैली ५००० से अधिक शाखाओं को इस सत्याग्रह में भाग लेने का निर्देश दिया है। श्री शालवाले के अनुसार आर्य समाज में दो करोड़ से भी अधिक सदस्य हैं।

उन्होंने गोहत्याबन्दी के लिए केन्द्रीय कानून बनाने की मांग की। उन्होंने कहा कि पश्चिम बंगाल और केरल में अब भी गोहत्याबन्दी हेतु कोई कानून नहीं बनाया गया तथा अरब देशों को धड़ल्ले से गो-मांस निर्यात किया जा रहा है।

श्री शालवाले ने सुझाव दिया कि सभी राजनीतिक बुराईयों को समाप्त करने के लिए देश में कम से कम ५ वर्ष तक राष्ट्रपति शासन व्यवस्था लागू करनी चाहिए। इससे देश एक सूत्रबद्ध होकर सभी मोर्चों पर सफलता प्राप्त कर सकेगा। इसके लिए अमेरिका, फ्रांस और जापान की राष्ट्रपति शासन प्रणाली का अध्ययन कर विचार करना चाहिए।

उन्होंने केन्द्र सरकार से आग्रह किया है कि देश में समान नागरिक संहिता बनाई जाए। हिन्दू को मुस्लिम धर्म के अनुयायियों के लिए समान संहिता बनाई जाए ताकि मुस्लिम धर्म में बहुविवाह प्रथा समाप्त हो सके।

—

संगरूर, भटिण्डा, फरीदकोट व फिरोजपुर में वैदिक धर्म प्रचार की महत्वपूर्ण योजना

भटिण्डा—आर्य वानप्रस्थ आश्रम गुरुकुल भटिण्डा में गत २० दिसम्बर को सम्पन्न हुए आर्य सम्मेलन में संगरूर, भटिण्डा, फरीदकोट व फिरोजपुर के ४ जिलों के लिए वैदिक धर्म प्रचारार्थ एक महत्वपूर्ण योजना तैयार की गई।

बुढलाडा के डाक्टर ओ३म् प्रकाश वर्मा की अध्यक्षता में होने वाले इस सम्मेलन में संगरूर, मानसा मण्डी, बरेटा मण्डी, कोट कपूरा, फरीदकोट, गोनियाना मण्डी, रामा मण्डी, डबवाली, सादूल शहर (राजस्थान), पीलीबंगा (राजस्थान), बुढलाडा, अबोहर, भटिण्डा की सभी आर्य समाजों व कई स्थानों से आर्य स्त्री समाजों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। अत्याधिक सफल इस सम्मेलन में यह निर्णय लिया गया कि महर्षि दयानन्द के संदेश को घर-घर पहुंचाने के लिए एक सतत प्रचार अभियान चलाया जाए। इसके लिए संगरूर, भटिण्डा, फरीदकोट व फिरोजपुर के चार जिलों के अपने खर्च पर एक योग्य उपदेशक, भजनीक व उसका सहभजनीक (ढोलकी मास्टर) नियुक्त करने का भी निर्णय किया गया।

सम्मेलन में उपस्थित सभी प्रति-निधियों ने इस योजना को अति महत्व-पूर्ण और आवश्यक बताते हुए इस में सहयोग का पूर्ण विश्वास दिलाया।

यज्ञ द्वारा दुस्साध्य रोग स्थिति में लाभ

अयक्ष्मं च मे.ऽनामयच्च मे यज्ञेन कल्पन्ताम् । यजु—१८-६१
क्षय तथा समस्त रोगादि व्याधियां यज्ञ से नष्ट हों ।

मुझे १५ नवम्बर से २९ नवम्बर १९८१ को भेषज यज्ञ कराने बम्बई जाना पड़ा । उसका विवरण निम्न प्रकार है :-

श्री सनतकुमार सुपुत्र श्री ग्राम जी विजली कचियानी, ९ बेहेस्वर बिल्डिंग, महात्मा गांधी रोड़ घाटकोपर पूर्व बम्बई-२७, अवस्था २४ वर्ष । बाल्यावस्था से ही मन बुद्धि, वाक् शक्ति, सामान्य क्रिया शक्ति में असमर्थता युक्त था । उसके लिए सभी प्रकार के व्यावहारिक प्राकृतिक एवं धार्मिक उपचार एवं चिकित्सा की जाती रही ।

लगभग ३ वर्ष पूर्व उसकी दादी का देहान्त हो गया था । इस निमित्त भागवत कथा सप्ताह का आयोजन किया था । उसमें उसको ले जाने का प्रयत्न उसकी अनिच्छा होने पर भी किया गया । जिसके कारण उसकी मानसिक स्थिति बिगड़ गई थी और उन्मत्त भी हो गया था । निद्रा भी उसे बिल्कुल नहीं आती थी । पारिवारिक जनों को पीड़ा भी देने लगा । उसकी चिकित्सा भी की गई परन्तु लाभ नहीं हुआ । अब से ६ मास पूर्व एक सुप्रसिद्ध वैद्य जी का उपचार हुआ और उसे रात्रि में निद्रा आने लगी । उन्मत्त स्थिति में शांति उत्पन्न हुई । परन्तु शारीरिक निष्क्रियता विशेष हो गई ।

जब मैं यज्ञ के लिए आमन्त्रित होकर दिनांक १२ नवम्बर को पहुंचा तो उसकी स्थिति निम्न प्रकार थी :—

उसके मुख से थूक व लार बहती थी—नाक भी कभी-कभी बहती थी परन्तु वह उसे स्वयं पोंछने में असमर्थ था । अतः पारिवारिकजन या सेवक ही उसकी नाक व मुख पोंछते थे । आकृति कुछ भयावह, आंखें लाल रहती थीं । निष्क्रिय अवस्था में पड़ा रहता था । दिन में निद्रा नहीं आती थी । रात्रि को ८ बजे सोने जाता था । प्रातः उठ जाता था ।

यज्ञ में बैठाने पर वह कोई क्रिया कर नहीं सकता था । उसके पास एक व्यक्ति बैठकर आचमन क्रिया करवाता । उसके हाथ में सामग्री द्रव्य रखता और हाथ पकड़ कर उससे यज्ञाग्नि में डलवाता । यज्ञ में सीधा वह बहुत कम समय बैठ पाता था । बीच-बीच में उठ भी जाता था । स्वाहा एवं ओम् की ध्वनि बोलने के लिए बार-बार प्रेरणा करने पर वह बलपूर्वक उच्चारण कभी-कभी कर पाता था । अंगुलियों से सामग्री पकड़कर उठाने की क्रिया तथा दोनों हाथों को मिला कर क्रिया करने में भी असमर्थ था ।

15 दिवस यज्ञ प्रातः ७ से ९ बजे तक तथा सायंकाल ५ से ६-३० तक किया गया । ५० किलो गोघृत, । किलो ५०० ग्राम ब्राह्मी घृत, १ किलो ५०० ग्राम अश्वगन्धाघृत इसमें प्रयुक्त किया गया । चरकादि ग्रन्थों में वर्णित ग्रहशान्ति धूप, उन्मादनाशक द्रव्य, जीवनीयगण की औषधियां तथा गुग्गल, असगंध, जिलोय, जटामासी तगर, वच आदि ८० किलो द्रव्य द्रव्यों की आहुतियां दी गई । समिधा में वट वृक्ष की समिधायें तथा गुग्गल प्रयुक्त की गई ।

यज्ञ प्रारम्भ करने के ४ दिन उपरान्त उसमें क्रमशः उत्तरोत्तर निम्न क्रियाशीलता वृद्धि को प्राप्त होने लगी ।

१- आचमन के जल को स्वयं आचमनी से दाहिने हाथ में लेकर आचमन करना ।

२- अंग स्पर्श क्रिया करना ।

३- प्रार्थना मन्त्रों में हाथ जोड़कर बैठना ।

४- घृत का दीपक दिया सलाई से जलाना ।

५- अग्न्याधान कपूर द्वारा करके स्रुवा द्वारा करना ।

६- [illegible] करना ।

७- आहुति द्रव्य [illegible] [illegible] करना और आहुति देना ।

८- [illegible] प्रार्थनाओं में हाथों को नमस्कार मुद्रा में हृदय स्थान पर रखना ।

९- हृदय स्पर्श कराये के समय उस का स्पर्श करना ।

१०- दोनों हथेलियों पर यज्ञ शेष घृत का स्पर्श जोर से करना ।

११- पुनः उन हथेलियों को यज्ञाग्नि से प्रतपन कर मुख पर लगाना ।

१२- ताली बजाना ।

१३- आरती की थाली लेकर उसे से आरतीयुक्त क्रिया करना ।

१४- आर्शीवाद के फूलों को भूमि से उठाकर अपनी जेब में गिनती पूर्वक रखना ।

१५- यज्ञ के पाट, आसन, हविस्थली को रखना आदि क्रियायें यथासमय आदेश देने पर करना ।

यज्ञ प्रारम्भ होने के २-३ दिन तक नाक से पानी बहा, लार व थूक भी बहा । उसको संभालने व पोंछने के लिए व्यक्ति रहता था । ३-४ दिन बाद यह सब कम हो गया । जब कभी ऐसी स्थिति हो जाती थी तो उसी को स्वयं पोंछने का आदेश देने पर वह पोंछने की क्रिया करने लगा ।

उसके बोलने में भी सुधार होने लगा । यज्ञ [illegible] में वह कुछ शब्द अपनी [illegible] से भी बोलने लगा । यज्ञोपरान्त [illegible] समय में भी स्वेच्छा से कतिपय शब्दों को बोलने लगा । [illegible] ओम् तथा स्वाहा बोलने में [illegible] बचाता रहता था परन्तु बाद की वह [illegible] सुस्पष्ट [illegible] ही बोल देता था । [illegible] शब्द से ही व्यवहार [illegible] दिनों में २ शब्दों का [illegible] कभी ३ शब्दों का [illegible] वाणी में स्फूर्ति एवं चापल्य [illegible]

यज्ञ में सामग्री [illegible] वेद मन्त्रों का संपुट भी [illegible] था । संपुटित तथा [illegible] के विशेष शब्दों का प्रयोग होता था । संपुट मन्त्र का बार-बार श्रवण उसे होता ही था । प्रारंभ में उसे ओम् और स्वाहा का उच्चारण कराने पर ध्यान दिया गया । ५-६ दिन बाद [illegible] सामग्री मन्त्र बुलवाने का नित्य प्रयत्न यज्ञ में किया गया । ८-१० दिन बाद स्विष्टाग्निदेव मन्त्र को भी बुलवाने का भी प्रयत्न किया गया । एक-एक शब्द बुलाया जाता था । तो वह कभी-कभी आगे का शब्द भी बोल देता था ।

यज्ञान्त में ओम् विश्वानि देव, ओम् प्रतिष्ठ, सत्याः यजमानस्य कामाः, ओम् स्वस्ति आदि सामूहिक रूप से बुलवाये जाते थे तथा सनतकुमार से भी बुलवाने का प्रयत्न किया जाता था जब उसका मन होता तो वह किसी-किसी शब्द को बोलता-ओम् की ध्वनि जोर से देर तक करता । ओम् के साथ ताली पीटने की भी क्रिया करता ।

यज्ञ से पूर्व उसकी मुख मुद्रा बीभत्स दीखती थी । आंखें लाल रहती थीं यज्ञ के प्रारम्भ होने के उपरान्त पांचवें दिन से उसके नेत्रों की लाली तथा चेहरे की बीभत्सता कम होने लगी और मुखमुद्रा भी प्रसन्न और आकर्षक प्रतीत होने लगी ।

पहले उसे ऐसे स्कूल में भेजा जाता था जहां इसी प्रकार के [illegible] बच्चों व लोगों को काम [illegible] था । वहां वह मशीन चलाता था [illegible] भी था । परन्तु अब वहां [illegible] उसकी [illegible] था । उसकी अंगुलियां तथा [illegible] निष्क्रिय हो गई थीं कि वह [illegible] में असमर्थ हो गया था ।

यज्ञ [illegible] से उसमें [illegible], शरीर में स्फूर्ति, [illegible], [illegible] में [illegible], [illegible] में वृद्धि हुई और [illegible]

(शेष पृष्ठ ४ पर)

पं. वीरसेन वेदश्रमी

यज्ञ महिमा

यज्ञ में बैठाने पर वह कोई क्रिया कर नहीं सकता था । उसके पास एक व्यक्ति बैठकर आचमन क्रिया करवाता । उसके हाथ में सामग्री द्रव्य रखता और हाथ पकड़कर उससे यज्ञाग्नि में डलवाता । यज्ञ में सीधा वह बहुत कम समय बैठ पाता था । बीच-बीच में उठ भी जाता था स्वाहा एवं ओम् की ध्वनि बोलने के लिए बार-बार प्रेरणा करने पर वह बलपूर्वक उच्चारण कभी-कभी कर पाता था । अंगुलियों से सामग्री पकड़ कर उठाने की क्रिया तथा दोनों हाथों को मिलाकर क्रिया करने में भी असमर्थ था ।

ओ३म्

आर्य मर्यादा

सम्पादकीय—

आर्यो ! गौरक्षा के लिए तैयार हो जाओ

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के लिए जो कार्यक्रम निश्चित किया था, उसमें गो रक्षा और गोपालन को एक विशेष महत्व दिया गया था। इसी सम्बन्ध में उन्होंने गोकरुणानिधि नाम की एक पुस्तक भी लिखी थी। इसके द्वारा उन्होंने बताया था कि इस देश के लिए गौ रक्षा और गोपालन की कितनी आवश्यकता है। उन्होंने एक गो रक्षणी सभा भी बनाई थी, जिसका नाम बदल कर गो कृषि आदि रक्षणी सभा रख दिया गया था। उन्होंने उस समय की महारानी विक्टोरिया को ज्ञापन भी दिया था, जिसमें यह लिखा था कि इस देश के लिए गौ रक्षा और गोपालन की कितनी आवश्यकता है।

परन्तु यह एक पुरानी बात हो गई। हमें स्वतन्त्र हुए अब ३५ वर्ष होने लगे हैं। परन्तु हमारे देश मे अभी गो हत्या पूरी तरह बन्द नहीं हुई और न गो रक्षा व गोपालन के लिए जो कुछ होना चाहिए था वह न हुआ। हमारे विधान में यह निश्चित आदेश दिया गया है कि इस देश में गो हत्या बन्द होनी चाहिए। परन्तु वह अभी तक नहीं हुई। इस सारी स्थिति को देखते हुए आचार्य विनोबा भावे ने ३० जनवरी से २२ फरवरी तक गो रक्षा सौम्य सत्याग्रह प्रारम्भ करने का फैसला किया है। इसके लिए उन्होंने आर्य समाज का सहयोग भी मांगा है। जो सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा के प्रधान लाला रामगोपाल जी शालवाले ने आर्य समाज की ओर से देने का वचन दिया है। इसलिए सब आर्यसमाजियों का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि वह इस अभियान में जो ३० जनवरी १९८२ से प्रारम्भ हो रहा है, अधिक से अधिक सहयोग दें। आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब से सम्बन्धित सब आर्यसमाजों को मेरा यह निवेदन है कि वह ३०जनवरी १९८२ को उस कार्यक्रम के अनुसार, जो निश्चित किया गया है, अपने अपने समाज मंदिर मे ५-५ व्यक्तियों द्वारा दो-दो दिन के उपवास का क्रम प्रारम्भ करें। और यह मांग करें कि देश मे गौ हत्या पूर्णतया बन्द होनी चाहिए। और उसी के साथ सरकार को गौ रक्षा के लिए सब प्रकार की व्यवस्था करनी चाहिए। यह कार्यक्रम उस दिन सारे देश में प्रारम्भ किया जाएगा। इसलिए प्रत्येक आर्य समाज को अपनी एक-एक समिति बना देनी चाहिए। यह आवश्यक नहीं कि जो महानुभाव उपवास रखे, वह केवल आर्य समाजी हों, जो भी व्यक्ति गोरक्षा व गोपालन का समर्थक हो, वह इसमें सम्मिलित हो सकता है। आवश्यकता इस बात की है कि सरकार पर यह दबाव डाला जाए कि अधिक से अधिक के प्रयास करके गो रक्षा और गोपालन की व्यवस्था करे। गो का हमारे धर्म हमारी संस्कृति, और हमारी परम्पराओं में एक विशेष स्थान रहा है। आज भी प्रत्येक हिंदू यह चाहता है कि गो पूरी तरह रक्षा हो हिन्दुओं के अतिरिक्त हमारे जैन भाई, नामधारी, और दूसरे कई वर्ग भी ऐसे हैं, जो यह चाहते हैं, कि गो की रक्षा की जाए। मुसलमानों में भी कुछ व्यक्ति ऐसे हैं, इसलिए हम सबका यह कर्त्तव्य है कि इस अभियान को सफल बनाने के लिए हम जो कुछ कर सकते हैं करें। ऐसे प्रत्येक आंदोलन में आर्य समाज सदैव ही सब से आगे रहा है। अब जब कि सारे देश में यह आन्दोलन फिर से प्रारम्भ किया जा रहा है, आर्य समाज को किसी भी तरह किसी दूसरे संस्था से पीछे नहीं रहना चाहिए। इसलिए आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब से संबंधित सब आर्य समाजों के अधिकारियों से यह मेरा नम्र निवेदन है कि इस नए अभियान को सफल बनाने के समय समय पर आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब की ओर से उन्हें जो आदेश दिए जाएं उन्हें क्रियान्वित करने का पूरा प्रयास करें। ताकि इस देश में गो हत्या को बन्द कराने और गो रक्षा व गोपालन का सारा प्रबन्ध कराने का श्रेय आर्यसमाज को मिले।

—वीरेन्द्र

नारी निर्माण की एक आदर्श संस्था

हमारे देश का विगत एक सौ वर्ष का इतिहास साक्षी है कि शिक्षा के क्षेत्र में जो कुछ आर्य समाज ने किया है, कोई अन्य संस्था नहीं कर सकती। इसने गुरुकुलों और डी. ए. वी, कालेजों का जो जाल सारे देश में फैलाया है, उसके द्वारा लाखों लड़के और लड़कियां प्रतिवर्ष शिक्षा प्राप्त करते हैं। सारे देश की विभिन्न सरकारों ने अपने-अपने राज्यों में कई कालेज और स्कूल खोल रखे हैं। लेकिन किसी भी एक सरकार की इतनी शिक्षा संस्थाएं नहीं होंगी जितनी अकेली आर्य समाज की है गुरुकुल कालेज और स्कूल तीनों मिला कर। लेकिन आर्य समाज जो शिक्षा संस्थाएं चला रहा है, उनमें भी कुछ अन्तर हैं। गुरुकुलों में प्राचीन शिक्षा प्रणाली के आधार पर बच्चों को शिक्षा देने का प्रयत्न किया जाता है। लेकिन कालेजों में नई शिक्षा प्रणाली के आधार पर शिक्षा दी जाती है। लेकिन उद्देश्य दोनों का एक ही है यद्यपि रास्ते अलग-अलग हैं।

१९०२ में अमर बलिदानी श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरुकुल के रूप में एक पौधा लगाया था। वह ही छोटा सा पौधा धीरे-धीरे बढ़ता हुआ आज गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के रूप में एक वट वृक्ष का रूप धारण कर चुका है। उसकी कई शाखाएं भी निकल आई हैं। और एक शाखा देहरादून में कन्या गुरुकुल के नाम से धीरे-धीरे एक नए विश्वविद्यालय का रूप धारण कर रही है।

जिन लोगों ने श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी के साथ साथ मिलकर गुरुकुल शिक्षा पद्धति को सफल बनाने का प्रयास किया था, उनमें आर्य समाज के प्रसिद्ध तपस्वी त्यागी नेता और शिक्षा विशेषज्ञ आचार्य रामदेव जी भी थे। गुरुकुल कांगड़ी में स्वामी श्रद्धानन्द के साथ काम करते हुए वह इस परिणाम पर पहुंचे है कि केवल लड़कों की शिक्षा से काम नहीं चलेगा। यदि हमने अपने समाज का नवनिर्माण करना है तो लड़कों करना है तो लड़कों के साथ लड़कियो की सही शिक्षा का प्रबन्ध भी होना चाहिए। इस उद्देश्य के दृष्टिगत उन्होंने आठ नवम्बर १९२३ को दिल्ली में कन्या गुरुकुल की आधार शिला रख दी। तीन वर्ष तक यह संस्था वहीं चलती रही। और उसके पश्चात प्रथम मई. १९२७ को देहरादून में स्थानान्तरित कर दी गई। उस दिन से यह वहीं चल रही है। गुरुकुल कांगड़ी के पौधे को विकसित करने के लिए श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी ने अपना खून पसीना एक कर दिया। उनके पास जो कुछ भी था. वह सब उन्होंने उस गुरुकुल में लगा दिया। यह उनके ही तप और त्याग का परिणाम था कि शायद सैंकड़ो वर्षों के बाद इस देश में गुरुकुल नाम की इस प्रकार की एक शिक्षा संस्था शुरू हुई। जो कुछ श्री स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने गुरुकुल कांगड़ी के लिए किया है वही आचार्य रामदेव जी ने कन्या गुरुकुल के लिए किया। इस संस्था को चलाने के लिए उन्होंने तो अपना सब कुछ दे दिया लेकिन इसके साथ उनके सुपुत्र स्वर्गीय पण्डित यशपाल सिद्धांतालंकार उनकी तीनों लड़कियां स्वर्गीया श्रीमती सीता देवी, जिन्हें पंजाब के लोग अच्छी तरह जानते हैं, और श्रीमती चन्द्रप्रभा ने भी इस संस्था को खड़ा करने में एक प्रमुख भूमिका निभाई थी। और अब उनकी तीसरी लड़की श्रीमती दमयन्ती कपूर इस संस्था को अत्यन्त कुशलता से चला रही हैं। जिस ढंग से यह संस्था चलाई जा रही है। हम उस पर जितना भी गर्व करें, कम है। जो त्याग पिता ने इस संस्था के लिए किया था, वही अब बेटी कर रही है।

मैंने कन्या गुरुकुल देहरादून को नारी निर्माण की संस्था का नाम दिया है तो उसका एक कारण है। किताबी पढ़ाई कराने वाली तो आपको इस देश में सैंकड़ों नहीं बल्कि हजारों संस्थाएं मिल जाएंगी। लेकिन यह वह संस्था है जिसमें केवल किताबी पढ़ाई नहीं कराई जाती। इसमें नारी का वास्तविक निर्माण भी किया जाता है। जहां तक पढ़ाई का सम्बन्ध है पुराने और नए वैदिक साहित्य के अतिरिक्त अंग्रेजी, विज्ञान, संगीत, गृह विज्ञान, पेंटिंग, गणित, अर्थशास्त्र, और अन्य विषयों की पढ़ाई हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं मे दी जाती है। जो लड़कियां इस गुरुकुल में दाखिल होती हैं, उन्हें १४ वर्ष वहीं रहना पड़ता है। इसका यह अभिप्राय नहीं कि बाहर की दुनिया से उनका सम्बन्ध टूट जाता है। वह खेलों और संगीत आदि की प्रतियोगिताओं के लिए बाहर जाती हैं! और बड़े-

(शेष पृष्ठ ९ पर)

भारतीय स्वतन्त्रता-संग्राम में आर्यसमाज की देन

स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी को पजाब के गवर्नर का वध करने के आरोप में नजरबन्द कर दिया था। स्वा० ईशानन्द जी, स्वा० धर्मानन्द जी, इनके पुत्र हरिदत्त जी को लालकिले के तहखाने में बन्द कर दिया था। इस आन्दोलन में भी आर्यसमाज किसी से पीछे नही रहा।

आजाद हिन्द सेना

नेता जी सुभाष के द्वारा आजाद हिन्द सेना का निर्माण और उसका कार्य इस इतिहास में एक गौरवशाली स्वर्णिम अध्याय है, उक्त सेना के तीन प्रमुख नायकों में से सहगल आर्य समाजी परिवार की ही देन थे, उनके पिता महाशय अछरूराम जी जानेमाने आर्यसमाजी तथा कानूनदा थे, जिन्होंने जान बूझकर ही अपने बेटे को इस भट्टी में झोंका था। जब लालकिले में इस सेना पर अभियोग चला तब इनके बचाव पक्ष के वकीलों की जो कमेटी बनाई थी, उसमें बख्शी टेकचन्द तथा दीवान बद्री दास के रूप में आर्यसमाज ने योगदान करके अपनी राष्ट्रनिष्ठा को व्यक्त किया था, इसके अतिरिक्त सामान्य सैनिक के रूप में इस सेना

किश्त--22

मे भरती होकर योगदान करने वाले आर्यसमाजियों की संख्या तो अनगिनत है, इस प्रकार हम देखते हैं कि समस्त क्रांतिकारी दल के माध्यम से भी आर्यसमाज देश .की स्वाधीनता के लिए प्रयत्न करने वाले देशभक्तो की मुहिम में अग्रिम पंक्ति में खड़ा दिखाई देता है, जिसका :फल १५ अगस्त १९४७ की स्वतन्त्रता के रूप मे सामने आता है।

शिक्षा संस्थाओं के द्वारा

लार्ड मैकाले ने अंग्रेजी राज्य की जड़ें भारत मे दृढ़ करने के लिए जिस अंग्रेजी का प्रचलन किया सर्वप्रथम ऋषि दयानन्द और उनके परम शिष्य स्वा. श्रद्धानन्द ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के द्वारा उसे छिन्नभिन्न करने का स्तुत्य राष्ट्रीय कार्य किया था। इसका आरम्भ गुरुकुल कांगड़ी की स्थापना से होता है, ये संस्थाये सर्वथा ही सरकारी प्रभाव से मुक्त थी, इनकी शिक्षा, पाठ्यक्रम, अध्यापक, उत्सवो का आयोजनादि सभी स्वतन्त्र थे, वहां इतिहास पढ़ाने का तरीका देशभक्ति के भावों को उद्दीप्त करने वाला होता था, वहां छात्र अंग्रेज विरोधी बातें प्रत्यक्ष किया करते थे, प्रखर देशभक्त समय-समय पर ठहर कर विदेशी सरकार पर लाखों से प्रहार किया करते थे, इसी कारण एक बार बिजनौर के कलैक्टर ने गुरुकुल पर अस्त्रों पर गुप्त भंडार होने के संदेह में छापा भी मारा था, नगरों से दूर एकांत जंगल में होने के कारण भी सरकार इनको एक लम्बे अरसे तक संदेह की दृष्टि से देखती रही, यह हाल सभी गुरुकुलों का था, इसी प्रकार डी. ए. वी. कालेज को हम देख सकते हैं। वे भी अंग्रेजी सरकार के प्रभाव से सर्वथा मुक्त थे, इस कालेज ने स्वय अपना सम्बन्ध विश्वविद्यालय के साथ करने में अपमान समझा था, अत: उत्तम परिणाम पर डी. पी. आई. के द्वारा बधाई के पत्र के धन्यवादात्मक उत्तर को ही प्रार्थना मानकर कालेज की सम्बद्धता स्वीकार कर दी गई थी, इस कालेज के छात्रावास में जब एक अंग्रेजी साबुन कम्पनी का एजेंट आया और उसने छात्रों को मुफ्त साबुन दिया। तब देशभक्त छात्रों ने वे सारी टिकियां फेंक दी, यह देशभक्ति का एक नमूना था, छात्र आर्यसमाज जाते थे, जब एक अंग्रेज के बच्चे ने घोड़ा दौड़ाकर इनकी पंक्ति को तोड़ दिया, तब वार्डन को फटकारने पर दूसरे दिन वैसा ही करने पर उस अंग्रेज पुत्र को उस छात्रनेता ने सड़क पर सबक सिखाने के लिए सबके सामने अपने जूते से पीटा था, जबकि उस समय अंग्रेज के सामने मुंह खोलना भी मौत को बुलाना होता था, यह सब कुछ ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज से प्राप्त देशभक्ति की शिक्षा का प्रभाव था, कानपुर का डी.ए.वी. कालेज तो देशभक्ति क्रांतिकारियों का अड्डा था। शालिगराम शुक्ल इसके छात्रावास पर ही पुलिस के साथ गोलियों से मुठभेड़ करते हुए शहीद हुए थे, लगभग यही हाल उस समय के सारे डी. ए. वी. कालेजों का था।

> **जब एक अंग्रेज के बच्चे ने अपना घोड़ा दौड़ाकर इनकी पंक्ति को तोड़ दिया, तब वार्डन को फटकारने पर दूसरे दिन वैसा करने पर उस अंग्रेज पुत्र को उस छात्रनेता ने सड़क पर सबके सामने अपने जूते से पीटा था, जबकि उस समय अंग्रेज के सामने मुंह खोलना भी मौत को बुलाना होता था, यह सब कुछ ऋषि दयानन्द तथा आर्यसमाज से प्राप्त देशभक्ति की शिक्षा का प्रभाव था।**

रियासतों में कार्य

इसके अतिरिक्त देसी रियासतों में राजनीतिक पुन: जागरण का जो कार्य किया वह भी अपने आप में एक अनुपम स्थान रखता है, पटियाला में एक अंग्रेज (वार्बर्टन को आगे करके सरकार ने जब आर्यसमाज को मिटाने का अभियान चलाया था, जिसमें एक ही रात्रि में कई सौ आर्यसमाजियों को पकड़कर जेलों में ठूंस दिया गया था तथा आर्यसमाज मन्दिरों पर तालाबन्दी कर दी थी, जब जो मुकद्दमें चले थे, उससे प्रतीत होता है कि अंग्रेज सरकार आर्यसमाज के राष्ट्रीय स्वरूप से बहुत अधिक घबराई हुई थी, इस कारण निर्दोष आर्यसमाजियों को रियासत से बहिष्कृत कर दिया था, इसी प्रकार कराची में १९०५ में आर्यसमाज केमन्त्री पर राजद्रोह का अभियोग चलाया गया था, नेपाल में शुक्रराज जी शास्त्री का बलिदान भी आर्यसमाज के देशभक्त पक्ष की एक महत्वपूर्ण कड़ी है, क्योंकि इस पर भी राजद्रोह का अपराध लगाकर फांसी का दण्ड दिया गया था। इसी प्रकार दक्षिण हैदराबाद में आर्यसमाज ने विशेष क्रांति को जन्म दिया, उसके मूल में भी धार्मिक भावना की अपेक्षा राजनीतिक स्वतन्त्रता की भावना अधिक थी, क्योंकि एक तो वहां का निजाम स्वयं अलीगढ़ जो कि अंग्रेजी कूटनीति का प्रभावी अड्डा रहा, जहां से अंग्रेजों के इशारे पर भारतीय स्वाधीनता के प्रत्येक कर्म का विरोध किया गया, वहां का स्नातक होने से अपनी रियासत में विदेशों का हस्त बन गया था, उसका विरोध विदेशी शासन का विरोध ही कहा जाएगा, इसके अतिरिक्त हैदराबाद के कांग्रेस क्षेत्र में निन्यानवें प्रतिशत आर्यसमाजी नेताओं की विद्यमानता भी इसका प्रमाण है कि वहां का प्रत्येक आंदोलन राजनीतिक जागरण मूलक था।

कुछ अन्य संकेत

इतिहास में मिलने वाले भिन्न संकेतों से भी हम आर्यसमाज की स्वाधीनता के प्रति दृष्टि समझ सकते हैं। अंग्रेजी काल में सेना में सैनिकों को आर्यसमाज में जाने से रोका जाता था, उनके यज्ञोपवीत उतरवाए जाते थे। रोहतक में आर्यसमाज मन्दिर ध्वस्त करने की घोषणा भी कर दी गई थी, आर्यसमाजी उपदेशक दौलतराम जी को सैनिकों में धर्मप्रचार करने पर मुकद्दमा चलाकर दण्ड दिया गया था, करनाल के जिलाधीश ने नगर के धनी जनों को अपने यहां आर्यसमाजियों को ठहराने का निषेध किया था। लाहौर के जिलाधीश ने स्वा. श्रद्धानन्द जी से कहा था कि आर्यसमाज पोलिटिकल संस्था है. मि. रौल्यां के मत से आर्यसमाज ने १९०५ में बंगाल की बगावत के लिए मार्ग साफ किया था, इसी प्रकार १९२० में वैलण्टाइन शिरोल ने 'इण्डियन अनरेस्ट' पुस्तक द्वारा भी आर्यसमाज को अंग्रेज विरोधी वर्णन किया था, लाहौर के सिविल मिलिटरी गजट पत्र मे भी आर्यसमाज को अंग्रेजों का राज्य उखाड़कर हिन्दु राज्य की स्थापना करने वाला कहा गया था। इसके अतिरिक्त हम देशभक्त महापुरुषों की महर्षि दयानन्द तथा आर्यसमाज विषयक सम्मतियां जब पढ़ते हैं तो उसमें अधिकांश ने आर्यसमाज और महर्षि दयानन्द को देशभक्त एवं स्वाधीनता के पुजारी के रूप में ही स्वीकार किया है।

उपसंहार

इस संक्षिप्त लेख में अब तक जो प्रमाण प्रस्तुत किए गए हैं, उनसे पाठकों को यह भलीभांति निश्चय हो गया होगा कि देश की स्वाधीनता के लिए आर्यसमाज तथा महर्षि दयानन्द ने प्रत्येक मोर्चे पर अग्रिम पंक्ति में रहकर सबसे अधिक योगदान किया है, निष्पक्ष चिन्तक स्वाधीनता के आंदोलन में अस्सी प्रतिशत देशभक्तों को आर्यसमाजी वातावरण की देन मानने को उद्यत होगा। आर्यसमाज के इन्हीं प्रशंसनीय प्रयासों के परिणामस्वरूप १५ अगस्त १९४७ को भारत स्वतन्त्र हुआ। चूंकि उस समय स्वाधीनता आंदोलन की बागडोर उन लोगों के हाथ में थी जो महर्षि के सांस्कृतिक विचारों के उत्तराधिकारी थे, अत: भारत माता को अंगभंग ही आजादी मिली, यदि उनको ऋषि की धार्मिक विचारधारा प्राप्त होती तो शायद आजादी प्राप्ति का इतिहास और किसी प्रकार का होता, फिर भी आधे से अधिक पंजाब को अपनी सांस्कृतिक एवं भौतिक सम्पत्ति के रूप में छोड़कर घातक हानि की चोट सहकर भी यदि आर्यसमाजी प्रसन्न थे तो इस कारण उनके आचार्य की दृष्टि में विदेशी राज की अपेक्षा स्वदेशीराज उत्तम था और उनके सत्प्रयत्नों से १५ अगस्त १९४७ को प्राप्त हो चुका था, इसी कारण अपना वतन छोड़, फकीर बन दर-दर की ठोकरें खाने का गम नहीं था।

(समाप्त)

श्री सत्यप्रिय जी शास्त्री

विद्या ही वृद्धि का मूल है

जीवन विकास और सामाजिक उन्नति के एक आवश्यक रहस्य को बताते हुए आर्य समाज के अष्टम नियम में कहा गया है, "अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।"

क्योंकि अविद्या ही हर प्रकार के दुःख, क्लेश, कष्ट, सन्ताप, परेशानी और अशान्ति का कारण है। जैसे अन्धेरे में ठोकरें ही लगती हैं या भय बना रहता है, वैसे ही अविद्या के कारण मनुष्य उस क्षेत्र में सदा ठोकरें ही खाता है या भय, रोग, और बेचैनी को ही प्राप्त करता है।

आज जिस अशान्ति बेचैनी से हम परेशान हैं और चाहते हुए भी उसके जाल से निकल नहीं पाते, इस का एक-मात्र कारण अविद्या ही है। हम अविद्याग्रस्त होने के कारण ही अशान्त, बेचैन और दुखी हैं। अतएव न्याय दर्शनकार ने कहा है—

दुःख जन्म प्रवृत्ति दोष मिथ्या-
ज्ञानानामुत्तरोत्तरापाये तदनन्तरा-
पायादपवर्गः. १,१,२,

अर्थात् हमारे विविध प्रकार के दुःखों का कारण जन्म है और जन्म शुभाशुभ प्रवृत्ति से होता है, प्रवृत्ति दोषों का तथा सबका मूल कारण वस्तुतः मिथ्याज्ञान ही है। अविद्या का अर्थ यहां उल्टी विद्या ही है और तभी उसके नाम का संकेत किया गया है उल्टे ज्ञान से व्यक्ति सदा असफल होने के कारण दुःखी और निराश ही होता है। क्योंकि हम प्रतिदिन अपने व्यवहार में अनुभव करते हैं कि जब भी कार्य सही ढंग से न कर के उल्टे ढंग से किया जाता है, तो उसका विपरीत ही परिणाम होता है, और हमें तब लाभ के स्थान पर नुकसान ही उठाना पड़ता है। कई बार तो नासमझी—अविद्या के कारण जान से भी हाथ धोना पड़ता है।

योग दर्शन में विस्तार के साथ अविद्या का परिचय दिया गया है और अविद्या को ही हर प्रकार के अन्य क्लेशों, दोषों की जड़ कहा है। अविद्या की परिभाषा बताते हुए वहां कहा है कि—

अनित्याशुचिदुःखानात्मसु नित्यशुचि-
सुखात्मख्यातिरविद्या २,५,

अनित्य पदार्थों को नित्य, अपवित्र को पवित्र, दुःख को सुख और जड़ तथा चेतन समझना अर्थात् जैसी जो वस्तु है उसको वैसा न समझ कर उससे उलटा समझना अविद्या है। विशेष विस्तार के लिए श्री दीवान चन्द जी लिखित दर्शन संग्रह का योग प्रकरण द्रष्टव्य।

हर प्रकार के उलटे ज्ञान। अविद्या और उसके कारण होने वाले दुःखों, क्लेशों, दोषों से विद्या द्वारा ही छुटकारा पाया जा सकता है। इसीलिए ही सब्या दर्शन में आधिदैविक आधिभौतिक और आध्यात्मिक दुःखों से बचने का उपाय सही ज्ञान ही बताया है। तत्वज्ञानान्नि: श्रेयसम् वैशेषिक और न्याय दर्शन में भी तत्वज्ञान से ही परम कल्याण की प्राप्ति बताई है तथा विद्यया-ऽमृतमश्नुते यजु० ४०,१४ में विद्या से हर प्रकार की मृत्यु के स्थान पर जीवन की प्राप्ति दर्शाई गई है। इसीलिए ही भारतीय साहित्य में विद्या की इतनी अधिक प्रशंसा मिलती है।

"विवेकभ्रष्टानां विनिपात: नीति शतक में शतमुख: १० भृतहरि अविद्या, अज्ञान, अन्धविश्वास में फस जाने पर व्यक्ति हर तरह से नीचे ही गिरता जाता है।

अविवेक: परमापदां पदम् अथी किरतार्जुनीयम् अविवेक: अपत्ति कष्टों का मूलद्वार है।

यदि हम ठण्डे दिल से विचार करें और अपने चारों ओर के व्यवहार को देखें तो अनुभव होता है कि बिना सोचे समझे (अविद्याजन्य) ऐसे अनेक रीति-रिवाजों, प्रथाओं, विश्वासों को हमने अपना रखा है, जो यथार्थ हैं और इसके परिणाम स्वरूप हम दुःखी हो रहे हैं, न जाने कितने अनुपयोगी हानिकारक धूम्रपान, अफीम, गाजा, चरस, नशीली गोलिया, मद्यपान, शराब, जुआ जैसे व्यसन समाज में चिपटे हुए हैं। इसी प्रकार कोई भूत-प्रेत से सताया हुआ, है तो कोई झाड-फूक से भूत, रोग, दुःख दर्द ठीक कर रहा है, और कही देवी, गुरु, बाबा आदि उतरते हैं। कोई शुभाशुभ दिन जैसे कि शनि को मनाएगा सदा सुख पाएगा, दे तेल की पली कुल बला टली, मगल को मनाएगा आदि। अमुक दिन अमुक कार्य नहीं करना, दिशाशूल, अनुकूल प्रतिकूल नक्षत्र-मूहर्त राशि और उनके फल के चक्र में हैं। तो कहीं शुभाशुभ वस्तुदर्शन, शकुन-अपशकुन अर्थात् खाली घड़े, बिल्ली के रास्ता काटने, छींकने और १३ संख्या

कहीं फलित ज्योतिष की लाल-पीली रेखाओं का जाल बनाया देखा जा रहा है. तो कहीं उसके परिणामस्वरूप पत्र से शादियों की तिथि निश्चिय की जा रही है, जिसके परिणाम स्वरूप साए के कारण एक ही दिन में सैकड़ों बरातें हैं तो दूसरे दिन कोई भी दिखाई नहीं देती। कोई गण्डे, ताबीज, तन्त्र, मन्त्र से बिना परिश्रम के ही सारी कामनाओं की पूर्ति माने बैठा है, तो कहीं 'जो चाहोगे सो पाओगे, के दैनिक पत्रों में बड़े-बड़े विज्ञापन छप रहे हैं। इस प्रकार होशियार लोगों ने एक से एक बढ़ कर धर्म के नाम पर ठगने के विचित्र-विचित्र कारनामें बना लिए हैं और जनता की श्रद्धा का खूब लाभ उठा रहे हैं।

का विचार चल रहा है तो कोई बिना पुरुषार्थ ही भाग्यचक्र के कारण हस्त-रेखाओं के वशवर्ती हो रहा है तो कोई मिलेगा मुकद्दर की रट लगा रहा है।

कहीं फलित ज्योतिष की लाल-पीली रेखाओं का जाल बनाया देखा जा रहा है, तो कही उसके परिणामस्वरूप पत्रे से शादियों की तिथि निश्चित की जा रही जिसके परिणाम स्वरूप साये के कारण एक दिन में एक ही नगर में सैंकड़ो बरातें हैं तो दूसरे दिन कोई भी दिखाई नहीं देती। कोई गण्डे, ताबीज, तन्त्र, मन्त्र से बिना परिश्रम के ही सारी कामनाओं की पूर्ति माने बैठा है, तो कहीं जो चाहोगे सो पाओगे, के दैनिक पत्रों में बड़े-बड़े विज्ञापन छप रहे हैं। इस प्रकार होशियार लोगो ने एक से एक बढ़कर धर्म के नाम पर ठगने के विचित्र-विचित्र कारनामे बना लिए हैं और जनता की श्रद्धा का खूब लाभ उठा रहे हैं।

श्री सत्य प्रकाश जी भूतपूर्व प्रिंसिपल डी. ए. वी कालेज, होशियारपुर ने बताया कि पहले मैं प्रतिदन कालेज मे पढ़ाने के लिए होशियारपुर से जालन्धर जाया करता था। होली के दिनों मे गाडी के अन्दर बहुत भीड रहती है, एक दिन प्रसगवश मैंने गाडी मे कहा कि यह मेला कब समाप्त होगा, तब एक मित्र भाई ने कहा कि यह एक दिन के लिए और बढ गया है, उन का क्या बिगडा, उन्हें तो एक लाख की आय हो जाएगी। प्रसगवश मैंने कालेज में यह घटना सुनाई। एक लडकी खडी हो गई, और उसने बताया कि मेरे पिता जी की आनन्दपुर मे मेले पर नियुक्ति थी, उन्होंने मेले की समाप्ति पर एक दिन बातों में ग्रन्थी से पूछा यह गुरु जी के हाथ का ठप्पा (पञ्जा) कैसे लग जाता है? उत्तर में ग्रन्थी जी ने कहा यह सब हमारी ही करामात है। इस प्रकार के अनेकों करामाती दृष्टान्तों की भरमार लगी हुई है।

एक ने बताया मेरे पिता जी ने मन्त्रों से अग्नि जलाने की विद्या सीखने के लिए अपने गुरु जी की बहुत सेवा की, परन्तु अन्त में यह परिणाम सामने आया कि धुखा हुआ धूप नीचे रख कर मन्त्रों से अग्नि जलाने का चमत्कार किया जाता है। ऐसे ही कोई धन, आभूषण को दुगने करने का दावा कर रहा है और कोई किसी बालक के खून से स्नान कराकर या भभूत से पुत्र प्रदान कर रहा है, तो कही तालाब बान्ध आदि को पक्का करने या इष्ट देवी को सन्तुष्ट करने के लिए मानव तक की बलि दिलवाने का चक्र चल रहा है। इस प्रकार के सारे धन्धे, भुलावे दूसरों की अविद्या के चक्र में डाल कर ही किए जाते है। यह एक सुनिश्चित बात है कि हर प्रकार की अविद्या ही दुःख, क्लेश का कारण है और विद्या कार्य की सफलता का मूल है। अतः अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।

प्रा. भद्रसेन साधु आश्रम,
होशियारपुर

आगाशाही के आर्य समाजी पिता पं. ज्ञानेन्द्र का देहांत

हनुमानगढ़, (राजस्थान)—पाकिस्तान के विदेशमन्त्री श्री आगाशाही के पिता पंडित ज्ञानेन्द्र देव सूफी का गत एक जनवरी की रात्रि को यहां निधन हो गया। उनकी आयु ९१ वर्ष की थी। वे १९६७ से यहां रह रहे थे।

स्वर्गीय पंडित जी का पूर्व नाम अब्दुल रहमान था तथा वे उत्तर प्रदेश के रामपुर के नवाब के रिश्तेदार थे। उनका गोरखपुर के सूफी परिवार से निकट का सम्बन्ध था। बताया जाता है कि वे अपनी सौतेली माता के व्यवहार से परेशान हो कर घरबार छोड़ कर भाग गए थे। उन्होंने स्कूली शिक्षा तो केवल नौवीं तक प्राप्त की लेकिन अरबी और फारसी में विद्वता प्राप्त होने के कारण उन्हें मौलवी फाजिल की उपाधि प्रदान की गई।

पता चला है कि स्वर्गीय पंडित जी ने दो विवाह किए थे। उनकी पहली मुस्लिम पत्नी से आगाशाही का जन्म हुआ था जो इस समय पाकिस्तान के विदेशमन्त्री हैं। उनकी दूसरी पत्नी एक हिन्दू अध्यापिका थी जिससे दो पुत्र और एक पुत्री है। स्वर्गीय पंडित जी शाह ईरान के १० वर्षों तक दुभाषिए के पद पर काम करते रहे। बाद मे आर्य समाज से प्रभावित होकर आजीवन आर्यसमाजी बन गए। उनका दाह संस्कार २ जनवरी को आर्यसमाजी पद्धति से किया गया।

गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार के लिए आवेदन आमंत्रित

वैदिक वाङ्मय में शोध अथवा उपलब्धियों पर 1000 रुपए

हरिद्वार—गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के वेद विभाग के अध्यक्ष प्रो. राम प्रसाद ने वर्ष १९८१ के लिए संघड़ विद्यासभा जयपुर द्वारा संचालित १००० रुपए का श्री गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार अर्जित किया।

उल्लेखनीय है कि संघड़ विद्या सभा ट्रस्ट जयपुर द्वारा १००० रुपए का श्री गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार गुरुकुल कांगड़ी के वार्षिकोत्सव पर निश्चित किया हुआ है जो कि वैदिक वाङ्मय में विशेष शोध कार्य करने वाले व्यक्ति को दिया जाता है।

विश्वविद्यालय द्वारा जारी एक प्रेस विज्ञप्ति में वर्ष १९८२ के अप्रैल मास मे दीक्षान्त समारोह के अवसर पर इस पुरस्कार के लिए योग्यताओं के अनुरूप सिफारिशें भेजने का अनुरोध किया गया है। इस पुरस्कार के लिए चयन नियम निम्न प्रकार से हैं—

१- श्री गोवर्धन शास्त्री पुरस्कार उन्हीं सज्जनों एवं संस्थाओं को दिया जा सकेगा, जो वेद, उपनिषद्, दर्शन शास्त्री आदि आर्ष साहित्य का प्रचार एव प्रसार जनसामान्य तक करें।

२- उक्त विषयों पर शोध कार्य करने वाले व्यक्ति या संस्थान-सभी भी उक्त पुरस्कार पाने के अधिकारी हो सकते हैं।

३- उक्त विषयो पर संगीत, काव्य अथवा नाटक रचकर अथवा नाटक को रगमच पर दिखलाने वाले व्यक्ति या नाटक-सभा भी इस पुरस्कार के लिए आमन्त्रित किए जा सकते हैं।

४- उक्त विषयों पर आकाशवाणी या दूरदर्शन पर प्रचार एवं नाटक आदि के माध्यम से जनसामान्य को उदात्त वैदिक भावना से आप्लावित करने वाले व्यक्ति या संस्था को उक्त पुरस्कार पाने हेतु सम्मिलित किया जा सकेगा।

५- उक्त विषयों का ग्राम-ग्राम में जाकर मैजिक लालटेन, पुतली प्रदर्शन अथवा भजनो द्वारा प्रचार करने वाले व्यक्ति या मण्डली-सभा भी उक्त पुरस्कार पाने हेतु प्रार्थी हो सकते हैं-हो सकती है।

६- आधुनिक युग में विज्ञान और आध्यात्मिकता का समन्वय करने हेतु अथवा संतुलित व्यक्तित्व के विकास हेतु योग की उपयोगिता संबन्धी ऐसा सरल साहित्य जो सामान्य जनमानस को को प्रभावित कर सके, लिखने अथवा प्रकाशित करने वाले व्यक्ति तथा और प्रकाशक आदि को भी पुरस्कार पाने वालों मे सम्मिलित किया जा सकता है।

७- उक्त पुरस्कार चयन नियमों को परिवर्तित एव परिवर्धित करने का अधिकार संघड़ विद्या सभा को होगा।

आपसे निवेदन है कि यदि आपकी दृष्टि में कोई उसका महानुभाव अथवा संस्था आगामी वर्ष १९८२ के लिए इस पुरस्कार के योग्य हो तो पूर्ण विवरण निम्न पतों पर ३१-१२-८१ तक भेजने की कृपा करें। यदि उनके द्वारा प्रकाशित पुस्तकों आदि का प्रतियां भी भिजवा सकें तो अत्युत्तम होगा।

१- धर्मपाल हीरा, कुल सचिव, गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार।

२- श्रीमती सावित्री कथूरिया, उप-सचिव संघड़ विद्यासभा २११ सी शान मार्ग तिलक नगर, जयपुर।

आर्य वीर दल पजाब में सक्रिय होने लगा

जालन्धर—आर्य वीर दल जालन्धर की एक बैठक गत जनवरी को यहा आर्य समाज (वेद मन्दिर) आर्य नगर मे श्री अमरनाथ की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। जिसमे सम्बन्धित समाज के कार्यकर्ताओं सहित सैंकड़ों आर्य वीरो ने भाग लिया बैठक में श्री अमरनाथ जी की सेवाओ की सराहना करते हुए आशा व्यक्त की गई कि आर्य वीर दल अब ठोस और प्रभावी कार्यक्रमों के साथ क्षेत्र में पूरी शक्ति के साथ उत्तर जाएगा।

इसके अतिरिक्त दल की एक अन्य बैठक ३ जनवरी रविवार को १० बजे भगतसिंह कालोनी स्थित श्री मुलखराज जी के घर में आयोजित की गई।

जिसमें पंजाब भर में आर्य वीर दल को सक्रिय करने की योजनाओं पर विचार किया गया।

शहीदों के प्रति

(रमाकान्त दीक्षित)

२५-२६ कानोड़ियों की गली, डा. मुरारी लाल मार्ग भिवानी (हरि.)

आज उन नर नाहरों को,
लेखनी जय बोल दे।

जो दीपक बन कर जलते थे,
शूलों के पथ पर चलते थे,
बलि होने का मूल मन्त्र ले,
जन-जीवन का तम छलते थे,

उठ, जाग, उनके मान में तू,
आज हृदय खोल दे।
आज उन नर नाहरों को।
लेखनी जय बोल दें॥

नही जिन्होने सुख जाना,
सीखा दुख में भी मुस्काना,
भारत माता की सेवा का,
वाणी पर था सदा तराना,

हंस-हंस चढ़े पुण्य वेदी पर,
रक्त निज अनमोल दे।
आज उन नर नाहरों को।
लेखनी जय बोल दे॥

जिनके चरण बढ़े नित आगे।
ममता के सब बन्धन त्यागे।
अबर काल भी आया सम्मुख।
नही कभी जो रण से भागे।

इस देश का इतिहास मोड़ा।
एक नव भूगोल दे।
आज उन नर-नाहरों को।
लेखनी जय बोल दे॥

(३ पृष्ठ का शेष)

बड़े पुरस्कार जीतकर लाती हैं। हां, वहां रहते हुए उन्हें किसी प्रकार की आवारागर्दी की अनुमति नहीं दी जाती जो लड़कियां वहां से शिक्षा ग्रहण करके निकलती है उन्हें गुरुकुल कांगड़ी की तरह विद्यालंकृता की उपाधि दी जाती है इस गुरुकुल से स्नातक बन कर निकली हुई बीसियों ऐसी देवियां हैं जिन्होंने कि अन्य विश्वविद्यालयों में जाकर एम. ए. और पी. एच. डी. की डिग्रियां भी प्राप्त की हैं। पाठक्रम को सुनकर हर्ष भी होगा और आश्चर्य भी कि इस गुरुकुल में पढ़ने के लिए दूसरे देशों से लड़कियां आती हैं और कुछ मुसलमान लड़कियां भी इस समय यहां शिक्षा प्राप्तकर रही हैं। उनमेंसे कुछ स्नातिकाएं भी बन चुकी हैं।

मैंने कन्या गुरुकुल देहरादून की संक्षिप्त सी कहानी पाठकों के समक्ष रखी है। कुछ लोग गुरुकुल का नाम सुनकर डर जाते हैं। वे समझते हैं कि शायद यह कोई अनाथालय है। लेकिन मैं यह दावेके साथ कह सकता हूं कि जिस तरहकी शिक्षा कन्या गुरुकुल देहरादून में दी जा रही है, बहुत कम संस्थाओं में दी जाती है। इसीलिए मैंने इस का नाम नारी निर्माण संस्था रखा है। आज हमारे देश को मानव के निर्माण की आवश्यकता है। वह उस समय तक पूरा नहीं हो सकता जब तक कि पुरुष के साथ नारी का निर्माण न हो। यही यह काम है जो कन्या गुरुकुल देहरादून कर रहा है।

—वीरेन्द्र

मकर संक्रान्ति का पर्व

जितने काल में पृथ्वी सूर्य के चारों ओर परिक्रमा करती है उस काल को सौर वर्ष कहते हैं। जिस परिधि पर पृथ्वी परिभ्रमण करती है उसको क्रान्तिवृत्त कहते हैं। इस क्रान्तिवृत्त को ज्योतिषियों ने १२ कल्पित भागों में बांटा है। यथा १. मेष, २. वृष, ३. मिथुन. ४. कर्क ५. सिंह ६, कन्या ७. तुला ८. वृश्चिक ९. धनु १०. मकर ११. कुम्भ १२. मीन॥ प्रत्येक भाग को राशि कहते हैं। जब पृथिवी एक राशी से दूसरी राशी में संक्रमण करती है। तो उसको संक्रान्ति कहते हैं। लोक में उपचार से पृथिवी के संक्रमण को सूर्य का सक्रमण कहते हैं। छः मास तक सूर्य क्रान्तिवृत्त से उत्तर की ओर उदय होता रहता है। इस छः मास की अवधि को उत्तरायण कहते हैं। और दूसरे छः मास तक सूर्य क्रान्तिवृत्त से दक्षिण की ओर निकलता रहता है। इस अवधि को दक्षिणायन कहते हैं। उत्तरायण से दिन बढ़ता जाता है। और रात्रि घटती जाती है। दक्षिणायन मे दिन घटता है और रात्रि बढ़ती जाती है। उत्तरायण के आरम्भ दिवस में सूर्य मकर राशि पर आता है। इस लिए उस दिवस को मकर की संक्रान्ति कहते हैं।

मकर संक्रान्ति के अवसर पर शीत अपने यौवन पर होता है। चराचर जगत शीतरोग से अभिभूत होता है। इस दिन सूर्य ने उत्तरायण में प्रवेश किया है। इस छः मास के काल को देवयान कहते हैं। और वेदादि शास्त्रों में इस की बहुत महत्ता है। इस समय देह त्यागने से आत्मा सूर्य लोक में होकर प्रकाश मार्ग से प्रयाण करता है।

अग्नि ज्योतिरहः शुक्लः षण्मासा उत्तरायणम्।
तत्र प्रयाता गच्छन्ति ब्रह्म ब्रह्मविदो जनाः (गीता–१२४)

इसलिए आर्य जाति के प्राचीन नेताओं ने मकर संक्रान्ति का पर्व निर्धारित किया है॥

मकर संक्रान्ति का त्योहार सब प्रान्तों में प्रचलित है। इसके मनाने की परिपाटी भी समान मनाई जाती है। तिल खाने की बड़ी प्रथा है। तिल और गुड़ या खाण्ड के लड्डू बना कर खाते हैं। और इष्ट मित्रों मे बाटते हैं। तिल का हलवा भी बनाया जाता है। तिल मिश्रित जल से नहाना, हवन-यज्ञ करना ना तिलों का दान देना यह सब कार्य पापनाशक बतलाये जाते हैं। इस पर्व पर शीत निवारणार्थ दीनों को कम्बल व घी का दान दिया जाता है।

कम्बलवन्त न बाधते शीतम्।
दान की महिमा कौन नहीं जानता।
दरिद्रान्भर कौन्तेय। मा प्रयच्छेश्वरे धनम् (महाभारत)॥

इस प्रबल शीतकाल में मकर संक्रान्ति के पहले दिन लोढ़ी का त्योहार मनाने की रीति है। स्थान स्थान पर अग्नियां प्रज्वलित की जाती है। इस त्योहार को माघी भी कहते हैं। ठीक बात तो यह है कि दो दिन त्योहार न मनाकर मकर संक्रान्ति की तिथी को ही माघी मनानी चाहिए। ताकि पर्वों की एकता स्थापित हो सके। आर्य समाज एकता पर बहुत बल देता है।

—द्वारकानाथ वासुदेव (फगवाड़ा)

आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार लुधियाना का अधिकारी तथा अन्तरिंग सदस्य की सूची

श्री देवराज खुलर प्रधान
,, महेंद्रपाल वर्मा सीनयर उपप्रधान
,, रामश्री दास उपप्रधान
,, अयोध्या प्रकाश मलहोतरा ,,
,, खुशबख्त राय सूद ,,
,, बलदेव राज सेठी ,,
,, देसराज मेहता महा मन्त्री
,, कुलदीप राय उप मन्त्री
,, मतव ल चन्द ,,
,, मास्टर राम प्रकाश ,,
,, हर भगवान पाहवा ,,
,, नवनीत लाल ,,
,, सुधीर भाटिया कोषाध्यक्ष
,, मदन कुमार सूद उप कोषाध्यक्ष
,, बसैती राम मेहता पुस्तकाध्याक्ष
,, महिम्बरलाल शर्मा उपपुस्तकाध्याक्ष
,, रणवीर भाटिया अन्तरिंग सदस्य
,, मंगल सैन बधवा ,,
,, सरदारी लाल मदान ,,
,, राम प्यारे लाल ,,
,, गुरदियाल सिंह आर्य ,,
,, निरेन्द्रसिंह भल्ला ,,
,, ज्ञानचन्द सावन वाले ,,

पुस्तक समीक्षा

वियोग वेदना

ले०—प्रा० श्री भद्रसेन आचार्य, डा० आ० होशियारपुर प्रकाशक हरियाणा साहित्य संस्थान, गुरुकुल झज्जर, (रोहतक) पृष्ठ संख्या सं० ५२, मूल्य १-५०

संसार में दुःख अनेक विध है, इन सभी में वियोग वेदनाजन्य दुःख अति तीव्र और असह्य है। इसी दुःख की तीव्रता और असहिष्णुता का साधारणीकरण करना ही विवेच्य पुस्तक का उद्देश्य है।

अनुभवी लेखक ने शास्त्रोय निर्देश देकर आत्मा मृत्यु और शरीर के वास्तविक स्वरूप को सरल भाषा और रोचक शैली में स्पष्ट किया है। पारिवारिक संयोग और वियोग अपरिहार्य है। इनसे अभिभूत न होने में ही कल्याण है।

एक चिरायु, वियोगिनी वृद्धा का सच्चा उदाहरण देकर दीर्घ जीवन के रहस्य और विरह वेदना से मुक्ति पाने का प्रमुख साधन धैर्य को ही बताया है। सिद्ध किया है कि सुख का साधन धन नहीं है, अपितु सन्तोष है। बीच-बीच में पद्य बद्ध रचनाओं को उद्धृत कर विषय को रोचक बनाया गया है।

यह संसार रंगभूमि है। जैसे अभिनेता दुःख का अभिनय करता हुआ भी दुःखी नहीं होता, वैसे ही मानव को सुख-दुःख में अभिभूत हुए बिना अपना कर्त्तव्य [illegible] है। [illegible] पुस्तक [illegible], [illegible] और [illegible] है।

दयानन्द अनुसन्धान पीठ में वैदिक व्याख्यान माला का सफल आयोजन

वैदिक साहित्य तथा संस्कृति के प्रसिद्ध विद्वान् तथा सिंधु लिपि के सफल ज्ञाता डा० फतहसिंह की वेद विषयक व्याख्यान माला दयानन्द चेयर पजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ में दिनाक २-१२-८१ से ६-१२-८१ तक सफलतापूर्वक चलती रही। व्याख्यान माला का उद्घाटन पंजाब विश्व विद्यालय के डीन आफ यूनिवर्सिटी इन्स्ट्रक्शन डा० गुरुदेव सिंह गोयल ने किया। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण मे इस भाषण माला के आयोजन के लिए दयानन्द पीठ के अध्यक्ष डा० भवानी लाल भारतीय को साधुवाद दिया तथा आशा व्यक्त की कि डा० फतहसिंह के विद्वतापूर्ण भाषणों से वैदिक ज्ञान का उज्ज्वल रूप श्रोताओं के समक्ष आएगा।

जिन विभिन्न विषयों को डा० फतहसिंह ने अपने व्याख्यानों में समाविष्ट किया उनमें पाश्चात्य विद्वानों की वेद विषयक भ्रम मूलक धारणाएं, वेद ग्रन्थों में विद्यमान सामाजिक दृष्टि, वेद मन्त्रों में निहित आध्यात्मिक तत्व, स्वामी दयानन्द की वेदार्थ प्रक्रिया आदि उल्लेखनीय है। इन व्याख्यानों की अध्यक्षता पंजाब विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डा० राममूर्ति शर्मा, कालिदास पीठ के अध्यक्ष डा० रामगोपाल, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डा० जयदेव विद्यालकार, दिल्ली विश्वविद्यालय के डा० कृष्णलाल तथा राजस्थान विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के भूतपूर्व अध्यक्ष डा० सुधीरकुमार गुप्त ने की। पंजाब विश्वविद्यालय के अंग्रेजी विभाग के सभागार में आयोजित इस व्याख्यान माला को सुनने में चण्डीगढ़ की सुपठित जनता ने पर्याप्त रुचि दिखाई। दयानन्द पीठ के अध्यक्ष डा० भवानीलाल भारतीय ने विद्वान् वक्ता डा० फतहसिंह का आभार प्रदर्शित करते हुए भविष्य में भी इस प्रकार के आयोजन करने की प्रक्रिया जारी रखने का संकेत दिया।

बटाला में वेद प्रचारिणी सभा का गठन

बटाला—गत दिवस तहसील बटाला के लगभग १५० सक्रिय आर्य समाजी कार्यकर्ताओं ने वेद प्रचारणी सभा का गठन किया है। इस सभा की अध्यक्षता श्री बरकतराम शर्मा ने की, जिसमें निम्नलिखित पदाधिकारी चुने गये।

संरक्षक—श्री [illegible] सेखड़ी, भूतपूर्व विधायक, प्रधान—[illegible] [illegible], उपप्रधान—श्री [illegible], महामन्त्री—वीरेन्द्र भारती, कोषाध्यक्ष—श्री बलदेवसिंह, प्रचार मन्त्री—इन्द्रजीत, उपमन्त्री—ज्ञानचन्द, वेद प्रचार अधिष्ठाता रामनाथ शास्त्री। इसके अतिरिक्त ११ सदस्यीय कार्यकारिणी की भी घोषणा की

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज रादौर (कुरूक्षेत्र) का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार हुआ।

संरक्षक :— श्री रामकिशन बतरा, प्रधान श्री सत्यकाम आर्य, उपप्रधान श्री महेन्द्रपाल आर्य, मन्त्री—श्री योगिन्द्र जी रावल, उपमन्त्री श्री—वीरेन्द्र आर्य, कोषाध्यक्ष-श्री सुरेश कुमार आर्य, प्रचार मन्त्री—अखिलेश आर्य अन्तरंग सभासद श्री केसरदास।

—कृष्ण गोपाल दत्ता

यज्ञ द्वारा लाभ

(२ पृष्ठ का शेष)

एक से १०० तक गिनती, सातों वारों के नाम, १२ मासों के नाम, भोजन के पदार्थों के नाम भी पूछने पर सुनाए और जब उससे पूछा गया कि स्कूल आओगे तो उसने स्वीकारी दी तथा अपने पिताजी से भी स्कूल जाने की इच्छा प्रकट की।

इस प्रकार उसके पारिवारिक जनों को यज्ञ से पूर्व की स्थिति में ५० प्रतिशत अनुकूल सफलता दृष्टि गोचर हुई। इसी प्रकार जम्मू प्रदेश के महबूब नगर के अध्यापक के. कनकम्पा को यज्ञ के द्वारा गलित कुष्ठ में अपने द्वारा लाभ हुआ जिसका विवरण किसी अन्य अवसर पर उपस्थित करेंगे।

—

मुसलमान एडवोकेट हिन्दू धर्म में दीक्षित

लखनऊ—स्थानीय एक एडवोकेट श्री आफताब हुसैन कल एक समारोह में हिन्दू धर्म में दीक्षित हो गए।

अ. भा. हिन्दू रक्षा समिति के अध्यक्ष महात्मा वेद भिक्षु ने उन्हें समारोह में हिन्दू धर्म में दीक्षित किया। उनका नाम सूरज प्रकाश रखा गया। श्री हुसैन ने कहा कि मुस्लिम धर्म में अनेक बहु-पत्नियां तथा अन्य कुरीतियों के कारण इस्लाम से उनकी विरक्ति हुई है।

—

राष्ट्र विरोधी शक्तियों को कुचलने में देश की हिन्दू

जनता प्रधानमंत्री के साथ है



नई दिल्ली—अब [illegible] अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति की कार्यकारिणी की एक बैठक लाला हंसराज गुप्त, भूतपूर्व मेयर, दिल्ली, की अध्यक्षता में हुई। बैठक में देश में बढ़ती हुई [illegible] विघटनकारी शक्तियों की [illegible] पर चिन्ता प्रकट की गयी और [illegible] मांग की गयी कि वह राष्ट्र की एकता, अखंडता और सुरक्षा के लिए दृढ़ता से पग उठाये।

जामा मस्जिद के शाही इमाम व उनके अनुयायियों द्वारा [illegible] [illegible] आलोचना को गम्भीरता से लेते हुए कार्यकारिणी ने मांग की है कि शाही इमाम को प्रधानमन्त्री का अपमान करने के अपराध में गिरफ्तार किया जाए।

बैठक के बाद [illegible] समिति के [illegible] सरकार को आश्वासन दिया [illegible] के प्रति कार्य में देश की [illegible] प्रधानमन्त्री के साथ है [illegible] को कुचलने के लिए शासन को कड़े से कड़े पग उठाने चाहिए। समिति ने श्री के. नरेन्द्र पर चलाये हुए मुकद्दमों में उन्हें [illegible] दिया कि समिति उनके इस कार्य में यदि चाहेंगे तो पूर्ण सहायता करेगी। [illegible] [illegible] जिसमें देश के सभी हिन्दू नेता भाग लेंगे।

—

[illegible]

[illegible] महर्षि दयानन्द [illegible] 'सत्यार्थ प्रकाश' को [illegible] कोटि के विद्वान् [illegible] के गुरुकुल के [illegible] [illegible] 'हिन्दू धर्मों पर कुठाराघात [illegible]'।

स्वामी जी ने [illegible] बात करते हुए [illegible] के [illegible] है जिस पर [illegible] [illegible] ११ वें [illegible] [illegible] किया है।

[illegible] दिखाएं।

यह उल्लेखनीय है स्वामी [illegible] ने [illegible] 'पाखंडी ग्रंथ' को [illegible] में छिपवा कर वितरित किया है।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, [illegible] जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वर्ष 14, अंक 41, 11 मार्गशीर्ष सम्वत् 2039, तदनुसार 24 जनवरी 1982, दयानन्दाब्द 156। एक प्रति 35 पैसे (वार्षिक शुल्क 15 रुपए)

पंजाब मे आर्य वीर दल को सक्रिय बनाने की प्रभावी योजना

जालन्धर—पंजाब की वर्तमान परिस्थितियो के सदर्भ मे आर्य समाज के युवक सगठन आर्य वीर दल को सशक्त और सक्रिय बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण योजना तैयार की गई है। जो कि अपनी अथाह सगठन शक्ति के माध्यम से सभी हिन्दू धर्मावलम्बियो के मनोबल को बढाने और साम्प्रदायिक सद्भाव पैदा करने मे महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा।

आर्य वीर दल पंजाब के अधिष्ठाता चौ० ऋषिपाल सिंह एडवोकेट तथा नवनियुक्त मत्री श्री सुभाष आर्य ने यहा एक सयुक्त प्रैस विज्ञप्ति मे उक्त घोषणा की। उन्होने कहा कि पंजाब मे साम्प्रदायिक व पृथकतावादी तत्वों के मुकाबला के लिए दल की सैकडो सशक्त शाखाओं का पुनर्गठन किया जा रहा है।

आर्य नेताओ के अनुसार आर्य वीर दल सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब एव समूचे आर्य जगत का एक मात्र अधिकृत युवक सगठन है। उन्होने विश्वास व्यक्त किया कि अलग-अलग नामों से चल रहे आर्य युवको के सभी सगठन शीघ्र ही आर्य वीर दल मे विलीन हो जाए गे।

आर्य वीर दल को आर्यसमाज का भविष्य बताते हुए उन्होने कहा कि ईसाई मिशनरियो व मुस्लिम कठमुल्लाओ के द्वारा विदेशी धन के माध्यम से हिन्दुओ के व्यापक धर्मान्तरण के दृष्टिगत आर्य युवको के इस सगठन का महत्व और आवश्यकता और भी बढ गई है। उन्होने कहा कि सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेश पर देश-विदेश म चल रहे धर्म रक्षा महाभियान को आर्य वीर दल और अधिक गति प्रदान करेगा।

उन्होने स्पष्ट किया कि आर्य वीर दल कोई साम्प्रदायिक सगठन न हो कर चरित्रवान तथा राष्ट्रभक्त युवको का सगठन है। मर्यादा पुरुषोत्तम राम योगीराज श्री कृष्ण व महर्षि दयानन्द की आर्य सस्कृति के प्रति निष्ठावान सभी हिन्दू धर्मावलम्बियो को आर्य वीर दल के मच पर सगठित होने का आह्वान करते हुए उन्होने कहा कि वे अपने धार्मिक, सामाजिक और सास्कृतिक मूल्यो की रक्षा के लिए किसी प्रकार के मतभेदो को भी स्वीकार न करते हुए एक जुट हो जाए।

उन्होने बताया कि पंजाब की सभी आर्य समाजो व आर्य शिक्षण सस्थाओ को आर्य वीर दल की शाखाए स्थापित करने तथा उन्हे हर प्रकार का सहयोग देने के लिए निर्देश पहले ही भेजे जा चुके हैं और इसकी प्रतिक्रिया काफी उत्साहवर्धक रही है। उन्होने आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अधिकारियो की ओर से इस सम्बन्ध मे दिए जा रहे विशेष सहयोग की सराहना करते हुए कहा कि आर्य वीरो का यह सगठन महर्षि दयानन्द के मिशन के प्रचार-प्रसारार्थ एक सफल क्रान्ति लाने की योजना को कार्यान्वित करेगा। आर्य वीर दल द्वारा लाई जान वाली यह क्रान्ति विशुद्ध वैचारिक होगी।

गोरक्षा आंदोलन के प्रथम शहीद

बात साधारण थी ६ नवम्बर १९६६ को परेड मैदान दिल्ली मे अन्य गोभक्तो के साथ हाथ उठा कर प्रतिज्ञा कर दी कि 'मैं भी गोरक्षा के लिए आमरण अनशन करूं गा। उसी साधारण प्रतिज्ञा को सम्मुख रख सर्वसाधारण नागरिक श्री मेहर चन्द जी पाहूजा ने ३१ दिसम्बर १९६६ को अपना शरीर तृण की भांति न्योछावर कर दिया। आपने गोपाष्टमी २० नवम्बर १९६६ को गोलोक धाम वृन्दावन मे अन्यो के साथ आमरण अनशन किया। जब अनशन छोडने को बात चली तब उन्होने हाथ उठा कर कहा कि—

"भगवान मुझ से प्रतिज्ञा भंग की पाप न कराएं"

देश को गो माता के प्राण बचाने के लिए हजारो बलिदान देने होगे। कुछ दिन पूर्व मेरे पास वह रोए तो मैंने पूछा कि पाहुजा जी आप क्या चाहते हैं? तो उन्होने कहा कि "आप मुझे गलत न समझें मैं इसलिए रोया कि अनेक सज्जन मेरी प्रतिज्ञा भंग कराना चाहते हैं किन्तु आपसे मे वरदान चाहता हू कि मेरी प्रतिज्ञा पूर्ण हो।' अपने अनशन के ४१ वें दिन गोभक्त श्री पाहूजा जी ने गो माता की रक्षा मे अपना प्राणोत्सर्ग कर भारतीय अमर परम्परा का पालन किया उनका नश्वर शरीर चला गया परन्तु उनका सुयश एव गो रक्षा कीर्ति सदा अमर रहेगी। भारतीय जनता उनका पुण्य स्मरण करती रहेगी।

देश भक्त तबसे तब तक उऋण नहीं होंगे जब तक गो-वंश हत्या पूर्ण बन्द नहीं करा देते।

—विदेही हरि

"गुरुकुल खोलिए! मैं अपना जीवन तथा सारी सम्पति लगा देने को तैयार हूं"

दक्षिण भारत के लिए दयानन्द भक्त योग्य विद्वान चाहिए

मैं गुरुकुलो को हिन्दू समाज का स्तम्भ मानता हू। गुरुकुल जितने अधिक होंगे और जितने बलशाली होंगे, समाज उतना ही सुदृढ होगा। इ क्रिश्च कोनवेन्ट ईसाई गुरुकुल नही हैं तो और क्या हैं? उन्होने हमारी प्रणाली को पकड़ कर और उसमें अपने अनुकूल सशोधन करके उनका हमारे ही विरुद्ध उपयोग किया। आधुनिक युग के अनुसार गुरुकुल प्रणाली मे हमे भी कुछ सुधार करना चाहिए। मैं दक्षिण एव उत्तर पूर्वी भारत मे 'हिन्दू कानवेन्ट' खोलने का पक्षपाती हू। इस कार्य के लिए मैं अपना शेष जीवन और जितना भी धन मुझ से हो सकता है, लगा दू गा।

"मीनाक्षीपुरम मे गुरुकुल खोलिए' विषय पर दो पत्र मेरे पास आए हैं। तमिलनाडु में भूमि मिल जाने का आश्वासन मिला है तथा मेरे द्वारा अब-तक एक लाख रुपया मिल जाने की पूर्ण सम्भावना है। मैं आपके पत्र द्वारा उन व्यक्तियो से सम्पर्क स्थापित करना चाहता हू जो इस योजना मे सहयोग देने के इच्छुक हो। सहयोग मे धन मुख्य नही है। क्या कोई दयानन्दभक्त विद्वान दक्षिण मे बैठकर उपरोक्त योजना को चलाने का भार ले सकता है? साधन जुटाना हमारा काम होगा।

—पुरुषोत्तम सिंह योग

अवकाश प्राप्त चीफ इंजिनीयर,
गौतम बाग, सीतापुर रोड, लखनऊ-७

आह ! श्री त्रिलोकचन्द्र शास्त्री जी

आर्य समाज अपने एक परखे हुए सन्त से वंचित हो गया। संस्कृत भाषा अपने एक निष्ठवान सेवक को खो बैठी। आर्य हिन्दू जाति का प्रहरी चल बसा। कल्याण वाणी वेद का एक विद्वान सूझबूझ अब नहीं रहा। राष्ट्रभाषा का एक अनथक रक्षक तथा साहित्यकार अपनी एहलौकिक लीला समाप्त कर गया। अब हमें आर्यसमाज के मंच से श्री पं त्रिलोक चन्द जी शास्त्री को सुनने का सौभाग्य प्राप्त नहीं हो सकेगा, ऋषि मिशन का वह दीवाना हमें जुदाई की खाक में फेंक कर चला गया है।

श्री पं. जी से मेरा १९४७ ई. से सम्बन्ध चला आ रहा था, मैंने उन्हें अत्यन्त निकट से देखा, उनके हृदय में देश जाति के लिए दर्द का एक दरिया बहता था आर्य समाज की सेवा में वह सुध-बुध खो बैठते थे। मैं कालेज का विद्यार्थी था। आर्य समाज के सब कामों में तब भी बढ़चढ़ कर भाग लेता था। एक दिन आर्य समाज के प्रधान श्री जगदीश मित्र जी आर्य समाज के मन्त्री श्री देशराज के घर आए और मुझे भी बुलाया श्री जगदीश मित्र जी ने बड़े रोष में है कहा आर्य प्रादेशिक सभा को पत्र लिखा कि श्री पं. त्रिलोक चन्द्र जी को शीघ्र घर भेजें उनका इस समय घर पर होना आवश्यक है। श्री देशराज जी ने हंसकर कहाकि अब क्या करना है? आने वाला तो आ गया। वह कहने लगे कब? तब देशराज जी ने बताया कि रात उनके यहां पुत्र का जन्म हुआ है। पं. जी की पत्नी के पास घर की कोई महिला व पुरुष नहीं था। इसी बच्चे का नाम आज जगत सुरु है।

कुछ दिन बाद पं. जी घर आए। श्रीमती जी ने कहा मैं मेरे बांदी सी...बड़ी शांति से तब पं. जी ने पत्नी से कहा, 'कोई बात नहीं फिर ऋषि के द्वारा स्थापित आर्य अनाथालय फिरोजपुर में बच्चों को प्रविष्ट करवा कर आर्य समाज के प्रचार में जुट जाता। यह है उनके हृदय मन्दिर का चित्र।

पंडित जी भरी जवानी में लेखराम नगर (कांदिया) आए। उनका जन्म पश्चिमी पंजाब का था। लेखराम नगर में अध्यापक के रूप में आए। अध्यापन कार्य तो छोड़ दिया परन्तु लेखराम नगर नहीं छोड़ा। वहां जम जाने का एक ही कारण था कि वहां हिन्दु अल्पमत में था।

मिर्जा ईअमात का आतंक मिटाने के लिए वह वहां बस गए। हाईकोर्ट ने अपने निर्णय में कादियां के लिए लिखा था, "ए स्टेट विदिन ए स्टेट" राज्य के बीच में राज्य। पं. जी ने जात बिरादरी

याद मीठी आर्यों को आपकी आती रहेगी, गीत जाति आपके प्यारे सदा गाती रहेगी।

की दृष्टि से कभी सोचा ही नहीं। न वहां किसी को पता था कि वह किस बिरादरी में जन्में। उस क्षेत्र में उनका कोई सगा सबन्धी न था परन्तु, वह छोटे बड़े सबके प्यारे व पूज्य बन गए।

हैदराबाद का सत्याग्रह चला। रणभेरी बजी। पं. जी कहां पीछे रहने वाले थे। घर-बार को छोड़कर शोलापुर जा पहुंचे। सत्याग्रह के फील्ड मार्शल स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी महाराज ने उन्हें सत्याग्रह करने की अनुमति न दी। पं. जी की लेखनी व वाणी में एक जादू था। उनमें मस्ती थी। स्वामी जी ने उन्हें सत्याग्रह कार्य सौंपा। जब तक निजाम ने आर्य समाज की मांगें नहीं मानी पं. जी घर नहीं लौटे।

पं. जी बड़े भावुक हृदय थे। स्वार्थ का संसार फूंककर धर्म रक्षा के कार्य में अपने को समर्पित कर दिया। श्री पं. गंगा प्रसाद जी उपाध्याय के साथ आप वहीं शोलापुर के विद्यालय में डट गए। यह कोई कम त्याग न था। उनकी पत्नी के लिए वहां बड़ी असुविधा थी। आज तो उत्तर व दक्षिण में आना जाना कुछ भी अटपटा नहीं लगता। लोग इधर से उधर जाकर बस जाते हैं। और उधर से इधर बसे हुए हैं। जब पं. जी वहां गए परिस्थितियां भिन्न थी। यह 42 वर्ष पहले की बात है। हिन्दी सत्याग्रह चला तो पं. जी सारे कुटुम्ब को लेकर जेल में चले गए। उनके उत्साह ने लोगों को एक नया जीवन प्रदान किया।

आर्य समाज की विजय हो जाने पर पं. जी फिर दक्षिण चले गए। शोलापुर में आर्य समाज ने एक उपदेशक विद्यालय स्थापित किया। पं. जी बड़े भावुक हृदय थे। स्वार्थों का संसार फूंककर धर्म रक्षा के कार्य में अपने को समर्पित कर दिया। श्री दुर्गा प्रसाद जी उपाध्याय के साथ वहीं शोलापुर के विद्यालय में डट गए। यह कोई कम त्याग न था। उनकी पत्नी के लिए वहां बड़ी असुविधा थी। आज तो उत्तर दक्षिण में आना जाना कुछ भी अटपटा नहीं लगता। लोग इधर से उधर जाकर बस जाते हैं। और उधर से इधर बसे हुए हैं। जब पं. जी वहां गए परिस्थितियां भिन्न थीं। यह ४२ वर्ष पहले की बात है। हिन्दी सत्याग्रह चला तो पं. जी सारे कुटुम्ब को



लेकर जेल में चले गए। उनके उत्साह ने लोगों को एक नया जीवन प्रदान किया।

पं. जी हिन्दी, उर्दू के एक सिद्धहस्त लेखक थे। वह अंग्रेजी, अरबी व फारसी के भी विद्वान थे। उनका साहित्य विस्तृत और महान था। संस्कृत व हिंदी के जाने माने कवि थे। जब संस्कृत में कविता पाठ करते थे तो जन साधारण को मुग्ध कर देते थे। एक बार करतारपुर में संस्कृत की कविता सुनाई तो श्रोता वाह-वाह कर उठें, सब ओर से यह आवाजें आईं एक बार फिर-फिर एक बार फिर-एक और कविता सुनावें मध्य प्रदेश में एक कवि सम्मेलन में उन्हें कविता सुनाने को कहा गया। हिन्दी के जाने माने बहुत कवि वहां पधारे हुए थे। परन्तु पं. त्रिलोक चन्द्र जी शास्त्री कवि सम्मेलन पर छा गए। मैं वर्षों से आर्य प्रादेशिक सभा के कार्यकारों से कहता आ रहा हूं। कि पं. जी के संस्कृत काव्य का एक सुन्दर संग्रह प्रकाशित करवाया जावे। बड़े दुःख की बात है कि पं. जी के जीवनकाल में ऐसा न हो सका।

पं. जी की लेखनी व वाणी के जबरदस्त प्रभाव की ओर सबसे पहले आर्य प्रादेशिक सभा के पूर्व मन्त्री मा. देशराज जी पुरी का ध्यान गया उन्होंने सभा के कार्यकारों से कहाकि इस रत्न को स्कूल में रखकर व्यापक क्षेत्र में लाओ। पं. जी ने आर्य जगत का वर्षों सम्पादन किया। वह उर्दू गजट व आर्य वीर के लिए भी लिखते रहे। दैनिक प्रताप में भी उनके लेख छपा करते थे। दक्षिण से आर्य समाज ने कई पत्र निकाले। पं. जी भी आर्य भानु शोलापुर के लिए लिखते रहे। सम्भवतः कुछ समय के लिए सम्पादक भी रहे।

पं. जी की समाज को एक देन यह भी है कि उन्होंने अपनी सन्तान के विवाह शादी के लिए सब कड़ियां तोड़ डालीं। जाति भेद की किंचित चिन्ता न करके अपने बच्चों के विवाह किए। उनके परिवार में कभी किसी ने जाति सूचक शब्दों का प्रयोग किया ही नहीं।

बहुत कम लोग जानते हैं कि उन्होंने आर्य समाज के लिए शास्त्रार्थ भी किए। मिर्जाईयों से उनके कई प्रभावशाली शास्त्रार्थ हुए। वह पं. लेखराम स्मारक मण्डल के एक निर्माता थे। आर्य समाज को प्यारे दयानन्द जैसा सपूत दिया जो कुछ दुष्टों ने मरवा दिया। डा. महर्षि के रूप में देश को, समाज को एक रत्न दिया है। उनके जमाता प्रो. वेद सुमन जी वेदलंकार समाज के एक अथक सेवक है। मेरे जैसे कई व्यक्ति उनके संस्कारों के अंगारों पर पले हैं। उनका जीवन हमें सदा प्रेरणा देता रहेगा।

प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु, अबोहर

आर्य वीरों ने 250 गौओं की रक्षा की

करनाल। करनाल से आर्य वीर दल के मंडलपति श्री वेद सुमन वेदालंकार की सूचना के अनुसार करनाल आर्य वीर दल के ८ युवकों ने कैथल-करनाल [illegible] पर कसाईयों के हाथ से २५० गौओं की रक्षा की।

कसाईयों की संख्या [illegible] थी तथा वे [illegible] युवक [illegible] तक अपने प्राणों की परवाह न कर [illegible] पर [illegible]। सब गऊओं को गोरक्षा समिति को सौंप दिया गया है।

परोपकारणी सभा समिति का 31 जनवरी को वार्षिक अधिवेशन

परोपकारिणी सभा समिति दिल्ली का वार्षिक अधिवेशन पं. देवव्रत धर्मेन्दु की अध्यक्षता में ३१ जनवरी १९८२ को मध्याह्न २ बजे आर्य जागृति पटौदी हाउस दरियागंज में सम्पन्न होगा।

ओ३म्

आर्य मर्यादा

सम्पादकीय–

आर्य समाज को नया रूप देने की आवश्यकता है।

आर्य समाज की स्थापना हुए अब एक सौ सात वर्ष होने लगे हैं। अगले वर्ष अर्थात् १९८३ में महर्षि दयानन्द सरस्वती की निर्वाण शताब्दी भी मनाई जा रही है। ऐसी स्थिति में प्रश्न उठेगा कि पिछले एक सौ वर्षों में आर्य समाज ने क्या किया है? मैं उन व्यक्तियों में से हूं, जिनकी यह निश्चित धारणा रही है कि पिछली एक शताब्दी में जितना काम आर्य समाज ने किया है किसी दूसरी धार्मिक संस्था ने नहीं किया। आर्य समाज को यह श्रेय प्राप्त है कि उसने सारे देश में एक वैचारिक क्रान्ति पैदा की है। आज यदि हमारे सनातन धर्मी भाई भी यह अनुभव करने लगे हैं कि जो व्यक्ति अपना धर्म छोड़ जाए, या जो किसी दूसरे धर्म का समर्थक हो उसे शुद्ध करके हिन्दू धर्म या वैदिक-धर्म में लाना कोई बुरी बात नहीं है। तो यह सब आर्य समाज के कारण ही हुआ है। आज से कुछ वर्ष पहले तो हमारे सनातनधर्मी भाई शुद्धि का नाम सुनने को तैयार न होते थे। अब वे स्वयं उन लोगों को शुद्ध करवाते हैं, जो इस्लाम या ईसाईयत को छोड़ कर हिन्दू धर्म में आना चाहते हैं। अर्थात् जो कुछ महर्षि दयानन्द ने एक सौ वर्ष पहले कहा था वही अब दूसरे व्यक्ति भी कहने लग गए हैं। जहां तक महर्षि दयानन्द का सम्बन्ध है, वह तो आर्य समाज की स्थापना के आठ वर्ष पश्चात इस संसार से विदा ले गए। परन्तु जो लक्ष्य और जो आदर्श हमारे सामने रख गये थे। उन्हें क्रियान्वित करवाने का उत्तरदायित्व आर्य समाज पर ही था और उसने उसे पूरा करने में अपना जो कर्त्तव्य निभाया है, वह सराहनीय है। शुद्धि के अतिरिक्त छूतछात को मिटाना, गऊ रक्षा, स्त्री शिक्षा, हिन्दी का प्रचार इस प्रकार के कई और काम हैं, जो आर्य समाज ने किए हैं। और जिनके कारण उसका नाम भारत के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा जाएगा।

परन्तु क्या यह पर्याप्त है? क्या इसके साथ आर्य समाज का काम समाप्त हो जाता है? मेरी तो यह निश्चित धारणा है कि अब समय आ गया है, जबकि आर्य समाज को पहले से भी अधिक सक्रियता के साथ कार्य करना चाहिए। हमारे समाज को आर्य समाज की जितनी आवश्यकता है: इतनी इससे पहले कभी न हुई थी। परन्तु उसी के साथ हमें यह भी स्वीकार करना पड़ेगा कि जिस प्रकार हम आज तक आर्य समाज का काम चलाते रहे हैं, अब उस प्रणाली को बदलना पड़ेगा। परिस्थितियां भी बदल गई हैं। जनता के विचारों में भी एक नई क्रांति आ गई है। आज का भारत वह भारत नहीं, जो एकसौ वर्ष पहले था और न ही एक सौ वर्ष के पश्चात् का भारत वह भारत होगा, जो आज है। इसलिए अपने अतीत को देखते हुए और अपने वर्तमान पर विचार करते हुए हमें अपने भविष्य को बनाने का प्रयत्न करना चाहिए। इसके लिए यह आवश्यक है कि हम यह सोचें कि देश में जो परिस्थितियां बदल रही हैं और समाज का जो नया रूप हमारे सामने आ रहा है, उसको देखते हुए क्या यह आवश्यक नहीं कि आर्य समाज के रूप को भी कुछ बदलने का प्रयास किया जाए। यह बात तो बिल्कुल स्पष्ट है कि जहां तक सिद्धान्तों का सम्बन्ध है उनमें न कोई परिवर्तन और न कोई संशोधन हो सकता है। परन्तु उन सिद्धान्तों की प्रचार प्रणाली में परिवर्तन अवश्य हो सकता है। और समय, स्थान और काल के अनुसार वह हमें अवश्य करना चाहिए। हम देख रहे हैं कि कई दूसरी संस्थाएं जो धार्मिक होने का दावा करती हैं, वह आज धीरे-धीरे जनसाधारण में फैलती जा रही हैं। आर्य समाज का कार्य क्षेत्र जनसाधारण में इतना नहीं, जितना बुद्धिजीवियों में है। इसलिए मैं यह समझता हूं कि अब समय आ गया है जबकि आर्य समाज के नेतृत्व को इस विषय में गम्भीरतापूर्वक सोचना चाहिए कि आर्य समाज के प्रचार के लिए अब हमें क्या करना चाहिए? जैसाकि मैंने ऊपर भी लिखा है। आज का भारत वह भारत नहीं है जो उस समय का जब महर्षि दयानन्द ने आर्य समाज की नींव रखी थी उस समय परिस्थितियां और थी आज और हैं। उस समय समस्याए और थीं और आज और हैं। १९७५ में जब आर्य समाज की शताब्दी मनाई गई थी, उस समय हमें अपने देशवासियों को एक नई दिशा दिखानी चाहिए थी। परन्तु उस समय हम चूक गए और कोई नई दिशा हम न दिखा सके। अब जबकि अगले वर्ष महर्षि दयानन्द की निर्वाण शताब्दी मनाई जाने वाली है। अभी से यह विचार होना चाहिए कि पिछली एक सौ वर्ष के इतिहास को सामने रखते हुए हम अब अपने देशवासियों के सामने कौन सा नया कार्यक्रम रख सकते हैं। पिछले एक सौ वर्षों में आर्य समाज यदि लोकप्रिय हो सकता था तो उस का एक कारण यह भी था कि उसने जनता की समस्याओं को समझने और उन्हें दूर करने के लिए प्रयास किया था। आज फिर वही समय आ गया है जबकि आर्य समाज को देखना चाहिए कि देश किधर जा जा रहा है और उसके अनुसार वह किस तरह एक नई दिशा दिखा सकता है।

सबसे बड़ी आवश्यकता आज इस बात की है कि आर्य समाज को प्रचार प्रणाली मे कुछ परिवर्तन लाया जाए। अब आर्य समाज के पास उतने योग्य और उच्चकोटि के विद्वान् बहुत कम हैं, जैसे कि पहले हुआ करते थे। कोई तीस-चालीस वर्ष पहले आर्य समाज के पास ऐसे कर्मठ विद्वान् थे, जिनमें से एक-एक को सुनने के लिए हजारों लोग पहुच जाया करते थे। अब वह स्थिति नही है। यह भी देखने की आवश्यकता है कि आर्य समाज के साप्ताहिक सत्सगों में लोग कम क्यो आते हैं। इस पर भी विचार करने की आवश्यकता है कि युवक वर्ग आर्य समाज से दूर क्यों जा रहा है? एक समय था, जब कवर सुखलाल और चिमटा मण्डली जैसे आर्य समाज के भजनोपदेशक हजारों व्यक्तियों को अपनी ओर खींच लिया करते थे। आज हमारे पास उस उच्चकोटि के भजनीक नही हैं। दूसरी तरफ हम देखते हैं कि हमारे सिख भाई अपने रागियों को विशेष रूप से तैयार करते हैं। वे जब कोई राग गाते हैं तो लोगों पर उस का प्रभाव होता है? क्या कारण है कि आर्य समाज के पास अब ऐसे भजनीक नही रहे, जिन्हें सुनने के लिए लोग भागते आएं। इस प्रकार की और भी कई समस्याए हैं, जिन पर विचार करने की आवश्यकता है। ऋषि निर्वाण शताब्दी के सम्बन्ध में तैयार तो अभी से शुरू हो गई है, परन्तु उसका जो यह रूप है, उस पर विचार अभी शुरू नही हुआ। मैं यह समझता हूं कि महर्षि की निर्वाण शताब्दी हम उसी अवस्था में सुचारू रूप से मना सकेंगे और उसका उसी अवस्था में लोगों पर कोई प्रभाव भी होगा। यदि इस अवसर पर आर्य समाज एक तो कोई नया कार्यक्रम जनता के सामने रखें और दूसरा यह कि कोई ऐसी प्रचार प्रणाली अपनाए, जिसके द्वारा ऋषि का सन्देश घर-घर पहुच सके। मैंने कई दूसरी संस्थाओं के उत्सव भी देखे हैं। वहां हम प्राय: बड़ी भारी संख्या उन व्यक्तियों को देखते हैं, जिन्हें हम अपने समाज के पिछले वर्ग से समझते हैं। कोई कारण नहीं कि आर्य समाज उन तक न पहुचे। और वह यह अनुभव न करें कि उनका यदि कोई सहारा है तो वह केवल आर्य समाज इसलिए आर्य समाज के नेताओं से मेरा यह नम्र निवेदन है कि वह ऋषि निर्वाण शताब्दी के अवसर पर आर्य समाज को एक नया रूप देने का प्रयत्न करें। जनता को एक नई दिशा दिखाएं। और आर्य समाज की प्रचार प्रणाली को नए सिरे से आर्य समाजों के सामने रखें। जिस पर चलते हुए वह ऋषि के स्वप्न को सार्थक बना सके। यदि हम इस दिशा में कुछ कर सकें तो ऋषि निर्वाण शताब्दी का कुछ न कुछ लाभ होगा नहीं तो यह केवल एक मेला बन के रह जाएगी।

—वीरेन्द्र

युद्धोन्माद से पीड़ित मानव जाति एवं राष्ट्रों के लिए वेद का शान्ति--सन्देश

वैज्ञानिक प्रगति को राजनीतिज्ञों ने संसार के लिए भयावह स्थिति में समुपस्थित कर दिया है। राजनीतिज्ञों के क्षुद्र, एवं देशीय स्वार्थों एवं अहंकारों ने संसार में परस्पर घृणा एवं विद्वेष की जघन्य, पापमय अमानवीय पैशाचिक प्रवृत्तियों को प्रोत्साहित कर दिया है। आज समृद्ध राष्ट्र, दूसरे राष्ट्रों का निरन्तर आर्थिक शोषण करने के चक्रव्यूह रचते रहते हैं। बलवान् राष्ट्र अपनी सैन्य शक्ति एवं युद्ध के आयुधों द्वारा सर्व विनाश के पथ पर अग्रसर हो रहे हैं। ऐसी महा विनाशक स्थिति से संसार को जीवन का सन्देश सृष्टि के आदि काल से परमेश्वर ने वेद के माध्यम से हमें प्रदान किया है।

शयोरभिस्रवन्तु नः (यजुः ३६।१२)

हम सब के चारों ओर सुख की वर्षा हो। वेद का यह दिव्य सन्देश प्रत्येक राष्ट्र हृदयंगम करे। विनाशक अणु आदि बमों की वर्षा की योजना बनाने वाले विश्वपति परमात्मा की दृष्टि मे घोर पापी हैं और जिनसे ऐसे पापमय कृत्यों को लिया है या कर रहे हैं वे स्वयं अपने विनाश को आमन्त्रित कर रहे हैं।

सबको सुख ही सुख हो—ऐसी स्थिति में संसार में अशान्ति का अभाव होगा और सर्व शान्तिः (यजुः ३६।१७) सर्वत्र शान्ति का स्वरूप प्रकट होगा तथा द्यौः शान्तिः अन्तरिक्ष शान्तिः—पृथिवी शान्तिः के रूप में सर्वत्र शान्ति दृष्टि गोचर होने लगेगी। द्वेष, लोभ एवं अहंकार वृत्ति को त्यागना होगा। आज की विषय विषाक्त राजनीति के द्वारा द्यु लोक, अंतरिक्ष लोक एवं पृथ्वी को अशान्त तथा भीषण नरसंहार का क्षेत्र बनाने के प्रयत्न हो रहे हैं। वेद ने पृथ्वी को देवयजनि—यज्ञ की स्थली बनाने का आदेश दिया है परन्तु वैज्ञानिक एवं राजनीतिज्ञ युद्धोन्माद का ताण्डव नृत्य करवाना चाहते हैं। शांत भारत के चारों ओर भी विनाशक अस्त्र शस्त्रों की पंक्तियां खड़ी करके इस शांत क्षेत्र को अशान्त बनाना चाहते हैं।

> **आज की विषम, विषाक्त राजनीति के द्वारा द्यु लोक, अंतरिक्ष लोक एवं पृथ्वी को अशान्त तथा भीषण नरसंहार का क्षेत्र बनाने के प्रयत्न हो रहें हैं। वेद ने पृथ्वी को देवयजनि—यज्ञ की स्थली बनाने का आदेश दिया है परन्तु वैज्ञानिक एवं राजनीतिज्ञ युद्धोन्माद का ताण्डव नृत्य करवाना चाहते हैं। शांत भारत के चारों ओर भी विनाशक अस्त्र-शस्त्रों को पंक्तियां खड़ी करके इस शांत क्षेत्र को अशान्त बनाना चाहते हैं।**

शान्ति का शुभ एवं शान्ति का सन्देश भारत ही दे सकता है। वेद ने कहा है—पुमान् पुमांसं परिपातु विश्वतः (यजुः २९।५१) मनुष्य मनुष्यों का सब ओर से रक्षण करें। मा हिंसीः पुरुषं जगत् (यजुः १६।३) अर्थात् मानव जाति का संहार मत करो। वेद के इस सन्देश को विश्व के वैज्ञानिकों को सुना दो जिससे वे विज्ञान की प्रगति सब की रक्षा, सब को जीवन देने—एव सब ओर सुख शान्ति का साम्राज्य प्रसारित करने से विज्ञान का विकास करे।

सब राष्ट्रों एव उनके राजनीतिज्ञों को वेद का यह सन्देश दे दो कि तुम्हारे प्रयत्न एवं राजनीति का लक्ष्य-मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे (यजुः ३६।१८) हम सबको मित्रभाव, प्रेम दृष्टि, अपनत्व की दृष्टि से देखें—यह होना चाहिए जिससे-मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे (यजुः ३६।१८) हमें भी सब मित्र भाव से देखें। जैसी दृष्टि हमारी होगी वैसी ही सृष्टि हमारी बनेगी।

आज के समय में वेद का महत्व और भी बढ़ जाता है क्योंकि युद्ध के भय से त्रस्त मानव को शान्ति का सन्मार्ग दर्शन वेद ही दे सकता है। धार्मिक एवं राजनैतिक सम्प्रदाय वादों में ग्रस्त मानव जाति परस्पर नरसंहार में संलग्न है और उसके द्वारा शान्ति प्राप्ति के मृगतृष्णावत प्रयत्नों का अनुसरण कर रही है और शान्ति उत्तरोत्तर दूर होती जा रही है। अतः

—पं. वीरसेन वेदश्रमी
वेदविज्ञानाचार्य

वेद के इस सन्देश को अपने ध्यान में रखकर प्रयत्न करना चाहिए स्वस्ति गोभ्यो जगते पुरुषेभ्यः (अथर्ववेद १।३१।४) अर्थात् हमारे प्रयत्नों से गौ आदि पालनकर्ता पशुओं का तथा संसार के मनुष्यों का शुभ हो—मंगल हो—कल्याण हो, सुख और शान्ति हो। तन्मे मनः शिव संकल्पमस्तु (यजुः ३४।१) में हम सब के मन, बुद्धि, विचार सबके कल्याण के लिए हो जिस से हमारे आचरण तथा व्यवहारों मे शान्तिरेव शान्तिः—शान्ति ही शान्ति प्रसारित हो।

—अध्यक्ष-विश्व वेद परिषद्
वेद सदन महारानी पथ
इन्दौर ४५२००७

वोट की राजनीति का शिकार उर्दू भाषा

अल्पसंख्यकों को तुष्ट करने और उनके मत प्राप्त करने के उद्देश्य से जब बिहार सरकार ने बिना किसी कारण व तर्क के और आधार के कारण उर्दू को राज्य की द्वितीय भाषा बनाने का निश्चय किया था तभी लगने लगा था कि यह निश्चय ही देश को एक ऐसे मोड़ पर लाकर खड़ा कर देगा, जिसका परिणाम साम्प्रदायिकता, क्षेत्रीयता और विघटन को बढ़ावा देना होगा।

अब बिहार की देखादेखी इंका द्वारा शासित एक अन्य राज्य उत्तर प्रदेश ने भी उर्दू भाषा को द्वितीय राजभाषा बनाने की घोषणा की है।

उत्तर प्रदेश सरकार के इस अदूरदर्शी और घातक निश्चय के विरोध में हिन्दी की प्रमुख कवयित्री श्रीमती महादेवी वर्मा ने अपनी सशक्त आवाज उठाई है। उनका कहना है कि हिंदी ही एक ऐसी भाषा है जो १८५७ के स्वाधीनता संग्राम से लेकर १९४५ तक के सभी राष्ट्रीय संघर्षों में अग्रणी रही है। और जो व्यक्ति उर्दू को हिन्दी से ज्यादा सशक्त सिद्ध करने का प्रयास करते हैं, वे वोटों के लिए सब कुछ करने को तत्पर रहने वाले लोग ही हैं।

किसी भी भाषा को साम्प्रदायिक आधार बनाना कितना खतरनाक है, इसका प्रमाण हमें बंगलादेश में मिल चुका है। जहां अब यह राज्य पूर्वी पाकिस्तान कहलाता था। तब धर्मान्ध पाकिस्तान सरकार बंगलाभाषियों के बंगला प्रेम की उपेक्षा कर उन पर उर्दू थोपने का प्रयास किया था। इस नीति के फलस्वरूप भीषण नरसंहार हुआ और पू. पाकिस्तान स्वतन्त्र होकर बंगला देश बना।

हिन्दी के बारे में तो हमारे नेता यह कहते रहते हैं कि वह किसी पर नहीं थोपी जाएगी मगर तुमूं ही नीति अपना कर अब उर्दू को हिन्दीभाषी राज्यों पर थोप रहे हैं। इस बात से बिल्कुल बेखबर कि वे इस प्रकार साम्प्रदायिक उन्माद को बढ़ावा दे रहे हैं।

—सदा जीवत लाल चन्दू लाल

उत्तरप्रदेश में उर्दू के स्थान पर द्वितीय भाषा संस्कृत बनाई जाए—'आर्यसमाज'

पीलीभीत। आर्य समाज अशोक नगर पीलीभीत ने सर्वसम्मति से पारित एक प्रस्ताव में मांग की है कि उत्तर प्रदेश में उर्दू के स्थान पर संस्कृत को द्वितीय भाषा घोषित किया जाए।

पारित प्रस्ताव इस प्रकार है—

"आर्य समाज अशोक नगर की पीलीभीत के सदस्य, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 'उर्दू' को राज्य की दूसरी भाषा घोषित करने का प्रबल विरोध करते है। और साग्रह मांग करते हैं कि इस प्रकार की राष्ट्रघाती नीतियां न पनपने दें। और इस घोषणा को वापिस लें तथा संस्कृत को द्वितीय राज्य भाषा घोषित करें।

भाषा को आधार मानकर भारत, आन्ध्र प्रदेश, पंजाब का विभाजन हुआ है और खालिस्तान की मांग उभर रही है। गत वर्ष मुस्लिम दंगे और हिन्दुओं के सामूहिक मुसलमीकरण से स्पष्ट है कि भारत के मुसलमानों के इरादे अच्छे नहीं हैं। भारत विभाजन और पाकिस्तान की स्थापना के बाद मुसलमान हिन्दी पढ़ते रहे हैं। अब वे हिन्दी पढ़ना छोड़ देंगे। फिर हिन्दू-मुस्लिम दंगा सदा के लिये होकर भारत का दूसरा विभाजन कराएगा।

अतः आर्य समाज, अशोक नगर, पीलीभीत के सदस्य सरकार से साग्रह मांग करते है कि उर्दू को कभी भी द्वितीय राज्य-भाषा का पद न दिया जाए अपितु संस्कृत को राज्य को द्वितीय भाषा घोषित किया जाए।"

—विनय कुमार मंत्री

फैंसी ड्रैसों और मुखौटों की गुलामी कब तक ?

क्षमा कीजिए—आप इस लिबास में अन्दर नहीं आ सकते—बिना डिनर जैकेट पहने अन्दर आना मना है। ओबराय इन्टरकान्टीनेन्टल के कैफे सिनबा के बाहर खड़े सहायक ने हमें रोक लिया—क्योंकि मेरे पति खादी का कुरता पायजामा पहने थे।

आप चाहें तो आपको फार्मल सूट भी मिल सकता है। हमने टाईयों और कोटों की अलग से व्यवस्था की हुई है। हर साईज हमारे पास है—होटल सहायक ने अंग्रेजी में कहा—मैंने खुलते दरवाजे में से देखा कि अर्धनग्न लिबास पहने महिलाएं और फैंसी ड्रैस का नमूना बने पुरुष एक दूसरे से आलिंगनबद्ध होकर नृत्य कर रहे थे। पाश्चात्य संगीत की धुनें कभी ऊंची होतीं और कभी नीचे। चारों तरफ हिन्दुस्तानियों की अलग-अलग अंग्रेजी सुनाई दे रही थी।

भारतीय लिबास का यह अनादर मैंने केवल एक ही स्थान पर नहीं देखा। हर बड़े होटल में डिस्कोथेकों नृत्यशालाओं में डिनर जैकट पहनकर आना जरूरी है। हां अब यह रियायत मिल गई है कि आप बाकायदा काली या सफेद शेरवानी या बन्द गले का कोट पहनकर भी आ सकते हैं। लेकिन लिबास का औपचारिक फार्मूल होना जरूरी है।

इन फैशनबुल होटलों को छोड़िए, स्वयं हमारी सरकारी दावतो के निमन्त्रणों में भी यह बात खास तौर पर लिखी होती है कि फार्मल ड्रैस पहनकर आइए। आज से कुछ वर्ष पहले तो धोती-कुरता को ड्रैस ही नहीं समझा जाता था और सरकारी अशोक होटल में धोती-कुरता पहने एक नेता की वहां के अधिकारियों के साथ बहुत तू-तू, मैं-मैं हुई थी।

तीसरी दुनिया की मानसिक गुलामी

इस प्रकार के पश्चिमी सांस्कृतिक उपनिवेशवादी पंजे का शिकार केवल भारत ही नहीं है बल्कि एशिया और अफ्रीका के वह तमाम देश हैं जो बरसो तक पाश्चात्य साम्राज्यवाद के शोषण तले रहे हैं। चूंकि मुझे बहुत से अफ्रीकी, एशियाई देशों में जाने और भ्रमण का अवसर मिला है। मैंने यह देखा है कि वहां केवल भाषा के दृष्टिकोण से नहीं बल्कि लिबास और चाल-ढाल में भी पाश्चात्य उपनिवेशवाद का पंजा बहुत भयानक है।

इन देशों के दूतावासों में जो पार्टियां होती हैं उनके लिए भेजे गये निमन्त्रण पत्रों में विशेष रूप से यह लिखा होता है कि आप लोग सूट पहनकर आएं। केवल भारतीय उच्च नेताओं के वह अन्य किसी को भी धोती, कुरता या कुरता पायजामा पहनकर आना पसन्द नहीं करते। उनके अपने देशों में हालत यह है कि यदि किसी सरकारी उच्चाधिकारी या मन्त्री से भेंट करनी हो तो बाकायदा फार्मल सूट पहनकर आना पड़ता है।

एक ओर तो हम बढ़कर अपने राष्ट्रवाद और स्वदेशी भावना का जिक्र करते हैं लेकिन दूसरी ओर जहां तक हमारे लिबास रहन-सहन और भाषा का प्रश्न है हम आजाद होते हुए भी सांस्कृतिक उपनिवेशवाद की जंजीरों को अपने गले में जकड़ते जा रहे हैं। हम स्वेच्छा से यह सारा काम करते हैं—और अधिक से अधिक पाश्चात्य तौर-तरीकों को अपनाने में गर्व महसूस करते हैं।

अंग्रेजी का बोलबाला

बहुत गर्व से हमारे उच्च वर्ग के लोग यह कहते हैं कि उनके बच्चों को हिन्दी नहीं आती। बच्चो का हिन्दी या संस्कृत में फेल हो जाना इन्हें बुरा नहीं लगता। आज भी हालत यह है कि जो लड़का या लड़की हिन्दी या संस्कृत में अच्छे अंक प्राप्त करें फैशनेबुल कालेज में उनका मजाक उड़ाया जाता है। पिछले दिनों एक अंग्रेजी मैगजीन में एक लेख पढ़ा कि कालेजों की फैशनेबुल लड़कियां अपनी सहपाठिनों को 'बहन जी' कहती हैं, यह वह लड़कियां हैं जो आपस में हिन्दी में बातचीत करती हैं।

मुझे उस समय बेहद आश्चर्य हुआ जब मेरी पड़ोस की लड़की ने एक अच्छे सुन्दर नौजवान से इसलिए शादी से इन्कार कर दिया क्योंकि जब उनकी पहली मुलाकात हुई तो लड़के ने उससे हिन्दुस्तानी में बातचीत की। लड़की का कहना था कि उसे न तो लड़के के खानदान से सरोकार है और न ही उसकी शराफत से कम बल्कि अंग्रेजी माडर्न ढंग से नहीं बोलता। इसी लड़की की छोटी बहन ने नाक-भौं सिकोड़ कर मेरी बेटियों से कहा था कि तुम्हारी मां न जाने इतनी पढ़ी लिखी होकर भी क्यों पंजाबी, हिन्दी या उर्दू ही बोलती है। मैं तुम्हारे घर नहीं आऊंगी क्योंकि यह मुझे कहती है कि मैं अपनी भाषा क्यों नहीं बोलती ?

कसूर उस बेचारी बच्ची का भी नहीं है। उसके माता-पिता आपस में अंग्रेजी बोलते हैं, बच्चों के साथ अंग्रेजी में बातचीत करते हैं, बच्चे स्कूल में अंग्रेजी बोलते है, फिर उन्हें भी घर में केवल नौकर के साथ ही हिन्दी बोलने का मौका मिलता है। यह सब इसलिए होता है क्योंकि हम सब शिकार हैं उस सांस्कृतिक उपनिवेशवाद के जिसने हमारे मस्तिष्कों में यह बात बैठा दी है कि अंग्रेजी भाषा ऊंची चीज है, विदेशों में जाकर पढ़ना बहुत बड़ी बात है।

शोक सभा

आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक स्व. श्री त्रिलोक चन्द जी शास्त्री, जिन का निधन २९-१२-८१ को जालन्धर में हुआ, को श्रद्धांजलि समर्पित करने के लिए अन्तिम शोक सभा उनके सुपुत्र डा ऋषि कुमार आर्य के निवास न्यू कालोनी टाडा रोड, जालन्धर में हुई १-१-१९८२ को दोपहर २ बजे हुई।

जालन्धर की समस्त आर्य समाजों के प्रतिनिधि एवं पंजाब की अनेक आर्य समाजों के प्रतिनिधि विशेषतः अमृतसर और कादियां के समाज सदस्य भारी संख्या में सम्मिलित हुए। आर्य समाज विक्रमपुरा जालन्धर तथा आर्य समाज माडल टाऊन जालन्धर के पुरोहितो के साथ महोपदेशक प. मुंशीराम जी ने दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए यज्ञ करवाया, यज्ञ के उपरान्त वैद्य विद्या सागर, मन्त्री आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा पंजाब, प्रिंसिपल डा. विश्वामित्र जी, प्रधान आर्य समाज लोहगढ़ अमृतसर, प. सत्यदेव जी विद्यालंकार, डा. वेदीराम जी, हिन्द समाचार के मुख्य सम्पादक श्री रमेश जी, प्रिंसिपल श्री यशपाल भाटिया, डा. केदार नाथ जी मल्हन, कादियां, सनातन धर्म सभा के नेता श्री जगन्नाथ जी मिश्र, मौलवी श्री प्रभाकर जी कादियां, आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यालयाध्यक्ष श्री ओम प्रकाश जी आर्य, हरियाणा उपसभा के वेद प्रचार अधिष्ठाता श्री वेदसुमन जी ने श्री शास्त्री श्रद्धांजलि समर्पित की।

वक्ताओं ने उनकी विद्वता की श्लाघा करते हुए कहा कि शास्त्री जी ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त थे तथा संस्कृत भाषा में उनकी बहुत निष्ठा थी। वह सदैव वैदिक धर्म के प्रचार में लगे रहते थे। उनके निधन से जो रिक्ति उत्पन्न हुई है, उसकी पूर्ति असम्भव प्राय दिखाई देती है। उस ज्योति ने असंख्य लोगों का मार्ग दर्शन किया जो आर्य समाज के निष्ठावान कार्यकर्ता बने।

(वैद्य विद्या सागर)
मंत्री

शास्त्री जी का दुःखद निधन

नई दिल्ली—आर्य समाज प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा के महोपदेशक पं. श्री त्रिलोक चन्द शास्त्री का निधन आर्य जगत के लिए अत्याधिक दुःखद है।

उन्होंने महोपदेशक के रूप में प्रादेशिक सभा की ५० वर्ष से भी अधिक समय तक सेवा की। भारत का कोई भी ऐसा कोना और भारत की कोई भी ऐसी आर्य समाज न होगी, जिसमें त्रिलोक चन्द्र शास्त्री ने वेद प्रचार का कार्य न किया हो आर्य समाज उनकी सेवाओं को कभी भी भूल नहीं सकता और उनकी जो जगह रिक्त हुई है, वह पूरी होनी कठिन है।

भवदीय,
(राम नाथ सहगल)
सभा मन्त्री

फिरोजपुरशहर

आर्य समाज रानी तालाब (फिरोजपुर शहर) मे १-१-८२ के साप्ताहिक सत्संग में स्व. श्री त्रिलोक चन्द शास्त्री के देहान्त का समाचार सुन कर सर्वसम्मति से शोक प्रस्ताव पास किया गया।

पंजाब में आर्य समाज का यह भव्य रूप होना चाहिए

६ दिसम्बर की आर्य मर्यादा में सम्पादकीय पढ़ा । यह प्रसन्नता की बात है, कि श्री वीरेन्द्र जी, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, पंजाब आर्य समाज की हर तरह की प्रगति को सामने रखकर सम्पादकीय के रूप में अपने विचार देते रहते हैं ।

यह एक अच्छा प्रयास रहेगा, कि आर्य समाजो के वार्षिकोत्सवों की सफलता और आकर्षण के लिए समीपवर्ती प्रान्तों के विद्वानों को सभी के माध्यम से बुलाया जाएगा । आपस के सहयोग और संगठन की दृष्टि से यह विचार अच्छा ही रहेगा । क्योंकि—

आर्य समाजो के वार्षिकोत्सव जहां जन सम्पर्क के सशक्त साधन हैं, वहां वर्ष भर की गतिविधियो को सामने लाने का भी एक अच्छा अवसर होते हैं । अतः अपने विचारों के प्रचार के लिए वार्षिक उत्सव एक प्रबल पग हैं । आर्य समाज के सदस्यों की सुदृढता, पारस्परिक सन्निकटता, सिद्धान्त परिचय के लिए साप्ताहिक सत्संग आधार स्तम्भ होते हैं । अत: उत्सवों की तरह ही योजनाबद्ध ढंग से इन का आयोजन होना चाहिए । वार्षिक उत्सव को तरह कभी-कभार इन में बाहर के विद्वानों को आमन्त्रित करके विशेष विषयों पर व्याख्यान कराने चाहिएं ।

यदा-कदा योग, स्वास्थ्य, स्वाध्याय, अध्यात्म, समस्या-समाधान और प्रश्न-उत्तर की दृष्टि से दो चार घण्टे के या एक सप्ताह के शिविर आयोजित होने चाहियें । इस से जहां विशेष रूचि वालों की तृप्ति होगी, वहां कर्मठ कार्यकर्ता भी तैयार किए जा सकते हैं । आर्य प्रतिनिधि सभा को चाहिए, कि उसके कार्यालय मे ऐसी जानकारी सगृहीत हो, कि पजाब के किस-किस स्थान पर कौन-कौन शिक्षक, प्राध्यापक या विविध कार्यकर्ता किस-किस योग्यता के हैं । वे प्रचार या संगठन में किस ढंग का सहयोग दे सकते हैं । इन सब के यथोपेक्षित सहयोग को प्राप्त करने का यथा सम्भव प्रयास करना चाहिए । सभा से सम्बद्ध आर्य समाजों के उत्सव पर सभा की ओर से एक व्यक्ति वहां इस दृष्टि से अवश्य जाए जो वहां स्थानीय आर्य समाज के प्रेमियों की एक बैठक आयोजित करने का विशेष प्रयास करे ।

इस से जहां स्थानीय कार्यकर्ताओं का परिचय प्राप्त होगा । वहां पता चल सकेगा, कि कौन किस योग्यता का कहां है ? और क्या-क्या सहयोग किस से प्राप्त हो सकता है ? यह सारा परिचय संग्रह करके सभा कार्यालय मे रहना चाहिए । प्रान्तीय संगठन, पारस्परिक सहयोग और आर्य समाज को विस्तृत बनाने के लिए यह योजना अनेक प्रकार से उपयोगी हो सकती है ।

इसी प्रकार आर्य मर्यादा में जहां विविध विषयो पर लेख प्रकाशित हो । वहां प्रान्त में होने वाले आर्य समाज के उत्सवों का कुछ विस्तृत विवरण प्रकाशित होना चाहिए । इस से जहां दूसरी आर्य समाजो को उसी प्रकार का कार्यक्रम करने की प्रेरणा मिलेगी, वहां आर्य मर्यादा के पाठकों के सामने कार्यकर्ताओं का परिचय भी आएगा । अपनी-अपनी प्रिय आर्य समाज का परिचय देख कर आर्य समाजों को आर्य मर्यादा अधिक से अधिक लेने की प्रेरणा मिलेगी ।

आशा है आर्य प्रतिनिधि के अधिकारी और आर्य समाजों के कार्यकर्ता इस ओर विशेष ध्यान देंगे ।

—भद्रसेन
साधु आश्रम, होशियारपुर

किसका उपकार

—कवि कस्तूर चन्द 'घनसार' कवि कुटीर पीपाड़ शहर (राज.)

अशुद्धि में शुद्धि आज, लाने वाला कौन मुख्य,
अनीति में निति सद्, किसने बताई है ।
यज्ञका बिगाड़ा रूप, सवेद सिखाया कौन ?
मन्त्र विधि युत रीति, कौन ? ये सिखाई है !!
गुरु मन्त्र गायत्री पे, लगा था प्रबन्ध पूरा,
तुम तोड़ गति सत्य, कौन, दरशाई हैं ।
गुरुडम चला जोर, शोर, साथ गुरु बने,
ईश्वर की ओर कौन ? भक्ति को मनाई है ।।
विद्या न पढ़ाते विप्र, बैठे मुख्य वेद बन,
शूद्रों को हटाते चले, मानवता मिटाई है ।
मानव का मान आज, कौन, ये बताया आके,
वेद-विद्या रीति सत्य, कौन ? ये सखाई है ।
महिलाएं नरक दताई-पोंगा-पोप-पन्थी ।
मानव को मान दे के, दासता हटाई है ।।
निशि अधियारी छाई, कोने-कोने भारत के,
आये-ज्योति ले के, ऋषि निशी को तमाई है ।।
देश था गुलाम जो कि, विश्व का गुरु था बड़ा ।
दासता मिटाने हेतु, नाद को बजाई थी,
वीरों को सचेत किया, दिया सत्य ज्ञान ऋषी,
आजादी को ज्योति देव, देश में जगाई थी ।
भूले हुए गौरव-गरिमा, देश वासी सब,
एक ही गुलामी रही, गैरों की बड़ाई थी,
'घनसार' भूल गए, विद्या संस्कृति वेद,
दयानन्द आ के, डूबी नैया को बचाई थी ।
ईश्वरादेश, सर्व मानुष स्वरूप मान,
भेदवादी, अन्यवादी, भ्रान्ति को दिखाई है
वेद ज्ञान बिना भ्रम-जाल को रचाया पोप,
बीते युग कई मन-मानी दरशाई है ।।
ऋषियों की तपो-भूमि, आर्यावर्त प्यारा देश,
अनार्य्य था के मन्द, भावना फैलाई है ।
'घनसार' बोध बिना, आरे वही रूप लोग,
सर्वोत्कृष्ट वेद रीति, बिसराई है ।

ऋषि मेला

हर वर्ष की भांति महर्षि दयानन्द की जन्म टंकारा में २०-२१-२२ फरवरी १९८२ को मनाने की तैयारियां शुरू कर दी हैं । इस अवसर पर आर्य जगत के सुप्रसिद्ध महात्मा सन्यासी विद्वान टंकारा पधारने की प्रार्थना कर रहे हैं । आर्य परिवारों को टंकारा ले जाने की व्यवस्था भी की जा रही है । इस के लिए स्पेशल बसें १९-२-८२ को आर्य समाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली और से चलेगी और १५-३-८२ को वापस दिल्ली आएगी । प्रयास है कि यात्री टंकारा के साथ-साथ दक्षिण भारत की यात्रा भी कर सके जिसमें बम्बई, बंगलौर, मैसूर, ऊटी, त्रिवेन्द्रम, कन्याकुमारी, रामेश्वरम मदुराई, तिरुपति हैदराबाद के ऐतिहासिक स्थानों के साथ आगरा की ताजमहल भी देख सकेंगे ।

इस मेले को सफल बनाने के लिए अभी से तैयारियां शुरू कर दें ।

१. टंकारा ट्रस्ट के लिए दान भिजवाएं ।
२. टंकारा में ऋषि मेले पर लगने वाले ऋषि लंगर के लिए गेहूं की बोरियां-चावल और घी के टीन दें । यह सामान टंकारा जाने वाली बसों पर भेजेंगे ।
३. टंकारा चलने के लिए अभी से तैयारियां शुरू कर दें । चलने वाले ऋषि भक्त हमसे सम्पर्क स्थापित करें ।

—रामनाथ सहगल
मन्त्री टंकारा ट्रस्ट,—उप कार्यालय आर्य समाज मन्दिर मार्ग नई दिल्ली,

महात्मा हंसराज जन्म दिवस समारोह 18 अप्रैल को

समस्त आर्य जनता को सूचित किया जाता है कि प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री, डी० ए० वी आन्दोलन के सूत्रधार का जन्म दिवस समारोह रविवार १८-४-८२ को आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि सभा, डी० ए० वी० सस्थाओं हंसराज माडल स्कूलों-कालेजों तथा समस्त आर्य जगत् की ओर से डी० ए० वी० स्कूल, चित्र गुप्ता रोड, पहाड़ गज-नई दिल्ली के प्रांगण में प्रातः ९ से १२ बजे तक मनाया जाएगा ।

चुनाव स्थगित

पंजीकृत स्नातकों के प्रतिनिधियों के चुनाव के बारे में कार्यक्रम दैनिक हिन्दुस्तान दिनांक २१-१२-८१ में छपा था । किन्हीं कारणों से अग्रिम कार्यवाही स्थगित कर दी गई है ।

—

मेरी दिल्ली की आर्य समाजों, स्त्री आर्य समाजों तथा अन्य आर्य संस्थाओं से प्रार्थना है कि यह तिथि अभी से अंकित कर लें तथा रविवारीय सत्संग स्थगित रखें ।

धर्म रक्षा महाभियान की व्यापक उपलब्धियां

7 ईसाई परिवार हिन्दू बने

हुबली—हुबली आर्य समाज में ६ दिसम्बर को ईसाईयों के ७ परिवारों ने सामूहिक रूप से वैदिक धर्म ग्रहण किया। ये ईसाई मल्लापुर निवासी हैं। अब इन्होंने हिन्दू धर्म अंगीकार करके हिन्दू नाम रखे हैं। शुद्धि संस्कार का श्रेय हुबली आर्य समाज के प्रधान श्री हबीब तथा मन्त्री श्री ए० मिरजाकर को है।

कनकपुरा—२५ अक्तूबर को कनकपुरा (कर्नाटक) में हरिजन स्नेह सम्मेलन आयोजित किया गया इस अवसर पर हरिजनों द्वारा यज्ञ किया गया और सहभोज में सवर्ण तथा हरिजनों ने मिलकर एक पंक्ति में बैठकर भोजन किया। इस सम्मेलन का आयोजन कनकपुरा आर्य समाज के प्रधान श्री धर्मराज आर्य ने किया।

मध्य प्रदेश में शुद्धि आन्दोलन

भोपाल—मध्य भारतीय आर्य प्रतिनिधि सभा के कोषाध्यक्ष श्री वेदमुनि (त्रिवेणी सहाय जी वानप्रस्थ) ने मध्य प्रदेश में शुद्धि अभियान और वैदिक धर्म प्रचार विशेष रूप से आरम्भ कर दिया है। इन्होंने अक्तूबर, नवम्बर ८१ में भोपाल के कई ईसाई और मुसलमानों की शुद्धि कर वैदिक धर्म की दीक्षा दी और मध्य प्रदेश के सरगुजा जिले में भी कई ईसाईयों को शुद्धि कर वैदिक धर्म की दीक्षा दी।

दिनांक ३०-११-८१ को आर्य समाज बैकुण्ठपुर जिला सरगुजा के प्रधान श्री बाबूलाल जी गुप्त और मन्त्री डा० शिवबालक शर्मा आर्य की प्रेरणा और उपस्थिति में ग्राम भाणी के ईसाई श्री धर्मपाल उमराव, उनकी पत्नी मनाबो पुत्र रायसिंह, रञ्जन, रामगोपाल, पुत्री कु० सुपनबाई की शुद्धि पुरोहित श्री त्रिवेणी सहाय वानप्रस्थ के द्वारा की गई।

दो मुसलमान हिन्दू धर्म में

नई दिल्ली—आर्य समाज दीवान हाल में गत दिवस मुस्लिम परिवार के दो सगे भाईयों ने अपनी इच्छा से हिन्दू धर्म अपनाया। इनके नाम इकबाल हुसैन २६ व सलीम अहमद (१९) वर्ष है। वे दोनों गांव बवानी दिल्ली के रहने वाले हैं। अब इनका नाम बाबूलाल व श्यामलाल रखा गया है।

इस अवसर पर आर्य समाज दीवान हाल के मन्त्री श्री गुप्त ने बताया कि आगामी १२, १३, १४ मार्च को होने वाले उत्सव पर मुख्य आकर्षण हरिजन स्नेह सम्मेलन आदि कार्यक्रमों का आयोजन होगा।

ईसाईयों ने हिन्दू धर्म ग्रहण किया

नई दिल्ली—आर्य समाज, विश्व-हिन्दू परिषद एवं सनातन धर्म द्वारा संयुक्त रूप से यहां पंचकुइया मार्ग स्थित उदासीन आश्रम में आयोजित एक समारोह में १५ ईसाईयों ने स्वेच्छापूर्वक हिन्दू धर्म ग्रहण कर लिया। इस अवसर पर स्वामी राघवानन्द जी व दिल्ली के धार्मिक तथा सामाजिक संगठनों के गण्यमान्य प्रतिनिधि शामिल हुए।

नव दीक्षित हिन्दुओं को यज्ञोपवीत तथा धार्मिक साहित्य दिया गया। उन्होंने उपस्थित लोगों में प्रसाद वितरण किया।

—

उर्दू को द्वितीय राज-भाषा बनाने के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन होगा : वेदभिक्षु

लखनऊ, अमीनाबाद पार्क में आयोजित हिन्दू सम्मेलन के अध्यक्ष पद से महात्मा वेदभिक्षु ने घोषणा की कि यदि उत्तर प्रदेश में उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाया गया तो प्रदेश की देशभक्त जनता साम्प्रदायिकता के आगे शासन द्वारा घुटने टेकने वाले इस आदेश को कभी स्वीकार नहीं करेगी।

सम्मेलन में उपस्थित जनता को सम्बोधित करते हुए हिन्दू नेता ने कहा कि उर्दू ने पाकिस्तान को जन्म दिया, वह साम्प्रदायिकता की जननी है। इसने पाकिस्तान के टुकड़े करवा दिए, इसलिए प्रदेश की जनता इस आदेश के विरुद्ध प्रबल आंदोलन करेगी।

श्री देवनारायण एडवोकेट ने विचारों का समर्थन करते हुए घोषणा की कि हम अपने पूरे बल से उर्दू को द्वितीय राजभाषा बनाने का विरोध करेंगे। इसी अवसर पर श्री अवध किशोर खड़े, प्रधान, उत्तर प्रदेश हिन्दू महासभा व श्री राधेश्याम तिवारी ने सबके संगठित होने और साम्प्रदायिक तत्त्वों के विरुद्ध आंदोलन करने की आवश्यकता पर बल दिया।

लखनऊ स्टेशन पर प्रातः महात्मा वेदभिक्षु जी का जयकारों के पुष्प मालाओं से स्वागत किया गया। सम्मेलन में लखनऊ के एक वकील श्री आफताब हुसैन ने भाषणों से प्रभावित होकर महात्मा वेदभिक्षु से हिन्दू धर्म की दीक्षा देने की प्रार्थना की। आप को जनसमूह के सम्मुख हिन्दू धर्म में दीक्षित किया गया। उनका नया नाम सूरज प्रकाश रखा गया।

—

गुरु विरजानन्द महाविद्यालय की शोकांजली

अत्यन्त शोक जनक तथा हृदय को स्तब्ध कर देने वाला समाचार कि पूज्य पण्डित श्री त्रिलोक चन्द जी शास्त्री जी का निधन हो गया के मिलने पर सहसा विद्यालय का सारा वातावरण शोकपूर्ण हो गया।

तत्काल एक शोक सभा का आयोजन कर उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की गई तथा आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द के मिशन के लिए अन्तिम समय तक अपना जीवन होम करने वाली दिवंगत विभूति की आत्मा की शान्ति के लिए तथा उनके परिवार सम्बन्धियों तथा ईस्ट मित्रों को इस असह्य दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करने के लिए प्रभु से २ मिनट का मौन रख कर प्रार्थना की गयी।

हम श्री गुरु विरजानन्द स्मारक तथा गुरुकुल करतारपुर की ओर से उस पवित्र विभूति के प्रति हार्दिक शोक प्रकट करते हैं।

गुरुकुल महाविद्यालय सिराथू प्रयाग का 24वां वार्षिकोत्सव सम्पन्न

सिराथू (इलाहाबाद) प्रतिवर्ष की भान्ति इस वर्ष भी गुरुकुल का वार्षिकोत्सव सोल्लास मनाया गया जिसमें सर्वश्री विश्वमित्र मेधावी (दिल्ली) ब्र० प्रशस्यमित्र शास्त्री (रायबरेली) श्री डा० विजयमित्र शास्त्री (वाराणसी) डा० ब्रह्ममित्र अवस्थी (प्रयाग) श्री देवेन्द्र तूफान भजनोपदेशक (गाजियाबाद) श्री पुन्नूलाल आर्य (प्रयाग) आदि अनेकों सुप्रसिद्ध विद्वान् आर्य भजनोपदेशक शिक्षाधिकारी तथा काशी के विद्वज्जन भी पधार कर सभा को अलंकृत किए थे।

इसी अवसर पर गुरुकुलीय बच्चों द्वारा धनुर्विद्या, शारीरिक प्रदर्शन यौगिक आसन एवं अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए जो बड़े ही आकर्षक थे। अन्त में आचार्य श्री रमामित्र शास्त्री ने आए हुए अतिथियों को धन्यवाद दिया।

आर्य समाज फतेह आबाद द्वारा ग्राम स्वास्थ्य शिविर

अमृतसर—आर्य समाज फतेह आबाद जिला अमृतसर की ओर से ई० सन् १९८२ को 'ग्राम स्वास्थ्य वर्ष' के रूप में मनाने का निर्णय किया गया है। इस वर्ष में इस क्षेत्र के बच्चों को पोलियो, खांसी, चेचक, टैटनेस इत्यादि रोगों से बचाने के लिए आर्य समाज की ओर से मुफ्त टीके लगवाने के लिए कम से कम बारह कैंप लगाए जाएंगे।

इसी शृंखला का पहला कैंप ३ जनवरी, रविवार को आर्य समाज मंदिर के प्रांगण में आयोजित किया गया। भारी संख्या में लोगों ने इस कैंप से लाभ उठाया। कैंप की सेवा के लिए श्री सतीश कुमार कोहाड़ (बी० ए० एम० एस०) ने निःशुल्क कार्य किया।

आर्य पुरोहित लुटा

नई दिल्ली—शक्तिनगर स्थित आर्य समाज मन्दिर के पुरोहित को गत रात्रि कुछ लुटेरों ने पिस्तौल दिखाकर लूट लिया।

शोक समाचार

अत्यन्त खेद से आपको सूचित किया जाता है कि आर्य समाज तथा डी० ए० वी० मिडल स्कूल के प्रधान श्री कुन्दनलाल जी की धर्म पत्नी अपनी सांसारिक यात्रा पूर्ण करके मंगलवार २४-११-८१ को स्वर्ग सिधार गई है।

प्रभु से प्रार्थना है कि दिवंगत आत्मा की सद्गति, परिजनों, मित्रों एवं प्रशंसकों को इस महान् वियोग को धैर्यपूर्वक सहन करने की क्षमता प्रदान करे।

जिला आर्य सभा भटिण्डा का वार्षिक चुनाव

जिला आर्य सभा भटिण्डा का चुनाव सर्वसम्मति से नीचे लिखे अनुसार हुआ—

प्रधान—श्री वेद प्रकाश जी मानसा मण्डी, उपप्रधान—श्री नजीरचन्द जी रामपुरा फूल, मन्त्री—श्री ओमप्रकाश जी आर्य [illegible], उपमन्त्री—श्रीमती [illegible] जी शास्त्रिणी, कोषाध्यक्ष—श्री [illegible] जी बुढलाडा मण्डी।

—

परोपकारिणी यज्ञ समिति दिल्ली का वार्षिक अधिवेशन

परोपकारिणी यज्ञ समिति दिल्ली का वार्षिक अधिवेशन माननीय श्री पं. देवव्रत धर्मेन्दु जी "आर्योपदेशक" प्रधान आर्य युवक परिषद दिल्ली (पंजीकृत) की अध्यक्षता में रविवार ३१ जनवरी १९८२ को अपराह्न २ बजे आर्य बाल गृह पटौदी हाउस दरियागंज नई दिल्ली में सम्पन्न होगा आप समिति के माननीय सदस्य एवं शुभचिन्तक हैं, आपकी उपस्थिति सादर प्रार्थनीय है। कृपया अवश्य पधारें।

67३ श्री पुस्तकाध्यक्ष जी
गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय
हरिद्वार (सहारनपुर)

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर का उत्सव सम्पन्न

आर्य समाज अड्डा होशियारपुर श्रद्धानन्द बाजार जालन्धर का ९७वां वार्षिक उत्सव गत वर्षों की भांति इस वर्ष भी बड़ी धूमधाम से सम्पन्न हुआ। वेद कथा श्री प० रामकिशोर जी वेद अधिष्ठाता दिल्ली सभा करते रहे। उत्सव में २५, २६, २७ दिसम्बर को आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के कार्यालयाध्यक्ष श्री प० ओ३म् प्रकाश जी आर्य, श्री प० निरञ्जनदेव जी इतिहास केसरी, श्री ... जी ..., श्री प० विजय कुमार जी शास्त्री, श्री श्यामसिंह हितकर भजन मण्डली तथा श्री हजारीलाल जी के उपदेश होते रहे। २७-१२-८१ को यज्ञ की पूर्णाहुति और ऋषि लंगर हुआ। बच्चों की भाषण प्रतियोगिता कन्या महाविद्यालय की प्रिंसिपल सन्तोषपुरी जी की अध्यक्षता में हुई जो बड़ी प्रभावशाली रही और बच्चों को पुरस्कार श्री प० ओ३म् प्रकाश जी सभा कार्यालयाध्यक्ष ... की सफलता का श्रेय सेठ ...पाल प्रधान आर्य समाज को जाता है जिनके परिश्रम से यह उत्सव सफल हुआ। ... किया गया।

अलीगढ़ विश्वविद्यालय का साम्प्रदायिक स्वरूप समाप्त किया जाए

नई दिल्ली, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय के अल्पसंख्यक ... मुस्लिम रखने की कठोर ... अखिल भारतीय ... की कार्यकारणी ने ... विश्वविद्यालय का ... में विघातक शक्तियों को सहारा देने का कार्य करेगा। समिति के अध्यक्ष महात्मा वेदभिक्षु ने अपने वक्तव्य में कहा है कि प्रारम्भ काल से ही अलीगढ़ विश्वविद्यालय ने भारत विभाजन की भावना को बढ़ावा दिया है और यही विश्वविद्यालय देश के बटवारे का आधार भी बना। इसलिए एक धर्मनिरपेक्ष शासन द्वारा साम्प्रदायिक वातावरण को जन्म देने वाली संस्था के स्वरूप को कायम रखना आश्चर्य ही नहीं अपितु शासन की आधारभूत नीतियों के विरुद्ध भी है। आपने घोषणा की कि हम सारे देश में सरकार के इस निर्णय के विरुद्ध आन्दोलन करेंगे और साम्प्रदायिकता को जड़ से उखाड़ फेंकने के लिए हर सम्भव पग उठाएंगे। सरकार को चेतावनी देते हुए प्रस्ताव में कहा गया है कि शासन अपनी दुरंगी नीतियों को छोड़े और देश के सभी नागरिकों को समान अधिकार देकर समान हित पर चिन्तन करे। यही आज की मांग है।

—

स्वर्ण अवसर से लाभ उठाएं

आर्य युवक परिषद् (पंजी०) नई दिल्ली का सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी स्मृति ग्रन्थ ३०० पृष्ठों का बढ़िया सफेद कागज पर आकर्षक रूप में छप रहा है। इसमें सत्यार्थ प्रकाश सम्बन्धी बहुमूल्य ... के ... बहुत से ... के ... पत्र तथा पासपोर्ट साइज ... भी छप रहे हैं। अब भी जो ... आधे पृष्ठ में अपना संक्षिप्त परिचय छपवाना चाहें वे १०) रुपए और पूरे पृष्ठ में छपवाना चाहें वे २०) रुपए तथा अपने चित्र का ब्लाक बनवाने के लिए ५) रुपए अतिरिक्त तुरन्त परिषद कार्यालय ११५४ कूचा दखनीराय दरियागंज नई दिल्ली २ के पते पर भेज देवें।

नोट—सभी सहायकों, ... लेखकों को ... बिना मूल्य भेंट किया जायेगा।

देवव्रत धर्मेन्दु आर्योपदेशक
प्रधान

—

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

2 9 JAN 1982

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वर्ष 14, अंक 41, 18 माघ सम्वत् 2039, तदनुसार 31 जनवरी 1982, दयानन्दाब्द 156। एक प्रति 35 पैसे (वार्षिक शुल्क 15 रुपए)

गोवंश की रक्षा आर्य समाज के लिए जीवन-मरण का प्रश्न बन गया है: श्री शालवाले की घोषणा

महर्षि दयानन्द जी ने राष्ट्र की आर्थिक समृद्धि और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए गोवंश का महत्व प्रमाणित किया था

विनोबा के गोरक्षण अभियान को देश भर की आर्यसमाजों का पूर्ण सहयोग मिलेगा

नई दिल्ली—सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले ने एक बयान मे कहा है कि इस समय देश के सामने अनेक ऐसी समस्याएं हैं, जो सर्वथा नई नहीं हैं तथा हम उनसे जूझने का प्रयत्न करते रहे हैं। फिर भी समस्याएं नए और पहले से भी अधिक विकराल रूप में उपस्थित हो गई हैं।

गोहत्या बन्द कराने के लिए आगामी ३० जनवरी (गान्धी शहीद दिवस) से १२ फरवरी तक सारे देश में एक सौम्य सत्याग्रह किया जाएगा। इसका नेतृत्व आचार्य विनोबा भावे करेंगे। विनोबा जी गोवंश की हत्या रोकने के लिए कृतसंकल्प हैं। पहले भी उन्होंने इसी बात को लेकर अनशन किया था तथा प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी स्वयं पवनार आश्रम जाकर उन्हें ऐसी पाबन्दी का आश्वासन दिया था और उन्होने अपने अनशन को इस आश्वासन पर छोड़ दिया था। इस बात को भी कई वर्ष बीत गए गोवंश की हत्या पर पाबन्दी आर्य समाज के लिए उतना ही प्रिय है जितना कि विनोबा जी को।

आर्य समाज विनोबा को उनके इस अभियान में पूरी शक्ति के साथ देगा। हमने देश भर में फैली अपनी ५००० से अधिक शाखाओं को इस सौम्य सत्याग्रह में भाग लेने का निर्देश दे दिया है। आपको यह बताने की आवश्यकता नहीं कि महर्षि स्वामी दयानन्द ने लाखों हस्ताक्षरों सहित उस समय की ब्रिटिश सरकार से गोहत्या बन्द करने के लिए अनुरोध किया था। महर्षि पहले ऐसे क्रांति [illegible] थे जिन्होंने गौ के न केवल धार्मिक अपितु आर्थिक पहलू पर भी विस्तार से विचार किया था। उनकी गोकरुणा निधि पुस्तक इस बात का प्रमाण है। उसमें उन्होंने आश्चर्यजनक ढंग से आंकड़े फैलाकर यह प्रमाणित किया था कि राष्ट्र की आर्थिक, समृद्धि कृषि उत्पादन और शारीरिक स्वास्थ्य वृद्धि के लिए गोवंश के असीमित लाभ हैं और सामाजिक कर्त्तव्य है।

संविधान के निर्देशक सिद्धान्तों में [illegible] पाबन्दी और गोरक्षा पर [illegible] हमारी यही मांग है [illegible] श्रीमती इन्दिरा गान्धी [illegible] पाबन्दी लगाने के [illegible] को पूरा करें। जनता पार्टी [illegible] ने एक विधेयक भी तैयार कर लिया था उसे संसद में शीघ्र ही पास किया जाए। यदि इस कार्य को पूरा करने मे इसके राज्यों का विषय होने से कुछ बाधा आती है तो इसके लिए संविधान में भी संशोधन किया जाना चाहिए। इस समय संसद मे सत्तारूढ़ दल का इतना बहुमत है कि वह संविधान में आवश्यक संशोधन आसानी से कर सकती है। गोवंश की रक्षा आर्य समाज के लिए जीवन-मरण का प्रश्न है।

श्री वीरेन्द्र जी द्वारा पंजाब भर की आर्य समाजों को गोरक्षा सत्याग्रह में बढ़-चढ़कर भाग लेने का आह्वान

जालन्धर—आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के अध्यक्ष श्री वीरेन्द्र जी ने राज्य की सभी आर्य समाजों और आर्य शिक्षा संस्थाओं को एक अपील में ३० जनवरी से २२ फरवरी तक चलने वाले गोरक्षा सौम्य सत्याग्रह में बढ़ चढ़कर भाग लेने की अपील की है। इस सत्याग्रह के माध्यम से भारत सरकार से सारे देश में गोरक्षा तथा गोपालन के लिए कहा जाएगा।

श्री वीरेन्द्र ने कहा कि जो मांगें सरकार के आगे रखी गई हैं उनमें कहा गया है कि संपूर्ण गोवंश हत्याबन्दी का केन्द्रीय कानून बने तथा कानून को पूरी तरह क्रियान्वित किया जाए। गाए भैंस दोनों के मांस का निर्यात पूर्णतया बन्द होना चाहिए और गो सदनों की समुचित व्यवस्था हो। समाज और सरकार दोनों मिलकर इसका भार उठाएं। गोरक्षा के लिए दानदाताओं को आय कर में शत-प्रतिशत छूट हो। गो सम्वर्द्धन की नीति सुधरी नस्ल तैयार करने की हो। ताकि इसका खेती जोत के लिए उत्तम बैल बने। एवं बछड़ी उत्तम दुधारू गाय बने। फूड प्लानिंग की तरह चारा प्लानिंग भी हो ताकि चारा और दाना पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध हो सके। गोचर भूमियां सुरक्षित रहें। खली का निर्यात बन्द हो। शुद्ध गो दूध को शुद्ध भैंस दूध के बराबर भाव मिले।

इसके अतिरिक्त गोरक्षा के लिए और भी जो मांगें की जानी चाहिएं वह भी करें। इस सम्बन्ध में मेरा आप से निवेदन है कि प्रत्येक आर्य समाज एक गोरक्षा समिति बनाए और ३० जनवरी को प्रातः हवन यज्ञ करने के पश्चात् ५-५ व्यक्ति दो-दो दिन का उपवास प्रारम्भ करें। उपवास में पानी, नीबू और सोडा ले सकते हैं, तन से उपवास, मन से प्रार्थना और धन के प्रतीक स्वरूप यथा शक्ति दान देकर तन, मन, धन तीनों से इस अभियान में अपना सहयोग देवें, प्रतिदिन जितने व्यक्ति उपवास करें उनके नाम आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब जालन्धर के मुख्य कार्यालय में लिखकर भेज देवें और इस अवसर पर आर्य समाजें दान आदि के रूप में जो धन इकट्ठा करें, वह भी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब को भेज देवें। यह आवश्यक है कि प्रतिदिन प्रातः हवन यज्ञ हुआ करे, और प्रत्येक आर्य समाज मन्दिर में इस उपवास का उचित प्रबन्ध किया जाए ताकि किसी व्यक्ति को किसी प्रकार का कोई कष्ट न हो। महिलाएं भी यदि चाहें तो इस उपवास में सम्मिलित हो सकती हैं।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान लाला रामगोपाल जी शालवाले ने श्री आचार्य विनोबा भावे को यह आश्वासन दिया है कि आर्य समाज इस अभियान में अपना पूरा सहयोग देगा। इसलिए हम सब का यह कर्त्तव्य हो जाता है कि अपनी शिरोमणि सभा के प्रधान के दिए हुए आश्वासन को हम पूरा करें और आर्य समाज [illegible] व संगठन का पूरा प्रदर्शन [illegible]

मोपला विद्रोह में हिन्दु बहाने वाले मुस्लिम मतान्ध स्वतन्त्रता सैनिक के रूप में सम्मानित

धर्म निरपेक्ष सरकार की अंधी नीति से सर्वत्र भारी रोष

मोपला विद्रोह को स्वतन्त्रता सग्राम के रूप में मान्यता देने और विद्रोहियों को स्वतन्त्रता सैनिको को मिलने वाली पेन्शन देने के सरकारी निर्णय को यदि ठीक प्रकार से अभिव्यक्त किया जाए तो यही कहा जा सकता है कि यह सविधान की धर्म निरपेक्षता पर भयंकर कुठाराघात और निर्मम हत्यारो, घरों के आग लगाने वालों और बलात्कार करने वालों को पुरस्कार और उपहार देना है। जिस उन्मादी धार्मिक मनोवृत्ति के कारण पाकिस्तान बना उसी को सरकार पुरस्कृत कर रही है। मोह जनित प्रेम अन्धा होता है। भारतीय राजनीति में वोट के मोह से सरकार अन्धी हो गई है यह निर्भीकता के साथ कहा जा सकता है।

इस अङ्क में अन्यत्र हमने मोपला काण्ड विद्रोह के बारे में विस्तार से एक लेख मे उसके वास्तविक नग्न स्वरूप को प्रकट करने का प्रयास किया है जिससे जनता सत्यासत्य का निर्णय कर सके।

इस सम्बन्ध में यह उल्लेख करना सामयिक होगा कि हैदराबाद मे धार्मिक स्वतन्त्रता के लिए आर्य समाज द्वारा शात सत्याग्रह किया गया था तथा देश के कोने-कोने से गए सत्याग्रहियों के कारण हैदराबाद की जेलें भर गई थी। इन हजारों सत्याग्रहियों के जो ६-६ महीनों से भी अधिक समय तक वहां की जेलों में रहे थे जब स्वतन्त्रता पेन्शन के के लिए प्रार्थना की तो उसको अस्वीकार कर दिया गया इस आधार पर कि यह एक साम्प्रदायिक सत्याग्रह था। यदि कोई व्यक्ति पूजा की स्वतन्त्रता मांगता है और उसे साम्प्रदायिक समझा जाता है, यदि यह सत्य है तब वही सरकार धार्मिक अल्पसंख्यकों को उनको अपने ढंग से पूजा आदि करने में पूर्ण सरक्षण देने की भी बात करती है. उसका यह स्वरूप कितना दोगला प्रतीत होता है। यह धर्म निरपेक्षता है या साम्प्रदायिकता।

मोपला काण्ड को हुए बहुत समय नही हुआ है। केवल ६० वर्ष ही हुए हैं उस समय के लोग अभी भी भारी सख्या में जीवित है। मोपला काण्ड कैसे हुआ, इसका क्या परिणाम निकला, यदि इसे जान लिया जाए तो प्रत्येक तटस्थ व्यक्ति का हृदय सरकारी निर्णय पर क्षोभ और और आक्रोश से भर जाएगा। ६० वर्ष कोई इतना प्राचीन काल नही है कि उस के धुंधलके में वास्तविकता और सच्चाई छिप जाए। मोपला काण्ड इतिहास की बात नही वर्तमान की है, हमारे जीवन-काल की है। आज भी यदि केरल के मलाबार जिले में जिसे नम्बूदरीपाद की कम्युनिस्ट सरकार ने मुसलमानों को प्रसन्न करने के लिए मल्लापुरम् जिला बना दिया है कोई व्यक्ति वहां जाए तो अभी उसे ऐसे सैंकड़ों व्यक्ति मिलेंगे जो उस दगे के उस नरमेध के साक्षी हैं तथा स्वयं भी उसके चिन्ह अपने शरीरों पर लिए हुये है, जिनके अपने आत्मीय और स्वजन उनकी आंखों के सामने टुकड़े-टुकड़े कर दिये गये हिन्दू महिलाओं से सामूहिक बलात्कार किया गया, उन्हें सड़कों पर नंगा घुमाया गया। छोटे-छोटे बच्चों को उछाल कर भालों पर टांग दिया गया। हिन्दू घरों को जलाया गया, उनकी भूमियों पर जबरदस्ती कब्जा कर लिया गया। अल्पसंख्यक हिन्दुओं को मुस्लिम गुण्डों के भीषण अत्याचार सहने पड़े वहां मुसलमानों ने वही सब कुछ किया जो उन्होंने नोआखली में किया था जिसके साक्षी श्री आचार्य कृपलानी जी उए समय कांग्रेस अध्यक्ष थे हैं। मालाबार में ये वीभत्स कृत्य और भी बड़े पैमाने पर किये गये। यह इस्लाम की संस्कृति का जिसका अर्थ वे शान्ति करते हैं एक नमूना है। इन दंगों के समय की उल्लेखनीय बात यह है कि निकटस्थ हिन्दू बहुल प्रदेशों में जहां मुसलमानों की संख्या बहुत कम थी उन्हें जरा सी भी क्षति नहीं हुई।

मल्लापुरम् के मोपला काण्ड के हिन्दू पीड़ितो को जब सरकारी निर्णय की सूचना मिलेगी तो वे यही कहेंगे कि ब्रिटिश विदेशी शासकों ने उस समय हमारी रक्षा की थी, परन्तु अपनी ही स्वदेशी सरकार ने हमारे घावों पर नमक नहीं तेजाब छिड़का है, तेजाब।

केरल के महान् कविस्वर्गीय कुमारन आसन ने जिन पर सारे राष्ट्र को गर्व हैं इस काण्ड को अपनी आंखों से देखा था उन्होंने अपनी कविता में जिसका शीर्षक 'दुरवस्था' रखा था बड़े भाव पूर्ण हो इस मोपला काण्ड को व्यक्त करते हुए लिखा था :—

'एरनाड की पहाड़ियां और घाटियां मुस्लिम हत्यारों द्वारा बहाये गए हिन्दुओं के रक्त से लाल हो गई हैं।

आज तक भी इस महान् कवि के इस अश्रु पूर्ण रूदन का, उनकी इस कारुणिक अभिव्यक्ति का किसी ने खण्डन नहीं किया है। परन्तु राजनीतिज्ञों का ही यह चमत्कार है कि उनके कारण हत्या वीरता में, बलात्कार शौर्य में और आयजनी, अन्धकार विनाश या प्रकाश में बदल गई है। मोपला कांड की सभी बातो को सरकारी निर्णय ने उलट दिया है। ६० वर्ष पूर्व हिन्दुओं की हत्या की गई थी। अब उनकी हत्या की गई थी इस सत्य की हत्या कर दी गई है। राजनीतिज्ञ अपने मुखौटे तो बदलते रहते हैं। उन्होंने मोपला कांड की सच्चाई को छिपाने के लिए उसे भी एक नया मुखौटा दे दिया है।

अभी तक तो यही प्रकाश में आया था कि जो स्वतन्त्रता सेनानी नहीं थे वे जाली प्रमाण पत्र पेश कर स्वतन्त्रता पेन्शन ले रहे हैं। परन्तु यह पहला अवसर है जब सरकार स्वय हत्यारों को स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में उन बहुसंख्यक हिन्दुओं द्वारा प्राप्त करों से पेन्शन देगी जिनके स्वधर्मियों को उन्होंने दिन दहाड़े लूटा था। उनकी हत्याएं की थीं।

केरल के महान् कवि स्वर्गीय कुमारन आसन ने जिन पर सारे राष्ट्र को गर्व है इस कांड को अपनी आंखों से देखा था उन्होंने अपनी कविता में जिसका शीर्षक 'दुरवस्था' रखा था बड़े भाव पूर्ण हो इस मोपला कांड को व्यक्त करते हुए लिखा था :—

"एरनाड की पहाड़ियां और घाटियां मुस्लिम हत्यारों द्वारा बहाये गए हिन्दुओं के रक्त से लाल हो गई हैं।"

आज तक भी इस महान् कवि के इस अश्रु पूर्ण रुदन का, उनकी इस कारुणिक अभिव्यक्ति का किसी ने खण्डन नहीं किया है।

आर्य मिशनरी कैं. चुघ का निधन

जालन्धर। शुद्धि सभा के भू. पू. उपप्रधान एवं स्थानीय स्त्री आर्य समाज, ऋषि कुंज (पक्का बाग) की मन्त्राणी श्रीमती सुशीला भगत के पिता कैप्टन यशपाल चुघ का गत दिनों दिल्ली स्थित उनके निवास पर आकस्मिक निधन हो गया। वे ८२ वर्ष के थे। प्र

कैं. यशपाल चुघ राजेन्द्र नगर दिल्ली की आर्य समाज के सर्वेसर्वा थे और वे आजीवन आर्य समाज की गतिविधियों में सक्रिय भूमिका निभाते रहे। कैं चुघ के सम्बन्ध में उल्लेखनीय बात यह है कि उन्होंने ८० वर्ष की वृद्धावस्था में भी सत्यार्थ प्रकाश से सम्बद्ध 'सत्यार्थ विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण कर एक अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। वे आर्य समाज के मिशनरी थे तथा सेना में भी सेवाकाल के दौरान उन्होंने स्वर्ण-पदक प्राप्त किया था।

संवैधानिक धाराओं का विपरीत प्रवाह

(२ पृष्ठ का शेष)

देश और समाज विभाजन की दिशा की ओर बढ़ रहा है। नागालैण्ड, मिजोरम और मेघालय को ईसाई राज्य समझा जाता है। पृथक् झारखण्ड राज्य की मांग भी इसी ईसाई स्तान की मांग का भाग है खालिस्तान की मांग भी इसी क्रम में नवीनतम और घातक मांग है। अछूतिस्तान की बात भी उठने लगी है। यह सब सेक्युलर कारंवाइयां हैं।

श्री रामचन्द्र राव ने कहाकि संविधान के अनुच्छेद २५ में हिंदू की परिभाषा में जैन, सिख और बौद्ध भी हिन्दू हैं। इसी सन्दर्भ में सिक्खों को पंचककार की बात को भी माना गया है। परन्तु ऐसी स्थिति में सिखों का पृथक धर्म मानकर उन्हें विशेष अधिकार देने में कोई भी औचित्य नहीं है। अल्पसंख्यक आयोग का गठन ही गलत कार्य है उस में सिखों का प्रतिनिधि क्यों है? सरकार की यह नीति ही देश को धार्मिक खेमों में बांट रही है। चाहे कांग्रेस हो, या जनता पार्टी या कोई अन्य दल सभी ने मुस्लिम लीग, अकाली दल, व ईसाई संगठनों से गठबन्धन किया है। ऐसी स्थिति में धर्मनिरपेक्षता की आशा कैसे की जा सकती है। हम सांप्रदायिकता की निंदा करते हैं और वोटों की राजनीति में उसे बढ़ावा देते हैं।

धर्म को व्यक्तिगत विश्वास की बात मान जाता है इस स्थिति में हमारा देश धार्मिक अल्पसंख्यकों का विशाल शरणस्थल है। धर्म का अर्थ पूजा की पृथक विधि लिया जाता है। यदि यही कसौटी है तो आर्यसमाजी, शैव, वैष्णव, राधा स्वामी, कबीर पन्थी, दादू, और असंख्य हिन्दू धार्मिक मतों को मानने वालों की अलग-अलग पूजा विधियां हैं और इस प्रकार से सब अल्पसंख्यक हैं। इससे स्पष्ट है कि अल्पसंख्यक धर्म की वर्तमान परिभाषा सेक्युलरवाद में सहायक नहीं है। इसे बदलना होगा।

आवश्यकता इस बात की है कि धार्मिक अल्पसंख्यकता की मान्यता समाप्त होनी चाहिए। किसी को विशेष अधिकार देना संविधान का ही उल्लंघन है।

हिन्दू धर्म में सपरिवार

केन्द्रीय आर्य समाज, अलीगढ़ में २६ दिसम्बर ८१ को धर्म रक्षा महाभियान के अन्तर्गत श्री लाखनसिंह बाल्मीकि युवक को जो अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय में कार्यरत है तथा जिसे कुछ माह पूर्व कुछ षड्यन्त्रकारी तत्वों ने लोभ-लालच व भय के बल पर सपरिवार मुसलमान बना लिया था को पुनः सपरिवार शुद्धि कर वैदिक हिन्दू धर्म में दीक्षित किया गया। शुद्धि के बाद इनके नाम जो पूर्व में थे क्रमशः लाखनसिंह, ब्रह्मादेवी (धर्मपत्नी, लाखनसिंह) कुमारी आशा (पुत्री) आयु १० वर्ष शशि आयु ५ वर्ष (पुत्र) विनोद आयु ३ वर्ष (पुत्र) रखे गए।

इस अवसर पर उत्तर प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री जितेन्द्र कुमार जसानी, अलीगढ़ जिला उपआर्य प्रतिनिधि पत्र के प्रधान श्री रघुबीर सहाय आर्य. बालमीकि युवा समाज सेवी श्री जगदीश सिंह राना अतरोली आदि प्रमुख आर्य बन्धु उपस्थित थे।

मुस्लिम महिला शुद्ध

केन्द्रीय आर्य समाज, अलीगढ़ में धर्म रक्षा महाभियान के अन्तर्गत ६ दिसम्बर को एक मुस्लिम महिला की शुद्धि कर उसका विवाह वैदिक पद्धति से श्री बाल कृष्ण नामक युवक के साथ किया गया। महिला का परिवर्तित नाम चन्द्रवती रखा गया है।

नईम अब नवीन

मैनपुरी। स्थानीय आर्य समाज में नईम खां नामक मुस्लिम युवक की शुद्धि की गई। तथा नया नाम श्री नवीन भारती रखा गया। संस्कार श्री नरेन्द्र आर्य और अध्यक्षता श्री नारायण चावला ने की। इसके लिए श्री आशुतोष भदौरिया ने विशेष प्रयास किया।

बाराबंकी में 41 मुसलमान हिन्दू बने

बाराबंकी। यहां पर गत २० दिसम्बर को एक ईसाई और ११ मुस्लिम परिवार के ४१ सदस्यो ने हिन्दू धर्म ग्रहण किया।

उत्तर प्रदेश विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष महन्त अवैद्यनाथ ने हिन्दू धर्म की दीक्षा दी।

मूले जाटों की शुद्धि

आर्य समाज प्रधाना मोहाला रोहतक के कर्मठ कार्य कर्ता वैद्य रत्न सिंह कई मास से यमुना की पट्टी में स्थित मूले जाटों के गांव में शुद्धि के कार्य में व्यस्त हैं। उनके प्रयत्न से करनाल और सोनीपत के इलाके में भारी संख्या में मूले जाट शुद्ध होकर वैदिक धर्म में प्रविष्ट हुए हैं। शुद्धि सभा तथा अन्य संस्थाएं भी उनको अच्छा सहयोग दे रही हैं।

हरिजन बालकों द्वारा यज्ञ व यज्ञोपवीत

श्रीनगर। यहां २८ हरिजन बालकों को यज्ञोपवीत दिलाया गया। हरिजन बधु भी यज्ञ में साथ बैठे और यज्ञ किया। यज्ञोपवीत प्राप्त बालकों के हाथ से ब्राह्मणों ने भोजन ग्रहण किया। भगवती जागरण में भी उनके परिवार के लोग उपस्थित रहे। विश्व हिन्दू परिषद की स्थानीय शाखा ने मंदिर बनाने तथा इस कार्यक्रम के लिए आर्थिक सहायता भी दी।

यहां अंतर्जातीय विवाह में ब्राह्मण लड़का व हरिजन लड़की वर वधू बने।

—

शिवा जी की माता द्वारा शुद्धि

बीजापुर के शासक आदिलशाह ने शिवा जी की पल्टन के ताल्लुकेदार बापा जी राव निम्बालकर को अपनी लड़की देकर मुसलमान बना लिया था। जब बापा जी राव पल्टन में वापस पहुचा तो छत्रपति शिवाजी की माता जीजा बाई ने उसे अपने पास बुलाया और सम्पूर्ण मराठा मण्डल की एक सभा की। जीजा बाई ने बापाजी राव को शुद्ध करके पुन बिरादरी में मिला लिया। इतना ही नहीं, लोगों का सन्देह दूर करने के लिए अपनी दोहित्री सुखी बाई का विवाह उनके पुत्र महाबाजी के साथ कर दिया।

जेढे का इतिहास (मराठी)

सौ के बदले हम हजार परिवार करें अपने

—राम मोहन शर्मा 'मोहन'

उठो आर्यो धर्मान्तरण की आंधी आई है।
भारतीय संस्कृति रक्षण की तुम्हें दुहाई है॥

जाति, पंथ, भाषा विभेद को अब तो दूर भगायें।
गिरिवासी, वनवासी, हरिजनसब को हृदय लगाए।
राम-कृष्ण का चरित, आचरण जो न उतारो गे।
तब कैसे भारत माता का रूप संवारो गे।
शबरी, विदुर, निषाद मिलन की बारी आई है॥
उठो आर्यो............!

आर्य संस्कृति दो पाटों के बीच पिस रही है।
ईसाई, इस्लामिक संस्कृति खड़ी हस रही है।
निर्धनता, उस पर बेकारी, जीवन दूभर है।
भूख मिटाने में स्वधर्म से हाथापाई है।
उठो आर्यो...... ...!

हिन्दु-ह्रास को रोकें और उदार बने इतने
सौ के बदले हम हजार परिवार करें अपने
प्रेम नीति से राजनीति के दाव सभी काटें
भारत विश्व-बधु है, जग आचरण-पृष्ठ बांचे।
आओ मिल कर दूर करें जो बड़ी बुराई है॥
उठो आर्यो...... ....!

जो न समय पर जागे, सुख सुविधा में सोते हैं।
है इतिहास गवाही फिर पछताते-रोते हैं।
यही समय है अब स्वधर्म पर सब बलिदान करें।

शमीम से श्यामानन्द

डा० शमीम ने ऋषिकेश से ५ मील दूर स्थित परमार्थ निकेतन आश्रम में स्वामी सदानन्द सरस्वती के द्वारा हिन्दू धर्म की दीक्षा ग्रहण करली। डा० शमीम कवि हैं। आपका नाम डा० श्यामा नन्द रखा गया है। आपने निश्चय किया है कि जोर दबाव या किसी लालच से किए जा रहे धर्म-परिवर्तन का वे डटकर विरोध करेंगे।

—

मेंहान्नसा वैदिक बनी

असरावरी। आर्य समाज सुर्जी (महाराष्ट्र) में मुस्लिम महिला मेंहन्निसा की शुद्धि उसके प्रार्थना-पत्र के अनुसार की गई। उसके पश्चात उसका विवाह श्री सहदेव पांडे के साथ सम्पन्न हुआ। इस समारोह में ग्राम के प्रतिष्ठित लोग बड़ी सख्या में उपस्थित थे।

—

500 ईसाई वैदिक धर्मी बने

भारतीय हिंदू शुद्धि सभा के तत्वावधान में मौसमपुर ग्राम में २९७ स्त्री-पुरुषों ने आर्य समाज चदौसी और मुरादाबाद के अधिकारियों की उपस्थिति में वैदिक धर्म की दीक्षा ली। शुद्धि सभा के मत्री श्री द्वारकानाथ सहगल, श्री दीप चन्द शर्मा, स्वामी सोमा नन्द आर्य और श्री विश्वनाथ खन्ना के नेतृत्व में शुद्धि के बाद जुलूस निकला जो बाद में सभा में परिणत हो गया। सभा की अध्यक्षता आर्य समाज चदौसी के प्रधान श्री राजा राम आर्य ने की। शुद्धि शुद्ध परिवारों के बच्चों की शिक्षा के लिए श्री योगेन्द्र आर्य ने पाठशाला खोलने का भार उठाना स्वीकार किया। उनके अगले दिन जिला रामपुर के बड़ा गांव और मितरपुर गांव में १८० ईसाइयों ने वैदिक धर्म की दीक्षा ली।

—

100 मुसलमान हिन्दू बने

उत्तर प्रदेश के फर्रुखाबाद जिले में गत १३ अक्तूबर को राजेपुर ग्राम मे ५२ मुसलमानों ने हिन्दू धर्म ग्रहण किया। यह पहले ठाकुर परिवार थे और ६ पीढ़ी पहले यह परिवार मुसलमान बना था। सभी ने एक स्वर में कहा हिन्दू धर्म गंगा के समान हैं।

२० सितम्बर को एटा जिले के जलेसर कस्बे के पास सिरगवां मे ४७ नव मुस्लिमों को शुद्धि करके फिर से हिन्दू धर्म ग्रहण कराया गया। यज्ञ हवन के बाद वे ठाकुर जाति में मिला लिए गए।

—

20 मुसलमान हिन्दू बने

उ० प्र० के गोंडा शहर में २० मुसलमानों ने हिन्दू धर्म स्वीकार किया। विश्व हिन्दू परिषद के तत्वाधान में आयोजित इस समारोह मे उन्हें रामायण की एक-एक प्रति भी भेंट की गई।

—

फ्लोरेन्स, दीप्ति बनी

आर्य समाज सैक्टर १६, चण्डीगढ़ के कार्य कर्ताओं के प्रयत्न से फ्लोरेन्स नामक एक ईसाई युवती को वैदिक धर्म में दीक्षित करके दीप्ति नाम रखा गया। बाद में एक ब्राह्मण युवक के साथ विवाह हुआ जिसमें नगर के प्रतिष्ठित लोगों ने सम्मिलित होकर आर्शीवाद दिया।

—

विधर्मी होने से बचा ली गई

आदर्श विवाह एव शुद्धि मन्दिर के संचालक श्री अमरसिंह आर्य ने पुष्पलता नाम की महिला को फुसलाकर मुसलमान बनाने की सूचना मिलने पर तुरन्त कार्यवाही की और उसे विधर्मी होने से बचा लिया।

—

लन्दन की चिट्ठी

आर्य नेता प्रो. सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज की भारत यात्रा सम्बन्धी संस्मरण

लन्दन। आर्य समाज लन्दन के प्रधान प्रो. सुरेन्द्र नाथ भारद्वाज ने कहा कि यदि अस्पृश्यता तथा अन्य जातीय कुरीतियों को समाप्त कर दें तो हिन्दू जाति स्वयं ही विनाश के पथ से हट कर उन्नति की ओर अग्रसर हो जाएंगी। प्रो. भारद्वाज यहां वन्देमातरम भवन में अपने स्वागत के प्रत्युत्तर में अपनी भारत यात्रा के संस्मरण सुना रहे थे। श्री भारद्वाज हाल ही में १० सप्ताह की भारत यात्रा से लौटे हैं, वह दिल्ली पंजाब, गुजरात तथा उत्तर प्रदेश आदि प्रान्तों में गये वहां उनका भव्य स्वागत किया गया। दिल्ली में सार्वदेशिक सभा के प्रधान रामगोपाल शालवाले की अध्यक्षता में दीवान हाल तथा रामलीला मैदान में जो स्वागत हुए वह विशेष रूप से उल्लेखनीय है, इनके अतिरिक्त वसन्त विहार, जंगपुरा, पंजाबी बाग, नया बांस तथा ग्रेटर कैलाश आदि आर्य समाजों ने भी उनके सम्मान में स्वागत समारोह आयोजित किये। श्री भारद्वाज ने अपने वक्तव्य में श्री रामगोपाल शालवाले, श्री ओम्प्रकाश त्यागी, श्री सोमनाथ मरवाह, श्री स्वामी ओमानन्द सरस्वती, श्री सत्यकेतु विद्यालंकार, श्री सूर्यदेव तथा श्री दुर्गादास के प्रति आभार प्रकट करते हुए धन्यवाद दिया जिनके सहयोग से उन्हें दिल्ली के आर्य बन्धुओं का परिचय प्राप्त हो सका। श्री भारद्वाज ने कहा कि यह मेरा सम्मान नहीं। अपितु आर्य समाज लन्दन का सम्मान है।

जालन्धर में श्री वीरेन्द्र की अध्यक्षता में सभी आर्य समाजों तथा संस्थाओं की ओर से श्री भारद्वाज का अभिनन्दन किया। अमृतसर में आर्य केन्द्रीय सभा के तत्वावधान में शक्तिनगर में सभी आर्य समाजो ने मिलकर उनका स्वागत किया। इस विशेष कार्यक्रमों के संयोजन ने श्री राम रखा तथा श्री धर्मपाल ने परिश्रम किया। होशियारपुर पहुंचने पर वहां के प्रतिष्ठित नागरिकों तथा प्रख्यात आर्यजनों ने उनका जो स्वागत किया वह विशेष रूप में उल्लेखनीय है। उनके सभी परिचित बन्धु उन्हें १६ वर्ष बाद देख कर भाव विह्वल हो रहे थे। प्रो. भारद्वाज लन्दन आने से पूर्व डी. ए. वी. कालेज होशियारपुर में १९४८ से १९६२ तक प्राध्यापक पद पर कार्यरत थे। पंजाब में श्री वीरेन्द्र तथा श्री रामचन्द्र जावेद ने जो स्नेह प्रकट किया उसके लिए श्री भारद्वाज ने उन का धन्यवाद किया। कानपुर (उत्तर प्रदेश) में भी श्री भारद्वाज के आगमन का समाचार सुनकर वहां के आर्यजनों ने उनका अभिनन्दन किया।

विराट् हिन्दू सम्मेलन

प्रो. भारद्वाज ने अपने भाषण में १८ अक्तूबर १९८१ को दिल्ली में हुए विराट हिन्दू सम्मेलन का सजीव चित्रण करते हुए बताया कि इण्डिया गेट के निकट बोट क्लब पर लगभग १२ लाख से अधिक उपस्थित हिन्दू जनसमूह की उपस्थिति ने सब को चकित कर दिया। इतने हिन्दुओं का एक स्थान पर एकत्रित होना एक ऐतिहासिक घटना थी। मंच पर सभी मतों के उच्चतम शंकराचार्य, विद्वान तथा नेता व आचार्य आदि विराजमान थे। सभी वक्ताओं ने

आर्य समाज की भूमिका

प्रो० भारद्वाज ने कहा कि इस समय आर्य समाज अपनी परम्परानुसार रचनात्मक कार्य करने में संलग्न है। आर्य समाज के यशस्वी नेता सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले के सुदृढ़ नेतृत्व में आर्य समाज ने सर्वप्रथम मीनाक्षीपुरम तथा 'तेनकाशी' के भाईयों को पुनः हिन्दू धर्म में दीक्षित कर उन्हें गले लगाकर सर्वप्रथम इस घटना से सारे हिन्दू समाज का ध्यान आकृष्ट किया तथा उन्हें अपने धर्म की रक्षा के लिए सचेत किया। प्रो० भारद्वाज ने श्री रामगोपाल शालवाले की सूझ-बूझ कार्य क्षमता, सुदृढ़ नेतृत्व, दृढ़ निश्चय तथा दूरदर्शिता आदि गुणों की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए कहा कि उन्हें आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि उनके आदर्शपूर्ण नेतृत्व

विदेशों में आर्य समाज की गतिविधियां

ऐसे विकट समय में समस्त हिन्दू जाति को संगठित हो कर कार्य करने का आह्वान किया, सभा में उपस्थित हिन्दुओं सूर्य की ओर उठे २४ लाख भुजाओं तथा गगनभेदी प्रतिज्ञा (छुआछूत को समाप्त कर देंगे) का वर्णन करते हुए प्रो० भारद्वाज ने कहा कि ऐसा लग रहा था कि नया युग प्रारम्भ हो गया है। सोई हुई हिन्दू जाति आज अंगड़ाई लेकर जागती हुई प्रतीत हो रही है। समय तथा परिस्थितियों के प्रभाव में हिन्दुओं की पावन शक्ति क्षीण हो गई थी। हमारे भाई हमसे अलग होकर अन्य धर्मों को अपनाने लगे थे। आज ऐसा लग रहा था कि नये युग की प्रथम भूमिका मे अपने पुरातन गौरवमयी इतिहास के स्वर्णिम अध्यायों की पुनरावृत्ति होने वाली है।

में आर्य समाज के इतिहास में कई नये अध्याय जुड़ेंगे, प्रो० भारद्वाज ने आर्य समाज के लिखे जा रहे इतिहास के लिए सभा प्रधान श्री शालवाले को पांच हजार रुपयों का चैक भी भेंट किया तथा आर्य समाज लन्दन की ओर से हर प्रकार की यथोचित सहयोग का भी आश्वासन दिया।

प्रो. भारद्वाज के इस संस्मरणीय भाषण को सभी उपस्थित श्रोताओं ने मन्त्रमुग्ध हो सुना तथा भारत वासियों ने आर्य समाज लन्दन के प्रधान जी का जो स्वागत व अभिनन्दन किया उसकी प्रशंसा की। कार्यवाहक प्रधान श्री धर्मवीरपुरी तथा मन्त्री श्री जगदीश शर्मा ने आर्य समाज लन्दन की ओर से भारत की आर्य व हिन्दू संस्थाओं का हार्दिक धन्यवाद किया।

वैदिक धर्म रक्षार्थ

भारत की आर्य जनता से अपील की जाती है कि ईसाई कई वर्षों से त्रिपुरा राज्य में आदिवासी असहाय निर्धन वनवासियों को वैदिक धर्म से च्युत करते आ रहे हैं. इनकी रक्षार्थ आर्य संस्कृत वेद विद्यालय छात्रावास बाल सदन गोषधालय सहित शिक्षण धार्मिक, उपदेशात्मक शिक्षा इनके भोजन, वस्त्र निवास की सुव्यवस्था के लिए इनका संचालन हो रहा है। धन अभाव के कारण आदिवासी निर्धन असहाय ईसाई बन जाते हैं यहां पर सभी छात्रो को भोजन वस्त्र निवास एवम् सभी पढ़ाई की सुविधाए दी जाती हैं। हिन्दी, संस्कृत, वेद एवं अन्य आधुनिक विषय पढ़ाने की सुव्यवस्था है, अध्यापक-अध्यापिकाएं एवं वेदाचार्य तथा सगीताचार्य भी नियमित रूप से आते हैं। खर्च ज्यादा बढ़ रहा है आय कम है, धनाभाव के कारण अनेक आदिवासी अपनी सन्तानों को ईसाईयों के स्कूल मे भेज देते हैं, अतः

आर्य जनता स सादर प्रार्थना की जाती है कि वैदिक धर्म संस्कृति की रक्षार्थ तन, मन, धन से सहयोग प्रदान करें।

निवेदक
नरेन्द्र कुमार शास्त्री स० व्यवस्थापक
वेद मन्दिर आर्य संस्कृत वेद विद्यालय
कञ्चनपुर रवीन्द्र नगर
(उत्तर त्रिपुरा)

हैदराबाद में हिन्दू सम्मेलन होगा

हैदराबाद—आन्ध्र प्रदेश के हिन्दू कार्यकर्त्ताओं ने अपनी एक बैठक में निश्चय किया है कि अप्रैल १९८२ के प्रथम सप्ताह में हैदराबाद में प्रादेशीय हिन्दू रक्षा सम्मेलन आयोजित किया जाएगा, इस सम्मेलन में लाखों हिन्दू जनता भाग लेगी।

सम्मेलन की अध्यक्षता व उद्घाटन जगद्गुरु शंकराचार्य करेंगे, सम्पूर्ण कार्यक्रम हिन्दू रक्षा समिति द्वारा सभी संस्थाओ के सहयोग से संचालित होगा।

हिन्दुओं को मुसलमान व ईसाई बनाने के षड्यन्त्र को रोकने के लिए सम्मेलन प्रभावपूर्ण पग उठाने का निश्चय करेगा।

आर्य समाज की परीक्षाओं में अफ्रीकी छात्रों को प्रथम पुरस्कार

आर्य समाज नैरोबी निरन्तर प्रगति के पथ पर बढ़ता जा रहा है, १९८१ के इस महत्वपूर्ण वर्ष में इस आर्य समाज ने बहुत सी ऐसी सफलताएं प्राप्त कीं जो इसके इतिहास में पहली बार हुई हैं. कुछ बातों का विवरण यहां दिया जा रहा है।

सितम्बर १९८१ 'संस्कृति प्रवेश' और 'संस्कृति परिचय' दो धार्मिक परीक्षाएं हुई, संस्कृति प्रवेश में स्कूलों से कुल ७३७ छात्र परीक्षा में बैठे, जिनमें २७० अफरीकन थे, कुल ४०५ एशियन व २६७ अफरीकन छात्र उत्तीर्ण हुए, इसमें १०४ छात्रों ने पुरस्कार प्राप्त किये, जिनमें १७ अफरीकन हैं।

संस्कृति परिचय में २ स्कूलों से २६० छात्र परीक्षा में बैठे जिनमें ११५ अफरीकन थे, इस परीक्षा में २०० शिलिंग का पहला पुरस्कार सूचोकी म्वांगी नामक एक अफरीकन छात्र ने ७८ प्रतिशत अंक लेकर प्राप्त किया है, कुल ४० छात्रों को पुरस्कार दिये गये हैं, जिनमें २८ पुरस्कार अफरीकन छात्रों ने प्राप्त किए हैं।

आर्य समाज नैरोबी के इतिहास में पहली बार हिन्दी की परीक्षा हुई। हिन्दी की पहली परीक्षा 'हिन्दी प्रारम्भ' में ३ स्कूलों से कुल ४०५ छात्र बैठे, नवम्बर में ली गई इस परीक्षा में जेरेमिया नामक एक अफरीकन छात्र ने १०० शिलिंग का प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया है, कुल ५३ छात्रों को पुरस्कार दिया गया है, जिनमें ८ अफरीकन हैं।

धार्मिक शिविर

आर्य समाज नैरोबी ने बड़े सत्यार्थ प्रकाश के विज्ञापन निकाले उसके फलस्वरूप लगभग ४०० व्यक्ति जिनमें छात्र, बालक हिन्दू, मुस्लिम और ईसाई सभी कोई सम्मिलित हैं, आर्य समाज नैरोबी के पत्राचार पाठ्यक्रम के सदस्य बने हैं, इनमें से ७५ व्यक्ति नैरोबी से हैं, जिनके लिए १ जनवरी १९८२ को नव वर्ष समारोह के अवसर पर प्रातः ९ बजे से सायं ५ बजे तक एक धार्मिक शिविर लगाया जायेगा, और उसमें उनके व्यक्तिगत प्रश्नों का उत्तर देने के साथ साथ उन्हें आर्य समाज से क्रियात्मक रूप में परिचित कराया जाय में कीनिया के अन्य स्थानों पर भी जहां छात्रों की अच्छी संख्या है इसी प्रकार के धार्मिक शिविर लगाने की योजना है।

—देवव्रत शर्मा, महामन्त्री

क्रूरता पर शूरता की विजय

फौलाद मानव स्वा० स्वतन्त्रानन्द जी महाराज का ९ जनवरी को जन्मदिन मनाया गया है बड़ी धूम-धाम से दयानन्द मठ दीना नगर में। उस नर केसरी ने अपने जीवन में क्रूरता पर शूरता से विजय पाई है। हैदराबाद के निजाम से शूरवीर का युद्ध चल रहा था। निजाम क्रूरता करता जा रहा था परन्तु आर्य वीरों का सेना नायक शूरता से लड़ रहा था। निजाम की क्रूरता को जानते हुए भी सारा संसार चुप साधे हुआ था। यहां तक कि अहिंसा का पुजारी महात्मा गान्धी भी नर हिंसा को देखकर चुप था। आर्यों की आत्मा महात्मा गांधी को कह रही थी। ओ गान्धी-"यह हैदराबाद में क्या हो रहा है कि महशर का आलम बपा हो रहा है"

"हमारी हिमायत न कर प्यारे गांधी मगर इतना कहदे बुरा हो रहा है"

महात्मा गांधी ने यह नहीं कहाकि बुरा हो रहा है परन्तु क्रूरता पर शूरता ने विजय पा ली।

कुछ समय के पश्चात एक सिर फिरे लोहारू के नवाब ने उस "विपदा की घोर घटाओं में मस्त रहने वाले" शेर को ललकारा भावों की भीषण ज्वाला को सीने में कौन दबा सकता? अलबेले दृढ़ संकल्पी को रास्ते से कौन हटा सकता? "हुरेरहा द्वारे विश-विश मिश्राणो कल कलह" यह जानकर वह महापुरुष लोहारू में जा जलूस निकाला। वैदिक नाद से वहां की भूमि का कण-कण जाग उठा। नवाब गिद्दड़ों ने मिल कर शेर की गर्जना सुनकर घबरा गया। कुछ गिद्दड़ों ने मिलकर शेर पर प्राण घातक हमला कर दिया। शेर उन गिदड़ों को मार सकता था परन्तु शेरों की मर्यादा को जानते हुए उन पर हमला नहीं किया और वार सहते रहे और नर केसरी मन में कह रहे थे-दयानन्द की यह पताका रंगीली। सजा ओ३म् के नाम वाली पत्तीली सुनी रंग इसका बिगड़ने न देंगे। इस रक्त से वीर लाखों बनेंगे। अन्त में उस विचित्र सन्यासी के के सामने क्रूरता रूप नवाब ने शूरवीर के आगे अपने घुटने टेक दिए क्योंकि—

घर बार त्याग करके कौपीन धार ली थी।
मन में लगन अनूठी वैदिक प्रचार की थी॥

—आचार्य जगदीश
दयानन्द मठ दीनानगर

स्त्री आर्य समाज दाल बाजार लुधियाना का वार्षिकोत्सव

लुधियाना स्त्री समाज महर्षि दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना का वार्षिकोत्सव २ फरवरी १९८२ से आरम्भ होकर ७ फरवरी तक चलेगा।

जिस में दर्शनाचार्य व आर्य नरेश जी पधार रहे हैं। समाज को अधिकारियों ने एक संयुक्त वक्तव्य में उक्त सूचना दी।

—

वार्षिक अधिवेशन

आर्य युवक परिषद दिल्ली (पंजीकृत) का वार्षिक अधिवेशन रविवार दिनांक ७ फरवरी १९८२ को मध्यान्ह दो बजे से आर्य समाज दरियागंज, २ अनसारी रोड नई दिल्ली-२ में बड़े समारोह पूर्वक सम्पन्न होगा। आप परिषद के सम्माननीय सदस्य है आपकी उपस्थिति प्रार्थनीय है।

—देवव्रत धर्मेन्दु (प्रधान)

शोक प्रस्ताव

श्रीमद्विद्वद्वरेण्याः श्रद्धेयाः पं. त्रिलोक चन्द्राः शास्त्रीवर्याः इहलोकं परित्यज्य दिसम्बरे २९ दिनाङ्के जालन्धरात् स्वर्गं गतवन्तः। एतदर्थं पठानकोटे माडलटाऊन आर्य समाजिनः शोकसन्तप्ताः सन्ति। शोक-सभायां शोक प्रस्तावः क्रियते यत् प. त्रिलोकचन्द्राणां देहावसानेन आर्य समाजस्य प्रभूता हानिः जाताः। पुरातनाः उपदेशकाः शनैः-शनैः समाप्नुवन्ति, नवीनाश्चास्मिन् क्षेत्रे नागच्छन्ति। इव बहु दुःखाय कल्पते।

आर्यजना तत्र भवन्त शास्त्रिण यत् पण्डितवर्या आर्यजगता संस्कृतस्य ज्ञाता वक्ता चासन्। ते सदासदाचार प्रचारपरा अत्रैवजनाद्वतमूर्तया, शान्तमूर्तया, प्रसन्नकृतया, सतविकृतया, सरलस्वभावा, वैदिक सिद्धान्तानामोजस्वी वक्तारश्च आसन्। आजीवन प्रादेशिक आर्यप्रतिनिधि सभायां महोपदेशकत्वेन आर्यसमाजस्य प्रचार प्रसारञ्चाकुर्वन्।

तत्र भवतां निधनेन सर्वे आर्या दुःखिता वयं परमात्मानञ्च।

प्रार्थयामहे यत् हे प्रभो! तेषां पण्डितवर्याणां परिवार सदस्यानामुपरि एवंविधां कृपां करोतु, यता ते पुत्रपौत्रादिका अनेन दुःखसहने समर्था भवन्तु। पुनश्च प्रार्थयामहे पं. त्रिलोकचन्द्रा शास्त्रिणां दिव गतात्मने शान्तिं प्रदीयतामिति।

टंकारा समाचार

१५ जुलाई ग्रीष्मावकाश के बाद उपदेशक महाविद्यालय टंकारा का नया सत्र प्रारम्भ हो गया। १७ जुलाई को उपदेशक महाविद्यालय का १६ वां दिवस आचार्य श्री हरिप्रसाद जी शास्त्री की अध्यक्षता में अत्यन्त उत्साह पूर्वक मनाया गया। अबसे १६ साल पहले १७ जुलाई १९६६ को श्री मोहन चन्द्र जी महाजन ने इस विद्यालय की स्थापना कर इसका भार श्री सत्यदेव विद्यालंकार को सौंपा था। अब से यह संस्था निरन्तर प्रगति की ओर अग्रसर है।

प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी छात्रों ने क्रीडा प्रतियोगिताओं में भाग लिया और आठ नए छात्रों ने उपदेशक विद्यालय मे प्रवेश लिया। पुराने स्नातक विभिन्न समाजों में सफलता पूर्वक कार्य कर रहे हैं।

इस वर्ष स्वतन्त्रता दिवस, श्रावणी-उपाकर्म रक्षाबन्धन तीनों पर्व एक दिन पड़ते थे, इसलिए समारोह मे और भव्यता आ गई। आर्य समाज टंकारा के श्रद्धालु भाई-बहन भी महालय में आकर यज्ञ मे सम्मिलित हुए और सब ने यज्ञोपवीत परिवर्तन किए। गांधी जयन्ती, विजयादशमी और दीपावली तथा ऋषि निर्वाण दिवस भी अत्यन्त उत्साह पूर्वक मनाए गए। इस समय विद्यालय में २० विद्यार्थी हैं। प्रत्येक छात्र पर प्रतिमास २०० रु. खर्च आ रहा है जिसे ट्रस्ट के दानी महानुभावों के सहयोग से विद्यालय वहन कर रहा है।

गोशाला

विद्यालय की गोशाला में ८ गायें और १५बछ बछड़े बछियां हैं जिससे महालय के ब्रह्मचारियों को दूध की बहुत अच्छी सुविधा है। गोशाला के साथ सलग्न भूमि में गायों के लिए चारा उत्पन्न हो जाता है जिससे ब्रह्मचारियों को भी परिश्रम का अभ्यास बना रहता है।

महर्षि जन्म गृह :—महर्षि दयानन्द के जन्म स्थान होने का जो गौरव टंकारा को प्राप्त है, उसमें महर्षि के जन्म गृह का सब से अधिक महत्व है। टंकारा की यात्रा करने वाले सभी महानुभाव उस जन्मगृह का अवश्य दर्शन करते जाते हैं और उसके दर्शन मात्र से ही भाव-विभोर हो जाते हैं। इस जन्मगृह को अपने मूल रूप में सुरक्षित रखने के लिए ट्रस्ट को काफी खर्च करना पड़ता है जिसके लिए सब दानी महानुभावों से सहायता की अपेक्षा रखती है।

पुस्तकालय

विद्यालय के अन्य विशिष्ट अंगों में पुस्तकालय, वाचनालय, विक्रय विभाग तथा दयानन्द विश्व दर्शन चित्रावली का विशेष महत्व है। यहां के पुस्तकालय मे जहां बहुमूल्य और दुर्लभ पुस्तकें हैं वहां वाचनालय में भी प्रतिवर्ष लगभग ४०० रु से अधिक के दैनिक साप्ताहिक तथा मासिक पत्र पत्रिकायें नियमित रूप से आते हैं।

महालय भवन

इस समय महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट के तत्वावधान मे जिस भवन में उपदेशक विद्यालय चल रहा है वह मोरवी नरेश का ७०-७५ साल पुराना महल है। श्री नान जी भाई कालिदास मेहता के सात्विक दान के परिणाम स्वरूप यह महालय ट्रस्ट को प्राप्त हुआ था। अब इसकी दीवारों और छतों में दरारें आ गई हैं, खिड़कियों दरवाजे और लोहे के जालियां भी सड़ गल गए हैं। इस महालय को निवास योग्य बनाये रखने के लिए इसकी मरम्मत अत्यन्त आवश्यक है। अन्यथा यह विशाल प्रासाद भी किसी दिन धराशायी हो जाएगा। इसकी मरम्मत पर इस समय एक लाख रुपए व्यय होने की सम्भावना है। यदि इस समय इस ओर ध्यान नहीं दिया गया तो कुछ समय बाद उस पर लाखों रुपया खर्च करना पड़ सकता है, इसलिए ऋषि भक्त, दानी, आर्य महानुभावों से निवेदन है कि वे अपने सात्विक दान की अमूल्य आहुति बैंक ड्राफ्ट, चैक या मनीआर्डर द्वारा—"टंकारा सहायक समिति" आर्य समाज, मन्दिर मार्ग नई दिल्ली को भिजवाने की कृपा करें।

—रामनाथ सहगल

आर्य समाज दीवान हाल का वार्षिकोत्सव 12 मार्च से

आर्य समाज दीवान हाल के प्रधान श्री सूर्य देव जी ने बताया कि आर्य समाज का ९७ वा वार्षिकोत्सव १२, १३, १४, मार्च ८२ को गान्धी मैदान मे बड़े समारोह पूर्वक मनाया जाएगा। इस अवसर पर आर्य युवक, सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, आर्य सम्मेलन, राष्ट्र रक्षा सम्मेलन तथा सामूहिक यज्ञोपवीत व हरिजन स्नेह सम्मेलन का आयोजन किया गया है।

उक्त कार्यक्रम में समाज के उच्च-कोटि के विद्वान, महात्मा, व राजनीतिक नेता गण पधार रहे हैं।

—

विश्वविद्यालय में बैडमिण्टन टूर्नामेंट

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय, हरिद्वार में एक शिक्षक एवं शिक्षकोत्तर कर्मचारियों में बैडमिण्टन टूर्नामेंट का आयोजन श्री ओ. पी. मिश्र, रीडर, मनोविज्ञान विभाग, तथा श्री करतार सिंह गेम्स इंचार्ज द्वारा किया गया। फाइनल मैच डा. काश्मीर सिंह तथा श्री श्यामनारायण के मध्य हुआ जिसमें डा. काश्मीर सिंह विजयी रहे तथा दूसरा स्थान श्री श्यामनारायण सिंह ने प्राप्त किया।

फाईनल मैच गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री वीरेन्द्र जी तथा सहायक मुख्याधिष्ठाता श्री जितेन्द्र जी की उपस्थिति में सम्पन्न हुआ।

सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी समारोह का प्रस्ताव

केन्द्रीय कानून द्वारा गोहत्या रोकी जाए

"सत्यार्थ प्रकाश शताब्दी समारोह के अवसर पर बीकानेर में एकत्र देश के कोने-कोने से आये सहस्रों आर्य बन्धुओं का यह सम्मेलन इस बात पर क्षोभ प्रकट करता है कि जनता की व्यापक मांग तथा संविधान का स्पष्ट निर्देश होने पर भी देश में भीषण रूप में गोहत्या जारी है। खास तौर से पश्चिम बंगाल और केरल राज्यों में संविधान को चुनौती देते हुए गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगाने से इन्कार किया जा रहा है। सन्त विनोबा जी द्वारा गोहत्या बन्दी के लिए आमरण अनशन करने की घोषणा के समय १९७६ में प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी ने सारे देश में एक वर्ष के अन्दर गोहत्या बन्दी कानून बना देने की घोषणा की थी। खेद है कि उनके द्वारा दिए गए अभिवचन का अभी तक पालन नहीं किया गया, हालांकि आज लोकसभा में कांग्रेस का प्रचण्ड बहुमत है।

महर्षि स्वामी दयानन्द जी ने आज से १०० वर्ष पहले गोहत्या बन्द कराने के लिए अभियान चलाया था। महर्षि ने चेतावनी दी थी कि गौ आदि पशुओं के नाश से राजा व प्रजा दोनों का विनाश होता है। आज देश की जैसी स्थिति है उससे महर्षि के उद्गार प्रत्यक्ष नजर आ रहे हैं। यह सम्मेलन भारत सरकार से अनुरोध करता है कि राष्ट्र के व्यापक हित ध्यान में रखते हुए केन्द्रीय कानून द्वारा गोहत्या पर पूर्ण प्रतिबन्ध लगाए तथा इस अनर्थ को पूरी शक्ति से रोके और गोवंश की निकासी बन्द करे।

सम्मेलन आर्य बन्धुओं से अनुरोध करता है कि वे गोहत्या के कलंक को मिटाने के लिए सक्रिय योगदान करें।"

—भंवरलाल आर्यबंधु

आर्य समाज मन्दिर फतेहगढ़ का बाल स्वास्थ्य वर्ष

आर्य समाज फतेहगढ़ ... (जिला अमृतसर) ने ईसवी सन् १९८२ को "बाल स्वास्थ्य वर्ष" के रूप में मनाने का निश्चय किया है। इस योजना के अन्तर्गत वर्ष भर में स्वास्थ्य कैम्पों का आयोजन किया जायेगा जिसमें बच्चों की भयंकर बीमारियों के सम्बन्ध में माता पिता को जागरूक करने का प्रयास किया जाएगा। पोलियो काली खांसी दस्त बुरी बीमारी, काला ... एवं क्षयरोग जैसी बीमारियों के निःशुल्क टीके भी लगवाये जाएंगे।

—ब्रज मोहन भंडारी



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वर्ष 14, अंक 42, 25 मार्गशीर्ष सम्वत् 2039, तदनुसार 7 फरवरी 1982, दयानन्दाब्द 156। एक प्रति 35 पैसे (वार्षिक शुल्क 15 रुपए)

महर्षि की अन्तर्वेदना

अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के ग्यारहवें समुल्लास में ब्राह्म समाज और प्रार्थना समाज के मानने वालों में स्वेदेश भक्ति की न्यूनता एवं ऋषि मुनियों के प्रति उपेक्षा की वृत्ति देख कर उन की भर्त्सना करते हुए महर्षि लिखते हैं। भला! जब आर्य्यावर्त में उत्पन्न हुए हैं और इसी देश का अन्न जल खाया पिया, अब भी खाते पीते हैं। अपने माता, पिता, पितामहादि के मार्ग को छोड़ दूसरे विदेशी मतों पर अधिक झुक जाना, ब्राह्म समाजी और प्रार्थना समाजियों का.........वृद्धि कारक काम क्यों कर हो सकता है।

इसी प्रकरण में आगे चल कर श्री महाराज लिखते हैं—इस लिए जो उन्नति करना चाहो तो 'आर्य समाज' के साथ मिल कर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिये, नहीं तो कुछ हाथ न लगेगा, क्योंकि हम और आपको अति उचित है कि जिस देश के पदार्थों से अपना शरीर बना, अब भी पालन होता है, आगे होगा, उसकी उन्नति तन, मन, धन से सब जने मिल कर प्रीति से करें।

इस लिए जैसा आर्य समाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता।"

पाठक वृन्द! आप महर्षि की इन पंक्तियों को बार-बार विचार पूर्वक पढ़ने का कष्ट करें आपको आर्य समाज के प्रवर्त्तक की कल्पना का विशुद्ध आर्य समाज दृष्टिगोचर होगा और जिस आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य संसार का उपकार करना है उस ने आर्यावर्त देश की उन्नति में अपना कर्त्तव्य कैसे निभाना है यह बिल्कुल स्पष्ट हो जाएगा।

महर्षि के संसार में आर्यावर्त्त सम्मिलित ही नहीं अपितु सुधार के, उन्नति के और उत्थान के प्रत्येक कार्य का प्रेरणा स्रोत भी यही है। काश! हमने महर्षि की अन्तर्वेदना का अनुभव किया होता और इस दिशा में कर्त्तव्यारूढ़ होकर आगे बढ़े होते तो जो दुर्दशा आज इस देश की हो रही है वह कभी न होती।

आज भी यदि सभल जाएं और ऋषि प्रदर्शित मार्ग का अनुसरण प्रारम्भ कर दें तो बिगड़ा खेल बन सकता है।

प्रभु हमें सद् बुद्धि दे ताकि हम ऋषि के सच्चे अनुयायी बनने का सौभाग्य प्राप्त कर सकें।

—

आर्य समाज स्थापना दिवस पर आर्य मर्यादा का विशेषांक

सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी की इच्छा है कि आर्य समाज के सब से महान् पर्व स्थापना दिवस पर आर्य मर्यादा का एक ऐसा विशेषांक प्रकाशित किया जाए जिस के पढने से परिचित अपरिचित, विद्वान् तथा सामान्य जन सभी आर्य समाज के विशुद्ध और व्यापक स्वरूप तथा इसके द्वारा किए गए तथा किए जा रहे कार्यों का बोध प्राप्त कर सकें और इस की उपयोगिता और महत्ता को समझ सकें। इस लिए हमने अपने पूज्य विरक्त महानुभावो, विद्वान लेखकों तथा कविवरों से लेख तथा रचनाएं भेजने के लिए प्रार्थना की है। हमें आशा है कि अपने सहृदय विद्वानों के सहयोग से आर्य मर्यादा का यह विशेषांक अत्युत्तम विचारोत्तेजक एवं प्रेरणादाय की पाठ्य सामग्री से भरपूर होगा।

प्रत्येक समाज और शिक्षण सस्था अपने लिए अभी से प्रतीयां सुरक्षित करा लें ऐसा न हो कि बाद में हम उन की इच्छा पूर्ति न कर सकें।

इस विशेषांक का मूल्य कम से कम २ रुपए रखा जाएगा—हमारा यत्न होगा कि इससे मूल्य अधिक न हो। अपने अपने आदेश शीघ्र भेजिए। निम्नलिखित विषयों पर लेख मांगे गए हैं।

१- आर्य समाज का स्वरूप
२- आर्य समाज की मान्यताएं
३- समाज सुधार और आर्य समाज
४- आर्य समाज की हिन्दी सेवा
५- दलितोद्धार का कार्य तथा आर्य समाज
६- वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज की आवश्यकता?
७- आर्य समाज की राष्ट्र सेवा
८- आर्य समाज के शहीद
९- शिक्षा और आर्य समाज
१०- आर्य समाज की सस्थाएं तथा उनकी उपयोगिता
११- गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का महत्व
१२- वेद के प्रति आर्य समाज का दृष्टिकोण
१३- आज के हालत में आर्य समाज का कार्यक्रम क्या हो?
१४- मर्यादा पालक श्री राम जी का विशुद्ध स्वरूप
१५- सम्प्रदाय का शत्रु आर्य समाज
१६- मानवता का प्रचारक आर्यसमाज
१७- स्त्री शिक्षा मे आर्य समाज का योगदान

—ओम्प्रकाश आर्य
सभा कार्यालयाध्यक्ष

आर्यपर्व निधि

ऋषि बोध तथा ऋषि निर्वाणोत्सव पर प्रत्येक आर्य समाज के द्वारा अपने सभासदों से उनके परिवार के प्रत्येक सदस्य से कम से कम एक रुपया आर्य पर्व निधि में लिया जाता है। ऋषि बोधोत्सव २२ फरवरी ८२ को आर्य समाजों में पूरे उत्साह एवम् समारोह से मनाना है। कई आर्य समाज तो सप्ताह भर प्रचार का आयोजन कर रहे हैं जो बहुत ही उत्साह वर्धक है।

कृपया इस महान् पर्व निधि का एकत्रित करना न भूलें। यह आवश्यक है आपका परिवार पांच व्यक्तियों का है तो आप को कम से कम पांच रुपये उस दिन अपने समाज में आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की इस निधि में श्रद्धापूर्वक भेंट करने हैं।

—

लेखक महानुभावों तथा कविवरों से नम्र निवेदन

आर्य मर्यादा का एक विशेषांक आर्य समाज स्थापना दिवस पर आप सबके सहयोग और आशीर्वाद से हमने प्रकाशित करने का निश्चय किया है। अपने बहुत से पूज्य विद्वानो तथा कवि महानुभावों की सेवा में लेख तथा कविता भेजने के लिए निवेदन पत्र भेजे जा चुके हैं। यदि आपकी सेवा में अभी तक हमारा पत्र न पहुंचा हो तो कृपया इस अनुरोध पूर्वक सूचना के आधार पर ही अपना लेख अथवा कविता भेजकर कृतार्थ कीजिए।

आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि आप सभा के इस साप्ताहिक पत्र को सदा की भान्ति अपना सहयोग प्रदान करते हुए अपना लेख या कविता २०-२-८२ तक अवश्य भेज देंगे।

—ओ३म् प्रकाश आर्य, कार्यालयाध्यक्ष

संसार के रचयिता को हम तोतली वाणी से पुकारते हैं

यं न इन्द्रो वसुभिर्देवो अस्तु समादित्येभिर्वरुणः सुशंसः।
सं नो रुद्रो रुद्रैर्जलाषः शं नस्त्वष्टा ग्नाभिरिह शृणोतु।

(देवः) प्रकाशमय (इन्द्रः) सूर्य (वसुभिः—वस निवास) निवास जीवन की कारणभूत अपनी जीवनदायिनी रश्मियों के साथ (नः शम्) हमारे लिए सुखकारी हो (सुशंस) उत्तम स्तुति के योग्य (वरुण) संवत्सर (आदित्येभिः) बारह मासों में विभक्त आदित्य के साथ (नः शम् अस्तु) हमारे लिए सुखकारी हो (जलाषः) अभिलाषा पूर्ण करने वाला (इन्द्र,) जीव (रुद्रैभिः) प्राणों के साथ (नः शम् हमारे लिए सुखकारी हो। (त्वष्टा) विश्व का रचने वाला ईश्वर (ग्नाभिः) हमारी वाणियों के द्वारा (इह) यहां (नः) हमारी प्रार्थना को शृणोतु सुने।

सुरेशचन्द्र वेदालंकार, एम. ए. एल. टी

... स्वरूप है। यह अखण्ड और अक्षय आनन्द का भण्डार हैं। इसी आनन्द की प्राप्ति के लिए भटक रहा आत्मा जब इस सूर्यदेव को प्राप्त कर लेता है तब हमें केवल आनन्द प्राप्त होता है— केवल सुख मिलता है और हमारा कल्याण ही कल्याण होता है।

यह सूर्य परमात्मा तप और साधना द्वारा प्राप्य है।

उत्तम स्तुति के योग्य वरुण संवत्सर हमारे लिए सुखकारी हो। बसन्त ऋतु से संवत्सर का प्रारम्भ होता है। बसन्त ऋतु का सम्बन्ध वरुण से है। इसलिए वरुण और संवत्सर का भी परस्पर सम्बन्ध है। यथा संवत्सरो वरुणः (श० ब्रा० ४-४-५-१८। वरुण बसन्त संताप का सूर्य है। इसलिए यह संवत्सर हमारे लिए सुखकारी हो।

कहा है—

कस्ते जामिर्जनानामग्ने को दाश्वध्वरः को ह कस्मिन्नसि श्रितः।
त्वं जामिर्जनानामग्ने मित्रो असि प्रियः, सखा सखिभ्य ईड्यः।

ऋ० १-७५-३,४

हे प्रकाश स्वरूप प्रभो ! मनुष्यों में तेरा भक्त कौन है, कौन तुम्हारे लिए अहिंसामय यज्ञ को देने वाला है, कहां यज्ञ द्वारा तुम्हारी उपासना करने वाला है ? निश्चय से तू कौन है और तुम ठहरे किसमें हो ?

भक्त की इस भाव भरी प्रार्थना को सुनकर भगवान् कहते हैं, मनुष्यों में तुम मेरे बन्धु हो, तुम्हीं यहां यज्ञ द्वारा मुझ से मित्रता करने वाले प्यारे हो, मैं तुम्हारा सखा हूं। और मैं अपने से सीख भाव रखने वालों के लिए स्तुति योग्य ...

... संसार, ... जीवात्मा प्राणों के साथ ... हो। संसार को बनाने वाले और ... से परिपूर्ण करने वाले ... प्रभु से हम तोतली वाणी से प्रार्थना करते हैं, वह हमारी प्रार्थना सुने।

(१७५ लाजपत नगर गोरखपुर)

वेद सुधा

यदि आकाश में एक साथ हजारों सूर्यों की ज्योति उदय हो जाए, तो वह ज्योति उस भगवान् की ज्योति के समान शायद हो।

इस मन्त्र में सूर्य, वरुण, अभिलाषाओं को पूर्ण करने वाला जीव (ईश्वर) विश्व की रचना करने वाला ईश्वर हमारी प्रार्थना को सुने, यह प्रार्थना की गई है। इन्द्र शब्द का यहां अर्थ सूर्य है। सूर्य में तेज है। यह तेज परमेश्वर के तेज का थोड़ा सा अंश है। गीता में भगवान् के इस दिव्य ज्योतिर्मय रूप का वर्णन करते हुए कहा गया है—

दिवि सूर्य सहस्रस्य भवेद्युगपदुत्थिता
यदि भाः सदृशी सा स्याद्भासस्तस्य
महात्मनः। गीता ११-१२।

अर्थात् यदि आकाश में एक साथ हजारों सूर्यों की ज्योति उदय हो जाए, तो वह ज्योति उस भगवान् की ज्योति के समान शायद हो।

कठोपनिषद् में कहा गया है—

न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं
नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः
तमेव भान्तमनुभाति सर्वम्
तस्य भासा सर्वमिदम् विभाति।
कठोपनिषद् ५-१५

ज्योतिर्मय भगवान् की चमक से यह विश्व प्रकाशित हो रहा है। सूर्य के प्रकाश में, चन्द्रमा की चान्दनी में, बिजली की चमक में अग्नि में उसी प्रभु का प्रकाश है। सारा संसार उसका ही अनुकरण कर रहा है, उसी की चमक से यह सारा विश्व चमक रहा है।

यह देवाधि देव ही सूर्य है—अभि-

इसके बाद 'जलाषः' और 'त्वष्टा' विशेषणों का प्रयोग करके मन्त्र में कहा गया है संसार के प्राणियों की कामनाओं को पूर्ण करने वाला और संसार को बनाने वाला परमेश्वर हमारे लिए सुखकारी हो। परन्तु यह ईश्वर सुखकारी कैसे होगा ? प्रभु उस समय सुखकारी होगा जब हम अपने जीवनों को काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि दुर्गुणों को दूरकर अपने मन मन्दिरों को शुद्ध और पवित्र बनाएंगे। इन शुद्ध और पवित्र मन्दिरों में ही प्रभु का वास होगा। उस में उसके गुणों का बोध होगा और उसके गुणों को अपने मन में, वाणी में और कर्म में जब हम धारण करेंगे तभी भगवान् की निकटता प्राप्त होगी, आनन्द-स्वरूप के आनन्द को हम धारण करेंगे, अनुभव करेंगे।

वेद के एक मन्त्र में प्रभु का और सेवक का, भक्त और भगवान् का बड़ा सुन्दर संवाद आया है।

सहायक हूं।

ब्रह्म प्राप्ति के लिए उतावले भक्त से प्रभु कहते हैं, भक्त ! मेरे प्रिय तुम्हीं हो, तुम अपनी तपस्या और प्रार्थना से मुझे प्राप्त कर लोगे ? निराश होने की जरूरत नहीं। चलते चलो, जिस मार्ग पर बढ़ रहे हो, वह समय अब दूर नहीं कि मैं तुम्हें प्रतिक्षण दिखाई दूंगा। भक्त, केवल आवश्यकता इस बात की है कि तू मुझे प्राप्त करने के योग्यपने को बना ले। सृष्टि में मनुष्य तभी आनन्द और सुख का अनुभव करता है जब प्रभु के प्रकाश से, प्रभु के आनन्द से मनुष्य की आत्मा उज्ज्वल और सुखमय होती है। इस सृष्टि के सुखकारी बनने का सृजन आत्मा के प्रकाश में होता है आत्महीन निर्जीव व्यक्ति सृजन नहीं कर सकते। जिसमें स्वयं जीवन नहीं वह जीवित वस्तु या प्राणी की सृष्टि नहीं कर सकता। इसलिए मन्त्र कहता है, हे प्रभो ! सूर्य की जीवनदायिनी किरणें हमारे लिए सुखकारी हों, बारहों मास, स्तुति योग्य

लन्दन की चिट्ठी

स्थानीय अंग्रेज वैदिक धर्म से प्रभावित

आर्य समाज लन्दन के साप्ताहिक सत्संगों तथा प्रचार प्रणाली से ब्रिटेन का वातावरण गुंजित हो रहा है। आर्य समाज लन्दन की कीर्ति सुन स्थानीय क्वेकर संस्था की श्रीमती सूजन फ्लेमिंग अपनी शिक्षिकाओं, विद्यार्थियों तथा उन के अभिभावकों के साथ रविवार १७-१-८२ के साप्ताहिक सत्संग में पधारीं। यज्ञ के ब्रह्मा प्रो० सुरेन्द्रनाथ भारद्वाज तथा यजमान श्रीमती सावित्री छाबड़ा परिवार थे। उसी दिन श्रीमती छाबड़ा के पौत्र चि० अमित का अन्न प्राशन संस्कार था, प्रो० भारद्वाज ने बड़े विद्वतापूर्ण तरीके से संस्कार करवाया तथा वेद मन्त्रों (सम्पूर्ण यज्ञ मन्त्रों) का अंग्रेजी में अनुवाद तथा व्याख्या की, जिससे सभी श्रोता बहुत ही प्रभावित हुए। अन्न प्राशन तथा अन्य संस्कारों की पाण्डित्य-पूर्ण विवेचना से अंग्रेज श्रोताओं को वैदिक धर्म के सच्चे स्वरूप का ज्ञान हुआ तथा उन्होंने इस कार्यक्रम बहुत ही आनंद उठाया। इस अवसर पर पुनीता बाजरी, ऐंजिला कोछड़, गायत्री चाटली तथा अरुण कोछड़ के अंग्रेजी में आर्य समाज सम्बन्धी लघु व्याख्यान भी सराहे गये। आर्य समाज के प्रधान प्रो० राजेन्द्रनाथ भारद्वाज ने अतिथियों का स्वागत करते हुए आर्य समाज के नियमों पर प्रकाश डालते हुए बताया कि वैदिक धर्म किसी भी एक मत अथवा सम्प्रदाय नहीं अपितु सार्वभौमिक धर्म है। उन्होंने बताया कि स्थानीय धार्मिक संस्थाओं ने हमारा कार्यक्रम देखने की इच्छा प्रकट की है तथा हमने उन्हें सहर्ष आमन्त्रित किया है। इसी अवसर पर स्वर्गीय श्री शिव दर्शन लाल सुभाषित, श्री वैदी जी (कपूरथला वाले) श्री अजित कुमार तथा बालक मल्होत्रा के आकस्मिक निधन पर शोक प्रकट किया गया।

इसी प्रकार १०-१-८२ के सत्संग में श्री गिरीशचन्द्र ओबराय ने यज्ञ कराया। इस अवसर पर सभी बालक-बालिकाएं यजमान आसन पर थे। अध्यक्ष पद श्री बलदेव मोहन मेहता ने भारतीय संस्कृति के कई महत्वपूर्ण पहलुओं पर प्रकाश डाला।

सम्पादकीय—

आर्यसमाजियो अपने मंदिरों की रक्षा करो

एक ऐसी समस्या की ओर मैं अपने आर्य समाजी बन्धुओं का ध्यान दिलाना चाहता हूं। जिसके विषय में मैं पहले भी कई बार लिख चुका हूं। वह यह कि हम अपने मन्दिरों की सुरक्षा की तरफ वह ध्यान नहीं देते, जो हमें देना चाहिए। मुझे कई बार कई दूसरे मन्दिरों को भी देखने का अवसर मिलता है। हमारे सनातन धर्मी भाईयों के मन्दिरों की अवस्था हम से भी अधिक शोचनीय है। कई पुराने मन्दिर अत्यन्त ही जीर्णावस्था में पड़े हुए हैं। परन्तु सिक्ख, जैनी और ईसाई अपने मन्दिरों, गुरुद्वारों और गिरजाघरों की बहुत रक्षा करते हैं। विशेष रूप से हमारे सिक्ख भाई। कई बड़े-२ सिक्ख अपने हाथों से गुरुद्वारों की सफाई करते हैं। वहां बैठने के लिए भी साफ चादरें बिछाई जाती हैं। प्रायः प्रत्येक गुरुद्वारा में फर्श पर संगमरमर लगाई जाती है। जैनियों के मन्दिर बहुत अच्छे हैं, वे भी सफाई रखते हैं। उनके पास धन बहुत है। इसलिए अपने मन्दिरों पर बहुत कुछ लगाते हैं। सब से शोचनीय स्थिति हिन्दुओं के मन्दिरों की है। आर्य समाज के मन्दिर अब धीरे-२ ठीक हो रहे हैं। आर्य समाज दयानन्द बाजार लुधियाना का मन्दिर अब बहुत अच्छा बन गया है। आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार अमृतसर का मन्दिर भी बहुत अच्छा है। आर्य समाज पठानकोट ने भी अपने मन्दिर की स्थिति को सुधारने का प्रयत्न किया है। जालन्धर की आर्य समाज महर्षिकुन्ज एक छोटी सी समाज है, उन्होंने भी अपने मन्दिर का रूप बदल दिया है। मैं अपने भाई श्री योगेन्द्रपाल सेठ प्रधान आर्य समाज श्रद्धानन्द बाजार जालन्धर को बधाई देता हूं कि वह भी अपने आर्य समाज मन्दिर को एक बहुत ही आकर्षक रूप देने का प्रयत्न कर रहे हैं। उनकी योजना बहुत बड़ी है। जब उसके अनुसार मन्दिर बन जाएगा तो वह एक देखने योग्य भवन होगा। उस पर बहुत अधिक रुपया की आवश्यकता है जो अभी उन्हें नहीं मिल रहा। जो मिला है वह भी उनके अपने परिश्रम से। परन्तु पंजाब में तो और भी कई आर्य समाजें हैं। यदि हम सब के मन्दिर नए सिरे से बनवाना चाहें तो वह सम्भव न होगा। जो बने हुए हैं उनमें ही सुधार होना चाहिए। मैंने कई मन्दिर देखे हैं। जिनमें पुराने चित्र लगे होते हैं, जिन पर मिट्टी पड़ जाती है और उनकी कोई सफाई नहीं करता। कई समाजों में पुराने अधिकारियों के चित्र लगे होते हैं। मुसलमान अपनी मस्जिद में कोई चित्र नहीं लगाते। ईसाई केवल ईसा और उसकी मां का चित्र लगाते हैं। हमारे सिख भाई गुरुओं के चित्र लगाते हैं, विशेष कर गुरुनानक के और गुरु गोविन्द सिंह के लेकिन आर्य समाज के मन्दिरों में कई प्रकार के चित्र लगे होते हैं। मैं समझता हूं कि इस विषय में भी हमें कुछ सोच कर काम करना चाहिए। महर्षि दयानन्द और उनके गुरु दण्डी स्वामी विरजानन्द और आर्य समाज के शहीदों के अतिरिक्त यदि किसी और का चित्र लगाना हो तो वह केवल मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम और योगीराज श्री कृष्ण का होना चाहिए। किसी राजनैतिक नेता का चित्र किसी आर्य समाज मन्दिर में नहीं लगाना चाहिए। इसी के साथ नीचे बैठने के लिए स्वच्छ कपड़े होने चाहिए। दरी हो या चादरें हों वे फटे नहीं होने चाहिए। जहां यज्ञ होता हो या जहां सभा भवन हो वहां रंगदार सफेदी करवा देनी चाहिए और यदि सम्भव हो सके तो उनमें अच्छे से अच्छे विचारें पर लिखवा दिए जायें।

मेरा यह सब कुछ लिखने का अभिप्राय केवल यह है कि आर्य समाज मन्दिरों को वास्तविक मन्दिर का रूप देना चाहिए। हमें यह भी न भूलना चाहिए कि गुरुद्वारा का दरवाजा हर समय खुला रहता है। जो व्यक्ति वहां चला जाए उसे बिस्तर भी मिल जाता है रोटी भी मिल जाती है। क्या आर्य समाज अपने मन्दिरों के दरवाजे आम जनता के लिए नहीं खोल सकती। मैं चाहता हूं कि पंजाब के आर्य समाजी भाई अपने मन्दिरों की ओर विशेष ध्यान देंगे, उन्हें बाहर से ऐसा रूप दें कि लोग दूर ही से देख कर उस मन्दिर की ओर जाएं और वहां बैठकर उनके मन को कुछ शान्ति मिले। ताकि जिन्हें कहीं और सन्तोष व मन की शान्ति न मिले वह आर्य समाज मन्दिर में आकर बैठ जाएं और वहां स्वाध्याय कर सकें। आशा है मेरे भाई और बहिनें मेरे इस सुझाव की ओर ध्यान देंगे।

—वीरेन्द्र

देश में गौवध बन्द कराने के लिए गरल-पान आर्य समाज को ही करना चाहिए

स्वामी दयानन्द, महात्मा गान्धी और श्री विनोबा की इच्छा पूर्ति के लिए गोरक्षा की मांग स्वीकार होनी चाहिए

आचार्य श्री विनोबा के नाम सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री रामगोपाल शालवाले का पत्र

परम श्रद्धेय, श्री पूज्य विनोबा जी,

सेवा में सादर नमस्ते !

पवनार आश्रम में गोरक्षार्थ किए गए आपके आदेश को शिरोधार्य करते हुए सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा (जो भूमण्डल के आर्यों का सर्वमान्य शिरोमणि संगठन है) ने—

३० जनवरी से २२ फरवरी तक गोवंश की हत्या बन्द कराने के लिए केन्द्रीय कानून में संशोधन हो, इसी आशय से सर्वात्मना इस महान पुण्य आदेश को भारत की ४००० आर्य समाजों को भेजकर आह्वान किया है कि आपकी इस परम पुनीत ईश्वर प्रदत्त कामना को पूर्ण करने के लिए गौमाता की रक्षा हेतु पूर्ण समर्थन एवं यदि आवश्यक हो तो बड़े से बड़ा बलिदान भी किया जाए। पवनार आश्रममें भी यह आवाज सुनाई दी थी कि बलिदानके बिना गौमाता के प्राण नहीं बचाये जा सकते। आज पूज्य बापू की समाधि पर आपके आदेशानुसार सौम्य सत्याग्रह प्रारम्भ हो गया है।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि श्रीमती इन्दिरा गान्धी जी जिस दूरदर्शिता और कठिनतम परिश्रम करके इतने बड़े देश की समृद्धि एवं सुरक्षा के लिए क्रियाशील हैं, वे भी आपकी कोमल भावनाओं का पूर्ण आदर करके लोक सभा में अपने प्रचण्ड बहुमत के आधार पर गोहत्या बन्द करने के लिए केन्द्रीय कानून बनाने की घोषणा करेंगी।

यदि देश की बहुसंख्या की सामूहिक आवाज को कुछ राजनैतिक वोट प्राप्त करने वाले अल्पसंख्यकों की तुष्टि के लिए अब सरकार ने सभी विवादों से ऊपर उठकर गान्धी जी की उस मनस्वता से निकली हुई ध्वनि को जिसे गान्धी ने गोहत्या को अपनी हत्या की संज्ञा दी थी; उसे टालने का प्रयत्न किया तो पवनार आश्रम की वह आवाज—कि गौमाता की रक्षा के लिए बलिदान की आवश्यकता है. उसी दिन से मेरे मन को कचोटती रही है।

महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आज से १०८ वर्ष पूर्व देश की आजादी और गोहत्या बन्दी का नारा लगाकर अंग्रेजी राज्य में ही गोरक्षार्थ गोकरुणानिधि नामक पुस्तक लिखकर मानव मात्र को माता के उपकारों की आर्थिक, बौद्धिक एवं धार्मिक पहलू की अनुभूति कराते हुए गोरक्षा के लिए करोड़ों हस्ताक्षर कराकर स्वयं मलिका विक्टोरिया के दरबार में जाने का संकल्प किया था. किन्तु इससे पूर्व अपने ही लोगों ने अंग्रेजी षड्यन्त्र एवं चरित्र हनन एवं देशद्रोह के वशीभूत होकर, उन्हें धोखे से विष पिलाकर महर्षि की जीवन लीला को समाप्त कर दिया अनेक अन्य उपकारी कार्यों के साथ ही गोरक्षा का काम भी पूरा नहीं हुआ।

भगवान् राम और कृष्ण की इस परम पावन भारत भूमि को जब अपनी स्वतन्त्रता की ३५वीं वर्षगांठ पर गर्व से माथा ऊंचा कर सकती है, उसके निवासी आज बड़ी उत्सुकता के साथ अपनी प्रधानमन्त्री महोदय से यह सुनना चाहते हैं कि महात्मा गान्धी, स्वामी दयानन्द और श्री विनोबा जी की इच्छा एवं देश की सर्व प्रकारेण उन्नति के लिए गोरक्षा की मांग को सर्वात्मना स्वीकार किया जाता है।

मुझे पूर्ण आशा है कि श्रीमती इन्दिरा गान्धी जी भी स्वयं देश की बहुसंख्यक जन-समुदाय की कोमल भावनाओं को मूर्त रूप देने की घोषणा करेंगी।

किन्तु यदि किन्हीं राजनैतिक विवशताओं के कारण इस महान् उद्देश्य में सफलता की झलक देखने का अवसर न दिया गया तो आर्य समाज का तुच्छ सेवक होने के कारण मेरी अन्तरात्मा की आवाज के अनुसार गोमाता के प्राण बचाने के लिए मुझे अपना बलिदान देने की आज्ञा प्रदान करेंगे।

(शेष-पृष्ठ ४ पर)

शास्त्रार्थ समर के दिग्विजयी महर्षि दयानन्द जी के सम्बन्ध में

पौराणिकों का अनर्गल प्रलाप

ऋषि दयानन्द सम्बन्धी मिथ्या प्रचार

काशी एक विचित्र नगरी है। पिछले दिनों दिनांक ७ जनवरी १९८२ के दैनिक पत्र 'आज' में प्रकाशित परमहंस बाबा तैलंग स्वामी जी शीर्षक से लिखा हुआ श्री बैकुण्ठनाथ उपाध्याय द्वारा लिखित लेख प्रकाशित हुआ जिसे पढ़कर अत्यन्त ही आश्चर्य होना स्वाभाविक था। इस लेख में लेखक ने बाबा तैलंग स्वामीजी के महत्व बढ़ाने की दृष्टि से एक अत्यन्त ही तथ्यहीन इतिहास विरुद्ध कपोल-कल्पित वृत्तान्त को वर्णित किया है जिसका सार इस प्रकार है—

'बङ्गीय सन् १२७६ में जब श्री दयानन्द सरस्वती काशी पधारे और मूर्ति पूजा का खण्डन करना प्रारम्भ किया तो बाबा तैलंग स्वामी जी ने एक कागज के टुकड़े पर मंगलदास के द्वारा कुछ लिख कर उनके पास भेजा जिसे देखकर श्री दयानन्द जी काशी छोड़कर चले गये।'

निःसन्देह उपर्युक्त भ्रामक लेख महर्षि दयानन्द को भीरु बताने की दृष्टि से पक्षपातवश लिखा गया है। महर्षि दयानन्द शास्त्रार्थ समर के उन दिग्विजयी शूरमाओं में से हैं कि जिन्होंने सं० १९२६ कार्तिक सुदी १२ मंगलवार के दिन जो दुर्गाकुण्ड में प्रसिद्ध काशी शास्त्रार्थ हुआ था उसमें प० विशुद्धानन्द पं० बाल शास्त्री, पं० ताराचरण भट्टाचार्य आदि अनेकों पण्डितों से अकेले ही लोहा लिया था। उस समय सैंकड़ों की संख्या में उपस्थित पण्डित मण्डली प्रतिमा पूजन की सिद्धि वेद से तो कर नहीं सकी थी किन्तु छल बल का आश्रयण अवश्य किया था। उस शास्त्रार्थ में 'ऐतरेयालोचन' के लेखक श्री पं० सत्यव्रत सामश्रमी जी भी स्वयं उपस्थित ही नहीं अपितु उस शास्त्रार्थ को लिपिबद्ध करने वालों में से थे। इस शास्त्रार्थ के विवरण को उन्होंने अपनी तत्कालीन संस्कृत पत्रिका 'प्रत्नकम्रनन्दिनी' में प्रकाशित भी किया था। यद्यपि काशी नरेश की उपस्थिति में हुए इस विख्यात शास्त्रार्थ में पण्डितों द्वारा छल किया गया था किन्तु उस समय जो विचारशील लोग एवं पत्रकार वहां उपस्थित थे उनसे सत्यता छिपी न रह सकी थी कि अजेय महर्षि दयानन्द के सामने कोई भी प्रतिमा पूजन का प्रमाण वेद से उपस्थित नहीं कर सका है। तत्कालीन प्रकाशित पत्र 'हिन्दू पैट्रियट' के पौष सुदी १५ सं० १९२६ का अंक, रुहेलखण्ड समाचार, ज्ञान प्रदायिनी पत्रिका तथा ब्राह्म समाज के नेता श्री देवेन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा संस्थापित एवं श्री अक्षयकुमार दत्त द्वारा सम्पादित 'तत्वबोधिनी' (ज्येष्ठ सं० १७९४ बंगाब्द आदि पत्रिकाएं इस बात की प्रबल प्रमाण हैं कि महर्षि दयानन्द की विद्या के समक्ष कोई साधारण पण्डित तो उस समय टिक ही न सका था किन्तु पं० विशुद्धानन्द एवं बाल शास्त्री जी जैसे पंडित भी क्रमशः धर्म एवं अधर्म के लक्षण तथा महाभाष्य में कहीं 'कल्म' संज्ञा को ठीक न बता पाए थे। वेद से प्रतिमा पूजन तो सिद्ध ही नहीं हो सकता था। इस विषय में एक यूरोपियन संवाददाता का 'पायोनियर' में लिखा लेख भी जिसका अनुवाद अवध अखबार में भी छपा था, वस्तु स्थिति से परिचित होने के लिए अत्यन्त ही द्रष्टव्य है।

अपने जीवन में महर्षि दयानन्द कुल सात बार काशी पधारे थे। इस शास्त्रार्थ में उनका द्वितीय आगमन था। इस आगमन के अनन्तर भी पांच बार और काशी आये और प्रायः अपने प्रत्येक आगमन में उन्होंने कई २ मास तक भी काशी में निवास किया और लगातार अपने आगमन पर प्रतिदिन ज्ञान चर्चाएं व्याख्यान आदि करते रहे तथा लिखित विज्ञापन देकर वेद विरुद्ध बातों पर शास्त्रार्थ के लिए पंडित मण्डली को आहूत करते रहे किन्तु कोई भी उनके समक्ष आकर शास्त्रार्थ करने का साहस न दिखा सके थे पर यह तो किया था कि उनके व्याख्यानों से तिलमिलाकर और स्वामी जी के व्याख्यान से दंगा-फसाद होने का डर है यह मिथ्या प्रचारित कर तत्कालीन मजिस्ट्रेट साहब से एक चिट्ठी व्याख्यान पर रोक लगाने के लिए लिखाई जो रोक बाद में हटा ली गई थी।

महर्षि जब पांचवीं बार काशी पधारे थे तो काशी के महाराजा जिनकी उपस्थिति में ऋषि दयानन्द का शास्त्रार्थ हुआ था वे स्वयं स्वामी जी के चरणों में उपस्थित हुये थे तथा काशी शास्त्रार्थ के समय जो कुछ भी अनर्थ हुआ था उसके लिए पश्चाताप प्रकट किया था।

(द्र० जीवन चरित्र महर्षि दयानन्द सरस्वती पृष्ठ १७७)

आ० स० नया बांस दिल्ली द्वारा प्रकाशित)

इस प्रकार निर्भीक महर्षि दयानंद के साथ बाबा तैलंग स्वामी जी की उपर्युक्त मिथ्या घटना को जोड़ना एवं भ्रम फैलाना अत्यन्त खेदजनक है, स्वामी दयानन्द तो कभी भी पण्डित मण्डली की दुरभि सन्धि लोगों के कुवचन एवं डण्डे लाठी आदि का भय दिखाने पर भी यत्किञ्चित विचलित न हुए थे। जब महर्षि दयानन्द के साथ किए जाने वाले पूर्व उपद्रवों का ज्ञान उस समय के धुरन्धर पं. श्री ज्योति स्वरूप जी एवं भक्त बलदेव आदि को हुआ तो इन्होंने ऋषि दयानन्द के समक्ष इस विषय पर अति चिन्ता व्यक्त की किन्तु ईश्वर विश्वासी अविचल दयानन्द ने यही कहा था "ऐ बलदेव! क्या चिन्ता है एक मैं हूं, एक ईश्वर है एक धर्म है और कौन है।" भला ऐसा दृढ़ आस्तिक दयानन्द किसी के कागज के टुकड़े को देखकर काशी छोड़कर भागने वाला था, यह कैसे निराधार गप्प है।

यद्यपि काशी के सम्बन्ध में काशी विदुषमती यह उक्ति प्रसिद्ध है तथापि अकल्पे मतलोचक शास्त्रवादों महाशीओं एवं आस्तिकों का भी यह पुराना शुगल चल रहा है। तभी तो स्वामी पूर्ण विरजानन्द जी के साथ 'अजाद्य लिङ्गः' के समास को लेकर बहुत बड़ा छल किया गया था। गुरु विरजानन्द जी ने उस समय पर क्षुब्ध होकर काशी के पण्डितों पर कटाक्षपूर्ण 'कलं काशी विदुषमती' शीर्षक से कुछ श्लोकों की रचना की थी। उसी परम्परानुसार आज भी ऐसे निन्दनीय लेख सत्य को छिपाते हुए लिख दिए जावें, यह कथमपि उचित नहीं।

ईश्वर विश्वासी अविचल दयानन्द ने यही कहा था—"ऐ बलदेव क्या चिन्ता है एक मैं हूं, एक ईश्वर है एक धर्म है और कौन है। भला ऐसा दृढ़ आस्तिक दयानन्द किसी के कागज के टुकड़े को देखकर काशी छोड़कर भागने वाला था, यह कैसी निराधार गप्प है।

लेखक महोदय को अपने इस निराधार लेख के लिए खेद प्रकाश करना चाहिए।

—प्रज्ञादेवी पाणिनी कन्या महाविद्यालय वाराणसी

दिल्ली के आर्य युवकों का शाखाध्यक्ष प्रशिक्षण शिविर

नई दिल्ली, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद दिल्ली प्रदेश के तत्वावधान में युवकों में सच्चरित्रता, देश-प्रेम, ब्रह्मचर्य पालन कर्त्तव्य पालन आदि भावनाएं जागृत करने के उद्देश्य से हंसराज माडल स्कूल पंजाबी बाग नई दिल्ली में २५ से दिसम्बर से १ जनवरी १९८२ तक "शाखाध्यक्ष प्रशिक्षण शिविर" का आयोजन किया गया।

शिविर में ब्रह्मचारी राज सिंह आर्य सुप्रसिद्ध सन्यासी स्वामी जगदीश्वरानंद, महात्मा प्रेम भिक्षु, श्री रविदत्त शास्त्री डा. देवव्रत आचार्य (व्यायामाचार्य) ने युवकों को शारीरिक व बौद्धिक मार्ग-दर्शन दिया।

शिविराध्यक्ष डा० देवव्रत ने शिविर समापन के दीक्षान्त समारोह में युवकों को सम्बोधित करते हुए उन्हें जन-जन तक आर्य समाज की गतिविधियां पहुंचाने का आह्वान किया। ब्र० राज सिंह आर्य (परिषद संचालक) ने शिविरार्थियों को देश व धर्म की सेवा की दीक्षा दी।

शिविर में दिल्ली के अतिरिक्त राजस्थान व हरियाणा के ३० युवकों ने भाग लिया। शिविर संयोजक श्री अनिल कुमार आर्य थे।

—चन्द्र मोहन आर्य
कार्यालय मंत्री

धर्म रक्षा महाभियान

हिन्दुओं का ह्रास

बम्बई—विश्व हिन्दू परिषद् बम्बई के कार्यालय सचिव श्री सुधानंद झा के अनुसार यदि भारत के पिछले १२०० वर्षों के इतिहास को देखा जाए तो ज्ञात होगा कि इस अवधि में किसी न किसी कारण से या तो करोड़ों हिन्दू मुसलमान बने हैं अथवा उन्होंने ईसाई धर्म स्वीकार किया है। इतना ही नहीं इन हिन्दुओं ने धर्म परिवर्तन करके केवल अपने धर्म से ही शत्रुता नहीं निभाई बल्कि राष्ट्र के शत्रु भी बने हैं। श्री झा के अनुसार पाकिस्तान और बंगला देश इसके उदाहरण हैं। भारत के उत्तर पूर्वी राज्यों में ईसाईयों द्वारा चले आ रहे षड्यन्त्र भी इस बात के स्पष्ट प्रमाण हैं।

श्री झा ने एक प्रैस विज्ञप्ति में कहा कि क्योंकि इस्लाम और ईसाईमत में अधिक सन्तानें पैदा करना धर्म सम्मत है इसी कारण प्रख्यात जनसंख्या विशेषज्ञ डाक्टर अग्रवाल के अनुसार १८८१ से १९४१ तक की काल अवधि में, जब धर्मान्तरण की क्रिया आज की भान्ति उग्र नहीं थी. हिन्दू केवल ४३.८ प्रतिशत ही बढ़े, जबकि मुस्लिम जनसंख्या में ९० प्रतिशत और ईसाई जनसंख्या में ३१८ प्रतिशत की आश्चर्यजनक वृद्धि हुई। १९४२ से १९८१ तक की कालावधि के आंकड़े उपलब्ध नहीं हैं, लेकिन वे भी हिन्दू जनसंख्या के क्रमिक ह्रास के उदाहरण की एक दयनीय तस्वीर पेश करने वाले ही होंगे इसमें कोई सन्देह नहीं।

—

आर्य समाज बम्बई में 3 शुद्धियां

बम्बई—आर्य समाज फोर्ट बम्बई में इस वर्ष के प्रथम सप्ताह में तीन विशिष्ट शुद्धि संस्कार संपन्न किए गए। बंबई की कु० नरगिस बानू उम्र २६ वर्ष वैदिक धर्म में दीक्षित होने के बाद कु० निर्मला आर्या बनीं। संयुक्त राज्य अमरीका की कु० जेनिथ हुरनाण्डीस वैदिक धर्म में दीक्षित होने के बाद कुमारी जया आर्या बनी और तीसरे बंबई के श्री के० डी० मिस्तरी पारसी श्री कृष्ण आर्य बने

—

असगर कृष्णकुमार बन गए

नई दिल्ली—युवा क्रान्ति परिषद् के संयोजक डा० आनन्द सुमन की प्रेरणा से सम्भल जिला मुरादाबाद के २१ वर्षीय मुस्लिम युवक श्री० असगर २ जनवरी १९८२ को आर्य समाज दीवान हाल में इस्लाम परित्याग कर वैदिक (हिन्दू धर्म में दीक्षित हो गए। उनका नया नाम कृष्ण कुमार आर्य रखा गया।

—

ईसाई युवक-युवती की शुद्धि एवं विवाह

लुधियाना—आर्य समाज स्वामी दयानन्द बाजार (दाल बाजार) लुधियाना में गत ३ जनवरी को साप्ताहिक सत्संग के पश्चात् एक ईसाई युवक श्री कामसिंह तथा ईसाई युवती कुमारी लक्ष्मी की शुद्धि करके उनकी स्वेच्छा पर उन्हें वैदिक धर्म में प्रविष्ट कराया गया। इसके पश्चात् वैदिक पद्धति से उन दोनों का विवाह संस्कार करा दिया गया।

यह शुद्धियां श्री राजेन्द्र जी गुप्ता की प्रेरणा पर हुई और इस अवसर पर बस्ती के श्री० मधु सूदन एवं अन्य कई महानुभाव उपस्थित थे। शुद्धि के पश्चात् सर्वश्री राजेन्द्र जी गुप्ता, रामजी दास (उपप्रधान) देसराज मेहता (मन्त्री) बुधबख्तराय जी (उपप्रधान) तथा ज्ञानी गुरदियालसिंह जी ने नव-दम्पति को आशीर्वाद दिया।

—

मुस्लिम युवती वैदिक धर्मी

भामीरथपुरा—आदर्श विवाह एवं शुद्धि मन्दिर भामीरथपुरा में गत ३० दिसम्बर को शमीमबानो नाम की युवती की शुद्धि की गई। शुद्धि के पश्चात् उस का विवाह संस्कार श्री रमेश वर्मा के साथ संपन्न हुआ। शुद्धि एव विवाह संस्कार आर्य पुरोहित श्री नाथूलाल जी वर्मा ने किया।

—

100 वर्ष बाद स्वधर्म में

बंबई—लगभग १०० वर्ष पूर्व धर्मान्ध के पीड़ित आदि शंकराचार्य परिवार के धर्मान्तरित सदस्य न्यूयार्क में वेद के प्रोफेसर डा० एम० के० अलेक्जेन्डर सुपुत्री कु० एजिमुएल की शुद्धि करके शीला नाम रखा गया। तथा उसका विवाह योग्य ब्राह्मण कुलोत्पन्न डा० प्रकाश मालवीय एम० ओ० बी० एस० के साथ दोनों कुलों की प्रसन्नतापूर्वक संस्तुति के साथ संपन्न हुआ। डा० अलेक्जेन्डर और उनकी पत्नी श्री दुबारा भारत आने पर पुनः शुद्ध होने की कामना करते हैं और यह कहते हुए प्रसन्नता है कि उनका कुलाचार आहार और संस्कृति की मर्यादा अभी भी सुरक्षित है।

—वसुमित्र शास्त्री, मन्त्री आ.वि. पार्क

—

(तीन पृष्ठ का शेष)

२६ जनवरी को गणतन्त्र दिवस पर बम्बई आर्य समाज सान्ताक्रूज के वार्षिक उत्सव पर धर्म रक्षा महाभियान का उद्घाटन करते हुए भाग्य नगर हैदराबाद के महान् बलिदानी देशभक्त वीरवर श्री रामचन्द्रराव वन्देमातरम् जी ने आपके सौम्य सत्याग्रह में पूर्ण योगदान देने का समर्थन करते हुये कहा था कि पवनार आश्रम की धीमी आवाज पर ध्यान देना चाहिए। गोमाता ने अब तक अपना बलिदान दिया है, अब बिना हमारे बलिदान के गाय बचेगी नहीं। अतः कोई व्यक्ति गरल पान करने की तैयारी करे, तभी सन्त विनोबा जी का संकल्प मूर्त रूप धारण करेगा।

गोवंश की रक्षा तथा गोहत्या बन्द करने के लिए सौम्य सत्याग्रह में भाग लेने से पूर्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान माननीय लाला रामगोपाल जी शालवाले के आचार्य श्रद्धेय विनोबा जी को भेजे गए पत्र की प्रतिलिपि।

मैंने उस समय बहुत सोच-विचार करके निर्णय लिया कि यह गरल पान आर्य समाज को ही करना चाहिए। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा ने मेरे जैसे साधारण मनुष्य को सर्वसम्मति से पूर्ण अधिकार देकर प्रधान पद पर आसीन किया है, अतः समूचे आर्य जगत् का प्रतीक होने के कारण मुझे ही गरल पान करके महर्षि दयानन्द और गान्धी जी तथा आपकी अन्तरात्मा की सन्तुष्टि के लिए बलिदान हेतु तैयार होना चाहिए।

यह पत्र प्रातः ब्राह्म मुहूर्त में परम पुनीत गायत्री माता की गोद में बैठकर सूचित करता हूं कि यदि २२ फरवरी तक सम्पूर्ण गोवंश की हत्या पर रोक लगाने के लिए लोक सभा से संविधान में संशोधन का आश्वासन न मिला तो मैं २३ फरवरी प्रातःकाल से आमरण अनशन पर बैठ जाऊंगा।

पूज्य विनोबा जी! मैं सब प्रकार के बन्धनों से मुक्त होकर ही आपकी सेवा में यह पत्र लिख रहा हूं। यह मेरा अन्तिम और दृढ़ निश्चय है। बिना बलिदान के गाय बचेगी नहीं।

मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप अवश्य आज्ञा प्रदान कर आशीर्वाद देंगे। मैं यह भी जानता हूं कि गोहत्या बन्द करके श्रीमती इन्दिरा गान्धी जी का शासन और अधिक स्थायी एवं सुदृढ़ होगा।

श्रद्धेय—आचार्य विनोबा भावे जी पवनार आश्रम, वार्धा (महाराष्ट्र)

आपका
—रामगोपाल शालवाला प्रधान

वानप्रस्थी की आवश्यकता

आर्य समाज कलकत्ता, १९ विधान सरणी कलकत्ता ६ के लिए एक निष्ठावान उत्साही आर्य समाजी अवकाश प्राप्त वानप्रस्थी की आवश्यकता है। उसे आर्य समाज के प्रचार का कार्यक्रम बनाना तथा उसे कार्यान्वित करने करवाने का उत्तरदायित्व लेना होगा। इसके अतिरिक्त आर्य समाज की चल अचल सम्पत्ति की देखभाल तथा कार्यालय निरीक्षक का कार्य भी करना होगा निवास की सुविधा के अतिरिक्त उचित सेवा की जायेगी।

—कृष्णलाल खट्टर मन्त्री
आर्य समाज कलकत्ता १९
विधान सरणी कलकत्ता-६

आवश्यकता है

(१) लड़का आयु २४ वर्ष कद ५ फुट ५ इंच, रंग गदमी, स्नातक, सरकारी कर्मचारी, मासिक वेतन ६०० रुपए के लिए लड़की की आवश्यकता है।

(२) लड़की आयु २२ वर्ष, कद ५ फुट २ इंच, रंग गधमी, बी. ए. प्रथम भाग, सलाई और कढ़ाई मे डिप्लोमा, पिता हरिजन आर्य सरकारी कर्मचारी दहेज न लेना न देना।" के लिए लड़के की आवश्यकता है।

—संतराम अग्रवाल प्रधान
आर्य समाज सैक्टर २२ ए
चण्डीगढ़।

स्वामी श्रद्धानंद बलिदान दिवस

आर्य समाज गुरदासपुर

आर्य समाज (मु. चि.) गुरदासपुर में दिनांक २०-१२-८१ को स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस स्वामी सुधात्मानन्द जी महाराज (हैदराबाद वालों) की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ। यज्ञोपरांत प्रिंसीपल अश्विनि कुमार जी का स्वा० श्रद्धानन्द जी के जीवन पर बड़ा ही प्रभावशाली प्रवचन हुआ। श्री वेद प्रकाश नन्दा, प्रधान आर्य समाज ने अपने विचार व्यक्त करते हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज को भाव भीनी श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर स्वा. सुधात्मानन्द जी अध्यक्षता में जिला भर के आर्य एवं डी. ए. वी. हायर सैकण्डरी स्कूल। हाई स्कूल के छात्र, छात्राओं की स्वा. श्रद्धानन्द भाषण प्रतियोगिता सम्पन्न हुई। जिसमें प्रि. अश्विनी कुमार, श्री कृष्ण लाल जाखूनी डिप्टी डी. इ. ओ. गुरदासपुर एवं श्री जगदीश राज कोहली संगीत आचार्य के निर्णयानुसार, आर्य युवक सभा आर्य समाज गुरदासपुर की टीम को प्रथम पुरस्कार (श्रद्धानन्द शील्ड) के लिए घोषित किया गया। डी. ए. वी. गर्ल्ज हाई स्कूल गुरदासपुर की टीम को द्वितीय घोषित किया गया। एवं चार उत्तम स्पीकर भी चुने गए।

स्वामी सुधात्मानन्द जी ने पुरस्कार वितरण से पहले विजयी छात्रों को आशीर्वाद दिया एवं सभी आर्यजनों को 'संस्कृत' पढ़ने का आह्वान किया ताकि हम अपनी संस्कृति को बचा कर स्वामी श्रद्धानन्द जी को सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित करें विजयी टीमों को शील्डें एवं मैडल प्रदान किए। आर्य समाज की तरफ से प्रत्येक छात्र, छात्रा को एक २ सत्यार्थ प्रकाश कर्त्तव्य दर्पण एवं अन्य आर्य उपयोगी साहित्य भी भेंट किया गया।

आर्य समाज साबुन बाजार लुधियाना

गत दिनों आर्य समाज साबुन बाजार में स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस बड़े उत्साह पूर्वक मनाया गया। प्रातः ८-३० बजे से ९-१५ तक यज्ञ महाशय जनपत राय जी ने करवाया। श्री नन्द लाल जी ने प्रभु भक्ति के गीतों द्वारा जनता को मोह लिया। तत्पश्चात आर्य विद्वान् श्री रामधन आर्य जी ने स्वामी श्रद्धानन्द जी बारे इतिहासिक घटनाएं बताईं एवं अपनी ओर से श्रद्धांजलि अर्पण की, इनके पश्चात वैद्य कुन्दन लाल जी, डा. राम स्वरूप जी, प्रि० वेद प्रकाश जी, और प्रधान श्री राजा राम जी ने स्वामी जी को अपनी ओर से श्रद्धांजलियां दीं।

स्वामी श्रद्धानन्द जी के शिष्य डा. अर्जुन देव जी बन्ना ने स्वामी श्रद्धानन्द जी के सम्बन्ध में जनता को बहुत कुछ बताया और अपनी ओर से श्रद्धांजली भेंट की।

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय

हरिद्वार २३-१२-८१ को गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय में समस्त कुलवासियों, हरिद्वार के गणमान्यवृन्द तथा जिला के अधिकांश अधिकारियों ने इसमें भाग लिया स्वामी श्रद्धानन्द द्वारा से प्रातः ८-३० पर शोभा यात्रा अमर शहीद स्वामी श्रद्धानन्द जी के गीतों के साथ निकाली गई। इसके बाद वेद मन्दिर में यज्ञ का कार्य सम्पन्न हुआ। वहीं पर वह एक सभा के रूप में परिवर्तित होकर स्वामी जी को विभिन्न विद्वानों ने श्रद्धांजली अर्पित की। छात्रों को स्वामी जी की कृतियों एवं उनके त्याग, उनका स्वतन्त्रता आन्दोलन में सहयोग आदि पर प्रकाश डाला गया।

जैसा कि सभी को मालूम ही है कि इस विश्वविद्यालय ने निकटस्थ ग्राम जगजीतपुर तथा जमालपुर अंगीकृत किए हुए हैं और एन० एस० एस० प्रोग्राम के अन्तर्गत विशेषकर हरिजनों को एवं गरीबों को ऊंचा उठाने का संकल्प लिया हुआ है तदनुसार श्रीमान् जिलाधीश सहारनपुर, अतिरिक्त जिलाधीश विकास तथा अन्य जिले के अधिकारी भी इस कार्य में अपना सहयोग दे रहे हैं। श्री जिलाधीश महोदय ने हरिजन बच्चों को जो कि स्वास्थ्य विभाग की सहायता से बच्चों की नुमायश में अच्छे पाए गए उनमें ६ को पुरस्कार वितरित किए गए। आगामी मास में जो परिवार परिवार नियोजन में आदर्श माना जाएगा उसे भी इनाम देने की घोषणा विश्वविद्यालय की ओर से की गई। श्री जिलाधीश महोदय ने हरिजनों के सहायी एवं अनुदान आदि सम्बन्धी धन भी चैक के रूप में वितरित करवाया : उन्हें भविष्य में भी उद्योगों हेतु ऋण देने का आश्वासन भी दिया। सभा समाप्ति के बाद सभी ने एक साथ बैठकर लगभग ४००-५०० व्यक्तियों ने जिसमें जिलाधीश श्री के. एन. सिंह, प्रो. राम प्रसाद वेदालंकार, उप-कुलपति, कुल सचिव श्री श्री हीरा, वित्ताधिकारी श्री कपूर, सहा० मुख्याधिष्ठाता श्री जिलेन्द्र, चिकित्साधिकारी श्री हैदर आदि सभी कुलवासियों तथा हरिजनों ने एक साथ बैठ कर भोजन किया। भोजन हरिजनों द्वारा ही परोसा गया और सभी ने एकता एवं स्नेह मिलन के साथ बैठ कर भोजन किया। यह देश एवं समाज के लिए आवश्यक कदम था जो स्वामी श्रद्धानन्द जी की पुण्य तिथि पर सोत्साह सम्पन्न हुआ। एन. एस. एस, का संचालन मेजर अरोड़ा कर रहे हैं।

दयानन्द स्मारक ट्रस्ट, टंकारा

२३ दिसम्बर को महर्षि दयानन्द स्मारक ट्रस्ट टंकारा में "स्वामी श्रद्धानन्द का ५५ वां बलिदान दिवस श्री भला भाया मड़वी की अध्यक्षता व श्री हरिओ३म् सि. आचार्य के संयोजकत्व में सोल्लास मनाया गया। जिस में अनेकानेक भजनों व श्रद्धांजलियों के अतिरिक्त टंकारा के अनेकों विशिष्ट आर्य नरनारियों की उपस्थिति में हुई उपदेशक विद्यालय के विद्यार्थियों की प्रतियोगिता का विशेष आकर्षण रहा। निर्णायक श्री हरिओ३म् सि. आचार्य व श्री हंसमुखभाई परमार थे। उच्च श्रेणी के विजेताओं में सर्व श्री प्रकाश चन्द्र श्री चन्द्र प्रकाश ने क्रमशः प्रथम और द्वितीय स्थान एवं निम्न श्रेणी में श्री राजेन्द्र कुमार ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। अनेकों महानुभावों की श्रद्धांजली के पश्चात श्री मनमोहन जी शास्त्री व श्री अजय कुमार जी ने क्रमशः स्वामी जी के अधूरे कार्यों पर चलने की व गुरुकुल के स्नातकों के आदर्शों पर चलने की प्रेरणा दी। पश्चात श्री हरिओ३म् सि. आचार्य ने कहा कि सभी पुराने राजनैतिक व देश के नेताओं के एक-एक गुणों को मिलाकर यदि कोई आकृति बनाई जाए तो वह स्वामी श्रद्धानन्द की ही होगी क्योंकि वे गुणों के पुञ्ज थे :

शहीदों की स्मृति में कार्यक्रम

दिल्ली. केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् भगत सिंह वर्ग (सब्जी मण्डी) के युवकों ने शहीद राम प्रसाद "बिस्मिल" अशफाक, भाई परमानन्द, स्वामी श्रद्धानन्द की स्मृति में "शहीद दिवस" मनाया गया।

स्त्री समाज दयानन्द वाटिका द्वारा इस अवसर पर यज्ञ हुआ तथा समाज की प्रधाना माता वीरावती ने शहीदों के संस्मरण व गीत सुनाए।

भारत सरकार से मांग की गई कि देश की आजादी के लिए मर मिटने वाले क्रान्तिकारियों की जीवनियां देश भर के स्कूल व कालिजों के पाठ्यक्रमों में संकलित की जाए।

स्वामी श्रद्धानन्द शोभायात्रा

नई दिल्ली, अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द की ५५ वीं जयंती पर परिषद् के २०५ आर्य युवकों ने एक वेशभूषा में जलूस के आगे-२ जनता को मोहित किया। जहां केन्द्रीय आर्य युवक परिषद, दिल्ली प्रदेश के युवक घोड़ों पर सुशोभित थे, वहां योगासन, लाठी, तलवार, जूडो-कराटे, बाक्सिंग, जिम्नास्टिक के रोमांचक प्रदर्शन आकर्षक रहे।

परिषद् की अद्भुत व्यायाम क्रियाओं को देखकर सार्वदेशिक सभा के प्रधान श्री राम गोपाल शाल वाले ने परिषद् के महामंत्री श्री अनिल कुमार आर्य व्यायाम शिक्षक श्री मुन्ना लाल पहलवान, श्री जगदीश लाल का पुष्पाहारों द्वारा अभिनन्दन किया व परिषद् की सराहना करते हुए, उन्हें आशीर्वाद दिया।

स्वामी श्रद्धानन्द के सपनों को साकार करने के उद्देश्य हंसराज माडल स्कूल पंजाबी बाग में अगले ही के दिन शरदकालीन आवासीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन डा. देवव्रत आचार्य जी की अध्यक्षता में लगाया गया। शास्त्रार्थ महारथी राम दयालु शास्त्री की मृत्यु पर शोक व्यक्त किया गया। गत दिसम्बर १९८० में परिषद् के तत्वावधान में शंकराचार्य निरंजन देव तीर्थ से अमर स्वामी जी महाराज के शास्त्रार्थ में उनका सराहनीय सहयोग रहा।

—चन्द्र मोहन आर्य

—

शुभ सूचना

समस्त आर्य जगत को यह सूचना देते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है कि मेरे पुत्र चि० अशोक कुमार का शुभ विवाह ११ फरवरी को महर्षि दयानन्द स्मृति भवन, जोधपुर में सम्पन्न होगा। सभी आर्य पुरुष सादर आमंत्रित हैं। वरवधू आपके आशीर्वाद के इच्छुक हैं।

—डा. भवानी लाल भारतीय
अध्यक्ष, दयानन्द अनुसंधान पीठ,
पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़।

आर्य प्र. नि. सभा पंजाब द्वारा प्रकाशित तथा प्रसारित साहित्य की पुस्तकें

१.	सत्यार्थ प्रकाश हिन्दी,	४—५०
२.	,, (उर्दू)	१०—००
३.	,, अंग्रेजी	२०—००
४.	आर्य समाज-अतीत की उपलब्धियां तथा भविष्य के प्रश्न —ले०—डा० भवानीलाल भारतीय	१०—००
५.	पंजाब का आर्य समाज ले०—प्रि० रामचन्द्र जावेद	४—००
६.	विजिम्पसज फराम सत्यार्थ प्रकाश (अंग्रेजी) —ले० डी० एन० वासुदेव जी	३—००
७.	स्वामी श्रद्धानन्द (अंग्रेजी) —ले० श्री के० एन० कपूर जी	५—००
८.	स्वामी श्रद्धानन्द उपदेश माला	०—२५
९.	पोलीटीकल टैस्टामैंट आफ स्वामी श्रद्धानन्द	०—२५
१०.	जन्म साखी (ले० ज्ञानी पिण्डीदास जी)	२—००
११.	सिक्ख गुरु अते आर्य सिद्धान्त (पंजाबी) —ले० स्वामी स्वतन्त्रतानन्द जी सरस्वती	२—५०
१२.	आर्य समाज दा दिग्दर्शन (पंजाबी) ले०—आचार्य पृथ्वीसिंह आजाद	२—००
१३.	वेद और उनका प्रादुर्भाव —ले० महात्मा नारायण स्वामी जी महाराज	१०—०० सैंकड़ा
१४.	आधुनिक हरिजन समस्या	०—७५
१५.	भागवत खण्डनम् —ले० स्वामी दयानन्द जी सरस्वती	०—५०
१६.	मोहारिकाबाद और उपनिषद् (ले० पं. चमूपति)	००—२५
१७.	वीतराग स्वामी स्वतन्त्रतानन्द —ले० श्री राजेन्द्र जी जिज्ञासु	१—००
१८.	हमारी राष्ट्रभाषा हिन्दी —ले० ज्ञानी पिंडीदास जी	०—२५
१९.	प्रिंसिपल्स आफ आर्य समाज अंग्रेजी. —ले० श्री पूर्णचन्द्र जी एडवोकेट	२—००
२०.	महर्षि दयानन्द (जिल्दबन्द)	३—००
२१.	संस्कार विधि —ले० स्वामी दयानन्द जी सरस्वती	४—५०
२२.	आर्य पर्व पद्धति —ले० श्री पं० भवानी प्रसाद	५—००
२३.	दुआ किस की —ले० श्री राम गोपाल शालवाले	०—२५
२४.	आर्य समाज ,, ,,	०—३०
२५.	सत्य की मंजिल सेवा की राह —ले० श्री राम जोशी	१०—००
२६.	बाल सत्यार्थ प्रकाश ले० प्रोफैसर विश्वनाथ विद्यालंकार वेदोपाध्याय गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार,	३—००
२७.	धर्मस्वातन्त्र्य विधेयक क्यों? ले० रघुनाथ प्रसाद पाठक	१—००
२८.	माण्डूक्योपनिषद् —ले० टीका म० नारायण स्वामी	०—३५
२९.	प्रभु भक्ति स्तोत —ले० लोकनाथ जी वाचस्पति	०—४०
३०.	धर्मवीर प. लेखराम —ले० स्वामी स्वतन्त्रानन्द	०—४०

आर्य मर्यादा के विशेषांक

१.	मेरी आत्मकथा के कुछ पृष्ठ —ले० आचार्य रामदेव जी	१—००
२.	स्वतन्त्रानन्द संस्मरणांक	१—५०
३.	वेद में पुनरुक्ति दोष नहीं	२—५०
४.	यजुर्वेदाध्याय का ३२वां स्वाध्याय	१—००
५.	अमर बलिदानी स्वामी श्रद्धानन्द जी	१—५०

नोट :—ओ३म के झंडे, तथा ओ३म के बैज भी उपलब्ध हैं।

प्राप्तिस्थान

व्यवस्थापक—चमूपति साहित्य प्रकाशन विभाग आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब, गुरुदत्त भवन चौक किशनपुरा जालन्धर—4

पलवल में आर्य वीर बौद्धिक प्रशिक्षण सम्पन्न

चौ. शिवराम वर्मा, मन्त्री हरियाणा द्वारा उद्घाटन

पलवल—आर्य वीर दल हरियाणा के तत्वावधान में आर्य वीर दल फरीदाबाद मण्डल द्वारा दो दिवसीय आर्य वीर बौद्धिक प्रशिक्षण शिविर का उद्घाटन स्थानीय आर्य समाज, जवाहर-नगर में शनिवार दिनांक ९ जनवरी को सायं २ बजे चौ० शिवराम वर्मा, मन्त्री दुग्ध एवं पशु पालन विभाग हरियाणा ने ओम् ध्वज फहरा कर बड़े हर्षोल्लास के वातावरण में किया।

शिविर में उपस्थित आर्य वीरों को सम्बोधित करते हुए उन्होंने कहा कि आज युवा पीढ़ी ही आर्य समाज की धूमिल होती हुई छवि को निखार सकती है। यह पथ भले ही कांटों भरा त्यागमय कठिन तथा तपस्यामय है परन्तु वीर पुरुष ऐसे ही रास्तों पर चलकर समाज के लिए प्रेरणा स्रोत बनते हैं। हमें इस रास्ते पर दिखाने के लिए नहीं अपितु ईमानदारी के साथ, साहस एवं धैर्य के साथ अविचलित रहते हुए निरन्तर आते रहना होगा।

समारोह में उपस्थित भारी जन-समूह ने करतल ध्वनि से उनके ओजस्वी विचारों का स्वागत किया तथा मुक्त कण्ठ से आर्य समाजी निर्भय विचारों की प्रशंसा की। मन्त्री महोदय ने व्यायाम शाला की सामग्री खरीदने हेतु ११००) की राशि भी सरकारी कोष से घोषित की।

शिविर में फरीदाबाद, बल्लभगढ़, होंच, पलवल आदि स्थानों से ५० आर्य वीरों ने भाग लिया। उन्हें सामाजिक तथा राष्ट्रीय समस्याओं, आचार, विचार व्यवहार आदि की सामान्य बातों से अवगत करवाया गया तथा कुछ अच्छी आदतों की प्रतिज्ञाएं भी करवाई गई। उनकी निर्मूल शंकाओं का समाधान भी किया गया। इस अल्पकालीन शिविर की उनके जीवन पर अमिट छाप पड़ी। उन्हें सन्ध्या, यज्ञ तथा दैनिक व्यायाम का महत्त्व बतलाते हुए सभी कार्य समयानुसार करवाए गये।

शिविर का शिक्षण कार्य श्री सत्यपाल जी आर्य, शिक्षक, आर्य वीर दल हरियाणा ने तथा बौद्धिक विचार माननीय बालदिवाकर जी हंस, प्रधान सार्वदेशिक आर्य वीर दल ने दो दिन लगातार आर्य वीरों के मध्य रहकर दिए। भोजन एवं अन्य व्यवस्थाओं में श्री टेकचन्द आर्य, श्री वीरभान आर्य, श्री नरेन्द्र कुमार, श्री वेद प्रकाश आर्य आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

शिविर का समापन रविवार दिनांक १० जनवरी को दोपहर बाद माननीय हंस जी द्वारा ध्वजावतरण के साथ हुआ।

—अजीत कुमार आर्य,
मन्त्री, आर्य वीर दल हरियाणा

कन्या गुरुकुल हाथरस का हीरक जयन्ती उत्सव

हाथरस। कन्या गुरुकुल महाविद्यालय हाथरस (अलीगढ़) का वार्षिकोत्सव (हीरक जयन्ती वर्ष) का समापन २९ जनवरी से १ फरवरी को गुरुकुल भूमि में हुआ। जिसमें सन्यासियों एवं महोपदेशकों के व्याख्यान तथा भजन, ब्रह्मचारिणीयों के संस्कृत एवं हिन्दी में भाषण, संवाद एवं वाद-विवाद, वेद मन्त्रों तथा श्लोकों से अन्त्याक्षरी, आसन, योगासन व्यायाम आदि और राष्ट्रहित सम्मेलन, कवि सम्मेलन, संगीत सम्मेलन, कला प्रदर्शनी, स्वास्थ्य प्रदर्शनी, शंका-समाधान आदि का कार्यक्रम रहे।

दीक्षान्त समारोह शनिवार ३० जनवरी को प्रातः १० बजे हुआ जिसमें उ. प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्री विश्वनाथ प्रतापसिंह को दीक्षान्त भाषण के लिए आमन्त्रित किया गया था पारितोषिक वितरण समारोह के लिए केन्द्रीय राज्य मन्त्री श्रीमती शीला कौल को आमन्त्रित किया गया।

नवीन कन्याओं का प्रवेश तथा वेदारम्भ संस्कार १ फरवरी को हुआ। विशेष आमन्त्रित अतिथियों में सर्वश्री स्वामी काव्यानन्द जी. स्वामी मुनीश्वरानन्द जी, राजर्षि रणञ्जयसिंह (सभा प्रधान) एवं श्री कैलाशनाथसिंह (सभा-मन्त्री) माननीय सत्यदेव भारद्वाज, (अफ्रीका) आचार्य जैमिनी शास्त्री, प्रो. रतनसिंह, पं० ओ३म् प्रकाश शास्त्री, श्री बलबीरसिंह बेधड़क तथा श्री मनवीरसिंह आर्य भजनोपदेशक शामिल हुए।

मुख्याधिष्ठात्री अक्षयकुमारी शास्त्री के अनुसार यात्रियों के ठहरने का प्रबन्ध गुरुकुल में हुआ।

आर्य युवक सभा का सराहनीय प्रयास

आर्य युवक सभा जी, टी रोड फिरोजपुर छावनी द्वारा सत्यार्थ प्रकाश महापुरुषों की जीवनियो वर्तमान की ज्वलत समस्याओं व सामान्य ज्ञान के प्रश्नो पर आधारित एक कार्यक्रम प्रारम्भ किया गया है। २७ दिसम्बर १९८१ को इस श्रृंखला के आठवें कार्यक्रम के सफल समापन के पश्चात सभी आठ कार्यक्रमो मे अधिक अक प्राप्त करने वालों के परिणाम घोषित किए गए, जो कि इस प्रकार हैं :—

प्रथम—श्री राकेश कुमार, द्वितीय श्री प्रमोद कुमार, तृतीय श्री रुपेश आर्य।

यह कार्यक्रम हर रविवार सायकाल ५-०० बजे से ६-०० बजे तक होता है। इस कार्यक्रम के सचालक श्री सुरेन्द्र गुप्ता, उप मन्त्री आर्य युवक सभा, फिरोजपुर छावनी है। आर्य युवक सभा का साप्ताहिक सत्सग हर सोमवार सायकाल ५-३० से ६-३० तक आर्य समाज मन्दिर जी.टी.रोड में होता है।

मन्त्री - देवराज दत्ता

संस्कृत भाषा की आवश्यकता

आर्य समाज सरहन्दी गेट पटियाला की गत ३ जनवरी की बैठक में सर्व-सम्मति से निम्न प्रस्ताव पारित किया गया। संस्कृत भाषा संसार की अन्य सभी भाषाओ की जननी है। मानवमात्र के कल्याण के लिए आवश्यक ज्ञान के भण्डार वेद, शास्त्र, उपनिषद आदि सभी ग्रन्थ संस्कृत भाषा मे ही हैं। वेद, शास्त्र, उपनिषद आदि ग्रन्थ ज्ञान के ऐसे समुद्र हैं। कि एक गोता लगाने से अनेक रत्न प्राप्त होते हैं। एकमात्र सस्कृत ही ऐसी भाषा है जो पूर्ण वैज्ञानिक है। सृष्टि के आरम्भ से लेकर अढ़ाई तीन हजार वर्ष पूर्व तक सदा ही सारे ससार की मातृभाषा संस्कृत ही तो रही है। अतः सस्कृत ही तो रही है। अत: संस्कृत भाषा का पढ़ना सभी विद्यार्थियों के लिए अनिवार्य होना चाहिए।

हिन्दू सिख दोनों के गुरु सस्कृत भाषा के महत्व को समझते हुए इसके प्रसार पर बल देते रहे हैं। इसके बावजूद पजाब में सस्कृत भाषा की उपेक्षा की जा रही है। सरकारी स्कूलों में सस्कृत पढ़ाने की कोई व्यवस्था नही है। पटियाला के सरकारी संस्कृत महाविद्यालय में जहां सस्कृत के अध्यापक रखे होने चाहिएं थे यहा पर भी संस्कृत के अध्यापक नहीं रखे हैं।

अतः पजाब की जनता से अनुरोध है कि वे संस्कृत भाषा को अधिक से अधिक अपनाएं तथा सरकार से सस्कृत के पढाने के उचित प्रबन्ध की माग करें।

—प्रो. कृष्णचन्द्र
आर्य समाज सरहन्दी गेट पटियाला

धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस

आर्य समाज सरोजिनी नगर और अखिल भारतीय हकीकत राय सेवा समिति नई दिल्ली की ओर से धर्मवीर हकीकत राय बलिदान दिवस (बसन्त मेला) रविवार ३१ जनवरी १९८२ को प्रातः ९ बजे से दोपहर २ बजे तक हकीकत राय हाल आर्य समाज मन्दिर वाई ब्लाक, सरोजिनी नगर, नई दिल्ली में बड़े समारोह पूर्वक मनाया गया, प्रातः ९ बजे से १० बजे तक बच्चों की प्रतियोगिता हुई जिसके संयोजक प. देवव्रत धर्मेन्दु आर्योपदेशक थे। १२ बजे से १-३० बजे तक श्रद्धांजलि सभा ला० राम गोपाल शाल वाले (वानप्रस्थ) प्रधान सार्वदेशिक सभा की अध्यक्षता में हुई जिसमे अनेक आर्य नेता, विद्वान पधारे थे। १-३० बजे प्रीति भोज हुआ।

—रोशनलाल गुप्ता मन्त्री
आर्य समाज, विनय नगर, नई दिल्ली

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वर्ष 14, अंक 43, 3 फाल्गुन सम्वत् 2039, तदनुसार 14 फरवरी 1982, दयानन्दाब्द 156। एक प्रति 35 पैसे (वार्षिक शुल्क 15 रुपए)

गोहत्या बन्दी हिन्दू समाज के लिए जीवन मरण का प्रश्न

पंजाब भर की आर्य समाजे पूरी शक्ति के साथ गो-रक्षा आन्दोलन में कूद पड़ीं

सर्वत्र यज्ञानुष्ठान और उपवासों की धूम · महिलाओं व नवयुवकों में विशेष उत्साह कांग्रेस (इ) नेताओं सहित अनेक संगठन मैदान में

जालन्धर, (कार्यालय प्रतिनिधि)—आचार्य विनोबा भावे की प्रेरणा पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अध्यक्ष लाला राम गोपाल शालवाले के आदेशानुसार आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के प्रधान श्री वीरेन्द्र जी के आह्वान पर गो-रक्षा सौम्य सत्याग्रह प्रदेश भर मे व्यापक स्तर पर फैल गया है। विभिन्न नगरो से प्राप्त समाचारो के अनुसार आर्य समाज सर्वत्र अगुआ बन कर गो-हत्या बन्दी सौम्य सत्याग्रह में प्रभावी भूमिका निभा रहा है। सभा के आदेश पर गो-रक्षा का जीवन मरण का प्रश्न मानते हुए लाखो की संख्या मे आर्यजन भारी उत्साह के साथ इस आदोलन मे कूद पड़े।

पजाब के विभिन्न नगरो से हमारे संवाददाताओ ने प्रेषित समाचारों मे कहा कि विगत ३० जनवरी से प्रारम्भ गो-हत्या बंदी सत्याग्रह के अन्तर्गत निर्धारित कार्यक्रमानुसार लगभग सभी आर्य समाजो मे प्रतिदिन यज्ञ उपरान्त ६ से ११ की संख्या में अनशनकारी २४ घंटे के क्रमिक उपवास पर बैठ जाते हैं। समाचार के अनुसार प्रतिदिन सत्याग्रहियो की संख्या में बढोतरी हो रही है और आर्यों मे भारी उत्साह पाया जा रहा है।

ऋषि बोधोत्सव २२ फरवरी तक चलने वाले इस सत्याग्रह के लिए महिलाओ व युवको मे विशेष उत्साह देखने को मिल रहा है और ऐसा प्रतीत होता है कि पूरे पजाब मे यह लहर विशेष बल पकड़ गई है।

स्थानीय हिन्द समाचार मैदान मे आर्य वीर दल जालन्धर के तत्वावधान में ३० जनवरी को सत्याग्रह के प्रथम दिन ही अनशनकारियो का दल गो माता की जय के घोष लगाते हुए उपवास पर बैठा। इसमे पूर्व यज्ञ का आयोजन किया गया जिसमे सेठ शिवचन्द जी यजमान बने यह यज्ञ पण्डित श्री धर्मदेव आर्य के पुरोहित्य मे सम्पन्न हुआ। इस में आर्य वीर दल पजाब के अधिष्ठाता श्री ऋषिपाल सिंह एडवोकेट, आर्य समाज मोहल्ला गोबिन्दगढ के प्रधान श्री अमृतलाल कक्कड़, आर्य वीर दल के शिक्षक श्री सर्वेश्वनाथ पहलवान, पजाब केसरी व हिन्द समाचार के सचालक श्री रमेश, आर्य नेता श्री चतुर्भुज मित्तल, श्री सत्यदेव शर्मा, पं० सीताराम पाठक आदि अनेक गोभक्तो ने भाग लिया। पडाल मे प्रतिदिन प्रात एव साय दोनो समय यज्ञ होता है। जिसमे सत्याग्रहियो के अतिरिक्त अनेक गोभक्त भी उपस्थित रहते हैं। इसी प्रकार नगर की महर्षि दयानन्द बस्ती गुजा विक्रमपुरा, अड्डा होशियारपुर, माडल टाऊन, इम मोहल्ला, बस्ती दानिशमन्दा, आर्यनगर कैंप आदि अनेक आर्य समाजो के सदस्य इसमे बढ चढकर भाग ले रहे हैं।

इसके अतिरिक्त श्री जसवन्तराय 'राय वानप्रस्थी, आर्य वीर दल पजाब के सचालक श्री मुल्कराज आर्य तथा माता वेदवती भल्ला, श्री शादीराम जी जोशी, श्री स्वर्णदास, श्री वेद प्रकाश, श्री प० प्यारेलाल जी, श्रीमती फूलावती, श्री केवलकृष्ण आर्य, श्री अमरसिंह, श्री तारासिह श्री रमेश जी आर्य, श्री वेद-प्रकाश, श्री सेठी, श्री प्रवीण कुमार, श्री किशनदास श्री अशोक कुमार, श्री बलदेव सहाय कपिला, श्रीमती वेदवती कपिला, बहन सत्या शर्मा, श्री नरेन्द्र कुमार, श्री रोशनलाल जोशी, श्री ओम्प्रकाश सहगल श्री धर्मचन्द सह-परिवार बैठे, इनकी धर्मपत्नी आशारानी, सुपुत्री कु० सुनीता, सुपुत्र अनिल कुमार, अश्विनी कुमार, श्री ओम्प्रकाश शर्मा, माता लाजदेई शर्मा, श्रीमती शान्तरानी शर्मा, प० बनारसीदत्त, श्री जोगिन्द्रसिंह, श्री ओंकारचन्द, श्री दौलतराम कालिया, माता लाजदेई महाजन, माता वीरादेवी, माता कौशल्या देवी, श्री एम० के० शारदा मन्त्री खादी सेवा सघ, बहन कमला आर्या, प्रधाना स्त्री समाज पक्का बाग जालन्धर, श्रीमती विद्यावती जी कोहली, श्री देवेन्द्र प्रकाश, सैनी, श्री रखासिंह, श्री बजीरचन्द, श्री सोमनाथ, आदि अनेक गोभक्तो ने भी सपूर्ण गोवध पर प्रतिबन्ध की माग को लेकर उपवास किया।

गुरदासपुर स्थित हमारे सवाददाता श्री वेद प्रकाशनन्दा के अनुसार आर्य समाज (गुरुकुल विभाग) मे भी यह सत्याग्रह भारी उत्साह के साथ चल रहा है। वहा ३१ जनवरी से ४ फरवरी तक निम्न व्यक्तियो ने गो-रक्षार्थ उपवास मे भाग लिया—श्री सत्यपाल, श्री कुलभूषण श्री विनेश कुमार श्री अशोक कुमार, विजयेन्द्र श्री द्वारकानाथ, श्रीमती प्रेमवती, श्रीमती विमलादेवी, श्रीमती उषादेवी श्री जोगेन्द्र बोहरा, श्री भारत भूषण, श्री विकास, श्री प्रि० अश्विनी कुमारजी, श्री रणजीत कुमार, श्री गिरधारी लाल श्री मास्टर गिरधारी लाल श्री जगदीश राज, श्री चमन लाल, श्री आदर्श कुमार श्री बलदेव राज, श्री तिलक राज।

आर्य समाज दीनानगर में श्री ओम प्रकाश जी, ब्र० कर्मचन्द जी, श्री बुद्धराम जी, ब्र० धर्मीलाल, ब्र० सोमदेव जी, श्रीमती पूर्ण देई, श्रीमती राजरानी, श्रीमती ललिता कुमारी, श्रीमती शिवा देवी, श्रीमती वीरा देवी, सत्याग्रह पर बैठे।

भठिण्डा मे श्री ओम प्रकाश जी वानप्रस्थी श्रीमती परमेश्वरी देवी श्रीमती कौशल्या देवी कुमारी अनीता रानी, माता गुणावती, श्री बजीर चन्द श्री बाबूराम श्रीकृष्णकुमार, श्रीमती सीतादेवी श्रीमती कमला जी श्रीमती राजभार्गव, कु. ममता जी वेद प्रकाश जी इसी प्रकार सभी स्थानो पर सत्याग्रह आरम्भ है और सूचनाए निरन्तर आ रही है।

(शेष पृष्ठ ६ पर)

50 हजार मुस्लिम हिन्दू धर्म लौटेंगे

नई दिल्ली, (का प्र)—अखिल भारतीय क्षत्रिय महासभा के आगामी २७-२८ फरवरी को सिहरामऊ (जिला जौनपुर) मे हो रहे महाधिवेशन मे ५० हजार से अधिक मुस्लिम बन्धु पुन अपने स्वधर्म (हिन्दू धर्म) को ग्रहण करेंगे।

अखिल भारतीय युवा क्रान्ति परिषद के संयोजक एव नवाब छतारी के पौत्र डा आनन्द सुमन ने यहां एक विशेष भेंट मे बताया कि सिहरामऊ मे क्षत्रिय महाधिवेशन मे परिषद के सहयोग से पुनर्मिलन आत्मसात समारोह आयोजित किया जाएगा। जिसकी अध्यक्षता विश्व हिन्दू परिषद के अध्यक्ष महाराणा भगवत सिंह करेंगे। उन्होने बताया कि इस समारोह मे ५० हजार से अधिक उन मुस्लिम बन्धुओ ने जिन्होने किन्ही कारणो से इस्लाम ग्रहण कर लिया था, अब पुन अपना हिन्दुकरण करके अपने 'मूल घर' में लौट आएंगे। उन्होने बताया कि विराट हिन्दू सम्मेलन के अध्यक्ष डा कर्णसिंह के भी इस सम्मेलन मे उपस्थित होने की सम्भावना है।

डा सुमन ने बताया कि मुस्लिम बन्धुओ के हिन्दूकरण के इस अभियान मे परिषद के नेता राजा कुंवर श्रीपाल सिंह जी की विशेष भूमिका रहेगी।

जयशील परमेश्वर हमारे लिए सुखकारी हो

शं नो द्यावा पृथिवी पूर्वहुतौ शम-न्तरिक्षं दृशये नो अस्तु।

श न: ओषधीर्वनिनो भवन्तु शं नो रजसस्पतिरस्तु जिष्णु:।

(न: पूर्वहुतौ) प्रातः काल उठकर हमारे प्रथम आह्वान-पुकार में (द्यावा-पृथिवी) द्यु लोक और पृथ्वी लोक (शम्) सुखकारी हों (न: दृशये अन्तरिक्षम् शमस्तु) प्रात. काल उठकर जब हम अन्तरिक्ष की ओर देखें तो जो कुछ देखें वह सुखकारी हो। वनिन: ओषधी न: शम् अस्तु) वनो में लहलहाती हुई औषधियां हमारे लिए सुखकारी हो (रजसस्पति:) लोक-लोकान्तर की रजरज का पति (जिष्णु:) जयशील-जिसकी जय का डंका सब जगह बज रहा हैं वह

सुरेशचन्द्र वेदालंकार, एम. ए. एल. टी

(न. शम् अस्तु) हमारे लिए सुखकारी हो।

सम्पूर्ण जगत् में एक ही तत्व काम कर रहा है, एक ही जीवन, एक ही सत्य वर्तमान है। हम सब उस दैवी प्रवाह की ओर जा रहे हैं जो ईश्वर तक जाता है। इस तरह का मनोभाव रखने से हमें एक अलौकिक प्रोत्साहन प्राप्त हो जाता है, हमारे मन का भय नष्ट हो जाता है।

जब हमारा ईश्वर के साथ इतना गहरा सम्बन्ध हो जाता है कि चारों ओर हमें वही दिखाई दे तब हमारी कमजोरी संकीर्णता, भीरुता, सन्देह अपने आप हम से विदा हो जाते हैं और हमे पूर्ण निर्भयता और शक्ति प्राप्त होती है, जिनका उद्गम खास परमात्मा से है। मनुष्य जितना प्रभु की समीपता प्राप्त करेगा उतना ही उसकी आत्मा में जीवन सत्य, सौन्दर्य के तत्वों का विकास होगा उसकी आत्मा रूपी शक्ति, नये साहस के संचार से ही हरी भरी होकर खिल उठेगी।

वेद सुधा

तालाब में कंकड़ फेंकने से जैसे एक के बाद दूसरी लहर उठती है वैसे ही मनुष्य के मन में एक के बाद दूसरी कामनाएं उठती रहती हैं। उसकी इच्छाओं की परम्परा कभी समाप्त नहीं होती है और हम जब अपने को उनकी पूर्ति में असक्षम पाते हैं तो प्रभु से प्रार्थना करते हैं। पर. परमेश्वर इन प्रार्थनाओं को स्वयं पूरा नहीं करता। पूरा तो हमें स्वयं करना होता है और पूरा करने के लिए हमें अपने को योग्य बनाता होता है। हम कब योग्य बन सकते हैं?

तालाब में कंकड़ फेंकने से जैसे एक के बाद दूसरी लहर उठती है वैसे ही मनुष्य के मन में एक के बाद दूसरी कामनाएं उठती रहती हैं? उसकी इच्छाओं की परम्परा कभी समाप्त नहीं होती हैं और हम जब अपने को उनकी पूर्ति में असक्षम पाते हैं तो प्रभु से प्रार्थना करते हैं। पर, परमेश्वर इन प्रार्थनाओं को स्वयं पूरा नहीं करता। पूरा तो हमें स्वयं करना होता है और पूरा करने के लिए हमें अपने को योग्य बनाना होता है। हम कब योग्य बन सकते हैं? जब हम परमात्मा के अत्यन्त समीप पहुंच जाते हैं। जब प्रभु को अपने हृदय का वासी बना लेते हैं। हमारा हृदय प्रभु के निवास के लिए स्थायी रूप से स्थान दे देता हैं। प्रभु इस घर में एक अतिथि की तरह न आकर घर के स्वामी की भान्ति रहने लगते हैं। प्रभु को स्थायी रूप से बसाने के लिये हमें सत्याचरण, उदारता धारण करनी होगी और परिश्रमी तथा कर्त्तव्य पूर्ण करने वाला होना पड़ेगा।

जब मनुष्य ईश्वर से अलग हो जाता है तब मनुष्य का जीवन शैतानियत और दुःखों से भर जाता है। तब उसके पांव कल्याण के मार्ग से हटकर पतन के मार्ग की ओर जाने लगते हैं और उसके विचार अशुभ मार्ग पर चल पड़ते हैं। सच तो यह है कि ईश्वर के प्रकाश में कदम रखते ही मनुष्य की दुर्बलता सब पाप सूर्य के सामने अन्धकार की तरह नष्ट हो जाते हैं। बस एक सम्पूर्ण हृदय से ईश्वर में विश्वास करो, उसके पास जाओ, वह अपने अनुपम सौन्दर्य, अतुलनीय आनन्द और अनन्त उज्ज्वलता से आपको सुन्दर आनन्दमय और शुभ्र बना देगा। अतः इस मन्त्र में कहा गया है, हे सच्चिदानन्द प्रभो! प्रातः काल आंख खुलते ही हमारी पहली पुकार यह हो कि द्यु लोक और पृथ्वी लोक हमारे लिये सुखकारी हों, आंख खुलते ही दिव्य आभ से आलोकित अन्तरिक्ष की ओर दृष्टिपात करें तो हमारी पहली पुकार यही हो कि हमें अन्तरिक्ष में सुख ही सुख दीखे, औषधियां हमारे लिये कल्याणकारी हों, हे विश्व के रज-रज में कण कण में व्यापक, पत्ते-पत्ते में विद्यमान सबको नियमों की परिधि में स्थिर रहकर चलाने वाले महाज्ञानी नियन्ता, विश्व के विजेता प्रभु! आपकी कृपा से हमारे चारों ओर सुख की वर्षा होती रहे।

(१७५ जाफरा बाजार गोरखपुर)

आर्यसमाजें तथा शिक्षण संस्थाएं विशेषांक का आर्डर शीघ्र भेजें

सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी की इच्छा है कि आर्यसमाज के सब से महान् पर्व स्थापना दिवस पर आर्य मर्यादा का एक ऐसा विशेषांक प्रकाशित किया जाए जिस के पढ़ने से परिचित अपरिचित, विद्वान् तथा सामान्य जन सभी आर्य समाज के विशुद्ध और व्यापक स्वरूप तथा इसके द्वारा किए गए तथा किए जा रहे कार्यों का बोध प्राप्त कर सकें और इस की उपयोगिता और महत्ता को समझ सकें। इस लिए हमने अपने पूज्य विरक्त महानुभावों, विद्वान लेखकों तथा कवि-वरों से लेख तथा रचनाएं भेजने के लिए प्रार्थना की है। हमें आशा है कि अपने अपने विषयों के सहयोग से आर्य मर्यादा का यह विशेषांक अत्युत्तम विचारोत्तेजक एवं प्रेरणादायक पाठ्य सामग्री से भरपूर होगा।

प्रत्येक समाज और शिक्षण संस्था अपने लिए अभी से प्रतियां सुरक्षित करा लें ऐसा न हो कि बाद में हम उन की इच्छा पूर्ति न कर सकें।

इस विशेषांक का मूल्य कम से कम २ रुपए रखा जाएगा—हमारा यत्न होगा कि इससे मूल्य अधिक न हो। अपने अपने आदेश शीघ्र भेजिए। निम्न-लिखित विषयों पर लेख मांगे गए हैं।

१- आर्य समाज का स्वरूप
२- आर्य समाज की मान्यताएं
३- समाज सुधार और आर्य समाज
४- आर्य समाज की हिन्दी सेवा
५- दलितोद्धार का कार्य तथा आर्य समाज
६- वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज की आवश्यकता?
७- आर्य समाज की राष्ट्र सेवा
८- आर्य समाज के शहीद
९- शिक्षा और आर्य समाज
१०- आर्य समाज की संस्थाएं तथा उनकी उपयोगिता
११- गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का महत्व
१२- वेद के प्रति आर्य समाज का दृष्टिकोण
१३- आज के हालात में आर्य समाज का कार्यक्रम क्या हो?
१४- मर्यादा पालक श्री राम जी का विशुद्ध स्वरूप
१५- सम्प्रदायवाद का शत्रु आर्यसमाज
१६- मानवता का प्रचारक आर्यसमाज
१७- स्त्री शिक्षा में आर्य समाज का योगदान

—ओम्प्रकाश आर्य
सभा कार्यालयाध्यक्ष

ओ३म

आर्य मर्यादा

सम्पादकीय–

हमारी बरनाला यात्रा

मैं पीछे घोषित कर चुका हू कि मैं अब समय मिलने पर सभा से सम्बन्धित सस्थाओ को स्वय देखने का प्रयास करूगा। यह पहला अवसर मुझे ३०-३१ जनवरी को मिला।

सभा की सस्थाओ के बड़े केन्द्र लुधियाना, मोगा, नवाशहर तथा दीनानगर हैं। उनके पश्चात बरनाला का स्थान है। यहा सभा का एक प्रभावी यूनिवर्सिटी से सम्बन्धित डिग्री महिला कालिज, एक मान्यता प्राप्त हाई स्कूल, एक केन्द्रीय स्कूल तथा कई छोटे-छोटे माडल स्कूल हैं। वैसे भी बरनाला जिला सगरूर का एक समृद्ध नगर है अच्छे प्रतिष्ठित तथा शिक्षित व्यक्ति यहा की समाज तथा उस की सस्थाओं से सम्बन्धित हैं

३० जनवरी को यहा के दयानन्द केन्द्रीय स्कूल का वार्षिक उत्सव था। सभा के नए उप प्रधान श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा एडवोकेट तथा मैं दोनो इस उत्सव के लिए आमन्त्रित थे। मैं कुछ अस्वस्थ था और कार्यक्रम की सूचना भी मुझे नहीं थी। किन्तु मैं उन के अनुरोध के कारण इस स्थिति मे भी केवल इस लिए कि इस प्रकार हम इस इलाके की शिक्षा सस्थाए देख सकेंगे मैंने बरनाला जाना मान लिया।

३० जनवरी को हम डेढ बजे पश्चात् मध्यान्होत्तर कार द्वारा चल पड़े। मार्ग मे थोड़ा समय रायकोट मे स्वामी गगा गिरि गर्ल्ज कालिज मे रुक कर हम लगभग सवा पाच बजे बरनाला पहुच गए। ६ बजे साय दयानन्द केन्द्रीय स्कूल का उत्सव था। सभी सस्थाओ से सम्बन्धित अधिकारियो के दर्शन पाकर हमे बहुत प्रसन्नता हुई। समाज के प्रधान श्री निहालचन्द जिन्दल, गांधी आर्य हाई स्कूल के प्रधान श्री तमसुख राय जी, दयानन्द केन्द्रीय स्कूल के प्रधान श्री राजकुमार वर्मा, लाल बहादुर शास्त्री महिला कालिज के उपप्रधान डा मोरी और मन्त्री श्री राजेन्द्र एडवोकेट उक्त कालिज की प्रिंसिपल कुमारी विमला जी छाबड़ा गांधी आर्य हाई स्कूल के हैडमास्टर श्री यश जी भाटिया दयानन्द केन्द्रीय स्कूल के प्रिंसिपल श्री कपिला, आर्य समाज के महाशय हुकम चन्द जी तथा वैद्य इन्द्रसेन जी के नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।

१० बजे तक स्कूल का कार्यक्रम चलता रहा। जो बहुत मनोरञ्जक था। नगर के प्राय प्रतिष्ठित महानुभाव उपस्थित थे और अन्त तक व इस कार्यक्रम से भाव-विभोर होते रहे। श्री अश्विनी कुमार जी शर्मा ने अध्यक्षता की और मैंने बच्चो मे पारितोषिक वितरण किये। स्कूल की प्रगति की रिपोर्ट पर हमने स्कूल प्रबन्धको को हार्दिक बधाई दी। बच्चों की सख्या अब इस स्कूल मे चार सौ हो गई है, इस स्कूल के मिडल परीक्षा के परिणाम बहुत शानदार थे।

चूंकि हमारी इच्छा बरनाला की सब आर्य सस्थाओ को देखने की थी, इसलिए हमने प्रात होते ही पहले गांधी आर्य हाई स्कूल देखा, स्कूल का भवन बड़ा विस्तृत है। यहा प्रविष्ट होते ही इस स्कूल का कन्या विभाग है। उसके आगे लड़कों का स्कूल विभाग, फिर केन्द्रीय स्कूल और बाद मे दयानन्द बाल वाटिका है। यह सब सस्थाए अलग २ होकर भी एक बड़े भवन मे जुदा-जुदा लगती हैं जिसमें एक सौ बीस से अधिक कमरे हैं और सब का प्रबन्ध और देख रेख हमारे भाई श्री यश भाटिया करते हैं। उनके स्कूल को इलाका मे अच्छी ख्याति और मान-सम्मान है। उनके काम की भी बहुत प्रशसा है। बच्चो की सख्या अठारह सौ है। इन सब सस्थाओ की प्रगति का श्रेय उनको ही जाता है।

स्कूलों से निकल कर हम प्रिंसिपल बहिन विमला जी छाबड़ा के साथ उनका लाल बहादुर शास्त्री गर्ल्ज कालिज देखने गये। यह कालिज मैं पहले भी एक बार प्रधान जी के साथ देख चुका हू। स्थान पर्याप्त है, भवन निर्माण का कार्य सीमेंट न मिलने के कारण रुका पड़ा है। कन्याओं की सख्या तीन सौ से अधिक है। आशा है कि कालिज उनकी देख रेख मे पर्याप्त प्रगति करेगा।

उसके पश्चात् हम समाज मन्दिर देखने गये, भवन बहुत अच्छा बना हुआ है। सड़क पर दो दुकानें किराया पर चढ़ी हुई हैं ऊपर एक छोटा सा माडल स्कूल चल रहा है। इतनी सस्थाओ के होते हुए भी सत्सगो मे उपस्थिति सब स्थानो की भान्ति कोई सन्तोषजनक नही। मैंने अधिकारी वर्ग को समाज मे अच्छा पुस्तकालय और वाचनालय चलाने की प्रार्थना की और समाज मे रौनक बढ़ाने के लिए सस्थाओ से और अधिक लाभ उठाने की प्रेरणा की। पर्याप्त समय तक इस समाज मे भी झगड़े चलते रहे हैं अब समझौते तो हो गये हैं किन्तु अभी मुझे पूरा मेल हुआ नही लगा। अधिकारी वर्ग ने आगे चलकर सभा की एक बहुत बड़ी सम्पत्ति दिखाई जो लाखो की है। उसे पूर्ण अधिकार मे लेने की प्रार्थना करके हम एक डेढ बजे मध्यान्ह बरनाला से रायकोट के लिए चल पड़े। कुछ और भी परामर्श हमने उन्हे दिए। बरनाला समाज ने सभा भवन के लिए पाच हजार रुपए भेजने का वचन दिया।

दो सवा दो बजे हम रायकोट के स्वामी गगा गिरि गर्ल्ज कालिज पहुचे और इस कालिज के प्रधान श्री हुकम चन्द जी जैन भी हमारी प्रार्थना पर वहा पधार गए। उनके साथ हम ने कालिज का भवन देखा। कालिज की प्रिंसिपल श्रीमती मेहता ने कालिज की सब बातो का विवरण बताया। कालिज का नया भवन बन रहा है किन्तु गुरुकुल वाला पुराना भवन जीर्ण-क्षीण है। कालिज के साथ गुरुकुल भवन मे एक नया माडल स्कूल भी स्वामी जी की स्मृति में चल रहा है। इस ग्रामीण इलाके मे सभा की यह दोनो सस्थाए बड़ा उपयोगी कार्य कर रही हैं। अधिकारी वर्ग हम मिलकर बहुत प्रसन्न हुए और बार बार हमे यहा आते रहने का अनुरोध करते रहे। उनकी इच्छा थी कि सभा इस ओर अधिक ध्यान दे। हमने उन्हे विश्वास दिलाया कि वह शीघ्र अपना कोई उत्सव रखे हम सभा प्रधान जी को अवश्य वहा लायेंगे और उन्हे उनकी यह सस्थाए दिखाएगे।

कालिज के सामने का औषधालय और स्वामी गगा गिरि का निवास स्थान भी देखा। जिसके सम्बन्ध मे पिछले कुछ समय से अभियोग चल रहा है। दूसरे पक्ष के भाई से भी हमने बातचीत की और उन्हे प्रेरणा की कि वह जालन्धर आकर अधिकारियो के साथ मिलकर निर्णय करें। फगवाड़ा के वैद्य ओम् प्रकाश जी इन्द्र भी इस सम्बन्ध मे प्रयत्नशील हैं। लुधियाना के श्री ओम् प्रकाश जी पासी सभा की ओर से इस केस मे मुख्तियार हैं। हमने उन्हे भी प्रार्थना की है कि वह इन दोनो महानुभावो से बातचीत करके कोई मार्ग निकालें। स्वामी जी के औषधालय और निवास का भी स्थान पर्याप्त है।

इसी प्रकार इस सस्था की तीस बीघे भूमि निकट के एक गाव किसी और के अधिकार मे है उसके भी निर्णय का मार्ग प्रशस्त करने की हमने सम्बन्धित लोगो से प्रार्थना की। यदि यह सब कुछ इस कालिज को मिल जाए तो इसकी आर्थिक स्थिति सम्भल सकती है।

कोई पाच बजे साय वहा से चल कर ३१ जनवरी का नौ बजे रात्रि को जालन्धर लौट आये। इस प्रकार हमारी शिक्षा सस्थाओ की पहली यात्रा बड़ी सफलता से सम्पन्न हुई।

—रामचन्द्र जावेद, सभा मन्त्री

वैद्य सत्यव्रत का निधन

स्वर्गीय स्वामी आत्मानन्द जी महाराज के सभा प्रधानत्व काल मे वैद्य सत्यव्रत जी कार्यालय मन्त्री के रूप मे आर्य समाज मे उभरे और उनके पश्चात् भी हरियाणा काल मे इस पद पर कार्य करते रहे। आप ने अपने काल मे सभा कार्यालय को सम्भालने मे जो तत्परता दिखाई वह चिरस्मरणीय रहेगी। आप एक बहुत योग्य वैद्य भी थे और जालन्धर मे आर्य समाज अड्डा होशियारपुर की एक दुकान पर विभाजन के पश्चात् से अब तक कार्य करते रहे, ६ फरवरी को उनका निधन हो गया। सूचना मिलने पर सभा कार्यालय उनकी स्मृति मे बन्द कर दिया गया। परमात्मा उनकी दिवगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे और उनके दुखी परिवार को धैर्य।

—रामचन्द्र जावेद, सभा मन्त्री

कैसी यह सरकार, जहां सम्मानित अत्याचार

हिन्दुत्व के विनाश के मन्सूबों को लेकर मोपला विद्रोह में मुसलमानों ने अत्याचार का जो कहर ढाया था उसकी एक सम्बद्ध रिपोर्ट में आर्य मिशनरी प० ऋषिराम ने यह तथ्य अंकित किया था कि 2500 व्यक्ति मुसलमान बनाए गए थे और बच्चों तथा स्त्रियों की निर्दयता पूर्वक हत्या की गई थी। परन्तु ई. एम. एस को इस बात में कोई बुराई नहीं देख पड़ी क्योंकि प्रत्येक जनूनी मुसलमान हमेशा यह समझते हैं कि काफिर हिन्दू का कत्ल करने या उसे मुसलमान बनाने से वह बहिश्त में जाने में समर्थ होगा। 'परन्तु वह यह स्वीकार करते हैं मतान्धता मात्र विद्रोह का एक रूपान्तर था।

मोपला विद्रोह की भूमिका का विषय लम्बे अरसे तक विवादास्पद बना रहा है। पिछले दिनो कम्युनिस्ट पार्टी ने इन उपद्रवो की हीरक जयन्ती समारोह का आयोजन किया था परन्तु वह असफल रहा। अनेक विशिष्ट नेताओ ने जिनके सम्मिलित होने की आशा थी इसमे भाग नहीं लिया। साथ ही मोपला उपद्रवो से पीड़ित हजारो हिन्दू मोपला विद्रोहियो को तथा उनके बच्चो को पैन्शन दिए जाने के केन्द्रीय सरकार के निर्णय से दुखी थे।

ई० एम० एस० नम्बूदरीपाद ने मुस्लिम लीग को प्रसन्न करने के उद्देश्य से अपनी पुस्तक केरल यस्टर ड टुडे टुमारो (केरल बीते हुए दिन, आज और आगे आने वाले दिन) मे १९६७ में लिखा था—

'यह कहना सही नही है कि विद्रोह साम्प्रदायिक उपद्रव था।

विद्रोहियो का उद्देश्य हिन्दू धर्म का विनाश था और विद्रोह के छ महीने हिन्दू विरोधी अत्याचारों के महीने थे। (पृ० ११६)

श्री ई० एम० एस० ने तो मुसलमानों को खुश करने के लिए मलापुरम नामक एक जिले का निर्माण भी कर दिया था। जिसमे मुसलमान बहुसंख्यक थे। इतने पर भी मुस्लिम लीग ने उनकी गवर्नमैंट को गिरा दिया था। फलत नम्बूदरीपाद ने अपने ऐतिहासिक अतथ्य को सिद्ध करने के लिए अनजाने अवकाश प्राप्त डिप्टी कलक्टर स्व० गोपालन नय्यर द्वारा लिखित मोपला विद्रोह नामक पुस्तक का निम्न अवतरण उद्धृत किया था—

कृपि सम्बन्धी आरोप के प्रमाणित किये जाने के लिये अभी तक कोई साक्षी सामने नहीं आई है।

उनकी पुस्तक का एक और उद्धरण भी अधिक सुस्पष्ट है—

कोया थंगल ने तीरूर और करूआ राकुड़ के मध्य एक पहाड़ी पर आस-पास के ग्रामो के अपने लगभग ४००० (चार हजार) अनुयायियो के साथ अदालत लगाई। लगभग ४० हिन्दू, जिनके हाथ कमर के पीछे बंधे हुए थे थंगल के समक्ष पेश किये गये जिनमे से ३८ को मौत की सजा दी गई। उन्होंने एक कुए के निकट चट्टान पर बैठकर कत्ल किये जाने की कार्यवाही अपनी देख-रेख में कराई।

एक मात्र कम्युनिस्ट पार्टी आफ इण्डिया ने मुसलमानों के अति वादी तत्त्वों को खुश करने के लिए इस मामले को हाथ में लिया था। परन्तु मुस्लिम लीग के दोनों धड़ों ने इस घृणित याद को दफना देना ही बुद्धिमत्तापूर्ण कार्य समझा। दुर्भाग्य से सी पी आई. को केन्द्र की इन्दिरा कांग्रेस पार्टी ही उपद्रवियों का अभिनन्दन करने में साथ देने वाली मिली। केन्द्र की इस नई कार्यवाही के पीछे राजनीतिक चाल है जो अनदेखी न रही। केन्द्र मुस्लिम लीग के धड़ों के टुकड़े करके कम्युनिस्ट पार्टी मुस्लिम लीग का केरल में संयुक्त मन्त्रिमण्डल बनाना चाहता है।

उनके सिर काट कर शरीर कूए में फैंके गये। इन ३८ मे से एक पैन्शन प्राप्त हैड कान्सटेबिल था जिसके प्रति थंगल को शिकायत थी। उसके सिर के पूरे दो टुकड़े किये गये थे।

१४ नवम्बर १९२२ को सरकारी प्रवक्ता की रिपोर्ट मद्रास की विधान सभा मे प्रस्तुत की गई थी जो बाद में मुस्लिम समर्थक बताई गई थी। इसमे कहा गया था कि कोई आंकड़े संगृहीत नही किए गए हैं परन्तु भ्रष्ट किये गये और तोड़े गये मन्दिरो की संख्या १०० से अधिक होगी। यह संख्या सम्भवत बड़ी होगी परन्तु गवर्नमैंट ने सुस्पष्ट कारणो से ठीक संख्या एकत्र करने का जान बूझकर यत्न नही किया है। परन्तु ई० एम० एस० ने इस छोटी-सी संख्या का राग रोया है जिस पर आश्चर्य हुए बिना नही रहता। विशेषत उस साम्प्रदायिक दंगे मे जिसमें उपद्रवियों का हाथ पूर्णत ऊंचा रहा था। ई० एम० एस० की दृष्टि मे ६००१ नागरिकों का कत्ल किया जाना और वह भी ४ लाख वाले हिन्दुओ के एक क्षेत्र में, उस साम्प्रदायिक दंगे का प्रभावोत्पादक रिकार्ड नही है जो ६ महीने से अधिक होता रहा था।

हिन्दुत्व के विनाश के मन्सूबो को लेकर मोपला विद्रोह में मुसलमानों के अत्याचार का जो कहर ढाया गया था उसकी एक सम्बद्ध रिपोर्ट में आर्य मिशनरी प० ऋषिराम ने यह तथ्य अंकित किया था कि २५०० व्यक्ति मुसलमान बनाए गए थे और बच्चों तथा स्त्रियों की निर्दयता पूर्वक हत्या की गई थी। परन्तु ई० एम० एस० को इस बात में कोई बुराई नहीं देख पड़ी क्योंकि प्रत्येक जनूनी मुसलमान हमेशा यह समझते हैं कि काफिर हिन्दू का कत्ल करने या उसे मुसलमान बनाने से वह बहिश्त में जाने में समर्थ होगा। "परन्तु वह यह स्वीकार करते हैं मतान्धता मात्र विद्रोह का एक रूपान्तर था।'

केरल की प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी ने १९३५ में केरल मे कांग्रेस का इतिहास प्रकाशित किया था। उसमें लिखा है—

'आम व्यक्तियों को एक कठिन परिस्थिति का सामना करना पड़ा था क्योंकि जैसा कि समस्त लड़ाइयों में होता है तटस्थता खतरनाक होती है जिन हिन्दुओं ने सेना को पूरा सहयोग नहीं दिया वे विद्रोहियों से मिले हुए समझे जा सकते थे। अत कभी २ निरुपाय हिन्दू उपद्रवियो के ठौर ठिकानों और गतिविधि की सेना को खबरें देने के लिए बाध्य हो जाते थे। इससे मोपलाओं को हृदय से क्रोध उत्पन्न हो जाना स्वाभाविक था [illegible] मोपला हिन्दुओं से बहुत नाराज हो गए। यह कारण था कि शुरू के असाम्प्रदायिक आन्दोलन ने अन्त में साम्प्रदायिक विद्रोह का रूप ले लिया।

श्री ई० एम० एस० ने अपनी पुस्तक में एक स्थल पर यह लिखा है —

"आर्य समाज और अन्य साम्प्रदायिक हिन्दू संगठनों ने मलाबार में आकर सहायता कार्य आरम्भ किया और सर्व प्रथम उन हिन्दू शरणार्थियों को सहायता दी जो विद्रोह के क्षेत्रों से भाग रहे थे।'

विद्रोह के बाद कांग्रेस की राजनीति और केरल में उभरा स्वतन्त्र साम्प्रदायिक राजनीतिक आधार पर विभाजित हो गए थे। इतना ही नहीं राज्य कांग्रेस और राष्ट्रीय स्तर के नेताओं के एक दूसरे से विरोधी दृष्टि सम्मुख रख दी थी। यह सत्य है कि मोपला विद्रोह के मूल में खिलाफत आन्दोलन था जिसे महात्मा गांधी का आशीर्वाद प्राप्त था। परन्तु गांधी जी ने इस आन्दोलन को साम्प्रदायिक रूप दिए जाने की ओर हिन्दुओं के साथ क्रूरता की निन्दा की थी। विद्रोह के कुछ वर्षों में जब कांग्रेस ने केरल में अपना संगठन करना प्रारम्भ किया तब भी यह हिन्दुओं और मुसलमानों को जोड़ने का प्रयास ही हुआ। प्रत्येक ने अपने २ समाचार-पत्र निकालने शुरू किए जिनके नाम थे, मातृभूमि और अल अमीन। दोनों वर्गों के मध्य खाई इतनी चौड़ी थी कि यद्यपि प्रत्येक दल अपने को कांग्रेसियों का दल कहता था तथापि कांग्रेस के संगठन वर्षों तक वे एक दूसरे को सहयोग न दे सका।

(ई० एम० एस०)

आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस से अभी हाल में स्टीफन फ्रेडरिक डाटे की मलाबार के मोपला १४९८-१९२२, पुस्तक प्रकाशित हुई है। लेखक ने विद्रोह कृषि सम्बन्धी था। उसकी इस धारणा का खण्डन करते हुए भी डाले कहते हैं—

"शहीद का दर्जा पाने की इच्छा से कत्ल चार किए गए हैं। जिन मोपलाओं के शहीद होने की हिम्मत थी उन्होंने अपने को इस्लाम के सैनिक समझा था इनको प्रोत्साहन थंगलों ने दिया और उन्होंने ही इनका नेतृत्व किया था। श्री डाले ने हिन्दुओं के बलपूर्वक धर्मान्तरण का भी उल्लेख किया है।

पुराने स्वतन्त्रता सेनानी और सम्पादक श्री के० पी० केशव मेनन अपने मातृभूमि पत्र में लिखते हुए एक पुरानी बात की चर्चा करते हैं जो उन्हें याद आ गई थी। उन्होंने लिखा है कि एक बार एक मुस्लिम अधिकारी उनके पास आए और कहा "मैंने एक नम्बूदरी का कत्ल किया था। इसके लिए मुझे पेंशन क्यों मिलेगी ?'

मुस्लिम स्वतन्त्रता सेनानी और कांग्रेस के नेता मोहम्मद एराम ने अपनी आत्म कथा (१९६४) में लिखा है कि अर्नाकोलम्, इसलामी

(शेष पृष्ठ ६ पर)

10 फरवरी को जिनका बलिदान दिवस है

भारतीय सैनिकों में देश भक्ति की भावना भरने के अपराध में फांसी के तख्ते पर झूलने वाला महाबलिदानी पं. सोहनलाल पाठक

देश की परतन्त्रता की बेड़ियों को अपना सर्वस्व न्योछावर कर काटने वाले भारत माता के सच्चे सपूतों, बलिदानी वीर वीरो के उज्ज्वल जीवनादर्श यदि स्वतन्त्रता के तुरन्त पश्चात् पढ़ाये जाते तो न सम्प्रदायवाद कही दृष्टिगोचर होता और न ही प्रान्तवाद देशभक्ति तथा राष्ट्र की एकता और अखण्डता की पावन भावना ही सदा हमारे समक्ष रहती। जो दयनीय अवस्था इस समय राष्ट्र की हो रही है वह हमारी इसी कृतघ्नता का दुष्परिणाम है जो हम ऐसे ध्येयनिष्ठ कर्म वीरो को भुला बैठे हैं।

अब भी यदि हम कुछ प्रेरणा ले सकते हैं तो उन्हीं बलिदानी वीरो से जिन्होंने हसते-हसते फांसी का फन्दा भारत माता की जय बोलते हुये अपने हाथो अपने गले में डाला था और हमारे लिए त्याग तथा बलिदान का अनुपम मार्ग प्रशस्त किया था।

देशभक्ति की वह दिव्य ज्योति जो कभी उन सरफरोशो ने अपना गरम-शोणित देकर जलाई थी अब कुछ मन्द सी पड़ती दीख रही है। यह ज्योति सदा जलती रहे और भारत माता का अन्न-जल खाने वाले उसके प्रति अपना कर्त्तव्य निभाना न भूलें इसके लिए यह आवश्यक है कि आज की युवा शक्ति को उन बलिदानी वीरों से परिचित कराया जाए।

अत यह विचार किया गया है कि प्रति मास एक बलिदानी वीर का या सच्चे सुधारक अथवा वीतराग सन्यासी या किसी भी दिव्य विभूति का जो हमारे लिये ज्योति स्तम्भ का काम देने वाली हो, जीवनवृत्त आर्य मर्यादा के माध्यम से पाठको को पढ़ने के लिए भेंट किया जाए।

विदेशी राज सत्ता को अपनी वीरता और साहस भरे बलिदानो से सुदृढ़ बनाने वाले भारतीय सैनिकों की चिन्तन धारा को स्वदेश रक्षा तथा स्वदेश भक्ति की ओर मोड़ने वाले अमर बलिदानी श्री सोहनलाल पाठक का जीवन वृत्त हम इस अंक में दे रहे हैं। इन का बलिदान १० फरवरी १९१६ को हुआ था।

आशा है पाठक बन्धु हमारी इस योजना को पसन्द करेंगे।

—ओमप्रकाश आर्य, सभा कार्यालयाध्यक्ष

अत्याचार पूर्ण पराधीन राजसत्ता जब अलोकप्रिय अत्याचारों द्वारा प्रजा की स्वाभाविक शक्ति को दबाना प्रारम्भ करती है और प्रजा इस क्रूर कृत्यों को सहने के लिए किसी प्रकार तैयार नहीं होती, तब उसकी शक्ति को रोकना अनिवार्य हो जाता है। ऐसी राजसत्ता के अत्याचार के रोकने के लिए छल बल और कौशल से काम लिए बिना काम नहीं चलता। अत्याचारी के न्याय विवेक पर भरोसा करना धर्म के विरुद्ध है। इतिहास इसका ज्वलन्त प्रमाण है। इसलिए राजनीति के शास्त्रों मे कहा है कि शठ के प्रति शठता करने के सिवाय दूसरा उपाय नहीं है।

अत्याचारी गोराङ्ग महा प्रभुओं के कुशासन चक्र को चकनाचूर करने के लिए अविभाजित पंजाब के प्रसिद्ध नगर गुजरांवाला के जंगल मे एक रात्रि को भारत माता के सच्चे सपूत उसकी परतन्त्रता की बेड़ियां काटने तथा उसे स्वतन्त्र करने की प्रतिज्ञा कर रहे हैं।

हे मां जब तक तू स्वतन्त्र नहीं हो जाती, हम चैन से न बैठेंगे। परिस्थितियां कैसी भी क्यो न हों, हम उन का सामना करेंगे और भारत मा! तुम्हे स्वतन्त्र करायेंगे।

इन देश भक्त वीरों में एक वीर थे सोहन लाल जी पाठक थे, जिन्होंने भारत की सेनाओ में घूम कर भारतीय नर वीरो को देश भक्ति का सच्चा पाठ पढ़ाया था तथा उन को विदेशी राज सत्ता से विद्रोह करते हुए अपने देश की मान मर्यादा को सुरक्षित रखने की प्रेरणा दी थी। उस समय अत्याचारी राज सत्ता भारतीयो को भारत देश की भक्ति भावना से भरपूर देखना अच्छा न समझती थी। अपने देश के प्रति अनुराग का भाव भयंकर अपराध माना जाता था। श्री पाठक को इसी देश भक्ति के अपराध में ही फांसी के तख्ते पर झूलना पड़ा था, सो कैसे पढ़िए —

जन्म—इस रण बांकुरे वीर का जन्म पट्टी जिला अमृतसर के एक निर्धन ब्राह्मण परिवार में ७ जनवरी १८८३ ई० को हुआ था। पिता जी का नाम पण्डित चन्दाराम पाठक था। दो भाई तथा एक बहिन थी थी। बड़े भाई का नाम श्री लालचन्द, छोटे भाई का नाम मोहन लाल पाठक और आपकी बहिन का नाम ... था।

प्रारम्भिक शिक्षा —प्रारम्भिक शिक्षा पट्टी के वर्नाक्युलर मिडिल स्कूल से प्राप्त की। प्राइमरी में प्रथम रहने के कारण दो रुपए मासिक छात्रवृत्ति भी प्राप्त की। मिडिल तक की शिक्षा प्राप्त कर के आप छः रुपए मासिक पर नहर विभाग में पटवार नवीसी करने लगे तत्पश्चात पविण्डा जिला अमृतसर के प्राइमरी स्कूल में अध्यापक नियुक्त हुए। वहा एक वर्ष तक अध्यापक कार्य करके आप नार्मल स्कूल लाहौर में प्रविष्ट हो गए। पढ़ने में रुचि प्रारम्भ से ही थी और योग्यतम विद्यार्थियो मे आप की गणना थी। अत नार्मल स्कूल लाहौर में आप को छः रुपया मासिक की छात्र-वृत्ति मिला करती थी। आपका छोटा भाई मोहन लाल भी आपके पास ही आ गया और ३ रुपए मासिक ट्यूशन से प्राप्त करने लगा। इस प्रकार दोनों भाई मिल कर ९ रुपए मासिक कमा लेते और इसी में अपना निर्वाह किया करते। यही श्री पाठक के साथ इनके दो और देश भक्त साथी भी थे। सरदार ज्ञानी सिंह साकन सम्बड़ियाल जिला स्यालकोट तथा श्री मेहर चन्द साकन केमकरण जिला लाहौर।

लाहौर उन दिनों महात्मा हंसराज जी के त्यागमय जीवन की सर्वत्र चर्चा थी। लाला लाजपतराय तथा उनके सहकारी पजाब मे विदेशी शासन के विरुद्ध प्रबल आन्दोलन चला रहे थे। नवयुवक पंडित सोहन लाल पाठक पर महात्मा हंसराज जी के त्यागमय जीवन का तथा लाला जी के देशप्रेम का अत्यधिक प्रभाव पड़ा। आर्य समाज के कार्यों मे रुचि लेने तथा देश भक्ति की भावना का यहा से ही सूत्रपात हुआ। लाला लाजपतराय आपसे बहुत प्यार करते थे। उनके प्रयत्न से आप डी.ए.वी. स्कूल लाहौर मे फिफ्थ क्लास के अध्यापक लग गए।

एक दिन खलीफा इमामुद्दीन असिस्टैण्ट इन्सपैक्टर और डिस्ट्रिक्ट स्कूल का निरीक्षण करने आये। खलीफा साहब ने बच्चों से कोई कविता सुनाने को कहा। बच्चे खुदीराम से सम्बद्ध निम्नलिखित कविता सुनाने लगे —

मुसलमां होने को ऐ किबला
मैं तैयार नहीं।
आपकी नजर है यह सर
मेरा इन्कार नहीं।

खलीफा साहब इस कविता को सुन कर बाहर चले गए। इसी बात के कारण श्री पाठक जी को त्यागपत्र देना पड़ा।

आपका विवाह १९०१ ई० में कलानौर जिला गुरदासपुर की श्रीमती लक्ष्मी देवी के साथ हुआ था। लाहौर मे रहते हुए ही आपके घर एक बालक ने जन्म लिया परन्तु बालक को जन्म देन के एक सप्ताह पश्चात आपकी धर्म पत्नी का देहान्त हो गया। नवजात शिशु की अब कौन करता ? अत एक सप्ताह पश्चात ही वह भी अपनी जननी का अनुगामी बना। पाठक जी पर दूसरा विवाह करने के लिए काफी दबाव डाला गया। परन्तु आप ने तो भारत माता की परतन्त्रता की बेड़ियों का काटना था। इसलिए दोबारा गृहस्थ में जाने से साफ इन्कार कर दिया।

आपके वे दोनों साथी जिन की चर्चा हम अभी ऊपर कर आए हैं उनपर भी महात्मा हंसराज, लाला लाजपतराए तथा अन्य आर्य बन्धुओ के प्रभाव से आर्य समाज की विचारधारा की पूरी छाप पड़ चुकी थी। अत वे पाठक जी का पूरा साथ देते थे।

डी० ए० वी० स्कूल से त्यागपत्र देने के पश्चात आप ने कुछ दिन लाला लाजपतराय जी के मुजंग (लाहौर) मे खोले गए दयानन्द ब्रह्मचारी आश्रम मे भी अध्यापक कार्य किया। परन्तु स्वतन्त्र विहारी मुक्तिक पंछी बन्धनो मे न रह सका और त्याग पत्र देकर अपने पांच साथियों श्री ज्ञानचन्द कौल सरदार करतार सिंह सिन्धु, श्री कर्म चन्द कौल सरदार ज्ञान सिंह और श्री ईशरदास सूद के साथ बेकांग जा पहुंचे। कुछ काल वहा रह कर फिर हांगकांग और फिलीपाइन होते हुए अमरीका चले गए और वहा क्रान्तिकारियो के लिए शस्त्रास्त्र एकत्रित करते रहे।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

कैसी यह सरकार, जहां सम्मानित अत्याचार

(पृष्ठ ४ का शेष)

लूटपाट और आगजनी की उपेक्षा नहीं की जा सकती और न ही उन का औचित्य प्रतिपादित किया जा सकता है। मताब्धों को ताम्र पत्रों तथा पेंशनों के दिए जाने से उनके अत्याचारों से वास्तविक पीड़ित क्रुद्ध ही होंगे।

इतिहास मिटाया नहीं जा सकता। यह बात स्मरणीय है कि जब कि राज्य प्रशासन वास्तविक स्वतन्त्रता सेनानियों के साथ, विद्रोह के अपराधियों तथा उन के उत्तराधिकारियों को पुरस्कृत कर रही है, केन्द्र ने राजनीतिक पेंशन के उन के सब दावों को रद्द कर दिया है

दुर्भाग्य से केन्द्रीय गवर्नमेंट ने अभी हाल में पेंशन देना स्वीकार करके एक बड़ी भूल की है जिनका संविधानिक नैतिक व न्यायायिक औचित्य प्रतिपादित नहीं किया जा सकता। 'सम्पादक' इस विरोधाभास से स्पष्ट है कि राज्य प्रशासन के निर्णय में प्रशासकीय भागीदारों में एकता बनाये रखने और सत्तारूढ़ बने रहने की भावना क्रियारत है।

राज्य के एक दूसरे कांग्रेस नेता श्री के० माधवन नायर ने लिखा है कि विद्रोह रक्तरंजित और काबू से बाहर हो गया था और श्री के० कलप्पन, के० पी० केशव मेनन और स्वय उन्होंने मोपलाओं को शान्त करने के लिये जो प्रयास किया था वह सफल न हुआ था।

सर शंकरन नायर श्री के० पी० केशव मेनन के श्वसुर थे, उन दिनों वायसराय की एग्जीक्यूटिव कौंसिल के एक सदस्य थे। उन्होंने मोपलाओं के अत्याचारों के विरोध मे त्याग पत्र दे दिया था।

डा० ऐनी बिसेन्ट ने जिन्होंने गान्धी जी द्वारा चलाये गये खिलाफत आन्दोलन का सदैव विरोध किया था लिखा था—

'यह अच्छा होता कि महात्मा गांधी को उन जघन्य काडों को स्वयं अपनी आंखों से देखने के लिये मलाबार ले जाया जाता जो उनके तथा उनके प्यारे अली बन्धुओं—मुहम्मद अली और शौकत अली के प्रचार और उपदेशों के फलस्वरूप हुये हैं। वहां खिलाफत राज १ अगस्त १९२१ से पूर्व ही स्थापित हो गया है जिस दिन महात्मा गांधी की प्रथम घोषणानुसार स्वराज्य का उदय और ब्रिटिश शासन का अन्त हो जाना था। ब्रिटिश शासन के विरुद्ध विद्रोह करते हुये मोपलाओं ने एक पुलिस इन्स्पेक्टर का घेराव किया। अरे, मैं खुश हूं, मैंने चौदह काफिरों का कत्ल किया। यह खुदा का खौफ करने वाले उस वीर मोपला ने कहा जिनकी गांधी जी बड़ी प्रशंसा करते हैं और जो जिसे धर्म और जिस ढंग को धार्मिक समझते हैं उसके लिये युद्धरत हैं। ऐसे व्यक्तियों को किसी भी सभ्य समाज में अंकुश में रखा जाना अनिवार्य होता है जो कत्ल करना बलात्कार करना, लूट-पाट करना, स्त्रियों और छोटे २ बच्चों की हत्या करना, परिवारों का खात्मा करना धार्मिक कृत्य समझते हैं।

'यह बात याद रखे जाने योग्य है कि मोपलाओं ने ही यह भयावह काम शुरू किया था। उनके द्वारा सताये गये व्यक्तियों की रक्षार्थ गवर्नमेंट ने हस्तक्षेप किया था और हजारों की रक्षा की गई थी।

क्या छोटे २ बच्चों और गर्भवती स्त्रियों की हत्याओं से ज्यादा किसी अन्य जघन्य एवं अमानवीय अपराध की कल्पना की जा सकती है?

टाइम्स आफ इण्डिया ने समाचार दिया था कि नायर महिलाएं नंगी की गई, उनके जलूस निकाले गये और खुले आम सामूहिक रूप मे बलात्कार किया गया।

'सच्चाई यह है कि मोपला उपद्रव उन हिंसक उथल-पुथल की श्रृंखलाओं के एक अंग समझे जाने चाहिए जिनसे मलाबार को १९वीं सदी के अन्तिम और २०वीं शती के प्रारम्भिक चरण में पीड़ित होना पड़ा था। श्रीधरन मेनन केरल के इतिहास पर प्रमाण माने जाते हैं। उन्होंने साफ तौर पर कहा है कि इन उपद्रवों की एक मात्र बात यह रही कि मोपला या मोपलाओं का समूह हिन्दू जमीनदार की हत्या करता और हिन्दू मन्दिरों को भ्रष्ट करता था :' (ए सर्वे आफ केरल हिस्ट्री १९७०)

इतिहासकारों का मत है कि मोपला उपद्रव पूर्व से निश्चित मजहबी जनून के कारनामों के सिवाय और कुछ न थे। न्यायमूर्ति श्री टी० मस० स्टरेंज इस काल हुए दंगों के कारणों की जांच के लिए नियुक्त हुए थे। उनका यही मत था। उन्होंने दमन की नीति की सिफारिश की थी।

श्री श्रीधरन मेनन ने लिखा है कि मोपलाओं ने अनेक हिंसक जुल्म ढायें हैं और बहुसंख्य जाति की सहानुभूति से वंचित हो गए हैं।

श्री एम० पी० नारायण मेनन श्री के० पी० केशव मेनन, श्री के० कयप्पन और मुहम्मद अब्दुल रहमान प्रकृति कांग्रेस के नेताओं ने घटना चक्र हिंसक स्वरूप न लेने देने का भरसक प्रयत्न किया परन्तु प्रयास सफल न हुआ (पृ० १५९) श्री मेनन के कथानुसार इन उपद्रवों में लगभग दस हजार (१०,००) व्यक्तियों की जाने गई थी।

यह बात बड़ी आश्चर्यजनक है कि ई० एम० एस० और मार्क्सवादियों ने चुपके से अपना पग पीछे हटा लिया है। ६०वीं जयन्ती समारोह के दौरान उनके मुख पत्र देशाभिमानी और पार्टी ने चुप्पी साध ली। इससे पूर्व वे ही जैसा कि हमने देखा है उपद्रवों के सामाजिक और कृषि सम्बन्धी पहलुओं का ढिंढोरा पीटा करते थे।

यद्यपि संयोजकों ने घोषणा की थी कि पुराने स्वतन्त्रता सेनानी जनाब कोम्बू मौलवी सम्मेलन में भाषण देंगे, तथापि मौलवी महोदय ने बिना उनकी स्वीकृति प्राप्त किए उनके नाम के दीये जाने पर आपत्ति की थी। सुप्रसिद्ध नेताओं की सूची में जिन्होंने बरों के छत्ते को छेड़ना पसन्द नहीं किया था निम्न नाम सम्मिलित थे।

१, पी० पी० उमर कोया। कांग्रेस एस०) २. एम० पी० गोविन्द (कांग्रेस एन०) ३. यू० ए० बीरन मुस्लिम लीग लीडर, ४. के० के० मुहम्मद लीडर ग्राल इण्डिया मुस्लिम लीग, ५. ए० बी० अब्दुल रहमान हक लीग टाइम्स संपादक ६. ए० बी० अब्दुल रहमान हक, ७, अब्दुल [illegible] मुजफ्फरी।

अब यह [illegible] मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के नेता बी० [illegible] शिवराई, देशाभिमानी के संपादक [illegible] कुट्टी ने [illegible] नहीं किया यद्यपि नोटिस में उनके नाम [illegible] तब किसी को भी यह सन्देह नहीं [illegible] था कि लोगों की रुचि मजहबी जनून के करतूतों का अभिनन्दन करने की नहीं है।

एक मात्र कम्युनिस्ट पार्टी आफ इण्डिया ने मुसलमानों के [illegible] तत्वों को खुश करने लिये इस [illegible] को हाथ में लिया था। परन्तु मुस्लिम लीग के दोनों धड़ों ने इस [illegible] को [illegible] देना ही बुद्धिमत्ता पूर्ण कार्य समझा। दुर्भाग्य से सी० पी० आई० को केन्द्र की इन्दिरा कांग्रेस पार्टी ही [illegible] अभिनन्दन करने में साथ देने वाली मिली, केन्द्र की इस नई कार्यवाही के पीछे राजनीतिक चाल है जो अनदेखी नहीं। केन्द्र मुस्लिम लीग के धड़े के टुकड़े करके कम्युनिस्ट पार्टी मुस्लिम लीग का केरल में संयुक्त मन्त्रिमण्डल बनाना चाहता है।

(आर्गेनाइजर २२-११-८१)

—

सत्याग्रह मैंकई इंका नेता भी कूदे

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

भारत गोसेवक समाज के कार्यालय में आज संगठन सचिव तथा गोभक्त एक लाला हरदेव सहाय के भतीजे श्री मुंशी राम मित्तल ने २४ घण्टे का उपवास शुरू किया।

गोसेवक समाज की विज्ञप्ति के अनुसार आगरा में सर्वोदयी नेता श्री कृष्ण कुमार भारद्वाज तथा आर्य समाजी कार्यकर्ताओं ने आज से उपवास शुरू किया।

कांग्रेस (इ) के वयोवृद्ध नेता तथा भूतपूर्व सांसद सेठ अचल सिंह, श्री जगवन्त राय कपूर एव सर्वोदयी नेता श्री महावीर भाई ने आगरा में आयोजित उपवासों का समर्थन किया। उन्होंने गोहत्या पर प्रतिबन्ध लगाने तथा महात्मा गांधी के सपने को साकार करने की मांग की है।

शोक प्रस्ताव

केन्द्रीय आर्य शिरोमणि सभा फिरोजपुर ने अपनी एक बैठक में १०-१-८२ को श्री पं० त्रिलोक चन्द जी शास्त्री महोपदेशक के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया। उनके चले जाने से आर्य समाज की महान् क्षति हुई। परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की तथा उनके परिवार को इस महान् दुःख को सहन करने की शक्ति देने के लिए भी प्रार्थना की।

वार्षिक चुनाव

आर्य समाज छावनी फिरोजपुर का वार्षिक चुनाव निम्न प्रकार हुआ। प्रधान श्री [illegible] जी शर्मा उप प्रधान श्री अशोक कुमार जी, श्रीमती यशोधा देवी जी, मन्त्री श्री बांके बिहारी जी कालिया, उप मन्त्री श्री [illegible] कुमार जी, श्रीमती [illegible] रानी [illegible], पुस्तकाध्यक्ष श्री सुखिन्दर राय जी, लेखा निरीक्षक श्री विनोद कुमार जी, अन्तरंग सदस्य श्री मदन लाल जी, श्रीमती [illegible] देवी जी।

— [illegible] प्रकाश [illegible]

स्वामी [illegible] जी का देहावसान

दिनांक २८-१-१९८२ को वैदिक साधन आश्रम [illegible] के [illegible] रागी सन्यासी पूज्यपाद स्वामी [illegible] नन्द का [illegible] देहावसान हो गया आप [illegible] [illegible] आर्य समाज के हैदराबाद सत्याग्रह में बढ़ चढ़कर भाग लिया था [illegible] की [illegible] श्री ने उन्हें अपनी [illegible] [illegible] मास का [illegible] और [illegible] जन्म से ही [illegible] थी।

महा बलिदानी पं सोहनलाल पाठक

(५ पृष्ठ का शेष)

अमरीका में आप को देवता स्वरूप भाई परमानन्द जी और लाला हरदयाल जी एम० ए० से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इन दोनों महान आत्माओं के जीवन से आपकी देश भक्ति की भावना को बहुत बल मिला। भाई परमानन्द जी ने श्री पाठक को ओरिगन स्टेट कालेज में फार्मेसी का काम सीखने के लिए प्रविष्ट करा दिया १९१३ ई० में अमरीका मे गदरपार्टी की स्थापना हुई। बाबा सोहन सिंह भकना इसके प्रधान, लाला हरदयाल मन्त्री, पं जगत राम हरयाणवी प्रचार-मन्त्री, पं, काशीराम कोषाध्यक्ष तथा करतारसिंह सराभा गदर नामक समाचार के प्रेस में काम करने पर नियुक्त हुए। पार्टी के आह्वान पर पाठक जी ने कालेज की पढाई छोड दी और सान्फ्रांसिस्को चले गए। वहा इनका काम सेना में काम करने वालो को क्रांति के लिए तैयार करना था। एक दिन जब कि बर्मा की छावनी मे तोपखाने के पलटन को अपनी वीणा सुना रहे थे और कह रहे थे कि भाईयो, क्यो व्यर्थ मे इन अंग्रेजो के लिए जान देंगे यदि मरना ही है तो देश के लिए मरो। तुम्हारी भुजाओ के बल से तुम्हे आजादी मिले। यह अच्छा है या यह कि तुम अंग्रेजो के लिए मर जाओ यह अच्छा है। इत्यादि, तब एक जमादार उन्हें बैठा बैठा घूर रहा था। उस पर इनकी बातो का कोई प्रभाव न हो रहा था, वह नराधम तो इन्हें पकडवाना चाहता था। सोहनलाल पाठक जब अपनी वक्तृता समाप्त कर चुके तो सब सिपाही चले गए किन्तु वह जमादार उनके और निकट आ गया। सोहन लाल ने सोचा यह कोई भेद की बात बताने आया है, परन्तु वह तो देश द्रोही कृतघ्न पशु था। उसने इनको बाजू से पकड कर कहा कि साहब के पास इस समय तीन आटोमैटिक पिस्तौल और २७० कारतूस थे चाहते तो उस पापी देश शासक को पाप की सजा दे सकते थे परन्तु वे तो भारतीय क्रान्ति का सुख स्वप्न देख रहे थे वे बोले क्या तुम हमें पकडाओगे? जरा सोचो तो सही, तुम क्या कर रहे हो भाई होकर भाई को पकडाओगे? कैसे भाई हो? क्या गुलामी का जीवन ही तुम्हें पसन्द है? क्या अपने देश को आजाद देखना नही चाहते हो?

परन्तु उस नराधम जमादार ने इन की एक न सुनी और सोहन लाल बन्दी बना लिए गए। तलाशी ली जाने पर जहान-ए-इस्लाम की एक प्रति मिली। जिसमें लाला हरदयाल का एक लेख था ...... फतवे थे, जिसमे मुसलमानो से अंग्रेजों के विरुद्ध लडने को कहा गया था। बम बनाने का एक अच्छा नुस्खा था और गदर पत्रिका का एक अक था।

स्वाभिमानी सोहनलाल

सोहनलाल जी ने जेल मे जाने पर भी जेल के किसी नियम को मानने से इन्कार कर दिया। उनका कहना था कि जब हम अंग्रेजी शासन को ही नही मानते तो उनके जेल के कानून को ही क्यो माना जाए। वैसे वे जेल के सभी अधिकारियो से एक शिष्ट और भद्र पुरुष की भांति मिलते थे किन्तु यह नहीं कि उनकी खुशामद करें। जब बडे साहब वगैरह आते थे, वे उठकर खडे नही होते थे? हां उनका यह नियम था कि जब कोई खडे २ उनसे बातें करता था, तो वे भी खडे हो जाते थे। जब बर्मा के लाट साहब आने वाले हुए तो जेलर ने उनसे कहा कि कम से कम उन के सम्मान मे तो खडे हो जाए किन्तु वे राजी नही हुए। जेलर उनके स्वभाव से परिचित था। उसने यह जाल रचा कि लाट साहब के आने से पूर्व ही उनसे स्वय आकर खडे खडे बातें करने लगा ताकि लाट साहब के सामने वे खडे नजर आए। इस प्रकार लाट साहब की इज्जत बच गई।

फासी या माफी

लाट साहब ने दो घटे तक सोहन लाल से बातचीत की। उन्होने कहा यदि तुम माफी मागो तो तुम्हारी फासी मैं अपनी कलम से रद्द कर दू। इस पर सोहनलाल हसे यह हसी वह हसी थी जिसको केवल शहीद लोग ही हस सकते हैं। वे बोले महाशय यह अच्छी रही कि मैं आप स माफी मागू। माफी तो आप को मुझ से मागनी चाहिए क्योंकि जो कुछ अत्याचार है वह तो आपकी ओर से हुआ है। देश हमारा है आप उस पर राज्य करते रहे हैं उसे हम आजाद कराना चाहते हैं आप उसमे रोडा अटकाते हैं और इस पर उलटा मुझ स माफी मांगने को कहा जा रहा है। यह खूब रही लाट साहब नैतिकता और न्याय की माग तो यह है कि आप मुझ स माफी मागें। लाट साहब अपना सा मु ह लेकर चले गए।

वीरवर सोहनलाल फासी के तख्ते पर खडा था जल्लाद उसके गले में रस्सी डालने के लिए इशारे की प्रतीक्षा मे था कि एकाएक सबसे बडे राजपुरुष आगे बढे और पुकारा—सोहनलाल, सोहनलाल ने उत्तर दिया—कहिए। अब भी यदि तुम माफी माग लो तो मुझे यह अधिकार है कि मैं फासी का रद्द कर दू, सोचो।

सोहनलाल यों तो बडी शान्त प्रकृति के थे किन्तु शहीद होने के समय ऐसी बात सुनकर वे आवेश मे आ गए उनकी आखे लाल हो गई और वे बोले—गुस्ताख अंग्रेज जो माफी मागनी ही है तो तुम्हे हम से माफी मागनी चाहिए, न कि मुझ तुम से।

उस अंग्रेज ने उन्हे फिर समझाया परन्तु वीर सोहन लाल ने जल्दी से अपने हाथ से गले मे फन्दा डाल दिया और फासी पर झूल गए। यह १० फरवरी १९१३ की घटना है।

आज तक किसी क्रान्तिकारी को इस प्रकार फासी के तख्ते पर प्रलोभन नही दिया गया। सोहन लाल की शहादत का इतिहास इस दृष्टि से शहीदो मे विशिष्टता रखता है।

इस वीर के अन्तिम शब्द थे — आज मैं अत्यन्त प्रसन्न हू कि मैं भारत माता की बलि वेदी पर कुर्बान होने जा रहा हू इस प्रकार यदि मैं हजारो बार भी लटकाया जाता हू तो भी माता का ऋण नहीं उतार सकता।

—ओम्प्रकाश आर्य
सभा कार्यालयाध्यक्ष

मुन्शीराम जी चल बसे

श्री मुन्शीराम जी आर्य का १७ १-८२ को देहावसान उनके निवास स्थान अम्बाला मे हो गया। श्री मुन्शी राम बडे कमठ कार्यकर्ता और उत्साही व्यक्ति थे। आर्य समाज के दीवाने थे जहा भी उन्होने सर्विस की वही आर्य समाज का सगठन खडा करके आर्य समाज मन्दिर बनवाने का यत्न किया। वह पहले पहल नगुवाल मे रहे वहा गुरु द्वारा बना तो उन्होने दौड धूप आरम्भ कर दी आर्य समाज मन्दिर भी बने परन्तु वह तो न बन सका सनातन धर्म मन्दिर बनवाने मे सफल हो गए। वहा पर ही वैदिक रीति से यज्ञ तथा सत्सग आदि करते रहे फिर नगल मे आए वहा आर्य समाज मन्दिर बनवाने मे सफल हो गए, फिर आप तलवाडा आए वहां भी आर्य समाज मन्दिर बनवाने का यत्न किया और उनके प्रयत्न स्वरूप अब वहा भी आर्य समाज का विशाल भवन बना हुआ है। अब तो तीन वर्ष से आप अम्बाला मे आ गए थे यहा उनका अपना घर था। अकस्मक हृदय गति रुक जाने से १७-१-८२ को आप सदा के लिए ससार से चल बसे।

श्री मुन्शी राम जी को आर्य समाज कभी नही भूल सकता तलवाडा और नगल के एक आर्य बन्धु के दिल में उन के प्रति अगाध श्रद्धा थी सभी को इस समाचार को सुनकर बडा दु:ख हुआ। परमात्मा से प्रार्थना है कि उनकी आत्मा को शान्ति और सदगति प्रदान करें और उनके परिवार को इस असहाय दुख को सहन करने करने की शक्ति प्रदान करे।

—मनोहर लाल मन्त्री
आर्य समाज तलवाडा।

—

प्रभात फेरी

अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द के बलिदान दिवस के उपलक्ष्य मे अस्पृश्यता निवारण एव मानवता के सिद्धान्तो के प्रसार हेतु आर्य समाज राजौरी गार्डन के अधिकारियो ने अपने उपनगरीय क्षेत्र मे चार दिन तक ब्राह्म मुहूर्त मे भव्य प्रभात फेरी का आयोजन किया जो पूर्ण सफल रही।

—

(upside-down printed lines:) ६७ श्री मुन्शीराम जी / प्रिन्सिपल गवर्नमेन्ट कालेज / ... (पुस्तकालय)

संस्कृति कार्यक्रम

आर्य समाज राजौरी गार्डन की ओर से दिनांक ३१-१-८२ को मध्याह्नोत्तर २ से ५ बजे तक बच्चों के नैतिक व शारीरिक विकास के लिए 'अमर हुतात्मा बाल हकीकत बसन्त मेले का आयोजन किया गया है जिसमे डा. गिरधारी लाल गोस्वामी डा. महावीर एवं श्री सदस्य राज्य सभा ने भाग लिया मेले में निम्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया।

१- बाल हकीकत वेश भूषा प्रतियोगिता।
२- कविता, भजन गायन, भाषण प्रतियोगिता।
३ वेद मन्त्र एवं रामायण व गीता के श्लोक पाठ प्रतियोगिता।

श्रीमती कमला सहगल आर्य समाज वाचनालय राजौरी गार्डन, नई दिल्ली

आर्य समाज राजौरी गार्डन के अधिकारियों ने स्वर्गीया श्रीमती कमला सहगल की पुण्य स्मृति में आर्य समाज भवन में दिनांक [illegible]-२-८२ को वाचनालय [illegible] है, जिस का उद्देश्य [illegible] के बौद्धिक धार्मिक एवं [illegible] तथा उन्हें सुयोग्य [illegible] धार्मिक रुचि बढ़ाने के लिए समाचार पत्र-पत्रिकाएं तथा धार्मिक साहित्य उपलब्ध कराना है।

जन साधारण से प्रार्थना की जाती है कि यदि किसी सज्जन के पास कोई साहित्य रखा हो और वे सज्जन दान करना चाहते हैं तो वह वाचनालय उनका आभारी होगा।

—मन्त्री
यशपाल सेठी

राष्ट्र की स्वतन्त्रता-अखंडता और परम्परा की रक्षा सर्वस्व देकर भी करें

नई दिल्ली, (डाक से)गणतन्त्र दिवस पर सभी भारतवासियों को अपनी स्वतन्त्रता अखण्डता व परम्परा की रक्षा का संकल्प लेना चाहिए इस आह्वान के साथ अखिल भारतीय हिन्दू रक्षा समिति ने देशद्रोही साम्प्रदायिक शक्तियों के विरुद्ध पूरे बल से संघर्ष करने के निश्चय को दोहराते हुए देशवासियों को गरीबी असमानता और साम्प्रदायिकता के विरुद्ध संघर्ष की घोषणा की।

समिति की कार्यकारिणी ने प्रो० रामसिंह की अध्यक्षता में निश्चय किया कि हमारा प्रथम शत्रु साम्प्रदायिकता और विघटनवादी मनोवृत्ति है जिसके विरुद्ध समिति पूरे बल से आन्दोलन करेगी।

बाहुबल, उत्तर प्रदेश में साम्प्रदायिक शक्तियों को आक्रमणकारियों द्वारा प्रोत्साहन देने की भर्त्सना करते हुए एक प्रस्ताव में उत्तर प्रदेश सरकार से अविलम्ब आवश्यक पग उठाने की मांग की गई।

यह भी निश्चय हुआ कि शीघ्र ही हैदराबाद बाहुबल मकराना और राजस्थान में हिन्दू सम्मेलन किए जाएं। समिति के प्रवक्ता ने कहा कि समिति देश के साम्प्रदायिक तत्वों को समूल नष्ट करने के लिए कार्यक्रम बनाए थी।

पंजाब में भी साम्प्रदायिक तत्वों को रोकने के लिए कानून की मांग की गई।

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रेस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष 14, अंक 44, 10 फाल्गुन सम्वत् 2039 तदनुसार 21 फरवरी 1982 दयानन्दाब्द 156। एक प्रति 35 पैसे (वार्षिक शुल्क 15 रुपए)



शिवरात्रि और महर्षि दयानन्द

—प्रा भद्रसेन साधु आश्रम
होशियारपुर

पुराणों की परम्परा में शिव का त्रिदेवों में विशेष स्थान है। शिवरात्रि से इसी का विशेष सम्बन्ध माना जाता है। ऐसी मान्यता है कि इस पर्व पर दिन भर निराहार रह कर जो शिव रात्रि को जागरण [illegible] करते हैं, उन्हें शिव के दर्शन होते हैं। इसी भावना से [illegible] [illegible] बालक मूल शंकर ने [illegible] आयु में इस व्रत को रखा [illegible] प्रसिद्ध घटना [illegible] अपने वर्षों में [illegible] की [illegible] आई। उस रात्रि से प्राप्त प्रेरणा ने न केवल बालक मूल के जीवन को अमर बना दिया, अपितु लाखों व्यक्तियों के लिए यह शिवरात्रि कल्याणकारिणी सिद्ध हुई। अज्ञान, अन्धविश्वास, रूढिवाद और अविवेक रूपी रात के घोर अन्धकार में उस ज्ञान ज्योति ने सत्यज्ञान और सदा-[illegible] का [illegible] किया। जिन के पुण्य प्रताप से [illegible] का [illegible] [illegible] को जीवन [illegible] को [illegible] [illegible] को निर्भयता और [illegible] में भटकते [illegible] को सत्पथ प्राप्त हुआ।

पुराणों के वर्णन के अनुसार शिव जी की जटाओं में गंगा बहती है उन के सिर में चन्द्रमा चमकता है माथे पर तीसरा नेत्र विराजमान है जिससे उन्होंने कामदेव को भस्म किया था गले में विषधर सर्प लिपटे हुए हैं शिव जी अपने सारे शरीर में भस्म रमाते हैं और कैलाश वासी हैं शिव जी का ऐसा एक चित्र यत्र तत्र देखने में भी आता है।

ऐसे विचित्र चित्र को देख कर एक विवेकशील विचारों में खो जाता है और सोचते सोचते उसको पुराणों की

यह आलंकारिक [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] आलंकारिक [illegible] [illegible] को परिभाषित [illegible] चित्रित करता है। इस [illegible] [illegible] पर [illegible] के जीवन का विश्लेषण करने [illegible] उन पर [illegible] कसौटी पूर्णतः चरितार्थ होती है।

शिव जी की जटाओं से जो गंगा बह रही है तो वैसे महर्षि ने भी आजीवन पीयूषमयी ज्ञान गंगा को बहाया। सत्यार्थ प्रकाश संस्कारविधि ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, वेद भाष्य आदि छोटे बड़े बीसों ग्रन्थों में महर्षि की सरस्वती का प्रवाह दिखाई देता है। जिनमें जीवन सम्बन्धी अनेक विषयों का जहां वर्णन वहां विविध धर्म ग्रन्थों के पढ़ने पर जो प्रतीत हुआ उसकी समालोचना भी की है। इस समालोचना के प्रयोजन को बताते हुए महर्षि ने लिखा है कि मेरा इस ग्रन्थ को बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य सत्य अर्थ का प्रकाश करना है अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और जो मिथ्या है उसको मिथ्या प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। जिसमे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो सत्यासत्य का मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग

(शेष पृष्ठ ७ पर)

उस रात्रि से प्राप्त प्रेरणा ने न केवल बालक मूल के जीवन को अमर बना दिया, अपितु लाखों व्यक्तियों के जीवन लिए यह शिवरात्रि कल्याणकारिणी सिद्ध हुई। अज्ञान, अन्ध-विश्वास, रूढिवाद और अविवेक रूपी रात के घोर अन्धकार में उस ज्ञान ज्योति ने सत्यज्ञान और सदाचार का प्रकाश किया। जिस के पुण्य प्रताप से अज्ञानियों को ज्ञान, रोगियों को आरोग्य, मरणासन्नों को जीवन, अन्धों को आंखें, कायरों को निर्भयता और दिविधा में भटकते हुए को सत्यपथ प्राप्त हुआ।

महर्षि स्वामी दयानन्द की महनीयता

प्रधान आर्य प्रतिनिधिसभा पंजाब प्रदेश

आज से १०२ वर्ष पूर्व नवम्बर १८७७ की बात है। महर्षि दयानन्द सरस्वती उत्तर प्रदेश के चांदापुर नामक स्थान पर मि० जोन्स के मकान पर ठहरे हुए थे। एक दिन मि० जोन्स अपने कई यूरोपियन साथियों के साथ स्वामी जी के पास आये और चर्चा शुरू की। वार्तालाप के मध्य स्वामी जी ने कहा —

'ईश्वर द्वारा निर्मित सूर्य चन्द्र धरती वर्षा वायु तथा अन्य समस्त पदार्थ जैसे मानवमात्र के लिए समान हैं वैसे ही ईश्वरीय ज्ञान भी सब के लिए समान है।

मि० जोन्स और उनके मित्रों ने स्वामी जी के इस कथन पर अपनी सहमति व्यक्त करते हुए सिर हिलाया। आगन्तुकों को सम्बोधित करते हुए स्वामी जी ने पुनः कहा —

'कल्पना करो कि अनेक मत मतान्तरों को मानने वालों के मध्य जिन मतों की संख्या हजार हो और प्रत्येक मतावलम्बी इस बात का दावा करता हो कि उसका मत ही सच्चा है शेष नौ सौ निन्यान्वे गलत है। अब कहो उन सहस्र मतों में किस मत को सच्चा कहें

आगन्तुकों ने एक स्वर में कहा कि सभी मतों को गलत समझना चाहिए। तब स्वामी जी ने कहा परन्तु सभी मत पूर्णतः गलत नहीं हो सकते। इनमें से प्रत्येक मत किसी एक सत्य का तो अवश्य प्रतिपादन करता है।

स्वामी जी ने अपने कथन को आगे बढ़ाते हुए कहा —

आप एक ऐसे जिज्ञासु की कल्पना कीजिए जो सत्य की खोज में निकला हो। वह जिज्ञासु प्रत्येक मतावलम्बी से सत्य के यथार्थ स्वरूप को जानने के लिए कुछ प्रश्न करेगा। वह पूछेगा कि क्या सच बोलना और सच के सिवा कुछ न बोलना अच्छी बात है। क्या स्तेय अर्थात् चोरी करना जैसी बुरी बातों से बचना अच्छा है। इन प्रश्नों का उत्तर हां में ही मिलेगा। तब वह जिज्ञासु ऐसे सभी सचाइयों को संकलित करेगा। ऐसे ही सचाईयों से भरे हुए संकलन को हम ईश्वरीय ज्ञान कह सकते हैं।

'ईश्वरीय ज्ञान आत्मा की मुक्ति के लिए इस बात की अनिवार्यता को प्रतिपादित नहीं करता कि किसी पैगम्बर या प्रवर्तक के शरण में जाए। भले ही वह ईसा हो या मोहम्मद।

स्वयं स्वामी दयानन्द ने एक जिज्ञासु की भांति सत्य के अन्वेषण में एक लम्बा समय लगाया। उन्होंने २१ वर्ष की अल्पायु में ही अपने माता-पिता तथा घर बार को छोड़ा, यहां तक कि उन्होंने समस्त सांसारिक मोह माया-जाल को भी तिलांजलि दे दी। स्वामी जी के सत्य की यह खोज बीस वर्ष की लम्बी अवधि तक चलती रही।

१८७४ में स्वामी जी की महान् कृति सत्यार्थ प्रकाश प्रकाशित हुई। स्वामी जी के विरुद्ध यह आरोप है कि उन्होंने इस ग्रन्थ में विभिन्न मतमतान्तरों की कटु आलोचना की है। यह सत्य है कि सत्यार्थप्रकाश के अन्तिम चार समुल्लास खण्डन निमित्त ही लिखे गये हैं। किन्तु इस खण्डन में स्वामी जी का अभिप्राय किसी मत विशेष का जानबूझ कर विरोध करना नहीं है अपितु इस खण्डन के मूल में विभिन्न मतों में निहित सत्य का उसके यथार्थ रूप में प्रस्तुत करने की उत्कट अभिलाषा मात्र थी।

"आप एक ऐसे जिज्ञासु की कल्पना कीजिए जो सत्य की खोज में निकला हो। वह जिज्ञासु प्रत्येक मतावलम्बीसे सत्य के यथार्थ स्वरूप को जानने के लिए कुछ प्रश्न करेगा। वह पूछेगा कि क्या सच बोलना और सच के सिवा कुछ न बोलना अच्छी बात है। क्या स्तेय अर्थात् चोरी करना जैसी बुरी बातों से बचना अच्छा है। इन प्रश्नों का उत्तर हां में ही मिलेगा। तब वह जिज्ञासु ऐसे सभी सचाइयों को संकलित करेगा। ऐसे ही सचाईयों से भरे हुए संकलन को हम ईश्वरीय ज्ञान कह सकते हैं।

इस प्रसंग में स्वामी जी के जीवन की वह घटना जो पंजाब में घटी थी यहां उल्लेख करें तो अनुचित न होगा।

पूर्व सूचनानुसार एक सार्वजनिकसभा का आयोजन हुआ जिसमें स्वामी जी का भाषण था। अपने भाषण में स्वामी जी ने उन विषयों को उठाया जो ईसाई मत से सम्बन्धित थे। इनके बारे में स्वामी जी की राय अनुकूल नहीं थी।

उक्त सभा में भारत के तत्कालीन कमाण्डर इनचीफ जनरल राबर्ट्स भी उपस्थित थे। राबर्ट्स ने स्वामी जी के भाषण को धैर्य पूर्वक सुना। भाषण की समाप्ति के बाद राबर्ट्स ने स्वामी जी की ओर बढ़कर उनसे हाथ मिलाया और कहा "स्वामी जी, आप निस्सन्देह एक निर्भीक व्यक्ति हैं क्योंकि आपने भारत का सेनाध्यक्ष जोकि एक कट्टर क्रिश्चियन है, उसके सामने ही भावी परिणाम की चिन्ता किये बिना ईसाई मत की खुली आलोचना की है। इस पर स्वामी जी ने उत्तर दिया।

"जब वे किसी मत की आलोचना करते हैं तो उस मत के प्रति उनकी कोई दुर्भावना नहीं होती है। उनका उद्देश्य तो केवल दूर तक से सच्चाई की खोज निकालना और उसे उसके मूल रूप में जन सामान्य के सामने प्रस्तुत करना और जो उसका गलत अर्थ है, उसे भी बिना किसी संकोच के प्रकट करना होता है। ऐसा करने में न कभी उन्हें भयभीत होना पड़ा है और न कभी किसी प्रलोभन के सामने उन्होंने सिर झुकाया है।

स्वामी दयानन्द ने अपनी महान कृति सत्यार्थ प्रकाश में इसी विचार को स्पष्ट करते हुए कहा है —

मेरा इस ग्रन्थ के बनाने का मुख्य प्रयोजन सत्य सत्य अर्थ का प्रकाश करना है अर्थात् जो सत्य है उसको सत्य और मिथ्या है उसको मिथ्या है उसको सत्य और मिथ्या है उसको मिथ्या ही प्रतिपादन करना सत्य अर्थ का प्रकाश समझा है। जो मनुष्य पक्षपाती होता है वह अपने असत्य को भी सत्य और दूसरे विरोधी मत वाले के सत्य को भी असत्य सिद्ध करने में प्रवृत्त होता है, इसलिए वह सत्य मत को प्राप्त नहीं हो सकता।

इस ग्रन्थ में ऐसी बात नहीं रखी है और न किसी का मन दुखाना या किसी की हानि पर तात्पर्य है। किन्तु जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो सत्यासत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें। क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है।

स्वामी दयानन्द ने अपने जीवन में जिसे शाश्वत सत्य जाना और माना तथा उसके प्रचार के लिए जिस उदात्त आत्मशक्ति का आश्रय लिया उसका परिचय हमें निम्नांकित उद्धरण में मिलता है।

"इस ग्रन्थ में जो कहीं-कहीं भूल चूक से अथवा शोधने में भूल चूक रह जाय उसको जानने-जनाने पर जैसा वह सत्य होगा वैसा ही कर दिया जायेगा। जो वह मनुष्य मात्र का हितैषी होकर कुछ जनावेगा उसको सत्य-सत्य समझने पर उसका मत संगृहीत होगा।"

स्वामी दयानन्द द्वारा प्रतिपादित ईश्वरीय ज्ञान सूर्य, चन्द्र, वायु, जल आदि की भांति सब के लिए समान है। यह ज्ञान देश काल जाति और लिंग की परिधि से परे है। यह ज्ञान न तो ईश्वर पुत्र का है और न किसी पैगम्बर का। यह ज्ञान किसी व्यक्ति विशेष पर धीरे-धीरे अवतरित होने वाला भी नहीं है। सृष्टि के प्रारम्भ में सूर्य, चन्द्र, जल, वायु आदि अन्य वस्तुओं की भांति ईश्वरीय ज्ञान भी प्रथमतः चार ऋषियों के हृदयों में प्रकट हुआ। इन पुण्यात्माओं ने अपने प्रयत्न और ईश्वर की कृपा से उस ज्ञान को अपनी-अपनी योग्यता और पात्रता से ग्रहण किया।

एक स्थान पर महर्षि याज्ञवल्क्य अपनी पत्नी मैत्रेयी से कहते हैं—

जैसे शरीर के भीतर से श्वास बाहर निकलता है वैसे ही सृष्टि के प्रारम्भ में यह वेद ज्ञान प्रकट होता है और जैसे श्वास भीतर आने पर लुप्त हो जाता है वैसे ही सृष्टि की प्रलयावस्था में यह ज्ञान भी लुप्त हो जाता है।

महर्षि दयानन्द का सम्पूर्ण जीवन सत्य की खोज में बीता है। सत्य के प्रति प्रेम और झूठ के प्रति घृणा उनका स्वाभाविक गुण बन गया था। वे जिसे सत्य समझते थे उसे सचाई से प्रस्तुत करने में पीछे नहीं हटते थे। ऐसा करने में उन्हें कितने ही कष्टों एवं संकटों का भी सामना करना पड़ा था। वस्तुतः यह ऋषि की महानता का परिचायक है।

अपने महान् उद्देश्य की पूर्ति के लिए महर्षि ने सत्य के मण्डन और असत्य के खण्डन के लिए जिन साधनों को अपनाया वे हैं साहस, सेवा और त्याग की भावना, सिद्धान्तों के प्रति समझौता न करना, [illegible] वादी दृष्टिकोण और योग की शक्ति।

स्वामी जी के अनुसार मनुष्य न तो बुलबुले की तरह पैदा होता है और न पानी की तरह [illegible] है। वैदिक धर्मानुसार जीव और ईश्वर दोनों प्रकृति रूपी वृक्ष पर अनादिकाल से साथ ही बैठे रहते हैं।

जगत सत्य है। यह माया अथवा मिथ्या नहीं है। मायावाद तो पलायनवादियों की कोरी कल्पना है। स्वामी दयानन्द ने भगवान कृष्ण की भांति कर्मण्यता के सिद्धान्त पर बल दिया है। वे चाहते थे कि हिन्दू मात्र अपने प्राचीन वैभव पर गर्व अनुभव करें और वे इस बात को भी जान लें कि उनका भविष्य वैदिक पथ के अनुसरण में ही है, इस के सिवा उनके लिए अन्य कोई मार्ग नहीं है।

स्वामी दयानन्द परिष्कृत वर्णाश्रम [illegible] में आस्था रखते थे। समाज व्यवस्था के लिए उन्होंने इसे आवश्यक माना। इस सामाजिक व्यवस्था के सम्बन्ध में महात्मा गांधी का कहना था कि मनुष्य समाज के लिए हिन्दुओं की यह बड़ी भारी देन है।

—[illegible]

रजिस्टर्ड सं०/स०एच०/एन०/एल०बी०/६०/८२ गुरुकुल ... द्वारा मान्यता प्राप्त वार्षिक मूल्य १५ रुपये

लोकार्थ

उज्वाला एक ... हिन्दी साप्ताहिक

यादरखें :-

ईश्वर ने हमें दो कान व दो आंख पर जिह्वा एक दी है, इसलिए हम अधिक सुने अधिक देखें, लेकिनबोलें कम

—सुकरात

वर्ष २१ | १६ फरवरी १६८२ | अङ्क ४३

ढाई चावल की खिचड़ी में विपक्ष के भष्मासुर । श्रीमती गांधी के लिये रास्ता साफ़

—लोकनाथ

ढाई वर्षों का जनता शासन चौधरी चरण सिंह को ढाई दिन का प्रधानमन्त्री पद सौंप कर अपने-आप १९८० में समाप्त हो गया। लोकनायक जयप्रकाश अन्तिम दिनों इसी बात से दुःखी थे कि सत्ता प्राप्त करने के बाद इस जमघट के सभी नेता अपने-२ स्वार्थों में लिप्त होकर स्वयं विनाश की ओर जा रहे हैं। लोकनायक के भगवान को प्यारे होते ही यह साझे की हन्डिया फूट गई। ढाई दिनों का प्रधानमन्त्री पद प्राप्त करके जाट नेता चौधरी चरणसिंह ने स्वयं भष्मासुर बन कर अपने साथ सारे विपक्ष की राजनीति को भष्म कर दिया। १९८० के चुनावों में इस मूर्ख-मंडल की बेभाव पिटाई करके श्रीमती गांधी ने पुनः सत्ता छीन ली और वह आज अपने आप में इतनी शक्ति संपन्न हो चुकी कि ईश्वर के अलावा उन्हें कोई सत्ताच्युत नहीं कर सकता चाहे वह अटल हो या चरण, जगजीवन हों या बहुगुणा। जनता शासनकी समाप्ति के इतिहास में दोषी यह सभी नेता समान रूप से हैं। मोरारजी का आदर्शवाद, चरणसिंह का जाटवाद, जगजीवन का जाटववाद, अटल का लट्ठवाद, राजनारायण का सट्ठवाद, बहुगुणा का नटवाद, सारी साझे की हन्डिया फूट गई, आज स्थिति यह है कि चौधरी साहेब मेरठ, मुजफ्फर नगर के नेता बनकर रह गये, जगजीवन बाबू हरिजन नेता के लबादे से भी निहंग हो गये, बहुगुणा बैशाखी के सहारे राजनीति चला रहे हैं और अटल जी १९७६ की पुनरावृत्ति से इन्दिरा जी के तलुये सहलाने लगे। आज अटल जी इतने बहक चुके कि वह अपनी ही सरकार को जिसकी बदौलत अटल बिहारी गगन-बिहारी बने उसको ही बुरा-भला कह रहे हैं यह उनकी भावी पैरोल से मुक्त रहने की प्रारम्भिक भूमिका है। इतनी दुर्दशा होने के बाद भी विपक्षी नेता होश में नहीं आये, यदा-कदा इकट्ठे होते हैं और अहमन्यता में बिखर जाते हैं चरण सिंह कहीं हैं उनके भू० पू० हनुमान कहीं। जग्गुभइया अपनी कांग्रेस (ज) बनाये बैठे हैं और और बग्गू भइया कांग्रेस (ब)। गांधीवाद के भी टुकड़े-२ हो चुके। साम्यवाद भी नक्सलवाद, लेनिनवाद, मार्क्सवाद में बिखरा पड़ा है। राष्ट्रवादी लोकतन्त्रवादी सभी इन्दिरा जी के डन्डे के नीचे अन्डे दे रहे हैं। १९७७ में श्रीमती गाधी को धोखा देकर जनतापार्टी में घुसने वाले महाराष्ट्र के शिवाजी चह्वाण एक वर्ष से श्रीमती गांधी के तलुये चाटने में लगे हुए हैं, उन्हें कोई घास नहीं डालता जगजीवन बाबू भी देख रहे हैं कि श्रीमती गाधी उनकी ओर मुस्कराहट फेकें तो वह समर्पित कर दें अपनी २॥ मन की देह को श्री चरणों मे ! किन्तु श्रीमती गांधी कच्ची राजनीतिज्ञ नही, उन्होने सारे विपक्ष को नंगा करके रख दिया। आगे क्या होगा ? होगा वही जो राम रचि राखा। बदरों के हाथ में गुड़ की भेली देने से तो अच्छा यही है कि श्रीमती गाधी भारत की अक्षुण्णता, एकता एवं उसकी सांस्कृतिक धार्मिक आर्थिक एवं राजनैतिक सम्पन्नता के लिए ईमानदारी से नया प्रयोग करे। भले ही दलपरस्त जातिपरस्त गुटपरस्तों से रूग्ण इन विपक्षी अवसर वादियों को सबक सिखाया जा सके। देश की दरिद्रता गरीबी एवं भृष्टाचार मिटाने के लिये आज करनी की जरूरत है कथनी की नहीं और करनी भी वह जिस का व्यवहारिक लाभ देश के गरीबों को मिल सके। अनुत्पादक खेलों और महलों के निर्माण से उत्पादक वर्ग की सफलता में जो सन्देह है उसको समाप्त किया जाये। भृष्टाचार मिटाने के लिए ऊपर से सफाई अभियान चलाया जाए। इस कार्य के लिए यदि कुछ कठोरता भी अपनानी पड़े तो इसमें कोई हर्ज नही। लालफीताशाही के दुर्ग को तोडने से ही इस राष्ट्र का आन्तरिक कल्याण होगा इसके लिए आवश्यक है कि श्रीमती गाँधी न्याय एवं अनुशासन की समान व्यवस्था अपने दल में ही स्थापित करें जै। जै कार पर रोजगार चलाने वालो से बचकर ऐसे व्यक्तियों को संरक्षण दे जो राष्ट्रीयता के प्रति ईमानदार हैं चाहे वह दलहीन ही क्यों न हों ? पुराने ३२ वर्षों के घिसे-पिटे प्रयोगों को आजमाने का अब समय नहीं, देश नयी दिशा के लिए आतुर है वह मांग रहा है समान न्याय स्वच्छ प्रशासन और पेट की रोटी ! जिससे जन-गन-मन सुखी हो सके और इतिहास में उनका नाम स्वर्णाक्षरों में लिखा जा सके।

—०●—

मेघदूत की डायरी—

बी० एच० ई० एल० की खोज खबर

उद्योग मन्दिर की जन चर्चा

हैवी में अदूरदर्शिता न्याय प्रियता के मामले में सबसे बड़ी कुख्याति मकानों के अलाट करने वाली प्रशासनिक व्यवस्था को दी जा रही है। नेतागणों की कृपा से सिकमी किरायेदारी पर चढ़े हुये क्वार्टरों को आज तक पूरी तरह खाली नहीं कराया जा सका। और यदि कहीं जोर भी लगाया तो सिकमी किरायेदारों के नाम ही वह क्वार्टर अलाट हो रहे हैं। इस प्रकार बेईमानी से घुसे हुये नये लोग पुराने प्रतीक्षारत कर्मचारियों का खुलकर हक छीन रहे हैं। इस प्रकार क्वार्टरों के अलाटमैन्ट में सीनियर्टी और जूनियर्टी की न्यायपूर्ण प्रतिज्ञा भंग हो गई। प्रतीक्षारत दूर पँचपुरी से नियमित आने वाले कर्मचारी वह भी ईमानदार विवश हैं, उनके लिये यूनियन वालों की जैक नहीं। यदि हाउस अलाटमैन्ट करने वाली कमेटी 'अन्धा बाँटे रेवड़ी घर वालो को दे।' वाली परम्परा का निर्वाह कर रही है तो प्रबन्ध निदेशक महोदय को यह व्यवस्था बदलनी चाहिये? यह रूढ़िवाद जरूरी नहीं कि सत्ता के विकेन्द्रीकरण का लाभ थोड़े ही गुटबाजों को मिले। सही ईमानदार कर्मचारियों के प्रति क्या प्रशासन इस अन्यायपूर्ण व्यवहार में संरक्षण देगा?

गाड़ियों का अन्धाधुन्ध प्रयोग?

हैवी में अनेकों वाहन ऐसे हैं जिनका पर्यटन आफिशियल नहीं होता न लाग बुकों में ही वास्तविकता अंकित होती है न उसका व्यक्तिगत भुगतान होता है। ऐसी गाड़ियों में १०८४ एवं ४२८० बहुचर्चित हैं। क्या हैवी प्रशासन श्रीमती गांधी के २० सूत्री कार्यक्रमों को सफल बनाने में प्रशासनिक फजूलखर्ची रोकने में इन वाहनों के दुरुपयोग से श्रीगणेश करेगा?

झण्डे से लापरवाही क्यों?

पिछली २६ जनवरी को ध्वजारोहण के अवसर पर मुख्य अतिथि प्रबन्ध निदेशक श्री गुप्ता के हाथ में जाली डोरी रह गई। इस विषय पर "मधुर ज्योति" ने रोष प्रकट किया और इस असाधारण असावधानी का दोषी कमान्डर साहेब को दिया गया। वास्तव में यह महत्वपूर्ण विचारणीय प्रश्न है कि जिस झण्डे की शान में २६ जनवरी मनाई जा रही है उसी की डोरी टूट जाय। इसकी जाँच होनी चाहिये। कहीं ऐसा तो नहीं कि साहेब बहादुर चाची का गुब्बारा मजबूती से बनाने की धुन में झण्डे की मजबूती का ध्यान भूल गये हो।

निर्दोष कर्मचारी ड्यूटी पर वापस

बी० एच० ई० एल० रानीपुर। दिनाँक २५ सितम्बर ८० को श्री रामकुमार वर्मा, रीगर, ब्लाक ४ बी० एच० ई० एल० को चोरी के इलजाम में सेन्ट्रल सक्युरीटी फोर्स ने बन्द करवा दिया था और भेल प्रबन्धिका ने भी श्री वर्मा को नौकरी से निलंबित (Suspend) करके विभागीय जाँच का आदेश दे दिया था। इस सम्बन्ध में मुन्सिफ मजिस्ट्रेट फौजदारी कोर्ट की अदालत में केस चला जिन्होंने श्री वर्मा को दोष मुक्त कर दिया। श्री वर्मा के खिलाफ विभागीय जाँच भी कराई गई जिसमें चोरी के इल्जाम से उन्हें दोष मुक्त पाया गया। स्मरण रहे श्री वर्मा के केस की पैरवी श्री सी० एल० यादव जो बी० एच० ई० एल० के ही कर्मचारी हैं और एटक यूनियन के प्रमुख कार्यकर्ता है ने की थी।

**

कार्यालय सहायक अभियन्ता (आर)
उ० प्र० आवास एवं विकास परिषद
सेक्टर–१ बी० एच० ई० एल० हरिद्वार।

पत्रांक/२०६/कंस्ट्र/ आ० वि० प० / भेल हरि०/ हरि० (एई (आर) दि० ११-२-८२

अल्प कालीन कुटेशन सूचना

अधोहस्ताक्षरकर्ता द्वारा निम्नानुसार सामग्री आपूर्ति हेतु मुहरबन्द कुटेशन दिनाँक २७-२-८२ को सायं १-०० बजे तक आमन्त्रित की जाती है। प्राप्त कुटेशन उसी दिन कार्यालय में उपस्थित कोटेशन दाताओं के समक्ष ३-३० बजे सायं खोली जायेगी।

क्रम सं.	सामग्री का विवरण	लगभग मात्रा	अग्रिम धन राशि	दर	आपूर्ति करने का समय
१—	भेल योजना में बुर्जी की आपूर्ति	२००.०० घन मीटर	३००/–		एक माह

शर्तें

१— कुटेशन में दर की वेलीडिटी एक माह की होगी। वेलीडिटी कम देने वालों की कुटेशन पर विचार नहीं किया जायेगा।

२— अग्रिम धनराशि देहरादून में भुगतान होने वाले काल डिपाजिट एफ० डी० आर० अधिकतम ६ माह के रूप में अधोहस्ताक्षरकर्ता के नाम प्लेज्ड होनी चाहिये। कुटेशन में आर्डर्स की काल डिपाजिट एफ०डी०आर० चैक और नकद स्वीकार नहीं होंगे। बगैर अग्रिम धनराशि वाली कुटेशन पर विचार नहीं किया जायेगा।

३— आपूर्ति उपरोक्त साईट / भंडार में की जायेगी। दर में सामग्री के लदाई ढुलाई उतराई व सभी टैक्स सम्मिलित होने चाहियें। सेल्स टैक्स के लिये फार्म ३ डी (सामग्री के मूल्य पर) अलग से दिया जायेगा।

४— भुगतान सामग्री की संतोषजनक (आपूर्ति टेस्ट सर्टिफिकेट मिलने पर जहाँ आवश्यक हो, के पश्चात एक सप्ताह के अन्दर देहरादून में किया जायेगा। स्टेशन के बाहर किसी भी प्रकार का कोई भुगतान अग्रिम नहीं किया जायेगा।

५— आपूर्ति आदेश होने के एक माह के अन्दर पूर्ण करनी होगी। आपूर्ति पर अग्रिम धनराशि प्रतिपूर्ति के लिये समायोजन की जायेगी। आपूर्ति के बिल पर एक अतिरिक्त प्रतिदिन अधिकतम १० प्रतिशत क्षतपूर्ति वसूल की जायेगी।

६— शर्त वाली कुटेशन पर विचार नहीं किया जायेगा। अधोहस्ताक्षरकर्ता को किसी भी कुटेशन को बिना किसी कारण बताए निरस्त करने को–मात्रा कम/ज्यादा करने व कार्य आपूर्ति बाँटने का पूर्ण अधिकार सुरक्षित है।

७— कार्य/आपूर्ति उ० प्र० सार्वजनिक निर्माण विभाग के स्पेसिफिकेशन के अनुसार होगी/होंगे।

ह०/अपठित
(खलील–उर–रहमान)
सहायक अभियन्ता

प्रेस क्राईब्ड के प्रहार से त्रस्त पँचपुरी।

हरिद्वार, यहाँ सत्ताधारी कांग्रेस सत्ता के नशे में आम जनता पर क्या बोत रही है इस बात की उसको चिन्ता नही कुछ कि उसके ही विधायक इस फकीराबाद के प्रतिनिधि हैं। कुछ वर्ष पूर्व शासन द्वारा हरिद्वार-ऋषिकेश के निर्माण को नियन्त्रित करने के लिए विनियमित क्षेत्र घोषित किया गया किन्तु ऋषिकेश की जनता एवं उसके द्वारा चुने गये प्रतिनिधियो के द्वारा ऋषिकेश को इस कोढ से मुक्त कर दिया गया किन्तु हरिद्वार का दुर्भाग्य यह है कि लोग अकारण परेशानी मे पडे हुए हैं और उसके नम्बरदार कान मे तेल डालकर सोये हुए हैं। भौगोलिक दृष्टि से हरिद्वार मे यह नियम अव्यवहारिक है क्योंकि एक ओर पहाड दूसरी ओर गंगा ऐसी अवस्था मे प्रेस क्राइब्ड अथारिटी के नियम बेईमान हो जाते हैं जब कि भवनो के निर्माण के लिए नगर पालिका के नियम ही पर्याप्त हैं सुना जाता है कि इस कोढ को थोपने मे सत्ताधारी दल के ही कुछ नेताओं का स्वार्थ छिपा हुआ है इसीलिए सारी जनता परेशान है एक ओर सरकार गरीबी मिटाने के लिए कृत संकल्प है दूसरी ओर उनके राजनेता गरीबो को मिटाने पर तुले हुये हैं एक गरीब की क्षमता १००-२०० फिट से अधिक भूमि खरीदने की नहीं है वह कहाँ से प्रेस क्राईब्ड के नियमो के अनुसार घर बनाने के लिए जोरशोर हास मचा। इस व्यवस्था से भ्रष्टाचार फलफूल रहा है बड़े बड़े महल बन रहे हैं और झोपडी वाले आवास के लिए रो रहे हैं। बी० एच० ई० एल० के हजारो कर्मचारी इस बन्धन की वजह से न तो भवन निर्माण कर सके हैं न उनके स्वप्न पूरे हो रहे हैं। क्या सत्ताधारी कांग्रेस के स्थानीय नेता जनता के दुख दर्दों पर ध्यान देकर अपने स्वार्थों का त्याग करेंगे?

पत्रकार मान हानि अभियोग, अभियुक्तों को अदालत हाजिर होने के आदेश

हरिद्वार। स्थानीय न्यायिक मजिस्ट्रेट श्री आर० पी० पाडे ने मान हानि के एक अभियोग में स्थानीय सुप्रसिद्ध समाचार पत्र दैनिक अमीरचन्द सन्देश के संस्थापक सेठ अमृतराम, प्रधान सम्पादक श्याम प्रकाश तिवारी, सम्पादक रमेश सैलानी, संयुक्त सम्पादक श्याम अभ्यास व आकाश प्रिन्टर्स के चारों मालिकों को भारतीय दण्ड विधान की धारा ५०० व ५०१ के अन्तर्गत दिनांक ३१ मार्च ८२ को अदालत मे हाजिर होने के आदेश दिये हैं।

ज्ञातव्य हो कि यह मान हानि का अभियोग स्थानीय प्रमुख पत्रकार श्री मधुकांत प्रेमी ने दायर किया हुआ है। श्री प्रेमी का आरोप है कि उक्त समाचार पत्र समूह ने स्थानीय पत्रकारो को श्री हेमवती नन्दन बहुगुणा व उसके एजेन्टों द्वारा खरीदे गये लुटमइये पत्रकार लिखा था। एक पत्रकार होने के नाते मैंने इसे अपना अपमान समझा।

गुरुकुल कांगड़ी के युवक की नजरबन्दी अवैध घोषित

इलाहाबाद १९ फरवरी (वार्ता) इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने कल गुरुकुल कांगड़ी (सहारनपुर) के युवा कांग्रेस कार्यकर्ता श्री पाडेय की नजरबन्दी को अवैध करार दे दिया उन्हें राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत बन्दी बनाया गया था निर्णय में याचिकाकर्ता युवक को तत्काल रिहा करने का आदेश दिया गया।

BHARAT HEAVY ELECTRICALS LIMITED
(RANIPUR) HARDWAR

Sealed tender for the following works will be received upto 2 15 PM. on 9 3 1982 and will be opened on the same day at 2 30 PM Tender Forms may be obtained from the office of the undersigned on payment of cost of tender set (plus Rs. 5/- par tender set if required by post) in cash or through Money Order on any working day upto 12 00 Noon on 9 3 82 The tender will be sold to the agency who will deposit the required Earnest Money in advance in the shape of C.D.R /F.D R of Scheduled Bank or an other approved from in favour Sr A O.(Works)BHEL/HEEP Hardwar and produce the receipt in lieu thereof.

Tender Notice No. & Date	Name of work	Estimated cost Rs	Earnest Money Rs	Time of completion	Tender cost Rs
12/81-82 Dt.8.2 82	Re-electrification of Annexe Block-6	45,100/- (approx)	920/-	Two months	15/-

PRX—40/122 Sr. Engineer (ESX)/HEEP

पांचपुरी में सीमेंट के बाद किरोसीन में कटौती : अपयशकिसका

हरिद्वार। पचपुरी में गत् विधान सभा चुनावो के बाद एक बार सभी क्षत्रो मे कृपा की लहर दौडी बिजली की कटौती समाप्त हुई। विधायक श्री रामयश सिंह के अनुसार सीमेंट की मात्रा भी जनता की आवश्यकताओ के अनुकूल राज्य शासन से स्वीकृत की गयी। कृपा तो यहाँ अपराधो को भी बढ गई बल्कि अपराधों, गलत धन्धो की तो बाढ़ ही आ गई। सीमेंट पर ब्लैक भी बढा और भ्रष्टाचारो में भी इस दौरान बढोत्तरी बेशुमार हुई।

दुर्भाग्य यहाँ की जनता का। रामयश को अध्यक्ष ही बनना था, उनकी लापरवाही, अकर्मण्यता व डींगों की पोल खुलनी थी। रामयश ने विष्णुघाट पर कुछ बुद्धिजीवियो के बीच अपनी उपलब्धियों की लम्बी-चौडी फेहरिस्त प्रस्तुत की और बिना कर्म किये वाहवाही लूटी कि मुख्य मन्त्री से कहकर हरद्वार को २४ घन्टे बिजली देने के निर्देश दिलाये है और इसके लिये भीषण भाग-दौड की है। ठीक उसकी दूसरी सुबह सरकारी घोषणा हुई कि यहाँ भी बिजली गुल रहा करेगी।

प्रेजकाइज्ड अथॉरिटी का कोढ ऋषिकेश के विधायक ने अपने यहाँ से हटवा लिया मगर रामयश यह भी नहीं करा पाए जिससे गरीब का झोपड़ा भी नहीं बन सकता तो २०-सूत्री कार्यक्रम कहाँ चलाइ ले, कैसे सफल होगा-रामयश ही जाने!

इस बीच जो हालत सीमेंट-किरोसीन और अपराधों की रही उससे सभी वाकिफ हैं, इसके लिये कितनी भागदौड रामयश ने की, वे ही जानते होंगे किन्तु उनकी परिश्रम का यही सुफल नजर आ रहा है कि सीमेंट और किरोसिन तेल का जो कोटा फकीराबाद की कटेहुल्ल जनता के लिये निर्धारित था उसमें कटौती हो रही है यह है जनता को पुरस्का।

मुख्य मन्त्री तक इसकी शिकायत पहुँचे है इसको उजागर करने के लिए यही उदाहरण काफी होगा कि राजा साहब का 'सार्वजनिक-अभिनन्दन' करने हेतु पानी की तरह पैसा बहाकर इलाके के प्रतीक अधिवेशन का आयोजन किया और उन्हीं पत्रकारों की मुलाकात भी उनका न हव से कराई, उनकी सिफारिश जो की तथा आश्वासन दिलाने में सफल रहे कि डी० एस० पी० बी० एन० सिंह को तत्काल निलम्बित किया जा रहा है मगर या तो मुख्य मन्त्री का तत्काल आदेश का होता होगा या फिर रामयश की मेहरबानी से मुख्यमन्त्री ने निलंबन-आदेश जारी किया ही नहीं या किया भी तो तुरन्त किसी के पहुँचते ही वापस लेने की मेहरबानी कर दी।

बद्रीविशाल का प्रकाशन

सहारनपुर १६ फरवरी। ज्ञात हुआ कि भागीरथी के सन्देश को हरिद्वार मे प्रकाशित और प्रतिष्ठित करके भू० पू० प्रधान सम्पादक श्री राम प्रकाश तिवारी शिवरात्रि के अवसर पर अभूतपूर्व साजोसज्जा के साथ दैनिक बद्री विशाल का प्रकाशन करने जा रहे हैं, इस अवसर पर 'लोकार्थ' की ओर से अग्रिम बधाई और शुभकामना है कि भगवान बद्री विशाल श्री तिवारी को को सदबुद्धि दे उनका हृदय विशाल बनाये और पत्र को अपनी ऊंचाईयो तक उठालें आशा है वह अब स्थिर बुद्धि से समाज के दु ख दर्दों को दूर करेंगे और अपने जीवन में स्थिरता लाते हुए बैजानी आदत का त्याग करेंगे। पुन बधाई! इसके साथ सहारनपुर के पत्रकार भाइयों को भी बधाई कि उनका बढ गया एक भाई।

इलाहाबाद के वकील और असंण्ड न्यायालय

इलाहाबाद। यहाँ के वकीलो तथा पू०पू० न्यायाधीशों ने पश्चिमी उत्तर प्रदेश में प्रस्तावित खण्ड-पीठ का सम्बन्धित आयोग के सामने जबरदस्त विरोध किया। इन वकीलो के पू० पू० अध्यक्ष श्री सेहत सिंह ने कहा कि न्याय पाने वालों के लिये पैसा कोई महत्व नहीं रखता। समझ में नहीं आता कि सरकार सुलभ और सस्ते न्याय की बात करती है और श्री सेहत सिंह अपनी सेहत के लिये उन गरीबों की दशा को भूल जाते है जिनके पास पैसे की कमी के कारण इलाहाबाद तक पहुचने की क्षमता नही क्या वह भारत के नागरिक नही। वास्तव मे इलाहाबाद के इन महन्तो को अपनी भुखमरी का खतरा है क्योंकि पैसा पश्चिमी उत्तर प्रदेश से यहाँ बरसता है बलिया, बनारस बाराबंकी से नहीं।

वनविभाग ध्यान दे

हरिद्वार। यहाँ रेलवे और रोड साईड मे लगे हुये वृक्षो के रख रखाव का दायित्व वनविभाग को नई प्रथा की के अन्तर्गत दिया गया, किन्तु देखा यह जा रहा है कि इन पथ वृक्षों को समझदार लोग अपनी आवश्यकता के अनुसार काट लेते हैं न तो रेलवे का ही कोई विभाग इस ओर नजर डालता है न जंगली विभाग।

सम्पादक के नाम पत्र—

महिला राज और महिलाएं

महोदय,

आपके लोकप्रिय समाचार-पत्र के माध्यम से मुझे यह कहना है कि जिस देश की प्रधानमन्त्री महिला हो उसमें महिलाओं के कल्याण और उत्थान की सर्वाधिक सम्भावनाएँ होनी चाहिए, हर स्तर पर प्रयास भी होना चाहिए, सरकार और स्थानीय प्रशासन इस दिशा में अधिक सचेष्ट होंगे। युवतियों और कन्याओं को सरकारी व्यवस्था की अपेक्षा हो तो कुछ अनुचित आकांक्षा नहीं है। मगर दुख इस बात का है कि स्थानीय प्रशासन इस मामले मे महिलाओ को कतई निराशा ही दे रहा है और उपेक्षा भी—

ऐसा कहने के लिए कारण है

(१) यहाँ महिलाओं के लिए एक सिलाई-बुनाई, कढाई केन्द्र खुला है मगर उसका खुला होने का नाम ही है, न उसमें कोई कला सीखने वाली है और न सिखाने वाली। पता चला है कि नगर पालिका हरिद्वार के पास उसे चलाने का पैसा ही नहीं, इसीलिए नियुक्ति और भर्ती करने से प्रशासन कतराता रहा है। बताए, कि नगर ने इसके लिए फण्ड ही नहीं रखा गया, या अधिकारियो ने इसके लिए भर्ती नियुक्ति की आवश्यकता के प्रकाशन पर ही व्यय कर दिया या आ-भी गए या किसी को घर बैठे कामकों में नियुक्त कर तनखाह दी जा रही है और केन्द्र बन्द है कि कोई शिक्षिका नहीं। मैं यहाँ के नेताओं, राष्ट्रीय आज समाज, सामाजिक संस्थाओं और बुद्धिजीवियों से अनुरोध करती हूं कि केन्द्र को अविलम्ब ठीक कर उसे सुचारु रूप से चलाने हेतु आवाज उठाएं।

(२) आवश्यक तो इसकी भी थी लगनी चाहिए कि नगरपालिका के अधीन चलने वाले बालिकाओं के हेतु संचालित इन्टर कालेज की बालिकाओं के बैठने के लिए भी जगह व सामान की कमी है, पाठशालाओं को चुके बैठना पड़ता है।

(३) महिलाओं के विरुद्ध की दुर्दशा और महिलाओं के प्रति हो रहे अपराधों के प्रकाशन व पुलिस की उदासीनता व नपुंसकता भी महिलाओं में रोष करने का काफी है।

—आशीष देवी शर्मा
कनखल, हरिद्वार

—●●—

मुद्रक प्रकाशक एवं स्वामी श्री सोमनाथ, ललित विहार श्रीनाथ नगर ज्वालापुर द्वारा प्रसाद प्रिंटिंग प्रेस बाबा रोड, ज्वालापुर से मुद्रित।

शिवरात्रि और महर्षि दयानन्द

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

करें, क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है। यही भाव सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका और अनुभूमिकाओं में अनेक प्राप्त होते हैं।

शिवजी की दूसरी विशेषता है कि उनके सिर पर चन्द्रमा चमक रहा है। चन्द्रमा शीतलता का प्रतिनिधि है, जोकि प्रसन्नता, शान्ति, अक्रोध, सरलता के भावों को घोषित करता है, महर्षि के जीवन में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं हैं, जब उनका जान-बूझकर अपमान करने और उनको मारने का यत्न किया गया पर महर्षि के मन में मैल नहीं आया 'काशी शास्त्रार्थ' को पण्डितों ने छल-बल से नीचा दिखाना चाहा, पर आपकी मानसिक शान्ति इससे भंग न हुई। पुनः में एक दिन विरोधियों ने दयानन्द को बदनाम करने के लिए एक को गधे पर बिठाकर उसके गले में जूतों का हार डाल 'दयानन्द मुर्दाबाद' के नारों से जलूस निकाला। जब इसकी सूचना महर्षि को दी गई, तो हास्य भरे शब्दों में कहा— ससार में नकली का तो यही हाल होता है।

शिवजी को त्र्यम्बक कहते हैं, क्योंकि उन्होंने तीसरे नेत्र से कामदेव को भस्म किया था। महर्षि ने अपने ज्ञान संयम, तप और ब्रह्मचर्यव्रत से कामवासना को पूर्ण वश मे किया था। तभी तो विरोधियों द्वारा भेजी गई वेश्या अपने पाप से कांपती हुई वापिस लौट आई। मथुरा मे एक दिन यमुना स्नान से लौटती हुई एक नारी ने श्रद्धावश अपना सिर अकस्मात् महर्षि के चरणों मे रखा तो आपने तीन दिन निराहार रहकर योगाभ्यास किया, जिस से वासना का कोई विचार मन में घर न कर सके।

शिवजी के चित्र मे चौथी बात है कि गले में सांप लिपटे हुए है जिसका भाव है कि उन्होंने गरल पिया था। महर्षि ने जब जनता को सत्य ज्ञान का अमृत पिलाना प्रारम्भ किया, तो अनेकों ने अज्ञानतावश या अन्यों के बहकावे में आकर महर्षि को जहर दिया, उन पर पत्थर बरसाये। महर्षि ने पुनरपि सदा सब का भला सोचा, सच्चाई बताई। एक विधवा अपने इकलौते पुत्र का शव गंगा में बहाने के बाद उसके कफन को धोकर जाते हुए जब इस महायोगी ने देखा, तो वह देश की गरीबी से तड़प उठा और सारी रात सो न सका। एक मेले में जब यजमानों को अपनी जवान बेटियां देवदासी कार्य के लिए दान देते देखा, तो वह विरक्त उनके अन्धविश्वास पर बेचैन हो गया और परोसी थाली वैसी की वैसी रखी रह गई है। ऐसी स्थिति को देख किसी ने कहा है—

> कांटा चुभे किसी को
> तड़पते हैं हम 'अमीर'
> सारे जहां का दर्द
> हमारे दिल में है।
> इक टीस जिगर में उठती है,
> इक दर्द सा दिल में होता है,
> रात को बैठकर रोते है,
> जब सारा आलम सोता है।

गौओं के दुःखों से तड़पने की भावना जहां 'गोकरुणानिधि' मे है, वहां मानवता के प्रति तड़फ सत्यार्थ प्रकाश मे यत्र-तत्र प्राप्त होती है।

शिवजी के वर्णन में पांचवीं खूबी भस्म रमाने की है। इसका अभिप्राय है कि वे पूर्ण त्यागी, तपस्वी, निर्लोभी थे।

महर्षि के जीवन में उनके तप-त्याग के पग-पग पर उदाहरण मिलते हैं। जब मूल सच्चे शिव की प्राप्ति के लिए योगाभ्यास कराने वाले गुरु की खोज मे बीस वर्ष की आयु मे ही गृह त्याग और विवाह के बन्धन से बचकर लगातार पन्द्रह वर्ष घूमते यथावसर पहाड़ो, जंगलों की खाक छानते हैं और बर्फीली नदियां भी पार करते हैं। जहां कहीं गुरु, योगी, साधु का पता चलता है, तो वहीं श्री चरणो मे पहुचते हैं। विविध ग्रन्थों का अध्ययन और बताए गए योग का अभ्यास करते हैं। तब अनेकों महन्तों ने अपना चेला बनाने के लिए सम्पत्ति, प्रतिष्ठा का प्रलोभन दिखाया। गुरु विरजानन्द जी की आज्ञा को पूर्ण करने के लिए महर्षि वेद ज्ञान और सत्य का प्रचार करते हुए घूमते हुए जगह-जगह पहुचते हैं। तो महर्षि को सत्य पथ से हटाने के लिए काश्मीर के नरेश और उदय पुर के राजा आदि धन तथा मान का प्रलोभन दिखाते हैं। पर महर्षि को सोने-चांदी के टुकड़े और लोकेषण सत्यपथ से डिगा नहीं सकती महर्षि एक सच्चे शिव के रूप मे सब की भलाई की भावना से भर कर सदा सचाई का ही सन्देश देते हैं।

आज जब विद्या और विज्ञान के विकास के कारण हमारे भवनों, यानो आदि व्यवहार्य वस्तुओं और दुनियावी विचारों में जहां अन्तर आ रहा है वहां पर्वों को मनाते हुए उनके रिवाजों में भी विद्या और विज्ञान के प्रकाश का भी लाभ उठाते हुए हमें सही भावनाओं को अपनाने का प्रयास करना चाहिए।। इस शिवरात्रि के महान् पर्व को सोल्लास मनाते हुए हम अपने हर कार्य, व्यवहार वस्तु को प्रयोग करते हुए सोचें कि यह हमारे लिए शिव-कल्याण कारक है या नहीं? वस्तुतः शिवरात्रि का यही शुभ सन्देश है, कि हम हर प्रकार से शिव को ही स्वीकार करें।

गो-रक्षा के लिए शालवाले द्वारा 23 फरवरी से आमरण अनशन की घोषणा

नई दिल्ली, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधिसभा के प्रधान श्री राम गोपाल शालवाले ने चेतावनी दी है कि यदि ३० जनवरी से प्रारम्भ गो-हत्या बन्दी सत्याग्रह के अंतिम दिन २२ फरवरी तक भी केन्द्र सरकार की ओर से संविधान में संशोधन का कोई आश्वासन न मिला वह २३ फरवरी की प्रातः से ही आमरण अनशन पर बैठ जाएंगे।

गोहत्या बन्दी सौम्य सत्याग्रह के प्रेरक आचार्य विनोबा को लिखे गए एक पत्र मे श्री शालवाले ने अपने उक्त निर्णय से अवगत कराते हुए कहा है कि 'पवनार आश्रम मे भी यह आवाज सुनाई दी थी कि बिना बलिदान के गो माता के प्राण नही बचाए जा सकते। उन्होंने कहाकि गो-रखा को आर्य समाज अपने जन्म-मरण का प्रश्न मान चुका है। आर्यसमाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भी आज से १०७ वर्ष पूर्व गोरक्षा के लिए करोड़ो हस्ताक्षर करा कर स्वयं मलिका विक्टोरिया को भेजे थे। आर्य समाज ने सदैव गो-रक्षण के लिए प्राणपण से प्रयास किया है।

श्री शालवाले ने कहा है कि अब मैंने बहुत सोच-विचार कर ही यह निर्णय लिया है कि गो-रक्षा के लिए यह गरल-पान आर्य समाज को ही करना चाहिए। इस लिए मैंने सम्पूर्ण गो-वंश के रक्षण के लिए २३ फरवरी १९८२ को प्रातः से आमरण अनशन का निश्चय किया है।

उधर हैदराबाद के आर्य नेता श्री राम चन्द्र राम बन्दे मातरम् ने भी घोषणा की है कि आर्यो के बलिदान के बिना गाय बच नही सकेगी।

इस्लामिक षडयन्त्र

(६ पृष्ठ का शेष)

लिए इन वर्गों मे घुसपैठ करना आसान हो गया है। एक सरकारी रिपोर्ट मे स्वयं इस बात को स्वीकार किया गया है "अनुसूचित जातियों विशेषकर इन जातियों के शिक्षित वर्गो मे अपनी सामाजिक पहचान व सामाजिक प्रतिष्ठा पाने की तीव्र लालसा उत्पन्न हो गई है। जब उन्हें अपनी इस इच्छा की पूर्ति होती दिखाई देती, तो वे समाज मे समान स्तर पाने तथा अपने अच्छे भविष्य के लिए वे इस्लाम की ओर उन्मुख होने हैं।'

रिपोर्ट मे यह भी कहा गया है कि मुस्लिम समुदाय इस प्रकार के धर्म परिवर्तन करने वाले हरिजनों के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण रखता है। यहां तक कि वे इन धर्मान्तरण करने वाले लोगों की बाद में देखभाल करने को तैयार रहते है।

सरकार का दायित्व

जब भी कोई धर्म-परिवर्तन की घटना होती है, उसके पीछे विदेशी हाथ होने की बात कही जाती है और इसमे कुछ गलत हथकंडो का प्रयोग भी हो सकता है। संविधान स्वैच्छिक धर्म परिवर्तन की अनुमति देता है। जो लोग स्वेच्छा से हिन्दू धर्म के अलावा किसी धर्म को ग्रहण करते हैं, सरकार उनके विरुद्ध कोई कार्यवाही नही कर सकती है। किसी व्यक्ति के धार्मिक विश्वास या धर्म विशुद्ध रूप से उसकी अपनी निजी बात होती है। यह उस व्यक्ति के अपने व जिस भगवान पर वह विश्वास करता है, के मध्य का सम्बन्ध होता है।

(४ पृष्ठ का शेष)

को पता ही नही होता, उस स्थिति मे सदाचारी और भावना प्रवण व्यक्ति भी बगल से निकल जाने मे ही अपनी खैर समझता है, अवैध शराब और वेश्याओं के अड्डे सम्भ्रान्त मुहल्लों मे चलते रहते हैं, परन्तु कोई सामाजिक कार्यकर्ता उनका विरोध करने की हिम्मत नही करता, क्योंकि उसे यह बात भलीभांति मालूम है कि लोग सहयोग करने के लिए बाहर नही आए गे, यह परिस्थिति बड़ी भयावह है कि औद्योगिक महानगरो के लोग कायर और कमजोर हो रहे हैं।

—

एक धर्म निरपेक्ष राष्ट्र मे इस बात को सुनिश्चित होना ही चाहिए। लेकिन यह अपेक्षा किया जाना स्वाभाविक ही है कि सरकार हिन्दुओं को इस बात के लिए प्रेरित करे कि वे हरिजनो के साथ मानवीयता का व्यवहार करें।

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वर्ष 14, अंक 45, 17 फाल्गुन सम्वत् 2039, तदनुसार 28 फरवरी 1982, दयानन्दाब्द 156। एक प्रति 35 पैसे (वार्षिक शुल्क 15 रुपए)

गो-हत्या बन्दी में आर्य समाज का सर्वाधिक योगदान

जालन्धर। गोहत्या बन्दी के लिए आचार्य विनोबा की प्रेरणा पर गत 30 जनवरी से 22 फरवरी (ऋषिबोधोत्सव) तक चलने वाले सौम्य सत्याग्रह के एक विशेष अध्ययन के अनुसार इसमे सर्वाधिक योगदान आर्य समाज का पाया गया। ग्राम स्तर पर बनी विभिन्न गो-रक्षा समितियों के पदाधिकारियों मे भी आर्य समाजियों का ही प्रभुत्व रहा।

अध्ययन के अनुसार सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली की अपील पर विभिन्न राज्यों की प्रतिनिधि सभाओं व आर्य समाजो ने इसे जन्म मरण का प्रश्न मानते हुए सत्याग्रह मे बढ चढ कर भाग लिया।

गुरदासपुर

आर्य समाज (गुरुकुल विभाग) गुरदासपुर में गोरक्षा सौम्य सत्याग्रह के अन्तर्गत गत दिवस सर्व श्री तरसेम कुमार, तीर्थ राम, [illegible] सिंह रमेश [illegible] ने एक एक दिन का उपवास किया।

आज सर्व श्रीमती शांति देवी [illegible] [illegible], राज शर्मा राज त्रिपाठी, लीलावन्ती व सुमित्रा [illegible] उपवास क्रम में भाग ले रही हैं।

फिरोजपुर छावनी

विगत दिवस यहा सौम्य सत्याग्रह के अन्तर्गत सर्व श्री सुरेन्द्र गुप्ता वकील, [illegible] कुमार, वीरेन्द्र कुमार, मनोज कुमार के अतिरिक्त श्री [illegible] चन्द गुप्ता, श्री ओम प्रकाश जी ने २४ घण्टे का उपवास रखा।

[illegible]

सौम्य सत्याग्रह के अन्तर्गत [illegible] के [illegible] से सर्व श्री देवराज [illegible], [illegible] कुमार, [illegible] शर्मा, [illegible] शर्मा, [illegible] कपूर, [illegible] लाल, प्यारे लाल मोहन कुमार स्वतन्त्र कुमार सुदर्शन शर्मा ने भाग लिया था।

पठानकोट गोरक्षा समिति के अब तक १४ जत्थे इस सौम्य सत्याग्रह मे आ गए हैं।

जत्था न० १५ को सर्व श्री सीता राम सलाहिया मुलखराज महेन्द्र रूप लाल शास्त्री हंसराज पानवार देवेन्द्र कुमार शर्मा जनक राज महाजन प्रवीण गुप्ता, नरेन्द्र जी सर्वेश कुमार रवीन्द्र महाजन रेवती रमन, राजेश गुप्ता मदन लाल गुप्ता।

जालन्धर

श्री अमृतलाल बजाज एडवोकेट ने बताया है कि आज यहा गोरक्षा सत्याग्रह का १८ वां दिन है। अबकि ११ सत्याग्रहियो ने व्रत रखा। श्री अनन्तराय वानप्रस्थी ने उन्हे फूल मालाए पहना कर [illegible] पर बिठाया माता वेदवती भल्ला और माता कमला आर्य ने हवन-यज्ञ किया। व्रत पर बैठने वाले ७ सत्याग्रही सनातन धर्म सभा माडल हाऊस के हैं। डा० राम प्रकाश मोगा वाले पंडित बालक राम शर्मा प० देवी दास पुजारी श्री राम लाल, राम सरन चावला व बहन

शशी प्रभा व बहन कैलाशपुरी, अखिल भारतीय महिला गीता मण्डल की बहन शकुन्तला चोपड़ा बहन कान्ता सहगल और बहन लीलावती ने आर्य समाज आदर्श नगर की सदस्य माता मुलानी देवी ने उपवास रखा।

अमृतसर

आर्य समाज शक्ति नगर अमृतसर द्वारा गोरक्षा सौम्य सत्याग्रह का सफलता पूर्वक आयोजन कर रहा है। यह कार्य-क्रम ३० जनवरी से शुरू है और प्रति-दिन पाच व्यक्ति उपवास पर बैठ रहे।

गत रविवार को आर्य समाज नवा कोट की ओर से ११ सदस्य उपवास पर बैठे। इनके अतिरिक्त २१ महिलाओ ने भी इसमें भाग लिया।

चम्बा

गोरक्षा हेतु सौम्य सत्याग्रह के उपलक्ष मे चम्बा मे ३० जनवरी से लेकर २२ फरवरी तक काफी सज्जनो मे २४ घण्टे का व्रत किया, जिसमें श्री १०८ स्वामी प्रकाशानन्द सरस्वती जी महाराज ने हिन्दू जाति को अपने प्रवचन मे कहा कि अब हमे किसी सरकार के सहारे नही रहना है। अपना सगठन मजबूत करना है। और निर्भीक होकर अपने आदर्शों के लिए हमे सघर्ष करना है।

फिरोजपुर शहर

सौम्य सत्याग्रह के अन्तर्गत गत दिवस यहा सर्वश्री हवन लाल श्री मोहनलाल मल्होत्रा नरसिंह शास्त्री व इसके बाद अगले चरण मे श्री ओमप्रकाश कालिया श्रीमती कृष्णा मैय्यर और भगवानदेवी मेहता ने भाग लिया।

—

गाय व बैल ने अपने प्राण देकर गोरक्षा सत्याग्रहियों को बचाया

कोटकपूरा—गत दिनो गोरक्षा सौम्य सत्याग्रह के उपलक्ष में यहा चल रहे उपवास अभियान में एक अत्य त दु खद घटना घटी।

स्थानीय आर्य समाज में जहां गोरक्षा सत्याग्रह चल रहा है बिल्कुल सामने टेलीफोन का एक खम्भा है किसी तरह इस खम्भे में बिजली का करंट आ गया जिससे न जाने कितने व्यक्तियों की प्राण हानि हो सकती थी लेकिन एक गाय और एक बैल ने अपना बलिदान देकर सबको बचा लिया। उल्लेखनीय है कि आर्य समाज में आर्य मित्र पाठ शाला भी चल रही है।

आर्य समाज, गोरक्षा समिति और राधाकृष्ण, राम रमण मण्डल के सदस्यों ने चन्दा इकट्ठा करके गाय और बैल की शानदार शव यात्रा निकाली और विधि पूर्वक उन्हे दफनाया।

उल्लेखनीय है कि गोरक्षा समिति कोटकपूरा के सदस्य सौम्य सत्याग्रह मे नियमित रूप से भाग ले रहे हैं।

हमारे कर्म हमारे लिए सुखकारी हों ?

वेद सुधा

स्तुति योग्य प्राण हमारे लिए सुखकारी हो। मनुष्य शरीर में जीवात्मा के अतिरिक्त पांच ज्ञानेन्द्रिय और पांच कर्मेन्द्रिय और ग्यारहवां मन है। मन दस इन्द्रियों का कमाण्डर है। जीवात्मा मन और इन्द्रियों के अतिरिक्त प्राण है। जब यह प्राण शरीर से बाहर हो जाता है तो नेत्र देख नहीं सकते। कान सुन नहीं सकते, जीभ के लिए स्वादों एवं रसों का कोई मतलब नहीं रह जाता।

सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम. ए. एल. टी.
(१७५ जाफरा बाजार गोरखपुर)

शं नो अदितिर्भवतु व्रतेभिः
शं नो भवन्तु मरुतः स्वर्काः ।
शं नो विष्णुः शमु पूषा नो अस्तु
शं नो भवित्रं शम्वस्तु वायुः ॥

(व्रतेभिः) अपने निश्चित किए हुए व्रतों—अन्न आदि भोग्य पदार्थों को उत्पन्न करने के द्वारा (अदितिः) पृथ्वी (नः शम् भवतु) हमारे लिए सुखकारी हो, (स्वर्काः) स्तुति योग्य (मरुतः) प्राण (नः) हमारे लिए (शं भवन्तु) हमारे लिए सुखकारी हों (विष्णुः) सूर्य (३) और (पूषा) मेघ (नः शम् अस्तु) हमारे लिए सुखकारी हों (विष्णु) सूर्य (३) और (पूषा) मेघ (नः शम् अस्तु) हमारे लिए सुखकारी हो (नः भवित्रम् शम् अस्तु) हमारा भविष्य सुखकारी हो (वायुः शम् अस्तु) वायु भी हमारे लिए सुखकारी हो।

शं नो देवः सविता त्रायमाणः
शं नो भवन्तूषसो विभातीः ।
शं नो पर्जन्यो भवतु प्रजाभ्यः
शं नः क्षेत्रस्य पतिरस्तु शम्भुः ।

(त्रायमाणः) अन्धकार तथा कृमि आदि से रक्षा करने वाला (सविता देव) उदय होता हुआ दिव्य शक्ति वाला सूर्य (नः शम्) हमारे लिए सुखकारी हो, (प्रभातीः उषसः) प्रचुर प्रकाश वाली प्रभात वेलाएं (नः शं भवन्तु) हमारे लिए सुखकारी हों (प्रजाभ्यः) प्रजाओं के लिए (पर्जन्यः) बरसाने वाला मेघ (शम् भवतु) सुखकारी हो—ऐसा न हो कि वर्षा के अभाव में सूखा पड़े, ऐसा न हो कि वर्षा की अधिकता से बाढ़ आए (क्षेत्रस्य पतिः) खेतों का मालिक किसान (शंभुः) है कल्याण करने वाले प्रभु ! (नः शम् अस्तु) हमारे लिए सुखकारी हो।

पृथ्वी हमारे लिए सुखकारी हो। यह पृथ्वी हमारे लिए नाना प्रकार के अन्न, फल, फूल, वृक्ष औषधियां धातुएं, रत्न, नमक आदि पदार्थ देती है। यह पृथ्वी मां की तरह हमको अपनी गोद में पालती-पोसती, खिलाती-पिलाती तथा नाना प्रकार के सुख और सुविधाएं देती हैं। यह पृथ्वी माता हमारे लिए सुखकारी हो।

स्तुति योग्य प्राण हमारे लिए सुखकारी हो। मनुष्य शरीर में जीवात्मा के अतिरिक्त पांच ज्ञानेन्द्रिय और पांच कर्मेन्द्रिय और ग्यारहवां मन है। मन दस इन्द्रियों का कमाण्डर है। जीवात्मा मन और इन्द्रियों के अतिरिक्त प्राण है। जब यह प्राण शरीर से बाहर हो जाता है तो नेत्र देख नहीं सकते, कान सुन नहीं सकते, जीभ के लिए स्वादों एवं रसों का कोई मतलब नहीं रह जाता, यह जो जीवन के चिन्ह श्वास प्रश्वास आते हैं, जो रात-दिन जागते, सोते कभी विश्राम नहीं करते, चलते ही रहते हैं यह प्राण हैं, यह शरीर में बिल्कुल निष्काम सेवक के रूप में सदा कार्य करता रहता है। दूसरों के लाभ के लिए अनथक कार्य करने वाला प्राण है। छान्दोग्योपनिषद् से प्राण की श्रेष्ठता बताने के लिए एक कथा कही गई है। एक दिन वाणी, कान, नाक, आंख आदि सभी इन्द्रियों ने अपनी-अपनी श्रेष्ठता का दावा किया। प्राण भी उसमें सम्मिलित था। निर्णय के लिए यह सब प्रजापति के पास पहुंचे और कहा कि बताओ कौन हम में सर्वश्रेष्ठ है। प्रजापति बोले—

'यस्मिन् व उत्क्रान्ते शरीरं पापिष्ठतरमिव दृश्यते स वः श्रेष्ठ इति।'

तुम में से जिसके न रहने पर यह शरीर बहुत बुरा सा लगे, वह तुम में श्रेष्ठ है।

यह सुनकर आंख, कान, नाक, वाणी आदि सभी इन्द्रियां शरीर से निकल गईं। पर, अन्धे, बहरे, गूंगे सभी जीवित रहे—अपना कार्य करते गए। अन्त में प्राण शरीर से जाने की तैयारी करने लगा। शरीर मृतवत् दीखने लगा। तब सारी इन्द्रियों ने एक स्वर से कहा-प्राण ! भगवन्नेधि, त्वन्नः श्रेष्ठोऽसि, मोत्क्रमीरिति' (छान्दोग्य ५-१-१२) भगवन् ! तुम हो, तुम ही हम में से श्रेष्ठ हो, बाहर मत निकलो।

प्राणो वाव ज्येष्ठश्च श्रेष्ठश्च,

प्राण ही सबसे बड़ा और सबसे श्रेष्ठ है। इसलिए प्राण स्तुति योग्य है। वह हमारे लिए सुखकारी हो।

सूर्य और मेघ हमारे लिए सुखकारी हो। वायु भी हमारे लिए सुखकारी हो और सबसे बढ़कर हमारा भविष्य सुखकारी हो। हम इन चीजों का इस प्रकार उपयोग करें कि हमें बाद में पछताना न पड़े।

सूर्य, वह सूर्य जो अन्धकार तथा कृमि आदि से हमारी रक्षा करता है, प्रचुर प्रकाश करने वाली प्रभात वेला हमारे लिए सुखकारी हो, सूर्य को कल्याण करने वाला हम तभी कह सकते हैं जब अपने कर्त्तव्य के पालन किसी भी समय एक क्षण का प्रमाद न करें। सूर्य के समान हम जहां अपने कर्त्तव्य से न हटें, वहां हममें चमक हो, आकर्षण हो, दूसरों का हम मार्ग दर्शन करें इस प्रकार सूर्य को हम सुखकारी बना सकें।

प्रभातवेला या उषा हमारे लिए सुखकारी हो, प्रातः काल या उषादेवी अपने दोनों हाथों से स्वास्थ्य, सौन्दर्य मेधा बुद्धि तेज और ओज की सम्पत्ति लुटाती हुई आ रही है, इस प्रभातवेला को सुखकारी बनाने के लिए हमें ब्राह्म मुहूर्त में उठना चाहिए। इसे सुखकारी बनाने के लिए प्रभातवेला में उठो। एक कवि ने कहा है-

उषाकाल में उठो उषर्बुध बनो,
'सूर्य' सम तेजस्वी,
बल विद्या में सुखद स्वास्थ्य में बनो
वीरवर्चस्वी।

प्रातः काल का वातावरण अतीव मनोहर और मधुर होता है प्रातः कमल खिल उठते हैं, भ्रमर गुंजार करने लगते हैं। पक्षी अपनी मदमाती चहक से वन, उपवन और उद्यानों को चहका देते हैं। शीतल, मन्द सुगन्धित वायु हृदय को अल्हादित कर देता है। प्रकृति में नई आभा और नवजीवन सा दृष्टिगोचर होता है।

मेघ सुखकारी हों, खेत सुखकारी हों, खेतों का मालिक किसान हमारे लिए सुखकारी हों, हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं, हे प्रभो ! आपकी कृपा से अन्धकार तथा कृमियों से रक्षा करने वाला दिव्य शक्ति वाला सूर्य प्रचुर प्रकाश वाली, प्रभात वेलाएं, बरसने वाला मेघ और लहलहाते खेतों का मालिक किसान— ये सब प्रजाओं के लिए सुखकारी हों।

आर्यसमाजें तथा शिक्षण संस्थाएं विशेषांक का आर्डर शीघ्र भेजें

सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी की इच्छा है कि आर्य समाज के सब से महान् पर्व स्थापना दिवस पर आर्य मर्यादा का एक ऐसा विशेषांक प्रकाशित किया जाए जिस के पढ़ने से परिचित अपरिचित, विद्वान तथा सामान्य जन सभी आर्य समाज के विशुद्ध और व्यापक स्वरूप तथा इसके द्वारा किए गए तथा किए जा रहे कार्यों का बोध प्राप्त कर सकें और इस की उपयोगिता और महत्ता को समझ सकें। इस लिए हमने अपने पूज्य विरक्त महानुभावों, विद्वान लेखकों तथा कवियों से लेख तथा रचनाएं भेजने के लिए प्रार्थना की है। हमें आशा है कि अपने सहृदय विद्वानों के सहयोग से आर्य मर्यादा का यह विशेषांक अत्युत्तम विचारोत्तेजक एवं प्रेरणादायक पाठ्य सामग्री से भरपूर होगा।

प्रत्येक समाज और शिक्षण संस्था अपने लिए अभी से प्रतियां सुरक्षित करा लें ऐसा न हो कि बाद में हम उन की इच्छा पूर्ति न कर सकें।

इस विशेषांक का मूल्य कम से कम २ रुपए रखा जाएगा—हमारा यत्न होगा कि इससे मूल्य अधिक न हो। अपने अपने आदेश शीघ्र भेजिए। निम्नलिखित विषयों पर लेख मांगे गए हैं।

१- आर्य समाज का स्वरूप
२- आर्य समाज की मान्यताएं
३- समाज सुधार और आर्य समाज
४- आर्य समाज की हिन्दी सेवा
५- दलितोद्धार का कार्य तथा आर्य समाज
६- वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज की आवश्यकता?
७- आर्य समाज की राष्ट्र सेवा
८- आर्य समाज के शहीद
९- शिक्षा और आर्य समाज
१०- आर्य समाज की संस्थाएं तथा उनकी उपयोगिता
११- गुरुकुल शिक्षा प्रणाली का महत्व
१२- वेद के प्रति आर्य समाज का दृष्टिकोण
१३- आज के हालात में आर्य समाज का कार्यक्रम क्या हो ?
१४, मर्यादा पालक श्री राम जी का विशुद्ध स्वरूप।
१५. सम्प्रदायवाद का शत्रु आर्यसमाज
१६. मानवता का प्रचारक आर्यसमाज
१७. स्त्री शिक्षा में आर्यसमाज का योगदान।

—ओ३म् प्रकाश आर्य,
सभा कार्यालयाध्यक्ष

ओ३म्

आर्य मर्यादा

सम्पादकीय–

पंजाब का आर्यसमाज इस पर गर्व कर सकता है

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के आदेश पर पंजाब की आर्यसमाजों ने ३० जनवरी से २२ फरवरी तक गो-रक्षा के लिए जो सौम्य सत्याग्रह में अपना योगदान दिया है। उस पर प्रत्येक आर्य समाजी को गर्व होगा। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब की ओर से सब आर्य समाजों को यह आदेश दिया गया था कि वे भी इस सौम्य सत्याग्रह में अपनी आहुति डालें। मुझे यह लिखते हुए हार्दिक प्रसन्नता है कि पंजाब की आर्य समाजों ने इस विषय में अपना अत्यन्त सराहनीय कार्य किया है। प्राय: सब नगरों में आर्य समाजियों ने एक बहुत बड़ी संख्या में इस सत्याग्रह में भाग लिया है। मैं विशेषकर अपनी माताओं और बहिनों का आभारी हूं कि उन्होंने इस सौम्य सत्याग्रह में अपना अत्यन्त सराहनीय योगदान दिया है। मैं पंजाब को किसी दूसरी धार्मिक संस्था के महत्व को किसी प्रकार कम करना नहीं चाहता। परन्तु इस वास्तविक स्थिति से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि इस सौम्य सत्याग्रह में जितना भाग पंजाब की आर्यसमाज ने लिया है। किसी दूसरी धार्मिक संस्था ने नहीं लिया। कुछ दिनों के पश्चात् आर्य समाज की देखा-देखी कुछ और व्यक्ति भी आने लग गये। परन्तु शुरू से लेकर अन्त तक इस सौम्य सत्याग्रह को चलाने का सारा उत्तरदायित्व आर्य समाजियों के कन्धों पर ही था। मुझे इस बात का हर्ष भी है और गर्व भी, कि मेरे भाईयों, मेरी माताओं और मेरी बहिनों ने अपना एक कर्त्तव्य इस ढंग से निभाया है, जिसे देखकर हमारा सिर ऊंचा होता है। मुझे सर्वोदय के कार्यकर्त्ता भी मिले हैं, उनका भी यह कहना है कि इस आन्दोलन में जो योगदान आर्यसमाज का रहा है किसी दूसरी संस्था का नहीं रहा। जहां तक हमारा सम्बन्ध है, हमें इस का एक लाभ यह भी हुआ है कि आर्य समाज का बहुत प्रचार हुआ है। जो लोग कई बार आर्य समाज से दूर रहते थे, वे भी अब यह समझने लगे हैं कि कोई संस्था वास्तव में अपने कर्त्तव्य को निभाती है तो वह आर्य समाज है। गोरक्षा और गोपालन की बातें करने वाले तो और भी कई मिल जाएंगे। परन्तु इसके लिए कुछ क्रियात्मक काम केवल आर्य समाज ने ही किया है। वैसे तो पंजाब के सबसे बड़े-बड़े शहरों में तीन सप्ताह यह सौम्य सत्याग्रह होता रहा है। परन्तु जो कुछ जालन्धर में हुआ उसे देखकर मैं अनुभव करता हूं कि इसके द्वारा हमने एक प्रकार से महर्षि दयानन्द के बताए मार्ग पर चलने का प्रयत्न किया है। महर्षि दयानन्द सबसे पहले धार्मिक नेता थे, जिन्होंने गोरक्षा के लिए आन्दोलन प्रारम्भ किया था। अब आचार्य विनोबा और कुछ दूसरे महानुभाव भी इस दिशा में सक्रिय हो गये हैं। आर्य समाज ने स्थिति की गम्भीरता को समझते हुए इसमें अपना पूरा योगदान दिया है। दूसरे प्रान्तों के विषय में मेरे लिए कुछ कहना कठिन है, परन्तु जो कुछ पंजाब में हुआ, वह अत्यधिक सराहनीय और गौरवमय है। इसके द्वारा आर्य समाज की शक्तिशाली संगठन का भी प्रदर्शन हुआ है। बहुत समय के पश्चात् पंजाब में एक ऐसा आन्दोलन किया गया है, जिसमें सारे आर्य समाज ने सक्रिय भाग लिया है। मैं पंजाब की सब आर्य समाजों के अधिकारी महानुभावों और सदस्यों को विशेषकर महिलाओं को बधाई देता हूं और उनका धन्यवाद भी करता हूं कि उन्होंने सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा और आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के आदेश के अनुसार अपने कर्त्तव्य को पूरा किया है। ऐसे ही समय में किसी संस्था के विषय में अनुमान लगाया जाता है कि उसमें कितनी शक्ति है और कितनी जागृति? पंजाब के आर्य समाजों ने इस आन्दोलन में सक्रिय भाग लेकर केवल अपना कर्त्तव्य ही पूरा नहीं किया आर्य समाज के नाम को चार चांद लगाए हैं। इसके लिए मैं पंजाब की सब आर्य समाजों के अधिकारियों को बधाई भी देता हूं और उनका धन्यवाद भी करता हूं।

—वीरेन्द्र

कादियां पहुंचो

पिछले वर्षों की तरह इस वर्ष भी छ: सात मार्च को कादियां में अमर बलिदानी धर्मवीर पं. लेखराम की स्मृति में एक सम्मेलन किया जाएगा। इस बार का सम्मेलन एक विशेष महत्व रखता है। दो वर्ष हुए जब कादियां में पं. लेखराम के स्मारक की नींव रखी गई थी। अब वह स्मारक कुछ बनता दिखाई दे रहा है। कुछ कमरे बन गए हैं और अब एक यज्ञशाला और एक पुस्तकालय बन रहा है। यह सब कुछ कादियां के आर्य भाईयों और बहिनों के परिश्रम का ही परिणाम है। परन्तु उन्होंने जो कुछ कर दिखाया है, उसमें उन्हें कभी सफलता न होती यदि पंजाब के आर्य भाई और बहनें उनकी कोई सहायता न करते। उन्हें प्रोत्साहन तो मिला है। परन्तु इतना नहीं जितना कि मिलना चाहिए था। इसमें सन्देह नहीं कि एक बहुत बड़े स्मारक को बनाने के लिए बहुत अधिक परिश्रम करना पड़ता है। धन की भी बहुत अधिक आवश्यकता होती है। उस धन का सदुपयोग करने वाले भी व्यक्ति चाहिए। कादियां में ऐसे महानुभाव तो हैं। जो धन का सदुपयोग करते हैं। एक एक पाई जो उन्हें मिलती है, वह उसे इस ढंग से खर्च करते हैं कि कोई उस पर आपत्ति नहीं कर सकता। परन्तु यह पर्याप्त नहीं है। जितने धन की आवश्यकता है वह अभी तक उन्हें नहीं मिला। हम सब आर्य समाजों के लिए यह लज्जा का विषय है और इसमें मैं केवल पंजाब के ही नहीं दूसरे आर्य समाजियों को भी सम्मिलित करता हूं कि हमने महान बलिदानी का स्मारक बनाने के लिए अभी तक कुछ भी नहीं किया। यह स्मारक तो 50-६० वर्ष पहले बन जाना चाहिए था। वह क्यों नहीं बन सका? अब उसके विषय में किसी विवाद में पड़ने से कोई लाभ न होगा। अब तो केवल यही देखना है कि हम इस काम को कैसे कर सकते हैं। जहां तक पं. लेखराम का सम्बन्ध है, उनके प्रति आर्य समाज का विशेष कर्त्तव्य है। हम उन्हें समय समय पर याद तो करते रहते हैं, परन्तु न तो उनके आदेश के अनुसार हमने अभी तक इतना साहित्य तैयार किया है, जैसा कि वह चाहते थे और न ही अभी तक उनका कोई स्मारक बनाया है। जो स्मारक अब कादियां में बन रहा है, यदि वह पूरा हो जाए तो वह ही एक ऐसा केन्द्र बन सकता है, जहां से वैदिक धर्म का प्रचार भी हो सकता है। और पं. लेखराम की विचारधारा का प्रचारक भी हो सकता है। इसलिए यह आवश्यक है कि पंजाब का आर्य समाज इस दिशा में अपना विशेष ध्यान दें। इसलिए मैं पंजाब के सब आर्य भाईयों और बहिनों से यह निवेदन करना चाहता हूं कि उन्हें ७ मार्च को अधिक से अधिक संख्या में कादियां अवश्य पहुंचना चाहिए। प्रत्येक आर्य समाज अपनी ओर से जो भी इस स्मारक के लिए दे सकती है उसे देना चाहिए। हम देखते हैं कि दूसरी धार्मिक संस्थाएं अपने बड़े-बड़े स्मारक बनाती हैं। पंजाब में तो हम पहला ऐसा स्मारक बना रहे हैं, जहां से एक ऐसे महापुरुष की विचारधारा का प्रचार हो सकेगा। जिन्होंने अपने धर्म के लिए अपना बलिदान दे दिया था। इसलिए इस बार का पं. लेखराम स्मारक सम्मेलन विशेष महत्व रखता है। आशा है कि पंजाब के भाई और बहिनें मेरी इस प्रार्थना को स्वीकार करते हुए अधिक से अधिक संख्या में कादियां पहुंचने का प्रयत्न करेंगे।

—वीरेन्द्र

आर्य समाजों तथा शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों की सेवा में

आर्य समाज अंक के आर्डर शीघ्र भेजें

आपको यह जान कर प्रसन्नता होगी कि आर्य समाज के सबसे महान पर्व स्थापना दिवस पर आर्य मर्यादा का जो विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है उस के लिए निम्नलिखित सुयोग्य विद्वानों के लेख तथा कविताएं हमें प्राप्त हो चुकी हैं। इससे आप सहज अनुमान लगा सकते हैं कि आर्य मर्यादा का यह विशेषांक कितना उपयोगी होगा।

१- डा. मुंशीराम जी शर्मा सोम डी-लिट कानपुर
२- डा, सूर्य देव जी डी लिट अजमेर
३- आचार्या प्रज्ञा देवी जी वाराणसी
४- प्रो. उत्तम चन्द जी 'शरर' एम, ए, पानीपत
५- श्री यशपाल आर्य बन्धु मुरादाबाद
६- श्रीयुत दत्तात्रेय बाव्ले अजमेर
७- प्रा. भद्रसेन आवेद दर्शनाचार्य होशियारपुर

(शेष पृष्ठ ४ पर)

सशस्त्र क्रान्ति और सामाजिक परिवर्तन

स्वाधीनता-संग्राम में क्रान्तिकारियों ने जो अमर बलिदान दिया वे कभी भुलाए नहीं जा सकते। उनकी सशस्त्रक्रान्ति ने स्वाधीनता-संग्राम में नवचेतना का संचार किया। परन्तु यह तथ्य है कि उन के अनुपम बलिदान के अनुरूप देश को प्रतिफल नहीं मिला। न ही वे अपने अभीष्ट में सफल हो पाए।

बहुत सारे नवयुवक आज भी विश्वास के साथ यही समझते हैं कि आधुनिक सामाजिक प्रगति और सुधार का एकमात्र इलाज सशस्त्र क्रान्ति ही है। इसी दृष्टिकोण से ही नक्सलवादी प्रवृत्त हुए, परन्तु वे भी सशस्त्र क्रान्ति द्वारा इस लक्ष्य में सफल नहीं हो सके। पुन. सामाजिक विकास और परिष्कार का क्रान्तिकारी क्या मार्ग हो? इस समस्या के हल के रूप में स्वामी सत्यदेव परिव्राजक लिखित—'आत्म हत्या' कथा के ये संदर्भ बहुत महत्वपूर्ण हैं। आशा है सशस्त्र क्रान्ति के प्रेमी इन पर गहराई से विचार करेंगे।

"महानन्द जी बड़े गौर से पृथ्वी नाथ की ओर देख कर कहने लगे—क्या सचमुच तेरे हृदय मे देश का दर्द है? अंग्रेजी स्कूल में पढ़ने वाले लड़कों का जोश सोडावाटर की बोतलों की तरह होता है, वह बहुत देर तक नहीं ठहरता। स्कूल और कालिजों से परीक्षा पास कर लेने के बाद ये लड़के फिर उन्हीं गरीबो का खून चूसते हैं। इस देश मे अंग्रेजी शिक्षा के कारण ही इतनी गरीबी फैली हुई है। विदेशी वस्तुओं के शौकीन स्कूल और कालिजों के लड़के ही हैं। सरकारी विभागों में वे ही नौकरी करते हैं, ब्रिटिश साम्राज्य को वे ही सुदृढ़ बनाते हैं, अपने गरीब देश वासियों की भाषा का वे ही निरादर करते हैं और उन्ही के द्वारा देश में नामर्दी छाई हुई है।

पृथ्वीनाथ बड़े गौर से स्वामी जी की बातें सुन रहा था। उसने सोचा कि स्वामी जी के हृदय में देश के प्रति कैसी भक्ति भरी है। उसने विनीत भाव मे निवेदन किया स्वामिन आप का कहना यथार्थ है। हमारे ही पापों के कारण यह हमारा देश दासता की बेड़ियों में जकड़ा हुआ है। हम अंग्रेजी शिक्षा से कैसे बच सकते हैं। जब राज्य अंग्रेजी है। विदेशी राज्य का अन्त किए बिना यह दुःख कैसे दूर हो सकते हैं? स्वामी जी ने कहा—जातियों के गिरने और उठने के कारण होते हैं। इस देश के लोगों को तुम सहज में ही नहीं उठा सकोगे और स्वाधीनता वह तो बड़ी दूर है। हमने अपनी ही भूलों से ये विदेशी व्यापारी तो केवल व्यापार करने के लिए आए थे। हम ने स्वयं उन्हें अपने घर बुला कर, अपनी कमजोरियां दिखा कर अपना प्रभु बनाया है। स्वामी दयानन्द सरस्वती बड़े ऊंचे दर्जे के देश भक्त थे, उन्होंने सबसे पहले समाज की निर्बलताओं को दूर करने का पथ बतला कर फिर स्वाधीनता-प्राप्ति की शिक्षा दी है। उपदेश देते देते मेरे बाल सफेद हो गए हैं, लेकिन नतीजा क्या? ये हिन्दू किसी की नहीं सुनते। ये तो अच्छी तरह डण्डे खाए बिना नहीं सुधरेंगे। इन्हें तो कोई शक्तिशाली नेता चाहिए, जो डण्डे मार कर इन के स्वार्थ को भगावें।

पृथ्वीनाथ कुछ विस्मित सा हो गया। उसे यह आशा नहीं थी कि बूढ़ा सन्यासी डण्डे मार कर अपने देशवासियों का स्वार्थ भगाने के पक्ष मे हैं। उसने उन्हें एक साधारण सुधारक समझा था, जो हिन्दू समाज की पौराणिक रूढ़ियों को दूर करने का पक्षपाती है। उसने बड़ी उत्सुकता से प्रश्न किया।

स्वामी जी महाराज, ऐसा नेता कैसे पैदा हो सकता है?

तब स्वामी जी ने उस से कहा—हां, तुमने यह प्रश्न किया कि ऐसा शक्तिशाली नेता कैसे पैदा हो सकता है। मेरा विचार है कि भारत वर्ष के लोग मन्दिर पूजने के बजाय प्रत्येक नगर, ग्राम और कस्बे में व्यायामशालाएं खोल दें और क्षात्र धर्म का प्रचार करें तो अवश्य ही हमारे बीच में एक शक्तिशाली नेता खड़ा हो सकता है। डरपोक और बनिया समाज ऐसा नेता पैदा नहीं कर सकता।

पृथ्वीनाथ स्वामी जी के वचन सुन कर मन्त्र-मुग्ध सा हो गया, फिर उसने प्रश्न किया आप का कहना बिल्कुल सत्य है, पर यह प्रोग्राम तो बड़ा लम्बा है। इससे देश स्वाधीन नहीं हो सकता। मैं तो यह समझता हूं कि मुट्ठी भर विदेशियों को दूर करने में इतने बड़े प्रोग्राम की जरूरत नहीं। यह काम तो दो तीन सौ मनचले नवयुवक आसानी से कर सकते हैं।

स्वामी जी पृथ्वीनाथ की यह बात सुनकर जोर से बोले—कैसे कम समझ हो, पृथ्वीनाथ जिस देश की जनता हर प्रकार व्यक्तिवाद में डूबी हुई है, उसे तुम्हारे मनचले नौजवान कभी भी नहीं हटा सकते। वे स्वयं कट जाएंगे और अपने साथ दूसरे लाखों निरपराधों को भी ले डूबेंगे।

पृथ्वीनाथ सन्नाटे में आ गया। उसने स्वामी जी से बड़ी उत्सुकता से पूछा—क्यों स्वामी जी, ये दूसरों को ले क्यों डूबेंगे? जैसे थोड़े से विदेशी हैं, क्या वैसे ही थोड़े से हम भी उन से नहीं निपट सकते?

पृथ्वीनाथ सन्नाटे में आ गया। उसने स्वामी जी से बड़ी उत्सुकता से पूछा क्यों स्वामी जी, ये दूसरों को ले क्यों डूबेंगे? जैसे थोड़े से विदेशी हैं, क्या वैसे ही थोड़े से हम भी उन से नहीं निपट सकते?

स्वामी जी के चेहरे पर पृथ्वीनाथ की बात सुन कर दया के भाव अंकित हो गए। उन्होंने बड़े स्नेह से जवाब दिया—

बच्चा तुम अभी अबोध बालक हो, तुम्हें राजनीति का क्या पता। कोई हथियारों के अभाव से दास नहीं बना करती, नीरोग विचारों की कमी ही राष्ट्रों का पतन करती है। जिस समाज के सदस्य अपने नित्य के जीवन में अन्याय और अत्याचार चुप चाप सहन कर लेते हैं—जिन्हें जीने का इतना अधिक मोह है—वह समाज राष्ट्रीय अन्याय कदापि दूर नहीं कर सकता और यदि लाख दो लाख मनचले नौजवान गदर मचा भी दें तो वे कभी भी सफल नहीं हो सकते। सब से पहले देश की आत्मा चैतन्य होनी चाहिए, छोटे छोटे गढ़े भरने चाहिए और जब वे गढ़े भर कर उबलने लगें, तभी उन की एक धारा बन कर सारे राष्ट्र के कूड़े कचरे को बहा ले जा सकती है। सैंकड़ों वर्षों का बिगड़ा हुआ भारत वर्ष इतनी आसानी से नहीं उठ सकेगा।"

देव चतुर्वेदी पृ. २०२-२०६ तक

स्वाधीनता के बाद भी यह स्थिति बदली नहीं है। सामाजिक परिवर्तन में ये बातें आज भी उसी तरह बाधक बनी हुई हैं। पंजाब की आज की स्थिति में ये बातें विशेष विचारणीय हैं।

—प्रा. भद्रसेन, साधु आश्रम होशियारपुर

(३ पृष्ठ का शेष)

८- आचार्य सत्यव्रत श्री शास्त्री विद्याभास्कर ग्रामपुर श्रीयुत सुधाकर जी फिरोजाबाद, आचार्य विद्या भास्कर शास्त्री नई दिल्ली, प्रा. रमाकान्त दीक्षित भिवानी,

इनके अतिरिक्त और विद्वानों के लेख भी प्राप्त होंगे हैं विशेषांक प्रत्येक दृष्टि से बढ़िया हो यह हमारा प्रयत्न है। हमारा काम आप तक सहृदय विद्वान लेखकों तथा कविवरों के प्रेरणात्मक ज्ञानवर्धक विचार पहुंचाना है तथा आप का कर्तव्य इस विशेषांक के माध्यम से जन जन तक इन विचारों को फैलाना है।

आर्य समाज की मान्यताओं वेद मूलक मान्यताओं और शिक्षाओं को यदि आप ठीक समझते हैं तो इस विशेषांक की अधिकाधिक प्रतियों का आर्डर शीघ्र भेज कर अपनी प्रतियां सुरक्षित करा लें। इस विशेषांक का मूल्य २-०० से अधिक न हो यह हमारा प्रयास रहेगा कृपया अपने आर्य समाज संस्था की ओर से आदेश शीघ्र भेजिए। आदेश के साथ ही मूल्य भी अग्रिम भिजवा सकें तो कृपा होगी।

—ओमप्रकाश [illegible]

महर्षि दयानन्द एक पौर्वापर्यवलोकन

(गतांक से आगे)

अन्य किसी आकस्मिक बहुयन्त्र अथवा ईश्वरीय विधान के कारण किसी विदेशी जाति द्वारा पाक्रान्त हो जाती है और विदेशियों द्वारा शासित होने लगती है उस समय जातीय अपमान के कारण वह ग्लानि के समुद्र में डूब जाती है। उस विपत्ति के सम्बन्ध बहुत से कमजोर आत्मा के लोग जो कष्ट सहन नहीं कर सकते और भौतिक सुविधाओं के कारण और मिथ्या सामाजिक बरीयता के वश एक प्रकार से गुलाम वृत्ति के ही होते हैं, विदेशी धर्म, विदेशी भाषा, विदेशी संस्कृति तक को अपनाने में संकोच नहीं किया करते हैं, इस्लामी शासन काल में तो राजस्थान के राजपूत क्षत्रिय राजा अपनी बहिन बेटी तक मुसलमान शासकों को दे देने में संकोच नहीं करते थे। अंग्रेजों के शासनकाल के आरम्भ में बहुसंख्यक उच्च वर्ग के हिन्दुओं ने, विशेषतः बंगभूमि के हिन्दुओं ने अपनी भाषा एवं संस्कृति के स्तम्भ मेघनाद महाकाव्य जैसे प्रशस्त महाकाव्य के महान् रचयिता मधु सूदन दत्त समान यशस्वी हिन्दुओं तक ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया था। इस कोटि के लोगों की इस शाश्वत सुविधा समाज की प्रकृति और आचरण की झलक हमें आम चुनाव में अल्पमत पाने वाली पराजित पार्टी के राजनीतिज्ञों के आचरण में दिखाई देती है। मौका पाते ही वे अपने दल को छोड़कर शासन करने वाली पार्टी में शामिल हो जाते हैं। भारत की वर्तमान राजनीति में इस समय श्री यशवन्त राव बलवन्तराव चौहान इस कोटि की मानसिकता के ज्वलन्त उदाहरण हैं जो अपने संपूर्ण 'यशोधनम्' को दांव पर लगाकर कांग्रेस (आई०) यानी कांग्रेस (इन्दिरा) में घुस जाने के लिए तड़फड़ा रहे हैं और घर के न घाट के रह जाने की अकुलाहट काफी दिनों से दिखावटी धैर्य के साथ झेलते आ रहे हैं यहां तक कि सत्ता की पावता भी अब हम ... की निगाहों में अर्जित करने लगे हैं, महामुनि वशिष्ठ ने संभवतः इसी कोटि की मनोवृत्ति से ग्रसित मानवों पर करुणा की भावना से प्रेरित हो ... भावना में तृष्णादेवी को इन शब्दों में नमस्कार किया था—

> पुण्योदयेऽपि समस्तु ...
> ... विमल कारिणी।
> ... पुरोऽपि,
> ... कृतः।

... सम्पन्न विष्णु भगवान को भी ... सामने के हेतु ... विश्व ... इस तरह दैत्यों को छलने की महा विप्लवी घटनाएं चुपचाप (गौरव के साथ) घटित करा देने वाली है तृष्णा देवी! आपको बारंबार नमस्कार है।

और पराजित जाति में दूसरा वर्ग कभी-कभी मुट्ठी भर लोगों का ही क्यों ऐसे महामनस्वीजनों का भी होता ही है जो जातीय गौरव की गरिमा के दीपक को समस्त झंझा पानी झेलकर अपने प्राणों की हथेली में ढांपकर पराजय की सारी लम्बी काली रात में टिमटिमाते रहते हैं और स्वयं शहीद होकर अमरत्व को प्राप्त करते हैं। हम राजा मोहनराय को इसी कोटि का एक महान् मूक शहीद मानते हैं। अस्तु!

राम मोहनराय में सर्वाधिक वन्दनीय एक असामान्य प्रतिभा और भी थी। वे अपनी मर्यादा की सीमा से पूर्णत परिचित थे। जैसा हम पहले ही कह आए हैं कि उनमें असामान्य प्रतिभा, अगाध पाण्डित्य, प्रभूत मानसिक शक्ति और क्षुरधार तुल्य बुद्धि यह सब प्रचुर मात्रा में विद्यमान थे। इस कारण वे यदि इच्छा करते तो नये मत के प्रकाशक अथवा आविष्कारक के रूप में पूजित हो सकते थे। अथवा अद्वितीय ब्रह्म के अंशावतार या पूर्णावतार तक अभिहित होने में समर्थ बन जाते हैं। क्योंकि जिस देश में पशुओं तक की अर्चना होती रही है, जिस देश में निरक्षर और इन्द्रियासक्त मनुष्य भी भगवान् कहला कर पूजित हो रहे हैं, और जिस देश में वाहन विहंगराज (गरुड़) के आसन पर अधिष्ठित होते दिखाई दे रहे हैं तथा जिस देश में आज भी शृगाल को सिंहपद के लिए वरण करने में लोग अणुमात्र भी संकुचित नहीं होते है, उस देश में राजा राममोहन राय सरीखे अलौकिक शक्तिशाली व्यक्ति के ईश्वर के अवतार कहलाए जाकर पूजित होने में क्या विचित्रता हो सकती थी। किन्तु उन्होंने अपने आपको बारंबार साधारण मनुष्य के अतिरिक्त और कुछ नहीं कहा, इस देश में धर्म के नाम की जैसी दुर्गति हो गई है और धर्म का नाम लेकर मनुष्य जिस प्रकार ईश्वर पदवी तक का अधिकार जमा बैठा है यह सब वे देख रहे थे। शायद इसी कारण वे इस भय से कि भविष्य में कोई उनका भक्त उन को नये अवतार पर प्रतिष्ठित करके उन के प्रति अनुचित प्रीति भक्ति अर्पित न करे, उन्होंने अति स्पष्ट भाषा में इस विषय में अपने मनोभाव को व्यक्त कर दिया है। उन्होंने लिखा है कि—

...अपने लिखे हुए किसी ग्रन्थ में या किसी मौखिक विचार में मैंने अपने को एकेश्वरवाद का संशोधक अथवा आविष्कारक नहीं कहा है। इस प्रकार का संकल्पक तक मेरे अन्त करण में कभी उदित ही नहीं हुआ है। मैंने जितने भी ग्रन्थ प्रकाशित किए हैं उन सब में यही प्रतिपादित करने की चेष्टा की है कि ब्राह्मणोपासना ही हिन्दू जाति का वास्तविक धर्म है और हमारे पूर्व पुरुषगण उस का ही अनुष्ठान करते आए हैं।' (राजा-राममोहनराय के 'इंगलिश वर्क्स' की प्रथम जिल्द का पृष्ठ २०६)

—अपने लिखे हुए किसी ग्रन्थ में या किसी मौखिक विचार में मैंने अपने को एकेश्वरावाद का संशोधक अथवा आविष्कारक नहीं कहा है। इस प्रकार का संकल्प तक मेरे अन्त:करण में कभी उदित ही नहीं हुआ है। मैंने जितने भी ग्रन्थ प्रकाशित किए हैं उन सब में यही प्रतिपादित करने की चेष्टा की है कि ब्राह्मणोंपासना ही हिन्दू जाति का वास्तविक धर्म है।और हमारे पूर्व पुरुषगण उसका ही अनुष्ठान करते आए हैं।

संभवतः राजा राममोहन राय यह जानते थे कि यद्यपि ब्रह्मवाद की प्रतिष्ठा से उन्होंने मुख्यतः वेदान्त का ही अवलम्बन किया था, कहा कि पंचोपनिषद् का अनुवाद के साथ प्रचार किया और शास्त्रीय विचार के सम्बन्ध में श्रुति की ही ही सर्वोपरि प्रामाणिकता की प्रतिष्ठा की, किन्तु उन्होंने जिस प्रचार-पद्धति का अवलम्बन किया था वह आर्य भाव की सम्यक रूप से अनुसारिणी नहीं थी। क्योंकि जिस प्रकार से भारतीय ब्रह्मवाद की विशेषता है उसी तरह भारतीय ब्रह्मवाद के आचार्यपद की भी विशेषता है। क्योंकि जिस देश में संसार को अनित्य समझे बिना सच्ची धर्म बुद्धि का स्फुरण संभव न माना जाता हो। जिस देश में जिज्ञासु हुए बिना धर्म का अधिकार उत्पन्न न होता हो। जिस देश में निर्मल चित हुए बिना धर्म तत्व निरुपित न होता हो। और इससे भी अधिक जिस देश में सर्वतोभावेन जितेन्द्रिय और ब्रह्मचर्य परायण हुए बिना धर्म का साधन सर्वथा असम्भव माना जाता हो। यहां तक कि जिस देश में साधना का मार्ग शान पर रखे हुए उस्तरे की धार पर चलने के समान अतिशय संकटापन्न हो। ऐसे देश में धर्माचार्य की पदवी कितनी दुरूह और दायित्व सापेक्ष्य होती है यह तथ्य राममोहनराय को कदापि अविदित नहीं था। संक्षेप में उन्हें यह भी विदित था कि आर्य जाति के धर्म प्रवक्ता या धर्माचार्य के पद के लिए कठोर तपस्या अपरिहार्य है, ज्वलन्त वैराग्य अनिवार्य है समस्त शास्त्रों का गहन अध्ययन-विवेचन अनिवार्य है और अनिवार्य है विषय तृष्णा एवं इन्द्रियासक्ति का हर प्रकार से परित्याग। किन्तु दुर्भाग्यवश अत्यन्त उज्ज्वल प्रतिभा, सुशोभित मेधा, सर्वशास्त्रान्तर्गामिनी विद्या और अद्भुत मनस्विता के साथ-साथ उनके जीवन में विषय विरागिता और ब्रह्मचर्य का अभाव था। वह अपनी न्यूनता से पूर्णत परिचित थे। वे यह भी अच्छी तरह समझते थे कि मानव के समाज और चरित्र की नींव के ऊपर धर्म को प्रतिष्ठित न कर सकने पर तथा मनुष्य ने नित्य नियमानुष्ठित कर्म को धर्म सूत्र में ग्रथित न कर सकने पर दूसरे शब्दों में कथनी को पूर्णतया समाज की करनी में स्थायी न बना सकने पर भी केवल लम्बी चौड़ी वक्तृता, जनता की बड़ी संख्या के

—प्रो. राजनाथ पाण्डेय

संगठन और सब प्रकार की कलाओं से दिन-रात प्रचारित धर्म भी पाषाण भूमि में बोए हुए बीज की तरह अंकुरा कर अथवा किंचित पल्लवित होकर भी स्वल्प काल में शुष्क और विलुप्त हो जाता है जैसाकि राममोहनराय के पर्यवसान के पश्चात् उनके महर्षि देवेन्द्रनाथ ठाकुर एवं केशवचन्द्र सेन प्रभृति महा प्रतिभाशाली उपासकों द्वारा जो हर प्रकार के साधनों से प्रचुर मात्रा में सम्पन्न थे, उन के (राम मोहन राय के) द्वारा प्रचारित मत को जो एक धर्म का रूप दिया गया था वह अल्प समय में विलीन होकर केवल इतिहास के एकाध पृष्ठों में ही सिमिट कर रह गया। वस्तुतः राजा राम मोहन राय इस बात के बहुत ही विरुद्ध थे कि उनका प्रचारित मत धर्मान्तर में परिगणित हो। यही कारण है कि उनके जीवन काल मे उनका मत धर्मान्तरण में परिगणित या परिणत नहीं हो सका था। उन्हें अपनी प्रतिभा की सीमा का पता था और उन्होंने बड़ी ईमानदारी के साथ उसे स्वीकार करके तदनुकूल जीवन भर आचरण भी किया था। (क्रमशः)

दहेज प्रथा बेईमानी का ही एक रूप: कारण और समाधान

भारतीय समाज में आज की दहेज-प्रथा बेईमानी का ही एक रूप है तथा लाखों परिवारों के दु:खों और विनाश का कारण बनी हुई है। इस महंगाई और अभाव के युग में लोगों के प्रतिदिन के खर्चे तो पूरे होते नहीं, वे फिर लड़की को पालने-पोसने तथा पढ़ाने लिखाने के बाद बड़ी-बड़ी बारातों की आवभगत, सजावट एवं विविध मांगें कहां से पूरी करें? इस पर आए दिन लेन-देन की बढ़ती हुई प्रथाएं, अब रोक है, अब ठाका है, आज सगाई है, आज चुन्नी चढ़ाने के लिए ढेर सारी स्त्रियां आई हैं, कैसे निभाई जाएं? चाहिए तो यह कि लड़के वाला लड़की वाले के उपकार को स्वीकार करे, क्योंकि वह पाल-पोस कर अपने परिवार के एक योग्य सदस्य को दूसरे परिवार की समृद्धि के लिए सर्वात्मना समर्पित करता है। परन्तु आश्चर्य तो यह है कि कृतघ्नता की प्रवृत्ति किस प्रकार बढ़ रही है, कि उलटा लड़की वाले पर अहसान जताया जाता है। इस कुप्रथा का ही परिणाम है कि आज भारतीय परिवारों में हजारों युवतियां दहेज न दे सकने के कारण अपनी जवानियां गंवा रही हैं, और आए दिन कोई न कोई किसी प्रकार से दहेज-प्रथा की बलि-वेदी पर भेंट हो जाती है। इसीलिए ही हमारे काले कारनामे काले-काले अक्षरों में प्रति सप्ताह दैनिक पत्रों में आते रहते हैं। आश्चर्य तो यह है कि हम दहेज लेने के कुत्सित ढंग को वर्तते हुए भी उसी मुख एवं हृदय से भारतीय संस्कृति तथा आध्यात्मिकता के गीत गाते नहीं थकते। दहेज के परिणामों को देख कर ही यह कहने के लिए विवश होना पड़ता है कि—'दहेज एक अभिशाप है।'

विवाह वैयक्तिक और सामाजिक जीवन का अनिवार्य अंग है, क्योंकि अन्य इच्छाओं की तरह युवा अवस्था में उभरने वाली कामेच्छा, पुत्रैषणा और जीवन-साथी पाने की इच्छा भी स्वाभाविक है। विवाहित व्यक्तियों पर न केवल सामाजिक विकास ही निर्भर है, अपि तु इसके साथ शेष समाज का पालनपोषण भी इन्हीं पर आश्रित है। अतएव मनुस्मृतिकार ने कहा है—

यथा वायुं समाश्रित्य सर्वे जीवन्ति जन्तवः।
तथा गृहस्थमाश्रित्य वर्तन्ते इतराश्रमः॥ (मनु० ३,७७)

जैसे वायु के सहारे पर सब का जीवन निर्भर है, उसी प्रकार अन्य (तीनों) आश्रम भी गृहस्थ-आश्रम पर निर्भर है।

विवाह के वैयक्तिक जीवन की पूर्णता का अनिवार्य पहलू और सामाजिकता का आधार होने के कारण ही हर माता-पिता अपने बच्चे का जीवन सफल बनाने के लिए उसके लिए अच्छा जीवन साथी जुटाने का यथाशक्ति प्रयास करते हैं। माता-पिता आदि का यह प्रयास ही विवाह-संस्कार की विविध रीति-रिवाजों का मूल कारण है! नवयुगल के अच्छे जीवन की शुभ कामनाओं से ही वधू के माता-पिता यथाशक्ति कुछ दहेज के रूप में देते हैं, जिससे वे भावी जीवन की आवश्यकताओं को कुछ अंशों में पूर्ण कर सुखी जीवन बिता सकें। इससे लाड़-चाव के कारण जहां शुभ कामनायें व्यक्त होती हैं, वहां बच्चों के स्वावलम्बीपन, उनकी आत्मनिर्भरता में अविश्वास भी व्यक्त होता है। इसके साथ ही इसमें धनियों द्वारा अधिक योग्य वर पाने के लिए दिए जाने वाले प्रलोभन का भाव भी छिपा हुआ है। ये शुभकामनाएं ही आज स्वार्थी या लोभी व्यक्तियों के कारण समाज के लिए अभिशाप बन कर रह गई हैं। तभी तो आए दिन दहेज की बलिवेदी पर अनेकों युवतियों को अपना बलिदान देना पड़ रहा है। परिणामस्वरूप सहस्रों परिवार नरक बने पड़े हैं सभी परिवारों में लड़के-लड़कियां होती हैं, अत: सभी को एक दिन दहेज देना पड़ता है। लड़के की शादी के समय तो लड़के वाले बड़ी-बड़ी मांगें प्रस्तुत करते हैं, पर जब स्वयं देने की बारी आती है, तब उन्हें ये कुरीतियां दिखाई देती हैं। यह भी सत्य है कि बहुत से लड़की वाले भी अपनी शान दिखाने के लिए मना करने पर भी बहुत से आडम्बर करते हैं और देखा-देखी दूसरों के लिए वे रिवाज बन जाते हैं।

दहेज प्रथा का सबसे बड़ा कारण है, लड़की अर्थात् नारी जाति को पुरुष वर्ग की अपेक्षा घटिया समझना। इसीलिए ही इसकी पूर्ति के लिए दहेज मांगे जाते हैं। नारी हल्का समझने की भावना केवल पुरुषों में ही नहीं पाई जाती, अपितु उनसे भी अधिक स्वयं नारी जाति में भी पाई जाती है। प्रायः माता बेटी की अपेक्षा बेटे को अधिक महत्त्व देती हैं और एक बहन अपनी दूसरी बहन को वह महत्व नहीं देती, जो अपने भाई को देती है।

विवाह करना दोनों परिवारों की समान आवश्यकता होती है, अत: विवाह पर होने वाले व्यय को दोनों पक्षों को वहन करना चाहिए। लड़की वाले पर ही अधिक भार डालना कहां की बुद्धिमत्ता है विवाह की सफलता वस्तुत: दोनों परिवारों और जीवनों के हर प्रकार के सहयोग, सद्भाव, सहानुभूति तथा परस्पर एक दूसरे को समझने पर निर्भर है।

दहेज-प्रथा का सबसे बड़ा कारण है, लड़की अर्थात् नारी जाति को पुरुषवर्ग की अपेक्षा घटिया समझना। इसीलिए ही, इसकी पूर्ति के लिए दहेज मांगे जाते हैं। नारी को हल्का समझने की भावना केवल पुरुषों मे ही नहीं पाई जाती, अपितु उन से भी अधिक स्वयं नारी जाति में भी पाई जाती है। प्राय: माता बेटी की अपेक्षा बेटे को अधिक महत्त्व देती है और एक बहन अपनी दूसरी बहन को वह महत्व नहीं देती, जो अपने भाई को देती है। न केवल हमारा साहित्य ही, अपितु हमारे अनेक रिवाज भी इस भावना को बढ़ाते हैं। इसीलिए ही भारतीय समाज में लड़की को भार माना जाता है, हालांकि वह परिवार निर्माण और गृहकार्य में बढ़-चढ़कर सहयोग देती है। वस्तुत: नारी का सहयोग दोनों रूपों में पुरुष से अधिक ही होता है। उसके परोक्ष परिश्रम की कीमत आंकने का प्रयास भी ईमानदारी से हमने कभी नहीं किया और न ही नारी ने स्वयम् इस कार्य को महत्त्व देने की इच्छा प्रकट की है। हर एक व्यक्ति अपने घर की सुव्यवस्था चाहता है, पर उस व्यवस्था को करने वाली को महत्व नहीं देता। आज तो भारतीय समाज में भी नारी-गौरव में सबसे बड़ी बाधा उसका आर्थिक दृष्टि से पिछड़ापन कहा गया है। क्या घर में किए जाने वाले कार्य की कोई महत्ता नहीं? अतएव आर्थिक स्वावलम्बीपन की ऐसी दौड़ चली है कि आज हमने वास्तविकता से ही मुंह मोड़ लिया है और सभी नौकरी की ओर बेतहाशा दौड़ रहे है, चाहे उसके लिए कुछ भी बलिदान क्यों न करना पड़े।

दहेज प्रथा के कुछ कारण

भारतीय विवाहों में केवल लड़का-लड़की का ही सम्बन्ध नहीं है, अपितु उन के साथ उनके माता-पिता, भाई-बहन और निकट के रिश्तेदार भी सम्बद्ध होते हैं। अत: विवाह और उस समय होने वाले व्यय, कार्यक्रम तथा दहेज आदि में सुधार के लिए इन सबके विचारों में परिवर्तन अपेक्षित है।

१. अच्छा वर पाने की इच्छा—दहेज प्रथा का एक मुख्य कारण है। बेटी के भावी जीवन को सुखी बनाने के लिए बहुत से लोग अपने से बड़े परिवार को चुनते हैं लड़के-लड़कों के गुण-कर्म-स्वभाव के विचार की तो बात ही क्या, इस सामान्य नियम को भी भुला दिया जाता है कि 'समयोर्मैत्री विवाहश्च' अर्थात् बराबर वालों में ही मित्रता और रिश्तेदारी अधिक निभती है। यह तो फिर जीवन-भर का साथ है।

२ लड़के के माता-पिता की धन बटोरने की इच्छा—इसका दूसरा कारण है। अधिकतर लड़के के माता पिता ही मांगें प्रस्तुत करते हैं।

३. इसका तीसरा कारण स्वयं लड़का-लड़की भी होते हैं। अपने घर की आर्थिक दशा को जानते हुए भी वे अच्छे, धूमधाम भरे विवाह की इच्छा रखते हैं और मांगों के समय चुप रहते हैं। इसलिए शान-शौकत, दिखावे आदि के प्रदर्शन की भावना बारातियों की संख्या, विशेषत: बारात में हर के मित्रों की भरमार आदि बातें अधिक व्यय का कारण बनती हैं। सादगी से विवाह करना तो पसन्द नहीं आता और अन्य; कहते हैं कि हमारा भी कोई विवाह हुआ था, वह तो गुड्डे-गुड़िया का विवाह था। दोनों पक्षों का अधिक धन वस्त्रों और गहनों पर खर्च होता है। यदि दोनों चाहें तो इसमें कमी आ सकती है। दबे मन से अनेक लड़कियों की यह इच्छा होती है कि खूब दहेज मिले जिसमें उनका भावी जीवन आराम से व्यतीत हो।

४- अनेक बार भाई बहन और अन्य रिश्तेदारों की मांगें भी इस में एक कारण बनती हैं। अत: लड़के-लड़की के साथ सब के सहयोग की भी अपेक्षा है। तभी इस प्रकार की समस्याओं का समाधान हो सकता है। क्योंकि यह एक सामाजिक समस्या है, अत: सामाजिक स्तर पर ही इसका समाधान होना चाहिए।

५- कई बार अनेक लड़की वाले भी अपना महत्व, बड़प्पन, समृद्धि बताने के लिए खूब प्रदर्शन करते तथा दहेज देते हैं और अनेक बार अपनी बेमेल कन्या की योग्यता में कमी को छिपाने के लिए भी नकद धन और दहेज को बढ़ाया जाता है।

नि:सन्देह पिता की सम्पत्ति में कन्या का भी भाग है, परन्तु वह तो आर्थिक स्थिति के अनुरूप ही होगा। पर विवाह पर शक्ति से एकदम अधिक व्यय करना पड़ता है। कई बार अत्यधिक उधार भी लेना पड़ता है आजकल माता-पिता दहेज अधिकतर मांगों की पूर्ति के लिए या वर-परिवार को प्रसन्न करने के लिए ही देते हैं।

दहेज-निवृत्ति के कुछ उपाय

दहेज-प्रथा को रोकने के लिए आवश्यकता है कि सभी के विचारों में परिवर्तन आए। आज की परिस्थितियों को देखकर इस पर विचार हो, न कि रिवाज मानकर लकीर पर चलने का प्रयत्न किया जाए। दहेज के कारण होने वाले तनाव, मारपीट, हत्या आदि को ध्यान में रखते हुए भावी समाधान को सामने रखकर विवाहों का पंजीकरण किया जाए। उसके साथ बारात की संख्या, वस्त्र, गहने और अन्य दहेज का निर्देश भी हो, जिस से विवाद होने पर सारा व्यय और सामान लौटवाया जा सके।

मन्त्री, अधिकारी, संसद और विधान सभाओं के सदस्य आगे आकर सादगी का परिचय दें। वह सादगी केवल उनके विवाह-व्यय-प्रदर्शन, दहेज तक ही सीमित न हो, अपितु अधिकारों के प्रदर्शन पर सादगी की भी हो।

(शेष पृष्ठ ७ पर)

"तो जानूं"

— सीताराम पाण्डेय

अद्भुत कहे हो आज अमर अब करके दिखा दो तो जानू
भारत-आर्यों के सपनों को साकार बना दो तो जानू

जिसने धरती पर यह उत्सर्ग किया है जीवन का
उनकी समाधि पे सब जा, ओंकार गुंजा दो तो जानू

झंडे के नीचे कसमे खा, हर रोज मुकरते लोग यहां
उनकी अतीत की कुरबानी, फिर याद दिला दो तो जानू

आजादी मिल गयी मगर केवल मुट्ठी भर लोगो को
भारत के कोने-कोने मे नव ज्योति जला दो तो जानू

जाति-पाति के पावक से है झुलस रही यह फुलवारी
इस भेद-भाव औ ऊच नीच को, जड़ से मिटा दो तो जानू

स्वार्थ लोभ के अन्ध-जाल छाया है जिनकी आखो पे
बन 'बुद्धदेव' उन भटक रहे को राह दिखा दो तो जानू

चौतीस वर्षों की आजादी पर चमक नही आई अब तक
वतन की बिगड़ी सूरत में श्रृंगार सजा दो तो जानू

अरबों के धन से इस्लाम प्रसार का व्यापक कार्यक्रम

इन्दौर, अरबो के धन से भारत के करोड़ों हरिजनों और आदिवासियो में इस्लाम के प्रसार के लिए एक व्यापक कार्यक्रम तैयार किया गया है। इस कार्यक्रम के सचालन के लिए लदन मे इस्लामिक कल्चरल सेंटर नामक सस्था स्थापित की गई है। यह जानकारी '[illegible] टाइम्स' ने दी है।

गृह मत्रालय के सूत्रो के अनुसार देश भर में धर्म परिवर्तन के उद्देश्य से इस्लामी तब्लीगी (धर्म परिवर्तन) सम्मेलनो का भारी सख्या मे आयोजन किया जा रहा है। गत वर्ष देश के विभिन्न भागो मे ६८ तब्लीगी सम्मेलनों का आयोजन किया गया, जिनमे अरब देशों के प्रतिनिधियों ने विशेष रूप से भाग लिया।

इस्लाम के प्रसार की गति को तेज करने के लिए इस्लामिक प्रचारको के प्रशिक्षण की अनेक सस्थाओ को अरब देशो से भारी मात्रा में आर्थिक सहायता भी प्राप्त हो रही है।

हिन्दू रक्षा समिति के अध्यक्ष महात्मा वेद भिक्षु ने चेतावनी दी कि यदि विदेशी धन के दुरुपयोग पर प्रतिबन्ध नही लगाया गया तो पृथकतावादी तत्व देश के और विभाजन की माग उठाए गे।

—

आर्य संन्यासी का निधन

जालन्धर—यह समाचार देते हुए बहुत दुख होता है कि आर्य समाज और वैदिक धर्म के प्रचार मे आजन्म के निरत रहने वाले वीतरागसन्यासी स्वामी विद्यानन्द जी अब इस ससार मे नहीं रहे। [illegible] देहान्त २८-१-८२ को [illegible] में उनके [illegible] में ही गया। स्वामी जी ने हैदराबाद सत्याग्रह हिन्दी आन्दोलन, सिन्ध का सत्यार्थ प्रकाश आंदोलन में भाग लेकर यातनाओ को हसते-हसते सहन किया। स्वामी जी के प्रचार की विशेषता जन-सम्पर्क तथा जन सेवा कार्य था।

—

शहीद बिस्मिल की बहिन गम्भीर रूप से बीमार

नई दिल्ली। अमर शहीद श्री राम प्रसाद बिस्मिल की ८० वर्षीय बहिन श्रीमती शास्त्री देवी ने बीमारी की हालत में घोर आर्थिक सकट के कारण इलाज न करवा सकने पर उत्तर प्रदेश सरकार से अनुरोध किया है कि उसे जहर का इन्जेक्शन लगवा कर प्राणो से मुक्ति दिला दी जाए।

श्रीमती शास्त्री देवी ने अपने गाव कोसमा (जिला मैनपुरी) मे मृत्यु शैया से उत्तर प्रदेश सरकार को पत्र लिखकर अनुरोध किया है कि शरीर अशक्त और असमर्थ हैं। तीन महीने से तो बिल्कुल खाट पर पड़ी हू। एक आख में मोतिया बिन्द है और दूसरी मे कम दिखायी देता है। अब दुख सहन नही होता, मेहनत मजदूरी भी नही हो पाती। मुझे मौत का इजेक्शन देने की कृपा करें कोटि कोटि धन्यवाद दूगी।

प्राप्त विवरण के अनुसार श्रीमती शास्त्री देवी को केवल सौ रुपए मासिक पेंशन मिलती है जबकि उनके परिवार मे तीन प्राणी खाने वाले हैं। उन के लडके को तीन बार लकवा मार गया है और बहू को गठिया रोग हो गया हैं। ऐसी स्थिति मे इलाज कराना तो दूर भरपेट भोजन का प्रबन्ध भी नही हो रहा।

भूतपूर्व विधायक और लोकदल नेता श्री देवीलाल के पुत्र श्री प्रताप सिंह ने देश के लिए सर्वस्व न्योछावर करने वाले शहीद के परिवार की उपेक्षा की निन्दा की है। उन्होने श्रीमती शास्त्री देवी के इलाज के लिए एक हजार रुपए भेजे हैं और कहा है कि उनके गाव जाकर सारी स्थिति का अध्ययन कर यथा सम्भव सहायता देंगे।

—

शोक समाचार

दिल्ली। परोपकारिणी यज्ञ समिति के सरक्षक आर्य जगत् के सुप्रसिद्ध विद्वान सवश्री स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती का स्वर्गवास ९ जनवरी को हो गया इस सदर्भ मे उपरोक्त समिति द्वारा शोक सभा का आयोजन किया गया इस सभा मे "राष्ट्रीय धर्म रक्षा समिति" आर्य युवक परिषद (रजि०) एव आर्य समाज यमुना बिहार के अधिकारीगणो ने स्वामी जी को श्रद्धाजलि प्रदान करते हुए दिवगत आत्मा के लिए सदगति की प्रार्थना की इस अवसर पर समिति के उपसरक्षक श्री ललिता प्रसाद जी ने कहा कि वर्तमान समय मे स्वामी जी के स्थान की पूर्ति बड़ी कठिन है।

—कमल किशोर आर्य

शोक समाचार

खेद के साथ लिखना पड रहा है कि सूबेदार छोटू राम ग्राम आहुलाना (गर्दाना) जिला० सोनीपत का ६-१ ८२ को अचानक हृदयगति रुक जाने से स्वर्गवास हो गया। सूबेदार साहब बड़े कर्मठ एव सज्जन व्यक्ति थे। उनके निधन से आ० स० आहुलाना को काफी क्षति हुई है जो अपूर्णीय है। आ० स० दुलामद की ओर से उनकी दिवगत आत्मा को शांति और उनके परिवार को इस असहनीय दुख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे। "ऐसी प्रार्थना की गई।

—रामकुमार आर्य

—

शोक प्रस्ताव

माननीय प विलोक चन्द्र जी शास्त्री के असामायिक निधन का समाचार सुन कर अति दुख हुआ। आर्य वीर दल हरियाणा, शास्त्री जी के आकस्मिक निधन पर हार्दिक शोक प्रकट करता है। उनके निधन से आर्य जगत एक ओजस्वी वक्ता से वचित हो गया है। उसकी क्षति पूर्ति निकट भविष्य मे सभव नहीं है।

—अजीत कुमार आर्य

(६ पृष्ठ का शेष)

सादगी से विवाह कराने वालो को पुरस्कृत एवम् अभिनन्दित किया जाए। बारात की सख्या कम करने के लिए तो सबका सहयोग सर्वथा अपेक्षित है क्योंकि रिश्तेदार और मित्र ही सख्या को बढाते हैं। यदि वे कम हो तो स्वत सख्या कम हो जाए।

विवाह जीवन का एक अनिवार्य अग और स्वाभाविक इच्छा है। यह जितना सरल और सुकर होगा उतना ही सबके लिए हितकर होगा। अत दहेज के उन्मूलन के लिए सर्वप्रथम हमे अपने हृदयो मे नारी सम्मान, नारी के लिए पुरुषो के समक्ष गौरव की भावना लानी होगी। तब कन्या के छोटेपन के निवारण के लिए दहेज देने की भावना न पनप सकेगी। इसी प्रकार सामयिक स्थितियो और समस्याओ का ध्यान रखते हुए यदि हम खुले दिल से विचार करे तो हम इसी परिणाम पहुचेंगे कि विचारो मे परिवर्तन आने पर ही हमारे समाज के आधारभूत परिवार सुखी, शान्त और समृद्ध हो सकते हैं।

आर्य साधु सम्मेलन

आर्य जगत् को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि पूज्यवर श्री स्वामी सर्वानन्द जी महाराज के निर्देशानुसार दयानन्द मठ दीनानगर में दिनांक १८, १९ फरवरी १९८२ दो दिन अखिल भारतीय आर्य साधु (सन्यासी, वानप्रस्थी, नैष्ठिक ब्रह्मचारी) सम्मेलन किया गया है जिस में आर्य साधु समाज वैदिक धर्म प्रचार [illegible] प्रकार की विशेष प्रगति कैसे कर सकता है और इस में क्या २ विघ्न बाधायें हैं, इत्यादि विषयों पर विचार किया गया। सम्मेलन १८ फरवरी प्रातः ९ बजे आरम्भ हुआ।

ज्ञातव्य :—सम्मेलन में भाग लेने वाले पूज्य साधु महात्माओं का मार्ग व्यय मठ ने दिया।

—सोमानन्द

उड़ीसा में 124 ईसाई वैदिक धर्म में लौटे

उड़ीसा में वैदिक धर्म प्रचार अभियान के अन्तर्गत स्वामी ब्रह्मानन्द जी के संरक्षण में शुद्धि समारोहों का आयोजन किया गया जिसमें १२४ ईसाई मतावलम्बियों ने वैदिक धर्म अंगीकार कर लिया।

इस अभियान में आर्य समाज जमशेदपुर के प्रधान श्री कृष्ण खोसला एवं मन्त्री डा० ओमप्रकाश आर्य, आर्य समाज राजामाड़ी भावरा के श्री दयानन्द आर्य एडवोकेट का दल तथा आर्य समाज माडल टाऊन पानीपत के प्रधान श्री तिलकराज मल्होत्रा का दल भी शामिल था।

कार्यकर्ताओं ने भुवनेश्वर में स्वामी जी द्वारा संचालित कन्या गुरुकुल सनरका का निरीक्षण किया। केंदकिया गांव में यज्ञ एवं शुद्धि संस्कार के आयोजन में वैदिक धर्म में दीक्षित होने वाले १२४ व्यक्तियों को दानी महानुभावों द्वारा भेजे गए वस्त्र वितरित किए गये। तथा २०० व्यक्तियों ने यज्ञोपवीत धारण किये। शान्ति आश्रम तपोवन में अनाथ बालकों के आवास निर्माण के लिए आर्य समाज जमशेदपुर ने ५००० रुपए के सहयोग का वचन दिया। शुद्धि आयोजन का सम्पूर्ण व्यय आर्य समाज जमशेदपुर ने वहन किया।

॥ ओ३म् ॥

वेद प्रचार-पद यात्रा

[illegible] अप्रैल 1982 से 2 मई 1982 तक

आर्य समाज रिहाड़ी कालोनी जम्मू से आर्य समाज रणबीरसिंहपुरा।

यह यात्रा महात्मा सूर्यदेव जी वानप्रस्थ (वेद प्रचार अधिष्ठाता, आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर) के नेतृत्व मे सम्पन्न होगी। इसमें बाहर से आने वाले संन्यासी, महात्मा, वानप्रस्थी, विद्वान् उपदेशक एवं भजनीक सम्मिलित होंगे। इसके अतिरिक्त सभी स्त्री-पुरुष, युवक-युवतियां सम्मिलित हो सकते हैं। महात्मा रसीलाराम वैदिक वानप्रस्थाश्रम आनन्दधाम गढ़ी (ऊधमपुर) की ओर से हर व्यक्ति को गले में डालने के लिए एक बसन्ती रंग का दुपट्टा और हाथ में 'ओम्' का झण्डा दिया जाएगा। गृहस्थी और ब्रह्मचारी सफेद कपड़ों में होंगे। रास्ते में जगह-जगह जलसे, जलूस, प्रभातफेरियां विचार गोष्ठियां और सम्मेलन किए जाएंगे और सस्ते दामों पर आर्य समाज के साहित्य का वितरण किया जाएगा।

रास्ते में भोजन, चाय, दूध और निवास का प्रबन्ध आश्रम की ओर से होगा। यात्रा में सम्मिलित होने वाले व्यक्ति के लिए एक दिन का खर्च ५ रुपये होगा। आप एक दिन से लेकर ८ दिन तक जितने दिन यात्रा में सम्मिलित होना चाहते हैं १०-४-८२ तक बुक करा सकते हैं। यह पद यात्रा ६ किलोमीटर प्रतिदिन की जाएगी। बुक कराने के लिए 'गोपाल आर्य मिशन' गोपाल भवन कच्ची छावनी जम्मू, फोन नं० ४२९९० से सम्पर्क करें,

प्रतिदिन का कार्यक्रम शीघ्र ही प्रकाशित होकर आपकी सेवा में पहुंच जाएगा।

निवेदक
गोपालकृष्ण आर्य
संयोजक
महात्मा रसीलाराम वैदिक.
वानप्रस्थाश्रम
आनन्द धाम गढ़ी (ऊधमपुर)

कृण्वन्तो ओ३म् विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र जालन्धर

वर्ष 14, अंक 47, प्रथम चैत्र सम्वत् 2039, तदनुसार 14 मार्च 1982, दयानन्दाब्द 156 । एक प्रति 35 पैसे (वार्षिक शुल्क 15 रुपए)

जब उपासना करना चाहें

महर्षि दयानन्द ने कहा था

★जो उपासना का आरम्भ करना चाहे उसके लिए यही आरम्भ है कि वह किसी से वैर न रखे, सर्वदा सबसे प्रीति करे, सत्य बोले, मिथ्या कभी न बोले, चोरी न करे, सत्य व्यवहार करे। जितेन्द्रिय हो, लम्पट न हो, और न कभी अभिमान करे।

—स० प्र० सप्तम समु०

जब उपासना करना चाहे तब एकान्त शुद्ध देश में जाकर, आसन लगा, प्राणायाम कर, बाह्य विषयों से इन्द्रियों को रोक, मन को नाभि प्रदेश में वा हृदय, कण्ठ, नेत्र शिखा अथवा पीठ के मध्य हाड़ में किसी स्थान पर स्थिर कर अपने आत्म और परमात्मा का विवेचन करके परमात्मा में मग्न हो जाने से संयमी होवें।

—स० प्र० सप्तम समु०

★जब-जब मनुष्य लोग ईश्वर की उपासना करना चाहें तब-तब इच्छा के अनुकूल एकान्त स्थान में बैठ कर अपने मन को शुद्ध और आत्मा को स्थिर रखें तथा सब इन्द्रिय और मन को सच्चिदानन्दादि लक्षण वाले अन्तर्यामी अर्थात् सबसे व्यापक और न्यायकारी परमात्मा की ओर अच्छी प्रकार से लगा कर सम्यक् चिन्तन करके उसमें अपने आत्मा को नियुक्त करे फिर उसी की स्तुति, प्रार्थना, उपासना को बराबर करके अपने आत्मा को भली-भांति उसमें लगा दें।

—ऋ० भू० उपासना०

उपासना दो प्रकार की है—एक सगुण और दूसरी निर्गुण। उनमें से 'सपर्यगाच्छुक्रमकायमव्रणम स्नाविरं शुद्धमपाप विद्धम्। कविर्मनीषी परिभूः स्वयम्भूर्याथातथ्यतो अर्थान् व्यदधाच्छाश्वतीभ्य, समाभ्यः। (यजु० ४०।८) इस मन्त्र के अनुसार शुक्र अर्थात् जगत् का रचने वाला वीर्यवान् तथा शुद्ध, कवि मनीषी, परिभू और स्वयम्भू इत्यादि गुणों के सहित होने से परमेश्वर सगुण हैं और अकाय, अव्रण, अस्नाविर इत्यादि गुणों के निषेध होने से वह निर्गुण कहाता है। तथा एको देवः सर्व भूतेषु गूढ़ सर्वव्यापी सर्व भूतान्तरात्मा।

कर्माध्यक्षः सर्व भूताधिवासः साक्षी चेता केवलो निर्गुणश्च ॥

श्वेताश्वतर ६।११

एक देव इत्यादि गुणों के सहित होने से परमेश्वर सगुण और निर्गुणश्च इसके कहने से निर्गुण समझा जाता है। तथा ईश्वर के सर्वज्ञ सर्वशक्तिमान, शुद्ध, सनातन, न्यायकारी, दयालु, सबमें व्यापक सबका आधार, मंगलमय, सबकी उत्पत्ति करने वाला और सबका स्वामी इत्यादि सत्यगुणों से ज्ञानपूर्वक उपासना करने को सगुणोपासना कहते हैं। और वह परमेश्वर कभी जन्म नहीं लेता। निराकार अर्थात् आकार वाला कभी नहीं होता, अकाय अर्थात् शरीर कभी नहीं धारता। अव्रण अर्थात् जिसमें छिद्र कभी नहीं होता, जो शब्द, स्पर्श, रूप, रस, और गंध वाला कभी नहीं होता। जिसमें दो-तीन आदि संख्या की गणना नहीं बन सकती। जो लम्बा चौड़ा, और हल्का-भारी कभी नहीं होता इत्यादि गुणों के [illegible] निर्गुण उपासना कहते हैं।

आर्य समाजों तथा शिक्षण संस्थाओं के अधिकारियों की सेवा में

आर्य समाज अंक के आर्डर शीघ्र भेजें

आपको यह जानकर प्रसन्नता होगी कि आर्य समाज के सबसे महान् पर्व स्थापना दिवस पर आर्य मर्यादा का जो विशेषांक प्रकाशित किया जा रहा है उस के लिए निम्नलिखित सुयोग्य विद्वानों के लेख तथा कविताएं हमें प्राप्त हो चुकी है। इससे आप सहज अनुमान लगा सकते हैं कि कि आर्य मर्यादा का यह विशेषांक कितना उपयोगी होगा।

१- डा. मुंशीराम जी शर्मा सोम डी-लिट कानपुर
२- डा. सूर्य देव जी डी-लिट अजमेर
३- आचार्य प्रज्ञा देवी जी वाराणसी
४- प्रो. उत्तम चन्द जी 'शरर' एम. ए. पानीपत
५- श्री यशपाल आर्य बन्धु मुरादाबाद
६- श्रीयुत दत्तात्रेय बाब्ले अजमेर
७- प्रा. भद्रसेन दर्शनाचार्य होशियारपुर
८- आचार्य सत्यव्रत श्री शास्त्री विद्याभास्कर धामपुर
श्रीयुत कुसमाकर जी फिरोजाबाद,
९- आचार्य विद्या भास्कर शास्त्री नई दिल्ली
१०- प्रा. रमाकान्त दीक्षित भिवानी,
११- स्वामी विद्यानन्द जी सरस्वती दिल्ली

इसके अतिरिक्त तीन अत्यन्त प्रेरक लेख श्री प. गंगाप्रसाद जी उपाध्याय, श्रीमती चन्द्रावती जी लखनपाल और श्री प. सत्यदेव जी विद्यालंकार के भी इसमें प्रकाशित किए जा रहे हैं, जिनके पढ़ने से आपके ज्ञान में विशेष वृद्धि होगी।

इनके अतिरिक्त और विद्वानों के लेख भी प्राप्त होने हैं विशेषांक प्रत्येक दृष्टि से बढ़िया हो यह हमारा प्रयत्न है। हमारा काम आप तक सहृदय विद्वान लेखकों तथा कविवरों के प्रेरणादायक ज्ञानवर्धक विचार पहुंचाना है तथा आप का कर्तव्य इस विशेषांक के माध्यम से जन जन तक इन विचारों को फैलाना है।

आर्य समाज की मान्यताओं वेद मूलक मान्यताओं और शिक्षाओं को यदि आप ठीक समझना चाहते हैं तो इस विशेषांक की अधिकाधिक प्रतियों का आर्डर शीघ्र भेज कर अपनी प्रतियां सुरक्षित करा लें। इस विशेषांक का मूल्य २- से अधिक न हो यह हमारा प्रयास रहेगा कृपया अपने आर्य समाज व संस्था की ओर से आदेश शीघ्र भेजिए। आदेश के साथ ही मूल्य भी अग्रिम भिजवा सकें तो कृपा होगी।

—ओम्प्रकाश आर्य

हमारे चारों ओर सुख की वर्षा हो

(सुरेशचन्द्र वेदालंकार एम-ए-एल-टी, [illegible] गोरखपुर)

शं नः सोमो भवतु ब्रह्म शं नो
शं नो ग्रावाणः शमु सन्तु यज्ञाः ।
शं नः स्वरूणां मितयो भवन्तु
शं नः प्रस्वः शम्वस्तु वेदिः ॥

(सोमः नः शम् भवतु) यज्ञ में प्रयुक्त होने वाला सोम-रस हमारे लिए सुखकारी हो। (ब्रह्म नः शम्) यज्ञ में प्रयुक्त होने वाले वेद मंत्र हमारे लिए सुखकारी हो। (ग्रावाणः नः शम् सन्तु) सोमरस निकालने के लिए प्रयुक्त होने वाले पत्थर हमारे लिए सुखकारी हों। (स्वरूणां) यज्ञीय स्तम्भों के (मितयः) नाप (नः शम् भवन्तु) हमारे लिए सुखकारी हों। (प्रस्वः) औषधियां (नः) हमारे लिए (शम्) सुखकारी हों (उ वेदि नः शम् अस्तु) और यज्ञीय वेदी हमारे लिए सुखकारी हो।

शं नः सूर्य उरुचक्षा उदेतु शं
नश्चतस्रः प्रदिशो भवन्तु ।
शं नः पर्वता ध्रुवयो भवन्तु शं
नः सिन्धवः शमु सन्त्वापः ॥

(उरुचक्षा) यह जो मानो संसार की महाचक्षु (सूर्यः) सूर्य (नः) हमारे लिए (शम् उदेतु) सुखकारी बन कर उदित हो। (चतस्रः प्रदिशः नः शम् भवन्तु) चारों दिशायें हमारे लिए सुखकारी हों (ध्रुवयः पर्वताः नः शम् भवन्तु) स्थिरता के कारणभूत पर्वत हमारे लिए सुखकारी हों। (सिन्धवः उ आपः नः शम् सन्तु) नदियां तथा जल हमारे लिए सुखकारी हों।

इन मन्त्रों में परमेश्वर से आनन्द और सुख की प्रार्थना की गई है। मनुष्य अल्पज्ञ और अल्प शक्तिमान् है। जहां ज्ञान होता है, वहां शक्ति होती है और जहां शक्ति होती है वहां आनन्द होता है, वहां सुख होता है। इस शक्ति को प्राप्त करने के लिए मनुष्य को अपने विचारों को दृढ़ और उन्नत करना होगा। यह विचार ही मनुष्य का मूल्यवान धन है। प्रत्येक कठिनाई में तात्कालिक सहायता उसी से मिलती है। आप के जीवन की सारी सफलता, आपके विचारों के प्रकार, आपके अपने कार्य एवं भविष्य सम्बन्धी कामनाओं पर निर्भर हैं। इन कार्यों की सफलता के लिए, इन विचारों को दृढ़ और शक्तिशाली बनाने एवं सुख की ओर ले जाने के लिए एक मात्र सहारा प्रभु है। आप भविष्य के लिए बड़े बड़े मनसूबे न बांधिए और और न व्यर्थ की चिन्ता में पड़िए। सब कुछ ईश्वरार्पण करके उसकी आज्ञा के अनुसार, उसकी इच्छा पूर्ति के लिए कीजिए। याद रखिए प्रार्थना में बड़ी शक्ति है प्रार्थना जीवों और परिस्थितियों में आमूल परिवर्तन कर देती है। प्रार्थना द्वारा कठिनाइयों के मुकाबला करने के लिए मनुष्य को हिम्मत और बल मिलता है। प्रार्थना द्वारा मनुष्य कठिनाइयों से निकल और बच पाता है, क्योंकि प्रार्थना उसमें [illegible] विश्वास पैदा करती है। प्रार्थना मनुष्य की सफलता के लिए रास्ते बनाती है, यह केवल पुरानी राह की मरम्मत ही नहीं करती। मनुष्य अपने हृदय की गहराई में जैसे विचार करता है वैसा ही वह बनता और होता है।

इसलिए परमेश्वर से प्रार्थना करते हैं कि हम यज्ञ में जो सोम का प्रयोग करते हैं वह सोम हमें सुख देने वाला हो। सोम शब्द वेद में बहुत बार और अनेक अर्थों में आया है। सोम को ओषधीनां (वीरुधां पति—ऋग्वेद ९-११४.२) में कहा गया है। इसी प्रकार ऋग्वेद ९-५६-२ और ९-९७३२ में पीयूष—अमृत आदि कहा गया है। सोम को चन्द्रमा भी कहते हैं। सोम औषधि को हमने नहीं देखा वैसे विद्वान् बताते हैं कि चन्द्रमा को देख कर जैसे हर्ष होता है, उमंग बढ़ती है वैसे ही सोम रसके पान से भी होती है। सुश्रुत संहिता २९ अध्याय २१-२२ श्लोकों के अनुसार शुक्ल पक्ष में जैसे एक-एक कला चन्द्रमा बढ़ते-बढ़ते पूर्णिमा को प्राप्त कर लेता है वैसे सोम औषधि भी शुक्ल पक्ष में एक-एक पत्ता बढ़ते-बढ़ते पूर्णिमा को १५ पत्तियों से युक्त हो जाता है। सोम बल्ली में १५ पत्ते होते हैं। कृष्ण पक्ष में एक-एक पत्ता गिरता जाता है जैसे अमावस्या को चन्द्रमा लुप्त हो जाता है। इन गुणों की समानता के साथ ही सोम का अर्थ चन्द्रमा है। वास्तव में सोम सबसे सुन्दर और शक्तिशाली जड़ी अथवा औषधी है। यह आरोग्य, आनन्द, वीर्य, प्रतिभा, मेधा आदि प्रदान करने वाला है। इस औषधि के विषय में और भी बहुत सी बातें प्राचीन ग्रन्थों में मिलती हैं। इससे स्तुति पाठ और वक्तृत्व शक्ति को लाभ होता था। उच्चता व और आनन्द की वृद्धि होती थी। शरीर सोम सहित हो जाता है। असीम बल का अनुभव होता है। बुद्धि-वृद्धि करना इसका विशेष गुण था। यह बूढ़े को शक्ति प्रदान करता है। इसके पान से उमंग, तरंग और प्रतिभा प्रकट होती थी। परन्तु 'सोम' का अर्थ शराब नहीं है। ऋग्वेद में इसे गिरिष्ठा ९-६२-४, ९-१८-४, में कहा गया है। यह पर्वतों पर होता था। इसके विषय में यह भी बातें बतलाई गई हैं। इसके पत्ते हरे, सांवले और कुछ लाल होते हैं, [illegible] रंग के भी [illegible] हैं। दूसरे [illegible] संसार के [illegible] हैं। यह यज्ञ में प्रयुक्त होने वाला सोम रस हमारे लिए कल्याणकारी है।

फिर कहते हैं वेद मन्त्र हमारे लिए कल्याणकारी हों। अर्थात् वेदमन्त्र की शिक्षाओं को जीवन में धारण कर हम अपना और जगत् का भला करें। सोम रस को पीसने के प्रयुक्त पत्थर, यज्ञीय खंभों के नाप कल्याणकारी हों। अर्थात् यज्ञशाला का स्वरूप हमें हर्षित करे। सोम के अतिरिक्त अन्य औषधियां हमारा भला करें और यह यज्ञ वेदी जिस पर बैठकर हम अपना यज्ञ का कार्य करें वह भी हमारे लिए कल्याणकारी हो। इस लिए इस मन्त्र में हम परमात्मा से प्रार्थना करते हैं। प्रभो! आपकी कृपा से औषधियों के स्वामी (वीरुधां पतिः) सोम का रस, वेद के मन्त्र, सोम निकालने के साधन यज्ञीय स्तंभ, औषधियां और यज्ञ वेदी हमारे लिए सुखकारी हों।"

दूसरे मन्त्र में कहते हैं सूर्य भगवान् की दिव्य छटा देख कर उपासक कहता है—देखो, देखो, सामने उदित हो रहे और अपने निर्मल प्रकाश से चमक रहे सूर्य देव को देखो। यह महान् सूर्य—संसार की आंख है। देवों का हितकारी चक्षु है। पृथ्वी, सूर्य, चन्द्र, नक्षत्र ग्रह, उपग्रह ही नहीं, संसार के अणु अणु [illegible] रहे [illegible] की [illegible] [illegible] हैं। [illegible] सब [illegible] है। [illegible] के [illegible] हैं। यह सूर्य हमारे लिए सुखकारी हो।

चारों दिशाएं हमारे लिए सुखकारी हों। स्थिरता के [illegible] पर्वत जो निरन्तर प्रभु की [illegible] और उसके नियमों की दृढ़ता का [illegible] कर रहे हैं, हमें स्थिरता का [illegible] दें। हमारे लिए सुखकारी हों। [illegible] के आंगन में जब आनन्द स्वरूप प्रभु के आनन्द रूप का स्मरण करते हुए आह्लाद भरे हृदय से हम जाते हैं तभी हमें यह प्रतीत होता कि दिशा दिशाओं के अन्दर है उसी प्रभु की वाई [illegible] सुख का और आनन्द का आशीर्वाद दे रही हैं। उसी समय चारों ओर बहता हुआ प्राणवायु पवन, समुद्र के समान उमड़ती नदियां और जल हमारे लिए सुखकारी हो सकते हैं। उस समय सारा भूमण्डल परमेश्वर की आनन्ददायिनी सुधाओं में आप्लावित हो जाता है और सारा संसार हमारे लिए सुखकारी हो जाता है। इस मन्त्र में हम परमेश्वर से कहते हैं। हे प्रभो! आपकी कृपा से संसार की यह महान् चक्षु—सूर्य, चारों दिशाएं ऊंचे-ऊंचे व्योम [illegible] पर्वत और समुद्र के समान उमड़ती नदियां और जल हमारे लिए सुखकारी हों।"

पौरुष

ले. श्री सीताराम जी पाण्डेय

भाग्य नहीं नर का भूषण, सौभाग्य कर्म होता है
भाग्य-लीक पर चलने वाला, पग-पग हो रोता है
किस्मत पर रोने वाले तो कायर कहलाते हैं।
भू से रवि को छूने वाले, नागर कहलाते हैं।
भाग्य-भरोसे कौरव थे, पाण्डव थे कर्म सूत्र हारे,
कर्म-हीन वन कानन में, वे, फिरते रहे बेचारे,
हुई चेतना कर्म-पथिक जब, [illegible] से [illegible] पाए,
बैठे शासन पर फिर वे, अपना अधिकार जमाए।
हिटलर हीन वंश का बालक, कर्म [illegible] को पाया,
जिन व्यक्तित्व प्रबल-प्रतिभा से, जग में [illegible] [illegible],
पौरुष के बल [illegible] आगा नहीं कहीं [illegible] [illegible],
जिसके [illegible] से [illegible] में, भी [illegible] [illegible] [illegible]।
[illegible], [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] कर भी जीवन यह, जो [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] रोने वाले ही जो, [illegible] [illegible] जाते हैं,
और मनोरथ [illegible] [illegible], [illegible] ही जाते हैं।
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] की,
[illegible] की [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] थी,
[illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible],
[illegible] [illegible] का [illegible], [illegible] [illegible] [illegible]।

सोचिए और हल पाइए

ले.—प्रा. मंगलसेन, जी, साधु आश्रम होशियारपुर

मनुष्य-मात्र का जीवन अनेक समस्याओं से घिरा हुआ है। समस्याओं का जब तक समाधान नहीं होता तब तक जीवन सुखी नहीं हो सकता। समस्याओं का हल सोचने-विचारने से ही ढूंढ़ा जा सकता है। जैसे कि आज विज्ञान के क्षेत्र में एक के बाद एक कितने ही आविष्कार आविष्कृत हुए हैं। ये सारे आविष्कारकों की सोच का ही फल है। जिन से अनेक सुविधाएं जुटा ली गई हैं या बहुत सारी समस्याएं हल की जा सकी हैं। इसी लिए कहते हैं—"जिन खोजा तिन पाइयां-गहरे पानी पैठ किसी चीज का विचार सत्य-असत्य की कसौटी पर ही होता है। इसी भाव को महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्य समाज के पांचवें नियम में इस प्रकार से व्यक्त किया है। सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करने चाहिएं।

इसी विषय पर प्रकाश डालते हुए भर्तृहरि जी ने लिखा है-गुणवदगुणवद्वा कुर्वता कार्यमादौ, परिणतिरवधार्या यत्नतः पण्डितेन। अतिरभसकृतानां कर्मणामाविपत्तेर् भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः॥ नीति १००

लाभदायक या हानिकारक अर्थात् हर कार्य को करने से पूर्व बुद्धिमान को पूरी तरह से उसके परिणाम को सोचना चाहिए। अन्यथा बिना सोचे-समझे उतावली से किए गए कार्यों का परिणाम आजीवन कांटे की तरह तड़पाने वाला होता है।

इसी भाव को कवि कुलगुरु कालिदास ने इन शब्दों में चित्रित किया है-

पुराणमित्येव न साधु सर्वं, न चापि काव्यं नवमित्यवद्यम्।

सन्तः परीक्ष्यान्यतरद् भजन्ते, मूढः पर प्रत्ययनेय बुद्धिः॥

मालविकाग्निमित्रम्:

केवल पुराना होने से ही कोई हर प्रकार से अच्छा नहीं माना जा सकता है, और न ही नया काव्य होने मात्र से कोई उपेक्षणीय हो जाता है। समझदार व्यक्ति परख कर ही किसी को स्वीकार करते हैं और मूढ़ स्वयं न सोचकर दूसरे के विश्वास (कहे) पर चलने वाले बन जाते हैं। वस्तुतः विचार के पश्चात् ही सच्चाई को ढूंढ़ा जा सकता है। इसी लिए ही तो ईशावास्योपनिषद् के महर्षि ने ऐसे कहा था—

हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्।

तत् त्वं पूषन् अपावृणु सत्यधर्माय दृष्टये॥१५॥

कई बार सत्य का स्वरूप चमकीले, आकर्षक, लुभावने प्रदर्शन के ढकने से ढका होता है। आज के विज्ञापन के युग में तो और भी विशेष रूप से देखने में आता है कि विज्ञापनदाता अतिशयोक्तिपूर्ण शब्दों और चित्रों से वस्तु का विज्ञापन करते हैं। यह प्रायः देखा जाता है कि दूसरों को लुभाने के लिए बात को बढ़ा-चढ़ा कर या नमक-मिर्च लगा कर प्रस्तुत किया जाता है। अतः हे दृष्टि, प्रवृत्ति, उन्नति, विकास चाहने वाले। सत्य रूपी धर्म के दर्शन के लिए इस ढकने को दूर कर दे। इतिहास और रोजमर्रा की घटनाओं में इसके सैंकड़ों उदाहरण मिलते हैं। जब व्यक्ति अन्त में हाथ मलते हुए यही कहता है। मैंने तो यही समझा था कि सत्य यह है, पर निकला कुछ और। मैं तो धोखे में आ गया। इसी लिए ही यहां विचार पर इतना अधिक बल दिया गया है। यतो हि विचार से ही समस्या का समाधान होता है। तभी तो मनुस्मृतिकार ने कहा है—

सम्यग्दर्शन सम्पन्नः कर्मभि र्न निबध्यते।

दर्शनेन विहीनस्तु संसारं प्रतिपद्यते॥६,७४॥

सही ढंग से सोचने वाला अपनी उलझनों, गुत्थियों, समस्याओं का हल निकाल कर उन में उलझता नहीं और अविचारशील मकड़ी के जालवत् अपनी गुत्थियों में ही फंसा रहता है। अतः जीवन की सफलता के लिए यह एक महत्वपूर्ण रहस्य है कि "सोचिए और हल पाइए"।

हर मनुष्य मननशील प्राणी होने के कारण कुछ न कुछ सोचता है। जीवन में घटने वाली घटनाओं के पश्चात व्यक्ति को कुछ न कुछ अनुभव अवश्य होता है। विचारशील प्राणी होने के कारण हर व्यक्ति यथाशक्ति अपने से सम्बन्धित पहलुओं के सम्बन्ध में कुछ न कुछ सोच सकता है। जो अपने सम्बन्ध में स्वयं कुछ नहीं सोचता, उसको दूसरे कुछ नहीं सुझा सकते। दूसरे सोचने में केवल सहयोग ही दे सकते हैं, परन्तु अपने सम्बन्ध में देखना और सोचना तो स्वयं ही होता है। जैसे राज उसी मकान को बना सकता है, जिस का नकशा उसे समझ में आता हो। यदि राज में इतनी योग्यता न हो तो वह नक्शे को कभी भी साकार रूप नहीं दे सकेगा। तभी तो कहा है—

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा, शास्त्रं तस्य करोति किम्।

लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति॥

जो स्वयं सोचने का प्रयास नहीं करता, शास्त्र (सहायक) उस का कुछ भी भला नहीं कर पाते। जैसे नेत्रहीन को दर्पण कुछ नहीं दिखा सकता। आज प्रत्येक व्यक्ति समस्याओं, उलझनों, आपत्तियों, दुःखों, क्लेशों से घिरा हुआ है। इनसे छुटकारा हम बहुत कुछ अंशों में सोच-विचार के बाद सरलता से प्राप्त कर सकते हैं। जैसे कि इस समय मेरी क्या परिस्थिति है? इस परिस्थिति में कैसे गुजारा या हल निकाला जा सकता है। जैसे कि कभी तेल, बिजली की कमी के कारण उसका संकट आ जाता है। तब हमें सोचना चाहिए। आज की परिस्थिति में उस के व्यय में कहां-कहां कमी की जा सकती है और कहां-कहां अनुपयोगी खर्च हो रहा है। जहां इस में बचत की जाए, वहां उस की वृद्धि तथा विकल्प ढूंढने के लिए नए-नए ढंग बने एवं सोचे जा सकते हैं। बहुत कुछ हमारे न सोचने के ही कारण हमारी बहुत सारी उलझनें हैं। तभी तो कुछ व्यक्ति आर्थिक समस्या में घिरे होने पर भी धूम्रपान, शराब आदि व्यर्थों में अन्धाधुन्ध व्यय करते रहते हैं।

यदि हम अपनी हालत के हर पहलू पर सोचें, तो शीघ्र ही उस में परिवर्तन लाया जा सकता है। परन्तु हम लकीर के फकीर बन कर अपनी बुद्धि पर जोर नहीं देना चाहते। इसी लिए हमारी स्थिति में परिवर्तन नहीं होता। तभी तो आज अविचार के कारण ही कुछ धन-आभूषण दुगने कराने की धुन में या बिना परिश्रम और ढंग के अपनी मनौतियों की पूर्ति के चक्र में ठगे जा रहे हैं। आश्चर्य तो यह है कि हम इन ठोकरों के बाद भी सम्भलते नहीं। अतः सुख सुविधा, प्रगति सफलता का रहस्य इसी में ही है कि "धर्मस्य तत्वं निहितं गुहायाम्" अर्थात् हर समस्या, गुत्थी, उलझन का हल विचार पर ही निर्भर है। आओ हम आज ही 'सोचिए और हल पाइए, की सीख को अपना कर अपना जीवन सुखी बनायें।

—

टंकारा में 24 वां ऋषिबोधोत्सव सफलता पूर्वक सम्पन्न

महर्षि दयानन्द स्मारक टंकारा द्वारा संचालित महाशय के कार्यक्रम में २४ वां ऋषि-बोधोत्सव (शिवरात्रि) बड़ी धूमधाम से मनाया गया। बंगाल से लेकर काश्मीर तक के सज्जनों ने आकर ऋषि के प्रति श्रद्धाञ्जली के पुष्प भेंट किए।

१६ फरवरी से यजुर्वेद-पारायण-यज्ञ का प्रारम्भ श्री सत्यदेव जी विद्यालंकार की अध्यक्षता में हुआ तथा २२ फरवरी को शिवरात्रि के दिन पूर्णाहुति हुई।

ध्वजारोहण गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान मंगलसेन चोपड़ा जी के कर कमलों से हुआ।

शोभा-यात्रा भी दृश्य विशेष दर्शनीय था। आगे-आगे ट्रैक्टर की लगी हुई ट्राली में यज्ञ चल रहा था पीछे-पीछे कन्या महाविद्यालय बड़ौदा उपदेशक महाविद्यालय टंकारा तथा भिन्न-भिन्न आर्य समाजों के लोग नाचने-गाते चल रहे थे।

उत्सव को सफल बनाने में पूज्य महात्मा आर्य भिक्षु जी, श्री विजय सिंह जी विजय पं. हरीशचन्द्र सि० आचार्य, पं. हरिओ३म् सि० आचार्य, पं. राजेन्द्र कुमार सि० आचार्य, प. कमल जी सि० आचार्य आदि अनेक विद्वानों तथा संगीतकारों ने बहुत बड़ा भाग लिया।

इससे आगामी अंक संयुक्त अंक होगा

आर्य मर्यादा के सभी ग्राहकों को सूचित किया जाता है कि इससे आगामी अंक आर्य समाज स्थापना दिवस विशेषांक होगा। जो बड़ी उपयोगी सामग्री के साथ प्रकाशित हो रहा है। जो एक बहुत ही प्रभावशाली अंक होगा इसका साईज भी १८×२२।८ पुस्तक रूप में होगा।

—व्यवस्थापक

—

आर्य समाज, फतेहाबाद में सिलाई स्कूल

फतेहाबाद (जिला अमृतसर) आर्य समाज की ओर से यहां सिलाई शिक्षा का फ्री स्कूल खोल दिया गया है। इस आर्य फ्री सिलाई सिखलाई केन्द्र का उद्घाटन पवित्र वेद मन्त्रों की गूंज में प्रो. दरबारी लाल एम. एस ए. ने किया। सिलाई शिक्षा के लिए उत्साह एवं होड़ देख कर प्रो. साहिब ने बारह सिलाई मशीनें इस केन्द्र को देने की घोषणा की आर्य समाज फतेहाबाद के प्रधान श्री बृज मोहन जी ने घोषणा की कि प्रथम रहने वाली लड़की को आर्य समाज की ओर से एक सिलाई मशीन इनाम में मिला करेगी। उपस्थित जन समूह ने बहुत देर तक तालियां बजा कर घोषणाओं का स्वागत किया।

—बृज मोहन

जालन्धर में महिला सम्मेलन

डा० शिवावती जी प्रधाना स्त्री आर्य समाज जालन्धर ने एक वक्तव्य में बताया कि १९-२०-२१ मार्च को आर्य समाज अड्डा होशियारपुर जालन्धर में पंजाब, हरियाणा, दिल्ली तथा हिमाचल, जम्मू-कश्मीर की महिलाओं का एक बृहद सम्मेलन हो रहा है जिसमें हजारों बहनें भाग लेंगी। इस सम्मेलन में बड़े महत्वपूर्ण विषयों पर विचार होगा। १९ मार्च दोपहर दो बजे जालन्धर के बाजारों में बृहद जलूस निकाला जाएगा। १९ मार्च रात्रि २० मार्च तथा २१ मार्च दोपहर तक विशेष [illegible] किए जाएंगे।

उन्होंने अपील की है कि अधिक से अधिक आर्य बहनें इस सम्मेलन में भाग लें।

—कमला आर्या
प्रचार मन्त्राणि

शिवरात्रि पर्व सर्वत्र धूम-धाम से मनाया गया



[illegible] समाज बस्ती गुजां [illegible] शिवरात्रि पर्व १८ से २२ [illegible] धूमधाम से मनाया गया। [illegible] पं. रामनाथ जी सिद्धान्त शिरोमणि कथा करते रहे।

२- आर्य समाज वेद मन्दिर भार्गव नगर जालन्धर का वार्षिकोत्सव शिव रात्रि पर्व पर मनाया गया जिसमें सभा प्रधान श्री वीरेन्द्र जी का भव्य स्वागत किया गया, उत्सव हर प्रकार से सफल रहा पूर्व वर्षों की भांति बृहद जलूस, ऋषि लंगर आदि आयोजन हुए।

[illegible] की ऋषिबोध पर्व बड़े उत्साह से मनाया गया।

४- आर्य समाज बटियाला में ऋषिबोध पर्व बड़े उत्साह से मनाया गया। इस अवसर पर सभा के महोपदेशक श्री पं. निरञ्जन देव जी इतिहास केसरी तथा श्री श्याम सिंह भजनमण्डली ने भाग लिया। [illegible] में भी बड़े उत्साह से मनाया गया।

५- [illegible] ऋषि [illegible] बड़े उत्साह से [illegible] महोपदेशक श्री [illegible] की [illegible] तथा श्री [illegible] की भजनोपदेशक ने भाग लिया।

६- आर्य समाज [illegible] २२ [illegible] में भी शिवरात्रि पर्व बड़े उत्साह से मनाया गया।

७- आर्य समाज [illegible] बाजार [illegible] [illegible] मनाया गया। श्री स्वामी [illegible] जी, पं. राम कुमार जी श्री पं. वेद प्रकाश जी शास्त्री, श्री रामनाथ जी शास्त्री, श्री स्वामी सर्वानन्द आदि विद्वानों के अतिरिक्त लुधियाना के सभी गण-मान्य लोगों ने भाग लिया।



श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा [illegible] जालन्धर से मुद्रित होकर [illegible]
जालन्धर के [illegible]

॥ ओ३म् ॥

आर्य मर्यादा साप्ताहिक
आर्यसमाज स्थापना विशेषांक

वर्ष 14 अंक 48, 49, 50

दिनांक: 7, 14, 21 चैत्र सम्वत् 2039

तदनुसार

21, 28 मार्च तथा 4 अप्रैल 1982

दयानन्दाब्द—157

वार्षिक मूल्य 15 रुपये इस अंक का मूल्य 2 रुपये

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

गुरुदत्त भवन, कृष्ण पुरा चौक, जालन्धर—4

आर्य समाज स्थापना विशेषांक

आपको भेंट करते हुए हमें अपार हर्ष हो रहा है। आर्य समाज की स्थापना का मूलोद्देश्य क्या था और उसकी पूर्ति के लिए हमें क्या करना है। इसके लिए दिशा निर्देश करने वाले उद्बोधक लेख तथा कविताएं आप इस विशेषांक में पढेंगे। स्वल्प समय में इतनी अच्छी पाठ्य सामग्री सहृदय विद्वानों के सक्रिय सहयोग से ही हम जुटा पाए हैं। जिस भी कृपालु विद्वान की सेवा में पत्र लिख कर लेख अथवा कविता भेजने की प्रार्थना की प्राय: सभी ने लेख आदि भेजकर उत्साहित किया।

कई पूज्य विद्वानों ने यह गिला भी किया कि मैं उन्हें पर्याप्त समय के पश्चात् स्मरण कर रहा हूं। उनका इस प्रकार लिखना भी उनके स्नेह का द्योतक है।

पूज्य विद्वान—हमें अपने परिपक्व ज्ञान तथा चिन्तन से अपने लेखों द्वारा लाभान्वित करते रहते हैं परन्तु बदले में हम उनका केवल शाब्दिक धन्यवाद करके अपने कर्त्तव्य की इति श्री समझ लेते हैं। इस पर भी उनका सहयोग मिलता रहता है तो इसे उनकी महत्ता तथा धर्म प्रचार की लग्न का परिणाम ही समझना चाहिए। अन्यथा इस अर्थ प्रधान युग में इस प्रकार निष्काम भाव से काम करना कोई आसान बात नहीं है।

पाठकवृन्द! अपने तपपूत विद्वानों के विचारों से आप जितना सम्भव हो सके लाभ उठाने का यत्न कीजिए तथा आर्य भावना को आत्मसात् कर ऋषि मिशन को दिग्दिगन्त में फैलाने का सौभाग्य प्राप्त कीजिए।

जिन विद्वानों के लेख विलम्ब से प्राप्त होने अथवा स्थानाभाव के कारण हम इस अंक में नहीं दे सके उनके लेख आर्य मर्यादा के साधारण अंकों में प्रकाशित करने का पूरा-पूरा यत्न किया जाएगा।

---

31 मार्च को न भूलिए–क्यों?

क्योंकि यह दिन उस भारतीय क्रांति के अग्रदूत की याद दिलाता है जिसने भारतीय क्रांतिकारी आन्दोलन की सत्यता, सार्थकता और औचित्य को विदेशों में रहकर वहां के बुद्धिजीवियों, राजनीतिज्ञों और प्रसिद्ध नेताओं के समक्ष सत्य सिद्ध किया था। इसी महामानव के आकर्षण और प्रभाव के वशीभूत होकर बीसियों युवक केवल क्रांति की दीक्षा लेने विदेश जा पहुंचे थे। इस क्रांति वीर का नाम है पंडित श्याम जी कृष्ण वर्मा। ४ अक्तूबर १९५७ को एक निर्धन परिवार में जन्म लेने वाला बालक इतना योग्य और क्रान्तिकारी बन जाएगा। इसे कौन जानता था। १८ वर्ष की आयु में इस क्रान्तिकारी को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के दर्शन तथा उनके चरण स्पर्श और वार्तालाप का सौभाग्य बम्बई में हुआ। महर्षि की

(शेष पृष्ठ ४ पर)

स्वामी सत्यानन्द जी महाराज का शुभ सन्देश

आज हमारे जीवन में आर्य समाज का स्थापना दिवस पुनः जहां उत्साह से मनाने का अवसर आया है वहां मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम चन्द्र जी का जन्म दिवस भी मनाने के लिए आर्य समाज तत्पर हो रहा है। जीवित जातियें अपने इतिहास के महत्व को कदापि अपने हिय नेत्रों से ओझल नहीं करती। आज की विकट राजनैतिक और साम्प्रदायिक परिस्थिति में और साथ ही भौतिकवाद के कुप्रभाव में महान आर्य समाज का उत्तरदायित्व पूर्वापेक्षा अधिक हो गया है अत: आर्य समाज के कार्यकर्त्ताओं और सेवकों को अपना यह दायित्व निभाने के लिए कटिबद्ध हो जाना चाहिए तथा पहले से भी अधिक उत्साह-लगन और तप त्याग से सेवा के कार्य में जुट जाना चाहिए। प्यारी आर्य जनता का मैं आवाहन करता हूं कि अपनी सन्तान तथा सम्बन्धियों और मित्रों को अपने सदाचार संयुक्त नैतिक जीवन की उच्चता से प्रभावित करें ताकि आर्य समाज का भविष्य उज्ज्वल हो और उनकी सन्तति आर्य जीवन धारी बन कर आर्य विचारधारा का प्रसार प्रचार करती दिखाई दें—

विश्वभर की भारत विरोधी राजनैतिक शक्तियां तथा आन्तरिक अराष्ट्रिय तत्वों के षड्यन्त्रों वा कुप्रयत्नों को विफल करने में मन, वचन, कर्म से आर्य जन जुट जाएं यह प्रमाद का तथा उपेक्षा करने का समय नहीं है। यदि इस समय हम चूक गए और अपने कर्त्तव्य का पालन न किया तो इतिहास हमें क्षमा न करेगा और पुनः पतन तथा गुलामी की दलदल में फंसने का कलंक लगेगा उसको सातसागरों का जल भी धो न सकेगा: मेरे प्यारे आर्य बन्धुओं तथा बहिनों आप को साप्ताहिक कार्यक्रमों से ऊपर उठ कर अधिकाधिक समय सार्व-जनिक सेवा कार्यों में लगाने के लिए तत्पर हो जाना चाहिए और पारस्परिक सद्भाव तथा प्रेम को अत्यन्त दूरदर्शी बनकर के बढ़ाते हुए अपने संगठन को सुदृढ़ बनाना चाहिए। यह मेरी अन्तस्तल की ध्वनि है।

(३ पृष्ठ का शेष)

आज्ञा से विदेश गए। १९०५ ई० में इण्डियन सोशियालोजिस्ट पर अंग्रेजी में प्रकाशित कर अपनी सशक्त लेखनी द्वारा भारत की तत्कालीन अवस्था से विदेशी बुद्धिजीवियों को अवगत कराया और इस प्रकार भारत की स्वतन्त्रता का मार्ग प्रशस्त किया।

'इंडियन होमरूल सोसाइटी तथा इंडिया हाऊस दोनों की स्थापना की। इनकी क्रांतिकारी टोली में वीर सावरकर ला. हरदयाल, पारसी युवति मैडम कामा, सेनापति बापट सर सिकन्दर हयात खान और श्रीमती सरोजिनी नायडो के एक भाई वीरेन्द्रनाथ चट्टोपाध्याय आदि अनेक देशभक्त थे।

२१ मार्च १९३० को भारत माता का यह सच्चा सपूत वैदिक धर्म और ऋषिदयानन्द का अनन्य भक्त हमसे जुदा हुआ था। प्रतिवर्ष ३१ मार्च को हमें कृतज्ञापूर्वक इनका यशोगान करना चाहिए। —ओम्प्रकाश आर्य

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

आर्य मर्यादा साप्ताहिक

सम्पादकीय–

आर्यसमाज को नया रूप देने की आवश्यकता है

हम यदि आर्यसमाज के इतिहास को तीन भागों में बांटने का प्रयास करें, तो उसके तीन अध्याय बनेंगे। सिद्धांत, संगठन और प्रचार। आर्यसमाज ने पिछले १०७ वर्षों में जो प्रगति की है, उसका सबसे बड़ा कारण था अपने सिद्धांतों पर पूरी शक्ति और लग्न से चलने का प्रयत्न करना। दूसरा अपने सिद्धान्तों को क्रियान्वित करने के लिए एक संगठन का आधार रखना और तीसरा अपनी विचार धारा का प्रचार करना। परन्तु जब हम पिछले इतिहास पर दृष्टिपात करते हैं, और आज की परिस्थितियों पर गम्भीरतापूर्वक ध्यान करते हैं तो ऐसा प्रतीत होता है कि अब हमें अपना मार्ग कुछ बदलने की आवश्यकता है। १०० वर्ष पहले की परिस्थितियां कुछ और थीं, आज की कुछ और हैं। जब आर्यसमाज की स्थापना हुई थी, उस समय देश की जनता में वह जागृति न थी, जो हम आज देख रहे हैं। उस समय इस्लाम और ईसाइयत का बहुत अधिक प्रचार था। और देश में कोई ऐसी संस्था न थी, जो अपने देशवासियों को इस्लाम और ईसाइयत के पंजा में फंसने से रोक सकती। देश में अंग्रेज का शासन था। इसलिए ईसाइयत का बोल बाला था। राज शक्ति की आड़ में ईसाइयत का प्रचार हो रहा था। उससे पहले कई सौ वर्षों तक इस देश में मुसलमानों का शासन रहा। उस समय इस्लाम

का प्रचार होता रहा। कई मुस्लिम बादशाहों ने तलवार के जोर से अपने धर्म का प्रचार किया था। इसका यह परिणाम हुआ कि इस देश की जनता इतनी भयभीत हो गई थी कि कोई भी न इस्लाम के विरुद्ध बोलता था न ईसाइयत के विरुद्ध कुछ कहने को तैयार था। इस्लाम के विरुद्ध सबसे बड़ा विद्रोह गुरु तेग बहादुर ने किया था और उनके बाद एक बालक वीर हकीकत राय ने किया था। उनको उसका जो परिणाम भुगतना पड़ा वह भी हमारे सामने है। यही कारण था कि जब महर्षि दयानन्द सरस्वती कार्य क्षेत्र में उतरे, उस समय हमारे देश की जनता इतनी दब चुकी थी कि कोई बोलने का नाम न लेता था। पहली बार महर्षि दयानन्द ने विद्रोह की आवाज उठाई और उसने सारी हिन्दू जाति को झंझोड़ कर रख दिया। उन्होंने अपने देशवासियों को याद दिलाया कि वे क्या थे और क्या बन गए ? उन्होंने हमें केवल राजनैतिक स्वतन्त्रता का मार्ग ही नहीं दिखाया, धार्मिक और सामाजिक उत्थान के लिए भी तैयार किया। उस समय की जनता के लिए विशेष कर उस समय के बुद्धिजीवियों के लिए यह एक नई स्थिति थी। उनमें आत्म विश्वास पैदा हो गया। और वे एक बार फिर अपने पैरों पर खड़े होने को तैयार हो गए। यही कारण था कि जब महर्षि दयानन्द ने आर्यसमाज की स्थापना की, तो बहुत जल्द ही यह सारे देश में फैल गई। लोग इस की तरफ आने लगे। इसके उत्सवों में सैंकड़ों की नहीं हजारों की भीड़ हुआ करती थी। इसके उपदेशक और भजनीक भी बड़े उच्च कोटि के हुआ करते थे, वे जब बोलते थे तो ऐसा मालूम होता था कि किसी जंगल में शेर दहाड़ रहे हैं। उन्होंने इस्लाम और ईसाईयत को खुली चुनौती दी थी। उनमें से कईयों को इसके लिए अपना बलिदान भी देना पड़ा। परन्तु उस बलिदान से आर्यसमाज की शक्ति और भी बढ़ गई। यह सूर्य की तरह चमक उठी और सारे देश में फैल गई।

आज स्थिति बदल गई है। आर्यसमाज का नाम तो आज भी सारे देश में फैला हुआ है। परन्तु उसी के साथ हम यह भी देख रहे हैं कि अब आर्यसमाज में वह आकर्षण नहीं रहा, जो पहले था। उसके उत्सव फीके रहते हैं, उसके पास उच्च कोटि के वक्ता, भजनीक और उपदेशक नहीं हैं। कई नये-नये प्रकार के मत-मतान्तर उभर रहे हैं और वे सब मिल कर आर्यसमाज के १०० वर्ष के काम को मिट्टी में मिलाने का प्रयत्न कर रहे हैं। जिस अन्धविश्वास को आर्यसमाज ने समाप्त कर दिया था, वह फिर से सिर उठाने लगा है। रजनीश के नाम पर, साईं बाबा के नाम पर, बाल योगेश्वर के नाम पर कई प्रकार की संस्थाएं बन गई हैं। लोग उनकी तरफ जाते हैं। सैंकड़ों में नहीं हजारों की संख्या में जाते

हैं। और वे यह जानने का प्रयत्न भी नहीं करते कि जो-जो नये किस्म के भगवान कहते हैं, उसमें कितनी सच्चाई है ? महर्षि दयानन्द ने किसी मनुष्य की विचार-धारा को जनता के सामने नहीं रखा था वह जानते थे कि एक मनुष्य अपने आप को चाहे कितना बड़ा कहता रहे, फिर भी उसमें कोई न कोई कमी तो रह जाती है। इसलिए उन्होंने कहा था कि वेद ईश्वरीय ज्ञान है। यह किसी पुरुष के लिखे हुए नहीं हैं, यह सारी मानव जाति के लिए हैं। जब वेदों का प्रकाश हुआ था, उस समय संसार में मानव के सिवाय और कोई जाति न थी। न हिन्दू थे, न मुसलमान थे और न ईसाई थे। परमात्मा की सन्तान केवल मानव ही थे। वेद उन्हीं के लिए बनाए गए थे। इसलिये यह सारी मानव जाति के लिये हैं। जब हम नये-नये भगवान सामने देखते हैं तो आश्चर्य भी होता है और खेद भी होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि जिस उद्देश्य को लेकर हम चले थे, उसमें हम विफल हो रहे हैं। इसीलिए मैं कहता हूं कि आज की परिस्थितियों में आर्य-समाज को एक नया रूप देने की आवश्यकता है। संस्था वही सफल रह सकती है, जो बदलती हुई परिस्थितियों के अनुसार अपनी कार्य प्रणाली को भी बदले। हम अपने सिद्धांतों को नहीं बदल सकते। उनमें न कोई परिवर्तन कर सकते हैं और न कोई संशोधन कर सकते हैं। परन्तु उन्हें जनता के सामने पेश करने की प्रणाली में कोई परिवर्तन किया जा सकता है। आज यह बात सोचने की आवश्यकता है कि देश के भिन्न-भिन्न स्थानों पर नये-नये मत पैदा हो रहे हैं। लोग उनकी तरफ क्यों जा रहे हैं ? क्या कारण है अब आर्यसमाज की तरफ इतनी जनता नहीं आती जितनी पहले आया करती थी। इस बात से कोई भी इन्कार नहीं कर सकता कि हमारे देश में जो परिस्थितियां पैदा हो रहीं हैं और जो समस्याएं अब हमें परेशान कर रही हैं, उनका उत्तर केवल आर्य समाज के पास ही है। कोई दूसरी धार्मिक या सामाजिक संस्था ऐसी नहीं, जो इन परि-स्थितियों में जनता का नेतृत्व कर सके। परन्तु जो कुछ होना चाहिए वह नहीं हो रहा। इस पर गम्भीरता पूर्वक विचार करने की आवश्यकता है। मैं पहले भी कई बार लिख चुका हूं कि आर्यसमाज की जन्म शताब्दी के समय जनता को जो नया नेतृत्व हमें देना चाहिए था, वह हमने नहीं दिया। जो प्रचार प्रणाली एक सो वर्ष पहले थी, आज भी हम उसी पर चल रहे हैं। दुनिया बदल गई है, परन्तु

हम नहीं बदले। यह स्थिति आर्यसमाज के लिए अत्यन्त घातक हो सकती है। मैं जानता हूं कि आज मेरी आवाज कोई नहीं सुनेगा, परन्तु मेरा यह भी विश्वास है कि अगर आर्यसमाज ने अपने उस उद्देश्य को पूरा करना है, जिसके लिए महर्षि दयानन्द सरस्वती ने इसकी स्थापना की थी, तो हमें सारी स्थिति पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना पड़ेगा। सारे देश में शीघ्र ही आर्यसमाज स्थापना दिवस मनाया जाएगा। मैं अपने आर्य बन्धुओं से विनम्र निवेदन करना चाहता हूं कि आर्यसमाज के स्थापना दिवस के अवसर पर वह केवल लम्बे चौड़े भाषण देकर ही न बैठ जाएं, परन्तु इस प्रश्न पर भी विचार करें कि क्या समय नहीं आ गया जबकि आर्यसमाज को एक नया रूप दिया जाए। मैं फिर यह स्पष्ट कर देना चाहता हूं कि सिद्धांतों में कोई परिवर्तन या संशोधन नहीं हो सकता। परन्तु सिद्धांतों की प्रचार प्रणाली में संशोधन हो सकता है और होना चाहिए। यदि आर्यमर्यादा के पाठक महोदय इस विषय में हमें अपने विचार भेजेंगे तो हम उन्हें आर्यमर्यादा में प्रकाशित करेंगे। १९८३ में महर्षि दयानन्द निर्वाण शताब्दी मनाई जाएगी। हमें इसे आर्यसमाज की जन्म शताब्दी की तरह एक मेला बना कर समाप्त नहीं कर देना चाहिए। बल्कि आर्यसमाज की वर्तमान स्थिति पर गम्भीरता पूर्वक विचार करके कोई नई प्रकार की प्रचार प्रणाली प्रारम्भ करनी चाहिए, ताकि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने हमारे जिम्मे जो काम लगाया था, उसे हम पूरा कर सकें। इसलिए मेरा यह नम्र निवेदन है कि आर्य जगत के बुद्धिजीवियों को अब इस विषय पर गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिए ' ताकि आर्यसमाज की जन्म शताब्दी की तरह निर्वाण शताब्दी भी आर्य जनता का मार्ग दर्शन किए बगैर ही न चली जाए।

—वीरेन्द्र

गुरुकुल कांगड़ी का उत्सव

गुरुकुल कांगड़ी विश्वविद्यालय हरिद्वार का वार्षिकोत्सव १० से १३ अप्रैल १९८२ को मनाया जा रहा है आर्य बन्धु अधिक से अधिक संख्या में पधारें।

—वीरेन्द्र

स्थापना दिवस पर सोचें

ले.—श्री रामचन्द्र जावेद, मन्त्री आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब

इस बार २६ मार्च को आर्य समाज स्थापना दिवस है। दूसरे शब्दों में आर्य समाज की आयु अब १०७ वर्ष की हो गई है। कहने की आवश्यकता नहीं कि इस संक्षिप्त से जीवन काल में देश विदेश में आर्य समाज का कितना प्रचार हुआ है, उतना किसी धार्मिक संस्था का नहीं हुआ है, देश के प्रत्येक प्रान्त में छोटे-बड़े सभी नगरों में आर्य समाज की स्थापना हो चुकी है। इसकी शिक्षा संस्थाओं का भी लगभग सर्वत्र फैलाव हो रहा है। इस विशाल संगठन को अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए आज इसके स्थापना दिवस के अवसर पर आर्य मर्यादा के द्वारा इसके पाठकों की सेवा में कुछ सुझाव प्रस्तुत करना चाहता हूं और वे ये हैं—

१. आर्य समाज एक प्रचारक संघ है इसका मुख्य उद्देश्य प्रचार है, इसके सदस्यों को प्रचारक होना चाहिए। प्रचारक अपनी बात को और अपने वक्तव्यों को अपने तक सीमित नहीं रख सकता। वह उन्हें किसी प्रकार दूसरों तक पहुंचाता रहता है। आर्य समाज के प्रारम्भिक सदस्य सच्चे अर्थों में प्रचारक अर्थात् मिशनरी थे। आज यह प्रचार भावना दुर्भाग्य से आर्य समाज के सदस्यों में कम हो रही है। हमारे सत्संग हमारे तक ही सीमित हो गए हैं। हमारे वाचनालयों और पुस्तकालयों में हम स्वयं नहीं जाते, दूसरे क्या जाएंगे। हम अपने साहित्य तथा पत्रों को स्वयं नहीं पढ़ते दूसरों को पढ़ने-पढ़ाने की क्या प्रेरणा करेंगे। इसलिए हमें आर्य समाज को प्रचारक संघ बनाने के लिए अपने आप को उसका प्रचारक या मिशनरी बनाना होगा।

२. आर्य समाज के सिद्धान्त बुद्धि सम्मत हैं अर्थात् तर्क तथा युक्ति के अनुकूल है किन्तु हमने उन्हें अपने जीवनों में नहीं डाला। परिणाम स्वरूप न हमारे सामाजिक जीवन में शक्ति है और न व्यक्तिगत जीवनों में। आज का अशान्त मानव ऐसी धर्म सभा अथवा संगठन की शरण में आना चाहता है जो उसे आत्मिक शान्ति और मानसिक सुख दे सके। इसके लिए आर्य समाज के लोगों को अपने जीवनों को आदर्श रूप में प्रस्तुत करना होगा। और अपने जीवनों को शान्त और धार्मिक बनाना होगा।

३. जिन महापुरुषों ने आर्य समाज के लिए तप और त्याग किया हम उन्हें भूलते जा रहे हैं। जिसका परिणाम यह है कि आर्य समाज के लिए त्याग और तपस्या करने वाले लोग अब हमारे क्षेत्र में नहीं आ रहे। हम लोग स्वयं तप और त्याग नहीं कर सकते तो दूसरों के तप और त्याग की कदर करना सीखें।

४. आज के आर्य समाजियों में पहले लोगों की भान्ति भ्रातृभाव और बिरादरी की बात नहीं। पहले लोग अपनी जात बिरादरी को छोड़ कर आर्य समाज में जब आते थे तो यही उनकी बिरादरी और जात बन जाती थी। आज हम में वह भावना नहीं।

५, हमने अपनी संस्थाए आर्य समाज के प्रचार के साधन रूप में चलाई थी। आज यह संस्थाएं साधन न बनकर साध्य बनती जा रही हैं। इन्हें आर्य समाज के लिए अधिक से अधिक उपयोगी बनाने का प्रयत्न करना चाहिए।

६. आर्य समाज में पूर्व काल के प्रभावशाली तथा मिशनरी प्रचारकों की कमी होती जा रही है। यदि हमारे उत्सवों में पहले के से गवेषणापूर्ण प्रभावशाली भाषण तथा प्रवचन हों तो हमारे यहां उपस्थिति अब भी बढ़ सकती है। इसके लिए हमें योग्य उपदेशक और प्रचारक तैयार करने चाहिएं। और उन्हें अधिक से अधिक वेतन देकर इस कार्य का महत्व बढ़ाना चाहिए।

७, आर्य समाज में योजनाबद्ध और केन्द्रीय सभा में अनुसन्धान कार्य लगभग समाप्त हो रहा है। शास्त्रार्थ प्रणाली तो पहले ही समाप्त हो चुकी है अतः दूसरों के लिखित आक्रमणों का उत्तर देने का भी आर्य समाज में प्रबन्ध नहीं हो रहा।

८. हमें अपने कार्यक्रम की नई योजना बनानी चाहिए। और यह योजना केन्द्रीय तथा प्रान्तीय स्तर पर अलग-अलग बननी चाहिए और यह योजना हर प्रान्त तथा प्रदेश की आवश्यकताओं और परिस्थितियों के अनुकूल होनी चाहिए। और इसे सभी लोगों को पूरा करने का हर सम्भव प्रयत्न करना चाहिए।

मेरी अपनी सम्मति में यदि हम कुछ बातों पर आर्य समाज के लोग कुछ ध्यान दें और आज के दिन इनको क्रियान्वित करने का संकल्प कर लें तो आर्यसमाज अपने कार्यक्षेत्र में और अधिक उन्नति कर सकता है। काश! कि सब आर्य बन्धु आर्य समाज के हित में सोचने का व्रत ले सकें।

वाल्मीकि के राम

ले.—श्री ओ३म् प्रकाश आर्य, सभा कार्यालयाध्यक्ष

वाल्मीकि रामायण के पढ़ने से आदर्श पुरुष मर्यादा पालक श्री रामचन्द्र जी के जीवन का जो रूप दृष्टिगोचर होता है वह मानव समाज के लिए सदा स्मरणीय एवं अनुकरणीय है। आदर्श पुत्र, आदर्श पति, आदर्श भ्राता, आदर्श मातृ-पितृ भक्त, आदर्श प्रजापालक, आदर्श गुरु पूजक, आदर्श वेद भक्त, सच्चा ईश्वरोपासक, नित्य नियम पालक, सत्य प्रतिज्ञ, धर्म परायण इन्द्रियजित् वीर शिरोमणि, महान् तपस्वी, एक पत्निव्रतधारी महामानव श्रीराम का जन्म दिन हमारे लिए प्रेरणाओं का स्रोत है। महर्षि वाल्मीकि को उस युग में महाराज राम के जीवन से बढ़कर अपने महाकाव्य के लिए दूसरा पात्र ही न मिल सका। महाराज के जीवन का चरित्र चित्रण **ऋषिवर ने बड़े अनूठे ढंग से किया है।** रामायण को निष्पक्ष भाव से पढ़ने के पश्चात् विदेशी विद्वान् भी मुक्त कण्ठ से इसकी प्रशंसा करते हैं। प्रोफेसर एम० एम० विलियम्स ने रामायण का पारायण करने के पश्चात् इंडियन इपीकपिइटरी पृष्ठ १२ पर लिखा है—

'रामायण से अधिक सम्मोहक काव्य संस्कृत साहित्य में दूसरा नहीं, भाषा की निर्दोषिता शैली की सरलता और सुन्दरता साथ ही कवित्व पूर्ण भावनाओं की प्रचुरता वीरत्व पूर्ण घटनाओं का चित्रमय वर्णन, प्रकृति के विशाल दृश्य मानव हृदय की परिष्कृत भावनाओं और द्वन्द्वों के गम्भीर विश्लेषण का सुन्दर समन्वय है। इसे किसी राष्ट्र के किसी युग, काव्य की समता में रखा जा सकता है। रामायण एक आनन्ददायक वाटिका के समान है। यत्र-तत्र इसमें वनैल दृश्य

भी हैं। यह अनन्त स्रोत, सिञ्चित फल-फूलों से सुसम्पन्न है। इसके सघन काननन भी आनन्ददायक पगडंडियों से भरपूर हैं।

वाल्मीकि रामायण के सम्बन्ध में इतनी अच्छी धारणा प्रो० विलियम्स की केवल इसलिए बनीं क्योंकि अन्यत्र कहीं भी काव्य और नैतिकता का इतना सम्मोहक समन्वय नहीं मिलता !

महाराज राम धर्म की साक्षात् मूर्ति हैं। उनको न राज्य का प्रलोभन प्रलोभित कर सका और न सत्ता का मद अपनी ओर आकृष्ट कर सका। धर्म के विशुद्ध रूप को समझ लेने के पश्चात् यावज्जीवन मर्यादा पूर्वक धर्म का पालन करते रहने का जो ऊंचा और अद्भुत् आदर्श महाराज श्रीराम उपस्थित कर गए हैं वह अद्वितीय है। वाल्मीकि रामायण के आधार पर उस उज्ज्वल आदर्श की छोटी सी झांकी हम पाठकों के सम्मुख उपस्थित कर रहे हैं, आशा है, सुविज्ञ पाठक इस आदर्श की गरिमा को समझते हुए इसे जीवन में आत्मसात् करने का प्रयत्न करेंगे।

महाराज राम को जब वन-गमन का आदेश मिला और वे जाने से पूर्व अपनी माता कौशल्या का आशीर्वाद लेने उनके पास गये तब माता कौशल्या और लघु भ्राता लक्ष्मण दोनों ने उनको वन जाने से रोकने का भरसक प्रयत्न किया, उस समय अपनी पूज्या माता तथा भाई लक्ष्मण को धर्म का मर्म समझाते हुए अपनी वन-गमन की प्रतिज्ञा को निभाने की दृढ़ता का जो परिचय महाराज ने दिया है वह अतीव मनन करने योग्य है। भाई लक्ष्मण को श्री महाराज कहते हैं—

धर्मार्थकामाः खलु जीवलोके समीक्षिताधर्म फलोदयेषु।
ये तत्र सर्वेस्युरसंशयं मे भार्येववश्याभिमता स पुत्रः।

अर्थ—हे प्रिय ! निश्चय करके इस लोक में धर्म, अर्थ, काम, यह तीन जो मनुष्य जन्म के फल है. इनमें धर्म मुख्य है, क्योंकि अर्थ, काम सब धर्म के ही आश्रित है जैसाकि एक ही पतिव्रता भार्या पुत्रादि साधन द्वारा सुख विशेष की हेतु होती है।

यस्मिंस्तु सर्वेस्युरसन्निविष्टधर्मायतः स्यात्तदुपक्रमेन्। द्वेष्यो भवत्यर्थपरोहिलोके कामात् मता खल्वति प्रशस्ता ॥

अर्थ—जिस धर्म के आश्रित मनुष्य जन्म के अन्य सब फल हैं उस धर्म का मनुष्य सबसे प्रथम सेवन करे, क्योंकि अर्थ परायण पुरुष लोगों को अप्रिय होता है, इसलिए अर्थ परायण होना ठीक नहीं।

गुरुश्च राजा च पिता च वृद्धः क्रोधात् प्रहर्षादथवापि कामात्। यद्व्यादिदेशत्कार्यमवेक्ष्य धर्म कस्तं न कुर्यादनृशंसवृत्तिः।

अर्थ—गुरु, राजा, पिता और वृद्ध इन चारों की आज्ञा माननी चाहिए, चाहे वह क्रोध से कहें, हर्ष से कहें अथवा कामना से कहें, ऐसा कौन क्रूर स्वभाव

वाला पुरुष है जो धर्म को देखकर इनकी आज्ञा का पालन न करें।

न तेन शक्नोमि पितुः प्रतिज्ञामिमां न कर्तुं सकलां यथावत्।

सह ह्यावयोस्तात गुरुनियोगे देव्याश्च भर्ता स गतिः स धर्मः ॥

अर्थ—इसलिए मैं पिता की आज्ञा को अन्यथा नहीं कर सकता, क्योंकि हे तात ! वह हम दोनों को आज्ञा देने में गुरु, माता के भर्त्ता और वही गति तथा वही धर्म है।

वीर लक्ष्मण को धर्म का मर्म समझाने के पश्चात् अपनी जननी कौशल्या से अत्यन्त विनीत भाव से कहने लगे—

जीवन्त्या हि स्त्रिया भर्ता दैवतं प्रभुरेव च।

कि भर्ता स्त्री के जीते जी देवता और प्रभु है। फिर निवेदन किया

व्रतोपवासनिरता या नारी परमोत्तमा।

भर्तारं नानुवर्तेत सा च पापगतिर्भवेत्।

जो परमोत्तम नारी व्रत उपवास तो करती है परन्तु पति के अनुसार आचरण नहीं करती वह पाप गति वाली होती है।

भर्तुः शुश्रूषया नारी लभते स्वर्गमुत्तमम्।

अपि या निर्नमस्कारा निवृत्ता देव पूजनात्।

शुश्रूषामेव कुर्वीत भर्तुः प्रियहिते रता, एवं धर्मः स्त्रिया नित्यो वेद लोके श्रुतः स्मृतः ॥

अर्थ—पति की सेवा करने से ही नारी उत्तम सुख को प्राप्त करती है चाहे अन्य किसी देव का पूजन अर्चन करे वा न करे, भर्ता के प्रियहित में रत होकर उसकी सेवा अवश्य करें, स्त्रियों का यह नित्य धर्म वेद शास्त्र में वर्णित है।

धर्म परायणता का यह उच्चादर्श महाराज के जीवन में ओत-प्रोत है। आज पद सत्ता, सम्पत्ति और अधिकार लिप्सा ने मनुष्य को विवेक भ्रष्ट कर दिया है। इनकी प्राप्ति के लिए वह हर प्रकार के अनुचित कार्य करने को समुद्यत रहता है और यह नहीं सोचता कि सदा साथ निभाने वाली चीज केवल धर्म और कर्त्तव्य का पालन है।

हमारी मातृ शक्ति भी आज पतिव्रत धर्म के प्रति उदासीनता का भाव प्रदर्शित कर रही हैं झूठे और दम्भी भगवा वेशधारी गुरुओं के पीछे भागने में लगी हैं। माता-पिता, भाई-बहिनों पति-पत्नी, पुत्र-पुत्री के प्रति अनास्था का भाव और ठगों के प्रति आस्था रखना सर्वथा अनुचित है। असली और प्रभु द्वारा नियुक्त माता-पिता की सेवा न करते हुये नकली और निष्प्राण कल्पित माता-पिताओं के पीछे भागना समय और द्रव्य का तो विनाश है ही, अपने पारिवारिक जीवन के सुख और संगठन को भी विनष्ट करना है। अतः राम नवमी के पवित्र दिन हमें वाल्मीकि रामायण में वर्णित महाराज राम के सच्चे जीवन का पाठ करना चाहिए तथा तदनुसार अपना व्यवहार बनाना चाहिए। राम का स्वांग भरना राम का अपमान करना है परन्तु राम के जीवन का अनुसरण करना राम की सच्ची भक्ति है।

आधुनिक युग में आर्य समाज की प्रासंगिकता क्यों है ?

ले.श्री क्षितीश जी वेदालंकार—दिल्ली

क्या आधुनिक युग से आर्य समाज की कोई प्रासंगिकता है ?

आर्य समाज की प्रासंगिकता पर प्रश्न चिन्ह लगाने वाले एक प्रकार के लोग वे हैं जो यह कहते हैं कि आर्य समाज पुरातनपन्थी है, क्योंकि वह वेदों की ओर लौटने का नारा लगाता है, भारत के प्राचीन गौरव को पुन: स्थापित करना चाहता है, प्राचीन भाषा संस्कृत का प्रचार करना चाहता है. प्राचीन ऋषियों के आदर्श जीवन का ही गुणगान करता रहता है—इसलिए उसके प्रत्येक कार्य में प्राचीनता की गन्ध आती है। आधुनिक युग का शिक्षित युवक प्राचीनता को पसन्द नहीं करता, वैसे भी मनोवैज्ञानिक दृष्टि से मनुष्य सदा नवीनता की ओर आकर्षित होता है। प्राचीनता के प्रति विरक्ति मानव मन की सहज प्रवृति है : महाकवि कालिदास ने भी कहा है—

क्षणे क्षणे यन्नवता मुपैति
तदेव रुपं रमणीयताया: ।

सुन्दरता इसी का नाम है कि प्रतिक्षण परिवर्तन होता रहे और नवीनता जन्म लेती रहे इसलिए आधुनिकता के दीवाने युवकों को न प्राचीन वेश-भूषा पसन्द आती है, न प्राचीन भाषा, न प्राचीन खान-पान, न प्राचीन रहन-सहन। आज का युग तो "अल्ट्रामाडर्न' का उपासक है। जो चीज जितनी नई है, वह उतनी अच्छी है। जैसे नए फैशन और वस्तुओं के नए माडल के सामने पुराने माडल अवांछनीय समझे जाते है, वैसे ही नवीनतावादी विचारधारा के समक्ष आर्य समाज भी अवांछनीय है, क्योंकि वह पुरातनपन्थी है

पूर्वपक्ष

आर्य समाज की प्रासंगिकता पर प्रश्न चिन्ह लगाने वाले दूसरे प्रकार के वे लोग हैं जो कहते हैं कि क्या धर्म-कर्म की बात करते हो, यह युग तो अर्थ प्रधान है। धर्म तो पूंजीपतियों और धर्म के ठेकेदार पुरोहितों के लिए आम जनता के शोषण का साधन मात्र है। आस्तिकता और धर्म मनुष्य को आलसी और भाग्यवादी बनाते हैं। मनुष्य का भाग्य किसी दैवीय शक्ति के हाथ में नहीं, उसके अपने हाथ में है। श्रम की महत्ता सर्वोपरि है। आज मनुष्य की मूलभूत आवश्यकता "रोटी कपड़ा और मकान" है। न कि कोई धर्म, किसी प्रकार का पूजा-पाठ, या किसी दैवीय शक्ति में विश्वास, या परलोक और पुनर्जन्म की मान्यता। आज विज्ञान का युग है और विज्ञान ने मनुष्य के हाथ में इतनी शक्ति दे दी है। कि वह बड़े-बड़े भूखण्डों का क्षणमात्र में विध्वंस कर सकता है, एक परमाणु बम से हजारों—लाखों मनुष्यों को मार सकता है, या उन्हें विकलांग बना सकता है, नदियों और समुद्रों को बांध सकता है, मौसमों को बदल सकता हैं। और तुम हो कि इस विज्ञान के युग में भी संध्या-हवन की ही रट लगाए चले जाते हो। यदि कोई बात करनी है तो बड़े-बड़े कारखानों की बात करो, विकास-कार्यों की बात करो। लोगों की बेरोजगारी और उन्हें आर्थिक दृष्टि से समृद्ध बनाने की बात करो। वेद और धर्म आदि सब भरे-पेट के चोंचले हैं। गरीब आदमी को गरीब बनाए रखने और उसे उसी हालत में मस्त रखने के लिए धर्म केवल अफीम का पर्याय है। गरीबी को मिटाना ही आजकल का सबसे बड़ा राजनीतिक नारा है और आज का यही सबसे बड़ा धर्म है।

कुछ अन्य निहित स्वार्थों वाले लोग भी जैसे पण्डे-पुरोहित आदि. आधुनिक युग में आर्य समाज को अप्रासंगिक बता सकते हैं।

कुछ उदार लोग ऐसे भी हैं, जो कहते हैं कि ऋषि दयानन्द ने जब आर्य समाज की स्थापना की थी, उस समय भले ही उसकी आवश्यकता रही हो, परन्तु आज आर्य समाज की मान्यताओं को प्रायः समस्त बुद्धिजीवी वर्ग ने स्वीकार कर लिया है, इसलिए अब उसकी आवश्यकता नहीं रही। अस्पृश्यों के उद्धार और स्त्रियों के समानाधिकार की बात तो अब भारतीय संविधान का अंग बन चुकी है। अन्य भी अनेक सामाजिक सुधार (जैसे बाल-विवाह निषेध और विधवा-विवाह आदि) सर्व-स्वीकृत हैं, इसलिए अब इन्हीं का प्रचार करने

लिए यदि आर्य समाज की आवश्यकता हो तो वह निरर्थक है। स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात आर्य समाज का स्वराज्य के लिए आन्दोलन भी निष्प्रयोजन हो गया है। इसलिए इस युग में आर्य समाज सर्वथा अप्रासंगिक हो गया है।

इस प्रकार आर्य समाज को अप्रासंगिक बताने वाला यह पूर्वपक्ष है।

उत्तर पक्ष में यद्यपि विस्तार से बहुत कुछ कहा जा सकता है, परन्तु संक्षेप में हम केवल कुछ बातों की ओर ही संकेत करेंगे।

उत्तर पक्ष

सब से पहले पुरातनपंथ की बात लें। हम स्वीकार करते हैं कि आर्य समाज पुरातनपन्थी है। परन्तु वह नवीनता का विरोधी नहीं है। पुरातन का वह केवल इसलिए परित्याग नहीं कर देना चाहता कि वह पुरातन है, और न वह नवीनता का इसलिए वरण करना चाहता है कि वह नवीन है। जो राष्ट्र अपने अतीत को भूला देता है, वह बिना नींव के नई इमारत खड़ी करना चाहता है। और जो अतीत को पकड़ कर बैठा रहता है, उसकी आलीशान पुरानी हवेली एक दिन खंडहर बन जाती है और अपने अन्दर निवास करने वालों के लिए ही खतरे का कारण बन जाती है। इसलिए पुरातन और नवीन दोनों की बुद्धि सगत, न्यायाचित, मानव समाज की हितकारी प्रवृत्तियों का आर्य समाज ने सदा स्वागत किया है।

यों पुरातन और नवीन दोनों सापेक्षिक परिभाषाएं हैं। केवल पुरातन होने से कोई चीज अच्छी नहीं हो जाती, नवीन होने से कोई चीज न बुरी हो जाती है। पुराने अन्ध-विश्वासों, पाखण्डों और कुरीतियों का जितना जबरदस्त खण्डन आर्य समाज ने किया है, उतना आज किसी ने नहीं किया। लेकिन जिस सबल स्वर से वह प्राचीन मिथ्या विश्वासों का खण्डन करता है, उतने ही सबल स्वर से वह आधुनिक युग की बुराईयों का भी खण्डन करता है। आर्य समाज का दृष्टिकोण यह है कि मानव के भौतिक अभ्युदय और मानसिक तथा आत्मिक विकास के लिए जो भी कुछ आवश्यक है, वह सब ग्राह्य है। उसके धर्म को केवल परलोक की वस्तु नहीं माना। वैदिक धर्म में जितना महत्व परलोक का है' उससे कहीं अधिक महत्व इहलोक का है। इसलिए उसने धर्म के सम्बन्ध में महर्षि कणाद के वैशेषिक दर्शन में वर्णित इस सूत्र को मान्यता दी है—"**यतोअभ्युदय निःश्रेयससिद्धिः स धर्मः**" धर्म वही है जिससे अभ्युदय और निःश्रेयस दोनों की सिद्धि हो। चार्वाक और नास्तिक लोग

परलोक का स्वीकार न करके "खाओ पीओ मौज करो" के पक्षपाती हैं, तो वेदान्ती किस्म के आध्यात्मिक लोग इसकी उपेक्षा करके अहर्निश परलोक चिंतन में लगे रहते हैं। आर्य समाज का कहना है कि न इस लोक को भूलो, न परलोक को। जिसने इस लोक को नहीं साधा, उससे परलोक भी नहीं सधता।

यदि आर्य समाज वेदों की ओर और लौटने की बात कहता है, तो यह उसका प्रतिक्रियावादी कदम नहीं, प्रत्युत सुचिन्तित और सुविचारित अभियान है, क्योंकि वेदोपदिष्ट मार्ग से ही मानव जाति अभ्युदय और निःश्रेयस को प्राप्त कर सकती है।

यदि महात्मा गान्धी "शहरों से ग्रामों की ओर" चलने का नारा देते हैं और आधुनिक बुद्धिजीवी भी इस के मूल में छिपे तत्व को ही किसी देश की उन्नति का साधन मानते हैं, तो यह पुरातन पंथ है या आधुनिक युग की आर्थिक समस्याओं के समाधान का उपाय है? गुन्नार मिरडल जैसे स्वीडिश अर्थशास्त्री तो पुरातन युग के नहीं, इसी युग के आधुनिकतम व्यक्ति हैं। वे गान्धीवादी अर्थशास्त्र का समर्थन क्यों करते हैं? इसीलिए न कि औद्योगिक सभ्यता ने जितनी विषमता, अर्थात् मानसिक तनाव और नाना समस्याओं को जन्म दिया है, उन सबका समाधान उन्हें गान्धीवाद के पुरातन पंथ में ही दिखाई देता है। इसलिए पुरातन और नवीन के सम्बन्ध में आर्य समाज का दृष्टिकोण यह है—

पुराणमित्येव न साधु सर्वं
न चापि रम्यं नवमित्यवद्यम् ॥

पुराना होने से सब कुछ भला नहीं हो जाता, और नया होने से सब कुछ रम्य नहीं हो जाता। इसलिए पुराने और नए का इस ढंग से समन्वय होना चाहिए कि वह मानवता के विकास में सहायक हो, बाधक नहीं।

विज्ञान-सम्मत धर्म

रही बात विज्ञान की दृष्टि से आर्य समाज की अप्रासंगिकता की-सो जहां तक विज्ञान का सम्बन्ध है, उसकी कसौटी पर संसार के अन्य मत-मतान्तर भले ही खरे न उतरें, परन्तु, केवल मात्र वैदिक धर्म ही ऐसा है, जो सर्वथा विज्ञान-सम्मत है। "वेद" का अर्थ ही ज्ञान है। जहां अन्य मतों में अकल के दखल को स्वीकार

नहीं किया जाता, वहां वेद के सम्बन्ध में शुरू से ही यह घोषणा है "बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे" वेद का एक-एक वाक्य बुद्धिपूर्वक है। इसीलिए अन्य मतों में जहां विज्ञान और वैज्ञानिकों का विरोध हुआ गैलिलियों को जेल में डाला गया और ब्रूनो को जिन्दा जलाया गया, या इस्लाम के अनुयायियों ने अपनी धर्मान्धता में ज्ञान-विज्ञान के विरोध-स्वरूप बड़े-बड़े पुस्तकालय अग्नि की भेंट कर दिए, वहां वैदिक धर्म का इतिहास इस दृष्टि से इतना गौरवमय है कि संसार के सब मत-मतान्तर उससे शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। वैदिक धर्म में ज्ञान रूपी वृक्ष का फल खाना पाप नहीं है जैसा कि ईसाई मत वाले मानते हैं। बल्कि यहां तो यह घोषणा है "ऋते ज्ञानान्न मुक्ति" बिना ज्ञान के मुक्ति नहीं हो सकती।

वैदिक धर्म और उसका अनुयायी आर्यसमाज न शोषण का समर्थक है, न बेरोजगारी का, न गरीबी का, न भुखमरी का। वेद ने कहा है" न वा उ देवाः क्षुधमिद् वधं ददु।" देवताओं ने किसी मनुष्य को भूख से मरने के लिए पैदा नहीं किया। इसी लिए परमात्मा ने जहां मुंह एक दिया हैं, वहां हाथ दो दिए हैं। दो हाथों से परिश्रम करने वाले का एक मुंह भरना कठिन नहीं है। साथ ही वेद ने यह भी कहा है। "केवलाघो भवति केवलादी" केवल अपना पेट भरने की चिन्ता करने वाला व्यक्ति सिवाय पाप के और कुछ नहीं खाता। "वयं स्याम पतयो रयीणाम" हम सब प्रकार के धनों के स्वामी बने यह उपदेश देने वाला वेद कभी गरीबी का समर्थक नहीं हो सकता। वेद-कालीन ऋषि कहता है "नाहं मृण्मये गृहे वसामि" में मिट्टी के घर में नहीं रहूंगा। शरीर शोषी तपस्या का समर्थक आर्य समाज नहीं है। पर आर्यसमाज विलासिता का भी समर्थक नहीं है। धन कमाने का अधिकार सबको है, परन्तु बिलासी बनने का अधिकार किसी को नहीं है। जब अपने लिए या अपने परिवार के लिए विलासितापूर्ण साधन जुटाने में धन खर्च करना अनुचित है, तब धन के व्यय की उचित मद और कौन-सी रह जाती है, सिवाय समाज सेवा के सबकी उन्नति में अपनी उन्नति के सिद्धान्त को मानने वाला व्यक्ति गरीबी के सागर में अमीरी का टापू बन कर नहीं रह सकता।

पर हां, आर्य समाज यह भी मानता है कि केवल पेट भर देने से मनुष्य में सब गुणों का विकास नहीं हो जाता। नैतिक और चारित्रिक दृष्टि से उन्नति भी उतनी ही आवश्यक है, जितनी आवश्यक है रोटी, कपड़ा और मकान की मांग पूरी करना। जिनके सामने रोटी, कपड़ा, और मकान की समस्या नहीं है, उन पूंजी-पतियों का नैतिक जीवन क्या तथाकथित गरीबों के नैतिक जीवन से अधिक उन्नत

(शेष पृष्ठ ७१ पर)

आ समाजनो मुख्य उद्देश्य

लेखक—श्री स्वामी विद्यानन्द सरस्वती

आर्य समाज के प्रसिद्ध विद्वान् संन्यासी श्री स्वामी विद्यानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के मूलोद्देश्य वेद प्रचार के सम्बन्ध में उत्तम प्रकाश डाला है। लेख मनन करने तथा आचरण में लाने योग्य है। सं.

सर्वप्रथम आर्य समाज की स्थापना राजकोट (महर्षि के जन्मस्थान टंकारा से २५ मील दूर) में हुई थी। किन्तु राजकीय प्रकोप के कारण वह चल न सकी। इसलिए चैत्र सुदी पंचमी १.संवत् १९३२ तदनुसार १० अप्रैल १८७५ (शनिवार) को बम्बई में स्थापित आर्य समाज को ही प्रथम आर्य समाज माना जाता है। उस दिन स्थापना के समय जो नियम बनाए गए थे उनमें पहला नियम इस प्रकार था—

आ समाजनो मुख्य उद्देश्य ए छे के वेदविहित धर्मतत्व प्रत्येक सभासदे मान्य करवां अने तनो प्रसार देश प्रदेश करवाने यथाशक्ति प्रयत्न करवो।" २,

आर्य समाज के कार्य अथवा उसकी गतिविधियों के चहुंमुखी होते हुए भी हमें यह न भूलना चाहिए कि ऋषि दयानन्द की भावना के अनुसार हमारा केन्द्र बिन्दु वेद है। अपने इस लक्ष्य तक पहुंचने में हम कहां तक सफल हो पाए हैं—इसी आधार पर हमें अपनी सफलता-असफलता का निश्चय करना चाहिए। आर्य समाज का स्थापना दिवस प्रदर्शन का अवसर न होकर गम्भीर चिन्तन का दिन है- अपने अतीत का लेखा-जोखा करके अपने भावी (कम से कम आगामी एक वर्ष के लिए) कार्यक्रम के निर्धारण का दिन है।

१- श्री गोपालराव देशमुख के नाम स्वामी दयानन्द द्वारा चैत्र शुक्ला ६ (रविवार) को लिखे गये पत्र तथा 'टाइम्स आफ इण्डिया' आदि पत्रों में प्रकाशित सूचना के आधार पर।

२- आर्य समाज बम्बई की प्रथम वार्षिक रिपोर्ट (पृष्ठ ३) के अनुसार।

'कालेनानवच्छेदात् पूर्वेषामपि गुरुः, परमेश्वर ने आदि सृष्टि में वेदों का ज्ञान इसलिए दिया कि मनुष्य बिना सिखाए कुछ सीख नहीं सकता था। इसलिए हमारी मान्यता रही है कि वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है। ज्ञान-विज्ञान की ऐसी कोई बात नहीं जो वेदों में न हो। किन्तु १०० वर्ष से अधिक बीत जाने पर भी हम दुनिया को अपनी बात का विश्वास नहीं दिला पाए। जब तक वर्तमान में वैज्ञानिकों द्वारा लिखे गए ग्रन्थों के समान वेद और वेदानुकूल ग्रन्थों के आधार पर एक-2 विद्या का सांगोपांग एवं क्रमबद्ध विवेचन करने वाले उच्च-कोटि के ग्रन्थ प्रस्तुत नहीं किए जाते तब तक हमारी स्थापना को संसार में मान्यता नहीं मिल सकती। और यदि हम ऐसा करके दिखायें तो वेदों की महत्ता पर भाषण देने की आवश्यकता नहीं रहेगी। दुनिया अपने आप वेद की कायल हो जाएगी।

वेदों को विकृत रूप में प्रस्तुत करने वाले ग्रन्थ विश्व की अनेक भाषाओं में मिलते हैं। अधिकृत (?) विद्वानों द्वारा लिखित अथवा संपादित तथा अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के प्रकाशकों द्वारा प्रकाशित ये ग्रन्थ भारत में ही नहीं, संसार के सभी विश्वविद्यालयों —
तथा कालिजों के पुस्तकालयों में मिलेंगे। ऐसा ही एक ग्रन्थ कुछ वर्ष पूर्व 'वैदिक-एज' के नाम से प्रकाशित हुआ था। उसके उत्तर में आर्य समाज की ओर से 'वेदों का यथार्थ स्वरूप' नाम से एक अत्यन्त विद्वतापूर्ण ग्रन्थ प्रकाशित हुआ। 'वैदिक-एज' को देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के संस्कृत तथा इतिहास विभागों के लगभग सौ लब्ध प्रतिष्ठ विद्वानों द्वारा तैयार कराया गया था। उसके प्रकाशन के साथ डा. राधाकृष्णन, क. मा. मुन्शी: जस्टिस बख्शी टेकचन्द. घनश्यामदास बिड़ला आदि बड़े-२ लोगों के नाम सम्बद्ध थे। विश्वविख्यात इतिहासवेत्ता डा. आर. सी. मजूमदार इसके संपादक थे। इस प्रकार अपनी महत्ता के कारण यह ग्रन्थ दुनिया भर के विश्वविद्यालयों, कालिजों, यहां तक कि गिरजाघरों में भी पहुंच गया। वेदों का यथार्थस्वरूप' प्रामाणिक होते हुए भी आर्य समाज मन्दिरों से आगे न जा सका। जिन हाथों में 'वैदिक एज' गया, उन हाथों में उसका उत्तर पक्ष नहीं पहुंचा। उसे वे ही कुछ लोग पढ़ पाए जो पहले से ही उन विचारों के थे।

परिणामतः हमारे विश्वविद्यालयों में संस्कृत व इतिहास पढ़ाने वाले प्रायः सभी प्राध्यापक सायण, महीधर आदि पौराणिक तथा जातीय पक्षपात से पूर्ण एवं पूर्वाग्रहों से युक्त अधकचरे पाश्चात्य विद्वानों से प्रभावित है। इसलिए अपने

छात्रों को वे वही कुछ पढ़ाते हैं जो उन्होंने स्वयं पढ़ रखा है। आगे चल कर वही छात्र अध्यापक बनते और वही कुछ अपने छात्रों को पढ़ाते हैं। इस प्रकार शिक्षित वर्ग वेदों के उसी स्वरूप को जानता और मानता है। वेदों का जो स्वरूप इन छात्रों के सामने आता है उसे देखने के बाद वेद अपौरुषेय तथा सब सत्य विद्याओं के ग्रन्थ न रह कर मानवीय मस्तिष्क की आरम्भिक चेतना की अटपटी उक्तियां तथा किस्से कहानियों की पुस्तकें बन कर रह जाती है। उनमें मांस, मदिरा तथा जुए का विधान है, जादू टोना है, गोवध का उल्लेख है और यम-यमी सूक्त के रूप में भाई-बहन के यौन सम्बन्धों की चर्चा है। विश्वविद्यालयों में संस्कृत के अतिरिक्त इतिहास में एम. ए. करने वालों को वैदिक कालीन इतिहास के सन्दर्भ में यही सब पढ़ाया जाता है। वे पढ़ते हैं कि इस देश के आदिवासी कोई और है। हम आर्य लोग तो बाहर से आकर यहां के मूल निवासियों को जीत उन्हें जंगलों और पहाड़ों में खदेड़ कर इसके मालिक बन बैठे। वेदों में राम, कृष्ण, अर्जुन, द्रौपदी, बुद्ध और महावीर के नामों का उल्लेख होने से स्पष्ट है कि वेदों की रचना हुए बहुत अधिक समय नहीं हुआ। आर्य समाज द्वारा संचालित सभी स्कूलों, कालिजों, यहां तक कि दयानन्द विश्वविद्यालय (रोहतक) तथा गुरुकुल विश्वविद्यालय (कांगड़ी) में भी यही सब पढ़ाया जाता है। अन्यथा पढ़ाने को कुछ है भी नहीं। इधर उधर की बातों में उन कामों में जिन्हें करने वाले और बहुत हैं—फंस कर, अपने मुख्य उद्देश्य को गौण मान कर हम अपनी शक्ति का अपव्यय कर रहे हैं।

वास्तव में आवश्यकता इस बात की है कि हमारी मान्यताओं के पोषक उच्चकोटि के ग्रन्थों के लेखन तथा प्रकाशन का कार्य सुविचारित योजना के अधीन इस प्रकार किया जाए कि उन्हें उच्चस्तरीय मान्यता प्राप्त हो और सर्वत्र उनकी पहुंच हो। वेदभाष्यकारों को चूंकि स्वयं उन विद्याओं का परिज्ञान नहीं होता, इसलिए वे वेदों में आये वैज्ञानिक निर्देशों को ठीक प्रकार नहीं समझ पाते। वास्तव में वेदों की पूर्ण तथा सन्तोषप्रद व्याख्या के लिए आवश्यक है कि व्याख्याता को अनेक विज्ञानों तथा उनकी शाखाओं का ज्ञान हो। ऐसे विद्वानों द्वारा किया गया वेदभाष्य ही सब प्रकार के संशयों को मिटा कर हमारी प्रतिज्ञा को सत्य सिद्ध कर सकता है। कम से कम १० ऐसे विद्वान् तैयार किए जाएं जो संस्कृत तथा वैदिक साहित्य के प्रकाण्ड पण्डित तो हों ही, उनमें से प्रत्येक एक-२ विद्या का पारंगत विद्वान् भी हो। प्रत्येक को वेदों में से एक-२ विद्या की खोज करके तत्तद्विद्या का प्रतिपादक स्वतन्त्र ग्रन्थ लिखने का काम सौंपा जाए।

स्कूलों, कालिजों तथा विश्वविद्यालयों में शिक्षा पाने वाले लाखों-करोड़ों युवक युवतियां वेद पर प्रवचन सुनने अथवा वेदों के यथार्थ स्वरूप को जानने के लिए आर्य समाज मन्दिर में तो आते नहीं। इसलिए उन तक अपनी बात पहुंचाने के लिए आर्य समाज और उसके नेताओं, विद्वानों तथा संस्थानों को चाहिए कि वे विश्वविद्यालयों, कालिजों तथा स्कूलों को अपने प्रचार का केन्द्र बनाएं और वहां अध्यापन कार्य में लगे संस्कृत तथा इतिहास के अध्यापकों से सम्पर्क स्थापित कर वेदों के सम्बन्ध में उनके दृष्टिकोण को ठीक करें। उनके दिमाग बदल जाएं तो कालान्तर में सारा सिलसिला बदल जाएगा।

समाज तथा राष्ट्र की अनेक समस्याएं हैं। उनका समाधान करने में अनेक संगठन तथा संस्थायें लगी हुई हैं। ऐसे कार्यों में सहयोग देना प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है। किन्तु एक ऐसा कार्य है जिसे आर्य समाज के सिवा न किसी ने किसी ने किया है और न करना है। और वह है प्राचीन ऋषियों की अनुसारिणी ऋषि दयानन्द की मान्यताओं के अनुसार वेद का प्रचार एवं प्रसार। जिस काम को करने वाला दूसरा कोई नहीं, आर्य समाज की कम से कम ७५ प्रतिशत शक्ति उसी काम को करने में लगनी चाहिए।

आर्य–समाज

(श्री अमरचन्द व्यास)

कठिन कर्म करवाल कड़क कर ले लूं कर में।
तर्क तीर तूणीर तमक कर बांध कमर में।
निर्भय निडर निशंक विचरता रहूं समर में।
वेदामृत का ज्ञान प्रचारूं भूतल भर में।
जिसने यह उत्साह भर, साजा रण का साज है।
वह मेरा, मेरे देश का प्यारा आर्य–समाज है॥

फूंक बिगुल की नाद जगत में क्रान्ति मचा दूं।
क्रूर कुचाली कुटिल जनों को मार भगा दूं।
छूत अछूत जगाय जाति के गले लगा दूं।
नेह नीर सोन्हाय प्रीति की रीति सिखा दूं।
जिसने यह आदेश दे, मुझे पठाया आज है।
वह मेरा मेरे देश का, प्यारा आर्य समाज है।

आर्य समाज का वास्तविक रूप

(श्री पण्डित सत्यदेव जी विद्यालंकार)

का एक पुराना लेख

आर्य समाज का राजनीति से सम्बन्ध है या नहीं, या इसे सदा अपनी ऐसी नीति रखनी चाहिए जो राजनीति से इसे दूर रखे आदि-आदि प्रश्न अब गम्भीरता धारण कर रहे हैं और आवश्यक है कि इस विषय को आर्य जनता के विचारार्थ बिना किसी पक्षपात के स्पष्ट रूप से रख दिया जाए।

यह ठीक है कि अब तक आर्य समाज की नीति प्रत्यक्ष रूप में सामूहिक दृष्टि से राजनीति में हिस्सा न लेने की रही है परन्तु आगे भी ऐसी नीति रहनी चाहिए। यह एक आवश्यक प्रश्न है। मुझे तो यह कहना है कि समय आ चुका है जबकि आर्य समाज को सामूहिक दृष्टि से राजनीति में सक्रिय भाग लेना चाहिए।

आर्य समाज कोई मजहब या मत नहीं। आर्य समाज अपने आप में एक महान् समन्वयात्मक रूप है धर्म, संस्कृति और ज्ञान का। सुयोग्य विद्वान् लेखक ने आर्य समाज को जिस समस्या की ओर सभी का ध्यान आकृष्ट किया है वह अत्यन्त गम्भीर है और उस पर आज की परिस्थितियों में अवश्य विचार किया जाना चाहिए।

इससे पूर्व कि इस विषय में विशेष लिखा जाए संक्षेपतः आर्य समाज का वास्तविक रूप अवश्य समझ लिया जाना चाहिए।

"—आर्य समाज एक धार्मिक संस्था है—"। यदि इस स्थापना में धर्म का अर्थ 'मजहब' समझा जाए, तो यह किसी भी विद्वान विचारशील व्यक्ति द्वारा स्वीकृत नहीं हो सकता। स्मार्त तथा दार्शनिक साहित्य में शब्द विस्तृत अर्थ रखता है। अभ्युदय और निःश्रेयस का साधन, नियम तथा कानून सामाजिक तथा वैयक्तिक—ये सब भी धर्म का अंग बन जाते हैं। भारतीय सभ्यता तथा संस्कृति

के इतिहास में 'राजधर्म' शब्द के धार्मिक रूप में सम्पूर्ण राजनीति तत्वों के आचरण रूप का समावेश हो जाता है।

आर्य समाज का आन्दोलन या प्रगति 'सत्यार्थ प्रकाश–आन्दोलन' रूप में समझा जा सकता है। सत्यार्थ प्रकाश आर्य सामाजिक प्रगतियों की इसी तरह की पुस्तक है जिस तरह से कम्युनिस्टों की 'पूंजी' जिसका प्रथम नेतृत्व मुख्य रूप में कार्ल मार्क्स द्वारा है। जिस तरह से 'मेरा युद्ध' पुस्तक नाजी लोगों के लिए थी और हिटलर का नेतृत्व प्राप्त था। ठीक उसी तरह भारत में सत्यार्थ प्रकाश और ऋषि दयानन्द का नेतृत्व आर्य समाज या आर्य समाजी तत्वों को प्राप्त होता है।

आर्य समाज और वैदिक धर्म ये दोनों वस्तुएं एक नहीं हैं। दोनों में पोषक और पोष्य सम्बन्ध हैं। आर्य समाजी व्यक्ति वैदिक धर्म के पोषक रूप में विशेषतः भारतीयों और साधारणतः अन्य देशस्थ लोगों के 'सांझे बुजुर्गों: के धर्म' का प्रचार वा पोषण करते हुए वेद द्वारा एक सांस्कृतिक जीवन-अक्षुण्ण रूप से प्रवाहित की आधारशिला रूप जीवन तत्व को रखते है। धर्म और संस्कृति का सीधा सम्बन्ध है। वास्तविक राष्ट्रीयता सांस्कृतिक तत्वों पर ही आश्रित हुआ करती है। इसी से आर्य समाज में वेद की प्रधानता रखी गई है।

आर्य समाज कोई मजहब या मत नहीं यह तो स्पष्ट रूप से ऋषि के शब्दों में सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका द्वारा प्रमाणित है। हमारी दृष्टि में आर्य समाज का अर्थ ही आर्य राष्ट्र है। अंग्रेजी अनुवाद करते हुए हम आर्यन स्टेट के अर्थों में इसे समझ सकते हैं। इस आर्य राष्ट्र के आधारभूत विधान के रूप में आर्य समाज के दस नियमों के महान् तत्व है।

वेद और आर्यत्व का इतिहास अपने साथ प्रागैतिहासिक काल से अब तक संसार की एक अक्षुण्ण सभ्यता, संस्कृति, ज्ञान और विज्ञान की धारा को प्रवाहित करता आ रहा हैं। इसके साथ शौर्य, औदार्य और परोपकार की भावनाएं भी मिली हैं। इसी में वेद और आर्यत्व की उच्चता स्पष्ट हो जाती है। भारतीय सब भाषाओं तथा धर्मों की आत्मा आर्य रूप में अधिक विकसित हुई है, इसे कोई इन्कार नहीं कर सकता।

दस नियमों के विश्लेषण में जहां वैदिक आर्य सिद्धान्तों का रूप सूत्ररूप में सन्निहित है वहां बौद्ध धर्म के दस नैतिक नियमों, मूसा की दस आज्ञाओं, ईसा के दस उपदेशों और दस गुरुओं की वाणियों का संक्षिप्त समन्वय भी आसानी से देखा जा सकता है।

क्रियात्मक अध्यात्मतत्वों के आधार पर नैतिक जीवन के लिए ईश्वरीय रूप

का परम आदर्श मानव जीवन में अवतरित करने के लिए आस्तिक वाद को आर्य राष्ट्रीयता में महान् स्थान देना आवश्यक है। इसी से आर्य समाज के दश नियमों में सच्चिदानन्द प्रभु को लक्षित किया गया है।

सत्यासत्य को समझना और सत्य के ग्रहण करने में उद्यत रहने से पक्षपात रहित राष्ट्र की उत्पत्ति करना है।

सबकी उन्नति में अपनी उन्नति को समझना आर्य राष्ट्र में साम्यवाद का प्रेरक मन्त्र है।

सर्वहितकारी सामाजिक नियमों के प्रतिबन्धों के साथ मनुष्य की वैयक्तिक उन्नति में स्वच्छन्दता को हटाकर सर्वहितानुकूल स्वतन्त्रता की स्थापना स्पष्ट है।

प्रेमपूर्वक यथायोग्य व्यवहार राष्ट्र में पारस्परिक प्रतिष्ठा का परिचायक है और बलात्कार के सिद्धान्तों के प्रतिकूल है।

इत्यादि रूप में यदि दश नियमों की महान् व्याख्या को करें, तो आर्य समाज या आर्य राष्ट्र का वास्तविक रूप स्वयंमेव स्पष्ट होने लग जाता है।

जब हम आर्य समाज की उपर्युक्त राष्ट्रीय रूपरेखा को देखते हैं तो इसके विभिन्न विभाग भी देखने पड़ेंगे। ऐसे समय स्पष्ट रूप से सत्यार्थ प्रकाश का राज धर्म का शिक्षक ६ठा समुल्लास हमारे सामने आ खड़ा होता है और हमें राष्ट्र के तीन विभागों का रूप देता है। विद्या, धर्म और राज। दूसरे शब्दों में शिक्षा, कानून और शासन। ये ही आर्य राष्ट्र के तीन मुख्य विभाग हो सकते हैं। धर्म या कानून शब्दों को विस्तृत अर्थों में समझना चाहिए जैसे कि प्राचीन मर्यादाओं के अनुसार इसकी विशेष व्याख्या स्मृति ग्रन्थों में पाई जाती है। इस तरह से विद्यार्य-सभा, धर्मार्यसभा, और राजार्यसभा इस त्रित्व के समुच्चय से नियन्त्रित राष्ट्र आर्य समाज या आर्य राष्ट्र बनता है। वर्तमान समय के आर्य समाज महान् आर्य राष्ट्र की उत्पत्ति के लिए बीज रूप में समझे जाने चाहिए अथवा उस राष्ट्र के राज-स्थान (थाने) या राष्ट्र स्थान समझे जाने चाहिए जहां त्रित्वरूप का समन्वय हो।

ऋषि ने अपने ग्रन्थों में कहीं भी आर्य समाज के मजहबी भव्य मन्दिरों के निर्माण के निर्देश नहीं दिए हैं क्योंकि इससे आर्य समाज का राष्ट्रीय रूप छूट कर मजहबी रूप हो जाता। कुछ व्यक्तियों की इस तरफ विशेष रूप से प्रवृत्ति किसी भी अवस्था में आर्य सामाजिक नहीं कही कहा जा सकती। मन्दिरों और मस्जिदों आदि से तो पहले ही भारत भूमि कबरों की तरह भरी पड़ी है। उनमें ढाई ईंट की अपनी मस्जिद या मन्दिर बनाने का कोई भी नक्शा ऋषि सम्मत नहीं हो सकता। इसे आर्य नेताओं को ध्यान में रखना चाहिए।

जब हमारे स्थानिक आर्य समाज (राष्ट्र स्थान) गुरुकुलों, स्कूलों, पाठशालाओं, कालिजों आदि शिक्षा संस्थाओं को चलाते हैं तो आर्य राष्ट्र (आर्य समाज) की विद्यार्य सभा के कार्यों को करते हैं। इन शिक्षणालयों की इमारतें ही हमारे विद्या मन्दिर हैं। धर्मार्य सभा के कार्यों में हमारा वैदिक धर्म प्रचार एक छोटा सा अंगमात्र है। ऋषि ने धर्म की स्थान-२ पर व्याख्या करते हुए पक्षपात विरहित न्याय के अनुकूल आचरण करना भी की है। इस व्याख्या द्वारा आर्य राष्ट्र में ऋषि सम्पूर्ण न्यायालयों को धर्म सभा के अन्तर्गत करने का निर्देश देते दिखाई पड़ते हैं। नैतिक तथा सामाजिक धर्मों या कानूनों का प्रचार करना भी उतना ही आवश्यक है जितना इन कानूनों को तोड़ने वाले को दण्ड देना। वर्तमान केवल मात्र दण्ड प्रधान न्याय विभाग भारतीय आर्य संस्कृति की शिक्षाओं के अनुकूल नहीं कहे जा सकते। धर्म या कानून का व प्रचार भी इन्हीं के आधीन होना चाहिए। गलत राजनीति को स्थायी रखने के लिए अस्थायी शासन को सम्पुष्ट करने के लिए प्रचार विभाग राजसभा के आधीन न होकर धर्मार्यसभा का अंग होना चाहिए। जिससे सत्य ज्ञान का प्रचार हो सके तथा वह प्रचार पक्षपात रहित हो सके। इस तरह से वेद प्रचार (ज्ञान प्रचार) तथा न्याय विभाग आदि के कार्य धर्मार्य सभा के अन्तर्गत हो जाते हैं। इन्हीं के कार्यों के भव्य भवन आर्य समाज या आर्य राष्ट्र के धर्म मन्दिर कहलाने के पात्र हैं। मस्जिदों, गिरजों या हिन्दू मन्दिरों की जोड़ तोड़ कर नक्ल करते हुए नए मन्दिरों को खड़ा करना कोई बुद्धिमत्ता नहीं। पहले के बने बनाए मन्दिरों आदि को शुद्ध करना भी उतना ही आवश्यक है जितना कि विजातीय संस्कृति से दूषित व्यक्तियों को उन्नत करने के लिए या सजातीय संस्कृति द्वारा दृढ़ संगठन के लिए शुद्धि आन्दोलन को जन्म देना।

आर्य समाज अपने आप में एक महान् समन्वयात्मक रूप है धर्म, संस्कृति और ज्ञान की दृष्टि से आर्य समाज के इस समन्वयात्मक रूप को कभी भुलाया नहीं जाना चाहिए। पूर्व और पाश्चात्य संस्कृति, सैमेटिक तथा भारतीय आर्य मतमतान्तर (हिन्दुत्व) इन की पारस्परिक क्रिया और प्रतिक्रिया या संघर्ष के अन्दर पैदा हुई ज्वाला के रूप में ही आर्य समाज की विद्युत शक्ति का रूप है।

इस तरह से हमारे विद्या मन्दिरों और धर्म मन्दिरों का रूप है। सभा और समिति रूप से नियन्त्रित शासन संस्था 'राजार्य सभा' बनती है जिसके भवन हमारे राजमन्दिर कहला सकते हैं। इस तरह से हम धर्म राज्य की स्थापना करते हुए आर्य समाज को आर्य राष्ट्र रूप में धार्मिक संस्था कह सकते हैं।

पाश्चात्य देशों की नकल करते हुए राजनीति और संस्कृति की अजीब तरीके की जुदायगी—कुछ अदूरदर्शी पाश्चात्य रूप से शिक्षित भारतीय नेताओं की ही सूझ है जो प्रतिदिन नयी-नयी समस्याओं को ला खड़ा करती है। संस्कृति के आधार पर शासन संस्थाएं चलती हैं। जब तक सांस्कृतिक समन्वय न होगा भारत में शान्तिपूर्ण शासन असम्भव है। आर्य समाज समन्वयात्मक संस्कृति का प्रतीक है।

जब हम इस तरह से आर्य समाज या आर्य राष्ट्र का रूप समझ लेते हैं, तो जिस तरह से हम सामूहिक रूप से विद्या मन्दिरों या विद्यार्य सभा के कार्य को लेते हैं, और जिस तरह से हम बहुत संक्षिप्त एकांगी रूप में धर्म मन्दिरों या धर्मार्य सभा के कार्यों को सामूहिक रूप से करते हैं तो क्यों नहीं राजार्य सभा के कार्य को सामूहिक रूप से किया जाए।

वेद राजनीति के मन्त्रों से भरे पड़े हैं। स्थान स्थान पर राष्ट्रीय चिन्तन किए गए हैं। ब्राह्मण ग्रन्थों का 'शतपथ' द्वारा "अश्वमेध या राष्ट्रमेध" यज्ञ परम लक्ष्य हैं। रामायण तथा महाभारत के ग्रन्थ और इनके नायक राम और कृष्ण भारतीय धार्मिक साहित्य में राजनीति के प्रतीक हैं। स्मृति ग्रन्थों के अध्यायों पर अध्याय राजनीति के लिए अर्पित हैं। राजनैतिक ग्रन्थों में शुक्रनीति, विदुर नीति, महाभारत शांति पर्व, कौटिल्य अर्थशास्त्र आदि की दुहाई सत्यार्थ प्रकाश अपने छठे समुल्लास में दे रहा है, भारत के कवि कालीदास रघुदिग्विजय के बहाने से दिग्विजय का सन्देश अपनी मधुर कविता से देते हैं। शिशुपाल वध का द्वितीय सर्ग और मुद्रा राक्षस जैसे नाटक भारतीय साहित्य में राजनीति के गूढ़ तत्वों को मधुरता से समझाते हैं। धर्म और राजनीति, साहित्य और राजनीति आदि सब मिले पड़े हैं। इतने सब पर भी सैमेटिक तरीकों पर "विश्वासात्मक मजहबों" को ही जानने वाले भारतीय 'आचरणात्मक आर्य धर्म' की आत्माको न पहिचानते हुए कई अदूरदर्शी आर्य नेताओं का यह कहना है कि आर्य समाज का सामूहिक दृष्टि से राजनीति से कोई सम्बन्ध नहीं है अयथार्थ नहीं तो क्या है ?

पञ्चम आर्य महा सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष जी के भाषण में आर्य समाजी व्यक्ति को एक मजहबी व्यक्ति के रूप में दूसरे मजहबी व्यक्तियों की श्रेणी में बिठा दिया गया था अर्थात् सनातनी, समाजी, जैनी, बौद्ध, सिक्ख आदि। परन्तु यह श्रेणी गलत है। आर्य समाज वर्तमान दुनिया में अपनी विचारधारा के अनुसार उपर्युक्त श्रेणी में न होकर कम्यूनिस्ट, साम्यवादी, नाजी, फासिस्ट, साम्राज्यवादी आदि की श्रेणी में बिठाने योग्य है।

आर्य समाज आर्य राष्ट्र की स्थापना करने वाला है जिसमें उसकी विचारधारा के अनुसार आर्य विचारों के साथ-साथ आर्य भाषा, आर्य संस्कृति. और आर्य धर्म (वैदिक धर्म) की स्थापना हो और जिसके द्वारा सर्व प्रथम भारत आर्य राष्ट्र रूप में विकसित हो और फिर वही चक्रवर्ती रूप (आर्य आवर्त रूप) संसार में धर्म साम्राज्य को उत्पन्न करे जिसका आधार महान् नैतिक नियम हों——अथर्व वेद के पृथिवी सूक्त के प्रथम मन्त्र "सत्यं बृहद्तमुग्रं दीक्षा तपो ब्रह्म यज्ञः पृथिवीं धारयन्ति (धारणाद्धर्म इत्याहुः) का निर्देश भी इधर ही है, इस साम्राज्य की छाया भूतकाल में अशोक के धर्म राज्य से कल्पित की जा सकती है।

कम्यूनिस्ट के राष्ट्र की आधार शिला "अर्थ है।" नाजी व्यक्ति के राष्ट्र की आधारशिला केवलमात्र पारिवारिक उन्नति है परन्तु आर्य समाजी के आर्य राष्ट्र की आधारशिला सार्वभौमिक होते हुए नैतिक जीवन के आचरण के आधार पर याधर्म पर आश्रित होती है। इसकी राष्ट्रीयता वही हो सकती हैं जो अन्त-र्राष्ट्रीयता के सिद्धान्तों से पूर्णतः संगत हो। कम्यूनिस्ट तथा नाजी विचारधारा बलात्कार प्रधान है और वैयक्तिक स्वतन्त्रता को पूर्णतः दबा दिया जाना प्रतीत होता है जबकि आर्य राष्ट्र में वैयक्तिक स्वतन्त्रता आश्रम तथा वर्ण व्यवस्था द्वारा नियमित करते हुए तदनुकूल पर्याप्त स्वतन्त्रता प्रदान की जाती है।

आर्य समाजी मातृभूमि का पुत्र न होकर "भूमि माता या गोमाता" का पुत्र या अमृतपुत्र होता है। उसका नारा है "माता भूमिः पुत्रोऽहं पृथिव्याः।" यह है उसका अन्तर्राष्ट्रीय रूप। पुनर्जन्म के सिद्धान्त को मानकर आज वह भारत भूमि में अपने कार्यों से पैदा हुआ है अगले जन्म में शायद अरब में पैदा हो जाय या अमेरिका में। अतः केवल मात्र दैशिक पवित्रता को न मानकर सम्पूर्ण भूमि को पवित्र मानना, सब देशों को पवित्र बनाना, मानव सिद्धान्तों के विश्व बन्धुत्व सिद्धान्त का प्रचार करना लक्ष्य बन जाता हैं। यह चक्रवर्ती रूप है जो सांस्कृतिक राष्ट्रीयता से पैदा हो सकता है।

नास्तिकवाद प्रधान अर्थ व्यवस्था संघटित कम्युनिस्ट भी संसार में फैलना चाहता है। इस की प्रतिक्रिया अशुद्ध रूप में तथा सीमित रूप में जर्मनी में आर्य विचारों द्वारा प्रकट हुई। यह उसी तरह से पछाड़ दी गई जिस तरह से मुगलिया शक्ति द्वारा राजपूती स्वतन्त्रता कुचल दी गई थी। परन्तु भविष्य में फैलते हुए बलात्कार प्रधान सैमेटिक मजहबी विचारधाराओं की तरह ही कम्युनिस्ट विचार-धारा भारतीय महान् आर्य विचारधारा से टकरा जाएगी इस तथ्य की अनुभूति

भी बहुत से विचारकों को होती है परन्तु यह भविष्य के गर्भ में छिपा हुआ है, कौन जानता है कब क्या होगा।

जब हम उपर्युक्त रूप में आर्य समाज को देखते हैं तो हमें कहना होगा कि जब आर्यसमाज अपने शैशव काल में हो, नीति इस बात की मांग करती थी कि ऐसी कीमती वस्तु को समस्त उचित उपायों से रक्षित किया जाए। आपेक्षिक नैतिक आधार से हमारे नेता शायद कहते रहे हों कि हमारा राजनीति से सम्बन्ध नहीं है। जिस तरह से वट वृक्ष के पौदे को चारों तरफ से बाड़ लगाकर रक्षित किया जाता है उसी तरह से आर्य राष्ट्र के पौदे को मस्त राजशक्ति से रक्षित किया गया हो। परन्तु अब आर्यसमाज शैशवकाल से आगे बढ़ गया है यदि संसार में नहीं तो भारत में अवश्य अतः इस की बाड़ को हटाकर इसे अपनी जड़ों पर आप खड़े होने देना चाहिए। इस से इस में अधिक मजबूती आ जाएगी। इसके वास्तविक रूप का प्रचार भी आवश्यक है।

अगर उपर्युक्त विचारधारा से हम सोचें तो डन्के की चोट से कहा जा सकता है कि आर्य समाज का सामूहिक रूप से राजनीति से सम्बन्ध है। विद्या और धर्म के कार्यों की हम आर्यराष्ट्र के लिए भूमिका लिख चुके हैं परन्तु राजकार्यों की भूमिका नहीं लिखी गई। आर्य समाजों (आर्य राष्ट्र के राष्ट्र स्थान या थाने) के वर्तमान स्वरूप से स्वरूप से स्वतन्त्र एक राजार्य सभा को बहिरंग रूप में खड़ा कर देने से काम न चल सकेगा। इसे अन्तरंग बनाना आवश्यक और यथार्थ हैं।

जब सत्यार्थ प्रकाश द्वारा महर्षि दयानन्द का नेतृत्व हमें प्राप्त हो तो दूसरे सामयिक नेताओं की सामयिक विचारधाराओं के पीछे भागना बुद्धि संगत नहीं। क्योंकि आर्य नेताओं ने आर्य समाजियों को सामूहिक दृष्टि से अभी तक राजनीति से दूर रखा है इसी लिए अन्य राजनैतिक दलों के अन्दर उनका मान्य ग्रन्थ और स्वयं आर्यसमाज एक खिलोना बना हुआ है। जो चाहता है जिस तरह से आर्यसमाज की शक्ति को अपने लिए प्राप्त कर लेता है। कोई तो आर्यसमाज को हिन्दू सभा ही बना देता है, कोई कांग्रेसी और कोई राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघी, कोई यह नहीं देखता कि आर्यसमाज अपने आप में भी एक पूर्ण राष्ट्रीयता का रूप है। अन्य सब तथाकथित राष्ट्रीय संस्थाओं के सब कार्यक्रम इसी आर्य समाजिक पूर्ण राष्ट्रीय विचारधारा के अंग और उपांग रूप में फैल रहे है।

आर्य समाज सांस्कृतिक विचारों के साथ चलता है। कोई भी दुनिया की राज्यशक्ति इतिहास में सांस्कृतिक परम्पराओं के बिना नहीं बढ़ती। स्वतन्त्र भारत में राष्ट्र के कर्णधारों को या तो आर्य परम्पराओं से नाता जोड़ना होगा

या किसी मध्यतरी धर्म" को पैदा करना पड़ेगा हिन्दुस्तानी भाषा या अकबरी धर्म सामयिक तो हो सकता है परन्तु चिरस्थायी नहीं हो सकता। मिश्रण आगे नहीं चलता परन्तु समन्वयात्मक रूप रासायनिक तत्वों की तरह नवपदार्थ रूप में नव गुणों को पैदा करता है और यही जीवनतत्व आर्य समाज में है जैसे कि ऊपर लेख में लक्षित भी किया है यह "अध्यतरी मिश्रण" नहीं। इसी लिए हमारा कहना है कि आर्य समाज के वास्तविक रूप का प्रचार करना चाहिए। यह कोई मजहब नही परन्तु आर्य राष्ट्र रूप में आंदोलन है। केवलमात्र वैदिक अध्यात्मवाद के कोरे व्याख्यानों से आर्य समाज को ब्रह्म समाज बनाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए।

ब्रह्म और क्षत्र या विद्या धर्म और राजनीति (शासन रूप में) दोनों मिला कर यजुर्वेदीय राष्ट्रगान गाते हुए भारत में आर्य राष्ट्र की उत्पत्ति के लिए "पुण्य भूमि" (हिन्दू महासभाई) नहीं परन्तु "पुण्य लोक" पैदा करना चाहिए और वैदिक सन्देश को ध्यान में रखना चाहिए।

यत्र ब्रह्मचक्षत्रं च सम्यञ्चौ चरतः सह।
तं लोकं पुण्यं प्रज्ञेषं यत्र देवाः सहाग्निना॥ (यजु०)

भारतीय संस्कृति का प्रतीक

आर्य समाज

आर्य समाज भारतीय संस्कृति का प्रतीक है। स्वामी दयानन्द को लोग साम्प्रदायिक कहते हैं परन्तु मैं इस से सहमत नहीं। मेरे विचार में वे महान् थे। उनका धर्म विस्तृत था मैं उनको राजनीतिक पुरुष भी मानता हूं। उन की पुस्तक सत्यार्थ प्रकाश को पढ़ना अपराध समझा जाता था इस विषय में मुझे हाई कोर्ट में पैरवी भी करनी पड़ी। आर्य समाज का सदस्य स्वभावतया राजनीति नहीं भूल सकता। प्रारम्भ में आर्य समाज की सच्चरित्रता और नैतिकता के कारण ही सरकारी नोकर प्रभावित होते थे। आर्य समाज ने शिक्षा, अछूतोद्धार स्त्री समाज का उत्थान इत्यादि सुधारवादी सफल आन्दोलन किए। अब देश स्वतन्त्र है। जो संस्थाएं आज राजनीति में भाग ले रही हैं वे पद लोलुप है और आर्य समाज उनका सुधार कर सकती है। पद लोलुप लोग राजनीति में सुधार नहीं कर सकते। शुद्धि आर्य समाज का परमधर्म है। आज कांग्रेस में भ्रष्टाचार है आर्य समाज उसे शुद्ध करे।

(श्रीयुत पुरुषोत्तम दास टण्डन)

आर्य समाज क्या है ?

ले. डा. सूर्यदेव शर्मा शास्त्री, साहित्यालंकार
एम. ए. डी. लिट्, अजमेर)

आर्य समाज ! अहो यह क्या है ? क्या कोई आन्दोलन है ?
अथवा सामाजिक सागर का विस्तृत विन्ध्य विलोड़न है ?
अथवा वैदिक वाङ्मय का गवेषणामय दोहन है ?
श्रुति संगीतमयी सरगम का आरोहण अवरोहण है ?

मान्य मनीषी मस्तिष्कों का उत्तम ऊहापोहन है ?
अथवा श्रुति प्रिय वंशीवाला विश्व विमोहन मोहन है ?
कुटिल क्रूर कट्टर कुरीतियों का कटु कंटक शोधन है ?
मतमतान्तरो के मन्तव्यों का निष्पक्षालोचन है ?

यह प्रचलित अग्नि ज्वाला है। पापपुंज जहां जलते है ।
अशुभ अनय अत्याचारों के हिमगढ़ घोर पिघलते हैं ।।
जिसमें पड़कर असत् असित आगम के गोले गलते हैं ?
स्वच्छ सुवर्ण रूप होकर के, सद् सिद्धान्त निकलते है ।।

वा प्रचंड मार्तण्डअंड है, खंड-खंड तम करने को ।
अनय, अविद्या अनाचार की निशा तमिस्रा हरने को ?
अथवा यह मानव हिमगिरि में,सुन्दर मान सरोवर है ?
ब्रह्म ज्ञान सिन्धू का जिसमें आदि स्रोत अति सुखकर है ?

अहा ! चमत्कृत बाल-चन्द्र है, दिव्य छटा छिटकाने को ।
जगज्जनों के मन-कुमुदों को मुद से मुदित बनाने को ।।
तपते जगतीतल पर शीतल शीत सुधा बरसाने को ।
नवजीवन की भव्य ज्योत्स्ना से सुषमा सरसाने को ।।

क्या है आर्य समाज ? आज तक नहीं समझ में आता है ?
पाप पुंज का प्रलयंकर वा सत्यसृष्टि-निर्माता है ?
क्या कोई स्वर्गीय दूत वह नव सन्देश सुनाता है ?
वेद धर्म का रक्षक प्यारा, आर्य जाति का भरता है ।।

अमर रहे यह आर्य सभ्यता, अमर वेद-संदेश रहे ।
आर्य जाति की रक्षा का यह अमर उच्च उद्देश रहे ।।
दयानन्द-"सत्यार्थ ज्योति का अमर दिव्य उपदेश रहे ।
आर्य जनों के जीवन में वेदों का अमरआदेश रहे ।।

"कृण्वन्तो विश्वम् आर्यम्"का उच्च अमित आदर्श रहे ।
आर्य जाति प्राचीन जगद्गुरु, प्यारा भारत वर्ष रहे ।।
हो दीप्त 'सूर्य' सम जगती में, मानव का मणिमय तरज रहे ।
जिससे सारा संसार एक स्वर में "जय आर्य समाज कहे ।।

आर्य समाज़ की स्थापना क्यों

आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि दयानन्द ने जगत् के तीनमहारोगों को दृष्टि में रख कर आर्य समाज की स्थापना की थी, अतः आर्य समाज के मूल्य को आंकने के लिए इन तीन रोगों की प्रकृति तथा निदान को दृष्टि में रखना होगा।

पहला महारोग है नास्तिकता या अनीश्वरवाद ! यजुर्वेद में लिखा है।—

यस्तु सर्वाणि भूतानि आत्मन्येवानुपश्यति। सर्वभूतेषु चात्मानं ततो न विचिकित्सति ॥ (यजु० १६०।-)

जो सब भूतों को एक आत्मा में और सब भूतों में एक आत्मा को ओत-प्रोत जानता है वह कभी शंकारूपी क्लेश को प्राप्त नहीं होता।

अनीश्वरवादी ईश्वर की सत्ता को अस्वीकार कर के जगत की एकता को उपेक्षा की दृष्टि से देखने लगता है। उसे एक वस्तु और दूसरी वस्तु के बीच का सम्बन्ध दृष्टिगोचर नहीं होता। उसके लिए संसार की जितनी चीजें हैं वे सब अलग अलग हैं।

आर्यसमाज के दार्शनिक विद्वान् श्री पं. गंगा प्रसाद जी उपाध्याय एम. ए. का एक उद्बोधक लेख

बन्ध ही बन्धुत्व है। उसी के आश्रित जगत के समस्त व्यापार हैं। धर्म, कर्त्तव्य, आचार, यह सब बन्धुत्व के आश्रित हैं। यदि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से एक प्राणी दूसरे प्राणी से एक वस्तु दूसरी वस्तु से सर्वथा असम्बद्ध है। तो उन में परस्परता नहीं। जो उन को आपस में बांध सके। इस से मानव जीवन के सभी भाग निरर्थक और प्रयोजन शून्य हो जाते हैं। अथर्ववेद में एक मन्त्र है :—

यो विद्यात् सूत्रं विततं, यस्मिन्नोताः प्रजाइमाः। सूत्रं सूत्रस्य यो विद्यात सविद्यात् ब्राह्मण महत् ॥ (अथर्व० १०-८-३७)

जो उस महान् सूत्र को जानता है जिस में यह प्रजाएं ओत प्रोत हैं और जो इस सूत्र के सूत्र को जानता है वही बड़े ब्रह्म का ज्ञान रखता है।

प्रजा का अर्थ है 'प्रकर्षेण जायते इति प्रजा' जो भली भांति अपने को प्रकट कर सके वह प्रजा है। संसार में अनन्त प्रजायें या संस्थान है, हर संस्थान में

अनन्त अंग या अवयव हैं, जो परस्पर एक दूसरे के साथ सम्बद्ध या बंधे हुए हैं। मेरा शरीर एक प्रजा या संस्थान है, हाथ पैर सिर, पेट आदि अलग-अलग अवयव है। कान, नाक, आंख, त्वचा आदि भी अलग अलग अवयव हैं परन्तु यह सब पृथक होते हुए भी बन्धे हैं—सर्वथा पृथक नहीं हैं। जिस अंगी में यह अंग मिले हैं वह एक है जिसको शरीर कहते हैं। फिर यह अवयव केवल अंग ही नहीं, स्वयं अंगी भी हैं। एक नाक एक नहीं है यह प्रजा या संस्थान है। इस में अनेक अंग या अवयव हैं, यह अंग अणुओं का एक समुच्चय है। यह अणु असम्बद्ध नहीं है, माला के मणियों के समान पिरोये हुए हैं। इसीलिए यह अंगी भी हैं और अंग भी। फिर यदि अति सूक्ष्म दृष्टि डालिये, तो एक-एक कण एक-एक संसार है, असीम संसार। यह सब संस्थान हैं। इसी प्रकार स्थूल दृष्टि से एक सौर्य्य संस्थान या सौर्य्य लोक हैं, जिसमें अनेक पृथिवी आदि लोक बन्धे हुए हैं। यह लोक असम्बद्ध नहीं हैं, कोई ऐसी महान् शक्ति है। जो इन सूक्ष्म से सूक्ष्म और स्थूल से स्थूल प्रजाओं (संस्थाओं) को आपस में बांधे हुए है। इसी महान् शक्ति को वेद में 'सूत्र' कहकर पुकारा है। यह सब कुछ जो कहीं था, कभी था. कहीं है और कहीं था, कहीं होगा उन सबको बांधे हुए हैं। भूत, वर्तमान और भविष्य परस्पर बंधे हैं। खुले नहीं हैं! ब्रह्मवित् अर्थात् ईश्वर का पहचानने वाला वही है जो इस सूत्र को समझता है।

वेद ने इस सूत्र को ब्रह्म कहा है, जो इस सूत्र को नहीं जानता या नहीं मानता उसके लिए संसार हो या देश, जाति हो या परिवार। मनुष्य हों या प्राणि जगत सब बिखरे हुए है और असम्बद्ध मणि हैं। उसके लिए धर्म का बन्धन कोई बन्धन नहीं और अधर्म या बन्धन शून्यता से कोई प्रेरणा नहीं मिल सकती। इसीलिए आर्य समाज के पहले दो नियमों में इसी ब्रह्म रूपी सूत्र की विवेचना की गई है।

दूसरा महारोग है वेदों के यथार्थ प्रचार का अभाव

जगत् में ईश्वरवादी सम्प्रदाय तो अनेक हैं परन्तु उनमें वह एकत्व की भावना नहीं। कुछ लोग तो अनेक देवता या अनेक ईश्वरों को मानते हैं। उन्होंने एक सत्ता के अनेक काल्पनिक भाग कर रखे हैं। मूर्ति पूजा, अवतारवाद वस्तुतए एक सूत्रवाद नहीं है। इसी से मत मतान्तरों का आधिक्य है।

कहने को तो सभी मानते हैं कि ईश्वर एक है, परन्तु साथ ही हर युग और हर देश के नियम, अलग, धर्म ग्रन्थ अलग और पैगम्बर अलग। यहां अनेक पैगम्बर और अनेक धर्म ग्रन्थ हों और उनमें नित्य नए संघर्षों की सम्भावना हो,

वहां मानव जाति में कोई सम्मिलित नहीं हो सकता। हर बात पर झगड़े होंगे, इस महारोग का इलाज है—वेद। वैदिक धर्म का मूल सिद्धान्त यह है कि जिस सूत्र का हमने ऊपर उल्लेख किया है अर्थात् ब्रह्म—वह नित्य है ऋत है। वेद में जो कुछ है वह उसी एक नियम का विस्तार रूप हैं पृथकत्व कुछ नहीं।

आर्य समाज से पहले वेदों के ग्रन्थ भी थे और उन के मानने वाले भी। परन्तु उनके विषय में यह भावनायें न थीं, उनको जाति विशेष देश विशेष और युग विशेष का धर्म समझा जाता था। उनका पठन-पाठन कुछ परिवारों का ही कर्त्तव्य समझ लिया गया था। आर्य समाज कहता है कि वेद ही मूल धर्मग्रन्थ है, अन्य सबको शाखायें समझिये। वह मूल तक पहुंचने में सहायक हो सकते हैं, परन्तु मूल के स्थानापन्न नहीं हो सकते। ऋषि, मुनि, विशेषज्ञ, महात्मा, उपदेशक, कवि यह सब उन्हीं मौलिक नियमों की व्याख्या कर सकते हैं अर्थात् अब नियमों को जनता की भाषा द्वारा जनता तक पहुंचा सकते हैं परन्तु वह वेदों का स्थान नहीं ले सकते। युग युगान्तर और देश देशांनर के लिए वह पर्याप्त है। इस सिद्धांत के मानने से पैगम्बरों, धर्माध्यक्षों तथा धर्म के नाम पर वंचना करने वालों में घुड़ दौड़ की सम्भावना नहीं रह सकती। आर्य समाज के प्रचार से कोई जनता को यह धोखा नहीं दे सकता कि मुझे ईश्वर ने अपना दूत करके भेजा है। मैं जो कहता हूं वहीं ठीक है। मेरे ही पीछे चलो। इस प्रकार की भावनाओं ने सैंकड़ों नबी, पैगम्बर, देवदूत और स्वर्गीय स देश के वाहक उत्पन्न कर दिये। आशा तो यह की गई थी कि इन के द्वारा सर्वसाधारण में उच्चस्तर के सदाचार का प्रचार होगा और लोगों के मौलिक जीवन में दिव्यता का संचार होगा और कुछ थोड़ा सा हुआ भी परन्तु उस के साथ-साथ संकुचितता, वैरभाव, दलबन्दी और अमानुषता का भी अधिक प्रचार हुआ एक धर्म के अनुयायी ही आपस में लड़ते भिड़ते और जगत की शांति को भंग करते रहे जो अत्याचार नास्तिकों ने ईश्वर-विश्वास के अभाव में किये उन से अधिक ईश्वर के नाम पर किए गए। जो अधर्म-अन्धकार में न किए जा सके वह धर्म की रोशनी में किए गए। इन का एक मात्र इलाज है वेदों का यथार्थ प्रचार,

तीसरा महारोग है जन्माभिमान

यद्यपि सभी प्राणियों की उत्पत्ति का लगभग एक सा ही नियम है और मनुष्य की उच्चता की पहचान उसके गुण हैं। परन्तु गुणों की उपेक्षा करके अन्य

बातों पर बल दिया जाता है। इससे अशांति बढ़ती है मैं ब्राह्मण का बेटा हूं तू चमार या भंगी का है। मेरा रंग गोरा है तेरा काला है: मैं यूरोप में उत्पन्न हुआ हूं तू हबश में, मैं काशीवासी हूं तू मंगले में रहता है। यह अभिमान व्यक्तियों, परिवारों, जातियों तथा देशों में इस प्राबल्य के साथ काम कर रहा है कि पृथ्वी माता की गोद रणस्थली बन गई है। आर्य समाज के शेष सात नियमों में इसी बात का प्रचार किया गया है कि संसार भर का उपकार करना चाहिए। न केवल सभी मनुष्यों अपितु सभी प्राणियों के हित को विचार कर आचरण करना चाहिए। जाति पक्षपात, देश पक्षपात, परिवार पक्षपात, मत पक्षपात, दल पक्षपात नहीं करना चाहिए!'

आर्य समाज के संस्थापक ने आर्यसमाज रूपी चिकित्सालय इन्हीं तीन महारोगों की चिकित्सा के लिए खोला था। यदि हम इन रोगों को दूरकर सकें तो आर्यसमाज की उपयोगिता है' हमारे उपदेशक-प्रचारक, नेता तथा कार्यकर्त्ता इस चिकित्सालय के डाक्टर हैं। इनको सावधान रहना है कि हमारे द्वारा यह रोग बढ़ तो नहीं रहे।

पुजारी से

उत्तमचन्द (शरर एम. ए.)

रे रे मन्दिर के पुजारी! शङ्कर आराधक
जीवन से मुख मोड़ कहां बैठे हो साधक?
खोज रहे हो किस को इस तम के प्रसार में?
क्या दिखाई देता है तुम को अन्धकार में!
रे साधक! क्या साध लिए तू रुका यहां है?

तेरा प्रियतम आंख खोल कर देख, कहां है?
किस के सम्मुख, झुका सीस, कर जोड़ रहा है।
शंकर तो वह पथ पर कंकर तोड़ रहा है।
बैठा है जिस के वियोग में आहें भरता।
चला रहा है हल वह जग का पालन कर्त्ता

धवल दुग्ध सम वस्त्रों से यह किस का पूजन?
अरे पुजारी, धूप दीप से किस का अर्चन?
तेरा शिव तो बाहिर श्रम कण से रंजित है
धूलि धूसरित है वह शीतातप ताड़ित है
आना भी चाहे भीतर कैसे आएगा?
बन्द किवाड़ों से कैसे घुसने पाएगा?

त्याग त्याग यह आडम्बर प्रतिमा पूजन का
जन सेवा में है विकास मानव जीवन का

ऐसा तो है आर्य समाज

(प्रा. रमाकान्त जी दीक्षित)

छाया मन का तिमिर हरे जो,
अमृत से तन-प्राण भरे जो,
भेद-भाव की बात भुला कर,
सबका ही कल्याण करे जो,

ऐसा क्या है, आज बता दो !
ऐसा तो है, आर्य समाज !!

नित गिरते हुए उठाता जो,
समता-संगीत सुनाता जो,
मंजिल पर भटके चरणों को,
पथ सही-सही बतलाता जो,

ऐसा क्या है, आज बता दो !
ऐसा तो है, आर्य समाज !!

विश्व-शांति का रखवला जो,
मोती-मणियों की माला जो,
देश-धर्म की बलिवेदी पर,
अपनी धुन का मतवाला जो,

ऐसा क्या है, आज बता दो !
ऐसा तो है, आर्य समाज !!

आडम्बर दूर भगाता जो,
सोतों को पुनः जगाता जो,
वेद-मंत्र की गरिमा के संग,
हवन और यज्ञ रचाता जो,

ऐसा क्या है, आज बता दो !
ऐसा तो है आर्य समाज !!

वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज की आवश्यकता

लेखक—श्री यशपाल आर्यबन्धु, मुरादाबाद

अपने सार्वभौम, सार्वकालिक एवं सर्वजनीन नियमों, उद्देश्यों, सिद्धान्तों एवं कार्यक्रमों के कारण आर्य समाज युग की एक ऐसी अनिवार्य आवश्यकता बन चुका है कि जिसको देश, काल, व्यक्ति एवं परिस्थिति की सीमाएं बांध नहीं सकतीं। अतः प्रत्येक परिस्थिति में आर्य समाज की आवश्यकता असंदिग्ध है। फिर भी यदि वर्तमान परिस्थितियों में आर्य समाज की उपादेयता, उपयोगिता एवं आवश्यकता की विवेचना करनी अनिवार्य ही हो तो इसके लिए प्रथम वर्तमान परिस्थितियों का विश्लेषण कर लिया जाना अत्यावश्यक है और तब यह देखना उचित होगा कि इन परिस्थितियोंके अनुरूप आर्य समाज कितना आवश्यक उपयोगी एवं उपादेय है।

वर्तमान परिस्थितियां—

वर्तमान परिस्थितियों का विश्लेषण करने के लिए हम उन्हें निम्नलिखित भागों में विभक्त कर विचार कर सकते हैं:—

(१) धार्मिक (२) सामाजिक (३) राजनीतिक

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इन तीनों क्षेत्रों का यदि गम्भीरतापूर्वक अध्ययन किया जाए तो यही परिणाम निकलेगा कि इन तीनों ही क्षेत्रों में लगभग वही परिस्थिति है जो एक शती पूर्व आर्य समाज की स्थापना के समय उपस्थित थी। धार्मिक क्षेत्र में वही पाखण्डवाद, सामाजिक क्षेत्र में वही वितण्डावाद एवं राजनीतिक क्षेत्र में वही अलगाव एवं फूट की भावनाएं अब भी विद्यमान हैं। इनका यह तात्पर्य नहीं कि आर्य समाज ने गत एक शताब्दी में इन परिस्थितियों के सुधार में कोई प्रयत्न नहीं किया। हम आर्य समाज के कार्यों का अवमूल्यन नहीं करना चाहते

अतः यह कैसे कह सकते हैं कि आर्य समाज ने इस दिशा में कुछ नहीं किया। हमारा विश्वास है कि आर्य समाज ने इस दिशा में जो कुछ किया है उतना अन्य कोई भी नहीं कर सकता था। तो क्या आर्य समाज के प्रयत्नों का कोई प्रभाव नहीं हुआ? हम ऐसा भी नहीं मानते। प्रभाव भी हुआ है और यथेष्ट प्रभाव हुआ है। आर्य समाज के प्रभाव से ही धर्म में युक्ति और तर्क को स्थान मिल पाया है। आज प्रत्येक मत के अनुयायी जो अपने अपने सिद्धान्तों, मन्तव्यों एवं विश्वासों की युक्ति युक्त बुद्धिगम्य व्याख्या करने पर लगे हुए हैं, यह किस के प्रभाव का सुपरिणाम है? वह हिन्दू जाति जो कभी धर्म भ्रष्ट होने के भय से समुद्र यात्रा पाप समझती थी, आज अपने धर्म प्रचारकों को विदेशों मे भेजने में गौरव का अनुभव करने लगी है। यह किसका प्रभाव है? निश्चय ही आर्य समाज के प्रयत्नों का प्रभाव। आर्य समाज के प्रभाव की विवेचना करते हुए पण्डित चमूपति जी ठीक ही लिखते हैं कि—"आर्य समाज के जन्म के समय हिन्दू कोरा फुसफुसियां जीव था। उसके मेरुदण्ड की हड्डी थी ही नहीं। चाहे कोई उसे गाली दे। उसकी हंसी उड़ाये। उसके देवताओं की भर्त्सना करे या उसके धर्म पर कीचड़ उछाले, जिसे वह सदियों से मानता आ रहा है। फिर भी, इन सारे अपमानों के सामने वह दांत निपोर कर रह जाता था। लोगों को यह शंका उचित हो सकती थी कि यह आदमी भी है या नहीं, इसे आवेश भी चढ़ता हैं या नहीं अथवा यह गुस्से में आकर प्रतिपक्षी की ओर घूर भी सकता है या नहीं? किन्तु आर्य समाज के उदय के बाद अविचल उदासीनता की यह मनोवृत्ति विदा हो गई। हिन्दुओं का धर्म एक बार फिर जगमगा उठा। आज हिंदू अपने धर्म की निन्दा सुनकर चुप नहीं रह सकता। जरूरत हुई तो धर्म-रक्षार्थ प्राण भी दे सकता है।"

(द. कल्चरल हेरिटेज आफ इंडिया पृष्ठ ५१)

इसी प्रकार सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक आदि सभी क्षेत्रों में आर्यसमाज के प्रभाव को सरलता से ढूंढा जा सकता है। अतः यह भी नही कहा जा सकता कि आर्य समाज के प्रयत्न प्रभाव-हीन रहे हैं। फिर भी तत्कालीन परिस्थितियों एवं वर्तमान परिस्थितियों में विशेष अन्तर क्यों नहीं? आइए! थोड़ी इसकी समीक्षा करें :

अन्तर क्यों नहीं ?

हमने ऊपर लिखा है कि वर्तमान परिस्थितियों एवं आर्य समाज की स्थापना के समय की परिस्थितियों में कोई विशेष अन्तर नहीं इससे हमारा यह तात्पर्य नहीं कि सभी परिस्थतियां ठीक वैसी की वैसी ही हैं। नहीं ऐसी बात नहीं। कुछ

परिस्थितियों में सुधार हुआ है तो कुछ अन्य में बिगाड़। इस प्रकार कुल मिला कर परिस्थितियां प्रायः वैसी की वैसी ही हैं। अन्तर केवल इतना है कि तब लोग अज्ञान के वशीभूत होकर पाखंड जाल में फंसे हुए थे, और अब जानते हुए फंस रहे हैं। पाखंड एवं मिथ्याचार की निस्सारता को जानते हैं, समझते है, पर फिर भी चिपटे पड़े हैं। स्थिति की गम्भीरता मुख्यतः इस कारण से है कि सोते को जगाया जा सकता है, पर उस व्यक्ति को कैसे जगाया जाए जो जाग तो रहा है, पर सोने का मक्कर कर रहा है आज पाखंड का प्रचार अज्ञान के वशीभूत होकर नहीं किया जा रहा, हठधर्मी के वशीभूत होकर किया जा रहा है। समाजवाद का नारा लगाते हुए भी असामनता एवं ऊंच-नीचके भेदभाव जड़ जमाए बेठे हैं। समाज के कमजोर वर्ग पर अत्याचार अपनी चरम सीमा पर है। समाज वैसा ही रूढ़िग्रस्त है जैसा कि उस समय था सदाचार एवं नैतिकता कहीं देखने सुनने को नहीं मिलते। राजनीतिक भ्रष्टाचार पूरे जोरों पर है। अराष्ट्रीय तत्व जम कर कार्य करते दिखाई दे रहें हैं। सामूहिक धर्म परिवर्तन की अति घृणित घटनाएं नित्य प्रति घट रही हैं। स्वार्थपरता जाति एवं देशवासियों के रग-रग में घुस चुकी है। चांदी के चन्द टुकड़ों की खातिर ईमान तो क्या यह सर्वस्व बेच सकते हैं। ऐसी स्थिति में फिर यह कैसे कहा जा सकता है कि परिस्थितियां बदल गई हैं और आर्य समाज की अब कोई आवश्यकता नहीं रही ?

फिर आर्य समाज की आवश्यकता क्यों नहीं ?

जब वर्तमान परिस्थितियां प्रायः वैसी ही हैं जैसी कि आर्य समाज की स्थापना के समय थीं, अपितु किन्हीं अंशों में उससे भी अधिक गम्भीर एवं शोचनीय बन चुकी हैं तब यह कैसे सोचा जा सकता है कि आर्य समाज की अब कोई आवश्यकता नहीं रही। हमारी तुच्छ मति में आर्य समाज की आवश्यकता पहले से भी अधिक है। यह ठीक है कि आर्य समाज के अनेकों कार्यक्रम अन्य अनेकों स्वयं सेवी संस्थाओं एवं संगठनों ने अपना लिए हैं एवं कुछ को तो सरकार ने स्वयं अपना लिया है, पर इससे क्या आर्य समाज की आवश्यकता पर कोई असर पड़ता है ? कदापि नहीं। सोचें तो सही कि पहले घर में अकेला बाप था, अब चार लड़के भी हाथ बटाने को हो गए हैं तो क्या बाप की उपयोगिता, उपादेयता एवं आवश्यकता नहीं रही। ऐसा सोचना निश्चय ही बहुत बड़ी भूल होगी। फिर चाहे कितनी ही अन्य स्वयं सेवी संस्थाएं आर्य समाज का हाथ बटाने को आगे बढ़कर आ जाएं, आर्य समाज की आवश्यकता, उपादेयता, एवं उपयोगिता पर कोई आंच आने को नहीं।

आर्य समाज एक मानव निर्माण आंदोलन है। हमारा विश्वास है कि जब तक इस धरती पर मानव है, आर्य समाज की आवश्यकता अनुभव की जाती रहेगी। जब तक आर्य समाज के पास 'कृण्वन्तोविश्वमार्यम् का पावन उद्‌घोष है, आर्य समाज की आवश्यकता अक्षुण्ण है। इस सम्बन्ध में भूतपूर्व उपराष्ट्रपति श्री बी. डी. जत्ती को उद्धृत करना आवश्यक समझता हूं। वे लिखते हैं कि—

"जहां तक मैं आर्यसमाज के उद्देश्यों को समझ पाया हूं, कि स्वामी जी चाहते थे कि मनुष्य-मनुष्य बने, कायरता को छोड़े अपने अन्दर स्वाभिमान पैदा करे, सामाजिक विषमता के विरुद्ध आवाज उठाये और अपने जीवन में सबके प्रति सम्भाव का आचरण रखे। ढोंगबाजी, बाह्य दिखावा, को त्यागकर, संसार का, मानव का सत्य स्वरूप समझे इसके अनुसार व्यवहार करें। तो हमें यह देखना है कि सद्य परिस्थिति में इन उद्देश्यों के अनुरूप हम क्या कर सकते हैं व हमें क्या करना होगा? आर्य का अर्थ है ईश्वर-पुत्र अर्थात् श्रेष्ठ, सदाचारी, धर्मात्मा, सत्यवादी, संस्कारी तथा प्रगतिशील मनुष्य। यह कोई संकुचित कल्पना नहीं है। आर्य यानी ईश्वर का पितृत्व मानने वाला समस्त मानव जाति का आपस में भ्रातृत्व तथा एक परिवार का रूप गृहीत है। वेदों में आर्य शब्द गुणवाचक है। यह शब्द देश, काल और सीमा की परिधि से बाहर है। जिस व्यक्ति के आचरण में आर्यत्व एवं श्रेष्ठता होगी, वह विश्व के किसी भाग में जन्मा हो, उसका कोई भी मजहब या भाषा हो, वह कहीं भी निवास करता हो, वह आर्य है। कृण्वन्तो विश्वमार्य्यम् इसका अर्थ यही है कि सारे जगत को आर्य अर्थात् श्रेष्ठ मानव बनाओ।" (देखें आर्यसमाज शताब्दी समारोह, वाराणसी स्मारिका, फरवरी १९७६) मान्य जत्ती महोदय ने जहां आर्यसमाज के महान् उद्देश्यों को स्पष्ट किया है और उसकी व्यापकता को दर्शाया है वहां इसे अखण्ड रूप से चालू रखने की प्रेरणा करते हुए वे आगे लिखते हैं—"आर्यसमाज का काम यानी मानव को अपूर्णता से पूर्णता तक पहुंचाने का काम, हमें अखण्ड चालू रखना ही होगा। हमारे समाज की, राष्ट्र की उन्नति उसी पर निर्भर है। इस काम के लिए अब परिस्थिति भी अनुकूल है। हमारा अब एक स्वतन्त्र राष्ट्र है और हमारी सरकार भी इस दिशा में प्रयत्नशील है। काम इतना विशाल है कि केवल कुछ व्यक्तियो या संस्थाओं के करने से ही हम अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच सकते हैं। इस दिशा में सरकार की ओर से जो प्रयत्न, सम्भाव और समानता के लिए किए जा रहे हैं, उसमें अगर हम सब सहयोग दें तो निकट भविष्य में हम अपने उद्देश्य की पूर्ति कर सकेंगे।" हम समझते है कि मान्य जत्ती महोदय ने आर्यसमाज को समझने में कोई भूल नहीं की। न ही उसके उद्देश्य को भी समझने में कोई भूल ही की है।

अतः परिस्थिति चाहे कुछ भी हो, जब तक मानव है आर्य समाज की, उसे मानवता का पाठ पढ़ाने के लिए सदैव आवश्यकता बनी रहेगी। फिर भी वर्तमान परिस्थितियों को देख कर ऐसा लगता है कि जैसे यह परिस्थितियां पुकार-पुकार कर आर्यसमाज को याद कर रही हों। जब धर्म पर, समाज पर और देश पर संकट के बादल मण्डरा रहे हों, तब आर्य समाज की आवश्यकता नहीं तो क्या अनार्यों के समाज की आवश्यकता होगी? अतः हम यह कहना चाहते है कि आर्य समाज युग की पुकार है, उसकी आवश्यकता है। चारित्रिक पतन, सामाजिक विषमता, धर्म के प्रति अनास्था, देश के प्रति फूट आदि की भावनाओं का कारगर ढंग से यदि कोई सामना कर सकता है तो निश्चय ही वह आर्यसमाज ही है। अतः सभी को चाहिये कि आर्यसमाज को अपना सहयोग देकर उसे आगे बढ़ायें। महर्षि दयानन्द के शब्द हमें याद रखने चाहियें कि—"जो उन्नति करना चाहो, तो आर्य समाज के साथ मिलकर उसके उद्देश्यानुसार आचरण करना स्वीकार कीजिये, अन्यथा कुछ हाथ न लगेगा।" इतना ही नहीं महर्षि तो यहां तक लिखते हैं कि "जैसा आर्य समाज आर्यावर्त देश की उन्नति का कारण है वैसा दूसरा नहीं हो सकता। यदि इस समाज को यथावत सहायता देवें तो बहुत अच्छी बात है क्योंकि समाज का सौभाग्य बढ़ाना समुदाय का काम है, एक का नहीं।" (एकादश समुल्लास) महर्षि दयानन्द के यह शब्द प्रत्येक परिस्थिति के लिए हमारे मार्ग दर्शक हैं। जब तक आर्य वर्त देश है, आर्य समाज की उसे आवश्यकता बनी रहेगी।

—मुक्तक—

स्वार्थ रहित जो दे, वह दान है,
सत्य-पथ दिखा दें, वह ज्ञान है,
लाख यज्ञ तप सब बेकार होते—
जब, अन्दर में बैठा अभिमान है,

ईश्वर को ढूंढने लोग तीर्थों में जाते हैं,
लेकिन नारायण को, वे देख कहां पाते हैं?
आत्मा को स्वच्छ कर, परमात्मा को खोजें, गर—
मानव मन-मन्दिर में, भगवान नजर आते हैं।

—सीताराम पाण्डेय

आर्यसमाज और सम्प्रदायवाद

(—प्रो. उत्तम चन्द शरर)

"यह सिद्ध बात है कि पांच सहस्र वर्षों के पूर्व वेदमत से भिन्न दूसरा कोई भी मत न था, क्योंकि वेदोक्त सब बातें विद्या के अविरुद्ध है। वेदों की अप्रवृति होने के कारण महाभारत युद्ध हुआ, इनकी अप्रवृति से अविद्या अन्धकार के भूगोल में विस्तृत होने से मनुष्य की बुद्धि भ्रम युक्त हो कर जिसके मन में जैसा आया, वैसा मत चलाया" (सत्यार्थ प्रकाश अनुभूमिका) ऋषि के उक्त कथन से स्पष्ट है कि ऋषि मतों को अज्ञान अन्धकार का स्रोत मानते है। यह भी स्पष्ट है कि वे वेदों को विद्या के अविरुद्ध (अनुकूल) स्वीकार करते हैं अतः उनके जीवन का लक्ष्य अविद्या अन्धकार को मिटा कर वेद ज्ञान का प्रचार ही रहा है। ऋषि का आर्य समाज भी अपने आचार्य के आदेशानुसार मतों (सम्प्रदायों) का विरोधी रहा है। पौराणिक मत हो, या जैन, इस्लाम हो या ईसाइयत अपने-२ समय पर चले यह मत वेदानुकूल नहीं तर्क विरुद्ध है तथा अपने पैगाम्बर को ही प्रमुख मान कर अन्य सब का विरोध करते हैं। ऋषि तथा उस का आर्य समाज, सम्प्रदायवाद का घोर विरोधी है। उस का कारण यह है कि सम्प्रदाय किसी विशेष समय में किसी विशेष समस्या के सुलझाने का तो शायद कभी कारण रहे हैं। परन्तु सार्वकालिक सत्य के पक्षपाती नहीं हैं। जैन बौद्ध मतों की प्रतिक्रिया स्वरूप पौराणिक सम्प्रदाय का आविर्भाव हम पाते हैं। परन्तु उसके मन्तव्य रूढ़ि बन कर सदा के लिए मानवता के घातक रहे हैं। मूर्तिपूजा तथा अवतार वाद ने सदा के लिए समाज को परमुखापेक्षी बना दिया है मानव के उत्साह तथा शौर्य को क्षीण किया है, फलित ज्योतिष की शौर्यनाशक प्रवृति ने देश को पराधीन तक बनाया है, इस्लाम तथा ईसाइयत के मन्तव्यों ने मनुष्य से सोचने समझने की प्रवृति छीनी है और अन्धविश्वास को बढ़ावा देकर मानवता का ह्रास किया है। इसके विपरीत वेद धर्म सार्वकालिक दृष्टिकोण को प्रस्तुत कर मानव की उन्नति का कारण रहा है।

सम्प्रदाय में दूसरी कमी यह रही है कि उसने मनुष्य को रूढ़िवादी अन्ध विश्वासी बनाया है। प्रायः सभी सम्प्रदाय अपने अनुयाइयों को तर्क पूर्वक सोचने की आज्ञा नहीं देते दूसरे शब्दों में मानव को पशु बना कर रखते हैं। हर चे शक आरद् काफ़िर गरदद जो सन्देह करता है वह काफ़िर है और काफ़िर को मार देना चाहिए, न जाने कितने वैज्ञानिक ईसाइयत के पागलपन से मार दिए गए और कितने निरीह व्यक्ति इस्लाम की तलवार का शिकार हुए, मन्दिर तक इस

पाशविकता से न बच सके वाराणसी का विश्वनाथ का मन्दिर तथा मथुरा का कृष्णामन्दिर आज भी इस पाशविक अत्याचार के साक्षी हैं ।

सम्प्रदायवाद की तर्क विहीनता ने विज्ञान विरुद्ध अन्धविश्वासों को जन्म दिया। आकाश के सितारे तोड़े गए चन्द्रमा के टुकड़े किए गए, सूर्य को मुख में डाल दिया गया समुद्र को चुल्लू भर कर पी लिया गया, अङ्गुली पर पर्वत नचाए गए निश्चय ही ऐसी बेसिर पैर की मान्यताओं ने विज्ञान को इन तथा कथित धर्मों (सम्प्रदायों) से बागी बना दिया । सम्प्रदायवाद का एक दुष्परिणाम यह भी हुआ कि अपने अपने पैगाम्बर अथवा अवतार के पक्ष में मतानुयायी, दूसरे मतों से द्वेष करने लगे, आपस में धर्म के नाम पर मार काट हुई । श्री राम के अनुयायी कृष्ण निन्दा में प्रवृत हुवे तो कभी कृष्ण।।मत, "सूरदास प्रभु काम धेनु । तजि छेरि कौन दुहावे" कह कर राम आदि के पूजन के विरुद्ध हुवे । इस्लाम में तो मुहम्मद को व्यवहार में खुदा से ऊंचा दर्जा दिया गया, मुहम्मद के सम्बन्ध में कुछ कहना लिखना सबसे बड़ा कुफ्र माना गया, और एक हाथ में कुरान तथा दूसरे हाथ में तलवार ले कर अल्लाह के यह उपासक मार काट के मैदान में अल्लाह की मखलूक को काटने के धर्म युद्ध (जिहाद) पर निकले, जरा इन के कारनामें कोई इतिहास के पन्नों पर देखे- एक उदाहरण इस्लाम की क्रूरता का देखिए"वलीद का बेटा सुलेमान खलीफा बना उसने प्रथम मूसा के परिवार को कत्ल करा दिया, पश्चात 'हुर, को स्पेन का सूबेदार बनाया । उसने निश्चय किया कि सेना में जितने सैनिक हैं या तो उन्हें मुसलमान बना लिया जाए या कत्ल कर दिया जाए। उसने जूलियन सेनापति को बुलाया वह हुर का अभिप्राय समझ गया और भाग गया। उसकी स्त्री और बच्चे घरों में घेर लिए गए ।उसने बच्चे को कब्र में छिपा दिया पर ढूंढकर उसे निकाल लिया गया । स्त्री ने हुर के पैरों में गिरकर दया की प्रार्थना की, परन्तु हुर ने कहा कि काफिर के लिए रहम नहीं है ।काजी को हुक्म दिया कि बच्चे को किले के बुर्ज पर ले चलिए । यही किया गया। बच्चा डर कर काजी से चिपट गया, वह बहुत रोया चिल्लाया पर उसे बुर्ज से नीचे फैंक दिया गया। इसके बाद स्त्री पुरुष को बुलाकर एक खाई में खड़ा किया गया। उनके बीच में जूलियन(सेनापति) की स्त्री भी थी । सबसे कलमा पढ़ने को कहा गया परन्तु इन्कार करने पर खाई में मिट्टी डाल कर सबको जिन्दा जमीन्दोज् करा दिया" (भारत में इस्लाम पृष्ठ ३४—३५) सम्प्रदाय वाद का इतना घनौना रूप किसको तड़पा न देगा ? ऋषि ने इस सम्प्रदाय वाद के विरोध में आवाज बुलन्द की, वह निर्भीक संन्यासी सब सम्प्रदायों की आलोचना पर तुल गया, परन्तु उसका तर्कानुमोदित सत्य धर्म का

पक्षपाती था, वह धर्म वैदिक धर्म ही है जिसका प्रचारक आर्य समाज है। प्रश्न होता कि यदि कोई व्यक्ति वेदों को न पढ़ा हो तो वह धर्म को कैसे जाने। ऋषि सत्यार्थ प्रकाश में उसकी सरल युक्ति देते हैं। जिज्ञासु को सत्य धर्म को जानने के लिए ऋषि एक मार्ग बताते है 'जिस बात में यह सहस्र (सम्प्रदाय) एक मत हों वह वेद मत ग्राह्य है और जिसमें यह (मत) परस्पर विरोध में हो. वह कल्पित झूठा अधर्म और अग्राह्य है (सत्यार्थ प्रकाश ११वां समुल्लास)

आइए, हम आर्य समाज के स्वरूप को समझें, और सम्प्रदाय वाद का खंडन करते हुए मानव मात्र को वेद धर्म के आलोक से आलोकित करे।"

रक्षक-भक्षक बने हुए हैं

ले.—श्री कृष्णलाल 'कुसुमाकर'

मानवता मिट रही पाशविकता के पाशे जकड़ रहे हैं।
कहीं निरीहों की कुटिया में, ऐसा चीत्कार छाया है।
देख कलेजा कांप रहा है, भीषण एक ज्वार आया है।
भटक रहे नैराश्य-निशा में, जाने कितने कष्ट सहे हैं।
सभता और विषमता में, भू-अन्तरिक्ष का अन्तर पाया।
लघुता और महत्ता के आंगन में, प्रबल प्रभंजन आया।
बन्धु-बन्धु सम्बन्ध कहां द्वेषानल में निर्भीक दहे हैं।
आज अराजकता मर्यादा की सीमा को लांघ रही है।
भय, दुर्भिक्ष, मरण की अविकल यहां त्रिपथगा मूक रही है।
भारतीय संस्कृति रोती है, अनाचार-अविचार गहे है।
राम-राज्य में त्रय तापों का कहते हैं कुछ नाम नहीं था।
प्रजा दुःखी होने पर, दण्डित हो भूपति, अधिकार यहीं था।
क्षुधा प्रपीड़ित शिशुओं के व्यापार हो रहे नित्य कहे है।
सत्ता बनी रहे बस मेरी, यही महत्ता यही ध्येय है।
ऋषि मुनियों की प्रथा पुरातन-यही प्रेय है यही श्रेय है।
अर्थ-स्वार्थ ईर्ष्या के दूषित अगणित झरने यहां बहे हैं।
रक्षक-भक्षक बने हुए हैं. तक्षक बन फुंकार रहे हैं।
अविश्वास की आग जल रही सारे हिम्मत हार रह हैं।
नय का अभिनय मन्द पड़ा है अधम-अनय अंकुर उलहे हैं।
चारु-चरित्र-चन्द्रिका जिसके भव्य भाल पर छिटक रही थी।
विमल विचारों की दिशि-दिशि में यश की सौरभ महक रही थी।
दुर्विचार-दुर्गन्ध उड़ रही नैतिकता के महल ढहे हैं।
मानवता मिट रही-पाशविकता के पाशे जकड़ रहे हैं।

युग एवं समाज का क्रांति घोष आर्यसमाज

आचार्य रमेश चन्द्र एम. ए. सम्पादक : 'आर्य मित्र' लखनऊ

अभी केवल सौ बसन्त तथा शरद् व्यतीत हुए हैं जब महर्षि दयानन्द सरस्वती ने भारत की पावन भूमि पर वैदिक संस्कृति की पुर्नस्थापना हेतु जय घोष किया और अपने स्वप्नों के आदर्शों की पूर्ति के लिए गम्भीर विचार मन्थन तथा क्रिया निर्देशन हेतु आर्य समाज की स्थापना की। सात सौ वर्षों से जिस देश में मुसलमानी शासन के प्रबल चक्र के नीचे इस्लाम धर्म की स्थापना का प्रयास किया गया। ऐतिहासिक धर्म स्थल खण्डित हुए आर्य ग्रन्थागारों की होली जलाई गई तथा आर्य धर्म जो कालान्तर में हिन्दू धर्म के नाम से जाना गया को क्षीण और नष्ट करने के लिए सभी विष बेलें बोई गई। इस्लामी प्रताड़ना को सहते हुए सन्त महाकवियों की वाणी के सहारे हमारे प्राण शेष मात्र थे तभी अंग्रेजी शासन की राजनीति सफल हुई और सारा भारत १८६० की साम्राज्ञी विक्टोरिया के घोषणा के बाद ब्रिटिश के पराधीन हो गया और देश में ईसायत के प्रचार के साथ योरुप की सभ्यता को श्रेयस्कर स्वीकार किया जाने लगा। भारतीय मनोदशा को हीनकर बनाने में १८५७ की विद्रोह क्रान्ति की असफलता भी मुख्य कारण बनी। भारत का मुसलमान सन्तुष्ट था कि यदि वह क्षीण हुआ तो राज्य सत्ता हिन्दुओं के हाथ न जाकर ईसाइयों के हाथ गयी और दोनों के 'मजहब पैगम्बरी' है। शिवा तथा प्रताप के वंशज विदेशी शासन के भारवाहक बन गए।

भारत में अंग्रेजी शासन की विधिवत् स्थापना के तीन दशक भी पूरे न हो पाए थे कि एक अदिति अखण्ड ब्रह्मचारी संन्यासी पूर्ण वेग से देश में वैचारिक क्रांति का जयघोष करने में सफल हो गया। सशस्त्र क्रांतियां जब असफल होती है तो वैचारिक क्रांति ही परिवर्तन की क्षमता रखती है। स्वामी विरजानन्द का शिष्य वैदिक संस्कृति की निकषा पर खरे और खोटे की परीक्षा करते हुए युग

श्रौर समाज में नव चेतना देने में सफल हुआ श्रौर अंग्रेजी शासन को उखाड़ फैंकने का भी आह्वान कर बैठा। जो रूढ़िवादी मान्यतायें और अवैज्ञानिक विचार राष्ट्र को दुर्बल श्रौर पर मुखापेक्षी बनाये थे उनका सशक्त उन्मूलन का सन्देश ऋषिवर की अमृत गिरा से स्रवित हुआ तथा भारत तन्द्रा से जगकर जागरण के विहाग में पहुंच गया।

श्रार्य समाज अपने प्रथम छः-सात दशकों में युग श्रौर समाज को चेतना देने में समर्थ हुआ श्रौर उसके परिणाम हैं हमारे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति के गुरुकुल वृहद एवं विशाल डी. ए. वी. कालेज की देशव्यापी श्रृंखलाएं श्रौर भारत तथा विदेशों मे व्याप्त श्रार्य समाज की शाखाएं। स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि श्रान्दोलन, को प्रबल किया तथा इस्लाम और ईसाई प्रचार दुर्बल हुआ। श्रार्य समाज नव चेतना स्वतन्त्रता-देश-प्रेम एवं राष्ट्र हेतु वलिदान का पर्यायवाची बन गया। भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम में श्रार्य जन ही श्रागे श्राये चाहे क्रांतिकारियों का दल हो या महात्मा गांधी का असहयोग आन्दोलन। हरिजन श्रौर स्त्री जाति भी उत्कर्ष की श्रोर श्रार्य समाज के बल बूते पर आए श्रौर आर्य समाज की उत्क्रांति का ही समवेत परिणाम है भारतीय स्वतन्त्रता तथा वैदिक सभ्यता एवं आदर्शों का प्रसार।

स्वतन्त्रता के समय देश के कतिपय नेताश्रों ने राष्ट्र के साथ भयंकर विश्वास घात करके भारत को खंडित करने की ब्रिटिश नीति को स्वीकार किया। विभाजन का मूल श्राधार मुसलमानों को पृथक राष्ट्र की श्राकांक्षा श्रौर हिन्दुओं के साथ घुल मिलकर न रहने की भावना थी। इस विष को भी हमने शंकर की भांति कण्ठस्थ किया परन्तु जिन दुर्बल श्रौर कमजोर हाथों में विभाजित भारत की सत्ता रही उन्होंने श्राज देश के सामने श्रौर श्रधिक समस्याएं उत्पन्न कर दी है तथा श्रपने विचारहीन कृत्यों के द्वारा श्राज भारत में मुस्लिम देशों से जिस प्रकार धन प्रवाह हो रहा है तथा भारत को पचास वर्षो के श्रन्दर नवीन इस्लाम प्रधान देश बनाने का चक्र चल रहा है वह प्रत्येक श्रार्यजन श्रौर वैदिक संस्कृति के उपासक के लिए विचारणीय है तथा श्रधर में लटकता हुश्रा प्रमुख प्रश्न चिन्ह है। निश्चित एवं दृढ़ धारणा शक्ति के साथ हम कह रहे है कि मुस्लिम मतों के सहारे सत्ता पर बैठने का स्वप्न देखने वाले श्राज राष्ट्र की समस्याओं को विशेष रूप से इस्लामी विष की बेल को फैलने से रोकने में श्रसमर्थ है श्रौर इसका निराकरण हमें 'श्रार्य समाज' को सशक्त और बलशाली करने में ही मिल सकता है।

देश की जागरुक जनता के सामने मीनाक्षीपुरम की घटनाएं है। गत फरवरी में भारत में इस्लाम प्रचार को सक्रिय करने के लिए मुसलमानों की पूर्ण चेष्टाएं हुई। श्री सेठ सुलेमान कोया श्रौर श्री बनातवाला जो मुस्लिम लीग के

प्रमुख नेता है ने खुले बयान देकर इस्लाम प्रसार का समर्थन किया । समाचारपत्रों और लोकसभा तथा राज्यसभा में प्रश्नोत्तर से सब अवगत हैं । दक्षिण भारत में मस्जिदों के निर्माण का कार्य तेज है । हाजी मस्तान ट्रस्ट मस्जिदों में ध्वनि वर्द्धक यन्त्र लगवा रहा है तथा अरब देशों के धन से भारत में अरबी भाषा प्रसार और इस्लामी शिक्षा के लिए 'दारुल-उलूम' स्थापित करने की योजना मूर्तिमान होने वाली है । भारत सरकार असमर्थ है झूठे आदर्शों के सहारे इस्लाम प्रचार रोकने में यह इस्लाम प्रचार भारत के मानचित्र को बदलने में अपने को समर्थ कर रहा है ।

आज युग की आंधी को आर्य समाज सही दिशा में बदल सकता है । परन्तु खेद के साथ लिखना पड़ रहा है कि आर्य समाज मूल के उस बिन्दु पर बल न देकर छद्मवेषी राजनीतिज्ञों की भांति पद और कुर्सी को बल दे रहा है रोगी की चिकित्सा न करके चिकित्सालय की दीवारों पर गहरे रंग की पुताई हो रही है । आज जब आर्य समाज को नवीन शक्ति के साथ सिंहघोष करना है तब अधिकार वाद की लिप्सा और सत्ताधिकार की तृष्णा हमें पीछे धकेल रही है । गुरुकुलों की हीन दशा, आर्य समाज भवन जो किराएदारों के आवास बन रहे हैं, तथा दयानन्द महाविद्यालय जो दलीय द्वन्द में पिस रहे है हमारी रुग्ण मनोदशा के चिन्ह है हम रुक रहे हैं सत्ता पर जमने के लिए हम गति विहीन है स्वार्थ और अधिकार की धारणा के लिए अतः आज भारत में आर्य समाज का जो स्वर होना चाहिए, जो रूप निखरना चाहिए और व्योम व्यापी महाघोष से जो आक्रांति का विस्फोट होना चाहिए वह नहीं है ।

निराशा नहीं है केवल आलस्य और विराम है । राजनीति प्रधान दलों के संक्रामक रोग के कीटाणु जिस दिन आर्य समाज से नष्ट कर दिए जाएंगे उसी दिन आर्य समाज भारत रक्षक और विश्व का मार्ग दर्शक हो जाएगा । आशा है आर्यजन समय की गति के साथ उठेंगे—स्वार्थ को त्यागेंगे । पद लिप्सा समाप्त होगी और सुदिशा की गति सेवा पथ को इंगित करेंगी ।

वैदिक पञ्चजन्य एक बार फिर भारत के नीले आकाश के नीचे गूंज उठे और मोह भ्रम अर्जुन रूपी आर्यजन 'युद्धाय कृत निश्चय का संकल्प ग्रहण कर लें ।

स्त्रियों के उत्थान में आर्यसमाज का योगदान

ले.—पंडिता डा. प्रज्ञादेवी, आचार्या-पाणिनि
कन्या महाविद्यालय वाराणसी

महर्षि दयानन्द अथवा आर्य समाज के नारी उत्थान विषयक कार्य की मूल आधार भित्ति पवित्र वेद रहे हैं। सुधार रूपी जन आंदोलन का नारी शिक्षा विषयक केन्द्र बिन्दु कितना महत्वपूर्ण है इसे महर्षि दयानन्द अपनी दिव्य दृष्टि से जान चुके थे तथा वे जानते थे कि विभिन्न कुंठाओं, अन्ध-विश्वासों एवं आत्म तेज से हीन इस आर्य जाति में पूर्णतया साहस, ओज एवं तेज तभी फूंका जा सकता है जब नारी को विद्या गुण विभूषिता, शक्ति सम्पन्न बनाया जाए। इस विषय में इतिहास के भी सबल प्रमाणों को प्रस्तुत करते हुए ऋषि दयानन्द ने यह बताया कि "पुराकाल में स्त्रियां कैसी पंडिता एवं विदुषी होती थीं।" उपदेश मन्जरी पूना के १२वें प्रवचन में वे कहते हैं—

(क) "प्राचीन आर्य लोगों में गार्गी, मैत्रयी आदि कैसी कैसी विदुषी स्त्रियां हो गई हैं! आजकल स्त्री को विद्या पढ़ने का अधिकार नहीं, वह शूद्र के समान है। यदि स्त्रियां पढ़ी लिखी होती तो इन पंडितों की बड़बड़ाहट का खंडन करके एक घड़ी में इनका मुंह बन्द कर देती।"

(पूना प्रवचन पृ. १२६)

(ख) "गार्गी, सुलभा, मैत्रेय, कात्यानी आदि बड़ी-बड़ी सुशिक्षित स्त्रियां होकर बड़े-बड़े ऋषि मुनियों की शंकाओं का समाधान करती थी।"

(पूना प्रवचन पृ. २०)

इसी प्रकार अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में वे लिखते हैं—

(क) "देखो! आर्यावर्त्त के राजपुरुषों की स्त्रियां धनुर्वेद अर्थात् युद्ध विद्या

भी अच्छीप्रकार जानती थी क्योंकि जो न जानती होती तो कैकेयी आदि दशरथ आदि के साथ युद्ध में क्योंकर जा सकती ? और युद्ध कर सकती...।"

(सत्यार्थ प्रकाश तृ. स. पृ. ५७)

(ख) "भारतवर्ष की स्त्रियों में भूषण रूप गार्गी आदि वेदादि शास्त्रों को पढ़ के पूर्ण विदुषी हुई थी यह शतपथ ब्राह्मण में स्पष्ट लिखा है...।"

(सत्यार्थ प्रकाश तृ. स, पृ. ५७)

शिक्षा की दृष्टि से स्त्री हो या पुरुष दोनों को ही पूर्ण विद्या पढ़ने का अधिकार है यह महर्षि दयानन्द ने ही इस युग में पुनः प्रमाणित किया। वे कहते हैं—

"ईश्वर के समीप स्त्री-पुरुष दोनों बराबर है क्योंकि वह न्यायकारी है...।"

(पूना प्रवचन पृ.१२६)

मिथ्या आडम्बरों की बाढ़ का सबसे बड़ा कारण स्त्रियों की अशिक्षा ही है इसे मानते हुए ऋषि दयानन्द कहते हैं—

"जब सब स्त्री पुरुष वेदों का अवलोकन करेंगे तब इन सम्प्रदायों की लट-पट बन्द होगी।" (पूना प्रवचन पृष्ठ ४८)

यह कहना सर्वथा उचित होगा कि आर्य समाज के जागरण से पूर्व नारी जाति समाज में सह अस्तित्व के अधिकार से भी सर्वथा वंचित होकर क्रिया शून्य हो चुकी थी। बौद्ध काल में बौद्ध भिक्षुणियों के रूप में कुछ नारियां जो हमें दृष्टि गोचर होती हैं, वे न तो नारी के छिने हुए प्राप्तव्य की देन का प्रमाण मानी जा सकतीं न ही वेद-वैदुष्य एवं सामाजिक मर्यादाओं का आदर्श रूप मानी जा सकती। इसके विपरीत यह कहा जा सकता है कि जिस प्रकार बौद्धकाल में आर्ष संस्कृत ग्रन्थों का अत्यन्त ह्रास हुआ उसी प्रकार वर्णाश्रम धर्म की मर्यादा हीन घिनौने व्यवहारों १ से नारी समाज का आदर्श धूमिल ही हुआ भव्यता नहीं आई। आती कैसे ? अन्य विद्याओं के साथ-साथ जो वेद नारी शिक्षा एवं सद्व्यवहारों के मूल उत्स हैं उन्हें तो बौद्ध समुदाय मानता ही नहीं। इधर साहित्यकारों (संस्कृत एवं हिन्दी दोनों) ने भी नारी को जब याद किया कामिनी काञ्चन तथा भोग-विलास के साधन के रूप में ही। ऐसे दुःखद अरुन्तुद गर्त्त में पड़ी नारी का शुद्ध कंचन स्वरूप वेद का आधार लेकर महर्षि दयानन्द ने ही दिखाया। उन्होंने बताया कि जब तक गृहस्थ जीवन में पति पत्नी सुयोग्य विद्वान्-विदुषी नहीं होंगे तब तक न समाज में सुख होगा न ही राष्ट्र एवं धर्म रक्षक सन्तान होगी। महर्षि दयानन्द से पूर्व के उव्वट महीधरादि भाष्यकार वेदों के ऊटपटांग कर्मकांड परक व्याख्याओं में ही जुटे रहे। इस देश और समाज का कोई अंग भी खाये जा रहा है इसकी ओर शुतुर्मुर्ग की तरह उनकी आंखें बन्द रहीं। जबकि नवीन

१, इस विषय में विस्तार के लिए देखें—"संस्कृत भाण साहित्य की समीक्षा" लेखक डा: श्री निवास मिश्र—पृ. २८४-२८५॥

वेदान्तियों के शिवोऽहम् वाद एवं बौद्धों के अहिंसा वाद ने तो जाति के अन्दर ऐसी जड़ता पैदा कर दी थी कि उठ खड़े होने की शक्ति भी तो नहीं रह गई थी। वेदोद्धारक महर्षि दयानन्द ने ऐसे समय में वेद के सामाजिक शिक्षा परक अर्थ रखे और उससे नारी शिक्षा के स्रोत को जन-मन के हृदयों में प्रवाहित कर दिया। उन्होंने बताया कि "योग्य स्त्रियों को योग्य पति से विवाह करना चाहिए।" यजु १२-१२-६२ १ के भावार्थ में वे लिखते हैं—

"हे स्त्रियो ! तुम लोगों को चाहिए कि पुरुषार्थ रहित चोरों और उनके सम्बन्धी पुरुषों को अपने पति करने की इच्छा न करो, आप्त पुरुषों की नीति के तुल्य नीति वाले पुरुषों को ग्रहण करो, जैसे पृथिवी अनेक उत्तम फलों के दान से मनुष्यों को प्रसन्न करती है वैसी होओ। ऐसे गुणों वाली तुमको हम लोग नमस्कार करते हैं।"

इसी प्रकार यजु. ११-३३ के २ भावार्थ को देखें—

"जो पुरुष वा स्त्री साङ्गोपाङ्ग सार्थक वेदों को पढ़के विद्वान् वा विदुषी होवें वे राजपुत्र और राजकन्याओं को विद्वान् और विदुषी करके उनसे धर्मानुकूल राज्य तथा प्रजा का व्यवहार करवावें।"

एक और यज्ञ देवता वाले यजु. ६-३४ के ३ मन्त्र का अन्वयार्थ ऋषि के शब्दों में ही देखें—

"हे देवीर्देव्य पत्न्य स्त्रियो यूयं वृत्रतुर इव राधोगूर्त्ता एव सत्यः (पत्नीः) यज्ञसहकारिण्यः श्वात्रा स्थ ता देवत्रेमं यज्ञं नयत, उपहूता इवामृतस्य सोमस्यातिस्वादिष्ठं सोमाद्योषधिरस पिबत।"

अर्थात् हे विद्याशीले स्त्रियो ! तुम अच्छे गुणों से युक्त होकर याज्ञिक कार्यों में अपने विद्वान् पतियों को सहायता देने वाली बनो तथा सोमादि ओषधियों का पान कराती एवं कराती हुई ऐश्वर्य की वृद्धि करो।" इस प्रकार के नारी शिक्षोपयोगी

---

१. असुन्वतमयजमानमिच्छ स्तेनस्येत्यामन्विहि तस्करस्य। अन्यमस्मदिच्छ सा त इत्या नमो देवि निर्ऋते तुभ्यमस्तु ॥

२. तमुत्त्वा दध्यङ्ङृषिः पुत्र ईधे अथर्वणः। वृत्रहणं पुरन्दरम् ॥

३. श्वात्रा स्थ वृत्रतुरो राधोगूर्त्ता अमृतस्य पत्नीः। ता देवी र्देवत्रेमं यज्ञं नयतोपहूताः सोमस्य पिबत ॥

सैंकड़ों उदाहरण ऋषिवर के वेदभाष्य से प्रस्तुत किये जा सकते हैं यह तो किञ्चित् नमूना मात्र है।

इस दृष्टि से ऋषि दयानन्द एवं आर्यसमाज का नारी उत्थान विषयक कार्य अत्यन्त समुचित वेदोक्त आधार सम्पन्न एक बहुत बड़ी वैचारिक क्रांति का ज्योति स्तम्भ स्वरूप है कि जिसके समक्ष किसी का भी यह अहं माने नहीं रखता कि "सदियों से उत्पीड़ित नारी के पथ प्रदर्शन में हमने दीप दान कर उसका विशुद्ध लक्ष्य प्राप्त कराया है।"

कुछ दुःख से लिखना पड़ता है कि नारी उत्थान विषयक जिस तीव्र एवं पवित्र लहर को दयानन्द एवं आर्यसमाज ने पूरी शक्ति के साथ इस युग में चलाया ही नहीं एवं वेद-विदुषी पण्डितायें भी पैदा की, उस आर्यसमाज का स्त्री शिक्षा विषयक योगदान के रूप में स्त्री शिक्षा का समर्थन करते हुवे भी कुछ पक्षपाती लोग नाम लेना भी पसन्द नहीं करते अपितु सदैव यही बताते एवं जतलाते हैं कि "स्त्री-शक्ति" कहकर हम ही स्त्रियों के प्रथमोद्धारक हैं, जब कि ऐसे लोगों की स्त्री शिक्षा विषयक मूलाधार वेद का ज्ञान नाम मात्र को भी नहीं। ऋषि दयानन्द की कृपा से आज नारियां सुशिक्षित होकर राजनीति के उच्चपद पर समासीन होने में सक्षम हुई हैं। आर्यसमाज के धुरन्धर व्याख्यानों, शास्त्रार्थों एवं निबन्ध, लेखों के द्वारा जन-जन के अन्दर यह जागृति उत्पन्न कर दी कि पुत्रियों का बाल विवाह रुकना चाहिए, विधवा विवाह होने चाहिए एवं पुत्रियों को पूर्ण सुशिक्षित बनना चाहिए। आर्यसमाज के इस तीव्र जन आंदोलन का ही प्रभाव रहा है कि पाखण्डी लोग भी 'अष्टवर्षा भवेदगौरी' की बात छोड़कर आज अपनी पुत्रियों को शिक्षा देने लगे- फिर भी अफसोस[१] होता है उन लोगों पर जो जानबूझ कर दयानन्द का नाम इस विषय में लेना पसन्द नहीं करते या आर्यसमाज जैसे पवित्र, आंदोलन को किसी झगड़े या फसाद का रूप देकर घृणा का रुप जन समुदाय में पैदा करने का प्रयत्न करते हैं, उदाहरणार्थ—कविवर पं. नाथूराम शंकर जी शर्मा

---

१. श्रीमती इन्दिरा गांधी ने "भारतीय नारी का सबसे बड़ा मसला" नामक अपने लेख में लिखा है कि—"हम भारत की स्त्रियां वास्तव में सौभाग्यशाली हैं कि हमारे पक्ष की रहनुमाई के लिए राजा राममोहन राय, विद्यासागर, महात्मा गांधी, मेरे पिता व महर्षि कर्वे जैसी विभूतियां हमें उपलब्ध रहीं...।" इन पंक्तियों में ऋषि दयानन्द का नाम भूल जाना कितने बड़े अल्पमति अथवा पक्षपात पूर्ण दृष्टि का परिचायक है यह पाठक स्वयं देख लेंवे।

जो अपने काव्यों के द्वारा विधवा विवाह आदि का समर्थन, बाल विवाहादि के विरोध का प्रचार करते रहे, बहुत श्रेष्ठ[१] कवि थे, उनके काव्य को हिन्दी साहित्य के पं. रामचन्द्र शुक्ल जैसे लब्ध प्रतिष्ठ लेखक ने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' लिखते हुए उद्दण्डता मूलक बताया है और इस उद्दण्डता में हेतु लिखा है कि "उन का सम्बन्ध आर्यसमाज से रहा जिसमें अन्धविश्वास और सामाजिक कुरीतियों के उग्र विरोध की प्रवृत्ति थी[२]। स्पष्ट है कि एक श्रेष्ठ समाज सुधारक कवि के लिए ऐसे भाव एवं भाषा का प्रयोग आर्यसमाज के प्रति गहरी अरुचि प्रदर्शनार्थ ही है जो गर्ह्य है।

ऋषि दयानन्द द्वारा उद्बोधित स्त्री शिक्षा विषयक पुत्री पाठशालाओं का जो जाल आर्य समाज ने देशभर में फैलाया वह एक श्लाघनीय विषय है, सनातन धर्म पाठशाला, खालसा विद्यालय, यहां तक कि मुस्लिम इण्टर कालेज तक का बन जाना भी इस आर्यसमाज की ललकार का ही तो परिणाम है जिसे कथमपि भुलाया नहीं जा सकता। अन्त में मैं यही कहना चाहूंगी कि ऋषि दयानन्द के स्त्री शिक्षा विषयक पवित्र लक्ष्य को पूर्ण करने के लिये आज भी हमें अपेक्षित परिवर्तनों के साथ-साथ पूर्ण जागरुक रहना है, ऐसा न हो कि शिक्षा का उद्देश्य मात्र स्कूली पाठ्यक्रम को पढ़ लेना रह जाये और हम आर्ष पाठ्यक्रम के ज्ञान से शून्य ही बने रहें। इसके साथ-साथ हमें उन स्त्री शिक्षा द्वेषियों की चुनौतियों का भी बल पूर्वक उत्तर देते रहना होगा जो आज भी सामाजिक एवं राष्ट्रीय उन्नति के प्रति उल्लू के सदृश आंखें बन्द करके बैठे हैं।

१. पं. नाथूराम शंकर शर्मा के विषय में हिन्दी काव्य शास्त्र के अच्छे समीक्षकों ने यह स्वीकार किया है कि शंकर जी के काव्य पिंगल शास्त्रोक्त गुणों से पूर्ण युक्त एवं श्रेष्ठ हैं॥

२. द्र. हिन्दी साहित्य का इतिहास-पृ. ४२५॥

आर्य-मर्यादा

—श्री हरे कृष्ण संपादक 'सतत' हाजीपुर (वैशाली)

भरत-भूमि भारत-धरती का एकमात्र सिरताज,
दिग-दिगन्त को सही चेतना देता-'आर्य समाज'
दिशा-हीन जग-जीवन-पथ को स्वर्णीम सहज बनायें—
अन्धकार में ज्ञान-रश्मियां हमें चाहिए आज,

हम थे कौन ? कहां जा पहुंचे ? नहीं रहा कुछ ध्यान,
गिरते गए बुलबुले कितने खो अपनी पहचान,
सम्बोधन बस एक हमारा, आर्य ! आर्य !! हे आर्य,
मर्यादा है यही बचा लो, आन, बान, औ, शान,

शोषण, उत्पीड़न, बन्धन से, मुक्त मनुज को करने,
मानवता की नई चेतना, जन-गण-मन में भरने,
आर्य समाज सदा से तत्पर, करने को कल्याण—
बढ़ा सहज जग के दरवाजे, जलता दीपक धरने,

धर्म, ध्वजा, अध्यात्म, नीति का पालन करने वाला,
सम्प्रदाय का दुश्मन, भाईचारा का रखवाला,
भाषा-भेद मिटाकर देता, राष्ट्र-बोध-सन्देश—
अमृतकोष लुटा कर अपना, स्वयं पचाता हाला,

लुप्त हो गई मर्यादाएं, हम थे जिनके प्रहरी.
कभी हमारे माथे पर थी, चढ़ी हुई दोपहरी,
मार्त्तण्ड छुप गया हमारा, पता न किस घाटी में—
सन्ध्या वेला आज हमारे आंगन में है ठहरी,

गंगा की घाटी से माटी, ले समतल पर आये,
ज्ञान-किरण कर सहज विकीर्णीति थे अग-जग पर छाये,
आकर अलग-अलग धाराएं, हुईं समाहित हम में—
गुणा-भाग कर आज देख लें, क्या खोए ? क्या पाए ?

आज मनुजता की परिभाषा, लुप्त हुई धरती से,
फल बीज पौधे लहराना, है बंजर परती से,
चूके मूल्य फिर से हों वापिस, आर्य सभा के नाते—
वेद वाक्य गूंजे जन-रव में; दिशा-दिशा धरती से,

आर्य समाज एक मात्र है, जग-मानव का त्राता,
वसुधा में बन्धुता भाव का, गीत सदा से गाता,
आर्यावर्त्त सम्मुन्नत हो फिर, सुधा-धार फिर बरसें—
जन-गण-मन अधिनायक जय हे भारत भाग्य विधाता।

आर्य समाज और वेद

(डा. मुंशीराम शर्मा 'सोम' डी. लिट् कानपुर)

वेदों में मानव-जाति के उन्नयन के लिए जिन सिद्धान्तों का प्रतिपादन है, उन्हें धर्म का नाम दिया गया है। धर्म धारण करने वाला है। जो ज्ञान या कर्म पतन से बचाता है उसका जो उपदेश दे वही धर्म ग्रन्थ है। वेद के आदेश और उपदेश हमें नीचे गिरने से ही नहीं बचाते ऊपर उठने की प्रेरणा भी देते हैं।

वेद से पुरातन साहित्य आज तक विद्वानों को उपलब्ध नहीं हुआ। अत: एक स्वर से वेद विश्व का पुरातनतम साहित्य कहा जाता है। पाश्चात्य विद्वान् प्रारम्भ में वेदों को घुमक्कड़, भेड़ बकरी चराने वाले और जीविका की यात्रा में यायावर बने हुए आर्यों के गीत ग्रंथ कहा करते थे, परन्तु जब से उन्होंने वेदों का गम्भीर अध्ययन प्रारम्भ किया, उनका मत बदल गया। 'तन्मे मन: शिव संकल्प-मस्तु' टेकवाले ६ मन्त्र, नासदीय सूक्त, पुरुष सूक्त, ऊषा सम्बन्धी सूक्त, ज्ञानसूक्त आदि को पढ़कर वे वेद को सम्मान की दृष्टि से देखने लगे। वेद अध्येताओं की संख्या बढ़ने लगी। जर्मनी में वेद विद्वानों की संख्या कदाचित सर्वाधिक है। इंग्लैंड और फ्रांस में भी यह संख्या कम नहीं है। अमरीका के विद्वानों ने भी इस दिशा में सराहनीय कार्य किया है।

भारतवर्ष में इधर वेदों की ओर विद्वानों का ध्यान नहीं जाता था परन्तु महर्षि दयानन्द के वैदिक दृष्टिकोण ने विद्वानों को पुन: वेदों की ओर आकर्षित किया और अब कई विद्वान वेदों के अध्ययन में संलग्न हैं।

वेदों के आन्तरिक स्वरूप पर जब दृष्टि जाती है, तो उनका गद्यपद्यात्मक रूप तुरन्त विद्वानों के ध्यान को आकृष्ट कर लेता है। ऋग्वेदी मन्त्रों के पाद व्यवस्थित हैं। त्रिपाद गायत्री तथा चतुष्पाद त्रिष्टुप और जगती के छन्दों में निबद्ध ऋग्वेद काव्य की दृष्टि से उच्चकोटि के काव्य में परिगणित होना चाहिए। क्या विचार, क्या कल्पना और क्या भाव सभी दृष्टियों से वह विश्व

का उदात्त काव्य है। वाणी का जो चतुर्विध विभाजन विश्व के इस आदिकाव्य में हुआ है, वह विद्वानों को आश्चर्य में मग्न कर देता है। विश्व का प्रथम काव्य और इतना वैज्ञानिक यह कैसे सम्भव हो सका? उत्तर दो प्रकार के समाधान प्रस्तुत करता है। एक तो यह कि वेद पूर्व सहस्रों वर्षों तक वैज्ञानिक विकास की कोई सुदृढ़ परम्परा चली होगी, जिसकी अन्तिम परिणति वेद की विचारधारा है। दूसरा यह कि वेद सृष्टि के प्रारम्भ में दैवी वाणी के रूप में वैसे ही प्रादुर्भूत हुआ जैसे लोक तथा भूत की सृष्टि। दूसरी दृष्टि आस्तिक है, पहली ऐतिहासिक वेद के अन्तः साक्ष्य आस्तिक दृष्टि का समर्थन करते हैं।

वेद चार हैं। इस समय ऋग्वेद में १०५५२, यजुर्वेद में १९७५, सामवेद में १८७५ और अथर्ववेद में ५९८७ मन्त्र पाए जाते हैं। सामवेद के लगभग ९० मन्त्रों को छोड़कर शेष सब ऋग्वेद में पाए जाते हैं, यद्यपि उनके स्वरूप में अन्तर पड़ गया है। यजुर्वेद में लगभग २५० परन्तु अथर्ववेद में लगभग १२०० मन्त्र ऐसे हैं जो किंचित परिवर्तन के साथ ऋग्वेद में विद्यमान हैं। ऐसी पुनरावृत्तियों का अध्ययन हमने अपने ग्रन्थ A Comparative study of Vedik Hymns में किया है और हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि चारों वेदों के मन्त्रों की सख्या पुनरावृत्तियों को छोड़कर १६ सहस्र है।

चारों वेद विषय प्रतिपादन की दृष्टि से भी अपना विशेष महत्व रखते हैं। आज का मनोविज्ञान मन के जिन तीन कार्य क्षेत्रों का नाम लेता है वे ज्ञान, कर्म और इच्छा है। आश्चर्य है कि यह वेदों पर ज्यों का त्यों घटित हो जाता है। ऋग्वेद विज्ञान प्रधान है, यजुर्वेद कर्म प्रधान है और सामवेद इच्छा या भाव प्रधान है। अथर्ववेद में इन सब का समन्वय है पर अध्यात्म विद्या का विशेष स्थान है।

आध्यात्मिक अनुभूतियों का जो विकास क्रम वेद में वर्णित हुआ है, वह अन्यत्र दुर्लभ है। शारीरिक परिपक्वता, प्राण की सबलता, मन की दिव्यता, बुद्धि की पवित्रता, मेधा का संगमन और प्रज्ञा के प्रकाश तक ले जा कर वैदिक विकास ऋत के तन्तु को चीर कर आत्मस्थ कर देता है। 'तदपश्यत् तदभवत् तदासीत्' जैसी अनुभूतियां और अभिव्यक्तियां आपको किस साहित्य में मिलेंगी। कहीं चैतन्याधिरोहण मिल सकता है, भावभरित भक्ति की भूमिकाएं भी हस्तगत हो सकती हैं, पर यह नाक है, यह देवयान स्वर्ग को ले जा रहा है—यह ज्योतिष्मान्पन्था दिखायी दे रहा है—यह है आत्मारूपी पक्षी के दो पंख जिनके सहारे उड़ता हुआ यह विघ्नों, राक्षसों को समाप्त कर रहा है—जैसे वाक्य जो

अनुभूतिगम्य हैं और 'यदग्नेस्यामहं त्वं त्वं वा घास्या अहम्' में अभिव्यक्त लालसा की चरमावस्था आपको कहीं भी दिखाई नहीं देगी।

'अहमिन्द्रो न पराजिग्य' मंत्र पद में जो आत्म उद्घोष है, 'अहमेव स्वयमिदं वदामि' में जो आत्म प्रत्यय है, 'दिवो नु मां बृहतो अन्तरिक्षाद् अपाम्नो को अभ्यपद्रसेन' में जो आत्म तृप्ति है, 'अभ्यादधामि समिधं' में जो आत्मार्पण की महत्ता है, 'तेन गृह्णामित्वामहं' में जो अनुपम परतत्व का स्वीकृति पूर्वक ग्रहण धारण है—वह वेद को प्राथमिक साहित्य होते हुए भी अंतिम परिणति का साहित्य सिद्ध करता है।

वेद के आधार पर इस देश में जिस वाङ्मय का निर्माण हुआ, वह वेद की उपर्युक्त विशेषताओं को असंदिग्ध रूप में स्वीकृति देता रहा। इतिहास-पुराण वेद के उपबृंहण में ही लगे रहे। ब्राह्मण, उपनिषद, आरण्यक सब वेद वर्णित तथ्यों की ही व्याख्या करते हैं। मनु के शब्दों में वेदश्चक्षु: सनातनम्' वेद सनातन चक्षु है। ऋषि, मुनि, योगी, कवि, तपस्वी सब उसी के बल पर देखते, ज्ञान प्राप्त करते और कराते हैं। वेद अखिल धर्म का मूल है, श्रुति परम प्रमाण है—स्वतः प्रमाण है। उसे अन्य किसी भी प्रमाण की आवश्यकता नहीं है। सब के लिए वही प्रमाण है। सब उसी की ओर देखते हैं, उसी की दुहाई देते हैं। बाल की खाल निकालने वाले दर्शनशास्त्र, जब उसकी ओर संकेत करें, तो निश्चय ही वेद के प्रामाण्य को प्रमाणों का प्रमाण कहने में संकोच नहीं रहता।

वेदों की रक्षा करने में आर्य जाति ने जिस निष्ठा एवं कर्त्तव्य परायणता का परिचय दिया है, वह भी अप्रतिम है। अन्य किसी भी साहित्य को सुरक्षित रखने में वैसा प्रयत्न नहीं किया गया। रामायण बाल्मीकि के कंठ से निकल कर लव कुश के कंठों में पहुंची और आज कश्मीर, बंगाल तथा द्रविडों के कण्ठों में पहुंच कर मूल से बहुत दूर जा पड़ी। व्यासकृत महाभारत तथा पुराणों का भी यही हाल है। कालिदास आदि कवियों के ग्रन्थों में अनेक पाठ भेद हो गए हैं। पर वेद जैसा पुराकाल में था, वैसा ही आज भी है। समय का अतिपात उसमें परिवर्तन न कर सका। उन पूर्वजों के चरणों में भक्ति पूर्वक शिर श्रद्धावनत हो जाता है, जिन्होंने पीढ़ियों की पीढ़ियां वेदों को सस्वर कण्ठाग्र रखने में लगा दीं। यह उन्हीं का प्रसाद है कि वेद ज्यों का त्यों आज तक अनेक सहस्राब्दियां व्यतीत हो जाने पर भी हमें प्राप्त है।

आर्य जाति की अपराजेयता का कारण वेद है, जिसने उसे जीवन के शाश्वत मूल्यों की शिक्षा दी है। अनित्य स्थायी सत्यों, नियमों एवं आचारों को हृदय में भरा है जो इसे निरन्तर ज्योति देते हुए वेदानुकूल आचरण करने की प्रेरणा देते रहे हैं। वेद जैसे सबल को आर्य जाति कैसे विस्मृत कर सकती है ? वेद की, अपने रक्षक की उसने भी प्राणपण से रक्षा की है। अनेक ऋषि, अनेक कवि, अनेक विप्र, अनेक क्षत्रिय, प्रजा के अन्य विभिन्न अंग, सबका वेद की रक्षा में कुछ न कुछ योगदान है। वेद को इसी लिए हम आर्य जाति का प्राण कहते हैं। वैसे हैं वे विश्व भर के लिये। वे सार्वभौम एवं सार्वजनीन हैं।

महर्षि दयानन्द ने अपने गुरु स्वामी विरजानन्द से ऐसा ही वेद प्रचार का पाठ पढ़ा था। आर्य समाज की स्थापना द्वारा उन्होंने वेद प्रचार के लिए अवरुद्ध मार्ग को प्रशस्त कर दिया। उनकी दृष्टि में आडम्बर, चमत्कार, जिन्न-भूत-प्रेत आदि की कथायें न तो वेद सम्मत हैं और न तर्क पर आधारित। इस सम्बन्ध में उन्हें अपने जीवन में अनेक शास्त्रार्थ करने पड़े। वेद की जो महिमा मनु के मन में थी वही महर्षि द्वारा पुनः प्रतिष्ठित हुयी। आर्य-समाज ने वेद जैसे अक्षय सम्बल को हाथ में लेकर वैदिक संस्कृति एवं सभ्यता के पुनरोत्थान में अपना स्वर्णिम योगदान दिया है।

आर्यसमाज को गर्व है कि वह भारतीयता, आर्य अस्मिता एवं प्राचीन ऋषि मुनियों की धरोहर को सुरक्षित करने और रखने में आज विश्व भर में अग्रणी दूत का कार्य सम्पादन कर रहा हैं। महर्षि ने वेदों पर भाष्य किया। वह पूरा तो न हो पाया, पर भविष्य के लिए, भाष्यकर्त्ताओं को संदेश सूत्र दे गया। महर्षि के शिष्यों ने उन्हीं के पद चिन्हनों पर चल कर इस दिशा में अनुपम कार्य किया है।

स्व० पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर ने अथर्ववेद और ऋग्वेद के साथ यजुर्वेद के भी कई अध्यायों पर भाष्य लिखे। पंडित तुलसीराम स्वामी ने सामवेद का भाष्य लिखा। पं. शिव शंकर काव्यतीर्थ, पं. आर्य मुनि, पं. क्षेमकरण दास त्रिवेदी का भाष्य कार्य भी इस दिशा में उल्लेखनीय है। पं. जयदेव विद्यालंकार ने चारों वेदों का भाष्य किया जो अजमेर से प्रकाशित हुआ। आचार्य अभयदेव शर्मा ने वैदिक विनय तीन खण्डों में लिखकर ३६० वेद मंत्रों की भावभरित व्याख्या द्वारा उपासकों का महान हित किया है। पं. भगवतदत्त विद्यालंकार ने भी वैदिक विष्णु आदि कई ग्रन्थ लिखे हैं।

स्व० पं. भगवतदत्त बी. ए और आचार्य विश्वबन्धु शास्त्री भी हमें वेदों के सम्बन्ध में अमूल्य सामग्री दे गये हैं। स्व० आचार्य विद्यानन्द जी विदेह का तो संपूर्ण जीवन ही वेद शिक्षा, प्रवचन तथा ग्रन्थ लेखन में लग गया। उनकी वेद मंत्रों की व्याख्यायें पढ़कर आज भी वेद जिज्ञासु लाभान्वित हो रहे हैं। उनके पुत्र डा. अभय जी भी इस क्षेत्र में तन-मन-धन से संलग्न हैं। वेद संस्थान का वेद सम्बन्धी कार्य वस्तुत: स्तुत्य हैं। डा० फतेह सिंह की 'मानवता को वेदों की देन' शीर्षक पुस्तक अमूल्य सामग्री से भरी है और भी कई विद्वान वेद विद्या के प्रचार में क्रियाशील हैं।

—

मुक्तक

सीताराम पाण्डेय

मानव कुछ करने ही, धरा पर आता है।
जहांके-मोह-पाश में फंस कर रह जाता है।
निरर्थक अपने जीवन को बिता कर ऐ दोस्त—
वक्त मरने के बाद. क्यों कर पछताता हैं ?

स्वार्थ हेतु बेच रहे, धर्म और ईमान को:
सदियों से सता रहे, धरती पर इन्सान को,
खुद किए कर्म जब, कांटे बन चुभ रहे—
तो, नाहक ही दोष, क्यों दे रहे भगवान को ?

आर्य संस्कृति का रक्षक आर्यसमाज

श्री दीन बन्धु एण्ड्रयूज ने लिखा हैं कि—"आर्यसमाज ही एक ऐसी संस्था हैं जो मातृभूमि के प्रति प्रवासियों के हृदय में अनुराग पैदा करती हैं, राष्ट्रभाषा हिन्दी का विशेष रूप से प्रचार करती हैं और पुरातन आर्यसंस्कृति की रक्षा पर विशेष ध्यान देती हैं।

(सार्व-सभा का संक्षिप्त इतिहास पृ० १३२)

आर्य समाज

कविवर आचार्य विद्या भास्कर शास्त्री

आज विश्व के कोने-कोने से आती है यह आवाज ।
विश्व व्योम का घोर तिमिर अज्ञान विनाशक आर्य समाज ।।
अज्ञान, अविद्या-अन्धकार से आच्छादित था देश हमारा ।
मिथ्या वाद, विवाद कलह से अति दूषित था देश हमारा ।।
छल दम्भ द्वेष पाखण्ड क्लेश से परि पूरित था देश हमारा ।।
नाम था शेष, देश का, धूमिल था उद्देश्य हमारा ।।
तब आया ले ओ३म् पताका देशोद्धारक आर्य समाज
आज विश्व के कोने-कोने से आती है यह आवाज ।।
अपने वेश भाव भूषा भाषा का कुछ भी ज्ञान न था ।
जहं प्रतिमा सम्मानित थी और चेतन का सम्मान न था ।।
दानवता का साम्राज्य था और मानवता जब बिलख रही थी ।
थे गोरों के गुलाम-हमारी स्वतन्त्रता भी सिसक रही थी ।।
तब आया प्रिय स्वतन्त्रता का प्रथम उद्घोषक आर्य समाज ।
आज विश्व के कोने-कोने से आती है यह आवाज ।।
यह वह समाज है जिसने सबको वेद धर्म का ज्ञान दिया ।
यह वह समाज है जिसने अनाथ, विधवाओं का कल्याण किया ।।
यह वह समाज है जिसने आरत-भारत का उत्थान किया ।
कृण्वन्तो विश्व मार्यम् का भी इसी समाज ने गान किया ।।
संध्या हवन विधायक यह सत्यार्थ प्रकाशक आर्य समाज ।
आज विश्व के कोने-कोने से आती है यह आवाज ।।
यह वह समाज है जिसे सत्य निष्पक्ष, न्याय से नाता है ।
यह वह समाज है बिछुड़ों को जो हर दम गले लगाता है ।।
दया, त्याग, श्रद्धा सुनीति नम्र प्रीति, रीति सिखलाता है ।
यह वह समाज है जिसमें मानव, मानव समझा जाता है ।।
दुखियों का दुःख दर्द निवारक सुख संचारक आर्य समाज ।।
आज विश्व के कोने-कोने से आती है यह आवाज ।।
आज भी इस में वही होश है वही तरंगे उठती हैं ।
आज भी इस में वही जोश है वही उमंगे उठती हैं ।।
आज भी इसके अन्तस्तल में ज्ञान की ज्योति जलती है ।
आज भी इसके मंजुल मन में प्रण की प्रतिभा पलती है ।।
भास्कर, सजग है, सावधान है: यह प्रण पालक आर्य समाज ।
आज विश्व के कोने-कोने से आती है यह आवाज ।।

आर्य-समाज के मूल मन्तव्य

लेखक :—प्रा. भद्रसेन वेद-दर्शनाचार्य होशियारपुर

आर्यसमाज वैदिक धर्म का प्रचार करने वाला एक संगठन है। जिसकी स्थापना महर्षि दयानन्द सरस्वती ने विधिवत् १८७५ में बम्बई में की थी। आर्य समाज की दृष्टि से ऋग्-यजुः—साम और अथर्व नामक चार वेद ही स्वतः प्रमाण या परम प्रमाण हैं अर्थात् जिन्हें प्रमाणित करने के लिए दूसरे प्रमाण की जरूरत नहीं है। अतः चारों वेदों का कथन अन्तिम बात है। इन की व्याख्या में लिखे गए ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद् वेदांग, दर्शन. रामायण, महाभारत, स्मृति आदि शाखाओं और उपशाखाओं के सारे ग्रन्थ परतः प्रमाण हैं अर्थात् वेद के अनुकूल होने पर ही प्रमाण हैं।

चारों वेदों में जहां बीस हजार मन्त्र हैं, वहां वैदिक वाङ्मय भी अपने भाष्यों सहित हजारों की संख्या में है। इतने विशाल साहित्य को समझना सब के बस की बात नहीं है क्योंकि सभी संस्कृत भाषा के साधिकारी विद्वान् नहीं हैं। वैसे तो संस्कृत के विद्वान् भी प्रतिपाद्य विषयों के सम्बन्ध में एकमत नहीं हैं, जन साधारण की तो बात ही क्या? आज के वैज्ञानिक युग में अपनी विवशताओं, व्यस्तताओं के कारण उसे समझना प्रत्येक के लिए कठिन है। पहली विवशता तो यही है कि प्रत्येक में इतनी शिक्षण योग्यता नहीं होती, कि अपने धर्मग्रन्थ को पढ़े और समझ सके। कई बार भाषा के ज्ञान की कठिनता आती है तो कहीं अर्थ भेद से सही निर्णय में अड़चन उपस्थित होती है। दूसरी विवशता आर्थिक परि-स्थितियों के कारण कारोबार को इतना अधिक समय देना पड़ता है, कि धर्मग्रन्थ को पढ़ने का अवकाश ही नहीं होता। यह ठीक है कि अधिकतर रुचि, श्रद्धा, लगाव की कमी के कारण अन्य व्यस्तताओं का बहाना भी लेते हैं। इसका विशेष विश्लेषण 'सरल-सुखी जीवन' में देखिए।

सर्वत्र अनेक प्रकार के सदस्य हैं, कुछ पर्याप्त पढ़े-लिखे हैं तो अन्य सदस्यों में एक बहुत बड़ा वर्ग बहुत कम पढ़ा-लिखा है, तो कुछ इन दोनों के बीच में आते हैं। इन तीनों वर्गों को सामने रख कर आर्यसमाज के मन्तव्यों पर विचार किया जाए तो उस-उस वर्ग की शिक्षा, योग्यता, अनुभव अनुसार सामान्य या विशेष दृष्टि से विवेचन में अन्तर आ जाता है। पुनरपि हम मूल मन्तव्य की दृष्टि से इस प्रकार कह सकते हैं।

आर्यसमाज के मन्तव्यों का बोध जहां वैदिक वाङ्.मय से होता है, वहां आर्य समाज के नियमों से भी उसको समझा जा सकता है। सारांश की दृष्टि से मूल मन्तव्य ये हैं—

एकेश्वरवाद

हमारे चारों ओर बहुत सारे प्राकृतिक कार्य हो रहे हैं, जो हमारे जैसे किसी मनुष्य के द्वारा नहीं होते। उन प्राकृतिक पदार्थों की व्यवस्था बताती है, कि उनका कोई न कोई कर्ता, धर्ता, पालक, नियामक है। जन्माद्यस्य यतः वेदान्त १,१,२, यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते,येन जातानि,जीवन्ति यत्प्रयन्त्यभिसंविशन्ति०० तैत्तिरीय उपनिषद् ३,१ इत्यादि जो इस सारे संसार के प्राकृतिक पदार्थों का सर्जनहार और व्यवस्थापक है—वही ईश्वर है। ईश्वर के प्राकृतिक कार्य सभी स्थानों पर एक रूप में हो रहे हैं। सूर्य, चन्द्र, जल, वायु और धरती तथा उस से प्राप्त होने वाले खनिज, धातुएं, अन्न, फूल, फल, वनस्पति आदि पदार्थ अपनी एकरूपता, समान व्यवस्था से एक ही उत्पादक, व्यवस्थापक की ओर संकेत कर रहे हैं। अपितु इसके साथ विविध प्राणियों की शरीर रचना, अंग संस्थान और समान व्यवस्था भी एक सृष्टा की समर्थक है। अतः उस एक ही ईश्वर की उपासना, भक्ति करनी चाहिए।

ईश्वर को मानने का सब से बड़ा लाभ यही है, कि व्यक्ति उस पर विश्वास करते हुए शुभ कर्मों में जुटा रहता है और अशुभ कर्मों से बचता है। और उस महान् शक्ति से हम अपना सम्पर्क करके आत्मिक शक्ति; शान्ति प्राप्त कर सकते हैं तथा उस सर्वशक्तिमान के सहारे पर आत्म विश्वास से कार्य करने में सक्षम होते हैं। तब यदि कभी कष्ट आता हैं, तो उसको सहायक, रक्षक मान कर व्यक्ति घबराएगा नहीं।

मानव जाति की समानता

एकेश्वरवाद की तरह दूसरा मूल मन्तव्य है, मानव जाति की समानता।

सारी धरती के सभी मनुष्यों के शरीरों में विविध अंगों की संरचना एक सी है। भौगोलिक दृष्टि से रंग और रूप का बहुत थोड़ा ही भेद होता है। अत एव एक देश में रहने वाले तथाकथित हिन्दू, ईसाई, मुसलमान को पहचना नहीं जा सकता। सभी मनुष्यों के शरीरों में एक ही ढंग से इन्द्रियां कार्य करती हैं, उनकी उत्पत्ति प्रक्रिया भी एक सी ही है और एक प्रकार से ही सब बढ़ते हैं। सभी के शरीर एक ही प्रकृति, मूलतत्व के बने हुए हैं, इसी लिए सभी के खून का रंग लाल ही होता है। सभी के हृदयों में एक सी भावनायें सुख, शान्ति, सहयोग, स्नेह प्राप्त करने की उभरती हैं। वैसे भी सभी एक ही ईश्वर की रचनायें या बेटे हैं।

इसी लिए किसी विशेष परिवार, कुल, वर्ग, सम्प्रदाय, प्रान्त, देश में जन्म लेने या किसी से सम्बद्ध होने मात्र से किसी में कोई अन्तर या अच्छा बुरापन नहीं है। अतः जन्म, धर्म, रंग, रूप, देश, भाषा के आधार पर किसी से कोई भेद या एक दूसरे से घृणा, ईर्ष्या, द्वेष, विरोध, मन-मुटाव नहीं होना चाहिए। ऐसा करना मानव जाति की एकता को न मानना और मानवता का निरादर है।

एक मानव से दूसरे में शिक्षा, योग्यता, संस्कार, गुण, कर्म से ही कुछ भेद होता है। अतः किसी की उच्चता की परख इन के आधार पर ही होनी चाहिए। इस आधार पर किया गया अन्तर फिर चुभने वाला भी नहीं होता और न ही उस से अशान्ति, असन्तोष तथा कलह उभरती है। जैसे इन्सान-इन्सान में समानता है, ऐसे ही स्त्री तथा पुरुष में भी शरीर का सामन्य ही भेद हैं। नर-नारी मानव समाज के समान सदस्य और एक दूसरे के पूरक हैं। शरीर के सामान्य भेद से इन में कोई उच्च या नीच नहीं है। न ही जन्मना छूत-अछूत भावना न्याय युक्त है और नहीं सामाजिक उच्चता-नीचता मान्य है।

धर्म आचरण का नाम है

तीसरा मूल मन्तव्य है, धर्म अच्छे आचरण का नाम है क्योंकि आचरण को अच्छा बनाने के लिए ही धर्म की अपेक्षा, पहचान या वर्णन है। धर्म शब्द कर्म काण्ड, विश्वास, सिद्धान्त आदि अनेक अर्थों में प्रचलित है। धर्म के ये कर्म काण्ड आदि भेद अच्छे आचरण की ओर प्रेरणा देने के लिए ही हैं। इसी लिए ही मनुस्मृति में आया है 'आचारः परमो धर्मः १, १०८ अर्थात् आचार धर्म के अन्य अंगों से प्रधान है। धर्मंचर, धारणाद् धर्मः इत्यादि उपनिषद् रामायण-महाभारत के वचनों से भी यही सिद्ध होता है कि धर्म

आचरण की चीज है। इसके विस्तार के लिए देखिए गुरु विरजानन्द स्मारक-करतारपुर की स्मारिका १९८१ में उपरोक्त शीर्षक का लेख या 'सरल-सुखी जीवन'।

जैसे कि सामाजिकता के नाते हमारा समाज में माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी, पुत्र, मित्र आदि के रूप में परस्पर सम्बन्ध है। जिस के साथ जैसा सम्बन्ध है, उस के साथ उसके अनुरूप आचरण करने से ही सामाजिक धर्म का पालन होता है और तभी पारस्परिक सम्बन्धों के निर्वाह से परस्पर सद्भाव, सहयोग, स्नेह, विश्वास प्राप्त होता है तथा तभी धर्म का फल सुख-स्वर्ग भी सामने आता है।

महापुरुषों का मान

आर्य समाज का चौथा मूलमन्तव्य है सभी क्षेत्रों के महापुरुषों का सम्मान संसार में समय-समय पर अनेक महापुरुष हुए हैं, जिन्होंने मानव जाति को सुखी, विकसित, समृद्ध बनाने के लिए सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, वैज्ञानिक, शैक्षणिक राजनीतिक आदि क्षेत्रों में अपने-अपने समय पर महान् कार्य किया है जिस भी व्यक्ति ने जिस भी क्षेत्र में जितना योगदान दिया, वह तदनुरूप सम्मान का पात्र है। आज के विकसित रूप में अपने समय और स्थान पर उन का सहयोग, सामयिक विकास को यहां तक पहुंचाने में सहयोगी है। जैसे कि आज चाहे रेल गाड़ी में स्टीफैन्सन द्वारा आविष्कृत इन्जन कार्य नहीं कर रहा पर आज के विकसित इन्जनों में उस के आविष्कार का महान् योगदान है। ऐसे ही विविध क्षेत्रों में अपने-अपने समय और स्थान पर किया गया किसी का योगदान सर्वथा स्मरणीय है। हां जिस महापुरुष ने महान् तप, त्याग और संयम की साधना में अपने आप को तपाते हुए अपनी शिक्षा, योग्यता, योजना तथा कार्य से जितनी मानव जाति की सेवा की है, वह उस सेवा के अनुरूप सत्करणीय है।

इस प्रकार और भी कुछ मूल मन्तव्य हो सकते हैं तथा इनका और भी विस्तृत विवेचन हो सकता है। विस्तारभय से यहां इतना ही पर्याप्त होगा, हां विस्तार के लिए 'सरल-सुखी जीवन' पठनीय हैं। और आज की परिस्थितियों, विवशताओं को सामने रखते हुए पाठकों के अनुरूप साहित्य की विशेष जरूरत हैं।

वद क प्रात आयसमाज का दृष्टिकोण

ले.—आचार्य सत्यव्रत शास्त्री, विद्या भास्कर

वर्तमान युग के मूल सुधारक, क्रान्तदर्शी, वेदोद्धारक, वेद वेदांगों के प्रकाण्ड विद्वान् सुदूरदर्शी परम ईश्वर विश्वासी, सत्य निष्ठ, आ बाल ब्रह्मचारी, आर्य समाज के प्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती ने उस परम प्राचीन ब्रह्मा से लेकर जैमिनि पर्यन्त समस्त पुरा कालीन ऋषि मुनियों की एक स्वर से मान्यता प्राप्त "वेदों का पढ़ना पढ़ाना सुनना सुनाना आर्यों का परम धर्म है,, इस वैदिक आदर्श को आर्य समाज का मुख्यध्येय व लक्ष्य निर्धारित किया था और इस घोषणा को आर्यसमाज के मूल सिद्धांतों में—उन दशनियमों में तृतीय स्थान दिया। साथ ही इस को प्रत्येक आर्य का वैयक्तिक व सामूहिक परम धर्म प्रतिपादित किया। जब तक आर्य वैदिक परम्परा में इस सिद्धान्त की मान्यता रही और वेद प्रतिपादित कर्त्तव्य धर्मों का कर्मों का वेदाज्ञा का अक्षरशः पालन प्रचलन होता रहा यह वेदादेश जीवन में ओत प्रोत रहा तब तक आर्य सर्व प्रकारेण अपने जीवन में उद्देश्य में सुख-समृद्ध-रहा सर्वत्र विजयी रहा और यशस्वी. वर्चस्वी-महोद्योगी, अतुल पराक्रमी, ज्ञानी, ध्यानी सर्व दृष्टि से अग्रसर रहा, जब से प्रमाद वश आलस्य वश इन्होंने इस परम धर्म की उपेक्षा की अवहेलना की और अपनी अकर्मण्यता वश या अज्ञान वश इस का परित्याग किया, हनन किया तभी से उस परम धर्म ने इन्हें भी छोड़ दिया ' आर्य श्री विहीन, तेजो हीन, वर्चस्व रहित. तपः शून्य प्रमादी और आलसी सर्वथा अकर्मण्य-किं कर्त्तव्य विमूढ़ बन गए। और अपने लक्ष्य से सर्वथा भ्रष्ट हो गए।

धर्म एव हतो हन्ति, धर्मो रक्षति रक्षितः तस्माद्धर्मो न हन्तव्यो मा नो धर्मो हतो वधीत। इस घोषणा के आधार पर नष्ट हुआ त्यागा हुआ धर्म सब को त्याग देता है नष्ट कर देता है और रक्षा किया हुआ धर्म सब की रक्षा करता है अतः धर्म का कभी नाश न करे।

आर्य जाति के ऐसे भयंकर ह्रास के समय आज से लगभग १५५ वर्ष पूर्व महर्षि दयानन्द का आविर्भाव हुआ। उन्होंने पुनः उस परम पावन वेदालोक को आलोकित किया। ऋषि दयानन्द ही सर्व प्रथम ऐसे सज्जन हैं जिन्होंने भारत वर्ष में सहस्राब्दियों से सर्वथा प्रसुप्त-उपेक्षित-तिरस्कृत ईश्वरीय ज्ञान भूत वेदों का जीर्णो द्वार किया और उनको सर्व साधारण जनता के लिए मुद्रित कराकर और उनका प्राचीन नैरुक्त प्रक्रिया के आधार पर शतपथादि ब्राह्मणों के निरुक्त के दर्शनों के शतशः प्रमाण देकर प्राचीन परम्परा नुमोदित-आध्यात्मिक आधिदैविक, आधिभौतिक अर्थों को सुलभ किया और पुनः एक बार भारतीय तथा विदेशीय विद्वत्समाज में वेदों का गौरव स्थापित किया और बड़े-बड़े विद्वानों से संघर्ष-करके टक्कर लेकर उस ईश्वरीय ज्ञान की गौरव गरिमा को अक्षुण्ण किया। और "यद्वेदेषु-अभिहितंतत्सत्यम्। मैत्रायणी, ३०।३।१०

"यः कश्चित् कस्यचिद् धर्मो मनुना परिकीर्तितः।
ससर्वोऽभिहितो वेदे सर्व ज्ञान मेया हि. सः॥ मनुः
"सर्वेषां तु स नामानि कर्माणिच पृथक् पृथक्।
वेद शब्देभ्य एवादौ पृथक् संस्थाश्च निर्ममे॥ मनुः
"वेदोऽखिलो धर्म मूलम्" मनुः
"देव पितृ मनुष्याणां वेदश्चक्षुः सनातनम" मनुः
वेद एव द्विजातीनां निःश्रेयसकरं परम। याज्ञवल्क्यः १।४०
आदि स्मृति ग्रन्थों में तथा महाभारत में—
अनादिनिधना नित्या वागुत्सृष्टा स्वयं भुवा।
आदौ वेदमयी दिव्या यतः सर्वाः प्रवृत्तयः॥ महा० शा० २३।१४

इन उपर्युक्त धर्म ग्रन्थों में सर्वत्र स्वयम्भु-परमात्मा ने वेदमयी, दिव्य, नित्य, जिसका आदि अन्त नहीं होता ऐसी वाणी प्रदान की। जिस से आगे के संसार के समस्त व्यवहार चले। मनु भगवान् भी अपने मानव धर्म शास्त्र में पद-पद पर वेद का गौरव गान कर रहे हैं इस प्रकार विश्व के आकाश में वेद सूर्य के समान प्रकाशित हो रहे हैं। वेद रूपी ज्ञान गंगा ने आर्य संस्कृति-को आर्य सभ्यता के क्षेत्र को युग युगान्तरों से नहीं किन्तु सृष्टि की आदि रचना काल से सिंचित किया आदि धर्म प्रवर्तक भगवान् मनु के आदेशानुसार तीन लोक-भूमि-

अन्तरिक्ष-और द्युलोक, भूत-भविष्यत्-वर्तमान तीन काल, मानवीय जीवन के आश्रयभूत-चार आश्रम-चार वर्ण-सामाजिक व्यवस्था-राज धर्म-प्रजा धर्म आदि अनेक दैनिक कर्त्तव्य जिन उदार एवं लोक हितकारी उदात नियमों पर आश्रित हैं उन सबका रहस्यमय वर्णन व ज्ञान वेदों के ही नित्य पठन पाठन, स्वाध्याय, मनन चिन्तन और अनुष्ठान से ही होता है। मानवीय जीवन इन्हीं के द्वारा धर्मार्थ काम मोक्ष रूप चतुर्वर्ग-परम पुरुषार्थ की प्राप्ति के द्वारा जीवन के उच्चतम ध्येय को प्राप्त कर सकता है उन सब का वर्णन या उन नियमों का स्रोत यही वैदिक ज्ञान है।

मानव जीवन में धर्म के दो उद्देश्य अभ्युदय और निःश्रेयस को प्राप्त करने का जो राजपथ इस वैदिक कर्मयोग में है वैसा अन्यत्र विश्व के साहित्य में उपलब्ध नहीं होता। ऐसे लोक हितकारी सार्वभौम धर्म के एक मात्र आधार वेदों का उत्तर दायित्व उनकी रक्षा, पठन पाठन तदनुसार जीवन व्यवस्था का समस्त कार्यभार ऋषि ने अपने एक मात्र उत्तरदायी के रूप में आर्यों को ही घोषित किया था। इसी उद्देश्य की पूर्त्यर्थ उन्होंने अपने उत्तराधिकारी के रूप में यत्रतत्र स्व जीवन काल में आर्य समाजों की स्थापना की थी।

स्थान-स्थान पर बड़ी-बड़ी सभाएं खोली गई-प्रान्त प्रान्त में आर्य प्रतिनिधि सभाओं का संगठन किया गया सारे देश की शिरोमणि-एक समन्वयात्मक रूप से संगठित शक्ति का जाल बिछाया गया साप्ताहिक-अधिवेशनों की व्यवस्था की नियम-उपनियमों का निर्माण किया अधिकारी-अन्तरंग सदस्य बनाए सबके पृथक्-पृथक् अधिकार मर्यादाएं निश्चित की-५१ स्वमन्तव्यामन्तव्य बनाकर दिए स्वाध्याय के लिए अनेक छोटे-बड़े २०,२५ के लगभग ग्रन्थ निर्माण किए वेदों का आर्षपद्धति से भाष्य किया जिसने सारे विश्व में एक तहलका मचा दिया एक नवीन जागृति उत्पन्न कर दी। आर्यसमाजों ने तथा आर्य प्रतिनिधिसभाओं ने अपने अधीन वेद प्रचार मण्डलों की स्थापना की बड़े-बड़े धुरन्धर आर्य वैदिक विद्वान तपे हुए योग्य उपदेशक महोपदेशक-वेद व्याख्याता-प्रचारक, कथा वाचक, प्रवचनकर्त्ता इन के अतिरिक्त जन-साधारण के लिए अनुभवी कुशल संगीताचार्य आर्य भजनोपदेशकसंगीत ज्ञ प्रचारकों को नियुक्त किया बड़े-बड़े समारोह किए गए वार्षिक महोत्सव हुए आर्य सम्मेलन-महासम्मेलन हुए। देश विदेश में सर्वत्र ऋषि का जय-जय कार होने लगा

पर यह सब कुछ एक शताब्दी तक भी अव्याहत गति से नहीं चल सका धीरे-धीरे समयानुसार उत्साह शिथिल होता गया पूर्व अनुभवी ऋषि को मर्मज्ञ उसको समझने वाले एकनिष्ठ-मनसा-वाचा-कर्मणा-अन्दर और बाह्य एक रूप निश्छल-निस्कपट स्वच्छ मना शुद्धान्त: करण तेज,वी तपोधन त्याग मूर्ति लोकोपकारी नि:स्वार्थ सेवी व्यक्तियों को धीरे-धीरे अभाव होता गया आज जो स्थिति है वह सबके सामने है कहने की आवश्यकता नहीं वेदों को समझने के लिए सबसे प्रथम ऋषि दयानन्द को समझना होगा ; उसके उद्देश्य को उसकी कार्यप्रणाली को समझना होगा। उस पर श्रद्धा विश्वास करना होगा उसकी विद्वत्ता का दूर-दर्शिता का सूझबूझ का समादर करना होगा और प्रत्येक आर्य को आर्य सदस्य को आर्य समाज के सभा संस्थाओं के सम्मान योग्य अधिकारियों को, अन्तरंग सदस्यों को साधारण सदस्यों कों प्रत्येक विचारशील सुधारवादी उदारमानव को अपने को आर्य कहलाने वाले व्यक्ति को केवल साप्ताहिक अधिवेशनों में या सामूहिक समारोहों पर उत्सवों पर वेद अमर रहे, वेद की ज्योति जलती रहे इन उच्चै: स्वरीय घोषणाओं से न वेद अमर रहेगा न वेद की ज्योति प्रज्वलित रह सकेगी इन घोषणाओं के लिए वेद को अपना जीवन साथी बनाना होगा वेद को पठन पाठन का अङ्ग बनाना होगा आज का आर्य समाज उसके अधिकारी सदस्य सर्वथा निरुद्देश्य लक्ष्यहीन है केवल अधिकारों के प्रचारक हैं अपने कर्त्तव्य को भूले हुए हैं। आज का आर्यत्व जीवन से कोसों दूर है केवल वह साप्ताहिक अधिवेशनों की उपस्थिति के समय या वार्षिक निर्वाचन के समय जागता है उप-स्थितियों के प्रतिशत में उपयोग में काम आता हैं बस यही आर्यत्व का मानदण्ड है। विशुद्ध परिचायक हैं आज बड़े से बड़ा कर्मठ विद्वान् सदाचारी पुराना आर्य उपेक्षित हो रहा है वेद के पठन पाठन का तो कोई प्रश्न ही नहीं आधुनिक आर्य समाज की संस्थाओं में गुरुकुलों में विद्यालय महा-विद्यालयों में स्कूल कालिजों में पाठशालाओं में वेद का उपहासमात्र हो रहा है लाउड स्पीकर से मन्त्रोच्चारण करना ही एकमात्र ध्येय रह गया है। वह भी अशुद्ध आज के आर्यों ने अपना वेद पठन-पाठन स्वाध्याय प्रवचन चिन्तन सम्बन्धी समस्त उत्तर दायित्व लाउड स्पीकरों को सौंप दिया उनके नाम पश्चिम सन्देश (वसीयत) अपने जीवन काल में ही कर दी है कोई ऐसा प्रशिक्षण या केन्द्र नहीं जहां बालकों को युवाओं को वृद्धों को आर्य सदस्यों को वेद के मन्त्रों का जो नित्य के सन्ध्या हवन ईश्वर-स्तुति प्रार्थना के मन्त्र स्वस्ति शान्तिकरण १२ आज्याहुति व्यवहार में आते हैं उनका उच्चारण भी शुद्ध नहीं हो सका। जो गाड़ी चल रही है बस चलती रहने दो कई बड़ी मोटी-मोटी अशुद्धियां हैं जो बड़े-बड़े शिक्षा शास्त्री भी करते है।

क्या यही दृष्टिकोण वेद को अमर रख सकेगा। इसके आधार पर वेद की ज्योति जलती रहेगी। एक बार पुनः जागृति की आवश्यकता है। और अपने वेद के प्रति ऋषि प्रतिपादित दृष्टिकोण को समझने की आवश्यकता है। हमारे मान्य अधिकारी आर्य सदस्य साधारण सदस्य अपने को आर्य कहलाने वाले सज्जन जो जन्म से आर्य समाज के सम्पर्क में हैं। साप्ताहिक अधिवेशनों में २५ प्रतिशत उपस्थिति है जो केवल निर्वाचन के समय कार्य में आती है उनके लिए 'सिंहावलोकन करना होगा और अधिकार या पद लिप्सा से सर्वथा पराङ्मुख होकर केवल वास्तविक आर्यत्व की भावना से आर्य समाज के कार्यों में सक्रिय भाग लेना होगा। मठाधीशता को स्वेच्छाचारिता को त्यागना होगा। सबको अपने-अपने अधिकार सीमा में नियन्त्रण में रहना होगा। जो चाहे करना सब पर प्रभावी होना सर्वथा हानिकर है। इन सब बातों से ऊपर उठकर वेद का नित्य स्वाध्याय करना-पढ़ना, पढ़ाना अपना नियम व ध्येय बनाना होगा। वेद के अध्यायनाध्यापन से उसके स्वाध्याय चिन्तन से मनन से तदनुष्ठान से वेद अमर रह सकेंगे और उनकी ज्योति भी प्रज्वलित रह सकेगी।

—मुक्तक—

प्यार की रिश्ता निभाते लोग हैं।
प्यार को कहते सदा जो भोग हैं।
प्यार का बन रहनुमां उनसे बता दो
प्यार तो हैं साधना, एक योग है।

न कोई अमीर होता, न कोई गरीब होता,
गर, ईमान साथ हो, तो खुदा के करीब होता,
दुनिया में दीनों पे जुल्म ढाहने वालों—
चिता पर सब किसी को,
केवल कफन नसीब होता।

न मिठाई अच्छी, ना खटाई अच्छी
हिम्मत साथ हो, तो तन्हाई अच्छी,
ओठों पे हंसि और अन्तर में विष भरे—
कपट के मिलन से, जुदाई अच्छी।

हजार ठौर हैं गर ठहरना चाहें,
हजार राहें हैं गर गुजरना चाहें,
मंजिल करीब दीखती है उनको जो
हिम्मत केवल वक्त पकड़ना चाहें।

—सीताराम पाण्डेय

(१८ पृष्ठ का शेष)

होता है ? मानव के भौतिक विकास के साथ उसका मानसिक और आत्मिक विकास भी होना चाहिए ! भौतिक विकास के लिए किसी सीमा तक धन नितांत आवश्यक है, यह हम स्वीकार करते हैं, पर मानसिक और आत्मिक विकास के लिए धन नहीं, शिक्षा और संस्कार आवश्यक हैं । वह जितना गरीबों के लिए आवश्यक है, उतना ही अमरी के लिए भी । नैतिकता-विहीन जीवन को पाप न समझने वाले व्यक्ति ही गरीबी को सबसे बड़ा पाप बताने का शोर मचाते हैं । ऊपर से थोपी गई गरीबी अभिशाप है, पर स्वयं स्वीकार की गई गरीबी वरदान है। इसी लिए भारतीय संस्कृति में सर्वत्यागी व्यक्ति सबसे अधिक पूज्य माना जाता है । कोई व्यक्ति भौतिक दृष्टि से गरीब होकर भी नैतिक दृष्टि से समृद्ध हो सकता है ठीक वैसे ही बौद्धिक दृष्टि से समृद्ध होकर भी मनुष्य नैतिकता की दृष्टि से दीन हो सकता है । इसी लिए सदाचार और नैतिकता के संस्कारों के लिए जनता को शिक्षित करने पर ही आर्य समाज का सबसे अधिक जोर रहता है ।

आर्य समाज को आधुनिक युग में अप्रासंगिक कहने वाला अन्तिम वर्ग वह है जो कहता है कि आर्य समाज जिन सामाजिक सुधारों पर बल देता आया है, उन्हें अब देश ने सिद्धात रूप में स्वीकार करके अपने संविधान में स्थान दे दिया है इस लिए अब अलग से संस्था के रूप में आर्यसमाज की आवश्यकता नहीं है । यह स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात जनता के सब प्रकार के विकास का दायित्व सरकार का है, इसलिए अब आर्यसमाज को स्वयं विघटित या अस्तित्व-शून्य हो जाना चाहिए । स्वराज्य प्राप्ति के पश्चात् महात्मा गांधी ने कांग्रेस को भी इसी प्रकार विघटित होने की सलाह दी थी ।

इस तर्क में बदतोव्याघात दोष है । यदि आर्यसमाज के द्वारा प्रचारित सामाजिक सुधारों को भारतीय संविधान में स्थान मिला है तो इससे आर्यसमाज की जितनी सार्थकता सिद्ध होती है, उतनी ही आधुनिक युग में उसकी प्रासंगिकता बढ़ जाती है । अभी उन सुधारों को संविधान में ही तो स्थान मिला है—जनता में वे सुधार कार्यान्वित ही नहीं हुए । आर्यसमाज का असली काम जनता में ही है । नेताओं ने भी आर्यसमाज के विचारों को अभी कागजी मान्यता ही दी है, स्वयं उनके जीवन में वे सुधार फलीभूत दृष्टिगोचर नहीं होते । इसलिए जब तक वे सुधार जन-जन के जीवन का अंग नहीं बन जाते, तब तक आर्यसमाज की प्रासंगिकता बनी ही रहेगी ।

आर्यसमाज के सिवाय और कौन ?

महात्मा गांधी ने जिस उद्देश्य से कांग्रेस के विघटन की सलाह दी थी, वह यह थी कि स्वराज्य प्राप्ति कांग्रेस का राजनीतिक लक्ष्य था, वह पूरा हो गया, इसलिए अब राजनीति से मुंह मोड़ कर कांग्रेस को रचनात्मक कार्य की ओर अग्रसर होना चाहिए और शासन के बजाय लोकसेवा को अपना लक्ष्य बनाना चाहिए। कांग्रेस ने उस सन्त की सलाह नहीं मानी। परिणाम यह हुआ कि सत्ता-लोलुपता से आज कांग्रेस ही बारह बांट हो गई। जिस रचनात्मक कार्य और लोकसेवा के लक्ष्य को पूरा करने के लिए गांधी ने कांग्रेस के विघटन की सलाह दी थी, आर्यसमाज अपने जन्मकाल से वही कार्य करता आ रहा है। महात्मा गांधी की उस अन्तिम अभिलाषा को पूरा कौन करेगा ? कांग्रेस को तो अभी फुरसत है ही नहीं, अन्य दल स्वयं अपने ही अन्तर्द्वन्द्वों से टूटते जा रहे हैं। इसलिए वह काम भी आर्यसमाज के सिवाय और कौन करेगा ?

यहां हम एक बात और भी कह देना चाहते हैं। अन्य दल केवल राजनीतिक उद्देश्यों से परिचालित हैं। इसलिए वे सब "कुर्सी दौड़" में लगे रहते हैं। आर्यसमाज का सारा काम शासन निरपेक्ष है। उसके किसी कार्य में सरकार साथ दे तो ठीक, न दे तो भी ठीक। बल्कि हम तो कहेंगे—सरकार विरोध करे, तो भी ठीक। आर्यसमाज को अपना सारा कार्य सरकार से निरपेक्ष होकर ही करना है। इसी में इसकी सार्थकता है।

जब तक संसार में अन्धकार विद्यमान है, तब तक सूरज और उसके प्रकाश की प्रासंगिकता पर आपत्ति कोई अन्धा ही कर सकता है।

ओ३म्

माता शत्रु-पिता वैरी येन बालों न पाठितः।
न शोभते सभा मध्ये हंस मध्यें बको यथा॥

"जिसने अपने बालक को नहीं पढ़ाया, वह माता शत्रु और पिता वैरी के तुल्य है। उनका वह विद्या-विहीन पुत्र विद्वानों की सभा में शोभा नहीं पाता, ठीक वैसे ही, जैसे हंस-मण्डली में बगुला शोभित नहीं होता।"

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित

रणवीर भाटिया,	ओमप्रकाश टण्डन	डा. रामस्वरूप
प्रधान	प्रिंसिपल	प्रबन्धक

आर्य हा. सै. स्कूल लुधियाना

श्री वीरेन्द्र सम्पादक तथा प्रकाशक द्वारा जयहिन्द प्रिंटिंग प्रैस जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा जालन्धर से इसकी स्वामिनि आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ।


च्यवन प्राश
के लिए प्रसिद्ध
सबके लिये हितकर।
गुरुकुल
चाय
खांसी, जुकाम,
इन्फ्लूएन्जा, बदहज़मी
तथा थकान में मादकता
रहित उत्तम पेय।
भीमसैनी
सुरमा
पायोकिल
• दांतों का दर्द व टीस
• मसूढ़ों का फूलना
• पायोरिया को जड़ से
मिटाने के लिए उत्तम
आयुर्वेदिक औषधि
ओ३म्
गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी
हरिद्वार